

भावप्रकाश पूर्वखण्ड सटीक

जिसमें

वैद्यक विद्याके लक्षण, निरुक्ति, द अश्विनीकुमार चरक और धन्वंतरि आदिकी प्रकटता, सृष्टिका क्रम, पूर्ण औषधों के लक्षण गुण, मांस, मछली, सम्पूर्ण अन्न, जल- दू दही, घी इत्यादि के गुण, पारा, रसकपूर, हरताल, मैनासिल और विषोंके शोधने की विधि इत्यादि अनेक विषय वर्णित हैं ॥

इसको

भाव मिश्रने ललित [illegible]नोकों में रचना किया था

[illegible]तीको

भार्गववंशावतंस मुंशी नवल[illegible]र (सी, आई, ई) ने अपने खर्च से आगरा पुर पीपलमंडी. नि[illegible] चौरासिया गौड़वंशावतंस लखनऊ केनिङ्गकालेज के संस्कृ[illegible]ापक पण्डित कालीचरण जी से प्रत्यक्षर का भ[illegible]ीका रचना कराया है ॥

पहलीबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई[illegible] के [illegible]खाने में छपी दिसम्बर सन् १८०८ ई०
[illegible] हकतसनीफ[illegible]ज है बहक नवलकिशोर प्रेस

इस मतबेमें जितने प्रकारकी वैद्यककी पुस्तकें छपींहैं उनमेंसे कुछ नीचे लिखीं हैं जिस किसी अवलोकन करनेवालेकी कांक्षाहोवै छापेखानेके पुस्तकालयसे अपनी दरख्वास्त भेजके फ़ेहरिस्त किताबोंकी मँगाकर अवलोकन करसक्ते हैं ॥

सुश्रुतसंहिता भाषा

जिसमें वैद्यक विद्याकी विस्तारसे उत्पत्ति,शिष्योंको जनेऊ और शिक्षादेनेकी विधि, शिष्यों के छानेकी विधि और ग्रन्थके सब अध्यायोंकी सूची, गुरुदेवजीका विद्यार्थी को अच्छी विधिसे पढ़ाना यह उचित धर्महै तिसका वर्णन, फोड़ाके चीरनेके पीछे वैद्यका रोगीकी रक्षा पढ़ना, ऋतुचर्या अर्थात् जिस ऋतुमें जिस प्रकारसे उपाय करना चाहिये तिसका वर्णन,चीरने फाड़नेके हथियारों का वर्णन, चीरने फाड़नेके हथियारोंके भेद, और उनके ग्रहण करनेका उपाय और शस्त्रोंकी रक्षा का उपाय वर्णन, वैद्यका शिष्यको चीरना फारना सिखाना,शिष्यका गुरुदेवजीसे वैद्यकविद्यापढ़के राजाके यहां परीक्षा देकर राजाकी आज्ञासे शुद्धचित्तहोकर चिकित्सा करना,क्षारपाकविधि और अग्निकर्म विधिका वर्णन, जोंक, सींगी और तुम्बीलगाने की विधि, रक्तकीविधि और यत्नसे रक्षा तथा धातु मलके क्षय और वृद्धिके जानने का वर्णन,बालकके कान छेदने की विधि, फोड़ा आदिके चीरने का वर्णन,घावके लेपन और बन्धकी विधि,घाववाले पुरुषको जिसप्रकार से रहना चाहिये तिसका वर्णन, पथ्यापथ्य वस्तुओं का वर्णन, घावके अनु विषयके अध्यायका वर्णन, घावके स्थानोंका वर्णन शल्य और अशल्य और व्याधिभेद का विषय,आठप्रकारके शस्त्र कर्मकरनेवाले अध्यायका व्याख्यान, प्रणष्टशल्यनाम फोड़े के जानने का लक्षण, शल्यनामक फोड़े के निकालने का वर्णन, विपरीताविपरीत नामक घावके जाननेका वर्णन, दूतकोवैद्यके बुलानेके समय में और वैद्य कोभी रोगी के यहां जानेमें शुभ अशुभ शकुन और रोगीके शुभ अशुभ स्वप्नों के द्वारा शुभ अशुभ फलका वर्णन, रोगीको अपनीही छाया जिसप्रकार की दिखलाई दे उसके शुभाशुभका फल,रोगीके स्वभाव के उलटा होजानेका फल,रोगीको जिसजिसलक्षणवाले रोगमार डालतेहैं उनका वर्णन. सेनायुक्त और शत्रुओं को जीतने की इच्छावाले राजाकी वैद्यको रक्षाकरनी योग्यहै वैद्यको, रोगी के आयुकी परीक्षा, फोड़ोंके लेपइत्यादि औषधों का वर्णन. वैद्यका औषधके योग्य भूमिकी परीक्षाकरना, औषधों के समूहों के गुणवर्णन, जो औषध वमन और जो जुलाब से रोगोंको हरनेवाली हैं उनका वर्णन, औषध और रसोंके गुणवीर्य और विपाक के जाननेका वर्णन, रसविशेषोंके जानने का वर्णन, वमनद्रव्यों और जुलाब की द्रव्योंका वर्णन, जलवर्ग, दूधवर्ग, दहीवर्ग. माठावर्ग, तैलवर्ग, शहदवर्ग, ईखवर्ग, मदिराकांजी और मूत्रवर्ग का वर्णन, अन्नपान विधिका वर्णन, वातव्याधि बवासीर, पथरी, भगंदर, कुष्ठ, प्रमेह, उदररोग, मूढ़गर्भ, विद्रधिरोग, विसर्प,-नाड़ीरोग, स्तनरोग, ग्रंथि, अपची, अर्बुद, गलगंड, वृद्धि, उपदंश, फीलपांव, छोटे २ रोग, शूकदोष, भग्नरोग. और मुख रोगों के निदान का वर्णन. अभून चिना शारीर, शुक्रशोणित शुद्धि

भावप्रकाश सटीक की भूमिका ॥

इससंसारमें धर्म्म अर्थ काम मोक्ष यही चारों मनुष्य जन्मके मुख्य फलहैं और शरीरही इन चारोंका मुख्य साधनहै क्योंकि कहाहै कि (धर्मार्थकाममोक्षाणां शरीरंसाधनंयतः) इत्यादि इससे शरीरकी रक्षा करना और शरीरको स्वस्थ रखना मनुष्यमात्र का मुख्य कर्त्तव्य है क्योंकि जब मनुष्यका शरीर सावधान नहीं होताहै तब ऐहिक और पारलौकिक कोईभी कार्य्य नहीं सधता इसीसे हमारे प्राचीन महर्षियों ने चिकित्सा शास्त्रके अनेक ग्रन्थ बनाये और अनेक विद्वान् मनुष्योंने भी अपनी २ बुद्धिके अनुसार वैद्यक शास्त्रके अनेक ग्रन्थ बनाये यह बात सर्वसाधारण है कि एकमनुष्य की बुद्धि प्रायः एकही विषयमें बहुत तीव्र होती है इससे इन ग्रन्थों में किसीका निदान किसीकी चिकित्सा किसी का शारीरक किसी का सूत्रस्थान बहुत उत्तम समझाजाता है इसकारण जो मनुष्य वैद्यक शास्त्र के सीखने की इच्छा करे उसे इनसब ग्रन्थों के पढ़ने की आवश्यकता होती है और जो मनुष्य सम्पूर्ण ग्रन्थोंको नहीं देखते हैं वह पूरालाभ नहीं उठासक्ते परन्तु जिनको थोड़ा अवकाशहै और थोड़ाही श्रम करसक्ते हैं वह विचारे इन अनेक बहुत वृहत् ग्रन्थों को पढ़कर कैसे वैद्यक शास्त्रको भलीभांति जानसकें इसबातको विचारकर श्रीमान् भावमिश्रने सम्पूर्ण ऋषि प्रणीत वृहत् ग्रन्थोंसे जिसका जौनसाभाग अत्युत्तम और अति उपकारीथा वह लेकर भावप्रकाश नाम संग्रहका ग्रंथ बनाया इसग्रंथमें वैद्यककी उत्पत्तिसे लेकर सम्पूर्ण शारीरक, औषधियों के गुण दोष, रोगों की उत्पत्ति लक्षण यत्न और वाजीकरण आदिक अनेक विषयों का विस्तार पूर्व्वक वर्णन है इसीसे इस देशमें इसग्रंथका बड़ामान होकर बड़ाही प्रचारहुआ अनेक गुणों से पूर्ण यह ग्रंथ रत्न संस्कृत वाणीमें है और आजकल समयके प्रभावसे अन्य लोगोंकी तो कौनकहै प्रायः वैद्यलोगभी संस्कृत नहीं जानते इसकारणसे उन लोगोंको इतनी शक्तिभी नहीं होती है कि इस एकही ग्रंथको पढ़कर चिकित्सा शास्त्रके सम्पूर्ण विषयोंको अच्छे प्रकारसे जानसकें इससे विना जानेबूझे वहलोग अपने पेटके पालनेके लिये औषध तो करतेही हैं और रोगी भी रोगोंसे व्याकुलहोके लाचारी से उनके पास आराम होनेके लिये आतेहैं और वैद्यलोगभी उनके अच्छे होनेके लिये औषधदेते हैं परंतु प्रायः उसका फल इसके विपरीत होताहै इस दुर्दशाको देखकर परम कारुणिक धर्म्मधुरीण गुणग्राही भार्गव वंशावतंस मुन्शीनवलकिशोर सी-आई-ई-की आज्ञासे आगरा निवासि लखनऊ केनिंगकालेजके संस्कृत अध्यापक गौड़वंशावतंस चौरासिया पंडित कालीचरण शर्म्मा ने लखनऊ के निवासी वाजपेयि क्षमापतिजी की सहायतासे परम उपकारी भावप्रकाश नाम इस वैद्यक ग्रन्थका भाषानुवाद किया इसग्रंथकी भाषा करनेमें उक्त महाशयोंने बहुतसी छपीहुई तथा लिखीहुई भावप्रकाशकी पुस्तकोंको देखकरके और जिन ग्रन्थोंके प्रमाण इस ग्रन्थमें हैं उनमें से जहांतक मिलसके

उनकोभी इकट्ठाकरके और अनेक कोषोंकोभी एकत्रित करके इसके पाठ भेदोंके दूर करने में औष-धियोंके भाषा नाम जाननेमें और मूल प्रतिके शुद्ध करनेमें बड़ा श्रम कियाहै अब कोई महानुभाव यह सन्देह न करें कि इसका भाषानुवाद तो बम्बई आदि नगरों में छपही चुकाथा फिर इस पिष्ट-पेषणका क्या प्रयोजनहै यहश्रम इसलिये कियागया है कि अबतक जो कोई अनुवाद मुद्रित हुए हैं वह एकतो बहुमूल्य हैं और दूसरे उनकी भाषाभी सर्व साधारणको लाभदायी नहीं है इससे अत्यन्त मनोहर सरल और शुद्धभाषा में यह अनुवाद करके मूलसहित मुद्रित कराया है अब सम्पूर्ण गुण-ग्राही सज्जनोंसे यह प्रार्थनाहै कि इसबृहत् ग्रंथके अनुवाद करने में जहांकहीं जोकुछ बिगड़गयाहै उसे यह समझकर क्षमाकरें कि भूलना मनुष्योंका स्वाभाविक धर्म है ॥

इति ॥

भावप्रकाश सटीकपूर्वखण्डके प्रथमभागका सूचीपत्र ॥

भावप्रकाशके पूर्वखण्डका सूचीपत्र ॥

द्वितीयोभागः

अथ मांसवर्गः





भावप्रकाश पूर्वखण्ड भाषाटीकासहित ॥

गजमुखममरप्रवरंसिद्धिकरंविघ्नहर्तारम् ।
गुरुमवगमनयनप्रदमिष्टकरीमिष्टदेवताम्वन्दे ॥ १ ॥

स्फुरन्नूतनद्योतवाह्लीकरागैः ककुप्कामिनीवक्रपद्मानिलिम्पन् । महानन्दमन्दारपुष्पायितश्रीःसमुद्यन्विपस्यान्रुजंयोनिहन्तु १ चौरासियागोकुलचन्द्रसूरिसूनुःसकालीचरणाभिधानः । तत्तत्क्रियाकाण्डविकाशसिद्ध्यैभावप्रकाशंविवरीवरीति २ जागर्तुसौजन्यसुधासमुद्रप्रवाहनिर्णिक्तरारमवृत्तिः । क्षमापतिर्येनविदाव्यधायिभावप्रकाशस्फुरणेप्रयासः ॥ ३ ॥

सब देवताओं में श्रेष्ठ अणिमादि अष्ट सिद्धियों के देनेवाले तथा विघ्नों के हरनेवाले श्रीगणेश और ज्ञानरूप नेत्रोंकेदेनेवाले गुरु तथा वांछित फलोंकेदेनेवाले इष्टदेवताको नमस्कार करताहूं॥१ ॥

आयुर्वेदागमनंक्रमेणयेनाभवद्भुमौ ।
प्रथमंलिखामितमहंनानातंत्राणिसंदृश्य ॥ २ ॥

आयुर्वेद अर्थात् वैद्यकशास्त्रका जिसभांति पृथ्वी में आगमन हुआ उसको मैं अनेक शास्त्रों को देखकर प्रथम लिखताहूं ॥ १ ॥

आयुर्वेदस्यलक्षणमाह ॥

आयुर्हिताहितं व्याधेर्निदानं शमनं तथा ।
विद्यतेयत्रविद्वद्भिःसआयुर्वेदउच्यते ॥ ३ ॥

आयुर्वेदकालक्षणकहतेहैं ॥ जिसमें जीवन के हिताहित अर्थात् बढ़ाने घटानेवाली वस्तु तथा रोगों का निदान अर्थात् प्रथमोत्पत्ति का कारण और रोगों के नाश का उपाय कहाहो वह पण्डितों करके आयुर्वेद कहाजाता है ॥ ३ ॥

आयुर्वेदस्यानिरुक्तिमाह ॥

अनेन पुरुषोयस्मादायुर्विन्दति वेत्ति च ।
तस्मान्मुनिवरैरेष आयुर्वेदइति स्मृतः ॥ ४ ॥

शरीरजीवयोर्योगोजीवनम् तेनावच्छिन्न-कालआयुः, आयुर्वेदद्वारापुण्यापुण्यनापुण्या णिच द्रव्यगुणकर्म्माणिज्ञात्वा तेषांसेवनत्यागाभ्यामारोग्येणायुर्विन्दति,तेनैवहेतुनापरस्याप्यायुर्वेत्तिच ॥

जिसकेद्वारा पुरुष आयुको पाता और जानताभी है उसे मुनियों ने आयुर्वेद कहाहै, शरीर और जीव इन दोनों का योग जीवनहै और उससे घिराहुआ काल आयु कहाताहै, इस आयुके हिताहित द्रव्य गुण कर्मों को आयुर्वेदके द्वारा जानकर उनके सेवन तथा त्याग से अर्थात् हितके सेवन और अहित के त्यागसे पुरुष आरोग्य पूर्वक उत्तम आयुको पाताहै, और ऐसेही दूसरों की भी आयुको जानता है ॥ ४ ॥

आयुर्वेदप्रादुर्भावक्रममाह, तत्रादौब्रह्मणःप्रादुर्भावः ॥

विधाताथर्वसर्वस्वमायुर्वेदंप्रकाशयन् ।
स्वनाम्नासंहितांचक्रेलक्षश्लोकमयीमृजुम् ॥ ५ ॥

अब आयुर्वेद की उत्पत्तिका क्रम कहते हैं तिसमें प्रथम ब्रह्माकी उत्पत्ति ॥ ब्रह्मा जी अथर्ववेदके सारार्थरूप आयुर्वेदको प्रकटकरतेहुये अपने नामसे एकलक्षश्लोकोंकी सरलसंहिता बनातेभये॥५॥

ततःप्रजापतिंदक्षंदक्षंसकलकर्म्मसु ।
विधिर्धीनीरधिसांगमायुर्वेदमुपादिशत् ॥ ६ ॥

तदनन्तर ब्रह्मा जी वही सांग आयुर्वेद सब कामों में चतुर बुद्धिकेसागर दक्ष प्रजापति को पढ़ाते भये ॥ ६ ॥

अथदक्षप्रादुर्भावः ॥

अथदक्षःक्रियादक्षःस्वर्वैद्योवेदमायुषः ।
वेदयामास विद्वांसो सूर्य्यांशौ सुरसत्तमौ ॥ ७ ॥

अथदक्षसे आयुर्वेदकी उत्पत्ति ॥ तदनन्तर क्रियामें चतुर दक्षजी सूर्य्यकेपुत्र देवों के वैद्य विद्वान अश्विनीकुमारों को आयुर्वेद पढ़ाते भये ॥ ७ ॥

अथाश्विनीकुमारप्रादुर्भावः ॥

दक्षादधीत्यदस्रौविसन्तनुतःसंहितांस्वीयाम् ।
सकलचिकित्सकलोकप्रतिपत्तिविवृद्धयेधन्याम् ॥ ८ ॥

अथ अश्विनीकुमारों से आयुर्वेदकी उत्पत्ति ॥ तदनन्तर दक्षसे पढ़कर सम्पूर्ण वैद्योंकी चतुरता बढ़ानेके लिये अश्विनीकुमार अपनी उत्तम संहिता बनाते भये ॥ ८ ॥

स्वयम्भुवःशिरश्छिन्नंभैरवेणरुषाथतत् ।
अश्विभ्यांसंहितंतस्मात्तौयातौयज्ञभागिनौ ॥ ९ ॥

यही अश्विनीकुमार कोपसे भैरवके काटेहुये ब्रह्माके शिरको जबसे जोड़तेभये तबसे यज्ञमेंभाग पानेलगे ॥ ९ ॥

देवासुररणे देवादैत्यैर्येःसक्षताःकृताः ।
अक्षतास्तेकृताःसद्योदस्राभ्यामद्भुतंमहत् ॥ १० ॥

और यह उनका अति अद्भुत कर्म्महुआ जो कि उन्होंने देवासुर संग्राममें घायलहुये देवताओं को अच्छा किया ॥ १० ॥

वज्रिणोऽभूद्भुजस्तम्भःसदस्राभ्यांचिकित्सितः ।
सोमाग्निपतितश्चन्द्रस्ताभ्यामेवसुखीकृतः ॥ ११ ॥

और इन्हीं अश्विनीकुमारोंने इन्द्रके जकड़ेहुये हाथको सुधारा औ किसीसमय चन्द्रमा अमृतसे रहित हुआथा उसे भी इन्होंनेही सुखी किया ॥ ११ ॥

विशीर्णदशनाःपूष्णोनेत्रेनष्टेभगस्य च ।
शशिनोराजयक्ष्माभूदश्विभ्यान्तेचिकित्सिताः ॥ १२ ॥

और किसी समय दक्षके यज्ञमें पूषा नाम देवताके टूटेहुये दांत व भग नाम देवताके फूटेहुयेनेत्र तथा चन्द्रमाके जो राजयक्ष्मा रोग हुआथा यह सब भी इन्हीं अश्विनीकुमारों करके अच्छे किये गये ॥ १२ ॥

भार्गवश्च्यवनःकामीवृद्धःसन्विकृतिंगतः ।
वीर्य्यवर्णस्वरोपेतःकृतोऽश्विभ्यांपुनर्युवा ॥ १३ ॥

और भृगुबंशी च्यवन वृद्धहोनेके कारण कुरूपताको प्राप्त होगयेथे उन्हें भी कामीजान इन्हीं अश्विनी कुमारोंने फिर स्वरवर्ण पराक्रम युक्त तरुण बनाया ॥ १३ ॥

एतैश्चान्यैश्चबहुभिःकर्म्मभिर्भिषजांवरौ ।
बभूवतुर्भृशंपूज्याविन्द्रादीनांदिवौकसाम् ॥ १४ ॥

इन सब कर्म्मोंसे तथा अन्य भी बहुतसे कर्म्मोंकरके ये दोनों वैद्योंमें श्रेष्ठ तथा इन्द्रादि देवताओंके अतिशय पूज्य होतेभये ॥ १४ ॥

अथेन्द्रप्रादुर्भावः ॥

संदृश्यदस्रयोरिन्द्रःकर्म्माण्येतानियत्नवान् ।
आयुर्वेदंनिरुद्वेगंतौययाचेशचीपतिः ॥ १५ ॥

अथ इन्द्रसे आयुर्वेदकी उत्पत्ति ॥ अश्विनी कुमारोंके ऐसे अद्भुत कर्म्मोंको देखकर उद्योगी इंद्रने यत्नपूर्वक उनसे इस चमत्कारी आयुर्वेदको मांगा ॥ १५ ॥

नासत्यौसत्यसन्धेनशक्रेणाकिलयाचितौ ।
आयुर्वेदंयथाधीतंददतुःशतमन्यवे ॥ १६ ॥

तबइन्द्रसे प्रार्थना कियेहुये अश्विनीकुमारोंने जैसापढ़ाथा वैसाही आयुर्वेद इन्द्रको पढ़ाया॥१६॥

नासत्याभ्यामधीत्यैषआयुर्वेदंशतक्रतुः ।
अध्यापयामासबहूनात्रेयप्रमुखान्मुनीन् ॥ १७ ॥

तदनन्तर अश्विनीकुमारोंसे पढ़कर इन्द्रने वहीआयुर्वेद आत्रेयादि बहुतसे मुनियोंकोपढ़ाया॥१७॥

अथात्रेयप्रादुर्भावः ॥

एकदाजगदालोक्यगदाकुलमितस्ततः ।
चिन्तयामासभगवानात्रेयोमुनिपुंगवः ॥ १८ ॥

एक समय मुनिश्रेष्ठ भगवान् आत्रेय जी सब जगत्को रोगग्रस्त देखकर चिन्ताकरतेभये॥१८॥

किङ्करोमिकगच्छामिकथंलोकानिरामयाः।
भवन्तिसामयानेतान्नशक्नोमिनिरीक्षितुम्॥ १९॥

कि क्या करूं कहां जाऊं ये लोग कैसे नीरोग हों मैं इन रोगी लोगोंको देख नहीं सक्ताहूं ॥१९॥

दयालुरहमत्यर्थंस्वभावोदुरतिक्रमः।
एतेषांदुःखतोदुःखंममापिहृदयेऽधिकम्॥ २०॥

क्योंकि मैं अत्यन्त दयालु स्वभाववाला हूं और स्वभाव बदल नहीं सक्ता इस कारण इन रोगी लोगोंके दुःखसे मेरेहृदयमें अधिक दुःख होरहा है ॥ २०॥

आयुर्वेदंपठिष्यामिनैरुज्यायशरीरिणाम्।
इतिनिश्चित्यगतवानात्रेयस्त्रिदशालयम्॥ २१॥

इसी हेतु प्राणियों के नीरोग होनेके लिये मैं अवश्य आयुर्वेद पढूंगा ऐसा निश्चय करके आत्रेय जी स्वर्ग को गये ॥ २१॥

तत्रमन्दिरमिन्द्रस्यगत्वाशक्रंददर्शसः।
सिंहासनसमासीनं स्तूयमानंसुरर्षिभिः॥ २२॥
भासयन्तंदिशोभासा भास्करप्रतिमंत्विषा॥
आयुर्वेदमहाचार्य्यंशिरोधार्य्यंदिवौकसाम्॥ २३॥

और वहां इन्द्रके मन्दिरमें जाकर सूर्य्य के समान अपनी कांतिसे दिशाओं को प्रकाशित करते हुये सुरर्षियों करके स्तूयमान आयुर्वेद के महानाचार्य देवताओं के पूज्य इन्द्रको सिंहासनपर बैठे हुये देखा ॥ २२। २३॥

शक्रस्तुतंनिरीक्ष्यैवत्यक्तसिंहासनोययौ।
तदग्रेपूजयामासभृशंभूरितपःकृशम्॥ २४॥
कुशलंपरिपप्रच्छतथागमनकारणम्।
समुनिर्वक्तुमारेभेनिजागमनकारणम्॥ २५॥

तदनन्तर इन्द्रने भी तपस्यासे अति दुर्बल आतेहुये आत्रेयजीको देख सिंहासनसे उठ आगे जा कर कुशल पूर्वक आगमनका कारण पूँछ उनका पूजन किया तब आत्रेयमुनि भी अपने आगमनका कारण कहनेलगे ॥ २४। २५॥

देवराजनराजासिदिवएवयतोभवान्।
विधात्राविहितोयत्नात्त्रिलोकीलोकपालकः॥ २६॥

कि हे देवराज आप केवल स्वर्गहीके राजा नहीं है किन्तु ब्रह्माजीने आपको त्रिलोकीका रक्षक बनाया है ॥ २६॥

व्याधिभिर्व्यथितालोका शोकाकुलितचेतसः।
भूतलेसन्तिसन्तापंतेषांहन्तुंकृपांकुरु॥ २७॥

इसकारण आपसे हमारी यह प्रार्थनाहै कि पृथ्वी में जो लोग रोगोंसे व्यथित होकर शोक से आकुल चित्तवाले होरहेहैं उनके सन्तापको दूर करनेके लिये कृपाकीजिये ॥ २७ ॥

आयुर्वेदोपदेशंमेकुरुकारुण्यतोनृणाम् ।
तथेत्युक्त्वासहस्राक्षोऽध्यापयामासतंमुनिम् ॥ २८ ॥

और हमें आयुर्वेदका उपदेश कीजिये यह सुन दयालु इन्द्र तथास्तु कहकर उन आत्रेय मुनीश्वर को आयुर्वेद पढ़ाते भये ॥ २८ ॥

मुनीन्द्रइन्द्रतःसांगमायुर्वेदमधीत्यसः ।
अभिनन्द्यतमाशीर्भिराजगामपुनर्महीम् ॥ २९ ॥

इसप्रकार इन्द्रसे सांग आयुर्वेद पढ़कर तथा अपने आशिषों से इन्द्रको प्रसन्नकर मुनि श्रेष्ठ आत्रेयजी फिर पृथ्वी को आये ॥ २९ ॥

अथात्रेयोमुनिश्रेष्ठोभगवान्करुणाकरः ।
स्वनाम्नासंहितांचक्रेनरचक्रानुकम्पया ॥ ३० ॥
ततोऽग्निवेशंभेडञ्चजातूकर्णम्पराशरम् ।
क्षीरपाणिंचहारीतमायुर्वेदमपाठयत् ॥ ३१ ॥

तदनन्तर मुनियोंमें श्रेष्ठ आत्रेयजी मनुष्योंके ऊपर दयायुक्तहो आत्रेयनाम संहिताबनातेभये ३०॥ और उसे अग्निवेश भेड़ जातूकर्ण पराशर क्षीरपाणि और हारीत इनसबशिष्योंको पढ़ातेभये ३१॥

तन्त्रस्यकर्ताप्रथममग्निवेशोभवत्पुरा ।
ततोभेडादयश्चक्रुःस्वंस्वंतन्त्रंकृतानि च ॥ ३२ ॥
श्रावयामासुरात्रेयंमुनिवृन्देनवन्दितम् ।
श्रुत्वा च तानितन्त्राणिहृष्टोभूदत्रिनन्दनः ॥ ३३ ॥

इन शिष्योंमेंसे प्रथम अग्निवेश तन्त्रके कर्ता हुये तदनन्तर भेडादि आचार्यों ने भी अपने २ तन्त्रबनाये और अपने २ बनाये हुये तन्त्र मुनिश्रेष्ठ आत्रेय जी को सुनाये उन तन्त्रों को सुनकर आत्रेय जी बहुत प्रसन्न हुये ॥ ३२ । ३३ ॥

यथावत्सूत्रितंतस्मात्प्रहृष्टामुनयोऽभवन् ।
दिविदेवर्षयोदेवाःश्रुत्वासाध्वितितेऽब्रुवन् ॥ ३४ ॥

और वे तन्त्र बहुत अच्छे बनेथे इसकारण वहांपर सुननेवाले अन्यमुनिलोग तथा स्वर्गके देवर्षि समेत देवता लोग भी प्रसन्न होकर साधु साधु कहते भये ॥ ३४ ॥

अथभरद्वाजप्रादुर्भावः ॥

एकदाहिमवत्पार्श्वेदेवादागत्यसंगताः ।
मुनयोबहवस्तेषांनामभिःकथयाम्यहम् ॥ ३५ ॥

परन्तु तप,वेद पाठादि, धर्म्म,ब्रह्मचर्य्यादिव्रत, आयु, इनके हरनेवाले और शरीर को बलचेष्टा रहित तथा कृशकरनेवाले और इन्द्रियोंकी शक्ति के नाशक सर्वांगमें पीड़ाकरनेवाले धर्मादि चतुर्वर्ग में विघ्न स्वरूपहोकर प्राणोंके हरनेवाले रोग यदि पृथ्वी में फैले हुये हैं तो प्राणियों को सुख कहां से हो सक्ता है ॥ ४४ । ४५ ॥

तत्तेषांप्रशमायकश्चनविधिश्चिन्त्योभवद्भिर्बुधैः
योग्यैरित्यभिधायसंसदिभरद्वाजंमुनिंतेऽब्रुवन् ।
त्वंयोग्योभगवन्सहस्रनयनंयाचस्वलब्धंक्रमात्
आयुर्वेदमधीत्ययंगदभयान्मुक्ताभवामोवयम् ॥ ४६ ॥

इस कारण उनरोगों की शान्ति का कोई उपाय आप लोगोंको विचारना चाहिये क्योंकि आप लोग सर्वथा योग्य हैं ऐसा सभा में कहकर सब मुनीश्वर भरद्वाज मुनि से बोले कि हे भगवन् आप हम सबों में श्रेष्ठहैं इस हेतु आपही इन्द्रसे उस आयुर्वेद को मांगिये जिसे हम लोग क्रम से पढ़कर रोगों के भयसे छूट जावें ॥ ४६ ॥

इत्थंसमुनिभिर्योग्यैःप्रार्थितोविनयान्वितैः ।
भरद्वाजोमुनिश्रेष्ठोजगामत्रिदशालयम् ॥ ४७ ॥

इस प्रकार विनययुक्त उन सब मुनीश्वरों करके प्रार्थना किये हुये मुनि श्रेष्ठ भरद्वाज जी स्वर्ग को जातेभये ॥ ४७ ॥

तत्रेन्द्रभवनंगत्वासुरर्षिगणमध्यगम् ।
दृष्टवान्वृत्रहन्तारंदीप्यमानमिवानलम् ॥ ४८ ॥

और वहां इन्द्रके भवनमें जाकर देव ऋषिगणके मध्य बैठेहुये अग्निके समान प्रकाशमान इन्द्र को देखते भये ॥ ४८ ॥

दृष्ट्वैवसमुनिंप्राहभगवान्मघवामुदा ।
धर्मज्ञ,स्वागतन्तेऽथमुनिंतंसमपूजयत् ॥ ४९ ॥

और भगवान्इन्द्रने भी मुनिको देख हर्ष पूर्वक (आपका आगमन शुभहुआहै) यहकहकर उनका पूजन किया ॥ ४९ ॥

सोऽभिगम्यजयाशीर्भिरभिनन्द्यसुरेश्वरम् ।
ऋषीणांवचनंसम्यक्श्रावयन्मुनिसत्तमः ॥ ५० ॥

तदनन्तर भरद्वाज मुनि भी इन्द्रसे मिल उन्हें अपने आशीर्वादोंसे प्रसन्नकर ऋषियोंके वचनों को सुनातेहुये बोले ॥ ५० ॥

व्याधयोहिसमुत्पन्नाःसर्वप्राणिभयंकराः ।
तेषांप्रशमनोपायंयथावद्वक्तुमर्हसि ॥ ५१ ॥

कि हे इन्द्र सब प्राणियोंको भय देनेवाली बहुतसी व्याधियां उत्पन्नहुईहैं उनकी शान्तिका कोई यथार्थ उपाय कहो ॥ ५१ ॥

तमुवाचमुनिंसांगमायुर्वेदंशतक्रतुः।
जीवेद्वर्षसहस्राणिदेहीनीरुग्यनिशम्ययम् ॥ ५२ ॥

ऐसे वचन सुन इन्द्रजी भरद्वाजमुनिसे उस सांग आयुर्वेदको कहतेभये जिसको सुनकर प्राणी नीरोग होकर हजार वर्षतक जीता रहताहै ॥ ५२॥

सोऽनंतपारस्त्रिस्कन्धमायुर्वेदंमहामुनिः ।
यथावदचिरात्सर्वंबुबुधेतन्मनाःशुचिः ॥५३॥

और महामुनि भरद्वाजजी एकाग्रचित्त होकर उस अपार तीन काण्डवाले आयुर्वेदको थोडेही कालमें यथार्थ जानतेभये ॥ ५३ ॥

तेनायुःसुचिरंलेभेभरद्वाजोनिरामयम् ।
अन्यानपिमुनींश्चक्रेनिरुजःसुचिरायुषः॥ ५४ ॥

जिससे आप नीरोगतापूर्वक दीर्घायुहोकर अन्यमुनियोंकोभी रोगरहित दीर्घायु करतेभये ॥५४॥

तत्तन्त्रजनितज्ञानचक्षुषाऋषयोऽखिलाः ।
गुणान्द्रव्याणिकर्म्माणिदृष्ट्वातद्विधिमाश्रिताः ॥ ५५ ॥
आरोग्यंलेभिरेदीर्घमायुश्चसुखसंयुतम् ।
आयुर्वेदोक्तविधिनाऽन्येऽपिस्युर्मुनयोयथा ॥ ५६ ॥

तदनंतर भरद्वाजजीने वह शास्त्र बनाया जिससे उत्पन्न ज्ञानरूप नेत्रके द्वारा सम्पूर्ण ऋषिलोग भी गुण द्रव्य कर्मोंको देख तथा उस शास्त्रमें कहीहुई विधिका आश्रय करके उस प्रकार आरोग्य और सुखयुक्त दीर्घायुको पातेभये जैसे कि आगे आयुर्वेदमें कही हुई विधिसे प्राचीन मुनिलोग नीरोगता पूर्वक सुखयुक्त दीर्घायु वाले होगयेहैं ॥ ५५।५६ ॥

अथचरकप्रादुर्भावः ॥

यदामत्स्यावतारेणहरिणावेदउद्धृतः ।
तदाशेषश्चतत्रैववेदसांगमवाप्तवान् ॥ ५७॥
अथर्वान्तर्गतंसम्यगायुर्वेदञ्चलब्धवान् ।
एकदासमहीवृत्तंद्रष्टुंचरइवागतः ॥ ५८ ॥

अथ चरक से आयुर्वेद की उत्पत्ति जब मत्स्यावतार धरकर विष्णु ने वेद का उद्धार किया तब वहांही शेप जी ने मत्स्यभगवान् से अंगों सहित सम्पूर्ण वेद पढ़ा उसीमें से अथर्वण वेद के अन्तर्गत आयुर्वेद को पाया और एकसमय वही शेप जी पृथ्वीका वृत्तान्त जाननेके लिये (चर) अर्थात् जासूसके समान हो इस लोक को आये ॥ ५७। ५८ ॥

तत्रलोकान्गदैर्ग्रस्तान्व्यथयापरिपीडितान् ।
स्थलेपुबहुपुव्यग्रान्म्रियमाणांश्चदृष्टवान् ॥ ५९ ॥

। में रोगग्रस्त व्यथासे पीड़ित विकल तथा बहुत से मरते हुये मनु-

तानूदृष्ट्वातिदयायुक्तस्तेषांदुःखेनदुःखितः ।
अनन्तश्चिन्तयामासरोगोपशमकारणम् ॥६०॥

अतिदयायुक्त शेषजी उनके दुःखसे दुःखीहोकर रोगोंकी शान्तिके उपायका विचार करतेभये॥६०॥

संचिन्त्यसस्वयंतत्रमुनेःपुत्रोबभूवह ।
प्रसिद्धस्यविशुद्धस्यवेदवेदांगवेदिनः ॥ ६१ ॥

ऐसा विचारकर आपही वेदवेदांगकेजाननेवाले शुद्ध तथा विख्यात किसीमुनिकेपुत्र होतेभये॥६१॥

यतश्चरइवायातोनज्ञातःकेनचिद्यतः ।
तस्माच्चरकनाम्नासौविख्यातःक्षितिमण्डले ॥ ६२ ॥

जो वह चरके समानहोकर आयेथे और उनको किसीने नहीं जाना इस कारण चरक नामसे पृथ्वीमें विख्यात हुए ॥ ६२ ॥

सभातिचरकाचार्योवेदाचार्योयथादिवि ।
सहस्रवदनस्यांशोयेनध्वंसोरुजांकृतः ॥ ६३ ॥
आत्रेयस्यमुनेःशिष्याअग्निवेशादयोऽभवन् ।
मुनयोवहवस्तैश्चकृतंतन्त्रंस्वकंस्वकम् ॥ ६४ ॥
तेषांतंत्राणिसंस्कृत्यसमाहृत्यविपश्चिता ।
चरकेनात्मनोनाम्नाग्रन्थोऽयंचरकःकृतः ॥ ६५ ॥

यह वही साक्षात् शेषजीका अंश भगवान् चरकाचार्य्य बृहस्पति के समान प्रसिद्धहैं जिन्होंने रोगों का नाश किया और पूर्वोक्त आत्रेय मुनिके शिष्य अग्निवेशादि मुनियोंके बनाये हुए शास्त्रोंको शुद्धता पूर्वक इकट्ठा करके चरक नाम ग्रन्थ बनाया ॥ ६३ । ६४ । ६५ ॥

अथ धन्वन्तरिप्रादुर्भावः ॥

एकदादेवराजस्यदृष्टिर्निपतिताभुवि ।
तत्रतेननराहृष्टाव्याधिभिर्भृशपीडिताः ॥ ६६ ॥
तानूदृष्ट्वाहृदयंतस्यदययापरिपीडितम् ।
दयार्द्रहृदयःशक्रोधन्वन्तरिमुवाचह ॥ ६७ ॥

अथ धन्वन्तरिसे आयुर्वेदकी उत्पत्ति, एकसमय इन्द्रकी दृष्टि पृथ्वीपरपड़ी तबदेखा कि मनुष्य व्याधियोंसे पीड़ित होरहेहैं इसप्रकार उन्हे देख इन्द्रका हृदय दयासे पीड़ित हुआ तब दयार्द्रहोकर इन्द्र धन्वन्तरिसे बोले ॥ ६६ । ६७ ॥

धन्वन्तरेसुरश्रेष्ठभगवन्किञ्चिदुच्यते ।
योग्योभवसिभूतानामुपकारपरोभव ॥ ६८ ॥

कि हे सुरश्रेष्ठ भगवन् धन्वन्तरि मैं आपसे कुछ कहताहूं वह यहहै कि आप समर्थ हैं इसकारण प्राणियोंके उपकारमें तत्पर हूजिये ॥ ६८ ॥

चतुर्विंशतितत्त्वानांजीवात्मनश्च स्वरूपनिरूपणायसृष्टिक्रममाह ॥ ३ ॥

चिकित्सा अर्थात् व्याधि दूरकरना इस ग्रन्थका मुख्य प्रयोजन है और चिकित्सा पुरुषकी होती है वह पुरुष महदादि चौवीस तत्त्व व जीवात्मा इन सर्वोंका समुदाय है इस कारण उन चौबीस तत्त्वोंका तथा जीवात्माका स्वरूप कहने के लिये पहिले सृष्टिका क्रम कहते हैं ॥ ३ ॥

आत्माज्योतिश्चिदानन्दरूपोनित्यश्चानिस्पृहः।
निर्गुणःप्रकृतेर्योगात्सगुणःकुरुतेजगत्॥सगुणइच्छादियुक्तः ॥ ४ ॥

अथआत्मा ॥ यथार्थमें आत्मा प्रकाश चैतन्य आनन्दरूप नित्य इच्छा व गुणरहित है परन्तु वही प्रकृतिके योगसे सगुण अर्थात् इच्छादियुक्त होकर जगत्को करताहै ॥ ४ ॥

सत्त्वंरजस्तमश्चेतिगुणास्तेप्रकृतेःसमाः।
साजडापिजगत्कर्त्रीपरमात्मचिदव्ययात् ॥
सतःसाधोर्भावःसत्त्वंप्रकाशकंज्ञानसुखहेतुःरजो
रागात्मकंदुःखहेतुः ताम्यतिग्लानिंप्राप्नोतिअ
नेनेतितमःआवरकंमोहहेतुः तेगुणाः समाःप्रकृ
तिरित्यर्थःतथासतिन्यूनाधिकगुणाःविकृतिः ५ ॥

सत्त्वरज और तम यह प्रकृतिके समगुणहैं जड़भी वह प्रकृति चैतन्य अविनाशी परमात्मा के आभाससे संसारकी उत्पन्न करने वालीहै ॥

सत्त्व- साधुकाभाव- प्रकाशक, ज्ञान और सुखका कारणहै- रज अनुरागमय और दुःखका कारण है जिस्से ग्लानिको प्राप्तहो वहतम बुद्धिका आच्छादनकरने वाला और मोहका कारणहै समयह गुण प्रकृति कहलाती हैं और ऐसा होनेसे न्यून और अधिक गुण विकृति कहलाते हैं ॥ ५ ॥

अथ सुश्रुतमुपदिशन् धन्वन्तरिः प्रकृतेः स्वरूप विशेषणमाह ॥

सर्वभूतानांकारणमकारणं सत्त्वरजस्तमोलक्षणमष्ट
रूपमखिलस्य जगतस्संभवहेतुरव्यक्तं नामेति ॥
अस्यायमर्थः। अव्यक्तंनव्यज्यतेऽस्मिन्नितिअव्यक्तं
मूलप्रकृत्यपरपर्य्यायंतत् सर्वभूतानां कारणंमवा
यिकारणम् । अकारणंन विद्यतेकारणंयस्यतत् ।
सत्त्वरजस्तमोलक्षणंसमसत्त्वरजस्तमः स्वरूपं। अष्ट
रूपंअव्यक्तं महानहङ्कारः पञ्चतन्मात्राणीत्यष्टौरू
पाणियस्यतत् यतइन्द्रियाणांमहाभूतानांचकारण
तयामहदादयोऽपिसप्तप्रकृतयःएवमखिलस्यजगतः
संभवहेतुरव्यक्तमित्युपसंहारः ॥ ६ ॥

अथ सुश्रुतको उपदेश करते हुए धन्वन्तरि जी प्रकृतिका स्वरूप विशेष कहते हैं ॥

सम्पूर्ण भूतोंका कारण अकारण अर्थात् स्वयंकारण से रहित सत्त्वरज और तमोगुणरूपी आठ

इसकारण हमलोग आपके पास उन रोगोंकी शान्ति का उपाय जाननेके लिये आयेहैं आप यत्न पूर्वक हमलोगों को आयुर्वेद पढ़ाइये ॥ ८५ ॥

अंगीकृत्यवचस्तेषां नृपतिरतानुपादिशत् ।
व्याख्यातंतेनतेयत्नाज्जगृहुर्मुनयोमुदा ॥ ८६ ॥

तब उन मुनि पुत्रोंके वचनोंको स्वीकारकर काशिराज उनको पढ़ातेभये और वेभी उनके उस पढ़ायेहुये पाठको आनन्दपूर्वक अच्छीतरह ग्रहण करते भये ॥ ८६ ॥

काशिराजंजयाशीर्भिरभिनन्द्यमुदान्विताः ।
सुश्रुताद्याःसुसिद्धार्था जग्मुर्गेहंस्वकंस्वकम् ॥ ८७ ॥

तदनन्तर जयाशीर्वादोंसे काशिराजको प्रसन्न कर तथा अपने प्रयोजनको सिद्ध करके हर्षपूर्वक वे सुश्रुतादि मुनि पुत्र अपने २ घरोंको जातेभये ॥ ८७ ॥

प्रथमंसुश्रुतस्तेषु स्वतन्त्रंकृतवान्स्फुटम् ।
सुश्रुतस्यसखायोऽपि पृथक्तन्त्राणितेनिरे ॥ ८८ ॥

उनमें से सुश्रुतजी पहिले अपना तन्त्रबनातेभये तदनन्तर उनके मित्रोंने भी अपने२तन्त्रबनाये॥८८॥

सुश्रुतेनकृतंतंत्रं सुश्रुतंबहुभिर्यतः ।
तस्मात्तत्सुश्रुतंनाम्ना विख्यातंक्षितिमण्डले ॥ ८९ ॥

उन तन्त्रोंमेंसे सुश्रुतजीके बनायेहुये तन्त्रको बहुतोंने सुना इसकारण वह पृथ्वीमें सुश्रुत नाम से विख्यात हुआ ॥ ८९ ॥

इत्यायुर्वेदप्रवक्तॄणां प्रादुर्भावः ॥

आयुर्वेदाब्धिमध्यादतिमतिमुनयोयोगरत्नानियत्नात्
लब्ध्वास्वेस्वेनिबन्धेदधुरखिलजनव्याधिविध्वंसनाय ।
तत्तद्ग्रन्थाद्गृहीतैःसुवचनमणिभिर्भावमिश्रश्चिकित्सा-
शास्त्रेजाड्यान्धकारंप्रशमयितुमिमंसंविधत्तेप्रकाशम् ॥ १ ॥

अति बुद्धिमान् मुनियोंने सब प्राणियोंके रोग नाश होनेके लिये आयुर्वेद रूप समुद्रके मध्य से यत्न पूर्वक जिन२ औषधियोंके योगरूप रत्नोंको लेकर अपने २ ग्रन्थोंमें स्थापन किया उन २ ग्रन्थों मे ग्रहण कियेहुये उन्हीं वचनरूप मणियों करके वैद्यकशास्त्रमें अज्ञानरूपी अंधकार दूरकरनेके लिये भावमिश्रजी इसग्रन्थरूपी प्रकाशको करते हैं ॥ १ ॥

श्रीपतिपदप्रसादादाशीर्भिर्भूमिदेवानाम् ।
भावप्रकाशनाम्नाग्रन्थोयंपठ्यतांसर्वैः ॥ २ ॥

लक्ष्मीपतिके चरणोंके प्रसाद तथा ब्राह्मणोंके आशीर्वादसे यह भावप्रकाश नाम ग्रन्थ सबलोगों करके पढ़नेके योग्य होवे ॥ २ ॥

एतस्यनिबन्धस्यफलंचिकित्साचिकित्साचपुरुषस्य
पुरुषस्तुचतुर्विंशतितत्त्वजीवात्मसमवायस्तस्मात्

प्रकृतेर्नामान्याह ।

प्रधानंप्रकृति शक्तिर्नित्याचाविकृतिस्तथा ।
एतानितस्यानामानि पुरुषंयासमाश्रिता ॥ ९ ॥

प्रकृतिकेनाम ॥

प्रधान-प्रकृति शक्ति नित्या और अविकृति यह पुरुषके आश्रयसे रहनेवाली प्रकृतिके नामहैं १०॥

प्रकृतेर्गुणानाह

सत्वंरजस्तमस्त्रीणि विज्ञेयाःप्रकृतेर्गुणाः ॥
तैश्चयुक्तस्यचित्तस्य कथयाम्यखिलान्गुणान् ॥ १० ॥

अब प्रकृतिके गुण कहते हैं ॥

सत्वरज तम यह तीन प्रकृतिके गुण जानने चाहिये और इनसे मिलेहुये चित्तके सम्पूर्ण गुण अब कहते हैं ॥१०॥

अथसत्वयुक्तस्यमनसोगुणानाह ॥

आस्तिक्यप्रविभज्यभोजनमनुतापश्चतथ्यंवचो-
मेधाबुद्धिधृतिक्षमाश्चकरुणाज्ञानचनिर्दम्भता ।
कर्मानिन्दितमस्पृहंचविनयोधर्मस्सदैवादरा-
देतेसत्वगुणान्वितस्यमनसोगीतागुणाज्ञानिभिः ॥

अस्तिधर्ममोक्षपरलोकादिकमितिबुद्ध्या चरतीत्यास्तिकस्तस्यभाव आस्तिक्यं । अनुताप अक्रोध धृति भूतप्रेतस्मरक्रोधलोभाद्यावेशराहित्यं ज्ञानमात्मज्ञान निर्दम्भताकपटाभाव कर्मअनिन्दितंअस्पृहं निष्कामं च ॥ ११ ॥

अबसत्वगुणयुक्तमनकेगुणकहतेहैं ॥

आस्तिक्य- अच्छे प्रकार विभाग करके भोजन अनुताप- सत्यवचन- मेधा- बुद्धि- धृति क्षमा करुणा ज्ञान निर्दम्भता- अनन्दित और अस्पृहकर्म- विनय- आदर पूर्वक सदैवधर्म करना यह सत्व गुणसे युक्तमनके गुणज्ञानियोंने कहे हैं आस्तिक्य (धर्म्म मोक्षऔर पर लोकादिक हैं इस बुद्धि से जो कर्म करता है वह आस्तिकहै और उसके धर्म्म को आस्तिक्य कहते हैं-) अनुताप (क्रोधन- होना) मेधा- (धारणा शक्तिवाली बुद्धि) धृति (भूतप्रेत काम क्रोध और लोभादिकों के आवेशसे रहित होना) ज्ञान (आत्माका ज्ञान) निर्दम्भता (कपट रहित होना) अनिन्दित और अस्पृह कर्म्म (निन्दा और इच्छासे रहित कर्म्म) ११ ॥

रजोगुणयुक्त मनसो लक्षणम् ॥

क्रोधस्ताडनशीलताचबहुलं दुःखंसुखेच्छाधिका
दम्भ कामुकताप्यलीकवचनं चाधीरताऽहङ्कृतिः ।
ऐश्वर्य्यादभिमानितातिशयिता नंदोऽधिकश्चाटनं
प्रख्याताहिरजोगुणेनसहितस्यैतेगुणाश्चेतसः ॥
अलीकवचन मिथ्याकथनं अटनंपृथ्वीपरिभ्रमणं ॥ १२ ॥

रूपवाला सम्पूर्ण संसारकी उत्पत्तिका कारण अव्यक्त है इसका यह तात्पर्य्य है कि अव्यक्त नहीं प्रकट होनेवाला, यह मूलप्रकृति का दूसरानाम है,सम्पूर्ण भूतोंका कारणहै अर्थात् द्रव्योंका संबंधरूपी समवायि कारणहै अकारण अर्थात् जिसका कारण नहो सत्त्वरज स्तमोलक्षण अर्थात् समता को प्राप्तहैं सत्त्वरज और तम जिसमें ऐसा अष्टरूप अर्थात् अव्यक्त महत्तत्त्व अहङ्कार और पञ्च तन्मात्रा यह आठों हैं रूप जिसके जिस कारणसे इन्द्रिय और महाभूतोंके कारण होने से महत्त्वादिक भी सात प्रकृति कहलाते हैं इसी प्रकार सम्पूर्ण संसारकी उत्पत्तिका कारण अव्यक्त है यह सारांश है ॥ ६ ॥

प्रकृतिपुरुषयोःसाधर्म्यमाह ॥

उभावप्यनादीउभावप्यनन्तौउभावप्यलिंगावुभावपिनित्यावुभावप्यपरावुभावपिसर्वगतौ इति उभावप्य नित्यौलयंकाचिदपिनयातः उभावप्यपरौनविद्यते परोऽपरोयाभ्यांतावपरौ॥ ७॥

अब प्रकृति और पुरुषका साधर्म्य कहते हैं ॥

• दोनों अनादि दोनों अनन्त दोनों लक्षण रहित दोनों नित्य दोनों अपर और दोनों सर्वव्यापक हैं दोनों नित्यहैं अर्थात् कहीं कभी नाशको नहीं प्राप्तहोते हैं-दोनों अपर हैं अर्थात् जिनसे परे दूसरा नहीं है ७॥

अथ तयोर्वैधर्म्यमाह ॥

एकातुप्रकृतिरचेतना त्रिगुणा बीजधर्मिणी प्रसवधर्मिण्य मध्यस्थधर्मिणी चेति अचेतनाजडा त्रिगुणातुल्यगुणत्रयात्मिका बीजधर्मिणी सर्वेषां महदादीनां विकाराणां बीजत्वेना वस्थिताप्रसवधर्मिणी पुरुषेणाक्रान्ता क्षोभंप्राप्य साम्यमतिक्रम्य महदहङ्कारादिक्रमेणजगतः प्रसवित्रीअमध्यस्थ धर्म्मिणीसुखदुःखभोगभोगिनीनतुसुखदुःखभोगादुदासीनापुरुषस्तुचेतनावान् निर्गुणोऽप्रसवधर्माबीजधर्मा मध्यस्थधर्म्मा चेतिनिर्गुणः अविद्यामानसत्त्वादिगुणः अबीजधर्मामहाप्रलयेमहदादीनांविकाराणांप्रकृताविवतस्मिन्ननवस्थानात् मध्यस्थधर्मासुखदुःखेच्छाद्वेषादिभ्यउदासीनः ८ ॥

अब उन दोनोंके विपरीत धर्म कहते हैं प्रकृति तो एक अचेतना त्रिगुणा बीजधर्म्म वाली प्रसवधर्मवाली और अमध्यस्थ धर्म्मवालीहै अचेतन अर्थात् जड त्रिगुणा अर्थात् समसत्त्वादि तीनों गुण मय बीजधर्मवाली अर्थात् सम्पूर्ण महत्तत्त्वादि विकारोंके बीजरूपसे स्थित होनेवाली प्रसव धर्मवाली अर्थात् पुरुषसे आक्रान्त हुई क्षोभको प्राप्त होकर समताको छोड़ महत्तत्त्व और अहङ्कारादिकोंके क्रमसे संसारकी उत्पत्ति करनेवाली और अमध्यस्थ धर्मवाली अर्थात् सुख और दुःखों की भोगनेवाली नकि सुख दुःखके भोगसे उदासीन और पुरुष तो चैतन्य निर्गुण अप्रसव धर्म्म वाला अबीज धर्मवाला और मध्यस्थ धर्मवाला है-निर्गुण अर्थात् सत्त्वादि गुणोंसे रहित-अप्रसव धर्म्मवाला अर्थात् संसारके उत्पन्न करनेकी शक्तिसे रहित-अबीज धर्म्मवाला अर्थात् महाप्रलय में महत्तत्त्वादिक विकारोंका अपने में नहीं स्थित रखनेवाला-मध्यस्थ धर्मवाला सुख दुःख इच्छा द्वेष आदिसे उदासीन ॥ ८ ॥

त्रिगुण महत्से उत्पन्न हुआ अहंकार तीनों गुणोंसे युक्तहै और इसीकारण से वह तीन प्रकार काहै सात्त्विक राजस और तामस महत् अर्थात् बुद्धितत्त्वसे त्रिगुणसे अर्थात् तीनोंगुण वाले से अब यह सन्देह होताहै कि महत्तत्त्व तो तीनोंगुण वाला कहाही गयाहै फिर त्रिगुण यह विशेषण क्यों दिया, ठीकहै त्रिगुण इस विशेषणके फिर देनेसे यह प्रकट होताहै कि सत्त्वबहुल अर्थात् अधिक सत्त्वगुणवाला यह विशेषण यहां नहीं लियाजाता इससे यह जानना चाहिये कि अहंकारका उत्पन्न करनेवाला महत्तत्त्व तीनों गुण से युक्त होने परभी अधिक रजोगुण वालाहै क्योंकि रजोगुण से युक्तही अहंकार मनका धर्महै और अहंकार अभिमानरूपी व्यापारके लक्षणवालाहै १५ ॥

अहङ्कारस्त्रिविधस्तानाहसात्त्विक इत्यादि तस्य त्रिविधस्य कार्य्यमाह ॥

जातानिसात्त्विकात्तस्मादिन्द्रियाणिसराजसात् । तानिश्रोत्रंत्वचोनेत्रंरसनानासिकातथा ॥ वाग्घस्तचरणोपस्थंगुदान्येकादशंमन. । पञ्चबुद्धीन्द्रियाण्याहुःप्राक्तनानीतराणि च ॥ कर्मेन्द्रियाणिपञ्चैवकथयन्तिविपश्चितः । बुद्धीन्द्रियाणिबुद्धेराश्रयत्वात्कर्मेन्द्रियाणिकर्माश्रयत्वात् सात्त्विकाऽहंकारजातत्वादिन्द्रियाणिप्रकाशलक्षणानि सत्त्वस्यप्रकाशकत्वात् मनोबुद्धीन्द्रियंविज्ञैःकर्मेन्द्रियमपिस्मृतम्॥मनोऽधिष्ठितमेवेदमिन्द्रियंयत्प्रवर्त्तते ॥ १६ ॥

अहङ्कार तीनप्रकारकाहै यह तो सात्त्विक इत्यादि श्लोक से कहागया
अब तीनप्रकारवाले अहङ्कार के कार्य्य कहे जातेहैं ॥

उस रजोगुण युक्त सात्त्विक अहङ्कार से इन्द्रियां उत्पन्न हुईं वह यह हैं कान त्वचा-नेत्र-जिह्वा नासिका-वाणी हाथ पैर-लिङ्ग गुदा और ग्यारहवांमन· पंडित लोग पहली पांचको बुद्धीन्द्रिय कहते हैं और पिछली वाणी आदि पाचको कर्मेन्द्रिय वर्णन करतेहैं बुद्धिके आश्रय होनेसे बुद्धीन्द्रिय और कर्मके आश्रय होने से कर्मेन्द्रिय कहलाती हैं सतोगुणकेप्रकाशक होने से सात्त्विक अहङ्कार से उत्पन्न हुई इन्द्रियां प्रकाश लक्षणवाली होतीहैं बुद्धिमान् लोग मनको बुद्धीन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय भी कहते हैं क्योंकि इन्द्रिया मनके संयोगही से अपने २ कर्म में प्रवृत्त होतीहैं ॥ १६ ॥

तत्रेन्द्रियाणां विषयानाह ॥

शब्दस्पर्शरूपंच रसोगन्धोह्यनुक्रमात् । बुद्धीन्द्रियाणांविषयाः समाख्यातामहर्षिभिः ॥ वाच्यंग्राह्यं च गंतव्यमानन्दत्याज्यमेवच । कर्मेन्द्रियाणांविषया ज्ञातव्याविषयाहृदः ॥हृद.मनसः॥ तामसादप्यहंकारा तन्मात्राणिसराजसात् । पञ्चाल्पसत्त्वसम्बन्धात्तान्लिंगानि भवन्तिहि ॥ शब्द तन्मात्रकं-स्पर्श तन्मात्रकं-रूपतन्मात्रकं-रसतन्मात्रकं-गधतन्मात्रक मिति ॥ १७ ॥

अब इन्द्रियोंके विषय कहते हैं ॥

महर्षियोंने क्रम पूर्वक शब्दस्पर्श रूप रस और गंध यह बुद्धीन्द्रियोंके विषय कहे हैं-बोलना ग्रहण करना गमन करना आनन्द करना और मलका त्याग यह कर्मेन्द्रियोंके विषय जानने चाहिये और यही सम्पूर्ण शब्दादि विषय हृदयकेभी जानने चाहिये हृदयके अर्थात् मनके रजोगुण युक्त

रजोगुणसे युक्त मनके लक्षण ।

क्रोध मारपीट का स्वभाव-बहुत दुःख-सुखकी बहुत इच्छा कपट-संभोग करनेकी इच्छा अलीक वचन- धैर्य्यका न होना-अहंकार-ऐश्वर्य्यसे अभिमान होना-बहुत आनन्द होना-और बहुत घूमना यह रजोगुणसे युक्तचित्तके गुण प्रसिद्ध हैं अलीकवचन (मिथ्या बोलना) अटन (पृथ्वी पर घूमना) ॥ १२ ॥

अथ तमोयुक्त मनसो लक्षणं ।

नास्तिक्यंसुविषण्णतातिशयितालस्यं च दुष्टामतिः
प्रीतिर्निंदितकर्म्मशर्मणिसदा निद्रालुताऽहर्निशम् ।
अज्ञानं किलसर्वतोपि सततं क्रोधांधता मूढता
प्रख्याताहितमोगुणेनसहितस्यैतेगुणाश्चेतसः ॥
तत्रप्रभूतसत्त्वस्तु सात्त्विकः पुरुषः स्मृतः ।
राजसस्तामसश्चैव त्रिविधस्तेनमानवः ॥ १३ ॥

अब तमोगुण युक्त मनके लक्षण कहते हैं ।

नास्तिकता-बहुत दुःखित होना बहुत आलस्य होना दुष्टबुद्धि बुरेकार्य्य और आनन्दमें प्रीति रात्रिदिन सोना--सब ओरसे अज्ञान,-सदैव क्रोधसे अन्धा होना- और मूर्खता यह तमोगुण से युक्त मनके गुण प्रसिद्धहैं--इनमें अधिक सत्त्व गुणवाला पुरुष सात्विक- अधिक रजोगुणवाला राजस और अधिक तमोगुणवाला तामस कहाताहै--इस रीतिसे तीनप्रकार के पुरुष होते हैं ॥ १३ ॥

ततोभवन्महत्तत्त्वंबुद्धितत्त्वापराभिधम् । त्रिगुणंसत्त्वबहुलंनिर्म्मलंस्फटिकोपमम् ॥ चिच्छायाप्राप्तचैतन्यंतदिच्छामयमीरितम् । ततःप्रकृतेस्त्रिगुणंत्रयोगुणायत्रततत्तथस त्त्वबहुलं अत्रायमभिप्रायः यथा निश्चलेहृदादौबहुद्रव्यपातात्तदीयंजलंवर्द्धते तथा चिद्रूपपुरुषेणाक्रमणात्तुल्यगुणत्रयात्मिकायाः प्रकृतेर्ज्ञानहेतुप्रकाशः सत्त्वगुणोवृद्धःप्रवृद्ध सत्त्वतः प्रकृतेस्सत्त्वबहुलंबुद्धितत्त्वमभवत् ॥ १४ ॥

उस प्रकृतिसे महत्तत्त्व उत्पन्न हुआ जिसका कि दूसरानाम बुद्धितत्त्वहै और वह त्रिगुण अधिक सत्त्व गुणवाला स्फटिक के समान निर्म्मल चैतन्यकी छाया से प्राप्तहुये चैतन्यवाला इच्छामय कहागयाहै--त्रिगुण अर्थात् तीनों गुणहैं जिस में और वह अधिक सत्त्वगुणवालाहै यहां यह अभिप्रायहै कि जैसे निश्चल तडागादिकों में बहुत वस्तुओं के गेरने से उसकाजल बढ़ताहै उसी प्रकार चैतन्यरूप पुरुषके द्वारा व्याप्त होने से समान तीनों गुणवाली प्रकृति के ज्ञानका कारण प्रकाशरूप सत्त्वगुण बढ़ता है और बढ़ेहुये सत्त्वगुणवाली प्रकृति से अधिक सत्त्वगुणवाला महत्तत्त्व उत्पन्न होताहै॥ १४ ॥

महतस्त्रिगुणाज्जातोऽहङ्कारस्त्रिगुणान्वितः । सात्त्विकोराजसश्चापितामसश्चेतिस त्रिधा ॥ महत बुद्धितत्त्वात्त्रिगुणात्त्रयोगुणा यत्र ततः ननुमहत्तत्त्वंत्रिगुणमुक्तमेतत्किमर्थंमहतस्त्रिगुणादितिविशेषणसत्यं त्रिगुणादितिपुनर्विशेषणादुक्तं सत्त्वबहुलमितिविशेषणमत्रनानुवर्त्तते तेनाऽहङ्कारोत्पादकं महत्तत्त्वंत्रिगुणमपिरजोबहुलंबोद्धव्यम् अहङ्कारस्यरजोगुणान्वितस्यमनोधर्म्मत्वात् अहङ्कारोभिमानव्यापारलक्षणः ॥ १५ ॥

रूपंनेत्रेन्द्रियंपाकःसन्तापस्तीक्ष्णतातथा।
वर्णोभ्राजिष्णुतामर्शःशौर्य्यंवह्नेर्गुणाअमी॥

रूपंलावण्यंपाकःउदराग्निनाहारपाकःसन्तापऔष्ण्यंतीक्ष्णताआशुकारितावर्णो गौरादिःभ्राजिष्णुतादीप्तिःअमर्षःक्रोधः॥२१॥

रूप नेत्रेन्द्री पाक सन्ताप तीक्ष्णता वर्ण भ्राजिष्णुता अमर्ष शूरता यह अग्निके गुणहैं रूप (लावण्य) पाक (उदरकी अग्निसे भोजनका परिपाक) संताप (उष्णता) तीक्ष्णता (शीघ्रता) वर्ण (श्वेतरक्तादि) भ्राजिष्णुता (दीप्ति) अमर्ष (क्रोध) २१॥

रसोरसेंद्रियंशैत्यं स्नेहश्चगुरुतातथा।
सर्वंद्रवसमूहश्च शुक्रंवारिगुणास्मृताः॥ २२॥

रस रसनेन्द्री (जिह्वा) शीतता स्नेह (चिकनापन) गुरुता (भारीपन) सम्पूर्ण बहनेवाली वस्तु और वीर्य्य यह जलके गुण कहेहैं॥ २२॥

गन्धोघ्राणेंद्रियंचापि काठिन्यंगौरवंतथा।
वसुंधरागुणाएते गदितागुणवेदिभिः॥ २३॥

गन्ध घ्राणेन्द्री (नासिका) कठिनता और भारीपन यह गुणज्ञ पुरुषोंने पृथ्वीके गुणकहे हैं॥२३॥

शब्दःस्पर्शश्चरूपंच रसोगंधश्चतत्क्रमात्।
तन्मात्राणांविशेषास्युः स्थूलभावमुपागताः॥

तत्क्रमात् शब्दतन्मात्रादिक्रमात् विशेषाः अनुभवयोग्यैस्सुखदुःखमोहरूपैर्धर्मै र्विशिष्यंत इति विशेषाः अत्रकर्मणि घञ् प्रत्ययः तन्मात्राणि त्वविशेषानि यतस्तान्य नुभवयोग्यैस्सुखादिभिर्विशेष्टुंन शक्यन्ते सूक्ष्मत्वात्॥ २४॥

शब्द स्पर्श रूप रस और गन्ध यह क्रमसे स्थूलता को प्राप्तहोकर तन्मात्राओंके विशेषहैं तत्क्रमात् अर्थात् शब्द तन्मात्रादिकोंके क्रमसे--अनुभवके योग्य सुख दुःख और मोहरूपी धर्मोंसे जो भेदको प्राप्तहों वह विशेषहैं यहाँ (विशेषशब्दमें) कर्म में घञ्प्रत्ययहै और तन्मात्रा विशेष नहीं हैं क्योंकि यह सूक्ष्मताके कारणसे अनुभव के योग्य सुखादिकों से भिन्न नहीं कीजासक्ती हैं॥ २४॥

प्रकृतेःकारणायोगान्मताप्रकृतिरेवसा।
महत्तत्वादयस्सप्तशक्तेर्विकृतयःस्मृताः॥

प्रकृतिरेवकारणभेवनतुकस्यचित्कार्य्यमित्यर्थःमहत्तत्वादयस्सप्तमहानहङ्कारःपञ्च तन्मात्राणीति–शक्तेःप्रकृतेर्विकृतयःकार्य्याणि॥ २५॥

प्रकृतिका कारण न होनेसे वह कारणही है अर्थात् किसी का कार्य्य नहीं है सातों महत्तत्वादिक प्रकृतिके कार्य्य कहेगये हैं प्रकृतिरेव-अर्थात् कारणही है किसीका कार्य्य नहीं है सात महत्तत्वादिक अर्थात् महत्तत्व अहङ्कार और पंचतन्मात्रा शक्तेः (प्रकृतिके) विकृतयः (कार्य्य)॥ २५॥

इन्द्रियाणांचभूतानांकारणत्वान्महर्षिभिः।
महत्तत्वादयस्सप्तप्रोक्ताःप्रकृतयोपिच॥

थोड़े सतोगुण वाले तामस अहंकारसे उनके लक्षणोंसे युक्त पांच तन्मात्रा उत्पन्न होती हैं वह यह हैं कि शब्दतन्मात्रा स्पर्शतन्मात्रा रूपतन्मात्रा रसतन्मात्रा और गंधतन्मात्रा ॥ १७ ॥

तानितुतल्लिंगानिमोहादिलिंगानितान्यद्भुतस्वभावानिबाह्येन्द्रीग्राह्याणि सासामात्राय स्मिंस्तत्तन्मात्रकं। तन्मात्रेभ्यो वियद्वायुवह्निवारिवसुन्धरा। एतानिपञ्चजायन्तेमहाभूतानितत्क्रमात् ॥ एकोत्तरपरिवृद्ध्यावियदादयोजायन्तइत्यर्थः तद्यथाशब्दतन्मात्राच्छब्दगुणंवियज्जायते शब्दतन्मात्रसहितात्स्पर्शतन्मात्राच्छब्दस्पर्शगुणोवायुर्जायते शब्दतन्मात्रस्पर्शतन्मात्रसहिताद्रूपतन्मात्राच्छब्दस्पर्शरूपगुणोवह्निर्जायते शब्दतन्मात्रस्पर्शतन्मात्ररूपतन्मात्रसहिताद्रसतन्मात्राच्छब्दस्पर्शरूपरसगुणंवारिजायते शब्दतन्मात्रस्पर्शतन्मात्ररूपतन्मात्ररसतन्मात्रसहितात् गन्धतन्मात्राच्छब्दस्पर्शरूप रस गन्धगुणावसुन्धराजायते ॥ १८ ॥

और वह तल्लिंगानि अर्थात् मोहादिकों के चिह्नों से युक्त विलक्षण स्वभाववाली बाह्येन्द्री अर्थात् नेत्रादिकोंसे ग्रहण करनेके योग्यहैं वह वह मात्रा जिसमें हैं वह तन्मात्रक हैं तन्मात्राओं से आकाशवायु अग्नि जल पृथ्वी यह पांच महाभूत क्रमसे उत्पन्न होतेहैं एक एकके उत्तरोत्तर बढ़ने से आकाशादिक उत्पन्न होतेहैं वह जैसे शब्द तन्मात्रासे शब्दगुण वाला आकाश उत्पन्न होता है. शब्दतन्मात्रायुक्त स्पर्श तन्मात्रा से शब्द स्पर्शगुणवाला वायु उत्पन्न होताहै शब्द तन्मात्रा स्पर्श तन्मात्रायुक्त रूपतन्मात्रा से शब्दस्पर्शरूप गुणवाला अग्नि उत्पन्न होताहै शब्दतन्मात्रा स्पर्श तन्मात्रा रूपतन्मात्रा युक्त रसतन्मात्रासे शब्द स्पर्शरूपरस गुण वाला जल उत्पन्न होता है शब्द तन्मात्रा स्पर्शतन्मात्रा रूपतन्मात्रा रसतन्मात्रा युक्त गन्धतन्मात्रासे शब्द स्पर्शरूप रसगन्ध गुण वाली पृथ्वी उत्पन्नहोती है ॥ १८ ॥

अथ महाभूतानां गुणानाह ॥

शब्दश्श्रोत्रेन्द्रियंवापिच्छिद्राणिचविविक्तता।
वियतःकथिताएते गुणागुणविचारिभिः ॥

विविक्तताशरीराणांभावानांशिरास्नाय्वस्थिपेशी-प्रभृतीनांजातिव्यक्तिभ्यांमिथःपृथक्त्वम् ॥ १९ ॥

अथमहाभूतोंके गुणकहतेहैं ॥

शब्द- कर्णेन्द्री- छिद्र और विविक्तता यह गुणज्ञ लोगोंने आकाशके गुणकहे हैं विविक्तता अर्थात् शरीरों के शिरा-(छोटीनसे) स्नायु मोटीनसें) हड्डी पेशी (मांसकी थैली) आदिक भावोंकी जाति और व्यक्तिसे परस्पर अलग होना (जैसेछोटीनस और बड़ीनसका अलग होना जातिका अलग होनाहै और बड़ी२ या छोटी२ नसोंका अलग होना व्यक्तिका पृथक् पनाहै) ॥ १९ ॥

स्पर्शःत्वगिन्द्रियञ्चापिलघुतास्यन्दनंतनोः।
चेष्टाःसर्वशरीरस्यवायोरेतेगुणाःस्मृताः ॥ २० ॥

स्पर्श- त्वचा इन्द्री- शरीरका हलकापन- हिलना भुलना और सम्पूर्ण शरीर की चेष्टा यह वायुके गुण कहे हैं ॥ २० ॥

इच्छा द्वेष सुख दुःख विषयज्ञान प्रयत्न मन संकल्प विचारणा स्मृति बुद्धि कलाओं का जानना प्राणका ऊपरसे निकालना गुदासे वायुको नीचे निकालना नेत्रोंका बन्द करना और खोलना कार्य्य करनेमें उत्साह यह जीवके गुणहैं इच्छा (सुखके लिये अभिलाष) द्वेष (दुःखके लिये मन की प्रवृत्ति) सुख (प्रीति) दुःख (प्रीतिका न होना) विषय ज्ञानं (शब्दादि विषयोंका जानना) प्रयत्न (कार्य्यमें तत्पर होना) मन (यह पदार्थहै या नहीं इसप्रकारके सन्देह वाला) संकल्प (मानस कर्म) विचारणा (तर्क वितर्कसे वस्तुका निश्चय करना) स्मृति (पहिले अनुभव कीहुई वस्तुका स्मरण करना) बुद्धि (निश्चयरूप) कला विज्ञता (शिल्प आदि शास्त्रोंका जानना) प्राणस्योपरि यापनं (हृदयमें स्थित वायुका मुखादिकोंमें लेजाना) गुदवशाद्वायोरधःप्रेरण (अपान वायुका गुदाके द्वारा नीचेसे निकालना) नेत्रोन्मेषनिमेषौ (नेत्रोंका बन्द करना और खोलना) कृत्यकर्णोत्साहः (कार्य्यके प्रारम्भमें सामर्थ्यके अनुसार उत्साह) जीवमें मनके द्वारा युक्त जीवात्माके यह इच्छादिक गुणहैं २९॥

इति श्रीमिश्रलटकनतनय श्रीमन्मिश्रभाव विरचितस्य भावप्रकाशस्य भाषा टीकायां सृष्टिप्रकरणं प्रथमं समाप्तम् ॥

चिकित्सायांशरीरी ह्यधिकृतःसशरीरीयथोत्पद्यते तद्बोधयितुंगर्भोत्पत्तिक्रममाह॥ गर्भोत्पत्ति भूमिस्तुरजस्वलास्त्री। (ततोरजस्वलास्वरूपमाह)॥ १ ॥द्वादशाद्वत्सराद्रूर्ध्वमापञ्चाशत्समाःस्त्रियः। मासि मासिभगद्वारा प्रकृत्यैवार्त्तवंस्रवेत् ॥ आर्त्तवस्रावदिवसादृतुःषोडशरात्रयः। गर्भग्रहणयोग्यस्तुसएव समयःस्मृतः॥ २॥

वैद्यकशास्त्रमें शरीर धारीही मुख्य किया गयाहै, इसकारण से वह शरीर धारी जिस प्रकार उत्पन्न होताहै उसे प्रकट करनेको गर्भोत्पत्ति के क्रमको कहतेहैं और गर्भोत्पत्तिका स्थान रजस्वला स्त्रीहै इससे (रजस्वला का स्वरूपकहतेहैं) १२बारह वर्ष से ऊपर पचास वर्षतक स्त्रियोंका स्वभावही से महीने २ में योनिके द्वारा रुधिर बाहर निकलताहै रुधिर निकलने के दिन से १६ रात्रि ऋतु कहलातीहैं और वही समय गर्भ धारण करने के योग्य कहा गयाहै ॥ २॥

सर्व्वासामेवचतुर्वर्णस्त्रीणांसर्ववादि सम्मतः। पूर्व्वोक्तःसमयःग्रंथान्तरेतुविशेषः ॥ तद्यथा स्नानदिवसादूर्ध्वंद्वादशरात्रावधिर्ब्राह्मण्याः दशरात्रावधि क्षत्रियायाः अष्टरात्रावधि वैश्यायाःषड्रात्रावधि शूद्रायाःगर्भधारणे शक्तिः ॥ ३ ॥

सम्पूर्ण चारों वर्णोंकी स्त्रियोंका पहले कहा गया समय सम्पूर्ण वादियोंने मानाहै परन्तु अन्य ग्रन्थोंमें विशेषताहै जैसे कि स्नानके दिनसे बारह रात्रितक ब्राह्मणीकी दश रात्रितक क्षत्रियाणी की आठ रात्रितक वैश्याकी और छः रात्रितक शूद्राकी गर्भ धारण करनेमें शक्तिहै ॥ ३ ॥

अथ रजस्वलाया नियमानाह ॥

आर्त्तस्रावदिवसादहिंसा ब्रह्मचारिणी। शयीतदर्भशय्यायांपश्येदपिपतिन्नच ॥ करेशरावेपर्णे वाहविष्यंत्र्यहमाहरेत्। अश्रुपातंनखच्छेदमभ्यङ्गमनुलेपनम् ॥ नेत्रयो

तथासति प्रकृतिर्महानहङ्कारः पंचतन्मात्राणिचेत्यष्टौप्रकृतयः ॥ २६ ॥

महर्षियोंने सातमहत्तत्त्वादिकों को इन्द्री और भूतोंके कारण होनेसे प्रकृति भी कहाहै ऐसा होने से प्रकृति महत्तत्त्व अहङ्कार और पंचतन्मात्रा यह आठ प्रकृतिहैं ॥ २६ ॥

दशेन्द्रियाणिचित्तंचमहाभूतानिपंचच । एतानिसृष्टिजानंद्भिर्विकाराःषोडशस्मृताः ॥ २७ ॥ विकाराःकार्य्याणिएवंचतुर्विंशतिभिस्तत्त्वैसिद्धेवपुर्गृहे । जीवात्मानियतेर्निम्नोवसतिस्वान्तदूतवान् ॥ अत्रशब्दादीनांवियदादिमहाभूतगुणानांधर्मिभ्योभिन्नतयापृथक्त्वंनिरस्यन्नुक्तानान्तत्त्वानामुपसंहारमाहचतुर्विंशतिभिरितितानिचप्रकृतयोष्टौ विकाराःषोडशेति महत्तत्त्वादीनिप्रकृत्यादीनां भावाः नियतेश्शुभाशुभकर्म्मणः निम्नआयत्तः स्वान्तदूतवान्मनोदूतियुक्तः सदेहीकथ्यतेपापपुण्यदुःखसुखादिभिर्व्याप्तोबद्धश्चमनसा कृत्रिमैःकर्मबन्धनैःसजीवात्मातस्यदेहिनः शरीरजीवात्मनोःसंयोगकारकमनसासंयोगे येयेगुणाउत्पद्यन्तेतानाह ॥ २८ ॥

सृष्टिके जाननेवालों ने दशइन्द्री चित्तपंच महाभूत यह सोलह विकारकहे हैं विकाराः (कार्य्य) इसप्रकार चौबीस तत्त्वों से शरीररूपी गृहके बनजानेपर शुभ और अशुभकर्म्मों के वशीभूत जीवात्मा मनरूपी दूतकेसाथ रहताहै यहाँ आकाशादि महाभूतों के गुण शब्दादिकों का आकाशादिकों से भिन्नता न होनेके कारण भेदको हटातेहुए चतुर्विंशतिभिः इत्यादि श्लोकसे कहेभये तत्त्वोंका उपसंहार अर्थात् निचोड़ करते हैं और वह आठप्रकृति और सोलह विकार मिलकर चौबीसहैं—महत्तत्त्वादिक अर्थात् प्रकृत्यादिकोंके भाग नियतेः अर्थात् शुभाशुभकर्म्मों के निम्न अर्थात् आधीन स्वान्तदूतवान अर्थात् मनरूपी दूत युक्त वह देही कहलाताहै पापपुण्य और सुख दुःखादिकों से व्याप्त और मनके द्वारा कृत्रिम कर्म्म के बन्धनों से बंधाहुआ वह जीवात्माहै उसदेही के शरीर और जीवात्मा के संयोग करानेवाले मनके संयोगहोने पर जो जो गुण उत्पन्नहोतेहैं उनको कहते हैं ॥ २७।२८ ॥

इच्छाद्वेषसुखानिदुःखविषयज्ञानंप्रयत्नोमनःसंकल्पश्चविचारणास्मृतिरथोबुद्धिःकलाविज्ञाता । प्राणस्योपरियापनंगुदवशाद्वायोरधःप्रेरणं नेत्रोन्मेषनिमेषकृत्यकर्णोत्साहाश्च जीवेगुणा ॥ इच्छासुखहेतुरभिलाषः द्वेषोदुःखहेतुर्मनः प्रवृत्तिः सुखंप्रीतिः दुःखमप्रीतिः विषयज्ञानं शब्दादिज्ञानंप्रयत्नःकार्य्येतात्पर्य्यंमनः संशयात्मकंतस्यकर्मसंकल्पः विचारणा ऊहापोहाभ्यांवस्तुविमर्षः स्मृतिः पूर्व्वानुभूतस्यार्थस्यस्मरणंबुद्धिः निश्चयात्मिका कलाविज्ञता शिल्पशास्त्रादिबोधः प्राणस्यहृदयस्थितस्यवायोः उपर्य्यापनंमुखादिप्रतिनयनं गुदवशाद्वायोरधःप्रेरणमपानस्याधः प्रेरणंनेत्रोन्मेषनिमेषौनेत्रयोरुन्मीलननिर्मीलनेकृत्यकर्णोत्साहः कार्य्यारम्भेसामर्थ्येनोत्साहः जीवेमनोयुक्तस्यजीवात्मनोमी इच्छादयोगुणाः ॥ २९ ॥

इतिश्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचितेभावप्रकाशेसृष्टिप्रकरणं प्रथमंसमाप्तम् ॥ १ ॥

स्त्रीपतिके संगभोगकरे और जो न निवृत्तहुआ हो तो न करे क्योंकि कहाहै कि जैसे वहतेहुए पानी में डालीहुई वस्तु नीचेको चलीजाती है वैसेही वीर्य्यभी वहतेहुए रुधिर में डालाहुआ नीचे को चलाजाताहै ॥ ६ ॥

अथ भर्तृकृत्यमाह ॥

तत्रगर्भाधानेनिषिद्धं विहितंचकालंतयोः फलञ्चाह। आयुःक्षयभयाद्भर्त्ताप्रथमेह्नि वसेत्स्त्रियम् ॥ द्वितीयेऽपिदिनेरत्येत्यजेदृतुमतींतथा ॥ तत्रयश्चाहितोगर्भोजायमनो न जीवति। आहितोयस्तृतीयेऽह्निस्वल्पायु विकलाङ्गक ॥ अतश्चतुर्थीषष्ठीस्यादष्टमी दशमीतथा। द्वादशीवापियारात्रिस्तस्यान्तांविधिनाभजेत् ॥ विधिना गर्भाधानोक्तवि विना अत्रोत्तरोत्तरं विद्यादायुरारोग्यमेवच (तत्रान्तरे)प्रजासौभाग्यमैश्वर्य्यंबलञ्चा भिगमात् फलम् ॥ ७ ॥

अथ पतिके कृत्यकहते हैं ॥

उस गर्भाधान में निषेध कियेहुये और विधान कियेहुए दोनों समयोंका फलकहते हैं-पतिको उचितहै कि प्रथम तथा द्वितीय दिनमें भी ऋतुवती स्त्रीसे संभोगनकरे क्योंकि आयुका क्षयहोताहै-उनपहले और दूसरे दिनो में रहाहुआ गर्भ उत्पन्न होकर नहीं जीताहै और तीसरेदिन का रहाहुआ गर्भथोड़ी उमरवाला और शिथिल अंग युक्तहोताहै इसकारणसे चौथी छठी आठवीं दशवीं तथा बारहवीं रात्रिमे विधिपूर्व्वक उसका सेवनकरे अर्थात् संभोगकरे विधिपूर्व्वक अर्थात् गर्भाधान मे कहीहुई विधिसे- इन रात्रियोंमें उत्तरोत्तर अवस्था और आरोग्यकी वृद्धि होती है दूसरे तन्त्रमें ऐसा कहाहै कि संभोग करने से सन्तान सौभाग्य बल और ऐश्वर्य्य प्राप्तहोताहै ॥ ७ ॥

मनोभवागारमुखेऽबलानांतिस्रोभवन्तिप्रमदाजनानाम्। समीरणाचन्द्रमुखीचगौरी विशेषमासामुपवर्णयामि ॥ प्रधानभूतामदनातपत्रेसमीरणानामविशेषनाडी। तस्या मुखेयत्पतितंतुवीर्य्यं तन्निष्फलंस्यादितिचंद्रमौलिः ॥ याचापराचान्द्रमसीचनाडी कं दर्पगेहे भवतिप्रधाना। सामुंदरीयोषितमेवसूतेसाध्याभवेदल्परतोत्सवेषु ॥ गौरीति नाडीयदुरस्थगर्भेप्रधानभूता भवतिस्वभावात्। पुत्रं प्रसूते बहुधांगनासा कष्टोपभो ग्यांसुरतोपविष्टा ॥ ८ ॥

स्त्रियोंकी योनिके मुखमें तीन नाड़ियाहोतीहै समीरणाचन्द्रमुखी और गोरी अब इनकी विशेषता का वर्णन करतेहैं योनिमें समीरणा नाम विशेष नाड़ी प्रधानहै उसके मुखमें पड़ाहुआ वीर्य्य व्यर्थ होताहै अर्थात् गर्भको नहीं उत्पन्न करताहै यह चन्द्रमौलिका मतहै और जो दूसरी चन्द्रमुखी नाड़ी योनिमें प्रधानहै वह कन्याहीको उत्पन्न करतीहै और थोड़ेसे संभोगमें साध्य होतीहै अर्थात् गर्भ धारण करतीहै और गर्भमें स्वभावहीसे प्रधानभूत जो गौरी नाड़ीहै वह सुरतिमें प्राप्त कष्टसे भोग्य करने के योग्य बहुधा पुत्रही उत्पन्न करतीहै ८ ॥

अथ युग्मायुग्मरात्रीणां फलमाह ॥

युग्मासुपुत्राजायंतेस्त्रियोऽयुग्मासुरात्रिषु। तत्रदम्पत्योः सम्भोगेयादृक् पुमान्युक्त स्तादृगुच्यते ॥ स्नातश्चन्दनलिप्तांगःसुगन्धसुमनोऽर्च्चितः ॥ भुक्तवान्यःसुवसनःसुवेशः

रञ्जनंस्नानं दिवास्वापंप्रधावनम्। अत्युच्चशब्दश्रवणं हसनंबहुभाषणम् ॥ आयासं भूमिखननंप्रवानञ्चविवर्ज्जयेत् ॥ ४ ॥

अथ रजस्वलाके नियम कहतेहैं ॥

रजस्वला स्त्री ऋतुकालके प्रथम दिनसे हिंसा रहित ब्रह्मचर्य्ययुक्त कुशकी शय्यापर सोवे और पति को भीनदेखे हाथ में सकोरेमें अथवा पत्तलमें तीनदिन तक हविर्ष्यान्न भोजनकरे अश्रुपात नखोंका काटना तेललगाना- चन्दनादि सुगन्धित वस्तु धारण करना- नेत्रों में अंजन लगाना- स्नान करना- दिनका सोना दौड़ना बहुत ऊंचे शब्द का सुनना- हंसना- बहुत बोलना परिश्रमकरना पृथ्वीकाखोदना- हवाखाना इनसब बातोंको छोडदे ॥ ४ ॥

अथ तस्या नियम करणेदोषानाह ॥

अज्ञानाद्वाप्रमादाद्वा लोभाद्वादैवतश्चवा । सावेत्कुर्य्यान्निषिद्धानि गर्भोदोषांस्त दाप्नुयात् ॥ एतस्यारोदनाद्गर्भोभवेद्विकृतलोचनः । नखच्छेदेन कुनखीकुष्ठीत्वभ्यङ्गतो भवेत् ॥ अनुलेपात्तथास्नानाद्दुःखशीलोऽञ्जनादहक्। स्वापशीलोदिवास्वापाच्चञ्चलः स्यात्प्रधावनात् ॥ अत्युच्चशब्दश्रवणाद्बधिरःखलुजायते । तालुदन्तोष्ठजिह्वासुश्यावो हसनतोभवेत् ॥ प्रलापी भूरिकथनादुन्मत्तस्तुपरिश्रमात् । स्खलतेभूमिखननादुन्मत्तो वात सेवनात् ॥ ५ ॥

इन नियमोंके न करने में दोषकहते हैं ॥

अज्ञानसे असावधानी से लोभ से अथवा दैवयोग से जो रजस्वला स्त्री निषिद्ध कार्य्योंको करे तो गर्भ दोषोंको प्राप्त होताहै जो रजस्वला स्त्रीरोवे तो गर्भके नेत्र विकारको प्राप्तहोते हैं नखों के काटनेसे बिगडे नखोंवाला गर्भ होता है और तेल लगानेसे गर्भ कुष्ठी होताहै-चन्दनादिकों के लगाने से और स्नानसे गर्भ दु खी होताहै-अंजनलगानेसे गर्भ अन्धाहोताहै दिनके सोनेसे गर्भबहुत सोनेवाला होताहै दौडने से चपलहोताहै-बहुत ऊंचे शब्दके सुनने से बहरा होताहै हसने से गर्भका तालु दांत ओष्ठ-और जिह्वामें श्यामता होती है-बहुत बोलने से गर्भ बकवादी होताहै परिश्रमकरने से मतवाला होताहै पृथ्वी के खोदने से गिरताहै हवाखाने से उन्मत्त होताहै ॥ ५ ॥

अथरजस्वला कृत्यमाह ॥

पूर्व्वंपश्येद्दृतस्नातायादृशं नरमंगना । तादृशजनयेत् पुत्रंतत:पश्येत्पतिंप्रियम् ॥ प्रियमितिभर्त्तुर्य्यनासन्ने पुत्रादिकमपि पश्येत्चतुर्थेदिवसेऽपिरजोनिवृत्तौस्त्री पतिना संगच्छेत्नतुरजोऽनुवृत्तौ। यत आह ॥ प्रवहत्सलिले क्षिप्तद्रव्यगच्छत्यधोयथा ॥ तथा वहतिरक्ते तु क्षिप्तंवीर्य्यमधोव्रजेत् ॥ ६ ॥

अथरजस्वलाकी कृत्यकहते हैं ॥

ऋतुकाल में स्नानकरनेवाली स्त्री जैसे पुरुषको देखती है वैसेही पुत्रको उत्पन्न करती है इस कारणसे पहले अपने पतिको अथवा किसी प्रिय पुरुषको देखे प्रिय शब्द से यह तात्पर्य्य है कि पतिके उपस्थित न होनेपर पुत्रादिकोंको भी देखे ऋतुकालके चौथे दिनभी जो रुधिर निवृत्त होगया होतो

कुष्ठबाहुल्याद्दुष्टशोणितशुक्रयोः ॥ यदपत्यन्तयोर्जातंज्ञेयंतदपिकुष्ठितमिति । कुष्ठंसंजातंयस्यतत्कुष्ठितम्, अत्रतारकादित्वादितच्प्रत्ययः ॥ यत्तुवातादिदुष्टरेतसःप्रजोत्पादनेनसमर्थाःइतिसुश्रुतः । तत्रशुद्धप्रजोत्पादने नसमर्थाइतिबोद्धव्यम् ॥ रोगादिना शुद्धास्तुप्रजांवातादिदुष्टशुक्राः। अपिजनयन्तिजन्मांधबधिरपंग्वादिसम्भवात् ॥१३॥ ऋतौस्त्रीपुंसयोर्योगेमकरध्वजवेगतः । पुंसःसर्व्वशरीरस्थःरेतोद्रावयतेऽथतत् ॥ वायुर्मेहनमार्गेणपातयत्यङ्गनाभगे । ततसंश्रुत्यव्यात्तमुखंयातिगर्भाश्रयंप्रति ॥ तत्रशुक्रवदायातेनार्त्तवेनयुतंभवेत् ॥ १४ ॥

अब गर्भकी उत्पत्तिका क्रमकहतेहैं ॥

कामसे दोनोंके संयोगमें शुद्ध रुधिर और वीर्य्यकेद्वारा स्त्रीके गर्भस्थिति होतीहै वहीउत्पन्नहोकर बालक कहाताहै- गर्भ शुद्ध होताहै परन्तु बिगड़ेहुये रुधिर और वीर्य्यवाले स्त्री पुरुषों का अशुद्ध होताहै क्योंकि कहाहै कि कुष्ठकी अधिकतासे जिनका रुधिर वीर्य्य बिगड़ाहुआहै उन स्त्रीपुरुषों की सन्तानभी कुष्ठित होतीहै कुष्ठ जिसकेहो वह कुष्ठित कहलाताहै इस कुष्ठित शब्दमें तारकादित्वसे इतच्प्रत्ययहोताहै जोकि वातादिकों से बिगड़े हुए वीर्य्यवाले प्रजाके उत्पन्न करनेमें नहीं समर्थ होतेहैं ऐसा सुश्रुतने कहाहै वहां शुद्ध सन्तान नहीं उत्पन्न करसकेहैं ऐसा समझना चाहिये क्योंकि रोगादिकोंसे शुद्ध और वातादिकोंसे बिगड़े हुए वीर्यवालेभी प्रजाको उत्पन्न करतेहैं परन्तु जन्महीसे अन्धे- बहिरे- लंगड़े आदि उत्पन्नहोने का संभवहै १३ ऋतुकालमें कामदेवके बेगसे स्त्री और पुरुषके संयोगहोनेहर पुरुषके सम्पूर्ण शरीरमें स्थित वीर्य्य पिघलताहै इसके उपरान्त वायु उस वीर्य्यको लिंग के मार्ग द्वारा स्त्रीकी योनिमेंगेरताहै वह वीर्य्य बहकर फैलेहुए मुखवाले गर्भाशयमें प्राप्त होताहै उस गर्भाशयमें वीर्य्यके समान आये हुये रज(हैज़) से मिलताहै ॥ १४ ॥

गर्भाशयस्य स्वरूपमाह ॥

शङ्खनाभ्याकृतिर्योनिस्त्र्यावर्त्तासाचकीर्तिता । तस्यास्तृतीयेत्वावर्त्तेगर्भशय्याप्रतिष्ठिता ॥ यथारोहितमत्स्यस्यमुखंभवतिरूपतः । तत्संस्थानांतथारूपांगर्भशय्यांविदुर्बुधाः ॥ अयमर्थः । गर्भशय्यामुखंरोहितमत्स्येवभवतियथाचरोहित मत्स्यस्यस्थितिर्जलेभवतितथापित्ताशयपक्वाशयमध्येगर्भशय्यायाः स्थितिर्भवतिरूपमपितस्येवभवतियथारोहितस्य मुखंस्वल्पमाशयस्तुमहानित्यर्थः ॥ १५ ॥

अबगर्भाशय का स्वरूप कहतेहैं ॥

शंखकी नाभिके समान आकारवाली योनिमें तीनचक्र कहेगयेहैं इसके तीसरे चक्रमें गर्भकी शय्या स्थितहै- पंडितलोग रोहू मछली के मुखके रूपके समान स्थिति और रूप वाली गर्भ शय्या कहतेहैं इसका यह तात्पर्य्य है कि गर्भ शय्याका मुख रोहूमछलीके समान होताहै और जैसे जल में रोहू मछलीकी स्थितिहै उसी प्रकार पित्ताशय और पक्वाशयके बीचमें गर्भ शय्याकी स्थितिहै और उसका रूपभी उसीके समान होताहै जैसे रोहू मछलीका मुख छोटा और भीतरकी ओर बड़ा होता है उसीप्रकार गर्भशय्याभी होती है ॥ १५ ॥

समलंकृतः ॥ ताम्बूलवदनस्तस्या मनुरक्तोऽधिकः स्मरः । पुत्रार्थी पुरुषोनारीमुपे याच्छयने शुभे ॥ ९ ॥

अथ सम और विषम रात्रियों का फल वर्णन करतेहैं ॥

सम रात्रियोंमें पुत्र और विषम रात्रियोंमें कन्या उत्पन्न होती है तहां स्त्री और पुरुषके संभोग में जैसा पुरुष होना चाहिये उसे कहते हैं-स्नान कियाहुआ- चन्दनादि सुगन्धित वस्तुओंको धारण कियेहुआ सुगन्धित पुष्पोंसे युक्त कामके बढ़ानेवाले दुग्धादि पदार्थोंको खायेहुआ अच्छे वस्त्र सुन्दर वेष और श्रेष्ठ आभूषणधारी मुखमें तांबूल खायेहुआ उस स्त्रीमें अधिक प्रेम करनेवाला कामदेव के अधिक वेगवाला पुत्रार्थी पुरुष उत्तम शय्यापर स्त्रीसे संभोग करे ॥ ९ ॥

अथ तत्राऽयोग्यं पुरुषमाह ॥

अत्याशितोऽधृतिःक्षुद्वान् सव्यथांगःपिपासितः ॥ बालोवृद्धोऽन्यवेगार्त्तस्त्यजेद्रोगी च मैथुनम् ॥१०॥ (तत्रस्त्री यादृशां योग्या तादृश्युच्यते।) पुरुषस्य गुणैर्युक्ता विहिता न्यूनभोजना ॥ नारीऋतुमती पुंसां सागच्छेतु सुतार्थिनी ॥ ११ ॥

इसमें अयोग्य पुरुषको कहते हैं ॥

बहुत भोजन कियाहुआ-धैर्य्य रहित क्षुधासे व्याकुल शरीर में पीड़ा युक्त-तृषित-बालक-वृद्ध मल मूत्रादिके वेगोंसे व्याकुल और रोगी पुरुष मैथुन न करे१० (अब योग्यस्त्रीका वर्णन करते हैं) पहले कहेहुये पुरुषके गुणों से युक्त योग्य और स्वल्प भोजन करनेवाली ऋतुमती पुत्रकी चाहने वाली स्त्री पुरुषसे संगम करे ॥ ११ ॥

अथ तत्राऽयोग्यां स्त्रियमाह ॥

रजस्वलाव्याधिमतीविशेषाद्योनिरोगिणी । वयोऽधिकाचनिष्कामामलिनागर्भिणी तथा ॥ एतासांसङ्गमात्पुंसांवैगुण्यानिभवन्तिहि । तत्ररजस्वलादिनत्रयंयावद्वर्तोनिषिद्धायतउक्तम् ॥ प्रथमेऽहनिचाण्डालीद्वितीयेब्रह्मघातिनी।तृतीयेरजकीपुंसांयथावर्ज्यात थाङ्गना ॥ व्याधिमतीचवर्ज्यातत्रस्त्रीणांव्याधयः । प्रदरादयउक्तानिषिद्धातत्रापिविशेषाद्योनिरोगिणी ॥ १२ ॥

अब अयोग्यस्त्रीको कहतेहैं ॥

रजस्वला-रोगवाली-और विशेष करके योनिके रोगवाली- अधिक अवस्थावाली कामके वेगसे रहित मैली और गर्भिणी ऐसी स्त्रियोंके संग भोगकरनें से पुरुषके रोगउत्पन्न होतेहैं इन में रजस्वला ऋतु काल से तीनदिनतक निषिद्धहै क्योंकि ऐसा कहा हुआहै कि पहिले दिन चांडाली दूसरेदिन ब्रह्म घातनी और तीसरेदिन धोबिनके समान रजस्वला स्त्रियोंका त्याग पुरुषों को उचितहै- रोगवाली स्त्री त्याग करने के योग्यहै अर्थात् प्रदरादिक रोगवाली स्त्रियां निषिद्धहैं इसमें भी विशेष करके योनि रोगवाली वर्जितहै १२ ॥

अथ गर्भावतरणक्रममाह ॥

कामान्मिथुनसंयोगेशुद्धशोणितशुक्रजः । गर्भःसंजायतेनार्य्याःसजातोबालउच्यते ॥ गर्भःशुद्धःअशुद्धस्तुगर्भोऽशुद्धःशुक्रशोणितयोरपिदम्पत्योर्भवतियतआह । दम्पत्योः

कुष्ठबाहुल्याद्दुष्टशोणितशुक्रयोः ॥ यदपत्यन्तयोर्जातंज्ञेयंतदपिकुष्ठितामिति ।,कुष्ठंसंजातंयस्यतत्कुष्ठितम्,अत्रतारकादित्वादितच्प्रत्ययः ॥ यत्तुवातादिदुष्टरेतसःप्रजोत्पादनेनसमर्थाःइतिसुश्रुतः । तत्रशुद्धप्रजोत्पादने नसमर्थाइतिबोद्धव्यम् ॥ रोगादिनाशुद्धास्तुप्रजांवातादिदुष्टशुक्राः। अपिजनयन्तिजन्मांधबधिरपंग्वादिसम्भवात् ॥१३॥ ऋतौस्त्रीपुंसयोर्योगेमकरध्वजवेगतः । पुंसःसर्व्वशरीरस्थःरेतोद्रावयतेऽथतत् ॥ वायुर्मेहनमार्गेणपातयत्यङ्गनाभगे । तत्संश्रुत्यव्यात्तमुखंयातिगर्भाश्रयंप्रति ॥ तत्रशुक्रवदायातेनार्त्तवेनयुतंभवेत् ॥ १४ ॥

अब गर्भकी उत्पत्तिका क्रमकहतेहैं ॥

कामसे दोनोंके संयोगमें शुद्ध रुधिर और वीर्य्यकेद्वारा स्त्रीके गर्भस्थिति होतीहै वहीउत्पन्नहोकर बालक कहाताहै- गर्भ शुद्ध होताहै परन्तु बिगड़ेहुये रुधिर और वीर्य्यवाले स्त्री पुरुषों का अशुद्ध होताहै क्योंकि कहाहै कि कुष्ठकी अधिकतासे जिनका रुधिर वीर्य्य बिगड़ाहुआहै उन स्त्रीपुरुषों की सन्तानभी कुष्ठित होतीहै कुष्ठ जिसकेहो वह कुष्ठित कहलाताहै इस कुष्ठित शब्दमें तारकादित्वसे इतच्प्रत्ययहोताहै जोकि वातादिकों से बिगड़े हुए वीर्य्यवाले प्रजाके उत्पन्न करनेमें नहीं समर्थ होतेहैं ऐसा सुश्रुतने कहाहै वहां शुद्ध सन्तान नहीं उत्पन्न करसकेहैं ऐसा समझना चाहिये क्योंकि रोगादिकोंसे शुद्ध और वातादिकोंसे बिगड़े हुए वीर्यवालेभी प्रजाको उत्पन्न करतेहैं परन्तु जन्महीसे अन्धे- बहिरे- लंगड़े आदि उत्पन्नहोने का संभवहै १३ ऋतुकालमें कामदेवके वेगसे स्त्री और पुरुषके संयोगहोनेहर पुरुषके सम्पूर्ण शरीरमें स्थित वीर्य्य पिघलताहै इसके उपरान्त वायु उस वीर्य्यको लिंग के मार्ग द्वारा स्त्रीकी योनिमें गेरताहै वह वीर्य्य बहकर फैलेहुए मुखवाले गर्भाशयमें प्राप्त होताहै उस गर्भाशयमें वीर्य्यके समान आये हुये रज(हैज़) से मिलताहै ॥ १४ ॥

गर्भाशयस्य स्वरूपमाह ॥

शङ्खनाभ्याकृतिर्योनिस्त्र्यावर्त्तासाचकीर्तिता । तस्यास्तृतीयेत्वावर्तेगर्भशय्याप्रतिष्ठिता ॥ यथारोहितमत्स्यस्यमुखंभवतिरूपतः । तत्संस्थानांतथारूपांगर्भशय्यांविदुर्बुधाः ॥ अयमर्थः । गर्भशय्यामुखंरोहितमत्स्येवभवतियथाचरोहित मत्स्यस्यस्थितिर्जलेभवतितथापित्ताशयपक्काशयमध्येगर्भशय्यायाः स्थितिर्भवतिरूपमपितस्येवभवतियथारोहितस्य मुखंस्वल्पमाशयस्तुमहानित्यर्थ. ॥ १५ ॥

अथगर्भाशय का स्वरूप कहतेहैं ॥

शंखकी नाभिके समान आकारवाली योनिमें तीनचक्र कहेगयेहैं इसके तीसरे चक्रमें गर्भकी शय्या स्थितहै- पंडितलोग रोहू मछली के मुखके रूपके समान स्थिति और रूप वाली गर्भ शय्या कहतेहैं इसका यह तात्पर्य्य है कि गर्भ शय्याका मुख रोहूमछलीके समान होताहै और जैसे जल में रोहू मछलीकी स्थितिहै उसी प्रकार पित्ताशय और पक्काशयके बीचमें गर्भ शय्याकी स्थितिहै और उस का रूपभी उसीके समान होताहै जैसे रोहू मछलीका मुख छोटा और भीतरकी ओर बड़ा होता है उसीप्रकार गर्भ शय्याभी होती है ॥ १५ ॥

शुक्रार्त्तवसमाश्लेषोयदेवखलुजायते। जीवस्तदेवविशतियुक्तशुक्रार्त्तवान्तरम् ॥ सूर्यांशोःसूर्यमणितोह्युभयस्माद्युतायथा । वह्निःसञ्जायतेजीवस्तथाशुक्रार्त्तवाद्युतात् ॥ अत्मानादिरनन्तश्चाऽव्यक्तोवक्तुंनशक्यते । चिदानन्देकरूपोऽयंमनसापिनगम्यते ॥ एवंभूतोऽपिजगतोभाविनीवलवत्तया । अविद्यास्वीकृतेकर्म्मवशोगर्भेविशत्यसौ ॥ (गर्भेचतुर्विंशतितत्त्वमयम्) सएववेत्तारसनोद्रष्टाघ्रातास्पृशत्यसौ । श्रोतावक्ताच कर्ताचगन्तोरन्तोत्सृजत्यपि॥१६॥दिनेव्यतीतेनियतंसंकुचत्यम्बुजंयथा । ऋतौव्यतीते नार्य्यास्तुयोनिःसंव्रियतेयथा ॥ ऋतोरजोदर्शनात् । षोड़शनिशात्मकेकाले ॥ १७ ॥

जिससमय वीर्य्य और रजका संयोग होताहै उसीसमय मिलेहुये वीर्य्य और रजमें जीव प्रवेश करता है-सूर्य्यकी किरण और सूर्य्य कान्तिमणि इन दोनों के मिलनेसे जैसे अग्नि उत्पन्न होती है उसीप्रकार वीर्य्य और रजके मिलने से जीव उत्पन्न होताहै यह आत्मा अनादि अनन्त अव्यक्त वाणीसे परे आनन्दरूप मनसे भी जाना नहीं जासक्ताहै ऐसा होनेपरभी संसारके होनहारकी प्रबलतासे कर्म्मके वशीभूत होकर अविद्याके द्वारा ग्रहण कियेहुए गर्भमें यह प्रवेश करता है-गर्भ में अर्थात् चौबीस तत्त्वोंसे बनेहुये गर्भमें-वही आत्मा जानता है स्वाद लेताहै देखता है सूंघता है स्पर्श करता है सुनता है बोलता है करताहै चलताहै रमण करताहै और त्यागभी करताहै १६ जैसे दिन के व्यतीत होनेपर कमल सिकुर जाताहै उसीप्रकार ऋतुकाल के व्यतीत होजानेपर स्त्रीकी योनि सिकु' जाती है-ऋतुकालमें अर्थात् ऋतुकालके प्रथम दिनसे सोलह रात्रि पर्यंत ॥ १७ ॥

बीजेऽन्तर्वायुनाभिन्नेद्वौजीवौकुक्षिमागतौ । यमावित्यभिधीयेतेधर्मेतरपुरः सरौ धर्म्मस्तदितरोऽधर्म्मस्तौपुरःसरौययोःतेनयमौधर्म्माधर्म्माभ्यांभवतइत्यर्थः ॥ १८ ॥ आधिक्येरेतसःपुत्रःकन्यास्यादार्त्तवेऽधिके । नपुंसकंतयोःसाम्येयथेच्छापरमेश्वरी ॥ नन्वेवंसतिकथंपुत्रोत्पत्तिःसदैवार्त्तवस्यैवबाहुल्यात् । यतउक्तम् ॥ आर्त्तवंचतुरंजलिप्रमाणंशुक्रंप्रसृतिमात्रमिति ॥ १९ ॥

भीतरकी वायुसे वीर्य्यके छिन्न भिन्न होजाने से धर्म्म और अधर्म्महै आगे जिनके ऐसे दो जीव कुक्षिमें प्राप्तहोकर यम कहलाते हैं धर्म्म और उससे दूसरा अधर्म्म यह दोनों हैं आगे जिन के वह धर्म्मांतर पुरस्सरौ कहलातेहैं इससे यम (जुड़िया) धर्म और अधर्मके द्वाराहोतेहैं यहतात्पर्य है १८॥ वीर्य्यकी अधिकतासे पुत्र उत्पन्न होताहै और रजकी अधिकता से कन्या उत्पन्न होती है और रज तथा वीर्य्यकी समता से नपुंसक उत्पन्न होताहै आगे ईश्वरकी इच्छा-अब यहांपर यह शंका होतीहै कि ऐसा होनेपर सदैव रजकी अधिकता से पुत्रकी उत्पत्ति कैसे होसक्तीहै क्योंकि कहाभीहै कि रजका प्रमाण चार अंजलीहै और वीर्य्य का प्रमाण एक चुल्लू अर्थात् रजका अष्टमांस वीर्य्य होताहै ॥ १९ ॥

वाग्भटेऽप्युक्तमात्रेयादिभिः ॥

मज्जामेदोवसामूत्रपित्तश्लेष्मशकृत्प्रसृक् । रसोजलंचदेहेऽस्मिंस्त्वेकेकाञ्जलिवर्द्धितम् ॥ पृथक्चप्रसृतंप्रोक्तमोजोमस्तिष्करेतसाम् । द्वावञ्जलीतुदुग्धस्यचत्वारो रजस

स्तुते ॥ समधातोरिदंमानं वियात्वृद्धिक्षयावतः। इति॥ नैवं,यतोगर्भाशयस्थमेवशुक्रमार्त्तवंचगर्भोत्पत्तिहेतुः शुक्रंकदाचिदत्यन्तहर्षवशाद्दुग्धादिशुक्रलत्वद्रव्यसेवनात् शुक्रबाहुल्यात्गर्भाशयेबहुस्रवतिकदाचिद्दैमनस्यादिना शुक्राल्पत्वात्स्वल्पमिति एवमार्त्तवमपीतिनदोषः (सुश्रुतःपुनराह ॥) वैलक्षण्याच्छरीराणामस्थायित्वात्तथैवच। दोषधातुमलानांतुपरिमाणं न विद्यते ॥ वैलक्षण्यातदीर्घह्रस्वकृशादिभेदेनसादृश्याभावात् अस्थायित्वात् वयो ऽहर्निशर्त्तुभुक्तेष्वेकमात्रानवस्थानात् एवंतामभिसंगम्य पुनर्मासाद्भजेदूर्ध्वमासादूर्ध्वमितिशेषः। अर्वाक्गमनेनगर्भद्वारविघट्टनात् गर्भच्युतिप्रसंगःस्यात्केचित्तु,पुनः पुष्पदर्शनेनगर्भालाभनिश्चयेमासादूर्ध्वंगच्छेत्लब्धगर्भेनैवगच्छेदितिवदन्ति ॥ २० ॥

वाग्भट्टमें आत्रेयादिकोंने भी कहाहै कि मज्जा-मेद-चरबी-मूत्र-पित्त-श्लेष्मा-विष्टा-रुधिर रस-और जल यह पदार्थ इस देहमें एक २ अंजली के प्रमाणसे अधिक हैं और कहागया है कि ओज (पराक्रम) मस्तिष्क (भेजा) और वीर्य्य एक २ चुल्लू हैं और दूध दो अंजली रज चार अंजली यह समधातुवाले का प्रमाणहै इससे अधिकता और न्यूनतामें वृद्धि और क्षयजाननी चाहिये ऐसा नहीं क्योंकि गर्भाशयमें स्थितही वीर्य्य और रजगर्भकी उत्पत्तिका कारण है कदाचित् अत्यन्त प्रसन्नताके कारण अथवा वीर्य्यके बढ़ानेवाले दुग्धादि पदार्थों के सेवनके कारण वीर्य्य की वृद्धि से गर्भाशयमें बहुत वीर्य्य गिरताहै और कदाचित् दुःखादिकके कारण वीर्य्यकी न्यूनतासे थोड़ावीर्य्य गिरताहै ऐसेही रजभी न्यूनाधिक होताहै इस प्रकार से कोई दोष नहींहै फिर सुश्रुतभी कहते हैं कि शरीरोंकी विलक्षणता और अस्था यित्व दोष से धातु और मल इनका प्रमाण नहीं है विलक्षणता अर्थात् दीर्घ ह्रस्व और दुर्बल आदि भेदोंसे सदृशता का न होना अस्थायित्व अर्थात् अवस्था का दिन रात्रि ऋतु और भोजनमें एक प्रकार स्थितन रहना इस प्रकार उससे संभोगकरके फिर महीने के उपरान्त सभोगकरै क्योंकि जो महीनेके भीतर गमनकरेतो गर्भद्वारके रगड़ने से गर्भपात होनेका भयहै कोई तो फिर ऋतु धर्मके होनेसे गर्भके न होनेका निश्चयहोजानेपर महीनेके उपरान्त संगम करे और जो गर्भ होवेतो नकरे ऐसा कहतेहैं ॥ २० ॥

तत्रपरिहार्य्यपरिहारार्थंसद्योगृहीतगर्भायालक्षणमाह ॥

शुक्रशोणिततयोर्योने रस्रावोर्थश्रमोद्भवः ॥ सक्थिसादः पिपासाचग्लानिः स्फुर्त्तिर्भगेभवेत् ॥ २१ ॥

त्याग करनेके योग्य पदार्थोंका त्याग करनेके लिये उसी समय गर्भके धारण करनेवाली स्त्रीका लक्षण कहते हैं ॥

वीर्य्य और रुधिरका योनिसे न बहना कार्य्यमें परिश्रम होना-जंघामें पीड़ा-तृषाका लगना-ग्लानि और योनिका फड़कना यह लक्षण शीघ्र गर्भ धारण करनेवाली स्त्रीके होते हैं ॥ २१ ॥

अथतस्याएवोत्तरकालीनंलक्षणमाह ॥

स्तनयोर्मुखकार्ष्ण्यंस्याद्रोमराज्युद्गमस्तथा ॥ अक्षिपक्ष्माणिचाप्यस्याः संमील्यन्ते विशेषतः ॥ छर्दयेत्पथ्यभुक्चापिगन्धादुद्विजतेशुभात्प्रसेकःसदनंचैवगर्भिण्यालिंग

मुच्यते ॥ २२ ॥ (तत्रपुत्रगर्भवत्यालक्षणम्) पुत्रगर्भयुतायास्तुनार्य्यामासिद्वितीयके । गर्भोगर्भाशयेलक्ष्यःपिण्डाकारोऽपरंशृणुपिण्डोवर्त्तुलाकृतिः मासिद्वितीयकइत्यस्यगर्भः पिण्डाकारोलक्ष्यः इत्यनेनैवान्वयो नत्वग्निमश्लोकेऽपि ॥ दक्षिणाक्षिमहत्त्वंस्यात्प्राक क्षीरंदक्षिणेस्तने । दक्षिणोरुःसुपुष्टःस्यात्प्रसन्नमुखवर्णता ॥ पुन्नामधेयद्रव्येपुस्वप्ने ष्वपिमनोरथः । आम्रादिफलमाप्नोतिस्वप्नेपुकमलादिच ॥ २३ ॥

अब उसीके पीछे होनेवाले लक्षण कहते हैं ॥

स्तनोंके मुखकी श्यामता-रोमांचहोना विशेष करके नेत्रोंका बन्दहोना-पथ्य भोजनकाभी वमन होना-उत्तम गन्धिसे क्लेशहोना-पसीना आना पीड़ाहोना यह गर्भिणी स्त्रीके लक्षण कहेगये हैं ।.२२॥

अब पुत्र गर्भवाली स्त्रीके लक्षण कहते हैं ॥

पुत्र गर्भवाली स्त्रीके गर्भाशयमें दूसरेमहीने पिंडके समान आकारवाला गर्भ लक्षित होताहै और दूसरे लक्षण आगे कहतेहैं पिण्ड अर्थात् गोल आकारवाला दूसरेमहीने इसका संबंध पिण्डाकार हीके साथमेंहै न कि आगेवाले श्लोकसे दाक्षिण नेत्र बड़ाहो और दक्षिणही स्तनमें प्रथम दूध उत्पन्न हो दक्षिण जंघाभारीहो मुखका वर्णउत्तमहो स्वप्नमें भी पुरुषवाची पदार्थों की इच्छाहो और स्वप्नमें आम्रादिक फल और कमल आदिक पुष्प प्राप्तहों इनलक्षणोंवाली स्त्रीके गर्भमें पुत्रजानना ॥ २३॥

अथ कन्यागर्भ वत्या लक्षणमाह ॥

कन्यागर्भवतीगर्भेपेशीमासिद्वितीयके । पुत्रीगर्भस्यलिंगानिविपरीतानिचेक्षते ॥ पेशीदीर्घाकृतिः ॥ २४ ॥ नपुंसकंयदागर्भेभवेद्गर्भोऽर्बुदाकृतिः ॥ उन्नतेभवतःपार्श्वेपुरस्तादुदरंमहत् ॥ अर्बुदंवर्त्तुलंफलार्द्धतुल्यम् ॥ २५ ॥(नपुंसकविशेषमाह)आसेकश्चसुगन्धी च कुम्भीकश्चेर्प्यकस्तथा । अमीसशुक्रावोद्धव्याअशुक्रःषण्ढसंज्ञकः ॥ २६ ॥

अबकन्या गर्भवाली स्त्रीके लक्षण कहतेहैं ॥

कन्या गर्भवाली स्त्रीके गर्भमें दूसरे महीने पेशीहोती है और पुत्र गर्भवाली स्त्रीसे उलटे लक्षण होतेहैं पेशी (दीर्घाकार) ॥ २४(नपुंसकगर्भवालीके लक्षण)जो गर्भमें नपुंसकहो तो गर्भका आकार अर्बुदके समानहोताहै कोखें ऊंचीहोती हैं और पेट आगे को बड़ा होताहै अर्बुद (किसीगोलपदार्थ का आधा) ॥ २५ ॥ (अबनपुंसकोंके प्रकारकहते हैं) आसेक्य-सुगन्धी कुंभीक और ईर्पक यह चारों वीर्य्य सहित नपुंसक कहे जातेहैं और जिसके वीर्य्य न हो वह पण्ढ कहलाताहै ॥ २६ ॥

अथैतेषांलक्षणमाह ॥

पित्रोस्तुस्वल्पवीर्यत्वादासेक्य पुरुषोभवेत् ।सशुक्रंप्राश्यलभतेध्वजोन्नतिमसंशयं॥ पित्रोर्मातापित्रोः स्वल्पवीर्यत्वात् स्वल्प शुक्रत्वात् आसेक्यनामा मुखयोनीति नामान्तरः स शुक्रं प्राश्येति सपुरुषोऽन्य पुरुषेण स्वमुखे मैथुनं कारयित्वातस्य शुक्रं प्रास्यमेहनोत्थानं लभते इत्यर्थः ॥ यःपूतियोनौजायेत सहिसौगन्धिकोभवेत् । सयोनि शेफसोगन्ध माघ्रायलभतेबलम् ॥ सौगन्धिकः सौगन्धिकनामा नासायोनीति नामान्तरंबलं मैथुने शक्ति ॥ २७॥

अब इनके लक्षण कहतेहैं ॥

माता पिताके रज और वीर्य्यके थोड़े होनेसे पुरुष आसेक्यनाम नपुंसक कहलाता है और वह वीर्य्यको खाकर निस्सन्देह लिंग की उन्नति अर्थात् भोगकरनेकी सामर्थ्य को प्राप्त होताहै वीर्य्य को खाकर (वहनपुंसक पुरुष अन्य पुरुषसे अपने मुखमें मैथुनकराकर वीर्य्य को चखकर भोगकरनेकी सामर्थ्य को प्राप्तहोताहै) और इस नपुंसक का दूसरा नाम मुख योनिभी है जो दुर्गन्धित योनि में उत्पन्न होताहै वह सुगन्धी नपुंसक कहलाताहै और वह योनि तथा दूसरे के लिङ्गको सूंघकर मैथुन करने की सामर्थ्य को प्राप्तहोताहै इस नपुंसकका दूसरा नामनासायोनि भीहै ॥ २७ ॥

स्वेगुदेऽब्रह्मचर्य्याद्यः स्त्रीषुपुंवत् प्रवर्त्तते ॥ सकुम्भीक इतिज्ञेयो गुद योनिस्तु स स्मृतः ॥ अब्रह्मचर्य्यात् ब्रह्मचर्य्यम् मैथुनं अब्रह्मचर्य्यं मैथुनं यत्स्यात् ॥ २८ ॥

जो पुरुष अपनी गुदामें मैथुनकरानेसे स्त्रियों से संभोग करनेकी सामर्थ्यको प्राप्तहोताहै वहकुंभीक कहलाताहै और इसका दूसरा नाम गुद योनिभी है ॥ २८ ॥

दृष्ट्वाऽव्यवायमन्येषां व्यवायेयः प्रवर्त्तते ॥ ईर्ष्यकः सतु विज्ञेयो दृष्टियोनिस्तुसस्मृतः २९योभार्य्यायामृतौमोहादंगनेवप्रवर्त्तते । तत्रस्त्रीचेष्टिताकारो जायतेषण्ढसंज्ञकः ॥ स्त्रीचेष्टिताकारः स्त्र्याकारःश्मश्रुरहितः । स्त्रीचेष्टितः समेहनोऽपि पुरुषशक्तिरहितः ॥ किन्तु स्त्रीवदधो भूतःस्वेगुदे पुरुषान्तरेण मैथुनं ३० ॥

जो पुरुष दूसरेके मैथुनको देखकर मैथुनमें प्रवृत्त होताहै वह ईर्षक कहलाताहै इसका दूसरानाम दृष्टि योनिभी है २९ जो पुरुष ऋतुकालमें अज्ञानतासे स्त्रीके समान नीचे लेटकर स्त्रीको ऊपर करके स्त्रीसे संभोगकरताहै उस के जो पुत्र उत्पन्नहोताहै वह स्त्रीके समान चेष्टा और आकार वाला अर्थात् दाढ़ी आदिसे रहित और लिङ्ग के होनेपरभी पुरुषार्थ से रहित षण्ढ नामवाला होताहै और वह षण्ढ पुरुष स्त्रीके समान नीचे लेटकर अपनी गुदामें अन्य पुरुष से मैथुन करताहै ॥ ३० ॥

ऋतौऋतौपुरुषवत् प्रवर्त्तेतांगनायदि । तत्रकन्यायदिभवेत् साभवेन्नरचेष्टिता ॥ पुरुषवत् स्त्रियमारुह्यसा तस्यायोनौ स्वयोनि घर्षणं करोति ॥ ३१ ॥

ऋतुकालमें जो स्त्री पुरुषके समान आप ऊपर होकर पुरुषसे मैथुनकरे उससे जो कन्या उत्पन्नहोगी वह पुरुषके समान चेष्टावाली होगी वह कन्या पुरुषके समान स्त्रीके ऊपर चढ़कर उसकी योनि में अपनी योनिको रगड़ती है ॥ ३१ ॥ ।

अपरा अपि गर्भ प्रकृतीराह ॥

यदानार्य्यावुपेयातां वृषस्यन्त्यौ कथञ्चन । मुञ्चन्त्यौशुक्रमन्योन्यमनस्थिस्तत्र जायते ॥ अनस्थिः अत्रेपदर्थे नञ् तेनाल्प कोमलास्थिरित्यर्थः ॥ ऋतुस्नातातुयानारी स्वप्नेमैथुनमाचरेत् । आर्त्तवंवायुरादाय कुक्षौगर्भंकरोतिहि ॥ मासिमासिप्रवर्द्धेत स गर्भोगर्भलक्षणः । कललंजायतेतस्य वर्जितंपैतृकैर्गुणैः ॥ गर्भलक्षणः प्रकृतगर्भलक्षणः । पैतृकैर्गुणैः केशश्मश्रु लोम नख दन्त शिरास्नायु धमनीरेतः प्रभृतिभिः ॥ ३२ ॥

और भी गर्भकी प्रकृति कहतेहैं ॥

जब कामसे अत्यन्त पीड़ितदो स्त्री परस्पर संभोग करें तब परस्पर किसी प्रकार वीर्य्य छोड़ती हैं

उससे जो सन्तान उत्पन्न होतीहै वह भल्प और कोमल हड्डी वाली होतीहै ऋतुकालमें स्नानकरने वाली जो स्त्री स्वप्न में मैथुन करे उसकी कुक्षिमें वायु रुधिरको लेकर गर्भ उत्पन्न करतीहै और गर्भ के समान लक्षण वाला वह गर्भ पिताके गुणों (केशदाढ़ीरोमनखदन्त नाड़ीआदिकों) से रहित कललनाम उत्पन्न होताहै ॥ ३२ ॥

सर्पवृश्चिक कूष्माण्डाकृतयो विकृताश्चये। गर्भास्तेयोपितस्ताश्च ज्ञेयाःपापकृतोभृशम् ३३ गर्भोवातप्रकोपेन दोहदेचापमानिते। भवेत्कुब्जःकुणिःपंगुर्मूकोमिन्मिनएवच॥ ३४ ॥

सर्प वृश्चिक कूष्मांड आदिकोंके आकार वाले विकार युक्त जो गर्भ होतेहैं वह गर्भ अत्यंत पाप करनेवाली स्त्रियों के वायु के कोपसे और गर्भिणीस्त्री की इच्छाके न पूरेहोनेसे कुबड़ा कुणि लंगड़ा गूंगा और मिनामिनी आदि उत्पन्नहोतेहैं ॥

पुत्राणा माहाराचार चेष्टा भेदस्य हेतुमाह ॥

आहाराचारचेष्टाभिर्यादृशीभिःसमन्वितौ। स्त्रीपुंसौसमुपेयातां तयोःपुत्रोऽपितादृशः॥ समुपेयातां संयोगं गच्छेताम् ॥ ३५ ॥

पुत्रों के आहार आचार और चेष्टाओंके भेदका कारण कहते हैं ॥

स्त्री और पुरुष जिस प्रकारके आहार आचार और चेष्टाओंसे युक्त होकर संभोग करतेहैं उनका पुत्रभी वैसाही उत्पन्न होताहै ॥ ३५ ॥

अथ गर्भलक्षणमाह ॥

गर्भाशयगतंशुक्रं मार्त्तवंजीवसंज्ञकः। प्रकृतिःसविकाराच तत्सर्व्वंगर्भसंज्ञकम् ॥ कालेनवर्द्धितोगर्भो यदांगोपांगसंयुतः। भवेत्तदासमुनिभिः शरीरीतिनिगद्यते ॥ अंगोपांगसंयुक्तः व्यक्तांगोपांगः ॥ ३६ ॥

गर्भके लक्षण लिखते हैं ॥

गर्भाशयमें प्राप्त हुए वीर्य्य और रजको जीव कहतेहैं यह आठ प्रकृति और सोलह विकार सब मिलकर गर्भ कहलाते हैं समय पाकर बढ़ेहुए गर्भके जब अंग और उपांग प्रकट होतेहै तब मुनि लोग उसको शरीरी कहतेहैं ॥ ३६ ॥

तस्यत्वंगान्युपांगानि ज्ञात्वासुश्रुतशास्त्रतः। मस्तकादभिधीयन्ते शिष्या शृणुतयत्नतः ॥ आद्यमंगंशिरःप्रोक्तं तदुपांगानिकुन्तलाः। तस्यान्तर्मस्तुलुंगंच ललाटंभ्रूयुगन्तथा ॥ नेत्रद्वयंतयोरन्तर्वर्त्तिनेद्वेकनीनिके। दृष्टिद्वयंकृष्णगोलौ श्वेतभागौचवर्त्मनी ॥ पक्ष्माण्यपांगाशंखौच कर्णौतच्छष्कुलीद्वयम्। पालिद्वयंकपोलौच नासिकाचप्रकीर्त्तिता ॥ ओष्ठाधरौचसृक्किण्यौ मुखंतालुहनुद्वयम्। दन्ताश्चदन्तवेष्टश्च रसनाचिबुकंगलः ॥ द्वितीयमंगंग्रीवातु ययामूर्द्धाविधार्यते। तृतीयंबाहुयुगलं तदुपांगान्यथब्रुवे ॥ तत्रोपरिमतौस्कन्धौ प्रगण्डौभवतस्त्वधः। कफोनियुतंतदधः प्रकोष्ठयुगलन्तथा ॥ मणिबन्धौतलेहस्तौ तयोश्चांगुलयोदश। नखाश्चदशतेस्थाप्या दशञ्ज्ञेयाःप्रकीर्तिताः॥

चतुर्थमंगंवक्षस्तु तदुपांगान्यथब्रुवे। स्तनौपुंसस्तथानार्य्या विशेषउभयोरयम् ॥ यौवं नागमनेनार्याः पीवरौभवतःस्तनौ। गर्भवत्याःप्रसूतायास्तावेवक्षीरपूरितौ ॥ हृदयंपुण्डरीकेण सदृशंस्यादधोमुखम्। जाग्रतस्तद्विकसति स्वपतस्तुनिमीलति ॥ आशयस्तत्तुजीवस्य चेतनास्थानमुत्तमम्। अतस्तस्मिंस्तमोव्याप्ते प्राणिनःप्रस्वपन्तिहि ॥ चेतनास्थान मुत्तम मिति अयमभिप्रायः ॥ चेतनानामधिष्ठानं मनोदेहश्चसेन्द्रियः। केशलोमनखाग्रंच मलंद्रव्यगुणैर्विना ॥ इत्युक्तवता चरकेण सकलं शरीरं चेतनास्थान मुक्तं। तदपेक्षयाहृदयं विशेषतश्चेतना स्थानमिति ॥ कक्षयोर्वक्षसः सन्धी जत्रुणी समुदाहृते। कक्षेउभेसमाख्याते तयोःस्यातांचवङ्क्षणौ ॥ उदरंपञ्चपञ्चांगं षष्ठंपार्श्व द्वयंमतम्। सप्तमंवंशपृष्ठंतु समस्तंसप्तमंस्मृतम्॥ उपांगानि च कथ्यन्ते तानि जानीहि यत्नतः। शोणिताज्जायतेप्लीहावामतोहृदयादधः ॥ रक्तवाहिशिराणांसमूलंस्यातोमहर्षिभिः। हृदयाद्वामतोऽधश्चफुप्फुसोरक्तफेनजः ॥ अधोदक्षिणतश्चापिहृदयात्यकृतः स्थितिः।नतुरञ्जकपित्तस्यस्थानंशोणितजंमतम् ॥ अधस्तुदक्षिणेभागेहृदयात्क्लोमतिष्ठति॥जलवाहिशिरामूलंतृष्णाच्छादनकृन्मतम्॥क्लोमातिलकमप्येतत्तुवातरक्तजम् ॥ ३७॥

उसके अंग और उपांगोंको सुश्रुतजीके शास्त्रसे जानकर मस्तकसे लेकर सम्पूर्ण कहेजाते हैं हे शिष्य लोगो तुम यत्न पूर्वक सुनो पहला अंग शिर है और उसके उपांग केशहैं और उसके भीतर भेजा ललाट दोनों भृकुटी दोनों नेत्र और उन दोनोंके बीचमें दो तारे दो दृष्टि दो काले गोलक और उनके श्वेतभाग पलकें और नेत्रोंके कोने माथेकी दोनों शंख नाम हड्डियां कान कानोंके छिद्र और नोकें गाल नाक ऊपर नीचेके ओष्ठ ओष्ठोंके किनारे मुख तालु दोनों जावडे दांत मसूड़े जिह्वा ठोढ़ी गला दूसरा अंग ग्रीवाहै जिससे कि शिर धारण किया जाताहै तीसरा अंग दोनों भुजा और उनके उपांगोंको कहतेहैं इसमें ऊपर दो कन्धे उसके नीचे दो भुज दंड उसके नीचे कुहनी से युक्त दो पहुंचे उसके नीचे मणिबन्ध उसके नीचे हस्ततल और हस्त और उनकी दशों अंगुलियां दश नख रखनेके योग्य और उनके दश अंश काटनेके योग्य कहेगये हैं चौथा अंग छाती और उसके उपांगोंको कहतेहैं स्तन स्त्री और पुरुषके स्तनोंकी विशेषता यहहै कि युवावस्थाके आनेपर स्त्री के स्तन स्थूल होजातेहैं फिर गर्भवती स्त्रीके सन्तान उत्पन्न होनेपर वही स्तन दुग्धसे भरजातेहैं और पुरुष के वैसे नहीं होते हृदय कमलके समान अधोमुख होताहै वह जागतेहुए पुरुष का प्रफुल्लित होता है और सोवतेहुए का बन्द होजाता है और यही हृदयजीव की चेतनाका उत्तम स्थानहै इसी कारणसे उसके तमोगुणसे व्याप्त होनेपर प्राणी सोते हैं हृदय चेतनाका उत्तम स्थानहै इसका यह अभिप्राय है कि मन इन्द्रियों समेत शरीर बाल रोम नखोंके अग्रभाग और मल यह द्रव्य गुणोंकी सहायताके विनाही चेतनाका स्थानहै इस प्रकार कहनेवाले चरक मुनिने सम्पूर्ण शरीरही को चेतनाका स्थान कहाहै और उन सबकी अपेक्षा हृदय अधिक चेतनाका स्थानहै कांख और छाती की सन्धिको जत्रु कहतेहैं दो कांखें और वंक्षण (जंघाओंकी सन्धि) यह उपांगहै पांचवां अंग उदर है और छठा अंग दोनों पसलियांहैं और पीठके बांस समेत सब पीठ सातवां अंग कहावेहै अब उसके उपांगोंको कहतेहैं बाईं ओर हृदयके नीचे रुधिरसे उत्पन्नहुई प्लीहाहै जिसको तिल्ली कहते हैं

महर्षि लोग उसे रक्तवाहिनी नाडियोंका मूल कहतेहैं हृदयके वाईं ओर ओर नीचे फुफ्फुस है वह रुधिरके फेनोंसे उत्पन्न होताहै हृदयके दक्षिण ओर नीचेको यकृत् अर्थात् वह रुधिरसे उत्पन्नहुआ रजक नाम पित्तका स्थानहै हृदयके दक्षिण भागसे नीचे क्लोम अर्थात् मांस पिंड विशेषहै वह जल वाहिनी नाड़ियोंका मूल तृषा का रोकने वाला वातरक्तसे उत्पन्न होताहै ॥ ३७ ॥

अथवृद्धवाग्भटः ॥

रक्तादनिलसंयुक्तात्कालीयकसमुद्भवइति । मेदःशोणितयोःसारादूवृष्कयोर्युगलंभवेत् ॥ तौतुपुष्टिकरौप्रोक्तौजठरस्थस्य मेदसः । उक्ताःसार्द्धास्त्रयोव्यामाःपंसामन्त्राणि सूरिभिः ॥ अर्द्धव्यासेनहीनानियोषितोऽन्त्राणिनिर्दिशेत् । उन्दुकश्चकटीचापित्रिकं वस्तिश्चवंक्षणौ ॥ कण्डराणांप्ररोहःस्यात्स्थानंतद्वीर्य्यमूत्रयोः । सएवगर्भस्याधानंकुर्य्याद्गर्भाशयेस्त्रियाः ॥ शंखनाभ्याकृतिर्य्योनिस्त्र्यावर्त्तासाचकीर्तिता । तस्यास्तृतीयेत्वावर्त्तेगर्भशय्याप्रतिष्ठिता ॥ ३८ ॥

वृद्धवाग्भट कहतेहैं ॥

वायु संयुक्त रुधिरसे कालीयक उत्पन्न होताहै मेद और रुधिरके सारांशसे दो वृक्क उत्पन्न होते हैं उन दोनोंसे उदरमें रहनेवाला मेद पुष्ट होताहै, पंडितोंने पुरुषोंकी आंतें साढ़े तीन व्याम दोनों भुजाओंकी लम्बाई) कहीहैं और स्त्रियोंकी आंतें तीन व्यामकी होती हैं उन्दुक कटि त्रिक (पीठके बांस के नीचेकी तीन हड्डी वस्ति (मूत्राशय) वंक्षण कण्डरोंका मूल यह वीर्य्य और मूत्रके स्थान हैं और वही स्त्रियोंके गर्भाशयमें गर्भकी स्थिति करताहै शंखकी नाभि के समान आकारवाली योनि कही गईहै और उसमें तीनचक्र होतेहैं उसके तीसरे चक्र में गर्भ की शय्याहै ॥ ३८ ॥

वृषणौभवतःसारात्कफासृग्भ्यांचमेदसाम् । वीर्य्यवाहिशिराधारौतौमतौपौरुषावहौ ॥ गुदस्यमानंसर्वस्यसार्द्धंस्याच्चतुरंगुलम् ॥ तत्रस्युर्वलयस्तिस्रःशंखावर्त्तनिभास्तुताः ॥ प्रवाहिनीभवेत्पूर्वासार्द्धांगुलमितामता । उत्सर्जनीतुतदधःसासार्द्धांगुलसम्मिता ॥ तस्याधःसञ्चरणीस्यादेकांगुलसमामता । अर्द्धांगुलप्रमाणंतुबुधैर्गुदमुखंस्मृतम् ॥ मलोत्सर्गस्यमार्गोऽयंपायुर्देहेविनिर्मितः ॥ ३९ ॥

अंडकोश-मेद कफ और रुधिरके सारांशसे उत्पन्न होतेहैं और वह वीर्य्य वाहिनी नसोंके आधार और पुरुषार्थके धारण करने वाले कहेगयेहैं- संपूर्ण गुदाका प्रमाण साढ़े चार अंगुल है और उसमें शंखके चक्रोंके समान तीन वलि अर्थात् चक्रहैं उनमें से डेढ़ अंगुल के प्रमाण वाली पहली वलि का नाम प्रवाहिनीहै दूसरी वलिका प्रमाण डेढ़ अंगुल और नाम उत्सर्जनीहै उसके नीचे संचारिणी नामवाली वलिका प्रमाण एक अंगुलहै और पंडितों ने गुदाके मुखका प्रमाण आधे अंगुलका कहाहै यह गुदा शरीरमें मलके निकलनेका मार्गबनायागयाहै ॥ ३९ ॥

पुंसःप्रोथौस्मृतौयौतुतौनितम्बौचयोषितः । तयोःकुकुन्दरेस्यातांसक्थिनीत्वंगमष्टमम् ॥ तदुपाङ्गानिचत्रूमौजानुनीपिण्डिकाद्वयम् । जङ्घेद्वेघुण्टिकेपार्ष्णीतलेचप्रपदेतथा ॥ पादांगुलयस्तत्रदशतासांनखादश ॥ ४० ॥

जो पुरुषोंके प्रोथकहेगयेहैं वही-स्त्रियोंके नितम्बहैं उनके दो ककुन्दर (चूतड़ोंके ऊपरदोगढ़े) हैं जांघ आठवां अंगहै उनके उपांग कहते हैं घुटने- पिंडली- टकने गट्टे एड़ी- तलुए पैरोंके अग्रभाग पैर दशों उंगली और उनके दशोंनख ॥ ४० ॥

अथेदंशरीरमपरेणापियेनयेनसमवायिकारणेनोत्पद्यतेतानिसर्वाण्याह ॥

अथदोषाःप्रवक्ष्यन्तेधातवस्तदनन्तरम्। आहारादेर्गतिस्तस्यपरिणामश्चवक्ष्यते॥ आर्त्तवंचाथधातूनांमलास्तदुपधातवः। आशयाश्चकलाश्चापिमर्माण्यथचसन्धयः॥ शिराश्चस्नायवश्चापिधमन्यःकण्डरास्तथा। रन्ध्राणिभूरिस्रोतांसिजालैःकूर्चाश्चरज्ज वः॥ सेवन्यश्चाथसंघाताःसीमन्ताश्चतथात्वचः। लोमानिलोमकूपाश्चदेहएतन्म योमतः॥ ४१ ॥

जिन २ सामवायि कारणों से यह शरीर उत्पन्न होताहै वह सब वर्णन किये जातेहैं दोष-धातु-आहारादिकों की गति और परिणाम- रजधातुओं के मल- उनके उपधातु- आशय कला मर्म्म सन्धि शिरा स्नायु धमनी कण्डराछिद्र वहुतसे सोते जालकूर्च रज्जु सेवनी संघात सीमन्त त्वचा रोम और रोमकूप इन सबसे समवाय अर्थात् संयोग को शरीर कहतेहैं ॥ ४१ ॥

तत्रदोषस्वरूपमाहवाग्भटः॥

वायुःपित्तंकफश्चेतित्रयोदोषाःसमासतः। विकृताऽविकृतादेहंघ्नन्तितेवर्द्धयन्तिच॥ तेव्यापिनोऽपिहृन्नाभ्योरधोमध्योर्ध्वसंश्रयाः। वयोऽहोरात्रिभुक्तानामन्तमध्यादिगाःक्र मात्॥ ४२ ॥

इनमेंसे दोषोंके स्वरूप को वाग्भट्ट जी कहतेहैं ॥

वायु-पित्त और कफ यह संक्षेपसे तीनदोष कहेगयेहैं यह विकारको प्राप्त होकर शरीरको नष्टकरते हैं और विकार रहित होकर शरीर को पुष्ट करतेहैं यह व्यापक होनेपरभी क्रमसे हृदय और नाभिके नीचे बीचमें और ऊपर स्थितहैं और अवस्था दिनरात्रि- भोजन इनके अन्तमध्य और आदिमें क्रम से स्थित रहतेहैं ॥ ४२ ॥

दोषशब्दस्यानिरुक्तिमाह ॥

धातवश्चमलाश्चापिदुष्यन्त्येभिर्यतस्ततः। वातपित्तकफाएतेत्रयोदोषाइतिस्मृ ताः॥ दोषाइत्यत्रदुषवैकृत्येइतिदुषधातोः। दुष्यन्त्येभिरितिवाक्ये॥ अकर्त्तरिचका रकेसंज्ञायामित्यनेनसूत्रेणकरणेऽर्थेघञ्प्रत्ययः।तेधातवोऽपिविद्वद्भिर्गदितादेहधारणात्॥ (यतआहसुश्रुतः) विसर्गादानविक्षेपैःसोमसूर्यानिलायथा। धारयन्तिजगद्देहंकफपि त्तानिलास्तथेति॥ अत्रयथासंख्येनान्वयोबोद्धव्यः। विसर्गादानंवातस्यैव॥ विक्षेपः शीतोष्णादीनांविविधप्रकारेणप्रेरणम्। मलाश्चतेरसादीनांमलिनीकरणान्मताः॥४३॥

दोषशब्दकी निरुक्तिकहते हैं ॥

जोकि धातु और मल इनसे दोषको प्राप्त होतेहैं इस कारणसे यह वात पित्त कफ तीनों दोष कहे जातेहैं दोष इस शब्दमें(दुष वैकृत्ये)इस धातुसे (अकर्त्तरिचकारके संज्ञायां)इस सूत्रके द्वारा करण

अर्थमेंघञ् प्रत्यय होताहै- विद्वानोंने देहके धारण करने से इन वातादिकों को धातु भी कहा है जैसाकि सुश्रुत जी कहतेहैं कि जैसे चन्द्रमा सूर्य्य और वायु देनेसे ग्रहण करने से और विशेष अर्थात् शीत उष्णादिकों के अनेक प्रकार धारण करने से जगत्को धारण करतेहैं उसी प्रकार कफ पित्त और वायु शरीर को धारण करतेहैं और यह रसादिकोंके मलिन करनेसे मलभी कहलातेहैं॥४३॥

तत्रवीयोःस्वरूपमाह॥

दोषधातुमलादीनांनेताशीघ्रःसमीरणः। रजोगुणमयःसूक्ष्मोरूक्षःशीतोलघुश्चलः॥ नेतास्थानान्तरंप्रापयिता । शीघ्रःआशुकारी ॥ ४४ ॥

वायुका स्वरूप कहतेहैं॥

दोष- धातु और मलादिकों का स्थानांतरमें लेजाने वाला शीघ्रता करने वाला रजोगुणमय सूक्ष्म रूखा शीतल-हलका और चलने वाला वायुहोताहै ॥ ४४ ॥

अन्यच्च, उत्साहोच्छ्वासनिःश्वासचेष्टावेगप्रवर्त्तनैः । सम्यक्गत्याचधातूनामिन्द्रियाणाञ्चपाटवैः॥ अनुगृह्णात्यविकृतोहृदयेन्द्रियचित्तधृक्। रजोगुणमयःसूक्ष्मःशीतोरूक्षोलघुश्चलः॥ खरोमृदुर्योगवाहीसंयोगादुभयार्थकृत्। दाहकृत्तेजसायुक्तोशीतकृत्सोमसंश्रयात्॥ विभागकरणाद्वायुः प्रधानंदोषसंग्रहे। पक्वाशयकटीसक्थिस्रोतोस्थिस्पर्शनेन्द्रियम्॥स्थानंवातस्यतत्रापिपक्वाधानंविशेषतः।एकोवायुःपित्तवन्नामस्थानकर्म्मभेदैःपञ्चविधः॥ ४५ ॥

अन्यग्रन्थोंमें कहेहुये वायुके लक्षण॥

विकार रहित वायु हृदयइन्द्री और चित्तको धारण करताहुआ उत्साह स्वासलेना स्वासका छोड़ना चेष्टा मूत्रादि वेगोंकी प्रवृत्ति- रुधिर आदि धातुओं की अच्छे प्रकार गति और इन्द्रियोंकी समर्थतासे शरीरको धारण करताहै यह वायु रजोगुणमय सूक्ष्म शीतल- रूखी- हलकी चलनेवाली तीक्ष्ण- कोमल- योगवाही अर्थात् जिसके साथ मिले उसके गुणोंकी बढ़ानेवाली संयोगसे दोनों प्रयोजनोंकी करनेवाली जैसे तेजसे मिली हुई दाहकी करनेवाली और चन्द्रमासे मिलीहुई शीतलताकी करनेवालीहै और विभागकरने से वायु सम्पूर्ण दोषोंमें प्रधानहै पक्वाशय- कटि- जंघा- स्रोत हड्डी-त्वचायह सम्पूर्ण वायुके स्थान हैं इनमें से पक्वाशय प्रधान स्थानहै एक वायु पित्त के समान नाम स्थान और कर्म्म के भेदों से पांच प्रकार की है ॥ ४५ ॥

तेषांवायूनां नामान्याह॥

उदानस्तदनुप्राणःसमानोऽपानएवच।व्यानश्चैतानिनामानिवायोः स्थानप्रभेदतः॥ ४६॥

अब वायुके नाम कहते हैं॥

उदान- प्राण- समान- अपान- और व्यान यह वायुके नाम स्थान भेदसे होते है ॥ ४६ ॥

अथोदानादीनां स्थानान्याह॥

कण्ठेहृदितथाधस्तात्कोष्ठवह्नेर्मलाशये।सकलेऽपिशरीरेऽसौक्रमेणपवनोवसेत्॥४७॥

अब उदानादिकके स्थान कहतेहैं ॥

कंठमें उदान हृदयमें प्राण जठराग्निके नीचे समान मलाशयमें अपान सम्पूर्ण शरीरमें व्यान इसक्रमसे यह वायु रहतीहै ॥ ४७ ॥

अथतेषां कर्म्माण्याह ॥

उदानोनामयस्तूर्ध्वमुपैतिपवनोत्तमः । तेनभाषितगीतादिप्रवृत्तिः कुपितस्तुसः ॥ ऊर्ध्वजत्रुगतान्रोगान्विदधातिविशेषतः । योवायुःप्राणनामासौमुखंगच्छतिदेहधृक् ॥ सोऽन्नंप्रवेशयत्यन्तः प्राणांश्चाप्यवलम्बते । प्रायशःकुरुतेदुष्टोहिक्काश्वासादिकान्गदान् ॥ ४८ ॥

अब उनके कार्य्य लिखतेहैं ॥

पवनोंमें उत्तम उदान नाम वायु जो ऊपरको जाताहै उससे भाषण और गीतादिकों में प्रवृत्ति होतीहै और वह कुपित होकर छाती और बगलकी सन्धियोंके ऊपरके रोगोंको अधिकतासे करतीहै शरीरका धारण करनेवाली मुख में जानेवाली प्राण नाम वायु अन्नको भीतर लेजातीहै और प्राणों को भी रखतीहै और कुपित हुई वह वायु हिचकी और खांसी आदि रोगोंको करतीहै ॥ ४८ ॥

आमपक्वाशयचरःसमानोवह्निसंगतः । सोऽन्नंपचतितज्जांश्चविशेषान्विविनक्ति हि ॥ तज्जानीत्यादि । अन्नगतान्रसमलमूत्रादीन्पृथक्करोतीत्यर्थः ॥ सदुष्टोवह्निमान्द्यातिसारगुल्मान्करोतिहि । पक्वाशयालयोऽपानःकालेकर्षतिचाप्ययम् ॥ समीरणःशकृन्मूत्रशुक्रगर्भार्तवान्यधः । क्रुद्धस्तुकुरुतेरोगान्घोरान्बस्तिगुदाश्रयान् ॥ शुक्रदोषप्रमेहांश्चव्यानापानप्रकोपजान् ॥ ४९ ॥ कृत्स्नदेहचरोव्यानोरससंवाहनोद्यतः । स्वेदाऽसृक्स्रावकश्चापिपञ्चधाचेष्टयत्यपि ॥ गत्युत्क्षेपणोत्क्षेपानिमेषोन्मेषणादिका । प्रायःसर्व्वाःक्रियास्तस्मिन्प्रतिबद्धाःशरीरिणाम् ॥ प्रस्यन्दनञ्चोद्वहनंपूरणञ्चविरेचनम् । धारणञ्चेतिपञ्चैताश्चेष्टाःप्रोक्तानभस्वतः ॥ क्रुद्धःसकुरुतेरोगान्प्रायशःसर्वदेहगान् । युगपत्कुपिताएतेदेहंभिन्द्युरसंशयम् ॥ देहंभिन्नंकुर्य्युर्म्मारयेयुरित्यर्थः ॥ ५० ॥

आमाशय और पक्वाशयमें विचरनेवाली समान नाम वायु अग्निसे मिलकर अन्नको पकाती है और अन्नसे उत्पन्न हुए मलमूत्रादिकोंको अलग २ करती है और कुपित होकर यह वायु मन्दाग्नि अतीसार और गुल्म आदि रोगोंको करतीहै गुल्म (वायु गोला) पक्वाशयमें रहनेवाली अपान नाम वायु उचित समयमें मलमूत्र वीर्य्य गर्भ और रज इनको नीचेकी ओर खेंचतीहै और कुपित होकर वह वायु मूत्राशय और गुदाके रोग वीर्य्यके दोष प्रमेह व्यान तथा अपान वायुके कोप से उत्पन्नहोने वाले बड़ेभारी रोगोंको उत्पन्न करतीहै ४९ सम्पूर्ण देह में रहनेवाली व्यान नाम वायु रसोंको ले जानेवाला स्वेद और रुधिरकी बहानेवाली चलना ऊपर होना नीचे होना नेत्रों का बन्द करना और खोलना इन पांच चेष्टाओंकी करनेवाली है मनुष्योंकी प्रायः सम्पूर्ण क्रिया उसीके आधीन हैं चलना ऊपर लेजाना पूर्ण करना निकालना और धारण करना यह वायुकी पांच चेष्टा कहीगई हैं और कुपित होकर व्यान वायु प्रायः सम्पूर्ण शरीरके रोगोंको उत्पन्न करती है और जो पहले कही हुई पांचों वायु एक संगही कोपको प्राप्त होय तो निस्सन्देह शरीरको नष्ट करती है ॥ ५० ॥

अथपित्तस्य स्वरूपमाह ॥

पित्तमुष्णंद्रवंपीतंनीलंसत्त्वगुणोत्तरम् । सरंकटुलघुस्निग्धंतीक्ष्णमम्लन्तुपाकतः॥ पीतन्निरामम् । नीलंसामम् ॥ एकंपित्तंवातवन्नामस्थानकर्म्मभेदैःपञ्चविधम् ॥ ५१ ॥

अब पित्तके स्वरूपको कहतेहैं ॥

पित्त उष्ण पिवलनेवाला पीत (आमसे रहित पित्त पीला होताहै) नील (आमसे मिलाहुआ नीला होताहै) अधिक सतोगुण वाला दस्तावर कडुआ हलका चिकना तीक्ष्ण और पाकमें खट्टा होताहै एक भी पित्त वायुके समान नाम स्थान और क्रियाओंके भेदसे पांचप्रकारका है ५१ ॥

तेषांपित्तानां नामान्याह ॥

पाचकंरञ्जकञ्चापिसाधकालोचकेतथा। भ्राजकश्चेतिपित्तस्यनामानिस्थानभेदतः॥५२॥

अब पित्तोंकेनाम कहतेहैं ॥

पाचक रंजक साधक आलोचक और भ्राजक यह स्थान भेद से पित्तके पांच नामहैं ॥ ५२ ॥

अथपाचकादीनां स्थानान्याह ॥

अग्न्याशयेयकृत्प्लीह्नोर्हृदयेलोचनद्वये।त्वचिसर्व्वशरीरेषुपित्तंनिवसतिक्रमात्॥५३॥

अब इनके स्थान कहतेहैं ॥

अग्न्याशयमें पाचक यकृत् और पिलहीमें रंजक हृदयमें साधक दोनों नेत्रोंमें आलोचक त्वचा में भ्राजक इसक्रमसे पित्त सम्पूर्ण शरीरमें रहताहै ॥ ५३ ॥

अथतेषां कर्माण्याह ॥

पाचकंपचतेभुक्तंशेषाग्निबलवर्द्धनम् । रसंमूत्रपुरीषाणिविवेचयति नित्यशः ॥ पाचकंपित्तमामपक्वाशयमध्यस्थंषड्विधमाहारंभोज्यंभक्ष्यंचर्व्यंलेह्यंचूष्यंपेयंपचतिदोषरसमूत्रपुरीषाणि पृथक्करोतिच॥ तदग्न्याशयस्थमेवस्वशक्त्यारसरञ्जनहृदयस्थकफतमोपनोदनरूपग्रहणप्रभा प्रकाशनाभ्यङ्गलेपादिपाचनाद्याग्निकर्म्मणां विशेषाणांपित्तस्थानानामनुग्रहंकरोति ॥ शेषाण्यपिपित्तस्थानानियकृत्प्लीहादीनि भागेनगत्वातत्रतत्ररसरञ्जनादिकर्म्मभिरुपकरोतीत्यर्थः । कथम्भूतंपाचकंपित्तंशेषाग्निबलवर्द्धनम् ॥ शेषा अग्नयपृथिव्यादिमहाभूतगणाः (यतउक्तंचरकेण ।) भौमाप्याग्नेयवायव्याः पञ्चोष्माणःसनाभसा इति ॥ ऊष्माणःअग्नयः ।(यतउक्तंवाग्भटे।) दोषधातुमलादीनामूष्मेत्यात्रेयशासनमिति ॥ दोषधातुमलादीनामूष्मैवाग्निरित्यर्थः ।रसादिधातुगताःसततेषांबलवर्द्धनम् ॥ यथागृहेस्थापितानि रत्नानिखद्योतवद्दूरभास्वराणि तान्यपिदीपज्योतिषादूरप्रकाशकानि भवन्ति । तथाअग्न्याशयस्थपाचकाग्नितेजसा सर्वे अग्नयो बलवन्तोभवन्ति ॥ (तथा च वाग्भटः।) अन्नस्यपक्तासर्वेषांपक्तॄणामधिकोमतः॥ तन्मूलास्तेपितद्वृद्धिक्षयवृद्धिक्षयात्मकाइति । ननुपित्तादन्योऽग्निराहोस्वित्पित्तमेवाग्निरितिसन्देहः॥उच्यते॥पित्तस्योष्णादिगुणद्वाराहारपाचनरञ्जनदर्शनादिकर्म्मणश्च

नखलु पित्तव्यतिरेकेणान्योऽग्निः । तस्मादग्निरूपस्यैव पित्तस्य स्थानभेदात्पाचक रञ्जक साधकालोचकभ्राजकसंज्ञाः ॥ (तथाच वाग्भटः) पाचकंतिलमानंस्यात् काठिन्यान्नास्यदोपता । अनुगृह्णात्यविकृतं पित्तंपाकोष्मदर्शनैः ॥ क्षुत्तृड्रुचिप्रभा मेधा धीशौर्य्यतनुमार्दवैः । पित्तंपञ्चात्मकंतच्च पक्वामाशयमध्यगम् ॥ पञ्चभूतात्मकत्वेऽपि यत्तैजसगुणोदयम् । त्यक्तद्रवत्वंपाकादि कर्म्मणानलशब्दितम् ॥ पचत्यन्नंविभजते सारकिट्टौपृथक्तथा । तत्रस्थमेवपित्तानां शेषाणामप्यनुग्रहम् ॥ करोतिबलदानेन पाचकंनामतत्स्मृतम् । ननुयदि पित्ताग्न्योरभेदस्तदा कथं घृतं पित्तस्य शमकमग्नेर्दीपकमिति । तथामत्स्याः पित्तं कुर्वन्ति न च तेऽग्निदीप्तिकरा इति । तथा पित्ताधिक्यात्तीक्ष्णोऽग्निरित्यपि । कथंस्यात् । तथा समदोषः समाग्निश्चेत्यपि वक्तुं न युज्यते । तथा द्रवं स्निग्धमधोगञ्च पित्तं वह्निरतोऽन्यथेति ॥ अत्रोच्यते । पित्तमग्नेः संततािधष्ठानम् ॥ (तथाचोक्तं तंत्रान्तरे) अग्निर्भिन्नगुणैर्युक्तः पित्तंभिन्नगुणैस्तथा । द्रवं स्निग्धमधोगंच पित्तंवह्निरतोऽन्यथा ॥ तस्मात्तेजोमयंपित्तंपित्तोष्मायः सशक्तिमान् । ससञ्चरतिकुक्षिस्थः सर्वलोधमनीमुखैः ॥ सकायाग्निःसकायोष्मा सपक्तासचजीवनम् । अनन्यगतिरित्येवं देहेकायाग्निरुच्यते ॥ (अन्यच्च) वामपार्श्वाश्रितंनाभेः किञ्चित्सोमस्यमण्डलम् । तन्मध्येमण्डलंसौर्य्यं तन्मध्येऽग्निर्व्यवस्थितः ॥ जरायुमात्रप्रच्छन्नः काचकोशस्थदीपवत् ॥ (तथाच मधुकोषे) द्रवतेजःसमुदायात्मकंस्यापि पित्तस्यतेजो भागोग्निरिति । तेन पित्तमप्यग्नि वन्मन्यते । अतितापितायोगोलकवत् । परमार्थतस्तु अग्निः पित्ताद्भिन्न एवेति सिद्धांतः ॥ (अतएवाह रसप्रदीपे) जाठरोभगवानग्नि रीश्वरोऽन्नस्यपाचकः । सौक्ष्माद्रसानाऽददानो विवक्तुंनैवशक्यते ॥ नाभिमध्येशरीरस्य विशेषात्सोममण्डलम् । सोममण्डलमध्यस्थं विद्यात्सूर्य्यस्यमण्डलम् ॥ प्रदीपवत्तत्रनृणां स्थितोमध्येहुताशनः । सूर्य्योदिवियथातिष्ठे स्तेजोयुक्तैर्गभस्तिभिः ॥ विशोषातिसर्वाणि पल्वलानिसरांसिच । तद्वच्छरीरिणांभुक्तं ज्वलनोनाभिमाश्रितः ॥ मयूखैःपचतेक्षिप्रं नानाव्यञ्जनसंस्कृतम् । स्थूलकायेपुसत्त्वेषु यवमात्रःप्रमाणतः। ह्रस्वकायेपुसत्त्वेपुतिलमात्रःप्रमाणतःकृमिकीटपतंगेपुवालमात्रोऽवतिष्ठतइति॥ ५४॥

अब उनके कार्य्य कहतेहैं ॥

पाचक पित्त खायेहुये पदार्थको परिपाक करताहै शेप अग्नि (महाभूताग्नि और धात्वग्नि) के बलको बढ़ाताहै और रसमूत्र तथामलको अलग२ करताहै यहपाचक नाम पित्त आमाशय और पक्वाशयमें स्थित भोज्य भक्ष्य चर्व्य लेह्य चूष्य और पेय इन छःप्रकारोंके भोजनोंको पकाताहै और रसमलमूत्र तथा दोपोंको अलग२करता है अन्न्याशयमें रहनेवाला वह पित्त अपनी शक्तिसे रसका रंगना - हृदयमें स्थित कफ और तमो गुणको हटाना - रूपको ग्रहण करना प्रभाका प्रकाश करना शरीरके चन्दनादि लेपोंका परिपाक करना आदिक अग्निके कर्मोंके द्वारा विशेप २ पित्तके स्थानों

की सहायता करताहै अर्थात् शेष यकृत् पिलही आदि पित्तके स्थानोंको प्राप्तहोकर उन २ स्थानोंमें रसका रंगना आदिककर्मोंसे उपकार करताहै और शेष अर्थात् महाभूताग्नि और धात्वग्निके बल को बढ़ाताहै क्योंकि चरक मुनिने कहाहै कि पृथ्वी संबंधी - जलसंबंधी अग्निसंबंधी वायुसंबंधी और आकाश संबंधी यह पांचऊष्मा अर्थात् अग्निहैं जिस कारणसे वाग्भटमेंकहा गयाहै कि दोष धातु और मलादिकों की ऊष्माही अग्निहै यह आत्रेय मुनिका मतहै और पाचक पित्त रसादि सब धातुओं में प्राप्त अग्नियोंके बलका बढ़ाने वालाहै - जैसे घरमें रक्खे हुए रत्न जुगनूके समान दूरसे चमकतेहैं और वहभी दीपककी ज्योतिसे दूरतक प्रकाश करने वाले होतेहैं उसी प्रकार अग्न्याशयमें स्थित पाचक नाम अग्निके तेजस संपूर्ण अग्नि बलवान्होतेहैं - अन्नका परिपाक करने वाला पाचक नाम अग्नि संपूर्ण अग्नियोंमें अधिक समझा गयाहै क्योंकि उन सबका वही आधारहै और उसीकी वृद्धि और क्षयसे सपूर्ण अग्नि वृद्धि और क्षय वाले होतेहैं अब यह सन्देह उत्पन्न होताहै कि पित्तसे अलग अग्नि कोई दूसरा पदार्थहै अथवा पित्तही अग्निहै पित्तके उष्णादि गुणोंसे आहारका परिपाक - रसका रंगना और दर्शन आदि कर्मोंके द्वारा निश्चय होताहै कि पित्तके सिवाय दूसरा अग्नि नहींहै इस कारणसे अग्नि रूप पित्तकेही स्थानभेदसे पाचक - रंजक - साधक - आलोचक और भ्राजकनामहैं और ऐसाही वाग्भट ने कहाहै कि पाचक पित्त तिलके प्रमाणहै और कठिनताके कारणसे इसको दोष पना नहींहै- विकारसे रहित पाचक पित्तपरिपाक ऊष्मा और दर्शन इनके द्वारा उपकारकरताहै क्षुधा तृषा रुचि प्रभा मेधा बुद्धि शूरता और शरीर की कोमलता इनसे उपकार करने वाला पक्वाशय और आमाशय में रहनेवाला वही पित्तपाचप्रचारका है पंच महाभूतात्मक होने परभी जो अधिक तैजसगुणवाला है पिघलने से रहित परिपाक आदि कर्म्मोंसे अग्नि कहलाने वाला अन्नका परिपाक करनेवाला मल और साराशका अलग २ करने वाला जो पित्त आमाशय और पक्वाशय में स्थित भी शेष पित्तों को बलके देने से उपकार करताहै वह पाचक नाम पित्त है अब यह संदेह उत्पन्न होताहै कि जो पित्त और अग्निमें भेदनहीं है तो घी पित्त का शान्तकरने वाला और अग्नि का प्रज्वलित करनेवाला कैसे होसकाहै और मछली पित्तको उत्पन्न करती हैं परन्तु अग्निको नहीं उत्पन्न करतीं यह भी कैसे होसकाहै और पित्त की अधिकतासे अग्नि तीक्ष्ण होतीहै यह कैसे और कफ वात और पित्तकी समता होने से समाग्नि होतीहै यहभी नहीं कह सकेहैं और पित्त पिघलने वाला - चिकना और नीचे जाने वाला होताहै परन्तु अग्नि इसके विपरीतहै - इसके उत्तरमें यह कहा जाताहै कि पित्त अग्निके निरन्तर रहनेका स्थानहै और ऐसाही ग्रन्थांतर मे कहाभीहै कि अग्निके और गणहैं और पित्तके और गुणहैं पिघलनेवाला- चिकना और नीचे जाने वाला पित्तहै परन्तु अग्नि इससे विपरीतहै इस कारणसे पित्ततेजसरूपहै और पित्तकीजो ऊष्माहै वह शक्तिवाली है और वह कोपमें स्थित होकर नाड़ियोंके मुखोंसे सम्पूण शरीरमें फैलती है और वह शरीरकी अग्निहै शरीरकी ऊष्माहै परिपाक करनेवाली और जीवनरूपहै एक गतिवाली है इसप्रकार शरीरमें शरीरकी अग्नि कहीगईहै और भी कहागयाहै कि नाभिके वाम कुक्षिमें रहने वाला छोटासा चन्द्रमाका मंडलहै उसके बीचमें सूर्य्यका मडलहै उसमें काचके पात्रमें स्थितदीपकके समान केवल जरायुसे ढकीहुई अग्निवर्त्तमान है और ऐसाही मधुकोषमें भी कहाहै कि द्रव और तेजके समुदाय रूपवाले पित्तकाते जो भाग अग्निहै इस कारणसे अत्यन्त तपाये हुए लोहेके गोलेके समान पित्तभी अग्निके तुल्य मानाजाता है परन्तु ठीक २ तो पित्तसे अग्निभिन्न है यही

सिद्धान्तहै इसीसे रसप्रदीपमेंभी कहाहै कि उदरमें रहनेवाला अन्नका परिपाक करनेवाला भगवान् ईश्वर अग्नि सूक्ष्मतासे रसोंको लेताहुआ विभाग नहीं कियाजा सक्ताहै शरीरकी नाभिमें चन्द्र मंडल उसके बीचमें सूर्य्यका मंडलहै और उसमें दीपकके समान मनुष्योंकी जठराग्नि स्थित है जिस प्रकार आकाशमें रहनेवाले सूर्य्य अपनी तेजयुक्त किरणोंसे सम्पूर्ण तड़ागादिकोंको सुखातेहैं उसीप्रकार नाभिमें रहनेवाला अग्नि अपनी किरणोंसे मनुष्योंके अनेक प्रकारके व्यंजन युक्त भोजनको शीघ्र पचाताहै वह अग्नि स्थूल शरीरवाले जीवोंमें जो बराबर छोटे शरीर वाले जीवों में तिल बराबर और कीडे पतंगे आदिकोंमें बाल बराबर रहताहै ॥ ५४ ॥

पुनः प्रकृतमनुसरति ।

रञ्जकंनामयत्पित्तं तद्रसंशोणितंनयेत् । यत्तुसाधकसंज्ञं तत्कुर्य्याद्बुद्धिधृतिस्मृतिम् ॥ धृतिंमेधांयदालोचक संज्ञंतद्रूपग्रहणकारणम् । भ्राजकंकांतिकारीस्याल्लेपाभ्यंगादिपाचकम् ॥ ५५ ॥

अब फिर प्रकृत विषय (असली विषय) कहाजाताहै ॥

रंजक नाम पित्त रसको रुधिर बनाताहै साधक नाम पित्त बुद्धि मेधा और स्मृतिको उत्पन्नकरताहै जिस पित्त के द्वारारूप का ग्रहण कियाजाताहै उसका नाम आलोचकहै और भ्राजक नाम पित्त शरीरकी शोभाका करनेवाला तथा लेप और शरीरमें लगाये हुए तैलादिकोंका परिपाक करने वालाहै ॥ ५५ ॥

अथ श्लेष्मस्वरूप माह ।

श्लेष्माश्वेतोगुरुःस्निग्धः पिच्छिलःशीतलस्तथा । तमोगुणाऽधिकःस्वादु र्विदग्धो लवणोभवेत् ५६ एकःश्लेष्मा वातपित्ताविवनामस्थान कर्म्मभेदैःपञ्चविधः ॥ ५७ ॥

अब श्लेष्माका स्वरूप कहतेहैं ॥

श्वेत भारी चिकना फिसलनेवाला शीतल अधिक तमोगुण वाला मधुर और विकार युक्तहोकर लवण रसवाला श्लेष्मा होताहै ५६ एक भी श्लेष्मा वायु और पित्तके समान नाम स्थान और कार्य्यके भेदों से पांच प्रकारका है ॥ ५७ ॥

अथ श्लेष्मणांनामान्याह ।

कफस्यैतानिनामानि क्लेदनश्चावलम्बनः । रसनःस्नेहनश्चापि श्लेष्मणःस्थान भेदतः ॥ ५८ ॥

अब श्लेष्मा के नाम कहतेहैं ॥

क्लेदन अवलम्बन रसन स्नेहन और श्लेष्मण यहपांच नाम श्लेष्माके स्थानभेदसेहोतेहैं॥५८॥

अथ क्लेदनादीनां स्थानान्याह ।

आमाशयेऽथहृदये कण्ठेशिरसिसंधिषु । स्थानेष्वेषुमनुष्याणां श्लेष्मातिष्ठत्यनुक्रमात्॥५९॥दोषाणां सकलशरीर व्यापिनामपि पञ्च पञ्च स्थानानीति बाहुल्याभिप्रायेणो

क्तानि ॥ (तथाच वाग्भटः) इति प्रायेण दोषाणां स्थानान्येकी कृतात्मनाम् । व्यापि नामपिजानीयात् कर्माणिचपृथक्पृथक् (इति) चरकश्च । तेव्यापिनोऽपि हृन्नाभ्योर धेमध्योर्द्ध्वसंश्रया इति ॥ ६० ॥

अब उनके स्थान कहतेहैं ॥

आमाशय में क्लेदन हृदयमें अवलम्बन कण्ठमें रसन शिरमें स्नेहन और संधियोंमें श्लेष्मण नाम श्लेष्मा रहताहै ५९ सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्त होनेवाले भी वात पित्त और कफोंके पांच २ स्थान अधिकताके अभिप्रायसे कहेगयेहैं और यही वाग्भटने भी कहाहै कि इस प्रकार सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त होनेवाले भी विकार रहित वायु पित्त और कफोंके विशेष स्थान और अलग २ कार्य्य जानने चाहिये चरकने भी कहाहै कि सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्त होनेवाले भी यह वातादिक हृदय और नाभिके अधोभाग मध्य और ऊर्ध्व भागमें रहतेहैं ॥ ६० ॥

अथ तत्तत्स्थानगतस्य श्लेष्मणःकर्म्माण्याह ॥

क्लेदनःक्लेदयत्यन्न मात्मशक्त्यापराण्यपि । अनुगृह्णातिचश्लेष्मस्था नान्युदककर्म्मणा ॥ अयमर्थः क्लेदनोऽन्नं क्लेदयतिनेन संहतमन्नं भेदं प्राप्नोति । अपराण्यपि श्लेष्मस्थानानि हृदयादीनि ॥ मार्गेणगत्वा तत्रतत्र हृदया व लम्बन संधारण रसग्रहणसमस्तेन्द्रिय तर्पणसंधिसंश्लेषणाद्युदककर्मभिरनुगृह्णाति उपकरोति ॥ ६१ ॥

अब उन २ स्थानोंमें रहनेवाले श्लेष्माके कार्य्य कहतेहैं ॥

क्लेदन नाम श्लेष्मा अन्नको गीला करताहै और अपनी शक्तिसे श्लेष्माके दूसरे स्थानोंको भी जलकेकर्मके द्वारा सहायता करताहै इसका यहतात्पर्य्यहै कि क्लेदननाम श्लेष्मा अन्नको गीलाकरताहै इस्से इकट्ठा हुआ अन्न भिन्न २ होजाताहै श्लेष्माके हृदयादि दूसरे स्थानोंमें भी जाकर उन २ स्थानोंमें हृदयका अवलम्बन करना शिर और भुजाओंकी सन्धिको धारणकरना रसका ग्रहणकरना सम्पूर्ण इन्द्रियोंको तृप्त करना सन्धियोंको जोड़ना इत्यादि जलकर्मोंसे उपकार करताहै ॥ ६१ ॥

तथाचरसयुक्तात्म वीर्येणहृदयस्थावलम्बनम् । त्रिकसंधारणंचापि विद्धात्यवलम्बनः ॥ (त्रिकंशिरोबाहुद्वयसन्धिः) ॥ ६२ ॥

हृदयमें रहनेवाला अवलम्बन नाम श्लेष्मा हृदयका अवलम्बन और शिर तथा दोनों भुजाओंकी सन्धिको धारण करताहै ॥ ६२ ॥

उभावपिततःसौम्यौ तिष्ठतश्चान्तिकेयतः । रसान्वितौहिजानीतो रसनारसनौसमौ ॥ (रसनारसनेंद्रियं रसनःकण्ठस्थकफः) ॥ ६३ ॥

इस युक्त जिह्वा और कंठमें स्थित रसन नाम श्लेष्मा यह दोनोंही चन्द्रगुण युक्त निकट रहनेवाले समान जानने चाहिये ॥ ६३ ॥

स्नेहनःस्नेहदानेन समस्तेन्द्रियतर्पणः । श्लेष्मणःसर्वसन्धीनां संश्लेषंविदधात्यसौ ॥ ६४ ॥

स्नेहन नाम श्लेष्मा स्नेहके देनेसे सम्पूर्ण इन्द्रियोंको तृप्त करताहै और श्लेष्मा नामश्लेष्मा सम्पूर्ण संधियोंको जोड़ताहै ॥ ६४ ॥

अथ धातुशब्दस्यनिरुक्तिमाह ॥

एतेसप्तस्वयंस्थित्वादेहन्दधातियन्नृणाम् । रसासृङ्मांसमेदोस्थिमज्जाशुक्राणिधातवः ॥ धातवइतिधाधातोस्तुप्रत्ययः ॥ ६५ ॥

अब धातु शब्दकी निरुक्ति कहतेहैं ॥

इस रुधिर मांस मेद हड्डी मज्जा वीर्य्य यह सातों आपस्थित होकर मनुष्योंके शरीरको धारण करतेहैं इसी से धातु कहलातेहैं धातुशब्दमें धा धातुसे तु प्रत्ययहै ॥ ६५ ॥

अथधातूनांकर्म्माण्याह ॥

प्रीणनंजीवनंलेपःस्नेहोधारणपूरणे। गर्भोत्पादश्चकर्माणिधातूनांकथितानिहि॥६६॥

अबधातुओंके कार्य्यकहतेहैं ॥

प्रीति उत्पन्न करना जीवका धारण करना- लेपकरना- चिकनाकरना- धारण करना- पूर्ण करना- गर्भ उत्पन्न करना यह धातुओं के कार्य्य हैं ॥ ६६ ॥

तत्ररसशब्दस्यनिरुक्तिमाह ॥

यद्यथारसधातुर्यस्ततोऽभवदपांरसः । सद्रवंसकलंदेहंरसतीतिरसःस्मृतः ॥ ६७॥

अबरसशब्दकी निरुक्तिकहते हैं ॥

गत्यर्थक रसधातुसे रसशब्द बनाहै इस कारण से संपूर्ण शरीरमें फैलनें वाला यह रसकहलाताहै और यह जलसे उत्पन्न हुआ है ॥ ६७ ॥

अथरसस्यस्वरूपमाह ॥

सम्यक्पक्वस्यभुक्तस्यसारोनिगदितोरसः । सतुद्रवःसितःशीतःस्वादुःस्निग्धश्चलो भवेत् ॥ सारोयथागुडमधूकपुष्पबब्बूलत्वग्बदरीमूलादिभवःसारोमदिरा ॥ ६८ ॥

अबरसका स्वरूप कहते हैं ॥

अच्छे प्रकारसे परिपाक हुए भोजन का सारांश रसकहलाता है और वह बहने वाला श्वेत शीतल मधुर- चिकना और चंचल होता है- सार शब्दका यह आशय हैकि जैसे गुड़ महुएके फूल- बबूलकी छाल- बेरकी जड़ आदिकों से उत्पन्न हुआ सारांश मदिरा कहलाता है उसी प्रकार अच्छी रीतिसे परिपक्व अन्नका सारांश रसकहाता है ॥ ६८ ॥

अथरसस्यस्थानमाह ॥

सर्व्वदेहचरस्यापिरसस्यहृदयंस्थलम् । समानमरुतापूर्व्वंयदयंहृदयेधृतः ॥ ६९॥

अबरसका स्थानकहतेहैं ॥

क्योंकि समान वायुके द्वारा यह पहले हृदयमें स्थापनकिया गया है इसकारण से संपूर्ण शरीरमें घूमनें वालेभी रसका स्थान हृदय है ॥ ६९ ॥

अथरसस्यकर्म्माण्याह ॥

आरुह्यधमनीर्गत्वाधातून्सर्वानयंरसः । पुष्णातितदनुस्वीयैर्व्याप्नोतिचतनुंगुणैः ॥ गुणैःशीतस्निग्धपोषकत्वगुणैः ॥ मन्दवह्निविदग्धस्तुकटुर्वाम्लोभवेद्रसः । सकुर्य्याद्बहुलान्रोगान्विषकृत्यंकरोत्यपि ॥ ७० ॥

अबरसके कार्य्य कहते हैं॥

यह रस बढ़कर नाड़ियोंमें प्राप्त होकर संपूर्ण धातुओंको पुष्ट करता है इसके उपरान्त अपने शीत- चिकनाई और पुष्ट करना इन गुणोंसे शरीरको व्याप्त करता है मन्दाग्निसे विकार युक्तहुआ रसकडुआ अथवा खट्टा होताहै वहरस बहुतसे रोग और विषके कार्य्यको भी करता है ॥ ७० ॥

अथरक्तस्यस्वरूपमाह ॥

यदारसोयकृद्यातितत्ररञ्जकपित्ततः । रागंपाकंचसंप्राप्यसभवेद्रक्तसंज्ञकः ॥ रक्तंसर्वशरीरस्थंजीवस्याधारमुत्तमम् । स्निग्धंगुरुचलंस्वादुविदग्धंपित्तवद्भवेत् ॥ (जीवस्याधारमुत्तममिति) यतआह । जीवोवसतिसर्वस्मिन्देहेतत्रविशेषतः ॥ वीर्येरक्तेमलेयस्मिन्क्षीणेयातिक्षयंक्षणादिति ॥ वीर्येरक्तेमलेचशरीरारंभकेवाग्भटोक्तपरिमाणमितेशुद्धेजीवोवसतिनतुदुष्टेप्रवृद्धेरक्तस्रावणोपदेशस्यवैयर्थ्यप्रसंगात्पित्तवद्भवेत् । अम्लंभवेदित्यर्थः ॥ ७१ ॥

अबरुधिरकास्वरूप कहतेहैं ॥

जबरस यकृत्में प्राप्त होताहै तो वहां रंजक नाम पित्तसे रंग और परिपाकको प्राप्त होकर रुधिर नामको प्राप्त होता है- रुधिर संपूर्ण शरीरमें रहने वाला जीवका उत्तम आधार- चिकना- भारी चंचल और मधुर होताहै परन्तु विकारको प्राप्तहुआ रुधिर पित्तके समान खट्टाहोता है- जीवका उत्तम आधार रुधिरहै ऐसा कहा गयाहै संपूर्ण शरीरमें जीवरहताहै परन्तु शरीरके आरंभ करने वाले शुद्ध वाग्भटमें कहेहुए प्रमाणयुक्त वीर्य्य रुधिर और मलमें विशेष तासे रहताहै क्योंकि इनके क्षीण होनेसे क्षणभरमें क्षयको प्राप्तहोता है नकि दोषको प्राप्त और बढ़ेहुए रुधिरादिकों में जीवरहता है और जो ऐसा नहो तो रुधिर मोक्षण (फस्त) का उपदेश व्यर्थ हो जाय ॥ ७१ ॥

अथरक्तस्यस्थानमाह ॥

यकृत्प्लीहाचरक्तस्यमुख्यस्थानन्तयोः स्थितम् । अन्यत्रसंस्थितवतांरक्तानांपोषकंभवेत् ॥ ७२ ॥

अबरुधिरका स्थानकहते हैं ॥

यकृत् और प्लीहा रुधिर का मुख्य स्थानहैं उनमें स्थित रुधिर अन्य स्थान में रहने वाले रुधिर को पुष्टकरता है ॥ ७२ ॥

अथमांसस्यस्वरूपमाह ॥

शोणितंस्वाग्निनापक्वंवायुनाचघनीकृतम् । तदेवमांसंजानीयात्तस्यभेदानपिब्रुवे ॥ शोणितसंज्ञांलभते ॥ एवमग्रेरसस्यैवमांसादिर्व्यपदेशः ॥ ७३ ॥

अब मांसका स्वरूप कहतेहैं ॥

अपनी अग्निसे पकाहुआ और वायुसे गाढ़ा कियागया रुधिर मांस कहलाताहै अब उसके भेदोंको भी कहतेहैं - रुधिरके स्थानमें जानेसे रसभी रुधिर कहलाताहै इसी प्रकार आगेभी रसही मांसादिक नामोंको प्राप्त होताहै ॥ ७३ ॥

अथमांसस्यपेशीमाह ॥

यथार्थमूष्मणायुक्तोवायुःस्रोतांसिदारयेत् । अनुप्रविश्यपिशितंपेशी विंभजतेतथा ॥ यथार्थंयथाप्रयोजनम् ॥ ७४ ॥

अब मासकी पेशी कहतेहैं ॥

ऊष्मासे युक्त वायु सोतोंको फाड़ता हुआ मांसमेंप्रवेश करके प्रयोजनके अनुसार पेशियों (मांसपिण्डों)का विभाग करताहै ॥ ७४ ॥

मांसपेशीनांसंख्यामाह ॥

मांसपश्यःसमाख्यातानृणांपञ्चशतानिहि । तासांशतानिचत्वारिशाखासुकथितान्यथा ॥ कोष्ठेषडुत्तराषष्टिःकथितामुनिपुंगवैः । ग्रीवायाऊर्ध्वगास्तास्तुचतुस्त्रिंशत्प्रकीर्तिताः ॥ ७५ ॥

अब पेशियोंकी संख्या कहतेहैं ॥

मनुष्योंके ५०० मांसकी पेशी होतीहैं बडे२ मुनियोंने ४०० मासकी पेशी शाखाओंमें(हाथपैरोंमें) रहतीहैं कोष्टमें ६६ और ग्रीवाके ऊपर ३४ रहतीहैं ऐसा कहाहै ॥ ७५ ॥

ताःशाखागताः प्राह ॥

एकैकस्यान्तुपादांगुल्यांतिस्रस्तिस्रस्ताःपञ्चदश १५ पादाग्रेदश १० पादोपरिकूर्चसन्निविष्टादश १० गुल्फतलयोर्दश १० गुल्फजानुनोरन्तरेविंशतिः २० जानुनिपञ्च ५ ऊरौविंशतिः २० वंक्षणेदश १० एवमेकस्मिन्सक्थिनिशतंभवंति एतेनेतरसक्थिबाहूचव्याख्यातौ ॥ ७६ ॥

अब शाखाओंमें रहनेवाली मांस पेशियोंका वर्णन करते हैं ॥

पैरकी एक २ उंगलीमें तीन२ पेशी होतीहैं इस प्रकार पांचों उँगलियों में १५ हुई पैरकें ऊपर १० और पैरके ऊपर कूर्चसे मिली हुई १० गट्टोंकी नीचे १० गट्टे और घुटनोंके बीचमें २० घुटनोंमें ५ जघामें २०जंघा की सन्धि में १० इसप्रकार पञ्जे से लेकर जंघातक पुरे पेरमें १०० होतीहैं इसी रीतिसे दूसरी जंघा और दोनों भुजा जाननी चाहिये ॥ ७६ ॥

अथकोष्ठगताःप्राह ॥

गुदेतिस्रः ३ शेफस्यैका १ सेवन्यामेका १ वृषणयोर्द्वे २ स्फिजोःपञ्च ५ पञ्च ५ वस्तिमूर्द्धनिद्वे २ उदरेपञ्च ५ नाभ्यामेका १ पृष्ठोर्ध्वसन्निविष्टाउभयतःपञ्च ५ पञ्चदीर्घा ५ पार्श्वयोःषट् ६ वक्षसिदश १० अक्षकांसौप्रतिसमन्तात्सप्त ७ अक्षकोअपुत्राइतिलोकेअंसोस्कन्धौ १ हृदिद्वे २ यकृति २ प्लीहिद्वे २ नासायांद्वे २ नेत्रयोर्द्वे २ गण्डयोश्चतस्रः ४ तुण्डकेद्वे २ ॥ ७७ ॥

अब कोष्ठमें रहने वाली पेशियोंका वर्णनकरतेहैं ॥

गुदामें तीन ३ लिंगमें १ लिंगके नीचे सीवनमें १ अंड कोशोंमें २ दोनों नितम्बोंमें पांच२ मूत्राशयके ऊपर २ उदरमें ५ नाभिमें १ पीठके ऊपर दोनों तरफ फैला हुई ५ और ५ लंबी पसलियों

में ६ हृदयमें १० हसली और कन्धोंके आस पास ७ छातीमें २ यकृत्में २ पिलहीमें २ तुंडक (कन्धे केपासकी नली) में २ इस प्रकारसे ६६ हैं ॥ ७७ ॥

अथग्रीवोर्ध्वगाःप्राह ॥

ग्रीवायाञ्चतस्रः ४ हन्वोरष्टौ ८ कण्ठमणोएकाघण्टिकायामितियावत् । गलेएका १ तालुनिद्वे २ जिह्वायामेका १ ओष्ठयोर्द्वे २ नासायांद्वे२नेत्रयोर्द्वे२ गण्डयोश्चतस्रः४ कर्णयोर्द्वे २ ललाटेचतस्रः४.। शिरस्येका १ एवंमांसपेश्यःपञ्चशतानिभवन्ति ॥ ७८ ॥

अब ग्रीवाके ऊपर रहने वाली पेशियोंका वर्णन करते हैं ॥

ग्रीवामें ४ दोनों जावड़ोंमें ८ गांठीमें १ गलेमें १ तालुमें २ जिह्वामें १ दोनों ओष्ठोंमें २ नासिकामें २ नेत्रोंके ऊपर २ कपोलोंमें ४ कानोंमें २ माथेमें ४ शिरमें १ इस प्रकारसे चौंतीस हुई इस रीतिसे सब मिलकर ५०० मांसकी पेशीहोतीहैं ॥ ७८ ॥

स्त्रीणामपिभवन्त्येताःकिन्तुविंशतिरुत्तराः । गर्भाशयेगर्भमार्गेयोनौचस्तनयोरपि ॥ एताःपञ्चशतानिमांसपेश्यः ॥ अधिकाविंशतिर्यथा । गर्भाशयेतिस्रः ३ गर्भच्छिद्रसंस्थिताशुक्रार्त्तवप्रवेशिन्यास्तिस्रः ३ योनावभ्यन्तरतोमुखाश्रितेप्रश्रिते द्वे २ योनावेव वहिर्निर्गते स्रोतःपार्श्वद्वयस्थितेवर्त्तुलेयोनिकर्णिकेतियावत् । द्वे२स्तनयोःपञ्च ५ पञ्च ५ यौवनेतासांवृद्धिर्भवति ॥ ७९ ॥

स्त्रियोंकेभी यही ५०० पेशीहोतीहैं परन्तु गर्भाशय गर्भ मार्ग योनि और स्तनोंमें २० अधिकहोतीहैं वह बीस अधिक ऐसे होतीहैं कि गर्भाशयमें ३ गर्भके छिद्रमें स्थित वीर्य्य और रजकी प्रवेश कराने वाली ३ योनिके भीतर मुखकी ओर फैली हुई २ योनिके वाहरकी ओर छिद्र दोनों पार्श्वों में स्थित गोल योनि कर्णिकानामसे २ और दोनों स्तनोंमें पांच २ और युवावस्थामें इनकी वृद्धि होतीहै ॥ ७९ ॥

पुंसांपेश्यःपुरस्ताद्याःप्रोक्तामेहनमुष्कजाः । स्त्रीणामावृत्यतिष्ठन्तिफलमन्तर्गताहिताः ॥ अस्यायमर्थः । पुंसांमेहनमुष्कयोश्चयास्तिस्रोमांसपेश्यः ॥ पूर्वमुक्तास्ताःस्त्रीणांमेहनमुष्काभावात्फलंगर्भशमार्थआवृत्यतिष्ठन्ति (गयदासस्त्वाह) स्त्रीणांमांसपेश्यस्तिभिर्हीनानिपञ्चशतानि । (तथाचभोजः) पञ्चपेशीशतान्येवस्त्रीवर्ज्जंविद्धि भूमिप । अतश्चतिस्रोहीयन्तेस्त्रीणांशेफसिमुष्कयोः ॥ ८० ॥

पुरुषोंके लिंग और अंडकोशोंमें जो मांसकी पेशी पहले कहीगई हैं वह स्त्रियों के गर्भाशयको आच्छादन करके रहती हैं इसका यह अर्थ हैकि जोतीन मांसकी पेशी पुरुषों के लिंग और अंडकोशोंमेंपहले कहीगई हैं वह स्त्रियोंके लिंग और अंडको शोंके नहोने से गर्भको आच्छादन करके रहती हैं (गयदासकहते हैं)कि स्त्रियोंकेमांसपेशी तीनकम पांचसौहोतीहैं और वैसाही (भोजने भी कहाहै) कि पांच सौ पेशी स्त्रियोंको छोड़कर जाननी चाहिये स्त्रियोंके लिंग और अंडकोशों के नहोनेसे तीन कमहोती हैं ॥ ८० ॥

अथमांसपेशीनांकर्माण्याह ॥

शिरास्नाय्वस्थिपर्वाणि सन्धयश्चशरीरिणाम् । पेशीभिःसंवृतान्येव वलवन्तिभवन्तिहि ॥ ८१ ॥

अथमांसकीपेशियोंके कार्य्य कहतेहैं ॥

मनुष्योंकी शिरा- स्नायु- हड्डी- गांठे और सन्धि यह पेशियोंसे लिपटी हुईही बलवान होती हैं॥८१॥

अथमेदसःस्वरूपमाह ॥

यन्मांसंस्वाग्निनापक्वंतन्मेदइतिकथ्यते।तदतीवगुरुस्निग्धंबलकार्य्यतिबृंहणम्॥ ८२॥

अथमेदकास्वरूपकहते हैं ॥

अपनी अग्निसे पकाहुआ मांस मेदकहलाताहै और वह बहुत भारी- चिकना- बलकारी और अत्यन्त शरीरकी वृद्धि करने वालाहोता है॥ ८२ ॥

अथमेदसःस्थानमाह ॥

मेदोहिसर्व्वभूतानामुदरेष्वस्थिसंस्थितम्।अतएवोदरेवृद्धिःप्रायोमेदस्विनोभवेत्॥८३॥

अथमेदकास्थानकहते हैं ॥

सब प्राणियोंके उदरमें हड्डियोंसे मिलाहुआ मेद रहताहै इसीसे मेदवालों के उदरमें बहुधा वृद्धि होती है ॥ ८३ ॥

अथास्थ्नःस्वरूपमाह ॥

मेदोयत्स्वाग्निनापक्वंवायुनाचातिशोषितम्। तदस्थिसंज्ञांलभतेससारःसर्वविग्रहे॥ अभ्यन्तरगतैःसारैर्यथातिष्ठन्तिभूरुहाः । अस्थिसारैस्तथादेहाध्रियंतेदेहिनोध्रुवम्॥त स्मािच्चरविनष्टेपुत्वाङ्मांसेषुशरीरिणाम्।अस्थीनिनविनश्यन्तिसाराएतानिसर्वथा॥८४॥

अबहड्डियोंका स्वरूपकहते हैं ॥

अपनी अग्नि से पकाहुआ जो मेद वह वायुसे अत्यन्त सुखाया हुआ हड्डी कहलाताहै और वही संपूर्ण शरीर में सारांश है- जिस प्रकार वृक्षभीतर रहने वाले सारांश से स्थित रहतेहैं उसी प्रकार प्राणियोंके शरीर हड्डी रूपी सारांश से धारण किये जातेहैं इस कारण से त्वचा और मांसादिकों के नष्ट होजाने परभी हड्डी नष्ट नहीं होती हैं इसीसे यह सब प्रकारसे सारांश है ॥ ८४ ॥

अथास्थ्नांसंख्यामाह ॥

शल्यतंत्रेऽस्थिखण्डानांशतत्रयमुदाहृतम्। तान्येवात्रनिगद्यंतेतेषांस्थानानियानिच ॥ सविंशतिशतंत्वस्थ्नांशाखासुकथितंबुधैः । पार्श्वयोःश्रोणिफलकेवक्षःपृष्ठोदरेषुच ॥ जा नीयाद्विषगेतेषुशतंसप्तदशोत्तरम् । ग्रीवायामूर्ध्वगांविद्यादस्थ्नांषष्टिंत्रिसंयुतम् ॥८५॥

अब हड्डियों की संख्या कहतेहैं ॥

शल्यतंत्रमें तीनसौ हड्डियों के खण्डकहे गयेहैं वही यहांभी कहेजातेहैं और उनके स्थान भी कहे जातेहैं- पंडितोंने शाखा अर्थात् हाथपैरों में १२० पसलियोंमें-नितम्बोंमें-छातीमें-पीठमें और उदर में ११७ ग्रीवामें ऊपरकी तरफ ६३ हड्डियां कही हैं ॥ ८५ ॥

तानिशाखागतान्याह ॥

एकैकस्यांपादांगुल्यांत्रीणित्रीणितानिपंचदश १५ पादतलेपञ्चास्थिशलाकास्तदा धारभूतमेकमस्थि १ एवंषट् ६ कूर्चेद्वे २ गुल्फेद्वे २ पार्ष्ण्यावेकम् १ जंघयोर्द्वे २

जानुन्येकम् १ ऊरावेकंएवंत्रिंशदेकस्मिन्सक्थिनिभवन्ति । एतेनेतरसक्थिबाहूचव्याख्यातौ ॥ ८६ ॥

अब शाखाओंमें रहनेवाली हड्डियां कहते हैं ॥

पैर की एक२उंगली में तीन२हड्डियां इस प्रकार पन्द्रह हुई पैरके तलुए में पांच हड्डियोंकी शलाका और उनके आधार भूतएक हड्डी इस प्रकार छः हुई कूर्च (गाडे) में दो गट्टोंमें दो एड़ीमें एक-पिंडलीमें दो घुटने में एक- जंघामें एक- इस प्रकार पैरसे लेकर जंघातक तीस ३० हुई इसीरीति से दूसरी जंघा और दोनों बाहुभी जाननी चाहिये ॥ ८६ ॥

अथपार्श्वादिगतान्याह ॥

पार्श्वयोःषट्त्रिंशत् ३६ शिश्नेभगेचएकम् १ नितम्बयोरेकैकम् २ त्रिकेएकम् १ वक्षस्यष्टौ ८ पृष्ठेत्रिंशत् ३० अक्षकसंज्ञेद्वे २ ॥ ८७ ॥

अबपार्श्वादिकों में स्थितहोने वाली हड्डियों का वर्णन करतेहैं ॥

दोनों पसलियों में ७२ लिङ्ग और योनि में एक २नितम्बों में एक२ रीढ़के नीचे त्रिकमें १ छाती में आठ पीठमें ३० हसलीमें २ ॥ ८७ ॥

अथग्रीवोर्ध्वगतान्याह ॥

ग्रीवायांनव ९ कण्ठनाड्यांचत्वारि ४ हन्वोरेकैकम् २ दन्ताःद्वात्रिंशत ३२ नासायांत्रीणि ३ तालुन्येकं १ गण्डयोरेकैकं २ कर्णयोरेकैकम् २ भ्रुवोरेकैकम् २ शिरसिषट् ६ ॥ ८८ ॥

अथग्रीवाके ऊपर रहने वाली हड्डियोंको कहतेहैं ॥

ग्रीवामें ९ कण्ठनाडीमें ४ जावड़ोंमें एक२ और ३२ दांत नासिका में ३ तालुमें १ गालों में एक१ कानोंमें एक २ भृकुटियोंमें एक २ शिरमें ६ ॥८८॥

एतान्यस्थीनिपञ्चविधानिभवंति ॥ तानियथा ॥

तरुणानिकपालानिरुचकानिभवन्तिहि । वलयानीतितानिस्युर्नलकानिचकानिचित् ॥ अक्षिकोशश्रुतिघ्राणग्रीवासुतरुणानिच । शिरःशंखकपोलेपुताल्वंसंश्रोधजानुनि ॥ कपालानिभवन्त्येषुदन्तेषुरुचिकानिच ।पाण्योःपार्श्वयुगेपृष्ठेवक्षेजठरपादयोः ॥ जानुनितम्बांसगण्डतालुशंखशिरःसुकपालानि । दशनस्तुरुचकाःशिरःशंखकपालेषुताल्वंशपोथकादिषु ॥ एतानिवलयानिस्युर्नलकानिब्रुवेऽधुना । हस्तपादांगुलितलेकूर्चेचमणिबन्धके ॥ बाहुजंघाद्वयेचापिजानीयान्नालकानितु ॥ ८९ ॥

यह हड्डियां पांचप्रकारकी होती हैं उन्हें कहतेहैं ॥

तरुण कपाल रुचक वलय और नलक ये पांचप्रकार की होती हैं नेत्र कर्ण-नासिका और ग्रीवा इनमें तरुण नामहड्डियां होतीहैं मस्तक शंख (माथेकी हड्डी) गाल तालु कन्धे नितम्ब और घुटनों में कपालनाम हड्डियां रहती हैं और दांतोंमें रुचक नाम हड्डियांहोतीहैं हाथों में पसलियोंमें पीठमें छातीमें उदरमें पैरोंमें वलय नामहड्डियां होती हैं हाथपैरकी उंगलियों और तलुओंमें कूर्चमें पहुंचेमें दोनों बाहु और जंघाओं में नलक नाम हड्डियां होतीहैं ॥ ८९ ॥

अथास्थ्नांप्रयोजनमाह ॥

मांसान्यन्त्राणिबद्धानिशिराभि स्नायुभिस्तथा । अस्थीन्यालम्बनंकृत्वानशीर्य्यन्ति पतंतिच ॥ ९० ॥ अब हड्डियोंका प्रयोजन कहते हैं ॥

स्नायु और शिराओंसेबँधेहुये मांस और आँतें हड्डियोंका अवलम्बनकरकेनक्षीणहोतेहैं नगिरतेहैं॥९०॥

अथमज्जास्वरूपमाह ॥

अस्थिवत्स्वाग्निनापक्वंतस्यसारोभवेद्घनः । यःस्वेदवत्पृथग्भूतःसमज्जेत्यभिधीयते ॥ ९१ ॥

अवमज्जाकास्वरूप कहतेहैं ॥

अपनी अग्निसे पकीहुई हड्डीका जो सारांश है वह गाढ़ाहुआ स्वेद के समान अलगहुआ मज्जा कहलाताहै ॥ ९१ ॥

अथमज्जास्थानमाह ॥

स्थूलास्थिषुविशेषेणमज्जात्वभ्यन्तरेस्थितः ॥ ९२ ॥ अथशुक्रस्योत्पत्तिमाह ॥ रसाद्रक्तंततोमांसंमांसान्मेदःप्रजायते । मेदसोऽस्थिततोमज्जामज्ज्ञः शुक्रस्यसम्भवः ॥ शुक्रस्येतिवचनेनशुक्रसम्भवमुक्तम् । ननुमासेनरसःशुक्रोभवतिस्त्रीणांचार्तवंभवतीति ॥ सुश्रुतस्यैववचनेनरसादेवशुक्रस्योत्पत्तिरुच्यते । तदेतत्कथंसङ्गच्छते॥९३॥

अथमज्जा का स्थान कहतेहैं ॥

मज्जा बड़ी हड्डियोंमें विशेषकरके रहतीहै ॥ ९२ ॥ अववीर्य्य की उत्पत्ति कहते हैं ॥ रस से रुधिर रुधिरसे मांस मांस से मेद मेद से हड्डी हड्डीसेमज्जा और मज्जासे वीर्य्य उत्पन्न होताहै अब यह सन्देह उत्पन्न होताहै किरस महीने भरमें वीर्य्य और स्त्रियोंका रजहोजाताहै,इससुश्रुत के वचनसे रसहीके द्वारा वीर्य्य की उत्पत्ति कहीजातीहै तो यह कथन (मज्जासे वीर्यका उत्पन्नहोना) कैसे ठीकहोसक्ताहै ॥ ९३ ॥

इदमेवसन्देहंदूरीकर्त्तुमाहारादेर्गतिंपरिणामंचाह ॥

यात्यामाशयमाहारःपूर्वंप्राणानिलेरितः । माधुर्य्यंफेनभावंचषड्रसोऽपिलभेतसः ॥ आहारइत्यत्रआह्रियतेइत्याहारःअकर्त्तरिचकारकेसंज्ञायामितिसूत्रेणकर्म्मणिघञ्॥९४॥

इसी सन्देह के दूर करनेके लिये आहारादिकी गति और परिणामकहाजाताहै ॥

आहार पहले प्राण वायुसे प्रेरणा किया गया आमाशयमें प्राप्तहोताहै और छओंरससे युक्त भी आहार मधुरता और फेनके भावको प्राप्तहोता है (जोलेजायाजाय उसको आहार कहते हैं) आहार शब्दमें (अकर्त्तरि च संज्ञायां) इससूत्रसे कर्म्ममें घञ्प्रत्ययहोता है ॥ ९४ ॥

सचषड्विध.तथाच ॥

आहार्य्यंषड्विधं भोज्यंभक्ष्यंचर्व्यन्तथैवच । लेह्यंचोष्यंतथापेयंतदुदाहरणानितु ॥ भोज्यमोदनसूपादिभक्ष्यंमोदकमण्डकम् । चर्व्यंचिपिटधान्यादिरसालादितुलेह्यते ॥ चोष्यमाम्रफलेक्ष्वादिपीयतेपानकंपयः ॥ ९५ ॥

वह्याहार छः प्रकार काहै ॥

आहार छः प्रकारका इसक्रमसे है कि भोज्य- भक्ष्यचर्व्य- लेह्य- चोष्य- पेय- और इनके उदाहरण यहहैं जैसेकि भोज्य दालचावल आदि- भक्ष्य -मोदकादि- चर्व्य चिडवे आदि- लेह्य शिखरन आदि- चोष्य आम्रादि- पेय-पना और दूधआदि ॥ ९५ ॥

आमाशयमाह चरकः ॥

नाभिस्तनान्तरेजन्तोराहुरामाशयंबुधाइति ॥ ९६ ॥ अत्र विशेष माह । नाभेर्वितरितमात्रंचकण्ठेदेशात्षडंगुलम् । उरसस्तद्विजानीयाच्छेषेतुहृदयंमतम् ॥ उरोरक्ताशयस्तस्मादधःश्लेष्माशयःस्मृतः ॥ आमाशयस्तुतदधस्तदधो दहनाशयइति॥ प्राणानिलेरितइति।हृदयाधिष्ठानेनप्राणनाम्नावायुनामुखंगतेनान्तःप्रवेशितः॥९७॥

अबचरक मुनिकाकहाहुआआमाशयका वर्णन करते हैं ॥

पंडितलोग जीवोंके नाभि और स्तनोंके बीचमें आमाशयको कहतेहैं९६(अबइसमें विशेषता कहते हैं) नाभिसे बिलस्त भरऊ पर और कण्ठसे छः अंगुलनेचिउर कहलाता है और बाकी हृदयजाननाचाहिये और उरही रक्ताशय कहलाताहै उसके नीचे श्लेष्माशय है- श्लेष्माशयके नीचे आमाशय है और आमाशयके नीचे दहनाशयहै ॥ ९७॥

तथाचसुश्रुतः ॥

योवायुःप्राणनामासौमुखंगच्छतिदेहधृक् । सोऽन्नंप्रवेशत्यन्तःप्राणांश्चाप्यवलम्बते क्लेदननामाकफःक्लेदयतिक्लेदनात्संहतंभिनत्तिच (उक्तंचसुश्रुते) क्लेदनःक्लेदयत्यन्नंसंहतंचभिनत्यतइति ॥ ९८ ॥

और सुश्रुतजी कहते हैंकि शरीरका धारण करने वाला प्राणनाम वायुजो मुखमें जाताहै वह अन्नको भीतरले जाताहै और प्राणोंका भी अवलंबन करता है- क्लेदन नाम कफअन्नको गीलाकरता है और इकट्ठे हुऐ अन्नको भिन्न २ भी करताहै और सुश्रुतने कहाभीहै कि क्लेदननाम कफअन्नको गीलाकरताहै और इकट्ठे हुये अन्नको पृथक् २ भी करता है ॥ ९८ ॥

सआहारःषड्रसोऽप्यामाशयेमाधुर्यंलभते । आमाशयस्थस्य मधुरस्य कफस्य योगात् ॥ ९९ ॥

आमाशयमें स्थितमधुर कफके योगसे वह आहार छः रसवाला भी आमाशयमें मधुरताको प्राप्त होता है ॥ ९९ ॥

उक्तश्चश्लेष्म स्वरूपम् ॥

श्लेष्माश्वेतोगुरुःस्निग्धःपिच्छिलःशीतलस्तथा ।तमोगुणाधिकःस्वादुर्विदग्धोलवणोभवेदिति ॥ फेणभावञ्चलभतेजठरानलतेजसा ॥ १०० ॥

और श्लेष्माका स्वरूप कहा गया हैकि श्लेष्मारवेत वर्णभारी चिकना फिसलाहट वाला शीतल अधिक तमोगुण वाला और मधुर होताहै परन्तु विकार युक्त श्लेष्मा लवण के स्वादु होताहै और उदरकी अग्निको तेजसे फेनके भावको प्राप्तहोताहै ॥ १०० ॥

यतआह वाग्भटः ॥

सन्धुक्षितःसमानेनपचत्यामाशयस्थितम्। औदर्य्योऽग्निर्यथावाह्यःस्थालीस्थंतोय। तण्डुलमिति ॥ १०१ ॥

जैसाकि वाग्भटने कहाहै कि जैसे लौकिक अग्नि बटुएमें स्थितजल संयुक्त चावलोंको पकातीहै उसी प्रकार समान वायुसे तेजकिया हुआ उदरकी अग्नि आमाशयमें स्थित अन्नको पकातीहै ॥ १०१॥

अथसएवाहार.प्राणवायुनाप्रेरितस्ततः किञ्चित् स्खलितःपाचकाख्यपित्तोष्मणा यत्पक्कोऽम्लरसोभवति ॥ १०२ ॥

इसके उपरान्त (आमाशयके जानेके पीछे) वही आहार प्राण वायुसे प्रेरणा किया हुआ और उससे कुछ गिराहुआ पाचकनाम पित्तकी ऊष्मासे पकाहुआ खट्टा होजाताहै ॥ १०२ ॥

उक्तंच अथपाचकपित्तेनविदग्धंचाम्लतांव्रजेत् । पाचकपित्तेनपाचकपित्तस्योष्मणा १०३ ततः सएवाहारोनाभिमण्डलाधिष्ठानेनसमाननाम्नावायुनाप्रेरितोग्रहणीमभिनीयते ॥ १०४ ॥

और जैसा कहागयाहै कि पाचक नाम पित्तकी अग्नि से पकाहुआ आहार खट्टाहोजाताहै १०३ इसके उपरान्त नाभिमंडल में रहनेवाला समान नाम वायु उसी आहारको प्रेरणा करके ग्रहणी नामनाडीमें लेजाताहै ॥ १०४ ॥

ग्रहणीलक्षणमाह ॥

षष्ठीपित्तधरानामयाकलापरिकीर्त्तिता। आमपक्वाशयांतस्थाग्रहणीसाऽभिधीयते ॥ पित्तधरापाचकाख्यंपित्तंयदग्न्याधिष्ठानंतद्धारयतितत्रग्रहण्यामामाशयपक्वाशय मध्यवर्त्तिपाचकाख्यपित्ताधिष्ठानेनाग्निनाहारः पच्यतेसकटूष्मभवति । तथा च ग्रहण्यां पच्यतेकोष्ठे वह्निनाजायते कटुरिति अयमर्थः आहारोग्रहण्यां कोष्ठवह्निना ग्रहणीस्थितपाचकपित्तेन वह्निना पच्यतेपच्यमानः सग्रहणी स्थितस्यकटुरसस्य योगात् कटुर्भवति ॥ १०५ ॥

अथग्रहणीका लक्षण कहतेहैं ॥

पित्तधरा नाम जो छठी कलाकही गई है वही आमाशय और पक्वाशयके बीचमें ग्रहणी कहलाती है पित्तधराकला अग्निके स्थान रूप पाचकनाम पित्तको धारण करतीहै आहार जोहैसो आमाशय और पक्वाशयके बीचमें रहने वाला जो पाचक नाम पित्त उसमें रहनेवाली अग्नि से पकाया गया कडुआहोजाताहै- जैसा कहागयाहै कि कोष्ठकी अग्नि से ग्रहणी में पकाया हुआ अन्नकडुआ होताहै इसका यहअर्थ है कि ग्रहणीमें स्थितपाचक नाम पित्तकी अग्निसे पकाहुआ आहार ग्रहणी में स्थित रहने वाले कटुरसयुक्त पित्तके योगसे कडुआ होजाताहै ॥ १०५ ॥

एतदाहारपाकेविशेषमाह ॥

शरीरंपाञ्चभौतिकम् । तत्रपञ्चसुभूतेषुपञ्चाग्नयस्तिष्ठन्ति ॥ उक्तंचरकेनभौमाप्याग्नेयवायव्याःपञ्चोष्माणःसनाभसाः । पञ्चाहारगुणान्स्वान्स्वान्पार्थिवादीन्पचन्त्यन ॥

अत्रोष्मपदेनाग्निरुच्यते ॥ आहारोऽपिपाञ्चभौतिकः तत्रपाचकपित्तस्थेनाग्निनोत्ते जितेनशरीरवर्त्तिनाभूभागाग्निनाहारवर्त्तिभूभागःपच्यते । पक्वोभूभागःस्वकीयानगुणा नाभिवर्द्धयति एवंजलादिभागाअपिपच्यन्ते ॥ १०६ ॥

इस आहारके पाक विषयमें विशेषता कहतेहैं ॥

शरीरपांच भौतिकहै उनपांचमहाभूतोंमें पांचअग्निहैं और चरकनेभीकहाहै कि पृथ्वीसम्बन्धीजल संबन्धी अग्निसंबंधी वायुसंबंधी और आकाशसंबंधी यहपांचअग्निहैं यहअग्नियां आहारकेपृथ्वीसंबंधी आदिक अपने २ पांचों गुणोंको परिपाक करती हैं आहारभी पांच भौतिक होतेहैं उनमें से पाचक पित्तमें स्थित अग्निके द्वारा तेजकी गई शरीरमें रहनेवाली पृथ्वी भागकी अग्निसे भोजनमें रहने वाला पृथ्वी काभाग परिपाकको प्राप्तहोताहै और पकाहुआ पृथ्वी का भाग अपने गुणोंको बढ़ाता है इसी प्रकार जलादिकों के भी भाग परिपाक को प्राप्त होते हैं ॥ १०६ ॥

तथा च सुश्रुते ॥

पञ्चभूतात्मकेदेहेआहारःपाञ्चभौतिकः । विपक्वःपञ्चधासम्यग्गुणान्स्वानभिवर्द्धये दिति ॥ गुणशब्देनात्रगुणिनःपृथिव्यादयउच्यन्ते ।तेनगुणान्शरीरवर्त्तिनःपार्थिवादीन् भागानभिवर्द्धयेदित्यर्थः ॥ एवमहोरात्रेणपक्वआहारोमिष्टःपटुश्चमधुरोभवति । अम्ल स्त्वम्लोभवत्ति कटुतिक्तः कषायश्चकटुर्भवति उक्तञ्च, मिष्टः पटुश्चमधुरमम्लोऽम्लं पच्यतेरसः।कटुतिक्तकषायाणांविपाकोजायतेकटुरिति ॥ १०७ ॥

वैसाही सुश्रुतमें कहाहै कि पंचभूतात्मक शरीरमें पंचभूतात्मक आहार परिपाकको प्राप्तहुआ पांच प्रकारसे शरीरमें स्थित अपने २ पृथिव्यादि भागों को बढ़ाताहै इस प्रकार रात्रि दिनमें परिपाक हुआ मधुर लवण युक्त आहार मीठा होजाताहै खट्टा आहार खट्टाही होजाताहै और कड़ुआ तीता तथा कषैला यह सब कटु होजातेहैं और कहाहै कि मधुर और लवण रस विपाकमें मधुर होते हैं । खट्टारस विपाकमेंभी खट्टा होताहै कड़ुआ तिक्त तथा कषैला यह सब विपाकमें कटु होजातेहैं ॥१०७॥

एवंविपक्वस्याहारस्यसारोनिगदितोरसः।शेषोग्रहणीस्थोमलद्रवःमलद्रवस्यजलभागः शिराभिर्वस्तिंनीतोमूत्रंभवति । उक्तञ्च । आहारस्यरसःसारःसारहीनोमलद्रवः।शिराभि स्तज्जलंनीतंवस्तिंमूत्रत्वमाप्नुयात् ॥ शेषंकिट्टञ्चयत्तस्यतत्पुरीषंनिगद्यते । समानवायु नानीतन्तत्तिष्ठतिमलाशये ॥ तत्रमलाशयेनापानवायुनाप्रेरितंमूत्रंमेढ्रभगमार्गेण।पुरीषं गुदमार्गेणशरीराद्बहिर्य्याति।उक्तञ्चमूत्रञ्चोपस्थमार्गेणपुरीषंगुदमार्गतः । अपानवा युनाक्षिप्तंबहिर्यातिशरीरतः ॥ उपस्थःशिश्नो भगञ्च ॥ १०८ ॥

इस प्रकार परिपाकको प्राप्त हुआ आहारका सारांश रस कहलाताहै और शेष ग्रहणी में स्थित द्रवरूपपिघला हुआ मल होताहै ॥ द्रवरूप मलका जल भाग नाड़ियोंसे मूत्राशयमें पहुंचा हुआ मूत्र होताहै और कहाहैकि आहारका सारांश रसहै और सारांशसे रहित द्रवरूप मल होताहै और उसका जल नाड़ियोंके द्वारा मूत्राशयमें गयाहुआ मूत्र कहा जाताहै औरउस मलका फोक विष्ठा कहलाताहै वह समान वायुके द्वारा जाकर मलाशयमें रहताहै उस मलाशयमें अपान वायुके द्वारा प्रेरणाकिया हुआ मूत्र लिंग और योनिके द्वारा और पुरीष गुदाके द्वारा शरीरसे बाहर जाताहै और कहाहै कि



अपान वायुके द्वारा फेंका हुआ मूत्र लिंग और योनिके मार्गसे और पुरीष गुदाके मार्ग से शरीरके बाहर जाताहै ॥ १०८ ॥

रसस्तु समानवायुना प्रेरितो धमनीमार्गेण शरीरारम्भकस्य रसस्य स्थानं हृदयं गत्वा तेनसह मिश्रितो भवति। उक्तञ्च। रसस्तु हृदयं याति समानमरुतेरितः ॥ स तुव्याने न विक्षिप्तः सर्वान् धातून् विवर्द्धयेत् ॥ केदारेषुयथाकुल्याः पुष्णन्तिविविधोषधीः। तथाकलेवरेधातून् सर्वान्वर्द्धयतेरसः ॥ १०९ ॥

और रस समान वायुके द्वारा प्रेरणा किया गया नाडियों के मार्ग से शरीरके आरंभ करनेवाले रसके स्थानरूप हृदयमें जाकर उसके साथ मिलताहै. और कहाहै कि समान वायुके द्वारा प्रेरणा किया हुआ रस हृदय में जाताहै और वह रस व्यानवायुके द्वारा फेंका हुआ संपूर्ण धातुओं को बढ़ाताहै जैसे खेतों में छोटी२ नदियां अनेक प्रकारकी औषधियोंको पुष्ट करती हैं उसीप्रकार शरीर में रस सम्पूर्ण धातुओं को बढ़ाताहै ॥१०९॥

रसस्तु तत्रतत्र त्रिधा विभज्यते उक्तञ्चचरके ॥

स्थूलः सूक्ष्मस्तन्मलश्च तत्र तत्र त्रिधारसः॥ स्वंस्थूलोंशःपरंसूक्ष्मस्तन्मलोयाति तन्मलम् ॥अयमर्थः॥स्थूलोंऽशः स्वयाति यथास्थितस्तिष्ठति सूक्ष्मस्त्वं शःपरं द्वितीयं धातुं यातितन्मलः रसादिमल.तन्मलं शरीरारम्भकं तत्तद्धातुमलं यातीत्यर्थः॥११०॥

रस इन२ स्थानों में तीनप्रकारसे विभागको प्राप्त होताहै और चरकमें कहाहै॥

स्थूल-सूक्ष्म और उसकामल यह तीन प्रकारसे रसकाविभाग होताहै-स्थूल अंश अपनेही स्वरूपमें रहताहै सूक्ष्म अंश दूसरे धातुमें प्राप्त होताहै और उन रसादिकों के मल अपने२ मलमें प्राप्त होतेहै इसका यह अर्थ है कि स्थूल अंश तो यथा स्थित रहताहै और सूक्ष्म अंश दूसरे रुधिरादि धातुओं में प्राप्त होताहै और उन रसादिकों का मलशरीरके आरंभकरने वाले उन२ धातुओं के मल में प्राप्त होताहै॥ ११० ॥

यथालौकिकाग्नि नेक्षुरसः पच्यते तथा शरीरारम्भकस्य रसस्याग्निनाहाररसः, पच्यते पच्यमानः स पञ्चाहोरात्रात् सार्द्धदण्ड सेकञ्च यावत् प्राक्तन रसधाता वेव तिष्ठति ॥ १११ ॥

जिस प्रकार लौकिक अग्निसे ऊखका रस पकताहै उसी प्रकार शरीरके आरंभ करने वाले रसकी अग्निसे आहारका रस परिपाकको प्राप्त होताहै और वह पका हुआरस पांच दिन पांच रात्रि और डेढ़ घडी तक प्राक्तन रस धातु (शरीरके आरंभ करने वाले रस) में रहताहै ॥ १११ ॥

(उक्तंच सुश्रुते) सखलुरसः त्रीणित्रीणि कला सहस्राणि पञ्चदश कला एकैक स्मिन्धाता वुपतिष्ठते। अत्रकलानां विंशतिः मुहूर्तः सचदण्डद्वयात्मकः। तथाच भोजः। धातोरसादेर्मज्जांते प्रत्येकंक्रमतोरसः। अहोरात्रात्स्वयंपञ्च सार्द्धदण्डंचतिष्ठति ॥ प्रत्येकमेके कस्मिन्नित्यर्थः। ततो यथापच्यमानादि क्षुरसान्मलो निर्गच्छति। तथा पच्यमानादाहार रसान्मलो निर्गच्छति सः कफः ॥ ११२ ॥

और सश्रुतमें कहाहै कि वह रसतीन हजार कला और पन्द्रहकला पर्य्यन्त एक एक धातु में रहताहै यहां बीस कलाका एक महूर्त और मूहर्त दोघड़ी का होताहै और ऐसाही भोजभी कहते हैं रस पांचदिन पांच रात्रि और डेढ़घड़ी पर्य्यन्त रससे लेकर मज्जा पर्य्यन्त एक एक धातु में रहता है तब जैसे पकेहुये ऊखके रससे मल निकलताहै उसीप्रकार पके हुये आहारके रस से मल निकलताहै और वह कफकहलाताहै ॥ ११२ ॥

उक्तंच सुश्रुते ॥

कफःपित्तमलास्वेषु प्रस्वेदोनखरोमच । नेत्राविट्चक्षुषःस्नेहो धातूनांक्रमशोमलाः ॥ स्वेपुमलःकर्णादि श्रोतामलःसचकफःप्राणानिल प्रेरितो धमनीमार्गेण शरीरारम्भकं क्लेदनाख्यं कफं गत्वा पुष्णाति ॥ ११३ ॥

और सुश्रुतमें कहाहै कि कफ- पित्त और कर्णादि स्रोतोंको मलस्वेद-नख-रोम-नेत्रकामल और स्नेह यहक्रमसे धातुओंके मलहैं और वहकफ और प्राणवायुके द्वाराप्रेरण कियागया नाडियोंके मार्गसे शरीरके आरंभ करनेवाले क्लेदन नाम कफके स्थानमें प्राप्तहोकर उसको पुष्टकरताहै॥११३॥

ततःसारभूतस्याहार रसस्य द्वौभागौ भवतःस्थूलःसूक्ष्मश्च तत्रसूक्ष्मोभागः शरीरारम्भकं रसं पोषयति सकलशरीराधिष्ठानेन व्यानवायुना प्रेरितो धमनीभि सञ्चरन् पोषणस्नेहन जठरानलोष्म कृतसंताप निवारणादिभिर्गुणैः सकलशरीरं पुष्णाति ततः स्थूलोभागः प्राणवायुना प्रेरितो धमनीमार्गेण शरीरारम्भकस्य रक्तस्य स्थानं गत्वा यकृत् प्लीहरूपं गत्वातेन सह मिलितो भवति ॥ ११४ ॥

इसके उपरान्त आहारके सारांश रूप रसके स्थूल और सूक्ष्म दोभाग होते हैं उनमें से सूक्ष्म भाग शरीरके आरंभ करनें वाले रसको पुष्टकरताहै इसके उपरान्त संपूर्ण शरीरमें रहने वाले व्यान वायुसे प्रेरणा किया गया नाड़ियों में घूमता हुआ पुष्ट करना चिकना करना जठराग्निकी ऊष्मा से उत्पन्न हुए सन्तापका निवारण करना आदिक गुणोंसे संपूर्ण शरीरको पुष्ट करताहै इस के उपरान्त स्थूल भाग प्राणवायुके द्वारा प्रेरणा किया गया नाड़ियोंके मार्गसे शरीरके आरंभ करने वाले यकृत् और प्लीहा रूप रुधिरके स्थानमें आकर उससे मिलताहै ॥ ११४ ॥

ततःप्राक्तनस्य रक्तस्याग्निना पुनः पच्यमानः पञ्चाहोरात्रात्सार्द्धदण्डञ्च यावत् प्राक्तनरक्तधाताविव तिष्ठति । ततो यथाग्निना पुनः पुनः पच्यमानादिक्षु विकारं वारं वारं मलं निर्गच्छति । तथा पुनः पुनः पच्यमानादाहार रसात् प्रतिवारं मलं निर्गच्छति । तत्र रक्ताग्निना पच्यमानान्मलं पित्तं निर्गच्छति । तच्च पित्तं समान वायुना प्रेरितं धमनीमार्गेण शरीरारम्भकं पाचकाख्यं गत्वा पुष्णाति । ततःसार भूतस्याहार रसस्य द्वौभागौ भवतः स्थूलः सूक्ष्मश्च तत्र सूक्ष्मोभागो रञ्जकाग्निना पित्तेन स रक्तीकृतः । शरीरारम्भकं रक्तं व्यान वायुना प्रेरितो धमनीभिः सञ्चरन् सकल शरीरगतानि रुधिराणि पुष्णाति । ततः स्थूलो भागः व्यान वायुना प्रेरितो धमनीभिः शिराभिश्च शरीरारम्भकानि मांसानि याति ॥ ११५ ॥

इसके उपरान्त प्राक्तन (पूर्वके) रुधिर की अग्निसे फिर परिपाकको प्राप्तहुआ पांच दिनरात्रि और डेढ़ घड़ी पर्य्यन्त प्राचीन रुधिरही में रहताहै इसके पीछे जैसे कि लौकिक अग्नि के द्वारा वारंवार पकाये हुए ऊखके रससे वारंवार मल निकलताहै उसी प्रकार वारंवार परिपाकको प्राप्तहुए आहार के रससे वारंवार मल निकलताहै वहां रुधिरकी, अग्निसे पकेहुए रससे पित्तरूप मल निकलताहै और वह पित्त समान वायुसे प्रेरणा किया हुआ नाड़ियोंके मार्गसे शरीरके आरंभ करने वाले पाचक नाम पित्त को प्राप्तहोकर उसे पुष्ट करताहै इसके उपरान्त सारभूत आहारके रसके दोभाग होतेहैं एक स्थूल और दूसरा सूक्ष्म उनमेंसे सूक्ष्मभाग रंजकनाम पित्तसे रंगाहुआ शरीरके आरंभकरनेवाले रुधिर को पुष्टकरताहुआ व्यान वायुके द्वारा प्रेरणा कियागया नाड़ियों में घूमता हुआ संपूर्ण शरीरमें रहने वाले रुधिरको पुष्टकरताहै इसके उपरान्त स्थूलभाग व्यान वायुके द्वारापेरणा कियाहुआ धमनी और शिराओंके द्वारा शरीरके आरंभ करने वाले मांसमें प्रवेश करताहै ॥ ११५ ॥

ततो मांसाग्निना पुनः पच्यमानः पञ्चाहोरात्रात् सार्द्ध दण्डञ्च यावन्मांसेष्वेव तिष्ठति । ततः पच्यमानात्तस्मान्मलं निर्गच्छति । तद्व्यान वायुना क्षिप्रं कर्णावागत्य कर्णे विड्भवति ॥ ११६ ॥

इसके अनन्तर मांसकी अग्निसे फिर परिपाकको प्राप्तहुआ पांच रात्रिदिन और डेढ़घड़ी पर्य्यन्त मांसहीमें रहताहै फिर पकेहुए उस मांससे मल निकलताहै और वह मल व्यान वायुके द्वारा शीघ्र कानोंमें आकर कानोंका मैलहोजाताहै ॥ ११६ ॥

ततःसार भूतस्य रसस्य द्वौभागौ भवतः । स्थूलः सूक्ष्मश्च ततःसूक्ष्मो भागो मांसानि पुष्णाति । ततः स्थूलो भागो व्यानवायुना प्रेरितो धमनीभिः शरीरारम्भकस्य मेदसः स्थान मुदरं याति ॥ ११७ ॥

फिर सारभूत रसके स्थूल और सूक्ष्म दोभागहोतेहैं उनमेंसे स्थूलभाग मांसको पुष्टकरताहै फिर सूक्ष्म भाग व्यान वायुके द्वारा प्रेरणा किया गया नाड़ियोंके मार्गसे शरीरके आरंभकरनेवाले मेदके स्थान रूप उदरमें प्राप्त होताहै ॥ ११७ ॥

ततो मेदसोऽग्निना पुनः पच्यमानः पञ्चाहोरात्रात् सार्द्धदण्डंच यावन्मेदस्येव तिष्ठति । ततः पच्यमानात्तस्मान्मलो निर्गच्छति प्रस्वेदरूपः । स च शीतः स्रोतस्येव तिष्ठति शरीरोष्मणा तप्तश्चेत्तदा व्यान वायुना प्रेरितः शिरामार्गैः लोम कूपेभ्यो वहिर्याति ॥ जिह्वादंतकक्षामेढ्रादिमलञ्च मेदो मलमित्येके ॥ ११८ ॥

इसके पीछे मेदकी अग्निसे फिरपरिपाक को प्राप्तहुआ पांच दिनरात्रि और डेढ़ घड़ी पर्य्यन्त मेदहीमें रहताहै फिर परिपाकको प्राप्तहोनेवाले उससे प्रस्वेदरूप मल निकलताहै और वह शीतल प्रस्वेद स्रोतो मेंही रहताहै और जो शरीरकी ऊष्मासे तप्तहो तो व्यानवायुके द्वारा प्रेरणा कियागया शिरारूपी मार्गमें होताहुआ रोमकूपोंसे बाहर जाताहै और कोई आचार्य्य यह कहतेहैं कि, जिह्वा दन्त बगल लिंग आदिकों का मल मेदकामलहै ॥ ११८ ॥

ततःसारभूतरसस्य द्वौभागौ भवतः स्थूलः सूक्ष्मश्च तत्र सूक्ष्मोभागः मेदः पुष्णा

ति उदरे तिष्ठन् व्यानवायुना प्रेरितो धमनीभिः शिराभिश्च शरीरारम्भकाण्यस्थीनि याति ॥ ११९ ॥

इसके उपरान्त सारभूत रसके स्थूल और सूक्ष्म दोभाग होतेहैं उनमेंसे स्थूलभागमेदको पुष्टकरताहै और उदर में रहताहुआ व्यान वायुके द्वारा प्रेरणा कियागया स्रोतरूपी मार्गोंसे जाकर सूक्ष्म हड्डियों में रहने वाले मेदको पुष्टकरताहै और सूक्ष्म भाग धमनी और शिराओं के द्वारा शरीरके आरंभकरने वाली हड्डियोंमें प्राप्तहोताहै ॥ ११९ ॥

ततोऽस्थ्यग्निना पुनः पच्यमानं पञ्चाहोरात्रात्सार्द्धदण्डञ्च यावदस्थिष्वेव तिष्ठति। ततः पच्यमानात् तस्मात् मलो निर्गच्छति। स च व्यानवायुना प्रेरितः शिराभिः मार्गेणागत्यांगुलिषु नखः स्तनौ लोमानि भवन्ति ॥ १२० ॥

फिर हड्डियोंकी अग्निसे परिपाकको प्राप्त हुआ पांच दिन रात्रि और डेढ़ घड़ीतक हड्डियों में रहताहै इसके उपरान्त उस पकेहुएसे मल निकलताहै और वह मल व्यान वायुके द्वारा प्रेरणाकिया गया नसोंके मार्गसे आकर अंगुलियोंमें नख और शरीरमें रोमहोताहै ॥ १२० ॥

• ततःसार भूतस्य रसस्य द्वौभागौ भवतः स्थूलः सूक्ष्मश्च तत्र सूक्ष्मभागो अस्थीनि पुष्णाति ततःस्थूलभागो व्यानवायुना प्रेरितः स्रोतो मार्गे मज्जास्थानानि स्थूलास्थ्य भ्यन्तराणि याति ॥ १२१ ॥

तदनन्तर सारभूत रसके स्थूल और सूक्ष्म दोभाग होते हैं उनमें से स्थूलभाग हड्डियोंको पुष्ट करताहै और सूक्ष्म भाग व्यानवायुके द्वाराप्रेरणा कियागया स्रोतोंके मार्गसे मज्जाके स्थानरूपबड़ी हड्डियोंके भीतर जाताहै ॥ १२१ ॥

ततो मज्जाग्निना पुनः पच्यमानः पञ्चाहोरात्रात् सार्द्धदण्डञ्च यावन्मज्जन्येव तिष्ठति ततः पच्यमानात्तस्मान्मलं निर्गच्छति । तच्च व्यानवायुना प्रेरितं शिरामार्गे नयनयोरागत्य नेत्रविट् चक्षुःस्नेहश्च भवति ॥ १२२ ॥

इसके अनन्तर मज्जाकी अग्निसे फिर परिपाक हुआ पांच दिन रात्रि और डेढ़ घड़ी पर्य्यन्त मज्जाहीमें रहताहै फिर उस परिपाकको प्राप्त होनेवाले से मल निकलता है और वह मल व्यान वायुकेद्वारा प्रेरणा कियागया नाड़ियोंके मार्गसे नेत्रोंमें आकर नेत्रोंकामल और स्नेह होताहै।१२२॥

* ततःसार भूतस्य रसस्य द्वौभागौ भवतः। स्थूलः सूक्ष्मश्च तत्र सूक्ष्मभागो मज्जानं पुष्णाति ततः स्थूलो भागो व्यानवायुना प्रेरितः धमनीभिः शिराभिश्च शुक्रस्य स्थानं सकलं शरीरंगत्वा शरीरारम्भकेण शुक्रेणसह मिश्रितो भवति ॥ १२३ ॥

इसके उपरान्त सार भूतरसके स्थूल और सूक्ष्म दो भाग होतेहैं उनमें से स्थूलभाग मज्जा को पुष्ट करताहै और सूक्ष्म भाग व्यानवायुके द्वारा प्रेरणा कियागया धमनी और शिराओंके मार्ग से वीर्य्यके स्थानरूप सम्पूर्ण शरीरमें जाकर शरीरके आरम्भ करने वाले वीर्य्यसे मिलजाताहै १२३॥

ततः शुक्राग्निना पुनः पच्यते पच्यमाने तस्मिन्मलं नास्ति। सहि सहस्रधाध्मात सुवर्णवत् ॥ १२४ ॥

इसके पीछे वीर्य्यकी अग्निसे फिर परिपाकको प्राप्तहोताहै और हजारवार तपायेहुए सुवर्ण के समान उस पकेहुए वीर्य्यमें मल नहींहोता॥ १२४॥

उक्तञ्च। स्वाग्निभिःपच्यमानेषु मलःपट्सुरसादिषु। पट्सुधातुषुजायन्ते मलानिमुनयोजगुः॥ यथासहस्रधाध्माते नमलंकिलकाञ्चने। तथारसेमुहुःपक्के नमलंशुक्रतांगते॥ १२५॥

अपनी २ अग्निसे परिपाकको प्राप्त हुए रसको आदि लेकर मज्जा पर्य्यन्त छः धातुओंमें मल होताहै जैसे कि हजारबार परिपाकको प्राप्त हुए सुवर्णमें मल नहीं होताहै उसीप्रकार बारंबार पके हुए वीर्य्यरूपको प्राप्तहुए रसमें मल नहींहोता॥ १२५॥

ततःसारभूतस्य रसस्य द्वौभागौ भवतः स्थूलः सूक्ष्मश्च। तत्र सूक्ष्मः स्नेहभागः श्रोजस्तस्य लक्षणमाह। श्रोजःसर्वशरीरस्थं स्निग्धंशीतंस्थिरंसितम्। सोमात्मकंशरीरस्य बलपुष्टिकरंमतम्॥ (बलंचेष्टा पाटवम्) तथाच। चेष्टासुपाटवंयत्तु बलंतदभिधीयते। यत्तुसुश्रुते रसादीनां शुक्रान्तानां धातूनां यत्परं तेजस्तत् खलुत्तदोजस्तदेवबलमिनि तेजस्तेजद्रवः। अत्रायमभिप्रायः, यस्माद्रसादोजो भवति स रसः सर्वधातुस्थान ,गतत्वात्तद्धातुवन्मन्यत इति सर्वधातूनां स्नेहमोजः। क्षीरे घृतमिव तदेव बलमिति॥ तत्कार्य्यकारणयोरभेदोपचारात्॥अभेद कथनञ्च चिकित्सैक्यार्थम्॥१२६॥

इसके अनन्तर सार भूतरसके स्थूल और सूक्ष्म दोभाग होतेहैं उनमेंसे स्थूलभाग शरीरके आरम्भ करनेवाले वीर्य्य में प्राप्तहोताहै और सूक्ष्म स्नेह भाग ओज कहलाताहै उसका लक्षणकहतेहैं सम्पूर्ण शरीरमें रहनेवाला ओजचिकना शीतल स्थिरश्वेत सोमात्मक और शरीरकोबल तथा पुष्टि देनेवाला कहागयाहै यहांबल शब्दका अर्थ चेष्टाओंमें समर्थहोना लियागयाहै और वैसाही कहाहै कि चेष्टाओं में समर्थ होनेको बल कहतेहैं और जो सुश्रुतमें कहाहै कि रसको आदि लेकर शुक्रपर्य्यन्त जो धातु ओंका द्रवरूप तेज है उसको ओज कहतेहैं और वही बल कहलाताहै इसका यह अभिप्राय है कि जिस रससे ओज उत्पन्न होताहै वह रस सम्पूर्ण धातुओंमें जानेसे उन २ धातुओंके समान माना जाताहै इस कारणसे सम्पूर्ण धातुओंका स्नेह भाग ओजहै कार्य्य और कारणके अभेद मानलेने से दूधमें घृतके समान वह ओजही बल है और अभेदका कथन चिकित्साकी एकताके लियेहै॥ १२६॥

अन्यच्च। गुरुशीतंमृदुस्निग्धं सांद्रंस्वादुस्थिरंतथा। प्रसन्नंपिच्छिलंसूक्ष्म मोजोदशगुणंस्मृतम्॥ १२७॥

और भी कहागयाहै कि ओजमें दशगुणहैं भारी शीतल कोमल चिकना गाढ़ा मधुर स्थिर निर्मल फिसलाहटवाला और सूक्ष्म॥ १२७॥

चरकेतु। अष्टबिन्दुप्रमाणं तदीपद्रक्तं सपीतकम्। अग्निसोमात्मकत्वेन द्विरूपंर्णिनन्तुतत्॥ १२८॥

और चरकमें तो ऐसा कहागया है कि ओज आठ बिन्दुओंके प्रमाण कुछ पीतवर्ण और कुछ रक्त वर्ण अग्नि सोमात्मकहोने से दोरूप वाला कहागयाहै॥ १२८॥

वाग्भटश्च ।ओजश्चतेजोधातूनां शुक्रान्तानांपरंस्मृतम् । हृदयस्थमपिव्यापि देहस्थितिनिबन्धनम् ॥ यस्यप्रवृद्धौदेहस्य तुष्टिपुष्टिबलोदयाः। यन्नाशेनियतोनाशो यस्मिंस्तिष्ठतिजीवनम् ॥ निष्पद्यन्तेयतोभावा विविधादेहसंश्रयाः । उत्साहप्रतिभाधैर्य्यलावण्यसुकुमारताः ॥ १२९ ॥

और वाग्भट कहतेहैं कि वीर्य्य पर्य्यन्त सम्पूर्ण धातुओंका उत्कृष्टतेज ओज कहलाताहै वह हृदयमें स्थितभी व्यापकहोकर शरीर की स्थितिका कारणहै और जिसकी वृद्धिहोने से शरीर की तुष्टता पुष्टता और बलका उदयहोता है-जिसके नाशहोनेसे अवश्य मृत्युहोती है स्थित रहने से मनुष्यजीताहै और जिसके द्वारा देहमें स्थित अनेक प्रकारके पदार्थ उत्साह-प्रतिभा- धैर्य्य- लावण्य और सुकुमारता यह सब उत्पन्न होतेहैं- ॥ १२९ ॥

ततःस्थूलो भागोरसो मासेन पुंसां शुक्रंस्त्रीणान्त्वार्त्तवं शुक्रञ्च भवति । उक्तं च सुश्रुते । एवं मासेन रसः शुक्रो भवति । स्त्रीणांचेति चकारात् स्त्रीणामपि शुक्रं भवति । अतएवोक्तं सुश्रुते । योषितोऽपिस्रवत्येव शुक्रंपुंसःसमागमे । तत्रगर्भस्यकिंचित्तु करोतीतिनचिन्त्यते ॥ गर्भस्यशुद्धस्य विकृतस्यतु गर्भस्यकारणं तदपि भवति । (यतउक्तम्) यदानार्य्यावुपेयातां वृषस्यन्त्यौकथञ्चन । मुञ्चन्त्यौशुक्रमन्योऽन्य मनस्थिस्तत्रजायत इति ॥ एतेन स्त्रीणां सप्तमो धातुरार्त्तवं शुक्र मष्टममिति बोधितम् । आशयाधिक्यवत् ॥ १३० ॥

इसके उपरान्त रसका स्थूलभाग महीने भरमें पुरुषोंका वीर्य्य और स्त्रियोंका रज तथा वीर्य्य होताहै और सुश्रुतने भी कहाहै कि इस प्रकार मासभर में रसवीर्य्य होजाताहै स्त्रियों के भी वीर्य्य होताहै इसीसे सुश्रुत में कहाहै कि पुरुषके संगमें स्त्रियां भी वीर्य्य को छोड़तीहैं परन्तु वहवीर्य्य गर्भका कुछभी उपकार नहीं करताहै अर्थात् इस वीर्य्यसे शुद्ध गर्भ नहीं होता परन्तु विकार युक्त गर्भका यह वीर्य्य भी कारणहोताहै क्योंकि कहागयाहै कि जब काम से अत्यन्तपीड़ित दो स्त्रियां परस्पर मैथुनकरतीहैं तो किसी प्रकार उनदोनोंका वीर्य्यपातहोताहै उस्से हड्डी रहित गर्भ उत्पन्न होताहै इस्से यह प्रकट किया गयाहै कि स्त्रियोंकी सातवीं धातु रज और आठवींवीर्य्यहै जैसे कि उनके एक आशयभी अधिकहै- ॥ १३० ॥

स्त्रीणांगर्भोपयोगि स्यादार्त्तवंसर्वसम्मतम् । तासामपिबलंवर्णं शुक्रंपुष्टिंकरोतिहि॥ एवंरस एव केदार कुल्यान्यायेन सर्वान् धातून् पूरयन् मासेन नवदण्डोत्तरेण शुक्रमार्त्तवं भवतीति सिद्धान्तः। एवंसति रसाद्रक्तमिति संगतमेव ॥ १३१ ॥

स्त्रियोंका रज गर्भका उपयोगी होताहै यह सर्व सम्मतहै और उनकावीर्य्य तो बल- वर्ण तथा पुष्टताको करताहै-इस प्रकार रसही केदारकुल्या न्याय(नालियां खेतों में जाकर औषधियों को पुष्ट करती हैं इसकानाम केदारकुल्यान्यायहै)से सम्पूर्ण धातुओं को पूर्ण करताहुआ एक महीने और नौघड़ी में वीर्य्य और रज बनताहै यह सिद्धान्तहै ऐसा होने से रस से रुधिर उत्पन्नहोता है यह ठीकही है- ॥ १३१ ॥

ततोमांसन्तनोरक्तोत्पत्तेरनन्तरंमांसंजायतेरसादेवेत्यर्थः ।मांसान्मेदःप्रजायतइति॥ मांसादनंतरं मेदः प्रजायते रसादेवेत्यर्थः । मेदसोऽस्थिजायतेरसादेवेत्यर्थः ॥ एवं ततोमज्जाग्रे शुद्धशुक्रं सम्भवतीत्यर्थः ॥ १३२॥

रुधिर उत्पन्नहोने के उपरान्त उस रसहीसे मांस उत्पन्न होता है फिर मांस रूपरससेमेद मे, रूपरससे अस्थि और अस्थि रूपरससे मज्जा उत्पन्नहोताहै फिर शुद्ध वीर्य्य उत्पन्नहोताहै ॥१३२॥

रसःशरीरेत्रिधासञ्चरति । तथाचोक्तम्रसःशरीरेशब्दार्चिर्ज्जलसन्तानवत्त्रिधा ॥ सञ्चरत्यनुरूपोऽयंनित्यमेवहिदेहिनाम् । अस्यायमभिप्रायः । पुरुषास्तीक्ष्णाग्नयोमध्यमाग्नयोमन्दाग्नयश्चभवन्ति । तत्रतीक्ष्णाग्नीनांसरसःशब्दसन्तानवत्शीघ्रंसञ्चरति ॥ मध्यमाग्नीनामर्चिःसन्तानवन्मध्यवेगेनचरतिमन्दाग्नीनांजलसंतानवन्मन्दंचरति । तेनमासेनरसात्शुक्रंभवतीति ॥ यदुक्तम् । तन्मध्यवेगेनचरति ॥ मन्दाग्नीनांजलसंतानवन्मंदंचरतितेनमासेनरसः शुक्रंभवतीतियदुक्तंतन्मध्यमाग्नीनधिकृत्योक्तम् । दीप्ताग्नीनांतुरसःकिंचिन्न्यूनेनमासेनशुक्रंभवति ॥ मंदाग्नेःकिंचिदधिकेन मासेनेतिसिद्धांतः ॥ १३३ ॥

रस मनुष्योंके शरीरमें तीनप्रकारसे घूमताहै और ऐसा कहाभीहै कि रस मनुष्यों के शरीर में सदैव शब्द- अग्नि की ज्वाला और जलके प्रवाहकी समान तीन प्रकारसे घूमताहै इसका यह आशयहै कि पुरुष तीक्ष्णाग्नि मध्यमाग्नि और मन्दाग्निहोतेहैं उनमेंसे तीक्ष्णाग्नि वाले पुरुषों का रसशब्दके वेगके समानशीघ्र चलताहै मध्यम अग्नि वालोंका रस अग्निकी ज्वालाके समान मध्यम वेग से चलताहै और मन्दाग्नि वालोंका रस जलके प्रवाहके समान मन्द २ चलताहै इस्से महीने भरमें रससे वीर्य्य होताहै यह जो कहागयाहै वह मध्यम वेगसेचलताहै-मन्दाग्नि वालोंका रस जल केप्रवाहके समान धीरे धीरे चलताहै इस्से महीने में रसवीर्य्य होताहै यह जो कहागया वह मध्यम अग्नि वालोंको लेकर कहागयाहै और तीक्ष्ण अग्नि वालोंका रस तो कुछ कम महीने में वीर्य्य होजाताहै और मन्दाग्नि वालेका रस महीने से कुछ दिन अधिक में वीर्य्य होताहै ॥ १३३ ॥

तर्हिवाजीकरणानामौषधीनांकिंप्रयोजनमित्याह । वाजीकरिण्यःऔषध्यः स्वप्रभावगुणोच्छ्रयात् ॥ विरेचयन्तिताःशुक्रंविरेकिद्रव्यवन्नृणाम् । वाजीकरिण्यःयाभिरौषधीभिःपुरुषःशुक्राधिक्यात्स्त्रीपुत्राजीवत्सामर्थ्यंप्राप्नोतिताःवाजीकरिण्यः स्वप्रभावगुणोच्छ्रयात्तत्रकाश्चिदौषध्य स्वप्रभावाधिक्यात् ॥ काश्चित्स्वगुणाधिक्यात् । काश्चित्स्वप्रभावगुणाधिक्यात् ॥ तत्रमङ्गल्यपादलेपविशिष्टकान्तास्पर्शादयःस्वप्रभावाधिक्यात्शुक्रंविरेचयंति ।घृतक्षीरादयःस्वगुणाधिक्यात् । स्निग्धत्वादाधिक्यात्माषादयः स्वप्रभावस्निग्धत्वादिगुणाधिक्यात् ॥ १३४ ॥

यदि ऐसाहै तो वाजी करण औषधियों का क्या प्रयोजन है इसलिये कहते हैं कि वाजी करण औषधि रेचक द्रव्यके समान मनुष्योंका वीर्य्य निकालती हैं जिन औषधियोंके द्वारा पुरुष वीर्य्य की अधिकतासे स्त्रियोंमें घोडेके समान सामर्थ्यको प्राप्तहोताहै वहवाजी करण कहलाती हैं उनमें

से कछ औषधि अपने प्रभावकी अधिकतासे कुछ अपने गुणकी अधिकतासे और कुछ अपने प्रभाव और गुणदोनोंकी अधिकतासे वीर्य्यको निकालती हैं जैसे कि संकल्प (विपर्यांकाध्यान) पैरोंकाले-प- उत्तम स्त्रियोंका आलिङ्गन आदिक अपने प्रभावकी अधिकतासे घृतदुग्धादिक- अपने गुणकी अधिकतासे और चिकनेपन आदि गुणोंके द्वारा उर्द आदिक अपने प्रभाव तथा स्निग्धता (लसीलेपन) आदि गुणोंकी अधिकतासे वीर्य्यको निकालती हैं ॥ १३४ ॥

वाजीकरिण्यइतिबहुवचनमाद्यर्थानुवर्त्तनम् । बल्यबृंहणजीवनीयगणादयःतद्वद्बोद्धव्याः ॥ विरेचयन्तिस्वप्रभावगुणाविक्यात् । शीघ्रमेवरसाद्युत्पादनपूर्वकंशुक्रंजनयित्वाप्रवर्त्तयन्ति ॥ यतआह । दुग्धंमाषाश्चभल्लातःफलमज्जामलानिच ॥ जनकानिनिगद्यन्तेरेचनानिचरेतसः ॥ १३५ ॥

(वाजीकरिण्यः) इस बहुवचनान्त पदसे आदिक अर्थका ग्रहण किया जाताहै इससे बलकारक बृंहण- जीवनीयगण आदिकभी इसी प्रकार जानने चाहिये वीर्य्य को निकालती हैं इसका यह तात्पर्य्य है कि शीघ्रही रसादिकोंकी उत्पत्ति पूर्व्वक वीर्य्यको उत्पन्न करके निकालती हैं जैसा कहा भी है कि दुग्ध-उर्द- भिलावाँ- मज्जा वाले बादाम आदिक फल और आमले यह वीर्य्यके उत्पन्न करने वाले और निकालने वालेभी कहेजाते हैं ॥ १३५ ॥

ननुबालानांकथंशुक्रंनदृश्यतइत्याह बालानांशुक्रमस्त्येवकिन्तुसौक्ष्म्यान्नदृश्यते । पुष्पाणांमुकुलेगन्धोयथासन्नपिनाप्यते। तेषांतदेवतारुण्येपुष्टत्वाद्व्यक्तिमेतिहि। कुसुमानांप्रफुल्लानांगंधः प्रादुर्भवेद्यथा॥ रोमराज्यादयःपुंसांनारीणामपियौवने। जायतेऽत्रचयोभेदाज्ञेयोव्याख्यानतःसच ॥ व्याख्यानंयथापुंसांरोमराजीश्मश्रुप्रभृतयः । नारीणांतुरोमराजीस्तनस्तन्यार्त्तवप्रभृतयः ॥ १३६ ॥

अबइससन्देहका उत्तरलिखतेहैं कि बालकोंके वीर्य्य क्यों नहीं उत्पन्नहोताहै ॥

जैसे कि पुष्पोंकी कलीमें सुगन्ध होने परभी सुगन्धि नहीं मालूमहोतीहै उसीप्रकार बालकोंके वीर्य्य होता तो अवश्य है परन्तु सूक्ष्मताके कारणसे दिखाई नहीं देता और जैसे प्रफुल्लित पुष्पों की सुगन्धि प्रकट होतीहै उसी प्रकार युवावस्थामें पुष्टताके कारण वह वीर्य प्रकट होताहै-पुरुषों के तथा स्त्रियोंके भी युवावस्था में रोमादिक उत्पन्न होतेहैं और इनमें जो भेदहै वह व्याख्यानसे जानना चाहिये जैसे कि पुरुषोंके रोम तथा दाढ़ी मूछ आदि होते हैं और स्त्रियोंके रोमस्तन दुग्ध और रजादिकहोते हैं ॥ १३६ ॥

ननु,अन्नरसोवृद्धस्यधातुवृद्धिंकथंनकरोतीत्याह । वार्द्धकेवर्द्धमानेनवायुनारसशोषणात् ॥ नतथाधातुवृद्धिःस्यात्ततस्तत्रानिलंजयेत् ॥ १३७॥

अबयहसन्देह कियाजासकाहै कि वृद्धोंके धातुओंकी वृद्धिक्यों नहीं होती इसका उत्तर कहते हैं ॥

वृद्धावस्थामें बढ़ा हुआ वायु आहारके रसको सुखा देताहै इसी से धातु की वृद्धि नहीं होती इसकारण उसअवस्था में वायुकी नाशक औषधीसेवनकरनी चाहिये ॥ १३७ ॥

अथशुक्रस्यस्वरूपमाह ॥

शुक्रंसौम्यंसितंस्निग्धंबलपुष्टिकरंस्मृतम्।गर्भबीजंवपुःसारोजीवस्याश्रयउत्तमः १३८

अथ वीर्य्य का स्वरूप कहतेहैं ॥

वीर्य्य सोमात्मक श्वेतवर्ण-चिकना-बलपुष्टिका करनेवाला-गर्भकाबीज-शरीर का सारांश और जीव का उत्तम स्थान कहागयाहै ॥ १३८ ॥

जीवस्याश्रयउत्तमइतिआह । जीवोवसतिसर्वस्मिन्देहेतत्रविशेषतः ॥ वीर्य्येरक्ते मलेयस्मिन्क्षीणेयातिक्षयंक्षणात् ॥ १३९ ॥

अवजीवकाउत्तमस्थानहै इसके विषयमें कहते हैं ॥

जीवसंपूर्ण शरीरमें रहताहै परन्तु वीर्य्य- रुधिर और मलमें विशेष करके रहताहै क्योंकि जिनके क्षीणहोनेसे जीव क्षणभरमें नाशको प्राप्त होताहै ॥ १३९ ॥

अथगर्भसञ्जननशुक्रस्यलक्षणमाह ॥

स्फटिकाभंद्रवंस्निग्धंमधुरंमधुगंधि च।शुक्रमिच्छंतिकेचित्तुतैलक्षौद्रनिभंचतत्॥१४०॥

अवगर्भकेउत्पन्नकरनेवालेवीर्य्यका लक्षण कहते हैं ॥

स्फटिकके समान निर्मल वर्णवाला द्रव-सचिक्कण मधुर सहतके समान गन्धवाला वीर्य्य शुद्ध होताहै और कोई ऐसा कहते हैं कि तेल अथवा सहतके समान वीर्य्य गर्भका उत्पन्न करने वाला होताहै ॥ १४० ॥

अथशुक्रस्यस्थानमाह ॥

यथापयसिसर्पिस्तुगूढश्चेक्षुरसोयथा । एवंहिसकलेकायेशुक्रंतिष्ठतिदेहिनाम् ॥ अत्रसर्पिर्दृष्टान्तोबहुशुक्रेऽल्पमथनेनसर्पिःशुक्रयोर्लाभात् । इक्षुरसदृष्टान्तस्तुस्वल्पशुक्रे पुंसिअतिपीडनेक्षुरसस्यशुक्रयोर्लाभात् ॥ १४१ ॥

अववीर्य्यका स्थानकहतेहैं ॥

जैसे दूधमें घृत और ऊखमें रस छिपाहुआ रहताहै उसीप्रकार मनुष्योंके संपूर्ण शरीरमें वीर्य्य रहताहै यहां घृतकादृष्टान्त बहुत वीर्य्यवाले पुरुषके लिये दियागयाहै जैसे थोडेही मथनेसे घृतप्राप्त होताहै उसी प्रकार बहुत वीर्य्यवाले पुरुषके वीर्य्य शीघ्र निकलताहै और ऊखकादृष्टान्त थोडे वीर्य्य वालेके लियेहै क्योंकि जैसे ऊखकारस बहुत दवाने से निकलताहै उसी प्रकार थोडेवीर्य्य वाले पुरुषके वीर्य्य देरमें निकलताहै ॥ १४१ ॥

अथशुक्रस्यक्षरणमार्गमाह ॥

द्व्यंगुलेदक्षिणेपार्श्वेवस्तिद्वारस्यचाप्यधः । मूत्रस्रोतपथेशुक्रंपुरुषस्यप्रवर्त्तते ॥ वृद्धवाग्भटोऽप्याह ॥ सप्तमीशुक्रधराद्व्यंगुलेदक्षिणेपार्श्वेवस्तिद्वारस्यचाप्यधोमूत्रमार्गमाश्रिता सकलशरीरव्यापिनीशुक्रंप्रवर्त्तयतीति ॥ सप्तमीकला ॥ १४२ ॥

अववीर्य्यके निकलनेकामार्ग कहतेहैं ॥

वस्तिके द्वारको नीचे दाहिनी ओर दो अंगुलकी मूत्रनालीके मार्गसे पुरुषका वीर्य्य निकलताहै और वृद्धवाग्भटने भी कहाहै कि मूत्राशयके द्वारके नीचे दाहिनी ओर दोअंगलपर मूत्रके मार्ग का आश्रयकरनेवाली संपूर्ण शरीरमें व्याप्तवीर्य के धारण करनेवाली सातवीं कला वीर्य्य को निकालतीहै ॥ १४२ ॥

अथशुक्रक्षरणकारणमाह ॥

कृत्स्नदेहस्थितंशुक्रंप्रसन्नमनसस्तथा । स्त्रीपुव्यायच्छतश्चापिहर्षात्तत्सम्प्रवर्त्तते ॥ स्त्रीपुव्यायच्छतःस्त्रीपुरतरूपंव्यायामंकुर्वतः । अन्यच्च ॥ शुक्रंकामेनकामिन्यादर्शनात् स्पर्शनादपि । शब्दसंश्रवणात्ध्यानात्संयोगाच्चप्रवर्त्तते ॥ १४३ ॥

अब वीर्य्य के निकलने का कारण कहतेहैं ॥

प्रसन्न मन और स्त्रियोंके साथ संभोगरूपी व्यायाम करनेवाले पुरुषके संपूर्ण शरीरमें रहनेवाला वीर्य्य हर्षसे निकलताहै औरभी कहागया है कि कामदेवसे पीड़ित होकर स्त्राके देखनेसे आलिंगन करनेसे-शब्द सुननेसे-ध्यान करनेसे और संयोग से वीर्य्य निकलताहै ॥ १४३ ॥

अथार्त्तवस्यस्वरूपमाह ॥

स्त्रीणांरसएवमासेनार्त्तवंभवतीत्युक्त्वापुनराहशुक्रतएव । रसादेवरजःस्त्रीणांमासिमासित्र्यहंस्रवेत् ॥ तद्वर्षात्द्वादशादूर्ध्वंयातिपञ्चाशतःक्षयम् । मासेनोपचितंकालेधमनीभ्यस्तदार्त्तवम् ॥ ईषद्विवर्णंकृष्णञ्चवायुर्योनिमुखंनयेत् ॥ १४४ ॥

अबरजका स्वरूप कहतेहैं ॥

स्त्रियोंका रसहीमहीनेमें रज होजाताहै यह कहकर फिर कहतेहैं कि रज वीर्य्यसेही उत्पन्न होता है स्त्रियोंके रससेही उत्पन्न हुआरज प्रति मास तीन दिन तक बहताहै यह बारह वर्षसे प्रवृत्त होकर पचास वर्षमें नाशको प्राप्त होताहै और महीने भरमें इकट्ठे हुए कुछ विकृति वर्ण और कुछ कृष्ण वर्ण वाले उसरजको समयमें वायु नाड़ियोंके द्वारा योनिके मुखमें लाताहै ॥ १४४ ॥

गर्भग्रहणयोग्यस्यार्त्तवस्यलक्षणमाह ॥

शशासृक्प्रतिमंयच्चयद्वालाक्षारसोपमम् । तदार्त्तवंप्रशंसन्तियद्वासोनविरञ्जयेत् ॥ आर्त्तवस्यवर्णद्वयाभिधानम् । वातादिप्रकृतिभेदेनवर्णभेदात् ॥ यद्वासोनविरञ्जयेत् । यद्वासोलग्नंप्रक्षालितंतद्वासस्त्यजतिनतुविकृतरक्तंकुर्यात् । ऋतुस्त्रीणांरजोदर्शनात् षोडशनिशाः तत्रभवमार्त्तवंगृहीतगर्भाणां स्त्रीणामार्त्तववहानांस्रोतसांगर्भेणावरोधादार्त्तवंनस्रवति ॥ किन्तुतदेवाधःप्रतिहतमूर्ध्वमागतमुपचीयमानमपराभवति । अपरातुर्जरायुरितिलोके ॥ शेषंचोर्ध्वतरमागतंपयोधरौयातितस्माद्गर्भस्थ-पीवरपयोधराभवन्ति ॥ १४५ ॥

अब गर्भ ग्रहण करनेके योग्य रजका लक्षण कहतेहैं ॥

जो रज खरगोशके रुधिरके समान अथवा लाखके रसके समान और जो वस्त्रमें लगाहुआ धोनेसे छुटजाय वह रजगर्भ धारण करने के योग्य होताहै यहां रजके दो वर्ण इसलिये कहेगयेहैं कि वातादि प्रकृतियोंके भेदसे वर्णोंका भी भेद होताहै स्त्रियोंके रजोदर्शनके प्रथम दिनसे सोलहरात्रि पर्य्यन्त ऋतु कहलातीहै उस ऋतुकालमें सो उत्पन्न होताहै (रुधिर उत्पन्न होताहै) वह आर्त्तव कहलाताहै गर्भवती स्त्रियोंको रजके बहानेवाली नाड़ियोंका गर्भके द्वारा अवरोध होनेसे रज नहीं बहताहै किन्तु वही नीचेसे रुकाहुआ ऊपर आकर इकट्ठा होके जरायु (गर्भाशय) होजाताहै और

शेष भागके ऊपर आया हुआ स्तनोंमें प्राप्त होताहै इसीसे गर्भिणीस्त्रीके स्तन बड़ेहोजातेहैं॥१४५॥

अथधातुष्वतिरिक्तान्गुणानाह ॥

अतिरिक्तागुणारक्तेवह्निर्मांसेतुपार्थिवाः । मेदस्यपांरसेचास्थ्निपृथिव्यनिलतेजसाम्॥ मज्ज्ञिशुक्रेचसोमस्यमूत्रेचाशिखिनोगुणाः। भुत्रस्तथार्त्तवेत्वग्नेरसेक्षीरेतथाम्भसः॥ १४६॥

अब धातुओंके पृथक्२ गुण कहतेहैं॥

रुधिरमें२ अग्निके १ मांसमें २ पृथ्वीके १ मेदमें२जल२ और पृथ्वीके१हड्डीमें२पृथ्वी वायु और तेजके१मज्जा और वीर्य्य में२सोमके१मूत्रमें२अग्निके१रजमें२पृथ्वी और अग्निके १ और रसतथा दुग्ध में२ जलके १ गुण अधिकहैं॥१४६॥

अथधातूनांमलाः॥

कफःपित्तंमलःखेपुप्रस्वेदोनखलोमच । नेत्रविट्चत्वचःस्नेहोधातूनांक्रमशोमलाः॥ नेत्रजिह्वाकपोलानांजलंरसजंमलमित्येके॥ कर्णादिश्रोतःसुमलःरसनादन्तकक्षामेढ्रादिमलमपिमेदोमलमित्येके। नेत्रविट्त्वचांस्नेहश्चमज्जामलः शुक्रस्यमलमेवनास्ति सहस्रधाध्मातसुवर्णस्येव॥ १४७॥

अब धातुओंके मल कहतेहैं॥

कफ- पित्त- कानआदिक छिद्रोंका मैल-स्वेद नखरोम- नेत्रकामल और त्वचा का चिकनापन यह क्रमसे रसादि धातुओं के मलहैं- कोई आचार्य्य ऐसा कहतेहैं कि नेत्र जिह्वा और कपोलों का जल रसका मलहै और कोई यहभी कहतेहैं कि जिह्वा दांत बगल और लिंगादिकोंका मल भी मेदका मलहै नेत्रका मैल और त्वचाका चिकनापन मज्जाका मैलहै और हजार बार तपाये हुये सुवर्ण के समान वीर्य्य में मल नहीं होताहै॥ १४७॥

अथोपधातवः॥

वनितानांप्रसूतानांधमनीभ्यांस्तनौगतात् । रसादेवहिजायेतस्तन्यंस्तनयुगाशयम्॥ शुद्धमांसस्ययःस्नेहःसावसापरिकीर्त्तिता । मेदसःस्रवमाणस्यस्नेहोवाकथितावसा॥ शारङ्गधरेतु॥ स्तन्यंरजोवसास्वेदोदन्ताःकेशास्तथैवच । ओजश्चसप्तधातूनां क्रमात्सप्तोपधातवः॥ १४८॥

अब उपधातुओंका वर्णन करतेहैं॥

प्रसूता स्त्रियोंके नाडियोंके द्वारा स्तनोंमें लाये गये रससे दोनों स्तनोंमें रहने वाला दुग्ध उत्पन्न होताहै और शुद्ध मांसका स्नेह वसा कहलाताहै अथवा बहते हुए मेदका स्नेह वसा कहलाताहै और शार्ङ्गधरमेंतो ऐसा कहागयाहै कि स्तनोंसे उत्पन्न हुआ दूध रज वसा स्वेद दन्त केश और ओज यह सातों क्रमसे रसादि सातों धातुओंके उपधातुहैं॥ १४८॥

अथाशयाः॥

उरोरक्ताशयस्तस्मादधःश्लेष्माशयःस्मृतः। आमाशयस्तुतदधस्तल्लिंगंचरकोऽवदत्॥ तद्यथा॥ नाभिस्तनान्तरेजन्तोराहुरामाशयंबुधाइति । आमाशयादधःपक्वाशयादू

ध्र्वन्तुयाकला ॥ ग्रहणीनामकासैवकथितःपाचकाशयः । ऊर्ध्वमग्न्याशयोनाभेर्मध्यभागेव्यवस्थिता ॥ तस्योपरिविलंज्ञेयंतदधःपवनाशयः । पक्काशयस्तुतदधःसएवतुमलाशयः ॥ तदधःकथितोवस्तिःसंहिमूत्राशयोमतः ॥ १४९ ॥

अबआशयों का वर्णनकरतेहैं ॥

छाती रक्ताशयहै उसके नीचे श्लेष्माशयहै उसके नीचे आमाशयहै और उसका लक्षण चरक मुनिने कहाहै प्राणियों के नाभि और स्तनों के बीचमें आमाशय कहागयाहै आमाशय के नीचे और पक्काशयके ऊपर ग्रहणी नाम जो कला कही गईहै वही पाचकाशयहै नाभिके ऊपर वामभाग में अग्न्याशयहै उसके ऊपर विल और नीचे पवनाशय उसके नीचे पक्काशयहै वही मलाशय कहाताहै उसके नीचे वस्तिहै और उसीको मूत्राशय कहतेहैं ॥ १४६ ॥

आशयानुक्रमस्तुवाग्भटेनोक्तःसयथा ॥

कफाऽऽमपित्तवातानामाशयामलमूत्रयोः।पुरुषेभ्योऽधिकाश्चान्येनारीणामाशयास्त्रयः॥ धरागर्भाशयःप्रोक्तःपित्तपक्काशयान्तरे।स्तनौप्रवृद्धौताविवबुधैस्तन्याशयौमतौ ॥१५०॥

अथवाग्भटके कहे हुए आशयोंके क्रम कहतेहैं ॥

कफ - आम - पित्त - वात - मल और मूत्र इनक आशय क्रमसे एक२ के नीचे स्थितहैं-स्त्रियों के पुरुषोंसे विशेष तीन आशय और होतेहैं वह यहहैं कि पित्ताशय और पक्काशयके बीचमें धरा नाम गर्भाशयहै और बढ़े हुए दोनों स्तनोंको पण्डित लोग दो स्तन्याशय अर्थात् दुग्धाशय कहते हैं ॥१५०॥

अथकलास्वरूपमाह ॥

स्नायुभिश्चप्रतिच्छन्नान्सन्तताँश्चजरायुणा । श्लेष्मणावेष्टितांश्चापिकलाभागांस्तुतान्विदुः ॥ धात्वाशयान्तरेधातोर्यःक्लेदस्त्वधितिष्ठति । देहोष्मणाभिपक्कश्चसाकलेत्यभिधीयते ॥ १५१ ॥

अथ कलाओंका स्वरूप कहते हैं ॥

स्नायुके द्वारा आच्छादित गर्भाशय से व्याप्त श्लेष्मासे वेष्टित शरीरके भाग कला कहलाते हैं-धात्वाशयके बीचमें देहकी ऊष्मासे पकाहुआ जो धातुका मल रहताहै वह कला कहा जाताहै१५१॥

ताःसप्त ॥ आद्यामांसधराप्रोक्ताद्वितीयारक्तधारिणी । मेदोधरातृतीयातुचतुर्थीश्लेष्मधारिणी ॥ पञ्चमीतुमलंधत्तेषष्ठीपित्तधरामता । रेतोधरासप्तमीस्यादितिसप्तकलाः स्मृताः ॥ १५२ ॥

वह कला सातहैं पहली मांसकी धारण करने वाली दूसरी रुधिरकी धारण करने वाली- तीसरी मेदकी धारण करनेवाली- चौथी श्लेष्माकी धारण करनेवाली पांचवीं मलकी धारण करने वाली छठी पित्तकी धारण करनेवाली और सातवीं वीजकी धारण करनेवाली कही गई है १५२ ॥

अथमर्म्माणि ॥

सन्निपातःशिरास्नायुः संधिमांसास्थिसम्भवः।मर्म्माणितेपुतिष्ठन्ति प्राणाःखलुविशेषतः ॥ सप्तोत्तरशतंसंति देहेमर्म्माणिदेहिनाम् । तान्येकादशमांसेस्यु रष्टावस्थिपु

सन्तिहि ॥ संधीनांविंशतिस्तानि स्नायूनांसप्तविंशतिः। चत्वारिंशत्तथैकञ्च शिरामर्म्मा णितत्रतु ॥ द्वाविंशतिःसक्थियुगे तावत्येवभुजद्वये। द्वादशोरसिकुक्षौ च पृष्ठदेशेचतु र्देश ॥ ग्रीवायामूर्ध्वभागेतु सप्तत्रिंशच्चतानिहि।शरीरेतानिमर्म्माणि पञ्चधा चभवन्ति तु ॥ (तान्याह) सद्यःप्राणहराणिस्युर्मर्म्माण्येकोनविंशतिः। मर्म्माण्येवत्रयस्त्रिंशत् स्युःकालांतरमारकाः ॥ चत्वारिंशच्चचत्वारि वैकल्यंजनयन्तिहि। मर्म्माष्टकंरुजाकारि विशल्यघ्नंत्रिकंमतम् ॥ १५३ ॥

अब मर्मोंका वर्णन करते हैं ॥

शिरा- स्नायु - सन्धि- मांस और अस्थि इनके एक स्थानपर मिलने को मर्म कहते हैं इन में विशेष करके प्राण रहताहै (अब उनकी संख्याकहते हैं) प्राणियोंके शरीर में एकसौ सात १०७ मर्म हैं वह मांसमें ११ हड्डियोंमें ८ सन्धियों में २० स्नायुमें २७ शिराओंमें ४१ इस क्रमसे १०७ हुये और यही १०७ मर्म सब देहमें इस क्रम से हैं कि दोनों जंघाओं में २२ दोनों भुजाओं में २२ हृदय और कोखमें १२ पीठमें १४ और ग्रीवाके ऊर्ध्व भागमें ३७ और शरीरमें यह मर्म पांच प्रकार से रहतेहैं शीघ्रही प्राणके नाशक १६ कालान्तरमें मारनेवाले ३३ बिकलता करनेवाले ४४ रोग के उत्पन्न करनेवाले ८ और विशल्यघ्न (काटेआदि के निकालने से मारने वाले ३ हैं ॥ १५३ ॥

शृङ्गाटकान्यधिपतिः शंखौकण्ठशिरागुदम्। हृदयंवस्तिनाभीच सद्योघ्नन्तिहता निचेत् ॥ १५४ ॥

अब शीघ्र प्राणके नाशकरने वाले मर्मोंका वर्णन करतेहैं ॥

शृंगाटक, अधिपति, शंख- कण्ठ, शिरा, गुदा, हृदय, वस्ति और नाभि इनमर्मों मेंचोट लगने से शीघ्र प्राणनिकल जातेहैं ॥ १५४ ॥

शृंगाटकानि ॥

घ्राणश्रोताक्षि जिह्वा सन्तर्पकाणां शिरामुखानां शिरसो मध्ये संयोगस्थानन्तानि च त्वारि शिरामर्म्माणि चतुरंगुलप्रमाणानि हतानिघ्नन्ति सद्योमारकाणि भवंति॥१५५॥

शृंगाटक का वर्णन ॥

नासिका, कर्ण, नेत्र, जिह्वा, इनके तृप्तकरने वाली नाड़ियोंका शिरके मध्य में जो संयोग का स्थानहै उसमें चार अंगुलके प्रमाण चार नाड़ियोंके मर्मोंको शृंगाटक कहतेहैं वह शीघ्रप्राणके नाश करनेवाले होते हैं ॥ १५५ ॥

अधिपतिर्मस्तक स्याभ्यन्तरे सन्धिशिरसोः सन्निपातः उपरिष्टा द्रोमावर्त्तः सएकः संधि मर्म्मेद मर्द्धांगुलप्रमाणम् सद्योमारकं ॥ १५६ ॥

अधिपतिका वर्णन ॥

मस्तकके भीतर नाड़ियोंकी जो सन्धि जिसके ऊपर रोमावर्त्त होताहै वह आधे अंगुलका सन्धि मर्म अधिपति कहलाताहै इसमें चोटलगनेसे शीघ्रही प्राण निकलते हैं ॥ १५६ ॥

शङ्खौभ्रुवोरधोपरिकर्णललाटमध्ये तौद्वौ अस्थिमर्मणी सार्द्धांगुलेमारके ॥ १५७ ॥

शंखका वर्णन ॥

भृकुटियोंके अन्तके ऊपरकान और मस्तकके ऊपर डेढ़ अंगुलके दो अस्थिमर्महैं उनमें चोटलगने से शीघ्रही प्राण निकलते हैं ॥ १५७ ॥

कण्ठशिरा मातृकाः ग्रीवायामुभय पार्श्वयोश्च तस्रः शिरास्ता अष्टौशिरा मर्म्माणि चतुरंगुलानि सद्यो मारकाणि ॥ १५८ ॥

अब कण्ठका वर्णन करतेहैं ॥

ग्रीवाके दोनोंओर चार २ नाड़ियां कण्ठ शिरा या शिरामातृका कहलाती हैं चारअंगुलके प्रमाण यह आठशिरामर्महैं इनमें चोटलगनेसे शीघ्रही प्राणनिकलतेहैं ॥ १५८ ॥

गुदम्प्रसिद्धं । वातवर्चो निरसनं स्थूलान्त्र प्रतिबद्धं गुदंनाम ॥ एकम्मांसमर्म्मं चतुरंगुलं सद्यो मारकम् ॥ १५९ ॥

गुदाके मर्मका वर्णन ॥

वायु और मलकी निकालनेवाली मोटीआंतोंसे बंधीहुई गुदा तो प्रसिद्धहै वह चारअंगुलके प्रमाण मांसका एकमर्म है इसमें चोटलगनेसे शीघ्रही प्राणनिकलतेहैं ॥ १५९ ॥

स्तनयोर्मध्यमधिष्ठायोरस्यामाशय द्वारं सत्त्वरजस्तमसा मधिष्ठानं हृदयं नाम शिरामर्म्मं चतुरंगुलं सद्यो मारकम् ॥ १६० ॥

हृदयके मर्मका वर्णन ॥

दोनोंस्तनोंका मध्य आमाशयका द्वारसत्त्वरज और तमोगुणका स्थान हृदयहै वह चारअंगुलके प्रमाणका चोटलगनेसे शीघ्रही प्राणोंका नाशकरनेवाला शिराओंका एकमर्महै ॥ १६० ॥

वस्तिर्नाभिःपृष्ठकटी गुदवंक्षणशेफसाम् । मध्येवस्तिस्तनुत्वक्च एकद्वारोह्यधोमुख । स्नायुमर्म्मैदञ्चतुरंगुलं सद्यो मारकम् ॥ १६१ ॥

वस्तिके मर्मका वर्णन ॥

नाभि पीठ कटि गुदा वंक्षण और लिङ्ग इनके मध्यमें सूक्ष्म त्वचावाली एक द्वारवाली अधोमुख वस्ति नामहै यह चार अंगुलके प्रमाणका चोटलगनेसे शीघ्रही प्राणका नाशकरने वाला स्नायुका एकमर्म है ॥ १६१ ॥

नाभि. प्रसिद्धा पक्वामाशयोर्मध्ये शिरा प्रभवा नाभिर्नाम शिरा मर्म्मैदंचतुरंगुलं सद्यो मारकम् ॥ १६२ ॥ नाभिके मर्मका वर्णन ॥

पक्वाशय और आमाशयके मध्यमें शिराओंसे उत्पन्न नाभि नामसे प्रसिद्ध चार अंगुलके प्रमाणका चोटलगनेसे शीघ्रही प्राणका नाशकरनेवाला शिराओंका एकमर्महै ॥ १६२ ॥

वक्षोमर्म्माणिसीमन्ता स्तलाक्षिप्रेन्द्रवस्तय । बृहत्योपार्श्वयोःसंधी कटीकतरुणेच ये ॥ नितम्बावितिचेतानि कालांतरहराणितु ॥ १६३ ॥

अब कालान्तरमें मारनेवाले मर्मोंका वर्णन करतेहैं ॥

वक्षमर्म सीमन्त तल क्षिप्र इन्द्रवस्ति बृहती पार्श्व सन्धि कटीकतरुण नितंब यह कालान्तर में प्राणोंके नाशकरनेवाले मर्म हैं ॥ १६३ ॥

वक्षोमर्म्माणि ॥

स्तनमूलेस्तन रोहितापलापापस्तंभाः। उरसःस्तनमूलस्य नरोहिस्तन रोहिते॥१६४॥

अब वक्षमर्मोंके नाम कहतेहैं ॥

स्तनमूल,स्तनरोहित,अपलाप और अपस्तम्भ यह वक्षमर्म हैं ॥ १६४ ॥

स्तनयोरधरस्ताद्द्व्यंगुल मुभयतः स्तनमूले नाम शिरा मर्म्मणी द्व्यंगुले कफ पूर्ण कोष्ठ तया कास श्वासाभ्यांच कालांतर मारके ॥ १६५ ॥

स्तनमूलका वर्णन ॥

स्तनोंके नीचे दोनोंओर दोअंगुल प्रमाणवाले दो शिरामर्महैं वह चोटलगनेसे कफ से परिपूर्ण होनेके कारण कास और श्वासके द्वारा कालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं ॥ १६५ ॥

स्तनयोरुपरि उभयतः द्व्यंगुलं यावत्। स्तनरोहिते नाम द्वेमांस मर्म्मणी रक्तपूरित कोष्ठतया कालांतर मारकौ ॥ १६६ ॥

स्तनरोहितका वर्णन ॥

स्तनोंके ऊपर दोअंगुल पर्य्यन्त स्तनरोहित नामवाले दो मांसकेमर्म रुधिरसे पूर्ण होनेके कारण चोटलगनेसे कालान्तरमें प्राणोंको हरतेहैं ॥ १६६ ॥

अपलापौ अंस कूटयोरधस्तात् पार्श्वयो रुपरि द्वौशिरा मर्म्मणी। अर्द्धांगुलेरक्तेन पूयतांगतेन कालांतर मारकौ ॥ १६७ ॥

अपलापीका वर्णन ॥

कन्धोंके नीचे और पसलियोंके ऊपर अर्द्धअंगुलके प्रमाण वाले दोशिराओंके मर्म चोटलगने से रुधिरके पीपहोजाने पर कालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं ॥ १६७ ॥

अपस्तम्भो उरसः उभयोः नाड्योः वातवहे शिरा मर्म्मणी। अर्द्धांगुले वात पूर्ण कोष्ठ तया कास श्वासाभ्यांच कालांतर मारके ॥ १६८ ॥

अपस्तंभका वर्णन ॥

छातीके दोनों ओर नाडियों में वायुके ले चलने वाले अपस्तंभ नाम अर्द्धांगुल प्रमाण वाले दो शिराओंके मर्म हैं वह वायुके द्वारा भरेरहने के कारण चोटलगनेसे खांसी और श्वासकेद्वारा कालान्तरमें प्राणोंको हरतेहैं ॥ १६८ ॥

सीमन्ताः शिरसि पञ्च संधयः संधिमर्माणि चतुरंगुलानि। उन्माद भय चित्तविनाशैः कालांतर मारकाः ॥ १६९ ॥

सीमन्तमर्मका वर्णन ॥

शिरकी पांच सन्धियोंमें चार अंगुल प्रमाण वाले पांच संधियोंके मर्महैं वह चोट लगनेसे उन्माद भय और चित्तके बिगड़जाने के द्वाराकालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं ॥ १६९ ॥

तलानि। मध्यांगुलि मनुक्रम्य हस्तस्य मध्यन्तलमेव मपरस्य हस्तस्य। पादयोश्चत्वारि तलानि मांस मर्माणि द्व्यगुलानि रुजाभिः कालांतर मारकाणि ॥ १७० ॥

तलमर्मका वर्णन ॥

वीचकी उंगलीसे लेकर दोनों हाथ और दोनों पैरोंकेतलुओं में दो अंगुलके प्रमाण वाले तल नाम मांसके चार मर्म चोट लगनेसे रोगोंके द्वारा कालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं ॥ १७० ॥

क्षिप्राणिअंगुष्ठांगुल्योर्मध्यंक्षिप्रम् । तच्चहस्तद्वयोर्द्वेतथापादयोःएवंचत्वारिस्नायुमर्माण्यर्द्धांगुलान्याक्षेपकेणकालांतरमारकाणि ॥ १७१ ॥

क्षिप्रमर्मका वर्णन ॥

अंगूठे और उसके पासकी तर्जनी नाम उंगलीके वीचको क्षिप्रकहतेहैं दोनों हाथ और पैरों के क्षिप्रोंमें आधेअंगुलके प्रमाण वाले स्नायुके चार मर्म चोट लगने से आक्षेप (रोगविशेष) कालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं ॥ १७१ ॥

इन्द्रवस्तयःप्रकोष्ठयोर्मध्येद्वौजङ्घयोर्मध्येद्वौ । एवंचत्वारिमांसमर्माणिद्व्यंगुलानिशोणितक्षयेणकालान्तरमारकाः ॥ १७२ ॥

इन्द्रवस्तिमर्मका वर्णन ॥

दोनों पहुंचे और दोनों पिंडलियोंमें दो अंगुलके प्रमाण वाले मांसके चारमर्म चोट लगनेसे रुधिरके नाशके द्वारा कालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं ॥ १७२ ॥

वृहत्यौ । स्तनमूलादुभयतःसपृष्ठवंशंयावत् । शिरामर्म्माणि । अर्द्धांगुलेशोणितिप्रवृत्तेरुपद्रवेःकालान्तरमारके ॥ १७३ ॥

वृहतीमर्मका वर्णन ॥

स्तनोंके मूलसे दोनों ओर पीठकी रीढ़तक आधेअंगुलके प्रमाणवाले शिराओंके दोमर्म चोटलगने से रुधिर के वहुत निकलजाने के कारण कालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं ॥ १७३ ॥

पार्श्वसंधीजघनपार्श्वयोःसंधौशिरामर्मणीअर्द्धांगुलौशोणितपूर्णकोष्ठतयाकालान्तरमारकौ ॥ १७४ ॥

पार्श्वसन्धिमर्मका वर्णन ॥

जंघा और पसलियोंकी सन्धिमें आधे अंगुलके प्रमाण वाले शिराओंके दोमर्म रुधिरसे भरे रहने के कारण चोट लगने से कालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं ॥ १७४ ॥

कटीकतरुणेत्रिकसन्निधानेउभयतः श्रोणिकाण्डेलग्नौकृत्यास्थितेअस्थिमर्मणीअर्द्धांगुलेशोणितक्षयात्पाण्डुविवर्णरूपंकृत्वाकालान्तरमारके ॥ १७५ ॥

कटीकतरुणनाम मर्मोकावर्णन ॥

त्रिक (रीढ़केनीचेकीतीनहड्डी) के निकट दोनों ओर नितम्बोंमें हड्डियोंके बीच में रहने वाले आधे अंगुलके प्रमाण वाले कटीकतरुणनाम हड्डियों के दोमर्म चोट लगनेके रुधिरके नाशहोने के कारण पांडु और विकार युक्त रूपको धारण करके कालान्तर में प्राणोंको हरतेहैं ॥ १७५ ॥

नितम्बौप्रसिद्धौद्वौउभयतःश्रोणीकाण्डयोरुपर्य्याशयाच्छादनौपार्श्वान्तरप्रतिबद्धौनितम्बौनामअस्थिमर्मणीअर्द्धांगुलावधःकायशोषेणदौर्बल्येनचकालान्तरमारकौ ॥ १७६ ॥

नितम्बमर्मका वर्णन ॥

नितम्ब प्रसिद्धहैं उनके दोनों ओर ऊपर आशयके आच्छाद

नितम्बनाम आधेअंगुलके प्रमाणवाले हड्डियों के दोमर्म चोटलगने से शरीरके सूखजाने के कारण उत्पन्न हुई दुर्बलता के द्वारा कालान्तर में प्राणों को हरतेहैं ॥ १७६ ॥

लोहिताक्षाणिजानूर्वीकूर्चाविटपकूर्परा । कुकुन्दरेकक्षधरोविधुरेसकृकाटिके ॥ अंशांशफलकापांगौनीलेमन्येफणेतथा ॥ १७७ ॥

व्याकुल करनेवाले मर्मोंका वर्णन ॥

लोहिताक्ष, आणि, जानु, ऊर्वी, कूर्च, विटप, कूर्पर, कुकुन्दर, कक्षधर, विधुर, कृकाटिक, अंश, अंशफलक, अपांग, नील, मन्य, हनु और आवर्त इन सम्पूर्ण मर्मोंमें चोटलगने से बिकलता उत्पन्नहोती है ॥ १७७ ॥

वैकल्यकरणान्याहुरावर्त्तौद्वौतथैवच । ऊर्व्वोरूर्ध्वमधोवंक्षणसन्धेर्लोहिताक्षंतच्चद्वे वाह्वोर्द्वेऊर्वोरेवन्तानिचत्वारिशिरामर्म्माण्यर्द्धांगुलानिवैकल्यकराणि ॥ तत्रशोणितक्षयेनपक्षघातःसक्थिसादोवा ॥ १७८ ॥

लोहिताक्ष मर्मोंका वर्णन ॥

जंघाओं के ऊपर और वंक्षण सन्धिके नीचे तथा दोनों भुजाओं के मूल में लोहिताक्षनाम आधे अंगुल के प्रमाण वाले शिराओंके चार मर्म विकलता के करनेवालेहैं इनमें चोटलगने से रुधिर के नाशहोने के कारण पक्षाघात अथवा जंघाओं में पीड़ाहोतीहै ॥ १७८ ॥

आण्यः॥ जानुनःऊर्ध्वेउभयोःपार्श्वयोस्त्र्यंगुलाएकस्मिन्जानुनिद्वेअपरस्मिन्द्वेएवंचतस्रःस्नायुमर्माण्यर्द्धांगुलानिवैकल्यकराणितत्रशोथाभिवृद्धिःसक्थिस्तम्भश्च॥१७९॥

आणिनाम मर्मोंका वर्णन ॥

दोनों घुटनोंके तीन अंगुल ऊपर दोनों ओर आधे अंगुल के प्रमाण वाले स्नायुके आणिनामचार मर्म विकलताके उत्पन्नकरने वाले हैं उनमें चोटके लगने से शोथकी वृद्धि और जंघाओंमें स्तंभ (जकड़ना) होताहै ॥ १७९ ॥

जानुजंघयोःसंधौसंधिमर्माणिद्व्यंगुलेवैकल्यकरेतत्रखञ्जता ॥ १८० ॥

जानुमर्मका वर्णन ॥

पिंडली और जंघाओंकी सन्धिमें दो अंगुलके प्रमाण वाले जानुनाम सन्धियों के दोमर्म विकलताके उत्पन्नकरनेवाले होतेहैं उनमें चोटलगने से मनुष्य लंगड़ाहोजाताहै ॥ १८० ॥

ऊर्व्योर्द्वेऊर्वोर्मध्येद्वेप्रगण्डयो.मध्येद्वेएवंचतस्रः शिरामर्माणिएकांगुल्या वैकल्यकर्यस्तत्रशोणितक्षयात्सक्थिशोषः ॥ १८१ ॥

ऊर्व्वि नाममर्मोंका वर्णन ॥

जंघाओंमें दो और भुजदंडों में दो इसप्रकार शिराओंके एक अंगुल के प्रमाण वाले ऊर्व्विनाम चार मर्म विकलताके करने वाले होतेहैं इनमें चोटलगने से रुधिरके नाशके द्वारा जंघा और भुजा सूखजातीहैं ॥ १८१ ॥

कूर्चाःपादयो रंगुष्ठांगुल्योर्मध्येतयोरूर्ध्वमधश्चएवंचत्वारिस्नायुमर्म्माणिवैकल्यकराणितत्रपादयोर्भ्रमणवेपनेभवतः ॥ १८२ ॥

कूर्चमर्मोंका वर्णन ॥

दोनों पैरों के अंगूठे और अंगूठे के पासकी उंगलीके बीच में नीचे और ऊपर स्नायुके चार मर्म विकलताको करतेहैं उनमें चोटलगने से पैरों में भ्रमण और कम्प होताहै ॥ १८२ ॥

विटपेद्वेवंक्षणवृषणयोर्मध्येस्नायुमर्माणिएकांगुल्यवैकल्यकरंचतत्राल्पशुक्रताच १८३॥

विटपनाम मर्मोंका वर्णन ॥

वंक्षण और अंडकोशोंके बीचमें स्नायुके विटपनाम एक अंगुल प्रमाणवाले दोमर्म विकलताकरने वाले होतेहैं उनमें चोटलगने से नपुंसकता और वीर्य्यकी स्वल्पता होतीहै ॥ १८३ ॥

कूर्परौकफोणिजौद्वौसंधिमर्मणाद्व्यंगुलौवैकल्यकरौतत्रबाहुमध्येसङ्कोचः ॥ १८४ ॥

कूर्पर मर्मोंका वर्णन ॥

कुहनियोंमें दो अंगुल के प्रमाण वाले कूर्परनाम सन्धियोंके दोमर्म विकलता करनेवाले होतेहैं उनमें चोटलगनेसे भुजा संकुचित होजाती हैं ॥ १८४ ॥

कुकुन्दरेपार्श्वजघनबहिर्भागेपृष्ठवंशस्योभयतोनातिनिम्नेकुकुन्दरेनाममर्म्मणी । तत्र स्पर्शाज्ञानमधःकाये । चेष्टोपघातश्च । मर्मणीअर्द्धांगुलेवैकल्यकरेतत्रस्पर्शाज्ञानमधःकायस्यचेष्टोपघातश्च ॥ १८५ ॥

कुकुन्दर मर्मोंका वर्णन ॥

नितम्बों के गढ़ों में आधे अंगुल के प्रमाण वाले सन्धि के दो मर्म विकलता करनेवाले होते हैं उन में चोटलगने से नीचे के भग में स्पर्शका ज्ञान नहीं होता और क्रियाओं के करनेकी शक्ति नहीं रहती ॥ १८५ ॥

कक्षधरे । वक्षःकक्षयोर्मध्येद्वेस्नायुमर्मणीएकांगुलेवैकल्यकरेतत्रपक्षाघातः ॥ १८६ ॥

कक्ष धर मर्मोंका वर्णन ॥

छाती और बगलोंके बीचमें एक अंगुलके प्रमाण वाले स्नायुके दोमर्म विकलता करने वाले होते हैं इनमें चोट लगनेसे पक्षाघात होताहै ॥ १८६ ॥

विधुरेकर्णपृष्ठतोऽधःसंश्रितेकिञ्चिन्निम्नाकारे द्वेस्नायुमर्म्मणीअर्द्धांगुलेवैकल्यकरेतत्र बाधिर्य्यम् ॥ १८७ ॥

विधुरनाम मर्मोंकावर्णन ॥

कानोंके पीछे नीचेकी ओर स्थित कुछ गहरे आधे अंगुलके प्रमाण वाले विधुर नाम स्नायु के दोमर्म होतेहैं इनमें चोट लगनेसे बधिरता होतीहै ॥१८७॥

कृकाटिकेशिरोग्रीवयोरुभयतः । संधिद्वे । संधिमर्मणीअर्द्धांगुलेवैकल्यकरेशिरष्कम्पः ॥ १८८ ॥

कृकाटिक मर्मोंका वर्णन ॥

शिर और ग्रीवाके दोनों ओर सन्धियोंके दोमर्म आधे अंगुलके प्रमाण वाले विकलता करनेवाले होतेहैं उनमें चोट लगनेसे मस्तक कंपायमान होताहै ॥ १८८ ॥

अंसौस्कन्धौबाहुमूर्द्धग्रीवामध्येअंसपीठस्कन्धनिबन्धनावंसौनाम । स्नायुमर्मणीअर्द्धांगुलेवैकल्यकरेतत्रबाहुस्तम्भः ॥ १८९ ॥

अंश नाम मर्मोंका वर्णन ॥

बाहु ग्रीवा और मस्तक इनके बीचमें अंश नामे आधे अंगुलके प्रमाणवाले स्नायुके दोमर्म विकलता करने वाले होतेहैं उनमें चोट लगनेसे भुजा जकड जातीहैं ॥१८९॥

अंसफलकेपृष्ठोपरिपृष्ठवंशमुभयतस्त्रिकसम्बद्धे ग्रीवायांअंसद्वयस्यचसंयोगोयत्रत त्रिकं । अस्थिमर्मणीअर्द्धांगुलेवैकल्यकरेतत्रबाह्वोःशून्यताशोषश्च ॥ १९० ॥

अंश फलक नाम मर्मोंका वर्णन ॥

पीठके ऊपर रीडके दोनों ओर त्रिक (गर्दन और कन्धोंका जोड) से लगे हुए आधे अंगुलके प्रमाण वाले अंशफलक नाम हड्डियों के दोमर्म विकलता करने वाले होते हैं उनमें चोट लगने से भुजा सुन्न होजातीहैं और सूख जातीहैं ॥ १९० ॥

अपांगौनेत्रयोरंतौशिरामर्मणीअर्द्धांगुलौवैकल्यकरौतत्रान्ध्यंदृष्ट्युपघातोवा॥ १९१॥

अपांगनाम मर्मों का वर्णन ॥

नेत्रों के अन्तमें अपांगनाम शिराओंके दोमर्म आधे अंगुल के प्रमाण वाले विकलता करनेवाले होतेहैं उनमें चोटलगनेसे मनुष्य अन्धा अथवा मन्ददृष्टि होजाताहै ॥ १९१ ॥

नीलेमन्येचकण्ठनाडीमुभयतश्चतस्रोधमन्यःद्वेनीलेद्वेमन्ये । तत्रएकामन्याएका नीला ॥ एकस्मिन्पार्श्वे मन्यानीलाः अपरस्मिन्पार्श्वेद्वेद्वे शिरामर्मणीद्व्यंगुलेवैकल्यकरे तत्रमूकताविकृतिस्वरताऽरसग्राहिता च ॥ १९२॥

नीला और मन्यानाम मर्मोंका वर्णन ॥

कंठकी नाड़ीके दोनोंओर चार नाड़ीहैं उनमें से दो नीला नाम और दो मन्या नाम हैं और एक२ ओर एक नीला और एक मन्यानाम नाड़ी है इसप्रकार दोनों ओर दो अंगुल के प्रमाणवाले दो २ शिराओं के मर्म विकलताकरनेवाले होते हैं उनमें चोट लगने से गूंगापन- स्वरभंग और मधुरादि रसोंकी अज्ञताहोती है ॥ १९२ ॥

फणेघ्राणमार्गमुभयत.मांसमर्मणीअर्द्धांगुलेवैकल्यकरेतत्रगंधाज्ञानम् ॥ १९३ ॥

फणनाममर्मोंका वर्णन ॥

नासिका के दोनों ओर आधे अंगुलके प्रमाण वाले फणनाम शिराओंके दोमर्म विकलता करने वाले होते हैं इनमें चोट लगनेसे गन्धका ज्ञान नहीं होता ॥ १९३ ॥

आवर्तौभ्रुवोरुपरिनिम्नयोःसंधिमर्मणीअर्द्धांगुलेवैकल्यकरेतत्रांध्यंदृष्ट्युपघातः १९४ ॥

आवर्त्तनाममर्मों कावर्णन ॥

भृकुटियोंके ऊपर कुछ खाली आधे अंगुल के प्रमाण वाले आवर्त्तनाम सन्धियों के दो मर्म विकलता करने वाले होते हैं इनमें चोट लगने से अन्धता और दृष्टिकीमन्दता होती है ॥ १९४ ॥

गुल्फौद्वौमणिबंधौद्वौतथाकूर्चशिरांसिच । रुजाकराणिजानीयादष्टावेतानिबुद्धिमान् ॥ १९५ ॥

रोगके उत्पन्न करनेवाले मर्मोंका वर्णन ॥

दो पैरके गट्टे दो कलाई और चार कूर्च के शिर बुद्धिमान् लोगों को रोगों के उत्पन्न करनेवाले यह आठ मर्म जाननेचाहिये ॥ १९५ ॥

गुल्फोघुण्टिकेसंधिमर्मणीद्व्यंगुलोरुजाकरोतत्ररुजापादस्तम्भःखञ्जताच॥१९६॥

गुल्फ नाम मर्मोका वर्णन ॥

पैरों के घुटने में दो अंगुल के प्रमाण वाले सन्धिके गुल्फ नाम दोमर्म रोगके करनेवाले होते हैं उनमें चोट लगने से मनुष्य लंगड़ाहोजाताहै अथवा पैर जकड़जाते हैं ॥ १९६ ॥

मणिबंधौहस्तप्रकोष्ठसंधीसंधिमर्म्मणीद्व्यंगुलोरुजाकरो । तत्रहस्तयोःक्रियाराहित्यं ॥ १९७ ॥

मणिबन्धमर्मोका वर्णन ॥

पहुंचे और पंजेकी सन्धिमें दोअंगुलके प्रमाणवाले मणिबन्ध नाम सन्धियोंके दोमर्म रोग के करने वाले होतेहैं इनमें चोट लगनेसे हाथोंमें कामकरने की शक्ति नहीं रहती है ॥१९७॥

कूर्चशिरांसि । पादसंधेरधःउभयतःएकस्मिन्पादेद्वेत्वद्वितीये ॥ एवंचत्वारिस्नायमर्म्माण्येकांगुलानिरुजाकराणितत्ररुजाशोफश्च ॥ १९८॥

कूर्चशिर मर्मोका वर्णन ॥

दोनों पैरोंके चारोंगट्टोंके नीचे एक अंगुलके प्रमाण वाले कूर्चशिर नामचार स्नायुके मर्म पीड़ा करने वाले होतेहैं उनमें चोट लगने से पीड़ा और सूजन उत्पन्न होतीहै ॥१९८॥

उत्क्षेपौस्थापनीचैवविशल्यघ्नंत्रिकम्मतम् १९९ उतक्षेपौशंखयोरुपरिकेशायावत् । स्नायुमर्म्मणीअर्द्धांगुलेतयोर्विद्धयोःसशल्योजीवेत्पाकात्पततिशल्योवाउद्धृतशल्यस्तुम्रियेतअतएव विशल्यमुद्धृतशल्यंहंतिविशल्यघ्नंमर्म्मस्थापनी । एकाभ्रुवोर्मध्येशिरामर्म्मेदमर्द्धांगुलंविशल्यघ्नम् ॥ २०० ॥

विशल्यघ्न मर्मों का वर्णन ॥

दोउत्क्षेप और एक स्थापिनी यह तीन मर्म विशल्यघ्न कहलातेहैं १९९ (उत्क्षेप मर्मका वर्णन) मस्तक की दोनों हड्डियोंके ऊपर बालोंतक उत्क्षेप नाम आधे अंगुल के प्रमाण वाले दोस्नायु के मर्म होतेहैं इनमें कांटा आदि लगने से जो वह लगारहै अथवा पककर गिरपड़े तो मनुष्य जीतारहताहै और उसके निकाल लेने से मरजाताहै इसीसे विशल्यघ्न (जिसका कांटानिकाललिया जाय उसका मारनेवाला) नामहै भृकुटियोंके मध्यमें आधे अंगुल के प्रमाण वाला स्थापनी नाम शिरा का मर्म विशल्यघ्नहै ॥ २००॥

सप्तरात्रान्तरेहन्युःसद्यःप्राणहराणिहि । कालान्तरप्राणहरंपक्षेमासे च मारकम् ॥ मध्यप्राणहरंचांतेविद्धंकालेनमारयेत् । कालान्तरेप्राणहरमन्तेविद्धन्तुदुःखदम् (अन्ते मर्म्मसमीपे) मर्म्माण्यधिष्ठायहियेविकारामूर्च्छन्तिकायेविविधानराणाम् । प्रायेणते कृच्छ्रतमाभवन्तियत्नेनयत्नैरपिसाध्यमानाः ॥ २०१ ॥

शीघ्र प्राणों के हरने वाले मर्मों में चोटलगनेसे सात रात्रिके भीतर प्राण निकल जाते हैं और कालान्तरमें प्राणों के हरने वाले मर्म एकपक्ष अथवा एक मासमें प्राणों को हरते हैं शीघ्रप्राण हरने वाले मर्म समीप में चोटलगनेसे कालान्तरमें प्राणों को हरतेहैं और कालान्तर में प्राणहरने वाले मर्म पीड़ा उत्पन्न करतेहैं मनुष्यों के शरीरमें जो रोगमर्मों के ऊपर उत्पन्न होते हैं वह वैद्यों से यत्नपूर्वक चिकित्साकिये जानेपरभी अत्यन्त कष्ट साध्यहोते हैं ॥ २०१ ॥

अथसन्धयः ॥

तेद्विविधाऽचेष्टावन्तःस्थिराश्च ॥ शाखासुहन्व्योःकट्यांचचेष्टावन्तोभवन्तिहि । शेषास्तुसन्धयःसर्वेस्थिरास्तज्ज्ञैरुदाहृताः ॥ कथितादेहिनांदेहेसन्धयोद्वेशतेदश । शाखासुतेऽष्टषष्टिश्चकोष्ठेत्वेकोनषष्टिका ॥ ग्रीवायामूर्ध्वदेशेतुत्र्यशीतिस्तेप्रकीर्त्तिताः॥२०२॥

सन्धियोंका वर्णन ॥

सन्धि चेष्टा युक्त और निश्चल इन दोप्रकारोंकी होती हैं हाथ पैर जावड़े तथा कमरमें चेष्टा युक्त और शेष स्थिर होतीहैं मनुष्योंके शरीर में २१० सन्धियां कहीगई हैं हाथ पैरोंमें ६८ कोष्ठमें ५९ और ग्रीवा तथाग्रीवा के ऊर्ध्व भाग में ८३ कही गई हैं ॥ २०२ ॥

प्रथमंपरिगण्यन्तेतेषुशाखागताइह । एकैकस्यांपादांगुल्यांत्रयस्त्रयोद्वावंगुष्ठेतेचतुर्दश ॥ गुल्फजानुवंक्षणेष्वेकैकमेवंसंप्तदश एकस्मिन्सक्थिनिभवन्ति । एतेनेतरसक्थिबाहूचव्याख्यातौ ॥ एवमष्टषष्टिशाखासु ॥ २०३ ॥

उनमें से पहले हाथपैरोंकी सन्धियों का वर्णन किया जाताहै पेरकी एक२ उंगलीमें तीन२ अंगूठेमें २ गट्टे घुटने और वंक्षण में एक२ इस प्रकार एक जंघामें१७हुई इसी रीति से दूसरी जंघा और दोनों भुजाओंमें जाननी चाहिये इस क्रम से सब ६८ हुई ॥२०३ ॥

अथकोष्ठगतानाह ॥

त्रयःकटीकपालेषुचतुर्विंशतिः पृष्ठवंशेतावन्तएवपार्श्वयो रष्टावुरसिएवमेकोनषष्टिः कोष्ठे ॥ २०४ ॥

कोष्ठकी सन्धियोंका वर्णन ॥

कमर में३ पीठकीरीढमें२४ दोनों पसलियों में२४ और छातीमें८ इस प्रकार ५९ हुई ।२०४॥

अथग्रीवोर्ध्वगतानाह ॥

अष्टौग्रीवायांत्रयःकण्ठनाडीषुहृदयक्लोमफुप्फुसनिबद्धास्त्वष्टादश। द्वात्रिंशद्दन्तमूलेषु एकःकण्ठमणौनासायांचएकैक द्वौद्वौ वर्त्ममण्डलगण्डकर्णशङ्खेषुद्वौहनुसन्धौद्वावुपरिष्टात् भ्रुवोःशङ्खयोश्चोपरिष्टात् पंचशीर्षकपालेष्वेकोमूर्द्धनीतिकण्ठमणौघण्टिकेति प्रसिद्धे ॥ २०५ ॥

ग्रीवाके ऊपरकी सन्धियोंका वर्णन ॥

ग्रीवामें ८ कण्ठ में ३ हृदय - क्लोम और फुप्फुस और फुप्फुससे बंधीहुई नाड़ियोंमें १८ दांतों के मूल में ३२ घांटी में १ नासिका में १ नेत्रों के ऊपर के चर्ममें २ कपोलों में २ कानों में २ कनपटी की हड्डियोंमें २ जावड़ों में २ भृकुटियोंके ऊपर २ कनपटी की हड्डियों के ऊपर २ मस्तक की हड्डियोंमें ५ मस्तकमें १ इसप्रकार ८३ हुई ॥ २०५ ॥

एतेसन्धयोऽष्टविधाभवन्ति (तद्यथा) कोरोदूखलसामुद्गप्रतरस्तुन्नसेविनी । काकतुण्डंमण्डलंचशङ्खावर्त्तोऽष्टसन्धयः ॥ कोरोगर्त्तः ॥ नलिकेत्यन्येउदूखलःप्रसिद्ध समुद्गः सम्पुटःसमुद्गएवसामुद्गः. अत्रस्वार्थेअण् । प्रतरन्त्यनेनेतिप्रतरोनेलकः तुन्नस्येवतन्नाग

म्य सेविनीस्तूनीरतूनसेविनी ॥ काकतुण्डंकाकमुखं । मण्डलंप्रसिद्धंशङ्खस्यावर्तःशङ्खा वर्त्तः ॥ एतेयथानामप्रकृतयःसन्धयोभवन्तीत्यर्थः । एषामंगुलिमणिबन्धगुल्फजानुकूर्परेषु कोराःसन्धयः ॥ कक्षावंक्षणदन्तेषूदूखलाःअंसपीठगुदाभगनितम्बेषुसामुद्गाः । ग्रीवापृष्ठवंशयोस्तुप्रतराःशिरःकटीकपालेषु तू न सेविन्यः । हन्व्योरुभयतःकाकतुण्डाख्याःकण्ठहृदयक्लोमनाडीषुमण्डलाख्याः ॥ शिरःश्रोत्रशृंगाटकेषुशंखावर्त्ताःअस्थ्नांतु सन्धयोह्येतेकेवलाःसमुदाहृताः । पेशीस्नायुशिराणान्तुसन्धिसंख्या न विद्यते ॥२०६॥

यह सन्धियां आठप्रकार की होती हैं ॥

कोर (गर्त्त और कोई नलिकाभी कहते हैं) उदूखल (उलूखल) सामुद्ग (संपुट) प्रतर (जिस्से कोई वस्तुञासके) तूणसे विनी (तरकस) काकतुण्ड (काककी चोंच) मण्डल- शंखावर्त्त (शंखकाचक्र) यह सन्धियां नाम के अनुसार प्रकृति वाली होती हैं इनमें से उंगलीकलाई गट्टे घुटने और भुजदंडोंमें कोर - बगल वंक्षण और दांतोंमें उदूखल कन्धे, गुदा, योनि और नितम्बोंमें सामुद्ग ग्रीवा और रीढ़में प्रतर शिर, कटि और शिरकी हड्डीमें तूणसे विनी, जाबड़ों के दोनों ओर काकतुण्ड, कण्ठ, हृदय, क्लोम और नाड़ियों में मंडल और शिर, कान तथा शृंगाटक में शंखावर्त्तनाम सन्धियां होतीहैं यहसबसन्धियां, केवलहड्डियों की कहीगई हैं पेशी, स्नायु और शिराओंकी सन्धियों की संख्यानहींहै॥२०६॥

अथशिरामाह ॥

सन्धिबन्धनकारिण्योदोषधातुवहाःशिराः । नाभ्यांसर्वाणिबद्धास्ताःप्रतन्वन्तिसमंततः ॥ शरीरंसकलंचेतच्छिराभिःपोष्यतेसदा । प्रणालीभिरिवारामाःकुल्याभिःक्षेत्रधान्यवत् ॥ अत्रप्रणालीभिःकुल्याभिरिति दृष्टान्तद्वयंस्थूलसूक्ष्मशिराभेदात् ॥ २०७ ॥

शिराओंका वर्णन ॥

सन्धियोंको बांधने वाली और दोष तथा धातुओं को ले चलने वाली शिराहोती हैं वह सम्पूर्ण शिरानाभि में बंधीहुई सब ओर को फैलतीहैं जैसे नालियों से बगीचे और छोटीनदियों से खेत के धान्यपुष्टहोतेहैं उसी प्रकार यह सम्पूर्णशरीर शिराओंसे सदैव पुष्टहोताहै यहां नाली और छोटी नदियोंके दो दृष्टान्त स्थूल और सूक्ष्म दोप्रकार की शिराओं के भेद प्रकट करनेके लियेहैं ॥ २०७॥

प्रसारणाकुंचनादिक्रियाभिःसततंतनौ । शिराएवोपकुर्वन्तिताःस्युस्सप्तशतानितु ॥ यथाद्रुमदलेसाक्षाद्दृश्यन्तेप्रतताःशिराः । तथैवदेहिनांदेहेवर्त्तन्तेसकलेशिराः ॥ नाभिस्थाःप्राणिनांप्राणाःप्राणान्नाभिरुपाश्रिता । शिराभिरावृतानाभिश्चक्रनाभिरिवारकैः ॥ तद्यथा ॥ तासांखलुमूलशिराचत्वारिंशत् । तासांदशवातवहाःदशपित्तवहाः दशश्लेष्मवहाः दशरक्तवहाः तासांखलुवातवहानांवातस्थानगतानांसपंचसप्ततिशतानिभवन्ति । तावन्त्यएवपित्तवहा पित्तस्थानगताः ॥ श्लेष्मवहास्ताःश्लेष्मस्थानगताःरक्तवहायकृत्प्लीहगताःएवंशिरासप्तशतानिभवन्ति ॥ २०८॥

शिरा फैलाना और सकोडना आदि क्रियाओंसे शरीरका उपकार करतीहैं और वह संख्यामें ७०० हैं जैसे कि वृक्षके पत्तेमें साक्षात् फैली हुई नसें दिखाई देती हैं उसीप्रकार मनुष्यके संपूर्ण शरीरमें शिरा रहतीहैं जीवोंकेप्राण नाभिमें स्थितहैं और वह प्राणोंकी आशय भूतनाभि शिराओंसे ऐसे घिरी हुई है जैसे कि पहियेकी नाह आरोंसे घिरीहुई होतीहै उनमेंसे मुख्य शिरा चालीस हैं दश वायुकी दश पित्तकी दश कफकी और दश रुधिरकी लेचलने वाली हैं वातके स्थानमें प्राप्त वातकी लेचलने वाली शिरा १७५ होती हैं इसी प्रकार पित्त के स्थानमें प्राप्त पित्तकी लेचलने वालीभी शिरा १७५ ही हैं श्लेष्माके स्थानमें प्राप्त श्लेष्माकीले चलने वालीभी १७५ हैं और यकृत् और प्लीह में प्राप्त रुधिर की लेचलने वालीभी १७५ ही हैं इस क्रमसे सब सातसौ ७०० हैं (२०८)

तत्रवातवहाःएकस्मिन्सक्थिनिपंचविंशतिएतेनेतरसक्थिबाहूचव्याख्यातौ। विशेषतःकोष्ठेचतुस्त्रिंशत्तासांश्रोण्यांगुदमेढ्राश्रिताअष्टौ॥ द्वेद्वेपार्श्वयोः। षट्पृष्ठेद्तावन्त्य एवोदरे ६ दशवक्षसि १० एकचत्वारिंशदूजत्रुणः ऊर्ध्वन्तासांचतुर्दश १४ ग्रीवायां ४ चतस्रः कर्णयोः ६ नव जिह्वायां ६ षट् नासिकायां ८ अष्टौ नेत्रयोः॥ एवंवातवहानां सपञ्च सप्ततिशतं भवन्ति। एवंविभागः पित्तवहानामपि विशेषस्तु पित्तवहा नेत्रयोर्दश १० कर्णयोर्द्वे २ एवं रक्तवहाःश्लेष्मवहास्तु (षोडश १६ ग्रीवायां कर्णयोर्द्वे २) एवं शिराणां सप्तशतानि व्याख्यातानि॥ क्रियाणामप्रतीघात ममोहंबुद्धिकर्मणाम्। करोत्यन्यान्गुणांश्चापि स्वाःशिराःपवनश्चरन्॥ क्रियाणां प्रसारणा कुञ्चनादीनाम्। अमोहंबुद्धि कर्म्मणाम्। बुद्धीन्द्रियाणां मनसो बुद्धेश्च स्वेस्वे विषयज्ञानं करोतीत्यर्थः। अन्यान् गुणान् रसादि व्यापनद्वारा शरीर पोषणादीन्। यदातुकुपितोवायुःस्वाःशिराःप्रतिपद्यते। तदास्यविविधारोगा जायन्तेवातसम्भवाः॥ २०९॥

वायुकी ले चलने वाली शिरा दोनों भुजा और दोनों जंघाओंमें पच्चीस २ होतीहैं कोष्ठमें विशेष करके चौंतीस होतीहैं उनमेंसे नितम्ब गुदा और लिंगमें ८ दोनों पसलियोंमें दो २ पीठमें ६ उदर में ६ छातीमें १० इसप्रकार चौंतीस होतीहैं जत्रु (कन्धेकी सन्धि) के ऊपर ४१ उनमें से ग्रीवा में १४ कानोंमें ४ जिह्वामें ९ नासिकामें ६ नेत्रोंमें ८ इस प्रकार ४१ हुई इस रीतिसे वायुके ले चलनेवाली शिरा१७५होती हैं इसी प्रकारसे पित्तकी लेचलने वाली शिराओंकाभी विभाग जानना चाहिये परन्तु विशेषता इतनी है किवे नेत्रों में १० और कानोंमें २ होती हैं इसी प्रकारसे रुधिरकी भी ले चलने वाली होतीहैं और श्लेष्माकी ले चलने वालीभी होतीहैं परन्तु ग्रीवामें १६ और कानोंमें दो होतीहैं इस क्रमसे सातसौ७००शिराओंका वर्णनहै अपनी शिराओंमें विचरताहुआ वायु फैलाना और सकोडना आदि क्रियाओं का नष्टनहोना बुद्धीन्द्रिय मन और बुद्धिका अपने २ विषयमें ज्ञान तथा रसादिकोंको व्याप्त करनेंसे शरीरके पुष्टता आदि अन्य २ गुणोंकोभी करती हैं परन्तु जब विकार युक्त होकर वायु अपनी शिराओंमें प्राप्त होतीहै तब अनेक वातकेरोग उत्पन्नहोजातेहैं॥ २०९॥

भ्राजिष्णुतामन्नरुचि मग्निदीप्तिमरोगताम्। करोत्यन्यान्गुणांश्चापि पित्तमात्माशिराश्चरन्॥ अरोगतां पैत्तिकरोगानुत्पत्तिं करोति। अन्यान् गुणान् मेधाबुद्धि दर्शन

शक्त्यादीन् ॥ यदातुकुपितंपित्तं सेवतेस्ववहाःशिराः । तदास्यविविधारोगा जायन्ते पित्तसम्भवाः ॥ स्नेहमंगेपुसंधीनां स्थैर्य्यंबलमरोगताम् । करोत्यन्यानूगुणांश्चापि व लासःस्वाःशिराश्चरन् ॥ अरोगतां श्लेष्मिक रोगानुत्पत्तिं अन्यान् गुणान् बलपुष्ट्या दीन् ॥ यदातुकुपितःश्लेष्मा स्वाःशिराःप्रतिपद्यते । तदास्यविविधारोगा जायन्तेश्ले ष्मसम्भवाः ॥ २१० ॥

अपनी शिराओंमें विचरता हुआ पित्त कान्ति- अन्नमें रुचि - अग्निकी दीप्ति - पित्तके रोगोंका अभाव और मेधा -बुद्धि -दर्शन शक्ति आदि अन्य गुणोंकोभी करताहै परन्तु विकारको प्राप्त हुआ पित्त अपनी शिराओंमें विचरताहै तब अनेक पित्तके रोग उत्पन्नहोते हैं अपनी शिराओं में विचरता हुआ श्लेष्मा शरीरमें चिकनाई- सन्धियोंकी स्थिरता- बल- कफके रोगोंका अभाव और पुष्टता आदि अन्यगुणों को भी करताहै परन्तु विकार को प्राप्तहुआ श्लेष्मा जब अपनी शिराओं में प्राप्त होताहै तब अनेक श्लेष्माके रोग उत्पन्नहोतेहैं ॥ २१० ॥

धातूनांपूरणंवर्णस्पर्शज्ञानमसंशयम् । स्वशिरासुचरद्रक्तं कुर्य्याच्चान्यान्गुणानपि ॥ (अन्यान् गुणान् बल पुष्ट्यादीन्) यदातुकुपितंरक्तं सेवतेस्ववहाःशिराः । तदास्यवि विधारोगा जायन्तेरक्तसम्भवाः ॥ २११ ॥

अपनी शिराओंमें चलता हुआ रुधिर धातुओं की पूर्णता- वर्ण- स्पर्शका ज्ञान और बल तथा पुष्टता आदि अन्यगुणों को भी करताहै परन्तु विकारको प्राप्तहुआ रुधिर जब अपनी शिराओं में प्राप्तहोताहै तब रुधिरके अनेक रोग उत्पन्नहोतेहैं ॥ २११ ॥

तत्रारुणावातवहाः पूर्य्यन्तेवायुनाशिराः । पित्तादुष्णाश्चनीलाश्च शीतागौर्य्यःस्थि राःकफात् ॥ असृग्धरास्तुतारक्ताः स्युश्चनात्युष्णशीतलाः ॥ २१२ ॥

जो शिरा वायु से पूर्णरहतीहैं उनका रक्त वर्णहोताहै पित्त से पूर्णहुई शिरा नीलवर्ण और उ- ष्ण कफसे पूर्ण हुई शीतल और गौरवर्ण और रुधिर धारण करनेवाली शिरा न बहुत उष्ण न शीतल रक्तवर्णहोतीहैं ॥ २१२ ॥

अथ स्नायुः तत्रस्नायोः स्वरूपमाह ॥

मेदसःस्नेहमादाय शिरास्नायुत्वमाप्नुयात् । शिराणांहिमृदुःपाकः स्नायूनान्तुततः खरः ॥ स्नायवोबन्धनानिस्यु र्देहमांसास्थिमेदसाम् । संधीनामपियत्तास्तु शिराभ्यःसु दृढाःस्मृताः ॥ नौर्यथाफलकास्तीर्णा बंधनैर्बहुभिर्युता । नियुक्ताऽगाधसलिले भवेद्भार महाभृशम् ॥ एवमेवशरीरेऽस्मिन् यावन्तःसंधयःस्मृताः । स्नायुभिर्बहुभिर्बद्धा स्तेन भारसहानराः ॥ (फलकैःकाष्ठपट्टैः आस्तीर्णाव्याप्ताः) शतानिनवजायन्ते शरीरेस्नाय वोनृणाम् । तासांविवरणंक्रमः शिष्याःशृणुतयत्नतः ॥ शाखासुपट्शतानिस्युः कोष्ठेत्रिंश च्छ्शतद्वयम । ग्रीवायामूर्ध्वदेशेतु स्नायूनांसप्ततिःस्मृताः ॥ २१३ ॥

स्नायुओंके वर्णनमें प्रथम स्नायुका स्वरूपवर्णन करतेहैं ॥

शिरा मेदके स्नेहको लेकर स्नायु कहलातीहै शिराओंका पाक मृदु और स्नायुका उनकी अपेक्षा

कठोर होताहै स्नायुके द्वाराशरीरके मांस अस्थि- मेद और संधियोंका बन्धनहोताहै इस कारण वह शिराओंकी अपेक्षादृढ़ होतीहैं जिस प्रकार काष्ठके टुकडोंसे व्याप्त बहुत बंधनों सेयुक्त नौका अथाह जल में छोडी गई बहुत भारकी सहनेवाली होजाती है इसी प्रकारइस शरीर में सम्पूर्ण सन्धियां स्नायुसे बंधी हुई हैं इसीसे मनुष्य भारके सहने वाले होतेहैं मनुष्य के शरीरमें नौसै ९०० स्नायु होती हैं उनका विवर्णकहते हैं देखोगे तुम इसको श्रवणकरो हाथ पैरोंमें ६०० कोष्ठ में २३० और ग्रीवाके ऊपर ७० होती हैं ॥ २१३ ॥

तत्रशाखा गताःप्राह ॥

एकैकस्यां पादाङ्गुल्यां षट्षट्तात्रिंशत् । तावन्त्यएवतल कूर्चगुल्फेषु । तावन्त्य एव जंघायां दशजानुनि । चत्वारिंशदूरौ । दशवंक्षणे । एवंसार्द्ध शतमेकस्मिन् सक्थिनि भवन्ति । एतेनेतरसक्थि वाहूच व्याख्यातौ ॥ २१४ ॥

हाथ पैरोंकी स्नायुओंका वर्णन ॥

पैरकी एक२ उंगलीमें छः छः इस प्रकार सब तीसहुई तलुए, कूर्च और टकनोंमें ३० पिंडली में ३० घुटने में १० जंघामें ४० वंक्षण में १० इसप्रकार सब पैरसे जंघातक में १५० हुई इसी रीति से दूसरी जंघा और दोनों भुजाओंमें भी समझना चाहिये ॥ २१४ ॥

अथ कोष्ठागताःप्राह ॥

षष्टिःकट्यां तावन्त्यएवपार्श्वयोः । अशीतिःपृष्ठे त्रिंशदुरसि२१५अथ ग्रीवोर्ध्वगताः प्राह ॥षट्त्रिंशद् ग्रीवायाम् । चतुस्त्रिंशन् मूर्ध्नि एवंस्नायूनांनवशतानिभवंति ॥ २१६ ॥

कोष्ठकी स्नायुओंका वर्णन ॥

कमरमें ६० दोनों पसलियोंमें ६० पीठमें ८० छातीमें३०हैं २१५ ग्रीवाके ऊपरकी स्नायुओंका वर्णन ॥ ग्रीवामें ३६ शिरमें ३४ इस प्रकार सब ९०० हुई ॥ २१६ ॥

अथ धमन्यः ॥

धमन्योनाभितोजाता श्चतुर्विंशतिसंख्यया । दशोर्ध्वगादशाऽधोगाःशेषास्तिर्यग्गताःस्मृताः ॥ २१७॥

धमनियोंका वर्णन ॥

नाभि से उत्पन्नहुई चौबीस २४ धमनी होतीहैं उनमें से दश ऊपरको जाने वाली दश नीचे की जाने वाली और वाकी तिरछी जानेवाली होती हैं ॥ २१७ ॥

तत्रोर्ध्वगाः । शब्दस्पर्शरूप रस गंध प्रश्वा सोच्छ्वासजृम्भितक्षुत् हसित कम्पित्त रुदित गीतादि विशेषानाभि वहन्त्यः शरीरं धारयन्ति । प्रश्वासः अंतः प्रविष्टो वायुः । उच्छ्वासः ऊर्ध्वं गच्छद्वायुः । तास्तु हृदयंगतास्त्रिधा जायन्ते । तास्त्रिशत्तासां मध्ये द्वे द्वे वात पित्त कफ शोणित रसान्वहतः । तादश अष्टाभिः शब्द रसरूप गंधान् गृह्णाति पुरुषः ॥ द्वाभ्यां भाषते द्वाभ्यां घोषंकरोति द्वाभ्यां स्वपिति द्वाभ्यां जागर्त्ति द्वेचाश्रुवाहिन्यौ द्वेस्तन्यंस्त्रिया वहतः स्तन संश्रिते तेएवशुक्रं नरस्य स्तनाभ्या मभिवहतःएना

त्रिंशत् । एताभिरुदरपार्श्वपृष्ठोरुस्कन्धग्रीवाशिरोबाहवोधार्य्यन्तेचाल्यन्ते च॥२१८॥

उनमें ऊपर जाने वाली धमनी शब्द स्पर्शरूप रसगंध श्वासलेना और छोड़ना जंभाई क्षुधा हँसना कांपना रोना और गाना आदि कार्य्योंके द्वारा शरीर को धारण करतीहैं और वह हृदय में जाकर तीन प्रकार की होजाती हैं उनतीसमें से दो२ करके दश वात पित्त कफ रुधिर और रसको लेजाती हैं आठ से पुरुष शब्द रसरूप और गन्ध को ग्रहण करताहै दोसे भाषण करताहै दोसे शब्द करताहै दोसे सोताहै दोसे जागताहै और दोसे अश्रुबहाताहै और दोस्तनोंमें स्थितहोकर स्त्रीके दूधको धारण करती हैं और वेही मनुष्यके स्तनों से वीर्य्य को लेजाती हैं इस प्रकार तीसहुई इनके द्वारा उदर पसली पीठ छाती कन्धे ग्रीवा शिर और बाहु धारणकिये जाते हैं और हिलाये झुलायेजातेहैं॥२१८॥

अधोगतास्तु । वातमूत्रपुरीषशुक्रार्त्तवादीनधोवहंति । तास्तुपित्ताशयंगतास्त्रिधाजायंतेतास्त्रिंशत् ॥ तासाम्मध्येद्वेद्वेवातपित्तकफशोणितरसान्वहतः । तादशद्वेअन्त्रबद्धे अन्नाश्रितेद्वेतोयवहेद्वेवस्तिगतेमूत्रवहेद्वेशुक्रस्यप्रादुर्भावायद्वेतद्विसर्गायतेएवनारीणामार्त्तवप्रादुर्भावायतेऽधिसृजतश्च ॥ द्वेस्थूलांत्रप्रतिबद्धेपुरीषंविसृजतः । अष्टावन्यास्तिर्य्यग्गताःस्वेदमर्पयंति ॥ एतास्त्रिंशतएताभिरधोनाभेःपक्वाशयकटीमूत्रपुरीषवस्तिगुदमेढ्रसक्थीनिधार्य्यन्तेचाल्यंतेच ॥ २१९ ॥

नीचे जानेवाली धमनी वात मूत्र विष्ठा वीर्य्य और रजादिकोंको नीचे लेजातीहैं और वह पित्ताशयमें गई हुई तीनप्रकार की होकर तीस होती हैं उनमेंसे दो२ करके दश वात पित्त कफ और रुधिर को लेजातीहैं आंतोंके आश्रित अन्नकी लेजाने वाली दो जलकी लेजानेवाली दो वस्ति में प्राप्त मूत्र की लेजाने वाली दो वीर्य्य के उत्पन्न होनेके लिये और उसके त्यागकरने के लिये दो २ और वही स्त्रियोंके रजके उत्पन्न करने और त्याग करने के लिये होती हैं और दोस्थूल आंतों से बंधीहुई मल को छोड़तीहैं और शेष आठ तिरछी गईहुई पसीने को छोड़तीहैं इस प्रकार तीसहुई यह नाभि के नीचे पक्वाशय कटि मूत्र विष्ठा वस्ति गुदा लिंग और सन्धि (पूरीटाग) को धारण करती हैं और चेष्टा युक्त करतीहैं ॥ २१९ ॥

तिर्य्यग्गतानांतुचतसृणामेकेकंशतधासहस्रधाचोत्तरोत्तरंविभज्यंते । तास्त्वसंख्येयास्ताभिरिदंशरीरंगवाक्षितंनिबद्धमाततंगवाक्षवत् निबद्धमायतंगवाक्षो वातायनंयथा गवाक्षेबहूनिछिद्राणिभवंतितथाअस्मिन्देहेयावत्शिराः व्याप्यतिष्ठंतीतिभावः ।निबद्धमायतंगवाक्षितम् । गवाक्षाकारांत्रनिकरयुक्तंकृतमित्यर्थः ॥ तासांमुखानिरोमलग्नानिचेमुखेस्वेदःस्रवतिरसश्चाभिसंतर्पयंत्यंतर्बहिश्च । तैरेवाभ्यंगपरिषेकावगाहनालेपनवीर्य्याणित्वचिपक्वान्यन्तःप्रवेशयंति ॥ तैरेवस्पर्शंशुभंअशुभंवाग्रहणन्तियथास्वभावतः खानिमृणालेषुविसेषुच । धमनीनांतथाखानिरसोयैरभितश्चरेत् ॥ २२० ॥

तिरछी गईहुई चार धमनियों मेंसे एक२ सेकड़ों और हजारों प्रकारसे क्रम पूर्व्वक विभाग को प्राप्त होती हैं उससे उनकी संख्या नहींहै और उनके द्वारा यह शरीर जाली के समान अनेक छिद्रों से युक्त है अर्थात् जैसे जाली में अनेक छिद्र होतेहैं उसीप्रकार इस शरीरमें जाल के समान शिरा व्याप्त

होकर स्थितहैं उनके मुख रोमोंमें लगे होतेहैं जिनमुखों से स्वेद वहताहै और भीतर तथा बाहर रस सींचा जाताहै उन्हीं से अभ्यंग(तैलमर्दन)स्नान सिंचन और आलेपन(चन्दनादिलगाना) के सारांश त्वचामें प्रविष्ट होतेहैं और इन्हींसे अच्छे बुरे स्पर्शका ग्रहण होताहै जैसे कमल डंटों में स्वभावहीं से छिद्र होते हैं उसी प्रकार नाड़ियों में भी छिद्र होतेहैं जिनसे रस सब ओरको घूमताहै ॥ २२० ॥

पञ्चाभिभूतास्त्वथपञ्चकृत्वःपञ्चेन्द्रियम्पञ्चसुभावयन्ति । पञ्चेन्द्रियं पञ्चसु भावयित्वापञ्चत्वमायान्तिविनाशकाले । धमन्यः कथंभूताः पञ्चाभिभूताःपञ्चभ्यः आकाशादिमहाभूतेभ्यः अभिसमंतातभूताःउभयात्मकंमनश्चयस्यतंपञ्चेन्द्रियं जीवा त्मानंपंचसुइंद्रियाधिष्ठानेषुश्रोत्रादिषुपंचकृत्वःपञ्चवारान् ॥ पर्य्यायेणत्वेकदेवभावयं तिप्रापयतिपञ्चेन्द्रियंपञ्चानामिंद्रियाणांसमाहारः पञ्चेन्द्रियंश्रोत्रादितदुपलक्षितंकर्म्मे न्द्रियम्मनश्च । पञ्चसुपृथिव्यादिषु ॥ बुद्धींद्रियविषयेषु । तदुपलक्षितेषु हस्तादिषु कर्मेन्द्रिय विषयेषु मंतव्येमनोविषयेचभावयित्वाप्राप्यसंयोज्येतियावत् ॥ विनाशकाले पञ्चत्वंआकाशादिभावंआयान्तिप्राप्नुवंतीत्यर्थः ॥ २२१ ॥

पांच आकाशादि महा भूतों से सब ओर व्याप्त धमनी पंचेन्द्रिय अर्थात् जीवात्माको श्रोत्र आदिक पांच इन्द्रियों में पांच बार प्राप्त करती हैं और पंचज्ञानेन्द्रिय पंचकर्मेन्द्रिय,और मनको बुद्धीन्द्रियके पृथ्वी आदिक पांच विषय वा कर्मेन्द्रियों के हस्तादि पांचविषय और मनन करने के योग्य मनके विषयमें प्राप्तकरके विनाश काले में पंचत्व अर्थात् आकाशादि भावको प्राप्त होजातीहै ॥ २२१ ॥

अथकण्डराः ॥

महत्यःस्नायवःप्रोक्ताःकण्डरास्तास्तुषोडश । प्रसारणाकुञ्चनयोर्दृष्टंतासांप्रयोजन म् ॥ चतस्रोहस्तयोस्तासांतावन्त्यःपादयोःस्मृताः । ग्रीवायामपितावंत्यस्तावंत्यःपृष्ठ संगताः ॥ तत्रपादहस्तगतानांकण्डराणांनखाःप्ररोहाःग्रीवानिबंधनानामधोभागगता नांप्ररोहोमेढ्रःपृष्ठनिबंधानांप्ररोहोनितम्बमूर्द्धोरुवक्षोऽक्षस्तनपिण्डाः ॥ २२२ ॥

कंडराओंका वर्णन ॥

बड़ी स्नायु कंडरा कहलातीहैं वह सोलह होतीहैं और उनका प्रयोजन फैलाने और सकोड़ने में देखा जाताहै उनमेंसे दोनों हाथोंमें दोनों पैरोंमें ग्रीवामें और पीठमें चार २ होतीहैं उनमें से और पैर हाथोंमें रहने वाली कंडराओंसे नख उत्पन्न होतेहैं ग्रीवा में रहने वाली नीचेकी ओर गईहुई कंडराओं से लिंग उत्पन्न होताहै पीठमें रहने वाली कंडराओंसे नितम्ब मस्तक उर छाती नेत्र और स्तन पिण्ड उत्पन्न होतेहैं ॥ २२२

अथरन्ध्राणि ॥

नेत्रश्रवणनासानांद्वेद्वेरंध्रेप्रकीर्त्तिते । मुखमेहनपायूनामेकेकंरंध्रमुच्यते ॥ दशमंम स्तकेप्रोक्तंरंध्राणीतिनृणांविदुः । स्त्रीणामन्यानिचत्रीणिस्तनयोगर्भवर्त्मनि ॥ २२३ ॥

रन्ध्रोंका वर्णन ॥

नेत्र श्रवण और नासिकामें दो२ रन्ध्र होतेहैं मुख लिंग तथा गुदामें एक२ रन्ध्र होताहै और एक

मस्तकमें होताहै इसप्रकार पुरुषोंके दश रन्ध्र होते हैं पर स्त्रियोंके तीन और होते हैं स्तनोंमें दो और गर्भाशयमें एक ॥ २२३ ॥

अथस्रोतांसि ॥

मनःप्राणान्नपानीयदोषधातूपधातवः ॥ धातूनाञ्चमलामूत्रंमलमित्यादयः स्तनौ ॥ सञ्चरन्तिहियैर्मार्गैस्तानिस्रोतांसिसञ्जगुः । बहूनितानिसंख्यायशक्यंतेनैव भाषितुम् ॥ २२४ ॥

स्रोतोंका वर्णन ॥

मन प्राण अन्न जल दोष (कफादि) धातु उपधातु धातुओं के मल मूत्र विष्ठाइत्यादिक शरीर में जिन मार्गोंसे घूमतेहैं वह स्रोतकहलाते हैं उनके बहुतहोनेके कारण संख्यानहींकीजासक्ती है॥२२४॥

अथजालानि ॥

निरंतररंध्रानिकरकलितानिसमाहितानिचजालानीवजालानि । जालानितुशिरास्नायुमांसास्थ्नामुद्भवंतिहि ॥ तानिचत्वारिचत्वारिसर्वाण्येवचषोड़शः ॥ तानिमणिबंधगुल्फसंस्तृतानि परस्पर निबद्धानिपरस्परसंश्लिष्टानिपरस्परगवाक्षितानिचेतियैर्गवाक्षितमिदंशरीरम् ॥ अयमर्थः । एकस्मिन्मणिबंधे ॥ एकञ्जालंशिरायाः । अपरंस्नायोस्तृतीयंमांसस्यचतुर्थमस्थ्नः एवञ्चत्वारिजालानिएतेनेतरमणिबंधोगुल्फौचव्याख्यातौ ॥ गवाक्षितंविरचितंनिरंतरजालाकाररंध्रनिकरपरिकल्पितमित्यर्थः ॥ २२५ ॥

जालोंका वर्णन ॥

जाल के समान निरन्तर अनेक छिद्रों से युक्त और परस्पर मिले हुये जालहोते हैं शिरा-स्नायु मांस और अस्थिसे चार चार जाल उत्पन्नहोते हैं इस प्रकार सब सोलह होते हैं और वह मणि बंध (कलाई) और गुल्फ (गट्टा) में स्थित परस्पर बंधे हुये मिले हुये और छिद्रमय होते हैं जिन से कि यह शरीर छिद्रमय होताहै इसका यह तात्पर्य्यहै कि एक मणिबंध में शिरा स्नायु- मांस और हड्डियोंका एक एक जालहोताहै इसीप्रकार दूसरे मणिबंध और दोनोंगुल्फोंमें भी होते हैं॥२२५॥

अथकूर्चाः ॥

कूर्चास्तुहस्तयोर्द्वौतुतावंतौपादयोरपि । ग्रीवायामेकएकस्तुमेढ्रेसर्व्वेऽपिषट्स्मृताः ॥ कूर्चाअपिशिरास्नायुमांसास्थिप्रभावाःस्मृताः ॥ २२६ ॥

कूर्चोंका वर्णन ॥

दोनों हाथोंमें दो दोनों पैरों में दो गोवामें १ और लिङ्ग में एक इस प्रकार सब छः कूर्च होते हैं कूर्चभी शिरा स्नायु- मांस और हड्डियों से उत्पन्नहोतेहैं ॥ २२६ ॥

अथरज्जवः ॥

पृष्ठवंशस्योभयतःमहत्योमांसरज्जवःचतस्रोमांसपेशीनांबंधनंतत्प्रयोजनम् ॥२२७॥

रज्जुओंका वर्णन ॥

रीढ़के दोनों ओर बड़ी२ मांसकी चार रज्जुहोती हैं उनसे मांसकी पेशीबंधी रहती हैं ॥ २२७॥

अथसेवन्यः ॥

सेवन्यःसततासांतुभवेयुःपंचमस्तकेएकाशेफसिजिह्वायामेकाविद्देऽन्तताक्वचित् २२८॥

सीवनों का वर्णन ॥

सेवनी सात होतीहैं उनमें से मस्तक में ५ लिंग में १ और जिह्वा में १ होती है इनको कभी बिंधने न दे ॥ २२८ ॥

अथसंघातः ॥

चतुर्दशास्थ्नांसंघाताःतेषान्त्रयोगुल्फजानुवंक्षणेषु । एतेनेतरसक्थिबाहूचव्याख्या तौ ॥ त्रिकंशिरसोरेकैकम् । अत्रतुत्रिकपदेनबाहूग्रीवास्थिसंघातउच्यते ॥ २२९ ॥

संघातों का वर्णन ॥

हड्डियोंके चौदह १४ संघातहोतेहैं उनमेंसे गुल्फ - घुटना - और वंक्षणमें एक २ होते हैं इसी प्रकार दूसरे पैर और दोनों हाथोंमें जानने चाहिये त्रिक (बाहु और ग्रीवाकी हड्डियोंका समूह) और शिर में एक २ ॥ २२९ ॥

अथसीमंताः ॥

चतुर्दशैवसीमंताःकथितामुनिपुंगवैःसंघाताःशोभितायैस्तुसीमान्तास्ते प्रकीर्तिताः ॥ येरस्थिभिः ॥ २३० ॥

सीमन्तोंका वर्णन ॥

मुनि गणोंने चौदह सीमन्त कहेहैं जिन अस्थियों के द्वारा संघात सिंवे रहते हैं वह सीमन्त कहातेहैं ॥ २३० ॥

अथत्वचः ॥

क्षीरस्यपच्यमानस्ययथासन्तानिकाभवेत् । पच्यमानस्यशुक्रस्यरजसश्चतथात्वचः ॥ पूर्वावभासिनीतासांसिध्मस्थानंचसास्मृता ॥ २३१ ॥

त्वचाओं का वर्णन ॥

जैसे औटे हुए दूधपर मलाई पड़जाती हैं उसी प्रकार पकेहुए वीर्य्य और रजसे त्वचा उत्पन्न होती हैं उनमें से पहली अवभासिनीहै वह श्वेत कुष्ठ का स्थान कहीगई है ॥ २३१

अथावभासिनी ॥

भ्राजकेनापित्तेनावभासनात् । परिणाहेनविस्तारितस्यव्रीहेर्विंशतिभागेऽष्टादशभाग.प्रमाणन्तस्याः ॥ व्रीहिरत्रयवः । सासिध्मपद्मकण्टकयोरधिष्ठाना ॥ द्वितीयालोहिताज्ञेया तिलकालकजन्मभूः । सा यत्र षोड़श भाग प्रमाणा तिलकालकन्यक्ष व्यंगा नामधिष्ठानम् । तृतीयातुभवेच्छ्वेता स्थानञ्चर्म्मदलस्यसा । सा यत्र द्वादशभाग प्रमाणा चर्म्मदला जगल्लिका मशकाना मधिष्ठानम् । ताम्राचतुर्थीविज्ञेया किलासश्वित्रभूमिका ॥ (यत्राष्टभाग प्रमाणा) पञ्चमीवेदिनीनामा पञ्चभागाप्रमाणिका । विसर्पकुष्ठाधिष्ठानाज्ञेया षष्ठीतुलोहिता ॥ विख्यातारोहिणी षष्ठीग्रन्थिगण्डापचीस्थितिः । व्रीहिमात्रप्रमाणासाग्रन्थिगण्डापचीस्थितिः ॥ व्रीहिप्रमाणाग्रन्थ्यपच्चीगलमाण्डमालार्बुद

श्लीपदानामधिष्ठानम् । स्थूलात्वक्सप्तमीख्याताविद्रध्यादेःस्थितिश्चसा ॥ सात्रीहिद्वय प्रमाणा । तदेवोक्तंशार्ङ्गधरेणस्थूलाव्रीहिद्विमात्रयेति सप्तापित्वच.समुदिताविंशतितम भागोनपट्यवप्रमाणा ॥ पट्यवप्रमाणन्तुअंगुष्ठोदरतुल्यम् । यतउक्तम् । उदरेष्वंगुष्ठ प्रमाणंगाढमव्रविध्येदिति ॥ एतत्प्रमाणंमांसलेपुस्थूलेपुबोद्धव्यम् । नतुललाटसूक्ष्मां गुल्यादिषु ॥ २३२ ॥　　अवभासिनीका वर्णन ॥

आजक नाम पित्त के द्वारा प्रकाशित होने से अवभासिनी कहलातीहै उसका प्रमाण जोंकी लंबाई के $\frac{1}{20}$ भागहै और वह श्वेतकुष्ठ और पद्मकंटक रोगका स्थानहै दूसरी जौके सोलहवें भाग की प्रमाण वाली होतीहै और वह तिलकालक न्यच्छ और व्यंगोंका स्थानहै तीसरी जौके बारहवें भागकी प्रमाणवाली श्वेताहै वह चर्मदल अजगल्लिका और मस्सोंका स्थानहै चौथी जौके आठवें भागकी प्रमाण वाली ताम्राहै वह किलास और श्वित्र नामकुष्ठ का स्थानहै वेदिनीनाम पांचवीं जौके पांचवें भाग की प्रमाणवाली विसर्प और कुष्ठका स्थानहै छठीरोहिणी नाम एक जौके प्रमाण वाली है यह ग्रंथि अपची गलगंड गंडमाला अर्बुद और श्लीपदका स्थानहै सातवीं स्थूलाहै यह दो जौके प्रमाणवाली और विद्रधि आदि रोगोंका स्थानहै और शार्ङ्गधरने भी कहाहै कि स्थूल नामत्वचादो जौके प्रमाण वाली है यह कहीहुई सातोंत्वचा सबमिलकर बीसवें भाग रहित छःजौ के प्रमाणहैं इनका प्रमाण अंगूठे के मध्यभागके समानहै क्योंकि कहाहुआ है कि उदरमें अंगूठेके समान वेध करना चाहिये परन्तु यह प्रमाण स्थूल और मांसयुक्त स्थानोंहीमें जानना चाहिये क्योंकि ललाट और छोटी अंगुलियोंमें यह होही नहीं सक्ता ॥ २३२ ॥

अथलोमानिलोमकूपाश्च ॥

अस्थ्नांमलानिलोमानिअसंख्यानिभवन्तिहि । सन्तियावन्तिलोमानितावन्तोलोमकूपकाः ॥ अंगप्रत्यंगनिर्वृत्तिस्वभावादेवजायते । सन्निवेशश्चगात्राणांनात्रास्तिकारणान्तरम् ॥ निर्वृत्तिःसिद्धिःस्वभावात्ईश्वरात् । सन्निवेशोरचनाविशेपः ॥ अंगप्रत्यंगनिर्वृत्तौयेभवन्त्यगुणागुणाः । तेतेगर्भस्यविज्ञेयाधर्म्माधर्म्मनिमित्तजाः ॥ दंतानांपतनंजन्मपुनःपातेत्वसम्भवः । तलेप्यनुद्भवोलोम्नामेतत्सर्वस्वभावतः ॥ २३३ ॥

रोम और रोमकूपोंका वर्णन ॥

रोम हड्डियोंके मलहैं वह असंख्य होतेहैं और जितने रोम होते हैं उतनेही रोमकूप होते हैं अंग और प्रत्यंगों की उत्पत्ति और शरीरकी रचना विशेषमें ईश्वरीय स्वभावही कारणहै और कोई कारण नहीं है- गर्भस्थ सन्तानकी उत्पत्ति के समय जो अंग और प्रत्यंगोंके दोप गुणहोते हैं उनमें धर्म और अधर्मही कारण है- दांतोंका गिरकर फिर उत्पन्न होना और फिर गिरकर उत्पन्न न होना और तलुओंमें रोमोंका उत्पन्न न होना यहसब स्वभावहीं से होता है ॥ २३३ ॥

गर्भेमासिमासियद्भवति तदाह ॥

गर्भाशयेनिपतितेयाद्कशुक्रंतथार्त्तवम् । तादृगेवद्रवीभूतंप्रथमेमासितिष्ठति ॥ मरुत्पित्तकफैस्तत्रथःपच्यमानोद्वितीयकेकललस्थमहाभूतंसमुदायोघनीभवेत् ॥ अन्नमरुत्

कफयोरपिपाकहेतुत्वेतयोरत्यूष्मणेऽनधिकरत्वात् । यतउक्तंचरके । भौमाप्याग्नेयवायव्याःपंचोष्माणःसनाभसाः ॥ २३४ ॥

गर्भमेंजोमास २ मेंहोताहै उसका वर्णन ॥

गर्भाशयमें जिसप्रकार का वीर्य्य और रजगिरताहै प्रथम मासमे उसी प्रकार द्रवरूपरहताहै दूसरे मासमें गर्भाशयमें रहने वाले वातपित्त और कफकी ऊष्मा के द्वारा परिपाकको प्राप्तहोकर जरायुमें प्राप्तपंच महाभूतात्मक वीर्य्य और रज गाढ़ा होजाता है यहां परिपाकमें वायु और कफभी कारण हैं क्योंकि उनमेंभी ऊष्मारहती है क्योंकि चरकमें कहाहै कि पृथ्वी संबंधी जलसम्बन्धी अग्नि संबंधी-वायुसंबंधी और आकाश संबंधी पांच ऊष्मा होती है ॥ २३४ ॥

तृतीयेमासिशिरसोहस्तयोःपादयोस्तथा । पिण्डकाःपंचसिध्यंतिसूक्ष्माश्चावयवास्तनोः ॥ सर्व्वाण्यंगान्यपांगानिचतुर्थेस्युःस्फुटानिहि । हृदयेव्यक्तभावेनव्यजतेचेतनापिच ॥ तस्माच्चतुर्थेगर्भस्तुनानावस्तूनिवांछति । ततोद्विहृदयायतुस्यान्नारीदौहृदिनीमता ॥ दौहृदावहियाकुब्जकुनिपण्ढंचवामनम्। विकृताक्षमनक्षंवापुत्रंनारीप्रसूयते ॥ यतःस्त्रीदौहृदंप्राप्यवीर्य्यवन्तंचिरायुषम् । पुत्रंप्रसूयतेतस्मात्तदेवाञ्छितमर्पयेत् ॥ इंद्रियार्थास्तुतोयान्यान्भोक्तुमिच्छतिगर्भिणी । गर्भबाधाभयात्तासांभिषगाहृत्यदापयेत् । भोक्तुमुपभोक्तुमित्यर्थः ॥ साप्राप्तदौहृदापुत्रंजनयेतगुणान्वितम् । अलब्धदौहृदागर्भेलभेतात्मनिवामयम् ॥ येषुयेष्विंद्रियार्थेषुदौहृदेसावमानिता । प्रसूयतेसुतंसार्त्तिस्तस्मिंस्तस्मिंस्तदिंद्रिये ॥ सार्त्तिसव्यथाम् ॥ २३५ ॥

तृतीय मासमें मस्तक दोहाथ और दो पैरोंके सूक्ष्मअंग प्रत्यंग वाले पांच पिण्ड उत्पन्न होते हैं-चौथे मासमें संपूर्ण अंग और प्रत्यंग प्रकाशित होते हैं और हृदयके उत्पन्न होनेसे चैतन्यताभी होतीहै इसी कारणसे चौथे मासमें गर्भनाना प्रकारकी वांछाकरता है इसीसे दो हृदय वाली स्त्री दौहृदिनी कहलाती है- दौहृद (गर्भिणी स्त्रीकाअभिलाप) के अनादरसे स्त्री कुबड़ा- पंगुला- लूला- बौना-विगड़ेनेत्र वाला अथवा अंधा पुत्र उत्पन्न करती है- गर्भिणी दौहृदको पाकर बलवान और बड़ी आयुवाली सन्तानको उत्पन्न करती है इसहेतुसे उसका अभिलाप पूराकरना चाहिये- गर्भिणी स्त्री जिस २ इन्द्री के विषयकी अभिलापाकरे वह संपूर्ण गर्भकी बाधाके भयसे लाय २ करवैद्यकोदिलवाना उचितहै गर्भिणी दौहृदको पाकर गुणवान् पुत्र उत्पन्न करती है और दौहृदको न पाकर अपनेमें अथवा गर्भमें कुछभयको प्राप्तहोती है- गर्भिणी जिस २ इन्द्रीके विषय में अपमानको प्राप्त होती है उसी २ इन्द्री से पीड़ायुक्त पुत्रको उत्पन्न करती है ॥ २३५ ॥

दौहृदस्यविशेषफलमाह ॥

राजसंदर्शनेयस्यादौहृदंजायतेस्त्रियः । अर्थवंतंमहाभागंकुमारंसाप्रसूयते ॥ दुकूलपट्टकौशेयभूषणादिषुदौहृदात् । अलङ्कारैषिणंपुत्रंललितंसाप्रसूयते ॥ आश्रमेसंयतात्मानंधर्म्मशीलंप्रसूयते । देवताप्रतिमायंतुप्रसूतेपार्षदोपमम् ॥ आश्रमेतपस्विनामाश्रमेदौहृदात्पार्षदोपमम् प्रमथोपमम् ॥ दर्शनेव्यालजातीनांहिंसाशीलंप्रसूयते । रक्ता

क्षलोमशशूरंमहिषामिषदोहृदात् ॥ वाराहमांसेस्वप्नालुंशूरंसंजनयेत्सुतम्। मृगमांसे तुतच्छीलंविक्रांतंवनचारिणम् ॥ अत्रोऽनुक्तेषुयानारीदोहृदंविदधातिहि। शरीराचार शीलैःसासमानंजनयिष्यति॥ २३६॥

जो गर्भिणी को राजाके दर्शन की इच्छाहो तो धनवान् और महाभाग्यवान् पुत्र उत्पन्न होता है- रेशमी वस्त्र और भूषणादिकोंके अभिलाषसे मनोहर आभूषण की इच्छावालापुत्र उत्पन्न होता है- आश्रम की अभिलाषासे धर्मवान् और जितेन्द्रिय पुत्र उत्पन्नहोता है- देवताओंकी प्रतिमाओं के अभिलाषसे प्रमथ (शिवजीकेपार्षद) के समान पुत्र उत्पन्नहोता है- सर्पादिकों के दर्शन की अभिलाष से हिंसक पुत्र उत्पन्न होताहै- भैंसेके मांस की इच्छासे शूरवीर रक्तनेत्र और रोमयुक्त सन्तान उत्पन्नहोती है- शूकर के मांसकी इच्छासे बहुतसोनेवाला और शूरवीर पुत्र उत्पन्न होताहै मृगके मांस की इच्छासे शीघ्र गामीपराक्रमी और वनमें घूमनेवाली सन्तान उत्पन्न होती है इनके सिवाय और मांसादिकोंके अभिलाष से उसीप्रकार के शरीर आचार और स्वभाववाली सन्तान उत्पन्नहोती है- ॥ २३६॥

पंचमेमानसंषष्ठेबुद्धिश्चातिप्रबुध्यते । सर्वाण्यंगानुपांगानिभृशंव्यक्तानिसप्तमे ॥ ओजोऽष्टमेसंचरतिमातापुत्रौमुहुःक्रमात्। तेनतौम्लानमुदितौस्यातांजातोनजीवति ॥ नजीवत्यष्टमेजातस्तत्रोजोनस्थिरंयतः। तथानैर्ऋत्यभागत्वाद्दापयेतद्बलिंततः ॥ नैर्ऋत्यायभागश्चबालेपुरुद्रेणदत्तः। यत्उक्तंकुमारतंत्रे । अष्टमेमासिनैर्ऋत्यायमांसौदनं बलिंदापयेदिति ॥ २३७॥

पांचमें महीने में मनछठे में बुद्धि सातवे में संपूर्ण अंग और उपांग अत्यन्त प्रकाशित होते हैं और आठवें महीने में माता और पुत्रका ओजनामधातु एकका दूसरे में वारंवार घूमता रहता है इसीसे वह दोनों म्लान और प्रसन्न हुआ करते हैं-इसकारण से अष्टम महीने में उत्पन्नहुई सन्तान नहींजीती क्योंकि ओजधातु स्थिर नहीं रहती- आठवें महीने में नैर्ऋत्य दिशाके देवता को बलि देना चाहिये क्योंकि वह उसके अंशका भागीहै और शिवजी ने भी बालकोंकी रक्षा के लिये उस को भाग दियाहै- कुमार तंत्रमें भी कहा है कि आठवें महीने में नैर्ऋत्यके अधिष्ठाता को मांस और भातकी बलिदेनी चाहिये- ॥ २३७॥

नवमेदशमेमासिनारीबालंप्रसूयते। एकादशेद्वादशेवाततोऽन्यत्रविकारतः ॥ २३८॥

नवम- दशम एकादश अथवा द्वादश मासमें भी गर्भिणी पुत्रको उत्पन्न करती है और इससे आगे विकार से उत्पन्न हुआ जानो- ॥ २३८॥

गर्भेयदंगंप्रथमंभवतितदाह ॥

शिरोभवतिचांगस्यपूर्वमित्याहशौनकः । शिरस्येवोपजायंतेप्रधानानीन्द्रियाणिय त ॥ हृदयंजायतेपूर्वंकृतवीर्य्योऽवदन्मुनिः । बुद्धेश्चमनसश्चापियतस्तत्स्थानमीरितम् ॥ पाराशर्य्योद्वतिप्राहपूर्वंनाभिसमुद्भवः । प्राणीयत्रस्थितोदेहंवर्द्धयत्यूष्मसंयुतः ॥ पाणिपादंभवेत्पूर्वंमार्कण्डेयमुनेर्मतम्। देहिनःसकलाश्चेष्टाःपाणिपादाश्रयायतः ॥ प्रथमं

जायतेकोष्ठंततःसर्व्वाङ्गसम्भवः । एतत्तुकथयामासगोतमोमुनिपुंगवः ॥ सर्व्वाण्यंगान्युपाङ्गानियुगपत्सम्भवंतिहि । सूक्ष्मत्वान्नोपलभ्यंतेमतंधन्वंतरेरिदम् ॥ आमस्यानुफलेभवंतियुगपत्मांसास्थिमज्जादयो लक्ष्यंतेनपृथक्पृथक्तनुतयापुष्टास्तएवस्फुटाः । एवंगर्भसमुद्भवेत्ववयवाःसर्वेभवंत्येकदा लक्ष्याःसूक्ष्मतयानतेप्रकटतामायांतिवृद्धिंगताः ॥ मज्जादयःइत्यादिशब्देनत्वकेशरमज्जत्वगंकुरवृत्तानिगृह्यंते ॥२३९ ॥

शरीर में जो अंग पहले उत्पन्न होता है उसका वर्णन ॥

गर्भ में प्रथमशिर उत्पन्नहोताहै क्योंकि शिरसे ही प्रधान इन्द्री उत्पन्नहोतीहैं यह शौनकका मतहै प्रथम हृदय उत्पन्नहोता है क्योंकि वह बुद्धि और मनका स्थानहै यह कृतवीर्य्यमुनिका मतहै-प्रथम नाभि उत्पन्नहोतीहै क्योंकि उसमें स्थित ऊष्मायुक्त प्राण देहको बढ़ाते हैं यह व्यासजीका मत है - प्रथम हाथ और पैर उत्पन्न होते हैं क्योंकि देहीकी सब चेष्टाहाथ और पैरोंके आधीन है यह मार्कण्डेयमुनिका मतहै- प्रथम कोष्ठ उत्पन्नहोता है इसके पीछे सब अंग उत्पन्नहोते हैं यह मुनियों में श्रेष्ठ गौतमजीका मत है- परन्तु यह सबठीक नहींहै कि संपूर्ण अंग और उपांग इकट्ठे उत्पन्न होते हैं परन्तु सूक्ष्मतासे मालूम नहीं पडते यह धन्वन्तरिजीका मतहै जैसे आमके छोटेसे छोटे वडेसूक्ष्म फल में गूदा- गुठली- और विजली आदि इकट्ठेही उत्पन्नहोते हैं परन्तु अतिसूक्ष्मतासे अलग २ नहीं मालूम होते हैं और पुष्टहोनेपर वही प्रकटहोजाते हैं इसीप्रकार गर्भके उत्पन्नहोने के समय संपूर्ण अंग इकट्ठेही उत्पन्नहोते हैं परन्तु वह सूक्ष्मतासे मालूम नहीं पड़ते और बढ़नेपर प्रकट होजाते हैं- ॥ २३९ ॥

अथशरीरेपितृजमातृजरसजात्मजाभागाउच्यंते ॥

तत्रकेशाश्मश्रुचलोमानिनखादंताःशिरास्तथा । धमन्यःस्नायवःशुक्रमेतानिपितृजानिहि ॥ मांसासृक्मज्जमेदांसियकृत्प्लीहांत्रनाभयः । हृदयंचगुदञ्चापिभवन्त्येतानिमातृतः ॥ शरीरोपचयोवर्णोबलंदेहस्थितिस्तथा । रसादेतानिजायंतेभिषजोमुनयोजगुः ॥ ज्ञानंविज्ञानमायुश्चसुखदुःखादिकंतथा । इंद्रियाणिचसर्वाणिभवंत्येतानिचात्मनः ॥ दुःखादिकमित्यादिशब्देननानायोनिजन्मादिकमुच्यते । आत्मनःआत्मसन्निकर्षात्नत्वात्मनोजायंतेआत्मनोनिर्विकारात्प्रकृतिभावानुपेतः ॥ २४० ॥

शरीरमें पितामाता रस और आत्मासे उत्पन्नहुए भागोंको कहतेहैं ॥

केश दाढ़ी रोम नख दन्त शिरा धमनी स्नायु और वीर्य्य यह पिता से उत्पन्न होते हैं मांस रुधिर मज्जा मेद यकृत् प्लीहा आंत नाभि हृदय और गुदा यह सब माता से उत्पन्न होतेहैं शरीरकी वृद्धि वर्ण बल और देहकी स्थिति यह रससे उत्पन्न होतेहैं ऐसा वैद्य मुनियोंने कहाहै ज्ञान विज्ञान आयु संपूर्णइन्द्री सुख दुःख (नानायोनिजन्मादि) आदि यह सब आत्मा से उत्पन्न होते हैं अर्थात् आत्माके संयोगसे उत्पन्न होतेहैं क्योंकि आत्मानिर्विकार और प्रकृतिके भावों से रहितहै॥२४०॥

गर्भस्यकिंकिंविशिष्टोपकारकंतत्तदाह ॥

अग्नीसोमौमहीवायुर्नभःसत्त्वंरजस्तमः । पञ्चेन्द्रियाणिभूतात्मागर्भसञ्जीवयंतिहि ॥

अग्निरत्रपाचकालोचकरञ्जकभ्राजकसाधकानामतथापाञ्चभौतिकानां तथासप्तधातुगतानामग्नीनाम्।शक्तिरूपतयावस्थितोत्राचोधिदेवत्वंप्राप्तोबोद्धव्यः॥ पाचकादिकर्म्मणाजीवयतिसोमश्चपञ्चात्मकश्लेष्मरसशुक्रादीनां सोमात्मकानांभावानांरसेन्द्रियस्यचशक्तिरूपतयावस्थितोमनसश्चाधिदेवत्वंप्राप्तोबोद्धव्यः।सचसौम्यधातोरोजःप्रभृतेःपोषणेनपवनपावकसंशुष्कभागस्यार्द्रताविधानेनजीवयतीतिशेषः महीचजलेनक्लिन्नस्यापिकठिनविधानेनवायुर्दोषधातुमलांगोपांगादीनां सञ्चारणेनोच्छ्वासनिःश्वासाभ्यांमनोरूपतयापरिणतंजीवात्मनः शरीरान्तरेजीवनग्रहणमोक्षणेहेतुरितितदपिजीवयतिपञ्चेंद्रियाणिश्रोत्रत्वङ्नेत्रजिह्वाघ्राणानिशब्दादिग्रहणकर्म्मणा॥ भूतात्माकर्म्मपुरुषःसचाशेषस्यैवराशेश्चैतन्यहेतुर्जीवयतीति ॥ २४१ ॥

गर्भके विशेष उपकारियोंका वर्णन ॥

अग्नि सोम पृथ्वी वायु आकाश सत्त्व रज तम पांचइन्द्री और भूतात्मा इनके द्वारा गर्भ जीताहै यहां पाचक आलोचक रंजक भ्राजक साधक नाम पित्तों की पंचमहा भूत संबंधी अग्नियों की और सातों धातुओं में प्राप्त अग्नियोंकी शक्तिरूपसे स्थित वाणीके अधिदेवत्वको प्राप्त अग्नि जाननी चाहिये और यह पाचक आदि कार्योंसे गर्भको जिलावतीहै और सोम(जल)पांच श्लेष्मा रस और वीर्यादि संबंधी सोमात्मकभावों के और रसना इन्द्रीकी शक्तिरूपसे स्थित मनके अधिदेवत्वको प्राप्त जानना चाहिये वह सोम संबंधी ओजादिक धातुओं के पोषण से और वायु तथा अग्निके द्वारा सूखे हुए भागके आर्द्र करने से गर्भको जिलाताहै और पृथ्वी जलके द्वारा आर्द्रहुए भागको कठिन करने से गर्भको जिलातीहै और वायु दोष धातु मल अंग और उपांगादि के चलाने से और श्वास के भीतर लेने और छोडनेसे गर्भको जिलाती है और आकाश वायु तथा अग्निके द्वारा विदीर्ण हुए स्रोतोंको ऊपर नीचे और तिरछे अवकाश देने से गर्भ को जिलाताहै सत्त्व रज और तम मनरूपसे बदलकर जीवात्माके शरीरान्तरमें जीव के ग्रहण और त्याग में हेतु होने के कारण से गर्भ को जिलाते हैं और कान त्वचा नेत्र जिह्वा और नासिका यह पांचों इन्द्री शब्दादिकों के ग्रहण करने से गर्भ को जिलाती हैं जीवात्मा अर्थात् कर्म पुरुष संपूर्ण जगत्को चैतन्यकरके गर्भको जिलाताहै ॥ २४१ ॥

अपरंगर्भस्यजीवनोपायमाह ॥

गर्भस्यनाभिनाड्यातुनाडीरसवहास्त्रियाः। संलग्नातेनगर्भस्यवृद्धिर्भवतिनित्यशः॥ निःश्वासोच्छ्वाससंक्षोभस्वप्नांशानसोऽधिगच्छति । मातुर्निश्वसितोच्छ्वाससंक्षोभः स्वप्नसम्भवात् ॥ सङ्क्षोभःसञ्चलनंमातानिश्वासादिकायाश्चेष्टाःकरोतितास्तागर्भोऽपिकरोतीत्यर्थः ॥ २४२ ॥

गर्भके जीनेका दूसरा उपाय ॥

स्त्रीकी रसकी लेजाने वाली नाडी गर्भकी नाभिकी नाडीसे लगी होती है इससे गर्भकी नित्य वृद्धि होतीहै माता के श्वास लेने और छोडने चलने और सोने से गर्भभी श्वासलेता और छोडताहै चलता और सोताहै अर्थात् जो२ चेष्टामाता करतीहै वह सब गर्भ भी करताहै ॥ २४२ ॥

अथगर्भवृद्धेर्हेतुमुपायमाह ॥

गर्भस्यनाभिमध्येतुज्योतिःस्थानंध्रुवंस्मृतम् । तदाधमतिवातश्चदेहस्तेनास्यवर्द्धते ॥ उष्णेनासहितश्चापिदारयत्यस्यमारुतः । ऊर्ध्वन्तिर्य्यगधस्ताच्चस्रोतांसितुयथा तथा ॥ यथादारयतिविस्तारयति । तथातथादेहीवर्द्धयतिइतिपूर्वेणान्वयः ॥२४३ ॥

गर्भकी वृद्धिके हेतुरूपउपाय को कहतेहैं ॥

गर्भकी नाभिके मध्यमें तेजका स्थान होताहै और वायु उसको धौंकती है इस्से उसका शरीर बढ़ताहै ऊष्मा सहित वायु ऊपर नीचे और तिरछे तथा स्रोतों को जैसे२ विस्तारित करताहै वैसेही वैसे वह बढ़ताहै ॥ २४३ ॥

दृष्टिरोमकूपानामवृद्धिमाह ॥

दृष्टिश्चरोमकूपाश्चनवर्द्धन्तेकदाचन।ध्रुवाण्येतानिमर्त्यानामितिधन्वंतरेर्मतम्॥२४४॥

दृष्टि और रोमकूपों के न बढ़नेका वर्णन ॥

दृष्टि और रोमकूपकभी नहीं बढ़तेहैं क्योंकि वह मनुष्यों के सदैव एक रूप से रहते हैं यह धन्वन्तरि जीका मतहै ॥ २४४ ॥

नखकेशानांसदावृद्धिमाह ॥

शरीरेक्षीयमाणेऽपिवर्द्धेतेद्वाविमौसदा । स्वभावंप्रकृतिंकृत्वानखकेशावितिस्थितिः ॥ प्रकृतिंकृत्वाकारणंकृत्वास्थितिर्मर्य्यादा ॥ २४५ ॥

नख और केशोंकी सदैव वृद्धिका वर्णन ॥

शरीरके क्षीणहोनेपर भी यहनख और केशदोनों स्वभावके कारणसदैव बढ़तेहैं यह मर्य्यादाहै॥२४५॥

अचेतनान्यंगान्याह ॥

चेतनानामधिष्ठानंमनोदेहश्चसेन्द्रियः । केशलोमनखाग्रांतर्मलद्रव्यगुणैर्विना ॥ २४६॥

चेतना रहित अंगोंका वर्णन ॥

मन और इन्द्रियों करके सहित देह चेतनाका स्थान है और केश- रोम, नखाग्र, भीतरका मल द्रव्य और गुण अचेतनहैं ॥ २४६ ॥

गर्भस्य वातविण्मूत्रोत्सर्गा करणे कारणमाह ॥

वातालपत्वादयोगाच्च वायोःपक्वाशयस्यच । वातमूत्रपुरीषाणि गर्भस्थोनविमुञ्चति ॥ (अयोगात् । ईषद्योगात्) ॥ २४७ ॥

*गर्भके वायु विष्टा और मूत्र के त्यागनकरनेका वर्णन ॥

वायुकी अल्पता और पक्वाशयमें गये हुये वायुके अल्पयोग होने से गर्भमें स्थित वायु मूत्र और विष्ठाको नहीं करताहै ॥ २४७ ॥

गर्भारोदने कारणमाह ॥

जरायुणामुखेच्छन्नेकण्ठेचकफवेष्टिते।वायोर्मार्गनिरोधाच्च नगर्भःरोदिति ॥२४८

गर्भके न रोनेका कारण ॥

जरायुके द्वारा मुख के ढकेरहने कफके द्वारा कण्ठ के घिरेहोने और वायुके मार्गके न होने से गर्भ का जीव नहीं रोताहे ॥ २४८ ॥

अथ गर्भवती कृत्याकृत्यानि ॥

गुर्विणीप्रथमादह्नः प्रहृष्टाभूषिताशुचिः। भवेच्छुक्लाम्बरधरा गुरुविप्रार्च्चनेरता ॥ भोज्यन्तुमधुरप्रायं स्निग्धंहृद्यन्द्रवंलघु । संस्कृतंदीपनीयन्तु नित्यमेवोपयोजयेत् ॥ गुर्विणीनतुकुर्वीत व्यायाममपतर्पणम् । व्यवायञ्चनसेवेत नकुर्यादतितर्पणम् ॥ रात्रौजागरणंशोकं यानस्यारोहणंतथा । रक्तमोक्षंवेगरोधं नकुर्य्यादुत्कटासनम् ॥ दोषाभिघातैर्गर्भिण्या योयोभागःप्रपीड्यते । ससभागःशिशोस्तस्य गर्भस्थस्यप्रपीड्यते ॥ मलिनां विकृताकारां हीनांगीन्नस्पृशेत्स्त्रियम् । नजिघ्रेदपिदुर्गन्धं नपश्येन्नयनाप्रियम् ॥ वचांसिनापिशृणुयात्कर्णयोरप्रियाणिच । नान्नंपर्य्युषितंशुष्कं भुञ्जीतक्वथितंनच ॥ चैत्यश्मशानवृक्षांश्च भावांश्चाप्ययशस्करान् । बहिर्निष्क्रमणंक्रोधं शून्यागारञ्चवर्ज्जयेत् । नोच्चैःब्रूयान्नतत्कुर्य्याद् येनगर्भोविनश्यति । तैलाभ्यंगोद्वर्तनञ्च नात्यर्थंकारयेदपि । नामृद्वास्तरणंकुर्य्या न्नात्युच्चंशयनासनम् । एतांस्तुनियमान्सर्वान् यत्नात्कुर्वीतगुर्विणी ॥ २४९ ॥

गर्भवती की कृत्य और अकृत्य ॥

गर्भवती स्त्री पहले दिनसे प्रसन्न आभूषण युक्त, पवित्र, श्वेत वस्त्रोंकी धारण करनेवाली और गुरु तथा ब्राह्मण के पूजन में रतहोवे और नित्य मधुर सचिक्कण हृदयकी रुचियोग्यतर हलका संस्कारयुक्त और अग्निका बढ़ाने वाला भोजनकरे और गर्भवती स्त्री व्यायाम, लंघन, मैथुन बहुत भोजन, रात्रि में जागरण, शोक, सवारी पर चढ़ना फस्त लेना मूत्रादि वेगोंका रोकना और उकड़ू बैठना इन सब बातों को छोड़देवे दोष और चोटलगने से गर्भिणी स्त्रीका जो २ भागपीडित होताहै वह वह भागगर्भ में स्थितहोने वाले बालक का भी पीडितहोताहै गर्भिणी स्त्री मलिन विकार युक्त चेष्टावाली और हीन अंगवाली किसी स्त्रीको न स्पर्श करे, दुर्गन्धित सूंघे नेत्रोंके अप्रिय को न देखे कानोंके अप्रिय वचनोंको न सुने,बासी औरसूखे औरक्वाथ किये हुये अन्न को न खाय और चैत्य जिन वृक्षोंपर भूतादि रहतेहैं और श्मशान वृक्ष अपयश करनेवाले कार्य्य, बाहरजाना क्रोध और शून्यघरको त्यागकरदे और जोरसे नबोले ऐसा कोई काम न करे जिस्से गर्भनष्टहोवे और बहुत तेललगाना तथा उबटन न करावे- कठोर बिछौने तथा ऊंचीशय्यापर न सोवे गर्भिणी स्त्री इन नियमों को यत्नपूर्वक करे ॥ २४९ ॥

अथ प्रसवमासानाह ॥

नवमेदशमेमासिनारीगर्भंप्रसूयते । एकादशेद्वादशेवा ततोऽन्यत्रविकारतः ॥२५०॥

प्रसव मासोंका वर्णन ॥

स्त्री नवे दशमें ग्यारहवें अथवा बारहवें महीने में संतान को उत्पन्न करतीहै इस्से भिन्न विकार युक्त जानना चाहिये ॥ २५० ॥

अथ सूतिकागृहाकृतिः ॥

अष्टहस्तायनञ्चारु चतुर्हस्तविशालकम्। प्राचीद्वारमुदग्द्वारं विदध्यात्सूतिका गृहम्॥ २५१ ॥

सूतिकागृहकी आकृतिका वर्णन ॥

आठहाथ लंबाचारहाथ चौड़ापूर्व अथवा उत्तरकी ओर द्वारवाला सुन्दर सूतिका गृहबनावे ॥२५१॥

आसन्नप्रसवायाः लक्षणमाह॥

यातेहिशिथिलेकुक्षौ मुक्तेहृदयबन्धने। सशूलेजघनेनारी विज्ञेयाप्रसवोन्मुखा ॥ आसन्नप्रसवायास्तु कटीपृष्ठस्तुसव्यथम्।भवेत्मुहुःप्रवृत्तिश्च मूत्रस्यचमलस्यच॥२५२॥

शीघ्रप्रसवहोनेवालीके लक्षण ॥

कोखके शिथिल होजाने पर हृदयबंधनके छूटजाने पर और कटिके आगेकी ओर वेदना होनेपर स्त्री शीघ्र प्रसव उत्पन्न करने वाली जाननी चाहिये शीघ्रप्रसवहोने वाली स्त्री के कटि तथा पीठ में पीड़ा और मल और मूत्रकी बारंबार प्रवृत्ति होती है ॥ २५२ ॥

अथासन्नप्रसवाया उपचारः ॥

तैलेनाभ्यक्तगात्राणां संस्नातामुष्णवारिणा। यवागूम्पाययेत्कोष्णां मात्रयाघृतसयुताम्॥ कृतोपधानेमृदुभिर्विस्तीर्णेशयनेशनैः। आभुग्नसक्थिचोत्ताना नारीतिष्ठेद्व्यथान्विता ॥ (आभुग्नसक्थि आसक्तोञ्चितोरू) ॥ २५३ ॥

शीघ्रप्रसव न होनेवाली के उपचार ॥

शरीरमें तैल लगाकर गरमजलसे स्नानकर वाके शीघ्रप्रसवहोने वाली स्त्रीको कुछ उष्ण मात्रा के अनुसार घृतसंयुक्त यवागू (छःगुनेपानीमें पकेहुये चामल) पिलावे तकिया और कोमल बिछौने से युक्त शयनपर घुटनोंको फैलाकर उतानी व्यथावाली स्त्री सोवे ॥ २५३ ॥

अथ जनयित्री ॥

चतस्रोऽशङ्कनीयाश्च स्नावनेकुशलाहिताः। वृद्धाःपरिचरेयुस्ताः सम्यक्छिन्ननखाः स्त्रियः॥ २५४ ॥

दाईयोंका वर्णन ॥

विश्वासित सन्तान उत्पन्न कराने में प्रवीण हितकी चाहने वाली वृद्ध अच्छे प्रकारसे कटे हुए नखवाली चार स्त्रियां सेवा करें ॥ २५४ ॥

अथ जनयित्रीकृत्यम्।

अपत्यमार्गेतैलेन समभ्यज्यसमन्ततः । एकातुतासुसुभगे प्रवाहस्वेतितांवदेत् ॥ अव्यथामाप्रवाहिष्ठाः प्रवाहेथाव्यथायदि। प्रवाहेथाःशनैपूर्वं प्रगाढञ्चततःपरम् ॥ ततोगाढतरेगर्भे योनिद्वारमुपागते। अपरासहितोगर्भो यावत्पततिभूतले ॥ २५५ ॥

दाइयों का काम ॥

गर्भके मार्गको तेलसे अच्छेप्रकार सब ओर चुपड़कर एकदाई हे सुभगे प्रवाह करो ऐसा कहे-व्यथारहित स्त्री प्रवाहन (गर्भके निकालनेके लिये कांखकर यत्नकरना) नकरे और व्यथाहोय तो

करे प्रथम धीरे २ करे फिर जोरसे करे फिर गर्भको योनि के द्वारपर आजानेपर जबतक नाल सहित गर्भ पृथ्वीपर नहीं गिरे तबतक बहुत जोरसे प्रवाहन करे-॥ २५५ ॥

व्यथारहितायाः प्रवाहणादेर्दोषमाह ॥

मूकंवाबधिरंकुब्जंश्वासकासक्षयान्वितम्।सूतेस्त्रस्ततनुंबालमकालेतुप्रवाहणात्॥२५६॥

इतिश्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचितेभावप्रकाशे
गर्भप्रकरणंद्वितीयम्॥ २ ॥

व्यथारहित स्त्रीके प्रवाहन करने में दोष ॥

समय के विना प्रवाहन करने से गूंगा- बहिरा कुबड़ा- श्वास खांसी तथाक्षयसे युक्त शिथिल अंगवाला बालक उत्पन्नहोता है-॥ २५६ ॥

इति श्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्र भावविरचितभावप्रकाशस्य भाषानुवादे
गर्भप्रकरणं द्वितीयम्॥ २ ॥

अथ बालस्यजन्मोत्तरविधिः ॥

अथबालेसमुत्पन्ने विदधीतविधिंततः। यथैवकुलवृद्धास्त्री व्यवहारपरम्परा ॥ १ ॥

बालक के जन्म होने के उपरान्त की विधि ॥

बालक के उत्पन्नहोने के उपरान्त कुलकी वृद्ध स्त्रियों के व्यवहार की परम्परा के अनुसार विधिकरे ॥ १ ॥

अथ प्रसूताया नियमानाह ॥

प्रसूताहितमाहारं विहारंचसमाचरेत्।व्यायाममैथुनंक्रोधं शीतसेवांविवर्जयेत् ॥ मिथ्याचारात्सूतिकायायोव्याधिरुपजायते। सकृच्छ्रसाध्योऽसाध्योवाभवेत्तत्पथ्यमाचरेत्॥ २॥

प्रसूता स्त्रीके नियम ॥

प्रसूता स्त्री हित आहार और विहार करे और व्यायाम मैथुन- क्रोध- सर्दी खाना आदि न करे विरुद्ध आहार से उसको जो व्याधि उत्पन्न होती है वह कष्ट साध्य अथवा असाध्य होती है इस्से पथ्य करना चाहिये ॥ २ ॥

प्रसूतायानियमसमयावधिमाह ॥

सर्वतःपरिशुद्धास्यात्स्निग्धपथ्याऽल्पभोजना । स्वेदाभ्यङ्गपरानित्यंभवेन्मासमतन्द्रिता ॥४ ॥ सर्वतःपरिशुद्धातुश्रवस्पृष्टदुष्टरुधिराश्रतन्द्रितासावधाना ॥ ३ ॥

प्रसूता स्त्रीके नियमों के समय की अवधि ॥

महीने भरतक बिगड़े हुये रुधिर का त्यागकरे चिकना पथ्य वा थोड़ा भोजन करे प्रतिदिन स्वेद निकालने के लिये तैल मर्दन करे और सावधान रहै ॥ ३ ॥

प्रसूतासार्द्धमासान्तेदृष्टेवापुनरार्तवे । सूतिकानामहीनास्यादितिधन्वन्तरेर्मतम् ॥ व्युपद्रवांविशुद्धाञ्चविज्ञायवरवर्णिनीम्। ऊर्ध्वंचतुर्भ्योमासेभ्योनियमंपरिहारयेत् ॥ ४ ॥

प्रसूता स्त्री डेढ़ महीनेमें अथवा फिरऋतुके होनेतक सूतिकापने से रहित होजाती है यहधन्वन्तरिजी का मतहै उपद्रवोंसे रहित और शुद्ध शरीरवाली जानकर चारमहीने के उपरान्त प्रसूता स्त्री कोनियमोंका त्यागकरावे ॥ ४ ॥

अथस्तन्यस्वरूपमाह ॥

रसप्रसादोमधुरःपक्वाहारनिमित्तजः । कृत्स्नादेहात्स्तनौप्राप्तःस्तन्यमित्यभिधीयते रसप्रसादोरसस्यसारः ॥ ५ ॥ दुग्धका स्वरूप ॥

रसका उत्तम भाग परिपाक को प्राप्तहुए आहार से उत्पन्नहुआ मधुरताको प्राप्त संपूर्ण देह से स्तनोंमें प्राप्तहुआ स्तन्य अर्थात् दुग्ध कहलाता है ॥ ५ ॥

स्तन्यस्यप्रवृत्तिमाह ॥

स्तन्यंत्रिरात्रात्स्त्रीणांवाचतूरात्रादनन्तरम् प्रवर्त्तयन्तिविवृत्ताधमन्योहृदयेस्थिताः ॥ ६ ॥

दुग्धका निकलना ॥

हृदयमें स्थितफैलीहुई धमनी तीन अथवा चार रात्रिके उपरान्त स्त्रियोंके दूधको निकालतीहैं ॥ ६ ॥

अथस्तन्यप्रवृत्तिमाह ॥

प्रय पुत्रस्यसंस्पर्शाद्दर्शनात्स्पर्शनादपि । ग्रहणादप्युरोजस्यशुक्रवत्संप्रवर्त्तते ॥ स्नेहोनिरन्तरस्तस्यप्रवाहेहेतुरुच्यते ॥ ७ ॥

दुग्धकी प्रवृत्ति ॥

दूधपुत्रके स्पर्श करने से देखने से स्मरण करने से और ग्रहण करने सेभी वीर्य्य के समान स्तनों से प्रवृत्तहोताहै इस्से निरन्तर स्नेहही दुग्धके प्रवाहमें कारण होताहै ॥ ७ ॥

अथस्तन्यस्याल्पतेहेतुमाह ॥

अवात्सल्याद्भयाच्छोकात्क्रोधाद्लंघनतर्पणात् । स्त्रीणांस्तन्यंभवेत्स्वल्पंगर्भान्तरविधारणात् ॥ ८ ॥ दुग्धकेथोड़ेहोनेका कारण ॥

स्नेहका न होना- भय शोक क्रोध लंघन और दूसरे गर्भके धारण करने से स्त्रियोंका दूध थोड़ा होजाता है ॥ ८ ॥

अथस्तन्यस्यवृद्धिहेतुमाह ॥

शालिषष्ठीकगोधूमान्मांसक्षुद्रयवानपि । कालशाकमलाबूञ्चनारिकेरंकसेरुकम् ॥ शृङ्गाटकंवरींचापिविदारीकन्दमेवच । लशुनंदुग्धवृद्ध्यै स्त्रीसेवेतसुमनाभवेत् ॥ कमलस्यतण्डुलानांकल्कंयाक्षीरेपेषितम्पिबति । साभवतिभृशंतरुणीक्षीरभरेणैवतुङ्गकुचयुगला ॥ कलमोधान्यविशेषस्तस्यलक्षणमाह । कलमःकलिविख्यातोजायतेसत्हृद्वने । काश्मीरदेशएवोक्तोमहातण्डुलसंज्ञकः ॥ विदारिकन्दस्यरसंपिबेत्स्तन्यस्यवृद्धये । तच्चूर्णंतरयवृद्ध्यर्थंपिबेद्वाक्षीरसंयुतम् ॥ ६ ॥

दुग्धकीवृद्धिका कारण ॥

शालि- साठीके चावल- गेंहू- मांस- छोटी मछली- नारीकासाग- लौकी- नारियल- कसेरू- सिंघा-

दा-सतावर- विदारी कन्द-लहसन- इनवस्तुओंको सती दूध बढ़ने के लिये प्रसन्नचित्तहोकर सेवन करेजो स्त्री कलमके चावलोंको दूधके साथ पीसकर पीती है वहदूधके भारसे उन्नत दोनों स्तनवाली होती है कलम धान्य विशेषको कहतेहैं उसका यह लक्षणहै कि कलम कलिनामसे विख्यात बहुत जलमें उत्पन्न होताहै वही कश्मीर देशमें महातंडुल नामसे विख्यातहै- दूधके बढ़ने के लिये विदारी कन्दकारस अथवा दूधसमेत उसका चूर्ण पिये ॥ ९ ॥

अथस्तन्यस्यदुष्टहेतुमाह ॥

धात्र्यागुरुभिराहारैर्विहारैर्दोषलैस्तथा । देहेदोषाः प्रकुप्यंतिततःस्तन्यंप्रदुष्यति मिथ्याहारविहारिण्यादुष्टावातादयःस्त्रियाःदूषयंतिपयस्तेनशरीरेव्याधयःशिशोः॥१०॥

दूधकेदुष्ट होनेकाकारण ॥

धायके गरिष्ठ और दोषयुक्त आहार विहारोंसे देहमें कोपको प्राप्तहुए दोष दूधको बिगाड़ते हैं- विरुद्ध आहार विहार करने वाली स्त्री के वात आदिक बिगड़कर दूधको बिगाड़ते हैं इससे बालक के शरीरमें रोगउत्पन्न होते हैं ॥ १० ॥

अथदुष्टस्तन्यस्यलक्षणमाह ॥

कषायंसलिलप्लाविस्तन्यंमारुतदूषितम् । पित्तादम्लञ्चकटुकंराज्योऽम्भसितुपीतिका ॥ कफदुष्टंतुयत्तोयेनिमज्जतिचपिच्छिलम् । द्वंद्वजंतुद्विलिंगंस्यात्त्रिलिंगंसान्निपातिकम् ॥ ११ ॥

बिगड़ेहुए दूधके लक्षण ॥

वायुसे बिगड़ा हुआदूधकसैला और पानीमें तिरने वाला- पित्त से बिगड़ा हुआ खट्टाकडुआ औरपानीमें डालनेसे पीली रेखावाला और कफसे बिगड़ाहुआ दूध चिकना और पानीमें डालने से डूबनेवाला होताहै और दो दोषोंसे बिगड़ा हुआ दोनोंके लक्षणोंसे युक्त और तीनों दोषोंसे बिगड़ा हुआ तीनों लक्षणोंवाला होताहै ॥ ११ ॥

अथदुष्टस्तन्यस्यशोधनविधिमाह ॥

धात्रीक्षीरविशुद्ध्यर्थंमुद्गयूषरसाशिनी। भार्गीदारुवचादिष्ट्वापिबेत्सातिविषास्तथा॥ पाठामूर्वाब्दभूनिम्बदेवदारुशुण्ठीकलिंगकैः । सारिवा मत्स्यपित्ताख्यैः क्वाथःस्तन्यविशोधनः ॥ मत्स्यपित्ताकटुकी॥पटोलनिम्बासनदारुपाठा मूर्वागुडूचीकटुरोहिणीच । सनागरश्चक्वथितश्चतोयेधात्रीपिबेत्स्तन्यविशुद्धिहेतोः ॥ १२ ॥

बिगड़े हुए दूधके शोधनकी विधि ॥

धाय दूधके शुद्ध करने के लिये भारंगी- देवदारु-वच और अतीस को पीसकर पिये और मूंग का पानी अथवा मांसका रस पिये और पाठा (पाढ़र) चिनार- नागरमोथा- चिरायता- देवदारु सोंठ- इन्द्रजौ- सारिवा (अनन्तमूल) और कुटकी इन सबका क्वाथदूध का शुद्ध करने वाला होता है परवल- नींब-पीतशालि- देवदारु- पाढ़र- चिनार गिलोय- कुटकी और सोंठ इनके क्वाथ को धाय दूधके शुद्ध करने के निमित्त पिये ॥ १२ ॥

अथशुद्धस्यलक्षणमाह ॥

नीरेस्तन्यंयदेकीस्यादविवर्णमतन्तुमत्। पाण्डुरंतनुशीतञ्चतद्दुग्धंशुद्धमादिशेत्॥ १३॥

शुद्धदूधके लक्षण ॥

जो दूध पानी में छोड़ने से मिलजाय कहेहुए वातादिविकारों से रहितहो जिसमें रेखा न पड़तीहो श्वेत वर्ण पतला और शीतल हो वहदूध शुद्ध जानना चाहिये ॥ १३ ॥

धात्रीलक्षणमाह ॥

पीतायदिवालस्यविदध्यादुपमातरम् । सुविचार्य्यगुणान्दोषान्कुर्य्याद्धात्रींतदेदृशीम् ॥ सवर्णांमध्यवयसां सच्छीलांमुदितांसदा। शुद्धदुग्धाम्बहु क्षीरांसवत्सामतिवत्सलाम्। स्वाधीनामल्पसन्तुष्टांकुलीनांसज्जनात्मजाम् ॥ कैतवेनापरित्यक्तां निजपुत्रदृशंशिशौ ॥१४॥

धाय के लक्षण ॥

जो बालक के दूध पिलाने के लिये धायरक्खे तो गुणदोषों को विचार करके इस प्रकार की रक्खे कि अपनी जातिकी, मध्य अवस्था वाली, अच्छेस्वभाववाली, सदैव प्रसन्न, शुद्ध और बहुत दूधवाली, सन्तान युक्त, बहुत प्रेम करनेवाली, अपने आधीन, थोड़ेमें सन्तोष करने वाली, कुलीन, सज्जन की कन्या, कपट रहित और बालक को अपने पुत्रके समान जानने वाली ऐसी स्त्रीको धाय बनावे ॥ १४ ॥

अथनिषिद्धांधात्रीमाह ॥

शोकाकुलाक्षुधार्त्ताच श्रान्ताव्याधिमतीसदा। अत्युच्चानितरांनीचास्थूलातीवभृशंकृशा॥ गर्भिणीजरिणीचापिलम्बोन्नतपयोधरा। अजीर्णभोजिनीचापि, तथापथ्यविवर्जिता ॥ आसक्ताक्षुद्रकार्य्येतु दुःखार्त्ताचञ्चलापिच । एतासांस्तन्यपानेन शिशुर्भवतिसामयः ॥ १५ ॥

निषिद्ध धाय के लक्षण ॥

शोकसेव्याकुल, भूखी, थकीहुई, सदैवरोगिणी, बहुत बड़ी या बहुत छोटी, बहुत मोटी या दुबली, गर्भिणी, ज्वरयुक्त, लंबे और ऊंचे स्तनवाली, अजीर्ण में भोजन करनेवाली, पथ्य रहित, क्षुद्रकाम करनेवाली, दुःखित और चंचल ऐसी स्त्रियोंके दूधपीनेसे बालक रोगी होजाताहै ॥१५॥

अथबालस्यस्तन्यपानविधिः ॥

तत्रमाताप्रशस्तांगी चारुवस्त्रापुरोमुखी । उपविश्यासनेसम्यग्दक्षिणंस्तनमम्बुना॥ प्रक्षाल्येषत्परिस्राव्य मन्त्राभ्यामभिमन्त्रितम् । उदङ्मुखंशिशुंक्रोडेशनैःसन्धार्य पाययेत् ॥ मातेत्युपलक्षणम् धात्रीच ॥ १६ ॥ ईषत्परिस्राव्य ॥

बालक के दूध पिलाने की विधि ॥

सुन्दर अंगवाली बालककी माता अथवा धाय सुन्दर वस्त्रोंको पहनकर पूर्वाभि मुख आसन पर

बैठकर दक्षिणस्तनको जल से धोकर कुछ दूध निचोड़कर और मंत्रोंसे अभि मंत्रित करके उत्तरकी ओरमुख वाले बालकको गोदी में धीरेसे लुटाकर दूध पिलावे ॥ १६ ॥

अन्यथावैगुण्यमाह। सुश्रुतः। अस्त्रावितस्तनंबालः पिबन्स्तन्येनभूयसा। पूर्णस्रोत वमीकासश्वासै र्भवतिपीड़ितः ॥ १७ ॥

विनानिचोड़े दूधपिलाने का दोषसुश्रुतजी लिखतेहैं ॥

विनानिचोड़े हुए स्तनको पीने वाला बालक बहुत दूधसे गलेकी नाड़ीके पूर्ण होजाने के कारण छर्दि खांसी और श्वास से पीड़ित होताहै ॥ १७ ॥

अभिमंत्रणमाह ॥

क्षीरनीरनिधिस्तेतुस्तनयोःक्षीरपूरकः। सदेवशुभगोबालो भवत्येषमहाबलः ॥ पयोऽमृतसमन्पीत्वाकुमारस्तेशुभानने। दीर्घमायुरवाप्नोतिदेवाःप्राप्यामृतंयथा ॥ मन्त्रौ चपित्रान्येनब्राह्मणेनपठनीयौ यावन्मन्त्रपाठस्तावन्मात्रा धात्र्यादक्षिणहस्तेनस्पर्शः कार्य्यः ॥ १८ ॥ अभिमंत्रण ॥

हे सुन्दर नेत्रवाली क्षीर समुद्र और जल समुद्र तुम्हारे स्तनोंको दूधसे पूर्ण करे यहबालक सदैव सुन्दर और महाबलवान्हो जैसे देवतालोग अमृतको पीकर अमरहुएहैं उसी प्रकार अमृत के समान तुम्हारे दूधको पीकर यह बालक दीर्घायुहोवे इनमंत्रोंको पिता या अन्य कोई ब्राह्मण पढ़े जब तक मंत्र पढ़ाजाय तबतक माता अथवा धाय दक्षिण हाथ से दक्षिणस्तनको पकड़ेरहे ॥ १८ ॥

अथजनन्याःक्षीराभावेधात्र्याश्चालाभेप्रकारमाह ॥

क्षीरसात्म्यतयाक्षीरमाजङ्गव्यमथापिवा। दद्यादास्तन्यपर्य्याप्तेर्बालेभ्योवीक्ष्यमात्रया॥ क्षीरसात्म्यतयेतियतः शिशोः क्षीरमेवासात्म्यम्भवति नत्वन्नादिकम्। स्तन्यपर्य्याप्तेरितियावत्स्त्रियाःस्तन्यस्यसन्ततौ भावेनप्राप्तिर्भवति ॥ अथयावत्स्तन्यपानस्य योग्यतातावदित्यर्थः ॥ १९ ॥

माताके दूध न होने में और धायकेन मिलने में उपाय ॥

माता अथवा धायके दूध न मिलने पर जबतक स्त्री के दूधहो आवे अथवाजबतक दूधपीने के लायकहो तबतक बकरी अथवा गौका दूधही मात्राके अनुसार बालक को पिलावे क्योंकि बालक को दूधही सात्म्यहोताहै न कि अन्नादिक ॥ १९ ॥

अथबालस्यान्नप्राशनसमयः ॥

यथोक्तविधिनाबालंमासिषष्ठेऽष्टमेऽपिच। अन्नंसम्प्राशयेत्किञ्चित्ततस्तद्वर्द्धयेत्क्रमात् ॥ २० ॥ बालक के अन्न प्राशनका समय ॥

छठे अथवा आठवें महीने में बालक को कुछ अन्न चटावे फिर क्रमर से बढ़ावे ॥ २० ॥

अथबालस्य परिचर्य्याविधिः ॥

बालमङ्कसुखन्दद्यान्नचैनन्तर्ज्जयेत् क्वचित्। सहसाबोधयेन्नैवनायोग्यमुपवेशयेत् ॥ अयोग्यंउपवेशनासमर्थमाकम्प्यस्थापयेत्क्रोडेनक्षिप्रंशयनेक्षिपेत्। रोदयेन्नकचित्कार्य्ये

विधिमावश्यकंविना ॥ आवश्यकोविधिः भेषजदानतैलाभ्यंगोद्वर्त्तनादिभिः तच्चित्तमनु वर्त्ततंसदैवानुमोदयेत् ॥ निम्नोच्चस्थानतश्चापिरक्षेद्वालं प्रयत्नतः ॥ २१ ॥

बालक की परिचर्य्याकी विधि ॥

बालकको सुख पूर्वक गोदी में रखकर सुखी करे और कभी ललकारे नहीं एकी एका नजगावे बैठनेकी सामर्थ्य विना कभी न बैठावे खैंचकर गोदीमें न बैठावे जल्दीसे बिछौने पर न डालदे आवश्यकविधि (औषधिदेना तेललगाना आदि)के विना कभी नरुलावे उसके चित्तके अनुकूल कामकरे सदैव उसको प्रसन्न रक्खे और नीचे ऊंचे स्थानसे बालककी यत्नपूर्व्वक रक्षाकरे ॥ २१ ॥

बालस्य स्वभावाद्धितान्याह ॥

अभ्यंगोद्वर्त्तनंस्नानंनेत्रयोरञ्जनन्तथा । वसनंमृदुयत्तच्चतथामृद्वनुलेपनम् ॥ जन्म प्रभृतिपथ्यानिबालस्यैतानिसर्व्वथा ॥ २२ ॥

बालककी स्वाभाविक हितकारी वस्तु ॥

तेल लगाना उबटन स्नान नेत्रोंमें अंजन कोमल वस्त्र और कोमललेप यहसब बालकको जन्म सेही लेकर हितकारीहैं ॥ २२ ॥

बालस्यकवलादेः समयमाह ॥

कवलःपञ्चमाद्वर्षादष्टमान्नस्यकर्मच । विरेकःषोड़शाद्वर्षाद्विंशतेश्चैवमैथुनम् २३ ॥

बालकको ग्रास आदि देनेका समय ॥

बालक को पांचवें वर्षसे ग्रास आठवें से हुलास सोलहवेंसे विरेचन और बीसवें वर्षसे मैथुन उचित है ॥ २३ ॥

बालादेरवधिमाह सुश्रुतः ॥

वयस्तुत्रिविधम्बाल्यं मध्यमंवार्द्धकन्तथा । ऊनषोड़शवर्षस्तु नरोबालोनिगद्यते ॥ त्रिविधःसोऽपिदुग्धाशी दुग्धान्नाशीतथान्नभुक् । दुग्धाशीवर्षपर्य्यन्तं दुग्धान्नाशीशरद्द्वयम् ॥ तदुत्तरंस्यादन्नाशी एवंबालस्त्रिधामतः ॥ २४ ॥

सुश्रुतकी कहीहुई बाल्यावस्था आदिकी अवधि ॥

तीनप्रकारकी अवस्था होतीहैं बाल्य मध्यम और वृद्धता सोलह वर्षसे कमका बालक कहावता है वह तीनप्रकारका होताहै दूध पीनेवाला दूध और अन्न खानेवाला और केवल अन्न खानेवाला एक वर्षतक दूध पीनेवाला दो वर्षतक दूध और अन्न खानेवाला इसके उपरांत सुन्दर अन्न खाने वाला यह तीनप्रकारके बालक होते हैं ॥ २४ ॥

मध्ये षोड़शसप्तत्योर्मध्यमःकथितोबुधैः । चतुर्द्धामध्यमस्त्वृद्धियुवापूर्णक्षयान्वितः ॥ भवेदाविंशतिंवृद्धिः युवात्रिंशतोमतः । चत्वारिंशत्समायावत्तिष्ठेद्धात्र्यादिपूरितः ॥ ततः क्रमेणक्षीणःस्या द्यावद्भवतिसप्ततिः ॥ वीर्य्यादित्यादि शब्देन रसादि सर्व्वधात्विन्द्रिय बलोत्साहा उच्यन्ते । क्षीणःसर्व्वधात्विन्द्रियबलोत्साहैर्हीनः ॥ ततस्तुसप्ततेरूर्ध्वं क्षीणधातुरसादिकः । क्षीयमाणेन्द्रियबलः क्षीणरेतादिनेदिने ॥ वलोपलितखालित्ययुक्तः कर्मसुचाक्षमः । कासश्वासादिभिःक्लिष्टो वृद्धोभवतिमानवः ॥ २५ ॥

सोलह और सत्तर वर्षके बीचमें मध्यम कहलाताहै वह चारप्रकारका होताहै वृद्धि युवा पूर्ण और क्षययुक्त बीसवर्षतक वृद्धि होती है बत्तीस वर्षतक युवा रहताहै चालीस वर्षतक वीर्य्यादिकों से पूर्ण रहताहै फिर क्रमसे सम्पूर्ण धातु इन्द्री बल और उत्साहसे सत्तर वर्ष पर्य्यन्त क्षीण होताहै और सत्तर वर्षके उपरांत क्षीण हुए धातु और रसवाला क्षीण इन्द्री और बलवाला प्रति दिन क्षीण हुए वीर्य्यवाला झुर्री बालोंका पकना खालित्य (बांयटे आदि) से युक्त कार्य्यों में असमर्थ खांसी और श्वासादिकोंसे पीड़ित मनुष्य वृद्धकहलाताहै ॥ २५ ॥

वाल्येविवर्द्धतेश्लेष्मा पित्तंस्यान्मध्यमेऽधिकम् । वार्द्धकेवर्द्धतेवायुर्विचार्य्यैं तदुपक्रमेत् ॥ उपक्रमेत् चिकित्सेत् तंत्रांतरेतु । वाल्यंवृद्धिश्छविर्मेधा त्वग्दृष्टिःशुक्रविक्रमौ ॥ वुद्धिःकर्मेन्द्रियञ्चेतो जीवितन्दशतोह्रसेत् ॥ २६ ॥

बाल्यावस्थामें श्लेष्मा बढताहै मध्यममें पित्त अधिक होताहै और वृद्धावस्थामें वायु बढतीहै ऐसा विचारकर चिकित्सा करे शास्त्रान्तरमें कहा हुआ है कि बाल्य वृद्धि छवि मेधा त्वचा दृष्टि वीर्य्य बल बुद्धि कर्मेन्द्री चित्त और जीव यह जन्मसे लेकर क्रमसे दश२वर्ष में घटतेजातेहैं ॥ २६ ॥

अथ प्रकृतिलक्षणानि ।

सप्तप्रकृतयोनॄणांवातात्पित्तात्कफात्तथा । संसर्गात्सन्निपाताच्च भवन्तिभिषजाम्मते ॥ शुक्रशोणितसंयोगे योदोषस्तूत्कटोभवेत् । प्रकृतिर्जायतेतेन तस्यालक्षणमुच्यते ॥ २७ ॥

प्रकृतियोंके लक्षण ॥

मनुष्योंकी सात प्रकृति होतीहैं वातसे पित्तसे कफसे तीनोंके अलग२संसर्गसे और तीनोंके मिलनेसे वीर्य्य और रजके संयोगके समय जौनसा दोष अधिक होताहै उसीसे प्रकृति होतीहै उसका लक्षण कहतेहैं ॥ २७ ॥

वाग्भटेत्वात्रेयादयः । शुक्रासृग्गर्भिणीभोज्य चेष्टागर्भाशयान्तरे । नःस्याद्दोषोऽधिकस्तेन प्रकृति सर्व्वथोदिता ॥ सोऽपिदोषः स्वभावावस्थितो नतुदुष्टः दुष्टेनतु शुक्रशोणितयोर्दुष्टाशुद्धगर्भसम्भवात् ॥ २८ ॥

वाग्भटमें आत्रेयादिकोंने कहाहै कि वीर्य्य और रजमें तथा गर्भिणीके आहार विहारके द्वारा गर्भाशयमें जिस दोषकी अधिकता होतीहै उसीके अनुसार सात प्रकारकी प्रकृति होती है वह दोष भी स्वाभाविक लियाजाताहै नाकि विकार युक्त क्योंकि विकारको प्राप्तहुए से तो बिगडे हुए वीर्य्य और रजसे गर्भका होनाही असंभवहै ॥ २८ ॥

जागरूकोऽल्पकेशश्च स्फुटितांघ्रिकरःकृशः । शीघ्रगोवहुवाग्रूक्षः स्वप्नेवियतिगच्छति ॥ एवंविधःसविज्ञेयो वातप्रकृतिकोनरः ॥ २९ ॥

वातप्रकृतिके लक्षण ॥

बहुत जागने वाला- थोडे बालवाला- फटेहुए हाथपैर वाला-दुर्बल शीघ्रगामी बहुत बोलनेवाला रूखा और स्वप्नमें आकाशमें चलने वालामनुष्य वातप्रकृति वालाहोताहै ॥ २९ ॥

पित्तप्रकृतिकोलोको यादृशोऽथनिगद्यते । अकालपलितोगौरः क्रोधीस्वेदीचबुद्धिमान् ॥ वहुभुक्ताघ्रनेत्रश्च स्वप्नेज्योतींषिपश्यति । एवंविधोभवेद्यस्तु पित्तप्रकृतिको नरः ॥ ३० ॥

पित्तप्रकृतिके लक्षण ॥

विना समयके श्वेतवाल वाला गौरवर्ण- क्रोधी बहुतपसीने वाला- बुद्धिमान्- बहुत भोजन करने वाला और स्वप्नमें तेजोंका देखने वालामनुष्य पित्तप्रकृति वाला होता है ॥ ३० ॥

श्यामकेशःक्षमीस्थूलो बहुवीर्य्योमहाबलः । स्वप्नेजलाशयालोकी श्लेष्मप्रकृतिको नरः॥दृश्यतेप्रकृतौयत्र रूपंदोषद्वयस्यतु॥द्विसंसर्गेणजानीयात्सर्व्वलिंगैस्त्रिदोषजम् ३१॥

कफप्रकृतिके लक्षण ॥

श्याम केशवाला-क्षमाकरने वाला स्थूल- बहुत वीर्य्य वाला- महाबलवान् और स्वप्नमें जलाशयोंका देखने वाला मनुष्यकफ प्रकृति होताहै-जिस प्रकृतिमें दोदोषोंका रूपदिखाईदे वह संसर्गज और जिसमें सबके चिह्न दिखाई देवेंवह त्रिदोषजजानना चाहिये ॥ ३१ ॥

वाग्भटेतु । विभुत्वादाशुकारित्वाद्बलित्वादल्पकोपनात्। स्वातन्त्र्याद्बहुरोगत्वाद्दोषाणांप्रबलोनलः ॥ ३२ ॥

वाग्भटमें तो ऐसा कहाहै कि सर्वव्यापक होना शीघ्रकारी होना बलवान्होना कोपकमकरना स्वतन्त्रता और बहुत रोगोंको उत्पन्नकरना इनगुणोंसे वायु सबदोषोंमें प्रबलहै ॥ ३२ ॥

प्रायस्तएव पवनाध्युषिता मनुष्याः दोषात्मकाः स्फुटितधूसर केशगात्राः ॥ शीतद्विषश्चलधृति स्मृतिबुद्धिचेष्टाः । सौहार्द्दृष्टिगतयोऽतिबहुप्रलापाः ॥ अल्पपित्तकफजीवितनिद्रासन्नशक्तबहुजर्ज्जरवाचः । नास्तिकाबहुभुजःसविलासा गीतहास्यमृगयाकेलिसुलोलाः ॥ मधुराम्लकटूष्ण सात्म्यकांक्षा कृशदीर्घाकृतयः सशब्दयाना नदृढा न जितेन्द्रिया नवीर्य्याः नच कान्तादयितावहु प्रजावा ॥ अंगानि चैवंखरधूसराणि वृत्तान्य चारुणि मृतोपमानि। उन्मीलितानीव भवन्तिसुप्ते शैलद्रुमान्ते गगनेप्रयाति॥ अधन्यामत्स राध्मानास्तेनाः प्रोद्धत पिण्डिकाः ॥ स्वप्नेशृगालोष्ट्र गृध्राखु काकोलूकाश्च वातिकाः ॥ ३३ ॥

वाग्भटमें कहेहुए वात प्रकृतिके लक्षण ॥

वात प्रकृति मनुष्य प्रायः दोषयुक्त होतेहैं फटे गात्रवाले धूसर केशवाले शीतसे द्वेष करनेवाले चंचल धैर्य्य स्मृति बुद्धि और चेष्टावाले मित्रतामें दुष्टता करनेवाले बहुत बोलनेवाले थोड़े पित्त कफ जीवन और निद्रासे युक्त बहुत जर्जरवाणी वाले नास्तिक बहुत भोजन करनेवाले विलास से युक्त गाने हंसने और शिकार खेलनेमें तत्पर मधुर अम्लकटु और उष्ण भोजनके अभ्यासमें रुचि रखने वाले दुर्बल और लम्बे आकार वाले शब्द सहित गमन करनेवाले दृढ़तासे रहित इन्द्रियों के नहीं जीतनेवाले हीन वीर्य्य स्त्रियोंके अप्रिय बहुत सन्तानोंसे रहित रूखे धूसर गोल सुन्दरता रहित और मृतकोंके समान नेत्रवाले सोनेमें खुलेसे नेत्रवाले स्वप्नमें पर्वत वृक्ष तथा आकाशमें जाने

वाले यशरहित ईर्षायुक्त चोर और उठी हुई पिंडली वाले वात प्रकृति होतेहैं कुत्ता शृगाल ऊंटगृध्र मूसा काग और उलूक यहभी वात प्रकृति होतेहैं ॥ ३३ ॥

पित्तंवह्निर्वह्निजंवाचेत्त दस्मात् पित्तोद्रिक्तस्तीव्रतृष्णाबुभुक्षुः ॥ गौरोष्णांगस्ताम्रह. स्तांघ्रियुग्मः शूरोमानी पिंगकेशोऽल्परोमा ॥ दयितमाल्यविलेपन मण्डनः सुरचितः शुचिराश्रितवत्सलः । विभवसाहसबुद्धिबलान्वितो भवति भीष्मगतिर्द्विषतामपि ॥ मेधावी प्रशिथिलित सन्धिबन्धमांसो । नारीणा मनभिमतोऽल्प शुक्रकामः ॥ आवास श्चलित तरंगनीरकेषु । भुंक्तेऽन्नं मधुरकषायतिक्त शीतम् ॥ धर्मद्वेषी स्वेदनः पूतिगन्धि र्भूर्य्युच्चार क्रोधपानाशनेर्ष्यः । सुप्तःपश्येत् कर्णिकारान् पलाशान् दिग्दाहोल्का विद्युदर्कानलांश्च ॥ तनूनिपिंगानि चलानिचैषां तन्वल्प पक्ष्माणि हिमप्रियाणि । क्रोधेन मद्येनरवेश्च भासा रागं व्रजन्त्याशु विलोचनानि ॥ मध्यायुषोमध्यबलाःपण्डिताःक्लेश भीरवः । व्याघ्राखुकपिमार्जारयक्षालूताश्चपैत्तिकाः ॥ ३४ ॥

पित्त प्रकृतिके लक्षण ॥

पित्त अग्नि स्वरूप और अग्निसे उत्पन्न हुआहै इससे पित्त प्रकृतिवाला पुरुष तीव्र तृषा और क्षुधावाला गौर वर्ण उष्ण अंग लाल हाथ पैर और नेत्र वाला शूर अभिमानी पिंगलकेश और थोड़े रोम वाला प्रिय पुष्पादिकोंकी माला और सुगन्धादि द्रव्योंके लेपोंसे आभूषित सत् चरित्र पवित्र आश्रितोंका प्रति पालक ऐश्वर्य्य साहस बुद्धि और बल करके युक्त शत्रुओंका भी भयमें रक्षाकरने वाला बुद्धिमान् शिथिल सन्धि बन्धन और मांस वाला स्त्रियोंको अप्रिय थोड़े वीर्य्य और कामदेव वाला चंचल तरंगवाले जलमें वास करनेवाला मधुर कषैलातिक्त और शीतल भोजन करनेवाला धर्मद्वेषी बहुत पसीने वाला शरीरमें दुर्गन्धि युक्त मल क्रोध पान भोजन और ईर्षाकी अधिकतासे युक्त स्वप्नमें कनेर टेसूके फूल दिग्दाह उल्का बिजली सूर्य्य और अग्निका देखने वाला सूक्ष्म पिंगल वर्ण चंचल थोड़े पलकवाले शीतलताके चाहनेवाले क्रोध मद्य और सूर्य्यके तेजसे रक्तवर्णहोनेवाले नेत्रोंसे युक्त मध्यम अवस्था और बल वाले पंडित और क्लेशसे डरनेवाले होतेहैं व्याघ्र रीछ बन्दर बिल्ली यक्ष और भूत यह पित्त प्रकृतिहैं ॥ ३४ ॥

श्लेष्मासोमः श्लेष्मलस्तेन सौम्योगूढस्निग्ध श्लिष्टसन्ध्यास्थिमांसः । क्षुत्तृड्दुःख क्लेशधर्मैरतप्तोबुद्ध्यायुक्तः सात्विकः सत्यसन्धः ॥ प्रियंगुदूर्वा शरकाण्ड दर्भगोरोचना पद्मसुवर्ण वर्णः ॥ प्रलम्बबाहुः पृथुपीन वक्षाः महाललाटो घननील केशः ॥ मृद्वंगः समसुविभक्तः चारुदेहो बह्वोजा रतिरसयुक्तसपुत्रभृत्यः ॥ धर्मात्मा वदति न निष्ठुरं चजातु प्रच्छन्नं वहतिदृढं चिरञ्च वैरम् ॥ समदद्विरदेन्द्र तुल्यपीनो जलदाम्भोधिमृदंग शंखघोषः । स्मृतिमानभि योगवान्विनीतो नच बाल्येऽप्यति रोदनो न लोलः ॥ तिक्तंकषायंकटुकोष्णरूक्ष मल्पञ्चभुंक्तेबलवांस्तथापि ॥ रक्तान्तसुस्निग्धविशालदीर्घसुव्यक्तशुक्लासितपक्ष्मलाक्षः ॥ अल्पाहारः क्रोधपानाशनेहः प्रज्ञावित्तोदीर्घसूत्रीवदान्यः श्लक्ष्णगम्भीरः स्थूलवक्षाः क्षमावान्निद्रा लुश्चालुब्धवृत्तःकृतज्ञः ॥ ऋजुर्विपश्चितसुभगः

सलज्जोभक्तो गुरूणांस्थिर सौहृदश्च ॥ स्वप्ने सपद्मान् सविहंगमाला न्तोयाशया न्पश्यतितोयदांश्च ॥ विष्णुरुद्रेन्द्रवरुणतार्क्ष्यहंसगजाधिपैः । श्लेष्मप्रकृतयस्तुल्या स्तथासिंहाश्चगोवृषैः ॥ ३५

श्लेष्म प्रकृतिके लक्षण ॥

श्लेष्मा सोम स्वरूप होताहै इसी से कफ प्रकृति मनुष्य सौम्य होताहै उसकी सन्धि और हड्डी दिखाई नहीं देतीहैं और मांस चिकना होताहै वह क्षुधा तृषा और मानसिक तथा बाह्य दुःखोंसे संतप्त नहीं होता बुद्धिमान् सात्त्विक और सत्य बोलनेवाला होताहै कांगनी दूब शरकंडा कुश गोरोचन कमल और सुवर्णके समान वर्णवाला होताहै उसकी भुजा लम्बी छाती मोटी और चौड़ी बड़ाललाट और बाल नीले और घने होतेहैं उनका शरीर कोमलअंग सुडौल सुन्दरदेह और ओज मैथुन शक्ति रस वीर्य और पुत्र अधिक होते हैं और भृत्यभी अधिक होतेहैं वह धर्मात्मा और कभी कठोरवचन नहीं कहताहै द्वेष को चित्तमें छिपाहुआ और दृढ़ रखताहै उसका गमन मतवाले हाथी के समान और स्वर मेघ समुद्र मृदंग तथा शंखके समान गंभीर होताहै वह स्मरण शक्ति और उद्योग युक्त होकर बहुत सुशील होताहै और बाल्य अवस्था में भी बहुत रोने वाला और चंचल नहीं होता है तिक्त कषैला कटु उष्ण रूखा और थोडा भोजन करनेपर भी बलवान् रहताहै उसके नेत्र भीतर कोनेकी ओर लाल चिकने बड़े और लम्बे श्वेत और कृष्ण भाग अच्छी रीतिसे प्रकाशित और मोटे पलक वाले होतेहैं आहार क्रोध तृषा वचन और ईर्षा यह स्वल्प होते हैं दूरदर्शी दीर्घसूत्री उदार गंभीर हृदय चौड़ी छाती क्षमायुक्त अधिक निद्रालु लोभरहित कृतज्ञ सीधा पंडित सुन्दर लज्जा वान् गुरुभक्त और अचल प्रेमवाला होताहै और स्वप्नमें कमल और जलजीवों से युक्त तड़ागोंको तथा मेघों को देखताहै विष्णु रुद्र इन्द्र वरुण गरुड़ हंस ऐरावत सिंह गौ और बैल यह भी कफ प्रकृति होतेहैं ॥ ३५ ॥

ननुप्रकृतिहेतूनां मध्येयोऽधिकःसस्वव्याधीन्कथं नकरोतीत्याशङ्कामाह ॥ विषजा तोयथाकीटो नविषेनप्रबाध्यते । तद्वत्प्रकृतयोमर्त्यंशक्नुवन्तिनबाधितुम् ॥ एतौद्वौनञा वपीपदर्थंतेन विशेषेणविषजदाहादिना । ईषत्प्रबाध्यते नतुभृशं तथाचप्रकृतयःप्रकृति हेतवोदोषाःबाधितुं नशक्नुवन्तिकरचरणस्फुटितत्वंस्वेदनिद्राधिक्यादिनाईषद्बाधितुंश क्नुवन्त्येव ॥ नतुज्वरादिभिः प्रकोपोवानभावोवाक्षमोवानोपजायते । प्रकृतीनां स्वभावेन जायतेतुगतायुषः ॥ ३६ ॥

इति श्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमान्मिश्रभावविरचिते
भावप्रकाशेबालप्रकरणंतृतीयम् ॥ ३ ॥

यह सन्देह उत्पन्नहोसकाहै कि प्रकृतियोंके कारणोंमें से जो अधिक होताहै वह अपने २ रोगों को क्योंनहीं उत्पन्नकरताहै इसके उत्तरमें कहतेहैं कि जैसे विष से उत्पन्नहुआ कीट विषसे बहुत पीडित नहीं होताहै उसी प्रकार प्रकृति के कारण वातादिकभी मनुष्यको बहुत पीडित नहीं करते हैं अर्थात् हाथ पैरोंका फटना अधिक स्वेदहोना और निद्राकी अधिकता आदि से कुछ पीडिततो

करतेहैंहैं परन्तुज्वर आदि रोगोंसे अत्यन्त पीडित नहीं करतेहैं प्रकृतियोंकेद्वारा वातादिकोंका कोप नहीं होता प्रकृतियोंका भेद नहीं होता और क्षय नहीं होता और जो यह बातें होयँ तो मनुष्यको गत आयु जानना चाहिये ॥ ३६ ॥

इतिश्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचितभावप्रकाश
स्यभाषानुवादे बालप्रकरणं तृतीयम् ॥ ३ ॥

अथदेशाः ॥

भूमिदेशस्त्रिधानूपो जांगलोमिश्रलक्षणः । तत्रानूपलक्षणम् ॥ नदीपल्वलशैलाढ्यः फुल्लोत्पलकुलैर्युतः ॥ हंससारसकारण्डचक्रवाकादिसेवितः । शशवाराहमहिषरुरुरोहिकुलाकुलः ॥ प्रभूतद्रुमपुष्पाढ्यो नीलशस्यफलान्वितः । अनेकशालिकेदारकदलीक्षुविभूषितः ॥ अनूपदेशोज्ञातव्यो वातश्लेष्मामयार्त्तिमान् ॥ २ ॥

देशोंका वर्णन ॥

भूमिदेश तीनप्रकारकेहैं अनूप-जांगल और साधारण १(अनूपदेशका लक्षण) जिस देशमें नदी छोटे२ तड़ाग- पर्व्वत-प्रफुल्लित कमल, हंस, सारस, कारंड (बतक) चकवा चकवी आदि पक्षी-खरगोश, शूकर, भैंसभैंसा, रुरुमृग आदि पशु बहुत वृक्ष और पुष्प, नीलेधान फल अनेक प्रकार के चावलोंसे युक्त खेत, केला और ऊख यह सब शोभायमानहों वह अनूप देश जानना चाहिये और ऐसे देशमें वात और कफकीपीडा अधिकहोती है ॥ २ ॥

अथ जांगललक्षणम् ॥

आकाशशुभ्रउच्चश्चस्वल्पपानीयपादपः । शमीकरीरबिल्वार्कपीलुकर्कन्धुसंकुलः ॥ हरिणैणर्क्षपृषत गोकर्णखरसंकुलः ॥ सुस्वादुफलवान्देशोवातलोजांगलःस्मृतः ॥ ३ ॥

जांगलदेशके लक्षण ॥

जो देश आकाशके समान निर्मल तथा ऊंचाहो और जिसमें जलाशय और वृक्ष न्यूनहों, शमी, करील, बेल आक और बेर, यह सबवृक्ष बहुत उत्पन्नहों और जिसमें हरिण, एणनामसृग, रीछ पृ-षत (मृगविशेष) गोकर्ण (मृगभेद) और गर्दभ यह बहुतरहें वह देश अच्छे फलों से युक्त जांगल कहाताहै और देशवादी होतीहै ॥ ३ ॥

तन्त्रांतरे । बहूदकनगोऽनूपःकफमारुतरोगवान् । जांगलोऽल्पाङ्गशाखीचपित्तासृङ्मारुतोत्तरः ॥ ४ ॥

शास्त्रान्तरमें तो बहुत जल और पर्वतोंसे युक्त देश अनूप कहलाताहै इसमें कफ और वायु के रोग बहुतहोतेहैं और थोड़े जल और वृक्षवाला जांगलदेशहै इसमें पित्त रुधिर और वायुकी अधिकता होतीहै ॥ ४ ॥

साधारणलक्षणम् ॥

संसृष्टलक्षणोयस्तुदेशःसाधारणोमतः । समास्साधारणेयस्माच्छीतवर्षोष्णमारुताः॥ समतातेनदोषाणां तस्मात्साधारणोवरः ॥ ५ ॥

साधारण देशके लक्षण ॥

जिसमें अनूप और जांगल इनदोनों देशोंके लक्षण मिलें वह साधारण देशहै और उसमें शीत वर्षा गर्मी तथा वायु समहोतेहैं दोषों के समहोने के कारण साधारण देश उत्तमहै ॥ ५ ॥

(सुश्रुतात्)उचितेवर्त्तमानस्या नास्तिदुर्देशजंभयम् । आहारस्वप्नचेष्टादौ तद्देशस्य कृतेसति (वृद्धवाग्भटः)यस्यदेशस्ययोजन्तुस्तज्जन्तस्यौषधंहितम् । देशादन्यत्र वसतस्तत्तुल्यगुणमौषधम् ॥ स्वेदेशेनिचितादोषा अन्यस्मिन्कोपमागताः । बलवन्तस्तथानस्युर्जलजा स्थानजास्तथा ॥ ६ ॥

जो उचितदेशमें रहकर आहार, स्वप्न और चेष्टादिकोंमें उसी देशके अनुकूल आचरणकरे उसको दुष्टदेशका भय नहीं होताहै यह सुश्रुतमें लिखाहै वृद्धवाग्भटमें कहाहै कि जिसका जिसदेशमें जन्म और वासहो उसको उसी देशकी औषधि उपकारीहै और उसदेशको त्यागकरके दूसरे देशमें रहनेवाले को जिसदेशमें रहताहो उसी की औषधि गुणकारीहै क्योंकि जलज अथवा स्थलजदेशमें इकट्ठे हुये दोष अन्य देशमें जाकर कुपित हुये विशेष बलवान् नहीं होसके ॥ ६ ॥

अथदिनादिचर्य्या ॥

मानवोयेनविधिनास्वस्थस्तिष्ठतिसर्वदा । तमेवकारयेद्वैद्योयतःस्वास्थ्यंसदेप्सितम् दिनचर्य्यांनिशाचर्य्यां ऋतुचर्य्यांयथोदिताम् । आचरन्पुरुषःस्वस्थःसदातिष्ठति नान्यथा ॥ ७ ॥

दिनचर्य्या ॥

मनुष्य जिसप्रकार से सदैव प्रसन्नरहै वैद्यको उचितहै कि उसी रीति को करवावे क्योंकिप्रसन्नता सदैव सब को प्रियहै कही हुई विधि से दिनचर्य्या रात्रिचर्य्या और ऋतुचर्य्याको करताहुआ पुरुषस्वस्थ रहताहै अन्यथानहींरहता ॥ ७ ॥

तत्रस्वस्थस्यलक्षणमाह ॥

सुश्रुतःसमदोषः समाग्निश्चसमधातुमलक्रियः । प्रसन्नात्मेंद्रियमनाःस्वस्थ इत्यभिधीयते ॥ क्रियात्रकर्मतेनसमक्रियः । शरीरानुरूपकर्मा ॥ ८ ॥

स्वस्थका लक्षण ॥

वातादि दोष अग्निमल और रसादि धातुओंकी समताहो- शरीरके अनुसार कार्य्य में शक्तिहो आत्माइन्द्री और मन प्रसन्नहो तो स्वस्थ कहलाताहै ॥ ८ ॥

तत्रदिनचर्य्यामाह ॥

ब्राह्मेमुहूर्तेबुद्ध्येत स्वस्थोरक्षार्थमायुषः । तत्रदुःखार्त्तशान्त्यर्थंस्मरेद्धिमधुसूदनम् ॥ दध्याज्यादर्शसिद्धार्थबिल्व गोरोचनास्रजाम् । दर्शनंस्पर्शनं कार्य्यंप्रबुद्धेनशुभावहम् ॥ स्वमाननंघृतेपश्येद्यदीच्छेच्चिरजीवितम् । आयुष्यमुषसिप्रोक्तंमलादीनांविसर्जनम् ॥ तदत्रकूजनाध्मानो दरगौरववारणम् । आदिशब्देनवात मूत्रादीनांग्रहणम् ॥ आटोप शूलौपरिकर्त्तिकाच संगःपुरीषस्यतथोर्ध्ववातः । पुरीषमास्यादथवानिरेति पुरीषवेगेऽभि

हतेनरस्य ॥ परिकर्त्तिका । गुदेपरिकर्त्तनवत्पीड़ा । पुरीषस्य संगोनिरोधः । ऊर्ध्ववातः उद्गाढवाहुल्यम् ॥ वातमूत्र पुरीषाणां संगोऽध्मानं क्लमोरुजा । जठरे वातजाश्चान्ये रोगाःस्यु र्वातनिग्रहात् ॥ वस्तिमेहनयोःशूलं मूत्रकृच्छ्रंशिरोरुजा । विनामोवङ्क्षणाना हः स्याल्लिङ्गंमूत्रनिग्रहे ॥ विनामःशरीरस्य नम्रतावङ्क्षणानाहः । वंक्षणस्याकर्षण व त्पीड़ा ॥ नवेगितोऽन्यकार्यः स्यान्न वेगानीरयेद्वलात । कामशोकभयक्रोधान् मनो वेगान्विधारयेत् ॥ गुदादि मल मार्गाणां शौचं कान्तिवलप्रदम् । पवित्रकरमाख्यातं म लक्ष्मीकलिपापहृत् ॥ प्रक्षालनंमतंपाणयोः पादयो शुद्धिकारणम् । मलश्रमहरंवृष्यं च क्षुष्यंराजसापहम् ॥ ९ ॥

दिनचर्य्या ॥

स्वस्थ मनुष्य स्वस्थताकी रक्षाकेलिये ब्राह्ममुहूर्त्त में उठकर दुःखकी शांतिकेलिये मधुसूदनजी का स्मरण करे फिर दही घृत सरसों वेल-गोरोचन-इनका सुखदायी दर्शनतथास्पर्शकरे- और जो घडी आयुकी इच्छा करेतोघृत में अपने मुखको देखे- प्रातःकाल मल मूत्रादि का त्यागकरनाभी आयुका बढ़ाने वालाहै क्योंकि उससे उदरका गड़गड़ाना-अफरा औरभारीपन दूरहोताहै मलके वेग रोकनेसे मनुष्यके उदरमें गड़ २ शब्दपीड़ा गुदामें कैंचीसे काटने कीसी पीड़ा कब्ज बहुत डकारें और मुखसे मल निकलना यह सबबातें होतीहैं, वायुके रोकने से वायुमल मूत्रका निरोध उदर में अफरा ग्लानि पीड़ा और उदरमें वायुके अनेकरोग उत्पन्नहोते हैं,मूत्रका वेगरोकनेसे पेडू औरलिंगमें पीड़ा मूत्रकृच्छ्र शिरमें पीड़ा शरीरकी नम्रता और वंक्षणमें खैंचने के समान पीड़ा होती है मला-दिकों कावेग उपस्थित होने पर अन्यकार्य नकरे और वलकरके मलको निकाले नहीं परन्तुकाम शोकभय औरमनके वेगोंकोरोके गुदादि मलोंके मार्गका शौच कान्ति और वलकादेने वाला पवित्र आयुवर्द्धक और दुर्भाग्य तथा कलिके पापका नाशकरने वाला कहागयाहै, हाथ और पैरोंका धोना शुद्ध करनेवाला मल तथा श्रमका नाशक वीर्य्य वर्द्धक नेत्रोंको हितकारी और रजोगुण का नाश करनेवाला होता है ॥ ९ ॥

दन्तकाष्ठ विधिः ।

भक्षयेद्दन्तपवनं द्वादशांगुलमायतम् । कनिष्ठिकाग्रवत्स्थूलं मृज्वग्रन्थितथाऽव्रण म् ॥ एकैकंघर्षयेद्दन्तं मृदुनाकूर्चकेणतु । दन्तशोधनचूर्णेन दन्तमांसान्यवाधयन ॥ क्षौ द्रत्रिकटुकाक्तेन तैलसिन्धुभवेनवा । चूर्णेनतेजोवत्याऽच दन्तान्नित्यंविशोधयेत् ॥ तेजो वती तेजवल्कल इतिलोकेप्रसिद्धा । मधूकोमधुरेश्रेष्ठः करञ्जःकटुकेतथा ॥ निम्बस्स्या त्तिक्तकेश्रेष्ठः कषायेखदिरस्तथा । समयन्तुसमालोक्यदोषञ्च प्रकृतिंतथा ॥ यथोचितैर सैर्वीर्य्यैर्युक्तंद्रव्यंप्रयोजयेत् । तेनास्यमुखवैरस्यदन्ताजिह्वारयजागदाः ॥ रुचिर्वैशद्यलघु तानभवन्तिभवन्तिच । अर्कवीर्य्यंवटेदीप्तिः करञ्जेविजयोभवेत् ॥ प्लक्षेचैवार्थस म्पत्ति र्वदर्य्यांमधुराशनम् । खदिरेमुखसौगन्ध्यं विल्वेतुविपुलंधनम् ॥ उदुम्बरेतुवाक सिद्धि राम्रेत्वारोग्यमेवच । कदम्बेतुधृतिर्मेधा चम्पकेदृढवाकश्रुतिः ॥ शिरीषेकीर्त्ति

20468

सौभाग्यमायुरारोग्यमेवच । अपामार्गेधृतिर्मेधाप्रज्ञाशक्तिस्तथाशने ॥ दाड़िम्यांसुन्दराकारः ककुभेकुटजेतथा । जातीतगरमन्दारे दुःस्वप्नञ्चविनश्यति ॥ गुञ्जिकातालहिन्तालं केतकश्चव्रहद्दरः । खर्जूरंनारिकेरञ्च सप्तैतेतृणराजकाः ॥ तृणराजसमुत्पन्नं यःकुर्य्याद्दन्तधावनम । नरश्चाण्डालयोनिःस्या यावद्गंगान्नपश्यति ॥ नखादेदूगलतात्वोष्ठ जिह्वादन्तगदेपुतत । मुखस्यपाकेशोथेच श्वासकासवमीषुच ॥ दुर्बलोजीर्णभुक्तश्च हिक्कामूर्च्छामदान्वितः । शिरोरुजार्त्तस्तृपितःश्रान्तः पानक्लमान्वित' ॥ अर्दितःकर्णशूलीच नेत्ररोगीनवज्वरी । वर्ज्जयेद्दन्तकाष्ठन्तु हृदामययुतोऽपिच ॥ अजीर्णभुक्तःनर्जाणं भुक्तं यस्यसः । जिह्वानिर्लेखनंहेमं रजतंताम्रजंतथा ॥ पाटितंमृदुतत्काष्ठं मृदुपत्रमयंतथा । (तत्काष्ठंदन्तशोधन योग्यंकाष्ठम्) दशांगुलंमृदुस्निग्धं तेनजिह्वांलिखेत्सुखम । तज्जिह्वामलवैरस्य दुर्गन्धजड़ताहरम् ॥ गंडूपमपिकुर्वीत शीतेनपयसामुहुः । कफतृष्णामलहरं मुखांतःशुद्धिकारकम् ॥ सुखोष्णोदकगण्डूपः कफारुचिमलाप्रहः । दन्तजाड्यहरश्चापि मुखलाघवकारकः ॥ विषमूर्च्छामदार्त्तानां शोषिणांरक्तपित्तिनाम् । कुपिताक्षिमलक्षीण रूक्षाणांसनशस्यते ॥ सुखोष्णोदक गण्डूपः । मुखप्रक्षालनंशीत पयसारक्तपित्तजित् ॥ मुखस्यपीड़िकाशोप नीलिकाव्यंगनाशनम् । कुर्य्याद्वापिकदूष्णेन पयसास्यविशोधनम् ॥ कफवातहरंस्निग्धं मुखशोषविनाशनम । कटुतैलादिनस्यार्थे नित्याभ्यासेनयोजयेत् ॥ प्रातःश्लेष्मणिमध्याह्ने पित्तेसायंसमीरणे । सुगन्धवदनास्निग्ध निःस्वनाविमलेन्द्रियाः ॥ निर्वलीपलितव्यंगा भवेयुर्नस्यशीलिनः । सौवीरमञ्जनंनित्यं हितमक्ष्णोस्ततोभजेत् ॥ लोचनेभवतस्तेन मनोज्ञेसूक्ष्मदर्शने । सौवीरंश्वेत सुरमा इति लोके प्रसिद्धम् ॥ स्रोतोऽञ्जनंमतंश्रेष्ठं विशुद्धंसिन्धुसम्भवम् । दृष्टेःकण्डूमलहरं दाहक्लेदरुजापहम् ॥ अक्ष्णोरूपावहञ्चैव सहतेमारुतातपौ । नेत्ररोगानजायन्ते तस्मादञ्जनमाचरेत् ॥ श्रोतोऽञ्जनंकृष्णसुरमा इति लोके । विशुद्धंशोधनं विनापि सिंधु सम्भवम् । सिंधुनाम पर्वतः तत्रसम्भवम् ॥ रात्रौजागरितःश्रान्तः छर्दितोर्भुक्तवांस्तथा । ज्वरातुरःशिरःस्नातो नाक्ष्णोरञ्जनमाचरेत् ॥ १० ॥

दन्तधावनविधि ॥

बारह अंगुल लंबी कनिष्ठका (छगुनीउंगली) के समान मोटी कोमल ग्रन्थि दाग आदि से रहित दांतन करे- मंजन को लगाकर कोमल कूंचीसे दांतोंके मांसको पीड़ा न देताहुआ एक २ दांतरगड़े सहत और त्रिकुटा से अथवा सरसों के तेल और सेंधे नोनसे अथवा तजबल कलके चूर्ण से दांतोंको नित्य शुद्धकरे- मधुर काष्ठों में महुआ- कडुओंमें करंज- तिक्तों में नींब और कषैलों में खैर श्रेष्ठ है- समय दोष और प्रकृतिको देखकर यथायोग्य रस और वीर्य्य से युक्त काष्ठसे दंतधाव न करे इस्से मनुष्यके मुखकी विरसता- दन्त जिह्वा और मुखके अन्यरोग नहीं होतेहैं और रुचि स्वच्छता और हलकापन होताहै आकसे वीर्य्य; वटसे दीप्ति- करंजसे विजय पकरिया से अर्थ सम्पत्ति- बेर से मधुर

भोजन खैरसे मुखकी सुगन्धि-बेलसे विपुलधन गूलर से वाक सिद्धि आमसे नीरोग्य कदंबसे धैर्य्य और मेधा-चंपासे दृढ़बुद्धि- शिरससे कीर्ति सौभाग्य आयु और आरोग्य- लटजीरे से धैर्य्य- मेधा बुद्धि और उत्तम कण्ठ- अनार अर्जुन और कुटज से सुन्दर आकार और जायफल तगर तथा मंदारकी दतौन से दुस्स्वप्नका नाशहोताहै चिरमिटी- ताल- हिंताल- केतकी- वृहत्तृण- खजूर और नारियल यह सात तृणराज कहलातेहैं इनकी दतौन करने से मनुष्य जबतक गंगा जीके दर्शन न करे तबतक चांडाल रहता है गला- तालु- ओष्ठ- जिह्वा और दांतोंमें रोगवाला पकेहुए तथा सूजे मुखवाला श्वासकास और छर्दिके रोगसे युक्त दुर्बल- अजीर्ण युक्त हुचकी मूर्च्छा- तथा मदयुक्त शिरकी पीड़ा से व्याकुल-प्यासा- थका- मद्यपीने की ग्लानि से युक्त अर्द्दित रोगी कानमें शूलवाला नेत्र रोगी नवीन ज्वरवाला और हृदय के रोगसे युक्त मनुष्य दतौन न करे-सोना चांदी अथवा तांबे की या चिरेहुए कोमल दतौन के काष्ठकी वा कोमल पत्तेकी दश उंगलकी लंबी और कोमल चिकनी जीभीसे जिह्वाको शुद्धकरे इस्से जिह्वा का मल विरसता-दुर्गन्धि और जडताका नाशहोताहै शीतल जल से कफ तृषा औरमल के नाशक मुखके भीतर शुद्ध करनेवाले वारंवार कुल्लेकरे कुछ गरमजल के द्वारा कुल्ले करने से कफ अरुचि-मल तथा दांतोंकी जडताका नाश और मुखमें हलकापनहोताहै परन्तु विष मूर्च्छा मद राजयक्ष्मा रक्त पित्त नेत्ररोग कुपितमल क्षीणता और रूक्षता इनरोगोंसे युक्त मनुष्यको गरम जल से कुल्लेकरना उचित नहींहै शीतल जल के द्वारा मुख धोनेसे रक्तपित्त मुखकी पिड़िका (फुंसी) खुशकी नीलिका और व्यंगका नाशहोताहै कुछ गरमजल के द्वारा मुखधोनेसे कफ वात और मुखकी खुशकी तथा चिकनाई का नाशहोताहै प्रतिदिन कडुए तेल आदि की नासका अभ्यासकरना चाहिये प्रातःकालश्लेष्मा मध्याह्नमें पित्त और सायंकाल में वायुकी शान्ति के लिये कड़ुए तेलकी नासलेनी चाहिये नासके अभ्यासी पुरुषके मुखमें सुगन्धि होतीहै स्वर उत्तम होताहै इन्द्रियां निर्मल होतीहैं भुर्रीवालोंका पकना और व्यंग यह नहीं होतेहैं नेत्रोंका हितकारी श्वेत सुरमानित्य लगावे इस्से नेत्र सुन्दर सूक्ष्म देखनेवाले होतेहैं सिन्धु नाम पर्वतसे उत्पन्न शुद्ध कालासुरमा श्रेष्ठ कहागयाहै इसके लगाने से नेत्रोंकी खुजली मल दाह क्लेद और रोगनाश होतेहैं और नेत्रसुन्दरहोतेहैं वायु धूपको सहतेहैं और नेत्रोंमें कोई रोग नहीं उत्पन्न होताहै इससे अंजन लगाना उचितहै ज्वर से पीड़ित और शिरसे स्नान किया हुआ रात्रि में जागाहुआ- थका- वमनकरनेवाला और भोजन कियाहुआ पुरुष नेत्रों में अंजन नहीं लगावे ॥ १० ॥

पञ्चरात्रात्रखश्मश्रुकेशरोमाणिकर्त्तयेत् । केशश्मश्रुनखादीनांकर्त्तनंसम्प्रसाधनम् ॥ पौष्टिकंधनमायुष्यंशौचकान्तिकरंपरम् । सम्प्रसाधनम् शोभाजनकम् ॥ उत्पाटयेत्तु लोमानिनासाया नकदाचन । तदुत्पाटनतोदृष्टेर्दौर्बल्यंत्वरयाभवेत् ॥ केशपाशेप्रकुर्व्वीत प्रसाधन्यात्प्रसाधनम् । केशप्रसाधनंकेश्यंरजोजन्तुमलापहम् ॥ आदर्शालोकनंप्रोक्तं मांगल्यंकांतिकारकम् । पौष्टिकंबल्यमायुष्यंपापालक्ष्मीविनाशनम् ॥ लाघवंकर्मसामर्थ्यं विभक्तघनगात्रता । दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्चव्यायामादुपजायते ॥ व्यायामदृढगात्रस्य व्याधिर्नास्तिकदाचन । विरुद्धंवाविदग्धंवाभुक्तंशीघ्रंविपच्यते ॥ भवन्तिशीघ्रंनैतस्य देहेशिथिलतादयः । नचैनंसहसाक्रम्य जरासमधिरोहति ॥ नचास्तिसदृशन्तेनकि

ञ्चितत्स्थौल्यापकर्षकम् ॥ ससदागुणमोधस्वबलिनांस्निग्धभोजिनाम् ॥ वसन्ते शीतसमयेसुतरांसहितोमतः । अन्यदापिचकर्त्तव्योबलार्द्धेनतथाबलम् ॥ हृदयस्थोयदावायुर्वक्त्रंशीघ्रंप्रपद्यते । मुखञ्चशोषंलभतेतद्बलार्द्धस्यलक्षणम् ॥ किंवा ललाटेनासायांगात्रसन्धिपुकक्षयोः । यदासञ्जायतेस्वेदोबलार्द्धन्तुतदादिशेत् ॥ भुक्तवान्कृतसम्भोगः कासीश्वासःकृशःक्षयी । रक्तपित्तीक्षतीशोषीनतंकुर्य्यात्कदाचन ॥ अतिव्यायामतःकासोज्वरःछर्दिश्रमःक्लमः । तृष्णाक्षयःप्रतमकोरक्तपित्तञ्चजायते ॥ अभ्यंगंकारयेन्नित्यंसर्वेष्वंगेपुपुष्टिदम् । शिरःश्रवणपादेपुतंविशेषेणशीलयेत् ॥ सार्षपंगन्धतैलञ्चयत्तैलंपुष्पवासितम्। अन्यद्रव्ययुतंतैलंनदुष्यतिकदाचन ॥ गन्धतैलम् गन्धद्रव्याणाम् गुर्व्वादीनामग्नियोगेननिष्काशितःस्नेहः । अभ्यंगोवातकफहृच्छ्रमशान्तिबलंसुखम्। निद्रावर्णमृदुत्वायुष्कुरुतेदेहपुष्टिकृत्॥ अभ्यंगःशीलितोमूर्ध्नि सकलेन्द्रियतर्पकः। दृष्टिपुष्टिकरोहन्तिशिरोभूमिगतान्गदान् ॥ केशानांबहुतांदार्ढ्यं मृदुतांदीर्घतांतथा। कृष्णतांकुरुतेकुर्य्याच्छिरसं पूर्णतामपि ॥ नकर्णरोगान्नमलंनच मन्याहनुग्रहः। नोच्चैःश्रुतिर्नवाधिर्य्यस्यान्नित्यंकर्णपूरणात् ॥ रसाद्यैःपूरणंकर्णे भोजनात् प्राक्प्रशस्यते। तैलाद्यैःपूरणंकर्णेभास्करेऽस्तमुपागते ॥ पादाभ्यंगश्चतत्स्थैर्य्यंनिद्रा दृष्टिप्रसादकृत्। पादसुप्तिश्रमस्तम्भसङ्कोचस्फुटनप्रणुत् ॥ ११ ॥

पांचदिनमें नख डाढ़ी, केश और रोमों को कटवावे इससे शोभा पुष्टता धन आयु शौच और कान्ति होतीहै नासिका के रोम कभी न उखाड़े इससे दृष्टि बड़ी शीघ्रन्यून होजातीहै कंघीसे केशों को बढ़ावे इससे केशों की उत्तमता और धूल जुआं तथा मलका नाशहोताहै दर्पणका देखना मंगल कान्ति पुष्टि, बल आयुका बढ़ाने वाला और पाप दुर्भाग्यका नाशकरने वाला कहा गयाहै व्यायामसे हलकापन कायामें सामर्थ्य शरीरका सुडौलहोना दोषोंका नाश और जठराग्निकी वृद्धिहोती है व्यायामसे दृढ़शरीर वाले पुरुषको कोई रोग नहीं होताहै विरुद्ध और कठोर भोजन भी शीघ्रपच जाताहै शरीरमें शिथिलताआदिक शीघ्र नहीं होती. एकाएकी वृद्धावस्था नहीं दबातीहै व्यायामके सदृशस्थूलताका नाशकरने वाला दूसरा कोई उपाय नहीं है बलवान्पुरुष और चिकने भोजन करनेवालोंको व्यायाम सदैव गुण करताहै बसन्त और शीत समय में अत्यन्त हितकारी होताहै अन्य ऋतुओंमें भी अपने२ बलके अनुसार बलार्द्ध (हृदयमें स्थित वायुशीघ्र मुख में आने लगे मुख सूखने लगे अथवा मस्तक, नासिका,शरीरकी सन्धि और बगलों में स्वेद आजाय वह बलार्द्ध कहाताहै) से करे भोजन तथा मैथुन कियाहुआ दुर्बल खांसी श्वास राजयक्ष्मा रक्तपित्त. क्षत और शोष रोग से युक्तपुरुष कदापि भी व्यायाम न करे बहुत व्यायाम करनेसे खांसी, ज्वर, छर्दि, श्रम ग्लानि तृषा. क्षय. प्रतमक और रक्त पित्त उत्पन्नहोताहै सम्पूर्ण अंगोंमें पुष्टिके लिये नित्य तेल मर्दनकरावे परन्तु मस्तक कान और पैरों में विशेषकरावे सरसों का तेल अगरादि सुगन्धित वस्तुओं से अग्निके द्वारा निकालाहुआ तेल पुष्पोंसे बसाया हुआ तेल अथवा अन्य किसी हितकारी वस्तुओं से युक्त तेल कभी दोष नहीं करताहै. तेल लगाने से कफ. वायु, श्रमकानाश कान्ति, बल, सुख

निद्रा वर्ण कोमलता, आयु और शरीर की पुष्टताहोतीहै और शिरमें तेल लगानेसे सम्पूर्ण इन्द्रियोंकी तृप्ति दृष्टि पुष्टता, शिरकेरोगोंका नाश केशोंकी वृद्धि, दृढता, कोमलता दीर्घता श्यामता और शिरकी पुष्टता होतीहै प्रति दिन कानोंमें तेल छोड़ने से कानोंके रोग, मल, मन्या ('गलेके के पीछेकी नस) कास्तंभ हनुग्रह बहुत जोरसे शब्दका सुनाई देना और वधिरता नहीं होती है कानमें रसादिकों को छोड़ना भोजन से पूर्व और तेलका छोड़ना सूर्य्यास्तके उपरान्त उचित है पैरोंमें तेल लगानेसे पैरोंकी स्थिरता निद्रा और दृष्टिकी प्रकाशता होती है पैरोंकासोजाना श्रम-स्तंभ संकोच और फटना यह नहीं होतेहैं ॥ ११ ॥

व्यायामक्षुण्णवपुषंपद्भ्यांसंमर्दितंतथा। व्याधयोनोपसर्पन्तिवैनतेयमिवोरगाः॥लोमकूपशिराजालंधमनीभिःकलेवरे। तर्पयेद्बलमाधत्तेस्नेहयुक्तोऽवगाहने॥ अद्भिःसंसिक्तमूलानांतरूणाम्पल्लवादयः। वर्द्धन्तेहितथानृणांस्नेहसंसिक्तधातवः॥ १२॥

व्यायाम करने वाले और पैर मलवाने वाले पुरुषको रोग ऐसे नहीं प्राप्तहोते जैसे कि गरुड़को सर्पनहीं प्राप्तहोते हैं, शरीरमें तेलतगा स्नान करके रोमकूप, शिराजाल और धमनियोंके द्वारा शरीरको पुष्टकरने से ऐसे बल बढ़ताहै जैसे कि जलसे सिंचे हुएमूल वाले वृक्षों के पल्लवादिक बढ़ते हैं उसी प्रकार स्नेहसे सिंचीहुई मनुष्योंकी धातुभी बढ़ती हैं ॥ १२ ॥

नवज्वरीअजीर्णीचनाभ्यक्तव्यःकथञ्चन। तथाविरिक्तोवान्तश्चनिरूढोयश्चमानवः। निरूढःदत्तोनिरूहवस्तिश्चयस्मैसः। पूर्वयोःकृच्छ्रताव्याधेरसाध्यत्वमथापिवा। शेषाणांनत्विहप्रोक्तावह्निसादादयोगदाः॥ पूर्वयोःतरुणज्वरिणोऽजीर्णिनोश्च ॥ १३ ॥

नवीनज्वर और अजीर्णवाला तेल नहीं लगावे क्योंकि इससे कृच्छ्र साध्य अथवा असाध्यहो जाताहै और विरेचन वाला, वमनकरने वाला और जिसको निरूह वस्तिदीगई हो ऐसा मनुष्य भी तेलनहीं लगावे क्योंकि इससे अग्नि मन्दता आदि रोग उत्पन्न होतेहैं ॥ १३ ॥

उद्वर्त्तनङ्कफहरंमेदोघ्नंशुक्रदम्परम्। बल्यंशोणितकृच्चापित्वक्प्रसादमृदुत्वकृत्॥ मुखलेपात्दृढंचक्षुःपीनोगण्डस्तथाननम्। कान्तमव्यंगपिडकंभवेत्कमलसन्निभम्॥ दीपनंवृष्यमायुष्यंस्नानमोजोबलप्रदम्। कण्डूमलश्रमखेदतन्द्रातृड्दाहपाकनुत्॥ वाद्येश्चसेकैःशीतायैरूष्मान्तर्यातिपीड़ितः। नरस्यस्नातमात्रस्यदीप्यतेतेनपावकः॥ शीतेनपयसास्नातंरक्तपित्तप्रशांतिकृत्॥ तदेवोष्णेनतोयेनबल्यंवातकफापहम्॥ शिरःस्नानमचक्षुष्य मत्युष्णेनाम्बुनासदा॥वातश्लेष्मप्रकोपेतुहितन्तच्चप्रकीर्त्तितम्॥ १४॥

उबटन कफ और मेदका नाशक वीर्य, बल,रुधिर, त्वचाकी कोमलता और उत्तमता का करने वाला होताहै, और मुखके लेपकरने से नेत्रदृढ़होते हैं कपोल मोटे और मुख सुन्दर व्यंगपिड़िका रहित कमलके समान होताहै स्नान, अग्नि दीपक, वीर्य, आयु, ओज और बलकाबढ़ाने वालाहोकर, खुजली, मल, श्रमस्वेद, तन्द्रा, तृषा, दाह और पापका नाशकरनेवाला होताहै, शीतल जलादिकोंके सिंचनसे बाहरकी ऊष्मा दबकर शरीरके भीतर जाती है इसी ने केवलस्नानहीं मात्रके द्वारा मनुष्यकी जठराग्नि दीप्तहोती है, शीतल जलके स्नान करनेसे रक्त पित्तकी शांति होती है, उष्णजल के द्वारास्नान करने से बलकी वृद्धि और वातकफका नाशहोताहै, बहुतगरम

जलके द्वारा शिरसे स्नानकरना नेत्रोंको अहितहै परन्तु वात पित्तके कोपमें हितकहागयाहै ॥ १४ ॥

अशीतेनाम्भसास्नानंपयःपानन्नवास्त्रियः । एतद्वोमानवाःपथ्यं स्निग्धमल्पञ्च भोजनम् ॥ १५ ॥

हेमनुष्य गण मन्दोष्ण जल से स्नान दुग्धपान नवीन स्त्री स्निग्धस्वल्प भोजन यह तुम्हारा पथ्यहै ॥ १५ ॥

हरिश्चंद्रस्यैतत् ॥

यःसदामलकैस्नानंकरोतिसविनिश्चितम् । वलीपलितनिर्मुक्तोजीवेद्वर्षशतन्नरः ॥ स्नानंज्वरेऽतिसारेचनेत्रकर्णानिलार्तिषु॥आध्मानपीनसाजीर्णभुक्तवत्सुचगर्हितम्॥ स्नानस्यानन्तरंसम्यग्वस्त्रेणांगस्यमार्ज्जनम्।कान्तिप्रदंशरीरस्यकण्डूत्वग्दोषनाशनम् १७॥

हरिश्चन्द्रका कहाहुआ ॥

जो मनुष्य सदैव आमलोंका शरीरमें लेप करके स्नान करताहै वह झुर्री और बालोंके पकने से रहित सो वर्ष तक जीता है स्नानकरना ज्वर अतीसार नेत्र कान और वायुकी पीड़ा, अफरा पीनस अजीर्ण इनरोगोंसे युक्त और भोजन किये हुये मनुष्यों को वर्जित है स्नानके उपरान्त अच्छे प्रकार वस्त्रसे शरीर का पोंछना कान्तिका देनेवाला शरीरकी खुजली और त्वचाके दोषोंका नाशकरने वालाहोताहै १७ ॥

कौशेयौर्णिकवस्त्रञ्चरक्तवस्त्रन्तथैवच । वातश्लेष्महरन्तत्तुशीतकालेविधारयेत् ॥ कौशेयंपट्टाम्बरमूटसरवस्त्रञ्चमेध्यंसुशीतम्पित्तघ्नंकषायंवस्त्रमुच्यते।तद्धारयेदुष्णकाले तत्रापिलघुशस्यते ॥ कषायङ्कोकमोइतिलोकेकषायरागरक्तंवाशुक्लन्तुशुभदंवस्त्रंशीता तपनिवारणम् । नचोष्णन्नचवाशीतन्तत्तुवर्षासुधारयेत् ॥ १८ ॥

रेशमी, ऊनी और रक्त वस्त्र वात और श्लेष्मा को दूर करेहैं उसको शीत कालमें धारणकरना चाहिये कषाय पवित्र शीतल वस्त्र पित्तका नाशकरने वालाहोताहै वह उष्ण कालमें धारणकरना चाहिये उसमेंभी हलका उत्तम है शुक्लवस्त्र कल्याण का देनेवाला शीत और आतपका दूर करने वाला न अति उष्ण न शीतलहोताहै उसको वर्षा में धारणकरे ॥ १८ ॥

यशस्यङ्काम्यमायुष्यंश्रीमदानंदवर्द्धनम् । त्वच्यंवशीकरंरुच्यंनवनिर्मलमम्बरम् ॥ काम्यंकामोद्दीपकम् । कदापिनजनैःसद्भिर्धार्य्यम्मालिनमम्बरम् । तत्तुकण्डूकृमिकर ग्लान्यलक्ष्मीकरम्परम् ॥ अलक्ष्मीअशोभादारिद्र्यञ्च ॥ १९ ॥

नवीन और निर्मलवस्त्र यशकारी कामका उद्दीपक आयु और लक्ष्मीका बढ़ानेवाला त्वचाका हित वश करनेवाला और रुचि उत्पन्न करनेवाला होताहै सज्जन पुरुषोंको मलिन वस्त्र कभी न धारण करना चाहिये क्योंकि वह खुजली कीड़े ग्लानि अशोभा और दरिद्रका करनेवाला होताहै ॥ १९॥

कुंकुमञ्चन्दनञ्चापि कृष्णागुरुचमिश्रितम् । उष्णंवातकफध्वंसि शीतकालेतादिष्यते ॥ चन्दनंघनसारेण वालकेनचमिश्रितम् । सुगंधिपरमंशीतमुष्णकालेप्रशस्यते ॥ (घनसारः कर्पूरः, वालंह्रीवेरम्) चन्दनंघुसृणोपेतं मृगनाभिसमायुतम् । नचोष्णंनच

वार्शीतं वर्षाकालेतादिष्यते ॥ (घुसृणंकुंकुमम् । मृगनाभिः कस्तूरी) अनुलेपस्तृपामूच्छी दुर्गन्धस्वेददाहजित् । सौभाग्यतेजस्त्वग्वर्ण प्रीत्योजोबलवर्द्धनः ॥ सस्नानानर्हलोकानामनुलेपोऽपिनोहितः ॥ २० ॥

केशर चन्दन और कालाअगर यह मिलेहुए उष्ण और वात कफके नाशकरनेवाले होतेहैं इनका लेप शीतकालमें करना चाहिये चन्दन कपूर सुगन्धवाला यहसब मिलेहुए सुगन्धित अत्यन्त शीतल होतेहैं इनका लेप शीतकाल में करना चाहिये चन्दन केशर और कस्तूरी यह मिलेहुए न शीतल न उष्ण होतेहैं इनका लेप वर्षा ऋतुमें करना चाहिये अनुलेप तृषा मूर्च्छा दुर्गन्धि स्वेद दाहका नाशक और सौभाग्य तेज त्वचा का वर्ण प्रीति ओज और बलका वर्द्धक होताहै जिन पुरुषोंको स्नान का निषेध है उनको लेपभी न करना चाहिये ॥ २० ॥

सुगंधिपुष्पपत्राणां धारणङ्कान्तिकारकम् । पापरक्षोग्रहहरं कामदंश्रीविवर्द्धनम्२१॥

सुगन्धित पुष्प और पत्रोंका धारण, कान्ति, काम लक्ष्मी का वर्द्धक और पाप राक्षस ग्रहइन्हों का नाशकहोता है, ॥ २१ ॥

भूषणैर्भूषयेदङ्गं यथायोग्यं विधानतः । शुचिसौभाग्यसन्तोषदायकं काञ्चनंस्मृतम्॥ग्रहदृष्टिहरम्पुष्टि करंदुःस्वप्ननाशनम् । पापदौर्भाग्यशमनं रत्नाभरणधारणम् ॥ माणिक्यन्तरणेःसुजात्यममलं मुक्ताफलम्शीतगो। र्माहेयस्यचविद्रुमोनिगदितः सौम्यस्य गारुत्मकम् ॥ देवेज्यस्यचपुष्पराग मसुराचार्यस्यवज्रंशनेः । नीलन्निर्मलमन्ययोश्चगदिते गोमेदवैडूर्य्यके ॥ २२॥

विधिपूर्वक यथायोग्य आभूषणों से अंगोंको शोभित करे, सुवर्ण के आभूषण पवित्रता सौभाग्य और सन्तोषके देनेवाले होते हैं, रत्नोंके आभूषणोंका धारण ग्रहोंकी दृष्टि, दुस्स्वप्न, पाप और दौर्भाग्य का नाशक और पुष्टता करनेवाला होता है सूर्य्यका माणिक्य, चन्द्रमाका सुन्दरमोती, मंगल का मूंगा, बुधका पन्ना, शुक्रका हीरा- शनैश्चरकी नीलम, बृहस्पति का पुखराज राहुका गोमेद औरकेतुका वैडूर्य्य यह सबग्रहोंके जुदे २ रत्न हैं, ॥ २२ ॥

वासःशृंगाररत्नानांधारणम्प्रीतिवर्द्धनम् । रक्षोघ्नमर्थ्यमोजस्यं सौभाग्यकरमुत्तमम् ॥ २३ ॥

वस्त्र शृंगार और रत्नों का धारण प्रीति धन ओज और सौभाग्य का बढ़ानेवाला होकर राक्षसों का नाशक होताहै ॥ २३ ॥

सततंसिद्धमन्त्रस्य महौषध्यास्तथैवचारोचनासर्षपादीनां मांगल्यानाञ्चधारणम्॥ आयुर्लक्ष्मीकरंरक्षोहरं मंगलदंशुभम् । हिंसाभयविध्वंसि वशीकरणकारणम् ॥ २४ ॥

सिद्ध मन्त्र- महौषधि- मंगलीकगोरोचन और सरसों आदि इनका धारण आयु- लक्ष्मी- सहित मंगल का देनेवाला और राक्षस तथा व्याघ्रादि हिंसकोंके भयका नाश करने वाला वशीकरण का कारण और शुभ होता है ॥ २४ ॥

ततोभोजनवेलायां कुर्य्यान्मांगल्यदर्शनम् । तस्यप्रदर्शनन्नित्यमायुर्धर्म्मविवर्द्धनम् ॥ लोकेऽस्मिन्मंगलान्यष्टौ ब्राह्मणोगौर्हुताशनः। पुष्पस्त्रक्सर्पिरादित्यश्चापोराजा तथाष्टमः ॥ २५ ॥

भोजन के समय मंगल पदार्थोंका दर्शनकरे उनके दर्शन से नित्य आयु और धर्म की वृद्धिहोतीहै- इसलोक में ब्राह्मण- गौ- अग्नि- पुष्पोंकी माला घृतसूर्य्य-जल और राजा यह आठ मंगलहैं-॥२५॥

पादुकारोहणंकुर्य्यात् पूर्व्वंभोजनतःपरम्। पादरोगहरंवृष्यं चक्षुष्यञ्चायुषोहितम्॥ शरीरेजायतेनित्यं वाञ्छानृणाञ्चतुर्विधा। बुभुक्षाचपिपासाच सुषुप्साचरतस्पृहा। भोजनेच्छाविघातात्स्या दंगमर्दोऽरुचिःश्रमः॥ तन्द्रालोचनदौर्ब्बल्यं धातुदाहोबलक्षयः। विघातेनपिपासाया शोषःकण्ठास्ययोर्भवेत्॥ श्रवणस्यावरोधश्च रक्तशोषोहृदिव्यथा। निद्राविघाततोजृम्भा शिरोलोचनगौरवम्॥ अंगमर्दस्तथातंद्रास्यादन्नापाकएवच २६॥

भोजन के पूर्व्व और पश्चात् खड़ाऊँओंपर चढ़े इससे पैरके रोगोंका नाशवीर्य्य की वृद्धि और नेत्र तथा आयुको हितहोता है- मनुष्योंके शरीर में चारप्रकार की सदैव इच्छा होती है क्षुधा-तृषा, निद्रा और मैथुन की इच्छा इनमें भोजनकी इच्छाके रोकने से अंगमें हड़फूटन, अरुचि, काम तन्द्रा, नेत्रोंकी दुर्बलता धातुओंकी जीर्णता और बलकी हानिहोती है- प्यास के रोकने से गले और मुखका सूखना, कानोंका रुकना, रुधिरका सूखना और हृदय में पीड़ा होती है, निद्राके रोकने से जंभाई, शिर और नेत्रोंका भारीपन, हड़फूटन, तन्द्रा और अजीर्ण होता है, ॥ २६ ॥

बुभुक्षितोनयोऽश्नाति तस्याहारेन्धनक्षयात्। मंदोभवतिकायाग्नि र्यथाचाग्निर्निरिंधनः॥ आहारं पचति शिखीदोषानाहार वर्जितः। पचति दोषक्षयेच धातून् धातुक्षयेच प्राणान् ॥ २७ ॥

जो क्षुधातुर भोजनको नहीं करता है उसके आहार रूपी इन्धन के नाशसे इन्धन रहित अग्नि के समान जठराग्नि मन्दहोजाती है यह जठराग्नि पहले आहार को पचाती है आहार के नहोने पर दोषोंको और दोषोंके नाशहोजाने पर धातुओंको और धातुओंके नाश होजाने पर प्राणोंको विनाश करती है, ॥ २७ ॥

आहारःप्रीणनःसद्योबलकृद्देहधारणः। स्मृत्यायुःशक्तिवर्णौजःसत्वशोभाविवर्द्धनः२८॥

आहार तृप्त करनेवालाशीघ्रबलकारी, शरीर को धारण करने वाला, स्मृति आयुशक्ति वर्ण ओज सत्व और शोभाका बढ़ाने वाला होता है, ॥ २८ ॥

यथोक्तगुणसम्पन्नं नरःसेवेतभोजनम् । विचार्य्यदोषकालादीन् कालयोरुभयोरपि॥उभयोःकालयोःप्रातः सायञ्च। तथाचसायं प्रातर्मनुष्याणामशनं श्रुतिबोधितम्॥ नान्तराभोजनंकुर्य्यादग्निहोत्रसमोविधिः।प्रातः,प्रथमयामादुपरिद्वितीययामादर्वाक्॥ तथाच-॥ याममध्येनभोक्तव्यंयामयुग्मंनलंघयेत्। याममध्येरसोत्पत्तिर्य्यामयुग्माद्बलक्षयः॥ अन्यच्चक्षुत्सम्भवति पथ्येपुरसदोमसन्येपुच। कालेवायदि वाकालेसोऽन्नकालउदाहृतः ॥ २९ ॥

यथोक्त गुणोंसे युक्त भोजन दोष और समयादि को विचारकर प्रातःकाल और सायंकाल करे वीचमें न करे क्योंकि यह विधि अग्निहोत्र के समान है प्रथम प्रहरके उपरान्त औ दूसरे प्रहरके पहले भोजन करे क्योंकि पहले पहर में रसकी उत्पत्ति होती है और दूसरे पहर के उपरान्त वल का नाश होजाताहै, कोई कहते हैं कि समय में अथवा असमय में रस दोष और मलके परिपाक होजाने पर जवक्षुधा उत्पन्नहो तव भोजन करे, ॥ २९ ॥

रसादीनां पाकज्ञानमाह ॥

उद्गारशुद्धिरुत्साहोवेगोत्सर्गोयथोदितःलघुताक्षुत्पिपासाचजीर्णाहारस्यलक्षणम् ३०॥

रसादिकोंके पाककालक्षण ॥

डकार की शुद्धि, उत्साह, यथा योग्य मलमूत्रादि वेगोंका त्याग, शरीर का हलकापन, क्षुधा और पिपासा काहोना यह परिपाक हुए भोजन के लक्षण हैं, ॥ ३० ॥

स्थानमाह ॥

आहारन्तुनरःकुर्य्यान्निर्हारमपिसर्वदा। उभाभ्यां लक्ष्म्युपेतः स्यात्प्रकाशेहीयतेश्रिया ॥ निर्हारो मलमूत्रोत्सर्गः । अन्यच्च । आहार निर्हार विहार योगाःसदैवसद्भिर्विजनेविधेयाः ॥ ३१ ॥

भोजन का स्थान ॥

मनुष्य भोजन और मल मूत्रादिका त्याग सदैव निर्जन स्थानमें करे इससे शरीर कीश्री वढ़तीहै और सवके आगे करने से श्रीका नाशहोताहै और कहाभीहै कि आहार-मलमूत्रका त्याग और विहार यह सज्जन लोगोंको सदैव निर्जन स्थानों में करने उचितहैं ॥ ३१ ॥

भोजनपात्रमाह ॥

दोषहृद्दृष्टिदंपथ्यंहैमंभोजनभाजनम्। रौप्यंभवतिचाक्षुष्यंपित्तहृत्कफवातकृत् ॥ कांस्यंबुद्धिप्रदंरुच्यंरक्तपित्त प्रसादनम्। पैत्तलंवातकृद्रूक्षमुष्णंकृमिकफप्रणुत् ॥ आयसेकाचपात्रेचभोजनंसिद्धिकारकम् ॥ शोथपाण्डुहरंवल्यं कामलापहमुत्तमम्॥शैलेयेमृण्मये पात्रेभोजनंश्रीनिवारणम् ॥ दारूद्भवेविशेषेणरुचिदंश्लेष्मकारितु । पात्रंपत्रमयंरुच्यं दीपनंविषपापनुत् ॥ जलपात्रन्तुताम्रस्यतदभावेमृदोहितम् । पवित्रंशीतलंपात्रंगढ़ितं स्फटिकेनयत् ॥ काचेनरचितन्तद्वत्तथावैडूर्य्यसम्भवम् ॥ ३२ ॥

भोजनके पात्र ॥

सुवर्णका भोजनपात्र दोषोंका नाशक दृष्टि वर्द्धक और पथ्यहै, चांदीका पात्र नेत्रोंको हित पित्त नाशक और कफवातका करने वालाहै, कांसेका पात्र वुद्धिका उत्पन्नकरनेवाला रुचि कारक और रक्त,पित्तको उत्पन्न करताहै- पीतलका पात्र वात करनेवाला रूखा उष्ण और कृमितथा कफ का नाशकहोताहै लोहे और काचका पात्र सिद्धिदायक वलकारक सूजन पांडु और कामला रोगकानाशक होताहै- पाषाण और मृत्तिका का पात्र श्री नाशक होताहै- काष्ठका पात्र विशेष करके रुचि करने वाला और कफको उत्पन्न करताहै पत्तों का पात्र रुचि कारक जठराग्नि दीपक और विषतथा पाप

कानाशक होताहै जल पान करने के लिये ताम्रका पात्र उचितहै उसके अभाव में मृत्तिकाका पात्र श्रेष्ठहै स्फटिक कांच और वैडूर्य्य से बनाहुआ पात्र पवित्र और शीतल होताहै ॥ ३२ ॥

भोजनाग्रेसदापथ्यंलवणार्द्रक भक्षणम् । अग्निसन्दीपनंरुच्यंजिह्वाकण्ठविशोधनम् ॥ ननुलवणस्यपित्तजनकत्वादार्द्रकस्यकटुकत्वेन पित्तलत्वाद्बुभुक्षितस्यवृद्धपित्तस्यकथम्प्रथमं लवणार्द्रकमुचितम् । उच्यते । लवणंसैन्धवंज्ञेयंचन्दनंरक्तचन्दनमिति वचनात् लवणमत्रसैन्धवम्तत्त्रिदोषघ्न ॥ यतआह । गुणग्रन्थे । सैन्धवंलवणंस्वादुदीपनम्पाचनंलघु ॥ स्निग्धंरुच्यंहितंवृष्यंसूक्ष्मंनेत्र्यंत्रिदोषहृत् । आर्द्रकन्तुकटुकमपिनपित्तविरोधिमधुरपाकित्वात् । यतआह । तत्रैव ॥ आर्द्रिकाभेदिनीगुर्वीतीक्ष्णोष्णादीपनीचसा । कटुकामधुरापाकेसूक्ष्मावातकफापहा ॥ अथचान्यदपिलवणमार्द्रकञ्चनात्रपित्तविरोधिसंयोगस्वभावात् ॥ संयोगस्वभावे चैतादृशम् भोजनस्यपूर्वंलवणार्द्रक भक्षणबोधकवचनमेवप्रमाणयति ॥ ३३ ॥

भोजन के पूर्व्व लवणयुक्त अदरकका भोजन सदैव पथ्यहै इससे अग्निकी दीप्ति रुचि और जिह्वा तथा कण्ठकी शुद्धता होती है अब यह सन्देह उत्पन्न होताहै कि लवण पित्त कारक होताहै और अदरक भी कटुताके कारण पित्त कारकहै तो बढ़ेहुए पित्त वाले क्षुधित पुरुष को लवण युक्त अदरक का भोजन कैसे उचितहै इसका उत्तर यहहै कि लवण कहनेसे सैंधव लवण चन्दन कहने से रक्तचन्दन इस वचन के द्वारा यहां सैंधव लवण लियाजाताहै और वह त्रिदोष नाशक है जैसा कि गुण ग्रंथ में कहा गयाहै सैंधव लवण मधुर रस दीपन- पाचक- हलका स्निग्ध रुचिकारक- वीर्य्य में शीतल वीर्य्य वर्द्धक सूक्ष्म नेत्रों का हितकारी और त्रिदोष नाशकहै और अदरक कटुरस होनेपर भी पित्त वर्द्धक नहीं है क्योंकि पाकमें मधुरहै जैसाकि द्रव्य गुण ग्रंथ में कहागयाहै कि अदरक मल भेदक भारी तीक्ष्ण वीर्य्यमें उष्ण दीपनी कटुरस पाकमें मधुर सूक्ष्म और वायु तथा कफ की नाश करने वाली होतीहै और भी कहाहुआहै कि संयोग के स्वभाव से लवण और अदरक पित्तकारक नहींहै और भोजन के पूर्व्व लवण और अदरक के भक्षण का विधायक वचनही इसमें प्रमाणहै ॥ ३३ ॥

भोजनादौदृष्टिदोष विनाशाय ब्रह्मादीन् स्मरेत् । तद्यथा अन्नं ब्रह्मारसो विष्णुर्भोक्ता देवो महेश्वरः ॥ इतिसञ्चिन्त्यभुञ्जानं दृष्टिदोषोनबाधते । अञ्जनीगर्भसम्भूतं कुमारंब्रह्मचारिणम् ॥ दृष्टिदोषविनाशाय हनुमन्तंस्मराम्यहम् । अश्नीयात्तन्मना भूत्वापूर्वंतुमधुरंरसम् ॥ मध्येऽम्ललवणौपश्चात् कटुतिक्तकषायकान् । फलान्यादौ समश्नीयाद्दाडिमादीनिबुद्धिमान् ॥ विनामोचफलन्तद्वद्वर्ज्जनीयाचकर्कटी । मृणाल बिशशालूककन्देक्षुप्रभृतीनपि । पूर्व्वमेवहिभोज्यानि नतुभुक्त्वाकदाचन ॥ मृणालं पद्मनालंबिशम्भिशण्डकम्शालूककन्दप्रसिद्धम् । गुरुपिष्टमयंद्रव्यंतण्डुलान्पृथुकानपि ॥ नजातुभुक्तवान्खादेन्मात्रांखादेद्बुभुक्षितः ॥ घृतपूर्वंसमश्नीयात्कठिनंप्राक् ततोमृदु । अंतेपुनर्द्रवाशीतुबलात्रोगेणमुञ्चति ॥ मृणालबिशसालूककंदेक्षुप्रभृतीनपि । पूर्व्वमेवहिभोज्यानिनतुभुक्त्वाकदाचनं । अयमर्थः ॥ प्राक्घृतपूर्व्वकठिनंसम

स्वभावसे गुरु उड़द आदि और संस्कार से गुरुपीठी आदि यह नमूनेके लिये कहागयाहै,॥ ३७॥

आहारंषड्विधञ्चूष्यंपेयंलेह्यंतथैवच । भोज्यम्भक्ष्यन्तथाचर्व्यंगुरुविद्यात्यथोत्तरम्॥ (चूष्यमिक्षुदाड़िमादि) पेयम्पानकशर्करोदकादिलेह्यंरसालाक्वथितादिक्वथिता कढीइतिलोके।भोज्यंभक्तसूपादि।भक्ष्यंलडुकंमण्डुकादिचर्व्यंञ्चिपिटञ्चणकादि॥३८॥

आहार छः प्रकारका है ॥

चूष्य, पेय, लेह्य, भोज्य, भक्ष्य और चर्व्य यह उत्तरोत्तर गुरु हैं,चूष्य ईख और अनार आदि, पेय पना और सर्बत आदि, लेह्य शिखरन और कढ़ी आदि, भोज्य दाल चावल आदि भक्ष्यलड्डू और मट्ठे ठौरआदि- चर्व्य चिड़वे चने आदि, ॥ ३८ ॥

स्वभावगुरुसंस्कारगुरुणोःस्वभावलघुत्वात्भक्ष्यस्यभोजनपरिमाणमाह ॥

गुरूणामर्द्धसौहित्यंलघूनांतृप्तिरिष्यते । अयमर्थःमाषपिष्टान्नादिभिरर्द्धसौहित्यंकर्त्तव्यंमुद्गादिभिः स्वभावादेवलघुभिर्मात्रयातृप्तिःकर्त्तव्येत्यर्थः ॥ द्रवोद्रवोत्तरश्चापिनमात्रागुरुरिष्यते । द्रवःपेयादिद्रवोत्तरःतक्राद्यधिकश्रोदनादिःमात्रातोऽधिकोऽपिमात्रागुरुर्नमंतव्यः ॥ पेयस्यसर्व्वतोलघुत्वात् ॥ ३९ ॥

स्वभाव गुरु, संस्कार गुरु और स्वभाव लघु, भक्ष्य के भोजन का प्रमाण कहते हैं ॥

गुरुपदार्थों की आधी तृप्ति और लघुपदार्थोंकी पूरीतृप्ति करनी चाहिये इसका यह तात्पर्य्य है कि उड़द और पीठी आदिक आधीमात्रा से और स्वभाव से लघु मूंग आदि पूरीमात्रासे खानाचाहिये द्रव अर्थात्पेय पदार्थ और द्रवोत्तर अर्थात्मट्ठे आदिसे तरकिये हुए चावल आदि मात्रासे अधिक भी गुरु नहीं मानेजाते हैं क्योंकि पेय सबसे लघुहोता है, ॥ ३९ ॥

उक्तञ्चसुश्रुतेन । पेयलेह्यादिभक्ष्याणांगुरुर्विद्यात्यथोत्तरमितिपेयम्पेयादि । लेह्यंरसालादि । आदिशब्दात्भोज्यमोदनसूपादि॥भक्ष्यम्मोदकादिः द्रव्याढ्यमपिशुष्कन्तुसम्यगेवोपपद्यते । विशुष्कमन्नमभ्यस्तंनपाकंसाधुगच्छति ॥ अयमर्थःशुष्कमपिस्रोतोरोधकमपिद्रव्याढ्यंसम्यक्पाकंयाति । केवलस्यशुष्कान्नस्यदोषमाह ॥ विशुष्कमन्नमित्यादि । (अपक्वंतत्किम्भवतीत्यपेक्षायामाह)पिण्डीकृतमसंक्लिन्नंविदाहमुपगच्छति पिण्डीकृतम् अष्ठीलावदुद्धृतम् ॥ असंक्लिन्नंनसम्यगार्द्रं । विदाहमुपगच्छति विदग्धंभवतीत्यर्थः ॥ ४० ॥ और सुश्रुतने भीकहा है ॥

कि पेय और लेह्य आदि भोजन उत्तरोत्तर गुरुहैं इस अधिक द्रवद्रव्यसे मिलाहुआ शुष्क अर्थात् स्रोतों का रोकने वाला पदार्थ भी अच्छे प्रकार से परिपाकको प्राप्तहोता है और केवल शुष्कअन्न भोजन कियाहुआ अच्छे प्रकार से परिपाकको नहीं प्राप्त होता है क्योंकि वह आर्द्रताके नहोने से घुटने के समान पिण्डाकार होकर विदग्ध होजाता है, ॥ ४० ॥

शुष्कादीनां वैगुण्यमाह ॥

शुष्कंविरुद्धंविष्टम्भि वह्निव्यापदकृद्भवेत् । शुष्कंञ्चिपिटकादि ॥ विरुद्धंक्षीरमत्स्यादि । विष्टम्भि चणकमसुरादि वह्निमान्द्यं कुर्य्यात् ॥ ४१ ॥

शुष्कादि अन्नोंके दोष ॥

शुष्क चिड़वे आदि विरुद्ध मिलेहुए दूध और मछली आदि विष्टंभी चने और मसूर आदि यह जठराग्नि को मन्दकर देते हैं, ॥ ४१ ॥

नभुक्त्वानरदंडिछ्त्वान निशायांनवाबहन् । नजलान्तरितानद्भिःसक्तूनद्यान्नकेवलान्॥ पुनर्दानंपृथक्पानंसामिषम्पयसानिशि । दन्तच्छेदनमुष्णञ्चसप्तसक्तुषुवर्ज्जयेत्॥सुश्रुतः भक्तूनामाशुजीर्णेन मृदुतादवलेहिके ॥ ४२ ॥

भोजन के उपरान्त अथवा दांतों से काटकर या रात्रि को अथवा अधिक मात्रासे या जल पी२ कर अथवा केवल जलहीसे सत्तून खाय और केवल सत्तूहीन खाय, सत्तुओं में सातबातें छोड़दे वह यहहै कि पुनर्दान (एकवारखाकर फिरदिये हुये सत्तू) अलगजलपीना- मांसके साथखाना- दूध में मिलाके खाना- रात्रिकोखाना- दांतोंसे काट २ करखाना (पिंडीबनाकरखाना) और उष्ण करके खाना सुश्रुतने कहाहै कि सत्तुओंका अवलेह लघुता के कारण शीघ्रही परिपाकको प्राप्तहोताहै४२॥

विषमाशनस्य लक्षणमाह ॥

यथाकालेतिमात्रंयत्तद्वैद्विषमाशनम् । बहुस्तोकमकालेवाज्ञेयंतद्विषमाशनं॥४३ ॥

विषमभोजनकालक्षण ॥

समय पर अधिक मात्रासे भोजन करना अथवा असमय में अधिक या अल्पमात्रासे भोजन करना विषम भोजन कहलाताहै ॥ ४३ ॥

बहुनाल्पस्यभक्षितस्यदोषमाह ॥

आलस्यगौरवाटोप शब्दांश्चकुरुतेऽधिकम् । हीनमात्रंतनोः कार्श्यंकरोतिचबलक्ष यम् । अधिकं अन्नम् ॥ ४४ ॥

बहुत और थोड़ेभोजन के दोष ॥

अधिक अन्न भोजन करनेसे आलस्य- शरीरमें भारीपन, उदरमें अफरा और गड़२ शब्द उत्पन्न होताहै अल्प अन्न भोजन करनेसे शरीरकी दुर्बलता और बलका नाशहोताहै ॥ ४४ ॥

अकालेभुक्तस्यदोषमाह ॥

अप्राप्तकालेभुञ्जानोह्यसमर्थःतनुर्नरः । तांस्तान्व्याधीनवाप्नोतिमरणञ्चाधिगच्छ ति ॥ अप्राप्तकालः कालादतिप्राक्भुञ्जानःअसमर्थशरीरोभवति । तथासतितांस्तान् व्याधीन्शिरोव्यथाविसूचिकालसकविलम्बिकादीन्प्राप्नोति ॥ तेषामाधिक्ये मरणमपि प्राप्नोतीत्यर्थः । कालेऽतीतेऽन्नतोजन्तोर्वायुनोपहतेऽनले ॥ कृच्छ्राद्विपच्यतेभुक्तंन स्याद्भोक्तुंपुनः स्पृहा ॥ ४५ ॥

अकाल में भोजन करनेके दोष ॥

भोजनके समयसे बहुत पहिले भोजन करनेसे शरीर असमर्थ होजाताहै इससे शिरकी पीड़ा विशूचिका अलसक और विलम्बिका आदि रोग उत्पन्नहोते हैं, और इनरोगों की अधिकता से मरणभी होजाताहै और भोजनके समयसे उपरान्त भोजन करनेसे वायुके द्वारा जठराग्निकेनष्ट होजानेपर भोजन बहुत देर में पचताहै और फिर भोजन करने की इच्छा नहीं होतीहै ॥ ४५ ॥

कुक्षेर्भागद्वयंभोज्यै स्तृतीयेवारिपूरयेत् । वायोःसञ्चारणार्थाय चतुर्थमवशेषयेत् ॥ रसेनान्नस्यरसना प्रथमेनोपतर्पिता । नतथास्वादुमाप्नोति ततःशोध्याम्बुनान्तरा ॥ अत्यम्बुपानान्न विपच्यतेऽन्न मनम्बुपानाच्च सएव दोषः ॥ तस्मान्नरोवह्नि विवर्द्धनाय मुहुर्मुहुर्वारि पिवेद्भूरि ॥ ४६ ॥

कोखके दोभाग भोजन से और तीसरा भाग जल से पूर्णकरे और चौथा भाग वायु के आने जाने को छोड़दे, भोजनके रस से पहिले तृप्तहुई जिह्वामें फिर दूसरा स्वादुनहीं प्राप्तहोता इस लिये बीच२ में जलपीकर जिह्वाका शोधन करना चाहिये बहुत जलपीने से और जल के नपीने से भी भोजन नहीं पचता इस कारण भोजन के समय अग्नि की वृद्धि के लिये मनुष्यको बारं बार थोड़ा२ जलपीना चाहिये ॥ ४६ ॥

भुक्तस्यादौजलम्पीतंकार्श्यमन्दाग्निदोषकृत् । मध्येऽग्निदीपनं श्रेष्ठमन्तेस्थौल्यकफप्रदम्॥अन्यच्चसमस्थूलकृशाभुक्तमध्यान्तःप्रथमाम्बुपा । इतिवाग्भटः।भुक्तंभोजनंतृपितस्तुनचाश्नीयात्क्षुधितोनपिबेज्जलम्।तृपितस्तुभवेद्गुल्मीक्षुधितस्तुजलोदरी॥४७॥

भोजन के आदिमें जलपीने से दुर्बलता और मंदाग्नि मध्यमें पीने से अग्निकी दीप्ति और अन्तमें जलपीने से स्थूलतातथा कफकी उत्पत्तिहोती है इससे मध्यमें जलपीना श्रेष्ठहै और वाग्भटमें भी कहाहै कि भोजन के मध्य में जलपीने से समता अन्तमें स्थूलता और आदि में कृशताहोतीहै प्यासा भोजन न करे भूखा जल न पिये क्योंकि प्यासमें भोजन करने से गुल्मरोग और भूख में जलपीने से जलोदरहोताहै ॥ ४७ ॥

ननुशिष्टा भोजनान्ते दुग्धं पिबन्ति तत्कथ मुचितं । यतस्त्रिधा विभक्तस्य भोजन कालस्य प्रथमो भागो वातस्य द्वितीयः पित्तस्य तृतीयः कफस्य अतएवाह । अश्नीयात् तन्मना भूत्वा पूर्वन्तु मधुरं रसम् ॥ मध्येऽम्ल लवणौ पश्चात् कटुतिक्त कपायकान् । (अस्यायमभिप्रायः) भोजने पूर्व्वभुक्तो मधुरो रसो बुभुक्षितस्य वात पित्तयोः शमको भवति भोजनमध्ये भुक्तावम्ल लवणौ पित्ताशयेच वह्नि वृद्धिं कुरुतः । भोजनांत समये भुक्ताः कटुतिक्त कपायरसाः कफं शमयन्तीति । अथ भोजनावसान समयस्य कफकालत्वात् तत्रकथं श्लेष्मजनकं दुग्धं पातु मुचितम्भवति । यत उक्तम् । दुग्धं स्वादुरसंस्निग्धंओजस्यधातुवर्द्धनम् । वातपित्तहरंवृष्यंश्लेष्मलंगुरुशीतलम् ॥ इतिउच्यते । विदाहीन्यन्नपानानियानिभुंक्तेहिमानवः ॥ तद्विदाहप्रशान्त्यर्थंभोजनांते पयःपिबेत् ।॥ (तथाचब्रह्मपुराणे) कुर्यात्क्षीरांतमाहारंनदध्यन्तंकदाचनेति । लवणाम्लकटूष्णानिविदाहीन्यतियानितु ॥ तद्दोषंहर्त्तुमाहारंमधुरेणसमापयेत् ॥ भोजनावसानसमयेदुग्धादिमधुरभोजनेनैववर्द्धितः कफोलवणाम्लकटुभोजनजनितपित्तस्यवृद्धिंविनाशयतिपित्तवृद्धिविनाशनेनकफस्यापिवृद्धिस्तुक्षीणाभवति ।क्षीणाकफवृद्धिरग्निमान्द्यादीन्व्याधीनुत्पादयितुंनशक्नोति ॥ ननुशत्रोर्नाशनेनशत्रुहन्तुर्वृद्धिर्दृश्यतेनतुक्षीणतातत कथंकफःक्षीणइति । उच्यते ॥ बलवच्छत्रुविनाशनेनशत्रुहन्तुःदृश्यते ।तथाच॥नाश

नात् प्रत्यनीकस्य स्वयं वाक्षीयतेयथा ॥ वह्निसन्ततलोहस्य तप्तता नाशयेज्जलम् ॥ ननुभोजना वसान समये भुक्ताः कटुतिक्त कषायाः रसाः कफं शमयिष्यन्ति वातस्य वृद्धिं विधास्यन्ति इति चेत् । तन्न कट्वादीनां क्षीणशक्ति कत्वात् । (तथाच) यदेकंनाशयेद्दोषं तन्नान्यंवर्द्धयेत्कुतः । नाशनेह्येकदोषस्य यतस्तत् क्षीणशक्तिक मिति ॥ वस्तुतो य एवरसः प्राचुर्येण भुक्तस्तस्यैव सर्वेरसावशा भवन्ति । (यतश्चाह सुश्रुतः) जग्धाः सर्वेऽपिगच्छन्ति बलिनोवश्यतांरसाः । यथाप्रकुपितादोषा वशंयान्तिवलीयसः ॥ (बलिनः रसस्य बलीयसः दोषस्य) ॥ ४८ ॥

अब यह सन्देह होताहै कि शिष्ट लोग भोजनके अन्तमें दुग्धपीतेहैं यह कैसे उचितहै क्योंकि भोजन के समय के तीन भागहैं उनमेंसे पहिला वायुका दूसरापित्तका और तीसरा कफकाहै इसी से कहागयाहै कि भोजन के पहिले मधुर रस मध्य में अम्ल और लवण और पीछे कटुतिक्त और कषाय भोजनकरे इसका यह अभिप्रायहै कि भोजन के आदि में खायाहुआ मधुररस भूखे पुरुषके वात और पित्तको शान्तकरताहै भोजन के मध्य में खाये हुये अम्ल और लवण पित्ताशयमें अग्नि की वृद्धि करते हैं, और भोजन के अन्त में खायेहुए कटुतिक्त और कषायकफको शान्त करते हैं तो भोजन के अन्तका समय कफका है उस में कफके बढ़ाने वाले दूधका पीना कैसे उचित है क्योंकि कहाहुआ है कि दुग्ध, मधुर स्निग्ध- ओज और रसादि धातुओं का वर्द्धक वात पित्तनाशक वीर्य जनक कफकारक गुरु और शीतल होता है, इसका समाधान करते हैं कि मनुष्य जो संपूर्ण दाहकारी अन्न और पेय पदार्थका भोजन करते हैं उन के दाह की शान्ति के अर्थ भोजन के अन्त में दूधपीना उचितहै और ऐसाही ब्रह्मपुराणमें लिखाहै कि भोजन के अन्त में दूधपीना चाहिये और दधि उससमय कभी न खाय, लवण अम्ल, कटु, उष्ण और दाहकारी पदार्थों के दोष दूरकरने के लिये भोजन के अन्त में मधुर रसखाय भोजन के अन्त में दूधआदिक मधुर रस भोजन से बढ़ाहुआ कफलवण अम्ल और कटु भोजन से बढ़ेहुए पित्तको नाशकरता है फिर पित्तकी वृद्धिके नाशकरने से कफकी वृद्धि भी क्षीण होजाती है और उसके क्षीण होने से अग्निकी मन्दता आदि रोग नहीं उत्पन्न होसके हैं अब यह कहा जासक्ता है कि शत्रुके मारने से उस मारने वाले की वृद्धि होतीहै नकि क्षीणता तो कफकैसे क्षीण होजाता है इसका उत्तर यह है कि बलवान शत्रुके नाश करने से मारने वालेकी भी क्षीणता होती है इसी के दृष्टान्त में कहागयाहै कि जैसे अग्नि से तपे हुये लोहे की उष्णता के नाशकरने में जल स्वयं भी नष्टहोजाताहै इसी प्रकार शत्रुके नाशकरनेसे मारनेवाला आपभी क्षीणहोजाताहै यदि ऐसा कहाजाय कि खायेहुये कटुतिक्त और कषाय रस भोजन के अन्त में उत्पन्नहुये कफ को तो शान्त करेंगे परन्तु वायुकी वृद्धि करेंगे तो ऐसा नहीं होसक्ता क्योंकि कफ के नाशकरने से कटुआदिरसों की शक्ति क्षीणहोजायगी और ऐसाही कहाहै कि जिसवस्तु से एकदोषका नाशहोताहै उससे दूसरा दोष नहीं बढ़सक्ताहै क्योंकि एकदोषके नाशकरनेही से उसकी शक्ति क्षीणहोजाती है ठीक २ तो जोनसारस भोजन में बहुत खायाजाता है उसीके वशीभूत और रसभी होजातेहैं औरसुश्रुतनेभी ऐसाही कहाहै कि जैसे कोप को प्राप्त हुये दोषोंमें से जो बलवान होताहै उसी के सब वशहोते हैं इसी प्रकार खाये हुये रसों में से जो रसबलवानहोताहै उसी के वशीभूत औररस होजाते हैं॥ ४८ ॥

एवंभुक्त्वासमाचामे द्रूक्षग्रहणपूर्व्वकम्। भोजनेदन्तलग्नानि निर्हृत्याचमनेचरेत्॥ दन्तांतरगतंचान्नं शोधनेनाहरेत्शनैः। कुर्य्यादनिर्हृतंतद्धि मुखस्यानिष्टगंधताम्॥ दंत लग्नमनिर्हार्य्यं लेपंमन्येतदंतवत्। नतत्रबहुशःकुर्य्यात् यत्नंनिर्हरणंप्रति॥ ४९॥

इसप्रकार भोजनकर के किसी रूखी वस्तुसे हाथ धोवे भोजन के समय दान्तमें लगीहुई वस्तु को निकालकर आचमन करै औरदांतोंके भीतर प्रविष्टहुये अन्नको खरकेसे धीरे २ निकाले क्योंकि उस के विनानिकाले मुख में दुर्गन्ध उत्पन्नहोती है और दांतों में जमे हुये लेपको दांतोंके समान जानकर उसके निकालने में बहुत यत्नकरै॥ ४९॥

आचम्यजलयुक्ताभ्यां पाणिभ्यांचक्षुषीस्पृशेत्।भुक्त्वापाणितलंघृष्ट्वा चक्षुषोर्दीयते यदि॥ अचिरेणैवतद्वारितिमिराण्यपोहति॥ ५०॥

हाथ धोकर जलसे युक्त हाथोंके द्वारा नेत्रोंका स्पर्शकरै क्योंकि वहजल शीघ्रही नेत्रोंके अन्धकार को दूर करताहै॥ ५०॥

भुक्त्वाचसंस्मरेन्नित्य मगस्त्यादीनसुखावहान्। विष्णुरात्मांतथाचान्नं परिणामश्चवै यथा॥ सत्येनतेनमद्भुक्तं जीर्य्यत्वन्नमिदंतथा। अगस्तिरग्निर्वडवानलश्च भुक्तंममान्नं ज्वलयत्वशेषम्॥ सुखञ्चमेतत्परिणाम सम्भवं यच्छन्त्वरोगं ममचास्तुदेहम्॥ अंगारकमगस्तिञ्च पावकंसूर्य्यमश्विनौ। पञ्चैतान्संस्मरेन्नित्यं भुक्तंतस्याशुजीर्य्यति॥ इत्युच्चार्यस्वहस्तेन परिमार्ज्यतथोदरम्। अनायास प्रदायीनि कुर्य्यात्कर्म्माण्यतंद्रितः॥ अतंद्रितः निरंतरं जाग्रत तिष्ठन्नतु स्वप्यात्। भुक्तमात्रस्यतु स्वप्नाद्धन्त्यग्निं कुपितःकफः॥ इति वचनात्। जीर्णेऽन्नेवर्द्धतेवायु र्विदग्धेपित्तमेधते॥ भुक्तमात्रेकफश्चापि क्रमोऽयंभोजनोपरि। विदग्धेकिंचित्पक्वे किंचिदपक्वे॥ ५१॥

भोजनके उपरान्त करने के कार्य॥

भोजन के उपरान्त सुखदेने वाले अगस्त्य आदिकों का स्मरण करै विष्णु आत्मा विष्णु अन्न और विष्णुही परिपाकहै इसी सत्य से मेरा भोजन किया हुआ अन्न शीघ्र परिपाक को प्राप्त होवे अगस्ति और वडवानल अग्नि मेरे भोजन किये हुए सम्पूर्ण अन्न को परिपाक करें और उसके परिपाक से भए सुखको भीदें और मेरे शरीरको नीरोगकरें मंगल अगस्ति अग्नि सूर्य अश्विनी कुमार इन पांचोंके स्मरणकरने से भोजन शीघ्रपरिपाकको प्राप्तहोताहै यह कहकर उदरपर हाथ फेरै इसके उपरान्त परिश्रमरहित कार्योंको करै और उसी समय शयन न करै क्योंकि ऐसा कहागयाहै कि भोजन के उपरान्त सोने से जठराग्नि मन्दहोकर कफ उत्पन्नहोताहै भोजन के परिपाकहोजाने पर वायु बढ़तीहै कुछ परिपाकहोजाने पर पित्त बढ़ताहै और भोजन के उपरान्तही कफ बढ़ताहै॥ ५१॥

भुक्तमात्रे सञ्जातस्य कफस्य प्रतीकारमाह॥

धूमेनापोह्यहृद्यैर्वा कषायकटुतिक्तकैः। पूगकर्पूरकस्तूरी लवंगसुमनःफलैः॥ फलैःकटुकषायैर्वा मुखवैशद्यकारिभिः। ताम्बूलपत्रसहितैः सुगंधैर्वाविचक्षणः॥ धूमेन अगुर्वा

दि धूमेन। अपोह्य कफं दूरीकृत्य कषाय कटुतिक्तकैः फलैःकर्पूर कस्तूरी लवंगादिभिः। पूगैः क्रमुकैः सुमनः फलैः जातीफलैः एला हरीतक्यादि फलैः॥ ५२॥

भोजनके उपरान्त वढ़ेहुये कफका प्रतीकार॥

भोजनके उपरान्त अगर आदि के धूमसे कफको दूरकर के हृदय को हित वा कटु तिक्त कषाय रस युक्तफलोंको चबाकर मुखको निर्मल करै अथवा सुपारी कपूर कस्तूरी लवंग जायफल अथवा मुखके निर्मल करनेवाले कटुतिक्त और कषाय रसयुक्त फलसहित और सुगन्धितवस्तु युक्त ताम्बूल भक्षण करै॥ ५२॥

रतौसुप्तोत्थितेस्नाते भुक्तेवांतेचसंगरेसभायांविदुषांराज्ञां कुर्यात्ताम्बूलचर्वणम्॥५३॥

मैथुनके समयमें निद्रा के अन्तमें स्नान और भोजन के उपरान्त वमन के अन्तमें परिश्रम के उपरान्त तथा पण्डितों की और राजाओंकी सभामें ताम्बूल भक्षण करै॥ ५३॥

ताम्बूलमुक्तंतीक्ष्णोष्ण रोचनंतुवरंसरम्। तिक्तंक्षारोषणंकाम रक्तपित्तकरंलघु॥ वश्यंश्लेष्मास्यदौर्गन्ध्यं मलवातश्रमापहम्। मुखवैशद्यसौगंध्य कांतिसौष्ठवकारकम्। हनूदन्तमलध्वंसि जिह्वेंद्रियविशोधनम्। मुखप्रसेकशमनं गलामयविनाशनम्॥ नवंत देवमधुरं कषायानुरसंगुरु। बलासजननंप्रायः पत्रशाकगुणंस्मृतम्॥ वंगदेशोद्भवंपर्णं परंकटुरसंसरम्। पाचनंपित्तजनक मुष्णंकफहरंस्मृतम्॥ पर्णंपुराणमकटु खुरखकंतनु पांडुरम्। विशेषादगुणवद्वेद्य मन्यद्धीनगुणंस्मृतम्॥ (ताम्बूलगुणम्)॥ ५४॥

ताम्बूलके गुण॥

ताम्बूल तीक्ष्ण उष्णरुचिकारक कसैला- सारक, तिक्तसार कटु काम तथा रक्त पित्तका कर नेवाला लघुवशकरने वाला कफ मुखकी दुर्गन्धता मल वायु और श्रमका नाशक मुखकी स्वच्छता सुगंधकान्ति और सुन्दरता करनेवाला जबडे तथा दान्तों के मलका नाशक जिह्वा इन्द्रियकाशुद्ध करनेवाला और मुखकी लारकातथा गलेके रोगोंका नाशकरने वालाहोताहै- नवीन ताम्बूल कुछ कसैलामधुर गुरु कफ कारक और पत्रशाकके समानगुण वाला होताहै वंगदेशमें उत्पन्नहुआ ताम्बूल अत्यन्त कटुसारक पाचक पित्तवर्द्धक उष्ण और कफनाशक होताहै पुरानाताम्बूल कटु रसरहित लघु अत्यन्त कोमल पाण्डुवर्ण और अत्यन्त गुणकारी होताहै अन्यताम्बूल इसकी अपेक्षा गुणमें न्यूनहोतेहैं॥ ५४॥

पूगंगुरुहिमंरूक्षंकषायंकफपित्तनुत्। मोहनंदीपनंरुच्यमास्यवैरस्यनाशनम्॥ पूगं स्याद्दृढमध्यंयत्तखिन्नंत्वापित्रिदोषनुत्। सरसंगुर्व्वभिष्यन्दितद्भृशंवह्निनाशनम्॥ ख दिरःकफपित्तघ्नश्चूर्णंवातबलासनुत्। संयोगतस्त्रिदोषघ्नंसौमनस्यंकरोतिच॥ मुखवैश द्यसौगन्ध्यकान्तिसौष्ठ वकारकम्। प्रभातेपूगमधिकं मध्याह्नेखादिरंतथा॥ निशासुचूर्ण मधिकं ताम्बूलंभक्षयेत्सदा। आयुरग्रेयशोमूलेलक्ष्मीमध्येव्यवस्थिता॥ तस्मादग्रं तथामूलंमध्यं पर्णस्यवर्जयेत्। पर्णमूलेभवेद्व्याधिःपर्णाग्रेपापसम्भवः॥ चूर्णपूर्णंहर त्यायुः शिरावुद्धिविनाशिनी। आद्यंविषोपमंपीतं द्वितीयंभेदिदुर्जरम्॥तृतीयादनुपातव्यं

सुधातुल्यंरसायनम् । ताम्बूलंनातिसेवेत नविरिक्तोवुभुक्षितः॥देहदृक्केशदन्ताग्नि श्रोत्रवर्णबलक्षयः। शोषःपित्तानिलास्रस्या दितिताम्बूलचर्वणात्॥ ताम्बूलंनहितंदंत दुर्बलेक्षणरोगिणाम्। विषमूर्च्छामदार्त्तानां क्षयिणांरक्तपित्तिनाम्॥ ५५॥

सुपारी गुड शीतल रूखी कसैली कफ और पित्त नाशक मदकारक अग्नि दीपक रुधि कारक और मुखकी विरसता की नाश करने वाली होती है मध्य में दृढ अथवा उवाली हुई सुपारी त्रिदोष को नाश करती है कच्ची सुपारी गुरु अभिष्पन्दी और जठराग्नि की अत्यन्त मंद करने वाली होती है खदिर, कफ और पित्तका नाश करनेवाला होताहै चूना वायु और कफ का नाश करनेवाला होताहै पान सुपारी कत्था चूना यह सब मिले हुए त्रिदोषों का नाश मन की प्रसन्नता मुख की निर्मलता तथा सुगन्धि कान्ति और सुन्दरता को करते हैं प्रातःकाल ताम्बूल भक्षण करने में सुपारी मध्यान्ह में खदिर और रात्रि में चूना अधिक होना चाहिये ताम्बूल के अग्रभाग में आयु मूल में यश और मध्यमें लक्ष्मी बास करती है इस कारण से ताम्बूल का अग्रभाग मध्य और मूल त्यागकर देना चाहिये ताम्बूल का मूल भक्षण करने से रोग उत्पन्नहोते हैं अग्रभाग भक्षण करने से पातक होताहै केवल ताम्बूल और चूनाखाने से आयु का नाश होता है और पान कीनस खाने से बुद्धि का नाश होता है सुपारी आदि से युक्त पान की पहली पीक विष तुल्य दूसरी बारकी पीक भेदक और कठिनतासे पचनेवाली होती है इससे अमृत तुल्य गुणदायक और रसायन रूप पीक तीसरी बार से पीनी चाहिये विरेचन लेनेवाला और क्षुधित पुरुष ताम्बूल को बहुत सेवन न करे ताम्बूल के बहुत खाने से शरीर दृष्टि केश दन्त अग्नि श्रवणेन्द्रिय वर्ण तथा बलका नाश होताहै और शोष पित्त तथा वायु की वृद्धि होती है दुर्बल दांतवालों को तथा नेत्ररोग विषमूर्च्छा मदात्ययक्षय और रक्त पित्तसे युक्त पुरुषोंको ताम्बूलहित नहीं है ॥ ५५॥

भुक्त्वाशतपदंगच्छेच्छनैस्तेनतुजायते। अंगसङ्घातशैथिल्यं ग्रीवाजानुकटीमुखम्॥ भुक्तोपविशतस्तंद्रा शयानस्यतुपुष्टता। आयुश्चंक्रममाणस्य मृत्युर्धावतिधावतः॥ चंक्रममाणस्य पदशतंशनैर्गच्छतः श्वासानष्टौसमुत्तानस्तान्द्विःपार्श्वेतुदक्षिणे। ततस्तद्विगुणान्वामेपश्चात् स्वप्याद्यथासुखम्॥ वामदिशायामनलोनाभेरूर्ध्वेऽस्तिजन्तूनाम्। तस्मात्तुवामपार्श्वेशयीतभुक्तप्रपाकार्थम्॥ ५६॥

भोजनके उपरान्त धीरे२ सौपद (कदम) चले इस्से अंगोंकी सघनता तथा ग्रीवा घुटने कटि और मुखमें शिथिलता होती है अर्थात् यह सम्पूर्ण शिथिल होकर अच्छीतरहसे घुमाने के योग्य होजातेहैं भोजनके उपरान्त बैठनेवाले को तन्द्रा सोनेवाले कोपुष्टता धीरे२ शतपद गमन करनेवाले को आयु और दौड़ने वाले को मृत्युप्राप्त होतीहै उत्ताने होकर आठ श्वास इसके द्विगुण दक्षिण करवट से और इस्के भी द्विगुण श्वास वाम पार्श्व से भोजन के उपरान्त शयन करने के समयमें ग्रहण करने चाहिये इसके उपरान्त जिस रीतिसे इच्छाहो उसरीति से शयनकरै मनुष्योंकी बाईं कोखमें नाभि केऊपर अग्निके रहनेका स्थानहै इस कारण से भोजन के परिपाक के लिये बाईंकरवट शयन करै ५६

त्रिदोषशमनीखट्वा तलीवातकफापहा। भूशय्याबृंहणीवृष्याकाष्ठपट्टीतुवातला॥

अन्यःपुनराह भूशय्यावातलातीवरूक्षापित्तास्त्रनाशिनी । भूशय्याशयनंहृद्यंपुष्टिनिद्रा धृतिप्रदम् ॥ श्रमानिलहरंवृष्यंविपरीतमतोऽन्यथा ॥ ५७ ॥

खट्वा की शय्या त्रिदोषनाशक तोशक वाततथा कफकी नाश करने वाली होती है पृथ्वी पर सोनेसे शरीर की वृद्धि और पुष्टि होती है और तख्तपर सोने से वायुकी वृद्धि होती है- किसी दूसरेका यहमत है कि पृथ्वीपर सोनेसे वायुकी वृद्धि और कफ तथारक्त पित्तका नाशहोता है- उत्तम शय्यापरसोनेसे मनकी प्रसन्नता पुष्टता निद्रा तथा धारणा शक्तिकी वृद्धिहोती है श्रमतथा वायुका नाशहोता है और वीर्य बढ़ता है निकृष्ट शय्यापर सोने से इसके विपरीत गुण होते हैं- ॥ ५७ ॥

सम्वाहनंमांसरक्तत्वक्प्रसादकरंपरम् ॥ प्रीतिनिद्राकरंवृष्यंकफवातश्रमापहम् ५८

संवाहन (अंगमलवाना) मांस रुधिर और त्वचाका प्रसन्नकरने वाला प्रीति निद्रा तथा वीर्य का बढ़ाने वाला और कफवात तथा श्रमका नाश करनेवाला होता है, ॥ ५८ ॥

प्रवातरौक्ष्यवैवर्ण्यस्तम्भकृद्दाहपित्तनुत्॥स्वेदमूर्च्छापिपासाघ्नमप्रवातमतोऽन्यथा। सुखंप्रवातंसेवेतग्रीष्मेशरदिचान्तरा ॥ निर्वातमायुषेसेव्यमारोग्यायचसर्वदा । पूर्वोनिलोगुरुःसोष्णःस्निग्धःपित्तास्त्रदूषकः ॥ विदाहीवातलःश्रांतिकफशोषवतांहितः। स्वादुःपटुरभिष्यन्दीत्वग्दोषार्शोविषक्रमीन् ॥ सन्निपातंज्वरं श्वाससामवातञ्चकोपयेत् । (स्वादुभक्ष्यद्रव्येषुबाहुल्येनमधुररसजनकः) दक्षिणःपवनःस्वादुःपित्तरक्तहरोलघुः । वीर्येणशीतलोबल्यश्चक्षुष्योनतुवातलः ॥ पश्चिमःपवनस्तीक्ष्णःशोषणोबलहृल्लघुः । मेदःपित्तकफध्वंसी प्रभञ्जनविवर्द्धनः ॥ उत्तरोमारुतःशीतःस्निग्धोदोषप्रकोपकृत् । क्लेदनःप्रकृतिस्थानांबलदोमधुरोमृदुः ॥ दोषप्रकोपकृत् आतुराणाम् आग्नेयोदाहकृद्रूक्षोनैर्ऋतोनविदाहकृत् । वायव्यस्तुभवेत्तिक्तः ऐशानःकटुकःस्मृतः ॥ विष्वग्वायुरनायुष्यःप्राणिनांबहुरोगकृत् । अतस्तंनैवसेवेतसेवितःस्याद्वशर्म्मणे ॥ व्यजनस्यानिलोदाह स्वेदमूर्च्छाश्रमापहः ॥ तालवृन्तभवोवात स्त्रिदोषशमकोमतः ॥ वंशव्यजनजस्तूष्णोरक्तपित्तप्रकोपनः । चामरोवस्त्रसम्भूतोमायुरोवेत्रजस्तथा ॥ एतेदोषजितावाताः स्निग्धाःहृद्याःसुपूजिताः ॥ ५९ ॥

अधिक वायु युक्तस्थान रूक्षता विवर्णता तथा स्तंभकारक और दाह पित्त स्वेद मूर्छा तथा पिपासा नाशक होता है और वायु रहित स्थान इससे विपरीत गुणवाला होता है, ग्रीष्मऋतुसे शरत्काल पर्यन्त थोढ़ी २ सुख दायक वायुका सेवन करे, आयु और आरोग्य के निमित्त वायु रहित स्थानका सेवन करे, पूर्वदिशा की वायु गुरुउष्ण स्निग्ध पित्ततथा रुधिर की दूषक विदाही वादी पकेहुए तथा कफ रहित पुरुषोंको हितकारी स्वादु अर्थात् भोजन की वस्तुको मधुर करने वाली लवण रस युक्त अभिष्यन्दी और त्वचाके दोष बवासीर, विष, कृमि सन्निपात ज्वर, श्वास तथा आमवात उत्पन्न करने वाली होती है, दक्षिणदिशाकी वायु स्वादु रक्त पित्त नाशक लघुवीर्य में शीतल बलकारक और नेत्रोंको हितहोती है और बादी नहींहोती है, पश्चिम की वायुतीक्ष्ण सुखाने वाली बलनाशक लघुभारी और मेद कफ तथा पित्तकी नाश करने वाली होती है, उत्तर

दिशाकी वायु शीतल स्निग्ध रोगियों के दोषकी बढ़ाने वाली छेदन स्वस्थ पुरुषोंके बलकी बढ़ाने वाली मधुर और कोमल होती है, अग्नि कोणकी वायुदाह करने वाली और रुक्षहोती है, नैऋत कोण की वायु दाहकारक नहीं होती है, वायुकोणकी वायु तिक्तरस होती है- ईशान कोण की वायु कटुरस होती है चौवाई वायु आयुको हानिकारक और प्राणियों के अनेक रोगों की करने वाली होती है इसकारणसे उसका सेवन नहीं करना चाहिये क्योंकि इससे दुःख होता है, पंखे की वायु दाह स्वेद मूर्च्छा और श्रमनाशक होती है, ताडके पंखे की वायु त्रिदोष नाशक होती है,वांसके पंखे की वायु उष्ण और रक्त पित्त करने वाला होतीहै, चामर वस्त्र मोर पंख और वेतके पंखे की वायु त्रिदोष की नाशकरनेवाली स्निग्ध और हृदयको हितकारी होतीहै और चामर आदि इनकी वायु सबसे श्रेष्ठ कहीगई है, ॥ ५९ ॥

दिवास्वापंनकुर्व्वीतयतोऽसौस्यात्कफावहः ॥ ग्रीष्मवर्ज्येषु कालेषु दिवास्वप्नोनिषिध्यते। उचितोहिदिवास्वप्नो निस्येयेषांशरीरिणाम् ॥ वातादयःप्रकुप्यन्ति तेषामस्वपतांदिवा । व्यायामप्रमदाध्ववाहनरतान्क्लान्तानतीसारिणः शूलश्वासवतस्तृषापरिगतान्हिक्कामरुत्पीडितान् ॥ क्षीणान्क्षीणकफान्शिशून्मदहतान्वृद्धान्रसाजीर्णिनो । रात्रौजागरितान्नरान्निरशनान्कामंदिवास्वापयेत् ॥ दिवावायदिवारात्रौनिद्रासात्मीकृतातुयैः ॥ नतेषांस्वपतांदोषोजाग्रतांचोपजायते ॥ स्वपतांदिवा जाग्रतांरात्रौ भोजनानंतरं निद्रावातंहरतिपित्तहृत । कफंकरोतिवपुषःपुष्टिसौख्यन्तनोतिहि ॥ शयनंपित्तनाशाय वातनाशायमर्द्दनम् । वमनंकफनाशायज्वरनाशाय लङ्घनम् ॥ आसीनंचूर्णितंयत्सुनाभिष्पन्दिनरूक्षणम् ॥ ६० ॥

दिनको न सोने क्योंकि इससे कफ उत्पन्न होताहै परन्तु ग्रीष्मऋतु में दिनका सोना वर्जित नहींहै- और जिन मनुष्योंको सदैव दिनके सोनेका अभ्यासहै उनके दिनमें न सोने से वातादिकको पकरते हैं- व्यायाम मैथुन तथा मार्गचलने से व्याकुल अतीसार शूलश्वास तृषाहिचकी तथा वायुसें पीडित क्षीणअल्प कफवाले बालक मदसे पीडित वृद्ध अजीर्ण युक्त रात्रिमें जगेहुए और लंघन करने वाले पुरुषोंको दिनमें सोना उचितहै-जिन पुरुषोने दिनमें सोनेका और रात्रिमें जागने का अभ्यासकर लियाहै उनको इससे कोई दोषनहीं होताहै- भोजनके अन्तमें सोनेसे वातपित्तका नाशक कफकी वृद्धि और शरीरमें पुष्टता तथा सुख होताहै- पित्तके नाशके लिये शयनवायुके नाशके निमित्त अंगमर्दन कफके नाशके लिये वमन और ज्वरके नाशके लिये लंघनकरना चाहिये- बैठकर अंगमर्दन करवाना अभिष्पन्दी और रूक्ष नहीं होताहै ॥ ६० ॥

अपरानप्युदरेऽन्नस्य संस्थापनहेतूनाह॥

शब्दान्स्पर्शांश्चरूपाणिरसान्गन्धान्मनःप्रियान् । भुक्तवानपि सेवेततेनान्नंमाधुतिष्ठति ॥ उदरेइतिविशेषः ॥ ६१ ॥

उदरमेंअन्नस्थापन करनेके दूसरे कारण ॥

भोजनके उपरान्तमनके प्रियशब्द स्पर्श रूपरस और गन्धका सेवनकरे इससे अन्न उदरमें अच्छ प्रकार स्थित होजाता है ॥ ६१ ॥

अन्नस्योदरे ऽस्थितिहेतूनाह ॥

शब्दःस्पर्शस्तथारूपं रसोगन्धोजुगुप्सितः । भुक्तमप्रयतश्चान्नमतिहास्यञ्चवामयेत्॥ अप्रयतमपवित्रम् ॥ ६२ ॥

अन्नके उदरमेनठहरनेकेकारण ॥

भोजनके उपरान्त मनके अप्रिय शब्दस्पर्श रूपरस और गन्धके सेवनसे अपवित्र अन्नखाने से और बहुत हंसनेसे वमनहोजाताहै ॥ ६२ ॥

अन्यदपि वर्ज्जनीयमाह ॥

शयनंचासनञ्चाति नभजेन्नद्रवाधिकम् । नाग्न्यातपौनप्लवनंनयानंनापिवाहनम् ॥ प्लवनंबाहुभ्यांजलप्रतरणं यानंमार्गेचलनम्वाहनमश्वादि । व्यायामञ्च व्यवायञ्च धावनं यानमेवच ॥ युद्धंगीतञ्च पाठञ्चमुहूर्तंभुक्तवांस्त्यजेत् ॥ ६३ ॥

भोजनके उपरान्तत्यागकरनेके योग्यदूसरीबातें ॥

भोजनके उपरान्त सोना बैठना अत्यन्त पतली वस्तुका पीना अग्नि धूप तैरना मार्ग में चलना घोड़े आदिकों पर चढ़ना व्यायाममैथुन दौड़ना युद्ध गान करना और पढ़ना यह सब मुहूर्त भर त्यागकरदे ॥ ६३ ॥

परिवर्जनार्थमजीर्णस्यहेतूनाह ॥

अत्यम्बुपानाद्विषमाशनाच्चसन्धारणात्स्वप्नविपर्य्ययाच्च ॥ कालेऽपिसात्म्यं लघुचापि भुक्तमन्नंनपाकं भजतेनरस्य । ईर्ष्याभयक्रोधसमान्वितेनलुब्धेनरुग्दैन्यनिपीडितेन ॥ विद्वेषयुक्तेनचसेव्यमानमन्नं नसम्यक्परिपाकमेति ॥ सन्धारणात् । अधोवातमलमूत्रादीनाम् ॥ ६४ ॥

त्यागकरदेनेके निमित्तअजीर्णके कारणोंका वर्णन ॥

बहुतजल पीना विषम भोजन करना मलमूत्रादि वेगोंकारोकना और दिनमें सोना इनकारणों से मनुष्यका समय अनुसार भीसात्म्य और लघुभोजन कियागया अन्न परिपाकको नहीं प्राप्तहोता है- ईर्ष्याभय क्रोध तथा लोभयुक्त रोगतथा दीनतासे पीडित और द्वेषयुक्त पुरुषका भोजन किया हुवा अन्न अच्छे प्रकारसे परिपाकको नहीं प्राप्तहोता है ॥ ६४ ॥

अध्यशन लक्षणमाह ॥

अजीर्णेभुज्यतेयत्तुतदध्यशनमुच्यते।तन्निवारयन्नाह । प्राग्भुक्ते चानलेमन्देद्विरह्नोन समाहरेत् ॥ अस्यायमर्थः प्रातर्भुक्तेऽजीर्णे सति । अहन्येवपुनर्नभुञ्जीतइत्यर्थः । रात्रौ पुनस्तथापिसति भुञ्जीतैव ॥ यतआहसुश्रुतएव । प्रातराशेत्वजीर्णेतुसायमाशेतुदुष्यतीति ॥ पूर्वंभुक्ते विदग्धेऽन्नेभुञ्जानोहन्तिपावकान् । अस्यत्वयमर्थः । पूर्वभुक्तेरात्रिभुक्तेऽन्नेविदग्धेकिञ्चिदपकेप्रातर्भुञ्जानः पावकंहन्तीत्यर्थःयतआह सायमाशेत्वजीर्णेतुप्रातर्भुक्तंविषोपममिति ॥ ६५ ॥

अध्यशनका लक्षण ॥

अजीर्णमें भोजन करनेको अध्यशन कहतेहैं (अबउसका निवारण करतेहैं)कि प्रातःकाल भोजन करनेसे जो अजीर्णहोय तो दिनको फिर न खाय और रात्रिमें भोजनकरनेसेकोई दोषनहींहै क्योंकि सुश्रुतने कहा हैकि प्रातःकाल किये हुये भोजन के परिपाक न होने पर सायंकाल को भोजन करै और रात्रि काकिया भोजन यदि अच्छी रीतिसे परिपाकको न प्राप्तहोय तो दूसरे दिन प्रातःकाल भोजनकरने से अग्नि नष्ट होजाती है क्योंकि कहा गयाहै कि रात्रिके कियेहुए भोजन के अजीर्ण होनेपर दूसरे दिन प्रातःकालको भोजन विष तुल्यहै ॥ ६५ ॥

सायमाशाजीर्णे भोजनोपायमाह ॥

भवेद्यदिप्रातरजीर्णशङ्का तदाभयांनागरसैन्धवाभ्याम् । विचूर्णितांशीतजलेनभुक्त्वा भुञ्जीतचान्नंमितमन्नकाले ॥ ६६ ॥

रात्रिकेभोजनसे हुए अजीर्णमें भोजनका उपाय ॥

यदि प्रातःकाल अजीर्णका सन्देह होयतो सोंठ सेंधानोन और हड़ इनके चूर्णको शीतलजलके साथ भक्षण करके भोजनके समयपर थोड़ासा भोजनकरै ॥ ६६ ॥

आयुःक्षयभयाद्विद्वान्नाह्निसेवेतकामिनीम् । अवशोयदिसेवेततदाग्रीष्मवसन्तयोः ॥ अवशःअजितेन्द्रियः ॥ ६७ ॥

पंडित दिनमें स्त्रीसंसर्ग (मैथुन) न करै और यदि इन्द्रियके वशीभूत होकर करै तो केवल ग्रीष्म और वसन्त ऋतुमेंही करै ॥ ६७ ॥

आस्यावर्णकफस्थौल्यसौकुमार्य्यसुखप्रदाः । अध्वा वर्णकफस्थौल्यसौकुमार्य्यविनाशनः ॥ यत्तुचंक्रमणंनाति देहपीड़ाकरंभवेत् । तदायुर्बलमेधाग्निप्रदमिन्द्रियबोधनम् ॥ ६८ ॥

बैठेरहने से कफस्थूलता सुकुमारता और सुखहोताहै मार्गमें चलने से कफ स्थूलता और सुकुमारताका नाशहोताहै- शरीरको विना बहुत पीड़ादिये धीरे२ चलनेसे आयु बल मेधा तथा अग्निकी वृद्धि और इन्द्रियों में चैतन्यता होती है ॥ ६८ ॥

उष्णीषंकान्तिकृत्केश्यं रजोवातकफापहम् । लघुतच्छस्यतेयस्माद गुरुपित्ताक्षिरोगकृत् ॥ ६९ ॥

पगड़ी कान्तिवर्द्धक केशोंको हितकारी धूलिवायु और कफकी नाशकर ने वाली होती है परन्तु हलकी पगड़ी धारण करनी चाहिये क्योंकि भारीपगड़ी पित्त और नेत्रके रोगोंको उत्पन्नकरतीहै॥६९॥

उपानद्धारणंनेत्र्यमायुष्यंपादरोगहृत्।सुखप्रचारमोजस्यंवृष्यञ्चपरिकीर्त्तितम्॥पादाभ्यामनुपानद्भ्यांसदा चंक्रमणंनृणाम् । अनारोग्यमनायुष्यमिन्द्रियघ्नमदृष्टिदम् ॥७०॥

जूतोंके पहिरनेसे नेत्रोंको हित आयुकी वृद्धिपैरोंके रोगोंकानाश सुखकी प्राप्ति और ओज तथा वीर्यकी वृद्धि होतीहै ॥ ७० ॥

छत्रस्यधारणंवर्षातपवातरजोऽपहम्।हिमघ्नंहितमक्ष्णोश्चमांगल्यमपिकीर्त्तितम् ॥७१॥

अन्नस्योदरे ऽस्थितिहेतूनाह ॥

शब्दःस्पर्शस्तथारूपं रसोगन्धोजुगुप्सितः । भुक्तमप्रयतञ्चान्नमतिहास्यञ्चवामयेत्॥ अप्रयतमपवित्रम् ॥ ६२ ॥

अन्नके उदरमेंनठहरनेकेकारण ॥

भोजनके उपरान्त मनके अप्रिय शब्दस्पर्श रूपरस और गन्धके सेवनसे अपवित्र अन्नखाने से और बहुत हंसनेसे वमनहोजाताहै ॥ ६२ ॥

अन्यदपि वर्ज्जनीयमाह ॥

शयनंचासनञ्चाति नभजेन्नद्रवाधिकम् । नाग्न्यातपौनप्लवनंनयानंनापिवाहनम् ॥ प्लवनंबाहुभ्यांजलप्रतरणं यानंमार्गेचलनम्वाहनमश्वादि । व्यायामञ्च व्यवायञ्च धावनं यानमेवच ॥ युद्धंगीतञ्च पाठञ्चमुहूर्तंभुक्तवांस्त्यजेत् ॥ ६३ ॥

भोजनके उपरान्तत्यागकरनेके योग्यदूसरीबातें ॥

भोजनके उपरान्त सोना बैठना अत्यन्त पतली वस्तुका पीना अग्नि धूप तैरना मार्ग में चलना घोड़े आदिकों पर चढ़ना व्यायाममैथुन दौड़ना युद्ध गान करना और पढ़ना यह सब मुहूर्त भर त्यागकरदे ॥ ६३ ॥

परिवर्जनार्थमजीर्णस्यहेतूनाह ॥

अत्यम्बुपानाद्विषमाशनाच्चसन्धारणात्स्वप्नविपर्य्ययाच्च ॥ कालेऽपिसात्म्यं लघुचापिभुक्तमन्नंनपाकं भजतेनरस्य । ईर्ष्याभयक्रोधसमन्वितेनलुब्धेनरुग्दैन्यनिपीड़ितेन ॥ विद्वेषयुक्तेनचसेव्यमानमन्नं नसम्यक्परिपाकमेति ॥ सन्धारणात् । अधोवातमलमूत्रादीनाम् ॥ ६४ ॥

त्यागकरदेनेके निमित्तअजीर्णके कारणोंका वर्णन ॥

बहुतजल पीना विषम भोजन करना मलमूत्रादि वेगोंकारोकना और दिनमें सोना इनकारणों से मनुष्यका समय अनुसार भीसात्म्य और लघुभोजन कियागया अन्न परिपाकको नहीं प्राप्तहोता है- ईर्ष्याभय क्रोध तथा लोभयुक्त रोगतथा दीनतासे पीड़ित और द्वेषयुक्त पुरुषका भोजन किया हुवा अन्न अच्छे प्रकारसे परिपाकको नहीं प्राप्तहोता है ॥ ६४ ॥

अध्यशन लक्षणमाह ॥

अजीर्णेभुज्यतेयत्तुतदध्यशनमुच्यते।तन्निवारयन्नाह । प्राग्भुक्ते चानलेमन्देद्विरन्नंन समाहरेत् ॥ अस्यायमर्थः प्रातर्भुक्तेऽजीर्णे सति । अहन्येवपुनर्नभुञ्जीतइत्यर्थः । रा पुनस्तथापिसति भुञ्जीतैव ॥ यतश्चाहसुश्रुतएव. । प्रातराशेत्वजीर्णेतुसायमा प्यतीति ॥ पूर्वंभुक्ते विदग्धेऽन्नेभुञ्जानोहन्तिपावकान् । अस्यत्वयमर्थः । पूर्वभु भुक्तेअन्नेविदग्धेकिञ्चित्पक्वेप्रातर्भुञ्जानः पावकंहन्तीत्यर्थःयतश्चाह सायमा र्णेतुप्रातर्भुक्तंविषोपममिति ॥ ६५ ॥

.त्रां क्षौद्रंनचाप्यघृतशर्करम्॥जनस्याशयमालक्ष्य योयथापरितुष्यति । तत्तथैवानुवर्त्तेत पराराधनपण्डितः॥ नैकःसुखीनसर्वत्र विश्वस्तोनचशंकितः । नोद्यमेविरमेत्क्वापि हेतावीर्ष्येत्फलेनतु॥ (हेतौफलहेतौ। उद्यमेफले धनादौ) वेगान्नधारयेज्जातु मनोवेगान्विधारयेत् । नपीडयेदिंद्रियाणि नचैतानतिलालयेत् ॥ वर्षातपादिपुच्छत्री दण्डीरात्रौभयेषुच। सोपानत्कस्तनुंरक्षेत् विचरेद्युगमात्रदृक्॥ युग मात्रदृक् अग्रतो हस्त चतुष्टयामितां भूमिंपश्यन्। नदीन्तरेन्नबाहुभ्यान्नाग्निस्कन्धमभिव्रजेत् ॥ संदिग्धनावंवृक्षञ्च नारोहेद्दुष्टयानकम्। दुष्टयानं दुष्टगज घोटकादि ॥ ७५ ॥

आचारका वर्णन ॥

मित्रता सज्जनतथा असज्जनदोनोंके साथकरे परन्तु सज्जनोंके साथ मन वचन कर्मसे मित्रता करनी उचितहै साधुओंका संसर्ग करे और असत्संग छोड़दे देवता ब्राह्मण वृद्ध वैद्यराजा और अतिथियों की सेवा करे याचकोंको विमुख और किसीका अनादर न करे गुरुओंके समीप सदैव विनय पूर्वक रहना चाहिये और उनके निकट पैर फैलाना आदि उद्दण्डता न करे अपकार करनेवालेसे भी उपकार करे सबको अपने समानदेखे और शत्रुसे दूर रहे किसी को अपना शत्रु तथा अपने को किसी का शत्रु अपमान और स्वामी की अप्रीति (नाराजी) को प्रकट न करे जल में अपनी छायान देखे नग्नहोकर जलमें प्रवेश न करे और जिसकी गहराई न मालूम तथा जिसमें हिंसक जीवरहते हों ऐसे जलमें प्रवेश न करे, समय के अनुसार हितकारी थोड़ा सत्य संगत और मधुर भाषण करे, भोजनके समयमें प्रायः मधुर स्निग्ध हित और थोड़ा भोजन करे, रात्रि में दही न खाय और यदि खाय तो लवण मूंगकी दाल सहत घृत औरशर्करा मिलाकर खाय दूसरेके प्रसन्न करनेसे चतुरपुरुष लोगोंके आशय को जानकर जो जिससे प्रसन्न होताहो उसके साथ वैसाही वर्ताव करै, आपही अकेला सुखी न होवै सब लोगोंपर विश्वास और सबपर सन्देह न करे, उद्यमसे कभी विरत न होय हेतुमें ईर्षाकरे परन्तु फलमें कदापि न करे अर्थात् किसी पुरुषको ऐश्वर्य्यवान् देखकर ऐश्वर्य्य में ईर्षा न करेपरन्तु जिन विद्यादि कारणोंसे ऐश्वर्य्यहुआहै उनमें यह ईर्षा करनीचाहिये कि वहीकाम मैंभी करूं जिससे ऐश्वर्यवान् होजाऊं मलमूत्रादि वेगोंको न धारण करे और मनके वेगको रोके इन्द्रियोंको न बहुतकष्टदे और अत्यन्त उनकालालनन करे वर्षा और गरमीकी ऋतुमें छत्र और रात्रि तथा भयके स्थानमें दंड धारणकरे जूतेसे चरणोंकी रक्षाकरे मार्गचलनेके समय चारहाथ आगेकी पृथ्वी देखकर चलेभुजाओंसे पैरकर नदीके पारनजाय जहां अग्नि लगीहो उस के सन्मुख न जाय, जिस नौकाके टूटनेका सन्देहहो उसपर वृक्षपर और दुष्ट हाथी घोड़े आदि सवारियोंपरन चढ़े॥७५॥

नासंवृतमुखंकुर्य्यात्सभायाञ्चविचक्षणः । कासंश्वासंतथोद्गारंजृम्भणंक्षवथुस्तथा॥ नासिकांनविकुष्णीयान्नासीतोत्कटुकःक्वचित् । नोर्ध्वजानुश्चिरंतिष्ठेन्ननखेनलिखेद्भुवम ॥ सम्मार्ज्जनीरसोनैव देहेदद्यात्कदाचन । ननखेनतृणंच्छिन्द्या न्नोच्छिष्टोब्राह्मणंस्पृशेत् ॥ नोपरक्तंनचोद्यन्तं नास्तंयातंदिवाकरम् । सर्वथानसमीक्ष्येत नजलेप्रतिबिम्बितम्॥ नेक्ष्येतसततंसूक्ष्मं दीप्तामेध्याप्रियाणिच । पौरंदरंधनुर्नैव दर्शयेत्कर्माचिक्

छत्रधारण वर्षा धूप धूलि तथा हिमकानाशक नेत्रोंको हित और मंगलकारी होताहै ॥ ७१ ॥

सत्वोत्साहबलस्थैर्य्य धैर्य्यतेजोविवर्द्धनम् । अवष्टम्भकरञ्चापि भयघ्नं दण्ड धारणम् ॥ ७२ ॥

दंडका धारण सत्व उत्साह बल स्थिरता शूरता तेजकीवृद्धि अवलम्ब देनेवाला और भयका नाशक होता है ॥ ७२ ॥

ऊर्ध्वाच्छादनसंयुक्ताशिविकासर्वबल्लभा । तस्यामारोहणंनृणांत्रिदोषशमकंमतम् ॥ वातश्लेष्ममदार्त्तानां महिताश्रमकृत्तरिः । पित्तानिलकरोहस्ती लक्ष्म्यायुःपुष्टिवर्द्धनः ॥ घोटकारोहणंवातपित्ताग्निश्रमकृन्मतम् । मेदोवर्णकफघ्नञ्चहितंतद्बलिनांपरम् ॥७३ ॥

घटाटोप पालकी सबको प्रियहोतीहै और इसपर चढ़ने से मनुष्यों के त्रिदोष नाशहोतेहैं वात श्लेष्मा के रोगोंसे व्याकुल मनुष्योंको नावका चढ़ना हानि कारक होताहै और इससे श्रमभी होताहै हाथीपर चढने से पित्त वायु लक्ष्मी आयु और पुष्टताकी वृद्धिहोतीहै घोड़ेपर चढ़ना वातपित्त अग्नि और श्रम करनेवाला और मेदवर्ण तथा कफका नाशक होताहै और यह बलवान पुरुषोंको अत्यन्त हितहोताहै ॥ ७३ ॥

आतपस्वेदमूर्च्छास्र पित्ततृष्णाक्लमश्रमान् । दाहंविवर्णतांकुर्य्यादेतान्छायाव्यपोहति ॥ वृष्टिर्वृष्याहिमाबल्यानिद्रालस्यविधायिनी । भयावहामोहकरीकुहेतिःकफवातला ॥ कुहेतिःकुहेराह्वातिलोके अग्निवातकफस्तम्भशीतवेपथुनाशनः । आमाभिष्यन्दिशमनोरक्तपित्तप्रकोपनः ॥ सद्यःश्लेष्मकरोधूमोनेत्रयोरहितोभृशम् । शिरोगौरवकृच्चापि वातपित्तप्रकोपयेत् ॥ ७४ ॥

आतप (धूप) से स्वेद मूर्च्छा रक्त पित्तग्लानि श्रमदाह और विवर्णता उत्पन्नहोती है और छायासे इनसबका नाशहोताहै वृष्टिसे वीर्य्य शीतलता बल निद्रा और आलस्यहोताहै को हरेसे भय मोह और कफ तथा वायु की वृद्धिहोतीहै अग्निसे वायु कफ स्तम्भशीत और कंपका नाशआम तथा अभिष्यन्दकी शान्ति और रक्त पित्तका कोप होताहै धूमसे शीघ्र कफ की उत्पत्ति नेत्रों को अत्यन्त अहित शिरमें भारीपन और वायु पित्तका कोप होताहै ॥ ७४ ॥

अथाचारः ॥

मैत्रींसद्भिःसमंकुर्यात् स्नेहंसत्सुतुसर्वथा । संसर्गंसाधुभिःकुर्यादसत्संगंपरित्यजेत् ॥ सत्सुसर्वथासज्जनपुमनोवाक्कर्मभिः । सेवेतदेवभूदेववृद्धवैद्यनृपातिथीन् । विमुखान्नार्थिनःकुर्य्यान्नावमन्येतकानपि ॥ गुरूणांसन्निधौतिष्ठेत्सदैवविनयान्वितः । पादप्रसारणादीनितत्रनैवसमाचरेत् ॥ अपकारपरेऽपिस्यादुपकारपरःपुमान् । आत्मवत्सकलान्पश्येद्वैरिणोदूरतोवसेत् ॥ नकिञ्चिदात्मनःशत्रुन्नात्मानंकस्यचिद्रिपुम् । प्रकाशयेन्नापमानंनचनिस्नेहतांप्रभोः ॥ नात्मानमुदकेपश्येन्न नग्नःप्रविशेज्जलम् । तथानाज्ञातगाम्भीर्य्यं नहिंस्रप्राणिसेवितम् ॥ कालेहितंमितंसत्यं सम्वादिमधुरंवदेत् । भुञ्जीतमधुरप्रायं स्निग्धंकालेहितंमितम् ॥ नरात्रौदधिभुञ्जीत नचनिर्लवणंतथा। नामुद्गसूप

.त्रं क्षौद्रंनचाप्यघृतशर्करम्॥जनस्याशयमालक्ष्य योयथापरितुष्यति । तत्तथैवानुवर्त्तेत पराराधनपण्डितः॥ नैकःसुखीनसर्वत्र विश्वस्तोनचशंकितः । नोद्यमेविरमेत्क्कापि हेतावीर्षेत्फलेनतु॥ (हेतौफलहेतौ । उद्यमेफले धनादौ) वेगान्नधारयेज्जातु मनोवेगान्विधारयेत् । नपीड़येदिंद्रियाणि नचैतानतिलालयेत् ॥ वर्षातपादिपुच्छत्री दण्डीरात्रौभयेपुच । सोपानत्कस्ततनुंरक्षेत् विचरेद्युगमात्रदृक्॥ युग मात्रदृक् अग्रतो हस्त चतुष्टयमितां भूमिंपश्यन् । नदींन्तरेन्नबाहुभ्यान्नाग्निस्कन्धमभिव्रजेत् ॥ संदिग्धनावंवृक्षञ्च नारोहेद्दुष्टयानकम् । दुष्टयानं दुष्टगज घोटकादि ॥ ७५ ॥

आचारका वर्णन ॥

मित्रता सज्जनतथा असज्जनदोनोंके साथकरे परन्तु सज्जनोंके साथ मन वचन कर्मसे मित्रता करनी उचितहै साधुओंका संसर्ग करै और असत्संग छोड़दे देवता ब्राह्मण वृद्ध वैद्यराजा और अतिथियों की सेवा करै याचकोंको विमुख और किसीका अनादर न करै गुरुओंके समीप सदैव विनय पूर्वक रहना चाहिये और उनके निकट पैर फैलाना आदि उद्दण्डता न करै अपकार करनेवालेसे भी उपकार करै सबको अपने समानदेखे और शत्रुसे दूर रहै किसी को अपना शत्रु तथा अपने को किसी का शत्रु अपमान और स्वामी की अप्रीति (नाराजी) को प्रकट न करे जल में अपनी छायान देखे नग्नहोकर जलमें प्रवेश न करे और जिसकी गहराई न मालूम तथा जिसमें हिंसक जीवरहते हों ऐसे जलमें प्रवेश न करे, समय के अनुसार हितकारी थोड़ा सत्य संगत और मधुर भाषण करे, भोजनके समयमें प्रायः मधुर स्निग्ध हित और थोड़ा भोजन करे, रात्रि में दही न खाय और यदि खाय तो लवण मूंगकी दाल सहत घृत औरशर्करा मिलाकर खाय दूसरेके प्रसन्न करनेसे चतुरपुरुष लोगोंके आशय को जानकर जो जिससे प्रसन्न होताहो उसके साथ वैसाही वर्ताव करै, आपही अकेला सुखी न होवे सब लोगोंपर विश्वास और सबपर सन्देह न करे, उद्यमसे कभी विरत न होय हेतुमें ईर्षाकरै परन्तु फलमें कदापि न करै अर्थात् किसी पुरुषको ऐश्वर्य्यवान् देखकर ऐश्वर्य्य में ईर्षा न करैपरन्तु जिन विद्यादि कारणोंसे ऐश्वर्य्यहुआहै उनमें यह ईर्षा करनीचाहिये कि यहीकाम मैंभी करूं जिस्से ऐश्वर्यवान् होजाऊं मलमूत्रादि वेगोंको न धारण करे और मनके वेगको रोंके इन्द्रियोंको न बहुतकष्टदे और अत्यन्त उनकालालनन करे वर्षा और गरमीकी ऋतुमें छत्र और रात्रि तथा भयके स्थानमें दंड धारणकरे जूतेसे चरणोंकी रक्षाकरे मार्गचलनेके समय चारहाथ आगेकी पृथ्वी देखकर चले भुजाओंसे पैरकर नदीके पारनजाय जहां अग्नि लगीहो उस के सन्मुख न जाय, जिस नौकाके टूटनेका सन्देहहो उसपर वृक्षपर और दुष्ट हाथी घोड़े आदि सवारियोंपरन चढ़े॥७५॥

नासंवृतमुखंकुर्य्यात्समायाञ्चाविचक्षणः । कासंश्वासंतथोद्गारंजृम्भणंक्षवथुस्तथा॥ नासिकांनविकुष्णीयान्नासीतोत्कटुकःक्कचित् । नोर्ध्वजानुचिरंतिष्ठेन्नखेनलिखेद्भुवम् ॥ सम्मार्ज्जनीरजोनैव देहेदद्यात्कदाचन । ननखेनतृणंच्छिन्द्या न्नोच्छिष्टोब्राह्मणंस्पृशेत् ॥ नोपरक्तंनचोद्यन्तं नास्तंयातंदिवाकरम् । सर्वथानसमीक्ष्येत नजलेप्रतिबिम्बितम्॥ नेक्ष्येतसततंसूक्ष्मं दीप्तामेध्याप्रियाणिच । पौरंदरंधनुर्नैव दर्शयेत्कस्यचित्क

चित् ॥ नेच्छद्‌बलवतायुद्धं नभारंशिरसावहेत् । गात्रंनवादयेत्केशान् हस्तेनधुनुयान्न च ॥ नगच्छेत्पूज्ययोर्मध्ये दम्पत्योरन्तरणेच । रिपोरन्नंनभुञ्जीत गणिकान्नमपिक्वचित् ॥ प्रतिभूर्नभवेत्क्वापि नचसाक्षीतथाभवेत् । (प्रतिभूः जामिनः) स्थागीन्नधारयेज्जातुद्यूतंदूरात्परित्यजेत् । (स्थागीथाती) विश्वासंनाचरेत् स्त्रीणांताः स्वतंत्राश्च नाचरत् । रक्षणीयाःसदायत्ना यौवनेतुविशेषतः ॥ नभिन्नेशयनेसुप्या स्थानेकविवरेऽपि च । नैकोदेवालयेनैव रात्रौतरुतलेऽपिच ॥ एवंदिनानिगमयेत् सदाचारपरःसदा । ततोरात्रिप्रयुक्तानि कुर्य्यात्कर्म्माणिमानवः ॥ इत्याचारंसमासेन भापितंयःसमाचरेत् । सविन्दत्यायुरारोग्यं प्रीतिंधर्म्मंधनंयशः ॥ ७६ ॥

बुद्धिमान् पुरुष सभामें मुखको बिना वन्द किये खांसी श्वास डकार जंभाई और छींक यह न करै नाककोनकुरेदे उकडू न बैठे, बहुत देरतकघुटनेको ऊपर करके न बैठे नखोंसे पृथ्वी परन लिखे बुहारी और बुहारीकी धूलका स्पर्श न करे नखों से तिनके न तोड़े न काटे जूंठे मुखसे ब्राह्मण को न छुए ग्रहण के समय उदय और अस्तके समय सूर्य्य को कभी न देखे और जल में दिखाई देने वाले सूर्य्य के प्रति बिम्बको न देखे सूक्ष्म जलती हुई अपवित्र और अप्रिय वस्तुको लगातार न देखे किसी को इन्द्रका धनुष न दिखावे बलवान् शत्रुसे युद्ध न करे शिरपर बोझानले चले अंगोंको न चलावे हाथ से बालोंको न बहावे दोपूज्य पुरुष और स्त्री पुरुषोंके मध्यमें न जाय शत्रु और वेश्या के अन्नको कभी नखाय किसीकी जमानत न करे और व्यर्थ किसी का साक्षी भी नहो किसी की धरोहड़ न रक्खे जुआंको दूरसे छोड़दे स्त्रियोंका विश्वास न करे और उनको स्वतंत्र न करे स्त्रियोंकी सदैव रक्षाकरे और युवावस्था में विशेष करे स्त्री से पृथक् शय्यापर न सोवे बहुत पुरुषों से युक्त स्थानमें स्त्री को न रक्खे रात्रिके समय अकेला देवता के स्थानमें और वृक्ष के नीचे न जाय इसप्रकार सदा चार में प्रवृत्त होकर दिनोंको व्यतीत करे इस के उपरान्त रात्रिके योग्य कार्य्यों को करे इस संक्षेप से कहे हुए आचार को जो मनुष्य करताहै वह आयु आरोग्यधन यशधर्म और प्रीतिको प्राप्त होताहै ॥ ७६

अथ सन्ध्यायां निषिद्धानि कर्माण्याह ।

एतानिपञ्चकर्म्माणि सन्ध्यायांवर्ज्जयेद्‌बुधः । आहारंमैथुनंनिद्रां सम्पाठंगतिमध्वनि ॥ भोजनाज्जायतेव्याधिं मैथुनाद्‌गर्भवैकृतिम् । निद्रायाःनिःस्वनापाठा दायुर्हानिर्गतेर्भयम् ॥ ७७ ॥

संध्यामें निषिद्ध कर्म्म ॥

आहार मैथुन निन्द्रा पढ़ना मार्ग गमन यह पांच कार्य्य संध्याके समय पंडितोंको त्यागने योग्य हैं क्योंकि भोजन करने से व्याधि मैथुन से गर्भमें विकार निद्रासे दरिद्रता पढ़ने से आयुकीहानि और गमन करनेसे भय उत्पन्न होताहै ॥ ७७ ॥

अथ रात्रिचर्य्यामाह ।

ज्योत्स्नाशीतास्मरानन्द प्रद्रातृट्पित्तदाहहृत् । ततोहीनगुणाःकुर्य्या द्वश्यायोऽनिलक्फम ॥ ७८ ॥

रात्रिचर्य्या ॥

चांदनी शीतल कामोद्दीपक और पित्ततृषा तथा दाहकी नाशकरने वाली होती है- पाला इस्से गुणोंमें न्यून होताहै और वायुकफके दोषोंको बढ़ाता है ॥ ७८ ॥

तमोभयावहंमोहदिङ्मोहजनकम्भवेत् । पित्तहृत्कफहृत्कामवर्द्धनंक्लमकृच्चतत् ॥७६॥

अंधकारसे भय मोह दिग्भ्रमपित्ततथा कफकानाश कामकी वृद्धि और शरीरमेंग्लानि होतीहै ॥७६॥

रात्रौचभोजनंकुर्य्यात् प्रथमप्रहरान्तरे । किंचिदूनंसमश्नीयात् दुर्जरंन्तत्रवर्ज्जयेत् ॥ शरीरेजायतेनित्यं देहिनःसुरतस्पृहा । अव्यवायान्मेहमेदोवृद्धिःशिथिलता तनोः॥ वालेतिगीयतेनारी यावद्वर्षाणिषोडशः । ततस्तुतरुणीज्ञेया द्वात्रिंशद्वत्सरावधि ॥ तदूर्ध्वमधिरूढ़ास्यात् पञ्चाशद्वत्सरावधि । वृद्धातत्परतोज्ञेया सुरतोत्सवविर्ज्जिता ॥ (अधिरूढ़ा प्रौढ़ा) निदाघशरदोर्वाला हिताविषयिणांमता । तरुणीशीतसमये प्रौढ़ावर्षावसन्तयोः ॥ ८० ॥

रात्रिके समय प्रथम पहरमेंही कुछ न्यून भोजन करे और कठिनतासे पचनेके योग्य भोजन न करे मनुष्यों के शरीर में नित्य मैथुन की इच्छा होतीहै इसके रोकने से प्रमेह मेद वृद्धि और शरीरकी शिथिलता होती है सोलह वर्ष की स्त्री वाला सोलह से बत्तीसतक तरुणी बत्तीस से पचास तक प्रौढ़ा और इसके उपरान्त वृद्धाकही जाती हैं यह वृद्धास्त्री मैथुन में वर्जितहै ग्रीष्म और शरत्काल में बालास्त्री शीतकालमें तरुणी और वर्षा तथा बसन्त ऋतुमें प्रौढ़ास्त्रीमैथुनके लिये श्रेष्ठहै ॥८०॥

नित्यम्बालासेव्यमाना नित्यम्वर्द्धयतेवलम् । तरुणीह्रासयेच्छक्तिं प्रौढ़ोद्भावयते जराम् ॥ ८१ ॥

बालास्त्री के नित्य सेवनकरने से बलकी वृद्धिहोतीहै तरुणी स्त्रीके साथ मैथुन करनेसे शक्तिकी हानिहोतीहै और प्रौढ़ा स्त्री के साथ मैथुनकरने से शरीर रोग ग्रस्तहोताहै ॥ ८१ ॥

सद्योमांसन्नवञ्चान्नं वालास्त्रीक्षीरभोजनम् । घृतमुष्णोदकेस्नानं सद्यःप्राणकराणिषट् ॥ ८२ ॥

ताजा मांस नवीनअन्न बाला स्त्री घृत दुग्धका भोजन और गरम जल से स्नान इन छःबातों से शीघ्र बल उत्पन्नहोताहै ॥ ८२ ॥

पूतिमांसंस्त्रियोवृद्धा वालार्कस्तरुणोदधि । प्रभातेमैथुनंनिद्रा सद्यःप्राणहराणिषट्॥ प्राण शब्दोऽत्र बलवाचकः वालार्कः कन्यार्कः ॥ ८३ ॥

सड़ा मांस वृद्धा स्त्री कन्याके सूर्य्य ताजादही प्रातःकालमैथुन और निद्रा यह छः शीघ्र बलके नाशकरने वाले हैं ॥ ८३ ॥

वृद्धोऽपितरुणींगत्वा तरुणत्वमवाप्नुयात् । वयोऽधिकांस्त्रियंगत्वा तरुणःस्थविरायत ॥ आयुष्मन्तोमन्दजरा वपुर्वर्णबलान्विताः । स्थिरोपचितमांसाश्च भवन्तिस्त्रीषु संयताः ॥ ८४ ॥

चित् ॥ नेच्छद्बलवतायुद्धं नभारंशिरसावहेत् । गात्रंनवादयेत्केशान् हस्तेनधुनुयान्नच ॥ नगच्छेत्पूज्ययोर्मध्ये दम्पत्योरन्तरेणच । रिपोरन्नंनभुञ्जीत गणिकान्नमपिक्वचित् ॥ प्रतिभूर्नभवेत्क्वापि नचसाक्षीवृथाभवेत् । (प्रतिभूः जामिनः) स्थागीन्नधारयेज्जातुघृतंदूरात्परित्यजेत् । (स्थागीथाती) विश्वासंनाचरेत् स्त्रीणांनाः स्वतंत्राश्च नाचरत् । रक्षणीयाःसदायत्ना यौवनेतुविशेषतः ॥ नभिन्नेशयनेसुप्या स्थानेकविवरेऽपिच । नैकोदेवालयेनैव रात्रौतरुतलेऽपिच ॥ एवंदिनानिगमयेत् सदाचारपरःसदा । ततोरात्रिप्रयुक्तानि कुर्य्यात्कर्म्माणिमानवः ॥ इत्याचारंसमासेन भाषितंयःसमाचरेत् । सविन्दत्यायुरारोग्यं प्रीतिंधर्म्मंधनंयशः ॥ ७६ ॥

बुद्धिमान् पुरुष सभामें मुखको विना वन्द किये खांसी श्वास डकार जंभाई और छींक यह न करै नाककोनकुरेदे उकडू न बैठे, बहुत देरतकघुटनेको ऊपर करके न बैठे नखोंसे पृथ्वी परन लिखे बुहारी और बुहारीकी धूलका स्पर्श न करे नखों से तिनके न तोड़े न काटे जूंठे मुखसे ब्राह्मण को न छुए ग्रहण के समय उदय और अस्तके समय सूर्य्य को कभी न देखे और जल में दिखाई देने वाले सूर्य्य के प्रति विम्बको न देखे सूक्ष्म जलती हुई अपवित्र और अप्रिय वस्तुको लगातार न देखे किसी को इन्द्रका धनुष न दिखावे बलवान्शत्रुसे युद्ध न करे शिरपर बोझानले चले अंगोंको न बजावे हाथ से बालोंको न बहावे दोपूज्य पुरुष और स्त्री पुरुषोंके मध्यमें न जाय शत्रु और वेश्या के अन्नको कभी नखाय किसीकी जमानत न करे और व्यर्थ किसी का साक्षी भी नहो किसी की धरोहड़ न रक्खे जुआको दूरसे छोड़दे स्त्रियोंका विश्वास न करे और उनको स्वतंत्र न करे स्त्रियोंकी सदैव रक्षाकरे और युवावस्था में विशेष करे स्त्री से पृथक् शय्यापर न सोवे बहुत पुरुषों से युक्त स्थानमें स्त्री को न रक्खे रात्रिके समय अकेला देवता के स्थानमें और वृक्ष के नीचे न जाय इसप्रकार सदा चार में प्रवृत्त होकर दिनोंको व्यतीत करे इस के उपरान्त रात्रिके योग्य कार्य्यों को करे इस संक्षेप से कहे हुए आचार को जो मनुष्य करताहै वह आयु आरोग्यधन यशधर्म और प्रीतिको प्राप्त होताहै ॥ ७६

अथ सन्ध्यायां निषिद्धानि कर्माण्याह ।

एतानिपञ्चकर्म्माणि सन्ध्यायांवर्ज्जयेद्बुधः । आहारंमैथुनंनिद्रां सम्पाठंगतिमध्वनि ॥ भोजनाज्जायतेव्याधिं मैथुनाद्गर्भवैकृतिम् । निद्रायाःनिःस्वनापाठा दायुर्हानिर्गतेर्भयम् ॥ ७७ ॥

संध्यामें निषिद्ध कर्म्म ॥

आहार मैथुन निन्द्रा पढ़ना मार्ग गमन यह पांच कार्य्य संध्याके समय पंडितोंको त्यागने योग्य हैं क्योंकि भोजन करने से व्याधि मैथुन से गर्भमें विकार निद्रासे दरिद्रता पढ़ने से आयुकीहानि और गमन करनेसे भय उत्पन्न होताहै ॥ ७७ ॥

अथ रात्रिचर्य्यामाह ।

ज्योत्स्नाशीतास्मरानन्द प्रह्लादप्रपित्तदाहहृत् । ततोहीनगुणं कुर्य्या दवश्यायोऽनिलङ्कफम ॥ ७८ ॥

रात्रिचर्य्या ॥

चांदनी शीतल कामोद्दीपक और पित्ततृषा तथा दाहकी नाशकरने वाली होती है- पाला इससे गुणोंमें न्यून होताहै और वायुकफके दोषोंको बढ़ाता है ॥ ७८ ॥

तमोभयावहमोहदिग्भ्रोहजनकम्भवेत् । पित्तहृत्कफहृत्कामवर्द्धनंक्लमकृच्चतत् ॥७९॥
अंधकारसे भय मोह दिग्भ्रमपित्ततथा कफकानाश कामकी वृद्धि और शरीरमेंग्लानि होतीहै ॥७९॥

रात्रौचभोजनंकुर्य्यात् प्रथमप्रहरान्तरे । किंचिदूनंसमश्नीयात् दुर्ज्जरन्तत्रवर्ज्जयेत् ॥ शरीरेजायतेनित्यं देहिनःसुरतस्पृहा । अव्यवायात्प्रमेहमेदोवृद्धिःशिथिलता तनोः॥ बालेतिगीयतेनारी यावद्वर्षाणिषोडशः । ततस्तुतरुणीज्ञेया द्वात्रिंशद्वत्सरावधि ॥ तदूर्ध्वमधिरूढ़ास्यात् पञ्चाशद्वत्सरावधि । वृद्धातत्परतोज्ञेया सुरतोत्सवविवर्ज्जिता ॥ (अधिरूढ़ा प्रौढ़ा) निदाघशरदोर्बाला हिताविषयिणांमता । तरुणीशीतसमये प्रौढ़ावर्षावसन्तयोः ॥ ८० ॥

रात्रिके समय प्रथम पहरमेंही कुछ न्यून भोजन करे और कठिनतासे पचनेके योग्य भोजन न करे मनुष्यों के शरीर में नित्य मैथुन की इच्छा होतीहै इसके रोकने से प्रमेह मेद वृद्धि और शरीरकी शिथिलता होती है सोलह वर्ष की स्त्री बाला सोलह से बत्तीसतक तरुणी बत्तीस से पचास तक प्रौढ़ा और इसके उपरान्त वृद्धाकही जाती हैं यह वृद्धास्त्री मैथुन में वर्जितहै ग्रीष्म और शरत्काल में बालास्त्री शीतकालमें तरुणी और वर्षा तथा बसन्त ऋतुमें प्रौढ़ास्त्रीमैथुनके लिये श्रेष्ठहै ॥८०॥

नित्यम्बालासेव्यमाना नित्यम्वर्द्धयतेबलम् । तरुणीह्रासयेच्छक्तिं प्रौढ़ोद्भावयते जराम् ॥ ८१ ॥

बालास्त्री के नित्य सेवनकरने से बलकी वृद्धिहोतीहै तरुणी स्त्रीके साथ मैथुन करनेसे शक्तिकी हानिहोतीहै और प्रौढ़ा स्त्री के साथ मैथुनकरने से शरीर रोग ग्रस्तहोताहै ॥ ८१ ॥

सद्योमांसन्नवञ्चान्नं बालास्त्रीक्षीरभोजनम् । घृतमुष्णोदकेस्नानं सद्यःप्राणकराणिषट् ॥ ८२ ॥

ताजा मांस नवीनअन्न बाला स्त्री घृत दुग्धका भोजन और गरम जल से स्नान इन छःबातों से शीघ्र बल उत्पन्नहोताहै ॥ ८२ ॥

पूतिमांसंस्त्रियोवृद्धा बालार्कस्तरुणोदधि । प्रभातेमैथुनंनिद्रा सद्यःप्राणहराणिषट्॥ प्राण शब्दोऽत्र बलवाचकः बालार्कः कन्यार्कः ॥ ८३ ॥

सड़ा मांस वृद्धा स्त्री कन्याके सूर्य्य ताजादही प्रातःकालमैथुन और निद्रा यह छः शीघ्र बलके नाशकरने वाले हैं ॥ ८३ ॥

वृद्धोऽपितरुणींगत्वा तरुणत्वमवाप्नुयात् । वयोऽधिकांस्त्रियंगत्वा तरुणःस्थविरायत ॥ आयुष्मन्तोमन्दजरा वपुर्वर्णबलान्विताः । स्थिरोपचितमांसाश्च भवन्तिस्त्रीषु संयताः ॥ ८४ ॥

वृद्धपुरुषभी तरुणी स्त्रीके साथ संगकरनेसे तरुण होजाताहै और अपनी अवस्थासे अधिक अवस्था वाली स्त्रीसे भोगकरने से तरुणभी वृद्ध होजाताहै- नियमपूर्वक स्त्रियोंके साथ गमन करने से आयुकी वृद्धि वृद्धावस्थाकी कमी पुष्टता- वर्णकी उत्तमता वल की वृद्धि और मांसकी स्थिरता होती है ॥ ८४ ॥

सेवेतकामतःकामं वलाद्वाजीकृतोहिमे। प्रकामन्तुनिषेवेत मैथुनंशिशिरागमे ॥ त्र्यहाद्वसंतशरदोः पक्षाद्वृष्टिनिदाघयोः । सुश्रुतस्तु त्रिभिस्त्रिभिरहोभिर्हिसमेयात्प्रमदान्नरः ॥ सर्वेष्वृतुषुघर्मेषु पक्षात्पक्षाद्व्रजेद्बुधः। समेयात् संगच्छेत् घर्मेग्रीष्मे ॥ ८५ ॥

हे मन्तऋतुमें वाजीकरण औषधियोंका सेवन करके कामके वेग के अनुसार संभोगकरे-शिशिर ऋतुमें इच्छा के अनुसार मैथुन करना चाहिये- वसन्त और शरदृऋतु में तीन २ दिनका अन्तर देकर मैथुन करना चाहिये- वर्षा और ग्रीष्मऋतुमें पंद्रह २ दिन के उपरान्त मैथुन करना चाहिये सुश्रुतने तो कहाहै कि बुद्धिमान् पुरुषका सम्पूर्णऋतु ओंमें तीन २ दिनके अन्तरसे और ग्रीष्मऋतुमें पन्द्रह २ दिनके अन्तरसे मैथुन करना चाहिये ॥ ८५ ॥

शीतेरात्रौदिवाग्रीष्मे वसन्तेतुदिवानिशि। वर्षासुवारिदध्वाने शरत्सुस्वरसःस्मरः ८६॥

शीतऋतुमें रात्रिके समय ग्रीष्ममें दिनको बसन्त में दिन और रात्रि दोनों समयपर वर्षा में मेघोंके गरजनेपर और शरदऋतुमें अपनी इच्छाके अनुसार मैथुन कियाजाताहै ॥ ८६ ॥

उपेयात्पुरुषोनारीं सन्ध्ययोर्नचपर्वसु। गोसर्गेचार्द्धरात्रेच तथामध्यदिनेऽपिच ॥ विहारम्भाय्ययाकुर्य्या द्देशेऽतिशयसंवृते। रम्येश्रव्यांगनागाने सुगन्धेसुखमारुते ॥ देशेगुरुजनासन्ने विकृतेऽतित्रपाकरे। श्रूयमाणेऽन्यथाहेतु वचनेनरमेतना ॥ ८७ ॥

सन्ध्याकालमें पर्वके दिनोंमे प्रातः कालमें आधीरात में और दोपहरमें पुरुषोंको मैथुन करना उचित नहीं है- बहुत गुप्तमनोहर सुन्दर स्त्रियोंके गानसे युक्त सुगान्धित और सुखदायक वायु वाले स्थानमें पुरुषों को स्त्रियोंसे सम्भोग करना उचितहै- खुलेहुए लज्जाके योग्य और जिसमें गुरुलोग निकटहों तथा दुःखदायीवचन सुनाई पडतेहों एसे स्थानमें संभोगकरना उचित नहींहै ॥ ८७॥

स्नातश्चन्दनलिप्तांगः सुगंधःसुमनोऽन्वितः। भुक्तवृष्यःसुवसनः सुवेशःसमलंकृतः ॥ ताम्बूलवदनःपत्या मनुरक्तोधिकःस्मरः । पुत्रार्थीपुरुषोनारी मुपेयाच्छयने शुभे ॥ ८८ ॥

स्नान कियेहुए शरीरमें चन्दनको लगायेहुए सुगन्धित पुष्पोंको धारण कियेहुए वीर्यके बढ़ाने वाली वस्तुओंको खायेहुये अच्छे वस्त्रपहने हुये सुन्दर वेषधारण कियेहुए आभूषणों से युक्त ताम्बूल खायेहुए स्त्री में प्रेमयुक्त अधिक कामके वेगवाले और पुत्रकी अभिलाषाकरने वाले पुरुषको सुन्दर शय्यामें स्त्रीकेसाथ सम्भोग करना उचितहै ॥ ८८ ॥

अत्याशितोऽधृतिःक्षुद्वान् सव्यथांगःपिपासितः। बालोवृद्धोऽन्यवेगार्त्त स्त्यजेद्रोगीचमैथुनम् ॥ रोगीमैथुन सम्वर्द्धनीय रोगयुक्तः ॥ ८९ ॥

बहुत भोजन कियाहुवा धैर्य रहित भूखा प्यासा पीड़ायुक्त शरीर वाला बालक वृद्धमल मूत्रादि वेगयुक्त और रोगयुक्त (मैथुनकरनेसे जोरोगबढ़ताहो उससे युक्त) पुरुष मैथुन न करे ॥ ८९ ॥

भार्य्यांरूपगुणोपेतां तुल्यशीलांकुलोद्भवाम्। अतिकामोऽभिकामान्तु हृष्टोहृष्टामलंकृताम्॥ सेवेतप्रमदांयुक्त्या वाजीकरणबृंहितः॥ ९०॥

अधिक कामके वेगवाला प्रसन्न और वाजी करण औषधियों से बढ़े वीर्यवाला पुरुष रूपतथा गुणोंसे युक्त अपने समान स्वभाववाली कुलीन कामके अधिक वेगसे युक्त प्रसन्न और आभूषणों से युक्त युवती स्त्रीके साथ विधिपूर्वक सम्भोग करे॥ ९०॥

रजस्वलामकामाञ्च मलिनामप्रियान्तथा। वर्णवृद्धांवयोवृद्धां तथाव्याधिप्रपीडिताम्॥ हीनांगींगर्भिणींद्वेष्यां योनिरोगसमन्विताम्। सगोत्रांगुरुपत्नीञ्च तथाप्रव्रजितामपि॥ नाभिगच्छेत्पुमान्नारीं भूरिवैगुण्यशंकया॥ ९१॥

रजस्वलाकामके वेगसेरहित मलिन अप्रिय वर्णतथा अवस्थामें वृद्धरोगसे व्याकुल गर्भिणी द्वेष युक्त योनिमें रोगवाली समानगोत्रवाली गुरुपत्नी और संन्यास युक्त इनसम्पूर्ण स्त्रियोंके साथ सम्भोगकरना अनुचितहै क्योंकि इससे बड़ी हानिकी शंकाहै॥ ९१॥

रजस्वलांगतवतो नरस्यासंयतात्मनः। दृष्ट्यायुस्तेजसांहानि रधर्मश्चततोभवेत् ९२॥

इन्द्रियोंके वशीभूतहोकर रजस्वला स्त्रीके साथ गमन करने वाले पुरुषोंकी दृष्टि आयु तथा तेजकी हानि और अधर्मकी वृद्धि होती है॥ ९२॥

लिंगिनींगुरुपत्नीञ्च सगोत्रामथपर्व्वसु। वृद्धाञ्चसन्ध्ययोश्चापि गच्छतोजीवनक्षयः॥ (लिंगिनीं। प्रव्राजिताम्) गर्भिण्यांगर्भपीडास्या द्व्याधितायांबलक्षयः। हीनांगींमलिनांद्वेष्यां क्षामाम्वन्ध्यामसंवृते॥ देशेऽभिगच्छतोरेतः क्षीणंग्लानंमनोभवेत्। गर्भिणी गर्भवास दिवसात् द्वितीयेमासिं गर्भस्थितेर निश्चिते यथोक्त नक्षत्रादि लाभाभावे वा तृतीये मासिपुंसवने कृते नाभिगच्छेत्॥ (यथापुंसवना नन्तरमाह व्यासः) ततस्त्यजेन्नदीतीरं देवखातोदकंतथा। भर्त्तुःशय्यांमृतापत्यां तथैवामिषभोजनम्॥ अन्यच्च॥ आमिषस्याशनंयत्ना त्प्रमदापरिवर्ज्जयेत्। देवारामनदीयानं प्रयोगंपुरुषस्यचेति॥ ९३॥

संन्यासिनी- गुरुपत्नी- समानगोत्रवाली और वृद्धस्त्री के साथ भोगकरने से और पर्व दिनतथा संध्याकाल में भोगकरने से जीवका नाशहोताहै और गर्भिणी स्त्रीसे भोगकरनेसे गर्भ में बाधा होती है व्याधिसे पीडित स्त्रीसे भोगकरनेमें बलकी हानिहोतीहै हीन अंगवाली मलिन द्वेषयुक्त दुर्बल और वंध्याके साथ भोग करने से अथवा बेपर्दके स्थानमें भोगकरने से वीर्य्य की क्षीणता और मन की अप्रसन्नताहोतीहै यहां गर्भिणी स्त्रीसे यह तात्पर्य्यहै कि गर्भस्थिति के दिनसे दूसरे महीने में अथवा गर्भस्थिति के नहोने में यथयोक्त नक्षत्रादिकों के न मिलनेसे तीसरे महीने में पुंसवन कर्मके होजाने पर संभोग नहीं करना चाहिये और ऐसाही व्यासजीने भी कहाहै कि पुंसवन के पीछे स्त्री नदीका तट- देवताओं के कुंडोंका जल पति के साथ शयन- मृतवत्सास्त्रीका दर्शन और मांस भोजन त्यागकरदे और भी कहाहुआहै कि गर्भिणी स्त्री मांस भोजन- देवस्थान- बाग- नदी- यान पर चढ़ना- और मैथुन यत्न पूर्वकछोड़दे॥ ९३॥

क्षुधितःक्षुब्धचित्तश्च मध्याह्नेतृपितोऽबलः । स्थितस्यहानिंशुक्रस्यवायोःकोपञ्च विन्दति॥ व्याधितस्यरुजाप्लीहा मूर्च्छामृत्युश्चजायते । प्रत्यूषेचार्द्धरात्रेचवातपित्ते प्रकुप्यतः॥ तिर्य्यग्योनावयोनौवादुष्टयोनौतथैवच। उपदंशास्तथावायोः कोपःशुक्र सुखक्षयः॥ ९४॥

क्षुधित, घबराया हुआ- तृषायुक्त और दुर्बल मैथुनकरने से वीर्य्यकी हानि और वायु के कोप को प्राप्तहोताहै और मध्याह्न में भी मैथुनकरने से यही दोष उत्पन्नहोते हैं और व्याधियुक्त पुरुष मैथुन करने से प्लीहा मूर्च्छा आदि अनेक रोग और मृत्यु को भी प्राप्त होताहै प्रातःकाल अथवा अर्द्ध रात्रि में मैथुन करने से वात और पित्तका कोपहोताहै पशु आदि की योनि अयोनि (छोटी अवस्था के कारण भोगके अयोग्य) और दोष युक्त योनिमें मैथुन करने से आतशक वायुका कोप और वीर्य्य तथा सुखकी हानि होती है॥ ९४॥

उच्चारितेमूत्रितेचरेतसश्चविधारणे। उत्तानेचभवेत् शीघ्रंशुक्राश्मर्य्यास्तुसम्भवः॥ सर्वमेतत्त्यजेतस्माद्यतोलोकद्वयाऽहितम्। शुक्रस्तूपस्थितम्मोहान्नसन्धार्य्यंकदाचन॥ स्नानंसशर्करंक्षीरंभक्ष्यंभेक्षवसंस्कृतम्। पानंमांसरसःस्वप्नोसुरतान्तेहिताअमी॥मूलका सज्वरश्वास कार्श्यपाण्डवामयक्षयाः। अतिव्यवायाज्जायन्तेरोगाश्चाक्षेपकादयः॥९५॥

मैथुन करनेके समय मलमूत्र और वीर्यके वेगको रोकनेसे अथवा चित्त सोनेसे शीघ्रही शुक्राश्मरी (वीर्यकीपथरी) उत्पन्न होतीहै इसी कारणसे उचितहै कि इन दोनों लोकों की हानिकारक बातोंका त्यागकरदे और मोहसे गिरतेहुए वीर्य्य को कदापि न रोके स्नान शर्करा युक्त दुग्ध मिष्ट भोजन वायुका सेवन मांसका रस और निन्द्रा यह संपूर्ण भोगके अन्तमें अत्यन्त हितकारी है बहुत मैथुनकरने से शूल कास ज्वर श्वास दुर्बलता पांडु क्षय और आक्षेप आदि रोग उत्पन्न होते हैं॥९५॥

रात्रौजागरणंरूक्षंकफदोषविषार्तिजित्। निद्रातुसेविताकालेधातुसाम्यमतन्द्रिताम्॥ पुष्टिवर्णबलोत्साहवह्निदीप्तिकरोतिहि। योलेढिशयनसमयेमधुमिश्रंबीजपूरदलचूर्णम्। सतुलज्जाकरवातप्रसरनिरोधात्सुखंस्वपिति॥ ९६॥

रात्रिमें जागनेसे शरीरकी रूक्षता होतीहै और कफके दोष तथा विषकी पीड़ा शान्ति होतीहै समयके अनुसार शयन करने से धातुओंकी समता आलस्य कानाश शरीर कीपुष्टता-बल-वर्ण-उत्साह और जठराग्नि की दीप्ति होती है जो मनुष्य शयनके समय बिजौरे नींबू के पत्तेके चूर्णको सहत के साथ चाटताहै वह अपान वायुकी वृद्धि के रुकनेसे सुख पूर्वक सोताहै॥ ९६॥

सवितुःसमुदयकालेप्रसृतीःसलिलस्यपिबेदष्टौ। रोगजरापरिमुक्तोजीवेद्वत्सरशतं साग्रम्॥ अस्यजलपानस्योपक्रमकालेरात्रेश्चतुर्थप्रहरेप्रवेशः॥ तथाचभोजः पिबति पर्य्युषितंजलमन्वहन्तिमिरणिचरमेप्रहरेयदि। एतज्जलपानकालमर्य्यादासूर्य्योदयाति सन्निहितप्रातःकालः तथाचतन्त्रान्तरे अम्भसःप्रसृतीरष्टौरवावनुदितेपिबेत्। वातपि त्तकफान्जित्वाजीवेद्वर्षशतंसुखीइति॥ सलिलस्यात्रपर्य्युषित ग्रहणंभोजवचनानुरो धात्। अर्शःशोथग्रहण्योज्वरजठरजराकुष्ठमेदोविकारः। मूत्राघातास्रपित्तश्रवणगल

शिरःश्रोणिशूलाक्षिरोगाः ॥ येचान्येवातपित्तक्षतजकफकृता व्याधयःसन्तिजन्तोस्तां स्तान्नभ्यासयोगादपहरतिपयःपीतमन्तेनिशायाः ॥ ९७॥

सूर्य्यके उदयके समयमें आठ चुल्लू जल पीनेसे संपूर्ण रोग और वृद्धावस्था से छूटकर एक सौवर्ष की आयुहोती है इस जल पीनेके प्रारम्भ का समय रात्रि के चौथे प्रहरका प्रवेश कहागयाहै और ऐसाही भोजनमें कहाहै रात्रिके चौथे प्रहरमें जो बासीजल पीताहै इत्यादि बचनके अनुसार सूर्योदय के कुछ पूर्वकाल में जल पीना उत्तमहै शास्त्रान्तरमें भी कहागयाहै कि सूर्योदय के पूर्व आठ चुल्लू जल पिये क्योंकि इस्से वायु पित्त और कफ के दोषदूर होकर सुख पूर्व्वक सौवर्ष तक जीताहै यहां बासी जल का पीना भोजके वचनके अनुसार लिया गयाहै रात्रि के अन्तमें जल पीनेसे व वासीर सूजन संग्रहणी ज्वर उदर रोग और वृद्धावस्था कुष्ठ मेदरोग मूत्राघात रक्तपित्त कान गला शिर तथा नितंबोंकी पीड़ा नेत्र रोग और मनुष्योंके वातपित्त कफ और घाव से उत्पन्न हुए संपूर्ण रोगनाश को प्राप्त होते हैं ॥ ९७ ॥

विगतघननिशीथेप्रातरुत्थायनित्यं । पिबतिखलुनरोयोघ्राणरन्ध्रेणवारि ॥ सभवतिमतिपूर्णश्चक्षुषाताक्ष्यतुल्यो बलिपलितविहीनःसर्वरोगैर्विमुक्तः ॥ निशीथोऽत्रनिशान्धकारः पातव्यंनासयानीरं प्रसृतित्रयमात्रया।व्यंगवलीपलितघ्नंपीनसवैस्वर्यकाशशोथहरम् ॥ रजनीक्षयेम्बुनस्यंरसायनंदृष्टिसञ्जनम् ॥ स्नेहेपीतेक्षतेशुद्धावाध्मानेस्तिमितोदरे । हिक्कायांकफवातोत्थे व्याधौतद्वारिवारयेत् ॥तद्वारिनासापेयम् ॥ ९८ ॥

रात्रिके अन्तमें अंधकारके दूर होजाने पर प्रातःकाल उठकर जो मनुष्य नासिकाके छिद्र से जल पीताहै वह अधिक बुद्धि वाला और गरुड़के समान दृष्टिवाला होताहै झुरीं बालोंकी श्वेतता और संपूर्ण रोगों से छूटजाताहै नासिका के द्वारा जल पीनेकी मात्रा तीन चुल्लूहै रात्रिके अन्तमें नासिका के द्वारा जल पीने से व्यंग झुरीं बालों की श्वेतता पीनस स्वरभंग खांसी तथा सूजन यह सब नाश होतेहैं और यह रसायन और दृष्टि का अत्यन्त उपकारक है स्नेहपीने में क्षतरोग में वमन और विरेचन करने में अफरा में पेटके भारीपने में हिचकी में और कफ वात से उत्पन्न हुए रोगों में नासिका से जल न पीवे ॥ ९८॥

अथर्त्तुचर्य्या ॥

चयकोपशमायस्मिन्दोषाणांसम्भवन्तिहि।ऋतुषट्कंतदाख्यातंरवेराशिषुसंक्रमात् ॥ ग्रीष्मोमेषवृषौप्रोक्तःप्रावृण्मिथुनकर्कटौ । सिंहकन्येस्मृतावर्षातुलावृश्चिकयोःशरत् ॥ धनुर्ग्राहीचहेमन्तोवसन्तःकुम्भमीनयोः । मेषवृषौरविणासंक्रान्तौ । एवंमिथुनकर्कटावित्यादि अन्येतु शिशिरःपुष्पसमयोग्रीष्मोवर्षाशरद्धिमाः । माघादिमासयुग्मैःस्युर्ऋतवःषट्क्रमादमी ॥ गंगायादक्षिणेदेशे वृष्टेर्बहुलभावतःउभौमुनिभिराख्यातौप्रावृड्वर्षाभिधावृतू ॥ ९९ ॥

ऋतुचर्य्या ॥

वातादिक दोषोंका संचय कोप और शान्ति जिनमें होतेहैं वह छः ऋतु सूर्य्यके राशियोंमें बदलने से होती हैं मेष और वृषके सूर्य्य में ग्रीष्म मिथुन और कर्कके सूर्य्य में प्रावृट् सिंह और कन्याके सूर्य्य

में वर्षा तुला और वृश्चिकमें शरद धन और मकरमें हेमन्त और कुंभ और मीनके सूर्य्य में वसन्त ऋतुहोतीहै और किसी का मत यहहै कि माघको आदि लेकर दो २ महीने के क्रमसे शिशिर बसन्त ग्रीष्म वर्षा शरद और हेमन्त यह छःऋतु होतीहैं गंगाजीके दक्षिण देशमें वृष्टिके बहुतहोने के कारण मुनि लोगोंने प्रावृट् और वर्षा दो ऋतु कहीहैं गंगा जीके उत्तरके देश में शीत के बहुत होने के कारण हेमंत और शिशिर नाम दो ऋतु कहीगई हैं ॥ ९९

उत्तरायणमाद्यैस्तैःपरैःस्याद्दक्षिणायनम्।आद्यमुष्णंबलहरंततोऽन्यद्बलदंहिमम् १००

पहली तीनऋतुओं में उत्तरायण और पिछली तीनऋतुओं में दक्षिणायन उत्तरायण उष्ण और बलका नाशक होता है और दक्षिणायन बलका देनेवाला और शीतल होता है, ॥ १०० ॥

हेमन्तःशीतलःस्निग्धःस्वादुर्जठरवन्हिकृत । शिशिरःशीतलोऽतीवरूक्षोवातागिन वर्द्धनः ॥ हेमन्तःस्वादुःप्रायेणद्रव्येषुस्वादूरसजनकःएवमन्यत्रापिबोद्धव्यम् ॥ वसन्तो मधुरःस्निग्धःश्लेष्मवृद्धिकरश्चसः । ग्रीष्मोरूक्षोऽतिकटुकःपित्तकृत्कफनाशनः ॥ वर्षा शीताविदाहिन्यो वह्निमान्द्यानिलप्रदाः । शरदुष्णापित्तकर्त्रीनृणांमध्यबलावहा ॥ १०१॥

हेमन्तऋतु स्निग्ध शीतल प्रायः संपूर्ण वस्तुओंमें मधुरताकी उत्पन्न करने वाली और जठराग्नि की दीप्ति करनेवाली होती है' शिशिर ऋतु शीतल अत्यन्त रूखीऔर वायुतथा अग्निकी बढ़ानेवाली होती है, वसन्त ऋतु प्रायःसंपूर्ण वस्तुओंमें मधुरता उत्पन्न करनेवाली स्निग्ध और कफवर्द्धकहोती है- ग्रीष्मऋतु रूखी प्रायः संपूर्ण वस्तुओंमें अत्यन्त कटुता उत्पन्न करनेवाली पित्तवर्द्धक और कफ-नाशक होती है, वर्षाऋतु शीतल विदाह (अन्नका कच्चा पक्का पकना) तथा मंदाग्नि करनेवाली और वायुवर्द्धक होती है शरद ऋतु उष्ण पित्तवर्द्धकऔरमनुष्योंको कुछबलदेनेवालीहोती है,॥१०१॥

चयप्रकोपोपशमा वायोर्ग्रीष्मादिषुत्रिषु । वर्षादिषुचपित्तस्यश्लेष्मणःशिशिरादिषु॥ चीयतेलघुरूक्षाभिरोषधीभिःसमीरणः । तद्विधस्तद्विधेदेहेकालस्योष्णान्नकुप्यति ॥ तुल्येऽपिकालेस्निग्धेतद्विधेरूक्षोलघुश्चतद्विधेरूक्षेलघौच । अद्भिरम्लविपाकाभिरोषधी भिश्चतादृशम् । पित्तंयाति चयंकोपंनतुकालस्यशैत्यतः ॥ तादृशम्अम्लविपाकम् ॥ चीयतेस्निग्धशीताभिरुदकौषधिभिःकफः।तुल्येचकालेदेहेचच्छिन्नत्वान्नप्रकुप्यतितुल्ये ऽपिकालेस्निग्धेशीतलेच छिन्नत्वात्देहेशुष्कत्वात्।हिमेयातिशमंपित्तंवायुःश्लेष्माचचीयते । सवायुःशिशिरेकोपंयात्येवोपहतःकफः ॥ हेमन्तेसञ्चितःश्लेष्माशिशिरेत्वतिचीयते । शीतस्निग्धगुरुद्रव्यैःशैत्यच्छिन्नोनकुप्यति ॥ छिन्नःकठिनीभूतः।इतिकालस्वभावोऽयमाहारादिवशात्पुन. । चयादीन्यान्तिसद्योऽपिदोषाःकालेविशेषतः ॥ १०२ ॥

ग्रीष्मादिक तीनऋतुओं में वायुका संचय, कोप तथा शान्ति क्रमसे होती है वर्षा आदिकतीन ऋतुओं में पित्तका संचय कोप तथा शान्ति क्रमसे होती है और शिशिर आदिक तीन ऋतुओं में कफका संचय, कोपस्तथा शान्ति क्रमसे होती है लघु और रूक्षओषधियोंके सेवन से वायुका संचय होता है लघु और रुक्ष गुण युक्त वायु लघु और रूखे शरीर में कालकी उष्णता से कोप को नहीं प्राप्तहोती है, खट्टे पाकवाले जल और ओषधियोंसे खट्टे पाकवाला पित्त इकट्ठा होजाता है और समयकी शीतलता से कोप को प्राप्त नहींहोता, स्निग्ध और शीतल जल तथा औषधियों से

कफका संचय होता है वहकफ स्निग्ध और शीतल समय ,तथा शरीर में शुष्क होजाने के कारण से कोप को नहींप्राप्त होता है हेमन्तऋतुमें पित्तकी शान्ति और बायुतथा श्लेष्माका संचय होताहै शिशिर ऋतु में वह बायु कोपको प्राप्तहोता है और कफ संचित रहता है हेमन्तऋतुमें संचयको प्राप्तहुआ श्लेष्मा शीतल स्निग्ध और भारी द्रव्योंके सेवनसे शीतलता के कारण शिशिर ऋतु में अत्यन्त संचित हुआ सूखजाने से अत्यन्त कोपको नहीं प्राप्त होता है यहतो समयका स्वभाव है फिर आहारादिकोंके कारण से वातादिक दोष तत्काल संचयादिकों को प्राप्त होते हैं परन्तु अपने २ समयमें विशेष करके संचयादि को प्राप्त होते हैं ॥ १०२ ॥

चयकोपसमाः पूर्वाह्णे वसन्तस्य लिंगं मध्याह्ने ग्रीष्मस्य अपराह्णे प्रावृषःप्रदोषे वार्षिकम् ॥ शरदमर्द्धरात्रे प्रत्यूषसि हेमन्त मुपलक्षयेत् । एव महोरात्रमपि वर्षामिव शीतोष्ण वर्षादोषोपचय प्रकोपोप शमाः जानीयादिति सुश्रुतः ॥ चयकोपसमादोषा विहाराहारसेवनैः । समानैर्य्यान्त्यकालेऽपि विपरीतैर्विपर्य्ययम्॥समानैःतुल्यैःचयादियो ग्यैरितियावत् । विपर्य्ययंकालेऽपि वैपरीत्यं बोध्यम् ॥ १०३ ॥

सुश्रुतने कहा है कि दिनरात्रि में भी संवत्सरके समान वसन्तादि ऋतुओं के लक्षण प्रकट होते हैं यह दोषोंके संचय कोप और शान्तिसे जानेजाते हैं अर्थात् प्रातःकाल वसन्तका लक्षण मध्याह्न में ग्रीष्मका लक्षण तीसरे पहर प्रावृट्का लक्षण सांयकाल में वर्षाका लक्षण अर्द्धरात्रि में शरदका लक्षण और पिछली रात्रि में हेमन्तका लक्षण जानना चाहिये संचय कोप और समता करने वाले आहार विहारों के सेवनसे समय के विना भी वातादिक दोष संचय कोप और समता को प्राप्तहोते हैं परन्तु विपरीत आहार विहारों के सेवनसे समय होनेपर भी विपरीत फलहोता है ॥ १०३ ॥

एवंचयलक्षणमाहसुश्रुतः ॥

स्वस्थानस्थस्यदोषस्य वृद्धिःस्याच्छ्रावकोष्टता । पीतावभासतावह्नि मन्दताचांगगौरवम् ॥ आलस्यञ्चयहेतौतु द्वेषश्चचयलक्षणम् । सञ्चयोपहतादोषा लभन्तेनोत्तरांगतिम् ॥ तेतूत्तरासुगतिषु भवन्तिबलवत्तराः । वर्षासुप्रबलोवायु स्तस्मान्मिष्टादयस्त्रयः॥ रसाःसेव्याविशेषेण पवनस्योपशान्तये । (मिष्टादयस्त्रयःमधुराम्ललवणाः) भवेद्वर्षासु वपुषः क्लिन्नत्वं यद्विशेषतः । तत्क्लेशशान्तयेसेव्या अपिकट्वादयस्त्रयः ॥ (कट्वादयस्त्रयःकटुतिक्तकषाया) ॥ १०४ ॥

सुश्रुतका कहाहुआ संचयका लक्षण ॥

यदि अपने स्थानमें स्थित हुआ दोष वृद्धिको प्राप्तहोजाय तो कोष्ठबद्धता- शरीरका पीलापन- मंदाग्नि- शरीरमें भारीपना और आलस्यहोताहै और दोषके संचय होनेपर औषधि करनेसे कोप नहीं होता और कोप होनेपर वह अत्यन्त बलवान् होजातेहैं वर्षाऋतुमें वायुप्रबल होताहै इसकारण से मधुर खट्टा और लवण द्रव्योंका अधिकसेवन करनाचाहिये इनसे वायुकी शांतिहोतीहै और उसी ऋतु में शरीरमें गीलापन होताहै उसकी शान्तिके लिये कटु तिक्त और कषाय रसका सेवन करना चाहिये ॥ १०४ ॥

स्वेदनंमर्द्दनसेव्यंदध्युष्णंजांगलामिषम् । गोधूमाःशालयोमाषाजलंकौपंजलंच्युतम्॥ नभजेत्पूर्वपवनं वृष्टिंघर्मंहिमंश्रमम्। नदीतीरंदिवास्वप्नं रूक्षंनित्यञ्चमैथुनम्॥ सर्पिःस्वादुकषायतिक्तकरसा यच्छीतलंयल्लघु । क्षीरंस्वच्छसितेक्षवःपटुरसः स्वल्पंपललंजांगलम्॥ गोधूमायवमुद्गशालिसहिता नादेयमंशूदकम् । चन्द्रश्चन्दनमिन्दुराजिरजनी माल्यंपटोनिर्मलः॥ विश्रामःसुहृदांगणेषुमधुरा वाचःसरःक्रीड़नम्। पित्तानांचविरेचनंबलवतो युक्तंशिरामोक्षणम्॥ एतान्यत्रघनावसानसमये पथ्यानिमुञ्चेद्दधि। व्यायामाम्लकटूष्णतीक्ष्णदिवसस्वप्नंहिमञ्चातपम्॥ १०५ ॥

पसीने के उत्पन्नकरने वाली वस्तु अंग मर्द्दन दधि- उष्णवस्तु और जांगल जीवोंका मांस गेहूं चावल- उर्द- कूपका जल और टपकाहुआ जल- यह पदार्थ वर्षाऋतुमें सेवनकरने चाहिये पूर्व की वायु- वृष्टि, धूप, शीत, श्रम, नदीका तट दिनका सोना- रूखीवस्तु और नित्य मैथुन इन सब को वर्षा में सेवन न करे- घृत, मधुर- कषाय तथा तिक्त रस युक्तद्रव्य, शीतल और हलकी वस्तुदुग्ध स्वच्छश्वेत वर्णयुक्त शर्करादिक- लवण, थोड़ा जांगल जीवोंका मांस, गेहूं, जौ, मूंग, चावल, नदीका जल, अंशूदक, कपूर, रक्त चन्दन, रात्रि में चन्द्रमाकी किरणें, मालाका धारण, निर्मल वस्त्र वि- श्राम, मित्रोंके साथ मधुर भाषण, तड़ागों में क्रीड़ा, अधिक पित्त वालों को विरेचन और बलवान पुरुषोंको फस्त लेना यह सम्पूर्ण वर्षाके अन्त में हितकारकहैं और दही, व्यायाम, खट्टा, कटु,उष्ण तथा तीक्ष्ण वस्तु दिन में सोना, शीत और धूप यह वर्षाके अन्तमें त्यागदेना चाहिये ॥ १०५॥

अंशूदक लक्षण माह ।

दिवसेऽर्ककरैर्जुष्टं निशिशीतकरांशुभिः । ज्ञेयमंशूदकंनाम स्निग्धंदोषत्रयापहम्॥ अत्रसमग्र प्राप्त्यर्थं दिवस दिवापादद्वये निशापादंच । चन्द्रः कर्पूरः ॥ १०६ ॥

अंशूदकका लक्षण ॥

जो जल दिनभर में सूर्य्यकी किरणों से और रात्रि भरमें चन्द्रमाकी किरणों से संयुक्त होताहै वह अंशूदक कहलाताहै यह अंशूदक स्निग्ध और त्रिदोष नाशकहोताहै ॥ १०६ ॥

इक्षवःशालयोमुद्गा सरोऽम्भःक्वथितंपयः।शरद्येतानिपथ्यानि प्रदोषेचेंदुरश्मयः १०७॥

ईख, चावल, मूंग, तलावका जल औटादूध और सायंकाल के समय चन्द्रमाकी किरणें यहसब शरदऋतुमें सेवन करने चाहिये ॥ १०७॥

प्रातर्भोजनमम्लमिष्टलवणानभ्यंगघर्म्मश्रमान् । गोधूमेक्षवशालिमाषपिशितं पिष्टंनवान्नंतिलान्॥ कस्तूरीवरकुंकुमागुरुयुता नुष्णाम्बुशौचंतथा। स्निग्धंस्त्रीपुसुखंगुरूष्णवसनं सेवेतहेमन्तके ॥ १०८ ॥

हेमन्तऋतु में प्रातःकाल भोजन खट्टा, मधुर और लवण रसयुक्त वस्तु तैलादिका मर्द्दन, धूप व्यायाम गेहूं, शर्करादि इक्षुसंबंधी वस्तु, चावल उरद मांस पिट्ठीकी वस्तु, नवीन अन्न, तिल,कस्तूरी गुग्गुल केशर, अगर, उष्ण जलसे शौच चिकनी वस्तु, स्त्री संभोग और भारी तथा उष्ण वस्त्र सेवन करने चाहिये ॥ १०८

शिशिरेशीतमधिकंरौक्ष्यंवादानकालजम्।विशेषतस्ततस्तत्रहेमन्तस्यमतोविधिः १०९
शिशिरऋतुमें हेमन्तकी अपेक्षा शीत अधिक होताहै और कालके स्वभावसे रूक्षता अधिकहोत है इस कारण इस ऋतु में हेमन्तऋतु की कही हुई विधि अधिकतासे करे ॥ १०६ ॥

वान्तिंनस्यमथाभयाञ्चमधुना व्यायाममुद्वर्त्तनम् । संसेवेतमधौकफघ्नकवलं शूल पलंजांगलम् ॥ गोधूमान्बहुशालिभेदसहिता न्मुद्गान्यवान्षाष्टिकान् । लेपश्चन्द कुंकुमागुरुकृतं रूक्षंकटूष्णंलघु ॥ मिष्टमम्लंदधिस्निग्धं दिवास्वप्नञ्चदुर्ज्जरम् । अ इयायमपिप्राज्ञो वसन्तेपरिवर्ज्जयेत् ॥ स्वादुस्निग्धहिमंलघुद्रवमयन्द्रव्यंरसालांसित म् । सक्तुक्षीरदशांगुलानिसितया शालिंरसंमांसजम् ॥ शीतांशुंशयनन्दिवामलयजं शी तम्पयःपानकम् । सेवेतोष्णदिनेत्यजेत्तुकटुक क्षाराम्लघर्म्मश्रमान् ॥ ऋतुष्वेषुयएतै स्तु विधिभिर्वर्त्ततेनरः । दोषान्ऋतुकृतान्नैव लभते स कदाचन ॥ ११० ॥

इतिश्रीलटकनमिश्रतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचितेभावप्रकाशे,
दिनचर्य्यर्त्तुप्रकरणञ्चतुर्थम् ॥ ४ ॥

वमन- हुलास- सहतसंयुक्तहड़- व्ययाम- उबटन- कफ नाशकग्रास लोहकी सलाकासे सेकाहुआ जांगलजीवोंका मांस (कवाब) गेंहूं- बहुतप्रकारके चावल मूंग- जौ- साठी चन्दन केशर तथा अगरका लेप- और रूखी- कडवी- उष्ण तथा हलकी वस्तु यह सब वसन्त ऋतुमें हितकारीहैं और मधुर तथा खट्टी वस्तु दही- चिकनीवस्तु- दिनका सोना- कठिनतासे पचने वाली वस्तु और शीत यहसब वसन्त ऋतुमें त्यागदेना चाहिये- मधुर- चिकनी- शीतल- हल्की तथा पिघली हुई वस्तु शिखरन- शक्कर- सत्तू- दुग्ध शक्करके साथ खरबूजे- चावल- मांसका रस- कपूर दिनकासोना- चन्दन शीतल जल और पना यह सब ग्रीष्म ऋतुमें सेवन करना चाहिये- कटुखार तथा खट्टी वस्तु धूप और श्रम यहसब ग्रीष्म ऋतुमें त्याग देना चाहिये और जो मनुष्य इनऋतुओं में उक्त विधियोंका वर्त्ताव करताहै उसको ऋतुओंके दोष कभी नहीं होते ॥ ११० ॥

इतिश्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमान्मिश्रभावविरचितभावप्रकाशस्यभाषानुवादे
दिनचर्य्यर्त्तुचर्य्याप्रकरणंचतुर्थम् ॥ ४ ॥

अथ व्याधेर्लक्षणम् । तत्रवाग्भटः ॥

रोगस्तुदोषवैषम्यं दोषसाम्यमरोगता । रोगादुःखस्यदातारो ज्वरप्रभृतयोहिते ॥ तेचस्वाभाविकाःकेचित्केचिदागन्तवःस्मृताः । मानसाःकेचिदाख्याताः कथिताःकेऽपि कायिकाः ॥ (तत्रस्वाभाविकाः शरीर स्वभावादेवजाताः) क्षुत्पिपासा सुषुप्त्याच जरा मृत्युप्रभृतयः अथवा स्व स्व भाविका दुत्पत्तेर्जाताः स्वाभाविकाः सहजा इति यावत् । तेच जन्मान्धत्वादयः आगन्तवोऽभिघातादि जनिताः । अथवा जन्मोत्तर भाविनः ।

कामक्रोध लोभमोहभयाभिमान दैन्य पैशुन्यशोक विपादेर्ष्या सूयामात्सर्य्य प्रभृतयः अथवा उन्मादापस्मारमूर्च्छाभ्रममोह तमः संन्यासप्रभृतयः। कायिकाः पाण्डुरोग प्रभृतयः॥ १॥

वाग्भटकाकहाहुआ व्याधिका लक्षण॥

दोषोंकी विषमता रोगहै और समता रोगका नहोनाहै मनुष्योंको दुःख देने वाले ज्वर आदिक रोगकहाते हैं: वह रोग स्वाभाविक- आगन्तुक- मानसिक और कायिक इननामोंसे चारप्रकारके हैं- इनमें से जोरोग स्वभावसे उत्पन्न होते हैं वह स्वाभाविकहैं जैसे क्षुधा पिपासा- निद्रा- वृद्धता और मृत्यु आदिक अथवा जो रोगजन्महीसे उत्पन्न होतेहैं वह स्वाभाविक अर्थात् सहजरोग कहलाते हैं जैसे जन्मांधतादिक होते हैं-चोट लगनेसे उत्पन्न अथवा जन्मान्तरमें होनेवाले आगन्तुक कहलाते हैं काम-क्रोध- लोभ- मोह- भय- अभिमान- दीनता- चुगली, शोक- विषाद ईर्ष्या, असूया (गुणोंमें- दोषलगाना) और मत्सरता (पराई सम्पत्तिकान सहना)आदि अथवा उन्माद- मृगी मूर्च्छा-भ्रम मोह अन्धकार और अचेतता आदिक मानसिक रोगहैं और पांडु आदिक रोगोंको कायिक रोग कहते हैं॥१॥

कर्म्मजाःकथिताः केचिद्दोषजाः सन्तिचापरे। कर्म्मदोषोद्भवाश्चान्ये व्याधय स्त्रिविधाः स्मृताः॥ तत्र कर्म्मजाः व्याधयः। यत्प्राक्तनन्दुष्कर्मप्रबलंकेवल भोगनाश्यम्। प्रायश्चित्तनाश्यं वा ततोजाताः नतुदुष्ट वातादिदोषेण जनितास्तथा॥ यथा शास्त्रन्तु निर्णीतो यथाव्याधिचिकित्सितः। नशमंयातियोव्याधिः सज्ञेयःकर्म्मजोबुधैः॥ (दोषजाः। मिथ्याहारविहारप्रकुपितवातपित्तकफजाः) ॥ २॥

और वह रोग कर्मज दोषज और कर्म दोषज इसक्रमसे तीनप्रकारके होते हैं पूर्वजन्म में किये हुए दुष्कर्मोंके द्वारा उत्पन्न हुए रोग केवल भोगकरनेसे अथवा प्रायश्चित्तके द्वारा नाशहोतेहैं यही कर्मज रोग कहलातेहैं यह वातादिक की दुष्टतासे नहीं उत्पन्न होतेहैं और कहा भी हैकि शास्त्रके अनुसार निर्णयकरके विधिपूर्व्वक चिकित्सा करने पर भीजो रोग शान्तनहीं होताहै उसको पंडित लोगकर्मज कहतेहैं- नियमके विना आहार विहारादिकों के द्वाराकोपको प्राप्त होने वाले वायु पित्त और कफसे जो रोग उत्पन्न होतेहैं वह दोषज कहलाते हैं॥ २॥

ननु मिथ्याहारविहारिणामपि प्राक्तन सुकृतेन नैरुज्यं दृश्यतएव। ततो दोषजेष्व पि प्राक्तनं दुष्कर्मैव कारणम् तत्कथं दोषजाइत्युच्यते। दोषजेष्वपि वस्तुतः। आदि कारणंदुष्कर्म वर्त्ततएव किन्तु तत्र मिथ्याहार विहार दूषिता दोषा हेतवो दृश्यन्त इति दोषजा इत्युच्यन्त इति समाधिः॥ ३॥

अबयह सन्देह होता हैकि नियमके विना आहार विहार करने वालोंको भी पूर्व्व जन्मके पुण्य के द्वारा नीरोगता देखतेहैं तो दोषों सेभी उत्पन्न हुएरोगोंमें पूर्व जन्मकापापही कारणहै तबदोषज रोगकैसे हो सकेहैं इसकासमाधान यहहै कि दोषसे उत्पन्न हुएभी रोगोंमें ठीक २ तो मूलकारण पापहीहै परन्तु नियमके विना आहार विहारसे कोपको प्राप्तहुए दोषभी उनमें कारण देखेजाते हैं इसलिये दोषज कहने में कोई हानि नहीं है॥ ३॥

कर्मदोषोद्भवाः। स्वल्पदोषागरीयांस स्तेज्ञेया.कर्म्मदोषजाः॥ अत्र कारणं दुष्कर्म प्रबलंयतो दोषाल्पत्वेऽपि व्याधेर्गरीयस्त्वन्तत्कर्म्म क्षयादेव क्षीणं भवति। दोषाःस्व ल्पा अपि निदानत्वे नोक्ता दृश्यन्त एवेति दोषाणां कारणता मन्यन्त इति। कर्म्मक्षया त् कर्म्मकृता दोषजाः स्वस्वभेषजैः। कर्म्मदोषोद्भवायान्ति कर्म्मदोषक्षयाक्षयम्॥ दो षजाः स्व स्व भेषजैरिति दोषजेष्वादिकारणं। दुष्कर्म्मं तद्भेषजार्थं द्रव्यक्षयादि जनि त दुःख भोगेन कटुतिक्तकषायाद्य हृद्य भक्षणादिजनितदुःख भोगे न च क्षयं यांति। शे षा दुष्टा हेतवो दोषास्ते स्वस्व भेषजैः क्षयं यान्तीत्यर्थः॥ ४॥

जो दोष थोड़े विकारको प्राप्तहोवें और रोग अत्यन्त प्रबलहोवें तो कर्म दोषज रोग जानना चाहिये इनका कारणतो प्रबल पापहीहै क्योंकि दोषोंके थोड़े होनेपर भी रोगकी प्रबलता होतीहै और वह कर्मके नाशसेही नाशको प्राप्तहोताहै थोड़ेदोषभी रोगकी उत्पत्ति के कारण कहेगये देखेजाते हैं इससे दोषों को भी कारण मानतेहैं और इसी हेतुसे यह कर्म दोषजरोग कहातेहैं कर्मके नाशसे कर्म्मजरोग, अपनी २ औषधियों से दोषजरोग और कर्म तथा दोषके नाश से कर्मदोषजरोग नाशको पातेहैं यहां अपनी२औषधियोंसे दोषजरोग शान्तहोतेहैं इसका यहतात्पर्य्य है कि दोषजरोगोंका मूल कारण दुष्कर्महै वह औषधि के निमित्त खर्च होने वाले धनके दुःख भोगनेसे और कड़वे तिक्त तथा कषाय आदिक मनके न रुचनेवाले पदार्थों के भोजन के द्वारा उत्पन्नहुये दुःखके भोगने से नाशको प्राप्तहोताहै फिर अपनी२ औषधियों के द्वारा विकारको प्राप्तरोगोंके प्रत्यक्ष कारण दोषभी नाशको प्राप्तहोतेहैं॥ ४॥

साध्यायाप्याश्चसाध्याश्च व्याधयस्त्रिविधाःस्मृताः। सुखसाध्यःकष्टसाध्यो द्विविधः साध्यउच्यते॥ ५॥

साध्य, याप्य और असाध्य यह तीनप्रकार के रोगहोतेहैं इन में से सुखसाध्य और कष्टसाध्य इनदो भेदों से साध्य दोप्रकारका होताहै॥ ५॥

याप्य लक्षण माह।

यापनीयन्तुतंविद्यात् क्रियाधारयतेहियम्। क्रियायांतुनिवृत्तायां सद्योयश्चविन श्यति॥ प्राप्ताक्रियाधारयति सुखिनंयाप्यमातुरम्। प्रपतिष्यदिवागारं स्तम्भोयत्नेन योजितः॥ साध्यायाप्यत्वमायान्ति याप्यश्चासाध्यतान्तथा। घ्नन्तिप्राणानसाध्यास्तु नराणामक्रियावताम्॥ अक्रियावतां चिकित्सा रहितानाम्॥ ६॥

याप्यका लक्षण॥

जो रोग चिकित्सा के द्वारा रुकताहै और बिना चिकित्सा के प्राणों को नाश करदेताहै वह याप्य है जैसे यत्न पूर्वक अड़वार के लगानेसे गिरताहुआ घर रुकजाताहै इसी प्रकार योग्य दवाके द्वारा इलाज करने से याप्यरोगी भी सुख पूर्वक शरीर को धारण करताहै इलाज के विना मनुष्यों के साध्यरोग याप्यहोजातेहैं याप्यअसाध्य होजातेहैं और असाध्य रोग प्राणों को नाशकरतेहैं॥ ६॥

अथोपद्रवस्य लक्षणम् ॥

रोगारम्भकदोषस्य प्रकोपादुपजायते । योऽन्योविकारःसबुधै रुपद्रवइहोदितः ॥७॥

उपद्रवका लक्षण ॥

रोगके उत्पन्नकरने वाले दोषके कोप से जो अन्यविकार उत्पन्न होते हैं उनको पण्डित लोग उपद्रव कहतेहैं ॥ ७ ॥

अथारिष्टस्य लक्षणमाह ॥

रोगिणोमरणंयस्मादवश्यम्भाविलक्ष्यते।तल्लक्षणमरिष्टंस्याद्रिष्टंचापितदुच्यते॥८॥

अरिष्टका लक्षण ॥

जिनलक्षणों से रोगी की मृत्युका निश्चयहोताहै उनको अरिष्ट वारिष्ट भी कहतेहैं ॥ ८ ॥

अथ चिकित्साया लक्षणमाह ॥

याक्रियाव्याधिहरणी साचिकित्सानिगद्यते । दोषधातुमलानांया साम्यकृत्सैवरोगहृत् ॥ क्रियात्रकर्म्म व्याधिर्हन्यतेऽनयेति व्याधिहरणी करणाधि करणयोश्चेति सूत्रेण करणार्थेल्युट् तथाच । याभिःक्रियाभिर्जायन्ते शरीरेधातवःसमाः ॥ साचिकित्साविकाराणां कर्म्मतद्भिषजाम्मतम् । याह्युदीर्णंशमयति नान्यंव्याधिंकरोतिच ॥ साक्रियानतुयाव्याधिं हरत्यन्यमुदीरयेत् । (क्रियात्र चिकित्सा) तथा चामरसिंहः । आरम्भोनिष्कृतिःशिक्षा पूजनंसम्प्रधारणम् । उपायःकर्म्मचेष्टाच चिकित्साचनवक्रिया इति ॥९॥

चिकित्साका लक्षण ॥

- जो क्रियारोग की नाशकरनेवाली और दोष धातु तथा मलोंकी समता करनेवाली होती है उसी को चिकित्सा (इलाज) कहतेहैं जिसक्रियाके द्वारा शरीरकी सबधातु समताको प्राप्तहोवें उसी क्रियाको रोगों की चिकित्सा कहतेहैं और यही चिकित्सा वैद्य लोगोंको पसन्दहै जिस क्रियाके द्वारा उत्पन्न हुआ रोग शान्तहोताहै और दूसरा कोई रोग नहीं उत्पन्न होताहै उसीको चिकित्सा (मालजा) कहतेहैं और जिस्से रोग की कमीहो और दूसरा पैदाहो उसको चिकित्सा नहीं कहतेहैं यहां क्रिया शब्दका अर्थ चिकित्सा (इलाज) है जैसा कि अमर सिंहने कहाहै कि आरंभ, निष्कृति- शिक्षा, पूजन, संप्रधारण, उपाय, कर्म, चेष्टा और चिकित्सा यह नौ क्रियाशब्द के अर्थ हैं ॥ ९ ॥

अथ चिकित्सा विध्युपदेशः ॥

जातमात्रःचिकित्स्यःस्यान्नोपेक्ष्योऽल्पतयागदः । वह्निशत्रुविषै स्तुल्यःस्वल्पोऽपि विकरोत्यसौ ॥ रोगमादौपरीक्षेत ततोऽनन्तरमौषधम् । ततःकर्म्मभिषक् पश्चात्ज्ञानपूर्वंसमाचरेत् ॥ अयमर्थः भिषक्आदौरोगं परीक्षेतविचारयेत् । ततःपश्चाद्रोगौषधविचारानन्तरं ज्ञानपूर्वंसावधानोनत्ववज्ञायकर्म्म चिकित्सामौषधदानादिरूपं समाचरेदित्यर्थः ॥ १० ॥

चिकित्सा विधिका उपदेश ॥

रोगके उत्पन्न होतेही चिकित्सा करनी योग्य है थोड़ासमझकर उसकी उपेच्छा (लापरवाही)न

करना चाहिये क्योंकि अग्नि शत्रु और विषके समान थोडाभी रोग दुखदायी होजाता है वैद्यप्रथम रोगकी परीक्षाकरे इसके पीछे औषधिकोविचारे तदनन्तर सावधानीसे चिकित्साकाप्रारंभकरे॥१०॥

रोगाज्ञानेन चिकित्साकरणेदोषमाह॥

यस्तुरोगमविज्ञायकर्म्माण्यारभतेभिषक्। अप्यौषधविधानज्ञस्तस्य सिद्धिर्यदृच्छया॥ स्वैरितयासिद्धिर्भवति नापिभवातीत्यर्थः (अन्यच्च) भेषजंकेवलंकर्त्तुंयोजानाति नचामयम्॥ वैद्यकर्म्मसचेत्कुर्य्याद्वधर्हामतिराज्ञतः॥ ११॥

रोगके विना जाने चिकित्साकरने में दोष॥

जो वैद्य रोगको विना जाने,चिकित्साका प्रारंभ करता है वह चाहे औषधियों के विधान को जानताभी हो परन्तु आराम होने और नहोने का निश्चय नहींहोता और भी कहा हुआ है कि जो केवल औषधि करना जानता है और रोगको नहीं पहचान सक्ता है वह जो चिकित्सा करे तो राजा को उचितहै कि उसका वधकरे॥ ११॥

रोगज्ञाने भेषजाज्ञाने दोषमाह॥

यस्तुकेवलरोगज्ञो भेषजेष्वविचक्षणः। तंवैद्यंप्राप्यरोगीस्याद्यथा नौर्नाविकंविना॥ नाविकं कर्णधारंविनायथानौसङ्कटेपततितथारोगीत्यर्थः (अन्यच्च) यस्तुकेवलशास्त्रज्ञः क्रियास्वकुशलोभिषक्। समुह्यत्यातुरंप्राप्ययथाभीरुरिवाहवम्॥ १२॥

रोगको जानकर के भी औषधि के न जानने में दोष॥

जो केवल रोगों को जानताहै और औषधियों को नहीं जानता उसकी औषधि करनेसे रोगी मल्लाह रहित नौकाके समान विपत्ति में पड़ताहै और भी कहाहुआ है कि जो वैद्य केवल शास्त्र जानताहै और क्रिया में चतुर नहीं है वह युद्ध में डरपोक के समान रोगी को पाकर मोहको प्राप्तहोता है॥ १२॥

रोगौषधयोर्ज्ञाने गुणमाह॥

यस्तुरोगविशेषज्ञःसर्वभेषजकोविदः। देशकालविभागज्ञस्तस्य सिद्धिर्नसंशयः॥ आदावन्तेरुजांज्ञाने प्रयतेतचिकित्सकः।भेषजानांविधानेन ततःकुर्य्याच्चिकित्सितम्॥ चिकित्सितमित्यत्रभावेक्तः॥ १३॥

रोग और औषधि दोनों के जाननेमें गुण॥

जो संपूर्ण रोग तथा औषधियों को जानताहै और देश तथा कालके विभागको भी जानताहै उसकी औषधि निसन्देह सफलहोतीहै, वैद्य प्रथम आदि से अन्ततकरोग के जाननेमें यत्न करे फिर औषधियोंके विधान पूर्वक चिकित्साकरे॥ १३॥

विकाराणामकुशलोनजिह्रीयात्कदाचनानहिसर्वविकाराणांनामतोऽस्तिध्रुवास्थितिः॥ नजिह्रीयात् नलज्जेत्। ध्रुवानियता॥ नास्तिरोगोविनादोषैर्यस्मात्तस्माच्चिकित्सकः। अनुक्तानामपिदोषाणांलिंगैर्व्याधिमुपाचरेत्॥ येनकुर्वन्त्यसाध्यानांचिकित्सांतेभिषग्वराः। अतोवैद्यैःश्रमःकार्य्यःसाध्यासाध्यपरीक्षणे॥ रोगज्ञानोपायाअग्रेवक्ष्यन्ते॥ १४॥

संपूर्ण रोगोंका नामके जाने विना निश्चयकरने में वैद्यको लज्जा नहीं करनी चाहिये क्योंकि सम्पूर्ण रोगों के नाम निश्चित नहीं हैं दोषों के कोपके बिना रोगकी उत्पत्ति नहीं होती इस लिये रोगके नामको बिनाजाने भी वातादिदोषों के लक्षणसे चिकित्सा करनी चाहिये जो वैद्य असाध्य रोगोंकी चिकित्सा नहीं करतेहैं वह श्रेष्ठहैं इससे वैद्यों को साध्यासाध्य जानने में श्रमकरना चाहिये, रोगों के जानने के उपाय आगे कहेहैं ॥ १४ ॥

शीतेशीतप्रतीकारमुष्णेतूष्णनिवारणम् । कृत्वाकुर्य्यात्क्रियां प्राप्तांक्रियाकालंनहापयेत् ॥ अप्राप्तेवाक्रियाकालेप्राप्ते वानक्रियाकृता । क्रियाहीनातिरिक्ताच साध्येष्वथन सिद्ध्यति (अयमर्थः) कालेचिकित्साऽवसरे । अप्राप्तेऽनागते ॥ याक्रियाचिकित्सा यथाज्वरेजीर्णतामप्राप्ते तरुणएवकषायदानक्रियानसिद्ध्यति।याचक्रियाचिकित्सावसरे प्राप्तेनकृत्वा । अर्थात्पश्चात्कृता यथादाहेकथञ्चिच्छान्तेपश्चाच्छीतलानुलेपनादिक्रिया । तथाहीनातिरिक्ताचक्रियासाध्येष्वपिनसिद्ध्यति ॥ १५ ॥

शीतमें शीतलताका निवारण और उष्णरोग में उष्णताका निवारण करके चिकित्साका समय प्राप्तहोनेपर चिकित्साकरे उसके समय को न जानेदे चिकित्सा के समय के पहले अथवा पीछे चिकित्साकरने से और थोड़े रोगमें बहुत चिकित्सा तथा बड़ेरोगमें थोड़ी चिकित्सा करने से साध्य रोगभी नहीं आराम होते, ॥ १५ ॥

अतिरिक्तांहीनांचक्रियावर्ज्जयन्नाह ॥

विकारेऽल्पेमहत्कर्म्मक्रियालघ्वीगरीयसी ।इयमेतदकौशल्यंकौशल्यंयुक्तकर्म्मता॥ क्रियायास्तुगुणालाभे क्रियामन्यांप्रयोजयेत् । पूर्वस्यांशान्तवेगायांनक्रियासङ्करोहितः॥ भिन्नरूपाभिस्तुक्रियाभिः साङ्कर्य्यमपिनदोषाय (यतआह) क्रियाभिस्तुल्यरूपाभिर्न क्रियासङ्करोहितः।ताभिस्तुभिन्नरूपाभिःसाङ्कर्य्यंनैवदुष्यति (अतएवोक्तम्) लङ्घनं वालुकास्वेदो नस्यंनिष्ठीवनंतथा । अवलेहोऽञ्जनञ्चापि प्राक्प्रयोज्यंत्रिदोषजे ॥ ज्वर इतिशेषः॥ १६ ॥

अधिक और न्यून चिकित्साका निषेध ॥

थोड़ेरोग में बड़ीक्रिया और बड़ेरोगमें थोड़ीक्रिया यह दोनों निषिद्ध हैं और युक्ति पूर्व्वक योग्य क्रियाकरना हितकारी है- एकक्रियाके करनेपर जो उसका कुछ उपकार न होतो उसके वेगके शान्त होनेपर दूसरी क्रिया करे क्योंकि क्रियासंकर (मेल) हितकारी नहींहोता कहा है कि तुल्यरूप वाली क्रियाओंका संकर हितकारी नहीं होता परन्तु भिन्न रूपवाली क्रियाओंका संकर दोषकारी नहीं होता इसीसे कहागया है कित्रिदोषज ज्वरमें लंघन वालुकास्वेद(एकप्रकारका पसीना) हुलास, वमन, अवलेह और अंजनका प्रयोग (इस्तैमाल) करना चाहिये, ॥ १६ ॥

नचैकान्तेननिर्द्दिष्टेशास्त्रेनिविशतेबुधः । स्वयमप्यत्रभिषजातर्कनीयं चिकित्सता ॥ (यतआह)उत्पद्यतेचसावस्थादोषकालबलम्प्रति । यस्यांकार्य्यमकार्य्यंस्यात्कर्मकार्य्यं विवर्ज्जितंविवर्जितंकर्म्मकर्त्तव्यंभवतीत्यर्थः ॥ १७ ॥

पंडित वैद्य केवल शास्त्रमें कहीहुई विधिके अनुसार क्रिया नहीं करते औषधि करने के समय वैद्यको अपनी बुद्धि के अनुसार आपभी विचार करलेना चाहिये क्योंकि कहाहुआ है कि दोषकाल और बलकी अवस्थाके अनुसार शास्त्रमेंभी कहीहुई विधि हितकारी नहीं होती है और निषेध की हुई भी विधि हितकारी होजाती है ॥ १७ ॥

अथ चिकित्सायां फलमाह ॥

क्वचिदर्थःक्वचिन्मैत्री क्वचिद्धर्म्मःक्वचिद्यशः । कर्म्माभ्यासःक्वचिच्चेति चिकित्साना स्तिनिःफलम् ॥ आयुर्व्वेदोदितांयुक्तिं कुर्व्वाणाविहिताश्चये । पुण्यायुर्वृद्धिसंयुक्ता निरोगाश्चभवन्तिते ॥ नैवकुर्व्वीतलोभेन चिकित्सापुण्यविक्रियम् । ईश्वराणांवसुमतां लिप्सेतार्थन्तुवृत्तये ॥ चिकित्सितंशरीरंयोननिष्क्रीणातिदुर्म्मतिः । सयत्करोतिसुकृतं सर्व्वंतद्भिषगश्नुते ॥ नदेशोमनुजैर्हीनो नमनुष्यानिरामयाःततःसर्व्वत्रवैद्यानां सुसिद्धा एववृत्तयः ॥ १८ ॥

चिकित्साका फल ॥

चिकित्सा कभी व्यर्थ नहीं होती कहीं धन लाभ कहीं मित्रता कहीं धर्म, कहीं यश और कहीं अपने कार्य्य में अभ्यासही होताहै, जो वैद्य आयुर्वेद शास्त्र में कही हुई विधि के अनुसार चिकित्सा करतेहैं उनके पुण्य तथा आयुकी वृद्धिहोतीहै और शरीर नीरोग होताहै वैद्यलोभसे चिकित्सा रूपी पुण्यको न बेचे और जीविका के निमित्त राजा और धनवानोंसे धन प्राप्त करे, जो दुर्बुद्धि पुरुष चिकित्सा किये हुये शरीरको क्रय (मोललेने की वस्तु) के समान धनदेकर नहीं मोललेताहै उसके सम्पूर्ण पुण्य वैद्यको प्राप्तहोतेहैं मनुष्योंसे रहित देश नहीं होता और रोग रहित मनुष्य नहीं होता इससे वैद्योंकी जीविका सर्वत्रहोसक्तीहै ॥ १८ ॥

अस्यचिकित्साया अंगानि ॥

रोगीदूतोभिषग्दीर्घमायुर्द्रव्यंसुसेवकः।सदौषधंचिकित्सायामित्यंगानिबुधाजगुः ॥१९॥

चिकित्साके अंग ॥

रोगी, दूत, वैद्य, दीर्घायु, द्रव्य, अच्छा सेवक और उत्तम औषधि यह पंडित लोगोंने चिकित्सा के अंग कहेहैं ॥ १९ ॥

तत्ररोगिणोलक्षणमाह ॥

रोगोयस्यास्तिरोगीससाचिकित्स्यस्तुयादृशः।यादृशश्चा चिकित्स्यो ऽपिवक्ष्यमाणो निशम्यताम् ॥ २० ॥

रोगीका लक्षण ॥

जिसके रोगहो वह रोगी कहावताहै वह चिकित्साके योग्य और अयोग्यदो प्रकारका होताहै ॥ २० ॥

तत्राचिकित्स्यः ॥

निजप्रकृतिवर्णाभ्यां युक्तःसत्वेनचक्षुषा । चिकित्स्योभिषजारोगी वैद्यभक्तोजितेन्द्रियः ॥ सत्वं व्यसनाभ्युदय क्रियादिष्व विह्वलताकरं तेनयुक्तः । चक्षुषा चक्षुरुपल

क्षितेन । ततो ऽन्येनापीन्द्रियेण चिकित्स्यः रोगान् मोचयितव्यः ॥ (अन्यत्र) आयुष्मान् सत्ववान् साध्यो द्रव्यवान् मित्रवानपि । चिकित्स्योभिषजारोगी वैद्यवाक्यकृदास्तिकः ॥ आयुर्वेदोऽस्तीति मतिर्यस्य । आस्तिकः ॥ २१ ॥

अब इनके लक्षण कहतेहैं वहां चिकित्सा करने योग्य के लक्षण ॥

जो रोगी प्रकृति वर्ण, बल तथा नेत्रादि इन्द्रियों से युक्त और वैद्यका भक्त तथा जितेन्द्री हो उसकी चिकित्सा करनी चाहिये और भी कहाहै कि जो रोगी आयुवाला बलवान्,साध्य, द्रव्यवान् मित्रवान् और वैद्यक शास्त्रमें विश्वासयुक्त तथा वैद्यका कहनामानने वाला हो उसकी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ २१ ॥

अथा चिकित्स्यः ॥

चण्डःसाहसिकोभीरुः कृतघ्नोव्यग्रएवच । शोकाकुलोमुमूर्षुश्च विहीनःकरणैश्च यः ॥ वैरीवैद्यविदग्धश्च श्रद्धाहीनश्चशंकितः । भिषजामविधेयाःस्युर्नोपक्रम्याःभिषग्विधाः ॥ एतानुपाचरन्वैद्योबहून्दोषानवाप्नुयात् । चण्डोऽत्यन्तक्रोधशीलः ॥ साहसिकःअविचार्य्यकारीभीरुर्भयशीलः । कृतघ्नोवैद्यकृतोपकारलोपकः ॥ व्यग्रोव्याकुलः । विहीनःकरणैश्चयःजितेन्द्रियशक्तिरहितः ॥ वैरी न चिकित्स्यःकदाचिद्रोगोद्रेकेअपवाद भयात् । वैद्यविदग्धोवैद्यधूर्त्तः ॥ तथाचसुश्रुतः । सनसिद्ध्यतिवैद्यस्तुगृहेयस्यनपूज्यते ॥ शङ्कितोवैद्यविश्वासरहितः । भिषजामविधेयाः ॥ वैद्यवचनाभिधायिनः । भिषग्विधाः वैद्यतुल्याःएतेनोपक्रम्याः ॥ नचिकित्स्याः ॥ २२ ॥

चिकित्सा के अयोग्य वालेके लक्षण ॥

जो रोगी अत्यन्त क्रोधी विना विचारे कार्य्य करनेवाला भीरु, वैद्यके उपकार को न मानने वाला, व्याकुल, इन्द्रियों की शक्ति से रहित शोकयुक्त,आसन्नमृत्यु, द्वेषी, (रोगके बिगड़ने में कलंक देनेवाला) वैद्यसे धूर्तता करनेवाला, वैद्यमें विश्वास से रहित, वैद्यके वचन का न माननेवाला और आपको भी वैद्यके तुल्य चिकित्सा जाननेवाला होवे वह चिकित्सा करने के अयोग्यहै क्योंकि उसका इलाज करने से अनेकप्रकार के दोष उत्पन्नहोतेहैं सुश्रुतने कहाहै कि जिस रोगीके घरमें वैद्यका सत्कार नहीं होताहै उसका कार्य्यसिद्द नहीं होता ॥ २२ ॥

अथदूतस्यलक्षणम् ॥

यश्चिकित्सकमानेतुंयातिदूतःसकथ्यते । सचयादृक्समुचितस्तादृगत्रनिगद्यते ॥ दूताःसुजातयोव्यंगाः पटवोनिर्मलाम्बराः । सुखिनोऽश्ववृषारूढाःशुभ्रपुष्पफलैर्युताः ॥ सजातयःसुचेष्टाश्चसजीवदिशिसंगताः । भिषजंसमयेप्राप्तारोगिणःसुखहेतवे ॥ सजातयःरोगिसमानजातयः । यस्यांप्राणमरुद्वातिसानाड़ीजीवसंज्ञिता ॥ २३ ॥

दूत के लक्षण ॥

जो वैद्यके बुलानेको जाताहै वह दूत कहाताहै वह जैसा उचितहै उसकोकहतेहैं अच्छीजातवाला सब अंगयुक्त चतुरनिर्मलवस्त्रधारी प्रसन्न घोड़े तथा बैलकी सवारी पर चढ़ाहुआ श्वेतपुष्प तथा

फलों से युक्त रोगीका सजाँती सुन्दर चेष्टावाला वैद्यकी जिस नाड़ी में प्राणवायु चलता हो उस ओर गयाहुआ और समय पर वैद्यको प्राप्तहुआ दूत रोगीको सुखदायक होताहै ॥ २३ ॥

अथदूतस्ययात्रायांशकुनविचारः॥

वैद्याह्वानायदूतस्यगच्छतोरोगिणःकृते । नशुभंसौम्यशकुनंप्रदीप्तन्तुसुखावहम् । प्रदीप्तमग्निः दूतोरोगीचरिक्तहस्तोवैद्यंनपश्येत् (अथच) रिक्तहस्तोनपश्येत्तुराज भिषजंगुरुमिति ॥ २४ ॥

दूतकी यात्रा में शकुन का विचार ॥

रोगीके निमित्त वैद्यको बुलानेको जातेहुए दूतके संमुख जो सौम्य (सुन्दर)शकुन होय तो शुभ नहीं है और जलतीहुई अग्नि शुभदायकहै दूत और रोगीखाली हाथ वैद्यका दर्शन न करे क्योंकि कहाहुआ है कि राजा वैद्य और गुरुको खाली हाथ नदेखे॥ २४ ॥

अथवैद्यस्यलक्षणम् ॥

चिकित्सांकुरुतेयस्तुसचिकित्सकउच्यते । सचयादृक्समीचीनस्तादृशोऽपिनिगद्य ते ॥ तत्त्वाधिगतशास्त्रार्थोदृष्टकर्मास्वयंकृती । लघुहस्तः शुचिःशूरः सज्जोपस्करभे षजः ॥ प्रत्युत्पन्नमतिर्धीमान्व्यवसायीप्रियम्वदः । सत्यधर्मपरोयश्चवैद्यईदृक्प्रशस्य ते ॥ दृष्टकर्म्मादृष्टपरेणकृताचिकित्सायेनसः स्वयंकृतीस्वयंचिकित्साकुशलः । लघुहस्तः सिद्धिमद्धस्तः ॥ २५ ॥

वैद्यके लक्षण ॥

जो चिकित्सा (इलाज) करे वह वैद्य कहलाताहै और जिस प्रकारका वैद्य उत्तम होताहै उसे कहते हैं शास्त्रों के तत्त्वों का जानने वाला दूसरेसे की हुई चिकित्सा का देखनेवाला आपभी चिकित्सा में प्रवीण सिद्धयुक्त हाथवाला (दस्ततफा) पवित्र शूर अच्छी औषधि और शस्त्रादिकोंसे युक्त कार्य के समय झटित उत्पन्न होनेवाली बुद्धिवाला बुद्धिमान् उद्योगी मधुरभाषी सत्यवादी और धर्म्मात्मा वैद्य प्रशंसा के योग्यहै ॥ २५ ॥

अथनिषिद्धोवैद्यः ॥

कुचैल.कर्कशस्तब्धोग्रामीण स्वयमागतः । पंचवैद्यानपूज्यन्तेधन्वन्तरिसमायदि ॥ कर्कशःअप्रियवादीस्तब्धःसाभिमानः । ग्रामीण व्यवहाराचतुर ॥ २६ ॥

निषिद्ध वैद्यके लक्षण ॥

मैले वस्त्र धारण करने वाला- अप्रिय बोलनेवाला- अभिमानी- व्यवहारका न जाननेवाला- और अपने आप आयाहुआ यह पाच प्रकार के वैद्यजो धन्वन्तरिके भी समान होंय तोभी प्रशंसा के योग्य नहीं हैं- ॥ २६ ॥

अथवैद्यस्य कर्म्माह ॥

व्याधेस्तत्त्वपरिज्ञानंवेदनायाश्चनिग्रहः । एतद्वैद्यस्यवैद्यत्वंनवैद्यःप्रभुरायुषः(अस्या यमर्थः) व्याधेःसम्यक्परिचयोव्यथाशांतिकरणंवैद्यस्यकर्म्म [illegible]

र्थः । अपरेत्वेवंव्याचक्षते ॥ व्याधेस्तत्त्वतः परिचयोवेदनीयाःशांतिकरणञ्च । एतदेव वैद्यस्यवैद्यत्वंकिन्तुवैद्यआयुषःप्रभुःआगन्तु मृत्युशतहरणात् ॥ तथाचसुश्रुतेधन्वन्तरिः । एकोत्तरंमृत्युशतमथर्वाणः प्रचक्षते ॥ तत्रैकःकालसंज्ञःस्यात् शेषास्त्वागन्तवः स्मृताः (अयमर्थः) अथर्वाणःअर्थतत्वज्ञत्वेनाथर्वतुल्याः । मृत्युमेकोत्तरंशतंप्रचक्षते ॥ तत्रैकोमृत्यु कालसंयुक्तः । कालआयुषोऽन्तेशरीरिणामवश्यंसंहर्त्ता ॥ सर्वैरुपायैर्निवारयितुमशक्यः । सब्रह्मादीनायुषोऽन्तेसंहरति ॥ यतआहलिङ्गपुराणे । कार्त्तिकेयंप्रति महादेवः ॥ ममायुर्ग्रसतेकालःकुतः पुत्ररसायनमिति ॥ तेनकालेनसंयुक्ता संहाराय नियुक्तःसोऽवश्यंभावी ॥ शेषाःशतंमृत्यवःआगन्तवः । आगन्तुरूपहेतुजन्मानःकार्य्यकारणयोरभेदोपचारात् ॥आगन्तवोहेतवोयथा । विषभक्षणमजीर्णोऽत्यन्तभोजनञ्चदुर्देशजलपानम् ॥ तथाऽतिवलवैरिव्याघ्रवनमहिषमत्तमातंगादिभिर्युद्धम् । दन्दशूकेनक्रीडनमत्युच्चवृक्षाग्रारोहणं बाहुभ्याम् ॥ महातरङ्गिणीतरणमेकाकिनो रात्रौदुर्गमार्गेगमनम् । इत्यादि ॥ आगन्तुहेतुजामृत्यवोदुर्निमित्ता भाविभावनाबलवत्त्वादायुषि सत्यपि मारयन्ति । यथामल्लिकातैलवर्त्तिवह्निषुविद्यमानेषुवायुनादीपंनाशयति ॥ तथाच । तथा सत्यपि तैलादौदीपंनिर्वापयेन्मरुत् ॥ एवमायुष्यहीनेऽपिहिसन्त्यागन्तुमृत्यवः । किन्तुआगन्तुनिमित्तानिनिवारयितुंचशक्यन्ते (यतआहसुश्रुतेधन्वन्तरिः) दोषागन्तुनिमित्तेभ्योरसमन्त्रविशारदौ । रक्षेतांनृपतिंनित्यंयत्नाद्वैद्यपुरोहितौ ॥ वैद्यमन्त्रिणौनृपतिंनित्यंयत्नाद्रक्षेताम् । कुतःदोषागन्तुनिमित्तेभ्यःदोषानिषिद्धाहारविहारभूषितावातपित्तकफरोगोत्पादकाः ॥ आगन्तव निषिद्धाविहाराअतिबलवैरिविग्रहादयः । तेनिमित्तानियेषान्तेभ्यःशतमृत्युभ्यः ॥ननुवैद्यपुरोहितौकथंशतंमृत्युंनिवारयितुंशक्तौतआह । यतस्तौरसमन्त्रविशारदौप्रथमंवैद्योदिनचर्य्यारात्रिचर्य्यर्तुचर्य्योक्ताहाराविहाराभ्यां वातपित्तकफधातुमलान्समानेवरक्षति ॥ ततोरसज्ञत्वाद्रसैर्मृत्युंजयादिभिर्निषिद्धाहारविहार दूषित दोषजनितान्विकारान्मृत्युहेतूनपहरति । मंत्रीचसद्बुद्धिदानेनमृत्युहेतुभ्योनृपतिंनिवारयति ॥ ततआगन्तुमृत्यवोनिवारयितुंशक्यानत्ववश्यम्भाविनः ॥ २७ ॥

वैद्यका कर्म्म (काम) ॥

रोगका अच्छेप्रकारसे जानना और उसका दूरकरना यह वैद्यकाकर्म अर्थात् काम है वैद्यआयु देनेवाला नहीं है और कोई २ यह अर्थ करते हैं कि रोगका अच्छीरीतिसे जानना और उसका शान्तकरना केवल यही वैद्यका कर्म नहीं है किन्तु वैद्य आगन्तुक (आनेवाली) सौमृत्युके निवारण करनेसे आयुका स्वामी है सुश्रुतमें धन्वन्तरि जीने कहा है कि अथर्वण वेदके जानने वाले एकसौ एक मृत्यु कहते हैं उनमें से एककाल संयुक्त और बाकी आगन्तुक कहलाती हैं कालसंयुक्त मृत्यु आयुके अन्तमें प्राणियोंको अवश्य संहार करती है उसका निवारण किसी उपाय से नहीं होसक्ता वह आयुके अन्तमें ब्रह्मादिकोंको भी संहार करतीहै क्योंकि लिंगपुराणमें

स्वामिकार्तिक से महादेवजी का वचन है कि हेपुत्र ! मुझे भी कालसहार करता है तो रसायन क्याहस्तुहै इस्से काल संयुक्त मृत्यु प्राणियोंके संहार के लिये अवश्य होगी और शेष एकसौ मृत्यु आगन्तुक कहलाती हैं कार्य्य और कारण के अभेद माननेसे आगन्तुक हेतुओंसे होनेवाली मृत्यु आगन्तुक कहलाती हैं, आगन्तुक हेतु यह हैं कि विष खाना अजीर्ण में अत्यन्त भोजन करना बुरेदेश का जलपीना- अत्यन्त बलवान् शत्रु- व्याघ्र- वनका भैंसा तथा मतवाले हाथी आदिकों से लड़ना- सर्पके साथ क्रीडाकरना बहुत ऊचे वृक्षकी चोटीपर चढ़ना- हाथोंसे बडी नदियों में तैरना और रात्रिके समय दुर्घट मार्गोंमें चलना इत्यादि, जैसे दीपक में वत्ती तेल और अग्निके होते हुए भी वायु के द्वारा दीपक बुझजाता है उसीप्रकार आगन्तुक हेतुओंके द्वारा होनेवाली मृत्यु दुष्टकर्मों से होनहार की प्रबलता के द्वारा आयुके होनेपर भी मारडालती हैं कहा भी है कि जैसे तैलादिकों के होनेपर भी वायुसे दीपक बुझजाता है उसीप्रकार आगन्तुक मृत्यु भी प्राणोंको नाशकरती है आगन्तुक मृत्युओंका निवारण होसका है क्योंकि ऐसाही सुश्रुत में धन्वन्तरि जीने कहा है किरस और मन्त्रके जानने वाले वैद्य और पुरोहित यत्न पूर्वक दोष और आगन्तुक हेतुओंसे राजाकी सर्वदा रक्षा करें, दोष अर्थात् निषिद्ध आहार विहारसे विकारको प्राप्त रोगके उत्पन्न करने वाले वात पित्त और कफ और आगन्तुक अर्थात् अत्यन्त बलवान् शत्रु आदिसे युद्धादिक-अबयह प्रश्न करते हैं कि वैद्य और पुरोहित किस प्रकार से सौ आगन्तुक मृत्युओंको निवारण करसके हैं इसका उत्तर यहहै कि वैद्यरस क्रिया में चतुर और पुरोहित मंत्रमें चतुर होते हैं पहिले वैद्य दिन चर्य्या रात्रिचर्य्या और ऋतुचर्य्या में कहेहुए आहार विहारोंसे वात पित्तकफ धातु और मलोंकी समतारखता है फिर रसके जानने से मृत्युं जयादिक रसोंके द्वारा निषिद्ध आहार विहार से कोपको प्राप्त दोषों से उत्पन्नहुए मृत्यु के कारण रूप विकारों को नाश करता है और पुरोहित यामत्री अच्छी बुद्धि देनेके द्वारा मृत्यु के कारण रूप निषिद्ध व्यवहारों से राजाको निवारण करता हैं इस्से आगन्तुक मृत्युओंका तो निवारण होसका है परन्तु अवश्य होने वाली काल संयुक्त मृत्युका निवारण नहीं होसक्ताहै- ॥२७॥

॥ अथायुर्विचारः ॥

भिषगादौपरीक्षेतरुग्णस्यायुः प्रयत्नतः ।ततआयुषिविस्तीर्णेचिकित्सासफलाभवेत् ॥२८॥

आयुका विचार ॥

वैद्य पहले रोगीकी आयुकी परीक्षा यत्न पूर्वक करे क्योंकि आयुके दीर्घ होनेही में चिकित्सा सफल होती है ॥ २८॥

तत्रदीर्घायुषो लक्षणानि ॥

सौम्यादृष्टिर्भवेद्यस्यश्रोत्रवक्त्रन्तथैवच । स्वादुङ्गन्धविजानातिससाध्योनात्रसंशयः ॥ पाणिपादौचयस्यौष्णौदाहः स्वल्पतरोभवेत् । जिह्वातुकोमलायस्यसरोगीनविनश्यति ॥ स्वेदहीनोज्वरोयस्यश्वासोनासिकयाचरेत् । कण्ठश्चकफहीनः स्यात्सरोगी जीवतिध्रुवम् ॥ यस्यनिद्रासुखेनस्यात् शरीरद्युतिमद्भवेत् । इन्द्रियाणिप्रसन्नानिसरोगीनैवनश्यति ॥ २९ ॥

दीर्घायु के लक्षण ॥

जिसके दृष्टि कान तथा मुख में कोई विकार न होय और जो अच्छी बुरी गंधका ज्ञानकरसक्ताहो वह निस्सन्देह साध्यहै जिसरोगी के हाथपैर उष्णहों थोड़ा दाहहो और जिह्वा कोमलहो वह अवश्य जीताहै, जिस रोगीके स्वेद रहित ज्वरहो नासिकाके द्वारा श्वास ले और कण्ठ में कफनहो वह अवश्य जीताहै जिस रोगीको सुख पूर्वक निन्द्रा आवै शरीरमें कान्तिहो और संपूर्ण इन्द्री प्रसन्नहों वह नहीं मरता है ॥ २९ ॥

अथस्वल्पायुषोलक्षणानि ॥

शरीरशीलयोर्यस्यप्रकृतेर्विकृतिर्भवेत् । तदरिष्टंसमासेनव्यासतश्चनिबोधमे ॥ शृणोतिविविधानशब्दान्विपरीतान्शृणोतिच । योनशृणोतिचाकस्मात्तंवदन्तिगतायुषम् ॥ यस्तूष्णमिवगृह्णातिशीतमुष्णञ्चशीतवत् ।उष्णगात्रोऽतिमात्रंयोभृशंशीतेनकम्पते ॥ (तमपिगतायुषंवदन्तीत्यन्वयः) प्रहारंनैवजानातियोगच्छेदंयथापिवा । पांशुनेवावकीर्णानियश्चगात्राणिमन्यते ॥ वर्णान्यथावाराज्योवायस्यगात्रेभवंतिहि । स्नातानुलिप्तंयश्चापिभजंतेनीलमक्षिकाः ॥ विपरीतेनगृह्णातिरसान्यश्चोपयोजितान् । यावारसाह्नसेवेततंगतासुम्प्रचक्षते ॥ सुगंधंवेत्तिदुर्गंधंदुर्गंधञ्चसुगंधवत् । गृह्णातियोऽन्यथागंधंशांतेदीपेनिरामयः ॥ रात्रौसूर्य्यंज्वलंतंवादिवाचाचंद्रवर्चसम् । दिवाज्योतींपियश्चापिज्वलितानीवपश्यति ॥ दिवावाचंद्रवर्चसम् । सूर्य्यमित्यन्वयः ॥ ज्योतींपिनक्षत्राणि । विद्युत्वतोऽसितान्मेघान्गगनेनिर्घनेघनान् ॥ विमानयानप्रासादैर्यश्चसंकुलमम्बरम् ॥ यश्चानिलंमूर्त्तिमंतमंतरीक्षेऽवलोकते । धूमनीहारवासोभिरावृतामिवमेदनीम् ॥ प्रदीप्तमिवयोलोकंयोवास्तुतमिवाम्भसा । भूमिमष्टापदाकारांलेखाभिर्यश्चपश्यति ॥ योनपश्यतिनक्षत्राणियश्चदेवीमरुंधतीम् । ध्रुवमाकाशगङ्गाञ्चतंवदंतिगतायुषम् ॥ आदर्शेऽम्बुनिघर्मेवाछायांयश्चनपश्यति । पश्यत्येकांगहीनांवाविकृतांवान्यसत्वजाम् ॥ श्वकाककङ्कगृध्राणांप्रेतानांयक्षरक्षसाम् । आतुरोलभतेमृत्युंस्वस्थोऽप्याधिमवाप्नुयात् ॥ ह्रीश्रियौनश्यतोयस्यतेजओजःस्मृतिप्रभा (प्रतिभा) अकस्माद्भजंतेयंसगतासुरसंशयम् । गस्याधरोष्ठोपतितौक्षिप्तश्चोर्ध्वंतथोत्तरः ॥ उभौवाजाम्बवाभासौदुर्लभंतस्यजीवितम् । आरक्तादशनायस्यश्यावावास्युःपतंतिवा ॥ खञ्जनप्रतिभावापितंगतायुषमादिशेत् । कृष्णातथाम्बुलिप्ताजिह्वाचशूनाचयस्यवै ॥ कर्कशावाभवेद्यस्यसोऽचिराद्विजहात्यसून् ।कुटिलास्फुटितावापिशुष्कावायस्यनासिका । अवस्फुर्ज्जंतिभग्नावासनजीवतिमानवः ॥ (स्फुर्ज्जंतिश्वासवेगेनोच्चैःशब्दंकरोतीत्यर्थः) संक्षिप्तेविषमेस्तब्धेरूक्षेसास्नेचलोचने । स्यातांपरिस्रुतेयस्यसगतायुर्नरोध्रुवम् ॥ केशाःसीमंतिनोयस्यसंक्षिप्तेविनतेभ्रुवौ । लुठंतिचाक्षिपक्ष्माणिसोऽचिराद्यातिमृत्यवे ॥ (लुठंतिपतंति) नाहरत्यन्नमास्यस्थंनधारयतियःशिरः । एकाग्रदृष्टिर्मूढात्मासद्यःप्राणान्विमुञ्चति ॥ उत्था

प्यमानोवहुशःसंमोहंकोऽपिगच्छति । वलवानदुर्वलोवापितंयाप्यंभिषगादिशेत् ॥ निद्रानिरंतरंयस्ययोजागर्तिचसर्व्वदा । मुह्येद्वावक्तुकामश्चप्रत्याख्येयःसजानता ॥ उत्तरौष्ठश्चयोलिह्याद्दुत्करांश्चकरोतियः । प्रेतैर्वाभाषतेसार्धंप्रेतरूपंतमादिशेत् ॥ उत्करान्हस्तपादादिविक्षेपान्) खेभ्यश्चरोमकूपेभ्योयस्यरक्तंप्रवर्त्तते ॥ पुरुषस्याविषार्त्तस्य ससद्योजीवितंत्यजेत् । सम्यक्चिकित्स्यमानस्यविकारोयोऽभिवर्द्धते ॥ प्रक्षीणवलमांसस्यलक्षणंतद्गतायुषः ॥ ३० ॥

अल्पायु के लक्षण ॥

जिस के शरीर और स्वभावकी प्रकृति वदल जाय यह संक्षेप से अरिष्टहै और इसका विस्तार पूर्वक वर्णन करतेहैं कि जो शब्दके नहोने परभी अनेक प्रकार केशब्द सुने अथवा विपरीत शब्दोंको सुने अथवा शब्दोंके होनेपरभी एकाएकीन सुने उसको गतायु(शीघ्रमरनेवाला) कहतेहैं जो उष्णको शीत के समान तथा शीतको उष्ण के समान ग्रहण करे और जो अत्यन्त उष्ण शरीर वालाभी शीतसे कांपे उसको भी गतायु कहते हैं जिसके चोटलगनेसे भी पीड़ा नहो जो स्वभावके विपरीत कार्य्य करे अपने शरीरको धूल से लिपटा हुआ जाने जिसके अंगोंका वर्ण वदल जाय अथवा रेखा सी पड़ जांय स्नानकरने और चन्दनादिक के लगानेपरभी जिसके शरीर परनीलीमक्खी बैठें और जो दिये हुए रसोंको विपरीत जाने अथवा रसोंका ज्ञाननहो उसको गतायु कहतेहैं जो वातादि दोषों के शान्त होजाने से रोग रहित हुआ सुगंध को दुर्गन्ध और दुर्गन्धको सुगन्धजाने रात्रि में ज्वलित सूर्य्य को तथा दिन में चन्द्रमा की किरणको अथवा जलते हुए नक्षत्रों को देखै निर्मल आकाशमें बिजली सहित काले मेघोंको देखे बिमानकी सवारी और महलोंसे परिपूर्ण आकाश देखे आकाशमें मूर्त्तिमान् वायुका दर्शन करे धुआं पाला तथा वस्त्रोंसे ढकीहुईके समान पृथ्वीको देखे जगत्को जलता हुआ अथवा पानीसे वहता हुआ सा देखे लकीरों से चौपड़सी बिछीहुई पृथ्वीको देखे और नक्षत्र अरुन्धती देवी ध्रुव तथा आकाश गंगाको न देखे उसको गतायु कहतेहैं जो दर्पणमें जल में अथवा धूपमें छायाको नहीं देखताहै और जो देखताहै तो एक अंगसे रहित विकार युक्त अथवा कुत्ता काक कंक (उजली चील) गृध्र प्रेत यक्ष राक्षस आदिक अन्य जीवोंके समान अपनी छायाको देखताहै वह जो रोगी होय तो मृत्युको प्राप्त होताहै और अच्छा हो तो रोगी होजाताहै जिसकी लज्जा श्री तेज ओज स्मृति और प्रतिभा (सूझबूझ वाली बुद्धि) अकस्मात् नष्ट होजावे और लज्जादि रहित पुरुषको अकस्मात् लज्जादिक प्राप्त होजायं उसको निस्सन्देह गतायु जानना चाहिये • जिसके दोनों ओष्ठ लटक पड़तेहैं अथवा ऊपरका ओष्ठ ऊंचेको उठजाताहै या दोनों ओष्ठ जामनके रंग के समान रंगवाले होजातेहैं उसका जीना दुर्लभ है जिसके दांत रक्त वर्ण श्याम वर्ण अथवा खंजन के समान वर्णवाले होजांय या एका एकी गिरपड़ें उसको गतायु जानना चाहिये जिसकी जिह्वा काली जकड़ी हुई लिपी हुई सूजन युक्त अथवा कठोर होजाय वहभी शीघ्र प्राणोंको त्याग करताहै जिसकी नाक टेढ़ी फटी हुई सूखी टूटी अथवा श्वासके बेगसे उच्चशब्द करतीहो वह मनुष्य नहीं जीताहै जिसके नेत्र भीतरको धसे हुए विषम (एकबड़ा एकछोटा) कठोर रूखे और रुधिर करके सहितहों अथवा वहतेहों उसको निस्सन्देह गतायु जानना चाहिये जिस के बाल वंधेहुएसे होजायं भौंह छोटी तथा झुकी हुई होजायं और नेत्रोंके पलक गिरपड़ें वह शीघ्रही प्राणोंको त्याग करता है

जो मुखमें रक्खी हुई चीज़को निगल न सके शिरको अच्छे प्रकारसे धारण न करसके और जिसकी दृष्टि एकाग्रहो चैतन्य शक्ति जातीरहे वह शीघ्रही प्राणोंको त्याग करताहै जो उठाने से वारम्वार मूर्च्छाको प्राप्त होताहै वह रोगी बलवान्हो चाहे निर्वलहो बुद्धिमान् वैद्य उसका त्याग करदे जो वह बराबर सोवे अथवा जागे और कुछ कहनेकी इच्छासे मोहको प्राप्तहो उस रोगी को बुद्धिमान् वैद्य शीघ्र त्यागे जो ऊपरके ओष्ठको चाटे हाथ पैरोंको फेंके और सायंकालमें प्रेतों से वार्तेंकरे उस रोगीको प्रेतरूप जानना चाहिये विषकी पीड़ाके विना जिस रोगीके रोमोंसे रुधिर वहे वह शीघ्रही प्राणोंको त्याग करताहै बल और मांसकी क्षीणतावाले रोगीकी अच्छेप्रकार चिकित्सा करनेपर भी जो विकार बढ़ताही जाय तो गतायुका लक्षण जाननाचाहिये ॥ ३० ॥

भूताः प्रेताःपिशाचाश्चरक्षांसिविविधानिच।मरणाभिमुखंजन्तुमुपसृत्यचनित्यशः॥तानि भेषजवीर्य्याणिप्रतीच्छन्तिजिघांसया।तस्मात्मोघाःक्रियाःसर्वाभवन्त्यवेगतायुषः॥३१॥

भूत-प्रेत-पिशाच और अनेक प्रकारके राक्षस आकर मारनेकी इच्छा से गतायुपुरुषकी औषधियोंके वीर्य्यको हरलेते हैं इस्से सम्पूर्ण क्रिया व्यर्थ होजाती हैं ॥ ३१ ॥

नन्वायुषिसतिचिकित्सायाःसाफल्यमुक्तम् । आयुश्चेदस्तितदातदेवजीवनहेतुः॥ किं चिकित्साविधानंतत्रोच्यते । आयुषिसतिचिकित्सायाःफलंवेदनानिग्रहः ॥ (उक्तञ्च) आयुष्मान्पुरुषोजीवेत्सव्यथाभेषजंविना । भेषजेनपुनर्ज्जीवेत्सएवहिनिरामयः ॥ किञ्च । आयुषिसत्यपिरोगीचिकित्सांविनाउत्थातुंनशक्नोति (यतआहचरकः) सतिचायुषिनोपायंविनोत्थातुंक्षमोरुजो ॥ दर्शितश्चात्रदृष्टान्तःपङ्कलग्नोयथागजः । किञ्च ॥ चिकित्सांविनायुष्मानप्यवसीदति । यतआहसएव ॥ सतिचायुषिनष्टःस्यादामयेश्चाचिकित्सितः । यथासत्यपितैलादौदीपोनिर्व्वातिवात्यया ॥ अतएवोक्तम् । साध्यायाप्यत्वमायान्तियाप्यागच्छन्त्यसाध्यताम् ॥घ्नन्तिप्राणानसाध्यास्तुनराणामक्रियावतामिति। किंचित्सातुअनिश्चितायुषोऽपिकर्त्तव्या (यतआह) तावत्प्रतिक्रियाकार्य्यायावच्छ्वसितिमानवः ॥ कदाचिद्दैवयोगेनदृष्टाऽरिष्टोऽपिजीवति। इतितुयस्यासाध्यत्वंसान्दिग्धंतंप्रत्युक्तम् ॥ येषुत्वसाध्यताशास्त्रेणानुभवेनविनिश्चिताः तेपुनर्न्नचिकित्स्याः।यतउक्तम् ॥ सद्वैद्यास्तेनयेसाध्यानारभन्तेचिकित्सितुमिति ॥ ३२ ॥

अब यह सन्देह होताहै कि आयुके होनेपर चिकित्साकी सफलता कही तब जो आयुहै तो वही जीवनका कारण होजायगी फिर औषधि करनेसे क्या इसका उत्तर यहहै कि आयुके होनेपरभी चिकित्साका फल पीड़ाका रोकना है और कहाभी गयाहै कि आयुके होनेपरभी औषधिके विना शरीर पीड़ा युक्तहोकर सजीव रहताहै और औषधि करनेसे नीरोगी होकर जीताहै किन्तु आयुके होनेपरभी रोगी पुरुष चिकित्सा के विना उठनहीं सका और ऐसाही चरकने कहाहै कि जिसप्रकार कीचड़में फँसाहुआ हाथी विना किसी सहारेके उठनहीं सक्ता है उसीप्रकार आयुके होनेपरभी विना किसी उपाय रूप औषधीके रोगसे नहीं उठसक्ता है और आयुके होनेपरभी चिकित्सा या औषधिके विना मृत्युहोजाती है क्योंकि चरकने कहाहै कि जिसप्रकार तेलादिकों के होनेपरभी वायुके द्वारा

दीपक बुझजाता है इसीप्रकार आयुके होनेपरभी चिकित्साके बिना रोगोंसे प्राण नष्टहोजाते हैं इसी से कहागया है कि औषधि न करने से साध्य याप्य होजाते हैं याप्य असाध्य होजाते हैं और असाध्य रोगोंसे मृत्युको प्राप्त होजाते हैं जिसकी आयुका निश्चय न हो उसकीभी चिकित्सा करनी चाहिये क्योंकि कहागया है कि जबतक मनुष्यका श्वास रहै तबतक चिकित्सा करनी चाहिये कदाचित् दैव योगसे अरिष्टके लक्षणोंके होनेपरभी प्राण बचजांय परन्तु यहतो जिसके असाध्य होनेमें सन्देह है उसके लिये कहागया है और जिनकी असाध्यता शास्त्र और अनुभवके द्वारा निश्चय करलीहो उनकी चिकित्सा नहीं करनी चाहिये ऐसाही कहाभी गयाहै कि जो असाध्योंकी चिकित्सा करते हैं वह सद्वैद्य नहीं है ॥ ३२ ॥

अथद्रव्यम् ॥

सर्वेद्रव्यमपेक्षन्तेरोगिप्रभृतयोयतः। विनावित्तंनभैषज्यंचिकित्साङ्गंततोधनम्॥३३॥

द्रव्यका वर्णन ॥

रोगी आदिके सब द्रव्यकी अपेक्षा करते हैं क्योंकि धनके विना औषधि नहीं होसकी इस्से धन भी चिकित्साका अंग है ॥ ३३ ॥

अथपरिचारकस्य लक्षणम् ॥

स्निग्धोऽजुगुप्सुर्बलवान्युक्तोव्याधितरक्षणे । वैद्यवाक्यकृदश्रान्तोयुज्यतेपरिचारक.॥स्निग्धःप्रीत.अजुगुप्सुःअनिन्दकः ॥ ३४ ॥

सेवकका लक्षण ॥

प्रीतियुक्त अनिन्दक-बलवान् रोगीकी रक्षाकरनेमें युक्त-वैद्यके वाक्यके अनुसार कार्य्य करने वाला और परिश्रमी ऐसा पुरुष रोगीका सेवकहोना चाहिये ॥ ३४ ॥

अथभेषजस्यलक्षणम् ॥

वैद्योव्याधिंहरेद्येनतद्द्रव्यंप्रोक्तमौषधम्। तद्यादृशमवश्यंस्याद्रोगघ्नन्तादृशंब्रुवे ॥३५॥

औषधिका लक्षण ॥

वैद्य जिस वस्तुसे रोगको नाश करता है उस वस्तुको औषधि कहते हैं जिसप्रकारकी औषधिसे निस्सन्देह रोग नाशहोताहै उसको कहते हैं ॥ ३५ ॥

तत्रौषधग्रहण परिभाषा ॥

प्रशस्तदेशसञ्जातंप्रशस्येऽहनिचोद्धृतम् । अल्पमात्रंबहुगुणंगन्धवर्णरसान्वितम् ॥ दोषघ्नमग्लानिकरमधिकंनविकारियत् । समीक्ष्यकालेदत्तञ्चभेषजंस्याद्गुणावहम् ॥ ३६ ॥

औषधिके ग्रहण करनेकी परिभाषा ॥

अच्छे देशमें उत्पन्न हुई-अच्छे समयमें उखाड़ीगई थोड़ी मात्रासे बहुत गुण देनेवाली गन्धवर्ण तथा रसकरके युक्त दोषकी नाशक ग्लानि रहित और अधिक खानेसेभी दोषको नहीं करनेवाली औषधि विचार पूर्वक समयपर दीगई गुणकारी होती है ॥ ३६ ॥

आग्नेयाविन्ध्यशैलाद्याःसौम्योहिमगिरिःस्मृतः । अतस्तदौषधानिस्युरनुरूपाणिहेतुभिः ॥ आग्नेयाःअधिकाग्न्यंशाःसौम्यःअधिकसोमांशः । औषधयएवौषधानि ॥ अ, त्रस्वार्थेअण् । अनुरूपाणि सदृशानि ॥ अन्येष्वपिप्ररोहन्तिवनेपूपवनेषुच । गृह्णीयात्तानिसुमनाःशुचिःप्रातःसुवासरे ॥ आदित्यसम्मुखोमौनीनमस्कृत्याशिवंहृदि । साधारणधराद्रव्यंगृह्णीयादुत्तराश्रितम् ॥ साधारण धराद्रव्यं । सर्वभूमिभवन्द्रव्यम् ॥ उत्तराश्रितंस्वस्मात्उत्तरादिग्भवम् । वल्मीककुत्सितानूपश्मशानोपरमार्गजाः ॥ जन्तुवह्निहिमव्याप्तानौषध्यःकार्य्यसाधिकाः ॥ ३७ ॥

विन्ध्यादिक पर्वत अधिक अग्निके गुणसे युक्त और हिमालयादि पर्वत अधिक जलके गुणवाले होतेहैं इस्से उनमें उत्पन्न हुई औषधि भी उन्हींके समान गुणवाली होती हैं और भी बाग तथा जगलोंमें औषधि उत्पन्न होतीहैं उनको प्रसन्न चित्त पवित्र सूर्य्यके सन्मुख अच्छे दिन में शिवजीको हृदयमें प्रणाम करके प्रातःकालके समय मौन होकर उखाड़े अपनेसे उत्तरकी ओर सम्पूर्ण पृथ्वीमें उत्पन्न हुई वस्तुको ग्रहण करे सर्पकी वामी अपवित्र स्थान बहुत जल युक्त स्थान श्मशान उपर तथा मार्ग में उत्पन्न हुई और कीड़े अग्नि तथा पाले से व्याप्त औषधियों से कार्य्य सिद्ध नहीं होता ॥ ३७ ॥

शरद्यखिलकार्य्यार्थंग्राह्यंसरसमौषधम् । विरेकवमनार्थन्तुवसन्तान्तेसमाहरेत् ॥ वसन्तान्तेवसन्तमध्येसमाहरेत्संगृह्णीयात । अतिस्थूलजटायास्स्युस्तासांग्राह्यास्त्वचोध्रुवम् ॥ गृह्णीयात्सूक्ष्ममूलानिसकलान्यपिबुद्धिमान् । अन्यच्च ॥ महान्तियेषांमूलानिकाष्ठगर्भाणिसर्व्वतः । तेषान्तुवल्कलंग्राह्यंह्रस्वमूलानिसर्व्वशः ॥ न्यग्रोधादेस्त्वचोग्राह्यःसारःस्याद्बीजकादितः । तालीसादेश्चपत्राणिफलंस्यात्त्रिफलादितः॥क्वचिन्मूलंक्वचित्कन्दःक्वचित्पत्रंक्वचित्फलम्॥क्वचित्पुष्पंक्वचित्सर्व्वंक्वचित्सारःक्वचित्त्वचः ॥ चित्रकंसूरणांनिम्बोवासाचात्रिफलाक्रमात् । धातकीकण्टकारीचखदिरःक्षिरपादपः३८ ॥

शरदऋतु में सम्पूर्ण कार्य्योंके लिये सरस औषधि लेनी चाहिये वमन और विरेचन के लिये औषधि वसन्त ऋतुमें लेनीचाहिये जिन वृक्षोंकी जड़ बहुतमोटीहो उनकी छाल लेनीचाहिये और छोटी जड़ वाले वृक्षोंकी सर्वांग लेना चाहिये और भी कहाहै कि जिन वृक्षोंकी जड़ मोटी और काष्ठसे भरीहो उनकी छाल लेनी चाहिये और छोटी जड़वाले वृक्षोंकी जड़ लेनी चाहिये वर्गद आदि वृक्षोंकी त्वचा विजयसारआदिक वृक्षोंके सारांश तालीस आदिक वृक्षोंके पत्र और त्रिफला आदिकोंसे फल लेना चाहिये किसीकी जड़ किसीका कन्द किसीका पत्र किसीका फल किसीका पुष्प किसीका सर्वाङ्ग किसीका सारांश और किसीकी छाल लेनी चाहिये जैसे चीतेकी छाल सूरन का कन्द (जिमीकन्द) नींब और अडूसेके पत्ते त्रिफलाके फल धवईके फूल भटकटैयाका सर्वांग कत्थेका सारांश और वर्गद आदिकोंकी छाल लेनी चाहिये ॥ ३८ ॥

क्वचिन्निम्बस्यगृह्णीयात्पत्राभावेत्वचामपि । बालंफलन्तुविल्वस्यपक्कमारग्वधस्यच॥

अङ्गेऽनुक्तेजटाग्राह्याभागेऽनुक्तेऽखिलंसमम् । पात्रेऽनुक्तेमृदःपात्रंकालेऽनुक्तेत्वह मुखम् ॥ ३९ ॥

कहीं २ नींबके पत्तोंके अभावमें छालभी ग्रहण कीजाती है-बेलका कच्चाफल लेना चाहिये और अमलतासका पक्काफल लेना चाहिये जहांपर औषधिका अंग न कहाहो वहां उसकी जड़लेनी चाहिये और जहां औषधियोंके भाग न कहेहों वहां समभाग लेना चाहिये पात्र न कहाहो तो मृत्तिका कापात्र लेना चाहिये समय न कहाहोवे तो प्रातःकाल लेना चाहिये ॥ ३९ ॥

नवान्येवहियोज्यानिद्रव्याण्यखिलकर्मसु । विनाविडङ्गकृष्णाभ्यांगुडधान्याज्यमाक्षिकैः ॥ (धान्यमन्नम्) पुराणन्तुप्रशस्तंस्यात्ताम्बूलङ्काञ्जिकंतथा । शुष्कन्नवीनद्रव्यन्तुयोज्यंसकलकर्म्मसु॥आर्द्रन्तुद्विगुणंयुञ्ज्यादेषसर्व्वत्रनिश्चयः ॥ ४० ॥

सम्पूर्ण कार्योमें वायविडंग-पीपल-गुड अन्न घृत तथा मदको छोडकर सब वस्तु नवीन लेनी चाहिये और ताम्बूल तथा कांजीभी प्राचीनही श्रेष्ठहोती है सम्पूर्ण कार्य्योमें नवीन और सूखी वस्तु लेनी चाहिये और जो गीली लेतो दूनी मात्रालेनी चाहिये यह सर्वत्र निश्चयहै ॥ ४० ॥

गुडूचीकुटजोवासाकुष्माण्डश्चशतावरी ॥ अश्वगन्धासहचरी शतपुष्पाप्रसारिणी । प्रयोक्तव्यासदैवार्द्रा द्विगुणंनैवकारयेत् ॥ सहचरःकुरण्टकःकटसरै आइतिलोके । वासानिम्बपटोलके तकबलाकूष्माण्डकेंदीवरी वर्षाभूः कुटजाश्चकन्दसहितासापूतिगन्धास्मृता । ऐन्द्रीनागबलाकुरण्टकपुरो छत्रामृतासर्व्वदा ॥ सार्द्राएवतुतत्क्वचित् द्विगुणिताकार्य्येषुयोज्याबुधैः ॥ ऐन्द्रीइन्द्रवारुणी । वरीशतावरी । पूतिगन्धा गन्धप्रसारणी।नागबलागुलशकरी । कुरण्टकःपीतपुष्पकटसरैया । पुरोगुग्गुलः ॥ ४१ ॥

गिलोय-कुरैया-अडूसा पेठा सतावर असगन्ध कटसरैया सौंफ और आकाशबेल यह सब गीली लेनी चाहिये और इनकी मात्रा दूनी नहीं होती- अडूसा- नींब, परवल- केतकी- वरियारा- पेठा- इन्द्राइन सतावर गदहपूरना- कुरैया- कन्दशाक- गन्धप्रसारणी- इन्द्रवारुणी गुलशकरी- कटसरैया गूगल, सौंफ और गिलोय यह भी संपूर्ण गीली लेनी चाहिये और इनकी मात्रा कहीं २ दूनीभी करदेनी चाहिये, ॥ ४१ ॥

घृतन्तैलञ्चपानीयं कषायंव्यञ्जनादिकम् । पक्त्वाशीतीकृतंचोष्णं तत्सर्व्वंस्याद्विषोपमम् ॥ ४२ ॥

घृत, तेल- जल- कषाय- और व्यंजनादिक एकवार परिपाक करके शीतल हुए फिर उष्णकरने से विषके तुल्य होजाते हैं- ॥ ४२ ॥

अथद्रव्याणांपरीक्षा ॥

सूक्ष्मास्थिमांसला पथ्यासर्व्वकर्म्मणिपूजिता । क्षिप्ताम्भसि निमज्जेद्याभल्लातक्यस्तथोत्तमाः॥ वराहमूर्द्धवत्कन्दोवाराहीकन्दसंज्ञकः। सौवर्चलन्तुकाचाभंसैन्धवंस्फटिकप्रभम्॥ सुवर्णं च्छविकंज्ञेयंस्वर्णमाक्षिकमुत्तमम् । इन्द्रगोपप्रतीकाशंमनोह्वा चोत्तमामता ॥ श्रेष्ठंशिलाजतुज्ञेयंप्रक्षिप्तंनविशीर्यते ॥ तोयपूर्णेकांस्यपात्रे प्रतानेनविवर्द्धते । कर्पू

रःस्तुवरःस्निग्धः एलासूक्ष्मफलावरा ॥ श्वेतचन्दनमत्यन्तंसुगन्धिगुरुपूजितम्।रक्तच न्दनमत्यन्तं लोहितंम्प्रवरंमतम् ॥ काकतुण्डनिभःस्निग्धोगुरुः श्रेष्ठोगुरुर्मतः ॥ सुगं धिलघुरूक्षञ्चसुरदारुवरंमतम् । सरलंस्निग्धमत्यर्थं सुगंधिचगुणावहम् ॥ अतिपी ताप्रशस्तातुज्ञेयादारुनिशाबुधैः । जातीफलंगुरुस्निग्धं समंशुभ्रान्तरंवरम् । मृद्वी कासोत्तमाज्ञेयायास्याद्गोस्तनसन्निभा ॥ करमर्दफलाकारामध्यमासाप्रकीर्त्तिता ॥ गोस्तनसन्निभा मुनकाइतिलोके । करमर्दफलाकाराकरौंदीदाखइतिलोके । खण्डंतुवि मलंश्रेष्ठंचंद्रकान्तसमप्रभम् ॥ गव्याज्यसदृशंरुच्यंगंधंमधुवरम्मतम् ॥ ४३ ॥

द्रव्योंकी परीक्षा ॥

छोटी गुठली वाली गूदेदार पानीमें डालनेसे डूबजाने वाली हड़ सब कामोंमें श्रेष्ठ होती है और इसीप्रकार का भिलावा भी उत्तम होताहै शूकरके शिरके समान जो कन्द होताहै उसको वाराही कन्द कहतेहैं काचके समान सोंवर्चल (कालानोन) श्रेष्ठहै स्फटिकके समान सेंधानोन श्रेष्ठ है सुवर्ण के समान कान्ति वाली सोना मक्खी श्रेष्ठहै इन्द्रपुष्प के समान मैनसिल श्रेष्ठहै जो शिला जीत जलसे भरेहुए पात्रमें छोड़नेसे क्रमसे सूतके समान बढ़े और बिखरे नहीं वह उत्तमहै चिकना कपूर श्रेष्ठहै इलाचियों में छोटी इलायची श्रेष्ठहै अत्यन्त सुगन्धित और भारी श्वेत चन्दन श्रेष्ठहै बहुत लाल रंगका रक्त चंदन श्रेष्ठहै काक की ठोंटके समान कांतिवाला चिकना और भारी अगर श्रेष्ठहै सुगंधि युक्त हलका और रूखा देवदारु श्रेष्ठहै अत्यन्त सुगंधित और चिकना सरल (एकतरहकादेवदारु)श्रेष्ठहै अत्यन्त पीले रंगवाली दारुहल्दी श्रेष्ठहै भारी चिकना भीतरसे सफा जायफल श्रेष्ठहै गौके थन के समान मुनक्का श्रेष्ठ करौंदे के फलके समान मुनक्का मध्यमहै निर्मल और चन्द्र कान्ति मणि के समान खांड़ श्रेष्ठहै गौके घृतके समान वर्णवाला रुचि, कारक और सुगन्धि युक्त सहत श्रेष्ठहै ॥ ४३ ॥

अथस्वभावतोहितानि ॥

शालीनांलोहितःशालिःषष्टिकेषुचषष्टिका । शूकधान्येष्वपियवोगोधूमःप्रवरोमतः ॥ शिम्बिधान्येवरोमुद्गोमसूरश्चाढकस्तथा । रसेषुमधुरःश्रेष्ठोलवणेषुचसैंधवः ॥ दाडि मामलकंद्राक्षाखर्ज्जूरंचपरूषकम् । राजादनंमातुलुंगंफलवर्गेप्रशस्यते ॥परूषकंफालसा इतिलोके । राजादनंखिरणी इतिलोके ॥ मातुलुङ्गं बिजउरा इतिलोके । पत्रशाकेषु वास्तूकंजीवन्तीपोतिकावरा ॥ पटोलफलशाकेषुकन्दशाकेषुसूरणम् । एणःकुरङ्गोहरि णीजागलेषुप्रशस्यते ॥ पक्षिणांतित्तिरिर्लावोवरोमत्स्येषुरोहितः ॥ हरिणस्ताम्रवर्णः स्यादेणःकृष्णतयामतः । कुरंगस्ताम्रउद्दिष्टोहरिणाकृतिकोमहान् ॥ जलेषुदिव्यंदुग्धेषु गव्यमाज्येषुगोभवम् तैलेषुतिलजंतैल मैक्षवेषुसिताहिता ॥ ४४ ॥

स्वभावसे हितकारी वस्तु ॥

धानोंमें लाल धान श्रेष्ठ और षष्टिक धान्यों में साठीके चावल श्रेष्ठहैं शूक धान्यों(तुषयुक्तधान्यों)

में जो गेहूं श्रेष्ठहै, फली वाले धान्यों में मूंग मसूड़ और अरहड़ श्रेष्ठहै रसोंमें मधुर रस श्रेष्ठहै लवणों में सैंधव श्रेष्ठहै फलोंमें अनार आंवला मनका खजूर फालसा, खिन्नी और बिजौरा नींबू श्रेष्ठहैं पत्रशाकोंमें बथुआ जीवन्ती और पोईश्रेष्ठहै फलशाकोंमें पर्वल श्रेष्ठहै कन्द शाकोंमें जिमीकन्द श्रेष्ठहै जंगली जीवोंके मांस में एण कुरंग और हरिण श्रेष्ठहै पक्षियोंमें तीतर और बटेर श्रेष्ठ है और मछलियों में रोहू श्रेष्ठहै ताम्रवर्ण वाले मृगको हरिण कृष्णवर्णवाले को एण और ताम्र वर्ण वाले मृगकी आकृतिके समान और उससे कुछ बड़े मृगको कुरंग कहतेहैं जलोंमें वर्षाका जल श्रेष्ठहै दुग्धोंमें गौका दूध श्रेष्ठहै घृतोंमें गौकाघृत श्रेष्ठहै तेलों मे तिलका तेल श्रेष्ठहै ईखकी वस्तुओंमें चीनी श्रेष्ठ है ॥ ४४ ॥

अथस्वभावादहितानि ॥

शिम्बीपुमाषान् ग्रीष्मतौलवणेष्वोषरंत्यजेत् । फलेपुलकुचंशाकेसार्षपंनहितम्मतम् ॥ गोमांसंग्राम्यमांसेपुनहितंमहिषीवसा । मेषीपय:कुसुम्भस्य तैलन्त्याज्यञ्चफाणितम् ॥ इक्षुरसःपरिपक्वोयोऽर्द्धघनफाणितम् । तद्धिछोयाराब इतिलोके ॥ ४५ ॥

स्वभावसे अहितकारी ॥

शिंबी धान्यों में उर्द ग्रीष्मऋतु में अहित है, लवणों में पांगात्यागने के योग्य है, फलों में बड़हर और सागों में सरसो का साग अहित है- गांवके पशुओं के मांस में गोमांसऔर भैंसकी चरबी अहित है, भेड़ीका दूध कुसुमका तेल, ईख की वस्तुओं में फाणित (ईखकापकाया हुआ रसआधा गाढ़ाहुआ फाणित अर्थात् राब कहाता है) अहित है, ॥ ४५ ॥

अथसंयोगविरुद्धानि ॥

मत्स्यमानूपमांसञ्चदुग्धयुक्तंविवर्ज्जयेत् । कपोतंसर्षपस्नेहंभर्ज्जितम्परिवर्ज्जयेत् ॥ 'मत्स्यानिक्षोविकारेणतथाक्षौद्रेणवर्ज्जयेत् । शक्तून्मांसपयोयुक्तानुष्णैर्दधिविवर्ज्जयेत् ॥ उष्णैर्नभोऽम्बुनाक्षौद्रंपायसंकृशरान्वितम् । रम्भाफलंत्यजेत्तक्रंदधिविल्वफलान्वितम् ॥ दशाहमुषितंसर्पि:कांस्येमधुघृतंसमम् । कृतान्नञ्चकषायञ्चपुनरुष्णीकृतंत्यजेत् ॥ एकत्रबहुमांसानि विरुध्यन्तेपरस्परम् । मधुसर्पिर्वसातैलंपानीयंवापयस्तथा ॥ ४६ ॥

संयोग से अहित करने वाली वस्तु ॥

मत्स्य और अनूप मांस दूधके साथ न भोजन करे, सरसो के तेल से भुनेहुए कबूतर केमांस को त्याग करदे, गुड़ आदिक ईखके पदार्थ अथवा सहत के साथ मछली न खाय- मांस और दूधके साथ सत्तू- और गरम चीजों के साथ दही न खाय- गरम वस्तुओं के साथ वर्षाका जल और सहत न खाय-, खिचड़ी के साथ दूधकी वस्तु और केलेका फल न खाय- वेलके साथ दही और मट्ठा न खाय- दशदिनतक कांसेके पात्र में धराहुआ घी अथवा सहत के समभाग न खाय- पक्का अन्नऔर क्वाथफिर पकाकर न खाय- बहुत प्रकार के मांस एकही में मिलाकर न खाय- सहत- घृत चरबी- तेल- जल और दूध एक में मिलाकर न खाय, ॥ ४६ ॥

अथभेषजग्रहणसङ्केतः॥लवणंसैन्धवंप्रोक्तंचन्दनंरक्तचन्दनम् । चूर्णलेहासवस्नेहाः साध्याधवलचन्दनैः ॥ कषायलेपयोःप्रायोयुज्यतेरक्तचन्दनम् । अंतःसम्मार्ज्जनेज्ञेया

ह्यजमोदाथवानिका॥वहिःसम्मार्ज्जनेसैवविज्ञातव्याजमोदिका ॥पयःसर्पिःप्रयोगेषुगव्य मेवहिगृह्यतेसकृद्रसोगोमयकंमूत्रंगोमूत्रमुच्यते ॥ ४७ ॥

औषधि के ग्रहणका संकेत ॥

लवण कहने से सेंधानोन- चन्दन कहने से रक्तचन्दन- परन्तु चूर्ण- अवलेह- आसव और स्नेह में श्वेत चंदन कषाय तथा लेप में प्रायः रक्तचंदन डालाजाता है· खानेपीनेके विषय में अजमोद कहने से अजवाइन लेनी चाहिये और लेपादिकोंमें वही अजमोद लेनाचाहिये- दूध और घी कहने से गौकादूध और घी लेना चाहिये- मलकारस और मूत्र लिखाहोतो गौके गोवर का रस और गौका मूत्र लेना चाहिये- ॥ ४७ ॥

प्रतिनिधिः ॥

चित्रका भावतोदन्तीक्षारःशिखरिजोऽथवा। अभावेधन्वयासस्यप्रक्षेप्यातुदुरालभा ॥ (शिखरीअपामार्गः।) तगरस्याप्यभावेतुकुष्ठंदद्याद्भिषग्वरः । मूर्वाभावेत्वचोग्राह्याजिंगिनीप्रभवाबुधैः ॥ अहिंस्रायाअभावेतुमानकन्दः प्रकीर्त्तितः । लक्ष्मणायाअभावेतु नीलकण्ठशिखामता ॥ वकुलाभावतोदेयंकह्लारोत्पलपङ्कजम् । नीलोत्पलस्याभावेतु कुमुदंदेयमिष्यते ॥ जातीपुष्पं नयत्रास्तिलवङ्गंतत्रदीयते । अर्कपर्णादिपयसो ह्यभावे तद्रसोमतः ॥ पौष्कराभावतःकुष्ठंतथालांगल्यभावतः। स्थौणेयकस्याभावेतुभिषग्भिर्दीयतेगदः ॥ चविकागजपिप्पल्योपिप्पलीमूलवत्स्मृतो । अभावेसोमराज्यास्तुप्रपुन्नाट फलंमतम् ॥ यदिनस्याद्दारुनिशातदादेयानिशाबुधैः। सोमराजीवाकुची ॥ प्रपुनाटफलं चक्रमर्द्दनफलम्।दारुनिशादारुहरिद्रा।निशाहरिद्रा । रसाञ्जनस्याभावेतुसम्यग्दार्व्वीप्रयुज्यते ॥ सौराष्ट्र्यभावतोदेयास्फटिकातद्गुणाजनैः । सौराष्ट्रीसोरठीमाटीइतिलोके ॥ स्फटिकाफटिकारीइतिलोके। तालीशपत्रकाभावे स्वर्णतालीप्रशस्यते ॥ भार्ग्यभावेतुतालीशंकण्टकारीजटाथवा । रुचकाभावतोदद्याल्लवणंपांशुपूर्व्वकम्। अभावेमधुयष्ट्यास्तुधातकीञ्चप्रयोजयेत् ॥ रुचकंचौहारइतिलोके । पांशुलवणंखारीअथवा रेहइतिलोके। अम्लवेतसकाभावे चुक्रंदातव्यमिष्यते । द्राक्षायदिनलभ्येत प्रदेयंकश्मरीफलम् ॥ तयोरभावेकुसुमं वन्धूकस्यमतंबुधैः । लवंगकुसुमंदेयं नखस्याभावतःपुनः ॥ कस्तूर्य्यभावेकङ्कोलं क्षेपणीयंविदुर्बुधाः । कङ्कोलस्याप्यभावेतु जातीपुष्पंप्रदीयते ॥ सुगन्धिमुस्तकंदेयं कर्पूराभावतोबुधैः। कर्पूराभावतोदेयंग्रन्थिपर्णविशेषतः ॥ कुंकुमाभावतोदद्यात् कुसुम्भकुसुमंनवम्। श्रीखण्डचन्दनाभावे कर्पूरंदेयमिष्यते॥ अभावे त्वेतयोर्वैद्यः प्रक्षिपेद्रक्तचंदनम् । रक्तचंदनकाभावे नवोशीरंविदुर्बुधाः ॥ मुस्ताचातिविषाभावे शिवाभावेशिवामता। अभावेनागपुष्पस्य पद्मकेसरमिष्यते ॥ मेदाजीवककाकोली ऋद्धिद्वन्द्वेऽपिवासति । वरींविदार्य्यश्वगंधा वाराहीचक्रमात्क्षिपेत् ॥ (वरीशतावरी) वाराह्याश्चतथाभावेचर्मकारालुकोमतः।वाराहीकंदसंज्ञस्तु पश्चिमेगृष्टिसंज्ञकः॥

वाराहीकंदएवान्यश्चर्म्मकारालुकोमतः । अनूपसम्भवेदेशे वराहइवलोमवान् ॥ भल्लातकासहल्वेतु रक्तचंदनमिष्यते । भल्लातभावतश्चित्रं नलश्चेक्षोरभावतः ॥ सुवर्णाभावतःस्वर्णं माक्षिकंप्रक्षिपेत्वुधः । श्वेतंतुमाक्षिकंज्ञेयं वुधैःरजतवत्ध्रुवम् ॥ माक्षिकस्याप्यभावेतु प्रदद्यात्स्वर्णगैरिकम् । सुवर्णमथवारौप्यं मृतंयत्रनलभ्यते ॥ तत्रकांतेनकर्म्माणि भिषक्कुर्य्याद्विचक्षणः । कांताभावेतीक्ष्णलोहं योजयेद्वैद्यसत्तमः ॥ अभावेमौक्तिकस्यापि मुक्ताशुक्तिप्रयोजयेत । मधुयत्रनलभ्येत तत्रजीर्णगुड़ोमतः ॥ मत्स्यण्डाभावतोदद्यु भिषजःसितशर्कराम् । असम्भवेसितायाम्तु वुधैःखण्डंप्रयुज्यते ॥ क्षीराभावेरसोमौद्गो मासूरोवाप्रदीयते । अत्रप्रोक्तानिवस्तूनि यानितेषुचतेषुच ॥ योज्यमेकतराभावे परंवैद्येनजानता । रसवीर्य्यविपाकाद्यैः समंद्रव्यंविचिन्त्यच ॥ युज्याद्विविधमन्यद्वा द्रव्यानांतुरसादिवित् । योगेयदप्रधानंस्यात्तस्यप्रतिनिधिर्म्मतः ॥ यत्तुप्रधानंतस्यापि सदृशंनैवगृह्यते । व्याधेरयुक्तंयतद्रव्यं गणोक्तमपितत्त्यजेत् ॥ अनुक्तमपियुक्तंयत योजयेत्तद्रसादिवित् ॥ ४८ ॥

एकके बदले दूसरी वस्तु देना ॥

चीते की छालके अभाव में जमालगोटा अथवा ओंगे का खार लेनाचाहिये, धमासे के अभाव में जवासा· अगरके अभाव में कूट, मरोड़फलीके अभाव में मजीठ की छाल, बालछड़ के अभाव में मानकेचु, लक्ष्मणाके अभाव में मोरशिखा, मोमगिरीके अभाव में श्वेत वा नील कमल लेना चाहिये, नील कमल के अभाव में कुमुद, चमेली के अभाव में लौंग, आक और ढाक आदि के दूधके अभाव में उनका रस, पुष्करमूल कलहारी और कुकरौंधा इनके अभाव में कूट, चाव और गजपीपल के अभाव में पीपलामूल, वकुची के अभाव में चकोड़ के बीज- दारु हल्दी के अभाव में हल्दी-रसौत के अभाव में दारुहल्दी सोरठी मट्टीके अभाव में फिटकरी तालीसपत्र के अभाव में स्वर्णताली भारंगीके अभाव में तालीस अथवा भटकटैयाकीजड़ काले निमक के अभाव में खारी निमक मुलहठीके अभाव में धव अमलवेत के अभावमें चूक मुनक्का के अभाव में खंभारी और इन दोनों के अभाव में दुपहरिया का फूल नखके अभाव में लौंग कस्तूरी के अभाव में कंकोल और कंकोलभी न मिले तो चंबेली कपूरके अभाव में नागर मोथा और कुकरौंधा भी केसरके अभाव में नवीन कुसुम के फूल श्रीखंड चन्दन के अभावमें कपूर इन दोनोंके अभाव में रक्त चन्दन रक्तचन्दन के अभाव में नवीन खस अतीस के अभाव में नागरमोथा हड़के अभाव में आंवला नागकेसरके अभावमें पद्मकेसर मेदाजीवक काकोली ऋद्धि और वृद्धि के अभावमें क्रम से शतावरि विदारीकन्द असगन्ध और वाराहीकन्द वाराहीकन्द पश्चिमदेशमें गृष्टिकहाताहै और उसी को चर्मकार आलू भी कहते हैं यह अनूप देश में उत्पन्नहोता है और इसमें सूअर केसे रोयें होतेहैं भिलाये के अभाव मे लालचन्दन अथवा चीता- ईखके अभाव में नरकट- सोने के अभाव में सोना मक्खी· चांदीके अभाव में रूपामक्खी- रूपामक्खी के अभाव में सुनहरी गेरू सान और चांदी की भस्मके अभाव में कांतीसार कांतीसारके अभाव में फोलाद मोतीके अभाव में मोतीकीसीप सहत के अभावमें पुरानागुड़ मिश्रीके अभाव में चीनी और चीनीके अभाव में शक्कर और दूधके अभाव में

मूंग अथवा मसूरकारस देना चाहिये यहांपर जो वस्तु जिसके स्थानपर कहीहैं उनके अभावही में वह वस्तु लेनीचाहिये- रस- वीर्य और विपाक आदिकों से द्रव्यकी समताको विचारकर अनेक प्रकारकी अन्य वस्तुभीलेवे औषधियों के संयोग में जो द्रव्य प्रधान नहीं है उस के बदले में दूसरी वस्तुलीजातीहै परन्तु जो प्रधानहै उसकेसदृश अन्यनहीं लीजातीहै जो द्रव्य रोगमें हितकारी नहो और समूह में कही भी होय उसका त्यागकरदेना चाहिये और विनाकही हुई भी रोग में हितकारी वस्तुको रसादिकोंका जाननेवाला वैद्य ग्रहण करे ॥ ४८ ॥

इतन्तुद्रव्यगत पञ्चपदार्थ कर्म्माण्याह।

द्रव्येरसोगुणोवीर्य्यं विपाकःशक्तिरेवच। पदार्थःपञ्चतिष्ठन्ति स्वंस्वंकुर्वंतिकर्म्मच॥ (तत्र वाग्भटः) रसःस्वाद्वम्ललवण तिक्तोपणकषायकाः। षट्द्रव्यमाश्रितास्तेच यथा पूर्व्वंबलावहाः॥ (ऊपणः कटुः) तत्राद्यामारुतंघ्नंति त्रयस्तिक्तादयःकफम्। कषाय तिक्तमधुराः पित्तमन्येतुकुर्व्वते॥ येरसावातशमनाः भवंतियदितेषुवै। रौक्ष्यलाघवशै त्यानि नतेहन्युःसमीरणम्॥ येरसाःपित्तशमना भवंतियदितेषुवै। तीक्ष्णोष्णलघुताचै व नतेतत्कर्म्मकारिणः॥ येरसाश्लेष्मशमना भवंतियदितेषुवै। स्नेहगौरवशैत्यानि नते हन्युःकफंतदा॥ ४९॥

द्रव्यमें रहनेवाले पांचपदार्थों के कर्म॥

द्रव्यमें रस गुण वीर्य्य विपाक और शक्ति यह पांच पदार्थ रहतेहैं और अपना २ कार्य्य करते हैं वाग्भटने कहाहैकि मधुर अम्ल लवण तिक्त कटुऔर कषाय यहछः रस द्रव्यमें रहतेहैं यह एक से एक पूर्वके क्रमसे अधिक बलके देनेवालेहैं इन में से पहले तीन वायुको शान्तकरते हैं और तिक्तादिक तीन कफको शान्तकरते हैं और कषाय तिक्त तथा मधुर पित्तको शान्त करते हैं और बाकी तीन २ बढ़ाते हैं वातके शान्त करने वाले रसोंमें जो रूखापन हलकापन और शीतलता होवे तो वह वाए को नहीं शान्त करताहै पित्तके शान्त करने वाले रसोंमें जो तीक्ष्णता उष्णता और लघुता होवे तो वह पित्तको नहीं शान्त करतेहैं कफ के शान्त करनेवाले रसोंमें जो भारी शीतल और चिकनापन होयतो वह कफको नहीं शान्त करता है॥ ४६॥

तत्रमधुररसस्य गुणाः॥

मधुरोहिरसःशीतो धातुस्तन्यबलप्रदः। चक्षुष्योवातपित्तघ्नः कुर्य्यात्स्थौल्यमल क्रमीन्॥ रसेषुप्रवरश्चापि स्निग्धःप्रीत्यायुपोहितः। बालवृद्धक्षतक्षीण वर्णकेशेन्द्रियौ जसाम्॥ प्रशस्तोबृंहणंकण्ठ्यो गुरुःसंधानकृन्मतः। विषघ्नःपिच्छिलश्चापि स्निग्धः प्रीत्यायुषोहितः॥ ५०॥

मधुर रसके गुण॥

मधुर रस शीतल धातु दुग्ध तथा बल करनेवाला नेत्रोंकोहित वात पित्तका नाशक स्थूलता मल तथा कृमियोंका उत्पन्न करनेवाला बालक वृद्ध घायल क्षीण वर्ण केश इन्द्री और ओजको हितकारी है धातुओं का बढ़ानेवाला कंठको हितकारी टूटेको जोड़नेवाला विषनाशक चिकना और फिसलाहट वाला और प्रीति तथा आयु को हितकारी होता है॥ ५०

अथातियुक्तस्य मधुररसस्यगुणाः ॥

सोऽतियुक्तोज्वरश्वास गलगण्डार्बुदकृमीन् । स्थौल्याग्निमान्द्यमेहांश्च कुर्य्यात्मेदः कफामयान् ॥ ५१ ॥

मधुर रसके बहुत सेवन करने के गुण ॥

बहुत सेवन कियाहुआ मधुर रस ज्वर- श्वास- गलगण्ड- अर्बुद- कृमि- स्थूलता- अग्निकी मन्दता- प्रमेह- मेद और कफके रोगोंको करता है- ॥ ५१ ॥

अथाम्लस्य गुणाः ॥

ऽोऽम्लःपाचनोरुच्य पित्तश्लेष्मासृदोलघुः । लेखितोष्णोबहिःशीतक्लेदन पवना प- ॥ स्निग्धस्तीक्ष्णःसरःशुक्रविबन्धानाहदृष्टिहा । हर्षणो रोमदन्तानामक्षिभ्रूविनि ाचनः ॥ लेखितःलेखनःबहिःशीतःस्पर्शेशीतःविनिकोचनःसङ्कोचनः ॥ ५२ ॥

अम्लरसके गुण ॥

अम्लरस पाचन- रुचि करनेवाला- पित्त श्लेष्मा तथा रुधिर का बढ़ानेवाला- हलका- लेखन- स्पर्शमें शीतल. उष्ण- क्लेदन- वायुनाशक- चिकना- तीक्ष्ण- रेचक (दस्तावर) वीर्य्य- विबन्ध- अफरा- तथा दृष्टिकानाशक- रोमतथा दांतोंको खट्टा करने वाला और नेत्रतथा भृकुटियोंका संकोच करनेवाला होता है ॥ ५२ ॥

अथातियुक्तस्याम्लस्यगुणाः ॥

सोऽतियुक्तोभ्रमंकुर्य्यात्तृट्दाहतिमिरज्वरान् । कण्डुपाण्डुत्ववीसर्पशोथविस्फोट कुष्ठकृत् ॥ ५३ ॥

बहुत सेवन कियेहुए अम्लरसके अवगुण ॥

बहुत सेवन कियागया अम्लरस भ्रम- तृषा- दाह-तिमिर- ज्वर- खुजली,पांडु, विसर्प, सूजन विस्फोटक और कुष्ठरोगको उत्पन्न करता है- ॥ ५३ ॥

अथलवणस्यगुणाः ॥

लवणःशोधनोरुच्यःपाचनःकफपित्तदः ॥ पुंस्त्वबातहरःकायशैथिल्यमृदुताकरः । चक्षुर्नासास्यजलदःकपोलगलदाहकृत् ॥ ५४ ॥

लवण रसके गुण ॥

लवण रस संशोधन करने वाला- रुचिकारक- पाचन- कफपित्त करनेवाला- पुरुषार्थ तथा वात का नाशक- शरीरमें शिथिलता- तथा कोमलता करनेवाला- नेत्र- नासिका- तथा मुखमें जलका बढ़ाने वाला और कपोल तथा गलेमें दाह करनेवाला होता हैं ॥ ५४ ॥

अतियुक्तस्यलवणस्यगुणाः ॥

सोऽतियुक्तोऽक्षिपाकास्रपित्तकोठक्षतादिकृत् । वलीपलितखालित्यंकुष्ठवीसर्पतृट्प्रदः ॥ कोठोवरटाकृतदंशशोथवत् पलितंकेशशुक्लता । खलित्यंशिरसिकेशनाशः ५५ ॥

वहुत सेवन कियेहुए लवण के अवगुण ॥

वहुत सेवन कियाहुआ लवण रस नेत्रोंका पकना रक्तपित्त- चकत्ते- घाव- झुर्री- वालोंकी सफेदी गंजापन- कुष्ठ- विसर्प और तृषा इनको करता है ॥ ५५ ॥

अथकटुगुणाः ॥

कटुरुष्णश्चतीक्ष्णश्चविशदोवातपित्तकृत्।श्लेष्महल्लघुराग्नेयःकृमिकण्डूविषापहः ॥ रूक्षस्तन्यहरश्चापिमेदःस्थौल्यापकर्षणः।अश्रुदोनासिकास्याक्षिजिह्वाग्रोद्वेगकोमतः ॥ दीपनःपाचनोरुच्यो नासिकाशोषणोभृशम् । क्लेदमेदोवसामज्जाशकृन्मूत्रोपशोषणः ॥ स्रोतःप्रकाशकोरूक्षोमेध्यो वर्चोविवन्धकृत् । आग्नेयःअधिकाग्न्यांशः मेध्योमायैः हितः । वर्चोविवन्धकृत् मलवर्द्धकरोति ॥ ५६ ॥

कटुरसके गुण ॥

कटुरस- उष्ण- तीक्ष्ण- विशद- वात पित्त करनेवाला- कफनाशक- हलका- अधिक अग्नि केगुण वाला कृमिखुजली तथा विषकानाशक- रूखा- दूधका नाशक- मेदतथा स्थूलता का घटाने वाला- आंशू वहानेवाला- नासिका-मुख- नेत्र तथा जिह्वाके अग्रभागको दुखदेनेवाला दीपन- पाचन- रुचि कारक- नाकका सुखाने वाला क्लेद, मेद, चर्वी, मज्जा, मल, तथामूत्रका सुखाने वाला, स्रोतोंका खोलने वाला- रूखा, मेधाका वढ़ाने वाला और मलका रोकने वाला होता है, ॥ ५६ ॥

अतियुक्तस्यकटुरसस्यगुणाः ॥

सोऽतियुक्तोभ्रान्तिदाहमुखताल्वोष्ठशोषकृत् । कण्ठादिपीडामूर्च्छान्तर्दाहदोवलकान्तिहृत् ॥ ५७ ॥

वहुत सेवन कियेहुए कटुरस के अवगुण ॥

वहुत सेवन कियागया कटुरस भ्रम दाह, मुखतालु तथा ओठोंका सूखना,कंठादिकों में पीड़ा मूर्च्छा शरीरके भीतर दाह और वलतथा कान्तिका नाश इनसवको करता है ॥ ५७ ॥

अथतिक्तरसस्यगुणाः ॥

तिक्तःशीतस्तृषामूर्च्छाज्वरपित्तकफाञ्जयेत् । कृमिकुष्ठविषोत्क्लेददाहरक्तगदापहः॥ रुच्यःस्वयमरोचिष्णुःकण्ठस्तन्याविशोधनः । वातलोऽग्निकरोनासाशोषणोरूक्षणोलघुः ॥ रुच्यःअन्येषुवस्तुषुरुचिमुत्पादयति । स्वयमरोचिष्णुःयथानिम्वःस्वयन्नरोचते॥ अन्येषुवस्तुषुरुचिंकरोति ॥ ५८ ॥

तिक्तरस के गुण ॥

तिक्त, शीतल, तृषा, मूर्च्छा, ज्वर, पित्त तथा कफका जीतने वाला, कृमि, कुष्ठ, विष, क्लेद, दाह तथा रुधिर के रोगोंका नाशक, रुचिकर्ता, आपरुचिसे रहित, कंठ तथा दूध का शोधक, वायुवर्द्धक, अग्निकारक, नाकका सुखाने वाला, रूखा और हलका होता है ॥ ५८ ॥

अतियुक्तस्यतिक्तस्यगुणाः ॥

सोऽतियुक्तःशिरःशूलमन्यास्तम्भश्रमार्तिकृत्।कम्पमूर्च्छातृषाकारीवलशुक्रक्षयप्रदः ५९

बहुत सेवन कियेहुए तिक्तरसके अवगुण ॥

बहुत सेवन कियागया तिक्तरस शिरमें पीड़ा, गलेकी पीछेकी नसका जकड़ना, श्रम, कंम्प मूर्च्छा, तृषा और बलतथा वीर्य्यका नाश इनसबको उत्पन्न करता है ॥ ५९ ॥

अथकषायगुणाः ॥

कषायोरोपणोग्राहीस्तम्भनःशोधनस्तथा। लेखनःपीड़नःसौम्यःशोषणोवातकोपनः ॥ कफशोणितपित्तघ्नोरूक्षःशीतोलघुर्मतः । त्वक्प्रसाधनमामस्यस्तम्भनोविशदोमतः ॥ जिह्वायाजाड्यकृत्कण्ठ स्रोतसाञ्चविबन्धकृतः । रोपणःव्रणस्यस्तम्भनोगात्राणांशोधनोव्रणस्यलेखनोव्रणाच्युतसन्नमांसस्यशोषणोव्रणमज्जादीनाम्पीड़नो हृदयस्यवातकारित्वात्सौम्यःसोमादुत्पन्नः ॥ ६० ॥

कषायरसके गुण ॥

कषायरस घावका भरनेवाला, कब्जकरने वाला, अंगोंको जकड़ने वाला, घावका शुद्ध करनेवाला व्रणपर उठेहुए मांसादिकों का घटाने वाला,हृदयमें पीड़ा करने वाला, सौम्य,घाव तथा मज्जादिकों का सुखानेवाला, वायुवर्द्धक, कफ तथा रक्त पित्त नाशक, रूखा, शीतल,हलका त्वचा को उत्तम करनेवाला, आंवका रोकने वाला, विशद जिह्वाको जड़करनेवाला और कंठतथास्रोतों को रोकने वाला होता है ॥ ६० ॥

अतियुक्तस्यकषायस्यगुणाः ॥

सोऽतियुक्तोग्रहाध्मानहृत्पीड़ाक्षेपणादिकृत् ॥ ६१ ॥

बहुतसेवनकियेहुएकषायरसकेअवगुण ॥

कषायरसके बहुत सेवन करने से कंठादिकों का जकड़ना- अफरा- हृदयमें पीड़ा और आक्षेप आदिरोग उत्पन्न होतेहैं ॥ ६१ ॥

मधुरादीनामपरेविशेषाः ॥

मधुरंश्लेष्मलंप्रायोजीर्णशालियवाहते । मुद्गाद्गोधूमतःक्षौद्रात् सितायाजाङ्गलामिषात् ॥ अम्लंपित्तकरंप्रायोविनाधात्रीञ्चदाड़िमीम् । लवणंप्रायशोऽहितंनेत्रयोःसैन्धवंविना ॥ प्रायःकटुतथातिक्तमवृष्यंवातकोपनम् । शुण्ठीकृष्णारसोनानिपटोलममृतांविना ॥ चरकेऽपिपिप्पलीनागरंवृष्यंकटुचावृष्यमुच्यते । प्रायशःस्तम्भनंप्रोक्तंकषायमभयांविना ॥ सामान्येनात्रनिर्दिष्टागुणाःषड्रससम्भवाः । रसानांयोगतस्तुस्यादन्यएवगुणोदयः ॥ संयोगाद्विषतांयातिसममाज्येनमाक्षिकम् । अमृतत्वंविषंयातिसर्पदष्टस्यवैयथा ॥ ६२ ॥ मधुरादिरसोंकी और विशेषता ॥

पुराने चावल- जौ- मूंग- गेहूं सहत- चीनी- और जांगली जीवोंका मांस- इनके सिवाय प्रायः मधुर रस कफकारक होताहै- आंवला और अनार के सिवाय प्रायः अम्लरस पित्तकारक होताहै सेंधोनोनके सिवाय प्रायः लवण नेत्रोंको अहितहोतेहैं- सोंठ- पीपल- लहसन- परवल और गिलोय के सिवाय प्रायः कटु और तिक्तरस वीर्य्यको अहित और वातके बढ़ाने वाले होतेहैं- चरकमें भी

कहाहै कि पीपल और सोंठ वीर्य्यकोहित और कटुरस अहित होतेहैं- इनकेसिवाय प्रायः कषाय रस स्तंभन करतेहैं- यहां संक्षेपसे छओंरसोंके गुणकहेगये हैं परन्तु रसोंके संयोगहोनेसे औरके और गुणहोजाते हैं- जैसे बराबर मिलेहुए सहत और घृतविष के तुल्य होजाते हैं और सांपके काटे हुएको विष अमृतके तुल्य होजाता है ॥ ६२ ॥

अथगुणाः ॥

लघुर्गुरुस्तथास्निग्धोरूक्षस्तीक्ष्णइतिक्रमात् । नभोभूवारिवातानांवह्नेरेतेगुणाः स्मृताः ॥ ६३ ॥

गुणोंका वर्णन ॥

आकाशका हलकापन- पृथ्वीकी गुरुता- जलकी सचिक्कणता- वायुका रूखापन और अग्निकी तीक्ष्णता गुणहै ॥ ६३ ॥

अथ लघ्वादिगुणवतांगुणाः ॥

लघुपथ्यंपरंप्रोक्तं कफघ्नंशीघ्रपाकिच । लघुद्रव्यमएवंगुर्वादितथाचोक्तम् ॥ गुर्वादयोगुणाद्रव्ये पृथिव्यादौरसाश्रये । रसेषुव्यपदिश्यन्ते साहचर्य्योपचारतः ॥ गुरुवातहरंपुष्टिश्लेष्मकृच्चिरपाकिच । स्निग्धंवातहरंश्लेष्मकारिवृष्यंबलावहम् ॥ रूक्षंसमीरणकरं परंकफहरंमतम् । तीक्ष्णंपित्तकरंप्रायो लेखनंकफवातहृत् ॥ सुश्रुतेतुगुणाएते विंशतिस्तान्ब्रुवेशृणु । गुरुर्लघुःस्निग्धरूक्षौ तीक्ष्णःश्लक्ष्णःस्थिरःसरः ॥ पिच्छिलोविशदःशीतउष्णश्चमृदुकर्कशौ । स्थूलःसूक्ष्मोद्रवःशुष्कःआशुर्मन्दःस्मृतागुणाः । तत्र गुरुलघुस्निग्धरूक्षतीक्ष्णागुणाउक्ताएव ॥ श्लक्ष्णःस्नेहंविनापिस्यात्कठिनोऽपिहिचिक्कणःस्थिरोवातमलस्तम्भी सरस्तेषांप्रवर्त्तकः । पिच्छिलस्तन्तुलोबल्यःसन्धानःश्लेष्मलोगुरुः ॥ सन्धानोभग्नस्य । क्लेदच्छेदकरःस्यात्तोविशदोव्रणरोपणः । शीतस्तुह्लादनःस्तम्भीमूर्च्छातृट्स्वेददाहनुत् ॥ उष्णोभवतिशीतस्यविपरीतश्चपाचनः । ह्लादन' सुखजनकःस्तम्भीरक्तातिप्रवृत्त्यादीनाम्उष्णः ॥ शीतस्यविपरीतस्तेनअसुखजनकः रक्तातिप्रवृत्त्यादीनाम्स्तम्भनः । मूर्च्छातृट्स्वेददाहकृत पाचनोव्रणादीनाम् ॥ मृदुकर्कशौप्रसिद्धोस्थूलःस्थौल्यकरोदेहे स्रोतसामवरोधकृत् । देहस्यसूक्ष्मच्छिद्रेषुविशेत्यत सूक्ष्ममुच्यते ॥ द्रवःक्लेदकरोव्यापी शुष्कस्तदविपरीतकः । आशुराशुकरोदेहेधावत्यम्भसितैलवत् ॥ मन्दःसकलकार्येषुशिथिलोऽल्पोऽपिकथ्यते ॥ ६४ ॥

लघुआदिगुणयुक्तद्रव्योंकेगुण ॥

लघुद्रव्य अत्यन्त हितकारी- कफ नाशक और शीघ्र परिपाक होने वाला होताहै यहांलघुशब्द का अर्थ लघुगुणयुक्त द्रव्यहै इसीप्रकार गुरुआदिकों मेंभी जानना चाहिये ऐसाही कहागयाहै कि गुरु आदिक गुणरसके आश्रय भूतपृथिवी आदिक द्रव्योंमें होतेहैं और पृथिवी आदिकों के एकसाथ होने के माननेसे रसों में कहे जातेहैं- गुरुगुण युक्तद्रव्य वातनाशक- पुष्टता तथा कफकारक और देरमें पकनेवाली होती है- स्निग्धद्रव्य वातनाशक कफकारक वीर्य्यवर्द्धक और बलकारक होतीहै

रूखीद्रव्य वायुवर्द्धक और अत्यन्त कफ नाशक होतीहै- तीक्ष्ण द्रव्य पित्तकारक- लेखन और कफ वातनाशकहोती है- और सुश्रुतमें यह गुणसंख्यामें बीसकहेगयेहैं उनको कहते हैं- गुरु- लघु- स्निग्ध- रूक्ष- तीक्ष्ण- श्लक्ष्ण- स्थिरसर- पिच्छिल- विशद शीत- उष्ण, मृदु, कर्कश, स्थूल,सूक्ष्म, द्रव, शुष्क आशुऔर मन्द इनमेंसे गुरु, लघु- स्निग्ध, रूक्ष और तीक्ष्ण इनका वर्णन तोहो चुकाहै और शेषोंका वर्णन करतेहैं श्लक्ष्ण द्रव्यस्नेह रहित कठिन होकर भी चिकनी होती है- स्थिर द्रव्य वात और मलको रोकतीहै, सरद्रव्य वायु और मलको प्रवृत्त करतीहै- पिच्छिल गुणयुक्त द्रव्य तन्तुयुक्त बलकारक, टूटेको जोडने वाली, कफ वर्द्धक और गुरुहोती है विशद गुणयुक्त द्रव्य क्लेदनाशक और घावकी भरनेवाली होतीहै, शीत गुणयुक्त द्रव्य सुखदायी, और रुधिरके बहने आदिको रोकने वाली होतीहै, उष्ण गुणयुक्त द्रव्यशीतसे विपरीत अर्थात् दुःखदायी तथा रुधिर आदिके बहनेको नहीं रोकने वाली मूर्च्छा, तृषा, स्वेद तथा दाह करने वाली और व्रणादिकों की पकाने वाली होतीहै मृदु और कर्कश प्रसिद्ध हैं, स्थूलगुण युक्त द्रव्यशरीरकी स्थूल करने वाली और स्रोतों की रोकने वाली होतीहै, सूक्ष्मगुण युक्त द्रव्य शरीरके सूक्ष्मछिद्रोंमें प्रवेश करतीहै, द्रवगुण युक्त द्रव्य क्लेद कारक और व्यापी होती है, शुष्कगुण युक्तद्रव्य क्लेदशोषक और अव्यापी होतीहै, आशुगुणयुक्त द्रव्य जलमें तेलके समान शीघ्र शरीरमें फैल जातीहै, मन्दगुण युक्तद्रव्य संपूर्ण कार्योंमेंशिथिल और अल्पताकरने वाली होतीहै ॥ ६४ ॥

अथ गुणप्रस्तावेदीपनादयोगुणाःसलक्षणालिख्यंते ॥

पचेन्नामंवह्निकृद्यद्दीपनं तद्यथामिसिः ।वह्निकृद्वह्निदीप्तिकृत । ननुयद्वह्निंप्रदीपयति॥ तदामंकथंनपचेदित्याशंकायामुच्यतेदीपनद्रव्यंतावन्तंवह्निंप्रदीपयतितथाऽन्नभोक्तुमिच्छामुत्पादयतिनत्वामंपक्तुंक्षमः यथासूक्ष्मदीपाग्निरुथातंकरोतिनतुबृहत्स्थालस्थान्तण्डुलानोदनंकर्त्तुंक्षमः॥ ६५ ॥

अबगुणोंकेवर्णनमें दीपनआदिकगुणलक्षणसहितलिखे जातेहैं ॥

जिसकेद्वारा आमका परिपाक न होय और अग्नि की दीप्तिहो वह दीपन कहलातीहै जैसे सौंफ अबयह सन्देह उत्पन्न होताहै कि जो अग्निको दीप्तकरताहै वह आपको क्यों नहीं पचाता इसका उत्तर यह है कि जैसे सूक्ष्मदीपककी अग्नि प्रकाशकरतीहै परन्तु बडीडेगचीमेंस्थितहुए चावलोंको नहीं पकासक्तीहै इसी प्रकार दीपन वस्तु उतनीही अग्निको प्रकाशित करतीहै जिससे अन्नम भोजनकी रुचि होती है परन्तु आमको परिपक्व नहीं करसक्ती ॥ ६५॥

पचत्यामन्नवह्निञ्चकुर्य्याद्यत्तद्धिपाचनम् । नागकेशरवद्विद्याच्चित्रोदीपनपाचनः ॥ ननुयद्वह्निंनदीपयति तदामंकथंपचतीत्याशङ्कायामाह ।पाचनबह्निदीप्तिमकुर्वाणमप्यामपचति ।यथाग्न्याधानीस्थोऽङ्गारसमूहोऽन्नम्पचति।नतुदीपवत्सर्व्वतःप्रदीपयति ६६

जिसकेद्वारा आमकापरिपाकहो और अग्निकी दीप्ति नहोय वह पाचन जैसे नागकेशर और चीते में दीपन और पाचन दोनोंगुण हैं अब यह सन्देह होताहै कि जो अग्निको दीपन नहीं करताहै वह आमको कैसे पचासक्ता है इसका उत्तर यह है कि जैसे अग्निके स्थानमें रक्खा हुआ अंगारोंका समूह अन्नको पकाताहै परन्तु दीपकके समान सब ओरप्रकाश नहीं करता इसी प्रकार पाचनवस्तु अग्निको बिना दीप्ति किये अन्नको पचाती है ॥ ६६ ॥

नशोधयतियत्दोषान्समान्नोदीरयत्यपि । समीकरोतिविषमान्शमनन्तद्यथामृता ॥ यत्द्रव्यन्दोषत्रयं नशोधयतिनोर्द्धाधोमार्गाभ्यामानयति । समान्दोषान्नोदीरयति नवर्द्धयतिशमनंतत् ॥ ६७ ॥

जिसके द्वारा वा तादिक दोष ऊर्ध्व, वा अधो मार्गसे न निकाले जांय तथा समदोष अपने स्थान से न हटाये जांय और अपने प्रमाण से न्यूनअथवा अधिक भाव में स्थित दोष समता को प्राप्त किये जांय वह शमन कहलाता है जैसे गिलोय ॥ ६७ ॥

कृत्वापाकम्मलानाञ्चभित्वाबन्धमधोनयेत् । तच्चानुलोमनंज्ञेयं यथाप्रोक्ताहरीतकी मलानाम् । अपक्वानांवातपित्तश्लेष्मणांबन्धंवायुबन्धंभित्वाअधीनयेत् मलानधःपातयति ॥ पक्तव्यंयदपक्त्वेवश्लिष्टंकोष्ठेमलादिकम् । नयत्यधःस्रंसनन्तद्यथास्यात्कृतमालकम् ॥ मलादिकम्आदि शब्दात्कफ पित्ते । कृतमालःधनवहेराइतिलोके ॥ ६८ ॥

जोद्रव्य विना परिपाक हुए वात पित्त और कफको परिपाक करके वायुके बंधन को तोड़के मलोंको नीचेको जाती है उसको अनुलोमन कहते हैं जैसे हड़ जो द्रव्यकोष्ठ में लिपटे हुए पाक करने के योग्य मलकफ और पित्तको नीचे गिराती है उसको स्रंसन कहते हैं जैसे अमलतास॥६८

मलादिकमबद्धंयद्बद्धंवापिण्डतंमलैः । भित्वाधःपातयतियद्भेदनंकटुकीयथा ॥ अबद्धं शिथिलम्बद्धंगाढंमलैःदोषैःतत्रापिवातैः । बहुत्वमाधिक्यबोधनार्थन्तैःपिण्डितम् । गुटिकीकृतम् ॥ विपक्वंयदपक्वंवामलादिद्रवतांनयेत् । रेचयत्यपितज्ज्ञेयंरेचनन्त्रिवृतायथा ॥ रेचयत्यपिअधःपातयतिचत्रिवृतापानिलरा ॥ ६९ ॥

जो द्रव्य बंधेहुए नहीं बंधेहुए अथवा अधिक वायुके द्वारा गांठके समान होजाने वाले मलको तोड़कर नीचे गिराती है वह भेदन कहलाती है,जैसे कुटकी, जो द्रव्य पकेहुए अथवा बिना पकेहुए अथवा बिनापके हुए मालादिको पतला करके नीचेसे निकालतीहै वह रेचन है जैसे निसोत ॥६९॥

अपक्वंपित्तश्लेष्माणंबलादूर्ध्वंनयेत्तुयत् । वमनन्तद्धिविज्ञेयंमदनस्यफलंयथा ॥ ऊर्ध्वंनयेतुमुखमार्गेणवहिष्कुर्य्यात् । मदनस्यफलंमयनफलामितिलोके ॥ ७० ॥

जो द्रव्य बिनापके हुए पित्तकफ और भोजन कियेहुए पदार्थ को जबरदस्ती मुखके मार्ग से बाहर निकालती है वह व मनकहलाती है जैसे मैनफल ॥ ७० ॥

स्थानाद्बहिर्नयेदूर्ध्वमधोवामलसञ्चयम् । देहेसंशोधनन्तत्स्यादेवदालीफलंयथा ॥ देवदालीसोनैआइतिलोके ॥७१ ॥

जोद्रव्य शरीरमें इकट्ठेहुए मलको अपने स्थान से बाहर नीचे अथवा ऊपरलेजाय इसको संशोधन कहते हैं जैसे देवदाली अर्थात् सुनैया, ॥ ७१ ॥

दीपनम्पाचनंयत्स्या दूष्णत्वाद्द्रवशोषकम् । ग्राहीतच्चयथाशुण्ठी जीरकंगज पिप्पली ॥ ७२ ॥

जो द्रव्य दीपन पाचन दोनों गुणों से युक्त और उष्णताके कारण द्रवको सुखाने वालीहो उस को ग्राही कहते हैं जैसे सोंठ, जीरा और गजपीपल, ॥ ७२ ॥

रौक्ष्याच्छैत्यात्कषायत्वाल्लघुपाकाच्चयद्भवेत् । वातकृत्स्तम्भनन्तत्स्याद्यथावत्स कटुएटुकौ ॥ वातकृत्प्रतिलोमवातकृत् । स्तम्भनंअधोगामिमलादीनाम् । वत्सकंकुरै आटुएटुकःसोनापाठा ॥ ७३ ॥

जो द्रव्य रूखापन, शीतलता, कषैलापन और जल्दी परिपाक होने से वायुको उलटी करके नीचे जानेवाले मलादिकों को रोके वह स्तंभन कहलाती है जैसे कुरैया और सोनापाठा ॥ ७३ ॥

श्लिष्टान्कफादिकान्दोषानुन्मूलयतियद्बलात् । च्छेदनन्तत्यथाक्षारमरिचानिशिलाजतु ॥ क्षारायवक्षारादयः ॥ ७४ ॥

जो द्रव्य लिपटे हुए कफादि दोषोंको बल पूर्व्वक उखाड़ती है वह छेदन कहलाती है, जैसे जवाखार आदिकखार मिरच और शिलाजीत, ॥ ७४ ॥

धातून्मलान्वादेहस्यविशोष्योल्लेखयेच्चयत् । लेखनन्तद्यथाक्षौद्रंनीरमुष्णंवचायवाः ॥ उल्लेखयेत्कृशीकुर्य्यात् । लेखनं कृशीकारकंक्षौद्रंमधुयवाइन्द्रयवाः ॥ ७५ ॥

जो द्रव्य शरीर के धातुऔर मलोंको सुखाकर दुर्बल करे उसको लेखनकहते हैं जैसे सहत गरम जल वचऔर इन्द्रजव ॥ ७५ ॥

यस्माद्द्रव्याद्भवेत्स्त्रीपुहर्षोवाजीहितद्यथाश्वगन्धामुशलीशर्कराचशतावरी ॥ हर्षोरन्तुंसमुत्साहः ॥ ७६ ॥

जोद्रव्य स्त्रियोंके संभोग करने में उत्साह उत्पन्न करे उसको वाजीकरण कहते हैं जैसे असगंध मछली, शक्कर और सतावर ॥ ७६ ॥

यस्माच्छुक्रस्यवृद्धिःस्याच्छुक्रलंहितदुच्यते ॥ यथानागवलाद्याः स्युर्वीजञ्चकपिकच्छुजम् । नागवलागुलसकरी ॥ ७७ ॥

जिस द्रव्यके द्वारा वीर्य्यकी वृद्धिहोय उसे शुक्रल कहतेहैं जैसे गुलशकरी और कवांचकेबीज ७७॥

दुग्धंमाषाश्चभल्लातफलमज्जामलानिच । एतानिजनकानिस्युःरेचकानिचरेतसः ॥ जनकानिप्रभावाच्छीघ्रमेवरसाद्युत्पादनपूर्व्वकंशुक्रञ्जनयन्ति । रेचकाणिआधिक्यात् प्रवर्त्तयन्तिच ॥ ७८ ॥

दूध, उर्द, भिलावेंका फल तथा मज्जा और आमला यह संपूर्ण पदार्थ अपने प्रभाव से शीघ्र रसादिकों को उत्पन्न करके वीर्य्यको उत्पन्न करतेहैं और अधिकताकेकारण निकालते भीहैं॥७८॥

प्रवर्त्तनीस्त्रीशुक्रस्यरेचकंवृहतीफलम्।जातीफलंस्तम्भकंस्यात्कालिंगंक्षयकारिच ॥ स्त्रीस्मरणकीर्त्तनदर्शनसम्भाषणस्पर्शनचुम्बनालिङ्गननिधुवनैः समस्तैर्व्यस्तैश्चशुक्रस्यप्रवर्तिनी । प्रवर्तिनीप्रवृत्तिकारिणी।रेचकम् वृहतीफलम् । वृहत्कण्टकारीफलमपि शुक्रस्यरेचकम् प्रवर्त्तकम । कालिंगंकालिन्दफलम् ॥ ७९ ॥

स्त्री स्मरण, कीर्त्तन, दर्शन, भाषण, स्पर्श, चुम्बन, आलिंगन और मैथुन इन सबसे और प्रत्येक से भी वीर्य्य को प्रवृत्तकरताहै और भटकटैयाका फलभी वीर्य्यको निकालताहै, जायफल वीर्य्य का स्तंभन करता है और तरबूज वीर्य्य का नाशक है ॥ ७९ ॥

रसायनन्तुतज्ज्ञेयंयज्जराव्याधिनाशनम् । यथाहरीतकीरुदन्तीचगुग्गुलुश्चाशिलाजतु ॥ ८० ॥

जो द्रव्य वृद्धावस्था और रोगोंको नाशकरे उसको रसायन कहते हैं जैसेहड़, रुद्रवंती, गुग्गुल और शिलाजीत ॥ ८० ॥

पूर्व्वंव्याप्याखिलंकायंततःपाकञ्चगच्छति । व्यवायितद्यथा भंगाफेनञ्चाहिसमुद्भवम् ॥ अन्यद्रव्यंपक्कन्तद्गुणंकरोतिव्यवायितुअपक्कमेवस्वगुणै.सकलशरीरंव्याप्यपाकंयाति । अहिसमुद्भवफेनमअफीम् ॥ ८१ ॥

जो द्रव्य अपने गुणसे सब शरीरको व्याप्तकरके पीछे परि पाकको प्राप्तहोती है उसको व्यवायि कहतेहैं जैसे भंग और अफीम- अन्यद्रव्य परिपाकको प्राप्तहोकर गुणकरती है परन्तु व्यवायि द्रव्य विना परिपाक को प्राप्तहुएअपनेगुणोंसेसंपूर्ण शरीरकोव्याप्तकरके पीछे परिपाककोप्राप्तहोतीहै८१॥

सन्धिबंधांस्तुशिथिलान्यत्करोतिविकाशितत् । विशोष्योजश्चधातुभ्योयथाक्रमुककोद्रवौ ॥ धातुभ्य.सकलशरीरस्थेभ्योवीर्य्येभ्यः । ओजःउपधातुविशेषम्विशोष्याक्रमुकमपूगफलम् ॥ ८२ ॥

जो द्रव्य संपूर्ण शरीरमें स्थित वीर्य्योंसे ओजनाम वाली उपधातुको सुखाकर संधिके बन्धनों को शिथिल करतीहै उसको विकाशी कहतेहैं जैसे सुपारी और कोदों ॥ ८२ ॥

बुद्धिंलुम्पतियद्द्रव्यं मदकारितदुच्यते । तमोगुणप्रधानञ्च यथामद्यंसुरादिकम्॥ मदकारि मादकम् ॥ ८३ ॥

जो द्रव्य अधिक तमोगुणयुक्त और बुद्धिका लोपकरने वाली होतीहै उसको मादक कहते हैं जैसे सुरा आदिकमद्य ॥ ८३ ॥

व्यवायिचविकाशिस्यात् श्लेष्मच्छेदिमदावहम् ।आग्नेयंजीवितहर योगवाहिस्मृतविषम् ॥ व्यवायि सकलकाय गुणव्यापनपूर्वकपाकगमन शीलम् । विकाशि ओजः शोषण पूर्वक संधिबंध शिथिलीकरण शीलम् । मदावहम् तमोगुणाधिक्येन बुद्धिविध्वंसकम् । आग्नेयं अधिकाग्नि गुणम् । योगवाहि संसर्गि गुण ग्राहकम् । विषंलक्ष्यं दृष्टान्तो वत्सनाभशक्तुकादिभि. ॥ ८४ ॥

व्यवायि अर्थात् संपूर्ण शरीरमें अपने गुणको व्याप्तकरके परिपक्व होने वाला विकाशि अर्थात् ओजको सुखाकर संधिके बंधनोंको शिथिलकरने वाला कफ नाशक, मदावह अर्थात् तमोगुणकी अधिकतासे बुद्धि नाशक अधिक अग्निके गुणोंसे युक्त, प्राण नाशक और संसर्गी के गुणोंका लेने वाला द्रव्य विष कहलाताहै, जैसे वत्सनाभ और शकुक आदि ॥ ८४ ॥

निजवीर्य्येणयद्द्रव्य स्रोतोभ्योदोषसञ्चयम् । निरस्यतिप्रमाथिस्यात्तद्यथामरिचंवचा ॥ (दोषावातादयः) ॥ ८५ ॥

जो द्रव्यअपने वीर्यके द्वारा स्रोतों से इकट्ठे हुएवातादि दोषोंको निकालतीहै उसको प्रमाथी कहतेहैं जैसे काली मिर्च औरवच ॥ ८५ ॥

पैच्छिल्याद्गौरवाद्द्रव्य रुद्धारसवहाःशिरा । धत्तेयद्गौरवंतत्स्यादभिष्पन्दियथा दधि ॥ (गौरवंशरीरे) ॥ ८६ ॥

जो द्रव्य पिच्छिलता और गौरवताके कारण रसके ले जाने वाली शिराओंको रोककर शरीरमें भारीपन उत्पन्न करतीहै उसको अभिष्पन्दी कहतेहैं जैसे दही ॥ ८६ ॥

विदाहिद्रव्यमुद्गारमम्लंकुर्य्यात्तथातृपाम् । हृदिदाहञ्चजनयेत्पाकंगच्छतितच्चिरात् ॥ ८७ ॥

जिसद्रव्य के भोजन करने से डकार खट्टी आवे प्यास और दाह उत्पन्नहो और परिपाक बहुत देरमें हो उसको विदाही कहते हैं ॥ ८७ ॥

गृह्णातियोगवाहिद्रव्यंसंसर्गिवस्तुगुणान् । पच्यमानंतथैतन्मधुजलतैलाज्यसूतलोहादि ॥ ८८ ॥

जो द्रव्य संसर्गी वस्तुके गुणोंको ग्रहण करे उसको योग वाही कहते हैं जैसे सहत जल तेल घृत पारा और लोहा आदिक यह सब पाक होनेपर जिस वस्तुके साथ होतेहैं उस वस्तुके गुणको ग्रहण करलेतेहैं ॥ ८८ ॥

अथवीर्य्यम्तत्रवाग्भटः ॥

उष्णशीतगुणोत्कर्षात्तुबुधैःवीर्य्यमद्विधास्मृतम् । यत्सर्वमग्निसोमीयंदृश्यतेभुवनत्रयम् ॥ ८९ ॥

वाग्भटके मतसे वीर्य्य का वर्णन ॥

बुद्धिमान् लोगोंने उष्ण और शीत गुणोंकी अधिकतासे दो प्रकार का वीर्य्य कहाहै क्योंकि संपूर्ण संसार अग्नि और जलमय दिखाई देता है ॥ ८९ ॥

अथतद्गुणः॥उष्णंत्रातकफौहन्याच्छीतन्तुतनुतेजराम्। शीतंवातकफातङ्कान्कुरुतपित्तहत्परम् ॥ अन्यच्चतत्रोष्णंभ्रमतृट्ग्लानिस्वेददाहाशुपाकताम् । समञ्चवातकफयोःकरोतिशिशिरंपुनः । ह्लादनंजीवनंस्तम्भंप्रसादंरक्तपित्तयोः ॥ ९० ॥

वीर्य्यके गुण ॥

उष्ण वीर्य वायु कफ नाशक और पित्त तथा जीर्णताका बढ़ाने वाला होता है औरभी कहाहुआहै कि उष्ण वीर्य्य भ्रम तृषा ग्लानि स्वेद दाह और शीघ्र परिपाक को करताहै और इससे वात कफकी शान्तिभी होती है शीतल वीर्य हर्ष जीवन मलका स्तंभ और रक्त पित्तकी प्रसन्नता को करताहै॥९०॥

अथविपाकः ॥

जाठरेणाग्निनायोगाद्यदुदेतिरसान्तरम् । रसानांपरिणामांतेसविपाकइतिस्मृतः ॥ मिष्टःपटुश्चमधुरमम्लोऽम्लंपच्यतेरसः । कटुतिक्तकषायाणांपाकःस्यात्प्रायशःकटुः ॥ (तथाचवाग्भटः) त्रिधारसानांपाकःस्यात्स्वाद्वम्लकटुकात्मकः ॥ प्रायःपदेनव्रीहिःस्यात्स्वाद्वम्लरविपाकतः । शिवाकषायामधुरापाकेशुण्ठीकटुकामधुरपाकेत्यादि ॥ ९१ ॥

रसायनन्तुतज्ज्ञेयंयज्जराव्याधिनाशनम् । यथाहरीतकीरुदन्तीचगुग्गुलुश्चाशिलाजतु ॥ ८० ॥

जो द्रव्य वृद्धावस्था और रोगोंको नाशकरे उसको रसायन कहते हैं जैसेहड़, रुद्रवंती, गुग्गुल और शिलाजीत ॥ ८० ॥

पूर्व्वंव्याप्याखिलंकायंततःपाकञ्चगच्छति । व्यवायितद्यथाभंगाफेनञ्चाहिसमुद्भवम् ॥ अन्यद्रव्यंपक्वन्तद्गुणंकरोतिव्यवायितुअपक्वमेवस्वगुणैःसकलशरीरंव्याप्यपाकंयाति । अहिसमुद्भवफेनमअफीम् ॥ ८१ ॥

जो द्रव्य अपने गुणसे सब शरीरको व्याप्तकरके पीछे परि पाँकको प्राप्तहोती है उसको व्यवायि कहतेहैं जैसे भंग और अफीम- अन्यद्रव्य परिपाकको प्राप्तहोकर गुणकरती हैं परन्तु व्यवायि द्रव्य विना परिपाक को प्राप्तहुएअपनेगुणोंसेसंपूर्ण शरीरकोव्याप्तकरके पीछे परिपाककोप्राप्तहोतीहै ८१॥

सन्धिबंधांस्तुशिथिलान्यत्करोतिविकाशितत् । विशोष्योजश्चधातुभ्योयथाक्रमुककोद्रवौ ॥ धातुभ्यःसकलशरीरस्थेभ्योवीर्य्येभ्यः । ओजःउपधातुविशेषम्विशोष्याक्रमुकमपूगफलम् ॥ ८२ ॥

जो द्रव्य संपूर्ण शरीरमें स्थित वीर्य्योंसे ओजनाम वाली उपधातुको सुखाकर संधिके बन्धनों को शिथिल करतीहै उसको विकाशी कहतेहैं जैसे सुपारी और कोदों ॥ ८२ ॥

बुद्धिंलुम्पतियद्द्रव्यं मदकारितदुच्यते । तमोगुणप्रधानञ्च यथामद्यंसुरादिकम्॥ मदकारि मादकम् ॥ ८३ ॥

जो द्रव्य अधिक तमोगुणयुक्त और बुद्धिका लोपकरने वाली होतीहै उसको मादक कहते हैं जैसे सुरा आदिकमद्य ॥ ८३ ॥

व्यवायिचविकाशिरयात् श्लेष्मच्छेदिमदावहम् ।आग्नेयंजीवितहरं योगवाहिस्मृतं विषम् ॥ व्यवायि सकलकाय गुणव्यापनपूर्वकपाकगमन शीलम् । विकाशिओजः शोषण पूर्वक संधिबंध शिथिलीकरण शीलम् । मदावहम् तमोगुणाधिक्येन बुद्धिविध्वंसकम् । आग्नेयंअधिकाग्नि गुणम् ।योगवाहिसंसर्गि गुणग्राहकम् । विषंलक्ष्यं दृष्टान्तो वत्सनाभशृङ्गकादिभिः ॥ ८४ ॥

व्यवायि अर्थात् संपूर्ण शरीरमें अपने गुणको व्याप्तकरके परिपक्व होने वाला विकाशि अर्थात् ओजको सुखाकर संधिके बंधनोंको शिथिलकरने वाला कफ नाशक, मदावह अर्थात् तमोगुणकी अधिकतासे बुद्धि नाशक अधिक अग्निके गुणोंसे युक्त, प्राण नाशक और संसर्गी के गुणोंका लेने वाला द्रव्य विष कहलाताहै, जैसे वत्सनाभ और शृङ्गक आदि ॥ ८४ ॥

निजवीर्य्येणयद्द्रव्यं स्रोतोभ्योदोषसञ्चयम् । निरस्यतिप्रमाथिस्यात्तद्यथामरिचंवचा ॥ (दोषावातादयः) ॥ ८५ ॥

जो द्रव्यअपने वीर्यके द्वारा स्रोतों से इकट्ठे हुएवातादि दोषोंको निकालतीहै उसको प्रमाथी कहतेहैं जैसे काली मिर्च औरवच ॥ ८५ ॥

अनेक प्रकारकी औषधियों के योग में फल के लिये स्वभावही का आश्रय करना चाहिये और उसमें रसादि रूप कारणोंका विचार न करना चाहिये क्योंकि सुश्रुतने भी कहाहै कि जो संपूर्ण औषधि स्वभावसे प्रसिद्धहैं उनमें विचार और चिन्ता का कोई प्रयोजन नहीं है बुद्धिमान् वैद्य संपूर्ण प्रसिद्ध औषधियोंका व्यवहार शास्त्रकी रीति से करें जो संपूर्ण औषधि स्वभावसे प्रसिद्ध और प्रत्यक्ष फलवाली हैं उनऔषधियोंकी बुद्धिमान लोग हेतुओं से कभी परीक्षा न करें क्योंकि विरुद्ध गुणके संयोग से दोषोंकी अधिकता और न्यूनता होजातीहै रसको विपाक और रस विपाक को वीर्य्य और सबको प्रभाव नाश करताहै इस प्रकार रसगुण वीर्य विपाक और प्रभावके स्वरूपोंको कहकर किस द्रव्यमें कौन से रसगुण वीर्य विपाक और प्रभाव होतेहैं यह जनानेके लिये द्रव्यों में स्थित रसगुण वीर्य्य विपाक और प्रभावों का वर्णन करतेहैं ॥ ६४ ॥

तत्रप्रथमंहरीतक्याउत्पत्तिनामलक्षणगुणानाह ॥

दक्षंप्रजापतिंस्वस्थमश्विनौवाक्यमूचतुः । कुतोहरीतकीजातातस्यास्तुकतिजातयः ॥ रसाःकतिसमाख्याताःकतिचोपरसाःस्मृताः । नामानिकतिचोक्तानिकिंवातासाञ्चलक्षणम् ॥ केचवर्णागुणाःकेचकाचकुत्रप्रयुज्यते । केनद्रव्येणसंयुक्ताकांश्चरोगान्व्यपोहति ॥ प्रश्नमेतद्यथापृष्टंभगवन्वक्तुमर्हसि । अश्विनोर्वचनंश्रुत्वादक्षोवचनमब्रवीत् ॥ पपातबिन्दुर्मेदिन्यांशक्रस्यपिबतोऽमृतम् । ततोदिव्यात्समुत्पन्नासप्तजातिर्हरीतकी ॥ हरीतक्यभयापथ्या कायस्थापूतनामृता । हेमवत्यव्यथाचापि चेतकीश्रेयसीशिवा ॥ वयस्थाविजयाचापि जीवन्तीरोहिणीतिच ॥ ६५ ॥

इनमें से प्रथमहड़की उत्पत्ति नाम लक्षण और गुणकहेजातेहैं ॥

एक समय स्वस्थ चित्त बैठेहुए दक्ष प्रजापतिसे अश्विनीकुमार पूछतेभये कि हे भगवन् हड़ कहां से उत्पन्न हुई कितनी उसकी जातिहैं उनके रस उपरस नाम लक्षण वर्ण और गुणकितने हैं किस जातिकी हड़ किस काममें लाई जाती है और किस द्रव्यके साथ कौन से रोगोंको नाशकरतीहै आपइस प्रश्नका उत्तर अनुग्रहपूर्वक दीजिये अश्विनीकुमार के वचन को सुनकर दक्ष प्रजापति बोले कि एक समय इन्द्र अमृत पीरहेथे उसका एक बिन्दु पृथ्वीपर गिरपड़ा उससे सात प्रकार की हड़ उत्पन्नहुई हरीतकी- अभया- पथ्या- कायस्था- पूतना अमृता- हेमवती- चेतकी- श्रेयसी- शिवा- वयस्था-विजया-जीवन्ती और रोहिणी यह हड़के नामहैं ॥ ६५ ॥

विजयारोहिणीचैव पूतनाचामृताभया । जीवन्तीचेतकीचेति विज्ञेयाःसप्तजातयः ॥ अलाबुवृत्ताविजया वृत्तारोहिणीस्मृता । पूतनास्थिमतीसूक्ष्मा कथितामांसलामृता ॥ पञ्चरेखाभयाप्रोक्ता जीवन्तीस्वर्णवर्णिनी । त्रिरेखाचेतकीज्ञेया सप्तानामियमाकृतिः ॥ विजयासर्वरोगेषु रोहिणीव्रणरोहिणी । प्रलेपेपूतनायोज्या शोधनार्थेऽमृताहिता ॥ अक्षिरोगेऽभयाशस्ता जीवन्तीसर्वरोगहृत् । चूर्णार्थेचेतकीशस्ता यथायुक्तंप्रयोजयेत् ॥ चेतकीद्विविधाप्रोक्ता श्वेताकृष्णाचवर्णतः । षडंगुलायताशुक्ला कृष्णात्वेकांगुलास्मृता ॥ काचिदास्वादमात्रेण काचिद्गन्धेनभेदयेत् । काचित्स्पर्शेनदृष्ट्यान्या चतुर्द्धाभेदयच्छिवा ॥ चेतकीपादपच्छायामुपसर्पन्तियेनराः । भिद्यन्तेतत्क्षणादेव पशुपक्षिमृगादयः॥

विपाक का वर्णन ॥

जठराग्निके संयोगसे भोजनके जो रस उत्पन्न होतेहैं उनके परिणाममें जो एक दूसरा रस उत्पन्न होताहै उसको विपाक कहतेहैं मधुर और लवण रसका विपाक मधुर अम्ल का विपाक अम्ल और तिक्त कटु तथा कषाय रसका विपाक प्रायः कटु होताहै ऐसाही वाग्भटने कहाहै कि मधुर अम्ल और कटु इनभेदों से रसोंका विपाक तीन प्रकार का होताहै यहां प्रायः शब्द से यह तात्पर्य्यहै कि यह नियम सब कहीं नहींहै क्योंकि चावल का रस मधुर और विपाक खट्टाहोताहै हड़कषेली है इसका विपाक मधुर होताहै और सोंठि कटु है इसका विपाक मधुर होताहै ॥ ९१ ॥

अथविपाकानांगुणाः ॥

श्लेष्मकृन्मधुरःपाकोवातपित्तहरोमतः । अम्लस्तुकुरुतेपित्तंवातश्लेष्मगदापहः । कटुःकरोतिपवनंकफंपितञ्चनाशयेत । विशेषएवरसतोविपाकानांनिदर्शितः ॥ ९२ ।

विपाकोंकेगुण ॥

मधुर विपाक कफ कारक और वात पित्तनाशक, अम्ल विपाक पित्तवर्द्धक और वायु कफकेरोगें का नाशक और कटु विपाक वायुवर्द्धक और कफ पित्तनाशक होता है यहरसोंसे विपाकोंकी विशेषत कहीं गई है ॥ ९२ ॥

अथप्रभावः ॥

रसादिसाम्येयत्कर्म्मविशिष्टंतत्प्रभावजम् । दन्तीरसाद्यैःतुल्यापिचित्रकस्यविरेचनी ॥ मधुकस्यचमृद्वीकाघृतंक्षीरस्यदीपनम् । प्रभावस्तुयथाधात्रीलकुचस्यरसादिभिः ॥ समापिकुरुतेदोषत्रितयस्यविनाशनम् । क्वचित्तुकेवलंद्रव्यंकर्म्मकुर्य्यात्प्रभवतः ॥ ज्वरंहन्तिशिरोवद्धासहदेवीजटायथा ॥ ९३ ॥

प्रभावकावर्णन ॥

रसादिकोंके तुल्य होनेपर भी जो विशेष क्रिया उत्पन्नहोतीहै उसे प्रभाव कहतेहैं जैसे चीता और जमालगोटा रसादिकों में तुल्य हैं परन्तु जमालगोटा रेचकहै मुनक्का महुए से और घृत दुग्ध से रसादिकों में तुल्य होनेपर भी दीपन हैं आमला रसादिकों में बडहल के समान होनेपर भी त्रिदोष नाशक है कोई २ द्रव्य केवल प्रभावही से कार्य्य सिद्ध करतीहैं जैसे सहदेईकी जटा शिरमें बांधनेसे ज्वर नष्ट होताहै ॥ ९३ ॥

तथानानौषधियोगेषुफलंप्रतिस्वभावएवाश्रयणीयो नतुतत्ररसादिरूपहेतुविचारः कर्त्तव्यः ।(यतश्चाहसुश्रुतः) अमीसामान्यचिंत्यानिप्रसिद्धानिस्वभावतः ॥ आगमेनोपयोज्यानिभेषजानिविचक्षणैः ॥ प्रत्यक्षलक्षणफलाःप्रसिद्धाश्चस्वभावतः । नौषधीर्हेतुभिर्विद्वान्परीक्षेतकदाचन ॥ विरुद्धगुणसंयोगेभूयसाल्पंहिजायते । रसंविपाकस्तौवीर्य्यंप्रभावस्तान्व्यपोहति ॥ इतिरसगुणवीर्य्यविपाकप्रभावाणांस्वरूपाण्यभिधाय कुत्रद्रव्येकेरसगुणवीर्य्यविपाकप्रभावाः संतीतिबोधयितुंद्रव्यगतान्रसगुणवीर्य्यविपाकप्रभावानाह ॥ ९४ ॥

और सम्पूर्ण रोगोंमें सुखकारीहै हड़में लवणके सिवाय पांच रसहोते हैं उनमेंसे कपाय रस अधिक है हड़ रूखी उष्ण दीपनी मेधाकरनेवाली विपाकमें मधुर रसायन नेत्रोंको हित हलकी आयुको हित मांस बढ़ानेवाली वायु आदिकको नीचे लेजानेवाली श्वास खांसी प्रमेह बवासीर कुष्ठ सूजन उदर कृमि स्वरभंग संग्रहणी विबन्ध विषमज्वर गुल्म अफरा तृषा छर्दि हुचकी खुजली हृदयकेरोग कामला शूल आनाह प्लीहा यकृत् पथरी मूत्र कृच्छ्र और मूत्राघात इन सबरोगोंको नाश करती है हड़ मधुर तिक्त और कपाय रससे पित्तको कटु तिक्त और कपाय रससे कफको और अम्ल रसके वायुको नष्ट करतीहै परन्तु कटु और अम्ल रसके द्वारा पित्तकी बढ़ानेवाली हड़ वायुको क्यों नहीं बढ़ाती है इसमें जो कुछ कारण प्रसिद्धहै उसको कहतेहैं कि प्रभावहीसे दोषोंका निवारण होताहै इसमें क्या कारणहै यह कहना असंभवहै इससे इस समय शिष्योंके समझानेके लिये इतनाही कहा जाताहै कि गुणोंकी समानता होनेपर भी आश्रयके भेदसे क्रियाओंका भेद देखाजाता है जैसे बड़हर और आमला (इनकी रसादिकोंमें समानता होनेपर भी गुणोंमें बड़ा अन्तरहै) इस हेतु से इसमें और कुछ सन्देह न करना चाहिये हड़की मज्जामें मधुर रसनसमें अम्ल रस परदे में तिक्त त्वचामें कटु और गुठलीमें कपाय रसहोता है नवीन स्निग्ध कठोर गोल भारी और पानी में फेंकने या डालनेमें डूबनेवाली हड़ अत्यन्त गुणकारी और श्रेष्ठ कहीगईहै जो हड़ पहले कहे हुए नवीन आदिक गुणोंसे युक्त और दोकर्षके प्रमाण वाली होतीहै वह सबमें श्रेष्ठ कहीगईहै हड़ चबाने से अग्नि बढ़ानेवाली पीसकर सेवन करनेसे मलको शुद्ध करनेवाली सिझायकर सेवन करनेसे मल को रोकनेवाली और भूनकर सेवनसे त्रिदोष नाशक कहीगईहै भोजनके साथ हड़का सेवन करने से बुद्धि बल और इन्द्रियोंका प्रकाश पित्त कफ वायुका नाश और विष्ठामूत्र तथा शरीर के मलों का नीचे गिरना होताहै भोजनके उपरान्त हड खानेसे अन्न और पानके किये हुए दोष और वात पित्त कफके दोष शान्त होते हैं लवणके साथ कफ शक्कर के साथ पित्त घृतके साथ वातके रोग और गुड़के साथ हड़ सब रोगोंको नाश करतीहै रसायन के गुणका चाहनेवाला पुरुष वर्षादिक छओं ऋतुओंमें क्रमसे सेंधानोन शर्करा सोंठ पीपल सहत और गुड़के साथ हड़को खाय मार्गसे थकाहुआ बलहीन रूखा दुर्बल लंघन करनेवाला अधिक पित्तवाला गर्भवती स्त्री और फस्त लियाहुआ पुरुष यह सबलोग हड़को न खांय ॥ ९६ ॥

अथविभीतकस्यनामानिगुणाश्च ॥

विभीतकस्त्रीलिङ्गःस्यात्राक्षःकर्षफलस्तुसः । कलिद्रुमोभूतवासस्तथाकलियुगालयः ॥ विभीतकंस्वादुपाकंकषायंकफपित्तनुत् । उष्णवीर्य्यंहिमस्पर्शंभेदनंकासनाशनम् ॥ रूक्षं नेत्रहितंकेश्यंकृमिवैस्वर्यनाशनम् ॥ विभीतमज्जातृट्छर्दिकफवातहरोलघुः । कषायो मदकृच्चाथधात्रीमज्जापितद्गुणः ॥ ९७ ॥

बहेड़ेकेनाम औरगुण ॥

विभीतक शब्द त्रिलिङ्गी है अक्ष- कर्षफल- तुष- कलिद्रुम- भूतवास और कलियुगालय यह बहे ड़ेके नामहैं- बहेड़ा पाकमें मधुर कषेला- कफ पित्तनाशक वीर्य्यमें उष्ण स्पर्श में शीतल- दस्तावर- खांसीका नाशक- रूखा, नेत्र और बालों कोहित और स्वरभंग तथा कृमिका दूरकरने वाला होताहै, बहेड़ेकीमींगी तृषा, छर्दि कफ और वातको नाशकरने वाली और हलकी होती है इसके सिवाय

चेतकीतुधृताहस्ते यावत्तिष्ठतिदेहिनः। तावद्भिद्येनवेगैस्तु प्रभावान्नात्रसंशयः॥ नधार्यं सुकुमाराणां कृशानांभेषजद्विषाम्। चेतकीपरमाशस्ता हितासुखविरेचनी॥ सप्तानाम पिजातीनां प्रधानंविजयास्मृता। सुखप्रयोगासुलभा सर्वरोगेषुशस्यते॥ हरीतकीपञ्च रसा लवणातुवरापरम्। रूक्षोष्णादीपनीमेध्या स्वादुपाकारसायनी॥ चक्षुष्यालघुरायु ष्या वृंहणीचानुलोमिनी। श्वासकासप्रमेहार्श कुष्ठशोथोदरक्रमीन्॥ वैस्वर्य्यग्रहणीरो ग विबंधविषमज्वरान्। गुल्माध्मानतृषाच्छर्दि हिक्काकण्डूहृदामयान्॥ कामलांशूलमा नाहं स्नीहानञ्चयकृत्तथा। अश्मरींमूत्रकृच्छ्रञ्च मूत्राघातञ्चनाशयेत्॥ स्वादुतिक्तक षायत्वात्पित्तहृत्कफहृत्तुसा। कटुतिक्तकषायत्वा दम्लत्वाद्वातहृच्छिवा॥ पित्तकृत्कटुका म्लत्वा द्वातकृन्नकथंशिवा। प्रभावाद्दोषहन्तृत्वं सिद्धंयत्तत्प्रकाश्यते॥ हेतुभिःशिष्यबो धार्थं नपूर्वंकथ्यतेऽधुना। कर्म्मोन्यत्वंगुणैःसाम्यं दृष्टमाश्रयभेदतः॥ यतस्ततोनेति चिन्त्यं धात्रीलकुचयोर्यथा। पथ्यायामज्जानिस्वादुः स्नाय्वावम्लोव्यवस्थितः॥ वृंतेति क्तस्त्वचिकटु रस्थिस्तुतुवरोरसः। नवास्निग्धाघनावृत्ता गुर्वीक्षिप्ताचयाम्भसि॥ निम ज्जेत्साप्रशस्ताच कथितातिगुणप्रदा। नवादिगुणयुक्तत्वं तथैकत्रद्विकर्षता॥ हरीतक्याः फलेयत्र द्वयंतच्छ्रेष्ठमुच्यते। चर्विताबर्द्धयत्यग्निं पेषितामलशोधिनी॥ स्विन्नासंग्राहि णीपथ्या भृष्टाप्रोक्तात्रिदोषनुत्। उन्मीलिनीबुद्धिबलेन्द्रियाणां निर्मूलिनीपित्तकफानिला नाम्॥ विस्रंसिनीमूत्रशकृन्मलानां हरीतकीस्यात्सहभोजनेन। अन्नपानकृतान्दोषा न्वातपित्तकफोद्भवान्॥ हरीतकीहरत्याशु भुक्तस्योपरियोजिता। लवणेनकफंहन्ति पि त्तंहन्तिसशर्करा॥ घृतेनवातजान्रोगान् सर्वरोगान्गुडान्विता। सिंधूत्थशर्कराशुण्ठी कणामधुगुडैःक्रमात्। वर्षादिष्वभयाप्राश्या रसायनगुणैषिणा॥ अध्वातिखिन्नोबलव र्जितश्च रूक्षःकृशोःलंघनकर्षितश्च। पित्ताधिकोगर्भवतीचनारी विमुक्तरक्तस्त्वभयान्न खादेत्॥ ६६॥

विजया रोहिणी पूतना अमृता अभयाजीवन्ती और चेतकी यह सात जातिहैं तोंबी के समान गोल विजया होती है गोल रोहिणी छोटी गुठलीवाली पूतना गूदेदार अमृता पांच रेखावाली अ-भया सुवर्णके समान वर्णवाली जीवन्ती और तीन रेखावाली चेतकी यह सातोंके स्वरूप हैं सब रोगोंमें विजया घावोंके भरनेमें रोहिणी लेपमें पूतना शोधनमें अमृता नेत्र रोगोंमें अभया सबरोगों के नाशके लिये जीवन्ती और चूर्णमें चेतकी श्रेष्टहै इनको यथायोग्य काममें लाना चाहिये चेतकी श्वेत और कृष्ण दोप्रकारकी होतीहै छः अंगुलकी लम्बी श्वेत और १ अंगुलकी कृष्ण जानो कोई खानेसे कोई सूंघनेसे कोई छूनेसे और कोई देखनेसे इस प्रकार चार रीतिसे दस्त लाती है मनुष्य पशु पक्षी और मृगादिक जो कोई चेतकीके वृक्षकी छायामें जातेहैं उनको उसी समय दस्त आतेहैं चेतकी नाम हड़को जबतक हाथमें लियेरहो तबतक उसके प्रभावसे बड़े वेगके दस्त आते हैं इससे प्यासे सुकुमार दुर्बल और औषधिसे शत्रुता करनेवाले पुरुषोंको चेतकी सुख पूर्वक दस्तों के लिये अत्यन्त श्रेष्टहै सात प्रकारकी हर्ड़ोंमेंसे विजया श्रेष्टहै यह सुखसे व्यवहार करनेके योग्य सुलभ

और सम्पूर्ण रोगोंमें सुखकारीहै हड़में लवणके सिवाय पांच रसहोते हैं उनमेंसे कषाय रस अधिक है हड़ रूखी उष्ण दीपनी मेधाकरनेवाली विपाकमें मधुर रसायन नेत्रोंको हित हलकी आयुको हित मांस बढ़ानेवाली वायु आदिकको नीचे लेजानेवाली श्वास खांसी प्रमेह बवासीर कुष्ट सूजन उदर कृमि स्वरभंग सग्रहणी विवन्ध विषमज्वर गुल्म अफरा तृषा छर्दि हुचकी खुजली हृदयकेरोग कामला शूल आनाह प्लीहा यकृत् पथरी मूत्र कृच्छ्र और मूत्राघात इन सबरोगोंको नाश करती है हड़ मधुर तिक्त और कषाय रससे पित्तको कटु तिक्त और कषाय रससे कफको और अम्ल रसके वायुको नष्ट करतीहै परन्तु कटु और अम्ल रसके द्वारा पित्तकी बढ़ानेवाली हड़ वायुको क्यों नहीं बढ़ाती है इसमें जो कुछ कारण प्रसिद्धहै उसको कहतेहैं कि प्रभावहीसे दोषोंका निवारण होताहै इसमें क्या कारणहै यह कहना असंभवहै इससे इस समय शिष्योंके समझानेके लिये इतनाही कहा जाताहै कि गुणोंकी समानता होनेपर भी आश्रयके भेदसे क्रियाओंका भेद देखाजाता है जैसे बहेड़ा और आमला (इनकी रसादिकोंमें समानता होनेपर भी गुणोंमें बड़ा अन्तरहै) इस हेतु से इसमें और कुछ सन्देह न करना चाहिये हड़की मज्जामें मधुर रसनसमें अम्ल रस परदेमें तिक्त त्वचामें कटु और गुठलीमें कषाय रसहोता है नवीन स्निग्ध कठोर गोल भारी और पानी में फेंकने या डालनेमें डुबनेवाली हड़ अत्यन्त गुणकारी और श्रेष्ठ कहीगईहै जो हड़ पहले कहे हुए नवीन आदिक गुणोंसे युक्त और दोकर्षके प्रमाण वाली होतीहै वह सबमें श्रेष्ठ कहीगईहै हड़ चबाने से अग्नि बढ़ानेवाली पीसकर सेवन करनेसे मलको शुद्ध करनेवाली सिझायकर सेवन करनेसे मल को रोकनेवाली और भूनकर सेवनसे त्रिदोष नाशक कहीगईहै भोजनके साथ हड़का सेवन करने से बुद्धि बल और इन्द्रियोंका प्रकाश पित्त कफ वायुका नाश और विष्ठामूत्र तथा शरीर के मलों का नीचे गिरना होताहै भोजनके उपरान्त हड़ खानेसे अन्न और पानके किये हुए दोष और वात पित्त कफके दोष शान्त होते हैं लवणके साथ कफ शक्कर के साथ पित्त घृतके साथ वातके रोग और गुड़के साथ हड़ सब रोगोंको नाश करतीहै रसायन के गुणका चाहनेवाला पुरुष वर्षादिक छओं ऋतुओंमें क्रमसे सेंधानोन शर्करा सोंठ पीपल सहत और गुड़के साथ हड़को खाय मार्गसे थकाहुआ बलहीन रूखा दुर्बल लंघन करनेवाला अधिक पित्तवाला गर्भवती स्त्री और फस्त लियाहुआ पुरुष यह सबलोग हड़को न खांय ॥ ९६ ॥

अथविभीतकस्यनामानिगुणाश्च ॥

विभीतकस्त्रीलिङ्गःस्यादक्षःकर्षफलस्तुसः । कलिद्रुमोभूतवासस्तथाकलियुगालयः ॥ विभीतकंस्वादुपाकंकषायंकफपित्तनुत् । उष्णवीर्य्यंहिमस्पर्शंभेदनंकासनाशनम् ॥ रूक्षं नेत्रहितंकेश्यंकृमिवैस्वर्यनाशनम् ॥ विभीतमज्जातृट्च्छर्दिकफवातहरोलघुः । कषायो मदकृच्चाथधात्रीमज्जापितद्गुणः ॥ ९७ ॥

बहेड़ेकेनाम औरगुण ॥

विभीतक शब्द त्रिलिङ्गी है अक्ष- कर्षफल- तुष- कलिद्रुम- भूतवास और कलियुगालय यह बहेड़ेके नामहैं- बहेड़ा पाकमें मधुर कषैला- कफ पित्तनाशक वीर्य्यमें उष्ण स्पर्श में शीतल- दस्तावर- खांसीका नाशक- रूखा, नेत्र और बालों कोहित और स्वरभंग तथा कृमिका दूरकरने वाला होताहै, बहेड़ेकीमींगी तृषा, छर्दि कफ और वातको नाशकरने वाली और हलकी होती है इसके सिवाय

यह कषेली और मदकरने वालीभी होतीहै, आमले की मींगीमें भी इसीके समानगुणहोते हैं॥ ९७॥

अथामलक्यानामानिगुणाश्च ॥

त्रिष्वामलकमाख्यातंधात्रीत्रिष्यफलाऽमृता ॥ हरीतकीसमन्धात्रीफलंकिन्तुविशेषतः। रक्तपित्तप्रमेहघ्नंपरंवृष्यंरसायनम् ॥ हन्तिवातंतदम्लत्वात्पित्तंमाधुर्य्यशैत्यतः । कफंरूक्षकषायत्वात्फलंधात्र्यास्त्रिदोषजित ॥ यस्ययस्यफलस्येहवीर्य्यंभवति यादृशम्। तस्यतस्यैववीर्येणमज्जानमपिनिर्दिशेत ॥ ९८ ॥

आमलेकेनाम औरगुण ॥

आमलक शब्द त्रिलिंगीहै धात्री, तिष्यफला और अमृता यह आमलेके नाम हैं, आमला हड़के समानहै परन्तु विशेषतायहहै कि रक्त पित्ततथा प्रमेहका नाशक और अत्यन्त पुष्टकारक तथा रसायनहै यह अम्लरससे वायु मधुर तथा शीतलता से पित्त और रूक्षता और कषेले पनसे कफको दूरकरताहै इस प्रकार यह त्रिदोष नाशकहै,यहां जिस२ फलका वीर्य जैसा कहागयाहै उसीके अनुसार उसकी मींगीभी जानलेनी चाहिये ॥ ९८ ॥

अथत्रिफलायालक्षणनामगुणाः ॥

पथ्याविभीतधात्रीनांफलैःस्यात्त्रिफलासमैः । फलत्रिकञ्चत्रिफलासावराचप्रकीर्तिता ॥ त्रिफलाकफपित्तघ्नीमेहकुष्ठहरासरा । चक्षुष्यादीपनीरुच्याविषमज्वरनाशिनी९९॥

त्रिफलाके लक्षण समेतनाम औरगुण ॥

हड़- बहेड़ा और आमला इनतीनोंके समभाग संयोगसे त्रिफला कहा जाताहै- फलत्रिक- त्रिफला और वरायह इसके नामहैं- त्रिफला कफ पित्त प्रमेह तथा कुष्ठका नाशक, दस्तावर नेत्रोंको हित- दीपन- रुचिकारक और विषम ज्वरका नाशकरने वाला होताहै ॥ ९९ ॥

अथशुण्ठ्यानामानिगुणाश्च ॥

शुण्ठीविश्वाचविश्वञ्चनागरंविश्वभेषजम् । ऊषणंकटुभद्रञ्चशृङ्गवेरंमहौषधम ॥ शुण्ठीरुच्यामवातघ्नीपाचनीकटुकालघुः । स्निग्धोष्णमधुरापाकेकफवातविबन्धनुत् ॥ वृष्यास्वर्य्यावमिश्वासशूलकासहृदामयान् । हन्तिश्लीपदशोथार्शआनाहोदरमारुतान् ॥ आग्नेयगुणभूयिष्ठंतोयांशम्परिशोषयत् । संग्रहणातिमलंतत्तुग्राहिशुण्ठ्यादयो यथा ॥ विबन्धभेदनीयातुसाकथंग्राहिणीभवेत । शक्तिर्विबन्धभेदे स्यात्यतोनमलपातने ॥ १०० ॥

सोंठकेनाम औरगुण ॥

शुंठी- विश्वा- विश्व- नागर- विश्वभेषज- ऊषण,कटुभद्र, शृंगवेर और महौषधि, यह सोंठ के नाम हैं सोंठ रुचिकारक, पाचक, रसमेंकटु, हलकी, स्निग्ध उष्ण, पाकमेंमधुर, पुष्टिकारक- स्वरकोहित और आमवात कफ वायु विबन्ध, छर्दि, श्वास, शूल, खांसी-हृदयके रोग, श्लीपद, सूजन, बवासीर, आनाह, उदर तथा वायुके रोगोंकी नाशकरने वाली होतीहै, अग्निके गुणकी अधिकता से भीतर के जलको सुखाकर मलकोरोके वहग्राही कहातीहै जैसे शुंठी आदिक,अबयह सन्देहहोताहै कि जो वस्तु

विबन्धको नाशकरती है वह विबन्धकैसे होसकीहै इसका उत्तरयह हैकि उसकी शक्ति विबन्धके नाशकरनेमें है(जमेहुए मलको तोड़तीहै) परन्तु मलके गिरानेमें नहींहै॥ १०० ॥

अथार्द्रकस्यनामानिगुणाश्च ॥

आर्द्रकंशृंगवेरंस्यात्कटुभद्रंतथार्द्रिका । आर्द्रिकाभेदिनीगुर्वीतीक्ष्णोष्णादीपनीमता ॥ कटुकामधुरापाकेरूक्षावातकफापहा । येगुणाःकथिताःशुंठ्यास्तेऽपिसंत्यार्द्रकेऽखिलाः ॥ भोजनाग्रेसदापथ्यंलवणार्द्रकभक्षणम् । अग्निसन्दीपनंरुच्यंजिह्वाकण्ठविशोधनम् ॥ कुष्ठपाण्ड्वामयेकृच्छ्रेरक्तपित्तव्रणेज्वरे । दाहेनिदाघशरदोर्नैवपूजितमार्द्रकम् ॥ १०१ ॥

अदरकके नामऔर गुण ॥

आर्द्रक शृंगवेर· कटुभद्र और आर्द्रिका यह अदरक के नाम हैं· अदरक भेदक· भारी· तीक्ष्ण, उष्ण, दीपन कटु, पाक में मधुर, रूखी और वात तथा कफ की नाशक है जो गुणसोंठ के कहेगयेहैं वह संपूर्ण अदरक में भी हैं। भोजन के आदिमें सदैव सेंधानोंन और अदरक पथ्य है इससे अग्निकी दीप्ति, रुचि और जिह्वा समेतकण्ठका शोधन होता है, कुष्ठ, पांडु, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त घाव ज्वर, और दाह इनरोगों में और ग्रीष्म तथा शरद ऋतु में अदरक हितकारी नहीं है, ॥ १०१ ॥

अथपिप्पल्यानामानिगुणाश्च ॥

पिप्पलीमागधीकृष्णावैदेहीचपलाकणा । उपकुल्योषणाशौण्डीकोलास्यात्तीक्ष्णतण्डुला ॥ पिप्पलीदीपनीवृष्यास्वादुपाकारसायनी । अनुष्णाकटुकास्निग्धावातश्लेष्महरीलघुः ॥ पिप्पलीरेचनीहन्तिश्वासकासोदरज्वरान् । कुष्ठप्रमेहगुल्मार्शःप्लीहशूलामयमारुतान् ॥ आर्द्राकफप्रदास्निग्धाशीतलामधुरागुरुः । पित्तप्रशमनीसातुशुष्कापित्तप्रकोपिणी ॥ पिप्पलीमधुसंयुक्ता मेदःकफविनाशिनी । श्वासकासज्वरहरावृष्यामेध्याग्निवर्द्धिनी ॥ जीर्णज्वरेऽग्निमान्द्येचशस्यतेगुडपिप्पली । कासाजीर्णारुचिश्वासहृत्पाण्डुकृमिरोगनुत् ॥ द्विगुणःपिप्पलीचूर्णाद्गुडोऽत्रभिषजांमतः ॥ १०२ ॥

पीपल के नाम और गुण ॥

पिप्पली, मागधी, कृष्णा, वैदेही, चपला कणा, उपकुल्या. ऊषणा, शौण्डी, कोला और तीक्ष्ण तंडुला यह पीपल के नाम हैं, पीपल दीपन, पुष्टि कारक. विपाक में मधुर, रसायन, कुछउष्ण, कटु, स्निग्ध, हलकी, दस्तावर और वायु, कफ, श्वास, खांसी, उदर, ज्वर, कुष्ठ, प्रमेह, गुल्म, बवासीर प्लीहा, शूल, तथा आमवात की नाशक होती है, कच्ची पीपल, कफकारक स्निग्ध, शीतल, मधुर, भारी और पित्तनाशकहोती है परन्तु सूखने से पित्तको कुपित करती है, पीपल सहत के साथ मेद कफ, श्वास, खांसी तथा ज्वरकी नाशकारी वीर्य्यवर्द्धक मेधातथा अग्नि की वृद्धि करने वालीहोती है गुड़ के साथ पीपलका सेवन करने से जीर्ण ज्वर, अग्नि की मन्दता, खांसी, अजीर्ण, अरुचि, श्वास, हृदय के रोग, पांडु और कृमि इनसबरोगों का नाशहोता है यहां पीपलके चूर्णसे दूना गुड़ मिलाना यह वैद्योंकी संमति है, ॥ १०२ ॥

अथमरिचस्यनामानिगुणाश्च ॥

मरिचंवेल्लजंकृष्णमूषणंधर्मपत्तनम्। मरिचंकटुकंतीक्ष्णंदीपनंकफवातजित् ॥ उष्णं पित्तकरंरूक्षंश्वासशूलकृमीन्हरेत्। तदार्द्रंमधुरंपाकेनात्युष्णंकटुकंगुरुः ॥ किञ्चित्तीक्ष्ण गुणश्लेष्मप्रसेकि स्यादपित्तलम् ॥ १०३ ॥

मिर्चकेनाम और गुण ॥

मरिच, वेल्लज, कृष्ण- ऊपण- और धर्म्म पत्तन यह मिर्चके नामहैं- मिरच, कटु, तीक्ष्ण दीपन कफ, वातनाशक, उष्ण, पित्तकारक, रूक्ष और श्वास शूलतथा कृमिरोग की नाशक होती है, गीली मिरच पाक में मधुर कुछऊष्ण, कटु, भारी, कुछतीष्ण और कफ कीनिकालने वाली तथा कुछ पित्त करने वाली होतीहै, ॥ १०३ ॥

अथत्रिकटुकनामलक्षणगुणाः ॥

विश्वोपकुल्यामरिचंत्रयंत्रिकटुकथ्यते। कटुत्रिकन्तुत्रिकटुंत्र्यूषणंव्योषउच्यते॥त्र्यूष णंदीपनंहन्तिश्वासकासत्वगामयान्।गुल्ममेहकफस्थौल्यमेदःश्लीपदपीनसान्॥१०४॥

त्रिकटु के नाम लक्षण और गुण॥

सोंठ, पीपल और मिर्च इनको त्रिकटु कहते हैं. कटुत्रिक त्रिकटु, त्र्यूषण औरव्योष यह इस के नाम हैं, त्रिकटु अग्निदीपक और श्वास खांसी, त्वचाके रोग, गुल्म, प्रमेह, कफ, स्थूलता, मेद, श्लीपद, तथा पीनस का नाशकहोता है, ॥ १०४ ॥

अथपिप्पलीमूलस्यनामानिगुणाश्च ॥

ग्रन्थिकंपिप्पलीमूलमूषणंचटकाशिरः। दीपनंपिप्पलीमूलंकटूष्णंपाचनंलघु ॥ रू क्षंपित्तकरंभेदिकफवातोदरापहम्। आनाहप्लीहगुल्मघ्नंकृमिश्वासक्षयापहम् ॥ १०५ ॥

पीपलामूल के नाम और गुण ॥

ग्रंथिक, पिप्पली मूल, ऊपण और चटका शिर यह पीपलामूलकेनाम हैं पीपलामूल दीपन, कटु, उष्ण, पाचक,हलका, रूखा, पित्त वर्द्धक, भेदक, कफ वायुनाशक और उदर आनाह, प्लीहा, गुल्म कृमि,श्वास और क्षय रोगनाशक होताहै ॥ १०५ ॥

अथचतुरूपणस्यलक्षणगुणाः ॥

त्र्यूषणंसकणामूलंकथितंचतुरूषणम्।व्योषस्यैवगुणाःप्रोक्ताअधिकाश्चतुरूषणे॥१०६॥

चतुरूपण के लक्षण और गुण ॥

त्रिकटु और पीपला मूल यह चारों मिलकर चतुरूपण कहाते हैं इसमें त्रिकटु के कछु अधिक गुण होते हैं ॥ १०६ ॥

चव्यगुणः ॥

भवेच्चव्यन्तुचविकाकथितासातथोषणा।कणामूलगुणंचव्यंविशेषात्गुदजापहम्॥१०७॥

चव्यके नाम और गुण ॥

चव्य, चविका और ऊपणा यह चव्यके नाम. हैं, चव्य में पीपला मूल के समान गुणहैं परन्तु यह गुदाके रोगोंको विशेष करके नाश करती है, ॥ १०७ ॥

अथगजपिप्पल्या नामानिगुणाः ॥

चविकायाःफलंप्राज्ञैः कथितागजपिप्पली । कपिवल्लीकोलवल्लीश्रेयसीवशिरश्च सा॥ गजकृष्णाकटुर्वात श्लेष्मह्वह्निवर्द्धिनी । उष्णानिहन्त्यतीसारं श्वासकण्ठामय कृमीन् ॥ १०८ ॥

गजपीपलकेनाम और गुण ॥

पंडित लोग चव्यके फलको गजपीपल कहते हैं, कपि वल्ली, कोलवल्ली श्रेयसी, और व शिर यह गज पीपल के नामहैं गजपीपल कटु, वातकफ नाशक अग्नि वर्द्धक, उष्ण और अतीसार, श्वास कंठ रोग तथा कृमिनाशक होती है ॥ १०८ ॥

अथचित्रकस्यनामानि गुणाश्च ॥

चित्रकोऽनलनामाच पीठोव्यालस्तथोषणः । चित्रकःकटुकः पाकेवह्निकृत्पाचनोल घुः ॥ रूक्षोष्णग्रहणीकुष्ठ शोथार्शःकृमिकासनुत् । वातश्लेष्महरो ग्राहीवातार्शःश्ले ष्मपित्तहृत् ॥ १०९ ॥

चीतेके नाम और गुण ॥

चित्रक अनल पीठ व्याल और ऊषण यह चीतेके नामहैं चीता पाकमें कटु अग्निवर्द्धक पाचक हलका रूखा उष्ण ग्राही और संग्रहणी कुष्ठ सूजन बवासीर कृमि खांसी मिलेहुए वात कफवातकफ तथा पित्तका नाशक होताहै ॥ १०९ ॥

अथपञ्चकोलस्यलक्षणगुणाः ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलंचव्यचित्रकनागरैः । पञ्चभिःकोलमात्रंयत्पञ्चकोलं तदुच्यते ॥ पञ्चकोलंरसेपाकेकटुकंरुचिकृन्मतम् । तीक्ष्णोष्णंपाचनं श्रेष्ठंदीपनं कफवातनुत् ॥ गु ल्मप्लीहोदरानाह शूलघ्नंपित्तकोपनम् ॥ ११० ॥

पंचकोलके लक्षण और गुण ॥

पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता और सोंठ यहसब आठ२ मासे मिलकर पंचकोल कहलाता है, पंचकोल रस तथा पाकमें कटु, रुचिकारक तीक्ष्ण, उष्ण अत्यन्त पाचक, दीपन, पित्तके कोपका करनेवाला और कफ वात गुल्म प्लीहा उदर आनाह तथा शूल नाशक होताहै ॥ ११० ॥

अथषडूषणस्यलक्षणगुणाः ॥

पञ्चकोलंसमरिचंषडूषणमुदाहृतम् । पञ्चकोलगुणंतत्तुरूक्षमुष्णंविषापहम् ॥ १११ ॥

षडूषण के लक्षण और गुण ॥

मिर्च समेत पंचकोलको षडूषण कहतेहैं षडूषण पंच कोलके समान गुणवाला होताहै परन्तु वह विशेष करके रूखा उष्ण और विष दोष नाशक होताहै ॥ १११ ॥

अथयवान्यानामानिगुणाः ॥

यवानिकोग्रगंधाचब्रह्मदर्भाऽजमोदिका । सैवोक्तादीप्यकादीप्यातथा स्याद्यवसाह्व

या ॥ यवानीपाचनीरुच्यातीक्ष्णोष्णा कटुकालघुः।दीपनीचतथातिक्ता पित्तलाशुक्रशूल हृत्॥वातश्लेष्मोदरानाहगुल्मप्लीहकृमिप्रणुत् ॥ ११२ ॥

अजवाइन के नाम और गुण ॥

यवानी उग्रगंधा ब्रह्मदर्भा अजमोदिका दीप्यका दीप्या और यवसाव्हया यह अजवाइनके नाम हैं अजवाइन पाचक रुचिकारक तीक्ष्ण उष्ण और कटु हल्की दीपन तिक्त पित्तवर्द्धक वीर्य नाशक और शूल वात कफ उदर आनाह गुल्म प्लीहा तथा कृमि नाशक होतीहै ॥ ११२॥

अथाजमोदायाः नामानिगुणाश्च ॥

अजमोदाखराश्वाच मयूरोदीप्यकस्तथा । तथाब्रह्मकुशाप्रोक्ता कारवीलोचमस्त का ॥ अजमोदाकटुस्तीक्ष्णा दीपनीकफवातनुत् । उष्णाविदाहिनीहृद्या वृष्याबलकरी लघुः ॥ नेत्रामयकफच्छर्दि हिक्कावस्तिरुजोहरत् ॥ ११३ ॥

अजमोदके नामऔरगुण ॥

अजमोदा, खराश्वा, मयूर, दीप्यक, ब्रह्मकुशा, कारवी और लोच मस्तक यह अजमोदके नामहैं, अजमोद, कटु, तीक्ष्ण, दीपन, कफ वात नाशक, उष्ण, विदाही, हृदयकोहित, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारी लघु और नेत्ररोग, कृमि, छर्दि, हिचकी, तथावस्तिकी पीड़ाका नाशकहोतीहै ॥ ११३ ॥

अथ खुरासानीयवानी गुणाः ॥

पारसीकयवानीतुयवानीसदृशीगुणैः। विशेषात्पाचनीरुच्याग्राहिणीमादिनीगुरुः११४॥

खुरासानी अजवाइनकेगुण ॥

खुरासानी अजवायन अजवाइनके समान गुणवाली होतीहै परन्तु यह विशेष करके पाचक रुचि कारक ग्राही, मदकारी और भारी होती है ॥ ११४ ॥

अथ शुक्लजीरा कृष्णजीरा कलौंजी एषांनामानि गुणाश्च ॥

जीरकोजरणोजाजी कणास्याद्दीर्घजीरकः । कृष्णजीरःसुगन्धश्च तथैवोद्गारशो धनः ॥ कालाजाजीतुशुषवी कालिकाचोपकालिका । पृथ्वीकाकारवीपृथ्वी पृथुकृष्णोप कुञ्चिका ॥ उपकुंच्चीचकुञ्चीचबृहज्जीरकइत्यपि । जीरकत्रितयंरूक्षंकटूष्णंदीपनंलघु ॥ संग्राहिपित्तलंमेध्यं गर्भाशयविशुद्धिकृत् । ज्वरघ्नंपाचनंवृष्यंबल्यंरुच्यंकफापहम् ॥ चक्षुष्यंपवनाध्मानगुल्मछर्द्यतिसारहृत् ॥ ११५ ॥

श्वेतजीराकालाजीराऔरकलौंजीके नाम औरगुण ॥

सफेदजीरेको जीरक, जरण, अजाजी, कणा और दीर्घ जीरक कहते हैं, काले जीरेको सुगन्धि, उद्गार शोधन, कालाजाजी, शुषवी, कालिका, उपकालिका, पृथ्वीका, कारवी, पृथ्वी, पृथु, कृष्णा और उपकुंचिका कहतेहैं और कलौंजीको कुंची उपकुंची और बृहज्जीरक कहते हैं यहतीनों प्रकारके जीरेरूखे कटुउष्ण, दीपन, लघु, ग्राही, पित्तवर्द्धक, मेधाको हित गर्भाशयके शुद्धकरने वाले, ज्वर नाशक, पाचक वीर्य्य वर्द्धक, रुचितथा बलकारक, कफ नाशक, नेत्रोंको हित और वायु उदर, आध्मान, गुल्म, छर्दि और अतीसार नाशक होते हैं ॥ ११५॥

॥ अथधान्यकस्यनामानिगुणाश्च ॥

धान्यकंधानकंधान्यंधानाधानेयकंतथा । कुनटीधेनुकाछत्राकुस्तुम्बुरुवितुन्नकम् ॥ धान्यकंतुवरंस्निग्धमवृष्यंमूत्रलंलघु । तिक्तंकटूष्णवीर्यंचदीपनंपाचनंस्मृतम् ॥ ज्वरघ्नं रोचकंग्राहिस्वादुपाकित्रिदोषनुत् । तृष्णादाहवमिश्वासकासामार्शः क्रिमिप्रणुत् ॥ आर्द्रन्तुतद्गुणंस्वादुविशेषात्पित्तनाशितत् ॥ ११६ ॥

धनियें के नाम और गुण॥

धान्यक- धानक- धान्य- धाना-धानेयक कुनटी धेनुका- छत्रा- कुस्तुंबुरु और वितुन्नक यह धनियेंके नामहैं धनियां तिक्त कटु कषाय रसयुक्त स्निग्ध वीर्य को अहित मूत्रकारक- हलका- वीर्य में उष्ण दीपन पाचक ज्वरनाशक रुचिकारक ग्राही पाकमें मधुर त्रिदोषनाशक और तृषादाह छर्दि श्वास खांसी- श्राम बवासीर तथा कृमिका दूर करनेवाला होताहै गीले धनियें में भी यहीगुण होतेहैं परन्तु विशेष करके पित्तका नाशक होताहै ॥ ११६ ॥

अथसौंफिसोआतयोर्नामानिगुणाश्च ॥

शतपुष्पाशताह्वाचमधुराकारवीमिसिः । अतिलम्बीसितच्छत्रासंहिताछत्रिकापिच॥ छत्राशालेयशालीनोमिश्रेयामधुरामिसिः । शतपुष्पालघुस्तीक्ष्णापित्तकृद्दीपनीकटुः ॥ उष्णाज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलाक्षिरोगहृत् । मिश्रेयातद्गुणाप्रोक्ताविशेषाद्योनिशूलनुत् ॥ अग्निमान्द्यहरीहृद्याबद्धविट्क्रिमिशुक्रहृत् । रूक्षोष्णापाचनीकासवमिश्लेष्मानिलान् हरेत् ॥ ११७ ॥

सौंफ और सोवाके नाम और गुण ॥

शतपुष्पा शताह्वा मधुरा कारवीमिसि अतिच्छत्रा शितच्छत्रा और छत्रिका यह सौंफकेनाम हैं क्षत्रा शालेय शालीना मिश्रेया मधुरा और मिसि यह सोवाके नामहैं सौंफ लघु तीक्ष्ण पित्तवर्द्धक दीपन कटु उष्ण और ज्वर वायु कफ घाव शूल तथा नेत्र रोगकी नाशक होती है सोवा सौंफ के समान गुण वाला विशेष करके हृदयको हित रूखा उष्ण पाचक और कब्ज कृमि वीर्य योनिकी पीड़ा मन्दाग्नि खांसी छर्दि कफ तथा वायुका नाशक होताहै ॥ ११७ ॥

अथमेथीवनमेथी नामगुणाः ॥

मेथिकामिथिनीमेथिर्दीपनीबहुपत्रिका । बोधिनीबहुबीजाचजातिगन्धफलातथा ॥ बल्लरीचन्द्रिकामन्थामिश्रपुष्पाचकैरवी । कुञ्चिकाबहुपर्णीचपीतबीजामुनिच्छदा ॥ मेथिकावातशमनीश्लेष्मघ्नीज्वरनाशिनी॥ततःस्वल्पगुणाःवल्यावाजिनांसातुपूजिता॥११८॥

मेथी और वन मेथीके नामगुण ॥

मेथिका, मेथिनी, मेथी, दीपनी, बहुपत्रिका, बोधिनी, गन्धबीजा, ज्योति, गन्धफला, वल्लरी चंद्रिका, मन्था, मिश्रपुष्पा, कैरवी, कुंचिका, बहुपर्णी, पीतबीजा और मुनिच्छदा यह मेथीके नाम हैं मेथी वायु कफ और ज्वरकी नाश करने वाली होती है और बनमेथी इससे गुणों में न्यून होती है परन्तु यह घोड़ोंको हितकारक होती है ॥ ११८ ॥

अथचन्द्रशूरगुणाः ॥

चन्द्रिकाचर्महन्त्रीचपशुमेहनकारिका । नन्दिनीकारवीभद्रावासपुष्पासुवासरा ॥ चन्द्रशूरंहितंहिक्कावातश्लेष्मातिसारिणाम् । असृग्वातगदद्वेषिबलपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ ११९ ॥

चन्द्रशूर के नाम और गुण ॥

चन्द्रिका- चर्म्महन्त्री, पशुमेहनकारिका- नन्दिनी कारवी,भद्रा वासपुष्पा और सुवासरा यह चन्द्रशूरके नामहैं चन्द्रशूर बल तथा पुष्टि कारक वातरक्त रोगमें अहित और वात श्लेष्मा हिचकी तथा अतीसारमें हितहोताहै ॥ ११९ ॥

अथचारदाना ॥

मेथिकाचन्द्रशूरश्चकालाजाजीयवानिका । एतच्चतुष्टयंयुक्तंचतुर्बीजमितिस्मृतम् ॥ तच्चूर्णंभक्षितंनित्यंनिहन्तिपवनामयम्।अजीर्णंशूलमाध्मानंपार्श्वशूलंकटिव्यथाम्॥१२०॥

चारदाने के लक्षण और गुण ॥

मेथी, चन्द्रशूर कालाजीरा और अजवाइन यह सब मिलेहुए चतुर्बीज अर्थात् चारदाना कहलाते हैं इनका चूर्ण नित्यखाने से वायु रोग अजीर्ण शूल उदर आध्मान पशलियों का दर्द और कमर का दर्द नष्ट होताहै ॥ १२० ॥

अथहिंगुः ॥

सहस्रवेधिजतुकंवाह्लीकंहिंगुरामठम् । हिंगूष्णंपाचनंरुच्यंतीक्ष्णंवातबलासहृत् ॥ शूलगुल्मोदरानाहकृमिघ्नःपित्तवर्द्धनः ॥ १२१ ॥

हींगके नाम और गुण ॥

सहस्रवेधि , जतुक, वाह्लीक, हिंगु और रामठ यह हींग के नाम हैं हींग उष्ण पाचक रुचिकारक तीक्ष्ण पित्तवर्द्धक और वायु कफ शूल गुल्म उदर आनाह और कृमिनाशक होती है ॥ १२१ ॥

अथवचनामानिगुणाश्च ॥

वचोग्रगन्धापड्ग्रन्थागोलोमीशतपर्विका।क्षुद्रपत्रीचमङ्गल्याजटिलोग्राचलोमशा॥ वचोग्रगन्धाकटुकातिक्तोष्णावान्तिवह्निकृत् । विबन्धाध्मानशूलघ्नीशकृन्मूत्रविशोधिनी॥ अपस्मारकफोन्मादभूतजन्त्वनिलान्हरेत ॥ १२२ ॥

वचके नाम और गुण ॥

वच उग्रगन्धा षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्विका क्षुद्रपत्री मंगल्या जटिला उग्रा और लोमशा यह वच के नाम हैं वच उग्रगन्ध वाली कटु तिक्त रससे युक्त उष्ण छर्दि कराने वाली अग्निवर्द्धक मलमूत्र शोधक और विबन्ध आध्मान शूल मृगी कफ उन्माद भूतदोष कृमि तथा वायुनाशक होती है १२२॥

अथखुरासानीवचा ॥

पारसीकवचाशुक्लाप्रोक्ताहैमवतीतिसा। हैमवत्युदितातद्वद्वातंहन्तिविशेषतः॥१२३॥

खुरासानी वच ॥

पारसीकवचा हैमवती यह खुरासानी वचके नामहैं इसका रंग श्वेत होताहै इसमें वचके समान गुण होतेहैं परन्तु यह वायुको विशेष करके नाश करतीहै॥ १२३ ॥

अथमहाभरीवचा ॥

यस्यालोकेकुलिञ्जनइतिनामान्तरम् । सुगन्धाप्युग्रगन्धाचविशेषात्कफकासनुत् ॥ सुस्वरत्वकरीरुच्याहृत्कण्ठमुखशोधिनी । अपरासुगन्धा ॥ स्थूलग्रन्थिःयस्यालोकेमहाभरीइतिनाम । स्थूलग्रन्थिःसुगन्धास्यात्ततोहीनगुणास्मृता ॥ १२४ ॥

महाभरीवचा अर्थात् कुलींजन के नाम और गुण॥

सुगन्धा और उग्रगंधा यह कुलींजनके नामहैं,यह विशेष करके कफ तथा खांसीको नाशकरताहै स्वर को उत्तम करता है रुचिकारकहै और हृदय कंठ तथा मुखको शुद्ध करताहै और मोटी गांठवाला दूसरा कुलींजन जिसको लोकमें महाभरी कहते हैं यह पहलेकुलींजन से गुणों में हीनहै ॥ १२४ ॥

अथचोवचीनीतिलोकेतुप्रसिद्धातस्यागुणाः ॥

द्वीपान्तरवचा किञ्चित्तिक्तोष्णावह्निदीप्तिकृत् । विबन्धाध्मानशूलघ्नी शकृन्मूत्रविशोधिनी ॥ वातव्याधीनपस्मारमुन्मादंतनुवेदनाम् । व्यपोहतिविशेषेण फिरंगामयनाशिनी ॥ १२५ ॥

चोपचीनी के गुण॥

द्वीपान्तर वचा अर्थात् चोपचीनी कुछ तिक्त उष्ण अग्निदीपक मलमूत्र की शुद्धि करनेवाली और विबन्ध आध्मान शूल वात व्याधि मृगी उन्माद और शरीर की पीड़ा की नाशक होती है और यह फिरंग रोग को विशेष करके नाश करतीहै ॥ १२५ ॥

अथहौहवेरद्वयम् ॥

तन्मध्येप्रथमंफलंमत्स्यसदृशंविस्रगन्धंद्वितीयमश्वत्थफलसदृशंमत्स्यगन्धंतयोर्नामानिगुणाश्च । हवुषाहपुषाविस्रापराश्वत्थफलामता । मत्स्यगंधाप्लीहहंत्रीविषघ्नीध्वांक्षनाशिनी ॥ हवुषादीपनीतिक्ताम्दूष्णातुवरागुरुः । पित्तोदरसमीरार्शोग्रहणीगुल्मशूलहृत् ॥ पराप्येतद्गुणाप्रोक्तारूपभेदोद्वयोरपि ॥ १२६ ॥

दोनों हाऊबेर ॥

उनमें से पहला फल मछली के समान कच्चे मांसकी दुर्गन्धि वाला और दूसरा पीपल के फल के समान और मछली के समान दुर्गन्धिवाला, होताहै उनदोनों के नाम और गुण कहेजाते हैं हवुषा हपुषा और विस्रा यह पहले के नामहैं अश्वत्थफला मत्स्यगन्धा प्लीहहन्त्री विषघ्नी और ध्वांक्षनाशिनी यह दूसरी के नामहैं हवुषा अग्नि•दीप्ति कारक तिक्त कषाय रस युक्त कोमल उष्ण भारी और पित्त उदर वायु बवासीर ग्रहणी गुल्म और शूल रोगकी नाशक होतीहै दूसरी में भी इसीके समान गुण होतेहैं केवल सूरतमें भेदहै ॥ १२६ ॥

अथवायुभृंगइतिलोके ॥

पुंसिक्लीवेविडंगःस्यात्कृमिघ्नोजन्तुनाशनः । तण्डुलश्चतथावेल्लममोघाचित्रतण्डुला ॥ विडंगंकटुतीक्ष्णोष्णंरूक्षंवह्निकरंलघु । शूलाध्मानोदरश्लेष्मकृमिवातविबन्धनुत् ॥ १२७ ॥

वाय विडंगके नाम और गुण ,

विडंग शब्द पुल्लिंग और नपुंसक लिंगहै कृमिघ्न जन्तुनाशक तंडुल वेल्ल अमोघा और चित्रतंडुला यह वाय विडंग के नामहैं वायविड़ंग कटु तीक्ष्ण उष्ण रूखी अग्निवर्द्धक लघु और शूल आध्मान उदर कफ कृमि वायु तथा विवन्धका नाशक होताहै ॥ १२७ ॥

अथतुम्बुरुफलम् ॥

तुम्बुरुःसौरभःसौरोवनजःसानुजोन्धकः । तुम्बुरुप्रथितंतिक्तंकटुपाकेऽपितत्कटु ॥ रूक्षोष्णंदीपनंतीक्ष्णंरुच्यंलघुविदाहिच । वातश्लेष्माक्षिकर्णोष्ठशिरोरुक्गुरुताकृमीन् ॥ कुष्ठशूलारुचिश्वासप्लीहकृच्छ्राणिनाशयेत् ॥ १२८ ॥

तुम्बुरु (मिर्चके आकार फटे मुखवाला फल) के नाम और गुण ॥

तुम्बुरु,सौरभ,सौर,वनज,सानुज,और अन्धक यह तुम्बुरुके नामहैं तुम्बुरु तिक्त,कटुरसयुक्त, विपाक मे कटु, रूखा, उष्ण, दीपन, तीक्ष्ण रुचि कारक,लघु विदाही और वात कफके रोग नेत्र कर्ण ओष्ठ तथा शिरके रोग,शरीरका भारीपन,कृमि,कुष्ठ,शूल, अरुचि , श्वास,प्लीहा तथा मूत्रकृच्छ्र का नाशक होताहै ॥ १२८ ॥

अथवंशलोचननामगुणाः ॥

स्याद्वंशरोचनावांशीतुगाक्षीरातुगाशुभा । त्वक्क्षीरीवंशजाशुभ्रावंशक्षीरीचवैणवी । वंशजाबृंहणीवृष्यावल्यास्वाद्वीचशीतला । तृष्णाकासज्वरश्वासक्षयपित्तास्रकामलाः । हरेत्कुष्ठंव्रणंपाण्डुंकषायंवातकृच्छ्रजित् ॥ १२९ ॥

वंशलोचन के नाम और गुण॥

वंशरोचना, वांशी,तुगाक्षीरी,तुगा, शुभा, त्वक् क्षीरी, वंशजा, शुभ्रा, वंशक्षीरी और वैणवी यहवंश लोचन के नामहैं वंशलोचन धातुओं का बढ़ानेवाला वीर्य्यवर्द्धक बलकारक,मधुर,कषाय रसयुक्त शीतल और तृषा खांसी, ज्वर, श्वास, क्षय, रक्त पित्त, कामला, कुष्ठ, व्रण, पांडु, तथा वात रोग नाशक होताहै ॥ १२९ ॥

अथसमुद्रफेन ॥

समुद्रफेनःफेनश्चडिण्डीरोऽब्धिकफस्तथा । समुद्रफेनश्चक्षुष्योलेखनःशीतलश्च मः ॥ कषायोविषपित्तघ्नःकर्णरुक्कफहृल्लघुः ॥ १३० ॥

समुद्र फेन के नाम और गुण ॥

समुद्रफेन, फेन, डिंडीर,और अब्धिकफ यह समुद्रफेन के नामहैं,समुद्रफेन नेत्रोंकोहित, दुर्बलता करने वाला, शीतल, दस्तावर,कसेला, लघु और विषदोष, पित्त, कान के रोग, तथा कफका नाशक होताहै ॥ १३० ॥

अथाष्टकवर्गस्यलक्षणंगुणाः ॥

जीवकर्षभकौमेदकाकोल्यौऋद्धिवृद्धिके। अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैःकथितश्चरकादिभिः॥ अष्टवर्गोहिमःस्वादुःबृंहणःशुक्रलोगुरुः । भग्नसन्धानकृतकामबलासबलवर्द्धनः ॥ वातपित्तास्रतृट्दाहज्वरमेहक्षयापहः ॥ १३१ ॥

अष्टकवर्गके लक्षण और गुण ॥

जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि और वृद्धि इनसबके योगको चरक आदिकोंने अष्टवर्ग कहाहै, अष्टवर्ग शीतल, धातुओंका वर्द्धक, वीर्य वर्द्धक, भारी, टूटेको जोड़ने वाला, काम, बलतथा कफका वर्द्धक और वातरक पित्ततृषा, दाह,ज्वर,प्रमेह,तथा क्षयरोग का नाशकहोता है ॥ १३१ ॥

तत्रजीवकर्षभकयोरुत्पत्तिलक्षणनामगुणाः ॥

जीवकर्षभकौज्ञेयौ हिमाद्रिशिखरोद्भवौ । रसोनकन्दवत्कन्दौ निःसारौसूक्ष्मपत्रकौ॥ जीवकःकूर्चकाकार ऋषभोवृषशृंगवत् । जीवकोमधुरःशृंगो ह्रस्वांगःकूर्चशीर्षकः ॥ ऋषभोवृषभोधीरो विषाणीद्राक्षइत्यपि । जीवकर्षभकौबल्यौ शीतौशुक्रकफप्रदौ ॥ मधुरौपित्तदाहास्रकार्श्यवातक्षयापहौ ॥ १३२ ॥

जीवकऋषभककी उत्पत्तिलक्षण नामऔरगुण ॥

जीवक और ऋषभक हिमालयपर्व्वतके शिखरपर उत्पन्नहोतेहैं इनका कन्दलहसनके समानपत्ते छोटे तथा निस्सार होते हैं, जीवकका आकार कूर्चीके समान और ऋषभकका आकार बैलके सींगके समान होताहै, मधुर शृंग, ह्रस्वांग और कूर्च शीर्षक यह जीवकके नाम हैं, ऋषभ, वृषभ, धीर, विषाणी और इन्द्राक्ष यह ऋषभकके नामहैं, जीवक और ऋषभक बल कारक, वीर्य्य तथा कफके वर्द्धक, शीतल, मधुर और पित्तदाह, रुधिर दोष,दुर्बलता, वाततथा क्षयरोगके नाशकहैं ॥ १३२ ॥

अथ मेदामहामेदयोरुत्पत्तिलक्षण नामगुणाः ॥

महामेदाभिधःकंदो मोरंगादौप्रजायते । महामेदाखनौमेदा स्यादित्युक्तंमुनीश्वरैः ॥ शुक्लार्द्रकनिभःकंदो लताजातःसुपाण्डुरः । महामेदाभिदोज्ञेयो मेदालक्षणमुच्यते ॥ शुक्लकंदोनखच्छेद्यो मेदोधातुमिवस्रवेत् । यःसमेदेतिविज्ञेयो जिज्ञासातत्परेर्जनैः॥ शल्यपर्णीमणिच्छिद्रा मेदामेदोभवाध्वरा । महामेदावसुच्छिद्रा त्रिदंतीदेवतामणिः ॥ मेदायुगंगुरुस्वादु वृष्यंस्तन्यकफावहम् । वृंहणंशीतलंपित्त रक्तवातज्वरप्रणुत् ॥ १३३ ॥

मेदामहामेदाके उत्पत्ति लक्षण नाम और गुण ॥

महामेदा नाकम कन्द मोरंग आदि स्थानों में उत्पन्न होताहै, मुनिलोगोंने इसको खनोमेदानाम सेभी कहाहै, यह कन्दलतासे उत्पन्न होताहै और श्वेत अदरकके समान रंगमें श्वेत होताहै, मेदा नामक कन्द श्वेत वर्णहोताहै इसको नखोंसे फाड़ने में मेदधातुके समानरस निकलता है शल्यपर्णी मणिच्छिद्रा, मेदा, मेदोभवा और अध्वरा यह मेदाके नामहैं- महामेदा, वसुच्छिद्रा, त्रिदन्ती, और देवतामणि यह महामेदाके नामहैं, मेदा और महामेदा भारी, मधुर, वीर्यवर्द्धक, दुग्ध तथा कफ कारक, शरीरपोषक, शीतल और रक्त पित्तवात तथा ज्वर नाशक होती हैं ॥ १३३ ॥

अथ काकोली क्षीरकाकोल्योरुत्पत्तिलक्षण नामगुणाः ॥

जायतेक्षीरकाकोली महामेदोद्भवस्थले । यत्रस्यात्क्षीरकाकोली काकोलीतत्रजायते ॥ पीवरीसदृशःकंदः क्षीरंस्रवतिगंधवान् । सप्रोक्तःक्षीरकाकोली काकोलीलिंगमुच्य

मत्स्यपित्ताकाण्डरुहारोहिणीकटुरोहिणी । कट्वीतुकटुकापाकेतिक्तारूक्षाहिमालघुः ॥ भेदिनीदीपनीहृद्याकफपित्तज्वरापहा। प्रमेहश्वासकासास्रदाहकुष्ठकृमिप्रणुत् ॥१३९॥

कुटकी के नाम और गुण ॥

कटुकी, कटुका, तिक्ता, कृष्णभेदा, कटम्भरा, अशोका, मत्स्यशकला, चक्रांगी, शकुलादिनी मत्स्य पित्ता, काण्डरुहा, रोहिणी और कटुरोहिणी यह कुटकी के नाम हैं, कुटकी विपाक में कटु तिक्त, रूखी, शीतल, हल्की, भेदक, दीपन, हृदयको हित और कफ पित्त ज्वर प्रमेह श्वास, खांसी रुधिर के दोष, दाह, कुष्ठ तथा कृमिकी नाशक होती है ॥ १३९ ॥

अथचिरायता ॥

किराततिक्तःकैरातःकटुतिक्तःकिरातकः । काण्डतिक्तोनार्य्यतिक्तो भूनिम्बोरामसेनकः ॥ किरातकोऽन्योनेपालःसोऽर्द्धतिक्तोज्वरान्तकः । किरातःसारकोरूक्षःशीतलस्तिक्तकोलघुः ॥ सन्निपातज्वरश्वासकफपित्तास्रदाहनुत् । कासशोथतृषाकुष्ठज्वरव्रणकृमिप्रणुत् ॥ १४० ॥

चिरायते के नाम और गुण ॥

किरात,तिक्त,कैरात,कटुतिक्त, किरातक, कांडतिक्त, नार्य्यतिक्त, भूनिम्ब और रोमसेनक, यह चिरायते के नामहैं-एक दूसरे प्रकारका चिरायता नेपाल देशमें होताहै उसको अर्द्धतिक्त और ज्वरांतक भी कहते हैं-चिरायता, सारक,रूखा,शीतल,तिक्त,हलका और सन्निपात ज्वर, श्वास, कफ रक्त,पित्त,दाह,खांसी,सूजन,तृषा,कुष्ठ,ज्वर,घाव तथा कृमिका विनाशक होताहै ॥ १४० ॥

अथइन्द्रयवः ॥

उक्तंकुटजबीजन्तुयवमिन्द्रयवंतथा।कलिंगञ्चापिकालिंगंतथाभद्रयवाअपि(इतिक्लीबेऽमरःप्राह)क्वचिदिन्द्रस्यनामैवभवेत्तदभिधायकम्। फलानीन्द्रयवास्तस्यतथाभद्रयवाअपि॥इन्द्रयवंत्रिदोषघ्नंसंग्राहिकटुशीतलम्॥ज्वरातीसाररक्तार्श वमिवीसर्पकुष्ठनुत् दीपनंगुदकीलास्रवातास्रश्लेष्मशूलजित् ॥ १४१ ॥

इन्द्रजौके नाम और गुण॥

कुटज के बीजको यव, इन्द्रयव,कलिंग,कालिंग और भद्रयव कहतेहैं इसको अमरसिंहने नपुंसक लिंगमें कहाहै और धन्वन्तरि कहते हैं कि इंद्रके सम्पूर्ण नाम कुटज वृक्षके नाम हैं उसके फलको इंद्रयव और भद्रयव कहते हैं इंद्रयव त्रिदोष नाशक,ग्राही,कटु, शीतल, दीपन और ज्वर अतीसार खूनी बवासीर,छर्दि,वीसर्प,कुष्ठ,गुदकील,रुधिरदोष,वातरक्त कफ तथा शूलका नाशकहोताहै१४१॥

मधनफलम् ॥

मर्दनश्छर्दनःपिंडीनटःपिंडीतकस्तथा । करहाटोमरुवकःशल्यकोविषपुष्पकः । मदनोमधुरस्तिक्तोवीर्य्योष्णोलेखनोलघुः ॥ वान्तिकृद्विद्रधिहरःप्रतिश्यायव्रणान्तकः । रूक्षःकुष्ठकफानाहशोथगुल्मव्रणापहः ॥ १४२ ॥

मैनफल के नाम और गुण ॥

मर्दन, छर्दन,पिंड,नट,पिंडीतक,करहाट,मरुवक, शल्यक और विषपुष्पक यह मैनफलके नामहैं

मैनफल,मधुरतिक्त,रसयुक्त,वीर्य्य में उष्ण,लेखन, हलका,छर्दिकारक,रूखा और विद्रधि, पीनस घाव,कुष्ठ,कफ,आनाह,सूजन,गुल्म तथा व्रणनाशक होताहै ॥ १४२ ॥

अथरासना ॥

रास्नायुक्तरसारस्यासुवहारसनारसा । एलापर्णीचसुरसासुगन्धाश्रेयसीतथा ॥ रास्नामपाचिनीतिक्तागुरूष्णाकफवातजित् । शोथश्वाससमीरास्रवातशूलोदरापहा ॥ कासज्वरविषाशीतिवाति कामयसिध्महृत् ॥ १४३ ॥

रासनाके नाम और गुण ॥

रासना,युक्तरसा,रस्या,सुवहा,रसना,रसा एलापर्णी,सुरसा, सुगंधा और श्रेयसी यह रासना के नामहैं, रासना आमकी पचानेवाली,तिक्त,भारी,उष्ण और कफ, वात,सूजन,श्वास,वातरक्त,वात शूल,उदर, खांसी,ज्वर,विष,अस्सी प्रकारके वातरोग तथा सिध्मरोग की नाशकहोती है ॥ १४३ ॥

अथरास्नाभेदनाइइतिलोके ॥

नाकुलीसरसानागसुगन्धागन्धनाकुली । नकुलेष्टाभुजङ्गाक्षीसर्प्पाङ्गीविषनाशिनी ॥ नाकुलीतुवरातिक्ताकटुकोष्णाविनाशयेत् । भोगीलूतावृश्चिकाखुविषज्वरकृमिव्रणान् ॥ १४४ ॥

रासनाका भेद अर्थात् नाईके नाम और गुण ॥

नाकुली,सुरसा,नागसुगन्धा,गन्धनाकुली,नकुलेष्टा,भुजंगाक्षी,सर्पाक्षी और विष नाशिनी यह नाई के नामहैं, नाई तिक्त कटु, कषाय रसयुक्त,उष्ण और सर्प ,मकडी,विच्छू तथा मूसेका विष, ज्वर कृमि तथा घावकी नाशक होती है ॥ १४४ ॥

अथमाचिका ॥

(पश्चिमदेशेमोइआइतिलोकेप्रसिद्धोवृक्षविशेषः) माचिकाप्रस्थिकाम्बष्ठातथाम्बालिकाम्बिका । मयूरविदलाकेशी सहस्रावालमूलिका ॥ माचिकाम्लारसेपाकेकषाया शीतलालघुः । पक्वातीसारपित्तास्र कफकण्ठामयापहा ॥ १४५ ॥

माचिका अर्थात् पश्चिम देशमें मोइया इस प्रसिद्ध के नाम और गुण ॥

माचिका, प्रस्थिका, अम्बष्ठा,अम्बालिका,अम्बिका, मयूरविदला, केशी, सहस्रा और वलिमूलिका यह माचिकाके नामहैं,माचिका रसमें अम्ल, पाकमें कषाय, शीतल, हलकी और पक्वातीसार पित्त,रुधिरदोष, कफ, तथा कंठके रोगोंकी नाशक होतीहै ॥ १४५ ॥

अथतेजवती ॥

तेजवल्कलइतिच । तेजस्विनीतेजवती तेजोह्वातेजनीतथा ॥ तेजस्विनीकफश्वास कासास्यामयवातहृत् । पाचन्युष्णाकटुस्तिक्तारुचिवह्निप्रदीपिनी ॥ १४६ ॥

तेजवती के नाम और गुण ॥

तेजस्विनी,तेजवती, तेजोह्वा और तेजनी यह तेजोवती के नामहैं,तेजवती,कफ,श्वास, खांसी मुखके रोग तथा वातकी नाशक, पाचक, उष्ण, कटु,तिक्त रसयुक्त, रुचिकारक और अग्निदीपक होती है ॥ १४६ ॥

ते ॥ यथास्यात्क्षीरकाकोली काकोल्यपितथाभवेत् । एषाकिञ्चिद्भवेत्कृष्णा भेदोऽयमुभयोरपि ॥ काकोलीवायसोलीच वीराकायस्थिकातथा । साशुक्लाक्षीरकाकोली वयस्था क्षीरवल्लिका ॥ कथिताक्षीरिणीधारा क्षीरशुक्लापयस्विनी । काकोलीयुगलंशीतं शुक्रलंमधुरंगुरु ॥ बृंहणंवातदाहास्र पित्तशोपज्वरापहम् ॥ १३४ ॥

काकोली और क्षीरकाकोलीकी उत्पत्तिलक्षण नाम और गुण ॥

जहां महामेदा उत्पन्न होतीहै वहांकाकोली और क्षीर काकोलीभी उत्पन्न होतीहै, क्षीर काकोली का कन्दसतावरिके समान होताहै उसमें दूध और उत्तम सुगन्धि होती है यह क्षीरकाकोली कहीगई अब काकोलीका लक्षण कहतेहैं- क्षीर काकोली और काकोली समान होती हैं भेद इतना है कि काकोली कुछकाली होती है,काकोली,वायसोली, वीरा और कायस्थिका यह काकोली के नाम हैं वयस्था, क्षीरवल्लिका,क्षीरिणी,धारा,क्षीरशुक्ला और पयस्विनी यह क्षीर काकोलीके नामहैं, काकोली और क्षीरकाकोली शीतल, वीर्य्य वर्द्धक, मधुर, भारी, मांसवर्द्धक और वात, दाह, रक्त पित्त, शोष तथा ज्वरकी नाशकहोतीहैं ॥ १३४ ॥

अथर्द्धिवृद्ध्योरुत्पत्ति लक्षणनाम गुणाः ॥

ऋद्धिर्वृद्धिश्चकंदौद्वौ भवतःकोशयामले । शीतलोमान्वितःकंदो लताजातःसुरन्ध्रकः ॥ सएवऋद्धिर्वृद्धिश्च भेदमप्येतयोर्ब्रुवे । स्थूलग्रन्थिसमाऋद्धि र्वामावर्त्तफलाच सा ॥ वृद्धिस्तुदक्षिणावर्त्त फलाप्रोक्तामहर्षिभिः । ऋद्धिर्योग्यंसिद्धिलक्ष्म्यौ वृद्धेरप्याह्वयाइमे ॥ ऋद्धिर्बल्यात्रिदोषघ्नी शुक्रलामधुरागुरुः । प्राणैश्वर्य्यकरीमूर्च्छा रक्तपित्तविनाशिनी ॥ वृद्धिर्गर्भप्रदाशीता बृंहणीमधुरास्मृता । वृष्यापित्तास्रशमनी क्षतकासक्षयापहा ॥ राज्ञामप्यष्टवर्गस्तु यतोऽयमतिदुर्लभः । तस्मादस्यप्रतिनिधिर्गृह्णीयात्तद्गुणंभिषक् ॥ (मुख्यः सदृशः प्रतिनिधिः) एतस्य प्रतिनिधिमाह ॥ मेदाजीवककाकोली ऋद्धिद्वन्द्वेऽपिचासती । वरीविदार्य्यश्वगन्धा वाराहीश्चक्रमात्क्षिपेत् ॥ मेदामहामेदास्थाने शतावरी मूलम् । जीवकर्षभकस्थानेविदारीमूलम् । काकोली क्षीरकाकोलीस्थाने अश्वगन्धामूलम् । ऋद्धिवृद्धिस्थाने वाराहीकंदंगुणैस्तत्तुल्यं क्षिपेत् ॥ १३५ ॥

ऋद्धिवृद्धिकी उत्पत्ति लक्षणनामऔरगुण ॥

ऋद्धि वृद्धि यह दोनों कन्द कोश यामलनाम देशमें उत्पन्नहोते हैं यहदोनों कन्द श्वेतरंगरोमयक्त छिद्र संयुक्त और लतासे उत्पन्न होतेहैं- अब इनका भेदकहते हैं-ऋद्धिरुईके दोंडेके समान होती है उसका फलबाईं ओरको घूमाहुआ होताहै और वृद्धिकाफल दाहिनी ओरको घूमाहुआ होता है-योग्य सिद्धि और लक्ष्मी यह ऋद्धि और वृद्धि इनदोनोंके नामहैं- ऋद्धि बल कारक, त्रिदोष नाशक, वीर्य वर्द्धक, मधुर,भारी, बलतथा ऐश्वर्य्य की देनेवाली और मूर्च्छा तथारक्त पित्तकी नाशकहोती है, वृद्धि गर्भदायक,शीतल, मांसवर्द्धक, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक और रक्त, पित्त, घाव,खांसी तथा क्षयरोग की नाशक होतीहै वैद्य प्रायः इनके बदलेमें इनकेही समान औषधियों को ग्रहणकरें क्योंकि यह अष्टवर्ग राजालोगोंको भी दुर्लभहै, मेदा और महामेदाके बदलेमें सतावरि, जीवक ऋषभकके बदले

में विदारीकन्द, काकोली और क्षीरकाकोली के अभावमें असगन्ध और ऋद्धि तथा वृद्धि के अभाव में वाराही कन्द ग्रहणकरे क्योंकि यहगुणमें समानहैं ॥ १३५॥

अथ जेठीमधु ॥

यष्टींमधुतथायष्टी मधुकंक्लीतकंतथा । अन्यत्क्लीतनकन्तत्तु भवेत्तोयेमधूलिका ॥ यष्टीहिमागुरुःस्वाद्वी चक्षुष्याबलवर्णकृत । सुस्निग्धाशुक्रलाकेश्या स्वर्य्यापित्तानिलास्त्रजित ॥ व्रणशोथविषच्छर्दि तृष्णाग्लानिक्षयापहा ॥ १३६ ॥

मुलहटी के नाम औरगुण ॥

यष्टीमधु, यष्टी, मधूक और क्लीतक, यह मुलहटी के नाम हैं, एक दूसरे प्रकार की मुलहटी जो कि पानीमें उत्पन्न होती है उसको क्लीतनक और मधूलिका कहते हैं- मुलहटी शीतल, भारी, मधुर, नेत्रोंको हित, बल तथा वर्ण करने वाली, स्निग्ध, वीर्य्य वर्द्धक, केशोंको हित, स्वर को उपकारी और पित्त वायु, रुधिर दोष, घाव, सूजन, विषदोष, छर्दि, तृषा, शरीर की ग्लानि तथाक्षय की नाशक होती है ॥ १३६ ॥

अथ कम्बीला ॥

काम्पिल्लःकर्कशश्चन्द्रो रक्तांगोरोचनोऽपिच । काम्पिल्लःकफपित्तास्त्र कृमिगुल्मोदरव्रणान् ॥ हन्तिरेचीकटूष्णश्च मेहानाहविषाश्मनुत् ॥ १३७ ॥

कवीले के नाम और गुण ॥

कांपिल्य, कर्कश, चन्द्र, रक्तांग और रोचन यह कवीले के नाम हैं, कवीला कफ पित्त रुधिर दोष, कृमि, गुल्म, उदर, व्रण, प्रमेह, आनाह, विष तथा पथरीका नाशक, रेचक, कटु और उष्ण होता है ॥ १३७ ॥

अथ धनवहेरा ॥

आरग्वधोराजवृक्षःशम्पाकश्चतुरङ्गुलः । आरेवतोव्याधिघातःकृतमालःसुवर्णकः ॥ कर्णिकारोदीर्घफलःस्वर्णाङ्गःस्वर्णभूषणः । आरग्वधोगुरुःस्वादुःशीतलःस्रंसनोमृदुः॥ ज्वरहृद्रोगपित्तास्रवातोदावर्त्तशूलनुत् । तत्फलंस्रंसनंरुच्यं कुष्ठपित्तकफापहम् ॥ ज्वरेतु सततंपथ्यंकोष्ठशुद्धिकरंपरम् ॥ १३८ ॥

अमलतास के नाम और गुण ॥

आरग्वध, राजवृक्ष, संपाक, चतुरंगुल, आरवेत, व्याधि घात, कृतमाल, सुवर्णक, कर्णिकार दीर्घफल, स्वर्णांग और स्वर्ण भूषण, यह अमलतास के नाम हैं, अमलतास, भारी, मधुर, शीतल, स्रंसन और ज्वर, हृदय के रोग, रक्तपित्त, बात, उदावर्त, तथा शूल रोगनाशक होता है, अमलतास का फल स्रंसन, रुचिकारक, कुष्ठ, पित्त तथा कफनाशक, ज्वरमें सदैव पथ्य और कोष्टका अत्यन्त शोधक होता है ॥ १३८ ॥

अथकटुकी ॥

कटीतुकटुकातिक्ताकृष्णभेदाकटुम्भरा । अशोकामत्स्यशकलाचक्राङ्गीशकुलादनी ॥

अथउमिंजिनीमालकांगुनीइतिवा ॥

ज्योतिष्मतीस्यात्कटभीज्योतिष्काकङ्गनीतिच। पारावतपदीपण्यालताप्रोक्ताककुन्दनी ॥ ज्योतिष्मतीकटुस्तिक्तासराकफसमीरजित्। अत्युष्णावामनीतीक्ष्णावह्निबुद्धिस्मृतिप्रदा ॥ १४७ ॥

मालकांगनीके नाम और गुण ॥

ज्योतिष्मती,कटभी,ज्योतिष्का,कंगुनी, पारावतपदी, पण्यालता और ककुन्दनी यह मालकांगनी के नामहैं, मालकांगनी कटु तिक्त रसयुक्त, सारक,कफ वातनाशक, अत्यन्त उष्ण,छर्दिकारक तीक्ष्ण और अग्नि,बुद्धि तथा स्मृति को देनेवाली होती है ॥ १४७ ॥

अथकूटः ॥

कुष्ठरोगाह्वयम्वाप्यंपारिभव्यन्तथोत्पलम् ॥ कुष्ठमुष्णङ्कटुस्वादुशुक्रलन्तिक्तकंलघु॥ हन्तिवातास्रवीसर्पकासकुष्ठमरुत्कफान् ॥ १४८ ॥

कूटके नाम और गुण ॥

कुष्ठ,रोगाह्वय,वाप्य,पारिभव्य और उत्पल यहकूटके नामहैं,कूटउष्ण,कटु तिक्त मधुर रसयुक्त वीर्य्यवर्द्धक, हलकी और वात रक्त, वीसर्प,खांसी, कुष्ठ,वात तथा कफ नाशक होती है ॥ १४८ ॥

अथकुष्ठभेदपुष्करमूलम् ॥

उक्तंपुष्करमूलन्तुपौष्करंपुष्करञ्चतत्। पद्मपत्रञ्चकाश्मीरंकुष्ठभेदमिमंजगुः ॥ पौष्करंकटुकन्तिक्तमुक्तंवातकफज्वरान् । हन्तिशोथारुचिश्वासान्विशेषात्पार्श्वशूलनुत् ॥ १४९ ॥

पुष्करमूल के नाम और गुण ॥

पुष्करमूल,पौष्कर, पुष्कर, पद्मपत्र, काश्मीर और कुष्ठभेद यह पुष्करमूलके नामहैं, पुष्करमूल कटुतिक्त रसयुक्त, उष्ण और वात कफ ज्वर, सूजन,अरुचि तथा श्वास नाशक होताहै और यह पसली की पीड़ामें अत्यन्त गुणदायक है ॥ १४९ ॥

अथचोक ॥

कटुपर्णीहैमवतीहेमक्षीरीहिमावती। हेमाह्वापीतदुग्धाचतन्मूलञ्चोकमुच्यते॥ हेमाह्वारेचनीतिक्ताभेदिन्युत्क्लेशकारिणी। कृमिकण्डूविषानाहकफपित्तास्रकुष्ठनुत्॥ १५० ॥

चोकके नाम और गुण ॥

कटुपर्णी,हैमवती, हेमक्षीरी, हिमावती हेमाह्वा और पीतदुग्धा, यहकटुपर्णी के नामहैं इसकी जड़को चोक कहते हैं, चोक दस्तावर,तिक्त, भेदक,मचली करनेवाली और कृमि,कंडू,विष,आनाह कफ,पित्त,कुष्ठ तथा रक्तदोषकी नाशक होती है ॥ १५० ॥

अथकाकरशृंगी ॥

शृंगीकर्कटशृंगीचस्यात्कुलीरविषाणिका।अजशृंगीचवक्राचकर्कटाख्याचकीर्तिता॥

श्रृंगीकषायातिक्तोष्णा कफवातक्षयज्वरान्। श्वासोऽर्द्ध्ववाततृट्कास हिकारुचिवमीन्ह स्तु॥ १५१॥

काकड़ासिंगी के नाम और गुण॥

शृंगी, कर्कटशृंगी, कुलीर, विषाणिका, अजशृंगी, वक्रा और कर्कटाख्या यह काकड़ासिंगी के नामहैं, काकड़ासिंगी तिक्त कषाय रसयुक्त, उष्ण और कफ वात क्षय, ज्वर, श्वास, ऊर्द्ध्व वात, तृषा खांसी, हिचकी, अरुचि तथा छर्दिकी नाशक होती है॥ १५१॥

अथकायफरस्यनामगुणाः॥

कट्फलःसोमवल्कश्च कैटर्य्यःकुम्भिकाऽपिच। श्रीपर्णीकाकुमुदिकाभद्राभद्रवतीति च॥ कट्फलस्तुवरस्तिक्तःकटुर्वातकफज्वरान्। हन्तिश्वासप्रमेहार्शःकासकण्ठामया रुचीः॥ १५२॥

कायफल के नाम और गुण॥

कटफल, सोमवल्क, कैटर्य्य, कुंभिका, श्रीपर्णिका, कुमुदिका, भद्रा और भद्रवती यहकायफल के नाम हैं, कायफल कषाय तिक्त और कटुरसयुक्त और वात कफ ज्वर, श्वास, प्रमेह, बवासीर खांसी, कंठरोगतथा अरुचिका नाशक होताहै॥ १५२॥

अथभार्गीयभनेटीइतिच॥

भार्ङ्गीभृगुभवापद्माफञ्जीब्राह्मणयष्टिका। ब्राह्मण्यंगारवल्लीचखरशाकश्चहञ्जिका॥ भार्गीरूक्षाकटुस्तिक्तारुच्योष्णापाचनीलघुः॥ दीपनीतुवरागुल्मरक्तजन्नाशयेद्ध्रुवम्॥ शोथकासकफश्वासपीनसज्वरमारुतान्॥ १५३॥

भारंगीके नाम औरगुण॥

भारंगी, भृगुभवा, पद्मा, फंजी, ब्राह्मण यष्टिका, ब्राह्मणी, अंगारवल्ली, खरशाका और हंजिका यह भारंगीके नामहैं, भारंगी रूखी, कटुतिक्त कषायरसयुक्त, रुचिकारक, उष्ण, पाचक, लघु दीपन और गुल्म, रुधिर, सूजन, खांसी, कफ, श्वास, पीनस, ज्वर तथा वात नाशकहोती है१५३॥

अथपाषाणभेदः॥

पाषाणभेदकोऽश्मघ्नोगिरिभिद्भिन्नयोजनी। अश्मभेदोहिमास्तिक्तःकषायोवस्तिशोध नः॥ भेदनोहन्तिदोषार्शोगुल्मकृच्छ्राश्महृद्रुजः। योनिरोगान्प्रमेहांश्च प्लीहशूलव्रणा निच॥ १५४॥

पाषाणभेदके नाम और गुण॥

पाषाण भेद, अश्मघ्न, गिरिभित् और भिन्न योजनी, यह पाषाण भेद के नामहैं, पाषाणभेद शीतल, तिक्तकषाय रसयुक्त, मूत्राशयका शोधक, भेदक और त्रिदोष, बवासीर, गुल्म, मूत्र कृच्छ्र, पथरी, हृदयकेरोग, योनिरोग, प्रमेह, प्लीहा, शूलतथा घावका नाशक होताहै॥ १५४॥

अथधावई॥

धातकीधातुपुष्पीचताम्रपुष्पीचकुञ्जरा। सुभिक्षाबहुपुष्पीचवह्निज्वालाचसास्मृता॥ धातकीकटुकाशीतामृदुकृत्तुवरालघुः। तृष्णातीसारपित्तास्रविषकृमिविसर्पजित्॥ १५५॥

धवईकेनाम और गुण ॥

धातुकी,धातुपुष्पी, ताम्रपुष्पी, कुंजरा, सुभिक्षा, बहुपुष्पी और वह्निज्वाला यह धवई के नाम हैं, धवई कटुकषाय रसयुक्त, शीतल, कोमलता करने वाली, हल्की और तृषा, अतीसार, पित्त, रक्त दोष, विष, कृमि और वीसर्प नाशक होतीहै ॥ १५५ ॥

अथमञ्जिष्ठा ॥

मञ्जिष्ठाविकसाजिङ्गीसमंगाकालमेषिका । मण्डूकपर्णीभण्डीरीभण्डीयोजनवल्ल्य पि ॥ रसायन्यरुणाकालारक्ताङ्गीरक्तयष्टिका ।भण्डीतकीचगण्डीरीमञ्जूषावस्त्ररञ्जिनी॥ मञ्जिष्ठामधुरातिक्ताकषायास्वरवर्णकृत् । गुरुरुष्णाविषश्लेष्मशोथयोन्यक्षिकर्णरु क् ॥ रक्तातीसारकुष्ठास्रवीसर्प्पव्रणमेहनुत् ॥ १५६ ॥

मजीठके नाम औरगुण ॥

मंजिष्ठा, विकसा, जिंगी, समंगा, कालमेषिका, मंडूकपर्णी, भंडीरी, भंडी, योजनवल्ली, रसायनी, अरुणा काला, रक्तांगी,रक्तयष्टिका, मंडीतकी,गण्डीरी, मंजूषा और वस्त्र रंजिनी यह मजीठ के नाम हैं, मजीठ मधुर तिक्तकषाय रसयुक्त, स्वरको उत्तमकरने वाला, वर्णकोहित, भारी, उष्ण और विषकफ, सूजन, योनिरोग, नेत्ररोग, कर्णरोग और रक्तातीसार, कुष्ठ,रक्त दोष, वीसर्प घावतथा प्रमेह नाशकहोता है ॥ १५६ ॥

अथकुसुम्भ ॥

स्यात्कुसुम्भम्वह्निशिखं वस्त्ररञ्जकमित्यपि । कुसुम्भम्वातलंकृच्छ्रं रक्तपित्तकफाप हम् ॥ १५७ ॥

कुसुंभके नाम औरगुण ॥

कुसंभ, वह्निशिख और वस्त्र रंजक यह कुसुम के नामहैं, कसुम वात वर्द्धक और मूत्रकृच्छ्र, रक्त पित्ततथा कफ नाशकहोताहै ॥ १५७ ॥

अथलाही ॥

लाक्षापलंकषालक्तो यावोवृक्षामयोजतुः । लाक्षावर्ण्याहिमाबल्यास्निग्धाचतुवराल घुः ॥ अनुष्णाकफपित्तास्रहिक्काकासज्वरप्रणुत् ॥ व्रणोरःक्षतवीसर्प्पकृमिकुष्ठगदापहा॥ अलक्तकोगुणे स्तद्वद्विशेषाद्व्यङ्गनाशनः ॥ १५८ ॥

लाखके नाम औरगुण ॥

लाक्षा,पलंकषा,अलक्त, याव, वृक्षामय और जतु यह लाख के नामहैं,लाख वर्ण के लियेहित शीतल,बलकारक,स्निग्ध,कषाय, हलकी उष्णतासे रहित और कफ पित्तरक्त दोष, हिचकी, खांसी ज्वर,घाव, उरक्षत, वीसर्प, तथा कुष्ठरोगकी नाशक होती है और अलक्तकमें भी इसी प्रकार के गुणहोते हैं यह व्यंगरोगमें अधिक गुणकरताहै ॥ १५८ ॥

अथहरिद्रा ॥

हरिद्राकाञ्चनीपीतानिशाख्यावरवर्णिनी । कृमिघ्नाहलदीयोषित्प्रियाहट्टविलासिनी ॥ह रिद्राकटुकातिक्तारूक्षोष्णाकफपित्तनुत्वर्ण्यात्वग्दोषमेहास्रशोथपाण्डुव्रणापहा॥१५९॥

हल्दी के नाम और गुण ॥

हरिद्रा- कांचनी- पीता- निशा- वरवर्णिनी- कृमिथा- हलदी- योपित- प्रिया और हरविलासिनी- यह हल्दी के नाम हैं- हल्दी कटु तिक्त रसयुक्त-रूखी- उष्ण- वर्णके लिये हित और कफ पित्त त्वचा दोप, प्रमेह-रक्तदोप- सूजन- पांडु और घाव के रोगकी नाशक होती है ॥ १५६ ॥

कर्पूरहरदि ॥

दार्वीभेदाघगन्धाचसुरभीदारुदारुच। कर्पूरापद्मपत्रास्यात्सुरीमत्सुरतारका॥ आम्रगन्धिर्हरिद्रायासाशीतावातलामतापित्तहन्मधुरातिक्तासर्वकण्डूविनाशिनी॥ १६०॥

कपूर हल्दी के नाम और गुण ॥

दार्वीभेदा, आम्रगन्धा, सुरभीदारु, दारु, कर्पूरा, पद्मपत्रा, सुरभी और सुरतारका यह कपूर हल्दी के नाम हैं, कपूर हल्दी, शीतल, वायु वर्द्धक, पित्तनाशक, मधुर तिक्त रसयुक्त और सब प्रकार की खुजली की नाशक होती है, ॥ १६० ॥

अथवनहरदी ॥

अरण्यहलदीकन्दः कुष्ठवातास्रनाशनः ॥ १६१ ॥

वनहल्दीके गुण ॥

वनहल्दी नामका कन्द कुष्ठ और वातरक्त दोपका नाशक होताहै ॥ १६१ ॥

अथदारुहरिद्रा ॥

दार्वीदारुहरिद्राचपर्ज्जन्यापर्ज्जनीतिच। कटंकटेरीपीताचभवेत्सैवपचम्पचा ॥ सैव कालीयकःप्रोक्तस्तथाकालेयकोऽपिच। पीतद्रुश्चहरिद्रुश्च पीतदारुकपीतकम् ॥ दार्वी निशागुणाकिन्तुनेत्रकर्णास्यरोगनुत् ॥ १६२ ॥

दारुहल्दीके नाम और गुण ॥

दार्वी,दारुहरिद्रा,पर्ज्जन्या,पर्जनी,कटंकटेरी,पीता,पचंपचा कालीयक, कालेयक, पीतद्रु, हरिद्रु पीतदारुक और पीतक यह दारुहल्दीकेनामहैं दारुहल्दी गुणोंमें हल्दीके समानहै और नेत्रकर्ण तथा मुखके रोगोंमें विशेष हितकारीहै ॥ १६२ ॥

रसाञ्जनम् ॥

दार्वीक्वाथसमंक्षीरंपादम्पक्कायथाघनम्। तदारसाञ्जनाख्यन्तत्तनेत्रयोःपरमंहितम् ॥ रसञ्जनन्तार्क्ष्यशैलंरसगर्भञ्चतार्क्ष्यजम्। रसाञ्जनंकटुश्लेष्मविषनेत्रविकारनुत् ॥ उष्णंरसायनन्तिक्तंछेदनंव्रणदोपहृत् ॥ १६३ ॥

रसोतके नाम और गुण ॥

दारुहल्दीके काढ़ेमें समभाग दूध मिलाकर परिपाक करनेसे जब चौथाई गाढ़ा शेप रहजाय उसको रसौत कहते हैं यह नेत्रोंको अत्यन्त हितकारी होताहै रसांजन तार्क्ष्यशैल रसगर्भ और तार्क्ष्यज यह रसौतके नामहैं रसौत कटु तिक्तरसयुक्त- उष्ण- रसायन- छेदन और कफविप नेत्ररोग तथा घाव नाशक होताहै ॥ १६३ ॥

अथवकुची ॥

अवल्गुजीवाकुचीस्यात्सोमराजीसुपर्णिका । शशिलेखाकृष्णफलासोमापूतफली

तिच ॥ सोमवल्लीकालमेषीकुष्ठघ्नीचप्रकीर्तिता । वाकुचीमधुरातिक्ताकटुपाकारसाय नी ॥विष्टम्भहृद्धिमारुच्यासराश्लेष्मास्रपित्तनुत्।रूक्षाहृद्याश्वासकुष्ठमेहज्वरकृमिप्रणुत्॥ ततफलंपित्तलंकुष्ठकफानिलहरंकटु।केश्यन्त्वच्यंवमिश्वासकासशोथामपाण्डुनुत् १६४॥

वकुचीके नाम और गुण ॥

अवल्गुज,वाकुची,सोमराजी,सुपर्णिका,शशिलेखा,कृष्णफला,सोमा,पूतिफली, सोमवल्ली, कालमेषी और कुष्ठघ्नी यह वकुचीकेनामहैं वकुची मधुर तिक्त रसयुक्त,विपाकमें कटु,रसायन, विष्टम्भ नाशक,शीतल, रुचिकारक, शाक,रूखा, हृदयकोहित और कफरक्त,पित्तश्वास, कुष्ठ,प्रमेह, ज्वर तथा कृमि नाशक होतीहै वकुचीका फल पित्तवर्द्धक,कटु, केशोंकोहित,त्वचाका उपकारी और कुष्ठ कफ वात श्वास खांसी सूजन आम दोष तथा पांडुका नाशक होताहै ॥ १६४ ॥

अथचक्रमर्दः ॥

चक्रमर्दःप्रपुन्नाटोदद्रुघ्नोमेषलोचनः। पद्माटःस्यादेडगजश्चक्रीपुन्नाटइत्यपि॥ चक्रमर्दोलघुःस्वादुरूक्षःपित्तानिलापहः। हृद्योहिमःकफश्वासकुष्ठदद्रुकृमीन्हरेत् ॥ हन्त्युष्णन्तत्फलंकुष्ठकण्डूदद्रुविषानिलान् । गुल्मकासकृमिश्वासनाशनंकटुकंस्मृतम् ॥ १६५ ॥

पवांड़के नाम और गुण ॥

चक्रमर्द,प्रपुंनाट,दद्रुघ्न,मेषलोचन, पद्माट,एडगज, चक्री और पुन्नाट यह पवांड़के नामहैं पवांड़ हलका, मधुर, रूखा, हृदयकोहित, शीतल और पित्त, वात, कफ, श्वास, कुष्ठ, दाद, तथा कृमि का नाशक होताहै पवांड़का फल उष्ण- कटु और कुष्ठ- खुजली दाद- विष- वात गुल्म खांसी कृमि तथा श्वासनाशक होताहै ॥ १६५ ॥ अथअतीसः ॥

विषात्वतिविषाविश्वाशृङ्गीप्रतिविषारुणा॥ शुक्लकन्दाचोपविषाभंगुराघुणवल्लभा ॥ विषासोष्णाकटुस्तिक्तापाचनीदीपनीहरेत्।कफपित्तातिसारामविषकासवमिकृमीन्॥१६६॥

अतीसके नाम और गुण ॥

विषा, अतिविषा, विश्वा, शृंगी, प्रतिविषा, अरुणा, शुक्लकन्दा, उपविषा, भंगुरा और घुण वल्लभा यह अतीसके,नामहैं अतीस उष्ण, कटु तिक्त, रसयुक्त पाचक, दीपन और कफ पित्त,अतीसार, आम रोग, विष, खांसी छर्दितथा कृमि नाशक होताहै ॥ १६६ ॥

अथसावरलोधः । पठिआलोधइतिलोके ॥

लोध्रस्तिल्वस्तिरीटश्चशावरोगालवस्तथा ॥ द्वितीयःपट्टिकालोध्रःक्रमुकःस्थूलवल्कलः। जीर्णपत्रोबृहत्पत्रःपट्टीलाक्षाप्रसादनः॥ लोध्रोग्राहीलघुःशीतश्चक्षुष्यःकफपित्तनुत्। कषायोरक्तपित्तासृग्ज्वरातीसारशोथहृत् ॥ १६७ ॥

लोध और पठानीलोधके नाम और गुण ॥

लोध्र, तिल्व, तिरीट, शावर और गालव यह लोधके नामहैं पट्टिकालोध्र, क्रमुक, स्थूलवल्कल जीर्णपत्र- बृहत्पत्र- पट्टी और लाक्षाप्रसादन यह पठानीलोधके नामहैं लोध, ग्राही, हलका, शीतल नेत्रोंको हित, कषाय, और कफ, पित्त, रक्त, पित्त, रक्त, दोष, ज्वर, अतीसार तथा सूजन का नाशक होताहै ॥ १६६ ॥ -

अथलशुनः ॥

लशुनस्तुरसोनः स्यादुग्रगन्धोमहौषधम् । अरिष्टोम्लेच्छकन्दश्चयवनेष्टोर सोनकः ॥ तदाततोऽपतद्बिन्दुःसरसोनोऽभवद्भुवि । पञ्चभिश्चरसैर्युक्तोरसेनाम्लेनवर्जितः ॥ तस्माद्रसोनइत्युक्तोद्रव्याणांगुणवेदिभिः । कटुकश्चापिमूलेषुतिक्तपत्रेषुसंस्थितः ॥ नालेकषायउद्दिष्टोनालाग्रेलवणःस्मृतः । बीजेतुमधुरःप्रोक्तोरसस्तद्गुणवेदिभिः॥ रसोनोबृंहणोवृष्यःस्निग्धोष्णःपाचनःसरः । रसेपाकेचकटुकस्तीक्ष्णोमधुरकोमतः ॥ बलवर्णकरोमेधाहितोनेत्र्योरसायनः । हृद्रोगजीर्णज्वरकुक्षिशूलविबन्धगुल्मारुचिकासशोफान् ॥ दुर्नामकुष्ठानलसादजन्तुसमीरणश्वासकफांश्चहन्ति । मद्यंमांसंतथाम्लञ्चहितंलशुनसेविनाम् ॥ व्यायाममातपंरोषमतिनीरंपयोगुडम् । रसोनमश्नन्पुरुषस्त्यजेदेतान्निरन्तरम् ॥ १६८ ॥

लहसन के नाम उत्पत्ति और गुण ॥

लसुन, रसोन, उग्रगन्ध, महौषधि, अरिष्ट, म्लेच्छकन्द, यवनेष्ट और रसोनक यह लहसनके नामहैं, जिस समय गरुडजीने इंद्रसे अमृत छीनलिया था उस समय उस अमृतसे एक बूंद पृथ्वी पर गिरपड़ी उसी से लहसन उत्पन्नहुआहै, लहसनमें अम्लरस के बिना सब रस होतेहैं इसी से इसका नाम रसोनहै, लहसनकी जड़में कटु पत्रमें तिक्त, नाल में कषाय, नालके अग्रभागमें लवण और बीजमें मधुररस होताहै, यह उसके रसज्ञ लोगोंने कहाहै, लहसन, धातु वर्द्धक, वीर्य्य वर्द्धक, स्निग्ध, उष्ण, पाचक,सारक, कटु मधुर रसयुक्त, विपाकमें कटु,तीक्ष्ण, टूटेको जोड़नेवाला गलेका शुद्धकरने वाला, कंठको हित, भारी, रक्त पित्त वर्द्धक, बलकारी, वर्णको उत्तम करनेवाला मेधाको हित, नेत्रोंको हित, रसायन और हृदय के रोग, जीर्णज्वर, कुक्षिकी पीड़ा विबन्ध, गुल्म अरुचि, खांसी, सूजन, बवासीर, कुष्ठ, आमदोष,मंदाग्नि, कृमि, वात श्वास तथा कफ नाशक होताहै, लहसन खानेवाले पुरुषको मद्य, मांस, तथा खट्टी वस्तु हितहै और व्यायाम, धूप, क्रोध बहुत जलपान, दुग्ध और गुड़ यह संपूर्ण निरन्तर त्याग करने के योग्य हैं ॥ १६८ ॥

अथपिआज ॥

पलाण्डुर्यवनेष्टश्चदुर्गन्धोमुखदूषकः । पलाण्डुस्तुगुणैर्ज्ञेयोरसोनसदृशोगुणैः ॥ स्वादुपाकेरसोऽनुष्णःकफकृन्नातिपित्तलः। हरतेकेवलंवातंबलवीर्य्यकरोगुरुः ॥ १६९ ॥

प्याजके नाम और गुण ॥

पलांडु, यवनेष्ट, दुर्गन्ध और मुखदूषक यह प्याज के नामहैं, प्याजमें लहसनके समान गुण हैं और विशेषता यहहै कि प्याज रस तथा पाक में मधुर, शीतल, कफकृत कुछ पित्तकारक, केवल वात नाशक बल वीर्य्य वर्द्धक और भारी होतीहै ॥ १६९ ॥

अथभेला ॥

भल्लातकंत्रिपुप्रोक्तमरुष्कोऽरुष्करोऽग्निकः । तथैवाग्निमुखीभल्लीवीरवृक्षश्चशोफकृत् ॥ भल्लातकफलंपक्वंस्वादुपाकरसंलघु । कषायंपाचनंस्निग्धंतीक्ष्णोष्णं

च्छेदिभेदनम् ॥ मेध्यंवह्निकरंहन्तिकफवातव्रणोदरम्। कुष्ठार्शोग्रहणीगुल्मशोफानाहज्व रकृमीन् ॥ तन्मज्जामधुरोवृष्योबृंहणोवातपित्तहा ।वृन्तमारुष्करंस्वादुपित्तघ्नंकेश्यमग्नि कृत् ॥ भल्लातकःकषायोष्णःशुक्रलोमधुरोलघुः। वातश्लेष्मोदरानाहकुष्ठार्शोग्रहणीग दान् ॥ हन्तिगुल्मज्वरश्वित्रवह्निमांद्यकृमिव्रणाम् ॥१७०॥

भिलावेके नाम और गुण ॥

भल्लातक शब्द त्रिलिंगी है, अरुष्क, अरुष्कर, अग्निक, अग्निमुखी, भल्ली, वीरवृक्ष और शोफ कृत्, यह भिलावेके नामहैं, भिलावेका पक्काफल मधुर कषाय रसयुक्त पाकमें मधुर, हलका, पाचक स्निग्ध, तीक्ष्ण, उष्ण, छेदक, भेदक, मेधाको हित, अग्निकारक और कफ, वात, घाव, उदर, कुष्ठ बवासीर, ग्रहणी, गुल्म, सूजन, आनाह, ज्वर तथा कृमि नाशक होताहै, उसकी मींगी मधुर वीर्य्य वर्द्धक, धातु वर्द्धक, और वाततथा पित्त नाशक होता है, गोलभिलावा मधुर, पित्तनाशक, केशों को हित और अग्नि वर्द्धकहोता है, भिलावा, कषाय मधुर रसयुक्त, उष्ण, वीर्य वर्द्धक, हलका और वातकफ उदर, आनाह, कुष्ठ, बवासीर, ग्रहणी, गुल्म, ज्वर, श्वित्र, मंदाग्नि, कृमि, तथाघाव नाशक होता है, ॥ १७० ॥

अथभंगा ॥

भंगागञ्जामातुलानीमादिनीविजयाजया ॥ भंगाकफहरीतिक्ताग्राहणीपाचनीलघुः। तीक्ष्णोष्णापित्तलामोहमन्दवाग्वह्निवर्द्धिनी ॥ १७१ ॥

भांगके नाम और गुण ॥

भंगा, गंजा, मातुलानी, मादिनी, विजया और जया- यह भंगके नाम हैं. भंग, कफनाशक, तिक्त ग्राही, पाचक, हलकी, तीक्ष्ण, उष्ण, पित्तवर्द्धक, मोह तथा मदकारक और वाक्य तथा अग्नि की भी बढ़ाने वाली होती है ॥ १७१ ॥

अथपोस्ता ॥

तिलभेदःखसतिलःखाखसश्चापिसस्मृतः । स्यात्खाखसफलोद्भूतंवल्कलंशीतलं लघु ॥ ग्राहितिक्तंकषायञ्चवातकृत्कफकासहृत्।धातूनांशोषकंरूक्षंमदकृद्वाग्विवर्द्धनम्। मुहुर्मोहकररुच्यंसेवनात्पुंस्त्वनाशनम् ॥ १७२ ॥

पोस्तके नाम और गुण॥

तिल भेद, खसतिल और खाखस यह पोस्ते के नाम हैं पोस्ते का वक्कल, शीतल, हलका, ग्राही तिक्त कषाय रसयुक्त, वात वर्द्धक, कफ तथा खांसी नाशक, धातुओं का सुखाने वाला, रूखा, मल- कारक, वाक्य वर्द्धक, वारंवार मोह करने वाला, रुचिकारक और अधिक सेवन करने से पुरुषार्थका नाशक होता है ॥ १७२॥

अथअफीम ॥

उक्तंखसफलक्षीरमाफूकमहिफेनकम् । आफूकंशोषणंग्राहिश्लेष्मघ्नंवातपित्तलम् ॥ तथाखसफलोद्भूतवल्कलप्रायमित्यपि ॥ १७३ ॥

अफीम के नाम और गुण ॥

पोस्त फल के दूधको अफूक और अहिफेण कहते हैं, अफीम सुखाने वाली, ग्राही, कफनाशक वात पित्त वर्द्धक और प्रायः पोस्तके वल्कलके ही समान इसमें गुण होते हैं ॥ १७३ ॥

अथ खाखसदान ॥

उच्यन्तेखसबीजानि तेखाखसतिलाअपि । खसबीजानिबल्यानि वृष्याणिसुगुरूणि च ॥ जनयन्तिकफंतानि शमयन्तिसमीरणम् ॥ १७४ ॥

खसखस के नाम और गुण ॥

खसबीज और खाखस तिल, यह खसखस के नाम हैं, खसखस बलकारक, वीर्य वर्द्धक, बहुत भारी, कफ कारक और बात नाशक होती है ॥ १७४ ॥

अथ सैन्धव ॥

सैन्धवोऽस्त्रीशीतशिवं माणिमंथञ्चसिंधुजम् । सैन्धवंलवणंस्वादुदीपनंपाचनंलघु॥ स्निग्धंरुच्यंहिमंवृष्यं सूक्ष्मंनेत्र्यंत्रिदोषहृत् ॥ १७५ ॥

सेंधो नोन के नाम और गुण ॥

सैंधव शब्द पुँल्लिङ्ग और नपुंसक लिंग, शीत, शिव माणिमन्थ और सिन्धुज यह सेंधो नोनके नाम हैं, सेंधानोन, लवण मधुर रसयुक्त, दीपन, पाचक,हलका, स्निग्ध, रुचिकारक, शीतल, वीर्य वर्द्धक सूक्ष्म. नेत्र हित और त्रिदोष नाशक होता है ॥ १७५ ॥

अथ शाकम्भरि ॥

शाकम्भरीयंकथितं गुडाख्यंरोमकन्तथा । गुडाख्यंलघुवातघ्नमत्युष्णंभेदिपित्तलम् ॥ तीक्ष्णोष्णञ्चापिसूक्ष्मञ्चा भिष्यन्दिकटुपाकिच ॥ १७६ ॥

सांभर नोनके नाम और गुण

शाकंभरीय, गुड़ाख्य और रोमक, यह सांभर नोनके नामहैं, सांभर नोन, हलका, वात नाशक अति उष्ण, भेदक, पित्तवर्द्धक, तीक्ष्ण, उष्ण, सूक्ष्म, अभिष्यंदी और विपाकमें कटुहोताहै ॥ १७६॥

अथ पांगा ॥

सामुद्रंयत्तुलवणमक्षारंवशरञ्चतत् । सामुद्रजंसागरजं लवणोदधिसम्भवम् ॥ सामुद्रंमधुरम्पाके सतिक्तंमधुरंगुरु । नात्युष्णंदीपनंभेदि सक्षारमविदाहिच ॥ श्लेष्मलंवातनुत्तिक्त मरूक्षंनातिशीतलम् ॥ १७७ ॥

पांगानोन के नाम और गुण ॥

सामुद्र लवण, अक्षार, व शर, सागरज और उदधि संभव यह पांगा नोनके नामहैं, पांगा नोन पाक में मधुर, तिक्त, मधुर रसयुक्त, भारी, मंदोष्ण, दीपन, भेदक, क्षारयुक्त, विदाह रहित, कफ कारक, वात नाशक, तीक्ष्ण, रुक्षता रहित और कुछ शीतल होताहै ॥ १७७॥

अथ विरिआसोचर इति ॥

विडम्पाकञ्चकतकं तथाद्राविड़मासुरम् । विडंसक्षारमूर्द्धाधः कफवातानुलोमनम् ॥

(ऊर्द्ध्वंकफमधोवातं सञ्चारयेदित्यर्थः)दीपनंलघुतीक्ष्णोष्णं रूक्षंरुच्यंव्यवायिच । विवन्धानाहविष्टम्भ हृद्रुग्गौरवशूलनुत् ॥ १७८ ॥

विड़नौनके नाम और गुण ॥

विड़, पाक, कतक, द्राविड़ और आसुर, यह विड़ नौन के नामहैं, विड़नोन, क्षारयुक्त कफ को ऊपर तथा वातको नीचे लेजाने वाला, दीपन, हलका, तीक्ष्ण, उष्ण, रूखा, रुचिकारक, विश्राई और विबन्ध, आनाह, विष्टंभ, हृदय के रोग, भारीपन तथा शूलका नाशक होताहै ॥ १७८ ॥

अथ चोंहारकीड़ा इतिच ॥

सौवर्च्चलंस्याद्रुचकमन्धपाकञ्चतन्मतम् । रुचकंरोचनम्भेदीदीपनम्पाचनम्परम् ॥ सुस्नेहंवातनुन्नाति पित्तकंविशदंलघु । उद्गारशुद्धिदंसूक्ष्मं विबंधानाहशूलजित् ॥१७९॥

काले नौन के नाम और गुण ॥

सौवर्चल, रुचक, अन्ध और पाक यह काले नौनके नामहैं, कालानोन रुचिकारक, भेदक, अग्नि दीपक, अत्यन्त पाचक, स्निग्ध, वात नाशक, कुछ पित्तवर्द्धक, विशद, लघु, डकारका शुद्धकरनेवाला सूक्ष्म और विबन्ध, आनाह तथा शूल का नाशक होताहै ॥ १७९ ॥

रेहगहगया प्रभृति ॥

औद्भिदम्पांशुलवण वज्जातंभूमितःस्वयम् । क्षारंगुरुकटुस्निग्धं शीतलंवातनाशनम् ॥ १८० ॥

कचनौन के नाम और गुण ॥

पांशुनौन पृथ्वीसे आप उत्पन्न होताहै इसको उद्भिज कहते हैं, कचनौन क्षारयुक्त, भारी, कटु स्निग्ध, शीतल, और वात नाशक होताहै ॥ १८० ॥

अथ चणकलोनी ॥

चणकाम्लकमत्युष्णंदीपनंदन्तहर्षणम्।लवणाम्लरसंरुच्यंशूलाजीर्णविबंधनुत् ॥१८१॥

चने के खारके नाम और गुण ॥

चनेके खारको चणकाम्लक कहते हैं, चनेका खार अत्यन्त उष्ण, दीपन, दांतोंको ऐंठने वाला लवण रसयुक्त, खट्टा, रुचिकारक और शूल, अजीर्ण तथा विबन्ध नाशक होताहै ॥ १८१ ॥

अथ यवक्षारःसाजीसोरा ॥

पाकाःक्षारोयवक्षारो यावशूकोयवाग्रजः । स्वर्जिकापिस्मृतःक्षारः कापोतःसुखवर्चकः ॥ कथितःस्वर्जिकाभेदो विशेषज्ञोसुवर्चिकः । यवक्षारोलघुःस्निग्धः सुसूक्ष्मोवह्निदीपनः ॥ निहन्तिशूलवाताम श्लेष्मश्वासगलामयान् । पाण्ड्वर्शोग्रहणीगुल्मा नाहप्लीहहृदामयान् ॥ स्वर्जिकाल्पगुणातस्मा द्विशेषाद्गुल्मशूलहृत् । सुवर्चिकास्वर्जिकावद्बोद्धव्यागुणतोजनैः ॥ १८२ ॥

जवाखार सज्जी और सोरेके नाम गुण ॥

पाक, क्षार, यवक्षार, यावशूक और यवाग्रज यह जवाखारके नामहैं, क्षार, कापोत, सुखवर्चक

और स्वर्जिका यह सज्जी के नाम हैं सुवर्चिका अर्थात् शोरा यह भी सज्जीका भेद पंडितों ने कहा है, जवाखार हलका, स्निग्ध, अत्यन्त सूक्ष्म,अग्नि दीपक और शूल,वात, आम दोप, कफ, श्वास गलेके रोग, पाडु,बवासीर ग्रहणी गुल्म, आनाह, प्लीहा और हृदय के रोगोंका नाशक होताहै, सज्जी जवाखारकी अपेक्षा गुणोंमें कुछ न्यून होतीहै और यह विशेपकरके गुल्म और शूलको नाश करतीहै और शोरेमें भी सज्जीके समान गुण जानने चाहिये ॥ १८२ ॥

अथ सोहागा ॥

सौभाग्यंटङ्कणंक्षारोधातुद्रावकमुच्यतेटङ्कणंवह्निकृद्रूक्षंकफहृद्वातपित्तकृत्॥१८३॥

सुहागेके नाम और गुण ॥

सौभाग्य, टंकण भार और धातु द्रावक येसुहागाके नामहे सुहागा अग्निवर्द्धक,रूखा, कफ नाशक और वात पित्त वर्द्धक होताहै ॥ १८३ ॥

अथ क्षारद्वयं क्षारत्रयम् ॥

स्वर्जिकायावशूकश्च क्षारद्वयमुदाहृतम् । टङ्कणेनसुतंतत्तु क्षारत्रयमुदीरितम् ॥ मिलितस्तूक्तगुणवद्विशेषाद्गुल्महृत्परम् ॥ १८४ ॥

क्षारद्वयके नामऔरगुण ॥

सज्जी और जवाखार इनदोनोंको क्षारद्वयकहते हैं, और इसी क्षारद्वयके साथ सुहागा मिलानेसे क्षारत्रयकहाताहैयहसवमिलेहुएउक्तगुणोंकोकरतेहैंपरन्तुगुल्म रोगकोविशेपकरकेनाशकरतेहैं॥१८४॥

क्षाराष्टकं ॥

पलाशवज्रीशिखरि चिञ्चार्कतिलनालजाः । यवजःस्वर्जिकाचेति क्षाराष्टकमुदाहृतम् ॥ क्षाराएतेऽग्निनातुल्या गुल्मशूलहराभृशम् ॥ १८५ ॥

क्षाराष्टकके नाम औरगुण ॥

पलाश, थूहर, ओंगा, इमली, आक, तिलकीडंडी, जवाखार और सज्जीखार, यह क्षाराष्टक कहाताहै, क्षाराष्टक अग्निके सदृशहोताहै और गुल्म तथा शूलकेनाशकरनेमें अत्यन्तश्रेष्ठहै १८५॥

अथ चूकम् ॥

चुक्रंसहस्रवेधिस्याद्रसाम्लंशुक्तमित्यपि । चुक्रमत्यम्लमुष्णञ्च दीपनंपाचनंपरम् ॥ शूलगुल्मविबन्धाम वातश्लेष्महरंसरम् । कृमितृष्णास्यवैरस्य हृत्पीडावह्निमान्द्यहृत् ॥ १८६ ॥

इतिश्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमिश्रभावविरचितेभावप्रकाशे
हरीतक्यादिवर्गः ॥

चूककेनाम औरगुण ॥

चुक्र, सहस्रवेधि रसाम्ल, और शुक्त यह चूकके नामहैं, चूक बहुतखट्टा, उष्ण, दीपन, अत्यन्त

पाचक, सारक और शूलगुल्म, विबन्ध, आमदोष वातकफ छर्दि, तृषा, मुखकी विरसता, हृदयके रोग तथा मन्दाग्निका नाशक होताहै ॥ १८६ ॥

इतिश्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमिश्रभावविरचितभावप्रकाशस्यभाषानुवादेहरीतक्यादिवर्गः ॥

अथ कर्पूरादिवर्गः (तत्रादौकर्पूरस्य नामगुणाश्च) ॥

पुंसिक्लीबेचकर्पूरःसिताभ्रोहिमवालुकः । घनसारश्चन्द्रसंज्ञः हिमनामापिसस्मृतः ॥ कर्पूरःशीतलोवृष्यश्चक्षुष्योलेखनोलघुः । सुरभिर्मधुरास्तिक्तः कफपित्तविषापहः ॥ दाहतृष्णास्यवैरस्य मेदोदौर्गन्ध्यनाशनः । कर्पूरोद्विविधःप्रोक्तः पक्वापक्वप्रभेदतः ॥ पक्वात्कर्पूरतःप्राहुर पक्वंगुणवत्तरम् ॥ १ ॥

अथकर्पूरादिवर्गः । कपूरके नामऔरगुण ॥

कर्पूर शब्द पुल्लिङ्ग और नपुंसक लिंगहै सिताभ्र, हिमवालुक, घनसार, चन्द्र और हिमयह कपूरके नामहैं, कपूर, शीतल, वीर्य्य वर्द्धक, नेत्रोंकोहित, लेखन, हलका, सुगन्धियुक्त, मधुर तिक्तरस युक्त और कफ पित्त, विष, दाह, तृषा, मुखकी विरसता, मेदरोग तथा दुर्गन्धि नाशक होताहै, कपूरकच्चा तथा पक्काइन दोप्रकारोंका होताहै, पक्केकपूरकी अपेक्षा कच्चाकपूर अधिक गुणकारी होताहै ॥ १ ॥

अथ चिनीआ कर्पूरः ॥

चीनाकसंज्ञःकर्पूरः कफक्षयकरःस्मृतः । कुष्ठकंडूवमिहरस्तथातिक्तरसश्चसः ॥ २ ॥

चीनियांकपूरके गुण ॥

चीनाक नाम कपूर, कफ नाशक, तिक्त और खुजली तथा छर्दिनाशक होता है ॥ २ ॥

अथ कस्तूरी ॥

मृगनाभिर्मृगमदः कथितस्तुसहस्रभित् । कस्तूरिकाचकस्तूरी वेधमुख्याचसास्मृता ॥ काश्मरीकपिलच्छायाकस्तूरीत्रिविधास्मृता । कामरूपोद्भवाश्रेष्ठानेपालीमध्यमा भवेत् ॥ कामरूपोद्भवाकृष्णानैपालीनीलवर्णयुक्। काश्मीरदेशसम्भूता कस्तूरीह्यधमा मता ॥ कस्तूरिकाकटुस्तिक्ता क्षारोष्णाशुक्रलागुरुः । कफवातविषच्छर्दि शीतदौर्गन्ध्य शोषहृत् ॥ ३ ॥

कस्तूरीकेनाम औरगुण ॥

मृगनाभि, मृगमद, सहस्रभित्, कस्तूरिका, कस्तूरी, और वेदमुख्या, यह कस्तूरीके नामहैं, कामरूपदेशमें उत्पन्न हुई कस्तूरी कृष्णवर्ण तथा उत्तम होती है, नैपाल देशमें उत्पन्न हुई नीलवर्ण तथा मध्यम होती है और कश्मीर देशमें उत्पन्न हुई कस्तूरी कुछ कपिल वर्णतथा निकृष्ट होतीहै इस प्रकार कस्तूरीके तीन भेद होते हैं, कस्तूरी कटुतिक्त रसयुक्त, क्षार, उष्ण, वीर्यवर्द्धक, भारी और कफ, वात, विष, छर्दि, शीत, दुर्गन्धि तथा शोषरोगकी नाशक होतीहै ॥ ३ ॥

अथमुकदाना ॥

लताकस्तूरिकातिक्तास्वाद्वीवृष्याहिमालघुः । चक्षुष्याच्छेदिनीश्लेष्मतृष्णावस्त्यास्यरोगहृत् ॥ ४ ॥

लताकस्तूरीके गुण ॥

लताकस्तूरी (वेदमुश्क) तिक्त मधुर रसयुक्त, वीर्य्यवर्द्धक शीतल, हलकी, नेत्रोंकोहित, छेदक और कफ, तृषामूत्राशयके रोग तथा मुखरोग नाशक होतीहै ॥ ४ ॥

अथगौरासाखभेदश्राण्डीइतिलोके ॥

गन्धमार्ज्जारवीर्य्यन्तुवीर्य्यकृत्कफवातहृत् । कण्डुकुष्ठहरंनेत्र्यंसुगन्धंस्वेदगन्धनुत् ॥ ५ ॥

आंडी (मुश्कविलाई) के गुण ॥

आंडीको गन्ध मार्जार बीज कहते हैं यह वीर्य वर्द्धक नेत्रोंकोहित, सुगन्धि युक्त और कफ वात खुजली कुष्ठ, तथापसीनेकी दुर्गन्धि नाशक होती है ॥ ५ ॥

अथचन्दनः ॥

श्रीखण्डंचन्दनंनस्त्रीभद्रःश्रीस्तैलपर्णिकःगन्धसारोमलयजस्तथाचन्द्रद्युतिश्चसः ॥ स्वादेतिक्तंकपेपीतंच्छेदेरक्तंतनौसितम् । ग्रन्थिकोटरसंयुक्तंचन्दनंश्रेष्ठमुच्यते ॥ चन्दनंशीतलंरूक्षंतिक्तमाह्लादनंलघु । श्रमशोषविषश्लेष्मतृष्णापित्तास्रदाहनुत् ॥ ६ ॥

श्वेत चन्दन के नाम और गुण ॥

श्रीखण्ड,चन्दन शब्द पुल्लिंग और नपुंसकलिंग है भद्र श्रीतैल पर्णिक गन्धसार मलयज औरचन्द्र द्युति यह चन्दनके नामहैं स्वादुमें तिक्त रगड़ने से पीला काटने से लाल ऊपर देखने में श्वेत वर्ण और गांठ तथा गढ्ढोंसे युक्त चन्दन श्रेष्ठ होताहै चन्दन शीतल रूखा तिक्त प्रसन्न करनेवाला हलका और श्रम, शोष, विष, कफ, तृषा, पित्त, रक्तदोष तथा दाह नाशक होताहै ॥ ६ ॥

अथपीतचन्दनम् ॥

कलम्बकइतिलोके । कालीयकन्तुकालीयंपीताभंहरिचन्दनम्॥हरिप्रियंकालसारंतथाकालानुसार्य्यकम् । कालीयकंरक्तगुणंविशेषाद्व्यंगनाशनम् ॥ ७ ॥

पीत चन्दन अर्थात् कलंबकके नाम और गुण ॥

- कालीयक कालीय पीताभ हरिचन्दन हरिप्रिय कालसार और कालानुसार्य्यक यह पीतचन्दन के नामहैं पीतचन्दन गुणोंमें रक्तचन्दन के समानहै और विशेष करके मुखकी झाईं को दूर करताहै॥७॥

अथ रक्तचन्दनम् ॥

रक्तचन्दनमाख्यातं रक्तांगंक्षुद्रचन्दनम् । तिलपर्णरक्तसारं तत्प्रवालफलंस्मृतम् ॥ रक्तंशीतंगुरुस्वादुछर्दितृष्णास्रपित्तहृत् । तिक्तंनेत्रहितंवृष्यंज्वरव्रणविषापहम् ॥ ८ ॥

रक्तचन्दन के नाम और गुण ॥

रक्तचन्दन रक्तांग क्षुद्रचन्दन तिलपर्ण,रक्तसार और प्रवाल फल यहरक्तचन्दन के नाम हैं लाल

चन्दन शीतल भारी- मधुरतिक्त रसयुक्त नेत्रों को हित वीर्य्यवर्द्धक और छर्दि तृपा रक्तपित्त ज्वर व्रण तथा विषका नाशक होताहै ॥ ८ ॥

अथ वक्रम् ॥

पतंगंरक्तसारञ्चसुरंगंरञ्जनंतथा। पट्टरञ्जकमाख्यातंपत्तूरञ्चकुचन्दनम् ॥ पतंगंमधुरंशीतंपित्तश्लेष्मव्रणास्रनुत्। हरिचंदनवद्वेद्यंविशेषाद्दाहनाशनम् ॥ चन्दनानितुसर्वाणिसदृशानिरसादिभिः। गन्धेनतुविशेषोऽस्तिपूर्वःश्रेष्ठतमोगुणैः ॥ ९ ॥

पतंगके नाम और गुण ॥

पतंग, रक्तसार सुरंग रंजन पट्ट रंजक पत्तूर और कुचन्दन यह पतंगकेनाम हैं पतंग मधुर शीतल और पित्तकफ घाव तथा रुधिर नाशक होताहै यह गुणोंमें हरिचन्दन के समानहै और विशेष करके दाह नाशक है सब प्रकार के चंदन रसादिकों में तुल्य हैं केवल गन्ध में भेद है इनमें क्रम पूर्व्वक एक से दूसरा गुणों में श्रेष्ठहै ॥ ९ ॥

अथअगरु कृष्णागुरु अगुरुसत ॥

अगुरुप्रवरंलोहंराजार्हंयोगजंतथा। वंशिकंकृमिजंवापिकृमिजग्धमनार्यकम् ॥ अगुरूष्णंकटुत्वच्यंतिक्तंतीक्ष्णञ्चपित्तलम्। लघुकर्णाक्षिरोगघ्नंशीतवातकफप्रणुत् ॥ कृष्णंगुणाधिकंतत्तुलोहवद्वारिमज्जति। अगुरुप्रभवःस्नेहःकृष्णागुरुसमःस्मृतः ॥ १० ॥

अगर और काले अगरके नाम गुण ॥

अगुरु प्रवर लोह राजार्ह योगज वंशिक कृमिज कृमिजग्ध और अनार्यक यह अगरके नाम हैं अगर उष्ण कटु तिक्त रसयुक्त त्वचा कोहित तीक्ष्ण पित्तवर्द्धक हलका और कर्ण रोग नेत्ररोग शीत वात तथा कफ नाशक होताहै इसमें से काला अगर गुणोंमें अधिक है यह पानी में डालने से लोहे के समान डूबजाताहै अगर का तेलभी काले अगर के समान गुणकारी होताहै ॥ १० ॥

अथदेवदारुः ॥

देवदारुस्मृतंदारुभद्रंदार्व्विन्द्रदारुच। मस्तदारुद्रुकिलिमंकिलिसंसुरभूरुहः ॥ देवदारुलघुस्निग्धंतिक्तोष्णंकटुपाकिच। विबन्धाध्मानशोथामतन्द्राहिक्काज्वरास्रजित् ॥ प्रमेहपीनसश्लेष्मकासकण्डूसमीरनुत् ॥ ११ ॥

देवदारुके नाम और गुण ॥

देवदारु दारुभद्र दारु इन्द्रदारु मस्तदारु द्रुकिलिम किलिस और सुरभूरुह यह देवदारु के नाम हैं देवदारु हलका स्निग्ध तिक्त उष्ण पाक में कटु और बिवन्ध आध्मान सूजन आमदोष तन्द्रा हिचकी ज्वर रक्तदोष प्रमेह, पीनस, कफ, खांसी, खुजली तथा वात का नाशक होताहै ॥ ११ ॥

अथधूपसरलः ॥

सरलःपीतवृक्षःस्यात्तथासुरभिदारुकः। सरसोमधुरस्तिक्तोकटुपाकरसोलघुः ॥ स्निग्धोष्णःकर्णकण्ठाक्षिरोगरक्षोहरःस्मृतः। कफानिलस्वेददाहकासमूर्च्छाव्रणापहः ॥ १२ ॥

सरलअर्थात् एक प्रकार के देवदारुके नाम और गुण ॥

सरल, पीत वृक्ष और सुरभिदारु यह सरलकेनामहैं सरल मधुर तिक्त और कटुरस युक्त पाकमें कटु हलका स्निग्ध उष्ण और कर्णरोग कंठरोग नेत्ररोग राक्षसोंकी पीड़ा कफ बात स्वेद दाह खांसी मूर्च्छा तथा घावका नाशकहोताहै ॥ १२ ॥

अथतगरं ॥

कालानुसार्य्यंतगरंकुटिलंमधुपंनतम्।अपरंपिण्डतगरंदण्डहस्तीचबर्हिणम् ॥ तगरद्वयमुष्णंस्यात्स्वादुस्निग्धंलघुस्मृतम्। विषापस्मारशूलाक्षिरोगदोषत्रयापहम्॥ १३॥

तगरके नाम और गुण ॥

कालानुसार्य्य तगर कुटिल मधुप औरनत यहतगर के नामहैं और दूसरे प्रकारके तगरको पिंडतगर दण्ड हस्ती और बर्हिण कहतेहैं यह दोनोंप्रकारके तगर उष्ण मधुर स्निग्ध लघु और विष मृगी शूल नेत्र रोग तथा त्रिदोष नाशक होतेहैं ॥ १३ ॥

अथपद्माकं ॥

पद्मकंपद्मगन्धिस्यात्तथापद्माह्वयंस्मृतम् । पद्मकन्तुपरन्तिक्तंशीतलंवातलंलघु ॥ वीसर्पदाहविस्फोटकुष्ठश्लेष्मास्रपित्तनुत्।गर्भसंस्थापनंरुच्यंवमिव्रणतृषाप्रणुत्॥ १४॥

पद्माक के नाम और गुण ॥

पद्मक, पद्मगंधि और पद्म यह पद्माक के नामहैं, पद्माक कषाय तिक्त रसयुक्त, शीतल, वात वर्द्धक, हलका, गर्भका स्थापन करनेवाला, रुचिकारक और विसर्प,दाह,विस्फोट, कुष्ठ, कफ, रक्तदोष पित्त, छर्दि, घाव, तथा तृषाका नाशक होताहै ॥ १४ ॥

अथगुग्गुलुः ॥

गुग्गुलुर्देवधूपश्चजटायुःकौशिकःपुरः। कुम्भोलूखलकंक्षीवेमहीपाक्षः पलङ्कषः॥ महिषाक्षोमहानीलःकुमुदःपद्मइत्यपि। हिरण्यःपञ्चमोज्ञेयोगुग्गुलोःपञ्चजातयः ॥ भृङ्गाञ्जनसवर्णस्तुमहिषाक्षइतिस्मृतः। महानीलस्तुविज्ञेयःस्वनामसमलक्षणः ॥ कुमुदःकुमुदाभःस्यात्पद्मोमाणिक्यसन्निभः। हिरण्याक्षस्तुहेमाभःपञ्चानांलिंगमीरितम् ॥ महिषाक्षो महानीलोगजेन्द्राणांहितावुभौ। हयानांकुमुदःपद्मःस्वस्त्यारोग्यकरौपरौ ॥ विशेषेणमनुष्याणांकनकःपरिकीर्तितः। कदाचिन्महिषाक्षश्चयतःकैश्चिन्नृणामपि॥गुग्गुलुर्विशदस्तिक्तोवीर्य्योष्णःपित्तलःसरः । कषायःकटुकःपाकेकटूरूक्षोलघु परः ॥ भग्नसन्धानकृद्वृष्यःसूक्ष्मःस्वर्योरसायनः। दीपनःपिच्छिलोबल्यःकफवातव्रणापचीः॥ मेदोमेहाश्मवातांश्चक्लेदकुष्ठाममारुतान्।पिडिकाग्रन्थिशोफार्शोगण्डमालाकृमीन्जयेत्॥ माधुर्य्याच्छमयेद्वातंकषायत्वाच्चपित्तहा। तिक्तत्वात्कफजित्तेनगुग्गुलुःसर्व्वदोषहा॥ सनवोबृंहणोवृष्यःपुराणस्त्वतिलेखनः। स्निग्धःकाञ्चनसङ्काशःपक्वजम्बूफलोपमः॥नूतनोगुग्गुलुःप्रोक्तःसुगन्धिर्यस्तुपिच्छिलः। शुष्कोदुर्गन्धकश्चैवत्यक्तप्रकृतिवर्णकः ॥ पुराणःसतुविज्ञे

यःगुग्गुलुर्वीर्य्यवर्जितः। अम्लंतीक्ष्णमजीर्णञ्च व्यवायंश्रममातपम्॥ मद्यंरोषन्त्यजे तूसम्यग्गुणार्थीपुरसेवकः॥ १५॥

गूगल के नाम और गुण॥

गुग्गुल, देवधूप, जटायु, कौशिक, पुर, कुस्त, उलूखल, (यह शब्द नपुंसक लिंगहै) महिषाक्षि और पलंकष यह गुग्गुलके नामहैं महिषाक्ष, महानील, कुमुद, पद्म और हिरण्य, यह पांच गुग्गुलके भेदहैं, यह महिषाक्ष गूगल भोंरे तथा अंजनके समान रंगवाला होताहै महानील गूगल अत्यन्त नील वर्ण होता है, कुमुद नाम गूगल, कुमुद के समान कांतिवाला होताहै, पद्म नाम गूगल माणिक्य के समान होताहै, और हिरण्याक्ष गूगल सुवर्ण के समान कान्तिवाला होताहै यह पांचोंके लक्षण कहे गये हैं महिषाक्ष और महानील गूगल हाथियोंके लिये हितकारी होतेहैं, कुमुद और पद्म नाम गूगल घोड़ोंके लिये मंगलकारी और रोग नाशक होते हैं और हिरण्याक्ष गूगल मनुष्यों के लिये हितकारी है, कहीं २ महिषाक्ष गूगल भी मनुष्योंके प्रयोजन में आताहै, गूगल विशद, तिक्त, कटु कषाय रस युक्त, पाकमें कटु वीर्यमें उष्ण, पित्तवर्द्धक, दस्तावर, रूखा, अत्यन्त लघु टूटेको जोड़नेवाला, वीर्य बर्द्धक, सूक्ष्म, स्वरको हित, रसायन, दीपन, फिसलाहट वाला, बलकारी और कफ, वात, घाव अपची, मेद दोष, प्रमेह, पथरी, वात रोग, क्लेद, कुष्ठ, आमवात, पीड़िता, गंडमाला, ग्रंथि, सूजन बवासीर तथा कृमि का नाश करताहै, गूगल मधुरता से वातको, कषाय रस से पित्तको और तिक्त रससे कफ को नाश करता है इसप्रकार करके गूगल सर्वदोषों का नाशक है, नवीन गूगल मांस तथा वीर्य्य बर्द्धक होता है प्राचीन गूगल अत्यन्त कफकारक होता है, सुवर्ण के समान कान्ति युक्त पक्की जामन के समान वर्ण वाला, सुगन्धित और पिच्छिल गूगल नवीन कहलाता है, सूखा दुर्गन्धित युक्त, विकारीवर्ण वाला और वीर्य्य रहित गूगल पुराना जानना चाहिये- गुणों की प्राप्ति की इच्छासे गूगल का सेवन करनेवाला पुरुष खट्टी, तीक्ष्ण तथा अजीर्ण करने वाली वस्तु मैथुन परिश्रम, धूप, मद्य और क्रोधको अच्छे प्रकार से छोड़देवे॥ १५॥

अथसरलनिर्य्यासगुग्गुलुः॥

श्रीवासःसरलस्रावःश्रीवेष्टोवृक्षधूपकः। श्रीवासोमधुरस्तिक्तःस्निग्धोष्णस्तुवरःसरः॥
पित्तलोवातमूर्द्धाक्षिस्वररोगकफापहः। रक्षोघ्नःस्वेददौर्गन्ध्ययूकाकण्डूव्रणप्रणुत्॥१६॥

सरलनिर्यास (गंधाविरोजा) केनामऔर गुण॥

श्रीवास, सरलस्नाव, श्रीवेष्ट और वृक्षधूपक यहसरल निर्यासके नामहैं, सरल नियास मधुर तिक्त कषाय रसयुक्त, स्निग्ध, उष्ण, सरपित्तवर्द्धक और वात रोग, शिररोग, नेत्ररोग, स्वरभंग कफ, राक्षसोंकी पीड़ा, पसीनेकी दुर्गन्धि, जुआं, खुजली तथा व्रणका नाशक होताहै॥ १६॥

अथरालः॥

रालस्तुशालनिर्य्यासस्तथासर्ज्जरसःस्मृतः। देवधूपोयक्षधूपस्तथासर्वरसश्चसः॥
रालोहिमोगुरुस्तिक्तःकषायोग्राहकोहरेत्। दोषास्रस्वेदवीसर्पज्वरव्रणविपादिकाः॥
ग्रहभग्नाग्निदग्धाश्चशूलातीसारनाशनः॥ १७॥

रालकेनाम औरगुण ॥

राल सालनिर्यास सर्जरस, देवधूप, यक्षधूप और सर्वरस यह रालके नामहैं, राल शीतल, भारी, तिक्त कषाय रसयुक्त, ग्राही और वातादिक दोष, रुधिरके दोष, स्वेद वीसर्प, ज्वर, घाव, बिवांई ग्रहोंके दोष- भग्नरोग- अग्निदग्ध- शूल और अतीसार इनसबका नाशक है ॥ १७ ॥

॥ अथकुंदुरुसुगन्धद्रव्यशल्लकीनिर्य्यासः ॥

कन्दुरुस्तुमुकुन्दःस्यात्सुगन्धःकुन्दइत्यपि । कुन्दुरुर्मधुरस्तिक्तस्तीक्ष्णस्त्वच्यःकटुर्हरेत् ॥ ज्वरस्वेदग्रहालक्ष्मीमुखरोगकफाऽनिलान् ॥ १८ ॥

कुन्दुरएकप्रकार की सुगन्धितद्रव्य जो शल्लकीवृक्षका गोंदहै उसके नामगुण ॥

कुन्दुरु मुकुन्द सुगन्ध और कुन्द यह कुन्दुरुके नामहैं कुन्दुर मधुर तिक्त कटुरसयुक्त तीक्ष्ण त्वचा को हितकारी और ज्वर धूप ग्रहोंके दोष आलस्य मुखरोग कफ तथा वातका नाशक होताहै ॥ १८ ॥

अथशिलारसः ॥

सिह्लकस्तुतुरुष्कःस्याद्यतोयवनदेशजः । कपितैलंचसंख्यातस्तथाचकपिनामकः ॥ सिह्लकःकटुकःस्वादुःस्निग्धोष्णाशुक्रकान्तिकृत् । वृष्यःकण्ठ्यःस्वेदकुष्ठज्वरदाहग्रहापहः ॥ १९ ॥

शिलारस के नाम और गुण ॥

शिलारस यवन देशमें उत्पन्न होताहै इसीसे इसको तुरुष्क कहतेहैं सिह्लक कपि तैल और कपि यह शिलारसके नाम हैं शिलारस कटु मधर रसयुक्त स्निग्ध उष्ण वीर्य्यवर्द्धक कान्तिवर्द्धक पुष्ट गलेका शुद्ध करनेवाला और स्वेद कुष्ठ ज्वर दाह तथा ग्रहोंके दोषोंका दूर करनेवाला होताहै ॥१९॥

अथजायफल ॥

जातीफलंजातिकोशंमालतीफलइत्यपि । जातीफलंरसेतिक्तंतीक्ष्णोष्णंरोचनंलघु ॥ कटुकंदीपनंग्राहिस्वर्य्यंश्लेष्मानिलापहम् । निहन्तिमुखवैरस्यंमलदौर्गन्ध्यकृष्णताः ॥ कृमिकासवमिश्वासशोषपीनसहृद्रुजः ॥ २० ॥

जायफल के नाम और गुण ॥

जातीफल जातिकोश और मालती फल यह जायफलकेनामहैं जायफल तिक्तकटु रसयुक्त तीक्ष्ण उष्ण रुचिकारक हलका दीपन ग्राही स्वरकोहित और कफ वात मुखकी विरसता मलकी दुर्गन्धि तथा कृष्णता कृमि खांसी छर्दि श्वास शोष पीनस तथा हृदय के रोगोंका नाशक होताहै ॥ २० ॥

अथजावत्री ॥

जातीफलस्यत्वक्प्रोक्ताजातीपत्रीभिषग्वरैः । जातिपत्रीलघुःस्वादुःकटूष्णारुचिवर्णकृत् ॥ कफकासवमिश्वासतृष्णाकृमिविषापहा ॥ २१ ॥

जावित्रीके नाम और गुण ॥

वैद्यलोग जायफल की त्वचाको जातीपत्री कहतेहैं जावित्री हलकी मधुर कटु रसयुक्त उष्ण रुचिकारक वर्णको हित और कफखांसी छर्दि श्वास तृषा कृमि तथा विषनाशक होती है ॥ २१ ॥

अथलवंगः ॥

लवंगंदेवकुसुमंश्रीसंज्ञंश्रीप्रसूनकम् । लवंगंकटुकंतिक्तंलघुनेत्रहितंहिमम् ॥ दीपनंपाचनंरुच्यंकफपित्तास्रनाशकृत् । तृष्णांछर्दितथाध्मानंशूलमाशुविनाशयेत् ॥ कासंश्वासंचहिक्काञ्चक्षयंक्षपयतिध्रुवम् ॥ २२ ॥

लवङ्गके नाम और गुण ॥

लवंग देवकुसुम श्रीसंज्ञ और श्रीप्रसूनक यह लवंगके नामहैं लौंग कटु तिक्त रसयुक्त हलकी नेत्रोंकोहित शीतल दीपन पाचक रुचिकारक और कफ पित्तरक्तदोप तृपा छर्दि उदर आध्मान शूल खांसी श्वास हिचकी तथा क्षयरोग की नाशक होतीहै॥ २२ ॥

अथइलायचीपूरवी ॥

एलास्थूलाचबहुलापृथ्वीकात्रिपुटापिच । भद्रैलाबृहदेलाचइंद्रबालाचनिष्कुटिः ॥ स्थूलैलाकटुकापाकेरसेचानलकृल्लघुः । रूक्षोष्णाश्लेष्मपित्तास्रकण्डूश्वासतृषापहा ॥ हृल्लासविषवस्त्यास्यशिरोरुग्वमिकासनुत् ॥ २३ ॥

बड़ी इलायची के नाम और गुण ॥

एला,स्थूला,बहुला पृथ्वीका त्रिपुटा भद्रैला चन्द्रबाला बृहदेला और निष्कुटि यहबड़ी इलायची के नामहैं बड़ी इलायची रस तथा विपाक में कटु अग्निवर्द्धक हलकी रूखी उष्ण और कफ पित्त रक्तदोप खुजली,श्वास,तृपा,हल्लास (धुकधुकी) विषमूत्राशयके रोग,मुखरोग,शिरकेरोग, छर्दि तथा खांसीकी नाशक होतीहै ॥ १३ ॥

अथएलागुजराती ॥

सूक्ष्मोपकुञ्चिकातुच्छाकोरंगीद्राविडीत्रुटिः । एलासूक्ष्माकफश्वासकासार्शोमूत्रकृच्छ्रहृत् ॥ रसेतुकटुकाशीतालघ्वीवातहरीमता ॥ २४ ॥

छोटीइलायचीके नाम और गुण ॥

सूक्ष्मा,उपकुंचिका,तुच्छा,कोरंगी,द्राविडी और त्रुटि,यह छोटी इलायचीके नाम हैं छोटीइलायची कफ, श्वास,खांसी,बवासीर,मूत्रकृच्छ्र,तथा वात नाशक कटु,शीतल और लघु होतीहै ॥ २४ ॥

अथ तज ॥

त्वक्पत्रञ्चवरांगंस्याद्भृंगंचोदन्तथोत्कटम् । त्वचंलघूष्णंकटुकंस्वादुतिक्तञ्चरूक्षकम् ॥ पित्तलंकफवातघ्नं कण्ड्वामारुचिनाशनम् । हृद्वास्तिरोगवातार्शः कृमिपीनसशुक्रहृत् ॥ २५ ॥

तजकेनाम और गुण ॥

त्वक् पत्र,वरांग,भृंग और उत्कट,यहतजके नामहैं, तज, हलकी,उष्ण, कटु, मधुर तिक्त रसयुक्त रूखी, पित्तवर्द्धक और कफ वात खुजली आमदोप, अरुचि, मूत्राशयके रोग, वादी बवासीरकृमि पीनस तथा वीर्य्यनाशक होतीहै ॥ २५ ॥

दालचीनी ॥

त्वक्स्वादीतुतनुत्वक्स्यात्तथादारुसितामता । उक्तादारुसितास्वाद्वीतिक्ताचानिल पित्तहृत् ॥ सुरभिः शुक्रलावर्ण्यामुखशोषतृषापहा ॥ २६ ॥

दालचीनीके नाम और गुण ॥

त्वक्स्वाद्,तनुत्वक् और दारुसिता, यहदालचीनी के नामहैं, दालचीनी, मधुर तिक्तरस युक्त वात पित्तनाशक, सुगन्धित, वीर्य्यवर्द्धक,बलकारक मुखका सूखना तथा तृषा नाशक होतीहै॥२६॥

अथ पत्रकम् ॥

पत्रन्तमालपत्रञ्चतथास्यात्पत्रनामकम् । पत्रकंमधुरंकिञ्चित्तीक्ष्णोष्णंपिच्छिलं लघु ॥ निहन्तिकफवातार्शोहृल्लासारुचिपीनसान् ॥ २७ ॥

तेजपातके नाम और गुण ॥

पत्र, तमालपत्र और पत्रनामक, यहतेजपातके नामहैं, तेजपात. मधुर. कुछतीक्ष्ण, उष्ण,लस-दार हलका और कफ वात, ववासीर हृल्लास (मतली) अरुचि तथापीनसकानाशक होताहै॥२७॥

अथ नागकेशरः ।

नागपुष्पःस्मृतोनागःकेशरोनागकेशरः । चाम्पेयोनागकिञ्जल्कः कथितःकाञ्चनाह्वयः ॥ अयंपुष्पेतुक्लीवे नागपुष्पंकषायोष्णंरूक्षंलघ्वामपाचनम् । ज्वरकण्डूतृषास्वेदच्छर्दिहृल्लासनाशनम् ॥ दौर्गन्ध्यकुष्ठवीसर्पकफपित्तविषापहम् ॥ २८॥

नागकेशर के नाम और गुण ॥

नागपुष्प, नाग,केशर,नागकेशर,चांपेय, नागकिंजल्क और कांचनाह्वय, यहनागकेशर के नामहैं, यहशब्द जबनपुंसक लिंगमें व्यवहार कियेजातेहैं तबपुष्पवाची होते हैं, नागकेशर कषाय, उष्ण रूखी, हलकी, आमकी पचानेवाली और ज्वर, खुजली, तृषा, स्वेद, छर्दि, मतली, दुर्गन्धि, कुष्ठ, वीसर्प, कफ, पित्त तथा विषनाशक होतीहै ॥ २८ ॥

अथ त्रिजातचातुर्जातके ॥

त्वगेलापत्रकैस्तुल्यैस्त्रिसुगन्धित्रिजातकम् । नागकेशरसंयुक्तं चातुर्जातकमुच्यते ॥ तद्द्वयंरेचनंरूक्षंतीक्ष्णोष्णंमुखगन्धहृत्॥लघुपित्ताग्निकृद्वर्ण्यंकफवातविषापहम्॥२९॥

त्रिजात और चतुर्जातके लक्षण तथा गुण ॥

तज,इलायची और तेजपात यह समभाग एक में मिलाने से त्रिजात या त्रिसुगन्धकहलाता है और इन्हीं में नागकेशर मिलाने से चतुर्ज्जातक कहलाता है यहदोनों दस्तावर, रूखे, तीक्ष्ण, उष्ण, मुख की दुर्गन्धि नाशक हलके पित्तवर्द्धक, अग्निकारक वर्णको हित और कफवात तथा विषनाशक होतेहैं ॥ २९ ॥

अथ कुंकुमम् ॥

कुंकुमं घसृणंरक्तंकाश्मीरंपीतकंवरम् । सङ्कोचंपिशुनन्धीरं वाह्लीकंशोणिताभिधम् ॥ काश्मीरदेशजेक्षेत्रेकुंकुमंयद्भवेद्धितत् । सूक्ष्मकेशरमारक्तंपद्मगन्धितदुत्तमम् ॥ वाह्लीक

देशसञ्जातं कुंकुमंपाण्डुरम्मतम् । केतकीगन्धयुक्तन्तन्मध्यमंसूक्ष्मकेशरम् ॥ कुंकुम म्पारसीकेयत्मधुगन्धितदीरितम् । ईषत्पाण्डुरवर्णंतदधमंस्थूलकेशरम् ॥ कुंकुमंकटुकं स्निग्धं शिरोरुग्व्रणजन्तुजित् । तिक्तंवमिहरंवर्ण्यंव्यंगदोषत्रयापहम् ॥ ३० ॥

केशरके नाम और गुण ॥

कुंकुम, घुसृण, रक्त, काश्मीर- पीतक- वर- संकोच- पिशुन- धीर-बाह्लीक और शोणित- यहकेशर केनामहैं- जोकेशर कश्मीरमें उत्पन्न होतीहै वह सूक्ष्म केशर रक्तवर्ण पद्मके समान गन्धवाली और श्रेष्ठ होतीहै, जो केशर बाह्लीक देशमें उत्पन्न होतीहै वहपांडु वर्ण,केतकीके समान गन्धवाली- सूक्ष्म केशर मध्यमहोतीहै और जो केशर पारस देशमें उत्पन्न होतीहै वह सहतके समान गन्धि युक्त कुछपांडु वर्णस्थूल केशर निकृष्टहोतीहै - केशर- तिक्त कटुरस युक्त, स्निग्ध- वर्णकोहित- और शिररोग- घाव, कृमि, छर्दि, व्यंग तथा त्रिदोष नाशक होतीहै ॥ ३० ॥

अथगोरोचना ॥

गोरोचनातुमंगल्यावन्द्यागौरीचरोचना । गोरोचनाहिमातिक्तावश्यामंगलकान्तिदा ॥ विषालक्ष्मीग्रहोन्मादगर्भस्रावक्षतास्रहृत् ॥ ३१ ॥

गोरोचनके नाम औरगुण ॥

गोरोचना, मंगल्या- वंद्या- गौरी और रोचना यह गोरोचनके नाम हैं, गोरोचन शीतल- तिक्त वशीकरण, मंगलकारक कांति वर्द्धक और विष अलक्ष्मी, ग्रहोंके दोष- उन्माद गर्भगिरना, घावतथा, रक्तदोष नाशकहोताहै ॥ ३१ ॥

अथनखनखीगन्धद्रव्यम् ॥

नखंव्याघ्रनखंव्याघ्रा युधन्तच्चक्रकारकम् । नखंस्वल्पंनखीप्रोक्ताहनुर्हट्टविलासिनी ॥ नखद्रव्यग्रहश्लेष्मवातास्रज्वरकुष्ठहृत् । लघूष्णंशुक्लंवर्ण्यंस्वादुव्रणविषापहम् ॥ अल क्ष्मीमुखदौर्गन्ध्यहृत्पाकरसयोःकटुः ॥ ३२ ॥

नखनखीके नामऔरगुण ॥

नख, व्याघ्रनख, और चक्र कारक यह नखके नामहैं, और छोटे नखको नखी, हनु, और हट्ट विलासिनी कहतेहैं. नखऔर नखी दोनों ग्रहदोष, कफ, वात, रुधिर, ज्वर, कुष्ठ, घाव, विष, अल क्ष्मी और मुखकी दुर्गन्धिके नाशक लघु, उष्ण, वीर्य वर्द्धक वर्णकोहित, मधुर कटुरसयुक्त और विपाकमें कटुहोतेहैं ॥ ३२ ॥

अथसुगन्धवाला ॥

वालंह्रीवेरवर्हिष्ठोदीच्यङ्केशाम्बुनामच । वालकंशीतलंरूक्षंलघुदीपनपाचनम् ॥ हृल्लासारुचिवीसर्पहृद्रोगामातिसारजित् ॥ ३३ ॥

सुगन्धवालाके नामऔरगुण ॥

वाल, ह्रीवेर, बर्हिष्ट उदीच्य, केश और अंबु- यह सुगन्ध वालाके नाम हैं, सुगन्ध वाला, शीतलरूखी, लघु, दीपन, पाचक और मतली अरुचि, वीसर्प, हृदयके रोग, आमदोष तथा अतीसार नाशक होताहै ॥ ३३ ॥

अथ वीरणम् ॥

स्याद्वीरणंवीरतरुर्वीरञ्चबहुमूलकम्। वीरणम्पाचनंशीतं वान्तिहल्लघुतिक्तकम्॥ स्तम्भनंज्वरनुद्वान्तिमदाजित्कफपित्तहृत्। तृष्णास्रविषवीसर्पकृच्छ्रदाहव्रणापहम्३४

गांडरके नामऔरगुण ॥

वीरण, वीरतरु, वीर और बहुमूलक यह गांडर के नामहैं, गांडर शीतल, लघु, पाचक, स्तंभन तिक्त और छर्दि ज्वर, श्रम, मद, कफ, पित्त, तृषा, रुधिर, विष, वीसर्प, मूत्रकृच्छ्र, दाह तथा घाव नाशक होती है॥ ३४ ॥

अथउशीर ॥

वीरणस्यतुमूलंस्यादुशीरंनलदंचतत्। अमृणालञ्चसेव्यञ्च समगंधिकमित्यपि॥ उशीरम्पाचनंशीतंस्तम्भनंलघुतिक्तकम्। मधुरंज्वरहृद्वांतिमदनुत्कफपित्तहृत्॥ तृष्णा स्रविषवीसर्पदाहकृच्छ्रव्रणापहम्॥ ३५ ॥

खसके नाम और गुण ॥

गांडरकी जड़को उशीर (खस) कहतेहैं नलद, अमृणाल, सेव्य और समगन्धिक यह खसके नामहैं खस पाचक, शीतल, स्तंभन, लघु, तिक्तमधुर रसयुक्त और ज्वर, छर्दि, मद, कफ, पित्त, तृषा, रक्तदोष, विष, वीसर्प दाह, मूत्रकृच्छ्र तथा व्रणकी नाशकहोतीहै॥ ३५॥

अथजटामांसी ॥

जटामांसीभूतजटाजटिलाचतपस्विनी। मांसीतिक्ताकषायाचमेध्याकान्तिबलप्रदा॥ स्वाद्वीहिमात्रिदोषास्रदाहवीसर्पकुष्ठनुत्॥ ३६ ॥

जटामांसीके नामऔरगुण ॥

जटामांसी, भूतजटा, जटिला और तपस्विनी, यह जटामांसी के नामहैं, जटामांसी तिक्त मधुर और कषाय रसयुक्त,मेधाको हित, बलवर्द्धक,कान्ति कारक, शीतल और त्रिदोष, रक्तदोष, दाह वीसर्प तथा कुष्ठनाशक होतीहै॥ ३६॥

अथभूरछरीलइतिलोके ॥

शैलेयन्तुशिलापुष्पंवृद्धंकालानुसार्यकम्॥ शैलेयंशीतलंहृद्यंकफपित्तहरंलघु। कण्डू कुष्ठाश्मरीदाहविषहृद्धुदरक्तहृत् ॥ ३७ ॥

छारछबीलाकेनामऔरगुण ॥

शैलेय,शिलापुष्प, वृद्ध और कालानुसार्यक यहछार छबीले के नामहैं, छारछबीला शीतल,हृदय कोहित,हलका और कफ पित्त,खुजली,कुष्ठ, पथरी,दाह,विष तथा गुदाकेरक्तकानाशकहोताहै॥३७॥

मोथानागरमोथा ॥

मुस्तकंनस्त्रियांमुस्तंत्रिपुवारिदनामकम्। कुरुविन्दश्चसंख्यातोऽपरःक्रोडकसेरुकः॥ भद्रमुस्तंचगुन्द्राचतथानागरमुस्तकः। मुस्तंकटुहिमंग्राहितिक्तंदीपनपाचनम्॥ कषा

यंकफपित्तास्त्र तृट्ज्वरारुचिर्जन्तुहृत्। अनूपदेशेयज्जातं मुस्तकंतत्प्रशस्यते ॥ तत्रापिमुनिभिःप्रोक्तं वरंनागरमुस्तकम् ॥ ३८ ॥

नागरमोथा के नाम और गुण ॥

मुस्तक शब्द पुल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग होताहै मुस्त शब्द त्रिलिंगी होताहै, वारिद और कुरुविन्द यह मोथा के नामहैं, कोड़, कसेरुक, भद्रमुस्त, गुंद्राऔर नागरमुस्तक यह नागरमोथाके नामहैं, मोथा कटु तिक्त कषायरस युक्त, शीतल, ग्राही, दीपन, पाचक और कफ पित्त रक्तदोष, तृषा, ज्वर, अरुचितथा कृमिनाशक होताहै जो मोथा अनूप देश में उत्पन्न होताहै वह उत्तमहै उसमें भी मुनियोंने नागर मोथे को सब से श्रेष्ठ कहाहै॥ ३८ ॥

अथकर्चूर ॥

कर्चूरांवेधमुख्यश्च द्राविड़ःकल्पकःशटी।कर्चूरोदीपनोरुच्यःकटुकस्तिक्तएवच॥सुगंधिः कटुपाकःस्यात् कुष्ठार्शोव्रणकासनुत। उष्णोलघुःहरेच्छ्वासं गुल्मवातकफकृमीन्॥३९॥

कचूर के नाम और गुण ॥

कर्चूर, वेधमुख्य, द्राविड़, कल्पक और शटी, यह कचूरके नामहैं, कचूर दीपन, रुचिकारक, कटुतिक्त रसयुक्त, सुगन्धित, पाक में कटु, उष्ण, हलका और कुष्ठ ववासीर, घाव, खांसी, श्वास गुल्म, वातकफ तथा कृमि नाशक होताहै ॥ ३९ ॥

अथएकांगी ॥

मुरागंधकटीदैत्या सुरभिःशालपर्णिका। मुरातिक्ताहिमास्वाद्वी लघ्वीपित्तानिलापहा ॥ ज्वरासृग्भूतरक्षोघ्नी कुष्ठकासविनाशिनी ॥ ४० ॥

मरोर फली के नाम और गुण ॥

मूरा, गंधकुटी, दैत्या, सुरभि और शालपर्णिका यह मरोर फलीके नामहैं, मरोर फली तिक्त मधुर रस युक्त, शीतल, हलकी और पित्त, वायु, ज्वर, रक्तदोष, भूतोंका आवेश, राक्षसों की बाधा, कुष्ठतथा खांसी की नाशक होतीहै ॥ ४० ॥

अथगंधपलाशीसुगंधद्रव्यंकाश्मीरेप्रसिद्धा ॥

शठीपलासीषड्ग्रंथा सुव्रतागंधमूलिका। गन्धारिकागन्धवधू वधूःपृथुपलाशिका ॥ भवेद्गन्धपलाशीतु कषायाग्राहिणीलघुः। तिक्तातीक्ष्णाचकटुका नुष्णास्यमलनाशिनी। शोथकासव्रणश्वास शूलहिध्मग्रहापहा ॥ ४१ ॥

गन्धपलाशी (एक प्रकारकी सुगंधित वस्तुकाश्मीर देशमें प्रसिद्धहै) के नाम और गुण ॥

शठी, पलाशी, षड्ग्रंथा, सुव्रता, गन्धमूलिका, गान्धारिका, गन्धवधू, वधूऔर पृथुपलाशिका यहगन्धपलाशीके नामहैं, गंधपलाशी कषाय तिक्त कटुरस युक्त, ग्राही, हलकी, तीक्ष्ण, उष्णता रहित, मुखकेमल की नाशक और सूजन, खांसी, घाव, श्वास, श्वेत कुष्ठ तथा ग्रह दोषोंकी नाशक होतीहै ॥ ४१ ॥

अथप्रियंगुगंधप्रियंगु ॥

प्रियंगुःफलिनीकांता लताचमहिलाह्वया। गुंद्रागुंद्रफलाश्यामा विष्वक्सेनांगनाप्रिया ॥ प्रियंगुःशीतलातिक्ता तुवरानिलपित्तहृत्। रक्तातियोगदौर्गन्ध्य स्वेददाहज्वराप

ह्या ॥ गुल्मतृट्विषमोहघ्नीतद्वद्गंधप्रियंगुकाः । तत्फलंमधुरंरूक्षं कषायंशीतलंगुरु ॥ विबंधाध्मानबलकृत् संग्राहिकफपित्तजित् ॥ ४२ ॥

प्रियंगु (ककुनी) और गंधप्रियंगुके नाम और गुण ॥

प्रियंगु,फलिनी,कान्ता,महिलारोचक,गुंद्रा,मन्द्रफला,श्यामा और अंगनाप्रिया यह प्रियंगुके नामहैं प्रियंगु शीतल तिक्त कषाय रसयुक्त और वातपित्त रुधिरकी अधिकता,दुर्गन्धि,स्वेद,दाह, ज्वर,गुल्म तृषा, विष और मोह नाशक होतीहै और गन्धप्रियंगु में भी यही गुण होते हैं प्रियंगु का फल मधुर कषाय रसयुक्त,रूखा,शीतल,भारी,बलवर्द्धक,ग्राही,विबंध तथा आध्मान करनेवाला और कफ तथा पित्त नाशक होताहै ॥ ४२ ॥

अथरेणुकामरिचसदृशा ॥

रेणुकाराजपुत्रीच नंदिनीकपिलाद्विजा। भस्मगंधापाण्डुपुत्री स्मृताकौन्तीहरेणुका॥ रेणुकाकटुकापाकेतिक्तामुष्णाकटुर्लघुः । पित्तलादीपनीमेध्या पाचिनीगर्भपातिनी ॥ बलासवातकृच्चैवतृट्कण्डूविषदाहनुत् ॥ ४३ ॥

रेणुका (मिर्चके सदृश एक प्रकारकी सुगंधित द्रव्य)के नाम और गुण ॥

रेणुका,राजपुत्री,नन्दिनी,कपिला,द्विजा,भस्मगंधा,पाडुपुत्री,कौन्ती और हरेणुका यहरेणुकाके नाम हैं,रेणुका विपाकमें कटु,तिक्त,कटु रस युक्त,उष्णता रहित,हलकी,पित्तवर्द्धक,दीपन,मेधाकोहित,पाचक गर्भ गिराने वाली और कफ वातका कोप,खुजली, तृषा,विष तथा दाहकी नाशकहोती है ॥ ४३ ॥

अथठिवन ॥

ग्रंथिपर्णंग्रंथिकंचकाकपुच्छञ्चगुच्छकम् । नीलपुष्पंसुगंधञ्चकथितंतैलपर्णकम्॥ग्रंथिपर्णंतिक्ततीक्ष्णंकटूष्णंदीपनंलघुः । कफवातविषश्वासकण्डूदौर्गन्ध्यनाशनम् ॥ ४४॥

भटोरा के नाम और गुण ॥

ग्रंथिपर्ण,ग्रंथिक,काकपुच्छ,नीलपुष्प, गुच्छक, सुगन्ध और तैलपर्णक यह भटोराके नामहैं, भटोरा तिक्त कटुरसयुक्त,तीक्ष्ण,उष्ण, दीपन, हलका और कफ,वात,विष,श्वास खुजली, तथा दुर्गन्धिनाशक होताहै ॥ ४४ ॥

अथग्रंथिपर्णस्यैवभेदईषत्सुगंधःस्थौणेयंथनेरइतिलोकेप्रसिद्धम् ॥

स्थौणेयकंवर्हिवर्हंशुकवर्हञ्चकुक्कुरम् । शीर्षरोमशुकञ्चापिशुष्कपुष्पंशुकच्छदम्॥ स्थौणेयकङ्कटुस्वादुतिक्तंस्निग्धंत्रिदोषनुत् । मेधाशुक्रकरंरुच्यंरक्षोघ्नंज्वरजंतुजित् ॥ हंतिकुष्ठास्रतृड्दाहदौर्गंध्यतिलकालकान् ॥ ४५ ॥

कुकरौंधाके नाम और गुण ॥

स्थौणेयक, वर्हिवर्ह, शुकवर्ह, कुक्कुर, शीर्ण, रोमशुक, शुकपुष्प और शुकच्छद, यह कुकरौंधे के नाम है, कुकरौंधा कटु, मधुर, तिक्त,स्निग्ध, त्रिदोष नाशक, मेधाको हित, वीर्य वर्द्धक, रुचिकारक और राक्षसों की पीडा, ज्वर, कृमि, कुष्ठ, रक्तदोष,तृषा,दाह, दुर्गन्धि तथातिल नाशक होताहै ॥४५॥

अथग्रंथिपर्णस्यैवभेदःभटेउरइतिनेपालदेशेभवति ॥

निशाचरोधनहरो कितवोगणहालकः । रोचकोमधुरस्तिक्तः कटुपाकेकटुर्लघुः ॥ ती

क्ष्णोहृद्योहिमोहंतिकुष्ठकण्डुकफानिलान्।रक्षाश्रीस्वेदमेदोऽस्रज्वरगंधविषव्रणान्॥४६॥

ग्रंथिवर्ण का भेद भटेयुर नाम से नेपाल देशमें प्रसिद्ध है उसके नाम और गुण ॥

निशाचर, धनहर, कितव और गणहासक यह भटेयुर के नाम हैं, भटेयुर रुचिकारक, मधुर तिक्त, कटु विपाक में कटु, हलका, तीक्ष्ण, हृदय को हित, शीतल और कुष्ठ, खुजली, कफ, वात राक्षसों की बाधा, अलक्ष्मी, स्वेद, मेद, रुधिर ज्वर, दुर्गन्धि, विष तथा घावका नाशक होताहै॥४६॥

अथभूम्यामलकीसदृशा स्तालीसः ॥

तालीसमुक्तम्पत्राढ्यंधात्रपत्रञ्चतत्स्मृतम् । तालीसंलघुतीक्ष्णोष्णंश्वासकासकफानिलान् ॥ निहंत्यरुचिगुल्मामवह्निमांद्यक्षयामयान् ॥ ४७ ॥

भूमि आमले के समान तालीस होता है उसके नाम और गुण ॥

तालीस, पत्राढ्य और धात्रीपत्र यह तालीस के नाम हैं, तालीस हलका, तीक्ष्ण, उष्ण और श्वास, खांसी, कफ, वात,अरुचि,गुल्म, आमदोष, मंदाग्नितथा क्षय रोगका नाशक होता है ४७

अथकंकोलसुगंधद्रव्यम् शीतलचीनीतिलोके ॥

कंकोलकोलकम्प्रोक्तंतथाकोशफलंस्मृतम् । कंकोलंलघुतीक्ष्णोष्णंतिक्तंहृद्यंरुचिप्रदम् ॥ आस्यदौर्गन्ध्यहृद्रोगकफवातामयान्ध्यहृत् ॥ ४८ ॥

शीतल चीनीके नाम और गुण ॥

कंकोल, कोलक और कोशफल यह शीतल चीनी के नाम हैं, शीतलचीनी लघु, तीक्ष्ण, उष्ण तिक्त, हृदय को हित, रुचिकारक और मुखकी दुर्गन्धि, हृदय के रोग, कफ वात रोग तथा अन्धता की नाशक होती है ॥ ४८ ॥

अथगंधकोकिलागंधमालती ॥

स्निग्धोष्णाकफहृत्तिक्तासुगन्धागन्धकोकिला । गन्धकोकिलयातुल्या विज्ञेयागन्धमालती ॥ ४९ ॥

गंधकोकिला और गंधमालतीके गुण ॥

गंधकोकिला, स्निग्ध, उष्ण, तिक्त और सुगन्धित होती है सुगन्ध मालती में भी इसी के समान गुण होते हैं ॥ ४९ ॥

अथलामज्जकमुशीरवत् पीतच्छवितृणविशेषः ॥

लामज्जकंसुनालंस्यादमृणालंलवंलघुः । इष्टकापथकंसेव्यंनलदञ्चावदातकम् ॥ लामज्जकंहिमन्तिक्तंलघुदोषत्रयास्रजित्। त्वगामयस्वेदकृच्छ्रदाहपित्तास्ररोगनुत्॥५०॥

लामज्जक (खसके समान पीले रंगका एकतृण) के नाम और गुण ॥

लामज्जक, सुनाल, अमृणाल, लव, लघु, इष्टका पथक, सेव्य, नलद और अवदातक यह लामज्जक के नाम हैं, लामज्जक शीतल, तिक्त, लघु और त्रिदोष, रक्त, चर्मरोग, स्वेद, मूत्र कृच्छ्र, दाह तथा रक्त पित्त नाशक होता है ॥ ५० ॥

अथएलवालुकंकङ्कोलसदृशंकुष्ठगन्धि ॥

एलवालुकमैलेयंसुगन्धिहरिवालुकम् । एलवालुकमेलालुकपित्थंपत्रमीरितम् ॥

एल्वालुकटुकंपाकेकषायंशीतलंलघु। हन्तिकण्डूव्रणच्छर्दितृट्कासारुचिहृद्रुजः॥ बला सविषपित्तास्त्रकुष्ठमूत्रगदक्रमीन्॥ ५१॥

एलवालुक(दालचीनीकासाडौल और कूट कीसी सुगन्धि उसमें होती हैं) के नाम और गुण॥

एलवालुक ऐलेय, सुगन्धि, हरिबालुक, एलालू और कपित्थपत्र यह एलबालुकके नामहैं, एल वालुक पाकमें कटु, कषाय, शीतल, लघु और खुजली घाव, छर्दि, तृषा, खांसी, अरुचि, हृदय के रोग कफ विष पित्त रुधिर कुष्ठ मूत्ररोग तथा कृमिनाशक होताहै॥ ५१॥

कोसचीमोथा॥

गुड़तजीइतिचइयन्तुवितुन्नकनाम्नोवृक्षस्यत्वक्मुस्ताकृतिः। कुटन्नटंदासपुरंवालेयं परिपेलवम्॥ प्लवगोपुरगोनर्दकैवर्त्तीमुरतकानिच॥ मुस्तावत्पेलवंपुष्टंशुक्लाभंस्याद्वि तुन्नकम्। वितुन्नकंहिमंतिक्तं कषायंकटुकान्तिदम्॥ कफपित्तास्त्रवीसर्प कुष्ठकण्डूविष प्रणुत्॥ ५२॥

जलमोथा (वितुन्नकनामवृक्षकीछाल, इसकी मोथे के समान आकृतिहोतीहै) के नाम और गुण॥

कुटन्नट, दासपुर, वालेय,परिपेलव,प्लव, गोपुर,गोनर्द और कैवर्त्त मुस्तक यहजलमोथाकेनाम हैं वितुन्नक के पत्ते मोथाके समानकोमल और शुक्लवर्ण होतेहैं, वितुन्नक शीतल तिक्त कषाय कटु कान्तिवर्द्धक और कफ पित्त रक्त वीसर्प कुष्ठ खुजली तथा विषका नाशकहोताहै॥ ५२॥

अथस्पृक्का॥

सुगन्धिद्रव्यंशाकविशेषः। लङ्कोइकपुरीतिलोकेच। स्पृक्कासृक्ब्राह्मणीदेवीमरुन्मा लालतालघु.। समुद्रान्तावधूःकोटिवर्षालङ्कोपिकेत्यपि॥ स्पृक्कास्वाद्वीहिमावृष्यातिक्ता निखिलदोषनुत्। कुष्ठकण्डूविषस्वेददाहास्त्रज्वररक्तहृत्॥ ५३॥

स्पृक्का (लंकोइकपुरी नामसेप्रसिद्ध सुगन्धितशाक विशेष) के नामगुण॥

स्पृक्का, असृक ब्राह्मणी देवी मरुन्नमाला लता लघु समुद्रान्ता वधू कोटिवर्षा और लंकोपिका यह स्पृक्काके नामहैं स्पृक्का, मधुर, तिक्त, शीतल वीर्य्यवर्द्धक त्रिदोषनाशक और कुष्ठ खुजली विष स्वेद दाह अलक्ष्मी ज्वर तथा रक्तनाशक होतीहै॥ ५३॥

अथपर्पटीइतिप्रसिद्धंपद्मावतीइतिच॥

उत्तरदेशेसुगन्धिद्रव्यं।पर्पटीरञ्जनाकृष्णाजतुकाजननीजनी। जतुकृष्णाग्निसंस्पर्शा जतुकृच्चक्रवर्तिनी॥ पर्पटीतुवरातिक्ताशिशिरावर्णकृल्लघु। विषव्रणहरीकण्डू कफपित्तास्त्र कुष्ठनुत्॥ ५४॥

उत्तर देशमें प्रसिद्धपद्मावतीके नाम गुण॥

पर्पटी रंजना कृष्णा जतुका जननी जनी जतुकृष्णा अग्निसंस्पर्शा जतुकृत् और चक्रवर्तिनी यह पद्मावती के नामहैं पद्मावती, कषाय तिक्त शीतल वर्णवर्द्धक लघु और विषव्रण खुजली कफपित्त रक्त तथा कुष्ठ नाशक होती है॥ ५४॥

अथनलिका ॥

उत्तरापथेप्रसिद्धा । सुगन्धावलाकृतिर्यत्रारीइतिचक्वचित्प्रसिद्धा । नलिकाविद्रुमलताकपोतचरणानटी । धमन्यञ्जनकेशीचनिर्मध्यासुषिरानली ॥ नलिकाशीतलालघ्वा चक्षुष्याकफपित्तहृत् । कृच्छ्राश्मवाततृष्णास्रकुष्ठकण्डूज्वरापहा ॥ ५५ ॥

नलिका उत्तरदेशकी सुगन्धित वस्तु सुगन्धवाला के समान उसके नामगुण ॥
नलिका विद्रुमलता कपोत चरणा नटी धमनी अंजनकेशी निर्मध्या सुशिरा और नली यह नलिका के नामहैं नलिका शीतल लघु नेत्रों कोहित और कफ पित्त मूत्र कृच्छ्र पथरी बात तृषा रक्तकुष्ठ खुजली तथा ज्वर नाशक होती है॥५५॥

अथप्रपौण्डरीकं ॥

सुगन्धद्रव्यंपुण्डेरीइतिलोकेप्रसिद्धम् । प्रपौण्डरींपौण्डर्य्यंचक्षुष्यंपौण्डरीयकम् ॥ पौण्डर्य्यंमधुरंतिक्तंकषायंशुक्रलंहिमम् ॥ चक्षुष्यंमधुरंपाकेवर्ण्यंपित्तकफप्रणुत् ॥ ५६ ॥

इतिभावप्रकाशेकर्पूरादिवर्गः ॥

पुंडेरी एक प्रकारकी सुगन्धित वस्तु के नाम और गुण ॥
प्रपौंडरीक, पौंडर्य, चक्षुष्य और पौंडर्यक यह पुंडेरीके नामहैं, पुंडेरी, मधुर, तिक्त, कषाय, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल, नेत्रोंकोहित पाकमें मधुर वर्ण कोहित और पित्तकफ नाशक होतीहै ॥ ५६ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेकर्पूरादिवर्गः ॥

अथगुडूच्यादिवर्गः तत्रादौगुडूच्याउत्पत्तिर्नामानिगुणाश्च ॥

अथलङ्केश्वरोमानी रावणोराक्षसाधिपः । रामपत्नींबलात्सीतांजहारमदनातुरः ॥ ततस्तंबलवान्रामो रिपुंजायापहारिणम् । ततोवानरसैन्येनजघानरणमूर्द्धनि ॥ हतेतस्मिन्सुरारातौ रावणेबलगर्विते । देवराजःसहस्राक्षः परितुष्टोऽतिराघवे ॥ तत्रयेवानराःकेचिद्राक्षसैर्निहतारणे । तानिन्द्रोजीवयामाससंसिच्यामृतवृष्टिभिः ॥ ततोयेपुप्रदेशेषु कपिगात्रात्परिच्युताः । पीयूषविन्दवोयेतुतेभ्योजातागुडूचिका ॥ गुडूचीमधुपर्णीस्यादमृताऽमृतवल्लरी । छिन्नाछिन्नरुहाछिन्नोद्भवावत्सादनीतिच ॥जीवन्तीतंत्रिकासोमासोमवल्लीचकुण्डली । चक्रलक्षणिकाधीराविशल्याचरसायनी॥ चंद्रहासीवयस्थाचमण्डलीदेवनिर्मिता । गुडूची कटुका तिक्ता स्वादु पाका रसायनी ॥ संग्राहिणीकषायोष्णालघ्वीच ल्याग्निदीपनी । दोषत्रयामतृड्दाहमेहकासांश्चपाण्डुताम् ॥ कामलाकुष्ठवातास्रज्वर कृमिवमीनहरेत् । प्रमेहश्वासकासार्शःकृच्छ्रहृद्रोगवातनुत् ॥ १ ॥

गिलोयकी उत्पत्ति नामऔरगुण ॥

एक समयराक्षसोंका स्वामी लंका का राजा मदोन्मत्त रावणकामसे व्याकुल होकर रामचन्द्रजी

की पत्नी सीताजीको हरलेगया इसके उपरान्त अत्यन्त प्रतापी रामचन्द्रजीने वानरोंकी सेनाइकट्ठी करके स्त्रीके हरने वाले रावणको मारा देवताओंके परम शत्रु उसरावणके मारेजाने पर सहस्र लोचन इन्द्रने रामचन्द्रजीपर अत्यन्त प्रसन्न होकर उसरण में राक्षसों के हाथसे मारेहुए वानरोंको अमृत वरसाकर जिवाया उनवानरोंके शरीरसे जहाँ २ अमृतके विन्दु पड़ेउसी स्थानमें यह गिलोय उत्पन्न हुई, गुडूची, मधुपर्णी, असृता, अमृतवल्ली, छिन्ना, छिन्नरुहा, छिन्नोद्भवा, वत्सादनी, जीवन्ती तंत्रिका, सोमा, सोमवल्ली, कुंडली, चक्रलक्षणिका, धीरा, विशल्या, रसायनी, चन्द्रहासी, वयस्था, मंडली और देवनिर्मिता यह गिलोयके नामहैं, गिलोयकटु, तिक्त, पाकमें मधुर, रसायन, ग्राही, कषाय-उष्ण, हलकी, बलकारक, अग्निदीपक और त्रिदोष आम, तृषा, दाह, प्रमेह, खांसी, पांडु कामला, कुष्ठ, वातरक्त, ज्वर, कृमि, छर्दि, श्वास, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, वात तथा हृदयके रोगकी नाशक होतीहै ॥ १ ॥

अथपान ॥

ताम्बूलवल्लीताम्बूलीनागिनीनागवल्लरी । ताम्बूलंविशदंरुच्यंतीक्ष्णोष्णंतुवरंस रम् ॥ वश्यंतिक्तंकटुक्षारंरक्तपित्तकरंलघु । वल्यंश्लेष्मास्यदौर्गंध्यमलवातश्रमापहम् २ ॥

तांबूलके नाम और गुण ॥

तांबूलवल्ली, तांबूली, नागिनी और नागवल्लरी यह तांबूल (पान) के नामहैं, तांबूल, विशद रुचिकारक, तीक्ष्ण, उष्ण, कषाय, सारक, वशीकरण, तिक्त, कटु, क्षार, रक्त, पित्तकारक हलका, बलकारी और कफ, मुखकी दुर्गंधि, मल, वात तथा श्रमका नाशक होताहै ॥ २ ॥

अथबेल ॥

बिल्वःशाण्डिल्यशैलूषौमालूरश्रीफलावपि । श्रीफलस्तुवरस्तिक्तोग्राहीरूक्षोऽग्निपित्तकृत् । वातश्लेष्महरोवल्योलघुरुष्णश्चपाचनः ॥ ३ ॥

बेलके नामगुण ॥

बिल्व, शांडिल्य, शैलूष, मालूर और श्रीफल यहबेलके नामहैं, बेल, कषाय, तिक्त, ग्राही, रूखा अग्निवर्द्धक, पित्तकारी, वात, कफ नाशक, बलकारी हलका, उष्ण और पाचक होताहै ॥ ३ ॥

अथगम्भारी ॥

गम्भारीभद्रपर्णीचश्रीपर्णीमधुपर्णिका । काश्मीरीकाश्मरीहीराकाश्मर्य्यःपीतरोहिणी ॥ कृष्णवृन्तामधुरसामहाकुसुमिकापिच । काश्मरीतुवरातिक्तावीर्य्योष्णामधुरागुरुः ॥ दीपनीपाचनीमेध्याभेदिनीभ्रमशोषजित् । दोषतृष्णामशूलार्शोविषदाहज्वरापहा ॥ तत्फलंबृंहणंवृष्यंगुरुकेश्यंरसायनम् । वातपित्ततृषारक्तक्षयमूत्रविबन्धनुत् ॥ स्वादुपाकेहिमंस्निग्धंतुवराम्लंविशुद्धिकृत् । हन्याद्दाहतृषावातरक्तपित्तक्षतक्षयान् ॥ ४ ॥

गंभारीके नामऔरगुण ॥

गंभारी, भद्रपर्णी, श्रीपर्णी, मधुपर्णिका, काश्मीरी, काश्मरी, हीरा, काश्मर्य्य, पीतरोहिणी, कृष्णवृन्ता, मधुरसा और महाकुसुमिका यहगंभारी (खंभारी) के नामहै गंभारी, कषाय, तिक्त, उष्ण मधुर, भारी, दीपन, पाचक, मेधाकोहित भेदक और श्रम, शोष, त्रिदोष, तृषा, आम, शूल, बवासीर, विष

दाह तथा ज्वर नाशक होतीहै गंभारीकाफल धातुवर्द्धक,वीर्य्यवर्द्धक,भारी,केशोंकोहित,रसायन, और वात, पित्त, तृषा, रक्त, क्षय,मूत्रका रुकना,दाह, वात,रक्त तथा घावका नाशक पाकमें मधुर शीतल स्निग्ध, कषाय,अम्ल और शोधन कारक होताहै ॥ ४ ॥

अथपाण्डरिकएठपाण्डरि ॥

पाटलिःपाटलामोघामधुदूतीफलेरुहा। कृष्णवृन्ताकुबेराक्षीकालस्थाल्यलिवल्लभा॥ ताम्रपुष्पीचकथितापरास्यात्पाटलासिता। मुष्ककोमोक्षकोघण्टापाटलिःकाष्ठपाटला॥ (कालस्थालीत्यत्रकाचस्थालीत्येके) पाटलातुवरातिक्तानुष्णादोषत्रयापहा । अरुचिः श्वासशोथास्रछर्दिहिक्कातृषाहरी ॥ पुष्पंकषायंमधुरंहिमंहृद्यंकफास्रनुत् । पित्तातिसारहृत्कण्ठ्यंफलंहिक्कास्रपित्तहृत् ॥ ५ ॥

पाटलि और घंटा पाटालिके नामगुण ॥

पाटलि, पाटला, अमोघा, मधुदूती,फलेरुहा,कृष्णवृन्ता,कुबेराक्षी,कालस्थाली अथवा काचस्थाली अलिवल्लभा और ताम्रपुष्पी यह पाटला (पाढरि) के नाम हैं एक दूसरे प्रकारकी श्वेत पाटला होतीहै उसको मुष्कक, मोक्षक, घंटा पाटलि और काष्ठ पाटला यह कहते हैं, पाढरि, कषाय, तिक्त कुछ उष्ण और त्रिदोष, अरुचि, श्वास,सूजन, रुधिर, छर्दि, हिचकी, तथा तृषा की नाशक होती है पाढरि का पुष्प कषाय, मधुर, शीतल, हृदय कोहित और कफ, रक्तदोष, पित्त,अतीसार नाशक तथा कंठका शोधक होताहै इसका फल हिचकी और रक्तपित्तको नाश करताहै ॥ ५॥

अथअगेंथगनिआरिइतिच ॥

अग्निमंथोजयःसस्याच्छ्रीपर्णीगणिकारिका। जयाजयंतीतर्कारीनादेयीवैजयंतिका॥ अग्निमन्थःश्वयथुनुद्वीर्य्योष्णःकफवातहृत्।पाण्डुनुत्कटुकस्तिक्तस्तुवरोमधुरोऽग्निदः॥६॥

अरणीके नाम और गुण ॥

अग्निमन्थ, जय, श्रीपर्णी, गणिकारिका, जया, जयन्ती, तर्कारी, नादेयी और वैजयन्तिका यह अरणी काष्ठके नामहैं अरणी सूजन नाशक,उष्ण,कटु, तिक्त, कषाय, मधुर, अग्निवर्द्धक और कफ वात तथा पांडु रोगनाशक होतीहै ॥ ६ ॥

अथसोनापाढ़ा ॥

स्योनाकःशोषणश्चस्यान्नटकट्वङ्गटुंटुकः। मण्डूकपर्णपत्रोर्णशुकनासकुटन्नटाः॥ दीर्घवृन्तोररलुश्चापिपृथुशिम्बःकटम्भरः । स्योनाकोदीपनःपाकेकटुकस्तुवरोहिमः ॥ ग्राही तिक्तोऽनिलःश्लेष्मपित्तकासप्रणाशनः । टुण्टुकस्यफलंबालंरूक्षंवातकफापहम् ॥ हृद्यं कषायंमधुरंरोचनंलघुदीपनम्। गुल्मार्शःकृमिहृत्प्रौढंगुरुवातप्रकोपनम् ॥ ७ ॥

सोना पाढ़ाके नाम गुण ॥

श्योनाक, शोषण नट, कट्वंग टुंटुक, मंडूकपर्ण,पत्रोर्ण, शुकनास कुटंनट,दीर्घवृन्त,अरल, पृथुशिंब और कटंभर, यह सोना पाढ़ाके नामहैं सोना पाढ़ा दीपन, पाक में कटु, कषाय, तिक्त शीतल ग्राही और वात कफ पित्त तथा खांसी का नाशक होता है इसका कच्चाफल, रूखा, हृदय कोहित कषाय

मधुर, रुचिकारक,हलका अग्निदायक और वात कफ गुल्म बवासीर तथा कृमिनाशक होताहै पक्वाफल भारी और वायुका कोपकरने वाला होताहै ॥ ७॥

अथवृहत्पञ्चमूलस्यलक्षणंगुणाः ॥

श्रीफलःसर्वतोभद्रापाटलागणिकारिका । स्योनाकःपञ्चभिश्चैतैःपञ्चमूलंमहन्मतम्॥पञ्चमूलंमहत्तिक्तंकषायंकफवातनुत्।मधुरंश्वासकासघ्नमुष्णंलघ्वग्निदीपनम् ॥८॥

वृहत्पंचमूल के लक्षण और गुण ॥

बेल खंभारी पाढ़र अरणी और सोना पाढ़ा इनपांचोंके मिलनेसे वृहत्पंचमूल कहलाताहै वृहत्पंचमूल तिक्त,कषाय,मधुर,हलका,दीपन,उष्ण और कफ वात श्वास तथा खासीका नाशक होताहै॥८॥

अथसरिवन ॥

शालिपर्णीस्थिरासौम्यात्रिपर्णीपीवरीगुहा । विदारिगन्धादीर्घांगीदीर्घपत्रांशुमत्यपि ॥ शालिपर्णीगुरुच्छर्दीज्वरश्वासातिसारजित् । शोषदोषत्रयहरीवृंहण्युक्तारसायनी ॥ तिक्ताविषहरीस्वादुःक्षतकासकृमिप्रणुत् ॥ ९ ॥

शालिपर्णी (सरिवन) के नाम और गुण ॥

शालिपर्णी स्थिरा सौम्या त्रिपर्णी पीवरी गुहा विदारिगंधा दीर्घांङ्गी दीर्घपत्रा और अंशुमती यह सरिवन के नाम हैं सरिवन धातुओं का पुष्ट करनेवाला रसायन तिक्त मधुर भारी और विष छर्दि ज्वर श्वास अतीसार शोष त्रिदोष घाव खांसी तथा कृमि नाशकहोता है॥ ९॥

अथपिठवन ॥

पृश्निपर्णीपृथक्पर्णीचित्रपर्ण्यंघ्रिपर्ण्यपि। क्रोष्टुविन्नासिंहपुच्छीकलशीधावनिर्गुहा॥ पृष्टिपर्णीत्रिदोषघ्नीवृष्योष्णामधुरासरा। हंतिदाहज्वरश्वासरक्तातीसारतृड्वमी· ॥१०॥

पृश्निपर्णी (पिठवन) के नामगुण ॥

पृश्निपर्णी, पृथक्पर्णी, चित्रपर्णी, अंघ्रिपर्णी क्रोष्टुविन्ना, सिंहपुच्छी, कलशी, धावनि और गुहा यह पृश्निपर्णीके नामहैं, पृश्निपर्णी वीर्यवर्द्धक, उष्ण, मधुर, सारक और त्रिदोष, दाह,ज्वर, श्वास रक्तातीसार, तृषा तथा छर्दिनाशकहोतीहै ॥ १० ॥

अथवरहण्टा ॥

वार्त्ताकीक्षुद्रभण्टाकीमहतीवृहतीकुली। हिंगुलीराष्ट्रिकासिंहीमहोष्ट्रीदुःप्रधर्षिणी ॥ वृहतीग्राहिणीहृद्यापाचनीकफवातहृत् । कटुतिक्तास्यवैरस्यमलारोचकनाशिनी ॥ उष्णकुष्ठज्वरश्वासशूलकासाग्निमान्द्यजित् ॥ ११ ॥

वडीभटकटैयाके नाम और गुण ॥

वार्त्ताकी-क्षुद्रभंटाकी, महती, वृहती, कुली, हिंगुली, राष्ट्रिका, सिंही, महोष्ट्री और दुष्प्रधर्षिणी यहवडी भटकटैयाके नामहै भटकटैया ग्राही हृदयको हित पाचक कटु तिक्त उष्ण और कफ वात मुखकी विरसता मल,अरुचि कुष्ठ ज्वर श्वास शूल खांसी तथा अग्निकी मन्दताको नाशकरतीहै॥११॥

अथभटकटैयारोगिणीइतिच ॥

कण्टकारीतुदुःस्पर्शाक्षुद्राव्याघ्रीनिदिग्धिका । कण्टालिकाकण्टकनीधावनीवृहती

तथा॥उभेचबृहत्यौ।(यतआहसुश्रुतः)क्षुद्रायाःक्षुद्रभद्राख्यावृहतीतिनिगद्यते।श्वेता क्षुद्राचंद्रहासालक्ष्मणाक्षेत्रदूतिका ॥ गर्भदाचंद्रभाचंद्रीचन्द्रपुष्पाप्रियंकरी। कण्टका रीसरातिक्ताकटुकादीपनीलघुः॥ रूक्षोष्णापाचनीकासश्वासज्वरकफानिलान्।निहंति पीनसंश्वासपार्श्वपीडाहृदामयान् ॥ तयोःफलंकटुरसेपाकेचकटुकंभवेत्। शुक्रस्यरेचनं भेदितिक्तंपित्ताग्निकृल्लघु॥ हन्यात्कफमरुत्कण्डूकासमेदकृमिज्वरान्। तद्वत्प्रोक्तासि ताक्षुद्राविशेषाद्गर्भकारिणी॥ १२॥

छोटी भटकटैयाके नाम और गुण॥

कंटकारी दुःस्पर्शा क्षुद्रा व्याघ्री निदिग्धिका कंटालिका कंटकनी धावनी और बृहती यह छोटी भटकटैयाके नामहैं छोटी भटकटैया और बडीभटकटैया इनदोनों को बृहती कहतेहैं क्योंकि सुश्रुत में कहाहै कि क्षुद्रा (छोटीभटकटैया) और क्षुद्रभंटाकी यहदोनों बृहती कहलाती हैं श्वेतभटकटैया को चन्द्रहासा लक्ष्मणा क्षेत्रदूतिका गर्भदा चन्द्रभा चन्द्री चन्द्रपुष्पा और प्रियंकरीकहते हैं भटकटैया सारक तिक्त कटु दीपन हलकी रूखी उष्ण पाचक और खांसी श्वास ज्वर कफ वात पीनस पसलीकादर्द कृमितथा हृदयके रोगोंकी नाशकहोतीहै दोनों भटकटैयाके फलकटु पाक में कटु वीर्य के गिरानेवाले भेदक तिक्त पित्तवर्द्धक अग्निकारक हलके और कफ वात खुजली मेद कृमि तथा ज्वर के नाशक होते हैं श्वेत भटकटैयामें भी यही गुणहोतेहैं और यह विशेष करके गर्भ देने वाली होतीहै॥ १२॥

अथ गोक्षुर॥

गोक्षुरः क्षुरकोऽपिस्यात्त्रिकण्टःस्वादुकण्टकः। गोकण्टकोभक्षटकोवनशृङ्गाटइत्य पि॥ पलंकषाश्वदंष्ट्राचतथास्यादिक्षुगन्धिका। गोक्षुरःशीतलःस्वादुर्बलकृद्वस्तिशो धनः॥ मधुरोदीपनोवृष्यः पुष्टिदश्चाश्मरीहरः। प्रमेहश्वासकासार्शःकृच्छ्रहृद्रोगवा तनुत्॥ १३॥

गोखुरू के नाम और गुण॥

गोक्षुर, क्षुरक, त्रिकंट, स्वादु कंटक, गोकंटक, भक्षटक, वनशृंगाट, पलंकषा, अश्वदंष्ट्रा और इक्षुगंधिका, यह गोखुरू के नाम हैं, गोखुरू, शीतल मधुर, बलकारक, मूत्राशयका शोधक, दीपन, वीर्य वर्द्धक, पुष्टिकारक, और पथरी, प्रमेह, श्वास, खांसी, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, हृदय के रोग, तथा वातका नाशक होता है॥ १३॥

अथलघुपञ्चमूलस्यलक्षणंगुणाश्च॥

शालिपर्णीपृष्ठपर्णीवार्ताकीकण्टकारिका।गोक्षुरःपञ्चभिश्चैतैःकनिष्ठंपञ्चमूलकम्॥ पञ्चमूलंलघुस्वादुबल्यम्पित्तानिलापहम्।नात्युष्णंबृंहणंग्राहिज्वरश्वासाश्मरीप्रणुत्॥१४॥

लघु पंचमूलके लक्षण और गुण॥

सरिवन, पिठवन्, बडी छोटी भटकटैया और गोखुरू यह पांचों मिलेहुए होने से लघुपंचमूल कहाते हैं, लघुपंचमूल, मधुर, हलका, बलकारक, कुछउष्ण, धातुवर्द्धक, ग्राही और पित्त वायु ज्वर श्वास तथा पथरी का नाशक होता है॥ १४॥

अथदशमूलस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

उभाभ्यांपञ्चमूलाभ्यांदशमूलमुदाहृतम् । दशमूलंत्रिदोषघ्नंश्वासकासशिरोरुजः ॥ तन्द्राशोथज्वरानाहपार्श्वपीडारुचिर्हरेत् ॥ १५ ॥

दशमूल के लक्षण और गुण ॥

दोनों पंचमूलोंके मिलाने से दशमूल कहाते हैं, दशमूल, त्रिदोष,श्वास, खांसी,शिररोग, तन्द्रा, सूजन,ज्वर,आनाह,पसलीकी पीड़ा,और अरुचिका नाशक होता है ॥ १५ ॥

जीवइतिशाकविशेषः । शर्करावन्मधुरपुष्पाव्रततिः ॥

जीवन्तीजीवनीजीवाजीवनीयामधुस्रवा।मंगल्यानामधेयाचशाकश्रेष्ठापयस्विनी॥जीवन्तीशीतलास्वादु.स्निग्धादोपत्रयापहा । रसायनीवलकरीचक्षुष्याग्राहिणीलघु ॥१६॥

जीव (डोंडी) शाक विशेप शक्कर के समान मधुर पुष्पवाली लता के नाम और गुण ॥

जीवन्ती,जीवनी, जीवा,जीवनीया, मधुस्रवा, मंगल्या, शाकश्रेष्ठा और पयस्विनी,यह जीवन्ती के नाम हैं, जीवन्ती, शीतल, मधुर,स्निग्ध, त्रिदोपनाशक, रसायन, वलकारक, नेत्रहित, ग्राही, और लघुहोती है ॥ १६ ॥

अनन्तरवनमूंग । अथमुद्गपर्णी ॥

मुद्गपर्णीकाकपर्णीसूर्य्यपर्ण्यल्पिकासहा । काकमुद्गाचसाप्रोक्तातथामार्ज्जारगंधिका मुद्गपर्णीहिमारूक्षातिक्तास्वादुश्चशुक्रला । चक्षुष्याक्षतशोथघ्नीग्राहिणीज्वरदाहनुत् ॥ दोषत्रयहरीलघ्वीग्रहण्यर्शोऽतिसारजित् ॥ १७ ॥

वनमूंग के नाम और गुण ॥

मुद्गपर्णी,काकपर्णी,सूर्य्यपर्णी,अल्पिका,सहा,काकमुद्गा और मार्जारगंधिका यह वनमूंगके नाम हैं वनमूंग,शीतल,रूखी तिक्त, मधुर,वीर्य्यवर्द्धक, ग्राही,हलकी और घाव,सूजन, ज्वर, दाह, त्रिदोष, संग्रहणी,बवासीर और अतीसार नाशक होती है ॥ १७ ॥

अथमापपर्णी ॥

मापपर्णीसूर्य्यपर्णीकाम्बोजीहयपुच्छिका । पाण्डुलोमशपर्णीच कृष्णवृन्तामहासहा मापपर्णीहिमातिक्तारूक्षाशुक्रबलास्रकृत् ।मधुराग्राहिणीशोथवातपित्तज्वरास्रजित् १८॥

वन उर्दके नाम और गुण ॥

मापपर्णी, सूर्य्य पर्णी, काम्बोजी, हयपुच्छिका, पांडु, लोमशपर्णी, कृष्णवृन्ता और महासहा यह वनउर्द के नाम हैं, वनउर्द, शीतल, तिक्त, रूखा, वीर्य्यवर्द्धक, कफकारी, मधुर, ग्राही और सूजन, वात, पित्त, ज्वर, तथा रुधिर नाशक होता है ॥ १८ ॥

अथजीवनीयगणस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

अष्टवर्गःसयष्टीकोजीवन्तीमुद्गपर्णिका । मापपर्णीगणोऽयन्तुजीवनीयगण.स्मृतः ॥ जीवनोमधुरश्चापिनाम्नासपरिकीर्तित.।जीवनीयगण.प्रोक्त शुक्रकृद्बृंहणोहिमः॥गुरुगर्भप्रदस्तन्यकफकृत्पित्तरक्तहृत् । तृष्णांशोषंज्वरंदाहंरक्तपित्तव्यपोहति ॥ १९ ॥

जीवनीय गणका लक्षण और गुण ॥

प्रथम कहाहुआ अष्टवर्ग, मुलहटी, जीवन्ती, वनमूंग और वनउर्द, यह सब मिलकर जीवनीय गण कहाता है, इसको जीवन और मधुर भी कहते हैं, जीवनीय गण, वीर्य्य वर्द्धक, शरीरका पुष्टकारक, शीतल, भारी, गर्भदायक, दूधपैदा करने वाला, कफकारक और रक्तपित्त, तृषा, शोष, ज्वर, दाह, पित्त तथा रुधिर के दोषों का नाशक होता है ॥ १९ ॥

अथशुक्लरक्तैरण्डः ॥

शुक्लएरण्डआमण्डश्चित्रोगन्धर्वहस्तक।पञ्चांगुलोवर्द्धमानोदीर्घदण्डोऽप्यदण्डकः॥ वातारिस्तरुणश्चापिरुबूकश्चनिगद्यते । रक्तोऽपरोरुबूकःस्यादुरुबूकोरुबूस्तथा ॥ व्याघ्रपुच्छश्चवातारिश्चञ्चुरुत्तानपत्रकः। एरण्डयुग्मंमधुरमुष्णंगुरुविनाशयेत् ॥ शूलशोथकटीवस्तिशिरःपीडोदरज्वरान्। ब्रध्नश्वासकफानाहकासकुष्ठाममारुतान् ॥ एरण्डपत्रंवातघ्नंकफक्रिमिविनाशनम्। मूत्रकृच्छ्रहरञ्चापिपित्तरक्तप्रकोपणम् ॥ वाताग्र्यंग्रदलंगुल्मंवस्तिशूलहरंपरम्। कफवातकृमीन्हन्तिवृद्धिंसप्तविधामपि ॥ एरंडफलमत्युष्णंगुल्मशूलानिलापहम् । यकृत्प्लीहोदराशोघ्नंकटुकंदीपनंपरम्॥ तद्वन्मज्जाचविड्भेदीवातश्लेष्मोदरा पहः॥ २० ॥

श्वेत और रक्त एरंड के नाम गुण ॥

आमंड, चित्र, गन्धर्व हस्तक, पंचांगुल, वर्द्धमान, दीर्घदंड, अदंडक, वातारि, तरुण औररुबूक यह श्वेत एरंडकेनामहैं और लालएरंडकोरुबूक उरुबूक, रुबू, व्याघ्रपुच्छ, वातारि, चंचु और उत्तानपत्रककहतेहैं यहदोनोंप्रकारके एरंड मधुर, उष्ण, भारी और शूल, सूजन कमरकी पीडा, मूत्राशयकी पीडा, शिरकी पीड़ा, उदर, ज्वर, बद, श्वास, कफ, आनाह, खांसी, कुष्ठ, आम तथा वातनाशकहोते हैं, एरंडके पत्ते, वात, कफ, कृमितथा मूत्रकृच्छ्रनाशक और रक्तपित्तकारक होते हैं अरंडकी कोपल गुल्म मूत्राशयकी पीडा कफ वात, कृमि और सातप्रकारके वृद्धरोगोंको नाशकरतीहै, अरंडका फल, अत्यन्त उष्ण, कटु, अतिदीपन, और गुल्म, शूल, वात, यकृत, प्लीहा, उदर और बवासीरका नाशकहोताहै, इसकी मींगी मलभेदक और वात कफ तथा उदर रोगनाशक होतीहै ॥ २० ॥

अथ शुक्लरक्तार्कइतिलोके ॥

अलर्कोगुणरूपःस्यान्मन्दारोवसुकोऽपिच। श्वेतपुष्प.सदापुष्प.सचालार्क.प्रतापसः रक्तोपरोर्कनामास्यादर्कपर्णोविकीर्णक. । रक्तपुष्पःशुक्लफलस्तथास्फोटः प्रकीर्तितः ॥ अर्कद्वयंसरंवातकुष्ठकण्डूविषव्रणान् । निहन्तिप्लीहगुल्मार्शश्लेष्मोदरशकृत्कृमीन् ॥ अलर्ककुसुमंवृष्यंलघुदीपनपाचनम्। अरोचकप्रसेकार्शः कासश्वासनिवारणम् ॥ रक्तार्कपुष्पंमधुरंसतिक्तंकुष्ठकृमिघ्नंकफनाशनञ्च । अर्शोविषंहन्तिचरक्तपित्तंसंग्राहिगुल्मेश्वयथौहितंतत् ॥ क्षीरमर्कस्यतिक्तोष्णंस्निग्धंसलवणंलघु। कुष्ठगुल्मोदरहरंश्रेष्ठमेतद्विरेचनम्॥ २१ ॥

श्वेत और लालआकके नामगुण ॥

गणरूप श्वेतार्क मंदारवसुक श्वेतपुष्प सदापुष्प अलर्क प्रतापस यह श्वेतमदार के नामहैं लाल मदारको अर्कपर्ण विकीरण रक्तपुष्प और आस्फोट कहतेहैं दोनोंप्रकार के आक सारक और वात कुष्ठ खुजली विष घाव प्लीहा गुल्म बवासीर कफ उदर तथा विष्ठाके कृमियोंके नाशकहोते हैं श्वेत आक के पुष्प वीर्यवर्द्धक लघुदीपन पाचन और अरुचि कफादिकोंका वहना बवासीर खांसी तथा श्वासके नाशकहोतेहैं लालआक के पुष्प मधुर तिक्त ग्राही और कुष्ठ कृमि कफ बवासीर विष रक्त पित्त गुल्म तथा सूजन के नाशक होतेहैं आकका दूध तिक्त लवण उष्ण स्निग्ध हलका और कुष्ठ गुल्म तथा उदर नाशकहोताहै और यह विरेचन के लिये भी बहुतश्रेष्ठहै ॥ २१ ॥

अथ सेहुण्ड ॥

सेहुण्डःसिंहतुण्डःस्याद्वज्रीवज्रद्रुमोऽपिच । सुधासमन्तदुग्धाचस्तुक्स्त्रियांस्यात् स्नुहीगुडा ॥ सेहुण्डोरेचनस्तीक्ष्णोदीपनःकटुकोगुरुः । शूलमष्ठीलिकाध्मानःकफगुल्मोदरानिलान् ॥ उन्मादमोहकुष्ठार्शःशोथमेदोऽश्मपाण्डुताः । व्रणशोथज्वरप्लीहविषदूर्वीविषंहरेत् ॥ उष्णवीर्य्यस्नुहीक्षीरंस्निग्धञ्चकटुकंलघु । गुल्मिनांकुष्ठिनाञ्चापितथैवोदररोगिणाम् ॥ हितमेतद्विरेकार्थेयेचान्येदीर्घरोगिणः ॥ २२ ॥

थूहरके नाम और गुण ॥

सेहुंड, सिंहतुंड, वज्री, वज्रद्रुम सुधा, समन्तदुग्धा, स्नुक स्नुही और गुडा यह थूहरके नामहैं, थूहर, दस्तावर तीक्ष्ण, दीपन, कटु, भारी और शूल, अष्टीलिका, आध्मान, कफ, गुल्म, उदर, वात, उन्माद, मोह, कुष्ठ, बवासीर, सूजन, मेद, पथरी, पांडु, घावकी सूजन, ज्वर, प्लीहा, विष, तथा नेत्र के मलको विषका नाशक होताहै, थूहर का दूध, वीर्यमें उष्ण, स्निग्ध, कटु, हलका और गुल्मरोगी, कुष्ठी, उदररोगी तथा अन्य प्राचीन रोगवालोंको विरेचनके लिये अत्यन्त हितकारी है ॥ २२ ॥

अथसेहुण्डभेदः।शातलाअनेनैवनाम्नाप्रसिद्धा ॥

शातलासप्तलासाराविमलाविदुलाचसा । तथानिगदिताभूरिफेनाचर्मकषेत्यपि ॥ शातलाकटुकापाकेवातलाशीतलालघुः । तिक्ताशोथकफानाहपित्तोदावर्त्तरक्तजित् ॥ २३ ॥

शातलाके नाम और गुण ॥

शातला, सप्तला सारा, बिमला, विदुला, भूरिफेना और चर्मकशा, यह शातलाके नामहैं, शातला पाकमें कटु, बादी, शीतल, हलका तिक्त, और सूजन, कफ, आनाह, पित्त, उदावर्त्त तथा रक्तनाशक होताहै ॥ २३ ॥

अथ करिहारी ॥

कलिहारीतुहलिनीलाङ्गलीशक्रपुष्प्यपि । विशल्याग्निशिखानन्तावह्निचक्राचगर्भनुत् ॥ कलिहारीसराकुष्ठशोफार्शोव्रणशूलजित् । सक्षाराश्लेष्माजित्तिक्ताकटुकातुवरापिच ॥ तीक्ष्णोष्णक्रिमिहल्लघ्वीपित्तलागर्भपातिनी ॥ २४ ॥

करिहारीके नाम और गुण ॥

कलिहारी, हलिनी, लांगली, शक्रपुष्पी, विशल्या, अग्निशिखा, अनन्ता, वह्निचक्रा और गर्भनुत

यह करिहारी के नामहैं, करिहारी, क्षारक, क्षार, तिक्त कटु कषाय, तीक्ष्ण उष्ण, हलकी, पित्तवर्द्धक और कुष्ठ, सूजन, ववासीर, घाव, शूल, कफ, कृमि तथा गर्भकी नाशकहोती है॥ २४॥

अथ श्वेतरक्तकरवीरः॥

करवीरःश्वेतपुष्पःशतकुम्भोऽश्वमारकः॥ द्वितीयोरक्तपुष्पश्चचण्डातोलगुडस्तथा॥ करवीरद्वयंतिक्तंकषायंकटुकञ्चतत्। व्रणलाघवकृन्नेत्रकोपकुष्ठव्रणापहम्॥ वीर्योष्णंकृमिकण्डूघ्नंभक्षितंविषवन्मतम्॥ २५॥

श्वेत और रक्त कनेरकेनाम गुण॥

करवीर, श्वेत पुष्प, शतकुम्भ, और अश्व मारक, यह श्वेत कनेरके नामहैं और लालकनेरको रक्त पुष्प चंडात और लगुड कहतेहैं, दोनों प्रकारके कनेर, तिक्त कषाय, कटु, घावके हलके करनेवाले, वीर्यमेंउष्ण और नेत्रोंकाकोप, कुष्ठ, घाव, कृमितथा खुजलीनाशक होतेहैं और खानेसे विषके समान गुण दायक होतेहैं॥ २५॥

अथ धत्तूरः॥

धत्तूर धूर्त्त धत्तूरा उन्मत्तः कनकाह्वयः। देवताकितवस्तूरीमहामोहीशिवप्रियः॥ मातुलोमदनश्चास्यफलेमातुलपुत्रकः। धत्तूरोमदवर्णाग्निवातकृज्ज्वरकुष्ठनुत्॥ कषायोमधुरस्तिक्तोयूकालिक्षाविनाशकः॥ उष्णोगुरुर्व्रणश्लेष्मकंडूकृमिविषापहः॥ २६॥

धतूरे के नाम और गुण

धतूर धूर्त धूस्तूर कनक देविका कितवतूरी महामोही शिवप्रिय मातुल और मदन यह धतूरे के नामहैं इसके फलको, मातुल, पुत्रकहतेहैं धतूरा, मदकारी, वर्णकोहित अग्निवर्द्धक, वादी, कषाय, मधुर तिक्त, उष्ण भारी और जुआं लीख घाव कफ, खुजली, कृमि, तथा विष नाशक होताहै॥ २६॥

अथ अरूसा॥

वासकोवाशिकावासाभिषङ्माताचसिंहिका। सिंहास्योवाजिदन्तास्यादाटरूषोऽटरूषकः॥ आटरूषोवृषस्ताम्रःसिंहपर्णश्चसस्मृतः। वासकोवातकृत्स्वर्य्यःकफपित्तास्रनाशनः॥ तिक्तस्तुवरकोहृद्योलघुःशीतस्तृडर्त्तिहृत्। श्वासकासज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापहः॥ २७॥

अडूसाके नामें और गुण॥

वासक, वाशिका, वासा भिषङ्ममाता सिंहिका, सिंहास्य वाजिदन्ता आटरूष वृष आटरूषक और सिंहपर्ण, यह अडूसेके नामहैं अडूसा वादी स्वरकोहित तिक्त कषाय हृदयको हित हलका शीतल और कफ पित्त रुधिर दोष तृषा श्वास खांसी ज्वर छर्दि प्रमेह कुष्ठ तथाक्षय रोगका नाशक होताहै॥२७॥

अथ दवन् पापरा॥

पर्पटोवरतिक्तश्चस्मृतःपर्पटकश्चसः। कथितःपांशुपर्य्यायस्तथाकवचनामकः॥ पर्पटोहन्तिपित्तास्रभ्रमतृष्णाकफज्वरान्। संग्राहीशीतलस्तिक्तोदाहनुद्वातलोलघुः॥ २८॥

पित्त पापडेके नाम और गुण ॥

परपट वरातिक्त पर्पटक पांशु और कवच यह पित्त पापडेके नामहैं पित्तपापड़ा पित्त रक्तदोष भ्रम तृषा कफ ज्वर तथा दाहका नाशक ग्राही शीतल तिक्त वादी और हलका होताहै ॥ २८ ॥

अथ निम्बः ॥

निम्बःस्यात्पिचुमर्दश्चपिचुमन्दश्चतिक्तकः।अरिष्टःपारिभद्रश्चहिंगुनिर्य्यासइत्यपि निम्बः शीतोलघुर्ग्राहीकटुपाकोग्निवातनुत् । अहृद्यःश्रमतृट्कासज्वरारुचिक्रमिप्रणुत् ॥ व्रणपित्तकफच्छर्दिकुष्ठहृल्लासमेहनुत्। निम्बपत्रंस्मृतंनेत्र्यंक्रमिपित्तविषप्रणुत् ॥ वातलंकटुपाकञ्चसर्व्वारोचककुष्ठनुत् । निम्बफलंरसेतिक्तंपाकेतुकटुभेदनम् ॥ स्निग्धंलघूष्णंकुष्ठघ्नंगुलमार्शःक्रमिमेहनुत् ॥ २९ ॥

नींबके नामओर गुण ॥

पिचुमर्द पिचुमन्द तिक्तक अरिष्टपारिभद्र और हिंगु निर्यास यहनींबकेनामहैं नींब शीतल हलका ग्राहीपाकमेंकटु हृदयको अप्रिय और श्रम तृषा खांसी ज्वर अरुचि कृमि घाव पित्त कफ छर्दि कुष्ठ मतली अग्नि वात तथा प्रमेहका नाशक होताहै नींबके पत्ते नेत्रोंको हित वादी पाकमें कटुऔर कृमि पित्त विष सवप्रकारकी अरुचि तथा कुष्ठके नाशकहोतेहैं नींवकी निंवौरी रसमें तिक्त पाकमें कटु भेदक स्निग्ध हलकी उष्ण और कुष्ठ गुल्म ववासीर कृमि तथा प्रमेहकी नाशकहोतीहै ॥ २८ ॥

अथ वकाइन ॥

महानिम्बःस्मृतोद्रेकारम्यकोविषमुष्टिकाः । केशमुष्टिनिम्बकश्चकार्मुकोजीवइत्यपि ॥ महानिम्बोहिमोरूक्षस्तिक्तोग्राहीकषायकः । कफपित्तभ्रमच्छर्दिकुष्ठहृल्लासरक्तजित्॥ प्रमेहश्वासगुल्मार्शोमूषिकाविषनाशनः ॥ ३० ॥

वकायन के नाम और गुण ॥

महानिंव, अद्रेका, रम्यक,विषमुष्टिक, केश मुष्टि, निंवक, कार्मुक और जीव, यह वकायन के नाम हैं वकायन, शीतल, रूखी, तिक्त, ग्राही, कषाय और कफ, पित्त, भ्रम, छर्दि, कुष्ठ, मतली, रक्तदोष, प्रमेह, श्वास, गुल्म, ववासीर तथा मूसेके विषकी नाशक होती है, ॥ ३० ॥

अथ फरहद ॥

पारिभद्रोनिम्बतरुर्म्मन्दारःपारिजातकः । पारिभद्रोऽनिलश्लेष्मशोथमेदःक्रमिप्रणुत् ॥ पत्रंचपित्तरोगघ्नंकर्णव्याधिविनाशनम् ॥ ३१ ॥

जलनींब के नाम और गुण ॥

पारिभद्र, निंवतरु,मन्दार, और पारिजातक यह जलनींबके नामहैं जलनींव,वात कफ सूजन मेद और कृमिनाशक होताहै उसके पत्ते पित्तके रोग और कर्णके रोगके नाशक होतेहैं ॥३१ ॥

अथ कचनारः ॥

काञ्चनारःकाञ्चनकोगण्डारिःशोणपुष्पकः। (अथकचनारभेदः ।) कोविदारश्चमरिकःकुद्दालोयुगपत्रकः । कुण्डलीताम्रपुष्पश्चस्मन्तकःस्वल्पकेशरी ॥ काञ्चनारोहि

मोग्रहीतुवरश्लेष्मपित्तनुत् । कृमिकुष्ठगुदभ्रंशगण्डमालाव्रणपहः ॥ कोविदारोऽपितद्व त्स्यात्तयोःपुष्पंलघुस्मृतम् । रूक्षंसंग्राहिपित्तास्रप्रदरक्षयकासनुत् ॥ ३२ ॥

कचनारके नाम और गुण ॥

कांचनारि,कांचनक,गंडारि, और शोणपुष्पक यह कचनारके नामहैं और दूसरे प्रकारके कचनारको कोविदार, मरिक, कुद्दाल, युगपत्रक, कुंडली, ताम्र पुष्प, स्मन्तक, और स्वल्प केशरी कहते हैं कचनार. शीतल, ग्राही, कषाय, और कफ, पित्त, कृमि, कुष्ठ, गुदभ्रंश, गण्डमाला, तथा घावकी नाशक होतीहै कोविदार, मेंभी कचनारके समान गुण होतेहैं इनदोनोंके पुष्प हलके, रूखे, ग्राही, और पित्त रक्तदोष, प्रदर, क्षय, तथाखांसीके नाशक होतेहैं ॥ ३२ ॥

अथ सहिञ्जनश्यामःश्वेतरक्तश्च ॥

शोभाञ्जनःशिग्रुतीक्ष्णोगन्धकाक्षीवमोचकः।तद्बीजंश्वेतमरिचंमधुशिग्रुःसलोहितः॥ शिग्रुःकटुःकटुःपाकेतीक्ष्णोष्णोमधुरोलघुः । दीपनोरोचनोरूक्षःक्षारस्तिक्तोविदाहकृत् ॥ संग्राहीशुक्लोहृद्योपित्तरक्तप्रकोपनः । चक्षुष्यःकफवातघ्नोविद्रधिश्वयथुकृमीन् ॥ मेदोपचीविषप्लीहगुल्मगण्डव्रणान्हरेत् । श्वेतःप्रोक्तगुणोज्ञेयोविशेषाद्दाहकृद्भवेत् ॥ प्लीहानंविद्रधिंहन्तिव्रणघ्नःपित्तरक्तहृत् । मधुशिग्रुःप्रोक्तगुणोविशेषाद्दीपनःसरः ॥ शिग्रुवल्कलपत्राणांस्वरसःपरमार्त्तिहृत् । चक्षुष्यंशिग्रुजंबीजंतीक्ष्णोष्णंविषनाशनम् ॥ अवृष्यंकफवातघ्नंतन्नस्येनाशिरोर्त्तिनुत् ॥ ३३ ॥

श्वेतश्याम और लाल सहजनके नामऔर गुण ॥

शोभांजन, शिग्रु,तीक्ष्ण,गन्धक,अक्षीव मोचक यह सहंजनके नामहैं सहंजनके बीजको श्वेतमिर्च कहतेहैं और लाल सहंजनको मधुशिग्रु कहते हैं सहंजन, कटु, पाकमेंकटु, तीक्ष्ण उष्ण, मधुर, हलका, दीपन, रुचिकारक, रूखा,क्षार, तिक्त, विदाही, ग्राही, वीर्यवर्द्धक, हृदयकोहित, रक्तपित्तके कोपका करनेवाला नेत्रहित और कफ, वात, विद्रधि, सूजन, कृमि, मेध, अपची, विष, प्लीहा, गुल्म, गलगंड तथाघावका नाशक होताहै और श्वेत सहंजनमें भी यहीगुणहैं और विशेष करके दाहकारी प्लीहा, विद्रधि, घाव, पित्त, तथा रक्त दोषका नाशक होताहै और लाल सहंजन में भी यहीगुणहोतेहैं यह विशेष करके दीपन और सारक होताहै सहंजन के वल्कल और पत्तों कारस पीडाका अत्यन्त नाशक होताहै सहंजनके बीज नेत्रोंकोहित तीष्ण, उष्ण विष नाशक वीर्यको अहित और कफ तथा वायुनाशक होतेहैं इनकी हुलाससे शिरके रोग नष्ट होतेहैं ॥ ३३ ॥

अथ श्वेतपुष्पानीलपुष्पाअपराजिता ॥

आस्फोतागिरिकर्णीस्याद्विष्णुक्रान्तापराजिता । अपराजितेकटुमेध्येशीतेकण्ठ्येसुदृष्टिदे ॥ कुष्ठमूत्रत्रिदोषामशोथव्रणविषापहे। कषायेकटुकेपाकेतिक्तेचस्मृतिबुद्धिदे ३४॥

श्वेत और नीले पुष्पकी विष्णुक्रान्ता के नाम और गुण ॥

आस्फोता,गिरिकर्णी,विष्णुक्रान्ता,औरअपराजिता यह विष्णुक्रान्ताके नामहैं दोनोंप्रकारकी विष्णुक्रान्ता, कटु,मेधाकोहित,शीतल, कंठकोहित,सुन्दरदृष्टि देनेवाली कषाय, पाकमेंकटु तिक्त, स्मृति तथा बुद्धिदेनेवाली और कुष्ठ मूत्रदोष, त्रिदोष आम सूजन घाव तथा विषकी नाशक होती है ॥ ३५॥

अथ मेउडीसम्भालू । सिन्दुवारइतिच ॥

सिन्दुवारःश्वेतपुष्पःसिन्दुकःसिन्दुवारकः।नीलपुष्पीतुनिर्गुण्डीशेफालीसुवहाचसा॥ सिन्दुकःस्मृतिदस्तिक्तःकषायःकटुकोलघुः केश्योनेत्रहितोहन्तिशूलशोथाममारुतान् ॥ कृमिकुष्ठारुचिश्लेष्मज्वरान्नीलापितद्विधा। सिन्दुवारदलंजन्तुवातश्लेष्महरंलघु॥३५॥

संभालूके नाम और गुण ॥

सिन्धुवार, श्वेतपुष्प सिन्दुक और सिन्दुवारक यह संभालूके नामहैं नीले संभालूको नील पुष्पी निर्गुण्डी शेफाली और सुवहाकहतेहैं संभालू स्मृतिदायक तिक्तकषायकटु हलकाकेश तथानेत्रों कोहित औरशूल सूजन आमवात कृमि कुष्ठ अरुचि कफ तथा ज्वर नाशक होताहै नीला संभालू भीइसीके समान गुणवाला होताहै संभालू के पत्ते हलके और कृमि वातके नाशक होतेहैं ॥ ३५ ॥

अथ कोरैया ॥

कुटजःकूटजःकौटीवत्सकोगिरिमल्लिका । कालिङ्गःशक्रशाखीचमल्लिकापुष्पइत्यपि ॥ इन्द्रोयवफलःप्रोक्तोवृक्षकःपाण्डुरद्रुमः । कुटजःकटुकोरूक्षोदीपनःस्तुवरोहिमः ॥ अर्शोऽतिसारपित्तास्रकफतृष्णामकुष्ठनुत् ॥ ३६ ॥

कुरैयाके नाम और गुण ॥

कुटज, कूटज, कौट, वत्सक, गिरिमल्लिका, कालिंग, शक्रशाखी, मल्लिकापुष्प, इन्द्र, यव फल, वृक्षक, और पाण्डुरद्रुम, यह कुरैयाके नाम हैं, कुरैया, कटु रूखी, दीपन, कषाय, शीतल और बवासीर, अतीसार, पित्त, रक्त, कफ, तृषा, आम, तथा कुष्ठ नाशक होती है ॥ ३६ ॥

अथकण्टकरंजाकरञ्जघोराकरञ्ज ॥

करञ्जोनक्तमालश्चकरञ्जश्चिरविल्वकः । घृतपूर्णकरञ्जोऽन्यःप्रकीर्य्यःपूतिकोऽपि च ॥ सचोक्तःपूतिकरञ्जःसोमवल्कश्चसस्मृतः । करञ्जःकटुकस्तीक्ष्णोवीर्य्योष्णोयोनिदोषहृत् ॥ कुष्ठोदावर्त्तगुल्मार्शोव्रणकृमिकफापहः । तत्पत्रंकफवातार्शःकृमिशोथहरंपरम् ॥ भेदनंकटुकंपाकेवीर्य्योष्णंपित्तलंलघु । तत्फलंकफवातघ्नंमेहार्शःकृमिकुष्ठजित् ॥ घृतपूर्णकरञ्जोऽपिकरञ्जसदृशोगुणैः ॥ ३७ ॥

करंजुआके नाम और गुण ॥

करंजु, नक्तमाल, करज और चिरविल्वक, यह करंजुएके नाम हैं और दूसरे प्रकारके करंजुएको घृतपूर्ण प्रकीर्य, पूतिका, पूतिकरंज और सोमवल्क कहते हैं, करंजुआ,कटु, तीक्ष्ण, वीर्यमें उष्ण और योनिके दोष, कुष्ठ, उदावर्त्त, गुल्म, बवासीर, घाव, कृमि, तथा कफ नाशक होताहै, करंजुएके पत्ते, कफ, वात, बवासीर, कृमि तथा सूजन के नाशकरने में अत्यन्त श्रेष्ठ भेदक पाक में कटु वीर्य में उष्ण, पित्तवर्द्धक और हलके होते हैं और करंजुए के फल , कफ, वात, प्रमेह, बवासीर कृमि, तथा कुष्ठ नाशक होते हैं, दूसरे प्रकारके करंजुए में भी इसी प्रकारके गुण होते हैं ॥ ३७ ॥

अथ ध्वरारि ॥

उदकीर्य्यस्तृतीयोऽन्यःषड्ग्रन्थाहस्तिवारुणी । मर्कटीवायसीचापिकरञ्जीकरभ

ञ्जिका ॥ करञ्जीस्तम्भनीतिक्तातुवराकटुपाकिनी । वीर्य्योष्णावमिपित्तार्शःकृमिकुष्ठप्रमेह जित् ॥ ३८ ॥

डार करंज के नाम और गुण ॥

उदकीर्य, षड्ग्रंथा, हस्तिवारुणी, मर्कटी, वायसी, करंजी, और करभंजिका, यह डारकरंज के नाम हैं, डारकरंज, स्तंभन, तिक्त, कषाय, पाक में कटु, उष्ण, और छर्दि, पित्त ववासीर, कृमि, कुष्ठ, तथा प्रमेह नाशक होताहै ॥ ३८ ॥

अथश्वेतरक्तगुञ्जा ॥

श्वेतारक्तोच्चटाप्रोक्ताकृष्णलाचापिसास्मृता । रक्तासाकाकचिञ्चीस्यात्काकानन्ताच रक्तिका ॥ काकादनीकाकपीलुःसास्मृताकाकवल्लरी । गुञ्जाद्वयन्तुकेश्यंश्यात्वातपित्त ज्वरापहम् ॥ मुखशोषभ्रमश्वासतृष्णामदविनाशनम् । नेत्रामयहरंवृष्यंबल्यंकण्डूव्रणं हरेत् ॥ कृमीन्द्रलुप्तकुष्ठानिरक्ताचधवलापिच ॥ ३९ ॥

श्वेत और लाल घोंघची के नाम गुण ॥

उच्चटा और कृष्णला, यह श्वेत घोंघची के नाम हैं और लाल घोंघची को काकचिंची, काकानन्ता, रक्तिका, काकादनी, काकपील और अंगारवल्ली कहते हैं, यह दोनों प्रकारकी घोंघची केशोंकोहित, वीर्य बर्द्धक, बलकारक, और वात, पित्त, ज्वर, मुखका सुखना, घाव, श्वास, तृषा, उन्मत्तता, नेत्ररोग, खुजली, घाव, कृमि, गंजापन, तथा कुष्टकी नाशक होती हैं ॥ ३९ ॥

अथ कपिकच्छु ॥

कपिकच्छुरात्मगुप्ता वृष्याप्रोक्ताचमर्कटी । अजराकण्डुराव्यंगा दुःस्पर्शाप्रावृषायणी ॥ लांगलीशूकसिम्बीच सैवप्रोक्तामहर्षिभिः । कपिकच्छुर्भृशंवृष्या मधुराबृंहणीगुरुः ॥ तिक्तावातहरीबल्या कफपित्तास्रनाशिनी । तद्बीजंवातशमनं स्मृतंवाजीकरं परम् ॥ ४० ॥

कवांच के नाम और गुण ॥

कपिकच्छू, आत्मगुप्ता, वृष्यप्रोक्ता, मर्कटी, अजरा, कंडुरा, अव्यंगा, दुस्पर्शा, प्रावृषायणी, लांगली, और शूकशिंबी यह कवांच के नाम हैं, कवांच अत्यन्त वीर्यवर्द्धक, मधुर, पोषक, भारी, बलकारक, तिक्त, और कफ, पित्त, तथा रक्त दोष नाशक होताहै, कवांचका बीज, वात नाशक और अत्यन्त वीर्यवर्धक होता है ॥ ४० ॥

अथ रोहिणी ॥

मांसरोहिण्यतिरुहा वृत्ताचर्मकरीकृशा । प्रहारवल्लीविकशा वीरवत्यपिकथ्यते ॥ स्यान्मांसरोहिणी वृष्यासरादोषत्रयापहा ॥ ४१ ॥

रोहिणी के नाम और गुण ॥

मांसरोहिणी, अतिरुहा, वृत्ता, चर्मकशा, कशा, प्रहारवल्ली, विकशा और वीरवती, यह मांसरोहिणीके नाम हैं, मांसरोहिणी, वीर्यवर्द्धना, सारक, और त्रिदोष नाशक होती है ॥ ४१ ॥

अथ चिह्लल ॥

चिह्लकोवातनिर्हारी श्लेष्मघ्नोधातुपुष्टिकृत् । आग्नेयोविषवद्यस्य फलमत्स्यनिषूदनम् ॥ ४२ ॥

चील्ह के गुण ॥

चिल्हक, वात कफ नाशक, धातुपोषक, और अग्निगुण युक्त होता है, इसका फल विषके समान मछलियों का नाशक होता है ॥ ४२ ॥

अथ टङ्कारि ॥

टङ्कारिर्वातजित्तिक्ता श्लेष्मघ्नीदीपनीलघुः । शोथोदरव्यथाहन्त्री हितापीठविसर्पिणाम् ॥ ४३ ॥

टंकारी के गुण ॥

टंकारी, वातनाशक, तिक्त, दीपन, हलकी, सूजन तथा उदरकी व्यथा की नाशक और पीठ विसर्परोग वालोंको हितकारक होती है ॥ ४३ ॥

अथ वेतसः ॥

वेतसानम्रकःप्रोक्तो वाणीरोवञ्जुलस्तथा । अभ्रपुष्पश्चविदुलो रथशीतश्चकीर्त्तितः ॥ वेतसःशीतलोदाह शोथार्शोयोनिरुक्प्रणुत् । हन्तिविसर्पकृच्छास्र पित्ताश्मरककफानिलान् ॥ ४४ ॥

वेत के नाम और गुण ॥

वेतस, नम्रक, वानीर, वजुल, अभ्रपुष्प, विदुल, रथ, और शीत, यह वेतके नाम हैं, वेत, शीतल और दाह, सूजन, ववासीर योनिरोग, विसर्प मूत्रकृच्छ्र, रक्त पित्त, पथरी, कफ तथा वात नाशक होता है ॥ ४४ ॥

अथ जलवेतसः ॥

निकुञ्चकःपरिव्याधोनादेयोजलवेतसः । जलजोवेतसःशीतःकुष्ठहृद्वातकोपन॥४५॥

जलवेतके नाम और गुण ॥

निकुंचक, परिव्याध नादेय और जलवेतस, यह जलवेत के नामहैं जलवेत, शीतल कुष्ठ नाशक और वायुका कोप करनेवाला होता है ॥ ४५ ॥

अथ इज्जलसमुद्रफल इतिलोके ॥

इज्जलोहिज्जलश्चापि निचुलश्चाम्बुजस्तथा । जलवेतसवद्वेद्यो हिज्जलोऽयंविषापहः ॥ ४६ ॥

समुद्रफलके नाम और गुण ॥

इज्जल, हिज्जल, निचुल और अम्बुज, यह समुद्रफल के नाम हैं समुद्रफल, जलवेत के समान गुणवाला और विषनाशक होताहै ॥ ४६ ॥

अथ ढेरा ॥

अङ्कोटोदीर्घकीलःस्या दङ्कोलश्चनिकोचक । अङ्कोटकःकटुस्तीक्ष्णःस्निग्धोष्णस्तु

वरोलघुः ॥ रेचनःकृमिशूलाम शोफग्रहविषापहः । विसर्पककफपित्तास्र मूषकाहिविषाप हः ॥ तत्फलंशीतलंस्वादु श्लेष्मघ्नंबृंहणंगुरु । वल्यंविरेचनंवात पित्तदाहक्षयास्र जित् ॥ ४७ ॥

पिस्ते के नाम और गुण ॥

अंकोट, दीर्घकील, अंकोट और निकोचक, यह पिस्ते के नामहैं पिस्तेकावृक्ष,कटु, तीक्ष्ण, स्निग्ध उष्ण कषाय,हलका, दस्तावर और कृमि, शूल, आम, सूजन ग्रहदोष, विष, विसर्प, कफ, पित्त रक्त दोष, मूसेका विष तथा सर्पके विषका नाशक होताहै इसका फल, शीतल, मधुर, पोषक, भारी, बल कारक, दस्तावर और कफ वात पित्त, दाह क्षयतथा रक्तदोषका नाशक होताहै ॥ ४७ ॥

अथ वरिआर सहदेवी ककहिआ गुलसकरी । इति बलाचतुष्टयम् ॥

बलावाट्यालिकावाट्या सेवबाट्यालकाऽपिच । महाबलापीतपुष्पा सहदेवीचसास्मृ ता ॥ ततोऽन्यातिबलाऋष्य प्रोक्ताकङ्कतिकाचसा । गांगेरुकीनागबला ह्यपाह्रस्वाग वेधुका ॥ बलाचतुष्टयंशीतं मधुरंबलकान्तिकृत् । स्निग्धंग्राहिसमीरास्रपित्तास्रक्षतना शनम् ॥ बलामूलस्त्वचऽचूर्णं पीतंसक्षीरशर्करम् । मूत्रातिसारंहरति दृष्टमेतन्नसंशयः॥ हरेन्महाबलाकृच्छ्रं भवेद्वातानुलोमनी । हन्यादतिबलामेहं पयसासितयासमम् ॥४८॥

वरियारा सहदेई ककैहा,गुलशकरी यहबलाचतुष्टयहै इसके नाम और गुण ॥

बला, वाट्यालिका, वाट्या, और वाट्यालक, यह वरियाराके नामहैं महाबला, पीतपुष्पा, और सह देवी, यह सहदेईकी के नाम हैं अतिबला रिष्यप्रोक्ता और कंकतिका, यह ककैहाके नामहैं गांगेरुकी, नागबला और ह्रस्वगवेधुका, यहगुलशकरी के नामहैं यह चारों,शीतल,मधुर,बलवर्द्धक, कान्तिकारक स्निग्ध,ग्राही और वात, रक्त पित्त, रक्तदोष तथा घावनाशक होती हैं वरयारेकी जड़कीछाल का चूर्ण शक्कर और दूधके साथ पीनेसे मूत्रातीसार नष्ट होताहै यह देखा गयाहै इसमें कुछ सन्देह नहींहै सहदेईका चूर्ण दूध शक्कर के साथ पीनेसे मूत्र कृच्छ्रका नाश होताहै वात अपने मार्गके अनुसार होजातीहै ककैहा का चूर्ण दूध शक्कर के साथ पीने से प्रमेह नष्ट होताहै ॥ ४८ ॥

अथ लक्ष्मणा ॥

पुत्रकाकाररक्ताल्प बिन्दुभिर्लाञ्छितासदा । लक्ष्मणापुत्रजननी वस्तगन्धाकृतिर्भवे त् ॥ कथितापुत्रदावश्यं लक्ष्मणामुनिपुंगवैः ॥ ४९ ॥

लक्ष्मणा के नाम और गुण ॥

इसमें बालक के समान लाल और छोटे बिंदुओंके चिह्न सदैव रहते हैं लक्ष्मणा, पुत्रजननी और वस्त गंधा कृति,यह लक्ष्मणाके नामहैं मुनिलोगोंने लक्ष्मणाको अवश्य पुत्र देनेवाली कहाहै ४९॥

स्वर्णवल्ली ॥

स्वर्णवल्लीरक्तफला काकायुःकाकवल्लरी । स्वर्णवल्लीशिरःपीडां त्रिदोषान्हन्ति दुग्धदा ॥ ५० ॥

स्वर्णवल्लीके नाम और गुण ॥

स्वर्णवल्ली, रक्तफला, काकायु और काकवल्लरी यह स्वर्ण वल्लीके नामहै स्वर्णवल्ली शिरके रोग तथा त्रिदोष नाशक होतीहै और दुग्ध उत्पन्न करतीहै ॥ ५० ॥

अथ कपास ॥

कार्पासीतुण्डकेरीच समुद्रान्ताचकथ्यते । कार्पासकीलघुःकोष्णामधुरावातनाशिनी॥ तत्पलाशंसमीरघ्नं रक्तकृन्मूत्रवर्द्धनम् । तत्कर्णपीडकानाद पूयास्रावविनाशनम्॥ तद्बीजंस्तन्यदंवृष्यं स्निग्धंकफकरंगुरु ॥ ५१ ॥

कपासके नाम और गुण ॥

कार्पासी, तुंडकेरी और समुद्रान्ता, यह कपास के नामहैं कपास,हलका, कुछ उष्ण, मधुर और वायु नाशक होताहै, कपासके पत्ते, रक्ततथा मूत्रवर्द्धक और वात्त, कानकी कुसी,शब्द तथा पीपके बहने को रोकने वाले होतेहैं कपासके बीज दुग्ध वर्द्धक,वीर्य वर्द्धक,स्निग्ध, कफकारक और भारीहोतेहैं ५१॥

अथवंश ॥

वंशस्त्वक्सारकर्मार त्वचिसारःतृणध्वजः । शतपर्वाशतफलो वेणुर्मस्करतेजनाः ॥ वंशःसरोहिमःस्वादुःकषायोवस्तिशोधनः । छेदनःकफपित्तघ्नः कुष्ठास्रव्रणशोथजित् ॥ तत्करीरःकटुःपाकेरसेरूक्षोगुरुःसरः । कषायःकफकृत्स्वादुर्विदाहीवातपित्तलः ॥ तद्यवास्तु सराःरूक्षाःकषायाःकटुपाकिनः । वातपित्तकराउष्णा बद्धमूत्राःकफापहाः ॥ ५२ ॥

बांसके नाम और गुण ॥

वंश, त्वक्सार, करमार, त्वाचिसार, तृणध्वज, शतपर्वा, शतफली, वेणु, मस्कर और तेजना, यह बांसके नामहैं बांस, सारक, शीतल, मधुर, कषाय, मूत्राशय का शोधक, छेदक और कफ पित्त कुष्ठ घाव तथा सूजनका नाशक होताहै बांसका अंकुर, पाकमें कटु, रसमेंकटु, रूखा, भारी, सारक कषाय, कफवर्द्धक, मधुर, विदाही और वात पित्तका नाशक होताहै बांसके जौ, सारक रूखे, कषाय, पाकमें कटु, बादी, पित्तवर्द्धक, उष्ण, मूत्ररोधक और कफ नाशक होतेहैं ॥ ५२ ॥

अथनलः ॥

नलःपोटगलःशून्य मध्यश्चधमनस्तथा ॥ नलस्तुमधुरस्तिक्तः कषायःकफरक्तजित्॥ उष्णोहृद्वस्तियोन्यार्ति दाहपित्तविसर्पहृत् ॥ ५३ ॥

नरकुलके नाम और गुण ॥

नल, पोटगल, शून्यमध्य और धमन, यह नरकुलके नामहैं, नरकुल, मधुर, तिक्त, कषाय, उष्ण और कफ, रक्तदोष, हृदयरोग, मूत्राशयके दोष, योनिके दोष, दाह, पित्त, तथावीसर्प नाशक होता है ॥ ५३ ॥

अथरामशर । शरपतइतिवा ॥

भद्रमुञ्जःशरोबाणः तेजनश्चक्षुवेष्टनः । (अथमुञ्जः) मुञ्जोमुञ्जातकोबाणः स्थूलदर्भःसुमेखलः ॥ मुञ्जद्वयन्तुमधुरं तुवरंशिशिरंतथा । दाहतृष्णाविसर्पास्रमूत्रकृच्छ्राक्षिरोगजित् । दोषत्रयहरंवृष्यं मेखलासूपयुज्यते ॥ ५४ ॥

सर्पत और मूंजके नाम और गुण ॥

भद्रमुंज, शर, बान, तेजन और इक्षुवेष्टन, यह सर्पतके नामहैं मुंज, मुंजातक, बान, स्थूलदर्भ और सुमेखल यह मूंजके नामहैं, यह दोनों मधुर,कषाय, शीतल, वीर्य वर्द्धक और दाह, तृषा, विसर्प, आम, मूत्रकृच्छ्र,नेत्ररोग तथा त्रिदोष नाशक होते हैं इनका मेखला बनाने आदि में काम पड़ता है ॥ ५४ ॥

अथकाशः ॥

काशःकाशेक्षुरुद्दिष्टः सस्यादिक्षुसरस्तथा । इक्ष्वालिकेक्षुगन्धाच तथापोटगलस्मृतः॥ काशःस्यान्मधुरस्तिक्तः स्वादुपाकोहिमःसरः । मूत्रकृच्छ्राश्मदाहास्त्र क्षयपित्तजरोगजित् ॥ ५५ ॥

काशके नाम और गुण ॥

काश, काशेक्षु, इक्षुरस, इक्ष्वालिका, इक्षुगंधा और पोटगल, गल, यह काशके नामहैं काशमधुर तिक्त, पाक में मधुर, शीतल, सारक और मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह, रक्तदोष, क्षयतथा पित्तरोग की नाशक होतीहै ॥ ५५ ॥

गन्धपटेरइतिच ॥

गुन्द्रःपटेरकोरच्छः शृङ्गवेराभमूलकः ॥ गुन्द्रःकषायोमधुरः शिशिरःपित्तरक्तजित् ॥ स्तन्यःशुक्ररजोमूत्र शोधनोमूत्रकृच्छ्रहृत् ॥ ५६ ॥

गन्धपटेरके नाम और गुण ॥

गुन्द्र, पटेरक, उरच्छ, शृंगवेराह्व और मूलक, यह गन्धपटेरकेनामहैं, गन्धपटेर, कषाय, मधुर शीतल, पित्तरक्त नाशक, दुग्ध, वीर्य, रज तथा मूत्रशोधक और मूत्रकृच्छ्र नाशक होताहै ॥ ५६ ॥

मोथीतृणविशेषः ॥

एरकागुन्द्रमूलाचशिविर्गुन्द्राशरीतिच ॥ एरकाशिशिरावृष्या चक्षुष्यावातकोपिनी॥ मूत्रकृच्छ्राश्मरीदाह पित्तशोणितनाशिनी ॥ ५७ ॥

मोथीतृणविशेषके नाम और गुण ॥

एरका, गुन्द्रमूला, शिवि,गुन्द्रा और शरी, यह मोथीके नामहैं, मोथी शीतल, वीर्यवर्द्धक, नेत्रहित वादी और मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह, पित्त तथारक्त दोष नाशक होतीहै ॥ ५७ ॥

अथकुश ॥

कुशोदर्भस्तथाबर्हिः सूच्यग्रोयज्ञभूषणः ॥ (अथडाभ) ततोऽन्योदीर्घपत्रः स्यात् क्षुरपत्रस्तथैवच ॥ दर्भद्वयंत्रिदोषघ्नं मधुरंतुवरंहिमम् । मूत्रकृच्छ्राश्मरीतृष्णावस्तिरुक् प्रदरास्रजित् ॥ ५८ ॥

कुशके नाम और गुण ॥

कुश, दर्भ, बर्हि, सूच्यग्र और यज्ञभूषण, यह कुशके नामहैं और भी एक प्रकारका कुश होताहै उसको दीर्घपत्र और क्षुरपत्र कहतेहैं दोनों प्रकारके कुश त्रिदोष नाशक, मधुर, कषाय,शीतल और मूत्रकृच्छ्र, पथरी, तृषा, मूत्राशयके रोग, प्रदरतथा रक्तदोषनाशकहोतेहैं ॥ ५८ ॥

अथकत्तृणम् । रोहिससोधिआइतिच ॥

कतृणंरोहिषंदेव जग्धंसौगन्धिकंतथा । भूतीकंध्यामपौरञ्च श्यामकंधूमगन्धिकम् ॥ रौहीषंतुवरंतिक्तं कटुपाकंव्यपोहति । हृत्कण्ठव्याधिपित्तास्रशूलकासकफज्वरान् ॥५९॥

कतृण (रोहिषसोधियानामसे प्रसिद्ध एक प्रकारकी पीली खस) के नाम और गुण ॥

कत्तृण, रोहिष, देवजग्ध, सौगन्धिक, भूतिक, ध्याम,पौर,श्यामक और धूम गन्धिक यह कतृण के नामहैं कतृण कषाय, तिक्त, पाकमें कटु और हृदयके रोग, कण्ठरोग, पित्त, रक्तदोष, शूल, खांसी,कफ तथा ज्वरनाशक होताहै ॥ ५९ ॥

अथभूस्तृणम् ॥

भूगुह्यवीजन्तुभूतीकंसुगन्धंजम्बुकप्रियम्॥भूस्तृणंतुभवेच्छत्रा मालातृणकमित्यपि ॥ स्तृणंकटुकंतिक्तं तीक्ष्णोष्णंरेचनंलघु ॥ विदाहिदीपनंरूक्ष मनेत्र्यंमुखशोधनम् । अवृ ष्यंवहुविट्कञ्च पित्तरक्तप्रदूषणम् ॥ ६० ॥

भूस्तृणके नाम और गुण ॥

गुह्यवीज, भूतीक, सुगन्ध, जंवुकप्रिय, भूस्तृण, छत्रा और मालातृण-यह भूस्तृणके नामहैं भूस्तृण कटु, तिक्त, तीक्ष्ण, उष्ण, दस्तावर, हलका, विदाही, दीपन, रूखा, नेत्रोंको अहित, मुखशोधक, वीर्यको अहित मलवर्द्धक और पित्त तथा रक्तका दूषित करनेवाला होताहै ॥ ६० ॥

अथनीलदूर्वा ॥

नीलदूर्वारुहानन्ता भार्गवीशतपर्विका । शष्पंसहस्रवीर्य्याच शतवल्लीचकीर्तिता ॥ नीलदूर्वाहिमातिक्ता मधुरातुवराहरा । कफपित्तास्रवीसर्प तृष्णादाहत्वगामयान् ॥६१॥

नीलीदूबके नाम और गुण ॥

नीलदूर्वा, रुहा, अनन्ता, भार्गवी, शतपर्विका,शष्प,सहस्रवीर्या और शतवल्ली, यह नीलीदूबके नामहैं नीलीदूब, शीतल, तिक्त, मधुर, कषाय और कफ पित्तरक्तदोष, वीसर्प,तृषा, दाह औरत्वचा के रोगोंकी नाशक होतीहै ॥ ६१ ॥

अथश्वेतदूर्वा ॥

दूर्वाशुक्लातुगोलोमी शतवीर्य्याचकथ्यते । श्वेतादूर्वाकषायास्यात् स्वाद्वीव्रण्याच जीवनी । तिक्ताहिमाविसर्पास्रतृट्पित्तकफदाहहृत् ॥ ६२ ॥

श्वेतदूर्वाके नाम और गुण ॥

गोलोमी और शतवीर्या, यह श्वेतदूर्वाके नामहैं श्वेतदूर्वा, कषाय, मधुर, घावमें हित, जीवनरूप तिक्त,शीतल और वीसर्प, रक्तदोष, तृषा, पित्त कफ तथा दाह नाशक होतीहै ॥ ६२ ॥

अथगण्डरिदूविपाचइतिच ॥

गण्डदूर्वातुगण्डालीमत्स्याक्षीशकुलाक्षकः । गण्डदूर्वाहिमालोहद्राविणीग्राहिणी लघुः ॥ तिक्ताकषायामधुरा वातकृत्कटुपाकिनी । दाहतृष्णाबलासास्रकुष्ठपित्तज्वरा पहा ॥ ६३ ॥

सर्पत और मूंजके नाम और गुण ॥

भद्रमुंज; शर, बान, तेजन और इक्षुवेष्टन, यह सर्पतके नामहैं मुंज, मुंजातक, बान, स्थूलदर्भ और सुमेखल यह मूंजके नामहैं, यह दोनों मधुर,कषाय, शीतल, वीर्य वर्द्धक और दाह, तृषा. विसर्प, आम, मूत्रकृच्छ्र,नेत्ररोग तथा त्रिदोष नाशक होते हैं इनका मेखला बनाने आदि में काम पड़ता है ॥ ५४ ॥

अथकाशः ॥

काशःकाशेक्षुरुद्दिष्टः सस्यादिक्षुसरस्तथा। इक्ष्वालिकेक्षुगन्धाच तथापोटगलस्मृत.॥ काशःस्यान्मधुरस्तिक्तः स्वादुपाकोहिमःसरः । मूत्रकृच्छ्राश्मदाहास्र क्षयपित्तजरोग जित् ॥ ५५ ॥

काशके नाम और गुण ॥

काश, काशेक्षु, इक्षुरस, इक्ष्वालिका, इक्षुगंधा और पोटगल, गल, यह काशके नामहैं काशमधुर तिक्त, पाक में मधुर, शीतल, सारक और मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह, रक्तदोष, क्षयतथा पित्तरोग की नाशक होतीहै ॥ ५५ ॥

गन्धपटेरडतिच ॥

गुन्द्रःपटेरकोरच्छः शृङ्गवेराभमूलकः ॥ गुन्द्रःकपायोमधुर. शिशिरःपित्तरक्तजित् ॥ स्तन्यःशुक्ररजोमूत्र शोधनोमूत्रकृच्छ्रहृत् ॥ ५६ ॥

गन्धपटेरके नाम और गुण ॥

गुन्द्र, पटेरक, उरच्छ, शृंगवेराह्व और मूलक, यह गन्धपटेरकेनामहैं, गन्धपटेर, कषाय, मधुर शीतल, पित्तरक्त नाशक, दुग्ध, वीर्य, रज तथा मूत्रशोधक और मूत्रकृच्छ्र नाशक होताहै ॥ ५६ ॥

मोथीतृणविशेषः ॥

एरकागुन्द्रमूलाचशिविर्गुन्द्राशरीतिच ॥ एरकाशिशिरावृष्या चक्षुष्यावातकोपिनी॥ मूत्रकृच्छ्राश्मरीदाह पित्तशोणितनाशिनी ॥ ५७ ॥

मोथीतृणविशेषके नाम और गुण ॥

एरका, गुन्द्रमूला, शिवि,गुन्द्रा और शरी, यह मोथीके नामहैं, मोथी शीतल, वीर्यवर्द्धक, नेत्रहित वादी और मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह, पित्त तथारक्त दोष नाशक होतीहै ॥ ५७ ॥

अथकुश ॥

कुशोदर्भस्तथावर्हिः सूच्यग्रोयज्ञभूषणः ॥ (अथडाभ) ततोऽन्योदीर्घपत्रः स्यात् क्षुरपत्रस्तथैवच ॥ दर्भद्वयंत्रिदोषघ्नं मधुरंतुवरंहिमम्। मूत्रकृच्छ्राश्मरीतृष्णावस्तिरुक् प्रदरास्रजित् ॥ ५८ ॥

कुशके नाम और गुण ॥

कुश, दर्भ, वर्हि, सूच्यग्र और यज्ञभूषण, यह कुशके नामहैं और भी एक प्रकारका कुश होताहै उसको दीर्घपत्र और क्षुरपत्र कहतेहैं दोनों प्रकारके कुश त्रिदोष नाशक, मधुर, कषाय,शीतल और मूत्रकृच्छ्र, पथरी, तृषा, मूत्राशयके रोग, प्रदरतथा रक्तदोष नाशकहोतेहैं ॥ ५८ ॥

अथकत्तृणम्। रोहिससोधिआइतिच ॥

कत्तृणंरोहिषंदेव जग्धंसौगन्धिकंतथा। भूतीकंध्यामपौरञ्च श्यामकंधूमगन्धिकम् ॥ रौहीषंतुवरंतिक्तं कटुपाकंव्यपोहति। हृत्कण्ठव्याधिपित्तास्रशूलकासकफज्वरान् ॥५९॥

कत्तृण (रोहिषसोधियानामसे प्रसिद्ध एक प्रकारकी पीली खस) के नाम और गुण ॥

कत्तृण, रोहिष, देवजग्ध, सौगन्धिक, भूतिक, ध्याम, पौर, श्यामक और धूम गन्धिक यह कत्तृण के नामहैं कत्तृण कषाय, तिक्त, पाकमें कटु और हृदयके रोग, कण्ठरोग, पित्त, रक्तदोष, शूल, खांसी, कफ तथा ज्वरनाशक होताहै ॥ ५९ ॥

अथभूस्तृणम् ॥

भूगुह्यबीजन्तुभूतीकंसुगन्धंजम्बुकप्रियम्॥भूस्तृणंतुभवेच्छत्रा मालातृणकमित्यपि ॥ स्तृणंकटुकंतिक्तं तीक्ष्णोष्णंरेचनंलघु ॥ विदाहिदीपनंरूक्ष मनेत्र्यंमुखशोधनम्। अवृ ष्यंबहुविट्कञ्च पित्तरक्तप्रदूषणम् ॥ ६० ॥

भूस्तृणके नाम और गुण ॥

गुह्यबीज, भूतीक, सुगन्ध, जंबुकप्रिय, भूस्तृण, छत्रा और मालातृण यह भूस्तृणके नामहैं भूस्तृण कटु, तिक्त, तीक्ष्ण, उष्ण, दस्तावर, हलका, विदाही, दीपन, रूखा, नेत्रोंको अहित, मुखशोधक, वीर्यको अहित मलवर्द्धक और पित्त तथा रक्तका दूषित करनेवाला होताहै ॥ ६० ॥

अथनीलदूर्वा ॥

नीलदूर्वारुहानन्ता भार्गवीशतपर्विका। शष्पंसहस्रवीर्य्याच शतवल्लीचकीर्तिता ॥ नीलदूर्वाहिमातिक्ता मधुरातुवराहरा। कफपित्तास्रवीसर्प तृष्णादाहत्वगामयान् ॥६१॥

नीलीदूबके नाम और गुण ॥

नीलदूर्वा, रुहा, अनन्ता, भार्गवी, शतपर्विका, शष्प, सहस्रवीर्या और शतवल्ली, यह नीलीदूबके नामहैं नीलीदूब, शीतल, तिक्त, मधुर, कषाय और कफ पित्त रक्तदोष, वीसर्प, तृषा, दाह और त्वचा के रोगोंकी नाशक होतीहै ॥ ६१ ॥

अथश्वेतदूर्वा ॥

दूर्वाशुक्लातुगोलोमी शतवीर्य्याचकथ्यते। श्वेतादूर्वाकषायास्यात् स्वाद्वीव्रण्याच जीवनी। तिक्ताहिमाविसर्पास्रतृट्पित्तकफदाहहृत् ॥ ६२ ॥

श्वेतदूर्वाके नाम और गुण ॥

गोलोमी और शतवीर्या, यह श्वेतदूर्वाके नामहैं श्वेतदूर्वा, कषाय, मधुर, घावमें हित, जीवनरूप तिक्त, शीतल और वीसर्प, रक्तदोष, तृषा, पित्त कफ तथा दाह नाशक होतीहै ॥ ६२ ॥

अथगण्डदूर्वापाइतिच ॥

गण्डदूर्वातुगण्डालीमत्स्याक्षीशकुलाक्षकः। गण्डदूर्वाहिमालोहद्राविणीग्राहिणी लघुः ॥ तिक्ताकषायामधुरा वातकृत्कटुपाकिनी। दाहतृष्णाबलासास्रकुष्ठपित्तज्वरा पहा ॥ ६३ ॥

गांडरके नाम और गुण॥

गंडाली, गंडदूर्वा, मत्स्याक्षी और शकुलाक्षक, यह गांडरके नामहैं, गांडर, शीतल लोहेकी गलाने वाली, ग्राही, हलकी, तिक्त, कषाय, मधुर, वादी, पाकमेंकटु, दाह, तृषा, कफ, रक्त, पित्त तथा ज्वर नाशक होती है॥ ६३॥

अथविदारीकन्दः क्षीरविदारीगेण्ठिइतिलोके॥

वाराहीकन्दएवान्यैश्चर्मकारालुकोमतः। अनूपसम्भवेदेशेवाराहइवलोमवान्॥ विदारीस्वादुकन्दाचसातुक्रोष्ट्रीसितास्मृता। इक्षुगन्धाक्षीरवल्लीक्षीरशुक्लापयस्विनी॥ वाराहवदनागृष्टिर्वदरेत्यपिकथ्यते। विदारीमधुरास्निग्धाबृंहणीस्तन्यशुक्रदा॥ शीता स्वर्य्यामूत्रलाचजीवनीबलवर्णदा। गुरुःपित्तास्रपवनदाहान्हन्तिरसायनी॥ ६४॥

विदारी कन्दके नाम और गुण॥

इसको पश्चिम में गृष्टि कहते हैं और इसीको कोई चर्मकारालुकभी कहते हैं यह अनूपदेश में वाराहके समान रोमोंसे युक्त उत्पन्न होताहै, विदारी, स्वादु कंदक्रोष्ट्री, सिता, इक्षुगन्धा, क्षीरवल्ली, क्षीरशुक्ला, पयस्विनी, वाराहवदना, गृष्टि और वदरा यह विदारीकन्द के नामहैं, विदारीकन्द, मधुर, स्निग्ध, धातुवर्द्धक, दुग्धवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, शीतल, स्वरकोहित, मूत्रकारक, जीवनरूप, बलकारक, वर्णकोहित, भारी, रसायन और पित्त रक्त दोष वात तथा दाहनाशक होता है॥ ६४॥

अथमुशलीकन्दम्॥

तालमूलीतुविद्वद्भिर्मुशलीपरिकीर्तिता। मुशलीमधुरावृष्यावीर्य्योष्णाबृंहणीगुरुः॥ तिक्तारसायनीहन्तिगुदजान्यनिलन्तथा॥ ६५॥

मुसली के नाम और गुण॥

तालमूली को पंडित लोग मुसली कहते हैं, मुसली, मधुर, वीर्यवर्द्धक, वीर्यमें उष्ण, धातुवर्द्धक, भारी, रसायन, तिक्त और गुदाके रोग तथा वातनाशक होतीहै॥ ६५॥

अथशतावरीमहाशतावरी॥

शतावरीबहुसुताभीरुरिन्दीवरीवरी। नारायणीशतपदीशतवीर्य्याचपीवरी॥ महाशतावरीचान्याशतमूल्यर्द्धकण्टिका। सहस्रवीर्य्याहेतुश्चऋष्याप्रोक्तामहोदरी॥ शतावरीगुरुःशीतातिक्तास्वाद्वीरसायनी। मेधाग्निपुष्टिदास्निग्धानेत्र्यागुल्मातिसारजित्॥ शुक्रस्तन्यकरीबल्यावातपित्तास्रशोथजित्। महाशतावरीमेध्याहृद्यावृष्यारसायनी॥ शीतवीर्य्यानिहन्त्यर्शोग्रहणीनयनामयान्॥ ६६॥

शतावरी महाशतावरीके नाम और गुण॥

शतवरी, बहुसुता, भीरु, इन्दीवरी, नारायणी, शतपदी, शतवीर्या और पीवरी, यह शतावरके नाम हैं शतमूली, अर्द्धकंटिका, सहस्र वीर्या, हेतु, ऋष्यप्रोक्ता और महोदरी, यह महाशतावरीके नाम हैं शतावर, भारी, शीतल, तिक्त, मधुर, रसायन, मेधा, अग्नि, तथा पुष्टिवर्द्धक, स्निग्ध, नेत्रहित, वीर्य वर्द्धक, दुग्धवर्द्धक बलकारक, और गुल्म, अतीसार वात पित्त, रक्तदोष, तथा सूजनकी नाशक होतीहै

महाशतावरी, मेधाकोहित, हृदयको प्रिय, वीर्यवर्द्धक, रसायन, शीतल, और ववासीर, ग्रहणी तथा नेत्ररोग नाशक होतीहै ॥ ६६ ॥

अथअसगन्धः ॥

गन्धान्तावाजिनामादिरश्वगन्धाहयाह्वया।वराहकर्णीवरदावलदाकुष्ठगन्धिनी ॥ अश्वगन्धानिलश्लेष्मश्वित्रशोथक्षयापहा।बल्यारसायनीतिक्ताकषायोष्णातिशुक्रला ६७ ॥

असगंधके नाम और गुण

गन्धान्ता, वाजिनामा, अश्वगन्धा, हयाह्वया, वराहकर्णी, वरदा, वलदा, और कुष्ठ गन्धिनी, यह असगन्धके नामहैं असगन्ध,वात, कफ,श्वेत कुष्ठ, सूजन तथा क्षयरोगकी नाशक बलकारक, रसायन तिक्त,कषाय, उष्ण और अत्यन्त वीर्यवर्द्धक होतीहै ॥ ६७ ॥

अथपाठा ॥

पाठांवष्ठावष्टकीचप्राचीनापापचेलिका। एकष्ठीलारसाप्रोक्तापाठिकावरतिक्तिका ॥ पाठोष्णाकटुकातीक्ष्णावातश्लेष्महरीलघुः। हन्तिशूलज्वरछर्दिकुष्ठातीसारहृद्रुजः॥ दाहकण्डुविषश्वासक्रमिगुल्मगरव्रणान् ॥ ६८ ॥

पाठा वा पाढ़र के नाम और गुण ॥

पाठा, अंवष्ठा, अवष्टकी, प्राचीना, पापचेलिका, एकष्ठीला, रसा, पाठिका और रसतिक्तिका यह पाठा वा पाढ़रके नामहैं पाठा उष्ण, कटु तीक्ष्ण, हलकी और वात, कफ, शूल, ज्वर, छर्दि, कुष्ठ, अतीसार, हृदयके रोग, दाह, खुजली, विष, श्वास, कृमि, गुल्म, गरदोष, तथा घाव नाशक होती है ॥ ६८ ॥

अथश्वेतपनिलर ॥

श्वेतात्रिवृताभण्डीस्यात्त्रिवृतात्रिपुटापिच ।सर्व्वानुभूतिःसरलानिशोत्रारेचनीति च ॥ श्वेतात्रिवृद्रेचिनीस्यात्स्वादुरुष्णासमीरहृत् । रूक्षापित्तज्वरश्लेष्म पित्तशोथोदरापहा ॥ ६९ ॥

श्वेतनिशोथके नाम और गुण ॥

श्वेता, त्रिवृता, भंडी, त्रिवृता, त्रिपुटा सर्वानुभूति, सरला, निशोत्रा और रेचनी यह सफेद निशोधके नामहैं सफेद निशोथ, दस्तावर, मधुर, उष्ण,रूखा और वात, पित्तज्वर, कफ, पित्त, सूजन तथा उदररोगका नाशक होताहै॥ ६९ ॥

अथश्यामपनिलर ॥

त्रिवृत्श्यामार्द्धचन्द्राचपालिन्दीचसुषेणिका । मसूरविदलाकोलाकेशिकाकालमेषिका ॥ श्यामात्रिवृत्ततोहीनागुणातीव्रविरेचनी । मूर्च्छादाहमदभ्रान्तिकण्ठोत्कर्षणकारिणी ॥ ७० ॥

काले निशोथके नाम और गुण ॥

त्रिवृत श्यामा अर्धचन्द्रा, पालिन्दी, सुषेणिका,मसूर विदला, काला, केशिका और कालमेषिका

यह काले निशोथके नामहैं काला निशोथ, श्वेत निशोथकी अपेक्षा गुणों में न्यूनहै,विशेषता यहहै कि बहुत दस्तावर और मूर्च्छा, दाह, मद, भ्रान्ति तथा कण्ठकी उत्तमता करनेवालाहै ॥ ७० ॥

अथलघुदन्ती ॥

लघुदन्तीविशल्याचस्यादुदुम्बरपर्ण्यपि । तथैरण्डफलाशीघ्राश्येनघण्टाघुणप्रिया ॥ वाराहाङ्गीचकथितानिकुम्भश्चमकूलकः (अथवृहत्दन्तीएरण्डपत्रविटपा) द्रवन्तीसावरीचित्राप्रत्यक्पर्णीखुपर्ण्यपि ॥ चित्रापचित्रान्यग्रोधाप्रत्यक्श्रेण्याखुकर्ण्यपि। दन्ताद्वयंसरम्पाकेरसेचकटुदीपनम् ॥ गुदांकुराश्मशूलार्शःकण्डूकुष्ठविदाहनुत्। तीक्ष्णोष्णंहन्तिपित्तास्रकफशोथोदरकृमीन् (अथलघुदन्तीफलम्) क्षुद्रदन्तीफलन्तुस्यान्मधुरंरसपाकयोः । शीतलंसृष्टविण्मूत्रंगरशोथकफापहम् ॥ ७१ ॥

छोटी दन्तीके नाम और गुण ॥

विशल्या, उदुम्बर पर्णी, एरंडफला, शीघ्रा,श्येनघंटा घुणप्रिया, वाराहांगी, निकुम्भ और मकूलक यह छोटी दन्तीके नामहैं बड़ी दन्ती, इसके पत्ते अरंडके पत्तोंके समान होतेहैं द्रवन्ती सम्बरी, तथा चित्रा, उपचित्रा, न्यग्रोधी, प्रत्यक्श्रेणी और आखुपर्णी यह बडीदन्ती के नाम हैं यह दोनों दन्ती दस्तावर, रस तथा पाक में कटु, दीपन, तीक्ष्ण, उष्ण और गुदांकुर, पथरी, शूल, बवासीर खुजली कुष्ठ,विदाह, पित्त, रक्तदोष कफ, सूजन, उदर, तथा कृमि नाशक होती हैं छोटी दन्तीका फल रस तथा पाक में मधुर, शीतल, मलमूत्रका निकालने वाला और गरदोष, सूजन, तथा कफ नाशक होता है ॥ ७१ ॥

जयपालोदन्तिबीजंविख्यातन्तितिडीफलम् । जयपालोगुरुःस्निग्धोरेचिपित्तकफापहः ॥ ७२ ॥

जमालगोटेके नाम और गुण ॥

जयपाल् दन्तीबीज और तिंतिड़ी फल,यहजमालगोटेके नामहैं जमालगोटा,भारी,स्निग्धदस्तावर और पित्त तथा कफ नाशक होताहै ॥ ७२ ॥

इन्द्रारुणबड़ीइन्द्रकला ॥

ऐन्द्रीन्द्रवारुणीचित्रागवाक्षीचगवादिनी । वारुणीचपराप्युक्तासाविशालामहाफला ॥ श्वेतपुष्पामृगाक्षीचमृगेर्वारुमृगादनी । गवादिनीद्वयंतिक्तंपाकेकटुसरंलघु ॥ वीर्य्योष्णंकामलापित्तकफप्लीहोदरापहम् । श्वासकासापहंकुष्ठगुल्मग्रन्थिव्रणप्रणुत् ॥ प्रमेहमूढ़गर्भामगण्डामयविषापहम् ॥ ७३ ॥

दोनोंइन्द्रायणके नाम और गुण ॥

ऐन्द्री इन्द्रवारुणी चित्रा गवाक्षी गवादनी और वारुणी यहइन्द्रायन के नामहैं दूसरी इन्द्रायन को विशाला, महाफला, श्वेतपुष्पा, मृगाक्षी, मृगेर्वारु और मृगादना कहतेहैं दोनों इन्द्रायन तिक्त पाक में कटु दस्तावर हलकी उष्ण और कामला पित्त, कफ, प्लीहा, उदर, श्वास, खांसी, कुष्ठ, गुल्म, ग्रन्थि घाव, प्रमेह, मूढ़गर्भ (वायुकेद्वारा टेढ़ाहोकर योनिमें आयाहुआ गर्भ) आम, गलगंड तथा विष नाशक होती हैं ॥ ७३॥

अथनील ॥

नीलीतुनीलिनीतूलीकालदोलाचनीलिका । रञ्जनीश्रीफलीतुच्छाग्रामीणामधुपर्णिका ॥ क्लीतकाकालकेशीचनीलपुष्पाचसास्मृता । नीलिनीरेचिनीतिक्ताकेश्यामोहभ्रमापहा ॥ उष्णाहन्त्युदरप्लीहवातरक्तकफानिलान् । आमवातमुदावर्त्तम्मन्दंचविषमुद्धृतम् ॥ ७४ ॥

नीलके नाम और गुण ॥

नीली, नीलिनी, तूली, काला दोला, नीलिका, रंजनी, श्रीफली, तुच्छा, ग्रामीणा, मधुपर्णिका क्लीतका, कालकेशी और नीलपुष्पा यह नीलके नामहैं नीलदस्तावर, तिक्त, केशोंको हित, उष्ण और मोहभ्रम, उदर, प्लीहा, वात रक्त, कफ, वात, आम वात, उदावर्त्त, मद तथा विषका नाशक होता है ॥ ७४ ॥

अथशरफोका ॥

शरपुङ्खाप्लीहशत्रुर्नीलीवृक्षाकृतिश्चसः । शरपुङ्खोयकृत्प्लीहगुल्मव्रणविषापहः । तिक्तःकषायकासास्रश्वासःज्वरहरोलघुः ॥ ७५ ॥

सर्फोकाके नाम और गुण ॥

शरपुंख प्लीहशत्रु और नीली वृक्षाकृति, यह शरफोंका के नामहैं सरफोंका,तिक्त, कषाय हलका और यकृत्प्लीहा, गुल्म, घाव, विष खांसी, रक्तदोष, श्वास, तथा ज्वरनाशक होताहै ॥ ७५ ॥

अथयवासादुराला ॥

यासोयवासीदुःस्पर्शोधन्वयासःकुनाशकः । दुरालभादुरालम्भासमुद्रान्ताचरोदिनी॥ गान्धारीकच्छुरानन्ताकषायादुरभिग्रहा । यासःस्वादुःसरस्तिक्तःस्तुवरःशीतलोलघुः ॥ कफमेदोमदभ्रान्तिपित्तासृक्कुष्ठकासजित् । तृष्णाविसर्पवातास्रवमिज्वरहरःस्मृतः ॥ यवासस्यगुणैस्तुल्यावुधैरुक्तादुरालभा ॥ ७६ ॥

जवासा और दुरालभाके नाम गुण ॥

यास,यवास,दुःस्पर्श, धन्वयास, कुनाशक, दुरालभा, दुरालंभा, समुद्रान्ता रोदनी, गान्धारी,कच्छुरा अनन्ता कषाया और दुरभिग्रहा, यह जवासेके नामहैंजवासा, मधुर, दस्तावर,तिक्त, कषाय शीतल हलका और कफ, मेद, मद, भ्रान्ति, पित्त, रक्तकुष्ठ, खांसी, तृषा वीसर्प, वातरक्त, छर्दि तथा ज्वर नाशक होताहै पण्डितलोग दुरालभाको भी जवासे के समान गुणवाली कहते हैं ॥ ७६ ॥

अथमुण्डी ॥

मुण्डीभिक्षुरपिप्रोक्ताश्रावणीचतपोधना । श्रवणाह्वामुण्डतिकातथाश्रवणशीर्षका ॥ महाश्रावणिकान्यातुसास्मृताभूकदम्बिका । कदम्बपुष्पिकाचस्याद्व्यथातितपस्विनी ॥ मुण्डतिकाकटुःपाकेवीर्य्योष्णामधुरालघुः मेध्यागण्डापचीकृच्छ्रकृमियोन्यर्त्तिपाण्डुनुत्॥ श्लीपदारुच्यपस्मारप्लीहमेदोगुदार्त्तिहृत् । महामुण्डीचतत्तुल्यागुणैरुक्तामहर्षिभिः ७७॥

मुंडी और महामुंडीके नाम गुण ॥

मुंडी, भिक्षु, श्रावणी, तपोधना, श्रवणाह्वया, मुंडितिका और श्रावण शीर्षका यहमुंडी के नाम

हैं, महामुंडी को महाश्रावणिका, भूकदम्बिका, कदम्ब पुष्पिका अव्यथा, और अति तपस्विनी कहतेहैं, मुंडी, पाकमें कटु, वीर्य में उष्ण, मधुर हलकी, मेधाको हित और गलगंड, अपची, मूत्रकृच्छ्र, कृमि, योनिरोग पांडुश्लीपद, अरुचि, मृगी, प्लीहा, मेद तथा गुदाकी व्याधिनाशक होती है महर्षिलोगोंनेमहामुंडी को भी मुंडी के समान कहाहै ॥ ७७ ॥

अथचिरचिरि ॥

अपामार्गस्तुशिखरीह्यधःशल्योमयूरकः । मर्कटीदुर्ग्रहाचापिकिणहीखरमञ्जरी ॥ अपामार्गःसरस्तीक्ष्णःदीपनस्तिक्तकःकटुः । पाचनोरोचनश्छर्दिकफमेदोऽनिलापहः ॥ निहन्तिहृद्रुजाध्मार्शःकण्डूशूलोदरापची ॥ ७८ ॥

लटजीराके नाम और गुण ॥

अपामार्ग शिखरी, अधश्शल्य मयूरक, मर्कटी,दुर्ग्रहा, किणिही और खरमंजरी, यह लट जीरे के नामहैं लटजीरा दस्तावर तीक्ष्ण, दीपन, तिक्त, कटु, पाचक, रुचिकारक और छर्दि, कफ मेद बात, हृदयके रोग, आध्मान, बवासीर, खुजली, शूल, उदर तथा अपचीका नाशक होताहै॥ ७८ ॥

अथरक्तचिरचिरा ॥

रक्तोन्योवशिरोवृत्तफलोधामार्गवोऽपिच।प्रत्यक्पर्णीकेशपर्णीकथिताकपिपिप्पली॥ अपामार्गोऽरुणोवातविष्टम्भीकफकृत्हिमः।रूक्षःपूर्वगुणैर्न्यूनःकथितोगुणवेदिभिः॥अपामार्गफलंस्वादुरसेपाकेचदुर्जरम् । विष्टम्भिवातलंरूक्षंरक्तपित्तप्रसादनम्॥ ७९ ॥

लाललटजीरेके नाम और गुण ॥

वशिर, वृत्तफल, धामार्गव प्रत्यक्पर्णी, केशपर्णी और कपि पिप्पली यह लाललटजीरे के नाम हैं, लाललटजीरावादी, विष्टंभी, कफ कारक, शीतल रूखा और श्वेतलटजीरेसे गुणोंमें कम होताहै यह गुणज्ञलोगोंने कहाहै लटजीरे के फल रस तथा पाकमें मधुर विलम्बसे पचने वाले विष्टंभी, वादी, रूखे और रक्त पित्तकरने वाले होतेहैं ॥ ७९ ॥

अथतालमखाना ॥

कोकिलाक्षस्तुकाकेक्षुरिक्षुरःक्षुरकःक्षुरः।भिक्षुःकाण्डेक्षुरप्युक्तःइक्षुगन्धेक्षुवालिका॥क्षुरकः शीतलोवृष्यःस्वाद्वम्लपित्तलस्तथा।तिक्तोवातामशोथाश्मतृष्णादृष्ट्यनिलास्रजित् ८०

तालमखाने के नाम गुण ॥

कोकिलाक्ष, काकेक्षु, इक्षुर,क्षुरक क्षुर, भिक्षु काण्डेक्ष, इक्षुगन्धा और इक्षुवालिका, यह तालमखानेके नामहैं, तालमखाना, शीतल, वीर्यवर्द्धक मधुर, अम्ल, तिक्त, पित्तवर्द्धक और आम वात सूजन, पथरी, तृषा, दृष्टि तथा बातरक्त का नाशक होताहै ॥ ८० ॥

अथहड़सङ्घारि ॥

ग्रन्थिमानस्थिसंहारीवज्रांगीवास्थिशृङ्खला । अस्थिसंहारकःप्रोक्तोवातश्लेष्महरोऽस्थियुक् ॥ उष्णःसरःकृमिघ्नश्चदुर्नामघ्नोऽक्षिरोगजित् । रूक्षःस्वादुर्लघुर्वृष्यःपाचनः पित्तलःस्मृतः ॥ काण्डत्वग्विरहितमस्थिशृङ्खलाया माषार्द्धंद्विदलमकंचुकंतदर्द्धम् । सम्पिष्टंतदनुततस्तिलस्यतैलेसम्पक्वंवटकमतीववातहारि ॥ ८१ ॥

हारसिंगारके नाम और गुण ॥

ग्रंथिमान अस्थिसंहारी वज्रांगी और अस्थिखला यह हारसिंगारके नाम हैं हारसिंगार हड्डियोंका जोड़नेवाला उष्ण सारक रूखा मधुर हलका वीर्यवर्द्धक पाचक पित्तवर्द्धक और वातकफ कृमि ववासीर, तथा नेत्ररोगोंका नाशक होताहै हारसिंगार के वक्कलको निकालकर उसके आधे छिलेहुये चने आदिककी दालें एकमें पीसकर बनाये हुये वड़ेको तिलोंके तेलमें पकाकर सेवनकरने से अत्यन्त वातका नाशहोताहै ॥ ८१ ॥

अथघिउकुवारि ॥

कुमारीगृहकन्याचकन्याघृतकुमारिका। कुमारीभेदिनीशीतातिक्तानेत्र्यारसायनी ॥ मधुराबृंहणीबल्यावृष्यावातविषप्रणुत् । गुलमप्लीहयकृद्वृद्धिकफज्वरहरीहरेत् ॥ ग्रन्थ्यग्निदग्धविस्फोटपित्तरक्तत्वगामयान् ॥ ८२ ॥

घीग्वारके नाम और गुण ॥

कुमारी गृहकन्या कन्या और घृतकुमारिका यहघीग्वारके नाम हैं घीग्वार भेदक शीतल तिक्त नेत्रोंको हित रसायन मधुर धातुवर्द्धक बलकारी वीर्यवर्द्धक और वात विष गुलम प्लीहा यकृत् वृद्धि ज्वर ग्रंथि मंदाग्नि अग्निदग्ध विस्फोट रक्तपित्त और त्वचा के रोगोंका नाशकहोताहै ॥८२॥

अथश्वेतपुनर्नवा ॥

पुनर्नवाश्वेतमूलाशोथघ्नीदीर्घपत्रिका । कटुःकषायानुरसापाण्डुघ्नीदीपनीसरा ॥ शोफानिलगरश्लेष्महरीव्रणोदरप्रणुत् ॥ ८३ ॥

श्वेतगदहपूरना के नाम गुण ॥

पुनर्नवा श्वेतमूला शोथघ्नी और दीर्घपत्रिका यहश्वेत गदहपूरना के नाम हैं श्वेतगदहपूरना कटु कुछ कषाय दीपन और पांडु सूजन वात गरदोष कफ घाव तथा उदररोग नाशक होती है ८३ ॥

अथरक्तपुष्पापुनर्नवा ॥

पुनर्नवापरारक्तारक्तपुष्पाशिलाटिका । शोथघ्नःक्षुद्रवर्षाभूवृपकेतुःकपिल्लकः ॥ पुनर्नवारुणातिक्ताकटुपाकाहिमालघुः । वातलाग्राहिणीश्लेष्मपित्तरक्तविनाशिनी ॥ ८४ ॥

लाल गदहपूरनाके नाम गुण ॥

रक्तपुष्पा शिलाटिका शोथघ्नी क्षुद्रवर्षाभू वृपकेतु और कठिल्लक यहलालगदह पूरनाके नामहैं लाल गदह पूरना तिक्त पाकमेंकटु शीतल हलका बादी ग्राही और पित्त तथा रक्त नाशक होताहै॥८४ ॥

अथगन्धप्रसारणी ॥

प्रसारणीराजवलाभद्रपर्णीप्रतापनी । सरणीसारणीभद्राबलाचापिकटम्भरा ॥ प्रसारणीगुरुर्वृष्याबलसन्धानकृत्सरा । वीर्य्योष्णावातहृत्तिक्तावातरक्तकफापहा ॥ ८५ ॥

गन्धप्रसारणी के नाम और गुण ॥

प्रसारिणी राजवला भद्रपर्णी प्रतापनी सरणी सारिणी भद्रा वला और कटंभरा यह गंध प्रसारणी के नामहैं गन्धप्रसारिणी भारी वीर्यवर्द्धक वलकारी टूटेकी जोड़नेवाली दस्तावर उष्ण वात नाशक तिक्त और वातरक्त तथा कफ नाशक होतीहै ॥ ८५ ॥

अथकरिआवांसा ॥

इन्द्रजम्बूकवत्पत्रासुगन्धाकलघण्टिका । कृष्णातुसारिवाश्यामागोपीगोपवधूश्च 'सा (गोरिआसांउ) इयमपिजम्बूवत्पत्रादुग्धगर्भाव्रततिर्भवति । धवलासारिवागोपी गोपकन्याकृशोदरी ॥ स्फोटाश्यामागोपवल्लीलतास्फोताचचन्दना। गोपीगोपस्यस्त्रीपुं योगाद्दीपागोपा गांपातीतिगोपागोपकन्या श्यामापदेनकृष्णाश्वेतापिसारिवाकथ्यते॥सा श्वतेनसारिवापदस्यप्रयुक्तत्वात् (तद्यथा) सारिवायांनिशिश्यामाश्यामोचहरितासिता विति। सारिवायुगलंस्वादुस्निग्धंशुक्रकरंगुरु ॥ अग्निमान्द्यारुचिश्वासकासामविषना शनम्। दोषत्रयास्रप्रदरज्वरातीसारनाशनम् ॥ ८६ ॥

कृष्ण और श्वेत सारिवा (सांई) के नाम और गुण ॥

काली सारिवा के पत्ते इन्द्र जंबू (जामन) के समान होतेहैं सुगन्धा, कल घंटिका, कृष्णा, सारिवा श्यामा गोपी और गोपवधू, यह काली सारिवा के नामहैं श्वेत सारिवा के भी पत्ते जामन के समान होतेहैं इसका वृक्ष दूध से भरीहुई लताकी जातिका होताहै धवला, सारिवा गोपा, गोपकन्या, कृशोदरी, स्फोटा, श्यामा, गोपवल्ली, लता, आस्फोता और चन्दना, यह श्वेत सारिवा के नाम हैं श्यामशब्दसे कृष्ण और श्वेत दोनों सारिवा लीजातीहैं क्योंकि शाश्वतने सारिवा मात्रमें इसशब्दका प्रयोग कियाहै जैसे सारिवा शब्दमें निशि, श्यामा श्याम हरित और असित, यह कहेजातेहैं दोनों सारिवा मधुर, स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक, भारी और मंदाग्नि अरुचि, श्वास खांसी, आम विष, त्रिदोष रक्त दोष प्रदर ज्वर तथा अतीसार नाशक होती हैं ॥ ८६ ॥

अथ भंगरा ॥

भृंगराजोभृंगरजो मार्कवोभृंगएवच । अंगारकःकेशराजो भृंगारःकेशरञ्जनः ॥ भृंगारःकटुकस्तीक्ष्णो रूक्षोष्णःकफवातनुत् । केश्यस्त्वच्यःकृमिश्वासकासशोथामपाण्डुनुत् ॥ दन्त्योरसायनोबल्यः कुष्ठनेत्रशिरोर्त्तिनुत् ॥ ८७ ॥

भंगरे के नाम और गुण ॥

भृंगराज, भृंगरज, मार्कव भृंग, अंगारक केशराज, भृंगार और केशरंजन यह भंगरेके नाम हैं भंगरा कटु, तीक्ष्ण, रूखा, उष्ण, केशोंकोहित, त्वचा को उपकारी, रसायन बलकारक दांतों को हित और कृमि, श्वास, खांसी, सूजन, आम, पांडु, कुष्ट, नेत्ररोग तथा शिरके रोगोंका नाशक होता है॥ ८७ ॥

शणपुष्पाइति च हुली । शण इव पुष्पा ॥

शणपुष्पीस्मृताघण्टाशणपुष्पसमाकृतिः।शणपुष्पीकटुस्तिक्तावामिनीकफपित्तजित् ८८

शण पुष्पी (इसके पुष्पसन के पुष्पके समान होतेहैं) के नाम और गुण ॥

शणपुष्पी, घंटा और शणपुष्प समाकृति यह शणपुष्पी के नामहैं शणपुष्पी कटु तिक्त छर्दिकारक और कफ पित्त नाशक होतीहै॥८८॥ अथ त्रायमाना ॥

बलभद्रात्रायमाना त्रायन्तीगिरिसानुजा । त्रायन्तीतुवरातिक्ता सरापित्तकफापहा ॥ ज्वरहृद्रोगगुल्मार्शो भ्रमशूलविषप्रणुत् ॥ ८९ ॥

त्रायमाणा (चिरायते के फल) के नाम गुण ॥

बलभद्र बलभद्रा त्रायमाणा त्रायन्ती गिरजा और अनुजा यह त्रायमाणा के नामहैं त्रायमाणा कषाय तिक्त दस्तावर और पित्त कफ ज्वर हृदय रोग गुल्म बवासीर भ्रम शूल तथा विषकी नाशक होती है ॥ ८९ ॥

अथ चूर्णहार ॥

मूर्व्वामधुरसादेवी मोरटातेजनीस्त्रुवा । मधूलिकामधुश्रेणी गोकर्णीपीलुपर्ण्यपि ॥ मूर्वासरागुरुःस्वादुस्तिक्तापित्तास्रमेहनुत्।त्रिदोषतृष्णाहृद्रोगकण्डूकुष्ठज्वरापहा॥९०॥

मरोड़फली के नाम और गुण ॥

मूर्वा मधुरसा देवी मोरटा तेजनी स्त्रुवा मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णीपीलुपर्णी यह मरोड़फली के नाम हैं मरोड़फली दस्तावर भारी मधुर तिक्त और पित्त रक्त प्रमेह त्रिदोष तृषा हृदयकेरोग खुजली कुष्ठ तथा ज्वरनाशक होती है ॥ ९० ॥

अथ कवैआ ॥

काकमाचीध्वाङ्क्षमाची काकाह्वाचैववायसी । काकमाचीत्रिदोषघ्नी स्निग्धोष्णा स्वरशुक्रदा ॥ तिक्तारसायनीशोथ कुष्ठार्शोज्वरमेहजित् । कटुर्नेत्रहिताहिक्का च्छर्दिहृद्रोगनाशिनी ॥ ९१ ॥

मकोह के नाम और गुण ॥

काकमाची ध्वांक्षमाची काकाह्वा और वायसी यह मकोह के नाम हैं मकोह त्रिदोषनाशक स्निग्ध उष्ण स्वरकोहित वीर्यबर्द्धक तिक्त कटु रसायन नेत्रोंकोहित और सूजन कुष्ठ बवासीर ज्वर प्रमेह हिचकी छर्दि तथा हृदय के रोगोंकी नाशकहोती है ॥ ९१ ॥

कौआढोढी ॥

काकनासातुकाकांगी काकतुण्डफलाच्वसा । काकनासाकषायोष्णा कटुकारसपाकयोः ॥ कफघ्नीवामनीतिक्ता शोथार्शःश्वित्रकुष्ठहृत् ॥ ९२ ॥

कौआ टोढ़ीके नाम और गुण ॥

काकनासा, काकांगी और काकतुण्डफला, यह कौआटोढ़ी के नाम हैं, कौआटोढ़ी, कषाय उष्ण रस तथा पाक में कटु, छर्दिकारक, तिक्त और, कफ, सूजन, बवासीर तथा श्वेतकुष्ठ नाशक होती है ॥ ९२

अथ काकजंघा मसीतिलोके ॥

काकजंघानदीकान्ता काकतिक्तासुलोमशा । पारावतपदीदासी काकाचापिप्रकीर्त्तिता ॥ काकजङ्घाहिमातिक्ता कषायाकफपित्तजित् । निहन्तिज्वरपित्तास्र ज्वरकण्डूविषकृमीन् ॥ ९३ ॥

काकजंघा के नामगुण ॥

काकजंघा नदीकान्ता काक तिक्ता सुलोमशा पारा वतपदी दासी और काका यह काकजंघा के

नामहैं काकजंघा शीतल तिक्त कषाय और कफ पित्त ज्वर रक्तपित्त घाव खुजली विष तथा कृमिनाशक होती है ॥ ९३ ॥

अथ नागपुष्पी ॥

नागपुष्पीश्वेतपुष्पा नागिनीरामदूतिका । नागिनीरोचनीतिक्ता तीक्ष्णोष्णाकफपित्त नुत् ॥ विनिहन्तिविषंशूलं योनिदोषवमिकृमीन् ॥ ९४ ॥

नागपुष्पी के नाम गुण ॥

नागपुष्पी श्वेतपुष्पा नागिनी और रामदूतिका यह नागपुष्पीके नामहैं नागपुष्पी रुचिकारक तिक्त तीक्ष्ण उष्ण और कफ पित्त विष शूल योनिदोष छर्दि तथा कृमिनाशक होतीहै ॥ ९४॥

अथ मेढासिङ्गी ॥

मेषशृङ्गीविषाणीस्यान्मेषवल्ल्यजशृङ्गिका । मेषशृङ्गीरसेतिक्ता वातलाश्वासकासह त् ॥ रूक्षापाकेकटुस्तिक्त व्रणश्लेष्माक्षिशूलनुत् । मेषशृङ्गीफलंतिक्तं कुष्ठमेहकफव्रणान्॥ दीपनंस्रंसनंकास कृमिव्रणविषापहम् ॥ ९५ ॥

मेढासिंगी के नाम और गुण ॥

मेषशृंगी विषाणी मेषवल्ली और अजशृंगिका यह मेढाशृंगी के नाम हैं मेढा सिंगी तिक्त वादी रूखी पाकमें कटु और श्वास खांसी कुष्ठ घाव कफ तथा नेत्रकी पीड़ाकी नाशक होती है मेढा सिंगी का फल तिक्त दीपन स्रंसन और कुष्ठ प्रमेह कफ खांसी कृमि घाव तथा विष दोष नाशक होताहै ॥ ९५ ॥

अथ हंसपदी ॥

हंसपादीहंसपदी कीटमातात्रिपादिका । हंसपादीगुरुःशीता हन्तिरक्तविषव्रणान् ॥ विसर्पदाहातीसार लूताभूताग्निरोहिणी ॥ ९६ ॥

हंसपदी के नामगुण ॥

हंसपादी हंसपदी कीटमाता और त्रिपादिका यह हंसपदी के नाम हैं हंसपदी भारी शीतल और रक्तदोष विष घाव वीसर्प दाह अतीसार मकडी भूतदोष तथा अग्नि रोहिणीरोग को नाशकरती है ॥ ९६ ॥

अथ सोमलता ॥

सोमवल्लीसोमलता सोमक्षीरीद्विजाप्रिया । सोमवल्लीत्रिदोषघ्नी कटुस्तिक्तारसा यनी ॥ ९७ ॥

सोमलता के नामगुण ॥

सोमवल्ली सोमलता सोमक्षीरी और द्विजप्रिया यह सोमलता के नामहैं सोमलता, त्रिदोष-नाशक कटु तिक्त और रसायन होती है ॥ ९७ ॥

अथ आकाशवल्ली ॥

(अमरवेलि इति च) आकाशवल्लीतुबुधैः कथितामरवल्लरी । खवल्लीग्राहिणी तिक्ता पिच्छिलाक्ष्मामयापहा ॥ तुवराग्निकरीहृद्या पित्तश्लेष्मामनाशिनी ॥ ९८ ॥

अमरवेल के नाम गुण ॥

आकाशवल्ली और अमरवल्लरी यह अमरवेलके नामहैं अमरवेल ग्राही तिक्त पिच्छिल कषाय अग्नि वर्द्धक हृदयकोहित और नेत्ररोग पित्त कफ तथा आमनाशकहोतीहै ॥ ९८ ॥

अथ पातालगरुडी ॥

छिलिहिंटोमहामूलः पातालगरुडाह्वयः। छिलिहिंटःपरंवृष्यः कफघ्नःपवनापहः ९९॥

पातालगरुडी के नामगुण ॥

छिलिहिंट महामूल और पातालगरुडी यहनाम हैं पातागरुडी अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक और कफ तथा वायुनाशक होती है ॥ ९९ ॥

अथ वन्दा ॥

वन्दावृक्षादनीवृक्ष भक्ष्यावृक्षरुहापिच। वन्दाकःस्याद्धिमस्तिक्तः कषायोमधुरोरसे॥ मांगल्यःकफवातास्ररक्षोव्रणविषापहः ॥ १०० ॥

वांदा के नामगुण ॥

वन्दा वृक्षादनी वृक्षभक्ष्या और वृक्षरुहा यह वादाके नामहैं वांदा शीतल तिक्त कषाय मधुर मंगलकारी और कफ वात रक्त दोष राक्षसोंकी पीड़ा घाव तथा विषनाशकहोता है ॥ १०० ॥

अथ वटपत्री ॥

वटपत्रीतुकथिता मोहिनीरेचनीबुधैः। वटपत्रीकषायोष्णा योनिमूत्रगदापहा१०१॥

वट पत्रीके नामगुण ॥

वटपत्री को पंडितलोग मोहिनी और रेचनी कहतेहैं वटपत्री कषाय उष्ण और योनि तथा मूत्रके रोगोंको नाश करतीहै ॥ १०१ ॥

अथ हिंगुपत्री ॥

हिंगुपत्री तुकवरीपृथ्विका पृथुकापृथुः ॥ हिंगुपत्रीभवेद्रुच्यातीक्ष्णोष्णापाचनीकटुः। हृद्बस्तिरुग्विबन्धार्शः श्लेष्मगुल्मानिलापहा ॥ १०२ ॥

हिंगु पत्रीके नाम गुण ॥

हिंगुपत्री कवरी पृथ्विका पृथुका और पृथु यह हिंगुपत्री के नामहैं हिंगुपत्री रुचिकारक तीक्ष्ण उष्ण पाचक कटु और हृदयके रोग मूत्राशयके रोग विबन्ध बवासीर कफ गुल्म तथा वायु नाशक होतीहै ॥ १०२ ॥

अथ वंशपत्री ॥

वंशपत्रीवेणुपत्रीपिङ्गाहिङ्गुशिवाटिका। हिंगपत्रीगुणाविज्ञेर्वंशपत्रीचकीर्त्तिता ॥ १०३ ॥

वंश पत्रीके नाम गुण ॥

वंशपत्री वेणुपत्री पिंगा हिंगु और शिवाटिका यह पत्रीके नामहैं वंशपत्री हिंगुपत्रीके समानगुण दायक होतीहै ॥ १०३ ॥

अथ मत्स्याक्षी ॥

मछेछीइतिलोके। छछमछरिआइतिच ॥ मत्स्याक्षीवाह्लिकामत्स्यगन्धामत्स्यादनी

तिच। मत्स्याक्षीग्राहिणीशीताकुष्ठपित्तकफास्रजित्॥ लघुस्तिक्ताकषायाचस्वाद्वीकटु विपाकिनी॥ १०४॥

मत्स्याक्षी (छछमछरिया या मछेछी)
के नाम और गुण॥

मत्स्याक्षी वाह्लिका मत्स्यगन्धा और मत्स्यादनी यह मत्स्याक्षी के नाम हैं मत्स्याक्षी ग्राही शीतल हलकी तिक्त कषाय मधुर पाक मेंकटु और कुष्ठ पित्त कफ तथा रक्त दोष नाशक होती है॥ १०४॥

अथ सरहटीगण्डिनीतिच॥

सर्पाक्षीस्यात्तुगण्डालीतथानाड़ीकपालक। सर्पाक्षीकटुकातिक्तासोष्णाक्रिमिविकृन्तनी॥ वृश्चिकोन्दुरसर्पाणांविषघ्नीव्रणरोपिणी॥ १०५॥

सर्पाक्षीके नाम गुण॥

सर्पाक्षी, गंडाली, और नाड़ी कपालक, यह सर्पाक्षीके नामहैं सर्पाक्षी, कटु, तिक्त, उष्ण, घावभरने वाली कृमिनाशक और विच्छू, मूस तथा सर्पके, विपकी नाशक होतीहै॥ १०५॥

अथ शङ्खपुष्पी॥

शङ्खपुष्पीतुशङ्खाह्वामाङ्गल्यकुसुमापिच। शङ्खपुष्पीसरामेध्यावृष्यामानसरोगहृत्रसायनीकषायोष्णास्मृतिकान्तिबलाग्निदा। दोषापस्मारभूतादिकुष्ठक्रिमिविषप्रणुत् १०६॥

शंख पुष्पी के नाम गुण॥

शंखपुष्पी, शंखाह्वा और मांगल्य कुसुमा, यह शंख पुष्पी के नाम हैं, शंखपुष्पी, दस्तावर, मेधाको हित, आयुको हित, उष्ण, रसायन, कषाय, स्मृति, कान्ति, बल तथा अग्नि वर्द्धक और मानसिक रोग, त्रिदोष मृगी, भूतदोष, अलक्ष्मी, कुष्ठ, कृमि, तथा विपकी नाशक होती है, ॥ १०६॥

अथ अर्कपुष्पी॥

अर्कपुष्पीक्रूरकर्मापयस्याजलकामुका। अर्कपुष्पीक्रिमिश्लेष्ममेहपित्तविकारजित् १०७॥

अर्क पुष्पी के नाम गुण॥

अर्कपुष्पी, क्रूरकर्मा, पयस्या और जलकामुका, यह अर्क पुष्पी के नाम हैं, अर्कपुष्पी, कृमि, कफ प्रमेह, और पित्तके विकारों की नाशकहोती है॥ १०७॥

अथ लज्जालु॥

लज्जालुःस्यात्शमीपत्रासमङ्गाजलकारिका। रक्तपादीनमस्कारीनाम्नाखदिरकेत्यपि॥ लज्जालुःशीतलातिक्ताकषायाकफपित्तजित्। रक्तपित्तमतीसारंयोनिरोगान्विनाशयेत्॥ १०८॥

लज्जालू के नाम गुण॥

लज्जालू, शमीपत्रा, समंगा, जलकारिका, रक्तपादी, नमस्कारी और खदरिका यह लज्जालू के नाम हैं लज्जालू, शीतल, तिक्त कषाय और कफ पित्त, रक्तपित्त, अतीसार तथा योनि रोग नाशक होती है॥ १०८॥

लज्जालूभेदः अलम्बुषा ॥

अलम्बुषाखरत्वक्च तथामेदोगलास्मृता । अलम्बुषालघुः स्वादुः कृमि पित्तक फापहा ॥ १०९ ॥

लज्जालू का भेद अलंबुपाके नाम और गुण ॥

अलंबुपा खरत्वक् और मेदोवला यह अलंबुपा के नाम हैं अलंबुपा हलकी मधुर और कृमि कफ तथा पित्त नाशक होती है ॥ १०९ ॥

अथ दूधी ॥

दुग्धिकास्वादुपर्णीस्यात्क्षीराविक्षीरिणीतथा । दुग्धिकोष्णागुरूरूक्षावातलागर्भका रिणी ॥ स्वादुक्षीराकटुस्तिक्तासृष्टमूत्रमलापहा । स्वादुर्विष्टम्भिनीवृष्याकफकुष्ठकृमि प्रणुत् ॥ ११० ॥

दूधीके नाम गुण ॥

दुग्धिका स्वादुपर्णी क्षीरा और विक्षीरिणी यह दूधीके नाम हैं दूधी उष्ण भारी रूखी वादी गर्भकारक स्वादिष्ट दुग्धवाली कटु तिक्त मधुर मलमूत्र की निकालने वाली विष्टंभी वीर्य वर्द्धक और कफ कुष्ठ तथा कृमि नाशक होती है ॥ ११० ॥

अथ भुइँआम्बरा ॥

भूम्यामलकिकाप्रोक्ताशिवातामलकीतिच । वहुपत्रावहुफलावहुवीर्य्याजटापिच ॥ भ धात्रीवातकृत्तिक्ताकषायामधुराहिमा । पिपासाकासपित्तास्रकफपाण्डुक्षतापहा ॥ १११ ॥

भुईंआमलेके नाम गुण ॥

भूम्यामलकिका शिवा तामलकी वहुपत्रा वहुफला वहुवीर्या और अजटा यह भुइंआमले के नाम हैं भुइंआमला वादी तिक्त कषाय मधुर शीतल और तृषा खांसी रक्तपित्त कफ पांडु तथा क्षतनाशकहोताहै ॥ १११ ॥

अथ वरंभी ॥

ब्राह्मीकपोतवङ्काचसोमवल्लीसरस्वती । ब्रह्ममाण्डूकी ॥ मण्डूकपर्णीमाण्डूकीत्वाष्ट्री दिव्यामहौषधी । ब्राह्मीहिमासरातिक्तालघुर्मेध्याचशीतला ॥ कषायामधुरास्वादुपाका युष्मारसायनी । स्वर्य्यास्मृतिप्रदाकुष्ठपाण्डुमेहास्रकासजित् ॥ विषशोथज्वरहरीतद्वन्म ण्डूकपर्णिनी ॥ ११२ ॥

ब्राह्मी और ब्रह्ममांडूकी के नाम गुण ॥

ब्राह्मी कपोतवंका सोमवल्ली और सरस्वती यह ब्राह्मी के नामहैं मंडूकपर्णी मांडूकी त्वाष्ट्री दिव्या और महोपधी यह ब्रह्ममांडूकी के नामहैं ब्राह्मी दस्तावर, वीर्य में शीतल तिक्त कषाय मधुर हलकी मेधाको हित शीतल पाकमें मधुर आयुको हित रसायन स्वरको हित स्मृतिदायक और कुष्ठ पांडु प्रमेह रक्तदोप खांसी विष सूजनतथा ज्वर नाशकहोती है ब्रह्म मांडुकी में भी इसी के समानगुणहोतेहैं ॥ ११२ ॥

अथ गूमा ॥

द्रोणाचद्रोणपुष्पीचफलेपुष्पाचकीर्तिता॥द्रोणपुष्पीगुरुःस्वादूरूक्षोष्णावातपित्तकृत्॥स तीक्ष्णलवणास्वादुपाकाकट्वीचभेदिनी॥कफामकामलाशोथतमकश्वासजन्तुजित् ११३॥

गूमाके नाम और गुण ॥

द्रोणा, द्रोणपुष्पी और फलेपुष्पा, यहगूमा के नामहैं गूमा भारी, लवण, मधुर कटु,रूखा उष्ण बादी पित्तवर्द्धक तीक्ष्ण पाकमें मधुर भेदक और कफ आम कामला सूजन तमकश्वास तथा कृमि नाशकहोताहै ॥ ११३ ॥

अथहुरहुरद्वितीयहुरहुर ॥

सुवर्चलासूर्य्यभक्तावरदावदरापिच । सूर्यावर्त्तारविप्रीताऽपराब्रह्मसुवर्चला ॥सुवर्च लाहिमारूक्षास्वादुपाकासरागुरुः । अपित्तलाकटुःक्षाराविष्टम्भकफवातजित् ॥ अन्या तिक्ताकषायोष्णासरारूक्षालघुःकटुः । निहन्तिकफपित्तास्रश्वासकासारुचिज्वरान् ॥ विस्फोटकुष्ठमेहास्रयोनिरुक्कृमिपाण्डुताः ॥ ११४ ॥

दोनों प्रकार के हुर हुर के नामगुण ॥

सुवर्चला सूर्य्यभक्ता वरदा वदरा सूर्य्यावर्ता और रविप्रीता यह हुर २ के नामहैं और दूसरे प्रकारके हुर२को ब्रह्मसुवर्चलाकहतेहैं हुर२ शीतल रूखा पाक में मधुर दस्तावर भारी पित्तको न करनेवाली क्षार कटु और विष्टंभ कफ तथा वातको नाशकरती है और दूसरे प्रकारकी हुर २ तिक्त कषाय उष्ण दस्तावर रूखी हलकी कटु और कफ पित्त रक्तदोष श्वास खांसी अरुचि ज्वर स्फोट कुष्ठ प्रमेह रक्तपित्त योनिरोग कृमितथा पांडु नाशक होतीहै ॥ ११४ ॥

अथवांभूखखा ॥

वन्ध्याकर्कोटकीदेवीकन्यायोगीश्वरीतिच । नागारिनक्रदमनीविषकण्टकिनीतथा॥ वन्ध्याकर्कोटकीलघ्वीकफनुद्व्रणशोधिनी॥सर्पदर्पहरीतीक्ष्णाविसर्पविषहारिणी ११५॥

बांझ खकसाके नामगुण ॥

वंध्याकर्कोटकी देवी कन्या योगीश्वरी नागारि नक्रदमनी और विषकंटकिनी यह बांझखकसा के नामहैं बांझ खकसा हलका घावको शोधक तीक्ष्ण और कफ सर्पकाविष विसर्प तथा विष नाशक होताहै ॥ ११५ ॥

अथ भूइखखसा वल्लीभूमिप्रसरणशीला ॥

मार्कण्डिकाभूमिवल्लीमार्कण्डीमृदुरेचनी । मार्कण्डिकाकुष्ठहरीऊर्ध्वाधःकायशोधि नी ॥ विषदुर्गन्धकासघ्नीगुल्मोदरविनाशिनी ॥ ११६ ॥

भुइँखकसा के नामगुण ॥

मार्कण्डिका भूमिवल्ली मार्कण्डी और मृदुरेचनी यह भुइँखकसाके नामहैं भुइँखकसावमनविरेचनके द्वारा ऊपर नीचे के शरीर का शुद्ध करनेवाला और कुष्ठ विष दुर्गन्धि खांसी गुल्म तथा उदर रोग नाशक होताहै ॥ ११६ ॥

अथदेवदालीसोनैत्राखखसावत् फलव्रततिः॥

देवदालीतुवेणीस्यात् कर्कटीचगरागरी। देवताएडींवृत्तकोशस्तथाजीमूतइत्यपि॥पीतापराखरस्पर्शाविपघ्नीगरनाशिनी।देवदालीरसेतिक्ताकफार्शःशोफपाण्डुताः॥नाशयेत् वामनीतिक्ताक्षयहिक्काक्रमिज्वरान् । देवदालीफलंतिक्तंक्रमिश्लेष्मविनाशनम्॥ स्रंसनं गुल्मशूलघ्नमर्शोघ्नंवातजित्परम्॥ ११७॥

सुनैया (खकसा के समान फलवाली लता) के नाम और गुण॥

देवदाली वेणी कर्कटी गरागरी देवतांडी वृत्तकोश और जीमूत यह सुनैया के नाम हैं पीतवर्ण की दूसरी सुनैयाको खरस्पर्शा विपघ्नी और गरनाशिनी कहते हैं सुनैया रसमें तिक्त छर्दि कारक तीक्ष्ण और कफ बवासीर सूजन पांडु क्षय हिचकी कृमितथा ज्वर नाशक होती है सुनैयाका फल तिक्त स्रंसन और कफ कृमि गुल्म श्वास शूलबवासीर तथा अत्यन्त वात नाशक होताहै ११७॥

अथ जलपिप्पली पनिसगाइतिलोके॥

जलपिप्पल्यभिहिताशारदीशकलादनी । मत्स्यादनीमत्स्यगन्धालाङ्गलीत्यपिकीर्त्तिता॥ जलपिप्पलिकाहृद्याचक्षुष्याशुक्रलालघुः। संग्राहिणीहिमारूक्षारक्तदाहव्रणापहा॥ कटुपाकरसारुच्याकषायावह्निवर्द्धिनी॥ ११८॥

जल पीपल के नाम गुण॥

जलपिप्पली शारदी शकुलादनी मत्स्यादनी मत्स्यगंधा और लांगली यह जलपीपलके नाम हैं जलपीपल हृदयको हित नेत्रोंकोहित वीर्यवर्द्धक हलकी ग्राही शीतल रूखी रसतथा पाक में कटु रुचिकारक कषाय अग्निवर्द्धक और रक्तदोष दाह तथा घाव की नाशक होतीहै॥ ११८॥

अथगोभी॥

गोजिह्वागोजिकागोभीदार्विकाखरपर्णिनी।गोजिह्वावातलाशीताग्राहिणीकफपित्तनुत्॥ हृद्याप्रमेहकासास्रव्रणज्वरहरीलघुः।कोमलातुवरातिक्तास्वादुपाकरसास्मृता॥ ११९॥

गाबजमाके नाम गुण॥

गोजिह्वा गोजिका गोभी दार्विका और खरपर्णिनी गोजिह्वा वादी शीतल ग्राही हृदयको हित हलकी कषाय तिक्त मधुर पाकमें मधुर और प्रमेह खांसी रक्तदोष तथा ज्वरनाशक होताहै॥ ११९॥

अथनागदमनी॥

विज्ञेयानागदमनीबलामोटाविषापहा। नागपुष्पीनागपत्रामहायोगेश्वरीतिच॥ बलामोटाकटुस्तिक्तालघुःपित्तकफापहा। मूत्रकृच्छ्रव्रणान्रक्षोनाशयेज्जालगर्दभम्॥ सर्वग्रहप्रशमनीनिश्शेषविषनाशिनी। जयंसर्वत्रकुरुतेधनदासुमतिप्रदा॥ १२०॥

नागदमनके नामगुण॥

नागदमनी बलामोटा विषापहा नागपुष्पी नागपत्रा और महायोगेश्वरी यह नागदमनके नाम हैं नागदमनी कटु तिक्त हलकी सर्वत्र जयदायक धन देनेवाली सुबुद्धिदायक और पित्त कफ मूत्रकृच्छ्र घाव राक्षसोंकीपीडा जालगर्दभ सब ग्रह पीडा तथा अत्यन्त विषनाशक होती है॥ १२०॥

अथ गूमा ॥

द्रोणाचद्रोणपुष्पीचफलेपुष्पाचकीर्तिता॥द्रोणपुष्पीगुरुःस्वादूरूक्षोष्णावातपित्तकृत्॥स तीक्ष्णलवणास्वादुपाकाकट्वीचभेदिनी॥कफामकामलाशोथतमकश्वासजन्तुजित् ११३॥

गूमाके नाम और गुण ॥

द्रोणा, द्रोणपुष्पी और फलेपुष्पा, यहगूमा के नामहैं गूमा भारी, लवण, मधुर कटु,रूखा उष्ण वादी पित्तवर्द्धक तीक्ष्ण पाकमें मधुर भेदक और कफ आम कामला सूजन तमकश्वास तथा कृमि नाशकहोताहै ॥ ११३ ॥

अथहुरहुरद्वितीयहुरहुर ॥

सुवर्चलासूर्य्यभक्तावरदावदरापिच । सूर्य्यावर्त्तारविप्रीताऽपराब्रह्मसुवर्चला ॥सुवर्च लाहिमारूक्षास्वादुपाकासरागुरुः । अपित्तलाकटुःक्षाराविष्टम्भकफवातजित् ॥ अन्या तिक्ताकषायोष्णासरारूक्षालघुःकटुः । निहन्तिकफपित्तास्रश्वासकासारुचिज्वरान् ॥ विस्फोटकुष्ठमेहास्रयोनिरुकृमिपाण्डुताः ॥ ११४ ॥

दोनों प्रकार के हुर हुर के नामगुण ॥

सुवर्चला सूर्य्यभक्ता वरदा वदरा सूर्य्यावर्त्ता और रविप्रीता यह हुर २ के नामहैं और दूसरे प्रकारके हुर२को ब्रह्मसुवर्चलाकहतेहैं हुर२ शीतल रूखा पाक में मधुर दस्तावर भारी पित्तको न करनेवाली क्षार कटु और विष्टंभ कफ तथा वातको नाशकरती है और दूसरे प्रकारकी हुर २ तिक्त कषाय उष्ण दस्तावर रूखी हलकी कटु और कफ पित्त रक्तदोष श्वास खांसी अरुचि ज्वर स्फोट कुष्ठ प्रमेह रक्तपित्त योनिरोग कृमितथा पांडु नाशक होतीहै ॥ ११४ ॥

अथवांभूखखा ॥

वन्ध्याकर्कोटकीदेवीकन्यायोगीश्वरीतिच । नागारिनक्रदमनीविषकण्टकिनीतथा॥ वन्ध्याकर्कोटकीलघ्वीकफनुद्व्रणशोधिनी॥सर्पदर्पहरीतीक्ष्णाविसर्पविषहारिणी ११५॥

वांभ खकसाके नामगुण ॥

वंध्याकर्कोटकी देवी कन्या योगीश्वरी नागारि नक्रदमनी और विषकंटकिनी यह वांझखकसा के नामहैं वांभ खकसा हलका घावको शोधक तीक्ष्ण और कफ सर्पकाविष विसर्प तथा विष नाशक होताहै ॥ ११५ ॥

अथ भूइखखसा वल्लीभूमिप्रसरणशीला ॥

मार्कण्डिकाभूमिवल्लीमार्कण्डीमृदुरेचनी । मार्कण्डिकाकुष्ठहरीऊर्ध्वाधःकायशोधि नी ॥ विषदुर्गन्धकासघ्नीगुल्मोदरविनाशिनी ॥ ११६ ॥

भुइँखकसा के नामगुण ॥

मार्कण्डिका भूमिवल्ली मार्कण्डी और मृदुरेचनी यह भुइँखकसाके नामहैं भुइँखकसावमनविरेचनके द्वारा ऊपर नीचे के शरीर का शुद्ध करनेवाला और कुष्ठ विष दुर्गन्धि खांसी गुल्म तथा उदर रोग नाशक होताहै ॥ ११६ ॥

अथवरवेल ॥

वेलन्तरोजगतिवीरतरुःप्रसिद्धःश्वेतासितारुणविलोहितनीलपुष्पः । स्याज्जातितुल्यकुसुमःशमिसूक्ष्मपत्रः स्यात्कण्टकीविजलदेशजएषवृक्षः ॥ वेलन्तरोरसेपाकेतिक्तः तृष्णाकफापहः । मूत्राघाताश्मजिद्ग्राहीयोनिमूत्रानिलार्त्तिजित् ॥ १२१ ॥

वरवेलके नामगुण ॥

वेलन्तर जगत् में वीरुतरु नाम से प्रसिद्धहै इसके पुष्प श्वेत कृष्ण कुछ लाल लाल और नील वर्ण के होते हैं पुष्पों का आकार चमेलीके समान होता है पत्ते छोंकर के समान सूक्ष्म होते हैं यह वृक्ष जल रहित स्थान में उत्पन्न होता है और कांटेवाला होता है वरवेलरस तथा पाकमें तिक्त ग्राही और तृषा कफ मूत्राघात पथरी योनिरोग मूत्ररोग तथा वातरोग नाशक होताहै ॥ १२१ ॥

छिकनी ॥

छिक्कनीक्षवकृत्तीक्ष्णाछिक्किकाघ्राणदुःखदा । छिक्कानीकटुकारुच्यातीक्ष्णोष्णावह्निपित्तकृत् ॥ वातरक्तहराकुष्ठकृमिवातकफापहा ॥ १२२ ॥

नकछिकनी के नामगुण ॥

छिक्कनी क्षवकृत् तीक्ष्णा छिक्किका और घ्राणदुःखदायह नकछिकनीकेनामहैं नकछिकनी कटुरुचिकारकतीक्ष्ण उष्ण अग्निवर्द्धक पित्तकारक और वातरक्त कुष्ठ कृमिवात तथा कफनाशकहोतीहै१२२ ॥

अथकुकुन्दर ॥

कुकुन्दरस्ताम्रचूडः सूक्ष्मपत्रोमृदुच्छदः । कुकुन्दरःकटुस्तिक्तोज्वररक्तकफापहः ॥ तन्मूलमार्द्रनिःक्षिप्तंवदनेमुखशोषहृत् ॥ १२३ ॥

कुकुरोंदेके नाम गुण ॥

कुकुंदर ताम्रचूड सूक्ष्मपत्र और मृदुच्छद यह कुकुरोंदा के नाम हैं यह कटु तिक्त और ज्वर रक्त दोष तथा कफ नाशक होताहै कुकुरोंदेकी गीली जड़ मुखमें रखनेसे मुखका सूखना मिटता है॥ १२३॥

अथसुदर्शनः ॥

सुदर्शनासोमवल्लीचक्राङ्कामधुपर्णिका । सुदर्शनास्वादुरुष्णाकफशोफास्रवाताजित् १२४

सुदर्शनके नाम गुण ॥

सुदर्शना सोमवल्ली चक्राह्वा और मधुपर्णिका यह सुदर्शनके नाम हैं सुदर्शन मधुर उष्ण और कफ सूजन तथा वात रक्त नाशक होताहै ॥ १२४ ॥

अथमूसाकर्णी ॥

आखुकर्णीत्वाखुकर्णपर्णिकाभूदरीभवा । आखुकर्णीकटुस्तिक्ताकषायाशीतलालघुः॥ विपाकेकटुकामूत्रकफामयकृमिप्रणुत् ॥ १२५ ॥

मूसाकर्णीके नाम गुण ॥

आखुपर्णी आखुकर्णी पर्णिका और भूदरीभवा यह मूसाकर्णीके नाम हैं यह कटु तिक्त कषाय शीतल लघु पाकमें कटु और मूत्र कफ तथा कृमिरोग नाशक होतीहै ॥ १२५ ॥

अथ मयूरशिखा ॥

मयूराङ्कशिखाप्रोक्ता सहस्राहिर्म्मधुच्छदा । नीलकण्ठशिखालघ्वी पित्तश्लेष्मातिसारजित् ॥ १२६ ॥

इतिभावप्रकाशेगुडूच्यादिवर्गः ॥

मोरशिखाके नाम गुण ॥

मयूराह्वशिखा सहस्राहि और मधुच्छदा यह मोरशिखाके नाम हैं यह हलकी और पित्त कफ तथा अतीसार नाशकहोती है ॥ १२६ ॥

इतिभावप्रकाशस्यभाषानुवादेगुडूच्यादिवर्गः ॥

अथ पुष्पवर्गः । तत्रादौकमलस्यनामानिगुणाश्च ॥

वापुंसिपद्मंनलिनमरविन्दंमहोत्पलम् । सहस्रपत्रंकमलं शतपत्रंकुशेशयम् ॥ पङ्केरुहन्तामरसं सारसीसरसीरुहम् । विशप्रसूनराजीवपुष्कराम्भोरुहाणिच ॥ कमलंशीतलंवर्ण्यं मधुरंकफपित्तजित् । तृष्णादाहास्रविस्फोट विषवीसर्पनाशनम् ।।विशेषतःसितंपद्मंपुण्डरीकमितिस्मृतम् । रक्तंकोकनदंज्ञेयं नीलमिन्दीवरंस्मृतम् ॥ धवलंकमलंशीतं मधुरंकफपित्तजित् । तस्मादल्पगुणंकिञ्चिदन्यद्रक्तोत्पलादिकम् ॥ १ ॥

अथ पुष्प वर्गः ॥

कमलके नाम और गुण ॥

पद्म नलिन अरविन्द महोत्पल सहस्रपत्र कमलशतपत्र कुशेशय पंकेरुह तामरस सारस सरसीरुह विशप्रसून राजीव पुष्कर और अम्भोरुह यहकमलकेनामहैं यहसब शब्द पुल्लिंग और नपुंसकलिंगहैं कमल शीतल वर्णकोहित मधुर और कफ पित्त तृषादाह रक्तदोष विस्फोट विष तथा वीसर्पनाशक होताहै श्वेत कमलको पुंडरीक लालको कोकनद और नीलको इन्दीवर कहतेहैं श्वेतकमल शीतल मधुर और कफ पित्त नाशकहोताहै और लालकमलादिक इसकी अपेक्षा कुछकम गुणवाले होतेहैं ॥ १ ॥

अथ पद्मिनी ॥

मूलनालदलोत्फुल्लः फलैःसमुदितापुनः । पद्मिनीप्रोच्यतेप्राज्ञैर्विसिन्यादिचसास्मृता ॥ आदिशब्दान्नलिनीकमलिनीत्यादि ॥ पद्मिनीशीतलागुर्व्वी मधुरालवणाचसा । पित्तासृक्कफनुद्रूक्षावातविष्टम्भकारिणी ॥ २ ॥

कमलनी के नामगुण ॥

मूल नाल और पत्ते इन सब समेत कमल के पुष्पको पंडित लोग पद्मिनी कहते हैं विसिनी नलिनी और कमलनी आदिक उसके नामहैं कमलनी शीतल भारी मधुर लवण रक्त पित्तनाशक कफघ्न रूखी बादी और विष्टंभकारक होती है ॥ २ ॥

अथ नवपत्रादि ॥

सम्वर्त्तिकानवदलंबीजकोशस्तुकर्णिका। किञ्जल्क-केशरःप्रोक्तोमकरन्दोरसःस्मृतः॥ पद्मनालंमृणालंस्यात्तथाविशमितिस्मृतम्। सम्वर्त्तिकाहिमातिक्ताकषायादाहतृट्प्रणुत्॥ मूत्रकृच्छ्रगुदव्याधिरक्तपित्तविनाशिनी। पद्मस्यकर्णिकातिक्ताकषायामधुराहिमा॥ मुख वैशद्यकृल्लघ्वीतृष्णास्रकफपित्तनुत्। किञ्जल्कःशीतलोवृष्यःकषायोग्राहकोऽपिसः॥कफ पित्ततृषादाहरक्तार्शोविषशोथजित्।मृणालंशीतलंवृष्यं पित्तदाहास्रजिद्गुरु।दुर्जरंस्वादुपा कञ्चस्तन्यानिलकफप्रदम्। संग्राहिमधुरंरूक्षं शालूकमपितद्गुणम्॥ ३॥

कमल के नवीन पत्ते आदिकोंके नाम और गुण॥

कमल के नवीन पत्तों को संवर्त्तिका बीजकोश को कर्णिका केशरको किंजल्क रसको मकरन्द और नालको मृणाल तथा बिश कहते हैं कमल के नवीन पत्ते शीतल तिक्त कषाय और दाह तृषा मूत्रकृच्छ्र गुदा के रोग तथा रक्त पित्तनाशक होते हैं कमलकीकर्णिका (जिसमें बीज होतेहैं) तिक्त कषाय मधुर शीतल मुखको सुस्वादु करने वाली हलकी और तृषा रक्तदोष कफ तथा पित्तनाशक होती है कमलकी केशर शीतल वीर्यवर्द्धक कषाय ग्राही और कफ पित्त तृषा दाह रक्तदोष बवासीर विष तथा शूजन की नाशक होती है कमलकी डंडी शीतल वीर्यवर्द्धक भारी देरमें पचने वाली पाक में मधुर दुग्धवर्द्धक बादी कफकारक ग्राही मधुर तथा रूखी होती है कमल की जड़ में भी डंडी के समान गुण होता है॥ ३॥

अथ स्थलकमल॥

पद्मचारिण्यतिचराव्यथापद्माचशारदा। पद्मानुष्णाकटुस्तिक्ता कषायाकफवातजित्॥ मूत्रकृच्छ्राश्मशूलघ्नी श्वासकासविषापहा॥ ४॥

स्थलकमलके नाम गुण॥

पद्मचारिणी अतिचरा अव्यथा पद्मा और शारदा यह स्थलकमलके नामहैं स्थलकमल कुछ उष्ण कटु तिक्त कषाय और कफ वात मूत्रकृच्छ्र पथरी शूल श्वास खांसी तथा विष नाशकहोताहै॥ ४॥

अथ कुमुदिनी कोई इति लोके॥

श्वेतंकुवलयंप्रोक्तंकुमुदंकैरवंतथा। कुमुदंपिच्छिलंस्निग्धं मधुरंह्लादशीतलम्॥ ५॥

कुमुदकोकावेली के नाम गुण॥

श्वेत कुमुदकोकुवलय और कैरव कहते हैं कुमुद पिच्छिल स्निग्ध मधुर आनन्ददायक और शीतल होता है॥ ५॥

अथ कुमुद॥

कुमुद्वतीकैरविकातथाकुमुदिनीतिच। सानुमूलादिसर्वांगैरुक्तासमुदितावुधैः॥ पद्मिन्यायेगुणाःप्रोक्ताकुमुदिन्याश्चतेस्मृताः॥ ६॥

कुमुदिनीके नाम गुण॥

कुमुद्वती कैरविका और कुमुदिनी यह नाम हैं पण्डितलोग मूल आदि सर्वांग युक्त कुमुदको कुमुदिनी कहतेहैं कमलनी के जो गुण कहेगये हैं वही कुमुदिनी में भी होते हैं॥ ६॥

अथ जलकुम्भीसेवार ॥

वारिपर्णीकुम्भिकास्याच्छैवालंशैवलश्चतत् । वारिपर्णीहिमातिक्तालघ्वीस्वाद्वीसरा कटुः ॥ दोषत्रयहरीरूक्षाशोणितज्वरशोषकृत् । शैवालंतुवरंतिक्तंमधुरंशीतलंलघु ॥ स्निग्धंदाहतृपापित्तरक्तज्वरहरंपरम् ॥ ७ ॥

पुरइन और शिवारके नाम गुण ॥

वारिपर्णी और कुम्भिका यह पुरइनके नाम हैं शैवाल और शैवल यह शिवारके नाम हैं पुरइन शीतल तिक्त हलकी मधुर दस्तावर कटु रूखी और त्रिदोष रक्तज्वर तथा शोप नाशक होती है शिवार कपाय तिक्त मधुरशीतल हलका स्निग्ध और दाहतृपा रक्तपित्त तथा ज्वरनाशकहोताहै ॥ ७ ॥

अथ सेवती गुलाव इतिच ॥

शतपत्रीतरुण्युक्ताकर्णिकाचारुकेशरा । महाकुमारीगन्धाढ्यालाक्षाकृष्णातिमुञ्जला ॥ शतपत्रीहिमाहृद्याग्राहिणीशुक्रलालघुः । दोषत्रयास्रजिद्वर्ण्यातिक्ताकट्वीचपाचनी॥ ८॥

सेवतीगुलाव के नाम गुण ॥

शतपत्री तरुणी कर्णिका चारुकेशरा महाकुमारी गंधाढ्या लाक्षा कृष्णा और अतिमंजुला यह सेवती गुलाव के नाम हैं सेवती गुलाव शीतल हृदयको हितग्राही वीर्य्यवर्द्धक हलका त्रिदोपनाशक रक्तदोपनाशक वर्णकोहित तिक्त कटु और पाचक होताहै ॥ ८ ॥

अथ वसन्ती नेवारिइतिलोके ॥

नैपालीकथितातज्ज्ञैःसप्तलानवमालिका । वासन्तीशीतलालघ्वीतिक्तादोपत्रयास्र जित् ॥ ९ ॥

नेवारी के नामगुण ॥

नैपाली सप्तला और नवमालिका यह नेवारी के नामहैं नेवारी शीतल हलकी तिक्त और त्रिदोप तथा रक्तदोप नाशक होती है ॥ ९ ॥

अथवा वार्षिकी वेल इति लोके ॥

श्रीपदीषट्पदानन्दावार्षिकीमुक्तवन्धना। वार्षिकीशीतलालघ्वीतिक्तादोपत्रयापहा ॥ कर्णाक्षिमुखरोगान्तातत्तैलंतद्गुणंस्मृतम् ॥ १० ॥

वर्सांती बेलके नामगुण ॥

श्रीपदी षट्पदा आनन्दा और मुक्तबंधना यह वर्सांती बेलके नाम हैं वर्सांतीबेल शीतल हलकी तिक्त त्रिदोप नाशक और कर्ण नेत्र तथा मुखरोग नाशक होती है इसके तेल में भी इसी के समान गूण होते हैं ॥ १० ॥

अथ चम्वेली स्वर्णजाती ॥

जातिर्जातीचसुमनामालतीराजपुत्रिका। चेतिकाहृद्यगन्धाचसापीतास्वर्णजातिका॥ जातीयुगंतिक्तमुष्णंतुवरंलघुदोपजित्। शिरोक्षिमुखदन्तार्त्तिविषकुष्ठानिलास्रजित् ११॥

चमेली और पीलीचमेली के नामगुण ॥

जाति जाती सुमना मालती राजपुत्रिका चेतकी और हृद्यगंधा यह चमेली के नाम हैं और पीली

चमेली को स्वर्णजाति कहतेहैं यह दोनों प्रकार की चमेली तिक्त उष्ण कषाय हलकी और त्रिदोष शिरकी पीड़ा नेत्ररोग मुखरोग दन्तरोग विष कुष्ठ वात तथा रक्तदोषनाशक होती है ॥ ११ ॥

अथ जुही सुवर्णजुही ॥

यूथिकागणिकाम्बष्ठासापीताहेमपुष्पिका । यूथीयुगंहिमंतिक्तंकटुपाकरसंलघु ॥ मधुरंतुवरंहृद्यंपित्तघ्नंकफवातलम् । व्रणास्रमुखदन्ताक्षिशिरोरोगविषापहम् ॥ १२ ॥

जूही और पीलीजुही के नामगुण ॥

यूथिका गणिका और अम्बष्ठा यह जूही के नामहैं पीली जूहीको हेम पुष्पिका कहते हैं यह दोनों जूही शीतल तिक्त पाक में कटु रसमेंकटु हलकी मधुर कषाय हृदयकोहित पित्तनाशक कफवर्द्धक वादी और घाव रक्तदोष मुखरोग दन्तव्याधि नेत्ररोग शिरकी पीडा तथा विषनाशकहोती है॥ १२ ॥

अथचम्पा ॥

चाम्पेयश्चम्पकःप्रोक्तोहेमपुष्पश्चसस्मृतः॥एतस्यकलिकागन्धफलीतिकथिताबुधैः॥ चम्पकःकटुकास्तिक्तःकषायोमधुरोहिमः । विषक्रिमिहरःकृच्छ्रकफवातास्रपित्तजित्॥१३॥

चंपाके नामगुण ॥

चांपेय चंपक और हेमपुष्प यह चंपा के नामहैं पंडित लोग चंपा की कलीको गन्धफली कहतेहैं चंपा कटु तिक्त कषाय शीतल और विष क्रमि मूत्र कृच्छ्र वात तथा रक्त पित्तनाशकहोता है ॥ १३ ॥

अथ वकल मौलसिरी इति लोके ॥

वकुलोमधुगन्धश्चसिंहकेसरकस्तथा । वकुलस्तुवरोऽनुष्णःकटुपाकरसोगुरुः॥ कफपित्तविषश्वित्रक्रिमिदन्तगदापहः ॥ १४ ॥

मौलसिरी के नाम गुण ॥

वकुल मधुगन्ध और सिंहकेशर मौलसिरी के नाम हैं-मौलसिरी कषाय कुछ उष्ण रस तथा पाकमें कटु भारी और कफ पित्त विष श्वेतकुष्ठ क्रमि तथा दन्तरोगनाशक होती है ॥ १४ ॥

अथ वकुलवृहद्बोलशरीतिच ॥

शिवमल्लीपाशुपतएकष्ठीलोवकोवसुः । वकोऽनुष्णःकटुस्तिक्तःकफपित्तविषापहः॥योनिशूलतृषादाहकुष्ठशोथास्रनाशनः ॥ १५ ॥

वड़ी मौलसिरी के नाम गुण ॥

शिवमल्ली पाशुपत एकष्ठीलावक और वसु यह बड़ी मौलसिरी के नाम हैं बड़ी मौलसिरी कुछ उष्ण कटु तिक्त और कफ पित्त विष योनिशूल तृषा दाह कुष्ठ सूजन तथा रक्तदोषनाशकहोतीहै १५॥

अथ कदम्बः ॥

कदम्बःप्रियकोनीपोवृत्तपुष्पोहलिप्रियः । कदम्बोमधुरःशीतोकषायोलवणोगुरुः ॥ सरोविष्टम्भकृद्रूक्षःकफस्तन्यानिलप्रदः ॥ १६ ॥

कदंबके नामगुण ॥

कदंब प्रियक नीप वृत्तपुष्प और हलिप्रिय यह कदंबके नामहैं कदंब मधुर शीतल कषाय लवण भारी दस्तावर विष्टंभी रूखा कफकारक दुग्धवर्द्धक और वादी होता है ॥ १६ ॥

अथ कूजा ॥

कुब्जकोभद्रतरणिर्बृहत्पुष्पोऽतिकेसरः । महासहाकण्टकाढ्यानीलालिकुलसंकुला ॥ कुब्जकःसुरभिःस्वादुःकषायानुरसःसरः । त्रिदोषशमनोवृष्यःशीतहर्त्ताचसस्मृतः ॥ १७॥

कूजा के नामगुण ॥

कुब्जक भद्रतरुणी वृहत्पुष्प अतिकेशर महासह कंटकाढ्या नीला और अलिकुलसंकुला यह कूजा के नामहैं कूजा सुगन्धित मधुर कुछ कषैला दस्तावर त्रिदोषनाशक वीर्यवर्द्धक और शीतनाशकहोताहै ॥ १७ ॥

अथ मल्लिका ॥

मल्लिकामदयन्तीचशीतभीरुश्चभूपदी । मल्लिकोष्णालघुर्वृष्यातिक्ताचकटुकाहरेत्॥ वातपित्तास्यदृग्व्याधिकुष्ठारुचिविषव्रणान् ॥ १८ ॥

बेला के नामगुण ॥

मल्लिका मदयंती शीतभीरु और भूपदी यह बेला के नाम हैं बेला उष्ण हलका वीर्यवर्द्धक तिक्त कटु और वात पित्त मुखरोग नेत्ररोग कुष्ठ अरुचि विष तथा घावनाशक होता है ॥ १८ ॥

अथ माधवी ॥

माधवीस्यात्तुवासन्तीपुण्ड्रकोमण्डकोऽपिच । अतिमुक्तोविमुक्तश्चकामुकोभ्रमरोत्सवः ॥ माधवीमधुराशीतालघ्वीदोषत्रयापहा ॥ १९॥

मोतियाके नाम गुण ॥

माधवी वासन्ती पुंड्रक मंडक अति मुक्त विमुक्तकामुक और भ्रमरोत्सव यह मोतिये के नाम हैं मोतिया मधुर शीतल हलका और त्रिदोष नाशक होताहै ॥ १९ ॥

केवरासुवर्णकेतकी ॥

केतकःसूचिकापुष्पोजम्बुकःक्रकचच्छदः।सुवर्णकेतकीत्वन्यालघुपुष्पासुगन्धिनी॥केतक कटुकःस्वादुर्लघुस्तिक्तःकफापहः । उष्णातिक्तरसाज्ञेयाचक्षुष्याहेमकेतकी ॥ २० ॥

केवड़ा और सुवर्ण केतकीके नामगुण ॥

केतक सूचिकापुष्प जंबुक और क्रकचच्छद यह केवड़े के नामहैं सुवर्ण केतकी केवड़े का भेद है उस को लघुपुष्पा और सुगंधिनी कहते हैं केवड़ाकटु मधुर तिक्त हलका और कफनाशक होताहै सुवर्ण केतकी तिक्त उष्ण और नेत्रों को हित होतीहै ॥ २० ॥

अथ किङ्किरात इति गौडादौ प्रसिद्धः ॥

किङ्किरातोहेमगौरःपीतकःपीतभद्रकः ॥ किङ्किरातोहिमस्तिक्तःकषायश्चहरेदसौ ॥ कफपित्तपिपासास्रदाहशोषवमिकृमीन् ॥ २१ ॥

किंकिरात के नामगुण ॥

किंकिरात हेमगौरि पीतक और पीतभद्रक यह किंकिरात के नामहैं किंकिरात शीतल तिक्त कषाय और कफ पित्त तृषा रक्तदोष दाहशोष छर्दि तथा कृमि नाशक होताहै ॥ २१ ॥

अथकर्णिकारः ॥

कर्णिकारःपरिव्याधःपादपोत्पलइत्यपि ॥ कर्णिकारःकटुस्तिक्तस्तुवरःशोधनोलघुः। रञ्जनःसुखदःशोथश्लेष्मास्रव्रणकुष्ठजित् ॥ २२ ॥

कर्णिकार के नामगुण ॥

कर्णिकार परिव्याध और पादपोत्पल यह कर्णिकार के नामहैं कर्णिकार कटु तिक्त कषाय शोधन करनेवाला हलका रंगदेनेवाला सुखदायक और सूजन कफ रक्तदोष व्रणतथा कुष्ठ नाशकहोताहै२२॥

अथअशोक असोगि ॥

अशोकोहेमपुष्पश्चवञ्जुलस्ताम्रपल्लवः। कङ्केलिःपिण्डपुष्पश्चगन्धपुष्पोनटस्तथा॥ अशोकःशीतलस्तिक्तोग्राहीवर्ण्यःकषायकः। दोषापचीतृट्दाहकृमिशोथविषास्रजित् २३

अशोक के नामगुण ॥

अशोक हेमपुष्प वंजुल ताम्रपल्लव कंकेलि पिंडीपुष्प गन्धपुष्प और नट यह अशोक के नाम हैं अशोक शीतल तिक्त ग्राही वर्ण कोहित कषैला और त्रिदोष अपची तृषा दाह कृमि शोथ विष तथा रक्तदोष नाशक होताहै ॥ २३ ॥

अथवाणपुष्पइतिगौडादौ प्रसिद्धः ॥

अम्लातोऽम्लाटनःप्रोक्तस्तथाम्लातकइत्यपि ॥ कुरण्टकोवर्णपुष्पःसएवोक्तोमहासहः। अम्लाटनःकषायोष्णःस्निग्धःस्वादुश्चतिक्तकः ॥ २४ ॥

वाणपुष्प के नामगुण ॥

अम्लात अम्लाटन अम्लातक कुरंटक वर्णपुष्प और महासह यह वाणपुष्प के नामहैं वाणपुष्प कषाय मधुर तिक्त उष्ण और स्निग्ध होताहै ॥ २४ ॥

अथकटसरैया ॥

सैरेयकःश्वेतपुष्पःसैरेयःकटसारिका। सहाचरःसहचरःसचभिन्द्यपिकथ्यते ॥ कुरण्टकोऽत्रपीतेस्याद्रक्तेकुरवकःस्मृतः। नालेवाणाद्वयोरुक्तोदासीआर्त्तगलश्चसः ॥ सैरेयः कुष्ठवातास्रकफकण्डूविषापहः। तिक्तोष्णोमधुरोऽनम्लःसुस्निग्धःकेशरञ्जनः ॥ २५ ॥

कटसरैया के नामगुण ॥

सैरेयक श्वेतपुष्प सैरेय कटसारिका सहाचर सहचर और भिन्दी यह कट सरैया के नामहैं पीली कटसरैयाको कुरंटक लालकट सरैयाको कुरवक और नीली कटसरैया को बाणा दासी और आर्तगल कहतेहैं कटसरैया कुष्ठ वात रक्तदोष कफ खुजली तथा विष नाशक तिक्त उष्ण मधुर कुछ अम्ल स्निग्ध और वालोंकी रंगने वाली होतीहै ॥ २५ ॥

अथकुन्दः ॥

कुन्दन्तुकथितंमाध्यंसदापुष्पञ्चतत्स्मृतम् । कुन्दंशीतंलघुश्लेष्मशिरोरुग्विषपित्तहृत् ॥ २६ ॥

कुन्द के नाम गुण ॥

कुन्द माघ्य और सदापुष्प यह कुन्द के नामहैं कुन्द शीतल हलका और कफ शिरके रोग विप तथा पित्त नाशक होताहै ॥ २६ ॥

अथमुचुकुन्दनाम्नेत्रप्रसिद्धः ॥

मुचुकुन्दःक्षत्रवृक्षश्चित्रकःप्रतिविष्णुकः । मुचुकुन्दःशिरःपीडापित्तासृविषनाशनः २७ ॥

मुचकुन्द के नाम और गुण ॥

मुचुकुन्द क्षत्रवृक्ष चित्रक और प्रति विष्णुक यह मुचकुंदके नाम हैं मुचकुंद शिरकी पीड़ा रक्त पित्त तथा विप नाशक होताहै ॥ २७ ॥

अथतिलाभपुष्पस्तिलकनाम्नेत्रप्रसिद्धः ॥

तिलकःक्षुरकःश्रीमान् पुरुषच्छिन्नपुष्पकः । तिलकःकटुकःपाकेरसेचोष्णोरसायनः ॥ कफकुष्ठकृमीन्बस्ति मुखदन्तगदान्हरेत् ॥ २८ ॥

तिलक के नाम गुण ॥

तिलक क्षुरक श्रीमान् पुरुप और छिन्नपुष्पक यह तिलकके नामहैं तिलक रसतथा पाक में कटु कुछ उष्ण रसायन और कफ कुष्ठ कृमि वस्तिरोग मुखरोग तथा दन्त रोगोंका नाशकहोता है २८ ॥

अथगेजुनिश्चा ॥

बन्धूकोबन्धुजीवश्च रक्तोमाध्याह्निकोऽपिच । बन्धूकःकफकृद्ग्राहीवातपित्तहरोलघुः २९

दुपहरिया के नामगुण ॥

बंधूक बंधुजीव रक्त और माध्याह्निक यहदुपहरिया के नामहैं दुपहरिया कफ कारक ग्राही वात पित्त नाशक और हलका होताहै ॥ २९ ॥

अथवोड़हुल तथासाम्फी ॥

ऊर्ध्वपुष्पञ्जपाचाथ त्रिसन्ध्यासारुणासिता । जपासंग्राहिणीकेश्या त्रिसन्ध्याकफ वातजित् ॥ ३० ॥

गुड़हल के नाम गुण ॥

ऊर्ध्वपुष्प जपा और त्रिसंध्या यह गुड़हलके नामहैं गुड़हल लाल और सुपेद दोप्रकारकी होती है गुड़हल ग्राही केशोंकोहित और कफवात नाशकहोतीहै ॥ ३० ॥

अथसेन्दुरिश्चा ॥

सिन्दूरीरक्तबीजाचरक्तपुष्पासुकोमला । सिन्दूरीविषपित्तासृतृष्णावान्तिहरीहिमा ३१॥

सिंदूरियाके नाम गुण ॥

सिंदूरी रक्तबीजा रक्तपुष्पा और सुकोमला यह सिंदूरियाके नामहैं सिंदूरिया विप पित्त रक्त तृपा तथा छर्दि नाशक और शीतल होताहै ॥ ३१ ॥

अथागस्तिः ॥

अथागस्त्योवङ्गसेनो मुनिपुष्पोमुनिद्रुमः ॥ अगस्तिःपित्तकफजित् चातुर्थकहरोहि मः । रूक्षोवातकरास्तिक्तःप्रतिश्यायनिवारणः ॥ ३२ ॥

अगस्त्यके नाम गुण ॥

अगस्त्य वंगसेन मुनिपुष्प और मुनिद्रुम यह अगस्त्यके नाम हैं अगस्त्य पित्त कफ चातुर्थिकज्वर तथा जुकामका नाशक शीतल रूखा वादी और तिक्त होताहै ॥ ३२ ॥

अनन्तरतुलसीशुक्लाकृष्णाच ॥

तुलसीसुरसाग्राम्यासुलभाबहुमञ्जरी ॥ अपेतराक्षसीगौरीशूलघ्नीदेवदुन्दुभिः ॥ तुलसीकटुकातिक्ताहृद्योष्णादाहपित्तकृत् ॥ दीपनीकुष्ठकृच्छ्रासृपार्श्वरुक्कफवातजित् ॥ शुक्लाकृष्णाचतुलसीगुणैस्तुल्याप्रकीर्तिता ॥ ३३ ॥

श्वेत और कृष्ण तुलसीके नाम गुण ॥

तुलसी सुरसा ग्राम्या सुलभा बहुमंजरी अपेत राक्षसी गौरी भूतघ्नी और देवदुन्दुभि यह तुलसीके नामहैं तुलसी कटु तिक्त हृदयको हित उष्ण दाहकारक पित्तवर्द्धक प्रदीपन और कुष्ठ मूत्रकृच्छ्र रक्तदोष पसलीकी पीड़ा कफ तथा वातनाशक होती है दोनों तुलसियोंमें समान गुण होतेहैं ॥ ३३ ॥

अथमरुआ ॥

मारुत्तोऽसौमरुवकोमरुन्मरुरपिस्मृतः ॥ फणीफणिज्जकश्चापिप्रस्थपुष्पःसमीरणः । मरुदग्निप्रदोहृद्यस्तीक्ष्णोष्णःपित्तलोलघुः ॥ वृश्चिकादिविषश्लेष्मवातकुष्ठकृमिप्रणुत् । कटुपाकरसोरुच्यस्तिक्तोरूक्षःसुगन्धिकः ॥ ३४ ॥

मरुआके नाम गुण ॥

मारुतक मरुवक मरुत मरु फणि फणिज्जक प्रस्थपुष्प और समीरण यह मरुआके नामहैं मरुआ अग्निवर्द्धक हृदयकोहित तीक्ष्ण उष्ण पित्तवर्द्धक हलका पाक तथा रसमें कटु रुचिकारक तिक्त रूखा सुगन्धियुक्त और बिच्छू आदिका विष कफ वात कुष्ठ तथा कृमिनाशक होताहै ॥ ३४ ॥

अथदवना ॥

उक्तोदमनकोदान्तोमुनिपुत्रस्तपोधनः । गन्धोत्कटोब्रह्मजटोविनीतःकलपत्रकः ॥ दमनस्तुवरस्तिक्तोहृद्योवृष्यःसुगन्धिकः । ग्रहणीविषकुष्ठासृक्क्लेदकण्डूत्रिदोषजित् ३५ ॥

दोनाके नाम गुण ॥

दमनक दान्त मुनिपुत्र तपोधन गन्धोत्कट ब्रह्मजटा विनीत और कुलपुत्रक यह दोनाके नाम हैं दोना कषाय तिक्त हृदयकोहित वीर्यवर्द्धक सुगन्धित और ग्रहणीविष कुष्ठ रक्तदोष क्लेद खुजली तथा त्रिदोष नाशकहोताहै ॥ ३५ ॥

अथबर्वरी ॥

वर्वरीतुवरीतुंगीखरपुष्पाजगंधिका । पर्णाशस्तत्रकृष्णेतुकटिल्लककुठेरकौ ॥ तत्र शुक्लेऽर्जकःप्रोक्तोवटपत्रस्ततोपरः । वर्वरीत्रितयंरूक्षंशीतंकटुविदाहिच ॥ तीक्ष्णंरुचिकरंहृद्यंदीपनंलघुपाकिच । पित्तलंकफवातासृक्कण्डूकृमिविषापहम् ॥ ३६ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशेपुष्पादिवर्गः ॥

बबईके नाम गुण ॥

बर्वरी कवरी तुंदी खरपुष्पा,अजगन्धिका और पर्णाश यह बबईके नामहैं कालीबबईको कटिंजर तथा कुठरक कहतेहैं और श्वेत बबईको अर्जक तथा बटपत्र कहतेहैं यह तीनोंप्रकारकी बबई रूखी शीतल कटु विदाही तीक्ष्ण रुचिकारक हृदयकोहित दीपन शीघ्रपरिपाक होनेवाली पित्तवर्द्धक और कफवात रक्त खुजली कृमि तथा विषनाशकहोती हैं ॥ ३६ ॥

इतिभावप्रकाशस्यभाषानुवादेपुष्पादिवर्गः ॥

अथ वटादिवर्गः । तत्रादौवटस्यनामानिगुणाश्च ॥

वटोरक्तफलःशृङ्गीन्यग्रोधःस्कन्धजोध्रुवःक्षीरीवैश्रवणावासो बहुपादोवनस्पतिः॥वटः शीतोगुरुर्ग्राहीकफपित्तव्रणापहः । वर्ण्योविसर्पदाहघ्नः कषायोयोनिदोषहृत् ॥ १ ॥

अथ वट आदि वर्गः ॥

बर्गदके नाम और गुण ॥

बट रक्तफल शृंगी न्यग्रोध स्कन्धज ध्रुव क्षीरी वैश्रवणावास बहुपाद और वनस्पति यह बर्गदके नामहैं बर्गद शीतल भारी ग्राही वर्णकोहित कषाय और कफ पित्तघाव विसर्प दाह तथा योनिदोष नाशक होताहै ॥ १ ॥

अथ पीपर ॥

बोधिद्रुःपिप्पलोऽश्वत्थश्चलपत्रोगजाशनः । पिप्पलोदुर्ज्जरःशीतः पित्तश्लेष्मव्रणास्रजित् ॥ गुरुस्तुवरकोरूक्षो वर्ण्योयोनिविशोधनः ॥ २ ॥

पीपल के नाम गुण ॥

बोधिद्रु पिप्पल अश्वत्थ चलपत्र और गजाशन यह पीपल के नाम हैं पीपल कठिनताले पचने वाला शीतल पित्तनाशक कफघ्न व्रणतथा रक्तदोष नाशक भारी कषाय रूखा वर्णको हित और योनिदोष का शुद्ध करने वाला होता है ॥ २ ॥

अथ पिप्पलभेदः । गजदण्डसहोराइतिलोके ॥

पारीषोऽन्यःपलाशश्च कपिचूतःकमण्डलः । गर्द्दभाण्डस्कन्दरालःकपीतनसुपार्श्वकः ॥ पारीषोदुर्ज्जरःस्निग्धः क्रिमिशुक्रकफप्रदः । फलेऽम्लोमधुरोमूलेकषायःस्वादुमज्जकः ॥ ३ ॥

पीपल के भेद (गजदंड सहोरा) के नाम और गुण ॥

पारीश पलाश कपिचूत कमंडल गर्द्दभांड कन्दराल कपीतन और सुपार्श्वक यह गजदंड सहोरा के नाम हैं गजदंड कठिनता से पचनेवाला स्निग्ध और कृमिवीर्य तथा कफका वर्द्धक होता है इसका फल अम्लतथा मधुर जड़ कसैली और मींगी मीठी होती है ॥ ३ ॥

अथ बेलियापीपर ॥

नन्दीवृक्षोऽश्वत्थभेदःप्ररोहीगजपादपः।स्थालीवृक्षःक्षयतरुःक्षीरीचस्याद्वनस्पतिः॥

नन्दीवृक्षोलघुःस्वादुःतिक्तस्तुवरउष्णकः। कटुपाकरसोग्राहीविषपित्तकफास्रजित्॥ ४॥

वेलियापीपल के नाम गुण ॥

नन्दीवृक्ष अश्वत्थ भेद प्ररोही गजपादप स्थाली वृक्ष क्षयतरु क्षीरी और वनस्पति यह वेलिया पीपल के नाम हैं वेलियापीपल लघु मधुर तिक्त कषाय उष्ण रसतथा पाक में कटु ग्राही और विष पित्त कफतथा रक्तदोष नाशक होता है ॥ ४ ॥

अथ उदुम्बरः ॥

उदुम्बरोजन्तुफलोयज्ञांगोहेमदुग्धकः। उदुम्बरोहिमोरूक्षोगुरुःपित्तकफास्रजित्॥ मधुरस्तुवरोवर्ण्योव्रणशोधनरोपणः॥ ५॥

गूलर के नाम गुण ॥

उदुंबर जंतुफल यज्ञांग हेम दुग्धक यह गूलर के नाम हैं गूलर शीतल रूखा पित्तनाशक कफ तथा रक्तनाशक मधुर कषाय वर्ण को हित और घावको शुद्ध करके भरनेवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ कठुम्भरी ॥

काकोदुम्बरिकाफल्गुर्मलपूर्ज्जघनेफला। मलपूस्तम्भकृत्तिक्ताशीतलातुवराजयेत्॥ कफपित्तव्रणश्वित्रकुष्ठपाण्डुर्शकामलाः॥ ६॥

कठिया गूलर के नाम गुण ॥

काकोदुम्बरिका फल्गु मलपू और जघनेफला यह कठिया गूलर के नाम हैं कठिया गूलर स्तंभन तिक्त शीतल कषाय और कफ पित्त घाव श्वेतकुष्ठ कुष्ठ पांडु ववासीर तथा कामला नाशक होता है ॥ ६ ॥

अथ पाकरि ॥

प्लक्षोजटीपर्करीचपर्कटीचस्त्रियामपि। प्लक्षःकषायःशिशिरोव्रणयोनिगदापहः॥ दाहपित्तकफास्रघ्नःशोथहारक्तपित्तहृत्॥ ७॥

पकरिया के नाम गुण ॥

प्लक्ष जटी पर्करी और पर्कटी यह पकरियाके नामहैं पकरिया कषाय शीतल और घाव योनिरोग दाह पित्त कफ रक्त दोष सूजन तथा रक्त पित्त नाशक होता है॥ ७॥

अथ शिरीषः ॥

शिरीषोभण्डिलोभण्डीभण्डीरश्चकपीतनः।शुकपुष्पःशुकतरुर्मृदुपुष्पःशुकप्रियः॥ शिरीषोमधुरोऽनुष्णस्तिक्तश्चतुवरोलघुः। दोषशोथविसर्पघ्नःकासव्रणविषापहः॥ ८॥

सिरस के नाम गुण ॥

शिरीष भंडिल भंडी भंडीर कपीतन शुक पुष्प शुकतरु मृदुपुष्प और शुक प्रिय यह सिरस के नाम हैं सिरस मधुर कषाय तिक्त कुछ उष्ण हलका और त्रिदोष सूजन वीसर्प खांसी घावतथा विष नाशक होता है॥ ८॥

अथ क्षीरवृक्षःपञ्चवल्कलयोर्लक्षणंगुणाश्च ॥

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थपारीषप्लक्षपादपाः।पञ्चैतेक्षीरिणोवृक्षास्तेषांत्वक्पञ्चवल्कलम्॥

केचित्तुपारीषस्थानेशिरीषंवेतसंपरेवदन्तीतिशेषः। क्षीरिवृक्षाहिमावर्ण्यायोनिरोगव्रणापहाः॥ रूक्षाःकषायामेदोघ्नाविसर्पामयनाशनाः॥ शोथपित्तकफास्रघ्नाःस्तन्याभग्नास्थियोजकाः। त्वक्पञ्चकंहिमंग्राहिव्रणशोथविसर्पजित्। तेषांपत्रंहिमंग्राहकफवातास्रनुल्लघु॥ विष्टम्भाध्मानजित्तिक्तंकषायंलघुलेखनम्॥ ९॥

क्षीरि वृक्ष और पंचवल्कल के लक्षण और गुण॥

बरगद गूलर पीपल पारीप और पकरिया इनपांच वृक्षोंको क्षीरि वृक्ष कहते हैं और इनके वल्कल को पंचवल्कल कहते हैं कोई २ पारीप के स्थान में सिरस और कोई वेतसका व्यवहार करते हैं क्षीरि वृक्ष शीतल वर्णको हित रूखे कपाय दुग्धवर्द्धक टूटीहड्डी के जोड़ने वाले और योनि रोग घाव मेदके दोप वीसर्प सूजन पित्त कफ तथारक्त दोप नाशक होते हैं पंचवल्कल शीतल ग्राही और घाव सूजन वीसर्प नाशक इनके पत्ते शीतल ग्राही हलके तिक्त कपाय लेखन और कफ बात रक्त दोप विष्टंभ तथा आध्मानरोग नाशक होते हैं॥ ९॥

अथ शालः॥

शालस्तुसर्जकार्श्याश्वकर्णिकाशस्यसम्बरः। अश्वकर्णःकषायःस्याद्व्रणस्वेदकफक्रमीन्॥ व्रध्मविद्रधिबाधिर्य्ययोनिकर्णगदान्हरेत्॥ १०॥

शालके नाम गुण॥

शाल सर्ज कार्श्य अश्वकर्णिका और शस्यसम्बर यह शालके नामहैं शाल कपाय और घाव स्वेद कफ कृमि वद विद्रधि वधिरता योनिरोग तथा कर्णरोग नाशकहोता है॥ १०॥

अथशालभेदः॥

सर्ज्जकोऽजककर्णःस्याच्छालोमरिचपत्रकः। अजकर्णःकटुस्तिक्तःकषायोष्णोऽयपोहति॥ कफपाण्डुश्रुतिगदान्मेहकुष्ठविषव्रणान्॥ ११॥

शालभेद के नाम गुण॥

सर्ज्जक अजकर्ण शाल और मरिच पत्रक यह शालभेदके नामहैं शालभेद कटु तिक्त कपाय उष्ण और कफ पांडु कर्णरोग प्रमेह कुष्ठ विप तथा घावको दूरकरता है॥ ११॥

अथशालई॥

शल्लकीगजभक्ष्याचसुवहासुरभीरसा। महेरुणाकुन्दुरुकीवल्लकीचबहुस्रवा॥ शल्लकीतुवराशीतापित्तश्लेष्मातिसारजित्। रक्तपित्तव्रणहरीपुष्टिकृत्समुदीरिता॥ १२॥

सलई के नाम गुण॥

शल्लकी गजभक्ष्या सुवहा सुरभी रसा महेरुणा कुन्दुरुकी शल्लकी और बहुस्रवा यह सलईके नामहैं सलई कपाय शीतल पुष्टिकारक और पित्त कफ अतीसार रक्तपित्त तथा घावनाशकहोतीहै॥ १२॥

अथशीसव॥

(कपिलवर्णाशीसव) शिंशिपापिच्छिलाश्यामा कृष्णसाराचसागुरुः। कपिलासैवमुनिभिर्भस्मगर्भेतिकीर्त्तिता॥ शिंशिपाकटुकातिक्ताकषायाशोपहारिणी। उष्णवीर्य्याह

रेन्मेदःकुष्ठश्वित्रवमिकृमीन् ॥ वस्तिरुग्व्रणदाहास्रबलासानगर्भपातिनी ॥ १३ ॥

शीशम और कपिलवर्ण शीशम के नाम गुण ॥

शिंशपा पिच्छिला श्यामा कृष्णसारा और अगुरु यह शीशमके नाम हैं कपिलवर्ण शीशमको भस्मगर्भाकहते हैं शीशम कटु तिक्त कषाय वीर्यमें उष्ण गर्भगिरानेवाली और शोष मेद कुष्ठ श्वेतकुष्ठ छर्दि कृमि मूत्राशयकीपीड़ा घाव दाह रक्तदोष तथा कफनाशक होताहै ॥ १३ ॥

अथकोह ॥

ककुभोऽर्ज्जुननामाख्योनदीसर्ज्जश्चकीर्त्तितः । इन्द्रद्रुर्वीरवृक्षश्चवीरश्चधवलःस्मृतः॥ककुभःशीतलोहृद्यःक्षतक्षयविषास्रजित्॥मेदोमेहव्रणान्हंतितुवरःकफपित्तहृत्॥१४॥

अर्जुनवृक्ष के नाम गुण ॥

ककुभ अर्जुननामाख्य नदीसर्ज इन्द्रद्रु वीरवृक्ष वीर और धवल यह अर्जुनके नामहैं अर्जुन शीतल हृदयकोहित कषाय और घाव क्षय विष रक्तदोष मेद प्रमेह घाव कफ तथा पित्तनाशक होताहै॥१४॥

अथासनविजयसारइतिच ॥

बीजकःपीतसारश्चपीतशालकइत्यपि। बन्धूकपुष्प प्रियकःसर्ज्जकश्चासनःस्मृतः ॥ बीजकःकुष्ठवीसर्पश्वित्रमेहगुदकृमीन्॥हन्तिश्लेष्मास्रपित्तञ्चत्वच्यःकेश्योरसायनः॥१५॥

विजयसार के नाम गुण ॥

बीजक पीतसार पीतशालक बन्धूकपुष्प प्रियकसर्जक और आसन यह विजयसार के नाम हैं विजयसार कुष्ठ वीसर्प श्वेतकुष्ठ प्रमेह गुदा के कृमि कफ तथा रक्त पित्तनाशक त्वचाकोहित केशोंकोउपकारी और रसायनहोताहै ॥ १५ ॥

अथ खदिर ॥

खदिरोरक्तसारश्चगायत्रीदन्तधावनः । कण्टकीबालपत्रश्चबहुशल्यश्चयज्ञियः ॥ खदिरःशीतलोदन्त्यःकण्डूकासारुचिप्रणुत् । तिक्तकषायोमेदोघ्नःकृमिमेहज्वरव्रणान् ॥ श्वित्रशोथामपित्तास्रपाण्डुकुष्ठकफान्हरेत् ॥ १६ ॥

खैर (कत्था) के नाम गुण ॥

खदिर रक्तसार गायत्री दन्तधावन कंटकी बालपत्र बहुशल्य और यज्ञिय यह कत्थे के नाम हैं कत्था शीतल दांतोंकोहित तिक्त कषाय और खुजली खांसी अरुचि मेद कृमि प्रमेह ज्वर घाव श्वेतकुष्ठ सूजन आम पित्त रक्तदोष पांडु कुष्ठ तथा कफनाशक होताहै ॥ १६ ॥

अथ श्वेतखदिरपपरीखयरइतिच ॥

खदिरःश्वेतसारोऽन्यःकदरःसोमवल्कलः।कदरोविशदोवर्ण्योमुखरोगकफास्रजित्॥१७॥

पपड़ियाकत्थे के नाम गुण ॥

खदिर श्वेतसार कदर और सोमवल्कल यह पपड़ियाकत्थेके नामहैं पपड़ियाकत्था विशद वर्णकोहित और मुखरोग कफ तथा रक्तदोष नाशकहोताहै ॥ १७ ॥

अथ इरिमेद दुर्गन्धखदिरइतिच ॥

इरिमेदोविट्खदिरःकालस्कंधोऽरिमेदकः। इरिमेदःकषायोष्णोमुखदंतगदास्रजित्॥ हन्तिकण्डूविषश्लेष्मकृमिकुष्ठविषव्रणान् ॥ १८ ॥

दुर्गन्धित खदिर के नाम गुण ॥

इरिमेद विट्खदिर कालस्कन्ध और अरिमेदक यह इसकेनामहैं दुर्गन्धित खदिर कषाय उष्ण और मुखरोग दन्तरोग रक्तदोष खुजली विष कफ कृमि कुष्ठ घाव तथा ग्रहदोषनाशक होताहै ॥ १८ ॥

अथरोहितकः॥

रोहीतकोरोहितकोरोहीदाड़िमपुष्पकः।रोहीतकःप्लीहघातीरुच्योरक्तप्रसाधनः॥१९॥

रोहितक (लालकरंज) नामगुण॥

रोहीतक रोहितक रोही और दाड़िम पुष्पक यह रोहितक के नामहैं रोहितक प्लीहा नाशक रुचिकारक और रुधिर का शुद्धकरने वाला होताहै ॥ १९ ॥

अथबबूल ॥

बबूल·किङ्किरात·स्यात्किङ्किराटःसपीतकः।सएवकथितस्तज्ज्ञैराभाषपद्मोदिनी॥ बब्बूलःकफनुद्ग्राहीकुष्ठकृमिविषापहः ॥ २० ॥

बबूल के नामगुण॥

बबूल किंकिरात किंकिराटसपीतक आभाप और पद्मोदिनी यह बबूलकेनामहैं बबूलग्राही और कफ कुष्ठ कृमि तथा विषनाशकहोताहै॥२०॥ अथरीठा॥

अरिष्टकस्तुमांगल्यःकृष्णवर्णोऽर्थसाधनःरक्तबीजःपीतफेनःफेनिलोगर्भपातनः॥२१॥

रीठा के नाम गुण॥

अरिष्टक मांगल्य कृष्णवर्ण अर्थसाधन रक्तबीज पीतफेन फेनिल और गर्भपातन यहरीठाकेनाम हैं रीठा त्रिदोषनाशक ग्रहदोषनाशक और गर्भगिरानेवालाहोताहै॥ २१ ॥

अथपितौजिआ॥

पुत्रजीवोगर्भकरोयष्टीपुष्पोऽर्थसाधकः । पुत्रजीवोगुरुर्वृष्योगर्भदःश्लेष्मवातहृत् ॥ सृष्टमूत्रमलोरूक्षोहिमःस्वादुःपटुःकटुः ॥ २२॥

पुत्रजीवा (पतौजिया) के नाम गुण॥

पुत्रजीव गर्भकर यष्टीपुष्प और अर्थसाधक यह पुत्रजीवाकेनाम हैं पुत्रजीवा गुरु वीर्य्यवर्द्धक गर्भदायक कफघ्न वातनाशक मलमूत्रका निकासनेवाला रूखा शीतलमधुर लवण तथाकटुहोताहै २२॥

अथइंगुदी॥

इंगुदोऽङ्गारवृक्षश्चतिक्तकस्तपसद्रुमः । इंगुदःकुष्ठभूतादिग्रहव्रणविषकृमीन् ॥ हन्त्युष्णःश्वित्रशूलघ्नस्तिक्तकःकटुपाकवान् ॥ २३ ॥

गोंदी के नाम गुण॥

इंगुद अंगारवृक्ष तिक्तक और तापसद्रुम यह गोंदी के नाम हैं गोंदी कुष्ठ भूतादिकोंका आवेश

ग्रहदोष घाव विष कृमि श्वेत कुष्ठ तथा शूल नाशक उष्ण तिक्त और पाकमें कटु होती है ॥ २३ ॥

अथ जिंगिनी ॥

जिंगिनी॥भिंगिनीभिंगीसुनिर्य्यासाप्रमोदिनी । जिंगिनीमधुरासोष्णाकषायाव्रणशोधिनी॥ कटुकाव्रणहृद्रोगवातातीसारहृत्पटुः। तमालःशालवद्वेयोदाहविस्फोटहृत्पुनः २४॥

जिंगनी के नामगुण ॥

जिंगिनी भिंगिनी भिंगी सुनिर्यासा और प्रमोदिनी यह जिंगिनी के नामहैं जिंगिनी मधुर उष्ण कषाय व्रण शोधक कटु और घाव हृदयरोग वात तथा अतीसार नाशक होती है यह तमाल और शाल के समान दाह तथा विस्फोटक नाशक होती है ॥ २४ ॥

अथ तुणि ॥

तूणीस्तुन्नकआपीनस्तुणिकःकच्छकस्तथा । कठेरकःकान्तलकोनन्दिवृक्षश्चनंदक ॥ तुणिरक्तःकटुःपाकेकषायोमधुरोलघुः।तिक्तोग्राहीहिमोवृष्योव्रणकुष्ठास्रपित्तजित्॥२५ ॥

तुनिके नाम गुण ॥

तूणी तुन्नक आपीन तुणिक कच्छक कठेरक कान्तलक नन्दि वृक्ष और नन्दक यहतुनिके नाम हैं तुनि पाकमें कटु कषाय मधुर तिक्त हलका ग्राही शीतल वीर्य वर्द्धक और घाव कुष्ठ तथा रक्त पित्त नाशक होता है ॥ २५ ॥

अथ भूर्जपत्र ॥

भूर्जपत्रःस्मृतोभूर्जेचर्म्मीबहुलवल्कलः । भूर्ज्जोभूतग्रहश्लेष्मकर्णरुक्पित्तरक्तजित् ॥ कषायोराक्षसघ्नश्चमेदोविषहरःपरः ॥ २६ ॥

भोजपत्रके नाम गुण ॥

भूर्जपत्र भूर्जचर्म्मी और बहुवल्कल यह भोजपत्र के नाम हैं भोजपत्र कषाय और भूतावेश ग्रह दोष कफ कर्णरोग रक्त पित्त राक्षस मेद तथाविषके नाशकरनेमें अत्यन्त श्रेष्ठ होता है ॥ २६ ॥

अथ पलाश ॥

पलाशःकिंशुकःपर्णोयज्ञियोरक्तपुष्पकः । क्षारश्रेष्ठोवातहरोब्रह्मवृक्षःसमिद्वरः ॥ पलाशोदीपनोवृष्यःसरोष्णव्रणगुल्मजित् । कषाय कटुकस्तिक्तःस्निग्धोगुदजरोगजित् ॥ भग्नसन्धानकृद्दोषग्रहण्यर्शःकृमीन्हरेत् । तत्पुष्पंस्वादुपाकेतुकटुतिक्तंकषायकम् ॥ वातलंकफपित्तास्रकृच्छ्रजिद्ग्राहिशीतलम् । तृड्दाहशमकंवातरक्तकुष्ठहरम्परम् ॥ फललघूष्णंमेहार्शःकृमिवातकफापहम् । विपाकेकटुकंरूक्षंकुष्ठगुल्मोदरप्रणुत् ॥ २७ ॥

पलाशके नामगुण ॥

पलाश किंशुक पर्ण यज्ञिय रक्तपुष्पक क्षारश्रेष्ठ वातहर ब्रह्मवृक्ष और समिद्वर यह पलाश के नाम हैं पलाश दीपन वीर्यवर्द्धक दस्तावर उष्ण कषाय कटु तिक्त स्निग्ध टूटेकोजोड़नेवाला और घाव गुल्म गुदाके उत्पन्नरोग त्रिदोष ग्रहणी ववासीर तथा कृमिनाशक होताहै पलाश के पुष्प पाक में मधुर कटु तिक्त कषाय वादी ग्राही शीतल और कफ रक्तपित्त मूत्र कृच्छ्र तृषा दाह वात रक्त

तथा कुष्ठ नाशक होतेहैं पलाशकाफल हलका उष्ण पाक में कटु रूखा और प्रमेह बवासीर कृमि वात कफ कुष्ठ गुल्म तथा उदररोग नाशक होताहै ॥ २७ ॥

अथ शाल्मलिः ॥

शाल्मलिस्तुभवेन्मोचापिच्छिलापूरणीतिच । रक्तपुष्पास्थिरायुश्चकण्टकाढ्याचतूलिनी । शाल्मलीशीतलास्वाद्वीरसेपाकेरसायनी । श्लेष्मलापित्तवातास्रहारिणीरक्तपित्तजित् ॥ २८ ॥ सेमरके नामगुण ॥

शाल्मलि मोचा पिच्छिला पूरणी रक्तपुष्पा स्थिरायु कंटकाढ्या और तूलिनी यह सेमर के नाम हैं सेमर शीतल रसतथा पाक में मधुर रसायन कफ कारक और पित्त वात रक्त तथा रक्तपित्त नाशक होती है ॥ २८ ॥

अथ मोचरसः ॥

निर्य्यासःशाल्मलेःपिच्छाशाल्मलीवेष्टकोऽपिच । मोचास्रावोमोचरसोमोचनिर्य्यास इत्यपि ॥ मोचास्राहिमोग्राहीस्निग्धोवृष्यःकषायकः ॥ प्रवाहिकातिसारामकफपित्तासृदाहनुत् ॥ २९ ॥ मोचरसके नाम गुण ॥

सेमरके गोंदको पिच्छा शाल्मलीवेष्टक मोचास्राव मोचरस और मोचनिर्यास कहते हैं मोचरस शीतल ग्राही स्निग्ध वीर्य्यवर्द्धक कषाय और प्रवाहिका अतीसार आम कफ पित्त रक्त तथा दाहनाशक होता है ॥ २९ ॥

अथ कूटशाल्मलिः ॥

कुत्सितःशाल्मलिःप्रोक्तोरोचनःकूटशाल्मलिः । कूटशाल्मलिकस्तिक्तःकटुकःकफवातनुत्॥भेद्युष्णःप्लीहजठरःयकृद्गुल्मविषापहः भूतानाहविबन्धासृमेदःशूलकफापहः ॥३०।

कालीसेमरके नाम गुण ॥

कुत्सित शाल्मलि रोचन और कूट शाल्मलि यह काली सेमरके नामहैं काली सेमर तिक्त कटु भेदक उष्ण और कफ वात प्लीहा उदर यकृत् गुल्म विष भूतावेश आनाह विबंध रक्तदोष मेद शूल तथा कफ नाशक होती है ॥ ३० ॥

अथ धवः ॥

धवोधटोनंदितरुःस्थिरोगौरीधुरन्धरः । धवःशीतप्रमेहार्शःपाण्डुतिक्तकफापहः ॥ मधुरस्तुवरस्तस्यफलंचमधुरंमनाक् ॥ ३१ ॥

धवई के नाम गुण ॥

धवई घट नन्दितरु स्थिर गौरि और धुरन्धर यह धवई के नामहैं धवई शीतल मधुर कषाय और प्रमेह बवासीर खुजली पित्त तथा कफ नाशक होतीहै इसका फल कुछ मधुर होताहै ॥ ३१ ॥

अथ धामिन ॥

धन्वंगस्तुधनुर्वृक्षोगोत्रवृक्षःसुतेजनः । धन्वंगःकफपित्तास्रकासहृत्तुवरोलघुः ॥ बृंहणोबलकृद्रूक्षःसंधिकृत्व्रणरोपणः ॥ ३२ ॥

धामिन के नाम गुण

धन्वंग धनुर्वृक्ष गोत्रवृक्ष और सुतेजन यह धामिनके नामहैं धामिन कफ पित्त रक्तदोष तथा खांसी की नाशक कषाय हलकी धातुवर्द्धक बलकारक रूखी टूटेहुए को जोड़नेवाली और घावको भरने वाली होतीहै ॥ ३२ ॥

अथ करीर ॥

करीरःक्रकरोपत्रोग्रन्थिलोमरुभूरुहः। करीरःकटुकस्तिक्तःस्वेद्युष्णोभेदनःस्मृतः॥ दुर्नामकफवातामगरशोथव्रणप्रणुत् ॥ ३३ ॥

करील के नामगुण ॥

करील क्रकर अपत्र ग्रंथिर और मरुभूरुह यह करील के नाम हैं करील कटु तिक्त स्वेदकारक उष्ण भेदक और बवासीर कफ वात आम गरदोष तथा व्रणनाशक होताहै ॥ ३३ ॥

अथ सहोरा ॥

शाखोटःपीतफलकोभूतावासःस्वरच्छदः। शाखोटोरक्तपित्तार्शोवातश्लेष्मातिसारजित् ॥ ३४ ॥

सहोराके नामगुण ॥

शाखोट पीत फलक भूतावास और स्वरच्छद यह सहोरेके नामहैं सहोरा रक्तपित्त बवासीर वात कफ और अतीसार नाशक होताहै ॥ ३४ ॥

अथ वरुणः ॥

वरुणोवरुणःसेतुस्तिक्तशाकोऽग्निदीपनः। कषायोमधुरस्तिक्तःकटुकोरूक्षकोलघुः ३५॥

वरना के नाम गुण ॥

वरुण वराण सेतु तिक्तशाक और अग्निदीपन यह वरना के नामहैं वरना पित्तवर्द्धक भेदक अग्नि दीपक कषाय मधुर तिक्त कटु रूखा हलका और कफ मूत्रकृच्छ्र पथरी वात गुल्म वात रक्त तथा कृमि नाशक होताहै ॥ ३५ ॥

अथ कटुंभी ॥

कटभीस्वादुपुष्पश्चमधुरेणुःकटुम्भरः। कटभीतुप्रमेहार्शः नाडीव्रणविषकृमीन्। हन्त्युष्णाकफकुष्ठघ्नीकटूरूक्षाचकीर्त्तिता। तत्फलंतुवरंज्ञेयंविशेषात्कफशुक्रहृत्॥ ३६॥

कटभी के नाम गुण ॥

कटभी स्वादुपुष्प मधुरेणु और कटुंभर यह कटभी के नामहैं कटभी प्रमेह बवासीर नासूर विष कृमि कफ तथा कुष्ठ नाशक उष्ण कटु और रुक्ष होताहै इसके फल में इसीके समान गुण होते हैं यह विशेष करके कफ तथा वीर्य का नाशक होताहै ॥ ३६ ॥

अथ मोक्षपलाशवत्पर्वतवृक्षः ॥

मोक्षस्तुमोक्षकोऽपिस्या द्वोलीढगोलिहस्तथा। क्षारश्रेष्ठःक्षारवृक्षोद्विविधःश्वेतकृष्णकः। मोक्षकःकटुकस्तिक्तोग्राह्युष्णःकफवातहृत् ॥ विषमेदोगुल्मकण्डूवस्तिरुकृमिशुक्रनुत् ॥ ३७ ॥

मोक्ष (पलाश के समान पहाड़ी वृक्ष) के नाम और गुण ॥

मोक्ष मोक्षक गोलीढ गोलिह क्षारश्रेष्ठ क्षारवृक्ष इसको घंटा पाटला भी कहतेहैं यह श्वेत और श्याम दोभेदका होताहै मोक्ष कटु तिक्त ग्राही उष्ण और कफ वात मेद विष गुल्म खुजली मूत्राशय की पीड़ा कृमितथा वीर्य नाशक होताहै ॥ ३७ ॥

अथ जलशिरीषटिंटिणिइतिच ॥

शिरिषिकाटिण्टिणिकादुर्बलाम्बुशिरीषिका। त्रिदोषविषकुष्ठार्शोहरीवारिशिरीषिका ३८॥

जलशिरसके नाम गुण ॥

शिरीशिका टिंटिणिका दुर्बला और अम्बुशिरीशिका यह जल शिरसके नाम हैं जल शिरस त्रिदोष विष कुष्ठ तथा बवासीर नाशक होताहै ॥ ३८ ॥

अथशमी ॥

शमीशक्तुफलातुंगाकेशहन्त्रीफलाशिवा । मंगल्याचतथालक्ष्मीशमीरःसाल्पिका स्मृता ॥ शमीतिक्ताकटुःशीताकषायारेचनीलघुः । कफकासभ्रमश्वासकुष्ठार्शःकृमिजित् स्मृता ॥ ३९ ॥

शमीके नाम गुण ॥

शमी शक्तु फलातुंगा केशहंत्री फलाशिवा मंगल्या और लक्ष्मी यह शमीके नाम हैं छोटी शमीको शमीर कहतेहैं शमी तिक्त कटु शीतल कषाय दस्तावर हलकी और कफ खांसी भ्रम श्वास कुष्ठ बवासीर तथा कृमिनाशक होती है ॥ ३९ ॥

अथ छितवन ॥

सप्तपर्णोविशालत्वक्शारदोविषमच्छदः । सप्तपर्णोव्रणश्लेष्मवातकुष्ठास्रजन्तुजित् ॥ दीपनःश्वासगुल्मघ्नःस्निग्धोष्णस्तुवरःसरः ॥ ४० ॥

छितवनके नाम गुण ॥

सप्तपर्ण विशालत्वक् शारद और विष मच्छद यह छितवन के नाम हैं छितवन घाव कफ वात कुष्ठ रक्तदोष कृमि श्वास तथा गुल्मनाशक दीपन स्निग्ध उष्ण कषाय तथा दस्तावर होताहै ४० ॥

अथ तिनिशःतिरिच्छइतिच ॥

तिनिशःस्पन्दनोनेमीरथद्रुर्वञ्जुलस्तथा । तिनिशःश्लेष्मपित्तास्रमेदःकुष्ठप्रमेहाजित् ॥ तुवरःश्वित्रदाहघ्नोव्रणपाण्डुकृमिप्रणुत् ॥ ४१ ॥

तिनिश के नाम गुण ॥

तिनिश स्पन्दन नेमी रथद्रु और वंजुल यह तिनिश के नामहैं तिनिश कफ पित्त रक्तदोष मेद कुष्ठ प्रमेह श्वेत कुष्ठ दाह घाव पांडु तथा कृमि नाशक और कषैला होताहै ॥ ४१ ॥

अथ भुईंसहा ॥

भूमीसहोद्दारदारुवरदारुःस्वरच्छदः । भूमीसहस्तुशिशिरोरक्तपित्तप्रसादनः ४२॥

इतिश्रीभावप्रकाशेवटादिवर्गः ॥

भुईंसहाके नाम गुण ॥

भूमीसह द्वारदारु वरदारु और स्वरच्छद यह भुईंसहा के नामहैं भुईंसहा शीतल और रक्तपित्त करनेवाला होताहै ॥ ४२ ॥

इतिभावप्रकाशस्यभाषानुवादेवटादिवर्गः ॥

अथाम्रादिफलवर्गः। तत्रादावाम्रस्यनामानिगुणाश्च ॥

आम्रःप्रोक्तोरसालश्चसहकारोऽतिसौरभः। कामांगोमधुदूतश्चमाकन्दःपिकवल्लभः॥ आम्रपुष्पमतीसारंकफपित्तप्रमेहनुत्। असृग्दुष्टिहरंशीतंरुचिकृद्ग्राहिवातलम् ॥ आम्रंबालंकषायाम्लंरुच्यंमारुतपित्तकृत्। तरुणन्तुनदत्यम्लंरूक्षंदोषत्रयास्रकृत् ॥ आम्रमामंत्वचाहीनमातपेऽतिविशोषितम्। अम्लंस्वादुकषायंस्याद्भेदनंकफवातजित् ॥ पक्वन्तुमधुरंवृष्यंस्निग्धंबलसुखप्रदम्। गुरुवातहरंहृद्यंवर्ण्यंशीतमपित्तलम् ॥ कषायानुरसंवह्निश्लेष्मशुक्रविवर्द्धनम्। तदेववृक्षसम्पक्वंगुरुवातहरंपरम् ॥ मधुराम्लरसंकिञ्चिद्भवेत्पित्तप्रकोपनम्। आम्रकृत्रिमपक्वञ्चतद्भवेत्पित्तनाशनम् ॥ रसस्याम्लस्यहीनत्वान्माधुर्य्याच्चविशेषतः। उषितंतत्परंरुच्यंबल्यंवीर्य्यकरंलघु ॥ शीतलंशीघ्रपाकिस्याद्वातपित्तहरंसरम्। तद्रसोगालितोबल्योगुरुर्वातहरःसरः॥ अहृद्यस्तर्पणोऽतीवबृंहणःकफवर्द्धनः। तस्यखण्डंगुरुपरंरोचनंचिरपाकिच ॥ मधुरंबृंहणंबल्यंशीतलंवातनाशनम्। वातपित्तहरंरुच्यंबृंहणंबलवर्द्धनम् ॥ वृष्यंवर्णकरंस्वादुदुग्धाम्रंगुरुशीतलम्। मन्दानलत्वंविषमज्वरश्चरक्तामयंबद्धगुदोदरञ्च ॥ आम्रातियोगोनयनामयंवाकरोतितस्मादतितान्निनाद्यात्। एतदम्लाम्रविषयंमधुराम्लपरंनतु ॥ मधुरस्यपरंनेत्रहितंत्वाद्यागुणायतः। शुण्ठ्याम्भसोऽनुपानंस्यादाम्राणामतिभक्षणे ॥ जीरकंवाप्रयोक्तव्यंसहसौवर्चलेनच १ ॥

अथ आम्रादि फल वर्गः। आमके नाम गुण ॥

आम्र रसाल सहकार अतिसौरभ कामांग मधुदूत माकन्द और पिकवल्लभ यह आमके नाम हैं आमका बौर अतीसार कफ पित्त प्रमेह तथा रक्तदोष नाशक शीतल रुचिकारक ग्राही और बादी होताहै इसकी केरी कषाय अम्ल रुचिकारक और वात पित्त वर्द्धक होती है कच्चा आम अत्यन्त खट्टा रूखा त्रिदोषकारक और रुधिर का बिगारनेवाला होताहै छिलका छीलकर धूपमें सुखाया हुआ कच्चा आम खट्टा मधुर कपैला भेदक और कफ तथा वात नाशक होताहै पकाआम मधुर वीर्यवर्द्धक स्निग्ध बलकारी सुखद भारी वात नाशक हृदयको हित वर्णको हित शीतल पित्तका नहीं बढ़ानेवाला कुछ कपैला और अग्निकफ तथा वीर्यका बढ़ानेवाला होताहै वृक्षका पकाहुआ आम मधुर अम्ल भारी अत्यन्त वात नाशक और कुछ पित्तवर्द्धक होताहै पालकाआम पित्तनाशक खट्टापन न होनेसे अधिक मधुरताके कारण अत्यन्त पित्तनाशक होताहै बासीपकाहुआ आम बलकारक अत्यन्त रुचिकारक वीर्यवर्द्धक हलका शीतल शीघ्र पकनेवाला वात पित्तनाशक और दस्तावर होताहै पकेआमका निकालाहुआ रस बलकारक भारी वातनाशक दस्तावर हृदयको अहित तृप्ति कारक बहुत धातुवर्द्धक और कफवर्द्धक होताहै आमके तरासे हुऐ टुकड़े भारीरुचि देरमें पचनेवाले मधुर धातुवर्द्धक बलकारक शीतल

और वातनाशक होते हैं दूध के साथ आम मधुर वीर्यवर्द्धक वर्णको हित भारी शीतल वात पित्त नाशक रुचिकारक धातुवर्द्धक और बलका बढ़ानेवालाहोता है बहुतआम खाने से मंदाग्नि विषम ज्वर रुधिररोग उदर तथा गुदाका जकड़ना और नेत्ररोगहोते हैं इससे बहुत आम न खाना चाहिये यहसबबातें खट्टे आम के विषय में कहीगई हैं,मीठे आम के विषय में नहीं क्योंकि मीठे आम के अत्यन्त नेत्रको हितकारी आदिक गुणकहेगये हैं बहुत आम खानेमें सोंठिकापानी पीछे पीनाचाहिये अथवा जीरा और कालेनोन का सेवनकरना चाहिये ॥ १ ॥

अथाम्रावर्त्तस्यलक्षणंगुणाश्च॥

पक्वस्यसहकारस्यपटेविस्तारितोरसः । धर्म्मशुष्कोमुहुर्दत्त आम्रावर्त्तइतिस्मृतः ॥ (अम्बवटइतिलोके) आम्रावर्त्तस्तृपाच्छर्दिवातपित्तहरःसरः । रुच्यःसूर्य्यांशुभिःपाकाल्लघुश्चसहिकीर्तितः ॥ २ ॥ अमरस के लक्षण और गुण ॥

पके आमका रस कपड़ेपर फैला के धूप में सुखायाहुआ और उसपर बारबार टपकाया हुआ दलदार सूखाहुआ आम्रावर्त्त कहलाताहै यह आम्रावर्त्त तृषा छर्दि वात तथा पित्त नाशक दस्तावर रुचिकारक और विशेष करके धूपमेंपकनेसे हलकाहोता है ॥ २ ॥

अथकोइलीया ॥

आम्रबीजंकषायंस्याच्छर्द्यतीसारनाशनम् । ईषदम्लञ्चमधुरंतथाहृदयदाहनुत् ॥ (अथनवपल्लवः) आम्रस्यपल्लवंरुच्यंकफपित्तविनाशनम् ॥ ३ ॥

आमकी बिजलीके गुण ॥

आमकी बिजली कषैली कुछखट्टी मधुर और छर्दि अतीसार तथा हृदय के दाहकी नाशक होती है आमके नवीनपत्ते रुचिकारक और कफ तथा पित्तनाशकहोते हैं ॥ ३ ॥

अथअम्बरा ॥

आम्रातकःपीतनश्चमर्कटाम्रःकपीतनः ॥ आम्रातमम्लंवातघ्नंगुरूष्णंरुचिकृत्सरम्॥ पक्वन्तुतुवरंस्वादुरसेपाकेहिमंस्मृतम् ॥ तर्पणंश्लेष्मलंस्निग्धंवृष्यंविष्टम्भिवृंहणम्।गुरु बल्यम्मरुत्पित्तक्षतदाहक्षयास्रजित ॥ ४ ॥

अमराके नाम गुण ॥

आम्रातक पीतन मर्कटाम्र और कपीतन यह आम्रा के नाम हैं कच्चाअमरा अम्ल वातनाशक भारी उष्ण रुचिकारक और दस्तावरहोता है पकाअमरा कषाय मधुर पाक में मधुर शीतल तृप्ति कारक कफ़वर्द्धक स्निग्ध वीर्यवर्द्धक विष्टंभी धातुवर्द्धक भारी बलकारक और वात पित्त क्षत दाह क्षय तथा रक्तदोष नाशकहोताहै ॥ ४ ॥

अथराजाम्रः ॥

राजाम्रष्टङ्कआम्रातःकामाङ्गोराजपुत्रकः । राजाम्रन्तुवरंस्वादुविशदंशीतलंगुरु ॥ ग्राहिरुक्षंविबन्धाध्मवातकृत्कफपित्तनुत् ॥ ५ ॥

राजाम्र के नाम गुण ॥

राजाम्र टंक आम्रात कामाङ्ग और राजपुत्रक यह राजाम्र के नामहैं राजाम्र कषाय मधुर विशद

शीतल भारी ग्राही रूखा विबन्ध तथा आध्मान करने वाला वादी और कफ पित्त नाशकहोताहै ५॥

अथकोशाम्रकोशम्भइतिच ॥

कोशाम्रउक्तःक्षुद्राम्रःकृमिवृक्षःसुकोशकः। कोशाम्रःकुष्ठशोथासृपित्तव्रणकफापहः॥ तत्फलंग्राहिवातघ्नमम्लोऽम्लंगुरुपित्तलम्। पक्वन्तुदीपनंरुच्यंलघूष्णंकफवातनुत्६॥

कोशाम्र कोशम्भके नाम गुण ॥

कोशाम्र क्षुद्राम्र कृमिवृक्ष और सुकोशक यह कोशाम्रके नामहैं कोशाम्र कुष्ठ सूजन रक्त पित्त व्रण तथा कफ नाशकहोताहै कोशाम्रका कच्चाफल ग्राही वात नाशक खट्टा उष्ण भारी और पित्त बर्द्धक होताहै कोशाम्रका पक्काफल दीपन रुचिकारक हलका उष्ण और कफ तथा वात नाशकहोताहै ६॥

अथ कटहर ॥

पणशःकण्टकिफलःपणसोऽतिबृहत्फलः। पणशंशीतलंपक्वंस्निग्धंपित्तानिलापहम्॥ तर्पणंबृंहणंस्वादुमांसलंश्लेष्मलंभृशम्। बल्यंशुक्रप्रदंहन्तिरक्तपित्तक्षतव्रणान्॥ आमन्तदेवविष्टम्भिवातलन्तुवरंगुरु। दाहकृतमधुरंबल्यंकफमेदोविवर्द्धनम्॥ पणसोद्भूतबीजानिवृष्याणिमधुराणिच। गुरूणिबद्धविट्कानिसृष्टमूत्राणिसंवदेत् (अन्यच्च) मज्जापणसजोवृष्योवातपित्तकफापहः। विशेषात्पणसोवर्ज्यःगुल्मिभिर्मन्दवह्निभिः॥ ७॥

कटहल के नाम गुण ॥

पणश कण्टकिफल पणस और अतिबृहत्फल यह कटहल के नामहैं पक्काकटहल शीतल स्निग्ध तृप्तिकारक धातुबर्द्धक मधुर मांसवर्द्धक अत्यन्तकफकारक बलकारक वीर्यबर्द्धक और पित्त वात रक्तपित्त क्षत तथा घावनाशकहोता है कच्चाकटहल बिष्टंभी वादी कषैला मधुर भारी दाहकारक बलकारक और कफ तथा मेदवर्द्धक होताहै कटहलकेबीज वीर्य्यबर्द्धक मलरोधक मधुर भारी और मूत्र निकालनेवाले होते हैं और भी कहागयाहै कि कटहल के बीज वीर्य्यबर्द्धक और बात पित्त तथा कफ नाशक होते हैं गुल्मरोगवाले और मन्दाग्नि पुरुषों को कटहल अत्यन्त वर्जनीय है ॥ ७॥

अथ बड़हर ॥

लकुचःक्षुद्रपणसोलकुचोडहुइत्यपि। आमंलकुचमुष्णञ्चगुरुविष्टम्भकृत्तथा॥ मधुरञ्चतथाम्लञ्चदोषत्रितयरक्तकृत्। शुक्राग्निनाशनंचापिनेत्रयोरहितंस्मृतम्॥ सुपक्वन्तत्तुमधुरमम्लञ्चानिलपित्तहृत्। कफवह्निकरंरुच्यंवृष्यंविष्टम्भकञ्चतत्॥ ८॥

बड़हल के नाम गुण ॥

लकुच क्षुद्रपणस लिकुच और डहु यह बड़हलके नामहैं कच्चाबड़हल उष्ण भारी विष्टंभी मधुर खट्टा त्रिदोषकारी रुधिरका बिगाड़नेवाला वीर्यनाशक अग्निनाशक और नेत्रोंको अहितहोताहै पक्का बड़हल मधुर खट्टा बादी पित्त कफ अग्नि तथा विष्टंभकारी रुचिकारक और वीर्यबर्द्धकहोताहै॥ ८॥

अथकदली ॥

कदलीवारणामोचाम्बुसारांशुमतीफला॥ मोचाफलंस्वादुशीतंविष्टम्भिकफनुद्गुरु॥ स्निग्धंपित्तासृतृट्दाहक्षतक्षयसमीरजित्। पक्वंस्वादुहिमंपाकेस्वादुवृष्यञ्चबृंहणम्॥

क्षुत्तृष्णानेत्रगदहन्मेहघ्नंरुचिमांसकृत् । माणिक्यमर्त्यामृतचम्पकाद्याभेदाःकदल्याबहवोऽपिसन्ति ॥ उक्तागुणास्तेष्वधिकाभवन्तिनिर्दोषतास्याल्लघुताचतेषाम् ॥ ९ ॥

केलेके नाम गुण ॥

कदली वारणा मोचा अंबुसारा और अंशुमतीकला यह केले के नाम हैं कच्चाकेला मधुर शीतल विष्टंभी कफघ्न भारी स्निग्ध और रक्त पित्त तृषा दाह क्षय तथा वातनाशक होताहै पक्काकेला मधुर शीतल पाक में मधुर वीर्य्यवर्द्धक धातुवर्द्धक रुचिकारक मांसवर्द्धक और क्षुधा तृषा नेत्ररोग तथा प्रमेह नाशकहोता है माणिक्यमर्त्य अमृत और चंपकादि केलेके बहुतसे भेद हैं इनमें कहेहुयेगुण अधिकतासे होते हैं यह विशेषकरके हलके और निर्दोषहोते हैं ॥ ९॥

अथ गुरुभींहंभुकुरइतिच ॥

चिर्भिटंधेनुदुग्धंचतथागोरक्षकर्कटी । चिर्भिटंमधुरंरूक्षंगुरुपित्तकफापहम् ॥ अनूष्णंग्राहिविष्टम्भिपक्वंतूष्णंचपित्तलम् ॥ १० ॥

कचरीके नाम गुण ॥

चिरभिट धेनुदुग्ध और गोरक्षकर्कटी यह कचरीके नामहैं कच्ची कचरी मधुर रूखी भारी पित्तघ्न कफनाशक कुछ उष्ण ग्राही और विष्टंभकारक होतीहै पक्की कचरी उष्ण और पित्तवर्द्धकहोतीहै १०

अथ नारिकेल ॥

नारिकेरोदृढफलोजांगलीकूर्चशीर्षकः तुंगस्कन्धफलश्चैवतृणराजःसदाफलः ॥नारिकेरफलंशीतंदुर्ज्जरंवस्तिशोधनम् । विष्टम्भिबृंहणंबल्यंवातपित्तासृदाहनुत्॥विशेषतःकोमलनारिकेरंनिहंतिपित्तज्वरपित्तदोषान् । तदेवजीर्णंगुरुपित्तकारिविदाहिविष्टम्भिमतंभिषग्भिः ॥ तस्याम्भःशीतलंहृद्यंदीपनंशुक्रलंलघुः । पिपासापित्तजित्स्वादुवस्तिशुद्धिकरम्परम् ॥ नारिकेरस्यतालस्यखर्ज्जूरस्यशिरांसितु । कषायस्निग्धमधुरबृंहणानिगुरूणिच ॥ ११ ॥

नारियलके नाम गुण ॥

नारिकेर दृढफल लांगली कूर्चशीर्षक तुंग स्कन्धफल तृणराज और सदाफल यह नारियल के नामहैं नारियल शीतल कठिनतासे पचनेवाला मूत्राशयका शोधक विष्टंभी धातुवर्द्धक बलकारक और वात पित्त रक्तदोष तथा दाह नाशकहोताहै कोमल नारियल पित्तज्वर और पित्तके दोषों को विशेषकरके नाश करताहै पुराना नारियल भारी पित्तवर्द्धक विदाही और विष्टंभी होताहै नारियल का पानी शीतल हृदयकोहित दीपन वीर्य्यवर्द्धक हलका तृषा नाशक पित्तघ्न मधुर और मूत्राशय का अत्यन्त शोधन करनेवाला होताहै नारियल ताड और खजूर इन वृक्षों के मस्तक कषाय मधुर स्निग्ध धातुवर्द्धक और भारी होतेहैं ॥ ११॥

अथ तरबूजइतिलोकेकालिन्दम् ॥

कालिन्दंकृष्णबीजंस्यात्कालिंगश्चसुवर्त्तजम् । कालिन्दंग्राहिदृक्पित्तशुक्रहृच्छीतलंगुरु ॥ पक्वन्तुसोष्णंसक्षारंपित्तलंकफवातजित् ॥ १२ ॥

तरवूजके नाम गुण ॥

कालिन्द कृष्णवीज कालिंग और सुवर्तुल यह तरवूजके नामहैं कच्चा तरवूज ग्राही दृष्टि पित तथा वीर्य्यनाशक शीतल और भारी होता है पका तरवूज उष्ण क्षार पित्तकारक और कफ तथा वातनाशक होताहै ॥ १२ ॥

अथ खर्वुजा ।

दशाङ्गुलन्तुखर्बूजंकथ्यतेतत्गुणाअथ । खर्बूजंमूत्रलंबल्यंकोष्ठशुद्धिकरंगुरु ॥ स्निग्धंस्वादुतरंशीतंवृष्यम्पित्तानिलापहम् ॥ तेषुयच्चाम्लमधुरं सक्षारञ्चरसाद्भवेत् ॥ रक्तपित्तकरन्तत्तुमूत्रकृच्छ्रकरम्परम् ॥ १३ ॥

खरवूजेके नाम गुण ॥

दशांगुल और खरवूज यह खरवूजेके नामहैं खरवूजा मूत्रकारक वलवर्द्धक कोष्टशोधक भारी स्निग्ध मधुर शीतल वीर्य्यवर्द्धक और पित्त तथा वातनाशक होतेहैं जो खरवूजा कुछ क्षार और खटमिट्ठा होताहै वह रक्तपित्त और मूत्रकृच्छ्रको करताहै ॥ १३ ॥

अथलघुखीरावालमखीरा ॥

त्रपुषंकण्टकिफलंसुधावासःसुशीतलम् । त्रपुसंलघुनीलञ्चनवंतट्क्लमदाहजित् ॥ स्वादुपित्तापहंशीतंरक्तपित्तहरम्परम् । तत्पक्कमम्लमुष्णंस्यात्पित्तलंकफवातनुत् ॥ तद्बीजंमूत्रलंशीतंरूक्षंपित्तास्रकृच्छ्रजित् ॥ १४ ॥

वालमखीराके नाम गुण ॥

त्रपुप कंटकिफल सुधावास और सुशीतल यह वालमखीरेके नामहैं कच्चा वालमखीरा हलका मधुर शीतल और तृपा ग्लानि दाह पित्त तथा रक्तपित्त नाशकहोताहै पक्का वालमखीरा खट्टा उष्ण पित्तवर्द्धक और कफ तथा वातनाशक होताहै इसके वीज मूत्रकारक शीतल रूखे और पित्त रक्तदोप तथा मूत्रकृच्छ्रकारक होते हैं ॥ १४ ॥

अथसुपारीछोटी ॥

घोरण्टःपूगीपूगश्चगुवाकःक्रमुकोऽस्यतु ॥ फलम्पूगीफलम्प्रोक्तमुद्वेगञ्चतदीरितम्॥ पूगंगुरुहिमंरूक्षंकषायाङ्कफपित्तजित् ॥ मोहनन्दीपनंरुच्यमास्यवैरस्यनाशनम्॥ आर्द्रंतद्गुर्व्वभिष्यन्दिवह्निदृष्टिहरंस्मृतम्॥स्विन्नंदोषत्रयच्छेदिदृढमध्यन्तदुत्तमम् ॥१५॥

छोटी सुपारीके नाम गुण ॥

घोरण्ट पूगी पूग गुवाक और क्रमुक यह सुपारी वृक्षके नामहैं इसके फलको पूगीफल और उद्वेग कहतेहैं सुपारी भारी शीतल रूखी कपेली कफनाशक पित्तघ्न मदकारक दीपन रुचिकारक और मुखके फाकेपनेको दूरकरती है कच्ची सुपारी भारी अभिष्यन्दी और अग्नि तथा दृष्टिनाशक होतीहै और सिझाईहुई सुपारी त्रिदोपनाशक होतीहै जिस सुपारीका मध्यभाग दृढ़होताहै वह श्रेष्ठहै ॥१५॥

अथतालः ॥

तालस्तुलेखपत्र.स्यात्तृणराजोमहोन्नतः।पक्कंतालफलम्पित्तरक्तश्लेष्मविवर्द्धनम् ॥ दुर्जरम्बहुमूत्रञ्चतन्द्राभिष्यन्दिशुक्रदम् ॥ तालमज्जातुतरुण.किञ्चिन्मद करोलघुः॥ श्लेष्मलोवातपित्तघ्नः सस्नेहोमधुर.सरः ॥१६॥

अथ ताड़ी ॥

तालजन्तरुणन्तोयमतीवमादकृन्मतम्।अम्लीभूतन्तदातुस्यात्पित्तकृद्वातदोपहृत् १६

ताड के नाम गुण ॥

ताल लेखपत्र तृणराज और महोन्नत यह तालके नाम हैं.पका ताडका फल पित्त रक्त तथा कफ वर्द्धक कठिनता से पचने वाला वहुमूत्र कारक और तंद्रा अभिष्यन्द तथा वीर्यकाकरने वाला होता है पक्के ताडकी गिरी कुछमदकारक हलकी कफ वर्द्धक वातनाशक पित्तघ्न स्निग्ध मधुर और दस्तावर होती है ताडी बहुत मद करती है और खट्टी होजाने पर पित्त वर्द्धक तथा वात रोग नाशक होती है ॥ १६ ॥

अथवेल ॥

त्रिलःशाण्डिल्यशैलूषौमालूरश्रीफलावपि । बालंविल्वफलंविल्वकर्कटीविल्वपेशिका॥ ग्राहिणीकफवातामशूलघ्नीविल्वपेपिका । (अन्यच्च) बालंविल्वफलंग्राहिदीपनम्पाचनङ्कटु । कपायोष्णंलघुस्निग्धंतिक्तवातकफापहम् ॥ पक्वंगुरुत्रिदोपंस्यात्दुर्जरंपूतिमारुतम्।विदाहिविष्टम्भकरंमधुरंवन्हिमान्यकृत्॥फलेषुपरिपक्वंयद्गुणवत्तदुदाहृतम् । विल्वादन्यत्रविज्ञेयमामन्तद्धिगुणाधिकम् ॥ द्राक्षाविल्वशिवादीनांफलंशुष्कंगुणाधिकम्॥१७॥

वेलके नाम गुण ॥

विल्व शांडिल्य शैलूष मालूर और श्रीफल यह वेलके नाम हैं बेलके कच्चे फलको विल्व कर्कटी और विल्वपेशिका कहते हैं वेलका कच्चा फल ग्राही दीपन पाचक कटु कषाय उष्ण हलका तिक्त स्निग्ध और वाततथा कफका नाशक होता है पक्का वेल भारी त्रिदोष कारक कठिनतासे पचने वाला वायु को सुगन्धित करनेवाला विदाही विष्टंभी मधुर और मंदाग्नि करने वाला होता है फलों में पक्केही फल गुणदायक होते हैं परन्तु वेल नहीं क्योंकि यह कच्चाही अधिक गुण वाला होता है मुनक्का वेल और हड़ आदिक फल सूखेही अधिक गुणवाले होते हैं ॥ १७ ॥

अथ कैथि ॥

कपित्थस्तुदधित्थःस्यात्तथापुष्पफलःस्मृतः । कपिप्रियोदधिफलस्तथादन्तशठोऽपिच ॥ कपित्थमामंसंग्राहिकपायंलघुलेखनम् । पक्वंगुरुतृपाहिकाशमनंवातपित्तजित्॥ स्यादम्लन्तुवरङ्कण्ठशोधनंग्राहिदुर्ज्जरम् ॥ १८ ॥

कैथे के नाम गुण ॥

कपित्थ दधित्थ पुष्पफल कपिप्रिय दधिफल और दन्तशठ यह कैथे के नाम हैं कच्चा कैथा ग्राही कषैला हलका और लेखन होता है पका कैथा भारी तृषा हिचकी वात तथा पित्तनाशक खट्टा कषैला कण्ठशोधक ग्राही और कठिनता से पचने वालाहोता है ॥ १८ ॥

अथ नारङ्गी ॥

नारंगोनागरंगःस्यात्त्वक्सुगन्धोमुखप्रियः।नारंगोमधुराम्लःस्याद्दीपनंवातनाशनम् ॥ अपरन्त्वम्लमत्युष्णंदुर्ज्जरंवातहृत्सरम् ॥ १९ ॥

नारंगी के नाम गुण ॥

नारंग नागरंग त्वक्सुगन्ध और मुखप्रिय यह नारंगी के नाम हैं नारंगी मधुर खट्टी दीपन और

बातनाशक होती है और दूसरे प्रकार की नारंगी बहुत खट्टी होती है वह उष्ण कठिनता से पचने वाली वात नाशक और दस्तावर होती है ॥ १९ ॥

अथ तेंदु ॥

तिन्दुकःस्फूर्य्यकःकालस्कन्धश्चासितसारकः । स्यादामन्तिदुकंग्राहियातलंशीतलं लघु ॥ पक्वंपित्तप्रमेहास्रश्लेष्मघ्नंमधुरंगुरु ॥ २० ॥

तेंदुआ के नाम गुण ॥

तिंदुक स्फूर्जक कालस्कंध और शिति शारक यह तेंदुआ के नाम हैं कच्चा तेंदुआ ग्राही वादी शीतल और हलका होता है पक्का तेंदुआ मधुर भारी और पित्त प्रमेह रक्तदोष तथा कफ नाशक होता है ॥ २० ॥

अथ कुपीलु ॥

यस्यफलंकुचिलाइतिलोकेमकरतेंदुआइतिच ॥ तिन्दुकोयस्तुकथितोजलंदोदीर्घप त्रकः । कुपीलुःकुलकःकालस्तिन्दुकःकालपीलुकः ॥ काकेन्दुर्विषतिन्दुश्चतथामर्कटतिन्दुकः ॥ कुपीलुःशीतलंतिक्तंवातलंमदकृल्लघु ॥ पादव्यथाहरंग्राहिफकपित्तास्रनाशनम् २१ ॥

कुपील कुचले का वृक्ष इसके नाम गुण ॥

तिंदुक जलद दीर्घ पत्रक कुपीलु कुलक कालतिंदुक कालपीलुक काकेन्दु विषतिन्दु और मर्कट तिंदुक यह कुपीलु अर्थात् कुचले के वृक्षके नाम हैं कुपील शीतल तिक्त वादी मदकारक हलका व्यथा नाशक ग्राही और कफ पित्त तथा रक्त नाशक होता है ॥ २१ ॥

अथ फलेन्द्रा ॥

फलेन्द्राकथितानन्दीराजजम्बूर्महाफला । तथासुरभिपत्राचमहाजम्बूरपिस्मृता ॥ राजजम्बूफलंस्वादुविष्टम्भिगुरुरोचनम् ॥ २२ ॥

फलेंदा के नाम गुण ॥

फलेन्द्र नन्द राजजंबू सुरभिपत्रा और महाजंबू यह फलेंदेके नामहैं फलेंदा मधुर विष्टंभी भारी और रुचिकारक होताहै ॥ २१ ॥

अथ जामुनीनदीजामुनी ॥

क्षुद्रोजंम्बूःसूक्ष्मपत्रानादेयीजलजम्बुका । जम्बूःसंग्राहिणीरूक्षाकफपित्तासृदाहजित् २३ ॥

छोटी जामन के नाम गुण ॥

क्षुद्रजंबू सूक्ष्मपत्रा नादेयी और जलजंबुका यह छोटीजामनके नाम हैं जामन ग्राही रूखी और कफ पित्त रक्त तथा दाहनाशकहोती है ॥ २३ ॥

अथवेरि ॥

पुंसिस्त्रियाञ्चकर्कन्धूर्वदरीकोलमित्यपि । फेनिलंकुवलंघोंटासौवीरंवदरंमहत् ॥ अ जप्रियाकुहाकोलीविषमाभयकण्टका । तत्रबदरविशेषाणांलक्षणानिगुणाश्च । पच्यमा नंसुमधुरंसौवीरंवदरंमहत् । सौवीरंवदरंशीतंभेदनंगुरुशुक्रलम् ॥ बृंहणम्पित्तदाहास्र

क्षयतृष्णानिवारणम्। सौवीरंलघुसम्पक्वंमधुरंकोलमुच्यते ॥ कोलन्तुबदरंग्राहिरुच्यमुष्णञ्चवातलम् । कफपित्तकरञ्चापिगुरुसारकमीरितम् ॥ कर्कन्धुक्षुद्रबदरंकथितंपूर्व्वसूरिभिः । अम्लंस्यात्क्षुद्रबदरंकषायंमधुरंमनाक् ॥ स्निग्धंगुरुचतिक्तञ्चवातपित्तापहंस्मृतम्। शुष्कंभेद्यग्निकृत्सर्व्वंलघुतृष्णाक्लमासृजित् ॥ २४ ॥

बेर के नाम गुण ॥

कर्कन्धू (यह शब्द पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग होताहै) बदरी कोल फेनिल कुवल घोंटा सौवीर बदर अजप्रिया कुहा कोली विषम और भयकंटक यह बेरकेनामहैं बेर अनेक प्रकारकेहोते हैं उनके लक्षण और गुण लिखते हैं जो बेर पकने के समयपर मधुर और बड़ाहो उसको सौवीर कहते हैं सौवीर शीतल भेदक भारी वीर्यवर्द्धक धातुवर्द्धक और पित्त दाह रक्तदोष तथा क्षयनाशक होता है जो बेर सौवीर से कुछ छोटा और पकनेपर मधुर होताहै उसको कोल कहते हैं कोल ग्राही रुचिकारक उष्ण वादी कफकर पित्तवर्द्धक भारी और दस्तावर होताहै प्राचीन पण्डितलोग छोटेबेरको कर्कन्धू कहते हैं कर्कन्धु खट्टा कुछ मधुर कषाय तिक्त स्निग्ध भारी और वात तथा पित्तनाशकहोता है सूखा बेर भेदक अग्निवर्द्धक हलका और तृषा ग्लानि तथा रक्तदोष नाशकहोताहै ॥ २४ ॥

अथपानिअम्वरा ॥

प्राचीनामलकंलोकेपानीयामलकंस्मृतम्।प्राचीनामलकंदोषत्रयजिज्ज्वरघातिच२५॥

पानी आमले के नाम गुण ॥

लोकमें प्राचीनामलकको पानीयामलक कहते हैं यहत्रिदोषनाशक और ज्वरघ्नहोता है ॥ २५ ॥

अथलवली । हरफारीइतिच ॥

सुगन्धमूलालवलीपाण्डुःकोमलवल्कला ॥ लवलीफलमश्मार्शःकफपित्तहरंगुरु ॥ विशदंरोचनंरूक्षंस्वाद्वम्लन्तुवरंरसे ॥ २६ ॥

हरफारेवड़ी के नाम गुण ॥

सुगन्धिमूला लवली पांडु और कोमलवल्कला यह हरफारेवड़ी के नाम हैं हरफारेवड़ी पथरी बवासीर कफ तथा पित्तनाशक भारी विषद रुचिकारक रूखी मधुर खट्टी और कषैलीहोती है ॥ २६ ॥

अथ करौंदा । करौंदी ॥

करमर्द्दःसुषेणःस्यात्कृष्णपाकफलस्तथा । तस्माल्लघुफलायातुसाज्ञेयाकरमर्द्दिका ॥ करमर्द्दद्वयंत्वाममम्लंगुरुतृषाहरम्। उष्णंरुचिकरंप्रोक्तंरक्तपित्तकफप्रदम्॥ तत्पक्वंमधुररुच्यंलघुपित्तसमीरजित् ॥ २७ ॥

करौंदा और करौंदी के नाम गुण ॥

करमर्द सुषेण कृष्णपाक और कृष्णफल यह करौंदा के नाम हैं छोटेकरौंदे को करमर्दिका अर्थात् करौंदीकहते हैं दोनों प्रकारके कच्चे करौंदे खट्टे भारी तृषानाशक उष्ण रुचिकारक और रक्त पित्त तथा कफकारकहोते हैं और पकजानेपर मधुर रुचिकारक हलके और पित्त तथा वातनाशकहोते हैं ॥ २७ ॥

अथ पियालचिरोञ्जी ॥

प्रियालस्तुखरस्कन्धश्चारोवहुलवल्कलः ॥ राजादनस्तापसेष्टःसन्नकद्रुर्धनुष्पदः ॥ चारःपित्तकफास्रघ्नस्तत्फलंमधुरंगुरु॥स्निग्धंसरंमरुत्पित्तदाहज्वरतृपापहम् ॥ प्रियालमज्जामधुरोवृष्यःपित्तानिलापहः॥हृद्योऽतिदुर्जरःस्निग्धोविष्टम्भीचामवर्द्धनः॥२८॥

चिरोंजी के नाम गुण ॥

प्रियाल खरस्कन्ध चार वहुलवल्कल राजादन तापसेष्ट सन्नकद्रु और धनुष्पद यह चिरोंजी के नाम हैं चिरोंजी पित्त कफ तथा रक्तदोषनाशक इसका फल मधुर भारी स्निग्ध दस्तावर और वात पित्त दाह ज्वर तथा तृषानाशकहोताहै इसकीमींगी मधुर वीर्यवर्द्धक पित्तनाशक वातघ्न हृदयकोहित कठिनतासे पचनेवाली स्निग्ध विष्टंभी और आमवर्द्धकहोती है ॥ २८ ॥

अथ क्षीरणी ॥

राजादनःफलाध्यक्षोराजन्याक्षीरिकापिच॥क्षीरिकायाःफलंवृष्यंवल्यंस्निग्धंहिमंगुरु॥ तृष्णामूर्च्छामदभ्रान्तिक्षयदोषत्रयास्रजित् ॥२९ ॥

खिन्नी के नाम गुण ॥

राजादन फलाध्यक्ष राजन्य और क्षीरिका यह खिन्नीके नामहैं खिन्नी वीर्यवर्द्धक बलकारक स्निग्ध शीतल भारी और तृषा मूर्छा मदभ्रांति क्षय त्रिदोष तथा रक्तदोषनाशक होतीहै ॥ २९ ॥

अथ कण्टाइ ॥

विकङ्कतःस्रुवावृक्षोग्रन्थिलःस्वादुकण्टकः ॥ सएवयज्ञवृक्षश्चकण्टकीव्याघ्रपादपि॥ विकङ्कतफलंपक्वंमधुरंसर्वदोषजित् ॥ ३०

कंटाई के नाम गुण ॥

विकंकट स्रुवावृक्ष ग्रंथिल स्वादुकंटक यज्ञवृक्ष कंटकी और व्याघ्रपात् यह कंटाई के नाम हैं कंटाईका पकाफल मधुर और सर्व दोषनाशक होताहै ॥ ३० ॥

अथकमलगट्टा ॥

पद्मबीजन्तुपद्माक्षंगालोड्यंपद्मकर्कटी । पद्मबीजंहिमंस्वादुकषायंतिक्तकंगुरु ॥ विष्टम्भिवृष्यंरूक्षञ्चगर्भसंस्थापकंपरम् । कफवातकरंवल्यंग्राहिपित्तास्रदाहनुत् ॥ ३१ ॥

कमलगट्टेके नाम गुण ॥

पद्मबीज पद्माक्ष गालोड्य और पद्मकर्कटी यह कमलगट्टेके नाम हैं कमलगट्टा शीतल मधुर कषाय तिक्त भारी विष्टंभी वीर्यवर्द्धक रूखा गर्भस्थितिकरने में श्रेष्ठ कफकारी वातबलकारक ग्राही और पित्त रक्तदोष तथा दाहनाशक होताहै ॥ ३१ ॥

अथमखाना ॥

माखान्नंपद्मबीजाभंपानीयफलमित्यपि । माखान्नंपद्मबीजस्यगुणैस्तुल्यंविनिर्दिशेत्३२ ॥

मखानेके नाम गुण ॥

माखान्न पद्मबीजाभ और पानीयफल यहमखानेकेनामहैं मखानेमें कमलगट्टेके समानगुणहैं३२॥

अथ सिंघाड़ा ॥

शृङ्गाटकंजलफलंत्रिकोणफलमित्यपि ॥ शृंगाटकंहिमंस्वादुगुरुवृष्यंकषायकम् । ग्राहिशुक्रानिलश्लेष्मप्रदंपित्तासृदाहनुत् ॥ ३३ ॥

सिंघाड़ेके नाम गुण ॥

शृंगाटक जलफल और त्रिकोणफल यह सिंघाड़ेके नामहैं सिंघाड़ा शीतल कषैला मधुर भारी धातुवर्द्धक ग्राही वीर्य्यवर्द्धक वादी कफकारक और पित्त रक्तदोष तथा दाहनाशक होताहै ॥ ३३ ॥

अथभेट ॥

उक्तंकुमुदबीजन्तुबुधैःकैरविणीफलम् । भवेत्कुमुद्वतीबीजंस्वादुरूक्षंहिमंगुरु॥३४॥

कोकावेलीके फलके नाम गुण ॥

कुमुदबीजको पंडितलोग कैरविणीफल कहतेहैं यह मधुर रूखा शीतल और भारी होताहै ॥३४॥

अथ महुआवनमहुआ ॥

मधूकोगुड़पुष्पःस्यान्मधुपुष्पोमधुस्रवः । वानप्रस्थोमधुष्ठीलोजलजेत्रमधूलकः ॥ मधूकपुष्पंमधुरंशीतलंगुरुबृंहणम् । बलशुक्रकरंप्रोक्तंवातपित्तविनाशनम् ॥ फलंशीतं गुरुस्वादुशुक्रलंवातपित्तनुत् । अहृद्यंहन्तितृष्णासृदाहश्वासक्षतक्षयान् ॥ ३५ ॥

महुआ और बनमहुआके नाम गुण ॥

मधूक गुड़पुष्प मधुपुष्प मधुस्रव वानप्रस्थ और मधुष्ठील यह महुआके नामहैं जलमें हुए महुएको मधूलक कहतेहैं महुएका पुष्प मधुर शीतलभारी धातुवर्द्धक बलकारक वीर्यवर्द्धक और वात पित्त नाशकहोताहै महुएका फल शीतल भारी मधुर वीर्यवर्द्धक हृदयको अहित और वात पित्त तृषा रक्तदोष दाह श्वास क्षत तथा क्षयनाशक होताहै ॥ ३५ ॥

अथ फरुसा ॥

परूषकन्तुपरुपमल्पास्थितचपरापरम् । परूषकंकषायाम्लमामंपित्तकरंलघु ॥ तत पक्कंमधुरंपाकेशीतंविष्टम्भिबृंहणम् । हृद्यन्तुपित्तदाहास्रज्वरक्षयसमीरहृत् ॥ ३६ ॥

फालसे के नाम गुण ॥

परूपक परुप अल्पास्थि और परापर यह फालसे के नामहैं फालसे का कच्चाफल कषैला खट्टा पित्त वर्द्धक और हलका होताहै पक्काफालसा पाक में मधुर शीतल विष्टंभी धातुवर्द्धक हृदयको हित और पित्त दाह रक्तदोष ज्वर क्षय तथा वातनाशक होताहै ॥ ३६॥

अथतूत ॥

तूतःस्थूलश्चपूगश्चक्रमुकोब्रह्मदारुच । तूतंपक्कंगुरुस्वादुहिमंपित्तानिलापहम् ॥ तदेवामंगुरुसरमम्लोष्णंरक्तपित्तकृत् ॥ ३७ ॥

सहतूतके नाम गुण ॥

तूत स्थूल पूग क्रमुक और ब्रह्मदारु यह सहतूतके नामहैं पक्का सहतूत भारी मधुर शीतल और पित्तवातनाशक होताहै कच्चासहतूत भारी दस्तावर खट्टा उष्ण और रक्त पित्तकरनेवाला होताहै ३७

अथ अनार ॥

दाड़िमःकरकोदन्तबीजोलोहितपुष्पकः । तत्फलंत्रिविधंस्वादुस्वाद्वम्लंकेवलाम्लकम् ॥ तत्तुस्वादुत्रिदोषघ्नंतड्दाहज्वरनाशनम् ॥ हृत्कण्ठमुखगन्धघ्नंतर्पणंशुक्रलंलघु॥ कषायानुरसंग्राहिस्निग्धंमेधाबलापहम् ॥ स्वाद्वम्लंदीपनंरुच्यंकिञ्चित्पित्तकरंलघु ॥अम्लंतुपित्तजनकमम्लंवातकफापहम् ॥ ३८ ॥

अनारके नाम गुण ॥

दाड़िम करक दन्तबीज और लोहित पुष्पक यह अनार के नाम हैं इसका फल मधुर खटमिट्ठा और केवल खट्टा इनभेदोंसे तीन प्रकार का होता है मीठा अनार त्रिदोष तृषा दाह ज्वर हृदय केरोग कंठ रोग तथा मुखरोगनाशक तृप्तिकारक वीर्यवर्द्धक हलका कुछ कपेला ग्राही स्निग्ध और मेधा तथा बलवर्द्धकहोताहै खटमिट्ठा अनार दीपन रुचिकारक कुछ पित्तवर्द्धक और हलकाहोताहै खट्टा अनार पित्तवर्द्धक और कफ वातनाशक होता है ॥ ३८ ॥

अथ बहुआर ॥

बहुवारस्तुशीतःस्यादुद्दालोबहुवारकः॥ शेलुःश्लेष्मातकश्चापिच्छिलोभूतवृक्षकः॥ बहुवारोविषस्फोटव्रणवीसर्पकुष्ठनुत् ॥ मधुरस्तुवरस्तिक्तःकेश्यश्चकफपित्तहृत्॥ फलमामन्तुविष्टम्भिरूक्षंपित्तकफास्रजित् । तत्पक्कंमधुरंस्निग्धंश्लेष्मलंशीतलंगुरु ॥ ३९ ॥

लिसोढ़े के नाम गुण ॥

बहुवार शीत उद्दाल बहुवारक शेलु श्लेष्मातक पिच्छिल और भूतवृक्षक यह लिसोढ़ेके नाम हैं लिसोढ़ा विष स्फोटक घाव वीसर्प कुष्ठ कफ तथा पित्तनाशक मधुर कषाय तिक्त और केशोंको हित होताहै कच्चालिसोढा विष्टंभी रूखा और पित्त कफ तथा रक्तदोषनाशक होताहै पक्कालिसोढ़ा मधुर स्निग्ध कफकारक शीतल और भारीहोता है ३९ ॥

अथ कतकः ॥

पयःप्रसादिकतकङ्कतकंतत्फलञ्चतत् । कतकस्यफलंनेत्र्यंजलनिर्मलताकरम् ॥ वातश्लेष्महरंशीतंमधुरंतुवरंगुरु ॥ ४० ॥

निर्मली के नाम गुण ॥

पयःप्रसादि कतक कत और कतफल यह निर्मली के नाम हैं निर्मली का फल नेत्रोंको हित जलका निर्मलकरनेवाला वातनाशक कफघ्न शीतल मधुर कपेला और भारी होता है ॥ ४० ॥

अथ द्राक्षा ॥

द्राक्षास्वादुफलाप्रोक्तातथामधुरसापिच । मृद्वीकाहारहूराचगोस्तनीचापिकीर्तिता ॥ द्राक्षापक्कासराशीताचक्षुष्याबृंहणीगुरुः । स्वादुपाकरसास्वर्य्यातुवरासृष्टमूत्रविट् ॥ कोष्ठमारुतकृद्वृष्याकफपुष्टिरुचिप्रदा । हन्तितृष्णाज्वरश्वासवातवातासृकामलाः ॥ कृच्छ्रास्रपित्तसंमोह दाहशोषमदात्ययान् । आमास्वल्पगुणागुर्व्वी सैवाम्लारक्तपित्तकृत ॥ वृष्यास्याद्गोस्तनीद्राक्षा गुर्व्वीचकफपित्तनुत् । (गोस्तनी मुनक्का इतिलोके)

अबीजान्यास्वल्पतरा गोस्तनीसदृशीगुणैः । द्राक्षापर्वतजालघ्वी साम्लाश्लेष्माग्लपित्तकृत् ॥ द्राक्षापर्वतजायादृक् तादृशीकरमर्दिका । अबीजा । ईषद्बीजा । किसमिस इति लोके । पर्वजायहारी इति लोके । करमर्दिका करौंदी इतिलोके ॥ ४१ ॥

दाख के नाम गुण ॥

द्राक्षा स्वादुफला मधुरसा मृद्वीका हारहूरा और गोस्तनी यह दाख के नाम हैं पकीहुई दाख दस्तावर शीतल नेत्रोंकोहित धातुवर्द्धक भारी पाक में मधुर २ कषाय मधुर स्वरकोहित मलमूत्रकी निकालनेवाली कोष्ठमें बात उत्पन्नकरनेवाली वीर्यवर्द्धक कफकारक पोषक रुचिकारक और तृषा ज्वर श्वास बात बातरक्त कामला मूत्रकृच्छ्र रक्त पित्त मोह दाह शोष और मदनाशकहोतीहै कच्चीदाख उससे गुणोंमें न्यूनहोतीहै खट्टीदाख रक्त पित्तकारक होती है मुनक्का वीर्यवर्द्धक भारी और कफ तथा पित्तनाशकहोतीहै किसमिस मुनक्काके ही समान गुणवालीहोती है पहाड़ीदाख हलकी खट्टी और कफ तथा अम्लपित्तकारकहोती है जैसी पहाड़ीदाख होतीहै वैसीही करौंदीहोती है ॥ ४१ ॥

अथ क्षुद्रखर्ज्जूरी । पिण्डखर्ज्जूरी छोहारा ॥

भूमिखर्ज्जूरिकास्वाद्वी दुरारोहामृदुच्छदा । तथास्कन्धफलाकाक कर्कटीस्वादुमस्तका ॥ पिण्डखर्ज्जूरिकात्वन्या सादेशेपश्चिमेभवेत् । खर्ज्जूरीगोस्तनाकारा परद्वीपादिहागता ॥ जायतेपश्चिमेदेशे साच्छोहारेतिकीर्त्यते । खर्ज्जूरीत्रितयंशीतं मधुरंरसपाकयोः ॥ स्निग्धंरुचिकरंहृद्यं क्षतक्षयहरंगुरु । तर्पणरक्तपित्तघ्नं पुष्टिविष्टम्भशुक्रदम् ॥ कोष्ठमारुतहंहृद्यं वान्तिवातकफापहम् । ज्वरातिसारक्षुत्तृष्णा कासश्वासनिवारकम् ॥ मदमूर्च्छामरुत्पित्त मद्योद्भूतगदान्तकृत् । महतीभ्यांगुणैरल्पा स्वल्पखर्ज्जूरिकास्मृता॥ खर्ज्जूरीतरुतोयंतु मदपित्तकरंभवेत् । वातश्लेष्महररुच्यं दीपनंबलशुक्रकृत् ॥ ४२ ॥

खजूर पिण्ड खजूर और छुहाराके नाम गुण ॥

भूमि खर्जूरिका स्वाद्वी दुरारोहा मृदुच्छदा स्कन्धफला काककर्कटी और स्वादुमस्तका यहखजूर के नामहैं और दूसरी पिंड खजूर कहलातीहै वहपश्चिम देशमें उत्पन्नहोती है मुनक्का के समान आकार वाली खजूर अन्य द्वीपसे यहा आई और पश्चिम देशमे उत्पन्नहोतीहै उसको छुहारा कहतेहैं और तीनों प्रकारकी खजूर शीतल रसतथापाकमें मधुर स्निग्ध रुचिकारक हृदयकोहित क्षततथा क्षय नाशक भारीतृप्तिकारक रक्तपित्तनाशक पोषक बिष्टंभी वीर्यवर्द्धक बलकारक और कोष्ठकीवायु छर्दि बात कफ ज्वर अतीसार क्षुधा तृषा खांसी श्वास मद मूर्च्छा वातपित्त तथामदात्यय रोगनाशक होतीहैं छोटी खजूर में बडी खजूरसे कमगुणहोतेहैं खजूर के वृक्षकारस मदकारक पित्तवर्द्धक बातघ्न कफनाशक रुचिकारक दीपन बलकारक और वीर्यवर्द्धकहोताहै ॥ ४२ ॥

अथ पिण्डखर्ज्जूरीभेदः सुलेमानी ॥

सुलेमानीतुमृदुलादलहीनफलाचसा। सुलेमानीश्रमभ्रान्तिदाहमूर्च्छास्रपित्तहृत्४३

पिंड खजूरकाभेद सुलहमानी के नामगुण

सुलहमानी मृदुला और दलहीनफला यह सुलहमानीके नामहैं सुलहमानी श्रमभ्रम दाहमूर्च्छा और रक्त पित्तनाशकहोतीहै ॥ ४३ ॥

अथ वादाम ॥

वातादोवातवैरीस्यान्नेत्रोपमफलस्तथा । वातादउष्णःसुस्निग्धो वातघ्नःशुक्रकृद्गुरुः ॥ वातादमज्जामधुरो वृष्यःपित्तानिलापहः । स्निग्धोष्णःकफकृन्नेष्टो रक्तपित्तविकारिणाम् ॥ ४४ ॥

बदाम के नामगुण ॥

वाताद वातवैरी और नेत्रोपमफल यह बदामके नामहैं बदाम उष्ण स्निग्ध वातनाशक वीर्यवर्द्धक और भारीहोताहै बदामकी गिरीमधुर वीर्यवर्द्धक पित्तघ्न वातनाशक स्निग्ध उष्ण कफकारकहोती है यह रक्त पित्त के विकार वालोंको हित नहींहोतीहै ॥ ४४ ॥

अथ सेव ॥

मुष्टिप्रमाणंबदरं सेवंसिवितिकाफलम् । सेवंसमीरपित्तघ्नं बृंहणंकफकृद्गुरु ॥ रसे पाकेचमधुरं शिशिरंरुचिशुक्रकृत् ॥ ४५ ॥

सेव के नाम गुण ॥

मुष्टिप्रमाण बदर सेव और सिवितिकफल यह सेव के नाम हैं सेव वातघ्न पित्तनाशक धातुवर्द्धक कफकारक भारी रस तथा पाक में मधुर शीतल रुचिकारक और वीर्यवर्द्धकहोताहै ॥ ४५ ॥

अथामृतफलम् ॥

यत्वदक्सानकाबिल प्रभृतिपुदेशेषु नासपातीति प्रसिद्धः ॥ अमृतफलंलघुवृष्यं सुस्वादुत्रीन्हरेत्तदोषान् । देशेपुमुद्गलानां बहुलन्तल्लभ्यतेलोकैः ॥ ४६ ॥

नाशपाती के गुण ॥

अमृतफल (नाशपाती) हलकी वीर्यवर्द्धक स्वादिष्ट त्रिदोषनाशकहोती है यह मुद्गलादि देश में बहुतहोती है ॥ ४६ ॥

अथ पीलूः ॥

पीलुगुडफलःस्रंसी तथाशीतफलोऽपिच । पीलु श्लेष्मसमीरघ्नं पित्तलंभेदिगुल्मनुत् ॥ स्वादुतिक्तञ्चयत्पीलु तन्नात्युष्णन्त्रिदोषहृत् ॥ ४७ ॥

पीलू के नाम गुण ॥

पीलु गुडफल स्रंसी और शीतफल यह पीलू के नाम हैं पीलू कफघ्न वातनाशक पित्तवर्द्धक भेदक और गुल्मनाशकहोताहै मधुर तिक्त रसवाला पीलू बहुत उष्ण नहींहोता और त्रिदोषको नाश करताहै ॥ ४७ ॥

अथ अखरोटपीलुः ॥

पीलुःशैलभवोऽक्षोटः कर्परालश्चकीर्त्तितः । अक्षोटकोऽपिवाताम सदृशः कफपित्तकृत् ॥ ४८ ॥

अखरोट के नाम गुण ॥

पर्वत जातपीलु अक्षोट और कर्पराल यह अखरोट के नाम हैं अखरोट बदाम के समान गुण वाला और कफ पित्तकारकहोता है ॥ ४८ ॥

अथ बिजौरा ॥

बीजपूरोमातुलुङ्गोरुचकःफलपूरकः । बीजपूरफलंस्वादु रसेम्लंदीपनंलघु ॥ रक्तपित्तहरंकंठ जिह्वाहृदयशोधनम् । श्वासकासारुचिहरं हृद्यंतृष्णाहरंस्मृतम् ॥ ४९ ॥

विजौरा के नाम गुण ॥

बीजपूर मातलुंग रुचक फलपूरक यह विजौरा के नाम हैं बिजौरेकाफल मधुर अम्ल दीपन हलका रक्त पित्तनाशक कंठ जिह्वा और हृदयकाशोधक हृदयकोहित और श्वास खांसी अरुचि तथा तृषानाशक होताहै ॥ ४९ ॥

अथ विजोरभेद मधुकाकड़ि ॥

बीजपूरोऽपरःप्रोक्तो मधुरोमधुकर्कटी । मधुकर्कटिकास्वाद्वी रोचनीशीतलागुरुः ॥ रक्तपित्तक्षयश्वास कासहिक्काभ्रमापहा ॥ ५० ॥

विजौराका भेद मधुककड़ीके नाम गुण ॥

एक दूसरे प्रकारके विजौरेको मधुर और मधुकर्कटी कहतेहैं मधुककड़ी मधुर रुचिकारक शीतल भारी और रक्तपित्तक्षय श्वास खांसी हिचकी तथा भ्रमनाशक होतीहै ॥ ५० ॥

अथ जम्बीरीद्वयम् ॥

स्याज्जम्बीरीदन्तशठो जम्भजम्भीरजम्भलाः । जम्बीरमुष्णंगुर्वम्लं वातश्लेष्म विबन्धनुत् ॥ शूलकासकफोत्क्लेश छर्दितृष्णामदोषजित् । आस्यवैरस्यहृत्पीडावह्निमान्द्यकृमीन्हरेत् ॥ स्वल्पजम्बीरिकातद्वत् तृष्णाछर्दिनिवारणी ॥ ५१ ॥

दोनोंजंभीरी नींबूके नाम गुण ॥

जंबीर दन्तशठ जंभ जंभीर और जंभल यह जंभीरी नींबूके नामहैं जंभीरी उष्ण भारी खट्टा और वात कफ विबन्ध शूल खांसी कफकी पीड़ा छर्दि तृषा आम दोष मुखकी विरसता हृदयकीपीड़ा मंदाग्नि तथा कृमिनाशक होताहै छोटा जंभीरी भी इसीके समान गुणवाला होताहै और विशेषकरके तृषा और छर्दिनाशक होताहै ॥ ५१ ॥

निम्बू ॥

निम्बूस्त्रीनिम्बुकंक्लीवे निम्बूकमपिकीर्त्तितम् । निम्बूकमम्लंवातघ्नं दीपनंपाचनंलघु ॥ (अन्यच्च) निम्बूकङ्कृमिसमूहनाशनन्तीक्ष्णमम्लमुदरग्रहापहम् । वातपित्तकफशूलिनेहितंकष्टनष्टरुचिरोचनंपरम् ॥ त्रिदोषवह्निक्षयवातरोगनिपीड़ितानां विषविह्वलानां । मन्दानलेबद्धगुदेप्रदेयं विसूचिकायांमुनयोवदन्ति ॥ ५२ ॥

नींबूके नाम गुण ॥

निंबू (स्त्रीलिंग) निंबुक नपुंसक लिंग और निंबूक यह नींबूके नामहैं नींबू खट्टा वातनाशक दीपन पाचक और हलका होताहै और भी कहाहुआ है कि निंबू कृमि समूहनाशक तीक्ष्ण खट्टा उदर रोगनाशक ग्रहोंका शान्तकरनेवाला वात पित्त कफ तथा शूलवाले को हित कष्टसाध्य तथा नष्टहोगई रुचिवालेको रुचिकारक और त्रिदोष मंदाग्नि वातरोग विष गलेकेरोग बद्धगुद और विसूचिकामें देनेके योग्य होताहै यह मुनियोंने कहाहै ॥ ५२ ॥

अथ मिष्टनिम्बू ॥

मिष्टनिम्बूफलंस्वादु गुरुमारुतपित्तनुत् । गररोगविषध्वंसि कफोत्क्लेशिचरक्तहृत् ॥ शोषारुचितृषाछर्दि हरंबल्यञ्चबृंहणम् ॥ ५३ ॥

मीठेनिंबूके गुण ॥

मीठानिंबू मधुर भारी वातघ्न पित्तनाशक कफका उखाड़नेवाला बलकारक धातुवर्द्धक और गर दोष विष रक्तदोष शोष अरुचि तृषा तथा छर्दिनाशकहोताहै ॥ ५३ ॥

अथ कर्म्मरंग ॥

कर्म्मरंगंहिमंग्राहिस्वाद्वम्लंकफवातहृत् ५४ (अथअम्लिली) अम्लिकाचुक्रिकाम्ली च चुक्रादन्तशठापिच। अम्लाचचिचकाचिञ्चा तिन्तिडीकाचतिन्तिडी ॥ आम्लिकाम्लागुरुर्वात हरीपित्तकफास्रकृत्। पक्वातुदीपनीरूक्षा सरोष्णाकफवातनुत् ॥ ५५ ॥

कमरखके गुण ॥

कर्मरंग (कमरख) शीतल ग्राही मधुर खट्टी और कफवातनाशक होती है ॥ ५४ (इमलीके नाम गुण) अम्लिका चुक्रिका अम्ली चुक्रा दन्तशठा अम्ला चिंचिका चिंचा तितिड़ीका और तिंतिड़ीयह इमलीके नामहैं कच्चीइमली खट्टी भारी वातनाशक और रक्त तथा कफकारक होती है पक्की इमली दीपन रूखी दस्तावर उष्ण और कफ तथा वातनाशक होतीहै ॥ ५५ ॥

अथाम्लवेतसः ॥

स्यादम्लवेतसश्चुक्रंशतवेधिसहस्रनुत् । अम्लवेतसमत्यम्लंभेदनंलघुदीपनम् ॥ हृद्रोगशूलगुल्मघ्नंपित्तलंलोमहर्षणम्। रूक्षंविण्मूत्रदोषघ्नंप्लीहोदावर्त्तनाशनम् ॥ हिक्कानाहारुचिश्वासकासाजीर्णवमिप्रणुत्। कफवातामयध्वंसिच्छागमांसद्रवत्वकृत् ॥ चणकाम्लगुणंह्येयंलोहसूचीद्रवत्वकृत् ५६ ॥

अमलवेतके नाम गुण ॥

अम्लवेतस चुक्र शतवेधी और सहस्रनुत यह अमलवेतके नाम हैं अमलवेत अत्यन्त खट्टा भेदक हलका दीपन पित्तवर्द्धक रोमांचकारक रूखा और हृदयके रोग शूल गुल्म मलदोष मूत्रदोष प्लीहा उदावर्त्त हिचकी आनाह अरुचि श्वास खांसी अजीर्ण छर्दि कफरोग तथा वातरोग नाशक होताहै इससे बकरेका मांस जल्दी गलताहै इसमें चनेकी कांजीके समान गुण होताहै और यह लोहेकी सुई को गलाता है ॥ ५६ ॥

अथ विषाम्बिल ॥

वृक्षाम्लंतिंतिड़ीकञ्चचुक्रंस्यादम्लवृक्षकम्। वृक्षाम्लमाममम्लोष्णंवातघ्नंकफपित्तलम्। पक्वन्तुगुरुसंग्राहिकटुकन्तुवरंलघु ॥ अम्लोष्णंरोचनंरूक्षंदीपनंकफवातकृत्। तृष्णार्शोग्रहणीगुल्मशूलहृद्रोगजन्तुजित् ॥ ५७ ॥

विषाम्बिलके नाम गुण ॥

वृक्षाम्ल तितिड़ीक चुक्र और अम्लवृक्षक यह विषाम्बिलके नामहैं कच्चा विषाम्बिल खट्टाउष्ण वातघ्न कफकारक और पित्तवर्द्धक होताहै पक्का विषाम्बिल भारी ग्राही कटु कषैला खट्टा हलका उष्ण रुचिकारक रूखा दीपन कफकारक वादी और तृषा बवासीर ग्रहणी गुल्म शूल हृदयके रोग तथा कृमिनाशक होताहै ॥ ५७ ॥

अथ चतुरम्लपञ्चाम्लयोर्लक्षणम् ॥

अम्लवेतसवृक्षाम्लबृहज्जम्बीरनिम्बुकैः चतुरम्लंहिपञ्चाम्लंवीजपूरयुतैर्भवेत् ५८॥

चतुरम्ल और पञ्चाम्लके लक्षण ॥

अमलवेत चूकाशाक बड़ाजंभीरी और निंबू इनचारोंको चतुरम्ल कहतेहैं और इन में विजौरा मिलानेसे पंचाम्ल कहलाताहै ॥ ५८ ॥ अथपरिभाषा ॥

फलेषुपरिपक्वंयद्गुणवत्तदुदाहृतम् । विल्वादन्यत्रविज्ञेयमामंतद्विगुणाधिकम् ॥ फलेषुसरसंयत्स्याद्गुणवत्तदुदाहृतम् । द्राक्षाविल्वाशिवादीनांफलंशुष्कंगुणाधिकम् ॥ फलतुल्यगुणंसर्वमज्जानमपिनिर्दिशेत् । फलंहिमाग्निदुर्वातव्यालकीटादिदूषितम् ॥ अकालजंकुभूमीजम्पाकातीतंनभक्षयेत् । पाकातीतंपाकमतिक्रम्यास्थितम् ॥५९ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशेफलवर्गः ॥

परिभाषा ॥

वेलको छोड़कर सम्पूर्ण फल पकेही गुणदायक होतेहैं और बेल कच्चाही अधिक गुणवालाहोताहै सम्पूर्ण फल रसयुक्तही गुणदायक होतेहैं परन्तु दाखवेल और हड़ आदिक सूखेही अधिक गुण वाले होतेहैं फलोंके गुणके समान फलोंकी मींगीके भी गुण जाननेचाहिये जो फल पाला अग्नि विकारयुक्त वायु सर्प और कीटादिकोंके द्वारा दूषित अकालमें उत्पन्न खराब पृथ्वी में पैदाहुआ और पकनेके उपरांतभी अधिक दिनतक रहा (उतराहुआ) हो वहफल भक्षणके योग्य नहीं रहताहै ५९॥

इतिभावप्रकाशस्यभाषानुवादेफलवर्गःसमाप्तः ॥

अथ धातूपधातुरसोपरसरत्नोपरत्नविषोपविषवर्गः ॥

तत्रधातूनांलक्षणानिगुणाश्च ॥

स्वर्णंरूप्यञ्चताम्रञ्चरङ्गंयसदमेवच । सीसंलोहञ्चसप्तैतेधातवोगिरिसम्भवाः ॥ वलीपलितखालित्यकार्श्यवल्यजरामयान् । निवार्य्यदेहंदधतिनृणांतद्धातवोमताः १ ॥

अथ धातु उपधातु रस उपरस रत्न उपरत्न विष उपविष वर्गः ॥

धातुओंके लक्षण और गुण ॥

सुवर्ण रूपा तांबा रांगा जस्त सीसा और लोहा यह सात धातु पर्व्वतसे उत्पन्न होती हैं यह झुर्रीवालोंका पकना गंजापन कृशता दुर्बलता और वृद्धावस्था आदि रोगोंको दूरकरके देहको पुष्ट करतीहैं इसलिये इनको धातु कहते हैं ॥ १ ॥

तत्रादौसुवर्णस्योत्पत्तिनामलक्षणगुणाश्च ॥

पुरानिजाश्रमस्थानांसप्तर्षीणांजितात्मनाम् । पत्नीर्विलोक्यलावण्यलक्ष्मीसम्पन्नयौवनाः ॥ कन्दर्प्पदर्पविध्वस्तचेतसोजातवेदसः । पतितंयद्धरापृष्ठेरेतस्तद्धेमतामगात् ॥ वशिष्ठश्चेतिसप्तैतेकीर्तिताःपरमर्षयः ॥ मरीचिरङ्गिराअत्रिःपुलस्त्यःपुलहःक्रतुः । कृत्रिमञ्चापिभवतितद्रसेन्द्रस्यवेधतः ॥ स्वर्णंसुवर्णंकनकंहिरण्यंहेमहाटकम् । तपनीयञ्चगा

ह्रेयकलधौतञ्चकाञ्चनम् ॥ चामीकरंशातकुम्भंतथाकार्त्तस्वरञ्चतत्।जाम्बूनदंजात रूपंमहारजतइत्यपि ॥ दाहेरक्तंसितंच्छेदेनिकषेकुंकुमप्रभम्। तारंशुल्वोज्झितंस्निग्धं कोमलंगुरुहेमसत् (सत्तमम्) तच्छेतंकठिनंरूक्षंविवर्णंसमलंदलम्। दाहेछेदेसितंश्वे तंकषेत्याज्यंलघुस्फुटम् (दलञ्जोरइतिलोके स्फुटंयद्घनाहतंस्फुटति) सुवर्णंशीतलं वृष्यंबल्यंगुरुरसायनम् ॥ स्वादुतिक्तञ्चतुवरंपाकेचस्वादुपिच्छिलम्। पवित्रंबृंहणंने त्र्यंमेधास्मृतिमतिप्रदम् ॥ हृद्यमायुःकरंकान्ति वाक्विशुद्धिस्थिरत्वकृत्। विषद्वय क्षयोन्मादत्रिदोषज्वरशोषजित् ॥ बलंसवीर्य्यंहरतेनराणांरोगव्रजानूशोषयतीहकाये। असौख्यकर्त्ताचसदासुवर्णमशुद्धमेतन्मरणञ्चकुर्य्यात् ॥ असम्यक्मारितंस्वर्णंबलं वीर्य्यञ्चनाशयेत्। करोतिरोगान्मृत्युञ्चतद्धन्याद्यत्नतस्ततः ॥ २ ॥

सुवर्णकी उत्पत्ति नामलक्षण और गुण ॥

पूर्वकालमें अपने आश्रममें बैठेहुये जितेन्द्री सप्तर्षिलोगों की युवावस्था युक्त लावण्यवती स्त्रियों को देखकर कामके वेगसे चलायमान चित्तवाले अग्निदेवताका जो वीर्य पृथ्वीपर गिरा वह सुवर्णहो गया मरीचि अंगिरा अत्रि पुलस्त्य पुलह क्रतु और वशिष्ठ यह सातों ऋषि परमर्षि कहलाते हैं पारेके वेधसे कृत्रिमसुवर्णभी होताहै स्वर्ण सुवर्ण कनक हिरण्य हेम हाटक तपनीय गांगेय कलधौत कांचन चामीकर शातकुम्भ कार्त्तस्वर जाम्बूनद जातरूप और महारजत यह सुवर्णके नामहैं जो सुवर्ण तपानेसे लाल काटनेसे श्वेत कसौटीमें कसनेसे केशरके समान चांदी तथा तांमेसे रहित स्निग्ध कोमल और भारी होताहै वह उत्तम होताहै जो सुवर्ण श्वेत कठिन रूखा विवर्ण मलयुक्त दलवाला तपानेमें तथा काटनेमें श्वेत कसौटीपर कसनेसे धीके वर्ण हलका और घनके मारनेसे फटनेवाला होताहै वह निकृष्ट कहाताहै सुवर्ण शीतल वीर्य्यवर्द्धक बलकारक भारी रसायन मधुर तिक्त कषैला पाकमें मधुर पिच्छिल पवित्र धातुवर्द्धक नेत्रोंको तथा बुद्धिकोहित स्मृतिदायक बुद्धि वर्द्धक हृदयको हित आयुवर्द्धक कांतिकारक वाणीको उत्तम तथा स्थिर करनेवाला और स्थावर जंगम विष क्षय उन्माद त्रिदोष ज्वर तथा राजयक्ष्मा नाशक होताहै अशुद्ध सुवर्ण बलवीर्यनाशक रोगकारी शरीर शोषक और सुखका नाशक होताहै और इससे मृत्युभी होजातीहै अच्छेप्रकारसे नहीं माराहुआ सुवर्ण बलवीर्यनाशक और रोग तथा मृत्युकारक भी होता है इससे यत्नपूर्वक सुवर्ण को मारना चाहिये ॥ २ ॥

अथ रूप्यस्योत्पत्तिनामलक्षणगुणाश्च ॥

त्रिपुरस्यवधार्थायनिर्निमिषैर्विलोचनैः। निरीक्षयामासशिवःक्रोधेनपरिपूरितः ॥ अ ग्निस्ततत्कालमपतत्तस्यैकस्माद्विलोचनात्। ततोरुद्रःसमभवद्वैश्वानरइवज्वलन् ॥ द्वि तीयादपतन्नेत्रादश्रुबिन्दुस्तुवामकात्। तस्माद्रजतमुत्पन्नमुक्तकर्म्मसुयोजयेत् ॥ कृत्रिम ञ्चभवेतद्धियद्वङ्गादिरसयोगतः। रूप्यन्तुरजतंतारञ्चन्द्रकान्तिसितप्रभम् ॥ गुरुस्निग्धं मृदुश्वेतंदाहेछेदेघनक्षमम्। वर्णाढ्यंचन्द्रवत्स्वच्छंरूप्यंनवगुणंशुभम् ॥ कठिनंकृत्रिमं रूक्षरक्तंपीतदलंलघु। दाहच्छेदघनैर्नष्टंरूप्यंदुष्टंप्रकीर्तितम् ॥ रूप्यंशीतंकषायाम्लंस्वा

दुपाकरसंसरम् । वयसःस्थापनंस्निग्धंलेखनंवातपित्तजित् ॥ प्रमेहादिकरोगांश्चनाश यत्यचिराद्ध्रुवम्। तारंशरीरस्यकरोतितापंविद्धंघनंयच्छतिशुक्रनाशम्॥वीर्य्यंबलंहन्ति तनोश्चपुष्टिंमहागदान्शोपयतिह्यशुद्धम् ॥ ३ ॥

रूपेकी उत्पत्तिनामलक्षण और गुण ॥

त्रिपुरके मारनेके लिये क्रोधमें पूर्णहोके शिवजीने विनापलकलगाये नेत्रोंसे देखा उससमय एक नेत्रसे अग्नि गिरी उस अग्निसे अग्निके समान जाज्वल्यमान रुद्र उत्पन्न हुए और दूसरे वाम नेत्रसेअश्रु विन्दुगिरा उससे चांदी उत्पन्न हुई उसको कहेहुए अनेक कामोंमें लानाचाहिये यह वंग आदिरसोंके योगसे कृत्रिमभी होती है रूप्य रजत तार चन्द्रकांति और सितप्रभ यह रूपाके नाम हैं जो रूपाभारी चिकना कोमल तपानेसे अथवा काटनेसे श्वेत चोटका सहने वाला चन्द्रमाके समान कान्ति वाला और स्वच्छ होताहै वह श्रेष्ठहै जोरूपा कठिन कृत्रिम रूखा रक्तवर्ण पीतदल युक्त दलका और तपानेसे काटनेसे तथा चोट लगानेसे विकार युक्तहोवे वह निकृष्टहै रूपा शीतल कषैला खट्टा मधुर पाकमें मधुर दस्तावर अवस्थाका स्थितरखने वाला स्निग्ध लेखन और वातपित्त तथा प्रमेह आदि रोगोंका शीघ्र नाशक होताहै विनाशोधा हुआ रूपा तापकारक वीर्य्य बल वीर्य नाशक धातु तथा शरीरकी पुष्टि का नाशक और बड़े रोगोंका उत्पन्न करने वालाहोता है ॥ ३ ॥

अथताम्रस्यउत्पत्तिर्नामलक्षणगुणाश्च ॥

शुक्रंयत्कार्तिकेयस्यपतितंधरणीतले । तस्मात्ताम्रंसमुत्पन्नमिदमाहुःपुराविदः ॥ ताम्रमौदुम्बरंशुल्वमुदुम्बरमपिस्मृतम् । रविप्रियंम्लेच्छमुखंसूर्य्यपर्यायनामकम्॥ जपाकुसुमसङ्काशंस्निग्धंमृदुघनक्षमम् । लोहनागोज्झितंताम्रंमारणायप्रशस्यते ॥ कृष्णंरूक्षमतिस्तब्धंश्वेतञ्चापिघनासहम् । लोहनागयुतञ्चेतिशुल्वंदुष्टंप्रकीर्तितम् ॥ ताम्रंकपायंमधुरञ्चतिक्तमम्लञ्चपाकेकटुसारकञ्च । पित्तापहंश्लेष्महरञ्चशीतंतद्रोपणंस्याल्लघुलेखनञ्च ॥ पाण्डूदरार्शोज्वरकुष्ठकासश्वासक्षयात्पीनसमम्लपित्तम् । शोथंकृमिंशूलमपाकरोतिप्राहुःपरेबृंहणमल्पमेतत् ॥ एकोदोषोविषेताम्रेत्वसम्यग्मारितेऽष्टते । दाहःस्वेदोरुचिर्मूर्च्छाछेदोरेकोवमिर्भ्रमः (रेकःविरेकः) ॥ ४ ॥

तांबेकी उत्पत्तिनाम लक्षण और गुण ॥

प्राचीन पंडित लोग कहते हैं कि जो स्वामिकार्तिकजी का वीर्य्य पृथ्वी पर गिरा उससे तांबा उत्पन्न हुआ ताम्र औदुम्बर शुल्व उदुम्बर रविप्रिय म्लेच्छमुख और सूर्य्यके संपूर्णनाम यहतांबे के नामहैं जोतांबा गुड़हलके फूलके समान वर्णयुक्त चिकना कोमल चोटसहने वाला और लोह तथा सीसेके मेलसे रहित होताहै वह श्रेष्ठहै जोतांबा कृष्ण अथवा श्वेत वर्णरूखा बहुत कठिन लोह तथा सीसेके मेलवाला और चोट लगनेसे फटने वाला होताहै वह निकृष्ट होताहै तांबा कषाय मधुर तिक्त अम्ल पाकमेंकटु दस्तावर पित्त तथा कफ नाशक शीतल घावका पूरने वाला हलका लेखन कुष्ठधातु वर्द्धक और पांडु उदर बवासीर ज्वर कुष्ट खांसी श्वास क्षय पीनस अम्लपित्त सूजन कृमितथा शूल नाशक होताहै विषमें एक दोष होताहै और अच्छे प्रकार से विना मारेहुए तांबेमें दाह स्वेद अरुचि मूर्च्छा क्लेद दस्तछर्दि और भ्रमयह आठ दोष होतेहैं ॥ ४ ॥

अथ रंगस्यनामलक्षणगुणाः ॥

रक्तंवंगंत्रपुप्रोक्तंतथापिच्चटमित्यपि। खुरकंमिश्रकञ्चापिद्विविधंवंगमुच्यते ॥ उत्तमं खुरकंतत्रमिश्रकंत्ववरंमनम्।रंगंलघुसरंरूक्षमुष्णंमेहकफक्रमीन् ॥ निहन्तिपाण्डुंसश्वासंचक्षुष्यंपित्तलंमनाक्। सिंहोयथाहस्तिगणंनिहन्तितथैववंगोऽखिलमेहवर्गम् ॥ देहस्यसौख्यंप्रबलेन्द्रियत्वंनरस्यपुष्टिंविदधातिनूनम् ॥ ५ ॥

वंगके नामगुण ॥

लालरांगेको वंग त्रपु और पिच्चट कहतेहैं रांगा दोप्रकार काहै एक क्षुरक दूसरा मिश्रक मिश्रककी अपेक्षा क्षुरक उत्तम होताहै वंग हलकी दस्तावर रूखीउष्ण नेत्रोंकोहित कुछ पित्त वर्द्धक और प्रमेह कफ कृमि पांडु तथा श्वास नाशक होती है जिस प्रकार सिंह हाथियोंको मारताहै उसी प्रकार वंग संपूर्ण प्रमेहोंको नाशकरती है और यह शरीरको सुखदायक इन्द्रियों को प्रबल करने वाली तथा मनुष्योंको पुष्टतादेने वाली होतीहै ॥ ५ ॥

अथ यसद ॥

यसदंरंगसदृशंरीतिहेतुश्चतन्मतम्। यसदंतुवरंतिक्तंशीतलंकफपित्तहृत् ॥ चक्षुष्यंपरमंमेहात्पाण्डुंश्वासञ्चनाशयेत् ॥ ६ ॥

जस्तेके नामगुण ॥

जस्ता वंगके समान होताहै और पीतलका कारणहै जस्ताकषैला तिक्त शीतल नेत्रोंकोहित और कफ पित्त प्रमेह पांडु तथा श्वास नाशक होताहै ॥ ६ ॥

अथसीसस्योत्पत्तिर्नामगुणाश्च ॥

दृष्ट्वाभोगिसुतांरम्यांवासुकिस्तुममोचयत्। वीर्य्यंजातस्ततोनागःसर्वरोगापहोनृणाम् ॥ सीसंवप्रञ्चवप्रञ्चयोगेष्टंनागनामकम्। नागःभुजङ्गःइत्यादि ॥ सीसंवंगगुणंज्ञेयंविशेषान्मेहनाशनम्। नागस्तुनागशततुल्यबलंददातिव्याधिंविनाशयतिजीवनमातनोति ॥ वह्निंप्रदीपयतिकामबलंकरोतिमृत्युञ्चनाशयतिसन्ततसेवितःसः। पाकेनहीनौकिलवङ्गनागौकुष्ठानिगुल्मांश्चतथातिकष्टान् ॥ कण्डूंप्रमेहानलसादशोथभगन्दरादीन्कुरुतःप्रभुक्तौ ॥ ७ ॥

सीसेकी उत्पत्तिनामऔरगुण ॥

सुन्दर नागकन्याकोदेखकर वासुकिका वीर्यगिरा उससे सीसा उत्पन्नहुआ यह सीसा मनुष्योंके सम्पूर्ण रोगोंकानाशकहोताहै शीश वप्र वप्र योगेष्ट और सर्पोंके नाम भुजंग इत्यादिनाम यह सीसेके नाम हैं सीसा वंगके समान गुणवालाहोताहै और विशेषकरके प्रमेहोंकानाशकहै यह सीसा सदैव सेवनकरनेसे सौ हाथियों के समान बलदायक रोगनाशक जीवनदायक अग्निदीपक और काम तथा बलकावर्द्धकहोताहै इससे मृत्युकाभीनाशकहोताहै अच्छी रीतिसे नहीं फुकेहुये सीसा और रांगा कुष्ठ गुल्म अत्यन्त कुष्ठ खुजली प्रमेह मंदाग्नि जकड़ना सूजन और भगन्दरकोकरते हैं ॥ ७ ॥

कान्तलोह के लक्षण और गुण ॥

जो जिस लोहेके पात्रमें जलको तपाकर तेल डालनेसे फैलेनहीं हींग भूननेसेहींगकी सुगन्धिजाती रहे नींब के बक्कल का कड़वाहट नहो और दूध गरम करने से शिखरके समान ऊंचाहो और गिरे नहीं उसको कान्तीसार लोहा कहते हैं कान्तीसार लोहा गुल्म उदर बवासीर शूल आम आमवात भगंदरकामला सूजन कुष्ठक्षय प्लीहाअम्लपित्त यकृत् शिरके रोग और सम्पूर्ण रोगों को निस्सन्देह दूर करता है यह बलवीर्य शरीरकी पुष्टता और अग्निकी वृद्धि करताहै ॥ १० ॥

अथकीटी ॥

ध्यायमानस्यलोहस्यमलंमण्डूरमुच्यते । लोहसिंहानिकाकिट्टीसिंहानञ्चनिगद्यते ॥ यल्लोहंयद्गुणंप्रोक्तंतत्किट्टमपितद्गुणाम् ॥ ११ ॥

कीटीके नाम गुण ॥

तपाये हुये लोहे के मलको मंडूर लोह सिंहानिका किट्ट और सिंहान कहतेहैं जिस लोहे में जो गुण होते हैं वही उसकी कीटी में भी होतेहैं ॥ ११ ॥

अथोपधातवः ॥

तत्रोपधातूनांलक्षणंगुणाश्च । सप्तोपधातवःस्वर्णमाक्षिकंतारमाक्षिकम् । तुत्थंकांस्य रीतिश्चसिन्दूरश्चाशिलाजतु ॥ (उपधातवःगौणाधातवः) उपधातुषुसर्वेषुतत्तद्धातु गुणाअपि । सन्तिकिंतेपुतेऽत्रोनात्तदंशाल्पभावतः ॥ १२ ॥

उपधातुओं के लक्षण और गुण ॥

सोनामक्खी रूपामक्खी तूतिया कांसा पीतल सिंदूर और शिलाजीत यह सात उपधातुहैं संपूर्ण उपधातुओं में अपनी २ धातुके गुण होतेहैं परन्तु कुछ कम होतेहैं क्योंकि इनमें धातुओंका अंशथोड़ा होताहै ॥ १२ ॥

तत्र सुवर्ण माक्षिकस्य नामानिगुणाश्च ॥

स्वर्णमाक्षिकमाख्यातंतापीजंमधुमाक्षिकम् । ताप्यंमाक्षिकधातुश्चमधुधातुश्चसस्मृतः ॥ किंचित्सुवर्णसाहित्यात्स्वर्णमाक्षिकमीरितम् । उपधातुःसुवर्णस्यकिञ्चित्स्वर्णगुणान्वितम् ॥ तथाचकाञ्चनाभावेदीयतेस्वर्णमाक्षिकम् । किन्तुतस्यानुकंपत्वात्किञ्चिदूनगुणास्ततः ॥ नकेवलंस्वर्णगुणाःवसन्तेस्वर्णमाक्षिके । द्रव्यान्तरस्यसंसर्गात्सन्त्यन्येऽपिगुणायतः ॥ सुवर्णमाक्षिकंस्वादुतिक्तंवृष्यंरसायनम् । चक्षुष्यंवस्तिरुकुष्ठपाण्डुमेहविषोदरान् ॥ अर्शःशोथंविषह्नण्डुंत्रिदोषमपिनाशयेत् ॥ मन्दानलत्वंबलहानिमुग्रांविष्टम्भितांनेत्रगदान्सकुष्ठान् । तथैवमालांव्रणपूर्विकाञ्चकरोतितापीजमशुद्धमेतत् ॥ १३॥

सोनामक्खी के नाम और गुण ॥

स्वर्णमाक्षिक तापीज मधुमाक्षिक ताप्य माक्षिक धातु और मधुधातु यह सोना मक्खी के नामहैं कुछ सुवर्ण के योग होने से स्वर्णमाक्षिक कहलातीहै इसमें सुवर्ण के कुछ गुणहैं यह सुवर्ण के अभाव में व्यवहार कीजाती है सोनामक्खी सोनेकी उपधातुहोने से उसकी अपेक्षा कुछ न्यूनगुण वालीहै सोना मक्खी में केवल सुवर्णही के गुण नहीं हैं किन्तु अन्य द्रव्यों के संयोगसे और२ भी गुण होतेहैं

सोनामक्खी मधुर तिक्त धातुवर्द्धक रसायन नेत्रोंको हित और मूत्राशय के रोग कुष्ठ पांडु प्रमेह विष उदर ववासीर सूजन क्षय खुजली तथा त्रिदोष नाशक होतीहै विना शोधीहुई सोनामक्खी मंदाग्नि अत्यन्त वल नाश विष्टंभ नेत्ररोग कुष्ठ गंडमाला तथा घावको करतीहै ॥ १३ ॥

अथ तारमाक्षिकस्य नाम गुणाः ॥

तारमाक्षिकमन्यत्तुतद्भवेद्रजतोपमम् । किञ्चिद्रजतसाहित्यात्तारमाक्षिकमीरितम् ॥ अनुकल्पतथातस्यततोहीनगुणाःस्मृताः । नकेवलंरूप्यगुणाःयतःस्यात्तारमाक्षिकम् ॥ स्वादुपाकेरसेकिञ्चित्तिक्तंवृष्यंरसायनम् । चक्षुष्यंवस्तिरुक्कुष्ठपाण्डुमेहविषोदरम्॥ अर्शःशोथंक्षयङ्कण्डूंत्रिदोषमपिनाशयेत् । मन्दानलत्वंवलहानिमुग्रांविष्टम्भितान्नेत्रग दान्सकुष्ठान् । तथैवमालांव्रणपूर्व्विकाञ्चकरोतितापीजमिदञ्चतद्वत् ॥ १४॥

रूपामक्खी के नाम गुण ॥

रूपामाखी चांदीके समान होतीहै कुछ चांदीके संयोग से तारमाक्षिक कहलाती है यह चांदीकी अपेक्षा अप्रधान होने से चांदीकी अपेक्षा कम गुणवाली है रूपामाखी में केवल चांदीकेही गुण नहीं होते किन्तु अन्य द्रव्योंके संयोगसे अन्य २ भी गुण होतेहैं रूपामाखी रसतथा पाकमें मधुर कुछतिक्त वीर्यवर्द्धक रसायन नेत्रोंकोहित और मूत्राशय की पीड़ा कुष्ठ खुजली प्रमेह विष उदर ववासीर सूजन क्षय पांडु तथा त्रिदोष नाशक होतीहै जैसे विना शोधी सोनामाखी मंदाग्नि अत्यन्त वल नाश विष्टंभ नेत्ररोग कुष्ठगण्डमाला और घावकोभरतीहै इसीप्रकार अशुद्धरूपामाखी भी जाननीचाहिये १४ ॥

अथ तूतिया ॥

तुत्थंवितुन्नकञ्चापिशिखिग्रीवंमयूरकम् । तुत्थन्ताम्रोपधातुर्हिकिञ्चित्ताम्रेणतद्भवे त् ॥ किञ्चित्ताम्रगुणन्तस्माद्वक्ष्यमाणगुणञ्चतत् । तुत्थकंकटुकंक्षारंकषायंवामकंलघु ॥ लेखनम्भेदनंशीतंचक्षुष्यंकफपित्तहृत् । विषाश्मकुष्ठकण्डूघ्नंखर्परञ्चापितद्गुणम् १५ ॥

तूतियाके नाम गुण ॥

तुत्थ वितुन्नक शिखिग्रीव और मयूरक यह तूतियाके नामहैं तूतिया तामेकी उपधातुहै उसमें कुछ तांबेका संयोगहै इसकारण से इसमें कुछ तांबेके गुणहैं और आगे लिखे हुए गुणभी हैं तूतिया कटु क्षार कषेला छर्दि करानेवाला हलका लेखन भेदक शीतल नेत्रोंकोहित और कफ पित्त विष पथरी कुष्ठतथा खुजली नाशक होताहै खपरिया में भी इसीके समान गुण होतेहैं ॥ १५ ॥

अथ कांसा ॥

ताम्रत्रपुजमाख्यातङ्कांस्यंघोषश्चकंसकम् । उपधातुर्भवेत्कांस्यंद्वयोस्तरणिरङ्गयोः ॥ कांसस्यतुगुणाज्ञेयाःस्वयोनिसदृशाजनैः । संयोगजप्रभावेणतस्यान्येऽपिगुणाःस्मृताः ॥ कांस्यङ्कषायन्तिक्तोष्णंलेखनंविशदंसरम् । गुरुनेत्रहितंरूक्षंकफपित्तहरम्परम् ॥१६ ॥

कांसे के नाम गुण ॥

तांबे और रांगेसे कांसा वनताहै कांस्य घोष और कंसक यह कांसे के नामहैं यह तांबे और रांगेकी उपधातुहै कांसेमें अपने कारण के समान गुण होते हैं और संयोगके प्रभाव से अन्य२भी गुणहैं कांसा

कषाय तिक्त उष्ण लेखक विशद दस्तावर भारी नेत्रों को हित और कफ तथा पित्त के नाश करनेमें श्रेष्ठ होताहै ॥ १६ ॥ तथा पीतरिकांचीपीतरि ॥

पित्तलंत्वारकूटंस्यादारोरीतिश्चकथ्यते । राजरीतिर्ब्रह्मरीतिःकपिलापिङ्गलापिच ॥ रीतिरप्युपधातुःस्यात्ताम्रस्ययसदस्यच । पित्तलस्यगुणाज्ञेयाःस्वयोनिसदृशाजनैः ॥ संयोगजप्रभावेणतस्याप्यन्येगुणाःस्मृताः । रीतिकायुगलंरूक्षंतिक्तञ्चलवणंरसे ॥ शोधनंपाण्डुरोगघ्नंकृमिघ्नंनातिलेखनम् ॥ १७ ॥

पीतल और कच्ची पीतल के नाम गुण ॥

पित्तल आरकूट आररीति यह पित्तल के नामहैं कपिला राजरीति पिंगला और ब्रह्मरीति यह कच्चे पीतल के नामहैं पीतल तांबे और जस्तेकी उपधातुहै पीतल में अपने कारण के समान गुण होते हैं और संयोग के प्रभाव से अन्य गुणभी होतेहैं दोनों पीतल रूखी तिक्त लवण शोधन कारक पाण्डु तथा कृमि नाशक और बहुत लेखन नहीं होतीहै ॥ १७ ॥

अथ सिन्दूर ॥

सिन्दूरंरक्तरेणुश्चनागगर्भश्चसीसजम् । सीसोपधातुःसिन्दूरगुणैस्तत्सीसवन्मतम् ॥ संयोगजप्रभावेणतस्याप्यन्येगुणाःस्मृताः ॥ सिन्दूरमुष्णंवीसर्पकुष्ठकण्डूविषापहम् । भग्नसन्धानजननंव्रणशोधनरोपणम् ॥ १८ ॥

सिंदूर के नाम और गुण ॥

सिंदूर रक्तरेणु नाग गर्भ और सीसज यह सिंदूर के नामहैं सिंदूर सीसेकी उपधातुहै इसीसे इसमें सीसेके समान गुण होतेहैं और संयोग के प्रभाव से अन्य गुणभी होते हैं सिंदूर उष्ण टूटेको जोड़ने वाला घावका शोधक तथा भरनेवाला और वीसर्प कुष्ठ तथा खुजली नाशक होताहै ॥ १८ ॥

अथ शिलाजतु ॥

(तदुत्पत्तिर्नामलक्षणगुणाश्च) निदाघघर्म्मसन्तप्ताधातुसारन्धराधराः । निर्य्यासवत्प्रमुञ्चन्तितच्छिलाजतुकीर्त्तितम् ॥ सौवर्णंराजतन्ताम्रमायसन्तच्चतुर्विधम् । शिलाजत्वद्रिजतुचशैलनिर्य्यासइत्यपि ॥ गैरेयमश्मजञ्चापिगिरिजंशैलधातुजम् । शिलाजंकटुतिक्तोष्णंकटुपाकंरसायनम् ॥ छेदियोगवहंहन्तिकफमेदाश्मशर्कराः । मूत्रकृच्छ्रंक्षयंश्वासंवाताशींसिचपाण्डुताम् ॥ अपस्मारन्तथोन्मादंशोथकुष्ठोदरकृमीन् । सौवर्णन्तुजवापुष्पवर्णंभवतितद्रसात् । मधुरंकटुतिक्तञ्चशीतलंकटुपाकिच ॥ राजतम्पाण्डुरंशीतंकटुकंस्वादुपाकिच । ताम्रंमयूरकण्ठाभंतीक्ष्णमुष्णञ्चजायते ॥ लौहंजटायुपक्षाभंतत्तिक्तंलवणम्भवेत् । विपाकेकटुकंशीतंसर्वश्रेष्ठमुदाहृतम् ॥ १९ ॥

शिलाजीत के नाम उत्पत्ति लक्षण और गुण ॥

ग्रीष्म ऋतुमें धूपसे तप्त पर्वतों से जोधातुओं कासार गोंदके समान निकलताहै उसको शिलाजीत कहतेहैं सोनेका चांदीका तांबेका और लोहेका इसरीति से चार प्रकारका शिलाजीत होताहै अद्रिजतु शिलाजतु शैल निर्यास गैरेय अश्मज गिरिज और शैलधातुज यह शिलाजीत के नामहैं शिलाजीत

कटु तिक्त उष्ण पाकमें कटु रसायन छेदन योगवाही और कफ मेद पथरी शर्करा मूत्रकृच्छ्र क्षय श्वास वात बवासीर पांडु मृगी उन्माद सूजन कुष्ठ उदर तथा कृमिनाशक होताहै सोनेका शिलाजीत गुड़हर के पुष्प समान वर्णवाला मधुर कटु तिक्त शीतल और पाकमें कटु होताहै चांदीका शिलाजीत श्वेतवर्ण शीतल कटु और पाकमें मधुर होताहै तांबेका शिलाजीत मोरके कंठ समान वर्णवाला तीक्ष्ण और उष्ण होताहै लोहेका शिलाजीत जटायु के पक्षके समान वर्णवाला तिक्त लवण पाकमें कटु और शीतल होताहै और यही शिलाजीत गुणमें सबसे अधिक होताहै ॥१९॥

अथ रसः तत्ररसस्यनिरुक्तिः ॥

रसायनार्थिभिर्लोकैःपारदोरस्यतेयतः। ततोरसइतिप्रोक्तःसचधातुरपिस्मृतः २० ॥

पारेका वर्णन पारेकी निरुक्ति ॥

रसायन की इच्छा करनेवाले लोग पारेको रसन अर्थात् भक्षण करतेहैं इसीसे इसको रस कहते हैं और पारेको धातुभी कहते हैं ॥ २० ॥

अथ पारदस्योत्पत्तिर्लक्षणनामगुणाः ॥

शिवाङ्गात्प्रच्युतंरेतःपतितन्धरणीतले । तद्देहसारजातत्वाच्छुक्लमच्छमभूच्चतत् ॥ क्षेत्रभेदेनविज्ञेयंशिववीर्य्यंचतुर्विधम् । श्वेतंरक्तन्तथापीतंकृष्णन्तत्तुभवेत्क्रमात् ॥ ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्य-शूद्रश्चखलुजातितः। श्वेतंशस्तंरुजांनाशेरक्तङ्किलरसायनम्॥ धातुवेधेतुतत्पीतंखेगतौकृष्णमेवच । पारदोरसधातुश्चरसेन्द्रश्चमहारसः ॥ चपलःशिववीर्य्यश्चरसःसूत-शिवाह्वयः। पारदःषड्रसःस्निग्धस्त्रिदोषघ्नोरसायनः ॥ योगवाहीमहावृष्यःसदादृष्टिबलप्रदः। सर्वामयहरःप्रोक्तोविशेषात्सर्वकुष्ठनुत् ॥ स्वस्थोरसोभवेद्ब्रह्मा बद्धोज्ञेयोजनार्दनः। रञ्जितःक्रामितश्चापिसाक्षाद्देवोमहेश्वरः॥ मूर्च्छितोहरतिरुजंबन्धनमनुभूयखेगतिंकुरुते। अजरीकरोतिहिमृतःकोऽन्यकरुणाकर-सूतात् ॥ असाध्योयोभवेद्रोगोयस्यनास्तिचिकित्सितम्। रसेन्द्रोहन्तितंरोगंनरकुञ्जरवाजिनाम् ॥ मलंविषंवह्निगिरित्वचापलन्नैसर्गिकन्दोषमुशन्तिपारदे । उपाधिजौद्वौत्रपुनागयोगजौदोषौरसेन्द्रेकथितोमुनीश्वरैः ॥ मलेनमूर्च्छामरणंविषेणदाहोऽग्निनाकष्टतरःशरीरे । देहस्यजाड्यङ्गिरिणासदास्यात्चाञ्चल्यतोवीर्य्यहतिश्चपुंसाम् ॥ वङ्गेनकुष्ठम्भुजगेनषण्ढोभवेद्ततोऽसौपरिशोधनीयः। वह्निर्विषमलञ्चेतिमुख्यादोषास्त्रयोरसे ॥ एतेकुर्वन्तिसन्तापंमृतिंमूर्च्छांनृणांक्रमात्। अन्येऽपिकथितादोषाभिषग्भिःपारदेयदि ॥ तथाप्येतेत्रयोदोषाहरणीयाविशेषतः। संस्कारहीनंखलुसूतराजंयःसेवतेतस्यकरोतिबाधाम् ॥ देहस्यनाशंविदधातिनूनंकष्टांश्चरोगाञ्जनयेन्नराणाम्॥ २१ ॥

पारेकी उत्पत्तिनाम लक्षण और गुण ॥

पृथ्वीपर गिरेहुए शिवजी के वीर्यसे पारा उत्पन्न हुआहै शिवजीके शरीरके सारांशसे उत्पन्नहोने के कारण वह श्वेत और स्वच्छ हुआ और क्षेत्र के भेदसे श्वेत रक्त पीत तथा कृष्ण इनभेदों से चार प्रकारका होता है ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और शूद्रयह क्रमसे चारोंकी जातिहैं श्वेत पारा रोगोंके

नाशकरने में रक्तवर्ण पारा रसायन में पीतवर्ण पारा धातुओं के भेदनमें और कृष्ण वर्ण पारा आकाश के गमन करने में श्रेष्ठ है पारद रसधातु रसेन्द्र महारस चपल शिववीर्य रस सूत और शिव जीके नाम यह पारेके नाम हैं पारा छः रसोंसे युक्त स्निग्ध त्रिदोष नाशक रसायन योगवाही अत्यन्तवीर्य वर्द्धक सदैव दृष्टि को बल देनेवाला सर्वरोगनाशक और विशेष करके सर्वकुष्ठनाशक होता है स्वस्थपारा ब्रह्माके समान बंधाहुआ पारा जनार्दन के समान और रंजित तथा कामित पारा साक्षात् शिवजी के समान होताहै मूर्छित पारा रोगनाशक बंधाहुआपारा आकाशकी गति देनेवाला और मराहुआ पारा वृद्धावस्था नाशक होता है पारेसे अधिक हित करनेवाला कोई नहीं है जो रोग असाध्य होते हैं जिनकी चिकित्सा नहीं है मनुष्य हाथी तथा घोड़े के वह रोग पारेकेद्वारा नष्टहोते हैं पारेमें स्वभावहीसे मल विष वह्नि गिरि और चंचलता यह दोष होते हैं और दो दोष रांगे और सीसे के योगसे उपाधिज होनेवाले होते हैं मलसे मूर्च्छा विषसे मरण अग्नि से शरीर में अत्यन्त दाह गिरिसे शरीर की जड़ता चंचलता से वीर्यका नाश वंगसे कुष्ठ और सीसे से नपुंसकता होती है इस्से पारे को शुद्ध करना चाहिये अग्नि विष और मल यह तीन मुख्य दोष हैं इनके द्वारा क्रमसे सन्ताप मृत्यु और मूर्च्छा होती है यद्यपि पारे में और अनेक दोषभी वैद्योंने कहे हैं तथापि इनतीनों दोषोंके दूर करने में विशेष यत्न करना चाहिये जो मनुष्य विना शोधेहुए पारेका सेवन करता है उसको अत्यन्त बाधा उत्पन्न होती हैं अर्थात् देहका नाश होता है अथवा निस्सन्देह बड़े कठिन रोग उत्पन्न होते हैं ॥ २१ ॥

अथोपरसानांलक्षणम् ॥

गन्धोहिंगुलमभ्रतालकशिलाःस्रोतोऽञ्जनटङ्कणंराजावर्त्तकचुम्बकोस्फटिकयाशङ्खः खटीगैरिकम्। कासीसंरसकङ्कपर्दसिकताबोलाश्चकंकुष्ठकम्सौराष्ट्रीचमताअमीउपरसाः सूतस्यकिञ्चिद्गुणैः ॥ (उपरसागौणारसाः)॥ २२॥

उपरसों के लक्षण ॥

गंधक सिंदरफ अभ्रक हरताल मैनशिल सुरमा सुहागा रेह चुम्बक फिटकरी शंख खड़िया गेरू हीराकसीस खपरिया कौड़ी बालू बोल मुरदासिंग और सोरठी मट्टी यह सब उपरस कहलाते हैं इनमें पारे के कुछ २ गुण होते हैं ॥ २२ ॥

हिंगुलस्यनामानिलक्षणंगुणाश्च ॥

हिंगुलन्दरदंम्लेच्छमिंगुलम्पूर्णपारदम्।दरदस्त्रिविधःप्रोक्तश्चम्मारःशुकतुण्डकः॥ हंसपादस्तृतीयःस्याद्गुणवानुत्तरोत्तरम् । चर्म्मारःशुक्लवर्णःस्यात्सपीतःशुकतुण्डक ॥ जवाकुसुमसङ्काशोहंसपादोमहोत्तमः । तिक्तंकषायंकटुहिंगुलंस्यान्नेत्रामयघ्नङ्कफपित्तहारि । हृल्लासकुष्ठज्वरकामलांश्चप्लीहामवातौचगरांश्चहन्ति ॥ ऊर्ध्वपातनयुक्त्यातुदमलयन्त्रपाचितम्। हिंगुलन्तस्यसूतन्तुशुद्धमेवंनशोधयेत् ॥ २३ ॥

सिंदरफ के नाम लक्षण गुण॥

दरद म्लेच्छ चित्रांग और पूर्णपारद और हिंगुल यह सिंदरफके नाम हैं चर्मार शुक तुंडक और हंसपाद यह तीन प्रकार के सिंदरफ होते हैं यह क्रमसे उत्तरोत्तर गुणमें अधिक होते हैं चर्मार

सिंदरफ श्वेतवर्ण शुकतुंडक पीतवर्ण और हंसपाद गुड़हर के पुष्प के समान रक्तवर्ण होता है और यही सबसे उत्तम होता है सिंदरफ तिक्त कषाय कटु और नेत्ररोग कफ पित्त मतली कुष्ठ ज्वर कामला प्लीहा आमवात तथा गरदोष. नाशक होता है ऊपर उड़ाने की युक्ति से डमरू यंत्र में पकाए हुए सिंदरफ से निकला हुआ पारा शुद्ध होता है उसको फिर शुद्ध न करे ॥ २३ ॥

अथ गन्धकस्योत्पत्तिर्नामलक्षणगुणाश्च ॥

श्वेतद्वीपेपुरादेव्याः क्रीडन्त्यारजसाप्लुतम् । दुकूलन्तेनवस्त्रेणस्नातायाःक्षीरनीरधौ प्रसृतंयद्रजस्तस्मात्गन्धकःसमभूत्ततः । गन्धकोगन्धिकश्चापिगन्धपाषाणइत्यपि ॥ सौगन्धिकश्चकथितोबलिर्बलरसापिच । चतुर्द्धागन्धकःप्रोक्तोरक्तःपितःसितोऽसितः ॥ रक्तहेमक्रियासूक्तःपीतश्चैवरसायने।व्रणादिलेपनेश्वेतःकृष्णःश्रेष्ठःसुदुर्लभः॥ (श्रेष्ठःहेम क्रियादिषुसर्वत्रप्रशस्ततरः)गन्धकःकटुकस्तिक्तोवीर्य्योष्णस्तुवरःसरः। पित्तलःकटुकःपा केकण्डूवीसर्पजन्तुजित् । हन्तिकुष्ठक्षयप्लीहकफवातान्रसायनः । अशोधितोगन्धकएष कुष्ठंकरोतितापंविषमंशरीरे।शोपञ्चरूपञ्चबलंतथोजःशुक्रंनिहन्त्येवकरोतिचास्रम् २४

गंधक की उत्पत्ति नाम लक्षण और गुण ॥

पूर्वकाल में श्वेतद्वीप में क्रीड़ा करती हुई श्रीपार्वतीजी का वस्त्र रज से भरगया उसी वस्त्र को पहनकर क्षीर समुद्र में स्नान करने से जो रज फैला उसीसे गंधक उत्पन्न हुई गंधक गंधिक गंधपाषाण सौगन्धिक बलि और बलिरस यह गन्धक के नाम हैं लाल पीली श्वेत और कृष्ण इन भेदोंसे चारप्रकार की गन्धक होती है लाल गन्धक सुवर्ण बनाने में पीली रसायन में श्वेत घाव आदिके लेप करने में और कृष्ण गन्धक सुवर्णादिक बनाने में सबसे श्रेष्ठ है परन्तु यह दुर्लभ है गन्धक कटु तिक्त उष्ण कषैली दस्तावर पित्तवर्द्धक रसायन पाक में कटु और खुजली वीसर्प कृमि कुष्ठ छय प्लीहा कफ तथा वात नाशक होती है बिना शोधी हुई गन्धक कुष्ठ शरीर संताप और सुख रूप बल ओज तथा वीर्य्य की हानि और रुधिर के दोषों को करती है ॥ २४ ॥

अथाभ्रकस्योत्पत्तिर्नामलक्षणगुणाश्च ॥

पुरावधायवृत्रस्यवज्रिणावज्रमुद्धृतम् । विस्फुलिंगास्ततस्तस्यगगनेपरिसर्पिताः ॥ तेनिपेतुर्घनध्वानाच्छिखरेषुमहीभृताम् । तेभ्यएवसमुत्पन्नंतत्तद्गिरिषुचाभ्रकम् ॥ तद्वज्रं वज्रपातत्वादभ्रमभ्ररवोद्भवात् । गगनात्स्खलितंयस्माद्गगनञ्चततोमतम् ॥ विप्रक्ष त्रियविट्शूद्रभेदात्तत्स्याच्चतुर्विधः । क्रमेणैवासितंरक्तंपीतंकृष्णञ्चवर्णतः । प्रशस्यतेसि तन्तारंरक्तंतत्तुरसायने ॥ पीतंहेमनिकृष्णन्तुगदेषुद्रुतयेऽपिच । पिनाकंदर्दुरंनागंवज्रञ्चे तिचतुर्विधम् ॥ मुञ्चत्यग्नौविनिक्षिप्तंपिनाकन्दलसञ्चयम् । अज्ञानाद्भक्षणंतस्यमहाकु ष्ठप्रदायकम् ॥ दर्दुरंत्वग्निनिःक्षिप्तंकुरुतेदर्दुरध्वनिम् । गोलकान्बहुशःकृत्वासस्यान्मृत्यु प्रदायकः ॥ नागन्तुनागवद्वह्नौफुत्कारंपरिमुञ्चति । तद्भक्षितमवश्यन्तुविदधातिभगन्द रम् ॥ वज्रन्तुवज्रवत्तिष्ठेत्तन्नाग्नौविकृतिंव्रजेत् । सर्वाभ्रेषुवरंवज्रंव्याधिवार्द्धक्यमृत्युहृत् ॥ अभ्रमुत्तरशैलोत्थंबहुसत्वंगुणाधिकम् । दक्षिणाद्रिभवंस्वल्पंसत्यमल्पगुणप्रदम् ॥

अभ्रंकषायंमधुरंसुशीतमायुष्करंधातुविवर्द्धनञ्च । हन्यात्त्रिदोषंव्रणमेहकुष्ठप्लीहोदरंग्रन्थिविषकृमींश्च ॥ रोगान्हन्तिदृढयतिवपुर्वीर्यवृद्धिंविधत्तेतारुण्याढ्यंरमयतिशतंयोषितांनित्यमेव । दीर्घायुष्कान्जनयतिसुतान्विक्रमैःसिंहतुल्यान्मृत्योर्भीतिंहरतिसततंसेव्यमानंमृताभ्रम ॥ पीडांविधत्तेविविधांनराणांकुष्ठंक्षयंपाण्डुगदञ्चशोथम् । हृत्पार्श्वपीड़ाञ्चकरोत्यशुद्धमभ्रन्त्वसिद्धंगुरुतापदंस्यात् ॥ २५ ॥

अभ्रककी उत्पत्तिलक्षण नामऔरगुण ॥

पहले वृत्रासुरके मारने के लिये जब इन्द्रने वज्रउठायातब उससे पतंगे उड़कर आकाशमें फैलगये पीछे मेघोंके गर्जनेसे पहाड़ोंके शिखरोंपर गिरेजिन २ पर्वतोंपर वह अग्निकी चिनगारियां गिरीं उन २ में अभ्रकउत्पन्न हुआ यह वज्रसे उत्पन्न होनेके कारण वज्रअभ्र [मेघ] अभ्रके वेगसेउत्पन्न होनेके कारणअभ्र और गगनसे गिरनेकेकारण गगनकहलताहै ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और शूद्र इनभेदों से अभ्रक चारप्रकार का होताहै यह चारों प्रकारका अभ्रक क्रमसे श्वेतरक्त पीत और कृष्ण होताहै श्वेत अभ्रक चांदीकी क्रियामें लालरसायनकी क्रियामें पीला सुवर्णकी क्रियामें और कृष्ण अभ्रक संपूर्ण रोगोंके नाशकरने में श्रेष्ठहै पिनाक दर्दुर नाग और वज्रयह चारप्रकार अभ्रक होताहै पिनाक नाम अभ्रक अग्निमें छोड़नेसे पत्ते २ अलग होजाताहै अज्ञानतासे जो उसको खाय तो महाकुष्ठ उत्पन्नहोताहै दर्दुरनाम अभ्रक अग्निमें छोड़नेसे गोलाकार होकर मेंढकके समान शब्दकरताहै इसके खानेसे मृत्यु होतीहै नागनाम अभ्रक अग्निमें छोड़नेसे सर्पके समान फुंकार शब्द करताहै इसके खानेसे अवश्य भगन्दर नाम रोग होताहै और वज्रनाम अभ्रक अग्निमें छोड़नेसे वज्रके समान स्थित रहताहै विकारको नहीं प्राप्तकरता यह संपूर्ण अभ्रकों में श्रेष्ठहै इस्से रोग वृद्धावस्था और मृत्युका नाशहोताहै उत्तरके पर्व्वतोंमें उत्पन्न हुआ अभ्रक अत्यन्त बलयुक्त और गुणदायक होताहै दक्षिणीय पर्व्वतोंमें पैदाहुआ अभ्रक स्वल्पबल और गुणयुक्तहोताहै अभ्रककषैला मधुर शीतल आयुवर्द्धक धातुवर्द्धक और त्रिदोष घावप्रमेह कुष्ठ छीहा उदरग्रंथि विषतथा कृमिनाशक होताहै नित्यसेवन कियाहुआ माराहुआ अभ्रक रोगनाशक शरीरको दृढकरनेवाला मृत्युकेभयका नाशक और वीर्यवर्द्धक होताहै इसको सेवन करने वाला पुरुष तरुण सौ स्त्रियोंको नित्यरमाताहै और सिंहके समान पराक्रम वालेदीर्घायु पुत्रोंको उत्पन्न करताहै बिनाशोधाहुआ अभ्रक मनुष्योंको अनेक प्रकारकी पीड़ाओंका देनेवाला और कुष्ठ क्षय पांडु सूजन हृदय की पीड़ा पसलीकी पीड़ा और भारीपनका करने वालाहोताहै ॥ २५ ॥

अथ हरितालस्य नामानि लक्षणंगुणाश्च ॥

हरितालंतुतालंस्यादालंतालकमित्यपि। हरितालंद्विधाप्रोक्तंपत्राख्यंपिण्डसंज्ञकम्॥ तयोराद्यंगुणैः श्रेष्ठंततोहीनगुणंपरम् । स्वर्णवर्णंगुरुस्निग्धंसपत्रंचाभ्रपत्रवत् ॥ पत्राख्यंतालकंविद्याद्गुणाढ्यंतद्रसायनम् । निष्पत्रंपिण्डसदृशंस्वल्पसत्वंतथागुरु ॥ स्त्रीपुष्पहारकंस्वल्पगुणंतत्पिण्डतालकम् । हरितालंकटुस्निग्धंकषायोष्णंहरेद्विषम् ॥ कण्डुकुष्ठास्यरोगास्रकफपित्तकचव्रणान् । हरतिचहरितालञ्चारुतांदेहजातांसृजतिचबहुतापानंगसङ्कोचपीडाम् । वितरतिकफवातौकुष्ठरोगंविदध्या दिदमशितमशुद्धंमारितञ्चाप्यसम्यक् ॥ २६ ॥

हरितालके नाम लक्षण और गुण ॥

हरिताल ताल आल और तालक यह हरितालके नाम हैं हरिताल दो प्रकारकी है एक तबकी दूसरी गोवरिया इनमें पहली गुणोंमें श्रेष्ठ है और दूसरीमें कम गुणहैं तबकियाहरिताल सुवर्णकेसमान वर्णवाली भारीस्निग्ध अभ्रककेसमान पत्रयुक्त श्रेष्ठ गुणदायक और रसायनहोती है गोवरियाहरिताल पिंडकेसमान पत्ररहित स्वल्प बलवाली थोडेगुणोसेयुक्त हलकी और स्त्रीकेरजकी नाशक होतीहै हरिताल कटु कषाय स्निग्ध उष्ण और विष खजुली कुष्ठ मुखरोग रक्तदोष कफ पित्त तथा कचव्रण (बालोंकाघाव) नाशकहोती है विनाशोधी और अच्छी न मारीहुई हरितालके सेवनकरनेसे देहकी सुन्दरताकानाश और अनेक प्रकारके सन्ताप आक्षेप कफ वात तथा कुष्ठरोग होताहै ॥ २६ ॥

अथ मनःशिलानामानिगुणाश्च ॥

मनःशिलामनोगुप्तामनोह्वानागजिह्विका । नैपालीकुनटीगोलाशिलादिव्यौषधिःस्मृता ॥ मनःशिलागुरुर्वर्ण्यासरोष्णालेखनीकटुः । तिक्तास्निग्धाविषश्वासकासभूतकफास्रनुत् ॥ मनःशिलामन्दबलंकरोतिजन्तुंध्रुवंशोधनमन्तरेण । मलानुबन्धंकिलमूत्ररोधं सशर्करंकृच्छ्रगदञ्चकुर्य्यात् ॥ २७ ॥

मैनसिल के नाम और गुण ॥

मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्वा नागजिह्विका नैपाली कुनटी गोला शिला और दिव्यौषधि यह मैनसिल के नाम हैं मैनसिल भारी वर्णकोहित दस्तावर उष्ण लेखन कटु तिक्त स्निग्ध और विष श्वास खांसी भूतबाधा कफ तथा रक्तदोषनाशक होती है विनाशोधी मैनसिल के खाने से बलकी हानि मलमूत्रकाअवरोध शर्करा और मूत्रकृच्छ्र इनकी उत्पत्ति होती है ॥ २७ ॥

अथ सुरमासौवीर ॥

अञ्जनंयामुनञ्चापिकापोताञ्जनमित्यपि । तत्तुस्रोतोऽञ्जनंकृष्णंसौवीरंश्वेतमीरितम् ॥ वल्मीकशिखराकारंभिन्नमञ्जनसन्निभम् । घृष्टन्तुगैरिकाकारमेतत्स्रोतोऽञ्जनंस्मृतम् ॥ स्रोतोऽञ्जनसमंज्ञेयंसौवीरन्तत्तुपाण्डुरम् । स्रोतोऽञ्जनंस्मृतंस्वादुचक्षुष्यं कफपित्तनुत् ॥ कषायंलेखनंस्निग्धंग्राहिछर्दिविषापहम् । सिध्मक्षयास्रहृच्छीतंसेवनीयं सदाबुधैः ॥ स्रोतोञ्जनगुणाःसर्वेसौवीरेपिमताबुधैः । किन्तुद्वयोरञ्जनयोःश्रेष्ठंस्रोतोऽञ्जनंस्मृतम् ॥ २८ ॥

सुरमा के नाम गुण ॥

यामुन अंजन और कापोतांजन यह सुरमेके नाम हैं काले सुरमेको स्रोतोंजन और श्वेतको सौवीर कहते हैं कालासुरमा बामीके शिखर के समान आकारवाला तोड़नेसे अंजनकेसमान कांतिवाला और घिसनेसे गेरूके समान होताहै सौवीर नाम सुरमा भी इसीके समान होता है परन्तु वह श्वेत वर्णहोताहै कालासुरमा मधुर नेत्रोंकोहित कफ पित्तनाशक कषैला लेखन स्निग्ध ग्राही और छर्दि विष सिध्म (श्वेतकुष्ठ वा सेंहुआ) क्षय तथा रक्तदोष नाशक होताहै इस कारण पण्डितोंको सदैव इसका सेवन करना चाहिये श्वेत सुरमा भी इसीके समान गुणवालाहोताहै परन्तु दोनों सुरमों में कालासुरमा श्रेष्ठहै ॥ २८ ॥

अथ सोहागा॥

टङ्कणोऽग्निकरोरूक्षःकफघ्नोवातपित्तकृत्। अयमुपरसत्वात्पुनरुक्तः॥ २९॥

सुहागे के गुण॥

सुहागा अग्निवर्द्धक रूखा कफघ्न वादी और पित्तवर्द्धक होताहै यहउपरसके कारण दुबारालिखाहै२९॥

अथ फिटिकरी॥

स्फटीचस्फटिकाप्रोक्ताश्वेताशुभ्राचरंगदा। दृढ़रंगारंगदाचदृढारंगापिकथ्यते॥ स्फाटिकातुकषायोष्णावातपितकफव्रणान्।निहन्तिश्वित्रवीसर्पान्योनिसङ्कोचकारिणी ३०॥

फिटकरी के नाम गुण॥

स्फटी स्फटिका श्वेता शुभ्रा रंगदा दृढरंगा और रंगांगा यह फिटकरी के नामहैं फिटकरी कषाय उष्ण योनिसंकोचक और वात पित्त कफ घावश्वेत कुष्ठ तथा वीसर्पकी नाशकरनेवालीहोती है ३०॥

अथरेवटी॥

राजावर्त्तःकटुस्तिक्तःशिशिरःपित्तनाशनः। राजावर्त्तःप्रमेहघ्नःछर्दिहिक्कानिवारणः ३१॥

रेवटी के गुण॥

रेवटी कटु तिक्त शीतल और पित्त प्रमेह छर्दि तथा हिचकी नाशक होतीहै॥ ३१॥

अथ चुम्बकः॥

चुम्बकःकान्तपाषाणोयःकान्तोलोहकर्षकः। चुम्बकोलेखनःशीतोमेदो विषगरापहः॥ ३२॥

चुम्बक के नाम गुण॥

चुम्बक कान्तपाषाण और लोहकर्षक यहचुम्बक के नामहैं जिस पत्थर से लोहा खिंचजाताहै उसे चुम्बक कहतेहैं चुम्बक लेखन शीतल और मेद विष तथा गरदोष नाशक होताहै॥ ३२॥

गेरूसुवर्णगेरू॥

गौरिकंरक्तधातुश्चगैरेयंगिरिजंतथा। सुवर्णगैरिकन्त्वन्यत्ततोरक्ततरंहितत्॥ गैरिकंद्वितयंस्निग्धंमधुरंतुवरंहिमम्। चक्षुष्यंदाहपित्तास्रकफहिक्काविषापहम्॥ ३३॥

गेरू और सुनहरी गेरू के नाम गुण॥

गैरिक रक्तधातु गैरेय और गिरिज यह गेरूके नामहैं और दूसरा सुनहरी गेरू इससे अधिक लाल होताहै दोनों गेरू स्निग्ध मधुर २ कषैले शीतल नेत्रकोहित और दाह पित्त रक्त दोष कफ हिचकी तथा विषनाशक होतेहैं॥ ३३॥

अथ खरी गोरखरी॥

खटिकाकठिनीचापिलेखनीचनिगद्यते। खटिकादाहजिच्छीतामधुराविषशोथजित्॥ लेपादेतद्गुणाप्रोक्ताभक्षितामृत्तिकासमा। खटीगोरखटीद्वेचगुणैस्तुल्येप्रकीर्त्तिते॥ ३४॥

खड़िया और श्वेत खड़िया के नाम गुण

खटिका कठिनी और लेखनी यहखड़ियाके नामहैं खड़िया मधुर शीतल और दाह विष तथा सूजन की नाशक होती है यहगुण लेपकरने में हैं और खानेमें मृत्तिकाके समान होती है खड़िया और श्वेत खड़िया दोनों में समान गुणहैं॥ ३४॥

अथ वालू॥

वालुकासिकताप्रोक्ताशर्करारेतजापिच। वालुकालेखनीशीताव्रणोरःक्षतनाशिनी३५

वालू के नाम गुण॥

वालुका सिकता शर्करा और रेतजा यह वालू के नामहैं वालू लेखन शीतल और घाव तथा उरक्षत नाशक होतीहै ॥ ३५ ॥

खपरी आतुत्थभेद ॥

खर्परीतुत्थकंतुत्थादन्यत्तद्रसकंस्मृतम्।येगुणास्तुत्थकेप्रोक्तास्तेगुणाःरसकेस्मृताः३६॥

तूतिये का भेदखपरिया के नाम गुण॥

खपरी तुत्थक यह तूतिया का भेदमात्र है इसका दूसरा नाम रसक है तूतिया के जो गुणकहे हैं वही खपरियामें भी हैं ॥ ३६ ॥

काशीस मांगफूल ॥

काशीशंधातुकाशीशंपांशुकाशीशमित्यपि। तदेवकिंचित्पीतंतुपुष्पकाशीशमुच्यते॥
काशीशमम्लमुष्णंचतिक्तञ्चतुवरंतथा । वातश्लेष्महरंकेश्यंनेत्रकण्डूविषप्रणुत्॥
मूत्रकृच्छ्राश्मरीश्वित्रनाशनंपरिकीर्त्तितम् ॥ ३७ ॥

हीराकशीस के नाम गुण॥

काशीस धातु काशीस और पांशु कशीस यह हीरा कशीस के नामहैं कुछ पीले कशीस को पुष्प काशीस कहते हैं हीराकशीस खट्टा उष्ण तिक्त कषैला केशोंकोहित और वात कफ नेत्रोंकी खुजली विष मूत्रकृच्छ्र पथरी तथा श्वेतकुष्ठ नाशक होताहै ॥ ३७ ॥

अथ सौराष्ट्रीमाटी ॥

सौराष्ट्रीतुवरीकांक्षीमृतालकसुराष्ट्रजे ॥ आढ़कीचापिसाख्यातामृत्स्नाचसुरमृत्तिका। स्फटिकायागुणाःसर्वेसौराष्ट्राअपिकीर्त्तिताः ३८ (अथ कृष्णमृत्तिका) कृष्ण मृत्क्षतदाहास्रप्रदरश्लेष्मदाहनुत् ३९ (अथ कर्दमः) कर्दमोदाहपित्तार्त्तिशोथघ्नः शीतलःसरः॥ ४० ॥

सोरठी मिट्टी के नाम गुण॥

सौराष्ट्री तुवरी कांक्षी मृतालक सुराष्ट्रज आढ़की मृत्स्ना और सुरमृत्तिका यह सोरठी मट्टी के नामहैं इसमें सब फिटकरी के गुणहोतेहैं ३८ [काली मट्टीके गुण] काली मट्टी घाव दाह रक्त दोष प्रदर कफ तथा पित्तनाशक होती है ३९ [कर्दम [कीचड] के गुण] कर्दम दाह पित्तरोग तथा सूजन की नाशक शीतल और दस्तावर होती है ॥ ४० ॥

अथ बोल ॥

बोलंगंधरसंप्राणःपिण्डगोपरसाःसमाः । बोलंरक्तहरंशीतंमेध्यन्दीपनपाचनम् ॥
मधुरंकटुतिक्तंचदाहस्वेदत्रिदोषजित्॥ ज्वरापस्मारकुष्ठघ्नंगर्भाशयविशुद्धिकृत्॥४१॥

बोलके नाम गुण॥

बोल गन्धरस प्राण पिंड गोपरस यह बोलके नाम हैं बोल रक्तनाशक शीतल मेधा को हित

दीपन पाचक मधुर कटु तिक्त गर्भाशय शोधक और दाह स्वेद त्रिदोष ज्वर मृगी तथा कुष्ठ नाशक होता है ॥ ४१ ॥ अथकंकुष्ठोत्पत्तिलक्षणनामगुणाः ॥

हिमवत्पादशिखरेकंकुष्ठमुपजायते । तत्रैकरक्तकालंस्यात्तदन्यंहेमप्रभंस्मृतम् ॥ पीतप्रभंगुरुस्निग्धंश्रेष्ठंकंकुष्ठमादिशेत् ॥ श्यामंपीतंलघुत्यक्तंसत्वंनेष्टंतथाण्डकम् ॥ कंकुष्ठकाककुष्ठञ्चवरागंरंगदायकं ॥ कंकुष्ठंरेचनंतिक्तंकटूष्णंवर्णकारकम् । कृमिशोथोदराध्मानगुल्मानाहकफापहम् ॥ ४२ ॥

कंकुष्ठ [मुर्दासिंग] की उत्पत्ति नाम गुण ॥

हिमालय पर्वत के शिखर में कंकुष्ठ उत्पन्न होता है कंकुष्ठ दोप्रकारकाहै एक लाल काला और दूसरा पीतवर्ण होता है पीतवर्ण भारी और स्निग्ध होताहै वह श्रेष्ठ होता है जो कंकुष्ठ श्याम वर्ण और हलका होता है वह बल और गुण से रहित होता है कालकुष्ट कंकुष्ठ विराग और रंगदायकयह कंकुष्ठ के नाम हैं कंकुष्ठ रेचक तिक्त कटु उष्ण वर्ण कारक और कृमि सूजन उदर आध्मान गुल्म आनाह तथा कफ नाशक होता है ॥ ४२ ॥

(अथरत्नस्यनिरुक्ति) धनार्थिनोजनाःसर्वेरमंतेऽस्मिन्अतीवयत् । ततोरत्नमिति प्रोक्तंशब्दशास्त्रविशारदैः ॥ ४३ ॥

रत्नकी निरुक्ति ॥

धनार्थी लोग इसमें अत्यन्त अनुरक्त रहते हैं इसी से शब्द शास्त्र के जानने वाले इसको रत्न कहते हैं ॥ ४३ ॥ अथ रत्नस्यनामानिस्वरूपणंच ॥

रत्नंक्लीवेमणिः पुंसिस्त्रियामपिनिगद्यते । तत्तुपाषाणभेदोऽस्तिमुक्तादिचतदुच्यते ॥ तथा (चामरसिंहः) रत्नंमणिर्द्वयोरश्मजातौमुक्तादिकेऽपिच ॥ ४४ ॥

रत्न के नाम और स्वरूप ॥

रत्न [नपुंसक लिंग] को मणि पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिंग कहते हैं यह पाषाण का भेदहै जैसे मोती आदिक और अमरकोष में कहा है कि रत्न अथवा मणि पत्थरों के भेद तथा मोती आदिक कहाते हैं॥४४॥

अथ रत्नानानिरूपणम् ॥

रत्नंगारुत्मतंपुष्परागोमाणिक्यमेवच । इन्द्रनीलश्चगोमेदस्तथावैडूर्य्यमित्यपि ॥ मौक्तिकंविद्रुमश्चेतिरत्नान्युक्तानिवैनव। रत्नंहीरा ॥ गारुत्मतपन्ना। माणिक्यंपद्मराग । इन्द्रनील लीला। (विष्णुधर्म्मोत्तरेऽपिनवरत्ननिरूपणम्) मुक्ताफलंहीरकंचवैडूर्य्यपद्मरागकम् ॥ पुष्परागंचगोमेदंनीलंगारुत्मतंतथा । प्रवालयुक्तान्येतानिमहारत्नानिवैनव ॥ तत्रहीरकंहीराइतिलोके ॥ ४५ ॥

रत्नोंका वर्णन ॥

हीरा पन्ना पुष्पराग माणिक्य नीलम गोमेद वैडूर्य मोती और मूंगा यह नौरत्न हैं विष्णु धर्मोत्तरमें भी रत्नोंका वर्णन है जैसे की मोती हीरा वैडूर्य माणिक्य पुष्पराग गोमेद नीलम पन्ना और मूंगा यह नौ महारत्न हैं ॥ ४५ ॥

तस्यनामलक्षणंगुणांश्च ॥

हीरकःपुंसिवज्रोऽस्त्रीचन्द्रोमणिवरश्चसः। सतुश्वेतःस्मृतोविप्रोलोहितःक्षत्रियःस्मृतः॥ पीतोवैश्योऽसितःशूद्रश्चतुर्वर्णात्मकश्चसः।रसायनेमतोविप्रःसर्वसिद्धिप्रदायकः॥ क्षत्रियोव्याधिविध्वंसीजरामृत्युहरःस्मृतः। वैश्योधनप्रदःप्रोक्तःतथादेहस्यदार्ढ्यकृत्॥शूद्रोनाशयतिव्याधीन्वयस्तम्भंकरोतिच। पुंस्त्रीनपुंसकानीहलक्षणीयानिलक्षणैः॥ सुवृत्ताःफलसम्पूर्णास्तेजोयुक्ताबृहत्तराः।पुरुषास्तेसमाख्यातारेखाबिन्दुविवर्जिताः॥ रेखाबिन्दुसमायुक्ताःषड्स्रास्तेस्त्रियःस्मृताः। त्रिकोणाश्चसुदीर्घास्तेविज्ञेयाश्चनपुंसकाः॥ तेषुस्युःपुरुषाःश्रेष्ठारसबन्धनकारिणः। स्त्रियःकुर्वन्तिकायस्यकान्तिंस्त्रीणांसुखप्रदाः॥ नपुंसकास्त्ववीर्याःस्युरकामाःसत्ववर्जिताः।स्त्रियस्त्रीभ्यःप्रदातव्याःक्लीबंक्लीबेप्रयोजयेत्॥ सर्वेभ्यःसर्वदादेयाःपुरुषाःवीर्य्यवर्द्धनाः। अशुद्धंकुरुतेवज्रंकुष्ठंपार्श्वव्यथान्तथा। पाण्डुताम्पंगुरुत्वञ्चतस्मात्संशोध्यमारयेत्॥ ४६॥

हीराके नाम लक्षण और गुण॥

हीरक (पंल्लिंग) वज्र पुंलिंग और नपुंसकलिंग चन्द्र और मणिवर यह हीरेके नाम हैं श्वेतहीरा ब्राह्मण लाल हीरा क्षत्री पीला वैश्य और कालाहीरा शूद्र वर्ण होता है इस क्रम से चारप्रकार का हीरा होता है ब्राह्मण वर्णका हीरा रसायन में श्रेष्ठ और सर्व सिद्धिदायक क्षत्री वर्ण हीरा रोग वृद्धावस्था और मृत्युका नाशक वैश्यवर्ण हीरा संपत्तिदायक और शरीरका दृढ़करनेवाला और शूद्रवर्ण हीरा रोगनाशक और अवस्थाका स्थापन करने वाला होता है हीरे में पुरुष स्त्री और नपुंसक इनके भी लक्षण होतेहैं जो हीरा सुन्दर गोल सम्पूर्ण फल दायक तेजयुक्त बहुत बड़ा और रेखा तथा बिन्दु रहित होताहै वह पुरुष कहलाताहै जोहीरा रेखा तथा बिन्दुयुक्त और छःकोने वालाहोताहै उसको स्त्री कहतेहैं जोहीरा त्रिकोण और लम्बा होता है वह नपुंसक होता है उनमें से पुरुष जातिकेहीरे श्रेष्ठ और पारेके बांधने वाले होतेहैं स्त्रीजातिके हीरे शरीरकी शोभा करने वाले और स्त्रियोंको सुखदायक होतेहैं नपुंसक जातिके हीरे वीर्य्य रहित बलवर्जित और बेकाम होतेहैं स्त्रियोंको स्त्री हीरे नपुंसकोंको नपुंसकहीरे और वीर्यबढ़ाने वालेपुरुषहीरे सबको सदैव देनेचाहिये विनाशोधा हुआहीरा कुष्ठ पसलीकीपीड़ा पाण्डु और लूलेपनको करताहै इससे हीरेको शुद्धकरके मारनाचाहिये॥ ४६॥

मारितस्यवज्रस्यगुणाः॥

आयुःपुष्टिबलंवीर्य्यंवर्णसौख्यंकरोतिच। सेवितंसर्वरोगघ्नंमृतंवज्रन्नसंशयः॥४७॥

मारेहुएहीरेके गुण॥

मराहुआ हीरासेवनकरनेसे आयु पुष्टता बलवीर्य वर्ण सुखकोकरता और निस्सन्देह सबरोगोंका नाशकरताहै॥ ४७॥ अथ हरितमणिः (पन्नाइतिलोके) तस्यनामानि॥

गारुत्मतंमरकतमश्मगर्भोहरिन्मणिः ४८ (अथ माणिक्यइतिलोकेतस्यनामानि) माणिक्यंपद्मरागःस्याच्छोणरत्नं च लोहितम् ४९ (अथ पुष्परागनामानि) पुष्परागोमञ्जुमणिःस्याद्वाचस्पतिवल्लभः ५० (अथइंद्रनीलगोमेदयोर्नामानि) नी

उपरत्नोंका वर्णन ॥

काच कर्पूरी पत्थर मोतीकी सीप और शंखादिक बहुतसे उपरत्नहैं रत्नोंमें जो गुण हैं वही उपरत्नों में हैं परन्तु विशेषता यहहै कि रत्नोंकी अपेक्षा कुछ कम गुण हैं ॥ ५६॥

अथ विषस्य नाम लक्षण गुणाः ॥

विषन्तुगरलःक्ष्वेडस्तस्यभेदानुदाहरे । वत्सनाभःसहारिद्रःसक्तुकश्चप्रदीपनः ॥ सौराष्ट्रिकःशृङ्गिकश्चकालकूटस्तथैवच । हालाहलोब्रह्मपुत्रोविषभेदाअमीनव ॥ ५७ ॥

विषके नाम लक्षण और गुण ॥

विष गरल और क्ष्वेड यह विषके नामहैं वत्सनाभ हारिद्र सक्तुक प्रदीपन सौराष्ट्रिक शृंगिक कालकूट हालाहल और ब्रह्मपुत्र यह नौ प्रकारके विषहैं ॥ ५७ ॥

तत्र वत्सनाभस्य स्वरूप निरूपणम् ॥

सिन्दुवारसदृशपत्रोवत्सनाभ्याकृतिस्तथायत्पार्श्वेनतरोर्वृद्धिर्वत्सनाभःसभाषितः५८॥

वत्सनाभ विषके स्वरूप का वर्णन ॥

जिसके पत्ते निर्गुण्डीके समानहों और जिसकी आकृति बछड़ेके नाभिकी समान हो जिसके पास अन्य किसी वृक्षकी वृद्धि नहो उसको वत्सनाभ [मीठातेलिया] विष कहते हैं ॥ ५८ ॥

अथ हारिद्रस्य स्वरूप निरूपणम् ॥

हरिद्रातुल्यमूलोयोहारिद्रःसउदाहृतः ५९ (अथ सक्तुकस्य स्वरूपम्) यद्ग्रन्थिः सक्तुकेनेवपूर्णामध्यःससक्तुकः ॥ ६० ॥

हारिद्रकास्वरूप ॥

जिस विष वृक्षकी जड़ हल्दीके समानहो उसको हारिद्र (विष कहतेहैं५९सक्तुक विषका स्वरूप) जिस विषकी गांठ सक्तुके समान चूर्णसे पूर्णहो उसे सक्तुक विषकहतेहैं ॥ ६० ॥

अथ प्रदीपनस्य स्वरूपम् ॥

वर्णतोलोहितोयःस्याद्दीप्तिमान्दहनप्रभः। महादाहकरःपूर्वैःकथितःसप्रदीपनः॥६१॥

प्रदीपन विषका स्वरूप ॥

जो विष रक्तवर्ण दीप्तिमान् अग्निके समान प्रभायुक्त और अत्यन्तदाह करनेवालाहोताहै उसको प्राचीन लोग प्रदीपन कहतेहैं ॥ ६१ ॥

अथ सौराष्ट्रिकस्य स्वरूपम् ॥

सुराष्ट्रविषयेयःस्यात्ससौराष्ट्रिकउच्यत ६२ (अथ शृङ्गिकस्यस्वरूपम्) यस्मिन्गोशृङ्गकेबद्धेदुग्धम्भवतिलोहितम्।सशृंगिकइतिप्रोक्तोद्रव्यतत्त्वविशारदैः ६३

सौराष्ट्रिकका स्वरूप ॥

जो विष सुराष्ट्र देशमें उत्पन्नहोताहै उसे सौराष्ट्रिक विषकहतेहैं ६२ [शृंगिकविषकास्वरूप] जिस विषको गौके सींगमें बांधनेसे दूध लाल होजाताहै उसको द्रव्य तत्त्वज्ञलोग शृंगिक [सिंगिया] कहते हैं ॥ ६३ ॥ अथ कालकूटस्य स्वरूपम् ॥

देवासुररणेदेवैर्हतस्यपृथुमालिनः । दैत्यस्यरुधिराज्जातस्तरुरश्वत्थसन्निभः ॥ नि

यःसःकालकूटोऽस्यमुनिभिःपरिकीर्तितः । सोहिक्षेत्रेशृंगवेरेकोङ्कणेमलयेभवेत् ॥ ६४ ॥

कालकूटकास्वरूप ॥

देवदानवोंके युद्धमें देवताओंसे मारेहुए पृथुमाली नाम दैत्यके रुधिरसे जो पीपलके समान वृक्ष उत्पन्नहुआ उसके गोंदको कालकूट कहतेहैं यह शृंगवेरकोंकण और मलयमें उत्पन्नहोताहै ॥ ६४ ॥

अथ हालाहलस्य स्वरूपम् ॥

गोस्तनाभफलोगुच्छस्तालपत्रच्छदस्तथा । तेजसायस्यदह्यन्तेसमीपस्थाद्रुमादयः ॥ असौहालाहलोज्ञेयःकिष्किन्धायांहिमालये । दक्षिणाब्धितटेदेशेकोङ्कणेऽपिचजायते ॥ ६५ ॥

हालाहलकास्वरूप ॥

जिस विष वृक्षके फल मुनक्काकेसमान गुच्छाकार उत्पन्नहोते हैं जिसकेपत्ते ताड़पत्रकेसमानहोते हैं और जिसके तेजसे निकटके वृक्षादिक जलजाते हैं उसको हालाहलकहते हैं यह किष्किन्धा हिमालय दक्षिण समुद्रकातट और कोंकणदेश में उत्पन्नहोता है ॥ ६५ ॥

अथ ब्रह्मपुत्रस्य स्वरूपम् ॥

वर्णतःकपिलोयःस्यात्तथाभवतिसारतः । ब्रह्मपुत्रःसविज्ञेयोजायतेमलयाचले ॥ ब्राह्मणःपाण्डुरस्तेपुक्षत्रियोलोहितःप्रभः । वैश्यःपीतःसितःशूद्रोविषउक्तश्चतुर्विधः ॥ रसायनेविषंविप्रंक्षत्रियन्देहपुष्टये । वैश्यंकुष्ठविनाशायशूद्रन्दद्याद्वधायहि ॥ विषंप्राणहरंप्रोक्तंव्यवायिचविकाशिच । आग्नेयंवातकफहृद्योगवाहिमदावहम् ॥ व्यवायिसकलकायगुणव्यापनपूर्वकंपाकगमनशीलं । विकाशि । ओजःशोषणपूर्वकंसन्धिबन्धशिथिलीकरणशीलम् ॥ आग्नेयं । अधिकाग्न्यंयोगवाहिसंगिगुणग्राहकं ॥ मदावहम् । तमोगुणाधिक्येनबुद्धिविध्वंसकम् ॥ तदेवयुक्तियुक्तन्तुप्राणदायिरसायनम् । योगवाहित्रिदोषघ्नंबृंहणंवीर्य्यवर्द्धनम् ॥ येदुर्गुणाविषेऽशुद्धेतेस्युर्हीनाविशोधनात् । तस्माद्विषंप्रयोगेपुशोधयित्वाप्रयोजयेत् ॥ ६६ ॥

ब्रह्मपुत्रकास्वरूप ॥

जोविष कपिलवर्ण और सार से उत्पन्नहोताहै उसको ब्रह्मपुत्रजानना चाहिये यह मलयपर्व्वत में होताहै श्वेतवर्ण ब्राह्मण रक्तवर्ण क्षत्री पीतवर्ण वैश्य और कृष्ण वर्ण विष शूद्र यह चारप्रकारको विषहोताहै रसायनमें ब्राह्मण विष शरीरकी पुष्टतामें क्षत्रीविष कुष्ठनाशकरने में वैश्य विष और मारने में शूद्रविष देनाचाहिये विष प्राणनाशक व्यवाई [संपूर्ण शरीर में गुणके व्याप्तहोजाने पर परिपाकको प्राप्त होनेवाला] विकाशी [ओजको सुखाकर सन्धि बन्धनोंको शिथिल करने वाला] अधिक अग्निके गुणवाला वातघ्न कफ नाशक योगवाही [जिस द्रव्यके साथमिले उसीके गुणको ग्रहण करने वाला] और मदावह [तमोगुणकी अधिकतासे बुद्धिका नाशकहोताहै] यह विष जो युक्तिपूर्व्वक काममें लायाजाय तो प्राणदायक रसायन योगवाही त्रिदोषनाशक धातुवर्द्धक और वीर्य वर्द्धक होताहै अशुद्ध विषमें जो दुर्गुण होतेहैं वह शुद्धकरने से हीन होजाते हैं इसकारण से विषको शुद्धकरके काममें लानाचाहिये ६६ ॥

अथोपविषाणां निरूपणम् ॥

अर्कक्षीरंस्नुहीक्षीरंलांगलीकरवीरकः । गुञ्जाहिफेनोधत्तूरःसप्तोपविषजातयः ॥ उपविषाःगौणविषाः । एषांगुणास्तत्रतत्रद्रष्टव्याः ॥ ६७ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशे धातूपधातु रसोपरस रत्नोपरत्न विषोपविषवर्गः ॥

उपविषोंका वर्णन ॥

आकका दूध थूहरका दूध करहारी कनेर घोंघची अफीम और धतूरा यहसात उपविष हैं इनके गुण पीछे वर्णनहो चुकेहैं ॥ ६७ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेधातुउपधातुरसउपरसरत्नउपरत्नविषउपविषवर्गसमाप्तः ॥

अथ धान्यवर्गः । तत्रधान्यानांभेदाः ॥

शालिधान्यंव्रीहिधान्यंशूकधान्यंतृतीयकम् । शिम्बीधान्यंक्षुद्रधान्यमित्युक्तंधान्यपञ्चकम् ॥ शालयोरक्तशाल्याद्याव्रीहयःषष्टिकादयः । यवादिकंशूकधान्यंमुद्गाद्यंशिम्बिधान्यकम् ॥ कंग्वादिकंक्षुद्रधान्यंतृणधान्यञ्चतत्स्मृतम् ॥ १ ॥

अथ धान्यवर्गः । धान्यों के भेद ॥

शालिधान्य व्रीहिधान्य शूकधान्य शिंबीधान्य और क्षुद्रधान्य यह पांचप्रकारके धान्यहोते हैं लाल धान आदिक शालिधान्य साठीआदिक व्रीहिधान्य जौआदिक शूकधान्य मूंग आदिक शिंबीधान्य और कंगनी आदिक क्षुद्रधान्य अथवा तृणधान्य कहलातेहैं ॥ १ ॥

तत्र शालिधान्यस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

कण्डनेनविनाशुक्लाहैमन्ताःशालयःस्मृताः २ (अथशालीनांनामानि) रक्तशालिःसकलमःपाण्डुकःशकुनाहृतः । सुगन्धकःकर्दमकोमहाशालिश्चदूषकः ॥ पुष्पाण्डकःपुण्डरीकस्तथामहिषमस्तकः । दीर्घशूकःकाञ्चनकोहायनोलोध्रपुष्पकः ॥ इत्याद्याःशालयःसन्तिबहवोबहुदेशजाः । ग्रन्थविस्तरभीतेस्तेसमस्तानात्रभाषिताः ॥ ३ ॥

शालिधान्यके लक्षण और गुण ॥

जो हेमन्त ऋतुका धान्य विनाकूटे श्वेतहो वह शालिधान्य कहलाते हैं २ [शालियों के नाम] रक्तशालि कलम पांडुक शकुनाहृत सुगंधककर्दमक महाशालि दूषक पुष्पांडक पुंडरीक महिष मस्तक दीर्घशूक कांचनक हायन और लोध्र पुष्पक इत्यादिक बहुत से शालि अनेक देशों में होतेहैं यहां ग्रंथ के विस्तार के भयसे सब नहीं कहेगये हैं ॥ ३ ॥

अथ तेषांगुणाः ॥

शालयोमधुराःस्निग्धाबल्याबद्धाल्पवर्चसः । कषायालघवोरुच्याःस्वर्य्यावृष्याश्चबृंहणाः ॥ अल्पानिलकफाःशीताः पित्तघ्नामूत्रलास्तथा । शालयोदग्धमृज्जाताःकषायालघुपाकिनः ॥ सृष्टमूत्रपुरीषाश्चरूक्षाःश्लेष्मापकर्षणाः ॥ कैदारावातपित्तघ्नागुरु

वःकफशुक्रलाः। कषायाअल्पवर्चस्कामध्याश्चैवबलावहाः ॥ केदाराःकृष्टक्षेत्रजाःउत्ताः। स्थलजाःस्वादवःपित्तकफघ्नावातपित्तदाः ॥ किंञ्चित्तिक्ताःकषायाश्चविपाकेकटुकाअपि। स्थलजाःअकृष्टभूमिजाताः ॥ स्वयंजाता। वापितामधुरावृष्यावल्याःपित्तप्रणाशनाः ॥ श्लेष्मलाश्चाल्पवर्चस्काःकषायागुरवोहिमाः। वापिताःकृष्टक्षेत्रेअकृष्टक्षेत्रेच ॥ वापितेभ्योगुणेःकिञ्चितहीनाःप्रोक्ताअवापिताःकृष्टक्षेत्रेअकृष्टक्षेत्रेवा ॥ रोपितास्तुनवावृष्याः पुराणालघवःस्मृताः। तेभ्यस्तुरोपिताभूयःशीघ्रपाकागुणाधिकाः ॥ छिन्नरूढ़ाःहिमारूक्षावल्याःपित्तकफापहाः। बद्धविट्काःकषायाश्चलघवश्चाल्पतिक्तकाः ॥ ४ ॥

शालियोंके गुण ॥

शालि मधुर कपैले स्निग्ध वलकारी मलको कठिन तथा अल्प करनेवाले हलके रुचिकारक स्वर कोहित वीर्यवर्द्धक धातुवर्द्धक कुछवादी कुछ कफकारक शीतल पित्तनाशक और मूत्रवर्द्धक होतेहैं दग्धमृत्तिकामें उत्पन्नहुए शालि कपैले शीघ्रपचने वाले मलमूत्रको निकालनेवाले रूखे और कफनाशक होतेहैं जोतेहुये खेत में बोयेगये शालिधान वात पित्त नाशक भारी कफकारी वीर्यवर्द्धक कपैले मलको स्वल्प करनेवाले मेधाकोहित और बलकारी होतेहैं विनाजोतेहुई पृथ्वीमें आपसे आप उत्पन्नहुए शालि मधुर पित्तनाशक कफघ्न वात तथा अग्निवर्द्धक कुछ तिक्त कपैले और पाकमें कटु होतेहैं जोते अथवा वे जोतेहुए खेतमें बोयेहुए धान्य मधुर वीर्यवर्द्धक बलकारक पित्तनाशक कफवर्द्धक मलको स्वल्प करनेवाले भारी और शीतल होतेहैं जोते अथवा विनाजोतेहुए खेतमें विनाबोयेहुए धान्य बोये हुओं से गुणमें कुछ कम होतेहैं एक स्थानसे उखाड़कर दूसरे स्थान में बोये गये धान्य नवीन होनेपर वीर्यवर्द्धक और प्राचीन होनेपर हलके होतेहैं वही धान्य उखाड़कर फिर बोयेगये शीघ्रपकने वाले अधिक गुणयुक्त काटने से फिर जमनेवाले शीतल रूखे पित्त कफ नाशक मलके बांधनेवाले कपैले हलके और कुछ तिक्त होतेहैं ॥ ४ ॥

अथ रक्तशालेर्गुणाः ॥

रक्तशालिवरस्तेषुबल्योवर्णस्त्रिदोषजित्। चक्षुष्योमूत्रलःस्वर्य्यःशुक्रलस्तृट्ज्वरापहः ॥ विषव्रणश्वासकासदाहनुद्वह्निपुष्टदः। तस्मादल्पान्तरगुणाःशालयोमहदादयः ॥ रक्तशालिःदाउदखानीइतिलोके। मगधदेशेप्रसिद्धः ॥ ५ ॥

लाल धान्य के गुण ॥

सब शालि धान्योंमें रक्त शालि श्रेष्ठ बलकारक वर्णकोहित त्रिदोष नाशक नेत्रोंकोहित मूत्रवर्द्धक स्वरकोहित वीर्यवर्द्धक अग्निवर्द्धक पुष्टताकारक और तृषा ज्वर विष घाव श्वास खांसी तथा दाह नाशक होतेहैं महा शालि आदिक इनसे गुण में कम होतेहैं ॥ ५ ॥

अथ व्रीहिधान्यस्य लक्षणंगुणाश्च ॥

वार्षिकाःकथिताःशुक्रव्रीहयश्चिरपाकिनः। कृष्णव्रीहिःपाटलश्चकुक्कुटाण्डकइत्यपि ॥ शालामुखोजतुमुखइत्याद्याःव्रीहयःस्मृताः। कृष्णव्रीहिःसविज्ञेयोयतकृष्णतुषतण्डुलः ॥ पाटलःपाटलापुष्पवर्णकोव्रीहिरुच्यते। कुक्कुटाण्डाकृतिव्रीहिःकुक्कुटाण्डकद

उच्यते ॥ शालामुखःकृष्णशूकःकृष्णतण्डुलउच्यते।लाक्षावर्णंमुखंयस्यज्ञेयोजतुमुखस्तु सः ॥ व्रीहयःकथिताःपाकेमधुरावीर्य्यतोहिताः । अल्पाभिष्पन्दिनीवद्धवर्चस्काःषष्ठिकैः समाः ॥ कृष्णव्रीहिर्वरस्तेषांतस्मादल्पगुणाःपरे ॥ ६ ॥

व्रीहि धान्यके लक्षण और गुण ॥

वर्षाकालमें उत्पन्न होनेवाले कूटने से श्वेत और देरमें पचने वाले धान्य व्रीहिकहलातेहैं कृष्ण व्रीहि पाटल कुक्कुटांडक शाला मुख और जतु मुख आदिक व्रीहिधान्य कहेगये हैं काले छिलके के चावल को कृष्ण व्रीहिकहतेहैं जिसका वर्ण पाटल पुष्पके समानहो उसको पाटलव्रीहि मुर्गेके अण्डे के समान आकारवाले को कुक्कुटांड व्रीहि जिसकी कालीनोक तथा काले चावलहों उसको शालामुख और जिसके मुखका वर्ण लाख के समानहो उसको जतु मुख व्रीहि कहतेहैं व्रीहि धान्य पाक में मधुर वीर्य में शीतल कुछ अभिष्पन्दी मलके रोकनेवाले और षष्ठिक धान्य के समान होतेहैं इन में कृष्ण व्रीहि सबसे श्रेष्ठहैं और शेष इनकी अपेक्षा स्वल्पगुणवाले होतेहैं ॥ ६ ॥

अथ षष्ठिकानां लक्षणंगुणाश्च ॥

गर्भस्थाएवयेपाकंयान्तितेषष्ठिकामताः ७ (अथषष्ठिकानांनामानि) षष्ठिकःशत पुष्पश्चप्रमोदकमुकुन्दकौ ।महाषष्ठिकइत्याद्याःषष्ठिकाःसमुदाहृताः ॥ एतेऽपिव्रीहयःप्रो क्ताव्रीहिलक्षणदर्शनात् । षष्ठिकाःमधुराःशीतालघवोबद्धवर्चसः ॥ वातपित्तप्रशमनाः शालिभिःसदृशाःगुणैः ॥ ८ ॥

षष्ठिकों के लक्षण और गुण ॥

जो गर्भमेंही स्थितहुए पकजांय वह षष्ठिक कहलाते हैं ७[षष्ठिकके नाम और गुण]षष्ठिक शतपुष्प प्रमोदक मुकुन्दक और महाषष्ठिक आदिषष्ठिक धान्य कहलाते हैं इनको व्रीहिधान्य भी कहते हैं क्योंकि इनमें व्रीहिके लक्षण दिखाई देतेहैं षष्ठिक धान्य मधुर शीतल हलके मलरोधक वातपित्त नाशक और शालिधान्य के समान गुणवाले होते हैं ॥ ८ ॥

तत्र षष्ठिकायागुणाः ॥

षष्ठिकाप्रवरातेषांलघ्वीस्निग्धात्रिदोषजित् । स्वाद्वीमृद्वीग्राहिणीचबलदाज्वरहा रिणी ॥ रक्तशालिगुणैस्तुल्याततःस्वल्पगुणापरेषाष्ठिकःसाठीइतिलोके ॥ ९ ॥

साठी केगुण ॥

षष्ठिक धान्योंमें साठीसबसे श्रेष्ठहै यहहलकी स्निग्ध त्रिदोषनाशक मधुर कोमल ग्राहीबलका-रकज्वर नाशक और रक्त शालिके समान गुणवाली होतीहै इसकी अपेक्षा अन्य षष्ठिक धान्यकम गुणवाले होतेहैं ॥ ९ ॥

अथ शूकधान्यानि ॥

तेषुयवःप्रसिद्धः । अतियवोऽतिशूकःकृष्णारुणोवर्णोयवः ॥ तोक्योहरितोनि शूकःस्वल्पोयवःयवेतिप्रसिद्धः । (तेषांनामानिगुणाश्च) यवस्तुशातकः स्यान्निः शकोऽतियवःस्मृतः ॥ तोक्यस्तद्वत्सहरितस्ततःस्वल्पश्चकीर्त्तित ॥ यवः कषायो

मधुरःशीतलोलेखनोमृदुः । व्रणेपुतिलवत्पथ्योरूक्षोमेधाग्निवर्द्धनः ॥ कटुपाकोऽनभिष्पन्दीस्वर्य्योबलकरोगुरुः । बहुवातमलोवर्णस्थैर्य्यकारीचपिच्छिलः ॥ कण्ठत्वगामयश्लेष्मपित्तमेदःप्रणाशनः । पीनसश्वासकासोरुस्तम्भलोहिततृट्प्रणुत् ॥ अस्मादतियवोन्यूनस्तोक्योन्यूनतरस्ततः ॥ १० ॥

शूकधान्यका वर्णन ॥

(जौ अतिजौ (बडीनोकरूष्ण औररक्तवर्ण) स्तोक्य (हरावर्णऔर नोकरहितजौ) इनकेनाम गुण)यव (इसकीनोक श्वेतहोतीहै) अतियव (इसमेंनोकनहींहोती) स्तोक्य (हरितवर्णऔरछोटा) यह जौकेभेदहैं जौ कषैला मधुर शीतल लेखन कोमल घावमें तिलके समानपथ्य रूखा मेधाकोहित अग्निवर्द्धक पाकमेंकटु अभिष्पन्दसे रहित स्वरको हित बलकारकभारी अत्यन्तवादी बहुतमल वर्द्धक वर्णको स्थिर करने वाला पिच्छिल और कंठरोग त्वचारोग कफपित्त मेद पीनस श्वास खांसी उररतंभ रक्तदोष तथा तृषा नाशक होताहै यवकी अपेक्षा अतियवमें गुणकम होताहै और स्तोक्यमें बहुतही कमगुण होतेहैं ॥ १० ॥

अथ गोधूमस्यनामानिलक्षणंगुणाश्च ॥

गोधूमःसुमनोऽपिस्यात्त्रिविधःसचकीर्त्तितः । महागोधूमइत्याख्यःपश्चाद्देशात्समागतः ॥ (महागोधूम) बडगोधूमाइतिलोके । मधूलीतुततःकिञ्चिदल्पासामध्यदेशजा ॥ निःशूकोदीर्घगोधूमःक्वचिन्नंदीमुखाभिधः । गोधूमोमधुरःशीतोवातपित्तहरोगुरुः ॥ कफशुक्रप्रदोबल्यःस्निग्धःसन्धानकृत्सरः । जीवसोबृंहणोवर्ण्योव्रण्योरुच्यस्थिरत्वकृत् (कफप्रदोनवीनोनतुपुराणः) पुराणयवगोधूमःक्षौद्रजांगलशूल्यभागिति॥ वाग्भटेनवसंतेगृहीतत्वात् । मधूलीशीतलास्निग्धापित्तघ्नीमधुरालघुः ॥ शुक्रलाबृंहणीपथ्यातद्वन्नन्दीमुखःस्मृतः ॥ ११ ॥

गेहूँकेनाम लक्षणऔर गुण ॥

गोधूम और सुमन यह गेहूंके नामहैं महा गोधूम जिसको बडागेहूं कहतेहैं पश्चिम देशसे आताहै मधूली नामगेहूं कुछछोटा होताहै और मध्यदेशमें उत्पन्न होताहै और नन्दी मुखनामगेहूं नोकरहित और लम्बाहोताहै गेहूं मधुर शीतल वातघ्न पित्तनाशक भारी कफकारक वीर्य वर्द्धक बलकारक स्निग्ध टूटेको जोडने वाला सारक जीवन धातुवर्द्धक वर्णकोहित घावमेंपथ्य रुचिकारक और शरीरको स्थिर करने वालाहोताहै नवीनगेहूं कफकारक होताहै नकिपुराना क्योंकि वाग्भटमें कहाहै कि वसन्तऋतुमें पुराने जौ गेहूं सहत जंगलीजीवोंका मांस और शूल्य (कवाव) खानाकहाहै मधूली नामगेहूं शीतल स्निग्ध पित्तनाशक मधुर हलके वीर्यवर्द्धक धातुवर्द्धक और पथ्यहोतेहैं नान्दीमुख गेहूंमें भी इसी के समान गुणहोते हैं ॥ ११ ॥

अथ शिम्बीधान्यम् ॥

तत्पर्य्यायानाह ॥ शमीजाःशिम्बिजाःशिम्बीभवाःसूर्प्याश्चवैदलाः (तेषांगुणाः) वैदलामधुरारूक्षाःकषायाःकटुपाकिनः ॥ वातलाःकफपित्तघ्नाःबद्धमूत्रमलाहिमाः । ऋतेमु-

द्गमसूराभ्यामन्येत्वाध्मानकारिणः ॥ मुद्गमसूरयोराध्मानकारित्वमन्यवैदलापेक्षयानतुस र्व्वथा। एतयोरपिकिञ्चिदाध्मानकारित्वात् ॥ १२ ॥

शिंबीधान्यका वर्णनइसके नाम और गुण ॥

शमीज शिंबीज शिंबीभव सूर्प्य और वैदल यह शिंबी धान्यके नामहैं इनकेगुण शिंबीधान्य मधु कषाय रूखा पाकमेंकटु वादी कफ नाशक पित्तघ्न मलमूत्र रोधक और शीतल होताहै मूंगऔर मसूरको छोकर सब शिंबीधान्य आध्मान कारक होतेहैं यहां मूंग और मसूर अन्य शिंबीधान्योंकी अपेक्षा आध्मानकारी नहीं हैं यहकहागया नकिसर्वथा क्योंकि यहभी कुछ आध्मानकरते हैं आध्मान अफरेको कहतेहैं ॥ १२ ॥ तत्रमुद्गस्यगुणाः ॥

रूक्षोलघुर्ग्राहीकफपित्तहरोहिमः। स्वादुरल्पानिलोनेत्र्योज्वरघ्नोवनजस्तथा ॥ मुद्गो वहुविधः श्यामोहरितःपीतकस्तथा। श्वेतोरक्तश्चतेषान्तुपूर्व्वःपूर्व्वोलघुःस्मृतः ॥ सुश्रुतेनपुनःप्रोक्तोहरितःप्रवरोगुणैः। चरकादिभिरप्युक्तःएषएवगुणाधिकः ॥ १३ ॥

मूंग के गुण ॥

मूंग रूखी हलकी ग्राही पित्तनाशक कफघ्न शीतल मधुर कुछ वादी नेत्रों को हित और ज्वरकी नाशकहोती है वनमूंगमें भी इसीके समान गुणहोते हैं मूंग वहुत प्रकारकी होती है जैसे श्यामहरी पीत श्वेत और लाल यह क्रमसे पूर्व्व २ हलकी हैं सुश्रुतने हरीमूंगको सबसे गुणों में श्रेष्ठ कहाहै और चरकादिक मुनियोंने भी इसीको अधिक गुण युक्तकहाहै ॥ १३ ॥

अथ उड़द ॥

माषोगुरुःस्वादुपाकःस्निग्धोरुच्योऽनिलापहः। स्रंसनस्तर्पणोवल्यःशुक्रलोवृंहणः परः ॥ भिन्नमूत्रमलस्तन्योमेदःपित्तकफप्रदः। गुदकीलार्दितःश्वासपंक्तिशूलानिनाशयेत् ॥ कफपित्तकरामाषाःकफपित्तकरंदधि। कफपित्तकरामत्स्याद्वन्ताकंकफपित्तकृत् ॥ १४ ॥

उर्द के गुण ॥

उर्द भारी पाक में मधुर स्निग्ध रुचिकारक वातनाशक उष्ण तृप्तिकारक वलकारी वीर्यवर्द्धक धातुवर्द्धक मलमूत्रका पृथक् करनेवाला दुग्धवर्द्धक मेदकरनेवाला पित्तवर्द्धक कफकारी और गुदाकी कीलकीपीड़ा श्वास तथा पंक्ति शूलकानाशकहोता है उर्द दही मछली और बैंगन यह चारों कफ तथा पित्तके करनेवालेहैं ॥ १४ ॥

अथ वोड़ायस्यचवेरातरालोविआइत्यादयोभेदाः ॥

राजमाषोमहामाषश्चपलश्चवलःस्मृतः। राजमाषोगुरुःस्वादुस्तुवरस्तर्पणःसरः ॥ रूक्षोवातकरोरुच्यःस्तन्यभूरिवलप्रदः। श्वेतोरक्तस्तथाकृष्णःत्रिविधःसप्रकीर्त्तितः। यो महांस्तेषुभवतिसएवोक्तोगुणाधिकः ॥ १५ ॥

(राजमाष जिसके वोड़ा वेरातरा और लुविया आदिक भेद हैं उसके नाम और गुण)

राजमाष महामाष चपल और चवल यह राजमाष के नाम हैं राजमाष भारी मधुर कषैले तृप्तिकारक दस्तावर रूखे वातवर्द्धक रुचिकारक दुग्धवर्द्धक और वहुत वलकारीहोते हैं श्वेत रक्त तथा कृष्ण इनभेदोंसे राजमाष तीन प्रकारकाहोताहै इनमें जो वड़ाहोताहै वही अधिक गुणवानहोताहै १५॥

अथ निष्पावःसतुराजसिम्बीवीजंभटवासुद्वतिलोके ॥

निष्पावोराजशिम्बिःस्याद्वल्लकःश्वेतशिम्बिकः निष्पावोमधुरोरूक्षोविपाकेऽम्लो गुरुःसरः ॥ कषायस्तन्यपित्तास्रमूत्रवातविबन्धकृत् । विदाह्युष्णोविषश्लेष्मशोथहृच्छुक्रनाशनः ॥ १६ ॥

भटमाष के नाम गुण ॥

निष्पाव राजशिंबी वल्लक और श्वेतशिंबिक यह भटमाष के नाम हैं भटमाष मधुर रूखा पाकमें खट्टा भारी दस्तावर कषैला और दुग्ध पित्त रक्त मूत्र वात तथा विबन्धकारी उष्ण और विष कफ सूजन तथा वीर्यनाशकहोता है ॥ १६ ॥

अथ मोठ ॥

मकुष्ठोवनमुद्गःस्यान्मकुष्ठकमुकुष्ठकौ ॥ मकुष्ठोवातलोग्राहीकफपित्तहरोलघुः । वह्निजिन्मधुरःपाकेकृमिकृज्ज्वरनाशनः ॥ १७ ॥

मोठ के नाम गुण ॥

मकुष्ट वनमुद्ग मकुष्टक और मुकुष्टक यह मोठ के नाम हैं मोठ बादी ग्राही (काविज्ज) हलकी पाकमें मधुर कृमिकारक और कफ पित्त जठराग्नि तथा ज्वरनाशकहोती है ॥ १७ ॥

अथ मसूर ॥

मङ्गल्यकोमसूरःस्यान्मङ्गल्याचमसूरिका । मसूरोमधुरःपाकेसंग्राहिशीतलोलघुः। कफपित्तास्रजिद्रूक्षोवातलोज्वरनाशनः ॥ १८ ॥

मसूर के नाम गुण ॥

मंगल्यकमसूर मंगल्या और मसूरिका यह मसूर के नाम हैं मसूर पाकमें मधुर काविज शीतल हलकी रूखी बादी और कफ पित्त रक्तदोष तथा ज्वरनाशकहोतीहै ॥ १८

अथ रहरी ॥

आढकीतुवरीचापिसाप्रोक्ताशणपुष्पिका। आढकीतुवरारूक्षामधुराशीतलालघुः॥ ग्राहिणीवातजननीवर्ण्यापित्तकफास्रजित् ॥ १९ ॥

अरहड़ के नाम गुण ॥

आढकी तुवरी और श्येनपुष्पिका यह अरहड़के नाम हैं अरहड़ कषैली रूखी मधुर शीतल हलकी काविज्ज बादी वर्णकोहित और पित्त कफ तथा रक्त नाशकहोती है ॥ १९ ॥

अथ छोला ॥

चणकोहरिमन्थःस्यात्सकलप्रियइत्यपि । चणकःशीतलोरूक्षःपित्तरक्तकफापहः ॥ लघुःकषायोविष्टम्भीवातलोज्वरनाशनः । सचांगारेणसम्भृष्टस्तैलभृष्टश्चतत्गुणः ॥ आर्द्रभृष्टोवलकरोरोचनश्चप्रकीर्तितः । शुष्कभृष्टोऽतिरूक्षश्चवातकुष्ठप्रकोपणः ॥ स्विन्नःपित्तकफंहन्यात्सूपःक्षोभकरोमतः ॥ आर्द्रोऽतिकोमलोरुच्यःपित्तशुक्रहरोहिमः । कषायोवातलोग्राहीकफपित्तहरोलघुः ॥ २० ॥

चने के नाम गुण ॥

चणक हरिमन्थ और सकलप्रिय यह चने के नाम हैं चना शीतल रूखा हलका कषैला विष्टंभी बादी और रक्त पित्त कफ तथा ज्वरनाशकहोताहै अंगारों में और तेल में भूनेहुए चने के भी यही गुणहैं गीला भूनाहुआ चना बलकारी और रुचिवर्द्धकहोता है सूखा भूनाहुआ चना अत्यन्त रूखा और वात तथा कुष्ठकारीहोताहै सिझायाहुआ चना पित्त तथा कफनाशकहोताहै चनेकी दाल क्षोभ (बिगाड़) करतीहै कच्चाचना अत्यन्त कोमल रुचिकारी शीतल कषैला बादी काबिज हलका और रक्त पित्त तथा कफ नाशकहोताहै ॥ २० ॥ केराव ॥

कलायोवर्तुलःप्रोक्तःसतीनश्चहरेणुकः । कलायोमधुरःस्वादुपाकेरूक्षश्चशीतलः॥२१॥

मटर के नाम गुण ॥

कषाय वर्त्तुल सतीन और हरेणुक यह मटर के नाम हैं मटर रस तथा पाक में मधुर रूखा और शीतल होता है ॥ २१ ॥ अथ खेसारी ॥

त्रिपुटःखण्डकोऽपिस्यात्कथ्यन्तेतद्गुणाअथ।त्रिपुटोमधुरस्तिक्तस्तुवरोरूक्षणोभृशं॥ कफपित्तहरोरुच्योग्राहकःशीतलस्तथा।किन्तुखञ्जत्वपंगुत्वकारीवातातिकोपनः॥२२॥

खिसारी के नाम गुण ॥

त्रिपुट और खण्डक यह खिसारी के नाम हैं खिसारी मधुर तिक्त कषैली अत्यन्त रूखी कफघ्न पित्तनाशक रुचिकारक काबिज शीतल लूना लँगड़ाकरनेवाली और अत्यन्त बादीहोती है ॥ २२ ॥

अथ कुलत्थी ॥

कुलत्थिकाकुलत्थश्चकथ्यन्तेतद्गुणाअथ । कुलत्थःकटुकःपाकेकषायःपित्तरक्तकृत् ॥ लघुर्विदाहिवीर्य्योष्णःश्वासकासकफानिलान् ॥ हन्तिहिक्काश्मरीशुक्रदाहानाहान्सपीनसान् । स्वेदसंग्राहकोमेदोज्वरकृमिहरःपरः ॥ २३ ॥

कुलथी के नाम गुण ॥

कुलथीको कुलत्थिका और कुलत्थ कहतेहैं कुलथी पाक में कटु कषैली पित्त तथा रक्तकारक हलकी विदाही उष्ण स्वेद रोधक और श्वास खांसी कफ वात हिचकी पथरी वीर्य दाह आनाह पीनस मेद ज्वर तथा कृमिनाशक होताहै ॥ २३ ॥ अथतिलः ॥

तिलःकृष्णःसितोरक्तःसवर्ण्योऽल्पतिलःस्मृतः । तिलोरसेकटुस्तिक्तोमधुरस्तुवरोगुरुः ॥ विपाकेकटुकःस्वादुःस्निग्धोष्णःकफपित्तनुत् । बल्यःकेश्योहिमस्पर्शस्त्वच्यस्तन्योव्रणेहितः ॥ दन्त्योऽल्पमूत्रकृद्ग्राहीवातघ्नोऽग्निमतिप्रदः । कृष्णःश्रेष्ठतमस्तेषुशुक्लोमध्यमःसितः ॥ अन्येहीनतराःप्रोक्तास्तज्ज्ञैरक्तादयस्तिलाः ॥ २४ ॥

तिलके नाम गुण ॥

काला श्वेत और रक्त यह तीन प्रकारका तिलहोताहै एक प्रकार का और भी छोटा तिल जिसको, वन्य कहतेहैं होताहै तिल कटु तिक्त मधुर कषैला भारी पाक में कटु तथा मधुर स्निग्ध उष्ण कफघ्न पित्तनाशक बलकारक केशोंकोहित स्पर्शमें शीतल त्वचाकोहित दुग्धवर्द्धक घावमें हित दांतोंको दृढ़ करनेवाला मूत्रको कम करनेवाला काबिज वातघ्न अग्निकारक और बुद्धि वर्द्धक होताहै सबतिलोंमें

काले तिल श्रेष्ठहोतेहैं श्वेत तिल वीर्य्यवर्द्धक और मध्यम होताहै और रक्तवर्ण आदिक तिल गुणोंमें हीन होतेहैं ॥ २४ ॥

अथातिसि ॥

अतसीनीलपुष्पीचपार्वतीस्यादुमाक्षुमा । अतसीमधुरातिक्तास्निग्धापाकेकटुर्गुरुः ॥ उष्णदृक्शुक्रवातघ्नीकफपित्तविनाशिनी ॥ २५ ॥

अलसीके नामगुण ॥

अतसी नीलपुष्पी पार्वती उमाऔर क्षुमायह अलसीके नामहैं अलसी मधुर तिक्त स्निग्धपाक में कटु भारी उष्ण और दृष्टि वीर्य वात कफ तथा पित्तनाशक होतीहै ॥ २५ ॥

अथ तोरीतोड़िसेतिलोके ॥

तुवरीग्राहिणीप्रोक्तालघ्वीकफविषास्रजित् । तीक्ष्णोष्णावह्निदाकण्डूकुष्ठकोष्ठकृमिप्रणुत् ॥ २६ ॥

तोरीके गुण ॥

तोरी काविज़ हलकी तीक्ष्ण उष्ण अग्नि कारक और कफ विष रक्त खुजली कुष्ठ तथा कोष्ठ के कृमियोंकी नाशक होतीहै ॥ २६ ॥

अथ रक्तसरीसोपिअरीसरीसो ॥

सर्षपःकटुकःस्नेहस्तुन्तुभश्चकदम्बकः । गौरस्तुसर्षपःप्राज्ञैःसिद्धार्थइतिकथ्यते ॥ सार्षपस्तुरसेपाकेचकटुस्निग्धःसतिक्तकः । तीक्ष्णोष्णः कफवातघ्नोरक्तपित्ताग्निवर्द्धनः ॥ रक्षोहरोजयेत्कण्डूकुष्ठकोष्ठकृमिग्रहान् । यथरक्तस्तथागौर किंतुगौरोमतः ॥ २७ ॥

लालऔर पीलीसरसोंके नामगुण ॥

सर्षप कटुकस्नेह तंतुभ और कदंबक यह सरसोंके नामहैं श्वेत सरसोंको पंडित लोग सिद्धार्थ कहतेहैं सरसों रसतथा पाकमें कटु स्निग्ध कुछ तिक्त तीक्ष्ण उष्ण रक्त पित्त तथा अग्नि वर्द्धक राक्षसीयबधा नाशक और कफ वात खुजली कुष्ठ कोष्ठके कृमि तथा ग्रहदोष नाशक होती है लाल और श्वेत यह दोनों सरसों समानहैं परन्तु श्वेतसरसों श्रेष्ठहै ॥ २७ ॥

अथ राई कृष्णराई ॥

राजीतुराजिकातीक्ष्णगन्धाक्षुज्जनिकासुरी । क्षव क्षुधाभिजनकःकृमिकृत्कृष्णसर्षपः । राजिकाकफपित्तघ्नीतीक्ष्णोष्णारक्तपित्तकृत् । किंचिद्रूक्षाग्निदाकण्डूकुष्ठकोष्ठकृमीन्हरेत् ॥ अतितीक्ष्णाविशेषेणतद्वत्कृष्णापिराजिका ॥ २८ ॥

राई और काली राईके नाम गुण ॥

राजी राजिका तीक्ष्णगन्धा क्षुज्जनिका और आसुरी यह राई के नामहैं क्षव क्षुधाभिजनक कृमिकृत् और कृष्ण सर्षप यह काली राई के नाम हैं राई तीक्ष्ण उष्ण रक्त पित्तकारक कुछ रूखी अग्नि वर्द्धक और कफ पित्त खुजली कुष्ठ तथा कोष्ठ के कृमि की नाशक होती है कालीराई विशेष करके तीक्ष्ण और राई के समान गुणवाली होतीहै ॥ २८ ॥

अथ क्षुद्रधान्यम् ॥

क्षुद्रधान्यंकुधान्यंचतृणधान्यमितिस्मृतम् । क्षुद्रधान्यमनुष्णंस्यात्कषायंलघुलेखनम् ॥

मधुरंकटुकंपाकेरूक्षंचक्लेदशोषकम् ॥ वातकृत्वद्धविट्कंचपित्तरक्तकफापहम् ॥ २९ ॥

क्षुद्रधान्यका वर्णन ॥

क्षुद्रधान्य कुधान्य और तृणधान्य यह क्षुद्रधान्यके नामहैं क्षुद्रधान्य कुछ उष्ण, कपैला, हलका लेखन मधुर पाकमें कटु रूखा गीलेको सुखानेवाला वादी मलरोधक और पित्त रक्त तथा कफनाशक होताहै ॥ २९ ॥

तत्र कंगुनी ॥

स्त्रियांकंगुप्रियंगुद्देकृष्णारक्तासितातथा। पीताचतुर्व्विधाकंगुस्तासाम्पीतावरास्मृता ॥ कंगुस्तुभग्नसंधानवातकृत्तबृंहणीगुरुः रूक्षाश्लेष्महरातीववाजिनांगुणकृद्भृशम् ॥ ३० ॥

कंगुनीके नाम गुण ॥

कंगुनीको कंगु और प्रियंगु कहतेहैं यह कृष्ण रक्तश्वेत और पीत इन भेदोंसे चार प्रकारकीहै इनमें पीलीकंगुनी श्रेष्ठहै कंगुनी टूटे हाड़को जोड़नेवाली वादी धातुवर्द्धक भारी रूखी अतिकफनाशक और घोड़ोंको अत्यन्त गुणदायक होती है ॥ ३० ॥

अथ चीना ॥

चीनाकःकंगुभेदोऽस्तिसज्ञेयःकंगुवद्गुणैः ॥ (अथ श्यामा) श्यामाकःशोषणोरूक्षोवातलःकफपित्तहृत् ॥ ३२ ॥

चीनाके गुण ॥

चीना कंगुनीका भेदहै इसमें कंगुनीके समान गुणहोते हैं ३१ (सामाके गुण) सामा सुखानेवाला रूखा वादी और कफ पित्तनाशक होताहै ॥ ३२ ॥

अथ कोद्रवः ॥

कोद्रवःकोरदूषःस्यादुद्दालोवनकोद्रवः । कोद्रवोवातलोग्राहीहिमपित्तकफापहः ॥ उद्दालस्तुभवेदुष्णोग्राहीवातकरोभृशम् ॥ ३३ ॥

कोदोके नाम गुण ॥

कोद्रवको कोरदूष कहतेहैं और वनकोदोको उद्दाल कहतेहैं कोदो वादी काबिज शीतल तथा पित्त कफनाशक और वनकोदो उष्ण काबिज और अत्यन्त वादी होताहै ॥ ३३ ॥

अथ चारुकः सरबीजः ॥

चारुकःसरबीजःस्यात्कथ्यन्तेतद्गुणाअथ । चारुकोमधुरोरूक्षोरक्तपित्तकफापहः ॥ शीतलोलघुवृष्यश्चकषायोवातकोपनः ॥ ३४ ॥

सरबीजके नाम गुण ॥

सरबीजको चारुक कहतेहैं सरबीज मधुर कपैला रूखा रक्तपित्तनाशक कफघ्न शीतल हलका वीर्यवर्द्धक और वादी होताहै ॥ ३४ ॥

अथ वंशबीजः ॥

यवावंशभवारूक्षाःकषायाःकटुपाकिनःबद्धमूत्राःकफघ्नाश्चवातपित्तकराःसराः ३५ ॥

बांसके बीजोंके गुण ॥

बांसके बीज रूखे कपैले पाकमेंकटु मूत्ररोधक कफनाशक वादी पित्तवर्द्धक और दस्तावरहोतेहैं ३५॥

अथ वरेंकुसुम्भवीज ॥

कुसुम्भवीजंवरटासैवप्रोक्तावरट्टिका । वरटामधुरास्निग्धारक्तपित्तकफापहा॥ कपायाशीतलागुर्व्वीस्यादवृष्यानिलापहा ॥ ३६ ॥

कुसुमके वीजोंके नाम गुण ॥

कुसुंभवीज वरटा और वरट्टिका यहकुसुमके वीजोंके नामहैं कुसुमकेवीज मधुर कषैले स्निग्ध रक्तपित्तनाशक कफघ्न शीतल भारी वीर्यके नहीं वढानेवाले और वातनाशक होतेहैं ॥ ३६ ॥

अथ गरहेडुआ ॥

गवेधुकातुविद्वद्भिर्गवेधुःकथितास्त्रियाम्।गवेधुःकटुकास्वादीकार्श्यकृत्कफनाशिनी३७॥

गरहडुआके नाम गुण ॥

गरहडुआको गवेधुका और गवेधू (स्त्रीलिंग) कहतेहैं गरहडुआ कटु मधुर कृशकरनेवाला और कफनाशक होताहै ॥ ३७ ॥

अथ तीनी ॥

प्रसाधिकातुनीवारस्तृणान्नमितिचस्मृतम्।नीवारःशीतलोग्राहीपित्तघ्नःकफवातकृत्३८॥

तिन्नीपसाईके नाम गुण ॥

प्रसाधिका नीवार और तृणान्न यह तिन्नीपसाईके नामहैं तिन्नीपसाई शीतल ग्राही पित्तनाशक कफकारी और वादी होती है ॥ ३८ ॥

अथ पुनेरा ॥

पवना-लोहितःस्वादुर्ह्लोहितःश्लेष्मपित्तजित् । अवृष्यस्तुवरोरूक्ष-क्लेदकृत्कथितोलघुः ॥ ३९ ॥

पुनराके गुण ॥

पवना पुनेरा शीतल मधुर वीर्यको नहीं वढानेवाला कफघ्न पित्तनाशक रूखा क्लेदकारक और हलका होताहै ॥ ३९ ॥

अथ सर्व धान्य गुणाः ॥

धान्यंसर्व्वंनवंस्वादुगुरुश्लेष्मकरंस्मृतम् । नत्तुवर्षोपितंपथ्यंयतोलघुतरंहितम् ॥ वर्षोपितंसर्वधान्यंगौरवंपरिमुञ्चति । नतुत्यजतिवीर्य्यंस्वंक्रमान्मुञ्चत्यतःपरम् ॥ एते पुयवगोधूमतिलमाषानवाहिताः ॥ पुराणाविरसारूक्षानतथागुणकारिणः ॥ पुराणावर्षद्वयादुपरिस्थिताः । यवादयोनवाःस्वास्थ्यान्प्रतिहिताः ॥ पथ्याशिनान्तुपुराणाहिताः । पुराणयवगोधूमक्षौद्रजांगलशूल्यभुगितिवासन्तेवाग्भटेनोक्तत्वात् ॥ ४० ॥

इतिश्रीभावप्रकाशे धान्यवर्गः ॥

सम्पूर्ण धान्योंके गुण ॥

सम्पूर्ण नवीनधान्य मधुर भारी और कफकारक होतेहैं एकवर्षका पुरानाधान्य हलकेपनेसे पथ्य होताहै एकवर्षका पुराना सव अनाज भारीपनको छोड़ताहै और वीर्य्यको नहींछोड़ता इसके उपरांत क्रमसे वीर्यको भी छोड़ताहै जो गेहूं तिल और उर्द यहनवीनही हितकारी होतेहैं और दोवर्षके पुराने

रसरहित और रूखे होजातेहैं ऊपरकहेहुए जो आदिक नवीन होनेपर स्वस्थ पुरुषोंको हितकारी होते हैं परन्तु पथ्यवालोंको पुरानेहितहैं क्योंकि वाग्भटने वसन्तचर्य्यामें पुराने जौ तथा गेहूं सहत जंगल जीवोंका मांस और शूल्य कबाब खाना कहाहै ॥ ४० ॥

इतिश्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेधान्यवर्गः समाप्तः ॥

अथ शाकवर्गः तत्र शाकनिरूपणम् ॥

पत्रंपुष्पंफलंनालंकन्दंसंस्वेदजंतथा । शाकंषड्विधमुद्दिष्टंगुरुविद्याद्यथोत्तरम् १ ॥

अथशाकवर्गः ॥ शाकोंका वर्णन ॥

पत्र पुष्प फल नालकन्द और स्वेदज यह छः प्रकारके शाक (तरकारी) होतेहैं यह क्रमसे उत्तरोत्तर भारी होतेहैं १ ॥ अथ शाकानांगुणाः ॥

प्रायःशाकानिसर्व्वाणिविष्टम्भीनिगुरूणिच । रूक्षाणिबहुवर्च्चांसिसृष्टविण्मारुतानिच ॥ शाकंभिन्नतिवपुरस्थिनिहन्तिनेत्रम् वर्णंविनाशयतिरक्तमथापिशुक्रम् । प्रज्ञाक्षयञ्चकुरुतेपलितञ्चनूनम् हन्तिस्मृतिंगतिमितिप्रवदन्तितज्ज्ञाः ॥ शाकेषुसर्व्वेषुवसन्तिरोगास्तेहेतवोदेहविनाशनाय । तस्माद्बुधःशाकविवर्जनन्तुकुर्य्यात्तथाम्लेषुसएवदोषः ॥ एतानिशाकनिन्दकानिवचनानिसामान्यानि ॥ अथ शाकेषुविशिष्टानि वचनानि ॥ २ ॥ शाकोंकेगुण ॥

प्रायःसंपूर्ण शाक विष्टंभी भारी रूखे अत्यन्त मल वर्द्धक मलनिकालनेवाले और वादीहोतेहैं शाक शरीरकी हड्डी नेत्र वर्ण रुधिर वीर्य बुद्धि स्मृति तथा गतिको नष्टकरतेहैं और बालोंको श्वेत करतेहैं संपूर्ण शाकोंमें रोगरहतेहैं वही शरीर के विनाशके कारणहोतेहैं इससे पंडित लोग शाकका त्यागकरें और खटाई में भी यही दोषहै यह शाकोंकी निन्दा के सामान्य वचन हैं अथ शाकों के वर्णनमें विशेष वचन कहेजाते हैं ॥ २

तत्र पत्रशाकानि ॥ तत्रापिवास्तूकद्वयस्यनामानि गुणाश्च ॥

वास्तूकंवास्तुकञ्चस्यात्क्षारपत्रञ्चशाकराट् । तदेवतुबृहत्पत्रंरक्तस्याद्गौड़वास्तुकम् ॥ प्रायशोयवमध्येस्याद्यवशाकंमतःस्मृतम् । वास्तूकद्वितयंस्वादुक्षारंपाकेकटूदितम् । दीपनंपाचनंरुच्यंलघुशुक्रबलप्रदम् । सरंप्लीहास्रपित्तार्शःकृमिदोषत्रयापहम् ॥ ३ ॥

पत्रशाकोंका वर्णन । दोनोंवथुईके नामगुण ॥

वास्तूक वास्तुक क्षारपत्र और शाकराट् यह वथुई के नामहैं बड़ेपत्तेकी लालवथुई को गौड़वास्तुक और प्रायः यवोंके बीच में होनेसे यवशाक कहतेहैं दोनों वथुई मधुर क्षार पाकमें कटुदीपन पाचक रुचिकारक हलकी वीर्य वर्द्धक बलकारी दस्तावर और प्लीहा रक्तपित्त बवासीर कृमि तथा त्रिदोष नाशकहोतीहैं ॥ ३ ॥ अथ पोतकी ॥

पोतक्युपोदिकासातुमालवाऽमृतवल्लरी । पोतकीशीतलास्निग्धाश्लेष्मलावातपित्तनुत् ॥ अकण्ठ्यापिच्छिलानिद्राशुक्रदारक्तपित्तजित् । बलदारुचिकृत्पथ्याबृंहणीतृप्तिकारिणी ॥ ४ ॥

पोयकेनामगुण ॥

पोतकी उपोदिका मालवा और अमृत वल्लरी यह पोयकेनाम हैं पोय शीतल स्निग्ध कफकारक वात पित्तनाशक कंठको अहित पिच्छिल निद्राकारी वीर्य वर्द्धक रक्त पित्त नाशक बलकारीरुचिकारक पथ्य धातुवर्द्धक और तृप्तिकारी होतीहै ॥ ४ ॥

अथ श्वेतमरुसा लोहितमरुसा नवड़ा इतिच ॥

मारिषोवाष्पकोमार्षःश्वेतोरक्तश्चसस्मृतः । मारिषोमधुरःशीतोविष्टम्भीपित्तनुद्गुरुः॥ वातश्लेष्मकरोरक्तपित्तनुद्विषमाग्निजित्। रक्तमार्षोगुरुर्नातिसक्षारोमधुरःसरः॥ श्लेष्मलःकटुकःपाकेस्वल्पदोषउदीरितः ॥ ५ ॥

श्वेत मरसा और लालमरसाके नाम और गुण ॥

मारिप वाष्पक और मार्प यह दोनों मरसाके नामहैं मरसा मधुर शीतल विष्टंभी पित्तनाशक भारी वादी कफकारी और रक्त पित्त तथा विषमाग्नि नाशकहोताहै लालमरसा बहुतभारीपनसे रहित कुछ क्षार मधुर दस्तावर कफकारी पाक में कटु और थोड़े दोषवाला होताहै ॥ ५ ॥

अथ चवराई । अल्पमरुसा इतिच ॥

तण्डुलीयोमेघनादः काण्डेरस्तण्डुलेरकः । भण्डीरस्तण्डुलीबीजोविषघ्नश्चाल्पमारिषः ॥ तण्डुलीयोलघुःशीतोरूक्षःपित्तकफास्रजित्। सृष्टमूत्रमलोरुच्योदीपनोविषहारकः॥ ६ ॥

चौराईके नाम गुण ॥

तंडुलीय मेघनाद कांडेर तंडुलेरक भंडीर तंडुलीबीज विषघ्न और अल्पमारिष यह चौराई के नामहैं चौराई शीतल हलकी रूखी पित्तघ्न कफनाशक रक्तदोष नाशक मलमूत्र निकालनेवाली रुचिकारी दीपन और विषनाशक होती है ॥ ६ ॥

अथचवराईभेदः ॥

जलतण्डुलीयंशाकेकचटमितिप्रसिद्धम् ॥ पानीयंतण्डुलीयन्तुकचटंसमुदाहृतम् । कचटंतिक्तकंरक्तपित्तानिलहरंलघु ॥ ७ ॥

जलचौराई के नामगुण ॥

जल चौराई को जलतंडुलीय और कचट कहते हैं जल चौराई तिक्त रक्तपित्त नाशक वातघ्न और हलकी होतीहै ॥ ७ ॥

अथ पलकी ॥

पलक्यावास्तुकाकाराच्छुरिकाचीरितच्छदा ॥ पलक्यावातलाशीताश्लेष्मलाभेदिनीगुरुः। विष्टम्भिनीमदश्वासपित्तरक्तकफापहाः॥ ८ ॥

पालकके नाम गुण ॥

पलक्या वास्तुकाकारा छुरिका और चीरितच्छदा यह पालकके नामहैं पालक वादी शीतल कफकारी दस्तावर भारी विष्टंभी और मदरोग श्वास पित्तरक्त तथा विषनाशक होताहै ॥ ८ ॥

अथ नीरचाकालशाकमितिच ॥

नाड़िकंकालशाकश्चश्राद्दशाकञ्चकालकम् ॥ कालशाकंसरंरुच्यंवातकृत्कफशोथ हृत् । बल्यंरुचिकरंमेध्यंरक्तपित्तहरंहिमम् ॥ ९ ॥

नारीके शाक के नाम गुण॥

नाड़िक कालशाक श्राद्दशाक और कालक यह नारीके शाकके नामहैं नारीकाशाक दस्तावर रुचिकारकबादी कफघ्नशोथनाशकबलकारी रुचिकारक मेधाकोहित रक्त पित्तनाशक और शीतल होताहै ९॥

अथ पटुआ ॥

पट्टशाकस्तुनाड़ीकोनाड़ीशाकश्चसःस्मृतः।नाड़ीकोरक्तपित्तघ्नोविष्टम्भीवातकोपनः १०

पटुआशाक के नामगुण ॥

पटशाक नाड़िका और नाड़ीशाक यह पटुशाक के नामहैं पटुआ रक्तपित्त नाशक विष्टंभी और बादी होताहै ॥ १० ॥

अथ कलम्बी ॥

कलम्बीशतपर्वाचकथ्यन्तेतद्गुणाअथ । कलम्बीस्तन्यदाप्रोक्तामधुराशुक्रकारिणी ११॥

कलगीके नाम गुण ॥

कलगीको कलंबी और शतपर्वा कहतेहैं कलगी दुग्धवर्द्धक मधुर और वीर्यवर्द्धक होतीहै ॥ ११ ॥

अथ लोणि ॥

वृहल्लोणीलोणालोणीचकथितावृहल्लोणीतुघोटिका । लोणीरूक्षास्मृतागुर्वीवात श्लेष्महरीपटुः॥ अर्शोघ्नीदीपनीचाम्लामन्दाग्निविषनाशिनी । घोटिकाम्लासराचोष्णा वातकृत्कफपित्तहृत् ॥ वाग्दोषव्रणगुल्मघ्नीश्वासकासप्रमेहनुत् । शोथलोचनरोगेच हिताज्ज्ञेरुदाहृता ॥ १२ ॥

छोटी और बड़ी नोनिया के नाम गुण

छोटी नोनियाको लोणा तथा लोणी और बड़ी नोनियाको घोटिका कहतेहैं नोनिया रूखी भारी दीपन खट्टी नमकीन और बात कफ बवासीर मन्दाग्नि तथा विष नाशक होती है और बड़ी नोनिया खट्टी दस्तावर उष्ण बादी और कफ पित्त त्वचा के दोष घाव गुल्म श्वास खांसी प्रमेह सूजन और नेत्र रोग नाशक होती है ॥ १२ ॥

अथ चांगेरीअम्बिलीनारतिच ॥

चाङ्गेरीचुक्रिकादन्तशठाम्बष्ठाम्ललोणिका । अश्मन्तकस्तुशफरीपिसल्लीचाम्लपत्रकः ॥ चाङ्गेरीदीपनीरुच्यारूक्षोष्णाकफवातनुत् । पित्तलाम्लाग्रहण्यर्शःकुष्ठातीसार नाशिनी ॥ १३ ॥

चांगेरी चूकाका भेद उसके नाम गुण॥

चांगेरी चुक्रिका दन्तशठा अम्बष्ठा अम्ल लोणिका अश्मन्तक शफरी कुशली और अम्ल पत्रक यह चांगेरी के नामहैं चांगेरी दीपन रुचिकारक रूखी उष्ण पित्त वर्द्धक खट्टी और कफ बात ग्रहणी बवासीर कुष्ठतथा अतीसार नाशक होतीहै ॥ १३ ॥

अथ चूक ॥

चुक्रिकास्यात्तुपत्राम्लारोचनीशतवेधिनी ॥ चुक्रात्वम्लतरास्वाद्वीवातघ्नीकफपित्त कृत्। रुच्यालघुतरापाकेव्न्ताकेनातिरोचनी ॥ १४॥

चूकाके नाम गुण ॥

चुक्रिका पत्राम्ला रोचनी और शतवेधिनी यह चूकाके नामहैं चूका बहुतखट्टा मधुर वात नाशक कफ पित्तकारक रुचिकारी शीघ्रपचने वाला और बेंगन के साथ बहुत रुचिकारी होताहै ॥ १४॥

अथ चेवुनानाड़ीचवत् ॥

चिञ्चाचञ्चुश्चञ्चुकीचदीर्घपत्रासतिक्तका ॥ चुञ्चुःशीतासरारुच्यास्वाद्वीदोषत्रया पहा। धातुपुष्टिकरीवल्यामेध्यपिच्छिलकास्मृता ॥ १५ ॥

चेवुना के नाम गुण ॥

चिचा चंचू चंचुकी दीर्घपत्रा और तिक्तका चेवुना शीतल दस्तावर रुचिकारी मधुर त्रिदोषनाशक धातुपोषक बलकारी मेधाकोहित और पिच्छिल होताहै ॥ १५॥

अथ हिलमोचिकाहुरहुरइतिलोके ॥

ब्राह्मीशङ्खधराचारीब्राह्मीचहिलमोचिका। शोथंकुष्ठंकफंपित्तंहरतेहिलमोचिका १६ ॥

हुरहुर के नाम गुण ॥

ब्राह्मी शंखधरा आचारी मंत्री और हिलमोचिका यह हुरहुरके नामहैं हुरहुर सूजन पित्त कफ और कुष्ठ नाशक होता है ॥ १६॥

अथ शिरीआरी ॥

शितिवारःशितिवरःस्वस्तिकःसुनिषण्णकः।श्रीवारकःसूचिपत्रःपर्णकःकुक्कुटःशिखी ॥ चांगेरीसदृशःपत्रश्चतुर्दलइतीरितः। शाकोजलान्वितेदेशेचतुःपत्रीतिचोच्यते ॥ सुनि षण्णोहिमोग्राहीमोहदोषत्रयापहः ॥ अविदाहीलघुःस्वादुःकषायोरूक्षदीपनः। वृष्योरु च्योज्वरश्वासमेहकुष्ठभ्रमप्रणुत् ॥ १७ ॥

शिरयारी के नाम और गुण

शितिवार शितिवर स्वस्तिक सुनिषण्णक श्रीवारक शुचिपत्र पर्णक कुक्कुट और शिखी यह शिरयारी के नामहैं इसके पत्ते चांगेरी के समानहोतेहैं और यह सजल देशमें उत्पन्न होताहै इसमें चार दल होतेहैं उसको चतुःपत्री भी कहतेहैं शिरयारी शीतल ग्राही मेदनाशक त्रिदोषघ्न विदाह रहित हलकी मधुर कषेली रूखीदीपन वीर्य्य वर्द्धक रुचिकारी और ज्वर श्वास प्रमेह कुष्ठ तथाभ्रमनाशक होतीहै १७

अथ मुरईपत्रम् ॥

पाचनंलघुरुच्योष्णंपत्रंमूलकजंनवम्।स्नेहसिद्धंत्रिदोषघ्नमसिद्धंकफपित्तकृत् १८ ॥

मूलीके पत्तों के गुण ॥

मूलीके नयेपत्ते पाचक हलके रुचिकारक और उष्ण होतेहैं यह स्नेहमें पकायेहुए त्रिदोष नाशक और कच्चे कफ पित्तकारी होतेहैं ॥ १८

अथ गुम्मा ॥

द्रोणपुष्पीदलंस्वादुरूक्षंगुरुचपित्तकृत्। भेदनंकामलाशोथमेहज्वरहरंकटु॥ १९॥

गूमाके गुण ॥

गूमाकेपत्ते मधुर रूखे भारी पित्तवर्द्धक दस्तावर कटु और कामला सूजन प्रमेह तथा ज्वर नाशक होतेहैं ॥ १९ ॥

अथ जवाइन ॥

यवानीशाकमाग्नेयंरुच्यंवातकफप्रणुत्।उष्णंकटुचतिक्तंचपित्तलंलघुशूलहृत्२०॥

अजवाइन के शाकके गुण ॥

अजवाइनका शाक अग्निके गुणवाला रुचिकारी वातघ्न कफ नाशक उष्ण कटु तिक्त पित्त वर्द्धक हलका और शूल नाशक होताहै ॥ २० ॥

अथ चकवड़ ॥

दद्रुघ्नपत्रंदोषघ्नमम्लंवातकफापहम्। कण्डूकासकृमिश्वासदद्रूकुष्ठप्रणुल्लघु॥ २१॥

पवांड के पत्तोंके गुण

पवांड़ के पत्ते दोषनाशक खट्टे हलके और बात कफ खुजली खांसी कृमि श्वास दाद तथा कुष्ठ नाशक होतेहैं ॥ २१ ॥

अथ सेहुण्ड ॥

सेहुण्डस्यदलंतीक्ष्णंदीपनंरोचनंहरेत्।आध्मानाष्ठीलिकागुल्मशूलशोथोदराणिच२२॥

सेंहुड़ के पत्तों के गुण ॥

सेंहुड़के पत्तेतीक्ष्णदीपन रुचिकारक और उदर आध्मान अष्ठीला गुल्मशूलतथासूजननाशकहोताहै२२॥

अथ दवनपापरा ॥

पर्प्पटोहंतिपित्तास्रज्वरतृष्णाकफभ्रमान्। संग्राहीशीतलस्तिक्तोदाहनुद्वातलोलघुः२३॥

पित्तपापड़े के शाक के गुण ॥

पित्तपापड़ा पित्त रक्त ज्वर तृषा कफ भ्रम तथा दाह नाशक ग्राही शीतल तिक्त वादी और हलका होताहै ॥ २३ ॥

अथ गोभी ॥

गोजिह्वाकुष्ठमेहास्रकृच्छ्रज्वरहरोलघुः२४॥ (अथ पटोलपत्र) पटोलपत्रंपित्तघ्नंदीपनम्पाचनंलघु। स्निग्धंवृष्यंतथोष्णञ्चज्वरकासकृमिप्रणुत्॥ २५॥

गोभी के गुण ॥

गोभी कुष्ठ मेह रक्तदोष मूत्रकृच्छ्र तथा ज्वर नाशक और हलकी होती है ॥ २४ ॥ (परवलके पत्तोंकेगुण) पटोलपत्र पित्तघ्न दीपन पाचन हलकेस्निग्ध वीर्यवर्द्धक उष्ण औरज्वर खांसीतथा कृमिनाशक होतेहैं ॥ २५ ॥

अथ गुडूची ॥

गुडूचीपत्रमाग्नेयंसर्वज्वरहरंलघु। कषायंकटुतिक्तञ्चस्वादुपाकंरसायनम्॥ वल्यमुष्णञ्चसंग्राहिहन्यात्दोषत्रयंतृषाम्। दाहप्रमेहवातास्रक्कामलाकुष्ठपाण्डुताम् २६॥

गिलोयके पत्तोंके गुण ॥

गिलोयके पत्ते अग्निके गुणवाले संपूर्ण ज्वरनाशक हलके कषैले कटु तिक्त पाकमें मधुर रसायन बलकारीउष्णग्राही और त्रिदोष तृषादाहप्रमेहवातरक्तकामला कुष्ठतथापांडुनाशकहोतेहैं २६॥

अथ कसौंदी काममर्दोऽरिमर्दश्चकासारिःकर्कशस्तथा ॥

कासमर्ददलंरुच्यंवृष्यंकासविषास्रनुत । मधुरंकफवातघ्नंपाचनंकण्ठशोधनम् ॥ विशेषतःकासहरंपित्तघ्नंग्राहकंलघु ॥ २७ ॥

कसौंदीकेनामगुण ॥

कासमर्द अरिमर्द कासारि और कर्कश यह कसौंदी के नाम हैं कसौंदीके पत्ते रुचिकारी वीर्यवर्द्धक खांसी नाशक विषघ्न रक्तदोष नाशक मधुर कफ वातनाशक पाचक कंठशोधक और विशेष करके खांसी तथा विषके नाशक ग्राही और हलके होतेहैं ॥ २७ ॥

अथ चणक ॥

रुच्यञ्चणकशाकंस्यात्दुर्ज्जरंकफवातकृत् । अम्लंविष्टम्भजनकंपित्तनुत्दंतशोथहृत् २८

चनेके शाककेगुण ॥

चनेकाशाक रुचिकारी कठिनतासे पचने वाला कफकारी वादी खट्टा विष्टंभी पित्तनाशक और दांतोंकी सूजनका नाशक होताहै ॥ २८ ॥

अथ केराव ॥

कलायशाकम्भेदिस्याल्लघुतिक्तंत्रिदोषजित् २९ (अथसरिसो) कटुकंसार्षपंशाकंबहुमूत्रमलंगुरु । अम्लपाकंविदाहिस्यादुष्णंरूक्षंत्रिदोषजित् ॥ सक्षारंलवणंतीक्ष्णंस्वादुशाकेषुनिन्दितम् ॥ ३० ॥

मटरके शाककेगुण ॥

मटरकाशाक दस्तावर हलका तिक्त और त्रिदोष नाशक होता है २९ ॥ (सरसोंकेशाककेगुण) सरसोंकाशाक कटु मलमूत्र वर्द्धक भारी खट्टा विदाही उष्ण रूखा त्रिदोष नाशक कुछक्षार सलोन मधुर और तीक्ष्ण होताहै यह संपूर्ण शाकोंमें निन्दितहै ॥ ३० ॥

अथ पुष्पशाकानि । तत्रागस्तिपुष्पस्यगुणाः ॥

अगस्तिकुसुमंशीतंचातुर्थकनिवारणम् । नक्तान्ध्यनाशनंतिक्तंकषायंकटुपाकिच । पीनसश्लेष्मपित्तघ्नंवातघ्नंमुनिभिर्मतम् ॥ ३१ ॥

पुष्पशाकोंका वर्णन ॥ अगस्तकेपुष्पोंका गुण ॥

अगस्तके पुष्प शीतल चौथैया ज्वरनाशक रतोंधी दूरकरने वाले तिक्त कषैले पाकमें कटु और पीनसकफ पित्ततथा वातनाशकहोतेहैं ॥ ३१ ॥

अथ कदलीपुष्पम् ॥

कदल्याःकुसुमंस्निग्धंमधुरंतुवरंगुरु । वातपित्तहरंशीतंरक्तपित्तक्षयप्रणुत् ॥ ३२ ॥

केलेकेफूलके गुण ॥

केलेकेपुष्प स्निग्ध मधुर कषैले भारी शीतल और वात पित्त रक्तपित्त तथा क्षयनाशकहोतेहैं ३२॥

शोभाञ्जन ॥

शिग्रोःपुष्पन्तुकटुकंतीक्ष्णोष्णंस्नायुशोथकृत् । कृमिहृत्कफवातघ्नंविद्रधिप्लीहगुल्मजित् ॥ मधुशिग्रोस्त्वक्षिहितंरक्तपित्तप्रसादनं ॥ ३३ ॥

सहजनके पुष्पोंके गुण ॥

सहजने के पुष्प कटु तीक्ष्ण उष्ण स्नायु में सूजन करनेवाले और कृमि कफ वात विद्रधि प्लीहा तथा गुल्म नाशक होतेहैं लालसहजनके पुष्प नेत्रोंकोहित और रक्त पित्तकारक होतेहैं ॥ ३३ ॥

अथ शाल्मलीपुष्पम् ॥

शाल्मलीपुष्पशाकंतुघृतसैन्धवसाधितम् । प्रदरंनाशयत्येवदुःसाध्यञ्चनसंशयः ॥ रसेपाकेचमधुरंकषायंशीतलंगुरु । कफपित्तास्रजिद्ग्राहिवातलंचप्रकीर्त्तितम् ॥ ३४ ॥

सेमरके पुष्पोंकेगुण ॥

घृत और सेंधोनोनके द्वारा पकायेहुए सेमरके पुष्प अत्यन्त दुस्साध्य प्रदरको भी नाशकरते हैं यह मधुर कषेले पाकमें मधुर शीतल भारी कफघ्न पित्तघ्न रक्तदोषघ्न ग्राही और बादी होते हैं ॥ ३४ ॥

अथ फलशाकानि । तत्रकूष्माण्डस्यनामानिगुणाश्च ॥

कूष्माण्डंस्यात्पुष्पफलम्पीतपुष्पंवृहत्फलम् । कूष्माण्डंवृंहणंवृष्यंगुरुपित्तास्रवातनुत् ॥ बालंपित्तापहंशीतंमध्यमंकफकारकम् । वृद्धंनातिहिमंस्वादुसक्षारन्दीपनंलघु ॥ वस्तिशुद्धिकरंचेतोरोगहृत्सर्व्वदोषजित् ॥ ३५ ॥

फलशाकोंका वर्णन ॥ पेठेकेनाम औरगुण ॥

कूष्मांड पुष्पफल पीतपुष्प और वृहत्फल यहपेठेके नामहैं पेठा धातुवर्द्धक वीर्यवर्द्धक भारी और रक्तपित्त तथा वातनाशकहोताहै कच्चापेठा पित्तनाशक तथा शीतल मध्यमपेठा कफकारक और पक्का पेठा बहुत शीतलतासे रहित मधुर कुछक्षार दीपन हलका मूत्राशयका शोधक और चित्तके रोगतथा सर्व दोषनाशक होताहै ॥ ३५ ॥ अथकोहड़ी ॥

कूष्माण्डीतुभृशंलघ्वीकर्कारुरपिकीर्तितम् । कर्कारुर्ग्राहिणीशीतारक्तपित्तहरागुरुः ॥ पक्वातिक्ताग्निजननीसक्षाराकफवातनुत् ॥ ३६ ॥

छोटेपेठेके नाम गुण ॥

बहुत छोटेपेठेको कूष्मांडी और कर्कारु कहतेहैं छोटापेठा ग्राही शीतल रक्त पित्तनाशक और भारी होताहै पकाहुआ छोटापेठा तिक्त अग्निकारक कुछक्षार और कफ वातनाशक होताहै ॥ ३६ ॥

अथलवलौआ । गृहलौआ ॥

अलावूःकथितातुम्बीद्विधादीर्घाचवर्त्तुला ॥ मिष्ठतुम्बीदलंहृद्यंपित्तश्लेष्मापहंगुरु वृष्यंरुचिकरंप्रोक्तंधातुपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ ३७ ॥

लौकीके नाम गुण ॥

लौकीको अलावू और तुंबी कहतेहैं यहलंबी और गोल दोप्रकारकी होतीहै लौकी मधुर हृदयको हित पित्तघ्न कफनाशक भारी वीर्यवर्द्धक रुचिकारी और धातुपोषक होतीहै ॥ ३७ ॥

अथतीतलौकी ॥

इक्ष्वाकुःकटुतुम्बीस्यात्सातुम्बीचमहाफला॥ कटुतुम्बीहिमाहृद्यःपित्तकासविषापहाः॥ तिक्ताकटुर्विपाकेचवातपित्तज्वरान्तकृत् ॥ ३८ ॥

कड़वीतूंवीके नाम गुण ॥

इक्ष्वाकु कटुतुम्बी तुंवी और महाफला यह कड़वीलौकीके नाम हैं कड़वीलौकी शीतल हृदयको हित तिक्त पाकमें कटु और पित्त खांसी विष वात तथा पित्तज्वर नाशक होतीहै ॥ ३८ ॥

अथककड़ी ॥

एर्वारुः कर्कटीप्रोक्ताकथ्यन्तेतद्गुणाअथ । कर्कटीशीतलारूक्षाग्राहिणीमधुरागुरुः॥ रुच्यापित्तहरासामापक्कातृष्णाग्निपित्तकृत् ॥ ३९ ॥

ककड़ीके नाम गुण ॥

ककड़ीको एर्वारु और कर्कटी कहतेहैं ककडी शीतल रूखी ग्राही मधुर और भारी होतीहै कच्ची ककडी रुचिकारक तथा पित्तनाशक और पक्कीककडी तृषा अग्नि तथा पित्तनाशकहोतीहै ॥ ३९ ॥

अथचिचिण्डा ॥

चिचिण्डाश्वेतराजिःस्यात्सुदीर्घोगृहकूलकः । चिचिण्डोवातपित्तघ्नोबल्यःपथ्योरुचिप्रदः॥ शोषिणोऽति हितःकिञ्चिद्गुणैर्न्यूनःपटोलतः ॥ ४० ॥

चिचेंड़ाके नाम गुण ॥

चिचिंड श्वेतराजि सुदीर्घ और गृहकूलक यह चिचेंड़ेके नामहैं चिचेंड़ा वातघ्न पित्तनाशक बलकारी पथ्य रुचिकारक शोषरोगियोंको अत्यन्तहित और परवलसे कुछ कमगुणवाला होताहै ॥ ४० ॥

अथकरेलाकरेली ॥

कारवेल्लंकटिल्लस्यात्कारवेल्लीततोलघुः । कारवेल्लंहिमंभेदिलघुतिक्तमवातलम् ॥ ज्वरपित्तकफास्रघ्नंपाण्डुमेहकृमीन्हरेत्।तद्गुणाकारवेल्लीस्याद्विशेषाद्दीपनीलघुः॥४१॥

करेला और करेलीके नाम गुण ॥

कारवेल्ल और कटिल्ल यह करेलेके नामहैं करेली इस्से छोटी होतीहै करेला शीतल दस्तावर हलका तिक्त वातरहित और केवल पित्त कफ रक्त पांडु प्रमेह तथा कृमिनाशक होताहै और करेली में भी इसीके समान गुणहोतेहैं यह विशेषकरके दीपन तथा हलकी होतीहै ॥ ४१ ॥

अथ नेनुआ ॥

महाकोशातकीप्रोक्ता हस्तिघोषामहाफला । धामार्गवोघोषकश्च हस्तिपर्णश्चसस्मृतः ॥ महाकोशातकीस्निग्धा रक्तपित्तानिलापहा ॥ ४२ ॥

घियातोरईके नाम गुण ॥

महाकोशातकी हस्तिघोषा महाफला धामार्गवघोषक और हस्तिपर्ण यह घियातोरईके नामहैं घिया तोरई स्निग्ध और रक्तपित्त तथा वातनाशक होतीहै ॥ ४२ ॥

अथ तोरई ॥

धामार्गवःपीतपुष्पो जालिनीकृतवेधना। राजकोशातकीचेति तथोक्काराजिमत्फला॥

राजकोशातकीशीता मधुराकफवातना। पित्तघ्नीदीपनीश्वास ज्वरकासकृमिप्रणुत्४३॥

तोरईके नाम गुण॥

धामार्ग पीतपुष्प जालिनी कृतवेधना राजकोशातकी और राजिमत्फला यह तोरईके नाम हैं तोरई शीतल मधुर कफकारक वादी पित्तनाशक दीपन और श्वास ज्वर खांसी तथा कृमि नाशक होती है॥ ४३॥ अथ पटोर॥

पटोलःकूलकस्तिक्तः पाण्डुकःकर्कशच्छदः। राजीफलःपाण्डुफलो राजेयश्चामृताफलः॥ बीजगर्भःप्रतीकश्च कुष्ठहाकासभञ्जनः। पटोलंपाचनंहृद्यं वृष्यंलघ्वग्निदीपनम्॥ स्निग्धोष्णंहन्तिकासास्र ज्वरदोषत्रयकृमीन्। पटोलस्यभवेन्मूलंविरेचनकरंसुखात्॥ नालंश्लेष्महरंपत्रं पित्तहारिफलंपुनः। दोषत्रयहरंप्रोक्तंतद्वत्तिक्तापटोलिका ४४॥

परवलके नाम गुण॥

पटोल कूलक तिक्त पांडुक कर्कशच्छद राजीफल पांडुफल राजेय अमृताफल बीजगर्भ प्रतीक कुष्ठहा और कासभंजन यह परवल के नामहैं परवल पाचक हृदयकोहित वीर्यवर्द्धक हलका दीपन स्निग्ध उष्ण और खांसी रक्तज्वर त्रिदोष तथा कृमिनाशकहोता है परवलकी जड सुखपूर्वक दस्तावर परवलकी डडी कफनाशक पत्ते पित्तनाशक और फल त्रिदोषनाशक होताहै और कडवे परवलमें भी इसी के समान फल होतेहैं॥ ४४॥ अथ कुन्दुरी॥

बिम्बीरक्तफलातुण्डी तुण्डकेरीचबिम्बिका। ओष्ठोपमफलाप्रोक्ता पीलुपर्णीचकथ्यते॥ बिम्बीफलंस्वादुशीतं गुरुपित्तास्रवातजित्। स्तम्भनंलेखनंरुच्यं विबन्धाध्मानकारकम्॥ ४५॥ कुंदरूके नामगुण॥

बिम्बी रक्तफला तुंडी तुडिकेरी बिम्बिका ओष्ठोपमफला और पीलुपर्णी यह कुंदरूके नाम हैं कुंदरू मधुर शीतल भारी रक्त पित्त नाशक वातघ्न स्तंभन लेखन रुचिकारक और विबन्धतथा आध्मान कारीहोताहै॥ ४५॥ शिम्बिशेवा॥

शिम्बिःशिम्बीपुस्तशिम्बी स्तथापुस्तकशिम्बिका। शिम्बीद्वयञ्चमधुरं रसंपाकेहिमंगुरु॥ बल्यंदाहकरप्रोक्तं श्लेष्मलंवातपित्तजित्॥ ४६॥

दोनोंसेमोंके नामगुण॥

शिम्बि और शिम्बी यह सेमके नामहैं दूसरी सेमको पुस्तशिम्बी और पुस्तशिम्बिका कहते हैं दोनों प्रकारकी सेम रस तथा पाकमें मधुर शीतल भारी बलकारी दाहकारक कफकारक और वात पित्त नाशकहोतीहैं॥ ४६॥ अथ सुवराशिम्बि॥

कोलशिम्बिःकृष्णफला तथापर्य्यंकपादिका। कोलशिम्बिःसमीरघ्नी गुर्व्युष्णाकफपित्तकृत्॥ शुक्राग्निसादकृद्रूक्षा रुचिकृद्बद्धविड्गुरुः॥ ४७॥

सुवरा सेमके नामगुण॥

कोलशिम्बि कृष्णफला और पर्य्यंकपादिका यह सुवरा सेमके नामहैं सुवरा सेम वातनाशक भारी उष्ण मलरोधक और कफ पित्त वीर्य मंदाग्नि तथा रुचिकारक होतीहै॥ ४७॥

अथ सोहिजनाफल ॥

सौभांजनफलंस्वादु कषायंकफपित्तनुत् । शूलकुष्ठक्षयंश्वास गुल्महृद्दीपनंपरम् ४८॥

सहजनके फलकेगुण ॥

सहजन के फल मधुर कसैले दीपन और कफ पित्त शूल कुष्ठ क्षय श्वास तथा गुल्म नाशक होतेहैं ॥ ४८ ॥

अथ भण्टा ॥

वृन्ताकंस्त्रीतुवार्ताकुर्भण्टाकीभाण्टिकापिच । वृन्ताकंस्वादुतीक्ष्णोष्णं कटुपाकमपित्तलम् ॥ ज्वरवातबलासघ्नं दीपनंशुक्रलंलघु । तद्बालंकफपित्तघ्नं वृद्धंपित्तकरंलघु ॥ वृन्ताकंपित्तलंकिञ्चित् अंगारपरिपाचितम् । कफमेदोनिलामघ्न मत्यर्थंलघुदीपनम् ॥ तदेवहिगुरुस्निग्धं सतैलंलवणान्वितम् । अपरंश्वेतवृन्ताकं कुक्कुटांडसमंभवेत् ॥ तदर्शःसुविशेषेण हितंहीनञ्चपूर्ववत् ॥ ४९ ॥

बैंगनकेनामगुण ॥

वृन्ताक वार्ताकू भंटाकी और भंटिका (यह तीन शब्द स्त्रीलिंग हैं) यह बैंगनकेनाम हैं बैंगन मधुर तीक्ष्ण उष्ण पाकमें कटु पित्तको न करनेवाले ज्वर नाशक वातघ्न कफघ्न दीपन वीर्यवर्द्धक और हलके होते हैं कच्चे बैंगनकफ पित्त नाशक और पके बैंगन पित्तवर्द्धक तथा भारी होते हैं अंगार आदि में भूनेहुए बैंगन कुछ पित्तवर्द्धक हलके दीपन और कफ मेद वात तथा आम दोषे नाशकहोते हैं इन्हीं में नोन और तेल मिलाने से भारी और स्निग्ध होतेहैं मुर्गेके अंडेके समान एकप्रकार के श्वेत बैंगन बवासीर में अत्यन्त पथ्य और पहले कहेहुए बैंगनों से गुणमें कमहोतेहैं ४९ ॥

अथ डिंडिश ॥

डिंडिशोरोमशफलो मुनिनिर्मितइत्यपि । डिंडिशोरुचिकृद्भेदी पित्तश्लेष्मापहःस्मृतः ॥ सुशीतोवातलोरूक्षो मूत्रलश्चाश्मरीहरः ॥ ५० ॥

टिंडेके नामगुण ॥

डिंडिश रोम शफल और निर्मित यह टिंडेकेनामहैं टिंडा रुचिकारक दस्तावर पित्तघ्न कफनाशक शीतल बादी रूखा मूत्रवर्द्धक और पथरी नाशकहोताहै ॥ ५० ॥

अथ पिंडारः ॥

पिंडारंशीतलंबल्यंपित्तघ्नंरुचिकारकम् । पाकेलघुविशेषेणविषशांतिकरंस्मृतम्५१॥

पिंडारकेगुण ॥

पिंडार शीतल बलकारक पित्तघ्न रुचिकारी शीघ्र पचनेवाला और विशेष करके विष नाशक होताहै ॥ ५१ ॥

अथ खेखसा ॥

कर्कोटकीपीतपुष्पा महाजालीतिचोच्यते । कर्कोटीमलहृत्कुष्ठ हल्लासारुचिनाशिनी ॥ श्वासकासज्वरान्हन्ति कटुपाकाचदीपनी ॥ ५२ ॥

खिगसाके नामगुण ॥

कर्कोटकी पीतपुष्पा और महाजाली यह खिगसाके नाम हैं- खिगसा मल कुष्ठ मतली अरुचि श्वास खांसी तथा ज्वरनाशक पाकमें कटु और दीपनहोताहै ॥ ५२ ॥

अथ करेरुआ ॥

डोडिकाविषमुष्टिश्च डोडीत्यपिसुमुष्टिका ।डोडिकापुष्टिदावृष्या रुच्यावह्निप्रदालघु ॥ हन्तिपित्तकफार्शांसि कृमिगुल्मविषामयान् ॥ ५३ ॥

करेरुआकेनामगुण ॥

डोडिका विषमुष्टि डोडी और समुष्टिका यह करेरुआके नामहैं करेरुआ पुष्टिकारी वीर्यवर्द्धक रुचिकारी दीपन हलका और पित्त कफ बवासीर कृमि गुल्म तथा विषरोग नाशकहोताहै ॥ ५३ ॥

अथ कण्टकारीफलम् ॥

कण्टकारीफलंतिक्तंकटुकंदीपनंलघुः । रूक्षोष्णंश्वासकासघ्नंज्वरानिलकफापहम् ५४ ॥

भटकटैयाकेफलकेगुण ॥

भटकटैया के फल तिक्त कटु दीपन हलके रूखे उष्ण और श्वास खांसी ज्वर वात तथा कफ नाशकहोतेहैं ॥ ५४ ॥ अथ नालशाकानि । तत्रसर्षपनालम् ॥

तीक्ष्णोष्णंसार्षपंनालंवातश्लेष्मव्रणापहम् ।कण्डूकृमिहरंदद्रूकुष्ठघ्नंरुचिकारकम् ५५ ॥

नालशाकोंकावर्णन ॥ सरसोंकीनालकेगुण ॥

सरसोंका नाल तीक्ष्ण उष्ण रुचिकारक और वात कफ घाव खुजली कृमि दाद तथा कुष्ठनाशक होताहै ॥ ५५ ॥

अथ कन्दशाकानि । तत्रसूरणस्यनामानिगुणाश्च ॥

सूरणःकन्दओलश्चकन्दलोऽशोघ्नइत्यपि । सूरणोदीपनोरूक्षःकषायःकण्डुकृत्कटुः ॥ विष्टम्भीविशदोरुच्यःकफार्शःकृन्तनोलघुः ॥ विशेषादर्शसेपथ्यःप्लीहागुल्मविनाशनः ॥ सर्वेषांकन्दशाकानांसूरण श्रेष्ठउच्यते ॥ दद्रुणांरक्तपित्तानांकुष्ठिनांनहितोहिसः । सन्धानयोगसम्प्राप्तःसूरणोगुणवत्तरः ॥ ५६ ॥

कन्दशाकोंकावर्णन ॥ जिमीकन्दके नामगुण ॥

सूरण कन्द ओल कंदूल और अर्शोघ्न यह ज़िमीकन्दके नाम हैं जिमीकन्द दीपन रूखा कषैला कटु खुजली करने वाला विष्टंभी विशद रुचिकारक हलका और कफ बवासीर प्लीहा गुल्म और विशेष करके बवासीर नाशक होता है यह ज़िमीकंद सब कन्दशाकोंमें श्रेष्ठहै दाद रक्त पित्त औरकुष्ठरोग वालोंको ज़िमीकंद हितकारी नहीं है ज़िमीकंद संधानके योगसे अधिक गुणदायक होताहै ५६॥

अथ आरु ॥

आरुकमप्यालूकं तत् कथितम् । (वीरसेनश्च) काष्ठालुक शंखालुक हस्त्यालुकानि कथ्यन्ते ॥ पिंडालुक सप्तालुक रक्तालुकानि चोक्तानि । काष्टालुकं काठिन्ययुक्तंकढारु । शङ्खालुकंश्वेततायुक्तम् (शङ्खारु) हस्त्यालुकंदीर्घतायुक्तं महाशरीरम् ॥ पिण्डालुकंवर्त्तुलम् (सुथनी) सप्तालुकंमधुरतायुक्तं रोमान्वितंदीर्घसुथनी । रक्तालुरक्तारुर तडा इतिच ॥ आलुकंशीतलंसर्वंविष्टम्भिमधुरंगुरु । सृष्टमूत्रमलंरूक्षंदुर्जररक्तपित्तनुत् ॥ कफानिलकरंबल्यं वृष्यंस्वल्पाग्निवर्द्धनम् ॥ ५७ ॥

आलूके नाम गुण ॥

आरुक आलुक और वीरसेन यह आलूके नामहैं काष्ठालुक शंखालुक हस्त्यालुक पिंडालुक मध्वालुक और रक्तालुक यह आलूके भेदहैं जो आलू कठिनतायुक्तहो वह काष्ठालुक (कठिया आलू) जो आलू श्वेतहो उसको शंखालुक जो आलू दीर्घ तथा बड़े आकारवालाहो उसको हस्त्यालुक गोल आलूको पिण्डालुक मधुरता युक्त रोमयुक्त तथा दीर्घ आलूको मध्वालुक और लाल आलूको रक्तालू (रतालू) कहतेहैं सम्पूर्ण आलू शीतल विष्टंभी मधुर भारी मलमूत्रनिस्सारी रूखे कठिनता से पचनेवाले रक्तपित्तघ्न कफकारी वादी वलकारक वीर्यवर्द्धक और दुग्धवर्द्धक होते हैं ॥ ५७ ॥

अथ अरुई ॥

रक्तालुभेदेपाटियातन्वीचपृथुतालुकी । आलुकीबलकृत्स्निग्धागुर्वीहृत्कफनाशिनी ॥ विष्टम्भकारिणीतैलेललितातिरुचिप्रदा ॥ ५८ ॥

अरुईके नाम गुण ॥

जोरतालू लंबा और छोटा हो उसको आलुकी (अरुई) कहतेहैं अरुई वलकारक स्निग्ध भारी हृदयके कफकी नाशक और विष्टंभी होतीहै यह तेलमें तलीहुई अत्यन्त रुचिकारकहोतीहै ॥ ५८॥

अथ वोचीमुरई नेवारमुरई ॥

मूलकंद्विविधंप्रोक्तंतत्रैकंलघुमूलकं । शालमर्कटकंविस्रंशालेयंमरुसम्भवम्॥चाणक्यमूलकंतीक्ष्णंतथामूलकपोतिका । नेपालमूलकंचान्यत्तद्भवेद्गजदन्तवत् ॥ लघुमूलंकटूष्णंस्याद्रुच्यंलघुचपाचनम्।दोषत्रयहरंस्वर्यंज्वरश्वासविनाशनम् ॥नासिकाकण्ठरोगघ्न नयनामयनाशनम् । महत्तदेवरूक्षोष्णंगुरुदोषत्रयप्रदम् ॥ स्नेहसिद्धंतदेवंस्यात्दोषत्रयविनाशनम् ॥ ५९ ॥

मूलीके नामगुण ॥

मूलीदोप्रकार की होतीहै लघुमूलक शालामर्कट विस्र शालेय मरुसंभव चाणक्य मूलक और मूलक पोतिका यह मूलीके नामहैं दूसरी हाथीके दांतकी समान बड़ी मूली नेपालदेशमें उत्पन्न होतीहै छोटीमूली कटु उष्ण रुचिकारक हलकी पाचक त्रिदोष नाशक स्वरकोहित और ज्वर श्वास नासिकाकेरोग कंठरोग तथा नेत्ररोगोंकी नाशकहोतीहै वडीमूली रूखी उष्ण भारी और त्रिदोषकारी होती है परन्तु वहभी तेलादिमें पकाईहुई त्रिदोष नाशक होता है ॥ ५९ ॥

अथ गाजर ॥

गाजरंगृञ्जनंप्रोक्तं तथानागरवर्णकम् । गाजरंमधुरंतीक्ष्णं तिक्तोष्णंदीपनंलघु ॥ संग्राहिरक्तपित्तार्शोग्रहणीकफवातजित् ॥ ६० ॥

गाजरके नामगुण ॥

गाजर गृंजन और नागर वर्णक यह गाजरके नामहैं गाजर मधुर तीक्ष्ण उष्ण तिक्त दीपन हलकी ग्राही और रक्त पित्त ववासीर ग्रहणी कफतथा वातनाशक होतीहै ॥ ६० ॥

अथकेराकन्द ॥

शीतलःकदलीकन्दोबल्य केश्योऽम्लपित्तजित्।वह्निकृद्दाहहारीचमधुरोरुचिकारकः६१॥

केलाकन्दके गुण ॥

केलाकन्द शीतल बलकारी केशोंकोहित अम्ल पित्तनाशक दीपन दाहनाशक मधुर और रुचि दायक होताहै ॥ ६१ ॥ अथमानकन्दः ॥

मानकःस्यात्महापत्रःकथ्यन्तेतद्गुणाअथ।मानकःशोथहच्छीतःपित्तरक्तहरोलघुः॥६२॥

मानकेचूके नामगुण ॥

मानकेचूको मानक और महापत्र कहतेहैं मानकेचू सूजन नाशक शीतल रक्त पित्तघ्न और हलका होताहै ॥ ६२ ॥ अथवाराही कन्दः ॥

गेठिइतिलोके । वाराहीपित्तलाबल्याकट्वीतिक्तारसायनी ॥ आयुःशुक्राग्निकृन्मेहकफकुष्ठानिलापहा ॥ ६३ ॥ वाराही कन्दकेगुण ।

वाराहीकन्द पित्तवर्द्धक बलकारक कटु तिक्तरसायन आयुतथा वीर्यवर्द्धक दीपन और प्रमेहकफ कुष्ठतथा बात नाशक होताहै ॥ ६३ ॥ अथहस्तिकर्णा ॥

गजकर्णातुतिक्तोष्णातथावातकफाञ्जयेत् । शीतज्वरहरीस्वादुःपाकेतस्यास्तुकन्दकः॥ पाण्डुशोथक्रिमिप्लीह गुल्मानाहोदरापहः। ग्रहण्यर्शोविकारघ्नोवनसूरणकन्दवत् ॥ ६४ ॥

हस्तिकर्णाके गुण ॥

हस्तिकर्णा तिक्त उष्ण पाकमें मधुर और बातकफ तथा शीतज्वर नाशक होतीहै इसका कन्द पांडु सूजन कृमि प्लीहा गुल्म आनाह और उदर रोगनाशक होताहै यह बनसूरण कुन्द के समान ग्रहणी तथा बवासीरका नाशक होताहै ॥ ६४ ॥ अथ केमुकं ॥

केमुआ इतिलोके । केमुकंकटुकंपाकेतिक्तंग्राहिहिमंलघुः ॥ दीपनंपाचनंहृद्यं कफपित्तज्वरापहम् । कुष्ठकासप्रमेहास्रनाशनंवातलंकटु ॥ ६५ ॥

केमुआके गुण ॥

केमुआ पाकमें कटु तिक्त ग्राही शीतल हलका दीपन पाचक हृदयकोहित बादी सलौना और कफ पित्तज्वर कुष्ठ खांसी प्रमेह तथा रक्तदोष नाशक होताहै ॥ ६५ ॥

अथकसेरुचिचोढ़ ॥

कसेरुद्विविधन्तत्तुमहद्राजकसेरुकम् । मुस्ताकृतिर्लघुस्याद्यत्तच्चिचोढ़मितिस्मृतम् ॥ कसेरुकद्वयं शीतंमधुरंतुवरंगुरु । पित्तशोणितदाहघ्नं नयनामयनाशनम् ॥ ग्राहिशुक्रानिलश्लेष्मारुचिस्तन्यकरंस्मृतम् ॥ ६६ ॥

कसेरूऔर चिचोढ़के गुण ॥

कसेरू दोप्रकारकाहै बड़े कसेरूको राजकसेरू और मोथाके समान आकृति वाले छोटे कसेरूको चिचोड कहतेहैं दोनोंकसेरू शीतल मधुर कपैले भारी पित्तघ्न रक्तनाशक दाह तथा नेत्ररोगके दूर करने वाले ग्राही और वीर्यबात कफ अरुचि तथा दूधके वर्द्धक होतेहैं ॥ ६६ ॥

अथकसेरुभिसीड़ा ॥

पद्मादिकन्दः शालूकङ्करहाटश्चकथ्यते । मृणालमूलम्भिस्साण्डं लजाशूकश्चकथ्य

ते ॥ शालूकंशीतलंवृष्यंपित्तदाहास्रनुद्गुरु । दुर्ज्जरंस्वादुपाकञ्च स्तन्यानिलकफ प्रदम्॥ संग्राहिमधुरं रूक्षम्भिसाण्डमपितद्गुणम् ॥ ६७ ॥

कसेरूभिसीड़ाके नामगुण ॥

कमल आदिके कन्दको शालूक करहाट मृणालमूल भिस्सांड और जलालूक कहते हैं कमलका कन्द शीतल वीर्य्यवर्द्धक पित्तघ्न दाह नाशक रक्तदोपनाशक भारी कठिनता से पचनेवाला पाकमें मधुर दुग्ध वर्द्धक वादी कफकारक ग्राही मधुर और रूखाहोता है भसीड़में भी इसीके समान गुणहोते हैं ॥ ६७ ॥

बालंह्यनार्तवंजीर्णंव्याधितः क्रिमिभक्षितम् ॥ कन्दंविवर्ज्जयेत् सर्वंयद्वाऽग्न्यादि विदूषितम् । अतिजीर्णमकालोत्थं रूक्षंसिद्धमदेशजम् ॥ कर्कशंकोमलंचाति शीतव्यालादिदूषितम्। संशुष्कंसकलंशाकं नाश्नीयान्मूलकंविना॥ अतैलादिसिद्धं रूक्षंअदेशजमशुभस्थानजम् ॥ ६८ ॥

कच्चा विनासमयके उत्पन्न हुआ पुराना व्याधियुक्त कीड़ोंकाखायाहुआ और अग्निसे दूषित ऐसे कन्दको सदैव त्याग करदे बहुत पुराने अकालमें उत्पन्नहुए तैलादिक विना पकायेहुए बुरेस्थान में उत्पन्न हुए कठोर बहुतको मल पाला तथा सर्पादिकसे दूषित और सूखे सब शाक न खाने चाहिये परन्तुमूली सूखीहुईभी अहित नहींहै ॥ ६८ ॥

अथसंस्वेदज शाकानितेषांनामानि गुणाश्च ॥

उक्तंसंस्वेदजंशाकम्भूमिच्छत्रंशिलीन्ध्रकम् । क्षितिगोमयकाष्ठेषु वृक्षादिषुतदुद्भवेत्। सर्वेसंस्वेदजाःशीतादोषलाः पिच्छलाश्चते ॥ गुरवश्छर्यतीसारज्वरश्लेष्मामयप्रदाः ॥ श्वेतशुभ्रस्थलीकाष्ठवंशगोत्रणसम्भवाः ॥ नातिदोषकरास्तेस्युः शेषास्तेभ्योविगर्हिता संस्वेदजाश्छाताइतिलोके ॥ ६९ ॥

इति श्रीभावप्रकाशेशाकवर्गः ॥

संस्वेदज [छाता] शाकोंका वर्णन। इनके नाम और गुण ॥

पृथ्वी गोवर काष्ठ और वृक्षादिकोंपर स्वेदजशाक उत्पन्न होतेहैं इनको भूमिच्छत्र और शिलीन्ध्रक कहतेहैं सवप्रकारके स्वेदजशाक शीतल दोषकारी पिच्छिल भारी और छर्दि अतीसार ज्वर तथा कफ रोग करनेवाले होतेहैं जो स्वेदजशाक पवित्रस्थान काष्ठ बांस तथा वृक्षमें उत्पन्न होतेहैं वह अत्यन्त दोषकारी नहीं होतेहैं इनके सिवाय सव स्वेदजशाक निन्दितहैं ॥ ६९ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेशाकवर्गःसमाप्तः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

भाव प्रकाश

द्वितीयभाग ॥

अथ मांसवर्गः । तत्र मांसस्य नामानि ॥

मांसंतुपिशितंक्रव्यमामिषंपललम्पलम् । मांसंवातहरंसर्वंबृंहणंबलपुष्टिकृत् ॥ प्रीणनं गुरुहृद्यञ्चमधुरंरसपाकयोः ॥ १ ॥

अथ मांसवर्ग । मांसके नाम ॥

मांस पिशित क्रव्य आमिष पलल और पल यह मासके नामहैं सबप्रकारका मांस वातनाशक धातुवर्द्धक बल तथा पुष्टताकारक प्रीति उपजानेवाला भारी हृदयको हित और रस तथा पाक में मधुर होताहै ॥ १ ॥ अथ तद्भेदाः ॥

मांसवर्गोद्विधाज्ञेयोजाङ्गलोऽनूपभेदतः २(तत्र जांगलस्यलक्षणंगुणाश्च) मांसवर्गोऽत्रजंगालाविलस्थाश्चगुहाशयाः तथापर्णमृगाज्ञेयाविष्किरःप्रतुदोऽपिच । प्रसहाः (अथग्राम्याअष्टौजांगलजातयः) जांगलामधुरारूक्षास्तुवराःलघवस्तथा । बल्यास्ते बृंहणावृष्यादीपनादोषहारिणः ॥ मूकतांमिन्मिनत्वंचगद्गदत्वार्दितेतथा । बाधिर्य्यमरुचिच्छर्दिप्रमेहमुखजान्गदान् ॥ श्लीपदंगलगण्डञ्चनाशयत्यनिलामयान् ॥ ३ ॥

मांसकेभेद ॥

मांस दो प्रकारकाहै एक जांगल दूसरा आनूप २ [जांगलके लक्षण गुण] जंघाल विलस्थ गुहाशय पर्णमृग विष्किर प्रतुदप्रसह और ग्राम्य यह आठप्रकारके जागलमांसहैं जागल मांस मधुर कषेला रूखा हलका बलकारी धातुवर्द्धक वीर्यवर्द्धक दीपन दोषनाशक और मूकता मिनमिनायन गद्गदता अर्दित बधिरता अरुचि छर्दि प्रमेह मुखरोग श्लीपद गलगंड तथा वात रोगनाशक होताहै ॥ ३ ॥

अथा नूपस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

कूलेचराःप्लवाश्चापिकोशस्थाःपादिनस्तथा । मत्स्याएतेसमाख्याताःपञ्चधाऽनूपजातयः ॥ अनूपामधुराःस्निग्धागुरवोवह्निसादनाः । श्लेष्मलापिच्छलाश्चापिमांसपुष्टिप्रदाभृशम् ॥ तथाभिष्यन्दिनस्तेहिप्रायःपथ्यतमाःस्मृताः ॥ ४ ॥

अनूपमांसके लक्षण गुण ॥

कूलेचर प्लव कोशस्थ पादी और मत्स्य यह पांच प्रकारका अनूप मांस होताहै अनूप मास मधुर स्निग्ध भारी मन्दाग्निकारी कफकारी पिच्छिल अत्यन्त मांस पोषक अभिष्यन्दी और प्रायः पथ्य होताहै ॥ ४ ॥

अथ जांगलानांगणनाविशिष्टगुणाश्च ॥

हरिणैनकुरङ्गर्ष्यपृषतन्यङ्कुसम्बराः। राजीवोऽपिचमुण्डीचेत्याद्याःजंघालसंज्ञकाः॥ हारिणस्ताम्रवर्णःस्यादेनःकृष्णःप्रकीर्त्तितः । कुरङ्गईषत्ताम्रःस्यादेनतुल्याकृतिर्महान् ॥ ऋष्योनीलांगकोलोकेसरोह्यइतिकीर्त्तितः । पृषतश्चन्द्रविन्दुःस्याद्धरिणात्किंचिदल्पकः ॥ न्यंकुर्बहुविषाणोऽथसम्बरोगवयोमहान्। राजीवस्तुमृगोज्ञेयोराजभिःपरितोवृतः॥ योमृगःशृंगहीनःस्यात्समुण्डीतिनिगद्यते । जंघालाःप्रायशःसर्वेपित्तश्लेष्महराःस्मृताः ॥ किंचिद्वातकराश्चापिलघवोवलवर्द्धनाः ॥ ५ ॥

। जंघालोंकी गणना और विशेषगुण ॥

हरिण एण कुरंग ऋष्य पृषत न्यंकु संवर राजीव और मुंडी यह, जंघाल कहलातेहैं ताम्रवर्ण मृग को हरिण कृष्णवर्ण को एण कुछ ताम्रवर्ण बड़े तथा कृष्ण मृगके, समान आकृतिवाले हिरणको कुरंग नीलवर्ण हरिणको ऋष्य (यह सरोही नामसे प्रसिद्धहै) हिरणकी अपेक्षा कुछ छोटेतथा चन्द्रविन्दुयुक्त मृगको पृषत् और बहुत सींगवालेको न्यंकु बड़े शरीरवालेको सम्बर अथवा गवय,सवओर रेखाओंसे युक्त मृगको राजीव और सींग रहित मृगको मुंडी कहते हैं प्रायःसम्पूर्ण जंघाल पित्त कफनाशक कुछ वादी हलके और वलवर्द्धक होतेहैं ॥ ५॥

अथ विलेशयानां गणनागुणाश्च ॥

गोधाशशभुजंगाखुशल्लक्याद्याविलेशयाः । विलेशयावातहरामधुरारसपाकयोः ॥ वृंहणावद्धविट्मूत्रावीर्य्योष्णाश्चप्रकीर्त्तिताः ॥ ६ ॥

विलेशयों की गणना और गुण ॥

गोह खरगोश सर्प चूहा और सेई आदिक विलेशय कहलातेहैं विलेशय वातनाशक रसतथा पाकमें मधुर धातुवर्द्धक मलमूत्र रोधक और वीर्यमें उष्ण होतेहैं ॥ ६ ॥

अथ गुहाशयानांगणना गुणाश्च ॥

सिंहव्याघ्रवृकाऋक्षतरक्षुद्वीपिनस्तथा। वभ्रूजम्बूकमार्ज्जाराइत्याद्याःस्युर्गुहाशयाः॥ तरक्षुःहुडहाइतिलोके । द्वीपीचिताव्याघ्रइतिलोके ॥ स्थूलपुच्छोरक्तनेत्रोवभ्रूःदेहःसनाकुलः । गुहाशयोवातहरागुरूष्णामधुराश्चते ॥ स्निग्धावल्याहितानित्यंनेत्रगुह्यविकारिणाम् ॥ ७ ॥

गुहाशयों की गणना और गुण ॥

सिंह व्याघ्र भेड़िया रींछ चीतल चीता व्याघ्र मोटी पूंछ तथा लालनेत्रवाला बड़ानोला सियार और विलार इत्यादिक गुहाशय कहाते हैं गुहाशयोंका मांस वात नाशक भारी उष्ण मधुर स्निग्ध वलकारी और नेत्र तथा गुदाके रोगवालों को सदैव हितहोताहै ॥ ७ ॥

अथ पर्णमृगानां गणना गुणाश्च ॥

वनौकोवृक्षमार्ज्जारोवृक्षमर्कटिकादयः । एतेपर्णमृगाःप्रोक्ताःसुश्रुताद्यैर्महर्षिभिः ॥ वनौकावानरःवृक्षमार्ज्जारोवृक्षविडालः । वृक्षमर्कटिकारूपीइतिलोके । स्मृताःपर्णमृगाःवृष्याश्चक्षुष्याःशोषिणेहिताः । श्वासार्शःकासशमनाःसृष्टमूत्रपुरीषिकाः ॥ ८ ॥

पर्णमृगों की गणना और गुण ॥

वानर वृक्ष विल्लार और वृक्षमर्कटिका (रूखी) इत्यादि पर्णमृग कहलातेहैं पर्णमृगोंका मांस वीर्य वर्द्धक नेत्ररोग तथा शोषरोगमेंहित मलमूत्र निस्सारक और श्वास ववासीर तथाखांसी नाशकहोताहै ८

अथ विष्किराणांगणनागुणाश्च ॥

वर्त्तकालावकवर्त्तीरकपिञ्जलकतित्तिराः। कुलिंगकुक्कुटाद्याश्चविष्किराःसमुदाहृताः॥विकीर्य्यभक्षयन्त्येतेयस्मात्तस्माद्विविष्किराः। कपिञ्जलइतिप्राज्ञैःकथितोगौरतित्तिरिः॥ कुलिंगःगवरैयाइतिलोके। विष्किराःमधुराःशीताःकषायाःकटुपाकिनः। बल्यावृष्यास्त्रिदोषघ्नाःपथ्यास्तेलघवःस्मृताः ९ ॥ विष्किरों की गणना और गुण ॥

बटेर लवा वर्त्तीर श्वेततीतर तीतर गौरैया और मुर्गा आदि विष्किरकहलातेहैं यहबखेरकरखातेहैं इससे इनको विष्किर कहते हैं विष्किर मांस मधुर शीतल कषैला पाकमें कटु बलकारक वीर्यवर्द्धक त्रिदोप नाशक पथ्य और हलका होताहै ॥ ९॥

अथ प्रतुदानांगणनागुणाश्च ॥

हरीतोधवलःपाण्डुश्चित्रयक्षोबृहच्छुकः । पारावतःखञ्जरीटःपिकाद्याःप्रतुदाःस्मृताः॥ प्रतुद्यभक्षन्त्येतेतुण्डेनप्रतुदास्ततः। हारीतःहारिलइतिलोके ॥ कपोतोःधवलपाण्डुःशतपत्रोबृहच्छुकः। दार्वाघाटइत्यमरः। कठफोरवाइतिलोके ॥ प्रतुदामधुराःपित्तकफघ्नास्तुवराहिमाः। लघवोबद्धवर्चस्काकिञ्चिद्वातकराःस्मृताः॥ १०॥

प्रतुदोंकी गणना और गुण ॥

हारिल कठफुरवा जंगलीतीतर पहाड़ीतोता कबूतर खंजन और कोयल आदिक प्रतुद कहलातेहैं यह ठोंटमार कर खातेहैं इसी से प्रतुद कहातेहैं प्रतुदोंका मांस मधुर पित्तघ्न कफ नाशक कषैला शीतल हलका मल रोधक और कुछ वादी होता है ॥ १०॥

अथ प्रहसानाङ्गणनागुणाश्च ॥

काकोगृध्रउलूकश्चचिल्लश्चशशघातकः। चाषोभासश्चकुररइत्याद्याःप्रसहाःस्मृताः॥ शश घातकः। बाजइतिलोके। चाषंनीलकण्ठइतिलोके। भासोगृध्रविशेषस्यात्। कुररःकराकुरइतिलोके। प्रसहाःकीर्त्तिताःएतेप्रसह्याच्छिद्यभक्षणात्। प्रसहाःखलुवीर्योष्णास्तन्मांसंभक्षयन्तिये॥ तेशोषभस्मकोन्मादशुक्रक्षीणाभवन्तिहि॥ ११॥

प्रसहों की गणना और गुण ॥

काक गृध्र उलूक चील बाज नीलकंठ गृध्र विशेष और कुरर आदिक प्रसह कहाते हैं यह जबरदस्ती छीनकर खातेहैं इस हेतु से प्रसह कहातेहैं प्रसह मांस वीर्य में उष्ण होताहै जोकोई इनके मांसको खातेहैं वह शोष भस्मक तथा उन्माद रोगसे व्याकुल और क्षीण वीर्य होजाते हैं॥ ११॥

अथ ग्राम्याणांगणनागुणाश्च ॥

छागमेषवृषाश्चाश्वाःग्राम्याःप्रोक्तामहर्षिभिः। ग्राम्याःवातहराःसर्वेदीपनाःकफपित्तलाः॥ मधुरारसपाकाभ्यांबृंहणाबलवर्द्धनाःइत्यनूपाजन्तवः॥ १२॥

ग्राम्यों की गणना और गुण ॥

बकरा मेढ़ा वैल और घोड़े आदिको ग्राम्य कहतेहैं संपूर्ण ग्राम्यमांस वात नाशक दीपन कफ पित्त वर्द्धक रस और पाकमें मधुर धातुवर्द्धक और वलवर्द्धक होतेहैं ॥ १२ ॥

अथ कूलेचराणांगणनागुणाश्च ॥

लुलापगण्डवाराहचमरीवारणादयः। एतेकूलचराप्रोक्ताःयतःकूलेचरन्त्यपाम् ॥ लुलापोमहिषगण्डः,खड्गः, (चमरीचमरपुच्छिगौ) कूलेचरामरुत्पित्तहराद्दष्याबलाव हाः। मधुराःशीतलाःस्निग्धामूत्रलाःश्लेष्मवर्द्धनाः ॥ १३ ॥

कूलेचरों की गणना और गुण ॥

भैंसा गैंडा सूअर सुरागौ और हाथी आदिक कूलेचर कहलातेहैं क्योंकि यह जल के किनारे पर चरते हैं कूलेचरों का मांस वात पित्तनाशक वीर्यवर्द्धक वलकारी मधुर शीतल स्निग्ध मूत्रकारक और कफ वर्द्धक होताहै ॥ १३ ॥

प्लवानांगणनागुणाश्च ॥

हंससारसकारण्डवकक्रौञ्चसरारिकाः। नन्दीमुखीसकादम्बावलाकाद्याःप्लवाःस्मृताः ॥ प्लवंतिसलिलेयस्मादेतेतस्मात्प्लवाःस्मृताः॥कारण्डः कपर्द्दिकास्योवृहद्वकाश "क्रौञ्चःर हिहंगःस्यात्" टेङ्कइतिलोके शरारिकासिन्धुइति ॥ स्थूलाकठोराद्वत्ताचयस्याश्चञ्चूपरि स्थिता। गुटिकाजम्बुसदृशीप्रोक्तानन्दीमुखीतिसा ॥ कादम्बःकरवाइतिलोके । वलाका वगुलीइतिलोके ॥ प्लवापित्तहरास्निग्धामधुरागुरवोहिमाः । वातश्लेष्मप्रदाश्चापिवल शुक्रकराःसराः ॥ १४ ॥

प्लवों की गणना और गुण ॥

हंस सारस कारंड वगला ढेंक शराविक नंदीमुखी वत्तक और वलाका (वगला विशेष) आदिको प्लव कहतेहैं क्योंकि यह जलपर तैरतेहैं जिसपक्षी की चोंचपर स्थूल कठोर और गोलजामन के समान गोलीसी वनीहो उसको नन्दीमुखी कहतेहैं प्लवोंका मांस पित्तघ्न स्निग्ध मधुर भारी शीतल वादी कफकारक वलवीर्य वर्द्धक और दस्तावर होताहै ॥ १४ ॥

अथ कोशस्थानांगणनागुणाश्च ॥

शङ्खःशङ्खनखश्चापिशुक्तिशम्बूककर्कटाः । जीवाएवंविधाश्चान्येकोशस्थाःपरिकी र्तिताःशङ्खनखःक्षुद्रशङ्खः ॥ कोशस्थामधुराःस्निग्धाःवातपित्तहराहिमाः । बृंहणावहुव र्चस्काद्दष्याश्चवलवर्द्धनाः ॥ १५ ॥

कोशस्थोंकी गणना और गुण ॥

शंख क्षुद्रशंख सीपी घोंघाओर कर्कट इसप्रकार के अनेक जीव कोशस्थ कहाते हैं कोशस्थों का मांस मधुर स्निग्ध वातघ्न पित्तनाशक शीतल धातुवर्द्धक वहुत मलकारी और वीर्यतथा वल- वर्द्धक होता है ॥ १५ ॥

अथपादिनांगणनागुणाश्च ॥

कुम्भीर कूर्मनक्राश्चगोधामकरशङ्कवः । घण्टिकः शिशुमारश्चेत्यादयःपादिनः स्मृताः ॥ कुम्भीरोमारकोजलजन्तुःकूर्मः कच्छपः नक्रःनाकइतिलोकेगोधागोहिजलज-

न्तुः। मकरमगरइतिलोके। शंकुःसाकुचइतिलोके॥ घण्टिकःघरीआलइतिलोके। शिशुमारःसूसइतिलोके। पादिनोऽपिचयेतेतुकोशस्थानाङ्गुणैःसमाः॥ १६॥

पादियों की गणना और गुण॥

कुम्भीर (मारनेवाला जल का जीव) कछुआ नाक गोह मगर साकुच घड़ियाल और सूंस आदिक पादिक कहलाते हैं पादियों में कोशस्थों के समान गुण कहते हैं॥ १६॥

अथ मत्स्यनामानिगुणाश्च॥

मत्स्योमीनोविसारश्चझषोवैशारिणोऽण्डजः। शकुलीपृथुरोमाचससुदर्शनइत्यपि॥ रोहिताद्यास्तुयेजीवास्तेमत्स्याःपरिकीर्तिताः। मत्स्याःस्निग्धोष्णमधुरागुरवःकफपित्तलाः॥ वातघ्नाबृंहणावृष्यारोचकाबलवर्द्धनाः। मद्यव्यवायसक्तानांदीप्ताग्नीनाञ्च पूजिताः॥ १७॥

मछलियों के नाम और गुण॥

मत्स्य मीन विसार झष वैसारिण अंडज शकली पृथुरोमा और सुदर्शन यह मछलियों के नाम हैं रोहू आदि जीवों को मत्स्य कहते हैं मछली स्निग्ध उष्ण मधुर भारी कफ वर्द्धक पित्तकारक वातघ्न धातुवर्द्धक वीर्यवर्द्धक रुचिकारक और बलवर्द्धक होती हैं यह मद्य पीने वाले मैथुन में आशक्त और दीप्ताग्नि वाले पुरुषों को हितहै॥ १७॥

अथ जङ्गालादीनांनामानिगुणाश्चतत्रजङ्गालेषुहरिणस्यगुणाः॥

हरिणःशीतलोबद्धविण्मूत्रोदीपनोलघुः। रसेपाकेचमधुरःसुगन्धिःसन्निपातहा॥ १८॥

जंगाल आदिकोंके नामगुण। जंगालों में हरिणके गुण॥

हरिण का मांस शीतल मलमूत्र रोधक दीपन हलकारस तथापाक में मधुर सुगन्धित और सन्निपात नाशकहोता है॥ १८॥

करीसाइलहरिणः॥

एणःकषायोमधुरःपित्तासृक्कफवातहृत्। संग्राहीरोचनोबल्योज्वरप्रशमनःस्मृतः॥ १९॥

एणके मांस के गुण॥

काले हरिण का मांस कषैला मधुर ग्राही रुचि कारक बलवर्द्धक और पित्त रक्त कफ वात तथा ज्वर नाशक होताहै॥ १९॥

अथ कुरङ्गः॥

कुरंगोबृंहणोबल्यःशीतलःपित्तहृद्गुरुः। मधुरोवातहृद्ग्राहीकिञ्चित्कफकरःस्मृतः॥ २०॥

कुरंगके गुण॥

कुरंगका मांस धातुवर्द्धक बलकारी शीतल पित्तघ्न भारी मधुर वातघ्न ग्राही और कुछ कफकारकहोता है॥ २०॥

अथ रोऊ॥

ऋष्योनीलाण्डकश्चापिगवयोरोऊइत्यपि। गवयोमधुरोबल्यःस्निग्धोष्णःकफपित्तलः॥ २१

ऋष्य के नाम गुण॥

ऋष्य नीलाण्डक गवय और रोज यह ऋष्यकेनामहैं ऋष्यका मांस मधुरबलकारक और स्निग्ध उष्ण और कफपित्त वर्द्धक होताहै॥ २१॥

अथ चित्तरि ॥

पृपतस्तुभवेत्स्वादुर्ग्राहकःशीतलोलघुःदीपनोरोचनःश्वासज्वरदोपत्रयास्रजित्२२॥

चित्तर के गुण ॥

चित्तर का मांस मधुर ग्राही हलका दीपन रुचि कारक और श्वास ज्वर त्रिदोष तथा रक्तनाशक होता है ॥ २२ ॥

अथ वारहासिङ्घी ॥

न्यंकुःस्वादुर्लघुर्बल्यो वृष्योदोषत्रयापहः २३ (अथ सावर) सावरंपललंस्निग्धं शीतलंगुरु चस्मृतम् । रसेपाकेचमधुरं कफदंरक्तपित्तहृत् ॥ राजिवस्तुगुणैर्ज्ञेयः पृपतेनसमोजनैः ॥ २४ ॥

वारहसिंहा के गुण ॥

वारहसिंहाका मांस मधुर हलका वलकारी वीर्य वर्द्धक और त्रिदोष नाशक होताहै २३(सावरके गुण)सावर का मांस स्निग्ध शीतल भारी रसतथा पाकमें मधुर कफ कारक और रक्त पित्त नाशक होताहै राजीव में चित्तर के समान गुण होते हैं ॥ २४ ॥

अथ पीठी ॥

मुण्डीतुज्वरकासाम्ल क्षयश्वासापहोहिमः २५ (अथ विलेशयेपु तत्रशशःस्यात्) लम्बकर्णःशशःशूली लोमकर्णोविलेशयः । शशःशीतोलघुर्ग्राही रूक्षस्वादुःसदाहितः ॥ वह्निकृत्कफवातघ्नो वातसाधारणःस्मृतः । ज्वरातीसारशोषास्रश्वासामयहरश्चसः ॥ २६ ॥

मुंडी मृगके गुण ॥

मुंडी का मांस ज्वर खांसी रक्त क्षय तथा श्वास नाशक और शीतल होता है २५ (विलेशयोंमें से खरगोशके नामगुण) लंवकर्ण शशशूली लोमकर्ण और विलेशय यह खरगोश के नाम हैं खरगोशका मांस शीतल हलका ग्राही रूखा मधुर सदैवहितकारी दीपन वातको ठीक करनेवाला और कफ पित्त ज्वर अतीसार शोषरक्त दोष तथा श्वास नाशक होताहै ॥ २६ ॥

अथ साही ॥

सेधातुशल्यकःश्वावित्कथ्यन्तेतद्गुणाअथ।शल्यकःश्वासकासास्रशोपदोपत्रयापहः२७॥

सेई के नाम गुण ॥

सेधा शल्यक और श्वावित् यह सेई के नाम हैं सेई का मांस श्वास खांसी रक्त दोष शोषतथा त्रिदोष नाशक होता है ॥ २७ ॥

अथ पक्षिणांनामानि गुणाश्च ॥

पक्षीखगोविहङ्गश्च विहगश्चविहङ्गमः । शकुनिर्विःपतत्रीच विष्किरोविकिरोऽण्डजः ॥ धान्याःकूलेचरायेऽत्र तेषांमांसंलघूत्तमम् । आनूपंवलकृन्मांसं स्निग्धंगुरुतरं स्मृतम् ॥ २८ ॥

पक्षियों के नाम और गुण ॥

पक्षी खग विहंग विहग विहंगम शकुनि विपतत्रि विष्किरविकिर और अंडज यहपक्षियोंके नामहैं इनमें से कूलेचर पक्षियों का मांसश्रेष्ठ और हलका होता है अनूप देशमें उत्पन्न होनेवाले पक्षियों का मांस वलकारक स्निग्ध और भारी होता है ॥ २८ ॥

तेषुविष्किरेषुवटेरवटइ ॥

वर्त्तीकोवर्त्तकश्चित्रस्ततोऽन्यावर्त्तकास्मृताः । वर्त्तकोऽग्निकरःशीतो ज्वरदोषत्रया पहः ॥ सुरुच्यःशुक्रदोबल्यो वर्त्तकाल्पगुणास्ततः ॥ २९ ॥

वटेर के नाम गुण ॥

वर्त्तीक वर्त्तक और चित्र यह वटेर के नाम हैं एकप्रकार की दूसरी वटेरको वर्त्तका कहते हैं वटेर दीपन शीतल ज्वरघ्न त्रिदोष नाशक रुचिकारी वीर्य वर्द्धक और बलकारक होता है और वर्त्तका में इससे कम गुण होते हैं ॥ २९ ॥ अथ लावा ॥

लावाविष्किरवर्गेषु तेचतुर्धामताबुधैः । पांशुलोगौरकोऽन्यस्तु पौण्डरीकोदरस्तथा ॥ लावावह्निकराःस्निग्धा गरघ्नाग्राहिकाहिताः । पांशुलःश्लेष्मलस्तेषु वीर्योष्णोह्यनिलना शनः ॥ गौरोलघुतरोरूक्षो वह्निकारीत्रिदोषजित् । पौण्ड्रकःपित्तकृत्किंचिल्लघुवातकफा पहः ॥ दर्भरोरक्तपित्तघ्नो हृदामयहरोहिमः ॥ ३० ॥

लवा के नाम गुण ॥

विष्किरों में से लवाचार प्रकार का होता है पांशुल गौरक पौंड्रक और दर्भर लवाका मांस अग्निकारक स्निग्ध विषदोष नाशक ग्राही और हितकारी होता है पांशुलका मांस कफकारी उष्ण तथा वात नाशक गौरक का मांस बहुत हलका रूखादीपन तथा त्रिदोष नाशक पौंड्रकका मांस पित्त वर्द्धक कुछहलका तथा वात कफ नाशक और दर्भरका मांस रक्त पित्तघ्न हृदय रोग नाशक तथा शीतल होता है ॥ ३० ॥ अथ वगेरा ॥

वालीकोवर्त्तिचटकोवार्त्तीकश्चैवसस्मृतः ।वालीकोमधुरःशीतोरूक्षश्चकफपित्तनुत् ३१॥

वगेराके नाम गुण ॥

वालीक वात चटक और वर्तीक यह वगेराके नाम हैं वगेरा शीतल मधुर रूखा और कफ पित्त नाशक होता है ॥ ३१ ॥ अथ कृष्णतित्तिरि गौरतित्तिरी ॥

तित्तिरिःकृष्णवर्णःस्याच्चित्रोऽन्योगौरतित्तिरिः । तित्तिरिर्बलदोग्राही हिक्कादोषत्रयाप हः ॥ श्वासकासज्वरहरस्तस्माद्गौराधिकोगुणैः ॥ ३२ ॥

काले और गोरेतीतरके नाम गुण ॥

काले तीतर को कृष्ण तित्तिर और चित्र वर्णवाले तीतरको गौर तित्तिर कहते हैं तीतर बलकारी ग्राही और हिचकी त्रिदोष श्वास खांसी तथा ज्वरनाशक होताहै गौरे तित्तिर में इससे अधिक गुण होते हैं ॥ ३२ ॥ अथ गवरैय्या ॥

चटकःकलविंकःस्यात् कुलिङ्गःकालकण्ठकः । कुलिंगःशीतलःस्निग्धः स्वादुःशुक्र कफप्रदः ॥ सन्निपातहरोवेश्म चटकश्चातिशुक्रलः ॥ ३३ ॥

गौरैया के नाम गुण ॥

चटक कलविंक कुलिंग और काल कंटक यह गौरैया के नाम हैं गौरैया शीतल स्निग्ध मधुर वीर्य वर्द्धक कफकारी और सन्निपात नाशक होती है घरकी गौरैया बहुत वीर्य वर्द्धक होती हैं ॥ ३३ ॥

कुक्कुटोवन कुक्कुटः ॥

कुकुटःकृकवाकुःस्यात् कलयश्चरणायुधः । ताम्रचूडस्तथादक्षो पातर्णादीशिखण्डिकः ॥ कुक्कुटोबृंहणःस्निग्धो वीर्य्योष्णोऽनिलहृद्गुरुः। चक्षुष्यःशुक्रकफकृत् बल्योवृष्य कषायकः ॥ आरण्यकुक्कुटःस्निग्धो वृंहण श्लेष्मलोगुरुः । वात पित्त क्षय वमि विषम ज्वर नाशनः ॥ ३४॥ मुर्गा और वनमुर्गे के नाम गुण ॥

कुक्कुट कृकवाकु कालज चरणायुध ताम्रचूड दक्ष पातर्णादी और शिखंडिक यह मुर्गेके नाम हैं मुर्गा धातु वर्द्धक स्निग्ध उष्ण वातनाशक भारी नेत्रोंको हित कफकारक बलकारी पोषक और कषैला होता है वनमुर्गा स्निग्ध धातु वर्द्धक कफकारक भारी और वात पित्त क्षय छर्दि तथा विषम ज्वर नाशक होता है ॥ ३४ ॥ प्रतुदेषुहारीतस्य ॥

हारीतोरक्तपीतःस्याद्धारितोऽपिसकथ्यते । हारीतोहारीलइति लोके ॥ हारीतोरूक्षउष्णश्चरक्तपित्तकफापहः ॥ स्वेदस्वरकरःप्रोक्त ईषद्वातकरश्चसः ॥ ३५ ॥

प्रतुदों में हारिल के नाम गुण ॥

हारीत (हारिल) रक्तथा पीतवर्ण होता है इसको हारित भी कहते हैं हारिल रूखा उष्ण रक्त पित्त नाशक कफघ्न श्वेतकारी स्वर को हित और कुछ वादी होता है ॥ ३५ ॥

पाण्डुधवलपाण्डू ॥

पाण्डुस्तुद्विविधोज्ञेयश्चित्रपक्षःकलध्वनिः ।द्वितीयोधवलःप्रोक्तःसकपोतस्फुटस्वनः ॥ चित्रपक्षःपित्तरोपा इतिलोके ॥ चित्रपक्षःकफहरोवातघ्नोग्रहणीप्रणुत् ॥ धवलःपाण्डुरुद्दिष्टोरक्तपित्तहरोहिमः ॥ ३६ ॥ पांडु(पिंडकी)के नाम गुण ॥

पांडु दो प्रकारका होता है एकतो चित्र पक्षतथा कलध्वनि कहाता है और दूसरा धवल कपोत तथा स्फुटस्वन कहाता है पहला कफ वात तथा ग्रहणी नाशक और दूसरा रक्त पित्त नाशक तथा शीतल होता है ॥ ३६ ॥ अथ मयूरः ॥

मयूरश्चन्द्रकीकेकीमेघरावोभुजङ्गभुक् । शिखीशिखावलोवर्हीशिखण्डीनीलकण्ठकः ॥ शुक्लोपाङ्गःकलापीचमेघनादःकलाप्यपि । रसेपाकेचमधुरःसंग्राहीवातशान्तिकृत्॥ ३७॥

मयूर के नाम गुण॥

मयूर चन्द्रकी केकी मेघरव भुजंगभुक् शिखी शिखावर वर्ही शिखंडी नील कंठक शुक्लोपांग कपाली मेघनाद और कपाल यह मयूरकेनामहैं मयूर रस तथा पाकमें मधुरग्राही और वातनाशकहोतेहैं ३७ ॥

कबूतर परेवा ॥

पारावतःकलरवःकपोतोरक्तवर्द्धनः । पारावतोगुरुःस्निग्धोरक्तपित्तानिलापहः ॥ संग्राहीशीतलस्तज्ज्ञैःकथितोवीर्य्यवर्द्धनः ॥ ३८ ॥

कबूतरकेनामगुण ॥

पारावत कलरव कपोत और रक्तलोचन यह कबूतर के नामहैं कबूतर भारी स्निग्ध रक्त पित्त नाशक वातघ्न ग्राही शीतल और वीर्यवर्द्धक होताहै ॥ ३८ ॥

अथ पक्ष्यण्डस्यगुणाः ॥

नातिस्निग्धानिवृष्याणिस्वादुपाकरसानिच । वातघ्नान्यपिशुक्राणिगुरूण्यण्डानि पक्षिणाम् ॥ ३९ ॥ पक्षियोंकेअंडोंकेगुण॥

पक्षियोंके अंडे कुछ स्निग्ध पुष्टिकारक रस तथा पाकमें मधुर बातनाशक भारी और अत्यन्त वीर्य वर्द्धक होतेहैं ॥ ३९ ॥ ग्राम्येषु छागस्य ॥

छागलोवर्करश्छागोवस्तोज-छेलकःस्तुभः। अजाछागीस्तुभाचापिछेलिकाचगलस्तनी॥छागमांसंलघुस्निग्धंस्वादुपाकंत्रिदोषनुत्। नातिशीतमदाहिस्यात्स्वादुपीनसनाशनम्॥ परंबलकरंरुच्यंबृंहणंवीर्य्यवर्द्धनम् । अजायाअप्रसूतायामांसंपीनसनाशनम्॥ शुष्ककासेऽरुचौशोषेहितमग्नेश्चदीपनम् । अजासुतस्यबालस्यमांसंलघुतरंस्मृतम्॥ हृद्यंज्वरहरंश्रेष्ठंसुखदंबलदंभृशम् । मांसंनिःकासिताण्डस्यछागस्यकफकृद्गुरु ॥ स्रोतःशुद्धकरंबल्यंमांसदंवातपित्तनुत् । वृद्धस्यवातलंरूक्षंतथाव्याधिमृतस्यच ॥ ऊर्द्धजत्रुविकारघ्नंछागसण्डंरुचिप्रदम् ॥ ४० ॥

ग्राम्योंमें बकरेकेनामगुण ॥

छागल बर्कर छाग वस्त अज छेलक और स्तुभ यह बकरे के नाम हैं अजा छागी स्तुभा छेलिका और गल स्तनी यह बकरीके नामहैं बकरेका मांस हलका स्निग्ध पाकमें मधुर त्रिदोष नाशक कुछ शीतल दाहरहित मधुर पीनस नाशक बलकारी रुचिकारी और धातु तथा वीर्य वर्द्धक होताहै बिनाब्याईहुई बकरीका मांस पीनश नाशक सूखी खांसी अरुचि तथा सूजन में हितकारी और दीपनहोता है बकरे के बच्चेका मांस बहुत हलका हृदयकोहित ज्वरनाशक सुखदायक और अत्यन्त बलवर्द्धक होताहै बधिया बकरेका मांस कफकारक भारी स्रोतों का शुद्ध करने वाला बलकारी मांस वर्द्धक और बात पित्तनाशक होताहै वृद्ध अथवा रोगसे मरेहुए बकरेका मांस बादी और रूखा होताहै बकरेका शिर जत्रु (हँसुआ)के ऊपरका रोगोंके नाशक और रुचिकारीहोताहै ॥ ४० ॥

अथ मेढ़ा ॥

मेढ्रोमेढ़ोहुडोमेषउरणोऽप्येडकोऽपिच । अविर्वृष्णिस्तथोर्णायुष्कथ्यन्तेतद्गुणाअथ ॥ मेषस्यमांसंपुष्टंस्यात्पित्तश्लेष्मकरंगुरु। तस्यैवाण्डविहीनस्यमांसंकिंचिल्लघुस्मृतम् ४१

मेढ़ेकेनामगुण ॥

मेढ्र मेढ़ हुड मेष उरण उरभ्र अवि वृष्णि और ऊर्णायु यह मेढ़के नामहैं मेढ़का मांस पोषक पित्त कारी कफवर्द्धक तथा भारी और बधिया मेढ़का मांस कुछ हलका होताहै ॥ ४१ ॥

अथ एडिकादुम्बिका इतिलोके दुम्बा ॥

एडकःपृथुशृङ्गःस्यान्मेदःपुच्छस्तुदुम्बकः।एडकस्यपलंज्ञेयंमेषामिषसमंगुणैः॥ मेदःपुच्छोद्भवंमांसंहृद्यंवृष्यंश्रमापहम् । पित्तश्लेष्मकरंकिंचिद्वातव्याधिविनाशनम् ॥ ४२ ॥

दुंबाकेनामगुण ॥

एडक पृथुशृंग मेदः पुच्छ और दुम्बक यह दुंबाके नामहैं इसके मांसमें मेढ़े के मांसके सदृश गुण

होतेहैं इसकी पूंछका मांस हृदयको हित वीर्यवर्द्धक काम नाशक कफ पित्त वर्द्धक और कुछ वात रोग नाशकहोताहै ॥ ४२ ॥

अथ वर्दगावः ॥

वलीवर्दस्तुवृषभऋषभश्चतथावृषः । अनड्वान्सौरभेयोल्पगौरुक्षाभद्रइत्यपि ॥ सुरभिःसौरभेयीचमाहेयीगौरुदाहृता । गोमांसन्तुगुरुस्निग्धंपित्तश्लेष्मविवर्द्धनम् ॥ वृंहणंवातहृद्वल्यमपथ्यंपीनसप्रणुत् ॥ ४३ ॥

बैलकेनामगुण ॥

वलीवर्द वृषभ ऋषभ वृष अनड्वान् सौरभेय गोउक्षा और भद्र यह बैलके नामहैं सुरभि सौरभेयी माहेयी और गो यह गौकेनामहैं गोमांस अत्यन्त भारी स्निग्ध पित्त तथा कफ वर्द्धक धातु वर्द्धक वातघ्न वलकारी अपथ्य और पीनस नाशकहोताहै ॥ ४३ ॥

अथ घोड़ा ॥

घोटकेपीजितुरगतुरङ्गाश्चतुरङ्गमः । वाजिवाहार्वगन्धर्वहयसैन्धवसप्तयः ॥ अश्व मांसन्तुक्षुवरंवह्निकृत्कफपित्तलम् । वातहृद्वृंहणंवल्यंचक्षुष्यंमधुरंलघु ॥ ४४ ॥

घोड़ेकेनामगुण ॥

घोटक वाजी तुरग तुरंग अश्व तुरंगम वाह अर्वन् गन्धर्व हय सैंधव और सप्ति यह घोड़ेकेनाम हैं घोडेका मांस लवण दीपन कफ पित्त कारक वातनाशक धातुवर्द्धक वलकारी नेत्रोंकोहित मधुर और हलका होताहै ॥ ४४ ॥

अथ कूलेचरेपुमाहिषस्य ॥

महिषोघोटकारिःस्यात्कासरश्चरजस्वलः । पीनस्कन्धःकृष्णकायोलुलायोयमवाह नः ॥ माहिषस्यामिषंस्वादुस्निग्धोष्णंवातनाशनम् । निद्राशुक्रप्रदंवल्यंतनुदार्ढ्यकरङ्गु रु ॥ वृष्यञ्चसृष्टविण्मूत्रंवातपित्तास्रनाशनम् ॥ ४५ ॥

कूलेचरोंमेंभैंसेकेनामगुण ॥

महिष घोटकादि कासर रजस्वल पीनस्कन्ध कृष्ण काय लुलाय और यमवाहन यह भैंसेकेनामहैं भैंसेका मांस मधुर स्निग्ध उष्ण वातनाशक निद्राकारक वीर्यवर्द्धक वलिष्ठ शरीरको दृढ़करने वाला भारी पुष्टकारक मलमूत्र निस्सारक और वात पित्त तथा रक्त नाशकहोता है ॥ ४५ ॥

अथ मण्डूकः ॥

मण्डूकःप्लवगोभेकोवर्षाभूर्दर्दुरोहरिः । मण्डूकःश्लेष्मलोनातिपित्तलोवलकारकः ४६ ॥

मेंढ़क के नाम गुण ॥

मंडूक प्लवग भेक वर्षाभू दर्दुर और हरि यह मेंढ़क के नाम हैं मेंढ़कका मांस कफ वर्द्धक कुछ पित्तकारक और वलकारी होता है ॥ ४६ ॥

अथ पादिंपुकच्छपा ॥

कच्छपोगूढ़पात्कूर्मःकमठोदृढपृष्ठकः । कच्छपोवलदोवातपित्तनुत्पुंस्त्वकारकः ४७ ॥

पादियों में से कच्छप के नाम गुण ॥

कच्छप गूढ पाद कूर्म कमठ और दृढपृष्ठक यह कछुए के नाम हैं कछुएका मांस वलकारक वात पित्त नाशक और पुंस्त्व वर्द्धक होता है ॥ ४७॥

अथ विशेषाः। अथसद्योहतस्यमांसस्यगुणाः॥

सद्योहतस्यमांसंस्यात्व्याधिघातियथाऽमृतम्॥ वयस्थंबृंहणंसात्म्यमन्यथातद्विवर्जयेत्। स्वयंमृतस्यमांसं॥ स्वयंमृतस्यचाबल्यमतीसारकरंगुरु॥ ४८॥

विशेषवर्णन। शीघ्रमारेहुएमांसकेगुण॥

शीघ्र माराहुआ मांस अमृतके समान रोगनाशक अवस्थाकोहित धातुवर्द्धक और सात्म्य होता है और इससे विरुद्धको त्याग करना योग्यहै स्वयंमरेहुए जीवका मांस बलनाशक अतीसारकारक और भारी होताहै॥ ४८॥ वृद्धबालमांसम्॥

वृद्धानांदोषलंमांसंबालानांबलकृल्लघु। सर्पदष्टस्यमांसञ्चशुष्कमांसंत्रिदोषकृत्॥ व्यालदष्टञ्चदुष्टञ्चशुष्कंशूलकरंपरम्॥ ४९॥

वृद्धऔरबच्चोंकेमांसकागुण॥

वृद्धोंका मांस त्रिदोषकारी बच्चोंका मांस बलकारी और हलका सर्पादिकोंसे दूषित तथा सूखा मांस त्रिदोष तथा शूलकारक और भारी होताहै॥ ४९॥

अथ विषादिमृतस्यमांसम्॥

विषाम्बुरुङ्मृतस्यैतन्मृत्युदोषरुजाकरम्।क्लिन्नमुत्क्लेशजनकंकृशवातप्रकोपनम्॥ तोयपूर्णशिराजालंमृतमप्सुत्रिदोषकृत्॥ ५०॥

विषआदिसेमरेहुएजीवोंकेमांसकागुण॥

विष जल तथा रोगसे मरेहुये जीवका मांस त्रिदोष रोग और मृत्युकारक होताहै सड़ाहुआ मांस क्लेश कारक होता है दुर्बल जीवों का मांस वादी जल में डूब कर मरे हुये तथा जलसे भरी हुई नसों वाले जीव का मांस त्रिदोषकारी होता है॥ ५०॥

विहङ्गेषुपुमान्श्रेष्ठ स्त्रीचतुष्पदजातिषु। परार्द्धोलघुपुंसांस्यात्स्त्रीणांपूर्वार्द्धमादिशेत्॥ देहमध्यंगुरुप्रायंसर्वेषांप्राणिनांस्मृतम्॥ पक्षक्षेपाद्विहङ्गानांतदेवलघुकथ्यते। गुरुण्यण्डानिसर्वेषांगुर्वीग्रीवाचपक्षिणाम्॥ उरःस्कन्धोदरंकुक्षीपादौपाणीकटीतथा। पृष्ठत्वग् यकृदन्त्राणिगुरूणीह्यथोत्तरम्॥ ५१॥

पक्षियोंमें नरोंका मांस और चौपायोंमें मादाओं का मांस श्रेष्ठ है नरोंका पिछला भाग और मादाओं का पहला भाग हलकाहोताहै संपूर्ण जीवोंके शरीरका मध्यभाग भारी होताहै परन्तु पक्षोंके चलाने से पक्षियोंका मांस हलकाहोताहै सब पक्षियोंके अंड तथा ग्रीवा भारी और छाती स्कन्ध उदर मस्तक पैर हाथ कमर पीठ त्वचा यकृत तथा आंते यह क्रमसे उत्तरोत्तर भारी होती हैं॥ ५१॥

लघुर्वातकरंमांसंखगानांधान्यचारिणाम्।मत्स्याशिनांपित्तकरंवातघ्नंगुरुकीर्तितम्॥ पलाशिनांश्लेष्मकरंलघुरूक्षमुदीरितम्। बृंहणंगुरुवातघ्नंतेषामेवंपलाशिनाम्। तुल्यजातिष्वल्पदेहामहादेहेषुपूजिताः। अल्पदेहेषुशस्यन्तेतथैवस्थूलदेहिनः॥ ५२॥

जो पक्षी नाजखातेहैं उनका मांस हलका तथा वातनाशक मत्स्य खानेवाले पक्षियों का मांस पित्तवर्द्धक वातनाशक तथा भारी और मांसाहारी पक्षियोंका मांस कफकारी हलका तथा रूखा होताहै

तुल्य जातिवालोंमें बड़े शरीरवालों की अपेक्षा छोटे शरीरवालों का श्रेष्ठ और उनमें भी स्थूल शरार वालोंका मांस श्रेष्ठ होताहै ॥ ५२ ॥ मत्स्येषुरोहितस्य ॥

रक्तोदरोरक्तमुखोरक्ताक्षोरक्तपक्षतिः । कृष्णपुच्छोझषश्रेष्ठोरोहितःकथितोबुधैः ॥ रोहितःसर्वमत्स्यानांवरोवृष्योऽर्दितार्तिजित् । कषायानुरसस्वादुर्वातघ्नोनातिपित्तकृत् ॥ ऊर्ध्वजत्रुगतान्रोगान्हन्याद्रोहितमुण्डकम् ॥ ५३ ॥

रोहू मछली के गुण ॥

लाल उदर लालमुख लालनेत्र लालपर और कालीपूंछवाली सब मछलियों में श्रेष्ठ रोहू मछली कहलातीहै रोहू मछली सब मछलियों में श्रेष्ठ वीर्यवर्द्धक अर्दित रोगनाशक कुछ कषैली मधुर वात नाशक और कुछ पित्तकारक होती है इसका शिर हसुए के ऊपर के रोगोंको नाश करताहै ॥ ५३ ॥

सिलन्धा ॥

सिलन्धःश्लेष्मलोबल्योविपाकेमधुरोगुरुः । वातपित्तहरोहृद्यआमवातकरश्चसः ॥ ५४ ॥

सिलन्धा मछली के गुण ॥

सिलन्धा मछली कफवर्द्धक बलकारी पाकमें मधुर भारी वात पित्तनाशक हृदयकोहित और आम वातकारक होती है ॥ ५४ ॥ अथ भाकुर ॥

भकुरोमधुरःशीतोवृष्यःश्लेष्मकरोगुरुः । विष्टम्भजनकश्चापिरक्तपित्तहरःस्मृतः ॥ ५५ ॥

भाकुर मछली के गुण ॥

भाकुर मधुर शीतल वीर्यवर्द्धक कफकारी भारी विष्टंभी और रक्तपित्तनाशक होतीहै ॥ ५५ ॥

मोचिका ॥

मोचिकावातहृद्बल्याबृंहणीमधुरागुरुः । पित्तहृत्कफकृद्रुच्यावृष्यादीप्ताग्नयेहिता ॥ ५६ ॥

मोचिकामछलीके गुण ॥

मोचिकामछली वातनाशक बलकारी धातुवर्द्धक मधुर भारी पित्तघ्न कफकारक रुचिकारी वीर्य्य वर्द्धक और बड़ी अग्निवाले पुरुषों को हित है ॥ ५६ ॥

मठनाचूआरीइतिचपोठियावोरीइतिच ॥

पाठिनःश्लेष्मलोबल्योनिद्रालुःपिशिताशनः । दूषयेद्रुधिरंपित्तकुष्ठरोगंकरोतिच ॥ ५७ ॥

पाठीनके गुण ॥

पाठीन कफवर्द्धक बलिष्ठ निद्राकारक रुधिरदूषक और पित्त तथा कुष्ठरोगकारक होतीहै ॥ ५७ ॥

अथ सींगी ॥

शृंगीतुवातशमनीस्निग्धाश्लेष्मप्रकोपनी । रसेतिक्ताकषायाचलघ्वीरुच्यास्मृताबुधैः ५८ ॥

सिंगीमछलीके गुण ॥

सिंगीमछली वातनाशक स्निग्ध कफको कुपित करनेवाली तिक्त कषैली हलकी और रुचिकारक होती है ५८ ॥ अथ हीलसा ॥

इल्लिसोमधुरःस्निग्धोरोचनोवह्निवर्द्धनः । पित्तहृत्कफकृत्किञ्चिल्लघुर्वृष्योऽनिलापहः ॥ ५९ ॥

हिलसामछली के गुण ॥

हिलसा मधुर स्निग्ध रुचिकारक दीपन पित्त कफवर्द्धक कुछ हलकी वीर्यवर्द्धक और वातनाशक होती है ॥ ५९ ॥

अथ सौरी ॥

शष्कुलीग्राहिणीहृद्यामधुरातुवरास्मृता ६० (अथ गर्गरा) गर्गरःपित्तलःकिञ्चिद्वातजित्कफकोपनः ॥ ६१ ॥

सौरीमछलीके गुण ॥

सौरी ग्राही हृदयकीहित मधुर और कषैली होतीहै ६० (गर्गरामछलीके गुण) गर्गरा पित्तवर्द्धक कुछवातनाशक और कफको कुपितकरनेवाली होती है ॥ ६१ ॥

अथकवई ॥

कविकामधुरास्निग्धाकफघ्नारुचिकारिणी॥किञ्चित्पित्तकरीवातनाशिनीवह्निवर्द्धिनी ६२॥

कवईमछलीके गुण ॥

कवई मधुर स्निग्ध कफनाशक रुचिकारक कुछ पित्तवर्द्धक वातनाशक और दीपनहोती है ॥ ६२ ॥

अथ वाम्बी ॥

वर्मिमत्स्योहरेद्वातंपित्तंरुचिकरोलघुः ६३ (अथ दण्डारी) दण्डमत्स्योरसेतिक्तः पित्तरक्तंकफंहरेत्॥वातसाधारणःप्रोक्तःशुक्लोबलवर्द्धनः ॥ ६४ ॥

बाबीमछलीके गुण ॥

बांबी वातनाशक पित्तवर्द्धक रुचिकारक और हलकी होती है ६३ (दण्डारीमछली के गुण) दंडारी तिक्त पित्त रक्त तथा कफनाशक वीर्यवर्द्धक बलकारक और वातको साधारण रखनेवाली होती है ॥ ६४ ॥

अथ अरङ्गी ॥

एरङ्गीमधुरःस्निग्धोविष्टम्भीशीतलोलघुः ६५ (अथ पपता) महासफरसंज्ञस्तु तिक्तःपित्तकफापहः । शिशिरोमधुरोरुच्योवातसाधारणःस्मृतः ॥ ६६ ॥

अरंगी मछली के गुण ॥

अरंगी मधुर स्निग्ध विष्टंभी शीतल और हलकी होती है ६५ (पपता मछली के गुण) पपता तिक्त मधुर पित्त कफ नाशक रुचिकारक शीतल और वातको साधारण रखनेवाली होती है ॥ ६६ ॥

अथ गरई ॥

गरघ्नीमधुरातिक्तातुवरावातपित्तहृत्॥कफघ्नीरुचिकृल्लघ्वीदीपनीबलवीर्य्यकृत् ६७ ॥

गिरई मछली के गुण ॥

गिरई मधुर तिक्त कषैली वात पित्तनाशक कफघ्न रुचिकारक हलकी दीपन और बल वीर्य वर्द्धक होतीहै ॥ ६७ ॥

अथ मंगुरी ॥

मंगुरीवातहृद्बल्योवृष्यःकफकरोलघुः ६८ (अथ टेङ्गरा) सपादमत्स्योमेधाकृन्मेह क्षयकरश्चसः। वातपित्तकरश्चापिरुचिकृत्परमोमतः ॥६९ ॥

मंगुरी मछली के गुण ॥

मंगुरी वात नाशक बलकारी वीर्यवर्द्धक कफकारी और हलकी होती है ६८ (टेंगरा मछलीके गुण) टेंगरा मेधाकोहित मदनाशक वादी पित्तवर्द्धक और अत्यन्त रुचिकारक होतीहै ॥ ६९ ॥

अथ सफरीपोठीइतिच ॥

प्रोष्ठीतिक्ताकटुःस्वादुःशुक्रघ्नीकफवातजित् । स्निग्धास्यकण्ठरोगघ्नीरोचनीवल घुःस्मृतः ॥ ७० ॥

सफरी मछली के गुण ॥

सफरी तिक्त कटु मधुर वीर्य नाशक स्निग्ध रुचिकारी हलकी और कफ वात मुखरोग तथा कंठ रोगनाशक होतीहै ॥ ७० ॥

अथक्षुद्रमत्स्याः ॥

क्षुद्रामत्स्याःस्वादुरसाःदोपत्रयविनाशनाः ।लघुपाकारुचिकराबलदास्तेहितामताः७१॥

छोटी मछलियों के गुण ॥

छोटी मछली मधुर त्रिदोपनाशक हलकी रुचिकारक बलकारी और सबप्रकारसे हितहोती हैं॥ ७१ ॥

अथातिक्षुद्रमत्स्याः ॥

अतिसूक्ष्माःपुंस्त्वहरारुच्याःकासानिलापहाः ७२ (अथ मत्स्याण्डा) मत्स्यगर्भो भृशंवृष्यःस्निग्धपुष्टिकरोलघु । कफमेदःप्रदोबल्योग्लानिकृन्मेहनाशनः(अथ सूखठी) शुष्कमत्स्यानवाबल्यादुर्जराः विड्विबन्धिनः (अथ दग्धमत्स्याः) दग्धमत्स्योगुणैः श्रेष्ठःपुष्टिकृद्बलवर्द्धनः ॥ ७३ ॥

बहुत छोटी मछलियोंके गुण ॥

बहुत छोटी मछली रुचिकारक और पुंस्त्व खांसी तथा वात नाशक होतीहैं ७२ (मछलियों के अंडों के गुण)मछलियोंके अंडे अत्यन्त वीर्यवर्द्धक स्निग्ध पुष्टकारी हलके प्रमेहनाशक और कफ मेद बल तथा ग्लानिकारक होतेहैं सूखीमछली बलरहित कठिनतासे पचनेवाली और मलको बाँधनेवाली होतीहैं भूनीहुई मछलीगुणोंमें श्रेष्ठ पुष्टिकारक और बलवर्द्धक होतीहै ॥ ७३ ॥

अथ कूपजादिमत्स्यगुणाः ॥

कौपमत्स्याःशुक्रमूत्रकुष्ठश्लेष्मविवर्द्धनाः । सरोजामधुराःस्निग्धाबल्यावातविनाशनाः ॥ नादेयाबृंहणामत्स्यागुरवोऽनिलनाशनाः । रक्तपित्तकरावृष्याःस्निग्धोष्णाःस्वल्प वर्चसः ॥ चौञ्जाःपित्तकराःस्निग्धामधुरालघवोहिमाः । ताडागागुरवोवृष्याःशीतलाः बलमूत्रदाः ॥ ताडागावन्निस्रजाताःबलायुर्मतिदृक्कराः ॥ ७४ ॥

कूपादिमें उत्पन्न मछलियोंके गुण ॥

कुएंकी मछली वीर्य मूत्र कुष्ठ तथा कफवर्द्धक सरोवरकी मछली मधुर स्निग्ध बलकारी तथा वात पित्तनाशक नदीकी मछली धातुवर्द्धक भारी वातनाशक रक्तपित्तकारी वीर्यवर्द्धक स्निग्ध उष्ण तथा मलको स्वल्प करने वाली गढ़ैया की मछली पित्त कारक स्निग्ध मधुर हलकी तथा शीतल तड़ाग की मछली भारी वीर्यवर्द्धक शीतल बलिष्ठ तथा मूत्रकारक और झिरने की मछली तड़ाग की मछली के समान गुणकारक बलिष्ठ आयुवर्द्धक बुद्धिदायक तथा दृष्टि वर्द्धक होती हैं ॥ ७४ ॥

अथर्त्तु विशेषेमत्स्यविशेषः ॥

हेमन्तेकूपजामत्स्याःशिशिरेसारसाहिताः । वसन्तेतेतुनादेयाग्रीष्मेचौऽजसमुद्भवाः॥तडागजातावर्षासुतास्त्वपथ्यानदीभवाःनैर्भराःशरदिश्रेष्ठाविशेषोऽयमुदाहृतः७५॥

इतिश्रीभावप्रकाशेमांसवर्गः ॥

ऋतुविशेष में मत्स्य विशेष ॥

हेमन्तमें कूएंकी शिशिरमें सरोवरकी वसन्तमें नदीकी ग्रीष्ममें गढ़ैयाकी वर्षामें तड़ागकी और शरद ऋतु में भिरने की मछली श्रेष्ठहैं वर्षा ऋतु में नदीकी मछलियों का सेवन करनाअहितहै॥ ७५॥

इतिश्री भावप्रकाशस्य भाषानुवादे मांस वर्गः समाप्तः ॥

अथ कृतान्नवर्गः ॥

अत्रान्नानांसाधनप्रकारःसिद्धानांगुणाश्च । तत्रपरिभाषिता ॥

समवायिनिहेतौयेमुनिभिर्गणितागुणाः । कार्येऽपितेऽखिलाज्ञेयाःपरिभाषेतिभाषिता ॥ क्वचित्संस्कारभेदेनगुणभेदोभवेद्यतः। भक्तंलघुपुराणस्यशालेस्तच्चिपिटोगुरुः ॥ क्वचिद्योगप्रभावेनगुणान्तरमपेक्ष्यते । कदन्नंगुरुसर्पिश्चलघुक्तंसुहितंभवेत्॥ १ ॥

कियेहुए अन्नका वर्ग ॥

इसमें अन्नोंके वनानेकी रीति और कियेहुओंके गुण। परिभाषा ॥

मुनियोंने समवायिकारण (जिन पदार्थोंसे वस्तु बनाईजातीहै) में जो गुण कहेहैं वही सम्पूर्ण उनके कार्यमें भी होतेहैं यह परिभाषा कहीहै कहीं संस्कारके भेदसे गुणोंका भेद होजाताहै जैसे पुराने चांवलका भात तो हलका और उनके चिड़वे भारी होतेहैं कहीं संयोगके प्रभावसे गुणमें भेद होजातेहैं जैसे केला और घी यह दोनों भारी होतेहैं परन्तु यह दोनों मिलेहुए सुगमतासे परिपाकको प्राप्त होते हैं ॥ १ ॥

अथ भक्तस्यनामानिसाधनंगुणाश्च ॥

भक्तमन्नंतथान्धश्चक्वचित्कूरश्चकीर्तितम् । ओदनोऽस्त्रीस्त्रियांभिस्साहीदिविदःपुंसि भाषितः ॥ सुधौतास्तण्डुलाःस्फीतास्तोयेपञ्चगुणेपचेत् । तद्भक्तंप्रस्रुतंचोष्णंविशदंगुणवन्मतम् ॥ भक्तंवह्निकरंपथ्यंतर्पणंरोचनंलघुःअधौतमस्रुतंशीतंगुर्वरुच्यंकफप्रदम् २ ॥

भातके नाम साधन और गुण ॥

भक्त अन्न अन्ध कूर ओदन भिस्सा और दिवि यह भातके नामहैं अच्छे प्रकारसे धोयेहुए फूलेहुए चांवलों को पांचगुने जलमें पकावे फिर मांड़ निकलेहुए कुछ उष्ण चांवल वह भात कहलाते हैं यह भात गुणकारी होताहै भात अग्निवर्द्धक पथ्य तृप्तिकारक रुचिकारी और हलका होताहै विनाधोयेहुए चांवलोंका येमांड़ निकलाहुआ भात शीतल भारी अरुचिकारी और कफवर्द्धक होताहै ॥ २ ॥

अथ दालिः ॥

दलितन्तुशिम्बीधान्यंदालिर्दालीस्त्रियामुभे । दालीतुसलिलेसिद्धालवणार्द्रकहिंगु

भिः॥ संयुक्तासूपनाम्नीस्यात्कथ्यन्तेतद्गुणाअथ। सूपोविष्टम्भकोरूक्षःशीतस्तुसविशेषतः॥ निस्तुपोभृष्टसंसिद्धःलाघवंसुतरान्नजेत् ॥ ३ ॥

दालकेनाम साधन और गुण ॥

दलाहुआ शमीधान्य दालि और दाली कहलाताहै जलमें पकीहुई और लवण अदरक तथा हींग युक्त दालको सूप कहतेहैं सूप (पकीहुई दाल) विष्टंभी रूखी और शीतलहोतीहै छिलके रहित और भुनीहुई दालपकानेसे अत्यन्त हलकी होती है ॥ ३ ॥

अथ खिचिरी ॥

तण्डुलादालिसंमिश्रालवणार्द्रकहिंगुभिः । संयुक्तासलिलेसिद्धाकृशराकथितावुधैः ॥ कृशराशुक्रलाबल्यागुरुःपित्तकफप्रदा । दुर्जराबुद्धिविष्टम्भ मलमूत्रकरास्मृता ॥ ४ ॥

खिचड़ीके नाम साधन और गुण ॥

लवण अदरक तथा हींग युक्त दाल चांवल जल में पाक कियेहुए कृशरा कहेजाते हैं खिचड़ी वीर्य्यवर्द्धक बलकारक भारी पित्त कफकारक कठिनतासे पचनेवाली बुद्धिकारक विष्टंभी और मल मूत्रकारी होतीहै ॥ ४ ॥

अथ तापहारी । ताताहरीतिलोके ॥

घृतेहरिद्रासंयुक्तेमाषजाम्भर्ज्जयेद्वटीम् ।तण्डुलांश्चापिनिर्धौतान्महैवपरिभर्जयेत् ॥ सिद्धयोग्यंजलंतत्रप्रक्षिप्यकुशलःपचेत् । लवणार्द्रकहिंगूनिमात्रायातत्रनिःक्षिपेत ॥ ए पासिद्धिःसमानज्ञाप्रोक्तातापहरीवुधैः । भवेत्तापहरीबल्यावृष्याश्लेष्मानमाचरेत् ॥ बृंह र्णातर्पणीरुच्यागुर्व्वीपित्तहरास्मृता ॥ ५ ॥

ताहरीके नाम साधन और गुण ॥

हल्दीके सहित घृतमें चांवल और उर्दकी बड़ियोंको भूने फिर परिपाक होने योग्य जलमें पकावे और प्रमाणके अनुसार उसमें लवण अदरक तथा हींग छोड़े यह परिपाकहोनेपर तापहरी (ताहरी) कहलातीहै ताहरी बलकारी वीर्यवर्द्धक कफकारी धातुवर्द्धक तृप्ति तथा रुचिकारक भारी और अपने कारणके समान गुणवालीहोतीहै ॥ ५ ॥ अथ खीर ॥

पायसंपरमान्नंस्यात् क्षीरिकापितदुच्यते । शुद्धेऽर्द्धपक्वेदुग्धेतु घृताक्तांस्तण्डुलान्प चेत् ॥ तेसिद्धाक्षीरिकास्याता ससिताज्ययुतोत्तमाः । क्षीरिकादुर्जराप्रोक्ता बृंहणीबलव र्द्धिनी ॥ नालिकेरन्तनुकृत्यच्छिन्नंपयसिगोःक्षिपेत् । सितागव्याज्यसंयुक्ते तत्पचेन्मृदु नाऽग्निना ॥ नारीकेरोद्भवाक्षीरी स्निग्धाशीतातिपुष्टिदा । गुर्वीसुमधुरावृष्या रक्तपित्ता निलापहा ॥ ६ ॥

खीरके नाम साधन और गुण ॥

पायस परमान्न और क्षीरिका यह खीरके नाम हैं शुद्ध तथा अर्द्धपक्व दुग्धमें घृतयुक्त पकेहुए चांवलोंको पकाकर शर्करा तथा घृतसे युक्तकरे वह खीर कहातीहै खीर कठिनतासे पचनेवाली धातु बलवर्द्धक विष्टंभी और पित्त रक्तपित्त जठराग्नि तथा वा[illegible]नाशक होतीहै नारियल बारीक कटेहुए गोलेको गौके दूधमेंछोड़कर शक्कर और गौके घृतसमेत मन्दाग्निसे पकावे यहनारियलकी खीर स्निग्ध शीतल अत्यन्त पुष्टिकारक भारी मधुर वीर्यवर्द्धक और रक्तपित्त तथा वातनाशक होतीहै ॥ ६ ॥

अथ सेवई ॥

समितांवर्त्तिकांकृत्वा सूक्ष्मांतुयवसन्निभाम् । शुष्कांक्षीरेणसंसाध्या भोज्याघृतासितान्विता ॥ सेविकातर्पणीबल्या गुर्वीपित्तानिलापहा । ग्राहिणीसन्धिकृद्रुच्या तांखादेन्नातिमात्रया ॥ ७ ॥



सेवईकेसाधन और गुण ॥

जौके समान मैदाकी अत्यन्त पतली बत्तियोंको बनाकर धूपमें सुखावे फिर उनको दूधमें पकाकर घृतशर्करा मिलाकर खाय सेवई तृप्ति कारक बलकारी भारी बात पित्त नाशक ग्राही टूटेको जोड़ने वाली और रुचिकारक होतीहैं इनको अधिक न खाय ॥ ७ ॥

अथ मण्डा ॥

गोधूमाधवलाधौताः कुट्टिताःशोषितास्ततः । प्रोक्षितायंत्रनिष्पिष्टाश्चालिता समिताःस्मृताः ॥ वारिणाकोमलांकृत्वा समितांसाधुमर्दयेत् । हस्ततलालनयातस्या लोप्त्रीं सम्यक्प्रसारयेत् ॥ अधोमुखघटस्यैतत् विस्तृतंप्रक्षिपेद्बहिः । मृदुनावह्निनासाध्यः सिद्धोमण्डकउच्यते (लोप्त्रीलोइ इतिलोके) दुग्धेनसाज्यखंडेन मंडकंभक्षयेन्नरः ॥ अथवासिद्धमांसेन सतक्रवटकेनवा । मण्डकोबृंहणोवृष्यो बल्योरुचिकरोभृशम् ॥ पाकेऽपि मधुरोग्राही लघुर्दोषत्रयापहः ॥ ८ ॥

मंडेकेसाधनऔरगुण ॥

श्वेत धोयेहुए कूटेहुए और सुखायेहुए गेहुओंको पीसकर चालनेसे समिता (मैदा) कहलातीहै मैदाको जलसे सानकर खूब उसने और हाथों से उसकी लोईको खूबफैलावे उसफैलीहुई लोईको औंधेघड़ेके ऊपरडाले फिर मंदाग्नि से उसको पकावे इसपकीहुई रोटीको मंडा कहतेहैं मंडेको दूध घी तथा खांड़के साथ अथवा मांस और दही बड़ेके साथ खाय तो धातुओंकी पुष्टता वीर्यकी वृद्धि और रुचिहोतीहै मंडा पाकमें मधुर ग्राही हलका और त्रिदोष नाशकहोताहै ॥ ८ ॥

अथ पोरीकुत्रापिदुनौरी इतिच ॥

कुर्य्यात्समितयाऽतीवतन्वीपर्पटिकाततः । स्वेदयेत्ततकेतान्तुपोलिकाजगदुर्बुधाः ॥ तांखादेत्क्ष्वेसिकायुक्तां तस्यामंडकवद्गुणाः । ततकंत वा इतिलोके ॥ ९ ॥

पोरीकासाधनऔरगुण ॥

मैदेकी बहुत पतली पपड़ीको तवेके ऊपर पकावे यह पोलिका कहलातीहै इसको दलुएके संग खाय इसमें मंडेके समानगुणहोतेहैं ॥ ९ ॥

अथ प्रसंगाल्लप्सी ॥

समितांसर्पिषाभृष्टां शर्करांप्रयसिक्षिपेत् । तस्मिन्घनीकृतेन्यस्ये लवङ्गंमरिचादिकम् ॥ सिद्धैषालप्सिकाख्याता गुणास्तस्यावदाम्यहम् । लप्सिकाबृंहणीवृष्या बल्यापित्तानिलापहा ॥ स्निग्धाश्लेष्मकरीगुर्वी रोचनीतर्पणीपरम् ॥ १० ॥

लप्सीकासाधन और गुण ॥

घृतमें भूनीहुई मैदाको शक्कर समेत दूधमें छोड़े और ओटनेसे गाढ़ेहोजानेपर लौंग और मिर्च

आटेकि छोड़े यह पकीहुई लप्सी कहलाती है लप्सी धातु और वीर्यवर्द्धक बलकारी वात पित्त नाशक स्निग्ध कफकारी भारी और रुचितथा तृप्तिकारीहोतीहै ॥ १० ॥

अथ रोटी ॥

शुष्कगोधूमचूर्णेन किञ्चित्पुष्टाञ्चपोलिकाम् । ततकेस्वेदयेत्कृत्वा भूयश्चांगारेऽर्पितां पचेत् ॥ सिद्धैषारोटिकाप्रोक्ता गुणंतस्याःप्रचक्ष्महे । रोटिकाबलकृद्रुच्या बृंहणीधातुवर्द्धनी ॥ वातघ्नीकफकृद्गुर्वी दीप्ताग्नीनांप्रपूजिता ॥ ११ ॥

रोटीकारसायन और गुण ॥

सूखे गेहुओंके आटेकी रोटी बनाकर तवेपर सेंककर फिर अंगारोंपर सेंके इसको रोटिका (रोटी) कहतेहैं रोटी बलतथा रुचिकारक पोषक धातुवर्द्धक वात नाशक कफकारी भारी और दीप्ताग्नियोंको हितकारी होतीहै ॥ ११ ॥

अथ लीट्टी ॥

शुष्कगोधूमचूर्णंतु साम्बुगाढंविमर्दयेत् । विधायवटकाकारं निर्धूमेऽग्नौशनैःपचेत् ॥ अंगारकर्कटीह्येषा बृंहणीशुक्रलालघुः । दीपनीकफकृद्बल्यापीनसश्वासकासजित् १२॥

वाटीकारसायन और गुण

सूखे गेहुओं के आटेको जलसे कड़ा उसनकर वटिकाकार वाटी बनावे इनको निर्धूम अग्निमें धीरे २ पकावे इसको अंगार कर्कटी कहते हैं यह धातुवर्द्धक वीर्यवर्द्धक हलकी दीपन कफ कारक बलकारी और पीनस श्वास तथा खांसी नाशकहोतीहै ॥ १२ ॥

अथ यवरोटी ॥

यवजारोटिकारुच्यामधुराविशदालघुः । मलशुक्रानिलकरीबल्याहन्तिकफामयान् ॥ पीनसश्वासकासांश्च मेदोमेहगलामयान् ॥ १३ ॥

जौकीरोटीकेगुण ॥

जौकीरोटी रुचिकारी मधुर विशद हलकी मलवर्द्धक वीर्यकारक बादी बलिष्ठ और कफ रोग पीनस श्वास खांसी मेद प्रमेह तथा गलेके रोगोंकी नाशकहोतीहै ॥ १३ ॥

अथ माषरोटिका ॥

चूर्णैयच्छुष्कमाषाणां चमसीसाभिधीयते । चमसीरचितारोटी कथ्यतेबलभद्रिका ॥ रूक्षोष्णावातलाबल्या दीप्ताग्नीनांप्रपूजिता । माषानांदालयस्तोये स्थापितास्त्यक्तकञ्चुकाः ॥ आतपेशोषितायन्त्रे पिष्टास्ताधूमसीस्मृता । धूमसीरचिताचैव प्रोक्ताझर्झरिकाबुधैः ॥ झर्झरीकफपित्तघ्नी किञ्चिद्वातकरीस्मृता ॥ १४ ॥

उर्दकीरोटीकेगुण ॥

सूखे उर्दोंके आटेको चोंसी कहतेहैं चोंसीकी रोटीको बलभद्रिका कहतेहैं यह रूखी उष्ण बादी बलकारी और दीप्ताग्नियोंको हितहोतीहै उर्दोंकी दाल पानीमें भिगोकर छिलकेको निकालकरधूपमें सुखाके पीसीहुई धूमसी कहलातीहै धूमसीकी रोटीको झर्झरिका कहतेहैं यह कफ पित्त नाशक और कुछेबादी होतीहै ॥ १४ ॥

अथ चणकरोटिका ॥

चणक्यारोटिकारूक्षा श्लेष्मपित्तास्त्रनुद्गुरुः । विष्टम्भिनीनचक्षुष्यातद्गुणाचातिशष्क
ली ॥ १५ ॥ चनेकी की रोटीके गुण ॥

चनेकी रोटी रूखी कफ तथा रक्त पित्त नाशक भारी विष्टंभी और नेत्रों कोअहित होती है तिल की रोटी में भी इसीके समान गुण होते हैं ॥ १५ ॥

अथ पिष्टिका ॥

दालिःसंस्थापितातोयेततोऽपहृतकञ्चुका । शिलायांसाधुसम्पिष्टापिष्टिकाकथि
ताबुधैः ॥ १६ ॥ पिट्ठी का लक्षण ॥

दाल को जल में भिजो कर छिल के निकाल के सिल पर पीसने से पिष्टिका कहलाती है ॥ १६ ॥

अथ वेढ़ई ॥

मापपिष्टिकयापूर्णं गर्भागोधूमचूर्णतः । रचितारोटिकासैव प्रोक्तावेढमिकाबुधैः ॥
भवेद्वेढमिकाबल्या वृष्यारुच्याऽनिलापहा । उष्णसन्तर्पणीगुर्वी बृंहणीशुक्रलापरम् ॥
भिन्नमूत्रमलास्तन्यमेदःपित्तकफप्रदा।गुदकीलार्दितःश्वासंपङ्क्तिशूलानिनाशयेत् १७॥
वेढ़ईके गुण ॥

उर्दकी पिट्ठी से भरी हुई गेहूं की रोटीको वेष्टनिका कहतेहैं वेढ़ई बल कारक पुष्टता करने वाली रुचि कारी बात नाशक उष्ण तृप्ति कारक भारी धातु वर्द्धक वीर्य वर्द्धक मल मूत्र को भिन्न करने वाली दुग्ध कारक मेद वर्द्धक कफ पित्तकारक और और गुदकील अर्दित श्वास तथा परिणाम शूल नाशक होती है ॥ १७ ॥

अथ पापर ॥

धूमसीरचिताहिङ्गुहरिद्रालवणैर्युताः । जीरकस्वर्जिकाभ्याश्चतनूकृत्यचवेल्लिताः॥
पर्प्पटास्तेसदाङ्गारभृष्टाःपरमरोचकाः । दीपनाःपाचनारुक्षागुरवःकिञ्चिदीरिताः ॥ मौद्गा
श्चतद्गुणाःप्रोक्ताविशेषाल्लघवोहिताः।चणकस्यगुणैर्युक्ताःपर्प्पटाश्चणकोद्भवाःस्नेहभृष्टा
स्तुतेसर्वेभवेयुर्मध्यमागुणैः ॥ १८ ॥

पापड़ की विधि ॥

हींग हल्दी लौंग जीरा और सज्जी सहित धुमास वहुत पतली करके वेली गई और अंगारोंपर भूनी गई इसको परपट कहते हैं पापड़ अत्यन्त रुचिकारी दीपन पाचन रूखे और कुछ भारीहोतेहैं मूंग के पापड वहुत हलके और इन्हीं के समान गुण वाले होते हैं चने के पापड़ों में चनेके समानगुण होते हैं और सम्पूर्ण पापड घृतादि में भूनेहुये गुणों में मध्यम होते हैं ॥ १८ ॥

अथ पूरी ॥

मापाणांपिष्टिकांपूज्याल्लवणार्द्रकहिंगुभिः । तयापिष्टिकयापूर्णास मिताकृतपो
लिका ॥ ततस्तैलेनपक्वासापूरीकाकथिताबुधैः । रुच्यास्वाद्वीगुरुः स्निग्धाबल्या
पित्तास्रदूषिका ॥ चक्षुस्तेजोहरीचोष्णापाकेवातविनाशिनी । तथैवघृतपक्वापिचक्षुष्या
रक्तपित्तहृत् ॥ १९ ॥

पूरी के गुण ॥

मैदामें लौंग अदरक और हींग समेत उड़दकी पीठी को भरकर वेली गई फिर तेल में पकाई गई पूरिका कहलाती है पूरी रुचि कारक सुस्वादु भारी स्निग्ध बलवर्द्धक रक्त पित्त कारक पाक में उष्ण वात नाशक और दृष्टि कोहरने वाली होतीहैं घीकी पूरी रक्त पित्त नाशक नेत्रों कोहित और इसी के समान गुण वाली होती है ॥ १६ ॥ अथवरा ॥

मापाणांपिष्टिकायुक्तालवणार्द्रकहिङ्गुभिः।कृत्वाविदध्याद्वटकास्तास्तैलेपुपचेच्छनैः॥ विशुष्कावटकावल्याबृंहणावीर्य्यवर्द्धनी॥वातामयहरीरुच्याविशेपादर्दितापहा। विबन्ध भेदिनीश्लेष्मकारिणीऽत्यग्निपूजिता॥ संचूर्ण्यनिक्षिपेत्तक्रेभृष्टंजीरकहिङ्गुभिः। लवणं तत्रवटकान्सकलानपिमज्जयेत् ॥ शुक्रलस्तत्रवटकोबलकृद्रोचनोगुरुः। विबन्धहृद्विदाहीचश्लेष्मलःपवनापहः ॥ राज्यक्तपातिनोवाप्यान्पाचनांस्तांस्तुभक्षयेत्। राज्यक्ता राइताइतिलोके ॥ २० ॥ वड़ों की विधि ॥

उड़दकी पिट्ठी में नोन अदरक और हींग मिलाकर बड़े बनावे और उनको तेलमें धीरे२ पकावे सूखे बड़े बलकारी धातु वर्द्धक वीर्य वर्द्धक वात रोग नाशक रुचिकारक अर्दित तथा विबंध नाशक कफकारी और तीक्ष्ण अग्नि वालोंको हित होते हैं जीरा हींग और नोन को मट्ठे में मिलाकर उसमें बड़े भिजोवे यह बड़े वीर्य वर्द्धक बलतथा रुचिकारी भारी विबन्धनाशक विदाही कफकारी और वातनाशक होते हैं रायते के बड़े अत्यन्त रुचिकारी और पाचक होते हैं यह खानेचाहिये२०॥

अथ काञ्जीवरा ॥

मन्थनीनूतनाधार्य्याकटुतैलेनलेपिता। निर्मलेनाम्बुनापूर्य्यतस्यांचूर्णविनिःक्षिपेत्॥ राजिकाजीरलवणहिङ्गुशुण्ठीनिशाकृतम्।निःक्षिपेद्वटकांस्तत्रभाण्डस्यास्यञ्चमुद्रयेत्॥ ततोदिनत्रयादूर्ध्वमम्लाःस्युर्वटकाध्रुवम्।काञ्जिकोवटकोरुच्योवातघ्नःश्लेष्मकारकः॥ शीतोदाहंशूलमजीर्णंहरतेदृगामयेष्वहितः ॥ २१ ॥

कांजीके वड़ोंकी विधि ॥

नवीन हांड़ीको कटु तेलसे लेपकर निर्म्मल जलसे भरे उसमें जीरा राई लौंग हींग सोंठ और हल्दी पीसकर छोड़े और इसमें बड़ोंको भिगोकर पात्र के मुखको बन्दकरदे फिर तीनदिन के उपरान्त बड़े अवश्य खट्टे होजांयगे कांजीके बड़े रुचिकारक वात नाशक कफकारी और शूल अजीर्ण तथा दाह नाशक होते हैं यह नेत्र रोग में हित नहींहोते ॥ २१ ॥

ऊरी वड़ारा ॥

आम्लिकांस्वेदयित्वातुजलेनसहमर्दयेत्। तन्नीरेकृतसंस्कारेवटकान्मज्जयेज्जनः ॥ आम्लिकावटकास्तेतुरुच्यावह्निप्रदीपनाः। वटकस्यगुणैःपूर्वैरेपोऽपिचसमन्वितः २२॥

इमलीके वडे ॥

इमली को जलमें भिगोकर मले और संस्कार युक्त उसी पानी में बड़ोंको भिगोवे इमली के बड़े रुचिकारी दीपन और कांजीके बड़ोंके समान गुणवाले होते हैं॥ २२ ॥

अथ मूंगवरा ॥

मुद्गानांवटकास्तक्रेभर्जितालघवोहिमाः। संस्कारजप्रभावेनत्रिदोषशमनाहिताः २३ ॥

मूंगके बड़े ॥

मट्ठे के साथ पकाये हुए मूंगके बडे हलके शीतल और संस्कार के प्रभाव से त्रिदोष नाशक तथा हितकारी होतेहैं ॥ २३ ॥

अथ माषवटी ॥

माषाणांपिष्टिकाहिङ्गुलवणार्द्रकसंस्कृताःतयाविरचितावस्त्रेवटिकाःसाधुशोषिताः ॥ भर्जितास्तप्ततैलेस्ताअथवाम्बुप्रयोगतः।वटकस्यगुणैर्युक्ताज्ञातव्यारुचिदाभृशम्२४॥

उड़दकी बड़ियां ॥

हींग नोन और अदरक समेत उड़दकी पिट्ठीसे बड़ियां बनाकर वस्त्रपर अच्छेप्रकारसे सुखावे फिर उनको तेलमें भूनकर जलमें पकावे बड़ियोंमें बड़ोंकेही समान गुणहोते हैं और यह अत्यन्त रुचि कारक होती हैं ॥ २४ ॥

अथ कोहड़ौरी ॥

कूष्माण्डवटीज्ञेयापूर्वोक्तवटिकागुणा। विशेषात्पित्तरक्तघ्नीलघ्वीचकथिताबुधैः॥ २५ ॥

कुंभड़ौरीके गुण ॥

कुम्भड़ौरीमें बड़ियोंकेसमान गुणहोतेहैं और यह विशेषकरके हलकी तथा रक्तपित्तनाशक होतीहै २५

अथ मुद्गवटी ॥

मुद्गानांवटिकातद्वद्रचितासाधितातथा । पथ्यारुच्यातथालघ्वीमुद्गसूपगुणास्मृता २६॥

मूंगकी बड़ियां ॥

उड़दकी बड़ियोंके समान बनाईगई मूंगकी बड़ीहित पथ्य रुचिकारक हलकी और मूंगकी दालके समान गुणवाली होती हैं ॥ २६ ॥

क्षरिकवच्छ ॥

माषपिष्टिकयालिप्तंनागवल्लीदलंमहत् । तत्तुसंस्वेदयेत्युक्त्यास्थाल्यामास्तारकोपरि ॥ ततोनिष्काश्यतंषण्ड्यंततस्तैलेनभर्जयेत् । षण्ड्यंषण्डेनयोग्यमितियावत् ॥ अलीकमत्स्यउक्तोऽयंप्रकारःपाकपण्डितैः । तंवृन्ताकभटित्रेणवास्तूकेनचभक्षयेत्२७॥

पानके सैंढ़ेकी विधि ॥

बड़े पानपर उड़दकी पिट्ठीको लपेटकर बटोहीमें कपड़ेपर रख युक्ति पूर्वकउबाले फिर निकालकर टुकड़े करके तेलमें भूने उसको पंडितलोग अलीकमत्स्य कहतेहैं इसको बेंगनके भर्त्ते और बथुई के सागकेसंगखाय ॥ २७ ॥

अथकढी ॥

स्थाल्यांघृतेवातैलेवाहरिद्राहिंगुभर्जयेत् । अवलेहनसंयुक्तंतक्रन्तत्रैवनिक्षिपेत्॥एषा सिद्धासमरीचाकथिताकथितानुधैःअवलेहनम् अरिहनइतिलोके।कथितापाचनीरुच्या लघ्वीवह्निप्रदीपनी॥कफानिलविबन्धघ्नीकिञ्चित्पित्तप्रकोपिणी।अलीकमत्स्याःशुष्कावा किंवाकथितयापुनः ॥ वृंहणारोचनावृष्यावल्यावातगदापहाः । कोष्ठशुद्धिकराःशुक्तघ्या किञ्चित्पित्तप्रकोपनाः ॥ अर्दितेसहनुस्तम्भेविशेषेणहिताः स्मृताः॥ २८ ॥

कढ़ीकीविधि और गुण ॥

पात्रमें घृत अथवा तेल डालकर हल्दी और हींगको भूने फिर उसमें अरिहन वेसनआदि जिस चीजकीकढ़ी बनानीहो उससे मिलाहुआमट्ठा छोड़े और निमक मिर्च डालकर पकावे उसको कथिता कहतेहैं कढ़ी पाचक रुचिकारक हल्की दीपन कफवात नाशक विबंधनाशक और कुछ पित्तकाकोप करने वालीहोती है सेंढ़े सूखे अथवा कढ़ीमें भिगोयेहुए धातुवर्द्धक रुचिकारक वीर्य और बलवर्द्धक और वातनाशकहोतेहैं सूखे सेंढ़ेकोष्ठको शुद्ध करनेवाले और अर्दित तथा जावड़ोंके जकड़नेमें विशेष करके हितकारी होतेहैं और कुछ पित्तको कुपितकरते हैं ॥ २७ ॥

अथ अदवरा ॥

मुद्गपिष्टाविरचितान्वटांस्तैलेनपाचितान् । हस्तेनचूर्णयेत्सम्यक्तस्मिंश्चूर्णेविनिःक्षिपेत् ॥ भृष्टंहिङ्ग्वार्द्रकंसूक्ष्ममरीचंजीरकंतथा । निम्बूरसंजदानींचयुक्त्यासर्वंविमिश्रयेत् ॥ मुद्गपिष्टिंपचेत्सम्यक्स्थाल्यामास्तारकोपरि । तस्यास्तुगोलकंकुर्यात्तन्मध्ये पूरणंक्षिपेत् ॥ तैलेतान्गोलकान्पक्त्वाकथितायांनिमज्जयेत् । गोलकाःपाचकाःप्रोक्ता स्तेत्वार्द्रकवटाअपि ॥ मुद्गार्द्रकवटारुच्यालघवोबलकारकाः । दीपनास्तर्पणाःपथ्यास्त्रिदोषेषुपूजिताः ॥ २८ ॥

अदवरा मूंगकी ठुवकी की विधि ॥

तेलमें पकेहुए मूंगके बड़ोंको चूर्ण करके उसमें भुनी हींग अदरक मिर्च जीरा नींबूकारस इलायची और अजवाइन मिलावे और मूंगकी पीठीको किसी पात्रमें रख अच्छी तरह पकाले उसके गोलेमें पूर्वोक्त मसाले समेतमूंगकेचूर्णको भरकरतेलमेंपकावे फिर इनगोलोंको कढ़ीमें भिगोवे इनकोआर्द्रक बड़ा कहते हैं यह रुचिकारक हलके बलकारी दीपन तृप्ति कारक पथ्य और त्रिदोषमें हितहोतेहैं २९॥

अथ पकोरी ॥

दालयश्चणकानान्तुनिस्तुषायन्त्रपेषिताः । तच्चूर्णंवेशनंप्रोक्तंपाकशास्त्रविशारदैः ॥ वटिकावेशनस्यापिकथितायांनिमज्जिताः । रुच्याविष्टम्भजननीबल्यापुष्टिकरीस्मृता ॥ एवमन्येऽपिवेशनभवाःप्रकाराःपरण्डनपरण्डप्रभृतयोबोद्धव्याः ॥ ३० ॥

पकोड़ी की विधि और गुण ॥

विन छिलके की पिसीहुई चनेकी दालको वेसन कहतेहैं कढ़ीमें भिगोई हुई वेसनकी पकोडी रुचिकारक विष्टंभी बलवर्द्धक और पुष्टिकारक होतीहै इसी प्रकार और भी वेसनके बनेहुए खंड आदिक पदार्थ जानने चाहिये ॥ ३० ॥

अथ मांसस्यप्रकाराः तत्शुद्धमांसम्सुधवासुइतिलोके ॥

पाकपात्रेघृतंदद्यात्तैलञ्चतदभावतः । तत्रहिंगुहरिद्रांचभर्जयेत्तदनन्तरम् ॥ छागादेरस्थिरहितमांसंतत्खण्डितंध्रुवम् । धौतंनिर्गालितंतस्मिन्घृतेतद्भर्जयेच्छनैः ॥ सिद्धयोग्यंजलन्दत्वालवणन्तुपचेत्ततः । सिद्धजलेनसम्पिष्यवेशवारंपरिक्षिपेत् ॥ वेशवार.वेगर इतिलोके । द्रव्याणिवेशवारस्यनागवल्लीदलानिच । तण्डुलाश्चलवंगानिमरिचानिसमा

स्तः ॥ अनेनविधिनासिद्धंशुद्धंमांसमितिस्मृतम् ॥ शुद्धमांसंपरंवृष्यंबल्यंरुच्यञ्चबृंहणम्। त्रिदोषशमकंश्रेष्ठंदीपनंधातुवर्द्धनम् ॥ ३१ ॥

मांस के प्रकार शुद्ध मांस (सुखवास) की विधि और गुण ॥

पकाने केपात्र में घृत अथवा अभाव में तेलडाल करउसमें हींग और हल्दीको भूने फिर अस्थिरहितप्रकरे आदिके मांस को टुकड़े २ करके और धोके साफ कर उसी घृतमें धीरे२ भूने फिर उसमें परिपाक के अनुमान जल और निमक डाले पकजाने पर जल से पीसकर वेसवार (पान चावल लौंग और मिर्च यह संक्षेप विधिहै) डाले इस प्रकार से बनेहुए मांस को शुद्ध मांस कहतेहैं यह अत्यन्त वीर्यवर्द्धक बलकारी रुचिकारक पोषक त्रिदोष नाशक दीपन और धातु वर्द्धक होताहै ॥ ३१ ॥

अथ सेहुडक। सहवासुइतिलोके ॥

छागादेर्मांसमूर्वादेःकुट्टितंखण्डितंपुनः। शुद्धमांसविधानेनपचेदेतत्सहद्रकम् ॥ सहद्रकंगुणैर्ग्रन्थशुद्धमांसगुणंस्मृतम् ॥ ३२ ॥

सेहुडक (सहवासु) की विधि और गुण ॥

बकरे आदि की जंघा आदिकों का मांस कूटकरके काटा गया और शुद्ध मांस की विधिसे पकाया हुआ सहद्रक कहाताहै इसमें शुद्ध मांस के समान गुण होते हैं ॥ ३२ ॥

अथ अखनी ॥

पाकपात्रेघृतंदत्वाहरिद्राहिङ्गुभर्जयेत्। छागादिसकलस्यापिखण्डान्यपिचभर्जयेत् ॥ सिद्धयोग्यंजलंदत्वापचेन्मृदुतरंयथा। जीरकादियुतेतक्रेमांसखण्डानितारयेत् ॥ तक्रमांसन्तुवातघ्नंलघुरुच्यंबलप्रदम्। कफघ्नोपित्तलःकिञ्चित्सर्वाहारस्यपाचनम् ॥ तक्रमांसम्अखनीइतिलोके ॥ ३३ ॥

अखनी की विधि और गुण ॥

पकाने के पात्र में घृतडालकर हल्दी और हींग को भूने फिर उसी में बकरी आदिके मांस के टुकड़ों को भूने इसके उपरान्त परि पाक के अनुसार धीमी अग्निमें पकावे फिर जीरा आदि मसालोंसे युक्त मट्ठ में उन मांस के टुकड़ों को छोड़े इसको तक्रमांस कहते हैं यह वात नाशक हलका रुचिकारी बलिष्ठ कफनाशक कछु पित्त वर्द्धक और सम्पूर्ण भोजन के पदार्थों का पचाने वाला होता है ॥ ३३ ॥

अथआस ॥

पाकपात्रेतुवृहतिमांसखण्डानिनिःक्षिपेत। पानीयप्रचुरंसर्पिःप्रभूतंहिंगुजीरकम् ॥ हरिद्रामार्द्रकंशुण्ठींलवणंमरिचानिच। तण्डुलांश्चापिगोधूमानजम्बीराणांरसान्बहून् ॥ यथासर्वाणिवस्तूनिसुपक्वानिभवन्तिहि। तथापचेत्तुनिपुणोवहुमांसंक्षितिर्यथा ॥ एषाहरीसाबलकृत्वातपित्तापहागुरुः। शीतोष्णाशुक्रदास्निग्धासरासंधानकारिणी ॥ ३४ ॥

आसकी विधि और गुण ॥

पकाने के बड़े पात्र में मांस के टुकड़े डाले उसमें अधिक जल घी हींग जीरा हल्दी अदरक सोंठ निमक मिरच चांवल गेहूं और जंभीरी नींबूका रस यह सब वस्तु डाले इनसब वस्तुओं को अच्छे प्रकार से पकावे फिर जबमांड़ के समान होजाय तब उतारे इसको हरीसा कहते हैं हरीसा बलकारी

वात पित्त नाशक भारी शीतोष्ण वीर्य वर्द्धक स्निग्ध दस्तावर और टूटे हुये को जोड़ने वाली होती है ॥ ३४ ॥ अथ तलितमांसम् ॥

शुद्धमांसविधानेनमांसंसम्यक्प्रसाधितम्। पुनस्तदाज्येसम्भृष्टंतलितंप्रोच्यतेवुधैः॥ तलितंवलमेधाग्निमांसौजःशुक्रवृद्धिकृत् । तर्पणंलघुसुस्निग्धरोचनंदढ़ताकरम्॥३५॥

तले हुये मांस की विधि और गुण ॥

शुद्ध मांस की रीति से पके हुये मांस को फिर घीमें भूने यह तलित कहलाता है तला हुआमांस वल मेधा अग्नि मांस ओज तथा वीर्य वर्द्धक तृप्ति कारक हलका स्निग्ध रुचि कारी और पुष्टिकारकहोता है ॥ ३५ ॥ अथ सींख ॥

कालखण्डादिमांसानिग्रन्थितानिशलाकया । घृतंसलवणंदत्वानिर्धूमेदहनेपचेत् ॥ तत्तुशूल्यमिदंप्रोक्तंपाककर्मविचक्षणैः । शूल्यंपलंसुधातुल्यंरुच्यंवह्निकरंलघुः ॥ कफ वातहरंवल्यंकिञ्चित्पित्तकरंहितत् ॥ ३६ ॥

सींककी विधि और गुण ॥

वकरे आदिके यकृतआदिके मांसकोघी और निमक मिलाकर शलाकामें पोवे फिरधूम रहित अग्नि में पकावे इसको शूल्य कहतेहैं यह अमृतके तुल्य रुचिकारी अग्नि वर्द्धक हलका कफ वात नाशक और कुछ पित्त वर्द्धक होताहै ॥ ३६ ॥ मांस शृंगाटकम् ॥

शुद्धमांसंतनूकृत्यकर्त्तितंस्वेदितंजले। लवङ्गहिङ्गुलवणमरिचार्द्रकसंयुतम् ॥ एला जीरकधान्याकनिम्बूरससमन्वितम् । घृतेसुगन्धेतद्भृष्टंमांसंशृंगाटकोच्यते ॥ मांसंशृंगाटकंरुच्यंबृंहणंवलकृद्गुरु । वातापित्तहरंत्वप्यंकफघ्नंवीर्य्यवर्द्धनम् ॥ ३७ ॥

मांस शृंगाट ककीविधि औरगुण ॥

शुद्धमांन के सूक्ष्म टुकडे करके जलमें उबाले फिर लौंग हींग निमक मिर्च अदरक इलायची जीरा धनियां और नींबूके रसको मिलाके और सुगन्धित घृत में भूने यह पूरण कहलाता है मैदा के बनेहुए सिंघाडे में पूरनभरके फिर घृत में भूननेसे मांस शृंगाटक कहलाता है यह रुचिकारक धातु वर्द्धक वलकारी भारी वात पित्त नाशक पुष्टिकारक कफघ्न और वीर्य वर्द्धक होता है ॥ ३७ ॥

अथ मांसरसा ॥

सिद्धमांसरसोरुच्यःश्रमश्वासक्षयापहः । प्रीणनोवातपित्तघ्नःक्षीणानामल्परेतसाम् ॥ विश्लिष्टभग्नसन्धीनांशुद्धानांशुद्धिकाङ्क्षिणाम् । स्मृत्योजोवलहीनानांज्वरक्षीणक्षतोरसाम् ॥ शस्यतेस्वरहीनानांदृष्ट्यायुःश्रवणार्थिनाम् प्रकाराःकथिताःसन्तिवहवोमांससम्भवाः ॥ ग्रन्थविस्तारभीतेस्तेमयानात्रप्रकीर्त्तिताः ॥ ३८ ॥

मांसके रसके गुण ॥

पकेहुए मांसका रस रुचिकारी प्रसन्नता कारक और श्रम श्वास क्षय वात तथा पित्त नाशक होता है यह क्षीण अल्पवीर्य वाले भग्नहुई संधिवाले वमनादिकों से शुद्ध अथवा शुद्धताके चाहने वाले स्मरण तथा ओज रहित निर्बल ज्वर से क्षीण उरक्षत रोगयुक्त स्वरहीन और दृष्टि श्रवण

शक्ति तथा आयुके चाहने वालोंको श्रेष्ठ होता है मांसके बहुत से प्रकार प्राचीन लोगोंने कहे हैं परन्तु ग्रन्थ के विस्तारके भयसे मैंने यहां नहीं लिखे हैं ॥ ३८ ॥

शाकपाक विधिः ॥

हिङ्गुजीरयुतेतैलेक्षिपेच्छाकंसुखण्डितम् । लवणंचाम्लचूर्णादिसिद्धेहिङ्गूदकंक्षिपेत् ॥ इत्येवंसर्वशाकानांसाधनोऽभिहितोविधिः ॥ ३९ ॥

शाक बनाने की विधि ॥

शाकको टुकड़े २ करके हींग और जीरा युक्त तेलमें छोड़े फिर पकजानेपर निमक अमचूर आदिक मसाले और हींग युक्तजल छोड़े यह संपूर्ण शाकोंके बनानेकी विधिकही गई है ॥ ३९ ॥

तत्र मण्ठकंमाठइतिलोके ॥

समितामर्दयेदन्यजलेनापिचसन्नपेत् । तस्यास्तुवटिकाकृत्वापचेत्सर्पिषिनीरसम् ॥ एलालवंगकर्पूरमरीचाद्यैरलंकृते । मज्जयित्वासितापाकेततस्तञ्चसमुद्धरेत् ॥ अयं प्रकारःसंसिद्धोमठइत्यभिधीयते । सन्नयेत्मर्दयेत् ॥ मठस्तुबृंहणोवृष्योबल्यःसुमधुरोगुरुः । पित्तानिलहरोरुच्योदीप्ताग्नीनांसुपूजितः ॥ समिताःशर्करासर्पिर्निर्मिताश्चपरेऽपिये । प्रकाराअमुनातुल्यास्तेऽपिचेत्तद्गुणाःस्मृताः ॥ ४० ॥

पक्वान्नबनाने के प्रकार मांठ (बालूसाई) की विधि और गुण ॥

पहले मैदाको धीसे मले फिर जलसे उसने उसको वटिका बनाकर बिनाजलके घृतमें पकावे फिर इलायची लौंग कपूर और मिर्च आदि मसालोंसे युक्त शक्करके पागमें भिगोकर निकाले इसको मंठ (बालूसाई) कहते हैं यह धातु वर्द्धक वीर्य वर्द्धक बलकारी सुन्दर मधुर भारी वात पित्त नाशक रुचिकारक और दीप्ताग्नि पुरुषों कोहित होतेहैं मैदा शकर और घृतके द्वारा इसी प्रकार बनेहुए अन्य पदार्थों में भी इसी प्रकारके गुण होतेहैं ॥४०॥

अथ सम्पावपेराक ॥

पर्प्पट्यःसाज्यसमितानिर्मिताघृतमार्जिताः । कुट्टिताश्चालिताःशुद्धशर्कराभिर्विमर्दिताः ॥ तत्रचूर्णंक्षिपेदेलालवङ्गमरिचानिच । नालिकेरंसकर्पूरश्चारबीजान्यनेकधा ॥ घृताक्तसमितापुष्टरोटिकारचितातत. । तस्यान्तःपूरणंतस्यकुर्य्यान्मुद्रांदृढांसुधीः ॥ सर्पिषि प्रचुरेतान्तुसुपचेन्निपुणोजनः । प्रकारज्ञैःप्रकारोऽयंसम्पावइतिकीर्त्तितम् ॥ ४१ ॥

पिरांक गूंझा की विधि ॥

घृत युक्त मैदाकी रोटी को घीमें सेके फिर उसको कूटकर छानले उसमें सफेद शक्कर मिला के इलायची लौंग मिर्च नारियलकीगिरी कपूर और चार दाना आदिक मसाले छोड़े फिर घृतयुक्त मैदा के पुष्टरोटबनावे उसमें पहले कहेहुए पूरको भरकर दृढतासे उसके मुखको बन्दकरके गोठन लगादे फिर बहुतसे धीमें उसको अच्छे प्रकार से पकावे इसको संपाव (गूंझा) कहते हैं इसमें माठके समान गुण होतेहैं ॥ ४१ ॥

अथ कर्पूरनालि ॥

घृताढ्ययासमितयालम्बंकृत्वापुटंततः । लवङ्गोल्वणकर्पूरयुतयासितयाऽन्वितम् ॥ पचेदाज्येनसिद्धेषाज्ञयाकर्पूरनालिका ।सम्पावसदृशीज्ञेयागुणैःकर्पूरनालिका ॥ ४२ ॥

कर्पूर नालिकी विधि ॥

घृत युक्त मैदासे लंबा दोनासा बनाकर उसमें लौंग मिर्च और कर्पूर युक्त शक्कर भरकर घृतमें पकावे इसको कर्पूर नालिका कहतेहैं इसमें पिरांक के समान गुण होतेहैं ॥ ४२ ॥

फेनिका फेनी ॥

समितायाघृताढ्यायावर्त्तिर्दीर्घांसमाचरेत् । तास्तुसन्निहितादीर्घाःपीठस्योपरिधारयेत् ॥ वेल्लयेद्वेल्लनेनैतायथैकापर्प्पटीभवेत् ।ततश्छुरिकयातान्तुसलग्नामेवकर्त्तयेत् ॥ ततस्तुवेल्लयेद्भूयःसट्टकेनचलेपयेत् । शालिचूर्णघृतंतोयंमिश्रितंदशकंवदेत् ॥ ततः संवृत्यतल्लोप्त्रींविदधीतपृथक्पृथक् । पुनस्तांवेल्लयेल्लोप्त्रींयथास्यान्मण्डलाकृतिः॥ ततस्तांसुपचेदाज्येभवेयुश्चपुठाःस्पुटाः । सुगन्धयाशर्करयातदुद्धूलनमाचरेत् ॥ सिद्धेषाफेनिकानाम्नीमण्डकेनसमागुणैः । ततःकिञ्चिल्लघुरियंविशेषोऽयमुदाहृतः ॥ वेल्लयेत् प्रसारयेत्वेल्लनः वेलनइतिलोके ॥ पर्प्पटीरोटी । लोप्त्रीलोईइतिलोके ॥ ४३ ॥

फेनी की विधि ॥

घृत युक्त मैदाकी लंबी वत्ती बनावे फिर उनको निकट रखकर बेलनसे बेले फिर एकरोटी सीबन जानेपर चक्कूसे मिलीहुई को चीरे इसके पीछे सट्टक) चावलों का आटा घी और जल (यह तीनों मिलेहुये सट्टक कहलातेहैं)को उस पर लेपकरके फिर उन चिरीहुई पट्टियोंको लपेटकर अलग२ करले और उनको मंडलाकार बनाके बेले और घीमें पकाले तब तार २ अलग होजायँगे इसको सुगन्धि युक्त शक्कर में लपेटे यह फेनिका कहलाती है इसमें मांठ (बालूसाई) के समान गुण होते हैं और विशेष करके कुछ हलकापन भी होताहै ॥ ४३ ॥

अथ शष्कुलीसोहाली इतिलोके ॥

समितायाघृताक्तायालोप्त्रींकृत्वाचवेल्लयेत् । आज्येतांभर्जयेत्सिद्धांशष्कुलीफेनिकागुणा॥४४॥

सुहालीकी विधि ॥

घृतयुक्त मैदाकी लोईको वेलकरघीमें पकानेसे शष्कुली कहलाती है इसमें फेनीकेसमानगुण होतेहैं ४४

अथ सेवीकामोदकसेवकालाडू ॥

घृताढ्ययासमितयाकृत्वासूत्राणितानितु । निपुणोभर्जयेदाज्येखण्डपाकेनयोजयेत् ॥ युक्तेनमोदकान्कुर्य्यात्तेगुणैर्मण्डकायथा ॥ ४५ ॥

सेवके लड्डुओंकी विधि ॥

घृत युक्त मैदाके सूत्रोंको घीमें पकाकर फिर खांडके पाकमें लड्डुबनावे इन में मांठके समान गुण होते हैं ॥ ४५ ॥

अथ मुक्तामोदका मोतिलाडू ॥

मुद्गानांधूमसीसम्यक् घोलयेन्निर्मलाऽम्बुना। कटाहस्यद्वतेरूर्द्धं झर्झरंस्थापयेत्ततः॥ धूमसीन्तुद्रवीभूतां प्रक्षिपेत् झर्झरोपरि। पतंतिबिंदवस्तस्मात्तान्सुपक्कान्समुद्धरेत्॥ सितापाकेनसंयोज्य कुर्य्याद्धस्तेनमोदकान्॥ झर्झरंझर्झराइतिलोके। लघुर्ग्राहीत्रिदोषघ्नः स्वादुःशीतोरुचिप्रदः॥ चक्षुष्योज्वरहृद्वल्यस्तर्पणोमुद्गमोदकः॥ ४६॥

मूंगके मोती चूरके लड्डू॥

मूंगकी धुआंसको जल में घोलकर कढ़ाई के किनारे पर रक्खे हुए झरने में उसको छोड़े उससे बुंदें गिरतीहैं उनको पकाकर निकालले फिर शक्कर के पाक में उनके लड्डू बनाले मूंगके लड्डू हलके ग्राही त्रिदोषनाशक मधुरशीतल रुचिकारी नेत्रोंकोहित ज्वरघ्न बलकारी और तृप्तिकारक होते हैं४६॥

अथ सेवनमोदकः। सेवका लड्डुआ॥

एवमेवप्रकारेण कार्य्याःसेवनमोदकाः। तेवल्यालघवःशीताःकिञ्चिद्वातकरास्तथा॥ विष्टम्भिनोज्वरघ्नाश्च पित्तरक्तकफापहाः॥ ४७॥

बेसन की बूंदीके लड्डू॥

बेसनके लड्डूभी मूंगकेही लड्डुओंके समान करने चाहियें यह बलकारक हलके शीतल कुछ बादी विष्टंभी और ज्वर रक्त पित्त तथा कफनाशक होते हैं॥ ४७॥

दुग्ध कूपिका॥

तण्डुलचूर्णविमिश्रितनष्टक्षीरेणसान्द्रपिष्टेन। दृढ़कूपिकांविदध्यात्ताञ्चपचेत्सर्पिषा सम्यक्॥ अथतांकोरितमध्यांघनपयसापूर्णगर्भाञ्च। शष्कमुद्रितवदनांसर्पिषिसपक्कवदनाञ्च॥ अथपाण्डुखण्डपाकेस्नापयेत्कर्पूरवासितेकुशलः। अथदुग्धकूपीसावल्यापित्तानिलापहा॥ वृष्याशीतागुर्वीशुक्रकरीबृंहणीरुच्या। विदधातिकायपुष्टिंदृष्टिंदूरप्रसारिणींसुचिरम्॥ ४८॥

दुग्ध कूपिका की विधि और गुण॥

फटे दूध में चावल के आटे को मिलाके उसको अच्छेप्रकार से पीसले फिर उसकी दृढ़ कुप्पी बनाकर घीमें अच्छी तरह सेंकले इसके उपरान्त इसमें गाढ़ादूध भरके ऊपर कहेहुए फटेदूधमें पीसेहुए चावल के चूरेसे उसके मुखको बंद करके घीमें पकाले फिर उसे कपूर युक्त श्वेत शकरकी चासनी में पागले उसको दुग्ध कूपिका कहते हैं यह बलकारक वात पित्त नाशक शीतल भारीवीर्य वर्द्धक तृप्ति तथा रुचिकारी शरीर को पुष्ट करने वाली और दृष्टि वर्द्धक होती है॥ ४८॥

कुण्डलिनीजलेवी॥

नूतनंघटमानीयतस्यान्तःकुशलोजनः। प्रस्थार्द्धपरिमाणेनदध्नाऽम्लेनप्रलेपयेत्॥ द्विप्रस्थांसमितांतत्रदध्यम्लंप्रस्थसम्मितम्। घृतमर्द्धसरावञ्चघोलयित्वाघृतेक्षिपेत्॥ आतपेस्थापयेत्तावद्यावद्यातितदम्लताम्। ततस्तत्प्रक्षिपेत्पात्रेसच्छिद्रेभाजनेतुतत्॥ परिभ्राम्यपरिभ्राम्यतत्सन्तप्तेघृतेक्षिपेत्। पुनःपुनस्तदावृत्याविदध्यान्मण्डलाकृतिम्॥

तांसुपक्कांघृतान्नीत्वासितापाकेतनुद्रवे । कर्पूरादिसुगन्धञ्चस्नापयित्वोद्धरेत्ततः ॥ एपा कुण्डलिनीनाम्नापुष्टिकान्तिबलप्रदा । धातुवृद्धिकरीवृष्यारुच्याचक्षिप्रतर्पणी॥ ४९ ॥

जलेबी की विधि और गुण ॥

नवीन घटलाकर उसमें आधसेर खट्टे दहीका लेपकरे फिर दोसेर मैदा एकसेर खट्टादही और पावभर घी घोलकर उसमें छोडे यह छोड़कर जबतक खट्टा नहोजाय तबतक धूपमें रक्खे फिर उसको छिद्रयुक्त पात्रमें लेकर तपेहुए घीमें बारम्बार घुमा २ कर मडलाकार बनाकर पकजाने पर कर्पूरादिकोंसे सुगन्धित शक्कर की चासनी में डुबोवे इसको कुंडलिनी कहते हैं यह पुष्टिकारककान्तिवर्द्धक बलिष्ठ धातु तथा वीर्य वर्द्धक रुचिकारी और इन्द्रियोंको तृप्ति करनेवाली होतीहै ॥ ४९ ॥

अथ पश्चात्परिवेश्याणि सिखरिणी ॥

आदोमाहिषमम्लमम्बुरहितदध्याढकंशर्कराम् । शुभ्रांप्रस्थयुगोन्मितांशुचिपटेकिञ्चित्किञ्चित्क्षिपेत् ॥ दुग्धेनार्द्धघटेनमृण्मयनवस्थाल्यादृढंस्रावयेत् । एलाबीजलवंगचन्द्रमरिचैर्योग्यैश्चतद्योजयेत् ॥ भीमेनप्रियभोजनेनरचितानाम्नारसालास्वयम् । श्रीकृष्णेनपुरापुनःपुनरियंप्रीत्यासमास्वादिता॥एपायेनवसन्तवर्जितदिनेसंसेव्यतेनित्यश । तस्यस्यादतिवीर्य्यवृद्धिरनिशंसर्वेन्द्रियाणांबलम् ॥ ग्रीष्मेतथाशारदियेरविशोपिताङ्गा येचप्रमत्तवनितासुरतातिखिन्नाः । येचापिमार्गपरिसर्पणशीर्णगात्रास्तेषामियंवपुषिपोषणमाशुकुर्य्यात् ॥ रसालाशुक्रलाबल्यारोचिनीवातपित्तजित् दीपिनीबृंहणीस्निग्धामधुराशिशिरासरा । रक्तपित्ततृपादाहप्रतिश्यायंविनाशयेत् ॥ ५० ॥

भोजन के पाछे परोसने की वस्तु । शिखरन की विधि और गुण ॥

पहले जलरहित भैंसके १६ सेर खट्टे दही और आठसेर शक्करको श्वेत वस्त्र में थोड़ी २ छोडे फिर आधे घडे दूध से नये मृत्तिकाके पात्र में छानलेवे और इसमें यथा योग्य इलायची लौंग कपूर और मिर्च डाले यह भोजन प्रिय भीमसेन से बनाई गई रसाला कहलाती है पूर्व कालमें, श्री कृष्ण जीने प्रीति पूर्वक बारम्बार इसका स्वादु लियाथा जो मनुष्य बसन्त ऋतुको छोड़कर नित्य इसका सेवन करते हैं उनके अत्यन्त वीर्यकी वृद्धिऔर इन्द्रियों में बलहोता है जो मनुष्य ग्रीष्म तथा शरदऋतुकी धूपसे अत्यन्त सतप्त अथवा मदोन्मत्त स्त्रियोंके साथ भोग करने से अत्यन्त खिन्न और मार्गमें चलने से जिनके अंग शिथिल होगये हैं उनके शरीर में यह शिखरन अत्यन्त शीघ्र पुष्टता को करती है शिखरन वीर्य वर्द्धक बलकारी रुचिकारी बात पित्त नाशक दीपन धातु वर्द्धक स्निग्ध मधुर शीतल दस्तावर और रक्त पित्त तृषा दाहतथा पीनस नाशक होती है ॥ ५० ॥

शर्करोदकसरबत ॥

जलेनशीतलेनैवघोलिताशुभ्रशर्करा । एलालवंगकर्पूरमरिचैश्चसमन्विता ॥ शर्करोदकनाम्नातत्प्रसिद्धंविदुषामुखे । शर्करोदकमाख्यातंशुक्रलंशिशिरंसरम् ॥ बल्यरुच्यंलघुस्वादुवातपित्तप्रणाशनम् । मूर्च्छाछर्दितृपादाहज्वरशान्तिकरम्परम् ॥ ५१ ॥

सर्वत की विधि और गुण ॥

शीतल जलसे श्वेत शक्कर को घोलके इसमें इलायची लौंग कपूर और मिर्च मिलावे इसको

शर्करोदक कहते हैं सर्वत वीर्य बर्द्धक शीतल दस्तावर बलिष्ठ रुचिकारक हलका मधुर वातघ्न रक्त पित्त नाशक और मूर्च्छा छर्दि तृषा दाह तथा ज्वर के नाश करने में श्रेष्ठ होताहै ॥ ५१ ॥

अथ प्रपानकंपन्ना ॥

तत्रआम्रफलप्रपानकम्॥ आम्रमामंजलेस्विन्नंमर्दितंदृढपाणिना। सिताशीताम्बुसंयुक्तंकर्पूरमरिचान्वितम् ॥ प्रपानकमिदंश्रेष्ठंभीमसेनेननिर्मितम् । सद्योरुचिकरंबल्यंशीघ्रमिन्द्रियतर्पणम् ॥ ५२ ॥ पन्नाकीविधि ॥ आमकापन्ना ॥

कच्चे आमको पानीमें उबालकर हाथसे खूबमले फिर उसमें शक्कर शीतल जल कपूर और मिर्च मिलावे यह भीमसेनका बनायाहुआ पन्ना बहुत श्रेष्ठहोताहै आमका पन्ना शीघ्ररुचिकारक बलकारी और शीघ्र इन्द्रियों को तृप्त करने वालाहोताहै ॥ ५२ ॥

अथाम्लिकाफलपानकम् ॥

अम्लिकायाःफलंपक्वंमर्दितंवारिणादृढम् । शर्करामरिचैर्मिश्रंलवंगेन्दुसुवासितम् । अम्लिकाफलसम्भूतंपानकंवातनाशनम् । पित्तश्लेष्मकरंकिंचित् सुरुच्यं वह्निबोधनम् ॥ ५३ ॥ इम्लीकापन्ना ॥

पक्की इमलीको जलमें मलकर शक्कर मिर्च लौंग और कपूर मिलावे यह इम्लीका पन्ना बात नाशक कुछ कफ पित्त नाशक अत्यन्त रुचिकारी और दीपनहोताहै ॥ ५३ ॥

निम्बूक फल पानकम् ॥

भागैकंनिम्बुजंतोयंषड्भागंशर्करोदकम् । लवंगमरिचैर्मिश्रंपानंपानकमुत्तमम् ॥ निम्बूफलभवंपानमत्यम्लंवातनाशनम् । वह्निदीप्तिकरंरुच्यंसमस्ताहारपाचकम् ५४॥

नींबूकापन्ना ॥

एकभाग नींबूकारस और छः भाग सर्व्वत मिलाकर लौंग और मिर्च छोड़े नींबूका पन्ना बहुत खट्टा बात नाशक दीपन रुचिकारक और संपूर्ण आहारका पचानेवाला होता है ॥ ५४ ॥

धान्याकपानकं ॥

शिलायांसाधुसम्पिष्टंधान्याकंवस्त्रगालितम् । शर्करोदकसंयुक्तंकर्पूरादिसुसंस्कृतम् ॥ नूतनेमृण्मयेपात्रेस्थितंपित्तहरंपरम् ॥ ५५ ॥

धनियेकापन्ना ॥

शिलपर अच्छे प्रकार से धनियेको पीसकर सर्वत मिलाके वस्त्रमें छाने फिर कपूर आदिक सुगन्धित वस्तु मिलाके मृत्तिका के नवीन पात्रमेंरक्खे यहपन्ना पित्तका अत्यन्त नाशकहोताहै॥५५॥

अथ काञ्जी ॥

काञ्जीविधिर्वटकावसरेलिखितःकाञ्जीकरोचनंरुच्यंपाचनंवह्निदीपनम् । शूलजीर्णविबन्धघ्नंकोष्ठशुद्धिकरंपरम् ॥ नभवेत्काञ्जिकंयत्रतत्रजालि प्रदीयते ॥ ५६ ॥

कांजीके गुण ॥

कांजी बनानेकी विधि बड़ोंके साथमें लिखी गई है कांजी रुचियुक्त और अन्यवस्तुमें भी रुचि का

रक पाचक दीपन कोष्ठ शोधक और शूल अजीर्ण तथा विवन्ध नाशक होतीहैं जहांकांजी न मिले वहां जालिका व्यवहार करतेहैं ॥ ५६ ॥

अथ जारी ॥

आममाम्रफलंपिष्टंराजिकालवणान्वितम्। भृष्टहिंगुयुतंपूतंघोलितंजालिरुच्यते ॥ जालिर्हरतिजिह्वायाःकुण्ठत्वंकण्ठशोधनी॥मन्दमन्दन्तुपीतासारोचिनीवह्निबोधिनी५७॥

जालिकी विधि ॥

कच्चे आमको पीसकर उसमें राई नोन और भुनी हींग मिलाकर घोले इसको जालिकहते हैं यह जिह्वाकी खुजलीकी नाशक कंठशोधक और थोड़ी२ पीनेसे रुचिकारी तथा दीपनहोतीहै ॥५७॥

अथ तक्रं ॥

तूर्य्यांशेनजलेनसंयुतमतिस्थूलंसदम्लंदधि । प्रायोमाहिषमम्बुकेनविमलेमृद्भाजने मालयेत् ॥ भृष्टंहिंगुचजीरकञ्चलवणंराजीञ्चकिञ्चिन्मिताम्। पिष्टान्तत्रविमिश्रयेद्भवति तत्तक्रंनवःस्यात्प्रियम् ॥ तक्रंरुचिकरंवह्निदीपनंपाचनंपरम् । उदरेयेगदास्तेषांनाशनं तृप्तिकारकम् ॥ ५८ ॥ मट्ठेकीविधि और गुण ॥

चौथाई जलसे युक्त बहुत गाढ़े भैंसकेखट्टे दहीको निर्मल मृत्तिकाके पात्रमें मथकर भुनीहींग जीरा नोन और राई पीसकर मिलावे यह मट्ठा सबको प्रियहोताहै मट्ठा रुचिकारक दीपन अत्यन्त पाचक तृप्तिकारक और उदरके संपूर्ण रोगोंका नाशकहोताहै ॥ ५८ ॥

अथ दुग्धम् ॥

विदाहीन्यन्नपानानियानिभुंक्तेहिमानवः । तद्विदाहप्रशान्त्यर्थंभोजनान्तेपयःपिबेत् ॥ दुग्धस्यापरेगुणाउक्ताएवदुग्धवर्गे ॥ ५९ ॥

दूध ॥

मनुष्य जिन दाहकारी वस्तुओंको भोजन करताहै उनके दाहके शान्त करनेको भोजनके अन्तमें दूध पीनाचाहिये दूधके और सबगुण दुग्ध वर्गमें कहेगयेहैं ॥ ५९ ॥

अथ शक्तवः ॥

धान्यानिभ्राष्ट्रभृष्टानियन्त्रपिष्टानिशक्तवः६० (तत्रयवशक्तवः) यवजाःशक्तवःशीता दीपनालघवःसराः । कफापित्तहरारूक्षालेखनाश्चप्रकीर्त्तिताः ॥तेपीतावलदावृष्याबृंहणा भेदनास्तथा। तर्पणामधुरारुच्याःपरिणामेबलापहाः ॥ कफपित्तश्रमक्षुत्तृट्व्रणनेत्राम यापहाः । प्रशस्ताघर्मदाहाढ्यव्यायामार्त्तशरीरिणाम् ॥ ६१ ॥

सत्तुओंकी विधि ॥

भाड़में भुनेहुए और पिसेहुए धान्यको सक्तुकहते हैं ६० (जौंकेसत्तू) जौके सत्तू शीतल दीपन हलके दस्तावर कफ पित्त नाशक रूखे और लेखनहोतेहैं पान किएहुये सत्तू बलकारी वीर्य तथा धातु वर्द्धक दस्तावर तृप्तिकारक मधुर रुचिकारी परिणाममें बलकारक और कफ पित्त श्रम क्षुधा तृषा घाव तथा नेत्र रोग नाशकहोतेहैं यह धूप दाह मार्ग तथा व्यायाम से पीड़ित शरीर वालों को उपकारी होतेहैं ॥ ६१ ॥

चणकयव शक्तवः ॥

निस्तुषैश्चणकैर्भृष्टैस्तुर्य्यांशैश्चयवैःकृताःशक्तवःशर्करासर्पिर्युक्ताग्रीष्मेतिपूजिता६२

जौचने के सत्तू ॥

विनाछिलके के भूने हुये चने और सम भाग जौके सत्तू घीशक्करसे मिले हुये ग्रीष्म ऋतु में अत्यन्त उपकारी होते हैं ॥ ६२ ॥

शालिशक्तवः ॥

शक्तवःशालिसम्भूतावह्निदालघवोहिमाः । मधुराग्राहिणीरुच्यापथ्याश्चबलशुक्रदाः ॥ नभुक्त्वानरदैश्छित्वानानिशायांनवावहून् । नजलान्तरितानतद्विशक्तूनाद्यान्नकेवलान् ॥पृथक्पानंपुनर्दानंश्रामिषंपयसानिशि । दन्तच्छेदनमुष्णञ्चसप्तशक्तुषुवर्जयेत्६३

चावल के सत्तू ॥

चावलके सत्तू दीपन हलके शीतल मधुर ग्राही रुचिकारक पथ्यओर बलवीर्य दायक होते हैं भोजनके अन्त में दांतों से चबाकर रात्रि के समय बहुत जल रहित अथवा केवल जल से सत्तू न खाय सत्तुओं के साथ अलग जल न पिये एक वारसत्तू खाकर फिर दिये हुये सत्तू न खाय मांस सहित दुग्धयुक्त रात्रि के समय दांतों से काटकर और उष्ण सत्तू वर्जित हैं ॥ ६३ ॥

अथ बहुरी ॥

यवास्तुनिस्तुषाभृष्टाःस्मृताधानाइतिस्त्रियां । धानाःस्युर्दुर्जरारूक्षास्तृट्प्रदागुरवश्चताः ॥ तथामेहकफच्छर्दिनाशिन्य सम्प्रकीर्तिताः ॥ ६४ ॥

बौहरी की विधि और गुण ॥

भूसी रहित भुने हुये जवों को बौहरी कहते हैं बौहरी कठिनता से पचने वाली रूखी तृषा नाशक भारी और प्रमेह कफ तथा छर्दि नाशक होतीहै ॥ ६४ ॥

अथ लाजा ॥

येषांस्युस्तण्डुलास्तानिधान्यानिसतुषाणिच । भृष्टानिस्फुटितान्याहुर्लाजानीतिमनीषिणः ॥ लाजाःस्युर्मधुराशीतालघवोदीपनाश्चते । स्वल्पमूत्रमलारूक्षाबल्यापित्तकफच्छिदः ॥ छर्द्यतीसारदाहास्रमेहमेदस्तृषापहाः ॥ ६५ ॥

खीलों की विधि और गुण ॥

जिन धान्योंसे चावल निकल ते हैं उनको भूसी समेत भूनने पर फूल कर जो वस्तु तैयार होतीहै उसे लाजा (खील) कहते हैं खील मधुर शीतल हलकी दीपन स्वल्पमल मूत्र कारी रूखी बलकारी और पित्त कफ छर्दि अतीसार दाह रक्त दोष प्रमेह मेद तथा तृषा नाशक होती है ॥ ६५ ॥

अथ चिड़वा ॥

शालयःसतुषाआर्द्राभृष्टाअस्फुटिताश्चतत् । कुट्टिताश्चिपिटाःप्रोक्तास्तेस्मृताःपृथुकाअपि ॥ पृथुकागुरवोवातनाशनाःश्लेष्मलाअपि । सक्षीराबृंहणावृष्याबल्याभिन्नमलाश्चते ॥ ६६ ॥

चिड़वों की विधि और गुण ॥

छिलके सहित भिगोये हुये धान्य भूने गये और विना खिले हुये कूटे गये चिपिट और पृथुक (चिड़वे) कहलाते हैं चिड़वे भारी वात नाशक और कफकारी होते हैं दूध सहित चिड़वे धातु तथा वीर्यवर्द्धक वलकारी और मल भेदक होते हैं ॥ ६६ ॥

अथ होरहा ॥

अर्द्धपक्वैःशमीधान्यैस्तृणाभृष्टैश्चहोलकः । होलकोऽल्पानिलोमेदःकफदोषत्रयापहः॥ भवेद्योहोलकोयस्यसचतत्तद्गुणोभवेत् ॥ ६७ ॥

होलोंकी विधि और गुण ॥

आधे पके हुए चने आदिक शमी धान्य तृण से भूने हुए होलक (होले) कहलाते हैं होले कुछ वादी और मेद कफ तथा त्रिदोष नाशक होते हैं जिस शमीधान्य का होला होता है उसी के समान गुण होता है ॥ ६७ ॥

अथ ऊंबी ॥

मञ्जरीत्वर्द्धपक्वाया यवगोधूमयोर्भवेत् । तृणानलेनसंभृष्टा बुधैरूवीतिसास्मृता ॥ (उमियाइतिलोके) ऊर्वीकफप्रदावल्यालघ्वीपित्तानिलापहा ॥ ६८ ॥

ऊंबीकी विधि और गुण ॥

जौ और गेहूं की आधी पकी हुई वाली तृण की अग्नि से भूनी हुई ऊंवी कहाती है यह ऊंबीकफवर्द्धक वलकारी हलकी और वात पित्त नाशक होती है ॥ ६८ ॥

अथ घुघुरी ॥

अर्द्धस्विन्नास्तुगोधूमाअन्येऽपिचणकादयः । कुल्माषाइतिकथ्यन्तेशब्दशास्त्रेषुपण्डितैः ॥ कुल्माषागुरवोरूक्षावातलाभिन्नवर्चसः ॥ ६९ ॥

घुघुरी की विधि और गुण ॥

आधे भीगे हुये गेहूं तथा चने आदिक अनाज को कुल्माष (घुघुरी) कहते हैं घुघुरी भारी रूखी वादी और मलभेदक होतीहै ॥ ६९ ॥

अथ तिलकुट ॥

पललन्तुसमाख्यातंसेक्षवन्तिलपिष्टकम् । पललंमलकृद्वृष्यंवातघ्नंकफपित्तकृत् ॥ बृंहणञ्चगुरुस्निग्धंमूत्राधिक्यनिवर्त्तकम् ॥ ७० ॥

तिलकुटकी विधि और गुण ॥

गुड़ आदिकों से युक्त कुटे हुये तिलोंको पालल (तिलकुट) कहते हैं पालल मल वर्द्धक वीर्यकारक वातघ्न कफ पित्तकारी धातुवर्द्धक भारी स्निग्ध और मूत्रको स्वल्प करनेवाला होता है ॥ ७० ॥

अथ पीना ॥

तिलकिट्टन्तुपिन्याकंस्तथातिलखलिःस्मृता॥पिण्याकोलेखनोरूक्षोविष्टंभीदृष्टिदूषणः ७१

खलीके गुण ॥

तिलके फोकको पिण्याक और तिलखलि वोलते हैं खली लेखन रूखी विष्टंभी और दृष्टिदूषक होतीहै ॥ ७१ ॥

अथ चाउर ॥

तण्डुलोमेहजन्तुघ्नःसनवस्त्वतिदुर्जरः ॥७२॥
इतिश्रीभावप्रकाशेकृतान्नवर्गः ॥

चावलों के गुण ॥

चावल प्रमेह तथा कृमिनाशक और नये चावल अत्यन्त कठिनतासे पचनेवालेहोतेहैं ॥ ७२ ॥
इतिश्री भावप्रकाशस्य भाषानुवादे कृतान्नवर्गः समाप्तः ॥

अथ वारिवर्गः। तत्रपानीयनामानिगुणाश्च ॥

पानीयंसलिलंनीरंकीलालञ्जलमम्बुच।आपोवार्व्वारिकन्तोयंपयःपाथस्तथोदकम्॥ जीवनंवनमम्भोऽर्णोऽमृतंघनरसोऽपिच। पानीयंश्रमनाशनंक्लमहरंमूर्च्छापिपासापहं तन्द्राछर्दिविबन्धहृद्बलकरंनिद्राहरंतर्पणम्। हृद्यंगुप्तरसंह्यजीर्णशमकंनित्यंहितंशीतलं लघ्वच्छंरसकारणंतुनिगतेपीयूषवज्जीविनाम् ॥ १ ॥

अथ वारिवर्गः ॥ पानीके नाम गुण ॥

पानीय सलिल नीर कीलाल जल अम्बु अप वारि वार तोय पयस पाथ उदक जीवन वन अम्भ अर्ण अमृत और घनरस यहपानी के नाम हैं पानी श्रम ग्लानि मूर्च्छा तृषा तन्द्रा छर्दि विबन्धत ध। निद्रा नाशक बलवर्द्धक तृप्तिकारी हृदयको हित अप्रकटरस अजीर्ण नाशक सदैव हित शीतल-हलका रसोंकाकारण और प्राणियोंको अमृतके समान होताहै ॥ १ ॥

तस्यभेदाः ॥

पानीयंमुनिभिःप्रोक्तंदिव्यंभौममितिद्विधा ॥ दिव्यंचतुर्विधंप्रोक्तंधाराजंकरकाभवम्॥ तौषारञ्चतथाहैमन्तेषुधारंगुणाधिकम् ॥ २ ॥

पानीके भेद ॥

मुनि लोगोंने दिव्य और भौम दोप्रकारका जल कहाहै इसमें से दिव्य जल चारप्रकारकाहै धाराका ओलोंका ओसका और बरफका ॥ २ ॥

तत्रधारस्यलक्षणं गुणाश्च ॥

धाराभिःपतितंतोयंगृहीतंस्फीतवाससा। शिलायांवासुधायांवाधौतायांपतितञ्चतत्॥ सौवर्णेराजतेताम्रेस्फाटिकेकाचनिर्मिते। भाजनेमृण्मयेवापिस्थापितंधारमुच्यते ॥ धारं नीरंत्रिदोषघ्नमनिर्देश्यरसंलघु। सौम्यंरसायनंबल्यंतर्पणंह्लादिजीवनम् ॥ पाचनंमतिकृन्मूर्च्छातन्द्रादाहश्रमक्लमान्। तृष्णांहरतिनात्यर्थंविशेषात्प्रावृषिस्थितम ॥ ३ ॥

धारा के जलके लक्षण और गुण ॥

धाराओंसे गिराहुआ सुन्दर वस्त्र शिला तथा पृथ्वीमें पड़ाहुआ सुवर्ण चाँदी तांबा स्फटिक काच अथवा मृत्तिका के पात्रमें रक्खागया धाराकाजल कहलाता है धाराकाजल त्रिदोष नाशक गुप्तरस हलका सौम्य रसायन बलकारी तृप्तिकारक आनन्ददायक जीवनरूप पाचक बुद्धिवर्द्धक और मूर्च्छा तन्द्रा दाह श्राम ग्लानि तथा तृषानाशक होताहै यह वर्षा ऋतुमें विशेष हितकारी होता है ॥ ३ ॥

अथ धाराजलस्यभेदाः ॥

धाराजलञ्चद्विविधंगंगासामुद्रभेदतः ४ (तत्रगंगासामुद्रयोर्लक्षणंगुणाश्च) आकाशगंगासम्बन्धिजलमादायदिग्गजाः ॥ मेघैरन्तरितावृष्टिंकुर्वन्तीतिवचःसताम्॥ गांगमाश्वयुजेमासिप्रायोवर्षतिवारिदः । सर्वथातज्जलन्देयं तथैवचरकेवचः ॥ स्था पितंहेमजेपात्रेराजतेमृण्मयेऽपिवा । शाल्यन्नंयेनसंसिक्तंभवेदक्लेदिवर्णवत् ॥ तद्गांगं सर्वदोषघ्नंज्ञेयंसामुद्रमन्यथा। तत्तुसक्षारलवणंशुक्रदृष्टिबलापहम् ॥ विस्रञ्चदोषलन्ती क्ष्णंसर्वकर्मसमाहितम्। सामुद्रन्त्वाश्विनेमासिगुणैर्गांगवदादिशेत् ॥ यतोऽगस्त्यस्यदि व्यर्षेरुदयात्सकलंजलम्। निर्मलंनिर्विषंस्वादुशुक्रलंस्याददोषलम्॥ अतएवाह। फूत्का रविषवातेननागानांव्योमचारिणाम् । वर्षासुसविषंतोयंदिव्यमव्याश्विनंविना ॥ ५ ॥

धाराके जलके भेद ॥

गंगा और समुद्रके भेदसे धाराकाजल दोप्रकारका होताहै ४(गंगा और समुद्रके जलके लक्षण और गुण)दिग्गज आकाशगंगाके जलको लेकर मेघोंसे छिपेहुये वरसातेहैं यह सज्जनोंकावचनहै प्रायः आश्विन मास में मेघ गंगाका जल वरसाते हैं यह जल सदैव देना सबको उचितहै क्योंकि चरकमेंभी ऐसाही वचनहै सुवर्ण चांदी अथवा मृत्तिकाके पात्रमें रक्खे हुये चांवल जिस वर्षा के जलसे भिगोये हुये गीले अथवा रूपान्तर नहीं उसको गंगाका जल कहते हैं यह संपूर्ण दोषों का नाशक होताहै इससे विपरीत होय तो समुद्र का जल जानना चाहिये समुद्र का जल खारी निमकीन वीर्य नाशक दृष्टि को हानि करने वाला दुर्गन्धियुक्त दोषकारी और तीक्ष्ण होता है यह सब कार्यों में अहितहै समुद्र का जल आश्विन मासमें गंगाजल के समान गुणकारी होता है क्योंकि महर्षि अगस्त जीके उदय से संपूर्ण जल निर्मल विष रहित स्वादिष्ट वीर्यवर्द्धक और दोष रहित होता है ग्रंथान्तर में कहाहुआहै कि आकाश में घूमने वाले सर्पोंके फूत्कार के द्वारा विष युक्त वायु के स्पर्श से गिरा हुआ वर्षाका संपूर्ण जल आश्विन मासको छोड़कर विष युक्त होता है ५॥

अथानार्त्तवाणांगुणाः ॥

अनार्त्तवंप्रमुञ्चन्तिवारिवारिधरास्तुयत् । तत्त्रिदोषायसर्वेषांदेहिनांपरिकीर्त्तितम् ॥ अनार्त्तवम्पौषादिमासचतुष्टयविषयम् ॥ ६ ॥

विनाऋतुके जल के गुण ॥

मेघ अकाल [पूषादिक चारमहीने] में जो जल वरसाते हैं वह संपूर्ण प्राणियों को त्रिदोष कारीहोता है ॥ ६ ॥

अथकरकाजलस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

दिव्यवाय्वग्निसंयोगात्संहताःखात्पतन्तियाः । पाषाणखण्डवच्चापस्ताः कारकयो ऽमृतोपमाः ॥ करकाजञ्जलंरूक्षंविशदंगुरुचास्थिरम् । दारुणंशीतलंसान्द्रंपित्तहृत्कफ वातकृत् ॥ ७ ॥

ओलोंके जलका लक्षण और गुण ॥

दिव्य वायु और अग्निके संयोग से इकट्ठाहुआ पाषाणके खंडो के समान जो जल आकाश से

गिरताहै उसको करका कहते हैं यह अमृत समान होता है ओलोंका जल रूखी विशद भारी स्थिर अत्यन्त शीतल कठिन पित्तनाशक और कफवात वर्द्धक होताहै ॥ ७ ॥

तौषारलक्षणंगुणाश्च ॥

अपिनद्याःसमुद्रान्तेवह्निरापस्तदुद्भवाः । धूमावयवनिर्मुक्तास्तुषाराख्यास्तुताःस्मृताः ॥ अपिनद्याःसमुद्रान्तेवह्निर्नदीमारभ्यसमुद्रपर्यन्तेवह्निरास्तेतदुद्भवाः । वह्निभवाधूमावयवनिर्मुक्ताःधूमांशरहिताः । आपस्तुषाराख्याः । तुषइति लोके । तुषार इति च । अपथ्याःप्राणिनांप्रायः भूरुहाणान्तुनाहिताः ॥ तुषाराम्बुहिमंरूक्षं स्याद्वातलमपित्तलम् । कफोरुस्तम्भकण्ठाग्नि मेहगण्डादिरोगनुत् ॥ ८ ॥

पालेके जलके लक्षण और गुण ॥

नदियों से समुद्र पर्य्यन्त जलों में रहने वाली अग्नि से उत्पन्न हुये धुयें के अंशसे रहित भाफ के समान उड़कर,गिरेहुए जल को तुपार कहते हैं यह प्रायः प्राणियों को अहित और वृक्षोंको हित कारी होताहै पाले का जल शीतल रूखा बादी पित्त का न बढ़ानेवाला और कफ उरुस्तंभ कंठरोग मंदाग्नि प्रमेह तथा गलगंड आदि रोगोंका नाशक होताहै ॥ ८ ॥

अथ हिमजलस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

हिमवच्छिखरादिभ्यो द्रवीभूयाभिवर्षति । यत्तदेवंहिमंहैमं जलमाहुर्मनीषिणः ॥ हिमाम्बुशीतंपित्तघ्नं गुरुवातविवर्द्धनम् । हैमंजलम् । कुहेसजलम् । अन्येतु । औवानलधूमेरितमम्बुसमुद्रस्य यत्घनीभूतम् । पवनानीतमुदीच्यान्तद्धिममिति कथ्यतेसद्भिः । हिमंकुहेसइतिलोके । हिमन्तुशीतलंरूक्षं दारुणंसूक्ष्ममित्यपि । नतद्दूषयतेवातंनचपित्तंनवाकफम् ॥ ९ ॥

वरफके जलके लक्षण और गुण ॥

हिमालयके शिखरआदि स्थानोंसे द्रवीभूत होकर जो जल गिरताहै उसको हिम अथवा हैम जल कहतेहैं यह शीतल पित्तनाशक भारी और बादी होता है और कहतेहैं कि बड़वानलके धुयेंके द्वारा प्रेरित होकर घना हुआ समुद्रका जल वायुसे उत्तर दिशामें लायागया हिम कहलाताहै हिम शीतल रूखा बहुत सूक्ष्म और वात पित्त तथा कफ का नहीं दूषित करने वाला होता है ॥ ९ ॥

भौमंजलंतद्भेदाश्च ॥

भौममम्भोनिगदितंप्रथमंत्रिविधंबुधैः । जांगलंपरमानूपंततःसाधारणंक्रमात् ॥ १० ॥

भूमिका जल और उसके भेद ॥

पंडित लोग जांगल आनूप और साधारण यह तीन प्रकार का भौम जलवर्णन करते हैं ॥ १० ॥

तेषांलक्षणानि गुणाश्च ॥

अल्पोदकोऽल्पवृक्षश्च पित्तरक्तामयान्वितः । ज्ञातव्योजांगलोदेशस्तत्रत्यञ्जांगलंजलम् ॥ बह्वम्बुर्बहुवृक्षश्च वात्तश्लेष्मामयान्वितः । देशोऽनूपइतिख्यात आनूपंतद्भवंजलम् ॥ मिश्रचिह्नस्तुयोदेशः सहिसाधारणःस्मृतः । तस्मिन्देशेयदुदकं तत्तुसाधारणं

स्मृतम् ॥ जांगलंसलिलंरूक्षं लवणंलघुपित्तनुत् । वह्निकृत्कफकृत्पथ्यं विकारान्हरते बहून् ॥ आनूपंवार्य्यभिष्यन्दिस्वादुस्निग्धंघनंगुरु । वह्निकृत्कफकृद्धृद्यंविकारान्हरतेबहून् ॥ साधारणन्तुमधुरंदीपनंशीतलंलघु। तर्पणंरोचनंतृष्णांदाहदोषत्रयप्रणुत् ११

इनके लक्षण और गुण ॥

जिसदेश में थोड़ाजल थोड़े वृक्ष और रक्तपित्त का कोपहो उसको जांगल कहते हैं और वहां के जल को जांगल जल कहते हैं जिस देश में बहुत जल बहुत वृक्ष और कफ वातके रोगहों उसको अनूप कहते हैं और वहां के जल को आनूपकहते हैं जिसदेशमें इनदोनोंके लक्षण मिलतेहों उसको साधारण और वहां के जलको साधारण जल कहते हैं जांगल जल रूखा नमकीन हलका पित्तघ्न अग्नि वर्द्धक कफकारी पथ्य और बहुत विकारों का नाशक होता है आनूप जल अभिष्यन्दी मधुर स्निग्ध गाढ़ा भारी अग्नि वर्द्धक कफ कारी हृदय को हित और बहुत से रोगों का नाशक होता है साधारण जल मधुर दीपन शीतल हलका पित्त और रुचिकारक और दाहतृषा तथा त्रिदोष नाशक होता है ॥ ११ ॥

अथ भौमानामेवनादेयादीनां लक्षणानिगुणाश्च ॥

तत्रनादेयस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

नद्यानदस्यवानीरंनादेयमितिकीर्तितम्। नादेयमुदकंरूक्षंवातलंलघुदीपनम्॥ अनभिष्यन्दिविशदंकटुकंकफपित्तनुत् । नद्यःशीघ्रवहाःलघ्व्यःसर्वायाश्चामलोदकाः॥ गुर्व्यःशैवलसञ्छन्नामन्दगाःकलुषाश्चयाः। हिमवत्प्रभवाःपथ्योनद्योऽश्माहतपाथसः॥ गंगाशतद्रूसरयूयमुनाद्यागुणोत्तमाः । सह्यशैलभवानद्योवेणागोदावरीमुखाः॥ कुर्वन्ति प्रायशःकुष्ठमीषद्वातकफावहाः ॥ नदीसरस्तडागस्थेकूपप्रस्रवणादिजे। उदकेदेशभेदेन गुणानदोषांश्चलक्षयेत् ॥ १२ ॥

भूमिसंबंधी नदीआदिके जलोंके लक्षण गुण ॥

नादेयके लक्षण और गुण ॥

नदी अथवा नद के जलको नादेय कहतेहैं यह रूखा वादी हलका दीपन अभिष्यन्दरहित विशद कटु और कफ पित्तनाशक होताहै जिन नदियों का जल निर्मल प्रबल प्रवाहवाला होताहै वह हलकाहै मंद प्रवाह शिवार ढकीहुई और गंदले जलवाली नदियोंका जल भारी होताहै हिमालय से उत्पन्न पाषाणों से टकराये हुए जलवाली गंगा सतलज सरयू और यमुना का जल पथ्य तथा उत्तम गुणवाला होताहै सह्य पर्वत से उत्पन्न वेणा और गोदावरी आदिक नदियों का जल कुष्ठ और कुछ कफ तथा वात को उत्पन्न करता है नदी सरोवर कूप और झरना आदि के जल के दोष गुण देशके भेदसे जाननेचाहिये ॥ १२ ॥

अथौद्भिदस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

विदार्य्यभूमिंनिम्नायमहत्याधारयास्रवेत् । तत्तोयमौद्भिदंनामवदन्तीतिमहर्षयः॥ औद्भिदंवारिपित्तघ्नमविदाह्यतिशीतलम्। प्रीणनंमधुरंवल्यमीषद्वातकरंलघु ॥ १३ ॥

औद्भिज जलके लक्षण और गुण॥

पृथ्वीको खोदकर गहरे स्थानसे जो जल बड़ी धाराके साथ निकलताहै उसको औद्भिज कहतेहैं यह पित्तनाशक विदाह रहित अत्यन्त शीतल प्रसन्नता कारक मधुर बलकारी कुछ बादी और हलका होताहै ॥ १३ ॥

नैर्भरस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

शैलसानुस्रवद्वारिप्रवाहेनिर्भरोझरः । सतुप्रस्रवणश्चापितत्रत्यंनैर्भरंजलम् ॥ नैर्भरंरुचिकृन्नीरंकफघ्नंदीपनंलघु । मधुरंकटुपाकञ्चवातंस्यादपित्तलम् ॥ १४ ॥

झरने के जलके लक्षण और गुण ॥

पर्व्वत के शिखरसे निकले हुए जल के प्रवाहको निर्भर झर तथा प्रस्रवण और उसके जलको नैर्भर कहतेहैं झरने का जल रुचिकारी कफघ्न दीपन हलका मधुर पाकमें कटु बादी और पित्तनाशक होताहै ॥ १४ ॥

अथ सारसस्य लक्षणंगुणाश्च ॥

नद्याःशैलादिरुद्धायायत्रसंश्रुत्यतिष्ठति । तत्सरोजलसञ्छन्नंतदम्भःसारसंस्मृतम्॥ सारसंसलिलंबल्यंतृष्णाघ्नंमधुरंलघु । रोचनन्तुवरंरूक्षंबद्धमूत्रमलंस्मृतम् ॥ १५ ॥

पर्व्वत आदिसे रुकीहुई नदीका जल जिस स्थानमें ठहरताहै उस जल से युक्त स्थानको सर और वहांके जल को सारस कहतेहैं सरोवर का जल बलकारी तृषानाशक मधुर हलका रुचिकारी कषैला रूखा और मलमूत्र रोधक होताहै ॥ १५ ॥

अथ ताडागस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

प्रशस्तभूमिभागस्थोबहुसंवत्सरोषितः । जलाशयस्तडागःस्यात्ताडागंतज्जलंस्मृतम् ॥ ताडागमुदकंस्वादुकषायंकटुपाकिच।वातलंबद्धविण्मूत्रमसृक्पित्तकफापहम् १६ ॥

तड़ाग के जलका लक्षण और गुण ॥

बहुत दिनसे उत्तम पृथ्वी के भागमें स्थित बड़े जलाशयको तड़ाग और वहां के जलको ताड़ाग कहतेहैं तड़ागका जल मधुर कषैला पाकमें कटुबादी मलमूत्र रोधक और रक्तपित्त तथा कफका नाशक होताहै ॥ १६ ॥

वाप्यलक्षणंगुणाश्च ॥

पाषाणैरिष्टकाभिर्वाबद्धःकूपोबृहत्तरः । ससोपानाभवेद्वापीतज्जलंवाप्यमुच्यते ॥ वाप्यंवारियदिक्षारंपित्तकृत्कफवातहृत् । तदेवमिष्टंकफकृत्वातपित्तहरंभवेत् ॥ १७ ॥

बावड़ी के जलका लक्षण और गुण ॥

पाषाण अथवा ईंटोंसे बंधेहुये सीढ़ियों समेत बड़े कुएंको वापी और उसके जलको वाप्य कहते हैं बावड़ीका जल खारी होयतो पित्तवर्द्धक तथा कफ वात नाशक और मधुर होय तो कफकारी तथा वात पित्त नाशक होताहै ॥ १७ ॥

अथकौपस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

भूमौखातोऽल्पविस्तारोगम्भीरोमण्डलाकृतिः। बद्धोऽबद्धसकूपंस्यात्तदम्भःकौपमुच्यते ॥ कौपंपयोयदिस्वादुत्रिदोषघ्नहितंलघु। तत्क्षारंकफवातघ्नंदीपनंपित्तकृत्परम् ॥१८॥

कुएंके जलका लक्षण और गुण॥

पृथ्वीमें खुदे हुये थोड़े विस्तारवाले गोलाकार गंभीर ईंट आदि से बंधे हुये अथवा बिना बँधेहुये

जलाशयको कूप और वहाँके जलको कौप कहतेहैं कुएंका जलजो मधुर होय तो त्रिदोष नाशक हितकारी तथा हलका और खारी होयतो कफ वातनाशक दीपन तथा अत्यन्त पित्तवर्द्धक होताहै ॥१८॥

अथ चौञ्जस्यलक्षणं गुणाश्च

शिलाकीर्णंस्वयंश्वभ्रंनीलाञ्जनसमोदकम्।लतावितानसंछन्नंचौञ्ज्यमित्यभिधीयते॥ अश्मादिभिरवद्धंयत्तच्चौञ्ज्यमितिवापरे। तत्रत्यमुदकंचौञ्ज्यंमुनिभिस्तदुदाहृतम्॥ चौञ्ज्यंवह्निकरंनीरंरूक्षंकफहरंलघु। मधुरंपित्तनुद्रुच्यंपाचनंविशदंस्मृतम्॥ १९॥

चौञ्ज्य जलके लक्षण और गुण॥

चारोंओर शिलाओंसे घिराहुआ लताओंके समूहोंसे आच्छादित स्वच्छ और नीलवर्ण जलसे युक्त स्वयं उत्पन्न हुआ जलाशय चुंज कहलाताहै और उसके जलको चौंज कहतेहैं कोई कोई लोग जो शिलाओंसे बंधा हुआ नहो उसको चुंज कहतेहैं चुंजकाजल दीपन रूखाकफ नाशक हलका मधुर पित्तघ्न रुचिकारी पाचक और विशद होताहै ॥ १९॥

अथ पल्वलस्यलक्षणंगुणाश्च॥

अल्पंसरःपल्वलंस्याद्यत्रचन्द्रर्क्षगेरवौ। रवौसूर्य्येचन्द्रर्क्षगेकर्कराशिस्थेश्रावणेमासि इतियावत्॥ चन्द्रर्क्षंमृगशिरस्तत्रगेमुख्यपाठः। नतिष्ठतिजलंकिञ्चित्तत्रत्यंवारिपाल्वलम्॥ पाल्वलंवार्य्यभिष्यन्दिगुरुस्वादुत्रिदोषकृत्॥ २०॥

पल्वल का लक्षण और गुण॥

जिस छोटे सरोवरमें वर्षा ऋतु में कुछ जलरहै और फिर क्रमसे सूखजाय उसको पल्वल और उसके जलको पाल्वल कहतेहैं पल्वल का जल अभिष्यन्दी भारी मधुर और त्रिदोषकारी होताहै॥२०॥

अथ चिकिरस्यजलस्यलक्षणं गुणाश्च॥

नद्यादिनिकटेभूमिर्याभवेद्वालुकामयी। उद्घाट्यतेततोयत्तुतज्जलंचैकिरंविदुः॥ चैकिरंशीतलंस्वच्छंनिर्दोषंलघुचस्मृतम्। तुवरंस्वादुपित्तघ्नंक्षारंतत्पित्तलंमनाक्॥२१॥

चिकिरजल का लक्षण और गुण॥

नदी आदिके किनारे वालुका समेत पृथ्वी से जो जल निकाला जाताहै उसको चिकिर (चोआ) कहतेहैं यह शीतल स्वच्छ दोष रहित हलका मधुर कषेला तथा पित्त नाशक और खारी होयतो कुछ पित्त वर्द्धक होताहै॥ २१॥

अथ केदारस्यजलस्यलक्षणं गुणाश्च॥

केदारंक्षेत्रमुद्दिष्टंकैदारंतज्जलंस्मृतम्। कैदारंवार्य्यभिष्यन्दिमधुरंगुरुदोषकृत् २२

खेतके जलका लक्षण और गुण॥

खेत को केदार और उसके जल को कैदार कहते हैं यह अभिष्यन्दी भारी मधुर और दोषकारी होता है॥ २२॥

अथ दृष्टिजलस्यलक्षणं गुणाश्च॥

वार्षिकंतद्दृष्टंभूमिरथमहितजलम्। त्रिरात्रमुषितंतत्तुप्रसन्नममृतोपमम्॥ २३॥

वर्षा के जल के लक्षण और गुण ॥

उसी दिन का वरसा हुआ भूमि में स्थित [कीचड़ युक्त] वसांती जल अहितकारी होता है, परन्तु तीन दिनका वासी निर्मल वह जल अमृत समान होताहै ॥ २३ ॥

अथ हेमन्तादिकालविरोधेविहित जलविशेषः ॥

हेमन्तेसारसन्तोयंताड़ागंवाहितस्मृतम् । हेमन्तेविहितंतोय शिशिरेऽपिप्रशस्यते ॥ वसन्तग्रीष्मयो कौपं वाप्यंवानैर्भरंजलम् । नादेयंवारिनादेयंवसन्तग्रीष्मयोर्बुधैः ॥ विषवद्वनवृक्षाणां पत्राद्यैर्दूषितयत । औद्भिदंवांतरीक्षंवा कौपंवाप्रावृषिस्मृतम् ॥ शस्तं शरदिनादेयं नीरमंशूदकंपरम । दिवारविकरैर्जुष्टं निशिशीतकरांशुभिः ॥ ज्ञेयमंशूदक नाम स्निग्धंदोषत्रयापहम् । अनभिष्यंदिनिर्दोष मांतरीक्षजलोपमम् ॥ बल्यंरसायनंमेध्य शीतंलघुसुधासमम् । रविकरैर्जुष्टमित्युक्ते दिवापदं समस्त दिवसप्राप्त्यर्थं शीतकरांशु भिर्जुष्टमित्युक्ते निशीथिपदं समस्तरात्रिप्राप्त्यर्थम् अन्यच्च शरदि, स्वच्छमुदयादगस्त्यस्याखिलं हितम् । वृद्धसुश्रुतस्तु ॥ पौषेवारिसरोजातं माघेतत्तुतड़ागजम् । फाल्गुनेकूपसम्भूतं चैत्रेचौंड्याहितंमतम् ॥ वैशाखेनैर्भरंनीरं ज्येष्ठेशस्तन्तथौद्भिदम् । आषाढेशस्यतकौपं श्रावणेदिव्यमेवच ॥ भाद्रेकौप्यपय.शस्तं आश्विनेचौण्ड्यमेवच । कार्त्तिकेमार्गशीर्षेच जलमात्रं प्रशस्यते ॥ २४ ॥

हेमन्तादि ऋतुओं में विहित जल विशेष ॥

हेमन्त और शिशिर ऋतु में सरोवर अथवा तडाग का जल हितकारी होता है वसन्त और ग्रीष्म ऋतु में कुआँ वावडी अथवा झरनेकाजल हित होताहै और इन्हीं ऋतुओं में नदीका जल कभी ग्रहण न करना चाहिये क्योंकि उस समय विषयुक्त वनके पत्रादिकों से जल दूषित होजाता है वर्षाकाल में औद्भिज आन्तरिक्ष और कुएंकाजल हितकारी है शरद ऋतु में नदी का जल और अंशूदक विशेष हितकारी है जो जल दिनभर सूर्य्य की किरणों से तपाहुआ और रात्रि भर चन्द्रमा की किरणों से युक्तहुआ वह अंशूदक कहलाताहै अंशूदक स्निग्ध त्रिदोष नाशक अभिष्यन्दरहित निर्दोष आन्तरिक्ष जलके समान उपकारी बलकारी रसायन मेदाको हित शीतल हलका और अमृत के समान गुणकारी होता है कोई २ कहते हैं कि शरद ऋतु में अगस्त्य के उदय से स्वच्छ हुआ सम्पूर्ण जल हितकारी है वृद्धसुश्रुत ने कहाहै कि पूष में सरोवर का माघ में तड़ागका फागुनमें कुएं का चैत्र में चुडका वैशाष में झरने का जेष्ठमें उद्भिज आषाढ़ में कुएं का श्रावण में दिव्य भादोंमें कुएका आश्विन में चुडका और कार्तिक तथा मार्गशीर्ष में सम्पूर्ण जल श्रेष्ठ हैं ॥ २४ ॥

जल ग्रहणकालः ॥

भौमानामम्भसाम्प्रायोग्रहणंप्रातरिष्यते।शीतत्वंनिर्मलत्वञ्चयतस्तेपांमतोगुण.२५॥

जलके ग्रहण करनेका समय ॥

भूमिका जल प्रातःकाल ग्रहण करना चाहिये क्योंकि उससमय का जल शीतल और निर्मल होता है और यही जलके परमगुण हैं ॥ २५ ॥

अथ जलस्यपानविधिः ॥

अत्यम्बुपानान्नविपच्यतेऽन्नं निरम्बुपानाच्चसएवदोषः । तस्मान्नरोवह्निविवर्द्धनायमुहुर्मुहुर्वारिपिवेदभूरि ॥ २६ ॥ जलपान की विधि ॥

अत्यन्त जलपीने से और अत्यन्तहीं न पीने से अन्न नहीं पचता इससे मनुष्य अग्नि बढ़ने के लिये वारंवार थोड़ा २ जल पिये ॥ २६ ॥

अथ शीतलजलपानस्यविषयाः ॥

मूर्च्छापित्तोष्णदाहेषुविषेरक्तेमदात्यये।श्रमेभ्रमेविदग्धेऽन्नेतमकेवमथौतथा॥ऊर्द्ध्वगेरक्तपित्तेचशीतमम्बुप्रशस्यते ॥ २७ ॥

शीतल जलपीने के विषय ॥

मूर्च्छा पित्त उष्णता दाह विष रक्तदोष मदात्यय श्रम भ्रम अन्नकी विदग्धता तमक श्वास छर्दि और ऊर्ध्वगत रक्त पित्त मे शीतलजल श्रेष्ठ है ॥ २७ ॥

अथ तन्निषेधः ॥

पार्श्वशूलेप्रतिश्यायेवातरोगेगलग्रहे ॥ आध्मानेस्तिमितेकोष्ठेसद्यःशुद्धौनवज्वरे ॥ अरुचिग्रहणीगुल्मश्वासकासेषुविद्रधौ । हिक्कायांस्नेहपानेचशीताम्बुपरिवर्जयेत् २८ ॥

शीतल जलका निषेध ॥

पार्श्व शूल पीनस वातरोग गलरोग आध्मान आर्द्रकोष्ठ वमनादि केद्वारा शीघ्रहुई शुद्धता नवीन ज्वर हिचका अरुचि ग्रहणी गुल्म श्वास खांसी विद्रधि और स्नेह पान में शीतल जलका ग्रहण नहीं करे ॥ २८ ॥ अथाल्पजलपानस्यविषयः ॥

अरोचकेप्रतिश्यायेमन्देऽग्नौश्वयथौक्षये । मुखप्रसेकेजठरे कुष्ठेनेत्रामयेज्वरे ॥ व्रणेचमधुमेहे च पिवेत्पानीयमल्पकम् ॥ २९ ॥

थोड़ा जलपीनेका विषय ॥

अरुचि पीनस मंदाग्नि सूजन क्षय मुख श्राव उदर कुष्ठ नेत्र रोग ज्वर घाव और मधु प्रमेह में थोड़ा जल पिये ॥ २९ ॥ जलपानस्यावश्यकता ॥

जीवनंजीविनांजीवोजगत्सर्वन्तुतन्मयम् । अतोऽत्यन्तनिषेधेनकदाचिद्वारिवार्य्यते ॥ हारीतश्च । तृष्णागरीयसीघोरासद्यःप्राणविनाशिनी । तस्माद्देयत्रषार्त्तायपानीयंप्राणधारणम् ॥ तृषितोमोहमायाति मोहात्प्राणान्विमुञ्चति । अतःसर्वास्ववस्थासु नक्वचिद्वारिवर्जयेत् ॥ ३० ॥ जलपीनेकी आवश्यकता ॥

जल प्राणियों का जीवनस्वरूप और संपूर्ण जगत् जलमय है इससे बुद्धिमान् पुरुष जलपीने का अत्यन्त निषेध कभी न करे हारीत मुनिनेभी कहाहै कि तृषा अत्यन्त भयानक और शीघ्र प्राणनाशक होतीहै इससे तृषासे व्याकुल पुरुषको प्राण धारण करनेकेलिये जलदेनाउचितहै तृषा से व्याकुल पुरुष जल न मिलने से मोहको प्राप्तहोताहै और मोहसे प्राणोंको भी त्यागकरता है इससे संपूर्ण अवस्थाओंमें जलका अत्यन्त निषेध कहींभी न करना चाहिये ॥ ३० ॥

अथ प्रस्तंजलम् ॥

अगन्धमव्यक्तरसंसुशीतंतर्षनाशनम्॥स्वच्छंलघुचहृद्यञ्चतोयंगुणवदुच्यते॥३१॥

श्रेष्ट जलके लक्षण ॥

गंधरहित गुप्तरस अत्यन्त शीतल तृषानाशक निर्मल हलका और हृदयको हित जल गुणदायक होता है ॥ ३१

अथ निन्दितजलम् ॥

पिच्छिलंकृमिलंक्लिन्नंपर्णशैवालकर्दमैः॥ विवर्णविरसंसान्द्रंदुर्गन्धंनिहितंजलम् ॥ कलुषंछन्नमम्भोजपर्णनीलीतृणादिभिः । दुःस्पर्शनमसंस्पृष्टंसौरचान्द्रमरीचिभिः ॥अनार्तवंवार्षिकन्तुप्रथमंतच्चभूमिगम।व्यापन्नंपरिहर्त्तव्यंसर्वदोषप्रकोपणम् ॥ततकुर्य्यात्स्नानपानाभ्यांतृष्णाध्मानचिरज्वरान् । कासाग्निमान्द्याभिष्यन्दकण्डुगण्डादिकंतथा॥३२॥

निन्दितजलके लक्षण॥

पिच्छिल कीड़ोंसे युक्त पत्ते शिवार तथा कीचड आदि से सड़ाहुआ विवर्ण विरस घना दुर्गन्धियुक्त गदला कमल के पत्ते तथा नील के तृण आदिकों से ढकाहुआ कुत्सित स्थान में उत्पन्न हुआ सूर्य तथा चन्द्रमा की किरणों से नहीं स्पर्श किया अकाल में बरसा हुआ शीघ्रही पृथ्वी पर पड़ा हुआ और रोग युक्त जल त्याग करना चाहिये क्योंकि इस्से सम्पूर्ण दोषोंका कोप होता है यहजल स्नान अथवा पान करने से तृषा आध्मान उदर ज्वर खांसी मंदाग्नि अभिष्यन्द खुजली और गलगण्ड आदि रोगोंको उत्पन्न करता है ॥ ३२ ॥

अथ दुष्टजलस्यनिर्दोषीकरणोपायः ॥

निन्दितञ्चापिपानीयंक्वथितंसूर्य्यतापितम् । सुवर्णरजतंलोहंपाषाणंसिकतामपि ॥ भृशंसन्ताप्यनिर्वाप्यसप्तधासाधितंतथा । कर्पूरजातिपुन्नागपाटलादिसुवासितम् ॥ शुचिसान्द्रपटश्राविक्षुद्रजन्तुविवर्जितम् । स्वच्छंकनकमुक्ताद्यैःशुद्धंस्याद्दोषवर्जितम् ॥ पर्णमूलविषग्रन्थिमुक्ताकनकशैवलैः । गोमेदेनचवस्त्रेणकुर्य्यादम्बुप्रसादनम् ॥ ३३ ॥

बुरेजलके निर्दोष करने के उपाय ॥

अग्नि में गरम किया गया धूपमें तपाया गया अत्यन्त तपाये हुये सुवर्ण चांदी लोहा पत्थर बालू अथवा मृतिका से सातबार बुझाय कर कपूर चमेली श्वेत कमल और पाटल आदिकों से सुगंधित किया गया पवित्र तथा गाढ़े कपडे से छानकर छोटे२ कीड़ों से रहित किया गया अथवा सुवर्ण तथा मोती आदिकोंसे निर्म्मल कियागया शुद्ध जल दोष रहित होताहै पत्ता जड़ मृणालकी गांठ मोती सोना शिवार गोमेद और वस्त्रके द्वारा जलको निर्म्मलकरे ॥ ३३ ॥

अथ पीतस्यजलस्यपाकविधिः ॥

पीतंजलंजीर्य्यतियामयुग्मात्यामैकमात्रात्शृतशीतलञ्च। तदूर्ध्वमात्रेणशृतंकदुष्णं पयःप्रपाकेत्रयएवकालाः ॥ ३४ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशेवारिवर्गः ॥

पियेहुए जलके परिपाककी विधि ॥

जलके परिपाकके तीन कालहैं कच्चा जल एक प्रहरमें गरमकरके ठंढा कियाहुआ आधेपहरमें और गरम कुछ उष्ण रहनेपर चौथाई पहरमें परिपाकको प्राप्तहोताहै ॥ ३४ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेवारिवर्गः ॥

अथ दुग्धवर्गः । दुग्धस्यनामगुणाः ॥

दुग्धंक्षीरंपयःस्तन्यंबालजीवनमित्यपि । दुग्धंसुमधुरंस्निग्धंवातापित्तहरंसरम् ॥ सद्यःशुक्रकरंशीतंसात्म्यंसर्वशरीरिणाम् । जीवनंबृंहणंबल्यंमेध्यंवाजिकरंपरम् ॥ वयःस्थापनमायुष्यंसन्धिकारिरसायनम्।विरेकवान्तिवस्तीनांतुल्यमोजोविवर्द्धनम्॥ जीर्णज्वरेमनोरोगेशोषमूर्च्छाभ्रमेषुच । ग्रहण्यांपाण्डुरोगेचदाहेतृषिहृदामये॥ शूलोदावर्त्तगुल्मेषुवस्तिरोगेगुदाङ्कुरे । रक्तपित्तेऽतिसारेचयोनिरोगेश्रमेक्लमे ॥ गर्भस्रावेचसततंहितंमुनिवरैःस्मृतम् । बालवृद्धक्षतक्षीणाःक्षुद्व्यवायकृशाश्चये ॥ तेभ्यःसदातिशयितंहितमेतदुदाहृतम् ॥ १ ॥

अथ दुग्ध वर्ग । दूधकेनाम और गुण ॥

दुग्ध क्षीर पयस् स्तन्य और बालजीवन यह दूधकेनाम हैं दूध मधुर स्निग्ध वात पित्तनाशक शीघ्र वीर्यकारी शीतल सब प्राणियोंको स्वात्म्य जीवनरूप धातुवर्द्धक बलकारी मेधाकोहित अत्यन्त वाजीकरण अवस्थाका स्थापक आयुकोहित टूटेहुएका जोड़नेवाला रसायन वमन विरेचन तथा वस्तिक्रियाके तुल्य गुणकारी और जीर्णज्वर मनकेरोग शोष मूर्च्छा श्रम ग्रहणी पांडुरोग दाह तृषा हृदयके रोग शूल उदावर्त्त गुल्म मूत्राशयके रोग गुदांकुर रक्तपित्त अतीसार योनिरोग श्रम ग्लानि तथा गर्भ स्रावमें सदैवहितकारी होताहै बालक वृद्ध क्षतसे क्षीण और क्षुधा तथा मैथुनसे कृश मनुष्योंको दुग्ध सदैव अत्यन्त हितकारी होताहै ॥ १ ॥

अथ गोदुग्धस्यगुणाः ॥

गव्यंदुग्धंविशेषेणमधुरंरसपाकयोः । शीतलंस्तन्यकृत्स्निग्धंवातपित्तास्रनाशनम् ॥ दोषधातुमलस्रोतःकिञ्चित्क्लेदकरंगुरु । जरासमस्तरोगाणांशान्तिकृत्सेविनांसदा २ ॥

गोदूधके गुण ॥

गौकादूध रस तथा पाकमें विशेष करके मधुर शीतल दुग्धवर्द्धक स्निग्ध वात तथा रक्त पित्तकानाशक दोष धातु मल तथा श्रोतोंका कुछ आर्द्रकरनेवाला भारी और सदैव सेवनसे वृद्धावस्था तथा सम्पूर्ण रोगोंका नाशक होताहै ॥ २ ॥

वर्णविशेषेगुणविशेषाः ॥

कृष्णायागोर्भवंदुग्धंवातहारिगुणाधिकम् । पीतायाहरतेपित्तंतथावातहरंभवेत्॥ श्लेष्मलंगुरुशुक्लायारक्तचित्राचवातहृत् (अथधेनोर्विवत्सायाश्चगुणाः) बालवत्साविवत्सानांगवांदुग्धंत्रिदोषकृत् (बकेनीगोगुणाः) बष्कयिण्यास्त्रिदोषघ्नंतर्पणंबलकृत्पयः ॥ ३ ॥

वर्णविशेषसे गुण विशेष ॥

काली गोका दूध वातनाशक अत्यन्त गुणकारी पीली गौका दूध पित्त तथा वातनाशक श्वेत गो का दूध कफकारी तथा भारी और लाल तथा अनेकप्रकारके वर्ण वाली गौकादूध वातनाशक होता है छोटेबछड़ेवाली और बछड़े से रहित गौका दूध त्रिदोषकारी होताहै बकेनी (बाखरी) गौकादूध त्रिदोषनाशक तृप्तिकारक और अत्यन्त बलकारी होताहै ॥ ३ ॥

अथ देशविशेषेणगुणविशेषः ॥

जाङ्गलानूपशैलेषुचरन्तीनांयथोत्तरम् । पयोगुरुतरंस्नेहोयथाहारंप्रवर्त्तते ॥ ४ ॥

देशविशेषसे गुण विशेष ॥

जांगलदेश अनूपदेश और पर्वतीयदेशोंमें चरनेवाली गौकादूध क्रमसे भारी होताहै और घीआहार के अनुसार निकलताहै ॥ ४ ॥

अथाहारविशेषेगुणविशेषः ॥

स्वल्पान्नभक्षणाज्जातंक्षीरंगुरुकफप्रदम् । तत्तुबल्यंपरंवृष्यंस्वस्थानांगुणदायकम् ॥ पलालतृणकार्पासबीजजातंगुणैर्हितम ॥ ५ ॥

आहारविशेषसे गुण विशेष ॥

थोड़ा अन्न खानेवाली गौकादूध भारी कफकारक बलिष्ठ अत्यन्त वीर्यवर्द्धक और स्वस्थ पुरुषों को गुणदायक होताहै पयार तृण और बिनौले खानेवाली गौओंका दूध रोगियोंको हितहोताहै ॥ ५ ॥

अथ महिषीदुग्धस्यगुणाः ॥

माहिषंमधुरङ्गव्यान्स्निग्धंशुक्रकरंगुरु।निद्राकरमभिष्यन्दिक्षुधाधिक्यकरंहिमम्॥६॥

भैंसके दूधकेगुण ॥

भैंसकादूध मधुर वीर्यवर्द्धक भारी निद्राकारी अभिष्यन्दी क्षुधाका बढ़ानेवाला और गौके दूध से अधिक घृतयुक्त होताहै ॥ ६ ॥

छागी दुग्धस्यगुणाः ॥

छागंकषायंमधुरंशीतंग्राहितथालघु । रक्तपित्तातिसारघ्नंक्षयकासज्वरापहम् ॥ अजानामल्पकायत्वात्कटुतिक्तनिषेवणात् । स्तोकाम्बुपानाद्व्यायामात्सर्वरोगापहंपयः ॥ ७॥

बकरीके दूधकेगुण ॥

बकरीकादूध कषैला मधुर शीतल ग्राही हलका और रक्तपित्त अतीसार क्षय खांसी तथा ज्वरका नाशक होताहै शरीरके हलकेपनसे कटु तिक्त आदि वस्तुओंके भोजनसे थोड़ा जलपानेसे और व्या-याम करनेसे बकरियोंकादूध सम्पूर्ण रोगोंका नाशक होताहै ॥ ७ ॥

मृगादिदुग्धस्यगुणाः ॥

मृगीनांजांगलोत्थानांअजाक्षीरगुणंपयः ८ (भेड़ीदुग्धगुणाः) आविकंलवणंस्वा दुस्निग्धोष्णञ्चाश्मरीप्रणुत् । अहृद्यंतर्पणंवृष्यंशुक्रपित्तकफप्रदम् ॥ गुरुकासेऽनि लोद्भूतेकेवलेचानिलेवरम् ॥ ६ ॥

मृगी आदिके दूधका गुण ॥

मृगी आदिक जंगली पशुओंकादूध बकरीके दूधके समान गुणकारी होताहै ८(भेड़ीके दूधका गुण) भेड़ीकादूध नमकीन मधुर स्निग्ध उष्ण पथरीनाशक हृदयको अहित तृप्तिकारक केशोंको हित वीर्य वर्द्धक कफपित्तकारक भारी और वायुकी खांसी तथा केवल वातरोगोंमेंहित होताहै ॥ ९ ॥

अथ घोड़ीदुग्धं ॥

रूक्षोष्णंवडवाक्षीरंवल्यंशोषानिलापहम्।अम्लंपटुलघुस्वादुसर्वमेकशफंतथा॥१०॥

घोड़ीके दूधके गुण ॥

घोड़ीका और संपूर्णएक खुरवाले पशुओंका दूध रूखा उष्ण बलकारी खट्टा नमकीन मधुर हलका और शोष तथा वातनाशक होताहै ॥ १० ॥

अथ उष्ट्रीदुग्धं ॥

औष्ट्रंदुग्धंलघुस्वादुलवणंदीपनंतथा। कृमिकुष्ठकफानाहशोथोदरहरंसरम्॥ ११ ॥

ऊंटनी का दूध ॥

ऊंटनी का दूध हलका मधुर नमकीन दीपन दस्तावर और कृमि कुष्ठ कफ आनाह सूजन तथा उदर रोग नाशक होता है.॥ ११ ॥

हस्तिनीदुग्धं ॥

वृंहणंहस्तिनीदुग्धंमधुरंतुवरंगुरु। वृष्यंवल्यंहिमंस्निग्धंचक्षुष्यंस्थिरताकरम्॥१२॥

हथिनी का दूध ॥

हथिनी का दूध धातुवर्द्धक मधुर कषेला भारी बलवीर्य्यवर्द्धक शीतल स्निग्ध नेत्रोंको हित और स्थिरता करने वाला होता है ॥ १२ ॥

अथ नारीदुग्धं ॥

नार्य्यालघुपयःशीतंदीपनंवातपित्तजित्॥चक्षुःशूलाभिघातघ्नंतस्याश्चोतनयोर्वरम्१३

नारीका दूध ॥

नारीका दूध हलका शीतल दीपन वात पित्त तथा नेत्रकी पीड़ा नाशक और नासलेनेमें तथा नेत्रों के भरने में श्रेष्ठहै॥ १३॥ अथाधारोष्णादिगुणाः ॥

धारोष्णंगोपयोवल्यंलघुशीतंसुधासमम्। दीपनंचत्रिदोषघ्नंतद्धाराशिशिरंत्यजेत्। धारोष्णंशस्यतेगव्यंधाराशीतंतुमाहिषम्। शृतोष्णमाविकंपथ्यंशृतशीतमजापयः॥ आमंक्षीरमभिष्यंदिगुरुश्लेष्मामवर्द्धनम्। ज्ञेयंसर्वमपथ्यंतुगव्यमाहिषवर्जितम्॥ नारी क्षीरंत्वाममेवहितंनतुशृतंहितम्। शृतोष्णंकफवातघ्नंशृतंशीतंतुपित्तनुत्॥ अर्द्धोदकं क्षीरशिष्टमामाल्लघुतरंपयः। जलेनरहितंदुग्धमतिपक्वंयथायथा॥ तथातथागुरुस्निग्धं वृष्यंवलविवर्द्धनम्॥ १४ ॥

धारोष्ण आदिक दूधके गुण ॥

धारोष्ण गऊकादूध बलकारी हलका शीतल अमृत समान दीपन और त्रिदोषनाशक होताहै परन्तु धारा शीतल दूधको ग्रहण न करै गोका दूध धारोष्ण भैसका दूधधारा शीतल भेड़ीका दूध अग्निसे

गरम किया हुआ और वकरी का दूध गरम करके शीतल किया हुआ गुणकारी होताहै गो औ भैंसके दूधको छोड़कर सपूर्ण कच्चादूध अभिष्यन्दी भारी कफवर्द्धक आमकारी और अपथ्य होता है नारी का दूध कच्चाही हितकारी होताहै पकानहीं होता दूधको पकाकर गरम २ पीनेसे कफ वात और ठंढाकरके पीनेसे पित्तकानाश होताहै दूधमें आधापानी मिलाकर औटानेसे जब सब पानीजलकर केवल दूध रहजाय वह कच्चे दूधसे हलका होताहै जल रहित दूध जितना अधिक औटाया जाय उतनाही अधिक भारी स्निग्ध वीर्य्यवर्द्धक और वलकारी होताहै ॥ १४ ॥

अथ पियूषकिलाटक्षीरशाक.तक्रपिण्डमोरटानांलक्षणानिगुणाश्च ॥

क्षीरंतत्कालसूतायाघनपेयूषमुच्यते । पेयूषंपेवसइतिलोके ॥ नष्टदुग्धस्यपक्वस्यपिण्डःप्रोक्त.किलाटकः । किलाटक.गिजिरीइतिलोके ॥ अपक्वमेवयन्नष्टंक्षीरशाकंहितत्पयः । क्षीरशाकंतुपिभराइतिलोके ॥ दध्नातक्रेणवानष्टंदुग्धंवद्धंसुवाससा । द्रवभावेनसहितंतक्रपिण्डःसउच्यते ॥ नष्टदुग्धंभवन्नीरंमोरटंजेज्जटोऽब्रवीत् । पेयूपंचकिलाटंच क्षीरशाकंतथैवच ॥ तक्रपिण्डइमेवृष्याबृंहणाबलवर्द्धनाः । गुरवःश्लेष्मलाहृद्यावातपित्तविनाशनाः ॥ दीप्ताग्नीनांविनिद्राणांविद्रधौचाभिपूजिताः । मुखशोषतृषादाहरक्तपित्तज्वरप्रणुत् ॥ लघुर्वलकरोरुच्योमोरटःस्यात्सितायुतः । सन्तानिकागुणाः ॥ १५ ॥

पेवसी गिजरी खरिसा तक्रपिंड और मोरटके लक्षण गुण ॥

शीघ्रब्यानेवाली गौके गाढ़ेहोनेवाले दूधको पेयूप (पेवसी) फटेहुये दूधको पकाकर उससे वनाये हुये पिंडको किलाटक (गिजरी) विना पकाये फटेहुये दूधको क्षीरशाक (खरिसा) दही अथवा मट्ठेके द्वारा दूधको फाड़कर और बांधके उसके जलको निकालके जो रूप वनताहै उसे तक्रपिंड और जेजट कहतेहैं कि फटेहुये दूधके पानीको मोरट कहतेहैं पेवसी गिजरी खरिसा और तक्रपिंड यहसब धातु वल तथा वीर्य्य वर्द्धक भारी हृदयको हित वात पित्त नाशक और दीप्ताग्नि निद्रा रहित और मैथुन करनेवाले पुरुषोंको अत्यन्त हितकारी होताहै शक्कर युक्त मोरट हलका वलकारी रुचिकारक और मुखका सूखना तृषा दाह रक्त पित्त तथा ज्वरका नाशक होता है ॥ १५ ॥

सन्तानिकासाठी ॥

सन्तानिकागुरुःशीतावृष्यापित्तास्रवातनुत्तर्पणीबृंहणीस्निग्धाबलासबलशुक्रदा॥१६

मलाई के गुण ॥

मलाई भारी पुष्टिकारी शीतल रक्त पित्त तथा वातनाशक तृप्ति कारक धातुवर्द्धक स्निग्ध और कफ वल तथा वीर्य वर्द्धक होती है ॥ १६ ॥

अथ खण्डादियुक्त दुग्धगुणाः ॥

खण्डेनसहितंदुग्धंकफकृत्पवनापहम् । सितासितोपलायुक्तंशुक्रलंत्रिमलापहम् ॥ सगुडंमूत्रकृच्छ्रघ्नंपित्तश्लेष्मकरंपरम् ॥ १७ ॥

खांड़ आदि से युक्त दूधके गुण ॥

खांड़युक्तदूध कफकारी तथा वात नाशक सफेद मिश्रीयुक्त दूध वीर्यवर्द्धक और त्रिदोष नाशक और गुड़युक्त दूध मूत्रकृच्छ्र नाशक तथा कफ पित्तका अधिक करनेवाला होता है ॥ १७ ॥

अथ प्रभातादिभव दुग्धगुणाः ॥

रात्रौचन्द्रगुणाधिक्याद्व्यायामाकरणात्तथा । प्रभातिकंतदाप्रायःप्रादोषाद्गुरुशीतलम् ॥ दिवाकरकराघातात्व्यायामानलसेवनात् । प्राभातिकात्तुप्रादोषंलघुवातकफापहम् ॥ १८ ॥

प्रातःकाल के दूध के गुण ॥

रात्रि में चन्द्रमा के गुणकी अधिकता से और व्यायाम आदिक शरीर संबंधी क्रियाओं के नहोने से प्रायः प्रातःकालका दूध सायंकाल के दूधसे भारी और शीतल होताहै दिनमें सूर्य्य की किरणों के लगने से और व्यायाम आदि शारीरक क्रियाओं तथा अग्निके सेवन से सायंकालका दूध प्रातःकालके दूधकी अपेक्षा हलका और कफ वात नाशक होताहै ॥ १८ ॥

अथ दुग्धसेवनसमय विशेषगुणमाह ॥

वृष्यंबृंहणमग्निदीपनकरंपूर्वाह्णेकालेपयो मध्याह्नेतुबलावहंकफहरंपित्तापहंदीपनम् ॥ बालेवृद्धिकरंक्षयेक्षयकरंवृद्धेपुरेतोवहम् । रात्रौपथ्यमनेकदोषशमनंक्षीरंसदासेव्यते ॥ वदन्तिपेयंनिशिकेवलंपयोभोज्यंनतेनेहसहौदनादिकम् ॥ भवत्यजीर्णंनिशिपीतशर्कराक्षीरालपपानस्यतुशेषमुत्सृजेत् । विदाहीन्यन्नपानानिदिवाभुङ्क्तेहियन्नरः ॥ तद्विदाहप्रशान्त्यर्थंरात्रौक्षीरंसदापिबेत् । दीप्तानलेकृशेपुंसिवातवृद्धेपयःप्रिये ॥ मतंहिततमंपथ्यंसद्यःशुक्रकरंयतः ॥ १९ ॥

दूधके सेवन के समय २ के गुण ॥

प्रातःकाल पियाहुआ दूध पुष्टिकारक धातुवर्द्धक तथा दीपनमध्याह्न समयमें पियाहुआ दूध बलकारी कफपित्त नाशक तथा दीपन बालअवस्था में पियाहुआदूध शरीरवर्द्धक क्षीणतामें पियाहुआदूध क्षयनाशक वृद्धावस्था में पियाहुआ दूध वीर्यवर्द्धक और रात्रि समयमें पियाहुआदूध पथ्य अनेक दोषनाशक तथा नेत्रोंकोहित होता है कहागया है कि रात्रिमें चावल आदिके साथ दूध न पिये परन्तु केवल दूधपिये क्योंकि चावल आदिके साथ दूधपीने से अजीर्ण होताहै और दूध पीकर उच्छिष्ट छोड़ना चाहिये मनुष्य दिनमें जिन विदाहकारी अन्न पानादिकोंका सेवन करता है उनके दाह के शान्तिके लिये रात्रिमें सदैव दूधपीना चाहिये कृशपुरुष बालक वृद्ध दुग्धप्रिय और दीप्ताग्नि वाले पुरुषको दूध अत्यन्त पथ्यहै क्योंकि यह शीघ्रही वीर्य्यको उत्पन्न करताहै ॥ १९ ॥

अथ मथितस्य दुग्धस्यगुणाः ॥

क्षीरंगव्यमथाजम्वाकोष्णंदण्डाहतंपिबेत्।लघुवृष्यंज्वरहरंवातपित्तकफापहम्॥२० ॥

मथेहुएदूधके गुण

गौ अथवा बकरी का मथाहुआ कुछ उष्ण दूध पीने से हलका वीर्यवर्द्धक और ज्वर वात पित्त तथा कफ नाशक होताहै ॥ २० ॥

अथ गोजगुणाः ॥

गोदुग्धप्रभवंकिंवाछागीदुग्धसमुद्भवम् । भवेदेतत्त्रिदोषघ्नंरोचनंबलवर्द्धनम् ॥ वह्निवृद्धिकरंवृष्यंसद्यस्तृप्तिकरंलघुः । अतीसारेऽग्निमान्द्येचज्वरेजीर्णेप्रशस्यते ॥ २१ ॥

दूधके फेनोंके गुण॥

गौ अथवा बकरी के दूधका फेन त्रिदोष नाशक रुचिकारी बलवर्द्धक अग्निवर्द्धक पथ्य शीघ्रतृप्तिकारी हलका और अतीसार मंदाग्नि तथा जीर्ण ज्वर में श्रेष्ठ होताहै॥ २१॥

निन्दितं दुग्धं॥

विवर्णंविरसंचाम्लंदुर्गन्धंग्रथितंपयः। वर्ज्जयेदम्ललवणयुक्तंकुष्ठ्यादिहृयतः॥२२॥

इतिश्रीभावप्रकाशेदुग्धवर्गः॥

निंदित दूध के लक्षण॥

विवर्ण विरस खट्टा दुर्गन्धियुक्त फटाहुआ और खटाई तथा लवणसेयुक्त दूध त्यागकरने के योग्य है क्योंकि इस्से कुष्ठ आदिक रोग उत्पन्न होते हैं॥ २१॥

इतिभावप्रकाशस्यभाषानुवादेदुग्धवर्गःसमाप्तः॥

अथ दधिवर्गः। तत्रदध्नो गुणाः॥

दध्युष्णंदीपनंस्निग्धंकषायानुरसंगुरु। पाकेऽम्लंश्वासपित्तास्रशोथमेदःकफप्रदम्॥ मूत्रकृच्छ्रेप्रतिश्यायेशीतगेविषमज्वरे। अतीसारेऽरुचौकार्श्येशस्यतेबलशुक्रकृत्॥ १॥

अथ दधिवर्गः। दहीके गुण॥

दही उष्ण दीपन स्निग्ध कषैला भारी पाक में खट्टा ग्राही रक्तपित्त कारी सूजन तथामेद वर्द्धक कफकारी बलवीर्य वर्द्धक और मूत्रकृच्छ्र पीनस शीतक नाम विषम ज्वर अतीसार अरुचि तथा कृशतामें हितकारी होताहै॥ १॥

अथ दधिभेदः॥

आदौमन्दंततःस्वादुस्वाद्वम्लञ्चततःपरम्। अम्लञ्चतुर्थमत्यम्लंपञ्चमंदधिपञ्चधा॥२

दहीके भेद॥

मंद मधुर मधुराम्ल अम्ल और अत्यम्ल यह पांच प्रकार का दही होता है॥ २॥

अथ मन्दादीनाम् लक्षणंगुणाश्च॥

मन्दंदुग्धंयदव्यक्तंरसंकिञ्चिद्घनंभवेत्। मन्दंस्यात्सृष्टविण्मूत्रंदोषत्रयविदाहकृत्॥ यत्सम्यग्घनतांयातंव्यक्तस्वादुरसंभवेत्। अव्यक्ताम्लरसंतत्तुस्वादुविज्ञैरुदाहृतम्॥ स्वादुस्यादत्यभिष्यन्दिवृष्यंमेदःकफावहम्। वातघ्नंमधुरंपाकेरक्तपित्तप्रसादनम्। स्वाद्वम्लसान्द्रंमधुरंकषायानुरसंभवेत्॥ स्वाद्वम्लस्यगुणाज्ञेयासामान्यदधिवर्जनैः। यत्तिरोहितमाधुर्य्यंव्यक्ताम्लत्वंतदम्लकम्। अम्लन्तुदीपनंपित्तरक्तश्लेष्मविवर्द्धनम्॥ तदत्यम्लंदन्तरोमहर्षकण्ठादिदाहकृत्। अत्यम्लंदीपनंरक्तवातपित्तकरंपरम्॥ ३॥

मन्दादिकों के लक्षण और गुण॥

जो दूध कुछ गाढ़ाहोकर गुप्तरस होजाताहै उसको मंद दही कहतेहैं यह मल तथा मूत्र निस्सारक त्रिदोषकारी और विदाही होता है जो दही खूबगाढ़ा मधुर और खटाई से रहित हो उसको स्वादु

कहते हैं यह अत्यन्त अभिष्यन्दी वीर्यवर्द्धक मेद तथा कफ कारक वात नाशक पाक में मधुर और रक्त पित्त नाशक होताहै जो दही खूबगाढ़ा कुछ कषैला और मधुर होता है उसको स्वाद्वम्ल कहते हैं इसमें दहीके सामान्यगुण होते हैं जो दही मधुरतासे रहित हो और जिसमें खटाई प्रकट होती हो वह अम्ल कहाता है यह दीपन और रक्त पित्त तथा कफ वर्द्धक होता है जिस दही के खानेसे दन्तहर्ष रोमहर्ष तथा कंठादिकों में दाहउत्पन्नहो वह अत्यम्ल कहलाताहै यह दीपन और वात तथा रक्त पित्त कारक होता है ॥ ३ ॥ गोदधिगुणाः ॥

गव्यंदधिविशेषेणस्वाद्वम्लञ्चरुचिप्रदम् । पवित्रंदीपनंहृद्यंपुष्टिकृत्पवनापहम् ॥ उक्तंदध्नामशेषाणांमध्येगव्यंगुणाधिकम् ॥ ४ ॥

गौके दही के गुण ॥

गौकादही विशेष करकेमधुर बलकारी रुचिकारी पवित्र दीपन स्निग्ध पुष्टिकारक वातनाशक और संपूर्ण दहियों में अधिक गुण वाला होता है ॥ ४ ॥

माहिषदधिगुणाः ॥

माहिषंदधिसुस्निग्धंश्लेष्मलंवातपित्तनुत्।स्वादुपाकमभिष्यन्दिवृष्यंगुर्वस्रदूषकम्५॥

भैंसके दहीके गुण ॥

भैंसका दही अत्यन्त स्निग्ध कफकारी वात पित्त नाशक पाक में मधुर अभिष्यन्दी भारी वीर्य वर्द्धक और रक्त दूषक होता है ॥ ५ ॥

छागीदधिगुणाः ॥

आजन्दध्युत्तमंग्राहिलघुदोषत्रयापहम् । शस्यतेश्वासकासार्शःक्षयकार्श्येषुदीपनम् ॥६॥

बकरीके दहीके गुण ॥

बकरीका दही अत्यन्त ग्राही त्रिदोष नाशक दीपन और श्वास खांसी बवासीर क्षय तथा कृशता में हितकारी होता है ॥ ६ ॥

पक्वदुग्धदधिगुणाः ॥

पक्वंदुग्धभवंरुच्यंदधिस्निग्धगुणोत्तमम् । पित्तानिलापहंसर्वधात्वग्निबलवर्द्धनम् ॥७॥

पक्के दूधके दहीके गुण ॥

पक्के दूधका दही रुचिकारक स्निग्ध गुणोंमें श्रेष्ठ वात पित्त नाशक और सम्पूर्ण धातु अग्नि तथा बलका वर्द्धक होता है ॥ ७ ॥

निःसरदुग्धदधिगुणाः ॥

असारंदधिसंग्राहिशीतलंवातलंलघु । विष्टम्भिदीपनंरुच्यंग्रहणीरोगनाशनम् ॥ ८ ॥

सार रहित दूधके दहीका गुण ॥

मक्खन निकले हुए दूधका दही ग्राही शीतल वादी हलका विष्टंभी दीपन रुचिकारी और ग्रहणी रोगका नाशक होताहै ॥ ८ ॥

वाघीदधिगुणाः ॥

गालितंदधिसुस्निग्धंवातघ्नंकफकृद्गुरु । बलपुष्टिकरंरुच्यंमधुरंनातिपित्तकृत्॥६॥

निचोड़े हुए दहीका गुण ॥

निचोडा हुआ दही अत्यन्त स्निग्ध वातनाशक कफकारी भारी बलकारी पुष्टि कारक रुचिकारी मधुर और कुछ पित्तकारी होता है ॥ ९ ॥

शर्करादिसहितदधिगुणाः ॥

सशर्करंदधिश्रेष्ठंतृष्णापित्तास्रदाहजित्। सगुडंवातनुद्वृष्यंबृंहणंतर्पणंगुरु ॥ १० ॥

शर्करादि युक्त दही के गुण ॥

शर्करा युक्त दही श्रेष्ठ गुणदायक और तृषा रक्त पित्त तथा दाह नाशक होता है गुड युक्त दही वातनाशक वीज तथा धातु वर्द्धक तृप्तिकारी और भारी होता है ॥ १० ॥

अथ रात्रौदधिभोजननिषेधः ॥

ननक्तंदधिभुञ्जीतनचाप्यघृतशर्करम्। नामुद्गसूपंनाक्षौद्रंनोष्णंनामलकैर्विना॥अय मर्थःरात्रौदधिनभुञ्जीत्भुञ्जीत्चेत्तदाअघृतशर्करतामुद्गसूपंक्षौद्रमुष्णंविनामलकैश्चद धिनभुञ्जीत्। तेनघृतशर्करादियुक्तंदधिरात्रावपिभुञ्जीतेत्यर्थःतथाचशस्यतेदधिनोरा त्रौशरतञ्चाम्बुघृतान्वितम् ॥ रक्तपित्तकफोत्थेषुविकारेषुतुनैवतत । तदम्बुघृतान्वित मपि ॥ ११ ॥ रात्रि में दही खानेका निषेध ॥

रात्रिको दही नहीं खाना चाहिये और जो खाय तो जल घी शक्कर मूंगकी दाल सहत अथवा आमले मिलाकर खाय रात्रि में भी घी शक्कर आदिसे युक्त और उष्ण दही भोजन करना चाहिये कहाभी गयाहै कि रात्रि में दही श्रेष्ठ नहीं होता परन्तु घी शक्कर अथवा जलसे युक्त द्रोपकारी नहीं मानते परन्तु रक्त पित्त और कफ जनित विकारों में जल अथवा घृत युक्त दही भी विकारी है ॥११॥

अथर्तुविशेषेणविधिनिषेधौ ॥

हेमन्तेशिशिरेचापिवर्षासुदधिशस्यते।शरद्ग्रीष्मवसन्तेषुप्रायशस्तद्विगर्हितम् १२॥

ऋतु विशेषमें विधि और निषेध ॥

हेमन्त शिशिर और वर्षाऋतुमें दहीखाना श्रेष्ठहै शरद ग्रीष्म और वसन्त ऋतुमें प्रायः दही खाना अहितहै ॥ १२ ॥

अथा विधिनादधिसेवनेदोषमाह ॥

ज्वरासृक्पित्तवीसर्पकुष्ठपाण्ड्वामयभ्रमान् । प्राप्नुयात्कामलाञ्चोग्रांविधिंहित्वा दधिप्रियः ॥ १३ ॥

विनाविधिके दहीखानेमेंदोष ॥

जो विना विधिके दही खाताहे वह ज्वर रक्त पित्त वीसर्प कुष्ठ पांडु भ्रम और उग्र कामला रोगसे ग्रसित होताहे ॥ १३ ॥

अथ सरस्यमस्तुनश्चलक्षणंगुणाश्च ॥

दध्नस्तुपरियोभागोघनःस्नेहसमन्वितः। सलोकेसरइत्युक्तोदध्नोमण्डस्तमस्त्विति ॥ सरःस्वादुर्गुरुर्वृष्योवातवह्निप्रणाशनः । साम्लोवस्तिप्रशमनःपित्तश्लेष्मविवर्द्धनः ॥

मस्तुछमहरंवल्यंलघुभक्ताभिलापकृत्। स्रोतोविशोधनंह्लादिकफतृष्णानिलापहम्॥ अव्र प्यंप्रीणनंशीघ्रंभिनत्तिमलसञ्चयम्॥ १४॥

इतिश्रीभावप्रकाशेदधिवर्गः॥

दहीकीमलाई और दहीकेतोड़केगुण॥

दहीके ऊपर जो घृतयुक्त गाढ़ाभाग (मलाई) होताहै उसको लोकमें सरकहते हैं और दही के तोड़को मस्तु कहतेहैं दही की मलाई मधुर भारी वीर्य वर्द्धक वात तथा अग्निनाशक और जो खट्टी होय तो वस्ति शोधक और कफ पित्त वर्द्धक होतीहै दहीका तोड़ ग्लानिनाशक बलकारक हलका अन्नमें रुचि कराने वाला स्रोतोंका शोधक आनन्ददायी कफघ्न तृषानाशक वातघ्न वीर्यको न करने वाला प्रीतिकारी और शीघ्र संचित मलका निकालनेवालाहोताहै॥ १४॥

इतिश्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेदधिवर्गःसमाप्तः॥

अथ तक्रवर्गः तत्रतक्रस्यभिन्नानिनामानिलक्षणानिगुणाश्च॥

घोलन्तुमथितंतक्रमुदश्विच्छच्छिकापिच। ससरंनिर्जलंघोलंमथितन्त्वसरोदकम्॥ तक्रंपादजलंप्रोक्तमुदश्वित्त्वर्द्धवारिकम्। छच्छिकासारहीनारयात्स्वच्छाप्रचुरवारिका॥ घोलंतुशर्करायुक्तंगुणैर्ज्ञेयंरसालवत्। मथितंमहुपाइतिलोके। छच्छिकाछाछइतिलोके॥ वातपित्तहरंह्लादिमथितंकफपित्तनुत्। तक्रंग्राहिकषायाम्लंस्वादुपाकरसंलघुः॥ वीर्योष्णंदीपनंवृष्यंप्रीणनंवातनाशनम्। ग्रहण्यादिमतांपथ्यंभवेत्संग्राहिलाघवात्॥ किञ्चस्वादुविपाकित्वान्नचपित्तप्रकोपणम्। कषायोष्णांदीपनंवृष्यंप्रीणनंवातनाशनम्॥ कषायोष्णाविपाकित्वाद्रौक्ष्याच्चापिकफापहम्। नतक्रसेवीव्यथतेकदाचित्नतक्रदग्धाःप्रभवन्तिरोगाः। यथासुराणाममृतंसुखायतथानराणांभुवितक्रमाहुः॥ उदश्वित्कफकृद्बल्यंश्रामघ्नंपरमंमतम्। छच्छिकाशीतलालघ्वीपित्तश्रमतृषाहरी॥ वातनुत्कफकृत्सातुदीपनीलवणान्विता॥ १॥

अथतक्रवर्गः। मट्ठेके अलग २ नामलक्षण और गुण॥

घोल मथित तक्र उदश्वित और छच्छिका यह मट्ठेके भेदोंके नामहैं मलाई सहित और निर्जल मट्ठेको घोल मलाई रहित जलयुक्त मट्ठेको मथित चतुर्थांश जल सहित मट्ठेको तक्र अर्द्धांश जल सहित मट्ठेको उदश्वित और बहुत जलयुक्त मक्खन निकलेहुए मट्ठेको छच्छिका (छांछ) कहतेहैं शक्करयुक्त घोल शिखरन के समान गुणकारीहोताहै घोल वात पित्त नाशक मथित कफ पित्त नाशक तक्रग्राही कषैला खट्टा पाकमें मधुर हलका उष्ण दीपन वीर्यवर्द्धक प्रीतिकारी वातनाशक ग्रहणी आदिक रोगवाले पुरुषोंको पथ्य और हलकेपनेसे ग्राही पाकमें मधुरहोनेसे पित्तकाकोप न करनेवालाऔर कषैलेपनसे उष्णतासे तथारूक्षतासे कफकानाशकहोताहै तक्रसेवनकरनेवाला पुरुष कभी व्यथाको नहीं प्राप्तहोताहै और उसको किसी प्रकारका रोगनहींहोता है जैसे देवता लोगोंको

अमृत सुखकारीहोताहै इसी प्रकार मनुष्योंको मट्ठा हितकारीहै उदास्वित कफवर्द्धकबलकारी और श्रमका अत्यन्त नाशकहोताहै छाछ शीतल हलकी कफकारी और पित्त श्रम तृषा तथा वातनाशकहोतीहै और लवणयुक्त छाछ अग्निकोदीपन करतीहै ॥ १ ॥

अथोद्धृतघृतस्तोकोद्धृतानुद्धृतघृतानांतक्राणांगुणाः ॥

समुद्धृतंघृतंतक्रंपथ्यंलघुविशेषतः। स्तोकोद्धृतघृतंतस्माद्गुरुवृष्यंकफावहम्॥ अनुद्धृतघृतसान्द्रंगुरुपुष्टिकफप्रदम् ॥ २ ॥

घृतनिकलेहुए अल्पघृतनिकलेहुए और नहींघृत निकलेहुए मट्ठोंके गुण ॥

घी निकलाहुआमट्ठा पथ्य तथाअत्यन्त हलका कुछघी निकला हुआ मट्ठा इसकी अपेक्षा कुछ भारी पुष्ट तथा कफकारी और बिनघी निकला हुआ मट्ठा गाढ़ा भारी और पुष्टि तथा कफकारी होताहै ॥ २ ॥

अथ दोषविशेषेव्याधिविशेषेतक्रविशेषाः ॥

वातेऽम्लंशस्यतेतक्रंशुण्ठीसैन्धवसंयुतम्। पित्तेस्वादुसितायुक्तंसव्योषमधिकेकफे॥ हिङ्गुजीरयुतंघोलंसैन्धवेनचसंयुतम्। भवेदतीववातघ्नमर्शोऽतीसारहृत्परम् ॥ रुचिदंपुष्टिदंबल्यंबस्तिशूलविनाशनम्। मूत्रकृच्छ्रेतुसगुडंपाण्डुरोगेसचित्रकम् ॥ ३ ॥

दोष विशेष और रोग विशेष में तक्र विशेष ॥

वातमें सोंठि तथा सैंधवयुक्त खट्टा मट्ठा श्रेष्ठहै पित्तमें मीश्रीयुक्त मधुर मट्ठा श्रेष्ठहै कफमें त्रिकटुयुक्त मट्ठा श्रेष्ठहै हींग जीरा और सेंधव युक्त घोल अत्यन्त वात नाशक रुचिकारी पुष्ट तथा बलकारी वस्तिकी पीड़ा नाशक और बवासीर तथा अतीसार नाश करने में श्रेष्ठ होताहै गुड़युक्त घोल मूत्रकृच्छ्रमें हितहै और चीतायुक्त घोल पांडुरोगमें हितकारी होताहै ॥ ३ ॥

अथामपक्वतक्रगुणाः ॥

तक्रमामंकफंकोष्ठेहन्तिकण्ठेकरोतिच। पीनसश्वासकासादौपक्वमेवप्रयुज्यते ॥ ४ ॥

कच्चे और पक्के मट्ठे केगुण ॥

कच्चा मट्ठा कोष्ठ के कफ का नाशक और कंठ में कफका करने वाला होता है पक्का मट्ठापीनस श्वास तथा खांसी आदिरोगों में व्यवहार करना चाहिये ॥ ४ ॥

अथ तक्रसेवननिमित्तानि ॥

शीतकालेऽग्निमान्द्येचतथावातामयेषुच। अरुचौस्रोतसांरोधेतक्रंस्यादमृतोपमम्॥ तत्तुहन्तिगरच्छर्दिप्रसेकविषमज्वरान् । पाण्डुमेदोग्रहण्यर्शोमूत्रग्रहभगन्दरान् ॥ मेहंगुल्ममतीसारंशूलप्लीहोदरारुचीः। श्वित्रकोठगतव्याधीन्कुष्ठशोथतृषाक्रमीन् ॥ ५ ॥

मट्ठे के सेवनके प्रयोजन ॥

शीतकाल मंदाग्नि वातरोग अरुचि और स्रोतों के रुकनेमें मट्ठा अमृत के समान हितहोता है मट्ठा गरदोष छर्दिप्रसेक विषमज्वर पांडु मेद ग्रहणी बवासीर मूत्राघात भगन्दर प्रमेह गुल्म अतीसार शूल प्लीहा अरुचि उदर श्वेतकुष्ठ कोष्ठकेरोग कुष्ठ सूजन तृषा तथा कृमि नाशक होताहै ॥ ५ ॥

अथ चिरन्तननवनीतगुणाः ॥

सक्षारकटुकाम्लत्वाच्छर्द्यर्शःकुष्ठकारकम्। श्लेष्मलंगुरुमेदस्यंनवनीतंचिरन्तनम्॥५॥

इतिश्रीभावप्रकाशे नवनीतवर्गः ॥

पुराने मक्खन के गुण ॥

पुराना मक्खन क्षार कटु तथा अम्ल होने के कारण छर्दि ववासीर कुष्ठ कफ तथा मेदको करता है और भारी होताहै ॥ ५ ॥

इतिभावप्रकाशस्यभाषानुवादेनवनीतवर्गः समाप्तः ॥

अथ घृतवर्गः । तत्रघृतस्यनामानिगुणाश्च ॥

घृतमाज्यंहविःसर्पिःकथ्यन्तेतद्गुणाअथ। घृतंरसायनंस्वादुचक्षुष्यंवह्निदीपनम्॥ शीतवीर्य्यंविपालक्ष्मीपापपित्तानिलापहम् ॥ अल्पाभिष्यन्दिकान्त्योजस्तेजोलावण्यबुद्धिकृत् ॥ स्वरस्मृतिकरंमेध्यमायुष्यंवलकृद्गुरु । उदावर्त्तज्वरोन्मादशूलानाहव्रणान्हरेत् ॥ स्निग्धंकफकररंक्षःक्षयवीसर्परक्तनुत् ॥ १ ॥

अथघृतवर्गः ॥ घीकेनाम और गुण ॥

घृत आज्य हविष् और सर्पिष् यह घीके नाम हैं घी रसायन मधुर नेत्रों को हित दीपन वीर्य में शीतल कुछ अभिष्यन्दी कान्तिकारक ओजवर्द्धक तेजकारी शोभा तथा बुद्धिवर्द्धक स्वरतथा स्मृतिकारी मेधातथा आयुकोहित वलकारी भारी स्निग्ध कफ कारी राक्षसों के दोषका नाशक और विष अलक्ष्मी पाप पित्त वात उदावर्त्त ज्वर उन्माद शूल आनाह घाव क्षय वीसर्प तथा रक्त दोष नाशक होताहै ॥ १ ॥

गव्यस्यघृतस्य गुणाः ॥

गव्यंघृतंविशेषेणचक्षुष्यंवृष्यमग्निकृत् । स्वादुपाककरंशीतंवातपित्तकफापहम् ॥ मेधालावण्यकान्त्योजस्तेजोवृद्धिकरंपरम् । अलक्ष्मीपापरक्षोघ्नंवयसःस्थापकंगुरु ॥ वल्यंपवित्रमायुष्यंसुमङ्गल्यंरसायनम् । सुगन्धंरोचकंचारुसर्वाज्येषुगुणाधिकम् ॥ २ ॥

गौकेघीके गुण ॥

गौका घी नेत्रोंको अत्यन्तहित वीर्यवर्द्धक दीपन रस तथा पाकमें मधुर वातादि त्रिदोष नाशक मेधाकारी शोभा तथा कान्तिवर्द्धक ओज तथा तेजकारक दुर्भाग्यनाशक पातक तथा राक्षस दोषनाशक अवस्थाका स्थित रखनेवाला भारी वलिष्ठ पवित्र आयुकोहित मंगलरूप रसायन सुगन्धियुक्त रुचिकारी और सुन्दर होताहै यह सम्पूर्ण घृतोंमें अधिक गुणवालाहै ॥ २ ॥

माहिषस्य गुणाः ॥

माहिषन्तुघृतंस्वादुपित्तरक्तानिलापहम् । शीतलंश्लेष्मलंवृष्यंगुरुस्वादुविपच्यते ३ ॥

भैंसकेघीके गुण ॥

भैंसकाघी मधुर रक्त पित्त तथा वातनाशक शीतल कफकारी वीर्यवर्द्धक भारी और पाकमें मधुर होता है ॥ ३ ॥

छागस्य गुणाः ॥

आजमाज्यङ्करोत्यग्निंचक्षुष्यंबलवर्द्धनम्। कासेश्वासेक्षयेचापिहितंपाकेभवेत्कटु॥४॥

बकरीके घीके गुण ॥

बकरीका घी दीपन नेत्रोंकोहित बलवर्द्धक पाकमें कटु और खांसी श्वास तथा राजयक्ष्मा रोग में हितकारी होताहै ॥ ४ ॥

अथ उष्ट्रीघृतम् ॥

औष्ट्रंकटुघृतंपाकेशोषक्रिमिविषापहम्। दीपनंकफवातघ्नंकुष्ठगुल्मोदरापहम्॥ ५ ॥

ऊँटनी के घीके गुण ॥

ऊँटनी का घी पाकमें कटु दीपन और सूजन विष कृमि कफ वात कुष्ठ गुल्म तथा उदर रोग नाशक होताहै ॥ ५ ॥

अथ आविकंघृतम् ॥

पाकेलघ्वाविकंसर्पिःसर्वरोगविनाशनम्। वृद्धिंकरोतिचास्थीनामश्मरीशर्करापहम्॥ चक्षुष्यमग्निघ्युषणंवातदोषनिवारणम्॥ ६ ॥

भेड़ के घीके गुण ॥

भेड़का घी पाकमें हलका सर्वरोग नाशक हड्डियों का बढ़ाने वाला नेत्रोंकोहित दीपन और पथरी तथा वातरोग नाशक होताहै ॥ ६ ॥

अथ नारीघृतम् ॥

कफेऽनिलेयोनिदोषेपित्तेरक्तेचतद्धितम्।चक्षुष्यमाज्यंस्त्रीणांवासर्पिःस्यादमृतोपमम्॥७।

नारीके घीके गुण ॥

नारीका घी नेत्रोंको हित और कफ वात योनिरोग पित्त रक्तमें अमृतके समान गुणकारी होताहै ॥ ७ ॥

अथाश्वीघृतम् ॥

वृद्धिंकरोतिदेहाग्नेर्लघुपाकेविषापहम्। तर्पणंनेत्ररोगघ्नंदाहनुद्वडवाघृतम् ॥ ८ ॥

घोड़ीके घृतके गुण ॥

घोड़ीका घी देहकी अग्निका बढ़ाने वाला पाकमें हलका तृप्तिकारी और विष दोष नेत्ररोग तथा दाह नाशक होताहै ॥ ८ ॥

दुग्धघृतस्यगुणाः ॥

घृतंदुग्धभवंग्राहिशीतलंनेत्ररोगहृत्। निहन्तिपित्तदाहास्रमदमूर्च्छाभ्रमानिलान्॥ ९॥

दूधके घीके गुण ॥

दूधसे निकाला हुआघी ग्राही शीतल और नेत्ररोग पित्त दाह रक्त दोष मद मूर्च्छा भ्रम तथावात नाशक होताहै ॥ ९ ॥

अथह्यस्तनदधिजघृतगुणाः ॥

हविर्ह्यस्तनदुग्धोत्थंतत्स्याद्धैयङ्गवीनकम्। हैयङ्गवीनंचक्षुष्यंदीपनंरुचिकृत्परम्॥ बलकृद्बृंहणंवृष्यंविशेषाज्ज्वरनाशनम्॥ १० ॥

एकादिनके जमेहुए दहीके घीके गुण ॥

एकदिनके जमेहुये दहीसे निकले हुये घी कोहैयंगवीन कहतेहैं यह नेत्रोंको हितः दीपन अत्यन्त रुचिकारी बल तथा धातुवर्द्धक वीर्यवर्द्धक और विशेष करके ज्वरनाशक होताहै ॥ १० ॥

पुराणघृतस्यगुणाः ॥

वर्षादूर्ध्वंभवेदाज्यंपुराणंतत्त्रिदोषनुत्। मूर्च्छाकुष्ठविषोन्मादापस्मारतिमिरापहम् ॥ यथायथाऽखिलंसर्पिःपुराणमधिकंभवेत्। तथातथाऽगुणैःस्वैःस्वैरधिकंतदुदाहृतम्॥ ११॥

पुराने घीके गुण ॥

एकवर्षके रक्खेहुये घीको पुरानघृतकहतेहैं यह त्रिदोषनाशक और मूर्च्छा कुष्ठविष उन्माद मृगीतथा तिमिर नाशकहोता है संपूर्णघी जैसे २ पुराने होतेहैं वैसेही वैसे अपने २ गुणोंमें अधिकहोते हैं ११ ॥

अथनूतनस्यघृतस्यविषयाः ॥

योजयेन्नवमेवाज्यंभोजनेतर्पणेश्रमे। बलक्षयेपाण्डुरोगेकामलानेत्ररोगयोः ॥ १२ ॥

नवीन घीके विषय ॥

भोजन तृप्ति श्रम बलकानाश पांडुरोग कामला तथा नेत्ररोग में नवीन घृत को काम में लाना चाहिये ॥ १२ ॥

घृतप्रयोगस्याविषयाः ॥

राजयक्ष्मणिबालेचवृद्धेश्लेष्मकृतेगदे । रोगेसामेविसूच्याञ्चविबन्धेचमदात्यये ॥ ज्वरेचदहनेमन्देनसर्पिर्बहुमन्यते ॥ १३ ॥

इतिश्रीभावप्रकशेघृतवर्गः ॥

घीदेनेमें निषेध कियेहुये स्थान ॥

राजयक्ष्मा कफरोग आमयुक्तरोग विसूचिका विबन्ध मदात्यय ज्वर तथामन्दाग्निमें और बालक तथा वृद्धोंको बहुत घी उपकारी नहीं है ॥ १३ ॥

इति भावप्रकाशस्यभाषानुवादे घृतवर्गः समाप्तः ॥

अथ मूत्रवर्गः। तत्रगोमूत्रगुणाः ॥

गोमूत्रंकटुतीक्ष्णोष्णंक्षारंतिक्तकषायकम्। लघ्वग्निदीपनंमेध्यंपित्तकृत्कफवातहृत् ॥ शूलगुल्मोदरानाहकण्ड्वक्षिमुखरोगजित्। किलासगदवातामवस्तिरुक्कुष्ठनाशनम् ॥ कासश्वासापहंशोथकामलापाण्डुरोगहृत्॥कण्डूकिलासगदशूलमुखाक्षिरोगान् गुल्मातिसारमरुदामयमूत्ररोधान्॥ कासंसकुष्ठजठरकृमिपाण्डुरोगान् गोमूत्रमेकमपिपीतमपाकरोति ॥ सर्वेष्वपिचमूत्रेषुगोमूत्रंगुणतोऽधिकम्। अतोऽविशेषात्कथनेमूत्रंगोमूत्रमुच्यते॥ प्लीहोदरश्वासकासशोथवर्चोग्रहापहम् । शूलगुल्मरुजानाहकामलापाण्डुरोगहृत् ॥ कषायंतिक्ततीक्ष्णञ्चपूरणात्कर्णशूलनुत् ॥ १ ॥

अथमूत्रवर्गः। गोमूत्र के गुण ॥

गोमूत्र कटु तीक्ष्ण उष्ण क्षार तिक्त कषैला हलका दीपन मेधाकोहित पित्तकारी और कफवात शूल गुल्म उदर आनाह खुजली नेत्ररोग मुखरोग किलास आमवात वस्तिरोग कुष्ठ खांसी श्वास सूजन कामला तथा पांडुरोग नाशक होताहै ग्रन्थान्तर में कहा हुआ है कि एक गोमूत्र पान करने से खुजली किलास शूल मुखरोग नेत्ररोग गुल्म अतीसार वातरोग मूत्राघात खांसी कुष्ठउदर कृमि

छागस्य गुणाः ॥

आजमाज्यङ्करोत्यग्निंचक्षुष्यंबलवर्द्धनम्। कासेश्वासेक्षयेचापिहितंपाकेभवेत्कटु॥४॥

बकरीके घीके गुण ॥

बकरीका घी दीपन नेत्रोंकोहित बलवर्द्धक पाकमेंकटु और खांसी श्वास तथा राजयक्ष्मा रोग में हितकारी होताहै ॥ ४ ॥

अथ उष्ट्रीघृतम् ॥

औष्ट्रंकटुघृतंपाकेशोफंक्रिमिविषापहम्। दीपनंकफवातघ्नंकुष्ठगुल्मोदरापहम् ॥ ५ ॥

ऊँटनी के घीके गुण ॥

ऊँटनी का घी पाकमें कटु दीपन और सूजन विष क्रमि कफ वात कुष्ठ गुल्म तथा उदर रोग नाशक होताहै ॥ ५ ॥

अथ आविकंघृतम् ॥

पाकेलघ्वाविकंसर्पिःसर्वरोगविनाशनम्। वृद्धिंकरोतिचास्थीनामश्मरीशर्करापहम्॥ चक्षुष्यमग्निधुक्षणंवातदोषनिवारणम् ॥ ६ ॥

भेड़ के घीके गुण ॥

भेड़का घी पाकमें हलका सर्वरोग नाशक हड्डियों का बढ़ाने वाला नेत्रोंकोहित दीपन और पथरी तथा वातरोग नाशक होताहै ॥ ६ ॥

अथ नारीघृतम् ॥

कफेऽनिलेयोनिदोषेपित्तेरक्तेचतद्धितम्। चक्षुष्यमाज्यंस्त्रीणांवासर्पिःस्यादमृतोपमम्॥७।

नारीके घीके गुण ॥

नारीका घी नेत्रोंको हित और कफ वात योनिरोग पित्त रक्तमें अमृतके समान गुणकारी होताहै ॥ ७ ॥

अथाश्वीघृतम् ॥

वृद्धिंकरोतिदेहाग्नेर्लघुपाकेविषापहम्। तर्पणंनेत्ररोगघ्नंदाहनुद्वडवाघृतम् ॥ ८ ॥

घोड़ीके घृतके गुण ॥

घोड़ीका घी देहकी अग्निका बढ़ाने वाला पाकमें हलका तृप्तिकारी और विष दोष नेत्ररोग तथा दाह नाशक होताहै ॥ ८ ॥

दुग्धघृतस्यगुणाः ॥

घृतंदुग्धभवंग्राहिशीतलंनेत्ररोगहृत्। निहन्तिपित्तदाहास्रमदमूर्च्छाभ्रमानिलान्॥ ९ ॥

दूधके घीके गुण ॥

दूधसे निकाला हुआघी ग्राही शीतल और नेत्ररोग पित्त दाह रक्त दोष मद मूर्च्छा भ्रम तथावात नाशक होताहै ॥ ९ ॥

अथह्यस्तनदधिजघृतगुणाः ॥

हविर्ह्यस्तनदुग्धोत्थंतत्स्याद्धैयङ्गवीनकम्। हैयङ्गवीनंचक्षुष्यंदीपनंरुचिकृत्परम् ॥ बलकृद्बृंहणंवृष्यंविशेषात्ज्वरनाशनम् ॥ १० ॥

एकदिनके जमेहुए दहीके घीके गुण ॥

एकदिनके जमेहुये दहीसे निकले हुये घी कोहैयंगवीन कहतेहैं यह नेत्रोंको हितः दीपन अत्यन्त रुचिकारी बल तथा धातुवर्द्धक वीर्यवर्द्धक और विशेष करके ज्वरनाशक होताहै ॥ १० ॥

पुराणघृतस्यगुणाः ॥

वर्षादूर्ध्वंभवेदाज्यंपुराणंतत्त्रिदोषनुत्। मूर्च्छाकुष्ठविषोन्मादापस्मारतिमिरापहम् ॥ यथायथाऽखिलंसर्पिःपुराणमधिकंभवेत। तथातथाऽगुणैःस्वैःस्वैरधिकंतदुदाहृतम्॥ ११॥

पुराने घीके गुण ॥

एकवर्षके रक्खेहुये घीको पुरानघृतकहतेहैं यह त्रिदोषनाशक और मूर्छा कुष्ठविष उन्माद मृगीतथा तिमिर नाशकहोता है संपूर्णघी जैसे २ पुराने होतेहैं वैसेही वैसे अपने २ गुणोंमें अधिकहोते हैं ११ ॥

अथनूतनस्यघृतस्यविषयाः ॥

योजयेन्नवमेवाज्यंभोजनेतर्पणेश्रमे। बलक्षयेपाण्डुरोगेकामलानेत्ररोगयोः ॥ १२ ॥

नवीन घीके विषय ॥

भोजन तृप्ति श्रम बलकानाश पांडुरोग कामला तथा नेत्ररोग में नवीन घृतको काम में लाना चाहिये ॥ १२ ॥

घृतप्रयोगस्याविषयाः ॥

राजयक्ष्मणिबालेचवृद्धेश्लेष्मकृतेगदे । रोगेसामेविसूच्यांचविबन्धेचमदात्यये ॥ ज्वरेचदहनेमन्देनसर्पिर्बहुमन्यते ॥ १३ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशेघृतवर्गः ॥

घीदेनेमें निषेध कियेहुये स्थान ॥

राजयक्ष्मा कफरोग आमयुक्तरोग विसूचिका विबन्ध मदात्यय ज्वर तथामन्दाग्निमें और बालक तथा वृद्धोंको बहुत घी उपकारी नहीं है ॥ १३ ॥

इति भावप्रकाशस्यभाषानुवादे घृतवर्गः समाप्तः ॥

अथ मूत्रवर्गः । तत्रगोमूत्रगुणाः ॥

गोमूत्रंकटुतीक्ष्णोष्णंक्षारंतिक्तकषायकम्। लघ्वग्निदीपनंमेध्यंपित्तकृत्कफवातहृत् ॥ शूलगुल्मोदरानाहकण्ड्वक्षिमुखरोगजित्। किलासगदवातामवस्तिरुक्कुष्ठनाशनम् ॥ कासश्वासापहंशोथकामलापाण्डुरोगहृत्॥कण्डूकिलासगदशूलमुखाक्षिरोगान् गुल्मातिसारमरुदामयमूत्ररोधान्॥ कासंसकुष्ठजठरक्रिमिपाण्डुरोगान् गोमूत्रमेकमपिपीतमपाकरोति ॥ सर्वेष्वपिचमूत्रेषुगोमूत्रंगुणतोऽधिकम्। अतोऽविशेषात्कथनेमूत्रंगोमूत्रमुच्यते॥ प्लीहोदरश्वासकासशोथवर्चोग्रहापहम् । शूलगुल्मरुजानाहकामलापाण्डुरोगहृत् ॥ कषायंतिक्ततीक्ष्णञ्चपूरणात्कर्णशूलनुत् ॥ १ ॥

अथमूत्रवर्गः । गोमूत्र के गुण ॥

गोमूत्र कटु तीक्ष्ण उष्ण क्षार तिक्त कषैला हलका दीपन मेधाकोहित पित्तकारी और कफवात शूल गुल्म उदर आनाह खुजली नेत्ररोग मुखरोग किलास आमवात वस्तिरोग कुष्ठ खांसी श्वास सूजन कामला तथा पांडुरोग नाशक होताहै ग्रन्थान्तर में कहा हुआ है कि एक गोमूत्र पान करने से खुजली किलास शूल मुखरोग नेत्ररोग गुल्म अतीसार वातरोग मूत्राघात खांसी कुष्ठउदर कृमि

श्रोर पांडु इन सब रोगोंको नाशकरताहै सम्पूर्ण मूत्रोंमें गोमूत्र अधिक गुणवाला होताहै इसीकारण से जहां सामान्यतासे मूत्र कहाहो वहां गोमूत्रही का व्यवहार करना चाहिये गोमूत्र कपैला तिक्त तीक्ष्ण और प्लीहा उदर श्वास खांसी सूजन मलका रुकना शूल गुल्म आनाह कामला तथा पांडु रोगनाशक और कानोंमें भरनेसे कानकी पीड़ाका नाश होताहै ॥ १ ॥

मानुषमूत्रगुणाः ॥

नरमूत्रंगरंहन्तिसेवितन्तद्रसायनम् । रक्तपामाहरंतीक्ष्णंसक्षारलवणंस्मृतम् ॥ गोजाविमहिषीणांतुस्त्रीणांमूत्रंप्रशस्यते । खरोष्ट्रेभनराश्वानांपुंसांमूत्रंहितंस्मृतम् ॥ २ ॥

इतिश्री भावप्रकाशेमूत्रवर्गः ॥

मनुष्यके मूत्रके गुण ॥

मनुष्यका मूत्र गरदोपनाशक रसायन रक्तदोष तथा खुजलीनाशक तीक्ष्ण क्षार और नमकीनहोताहै गौ बकेरी भेड़ और भैंस इनमें स्त्रीजाति (मादा) कामूत्र श्रेष्ठहै गदहा ऊंट हाथी मनुष्य और, घोड़ा इनमें नरजातिकामूत्र श्रेष्ठहै ॥ २ ॥

इतिभावप्रकाशस्यभापानुवादेमूत्रवर्गः समाप्तः ॥

अथ तैलवर्गः । तत्रतैलस्यस्वरूपनिरूपणम् ॥

तिलादिस्निग्धवस्तूनांस्नेहस्तैलमुदाहृतम् ।तत्तुवातहरंसर्वंविशेषात्तिलसम्भवम्॥१ ॥

अथ तैल वर्गः ॥ तेलके स्वरूपका वर्णन ॥

तिल आदिक स्निग्ध वस्तुओंके स्नेहको तैल कहतेहैं सम्पूर्ण तेल वातनाशक होतेहैं और तिल का तेल विशेष करके ॥ १ ॥

अथ तिलतैलगुणाः ॥

तिलतैलंगुरुस्थैर्य्यबलवर्णकरंसरम् । वृष्यंविकाशिविषदंमधुरंरसपाकयोः॥सूक्ष्मंकषायानुरसतिक्तंवातकफापहम् । वीर्य्येणोष्णंहिमंस्पर्शेबृंहणंरक्तपित्तकृत् ॥ लेखनंबद्धविण्मूत्रंगर्भाशयविशोधनम् । दीपनंबुद्धिदंमेध्यंव्यवायिव्रणमेहनुत् ॥ श्रोत्रयोनिशिरःशूलनाशनंलघुताकरम् । त्वच्यंकेश्यञ्चचक्षुष्यमभ्यङ्गेभोजनेऽन्यथा ॥ छिन्नभिन्नच्युतोत्पिष्टमथितक्षतपिच्चिते । भग्नस्फुटितविद्धाग्निदग्धविश्लिष्टदारिते ॥ तथाभिहतनिर्भुग्नमृगव्याघादिविक्षते । वस्तौपानेऽन्नसंस्कारेनस्येकर्णाक्षिपूरणे ॥ सेकाभ्यङ्गावगाहेषुतिलतैलंप्रशस्यते । ननुबृंहणलेखनयोःकथंसामानाधिकरण्यमित्याह । रूक्षादिदुष्टःपवनःस्रोतःसङ्कोचयेद्यदा । रसोसम्यग्वहन्काश्यंकुर्य्याद्रक्तायवर्द्धयन् ॥ तेषुप्रवेष्टुंसरतसौक्ष्म्यस्निग्धत्वमार्दवैः । तैलंक्षमंरसंनेतुंकृशानातेनबृंहणम् ॥ व्यवायिसूक्ष्मतीक्ष्णोष्णसरत्वैर्मेदसःक्षयम् । शनैःप्रकुरुतेतैलंतेनलेखनमीरितम् ॥ द्रुतंपुरीषंबध्नातिस्खलितंतदभ्वर्त्तयेत् । ग्राहकंसारकञ्चापितेनतैलमुदीरितम् ॥ घृतमब्दात्परंपक्वंहीनवीर्य्यंप्रजायते । तैलपक्वमपक्वंवाचिरस्थायिगुणाधिकम् ॥ २ ॥

तिलके तेलके गुण ॥

तिलका तेल भारी स्थिरताकारक बल तथा वर्णवर्द्धक दस्तावर पुष्टिकारक विकाशी विशद रस तथा पाकमें मधुर सूक्ष्म कुछ कषैला तिक्त वातघ्न कफनाशक वीर्यमे उष्ण स्पर्शमें शीतल धातु वर्द्धक रक्तपित्तकारी कृशताकारी मलमूत्र रोधक गर्भाशय शोधक दीपन बुद्धिदायक मेधाको हित व्यवायि घावनाशक प्रमेहनाशक वर्ण तथा योनि शूलनाशक शिरकी पीड़ाका दूरकरनेवाला शरीरको हलका करनेवाला और शरीरमें लगानेसे त्वचा केश तथा नेत्रोंकोहित परन्तु खानेसे त्वचा आदिकों को अहित होताहै यह छिन्न भिन्न च्युत मथित उत्पिष्ट क्षत पिच्चिटभग्न स्फुटित विद्ध अग्निदग्ध वि- श्लिष्ट विदारित अभिहत निर्भुग्न मृग तथा व्याघ्र आदिकोंसेविक्षत (इन शब्दोंका विशेष अर्थ भग्न निदानमें कियाहै) पुरुषोंको वस्ति क्रियामें पानकरने में अन्नके संस्कार में नासलेने में कान तथा नेत्रोंके भरनेमें परिषेक में अभ्यंगमें और अवगाहमें श्रेष्ठ होताहै यहांपर यह सन्देह होसकाहै कि एकही वस्तुमें लेखन (कृशताकरना) और बृंहण(धातुओंका बढ़ना)यह दोनों गुण कैसे होसक्ते हैं इसका उत्तर यहहै कि जिससमय रूक्षादि वस्तुओंके सेवनसे दूषित वायु श्रोतोंको संकुचित करताहै तब रस अच्छेप्रकारसे वह नहीं सक्ताहै इस्से रुधिरादिकोंकी वृद्धि नहोने से कृशता होती है सर सूक्ष्मता स्निग्धता और मृदुतासे तेल रस केलेजानेको समर्थ होताहै इसीसे कृश पुरुषोंकेलिये धातु वर्द्धक होताहै व्यवाई सूक्ष्म तीक्ष्ण उष्ण और सर इन गुणोंके द्वारा तेल धीरे २ मेद धातुको क्षयकर ताहै इसलिये पुष्टताकारक कहलाताहै तेल पतले मलको बांधताहै इस्से ग्राही और स्वलित मल को निकालताहै इस्से दस्तावर कहलाताहै एकवर्षका पुराना पकाहुआभी हीन वीर्य होजाताहै परंतु तेल कच्चाहो वा पक्का जितना पुरानाहोगा उतनाही अधिक गुणकारीहोगा ॥ २ ॥

सरिसवराईतैलगुणाः ॥

दीपनंसार्षपंतैलंकटुपाकरसंलघु । लेखनंस्पर्शवीर्य्योष्णंतीक्ष्णपित्तास्रदूषकम् ॥ कफ मेदोऽनिलार्शोघ्नंशिरःकर्णामयापहम् । कण्डूकुष्ठकृमिश्वित्रकोठदुष्टकृमिप्रणुत् ॥ तद्वद्रा जिकयोस्तैलंविशेषान्मूत्रकृच्छ्रकृत । राजिकयो कृष्णराईआरक्तराईद्वयोः ॥ ३ ॥

सरसों और राईके तेलके गुण ॥

सरसोंका तेल दीपन रस तथा पाकमें कटु हलका कृशताकारक स्पर्श तथा वीर्य में उष्ण तीक्ष्ण रक्तपित्त दूषक और कफ मेद वात बवासीर शिरके रोग कानके रोग खुजली कुष्ठ कृमि श्वेत कुष्ठ कोठ तथा दुष्ट घावनाशकहोताहै कृष्ण तथा लाल राईका तेलभी इसीके समान गुणकारी होताहै और विशेषकरके मूत्र कृच्छ्रकारी होताहै ॥ ३ ॥

तौरीतैलगुणाः ॥

तीक्ष्णोष्णंतुवरीतैलंलघुग्राहिकफास्रजित् । वह्निकृद्विषहत्कण्डूकुष्ठकोठकृमिप्रणुत् ॥ मेदोदोषापहञ्चापिव्रणशोथहरंपरम् ॥ ४ ॥

तुवरीतैलके गुण ॥

तुवरीका तेल तीक्ष्ण उष्ण हलका ग्राही दीपन और कफ रक्तदोष विष खुजली कुष्ठ कोठ कृमि मेददोष घाव तथा सूजनका अत्यन्त नाशक होताहै ॥ ४ ॥

अथ अतसीतैलगुणाः ॥

अतसीतैलमाग्नेयंस्निग्धोष्णंकफपित्तकृत्। कटुपाकमचक्षुष्यंबल्यंवातहरंगुरु ॥ मलकृद्रसतःस्वादुग्राहित्वग्दोषहृद्घनम्। वस्तौपानेतथाभ्यङ्गेनस्येकर्णस्यपूरणे ॥ अनुपानविधौचापिप्रयोज्यंवातशान्तये ॥ ५ ॥

अलसीके तेलके गुण ॥

अलसीका तेल अग्निके गुणवाला स्निग्ध उष्ण कफ तथा पित्तवर्द्धक पाकमें कटु नेत्रोंको अहित बलकारी वात नाशक भारी मल वर्द्धक मधुर ग्राही त्वचाके दोषों का नाशक और घनाहोताहै बस्ति क्रिया पान अभ्यंग (तेल लगाना) नास कानोंका भरना अनुपान और वातकी शान्ति करनेकेलिये अलसीका तेल श्रेष्ठहै ॥ ५॥

वरेरेतैलगुणाः ॥

कुसुम्भतैलमम्लंस्यादुष्णंगुरुविदाहिच ॥ चक्षुर्भ्यामहितंबल्यंरक्तपित्तकफप्रदम् ६॥

कुसुमके तेलके गुण ॥

कुसुमका तेल खट्टा उष्ण भारी विदाही नेत्रोंको अहित बलकारी और रक्तपित्त तथा कफकारक होता है ॥६ ॥

अथ खाखसबीजतैलस्यगुणाः ॥

तैलंतुखसबीजानांबल्यंवृष्यंगुरुस्मृतम्। वातहृत्कफहृच्छीतंस्वादुपाकरसंचतत् ७॥

खसखसके तेलके गुण ॥

खसखसका तेल बलकारी पुष्टिदायक भारी वातनाशक कफघ्न शीतल और रस तथा पाक में मधुर होताहै ॥ ७ ॥

एरण्डतैलगुणाः ॥

एरण्डतैलंतीक्ष्णोष्णंदीपनंपिच्छिलंगुरु ॥ वृष्यंत्वच्यंवयःस्थापिमेधाकान्तिबलप्रदम् ॥ कषायानुरसंसूक्ष्मंयोनिशुक्रविशोधनम् । विस्रंस्वादुरसेपाकेसतिक्तंकटुकंसरम् ॥ विषमज्वरहृद्रोगपृष्ठगुह्यादिशूलनुत् । हन्तिवातोदरानाहगुल्माष्ठीलाकटिग्रहान् ॥ वातशोणितविड्बन्धब्रध्नशोथामविद्रधीन् ॥ आमवातगजेंद्रस्यशरीरवनचारिणः ॥ एकएव निहन्तायमेरण्डस्नेहकेशरी ॥ ८ ॥

रेंडीके तेलके गुण ॥

रेंडीका तेल तीक्ष्ण उष्ण दीपन पिच्छिल भारी पुष्टिकारक त्वचाकोहित अवस्थाको स्थिररखनेवाला मेधाकारी कान्ति तथा बलकारी कुछ कषेला सूक्ष्म योनि तथा वीर्यशोधक दुर्गन्धियुक्त रस तथा पाक में मधुर तिक्त कटु दस्तावर और विषमज्वर हृदयरोग पीठकी पीड़ा गुह्यका शूल वात उदर आनाह गुल्म अष्ठीला कटिग्रह वातरक्त मलका रुकना वद सूजन आम तथा विद्रधिनाशक होताहै शरीररूपी वनमें विचरते हुए आम वातरूपी हाथीको मारने वाला केवल सिंहरूप रेंडीका तेलही है ॥ ८ ॥

रालतैलगुणाः ॥

तैलंसर्जरसोद्भूतंविस्फोटव्रणनाशनम्। कुष्ठपामाकृमिहरंवातश्लेष्मामयापहम् ९ ॥

रालके तेलके गुण ॥

रालकातेल विस्फोट घाव कुष्ठ खुजली कृमि और वात कफके रोगोंका नाशक होताहै ॥ ९॥

सर्वतैलगुणाः ॥

तैलंस्वयोनिगुणकृद्वाग्भटेनाखिलंमतम्॥अतःशेषस्यतैलस्यगुणाज्ञेयाःस्वयोनिवत् १०

इतिश्रीभावप्रकाशेतैलवर्गः ॥

संपूर्ण तेलोंके गुण ॥

वाग्भटने कहाहैकि जिस वस्तुका तेल होताहै उसमें उसीके समान गुण होतेहैं इस्से जो तेल नहीं लिखेगयेहैं उनमें उनके कारण के समान गुण जानने चाहिये ॥ १० ॥

इतिभावप्रकाशस्यभाषानुवादेतैलवर्गःसमाप्तः ॥

अथ सन्धानवर्गः । तत्रकाञ्जिकस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

सन्धितंधान्यमण्डादिकाञ्जिकंकथ्यतेजनैः । काञ्जिकंभेदितीक्ष्णोष्णंरोचनंपाचनं लघु ॥ दाहज्वरहरंस्पर्शात्पानाद्वातकफापहम् । माषादिवटकैर्यत्तुक्रियतेतद्गुणाधिकम् ॥ लघुवातहरन्तत्तुरोचनंपाचनंपरम् । शूलाजीर्णविबन्धानाशनंवस्तिशोधनम् ॥ शोष मूर्च्छाभ्रमार्त्तानांमदकण्डूविशोषिणाम्। कुष्ठिनांरक्तपित्तीनांकाञ्जिकंनप्रशस्यते ॥ पाण्डु रोगेयक्ष्मणिचतथाशोषातुरेषुच । क्षतक्षीणेतथाश्रान्ते मन्दज्वरनिपीड़िते ॥ एतेषान्तुहि तंप्रोक्तंकाञ्जिकंदोषकारकम् ॥ १ ॥

अथसंधान (अचार) वर्ग।कांजीके लक्षण और गुण ॥

संधान कियेहुए धान्य के मंड आदिको कांजिक कहते हैं कांजी भेदक तीक्ष्ण उष्ण रुचिकारी पाचक और हलकी होती है इसके स्पर्श करने से दाह तथा ज्वर का नाश होताहै और पान करने से वात और कफ का नाश होताहै उर्द आदिके वड़ों से जो कांजी वनती है वह अधिक गुणवाली हलकी वात नाशक रुचिकारी अत्यन्त पाचक वस्तिशोधक और शूल अजीर्ण विवन्ध तथा आमदोष नाशक होतीहै शोष मूर्छा भ्रम मदरोग खुजली कुष्ठतथा रक्त पित्त रोगवाले पुरुषोंको कांजी हितकारी नहीं है पांडुरोग राजयक्ष्मा शोषरोग क्षतक्षीण श्रम और मन्द ज्वर में कांजी दोषकारी होती है ॥ १ ॥

अथ तुषोदकस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

तुषोदकंयवैरामैःसतुषैःशकलीकृतैः । यवैःउदकेसंहितैःसन्धानवर्गोक्तत्वात् ॥ तुषाम्बु दीपनंहृद्यंपाण्डूकृमिगदापहम् । तीक्ष्णोष्णंपाचनंपित्तरक्तकृद्वस्तिशूलनुत् ॥ २ ॥

तुषोदक के लक्षण और गुण ॥

भूसी समेत कच्चे जवोंको कूटकर जो कांजीबनाई जाती है उसको तुषोदक कहतेहैं तुषोदक दीपन हृदय कोहित तीक्ष्ण उष्ण पाचक रक्तपित्तकारी और पांडु कृमि तथा वस्तिशूल नाशक होताहै ॥ २॥

अथ सौवीरस्य लक्षणंगुणाश्च ॥

सौवीरन्तुयवैरामैःपक्वैर्वानिस्तुषैःकृतम् । गोधूमैरपिसौवीरमाचार्य्याःकेचिदूचिरे ॥सौ वीरन्तुग्रहण्यर्शःकफघ्नंभेदिदीपनम् । उदावर्त्ताङ्गमर्दास्थिशूलानाहेप्रशस्यते ॥ ३ ॥

सौवीरके लक्षण और गुण ॥

भूसीविना पके अथवा कच्चे जवोंको कूटकर जो संधान किया जाताहै उसको सौवीर कहते हैं कोई कोई आचार्य गेहुंओंकोभी सौवीर कहतेहैं सौवीर ग्रहणी तथा ववासीर नाशक कफघ्न भेदक दीपन और उदावर्त्त अंगमर्द हड्डियोंकी पीड़ा तथा आनाह नाशक होताहै ॥ ३ ॥

अथारनालस्य लक्षणंगुणाश्च ॥

आरनालन्तुगोधूमैरामैःस्यान्निस्तुषीकृतैः। पक्वैर्वासन्धितैस्तत्तुसौवीरसदृशंगुणैः ॥ ४ ॥

आरनाल के लक्षण और गुण ॥

विना भूसीके कच्चे अथवा पक्के गेंहुओं के संधान को आरनाल कहतेहैं इसमें सौवीर के समान गुण होतेहैं ॥ ४ ॥ अथ धान्याम्लस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

धान्याम्लशालिचूर्णञ्चकोद्रवादिकृतंभवेत्। धान्याम्लंधान्ययोनित्वात्प्रीणनंलघुदीपनम् ॥ अरुचौवातरोगेषुसर्वेष्वास्थापनेहितम् ॥ ५ ॥

धान्याम्ल के लक्षण और गुण ॥

शालिचूर्ण और कोदों आदिकों के द्वारा जो संधान होताहै उसको धान्याम्ल कहते हैं धान्याम्ल धान्यसे उत्पन्न होनेके कारण प्रीतिकारक हलका दीपन और अरुचि संपूर्ण वात रोग तथा आस्थापन में हितकारी होताहै ॥ ५ ॥ अथ शिण्डाक्यालक्षणंगुणाश्च ॥

शिण्डाकीराजिकायुक्तैःस्यान्मूलकदलद्रवैः। सर्षपस्वरसैर्वापिशालिपिष्टकसंयुतैः॥ सन्धितैरितिशेषः। शिण्डाकीरोचनीगुर्वीपित्तश्लेष्मकरीस्मृता ॥ ६ ॥

शिंडाकी के लक्षण और गुण ॥

राई समेत मूली के पत्तोंके रससे अथवा चावल की पिट्ठी समेत सरसों के रससे जो संधान बनता है उसको शिंडाकी कहतेहैं शिंडाकी रुचिकारक भारी और कफ पित्तवर्द्धक होता है ॥ ६ ॥

अथ शुक्तस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

कन्दमूलफलादीनिसस्नेहलवणानिच । यत्रद्रव्येऽभिषूयन्तेतच्छुक्तमभिधीयते ॥ शुक्तंकफघ्नंतीक्ष्णोष्णंरोचनंपाचनंलघु। पाण्डुकृमिहरंरूक्षंभेदनंरक्तपित्तकृत् ॥ ७ ॥

जिस द्रव पदार्थ में तेल और लवण युक्त कन्द मूल और फलादिक छोड़ेजांय उसको शुक्त कहते हैं शुक्त कफनाशक तीक्ष्ण उष्ण रुचिकारी पाचक हलका पांडुतथा कृमिनाशक रूखा भेदक और रक्त पित्तकारी होताहै ॥ ७ ॥

अथ सन्धानस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

कन्दमूलफलाढ्यंयत्तत्तुविज्ञेयमासुतम्। तद्रुच्यंपाचनंवातहरंलघुविशेषतः ॥ ८ ॥

संधान के लक्षण और गुण ॥

अधिक कन्दमूल और फलों करके युक्त संधान कियेहुए द्रव पदार्थको आसुत कहते हैं आसुत रुचिकारी पाचक वातनाशक और हलका होताहै ॥ ८ ॥

अथ मद्यस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

मद्यन्तुसीधुमैरेयमिराचमदिरासुरा। कादम्बरीवारुणीचहालापिबल्लभा ॥ पेयंच

दकंलोकेतन्मद्यमभिधीयते । यथारिष्टंसुरासीधुरासवाद्यमनेकधा ॥ मद्यंसर्वंभवेदुष्णं पित्तकृद्वातनाशनम् । भेदनंशीघ्रपाकञ्चरूक्षंकफहरंपरम् ॥ अम्लञ्चदीपनंरुच्यंपाचनंचाशुकरिच । तीक्ष्णंसूक्ष्मञ्चविशदंव्यवायिचविकाशिच ॥ ९ ॥

मद्य के नाम लक्षण और गुण ॥

मद्य सीधु मैरेय मिरा मदिरा सुरा कादम्बरी वारुणी हाला और वलवल्लभा यह मद्यके नामहैं लोक में मदकारी पीने के पदार्थों को मद्य कहतेहैं जैसे अरिष्ट सुरासीधु और आसवादिक अनेक प्रकार हैं सर्व प्रकार के मद्य उष्ण पित्तवर्द्धक वातनाशक भेदक शीघ्र पचनेवाले रूखे अत्यन्त कफ नाशक खट्टे दीपन रुचिकारी पाचक शीघ्रताकारी तीक्ष्ण सूक्ष्म विशद व्यवायी और विकाशी होतेहैं ॥ ९ ॥

अथा रिष्टस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

पक्वौषधाम्बुसिद्धंयन्मद्यंतत्स्यादरिष्टकम् । अरिष्टंमद्यमितिलोके ॥ यथाद्राक्षारिष्टम् । दशमूलारिष्टम् ॥ वव्वूलारिष्टमिति अरिष्टंलघुपाकेनसर्वतश्चगुणाधिकम् । अरिष्टस्यगुणाज्ञेयाबीजद्रव्यगुणैःसमाः ॥ १० ॥

अरिष्ट के लक्षण और गुण ॥

औषध और जलको पकाकर जो मद्य बनताहै उसको अरिष्ट कहतेहैं अरिष्ट संपूर्ण मद्योंमें अधिक गुणकारी हलका और जिस वस्तु से बनाहो उसके समान गुणकारी होताहै द्राक्षारिष्ट दशमूलारिष्ट और वव्वूलारिष्ट इत्यादि ॥ १० ॥

अथ सुरापानलक्षणंगुणाश्च ॥

शालिषष्टिकपिष्टादिकृतंमद्यंसुरास्मृता ॥ सुरागुर्वीबलस्तन्यपुष्टिमेदःकफप्रदा ॥ ग्राहिशोथञ्चगुल्मार्शोग्रहणीमूत्रकृच्छ्रनुत् ॥ ११ ॥

सुराके लक्षण और गुण ॥

धान और साठी आदिकी पीठीसे जो मद्य बनताहै उसको सुरा कहतेहैं सुरा भारी बलकारी दुग्ध-वर्द्धक शरीरको पुष्टकरने वाली मेद और कफकारी ग्राही और सूजन गुल्म बवासीर ग्रहणी तथा मूत्रकृच्छ्र नाशक होतीहै ॥ ११ ॥

अथसुराभेदोवारुणीतस्यालक्षणंगुणाश्च ।

पुनर्नवाशिलापिष्टैर्वारुणीविहितास्मृता । संहितैस्तालखर्जूररसैर्यासापिवारुणी॥सुरावद्वारुणीलघ्वीपीनसाध्मानशूलनुत । सुरातोभेदार्थंलघ्वीति ॥ १२ ॥

सुराभेद वारुणी के लक्षण और गुण ॥

सिलपर पीसीहुई पुनर्नवासे जो मद्य बनती है उसको वारुणी कहतेहैं खजूर और तालके रसको संधान करके जो मद्य बनतीहै उसको भी वारुणी कहतेहैं वारुणी सुराके समान गुणकारी अत्यन्त हलकी और पीनस आध्मान तथा शूलनाशक होतीहै ॥ १२ ॥

अथ सीधुद्वयस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

इक्षोःपक्वैःरसैःसिद्धःसीधुःपक्वरसश्चसः । आमैस्तैरेवयःसीधुःसचशीतरसःस्मृतः ॥

वाले सहतको माक्षिक कहतेहैं यह संपूर्ण सहतोंमें श्रेष्ठ हलका और नेत्ररोग कामला बवासीर घाव श्वास खांसी तथा क्षयनाशक होताहै ॥ ३ ॥

अथ भ्रामरस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

किञ्चित्सूक्ष्मैःप्रसिद्धेभ्यःषट्पदेभ्योऽलिभिश्चितम्। निर्मलंस्फटिकाभंयत्तन्मधुभ्रामरंस्मृतम् ॥ भ्रामरंरक्तपित्तघ्नंमूत्रजाड्यकरंगुरु ॥ स्वादुपाकमभिष्यन्दिविशेषात्पिच्छिलंहिमम् ॥ ४ ॥

भ्रामर के लक्षण और गुण ॥

प्रसिद्ध भ्रमरोंसे कुछ छोटे भ्रमरों के द्वारा इकट्ठे किये गये स्फटिकके समान निर्मल सहतको भ्रामर कहतेहैं यह रक्त पित्त नाशक मूत्ररोधक भारी पाकमेंमधुर अभिष्यन्दी अत्यन्त पिच्छिलऔर शीतल होताहै ॥ ४ ॥

अथ क्षौद्रस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

मक्षिकाःकपिलाःसूक्ष्माःक्षुद्राख्यास्तत्कृतंमधु। मुनिभिःक्षौद्रमित्युक्तंतद्वर्णात्कपिलं भवेत्। गुणैर्माक्षिकवत्क्षौद्रंविशेषान्मेहनाशनम् ॥ ५ ॥

क्षौद्रके लक्षण और गुण ॥

कपिल वर्णवाली छोटी मक्खियोंके द्वारा इकट्ठेकियेगये कपिलवर्णकेसहतको क्षौद्रकहतेहैं यहमाक्षिकके समान गुणवाला और विशेष करके प्रमेहनाशक होताहै ॥ ५ ॥

अथ पौत्तिकस्यलक्षणंगुणाः ॥

कृष्णायामशकोपमालघुतराप्रायोमहापीडिका वृक्षानांतरुकोटरान्तरगताःपुष्पासवंकुर्वते। तास्तज्ज्ञैरिहपूतिकानिगदितास्ताभिःकृतंसर्पिषातुल्यंयत्मधुतद्वनेचरजनैःसंकीर्तितंपौतिकम् ॥ पौतिकंमधुरूक्षोष्णंपित्तदाहास्रवातकृत्। विदाहिमेहकृच्छ्रघ्नंग्रन्थ्यादिक्षतशोषिच ॥ ६ ॥

पौत्तिकके लक्षण और गुण ॥

कृष्णवर्ण वाली मच्छरके समानछोटी अत्यन्त पीड़ा देनेवाली और बड़े वृक्षोंके खोखलोंमें सहत को इकट्ठा करनेवाली मधुमक्षिकाओंको पुत्तिका कहते हैं इनके कियेहुये घृततुल्य सहतको पौत्तिक कहतेहैं यह रूखा पित्तवर्द्धक दाहकारी रक्तदूषक वादी प्रमेह तथा मूत्रकृच्छ्रनाशक और ग्रंथिआदि घावोंका नाशक होताहै ॥ ६ ॥

छात्रस्यलक्षणंगुणाः ॥

वरटाःकपिलाःपीताःप्रायोहिमवतोवने। कुर्वन्तिछत्रकाकारंतज्जंछात्रंमधुस्मृतम् ॥ छात्रंकपिलपीतंस्यात्पिच्छिलंशीतलंगुरु ॥ स्वादुपाकंक्रिमिश्चित्ररक्तपित्तप्रमेहजित्। भ्रमतृष्मोहविषहृत्तर्पणञ्चगुणाधिकम् ॥ ७ ॥

छात्रके लक्षण और गुण ॥

कपिल और पीतवर्णकी मधुमक्षिका प्रायःहिमालयके वनोंमें छत्तालगातीहैं इनके सहतको छात्र कहतेहैं यह कपिल तथा पीतवर्ण पिच्छिल शीतल भारी पाकमें मधुर तृप्ति कारक अधिक गुणकारी और कृमि श्वेत कुष्ठ रक्त पित्त प्रमेह भ्रम तृषामोह तथा विषनाशक होताहै ॥ ७ ॥

अथार्घ्यस्य लक्षणंगुणाः ॥

मधूकवृक्षनिर्य्यासंजरत्कार्वाश्रमोद्भवम् । स्रवन्त्यार्घ्यन्तदाख्यातंश्वेतकंमालवेपुनः॥ तीक्ष्णतुण्डास्तुयापीतामक्षिकाः षट्पदोमाःआर्घ्यास्तास्तत्कृतंयत्तदार्घ्यमित्यपरेजगुः॥ आर्घ्यमध्वतिचक्षुष्यंकफपित्तहरंपरम् । कषायंकटुकंपाकेतिक्तञ्चबलपुष्टिकृत् ॥ ८ ॥

आर्घ्यके लक्षण और गुण ॥

जरत्कारु मुनिके आश्रमके महुओंके वृक्षोंके गोंदको आर्घ्य और इसको मालवदेशमें श्वेतकहते हैं कोई आचार्य्य कहते हैं कि तीक्ष्ण चोंचवाली भ्रमरों के समान पीतवर्णवाली मधुमक्षिकाओं को आर्घ्य कहतेहैं और इनके सहतकोभी आर्घ्य कहतेहैं यह अत्यन्त नेत्रोंको हित कपैला पाक में कटु तिक्त बल और पुष्टिकारी तथा कफ पित्त का अत्यन्त नाशक होताहै ॥ ८ ॥

अथौद्दालकस्यलक्षणंगुणाः ॥

प्रायोवल्मीकमध्यस्थाःकपिलाःस्वल्पकीटकाः । कुर्वन्तिकपिलंस्वल्पंतस्यादौद्दालकंमधु ॥ औद्दालकंरुचिकरंस्वर्य्यंकुष्ठविषापहम् । कषायमुष्णमम्लञ्चकटुपाकञ्च पित्तकृत् ॥ ९ ॥

औद्दालक के लक्षण और गुण ॥

कपिल वर्णवाले प्रायःबामीमें रहनेवाले एकप्रकारके छोटे कीड़े जो थोड़ासा कपिल वर्णकासहत इकट्ठा करतेहैं उसको औद्दालक कहतेहैं यह रुचिकारी स्वरवर्द्धक कुष्ठ तथा विषनाशक कपैलाउष्ण खट्टा पाकमें कटु और पित्तवर्द्धक होताहै ॥ ९ ॥

अथ दालस्यलक्षणंगुणाः ॥

संस्रुत्यपातितंपुष्पाद्यत्तुपत्रोपरिस्थितम् । मधुराम्लकषायञ्चतद्दालंमधुकीर्तितम् ॥ दालंमधुलघुप्रोक्तंदीपनीयंकफापहम् । कषायानुरसंरूक्षंरुच्यंछर्दिप्रमेहजित् ॥ अधिकंमधुरंस्निग्धंबृंहणंगुरुभारिकम् । लघुपाकेगुरुभारिकंतुलितम् ॥ १० ॥

दालके लक्षण और गुण ॥

पुष्पोंसे टपककर पत्तोंपर इकठ्ठेहुए सहतको दाल कहतेहैं यह मधुर खट्टा कुछ कपैला पाकमेंलघु दीपन कफनाशक रूखा रुचिकारी छर्दितथा प्रमेह नाशक स्निग्ध धातुवर्द्धक और तोल में भारी होताहै॥१०॥

अथ नवपुराणमधुगुणाः ॥

नवंमधुभवेत्पुष्ट्यैनातिश्लेष्महरंसरम् । पुराणंग्राहकंरूक्षंमेदोघ्नमतिलेखनम् ॥ मधुनःशर्करायाश्चगुडस्यापिविशेषतः । एकसंवत्सरेत्वर्तिपुराणत्वंस्मृतंबुधः ॥ ११ ॥

नये पुराने सहतके गुण ॥

नवीन सहत पुष्टिकारी दस्तावर और अत्यन्त कफ नाशक नहीं होताहै पुरानासहत माही रूखा मेद नाशक और अत्यन्त कृशता कारक होताहै पंडितलोग कहते हैं कि सहत शक्कर और गुड़ एक वर्ष केव्यतीतहोनेपर पुराने होतेहैं ॥ ११ ॥

अथ मधुनःशीतस्यगुणाधिक्यमुष्णतायांनिषेधः ॥

विषपुष्पादपिरसंसविषाभ्रमरादयः । गृहीत्वामधुकुर्वन्तितच्छीतंगुणवन्मधु ॥ विषा

न्वयात्तदुष्णन्तुद्रव्येणोष्णेनवासह। उष्णार्त्तस्योष्णकालेचस्मृतंविषसमंमधु॥ १२॥

शीतल सहतकी गुणमें अधिकता और उष्णता का निषेध॥

विषयुक्त भ्रमरादिक विषयुक्त पुष्पोंसे भी रसको लाकर सहत बनाते हैं इसलिये शीतल सहत गुणकारी होताहै और विषयुक्त होनेके कारण उष्ण अथवा उष्ण वस्तुओं के साथ उष्णता से व्याकुल पुरुषको अथवा उष्णकाल में सहत विषके समान होताहै॥ १२॥

अथ मयनम्

मयनन्तुमधुच्छिष्टंमधुशेषञ्चासिक्थकम्। मध्वाधारोमदनकंमधूषितमपिस्मृतम्॥
मदनंमृदुसुस्निग्धंभूतघ्नंव्रणरोपणम्। भग्नसन्धानकृद्वातकुष्ठवीसर्परक्तजित् १३॥

इतिश्रीभावप्रकाशेमधुवर्गः॥

मोम के नाम और गुण॥

मयन मधुच्छिष्ट मधुशेष सिक्थक मध्वाधार मदनक और मधूषित यह मोमके नाम हैं मोम कोमल स्निग्ध भूतनाशक घावका भरनेवाला टूटेको जोड़नेवाला और वात कुष्ठ वीसर्प तथा रक्त दोषनाशक होताहै॥ १३॥

इतिश्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेमधुवर्गःसमाप्तः॥

अथेक्षुवर्गः तत्रादौइक्षोर्नामानिगुणाश्च॥

इक्षुर्दीर्घच्छदःप्रोक्तस्तथाभूमिरसोऽपिच। गुडमूलोऽसिपत्रश्चतथामधुतृणःस्मृतः॥
इक्षवोरक्तपित्तघ्नाबल्यावृष्याकफप्रदाः। स्वादुपाकरसाःस्निग्धागुरवोमूत्रलाहिमा॥१॥

अथ इक्षु वर्गः। ईखके नाम और गुण॥

इक्षु दीर्घच्छद भूमिरस गुडमूल असिपत्र और मधुतृण यह ईखके नामहैं ईख रक्तपित्तनाशक बलकारी पुष्टिकारक कफवर्द्धक रसतथा पाक में मधुर स्निग्ध भारी मूत्रवर्द्धक और शीतल होतीहै १॥

अथेक्षुभेदाः

पौण्ड्रकोभीरुकश्चापिवंशकःशतपोरकः। कान्तारस्तापसेक्षुश्चकाण्डेक्षुःसूचिपत्रकः॥नेपालोदीर्घपत्रश्चनीलपोरोऽथकोशकः॥इत्येताजातयस्तेषांकथयामिगुणानपि॥२॥

ईख के भेद॥

पौण्ड्रक भीरुक वंशक शतपोरक कान्तार तापसेक्षु कांडेक्षु शुचिपत्रक नेपाल दीर्घपत्र नीलपोर और कोशक यह बारह ईखके भेदहैं अब इनके गुण कहेजायंगे॥ २॥

अथ श्वेतपौण्ड्राभीरुगुणाः॥

वातपित्तप्रशमनोमधुरोरसपाकयोः। सुशीतोबृंहणोबल्यःपौण्ड्रकोभीरुकस्तथा॥३॥

श्वेत पौंड़ा और भौंरीके गुण॥

पौंड़ा और भीरुक यह दोनों वातपित्तनाशक रसतथा पाकमें मधुर अत्यन्त शीतल धातुवर्द्धक और बलकारी होतेहैं॥ ३॥

अथ कारियाकुशिआरगुणाः ॥

कोशकारोगुरुःशीतोरक्तपित्तक्षयापहः ४ (कान्तारेक्षुगुणः) कान्तारेक्षुर्गुरुर्वृष्यः श्लेष्मलोबृंहणःसरः ५ ॥

कोशकारके गुण ॥

कोशकार भारी शीतल और रक्तपित्त तथा क्षय नाशक होते हैं ४ (कान्तार के गुण) कान्तार भारी वीर्यवर्द्धक कफकारी धातुवर्द्धक और दस्तावर होताहै ॥ ५ ॥

वडोंपागुणाः ॥

दीर्घपोरःसुकठिनःसक्षारोवंशकःस्मृतः ६ (शतपोरकगुणाः) शतपर्वाभवेत्किञ्चित्कोशकारगुणान्वितः। विशेषात्किञ्चिदुष्णश्चसक्षारःपवनापहः।

वंशक(वड़ोंखा) ईखके गुण ॥

बड़े पोरवाली कठिन और क्षारयुक्त ईखको वंशककहते हैं ६ (शतपोरककेगुण) शतपोरक कुछ कोशकारकेसमान गुणवाला और विशेषकरके कुछउष्ण क्षारयुक्त तथा वातनाशक होताहै ७ ॥

तापसेक्षुगुणाः ॥

तापसेक्षुर्भवेन्मृद्वीमधुराश्लेष्मकोपनी।तर्पणीरुचिकृच्चापिवृष्याचबलकारिणी॥८॥

तापसेक्षुके गुण ॥

तापसेक्षु कोमल मधुर कफकोकुपित करनेवाली तृप्ति और रुचिकारक वीर्यवर्द्धक तथा बलकारी होतीहै ॥ ८ ॥

काण्डेक्षुगुणाः ॥

एवंगुणैस्तुकाण्डेक्षुःसतुवातप्रकोपणः ९ (अथसूचीतन्त्रनैपालीदीर्घपत्रनीलपोराणांगुणाः) सूचीपत्रोनीलपोरोनैपालोदीर्घपत्रकः। वातलाःकफपित्तघ्नाःसकषायाविदाहिनः ॥ १० ॥

कांडेक्षुके गुण ॥

कांडेक्षु तापसेक्षुके समानगुणवाली और विशेषकरके बातको कुपितकरतीहै९ (शूचीपत्र नैपाली दीर्घपत्र और नीलपोरके गुण) शूचीपत्र नीलपोर नैपाली और दीर्घपत्र नामईखबादी कफपित्तनाशक कषैली और बिदाहीहोतीहै १० ॥

मनोगुप्तागुणाः ॥

मनोगुप्तावातहरीतृष्णामयविनाशिनी। सुशीतामधुरातीवरक्तपित्तप्रणाशिनी ॥ ११ ॥

मनोगुप्ताके गुण ॥

मनोगुप्ता नामईख शीतल मधुर और वायु तृषा तथा रक्त पित्त नाशक होती हैं ॥ ११ ॥

अथबालयुववृद्धेक्षुगुणाः ॥

बालइक्षुःकफंकुर्य्यान्मेदोमेहकरश्चसः। युवातुवातहृत्स्वादुरीषत्तीक्ष्णश्चपित्तनुत्॥ रक्तपित्तहरोवृद्धःक्षतहृद्बलवीर्य्यकृत् ॥ १२ ॥

छोटी बड़ी और पकीहुई ईखके गुण ॥

छोटी ईख कफकारी मेदवर्द्धक तथा प्रमेहकारी मध्यम ईख वातनाशक मधुर कुछ तीक्ष्ण तथा पित्तनाशक और खूबपकी हुई ईख बलवीर्यवर्द्धक घावनाशक तथा रक्त पित्तनाशकहोतीहै॥ १२ ॥

अथाङ्गभेदेनभेदः ॥

मूलेतुमधुरोऽत्यर्थंमध्येऽपिमधुरःस्मृतः । अग्रेग्रन्थिषुविज्ञेयइक्षुःपटुरसोजनैः॥१३॥

अंग के भेदसे गुण के भेद ॥

ईखकी जड़ अत्यन्त मधुर मध्यमें मधुर और अग्रभाग तथा ग्रन्थिमें लवण रस होताहै ॥ १३ ॥

अथदन्तपीडितेक्षुरसस्यगुणाः ॥

दन्तानिष्पीडितस्येक्षोरसःपित्तास्रनाशनः।शर्करासमवीर्य्यःस्यादविदाहीकफप्रदः॥१४॥

दांतोंसे चूसेहुए ईखके गुण ॥

दांतसे चूसाहुआ ईखकारस रक्तपित्तनाशक शकर के समान वीर्यवाला विदाह रहित और कफकारी होताहै ॥ १४ ॥ अथ यन्त्रपीडितेक्षुरसस्यगुणाः ॥

मूलाग्रजन्तुग्रन्थ्यादिपीडनान्मलसङ्करात् । किञ्चित्कालविधृत्याचविकृतिंयाति यान्त्रिकः ॥ तस्माद्विदाहीविष्टम्भीगुरुःस्याद्यान्त्रिकोरसः ॥ १५ ॥

यंत्रसे निकाले हुए ईखके रसके गुण ॥

यन्त्रके द्वारा निकालाहुआ ईखकारस मूल अग्रभाग तथा ग्रन्थि आदिके एक साथ निचोड़ने के द्वारा मलके मिलजाने से और कुछदेर रखने से विकारयुक्त होजाताहै इसीसे यह विदाही विष्टंभी और भारी होताहै ॥ १५ ॥ अथ पर्युषितेक्षुरसस्यगुणाः ॥

रसःपर्युषितोनेष्टश्चाम्लोवातापहोगुरुः । कफपित्तकरःशोषीभेदनश्चातिमूत्रलः॥१६॥

रक्खेहुएरसकेगुण ॥

ईखका बासीरस अहितकारी खट्टा वातनाशक भारी कफ पित्तवर्द्धक शोषकारी भेदक और अत्यन्त मूत्रवर्द्धकहोताहै॥१६॥ अथ पक्वस्येक्षुरसस्यगुणाः॥

पक्वोरसोगुरुःस्निग्धःसुतीक्ष्णःकफवातनुत्।गुल्मानाहप्रशमनःकिञ्चित्पित्तकरःस्मृतः१७

ईखकेपकेहुएरसकेगुण ॥

ईखका पकाहुआ रस भारी स्निग्ध अत्यन्त तीक्ष्ण कफ वातनाशक गुल्म तथा आनाह नाशक और कुछ पित्तकारीहोताहै ॥ १७ ॥

अथेक्षुरसस्यविकाराणांगुणाः ॥

इक्षोर्विकारास्तृड्दाहमूर्च्छापित्तास्रनाशनाः । गुरवोमधुराबल्याःस्निग्धावातहराःस राः ॥ वृष्यामोहहराःशीतावृंहणाविषहारिणः ॥ १८ ॥

ईखकेरसके विकारोंकेगुण ॥

ईखके रसके विकार तृषा दाह मूर्च्छा रक्त पित्तवातमोह तथा विषदोषनाशक भारीमधुरबलकारी स्निग्ध दस्तावर वीर्यवर्द्धक शीतल और धातुवर्द्धक होतेहैं ॥ १८ ॥

अथ फाणित । दरकारावच्छोवाइतिलोके तस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

इक्षोःरसस्तुयःपक्वःकिञ्चिद्गाढोबहुद्रवः। सएवेक्षुविकारेषुस्यात्तःफाणितसंज्ञया ॥ फाणितंगुर्वभिष्यन्दिवृंहणंकफशुक्रकृत् । वातपित्तश्रमान्हन्तिमूत्रबस्तिविशोधनम्॥१९॥

फाणित [रावके] के लक्षण और गुण ॥

ईखका पकाहुआ रस कुछगाढ़ा और बहुत पतला फाणित कहलाता है रावभारी अभिष्यन्दीपुष्ट कफ तथा वीर्यवर्द्धक वातघ्न पित्त तथा श्रमनाशक और मूत्र तथा वस्ति शोधक होती है ॥ १९ ॥

अथ मत्स्यण्डी रावकाकचखण्डरावइतिलोके। तस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

इक्षोरसोय सम्पक्कोघनःकिञ्चिद्द्रवान्वितः । मन्दंयत्स्यन्दतेतस्मात्तन्मत्स्यण्डीनिगद्यते। मत्स्यण्डीभेदिनीबल्यालघ्वीपित्तानिलापहा ॥ मधुराबृंहणीवृष्यारक्तदोषापहा स्मृता ॥ २० ॥ मत्स्यंडी [खड़रफ] के लक्षण और गुण ॥

कुछपतला बहुतगाढ़ा पकाहुआ ईखका रस किसी पात्रमें थोड़ा २ करके टपकायागया मत्स्यंडी कहाता है मत्स्यंडी भेदक बलकारी हलकी वात पित्तनाशक मधुर धातुवर्द्धक पुष्टिकारक और रक्त दोषनाशकहोती है ॥ २० ॥ अथ गुडस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

इक्षोरसोयःसम्पक्कोजायतेलोष्टवद्दृढः। सगुडोगौडदेशेतुमत्स्यण्ड्येवगुडोमतः। गुडो वृष्योगुरुःस्निग्धोवातघ्नोमूत्रशोधनः । नातिपित्तहरोमेदःकफकृमिबलप्रदः ॥ २१ ॥

गुड़के लक्षण और गुण ॥

ईखका पकाहुआ रस ढेलेके समान दृढ़ होजाताहै उसे गुड़ कहते हैं गौड़देशमें मत्स्यंडीकोहीगुड़ कहते हैं गुड़ वीर्यवर्द्धक भारी स्निग्ध वातनाशक मूत्रशोधक कुछ पित्तनाशक और मेद कफ कृमि तथा बलवर्द्धक होताहै ॥ २१ ॥

अथ पुराणगुडस्यगुणाः ॥

गुडोजीर्णोलघुःपथ्योऽनभिष्यन्द्यग्निपुष्टिकृत् । पित्तघ्नोमधुरोवृष्योवातघ्नोऽसृक्प्रसादनः ॥ २२ ॥ पुरानेगुड़केगुण ॥

पुरानागुड़ हलका पथ्य अभिष्यन्दरहित दीपन पुष्टिकारी पित्तघ्न मधुर वीर्यबर्द्धक बातनाशक और रुधिरको उत्तम करनेवाला होताहै ॥ २२ ॥

नवीनगुडस्यगुणाः ॥

गुडोनवःकफश्वासकासकृमिकरोऽग्निकृत् । श्लेष्माणमाशुविनिहन्तिसदार्द्रकेणपित्तंनिहन्तिचतदेवहरीतकीभिः । शुण्ठ्यासमंहरतिवातमशेषमित्थंदोषत्रयक्षयकरायनमोगुडाय ॥ २२ ॥ नवीनगुड़केगुण ॥

नवीन गुड़ कफ स्वास खांसी कृमि और अग्निको बढ़ाताहै अदरकयुक्त गुड़ कफनाशक हड़ सहित गुड़ पित्तनाशक और सोंठ सहित गुड़ संपूर्ण वातरोगनाशक होताहै इसप्रकार त्रिदोषनाशक गुड़ धन्यहै ॥ २३ ॥ अथ खांडगुणाः ॥

खण्डन्तुमधुरंवृष्यंचक्षुष्यंबृंहणंहिमम्॥ वातपित्तहरंस्निग्धंबल्यंवान्तिहरंपरम्। खण्डमतिप्रसिद्धम् ॥ २४ ॥ खांडकेगुण ॥

खांड़ मधुर वीर्यवर्द्धक नेत्रोंको हित धातुवर्द्धक शीतल वात पित्तनाशक स्निग्ध बलकारी और अत्यन्त छर्दिनाशकहोती है ॥ २४ ॥

अथ सिता चीनीइतिलोकेप्रसिद्धा । तस्यलक्षणंगुणाः ॥

खण्डन्तुसिकतारूपंसुश्वेतंशर्करासिता । सितासुमधुरारुच्यावातपित्तास्रदाहहृत् ॥ मूर्च्छाछर्दिज्वरान्हन्तिसुशीताशुक्रकारिणी२५ ॥

चीनीकेलक्षण और गुण ॥

अत्यन्त श्वेत और वालूके समान खांड़को शिता और शर्करा कहतेहैं चीनी अत्यन्त मधुर रुचिकारी अत्यन्त शीतल वीर्यवर्द्धक और वात रक्त पित्त दाह मूर्च्छा छर्दि तथा ज्वरनाशकहोतीहै॥२५॥

अथ गुड़शर्करामिश्रीद्वयोर्गुणाः ॥

भवेत्पुष्पसिताशीतारक्तपित्तहरीलघुःसितोपलासरालघ्वीवातपित्तहरीहिमा ॥२६॥

गुड़शर्करा और मिश्रीकेगुण ॥

पुष्प शिता (गुलशकर) शीतल रक्त पित्तनाशक और हलकी होतीहै मिश्री दस्तावर हलकी वात्त पित्तनाशक और शीतलहोती है ॥ २६ ॥

मधु खण्डगुणाः ॥

मधुजाशर्करारूक्षाकफपित्तहरीगुरुः ॥ छर्द्यतीसारतृड्दाहरक्तहृत्तुवराहिमा ॥ २७ ॥

सहतकीशक्करकेगुण ॥

सहतकी शक्कर रूखी कफ पित्तनाशक भारी कषेली शीतल और छर्दि अतीसार तृषा दाह तथा रक्त दोप नाशकहोतीहै ॥ २७ ॥

यथायथैषानैर्मल्यं मधुरत्वंतथातथा ॥ स्नेहलाघवशैत्यादिसरत्वञ्चतथातथा॥ २८ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशेइक्षुवर्गः समाप्तोद्रववर्गः ॥

यह संपूर्ण जैसी२निर्मलहोंगी उतनीही अधिक मधुर स्निग्ध हलकी शीतल और दस्तावरहोंगी२८॥

इतिश्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेइक्षुवर्गोद्रववर्गस्समाप्तः ॥

अथानेकार्थनामवर्गः तत्रद्व्यर्थानिनामानि ॥

यथाश्मन्तकःअम्ललोणिकाकोविदारश्चकठिल्लकः । कारवेल्लोरक्तपुनर्नवाचकुलकः ॥ पटोलःकुपीलुश्चकुचिलाइतिलोकेप्रसिद्धः । कोशातकीमहाकोशातकीराजकोशातकीचदीप्यकः ॥ यवान्यजमोदाचमरुचकःफणिज्झकःपिण्डीतकः । मरुवकःमरुपा इतिलोकेपिण्डीतकः ॥ मयनफरइतिलोकेमधूलिकः । मूर्वाजलयष्टीचरुचकम्सौवर्चलं वीजपूरकञ्च ॥ लोणिकालोणिशाकञ्चाङ्गेरीशाकञ्चवसुकः । क्षारलवणञ्चब्राह्मीकम् कुंकुमंहिंगुचवितुन्नकम्॥धान्यकंतुत्थञ्चस्वादुकण्टकःगोक्षुरोविकङ्कतश्च । अग्निमुखी भल्लातकीलाङ्गलीचअग्निशिखम्कुंकुमंकुसुम्भश्च । अजशृङ्गीमेषशृङ्गीचाप्रियंगुःफलिनीकंगूश्चभृङ्गःभृङ्गराजस्त्वक्च ॥ समङ्गामंजिष्ठालज्जालूश्चअमोघाविडङ्गंपाटलाचमोचाकदली । शाल्मलिश्चकुटन्नटःश्योनाकःकैवर्तीमुस्तञ्चकुनटी ॥ धानिकामनःशिलाच

घोण्टा। पूगोवदरीच। त्रिपुटा। त्रिवृत्सूक्ष्मैलाच। शटी। कर्चूरोगन्धपलाशीच। दन्तशठः। जम्बीरःकपित्थश्च। दन्तशठा। अम्लिकाचांगेरीच। अरुणम्। मञ्जिष्ठाअतिविषाच। कणा। पिप्पलीजीरकञ्च। तालपर्णी। मुशलीमुराच। पीलुपर्णी। मूर्वाविम्बीच। ब्राह्मणी। भार्ङ्गीस्पृक्काच। अपराजिता। विष्णुक्रान्ताशालिपर्णीच। आस्फीता। अपराजितासारिवाच। पारावतपदी। ज्योतिष्मताकाकजङ्घाच। शारदी। सारिवाजलपिप्पलीच। उग्रगन्धा। वचायवानीच। परिव्याधः। कर्णिकारोजलवेतसश्च। अञ्जनम्। स्रोतोऽञ्जनंसौवीरञ्च। अग्निचित्रकोभल्लातश्च। क्रमिघ्नः। विडंगोहरिद्राच। तेजनः। शरोवेणुश्च। तेजनी। तेजवतीमूर्वाच। रोचनः। कम्पिल्यःरोचनाच। रोचना। गोरोचना। राजादनम्। क्षीरिकाप्रियालश्च। शकुलादनी। कटुकाजलपिप्पलीच। गोलोमी। श्वेतदूर्वावचा। पद्मा। पद्मचारिणी भार्ङ्गीच। श्यामा। सारिवाप्रियंगुश्च। धान्यम्। धान्याकंशाल्यादिच। सहवीर्य्या। नीलदूर्वामहाशतावरीच। सेव्यम्। उशीरंलामज्जकञ्च। उदुम्बरः। जन्तुफलंताम्रञ्च। ऐन्द्री। इन्द्रवारुणीइन्द्राणीच। कटम्भरा। कटुकाश्योनाकञ्च। क्षारः। यवक्षारःस्वर्जिकाच। गण्डीरः। शाकविशेषेगण्डीर्नातिलोकेगण्डारीमञ्जिष्ठाच। गन्धारी। दुरालभा। गन्धपलाशीच। चित्रा। इन्द्रवारुणीवृहद्दन्तीच। तुण्डिकेरी। कार्पासीविम्बीच। धारा। गुडूचीक्षीरकाकोलीच। वालपत्रः। खदिरोयवासश्च। वारि। वालकमुदकञ्च। अङ्गारवल्ली। भार्गीमुञ्जाच। अमृणालम्। लामज्जकमुशीरञ्च। कुण्डली। गुडूचीकोविदारश्च। गन्धफली। प्रियंगुश्चम्पककलिकाच। दीर्घमूलः। यवासःशालिपर्णीच। पिच्छिलाशाल्मलीशिंशिपाच। पुष्पफलः। कपित्थःकूष्माण्डश्च। पोटगलः। नलःकाशश्च। यवफलः। कुटजोवंशश्च। देवी। मूर्वास्पृकाचविश्वा। शुण्ठ्यतिविषाच। शीताशिवम्। सैन्धवंभिश्रेयाच। कर्कशः। कांपिल्यःकासमर्दश्च। चर्मकषा। शातला मांसरोहिणीच। नान्दिवृक्षः। अश्वत्थभेदोगोमुखपत्रशाखः वेलियापीपर इतिलोके। तुणिश्च। पयःक्षीरमुदकश्च। रुहा। दूर्वामांसरोहिणीच। सिंही। वृहतीवासाच॥ १॥

अथअनेकार्थनामवर्गः॥ दोअर्थवाचीनाम॥

अश्मन्तक (लोनियासाग और कचनार) कठिल्लक (करेला और लाल गदापूरना) कुलक (पर्वल और कुचला) कोशातकी (दोनोंतुरई) दीप्यक (अजवाइन अजमोद) मरुवक (मर्सामैन फल) मधूलिक (मरोरफली मुलहटी) रुचक (कालानिमक बिजोरानींबू) लोणिका (लोनियां अोचू काकासाग) वसुक (लालआक औरखारीनिमक) वाह्लीक (केशर और हींग) वितुन्नक (धनियांऔर तूतिया) स्वादुकंटक (गोखरू और शमि) अग्निमुखी (भिलावां और करिहारी) अग्निशिख (केशर और कुसुम) अजशृंगी (काकड़ासिंगी और मेढ़ासिंगी) प्रियंगु (मालकंगनी और काकुन) भृंग (भंगरा और दालचीनी) समंगा (मजीठ और छुईमुई) अमोघा (वायविडंग और पाटला) मोचा (केला

और सेमर] कुटन्नट [सोनापाठा और जलमोथा] कुनटी धनियां और मैनसिल]गोंटा [सुपारी और वेर]त्रिपुटा [निशोत और छोटीइलायची]शटी [कपूरऔर कपूर कचरी] दन्तशठ [जंबीरी नींबू और कैथा]दन्तशटा [इमलीऔर चूका] अरुण [मजीठ और अतीस] कणा [पीपल औरजीरा] तालपर्णी [मुसलीऔर मुरामांसी]पलिपर्णी [मरोडफली और कुंदरू] ब्राह्मणी [भारंगीऔर स्पृक्का नामएकप्रकारकी बूटी]अपराजिता [विष्णुक्रान्ता और शालपर्णी] आस्फोता [विष्णुक्रान्ता और सारिवा] पारावतपदी [मालकंगनी औरकाकजवा] शीरदी [अनन्तमूल और जल पीपल] उग्रगन्धा [वच और अजवाइन] परिव्याध [अमलतासऔरवेतस] अंजन [श्वेतऔर कालासुरमा] अग्नि [चीता और भिलावा] कृमिघ्न [वायविडंग औरहलदी] तेजन [सर और वांस] तेजनी[मालकंगनी और मरोर फली] रोचन [कपीला और गोरोचन] रोचना [गोरोचनऔर हल्दी]राजादन [खिन्नी और चिरोंजी] शकुलादनी [कुटकी, और जलपीपल] गोलोमी [श्वेतदूब औरवच] पद्मा [पद्मचारिणी और भारंगी] श्यामा [अनन्तमूल और मालकाँगनी] धान्य [धनियां और अन्न] सहचरिया [नीलीदूब और वडी सतावर] सेव्य [खस और पीलीखस] उदुम्बर [गूलर और तांबा] ऐन्द्री] इन्द्रायन और वडीदन्ती] कटंभरा [कुटकी और सोनापाठा] क्षार [जवाखार और सज्जी]गंडीर [गांडर और मजीठ] गन्धारी [जवासा और गन्धपलासी] चित्रा [इन्द्रायण और वडीदन्ती] तुंडकेरी [कपास और कुंदरू] धारा [गिलोय और क्षीरकाकोली] वालपत [कत्था और जवासा] वारि [सुगन्धवाला और जल] अंगारवल्ली [भारंगी और मूंग] अमृणाल [खस और पीलीखस] कुंडली [गिलोय और कचनार] गन्धफली [मालकंगनी और चंपेकीकली] दीर्घमूल [जवासा और शालिपर्णी] पिच्छिला [सेमर और सीसम] पुष्पफल [कैथा और कुम्हड़ा] पोटगल (नलऔर कास] यवफल [कुरैया और वांस] देवी [मरोरफली और स्पृक्का] विश्वा [सोंठ औरअतीस]शितशिव [सेंधानोन और सौंफ] कर्कश [कबीला और कसोंदी] चर्मकशा [सातला और मांसरोहिणी] नंदिवृक्ष [वेलिया पीपल औरतुन] पय [दूध औरजल] रुहा [दूबऔर मांसरोहिणी] सिंही [कटेली औरवासा] ॥ १ ॥

अथ त्र्यर्थानिनामानि ॥

क्रमुकः । पूगस्तूदः पट्टिकालोध्रश्च । क्षुरकः । कोकिलाक्षोगोक्षुरस्तिलकनाम पुष्पविशेषश्च । प्रियक. । प्रियंगुकदम्बोऽसनश्च । पृथ्वीका । कालाजाजीस्थूहदेलाहिंगुपत्रीच । भूतीकम् । भूनिम्बकत्तृणभूस्तृणश्च । सोमवल्कः । कह्ललःश्वेतखदिरोघृतपूर्णकरञ्जश्च । सौगन्धिकंकह्लारकत्तृणगन्धकश्च । भृङ्गः । भृङ्गराजस्त्वग्भ्रमरश्च । अरिष्टः। निम्बोरसोनमद्यश्च । मर्कटीकापिकच्छुरपामार्गःकरञ्जीच। अम्बष्ठ ।पाठाचांगरीमाचिका च । कृष्णा । पिप्पलीकालाजाजीनीलीच । क्षीरिणी । दुग्धिकाक्षीरकाकोलीश्वेतसारिवाच । मधुपर्णी । गुडूचीगम्भारीनीलीच । मण्डूकपर्णःस्योनाकःस्त्रियांतुमञ्जिष्ठा । ब्रह्ममाण्डूकीच । श्रीपर्णी । गम्भारीगणिकारिकाकट्फलश्च । अमृता । गुडूची । हरीतकीधात्रीच । अनन्ता । दुरालभानीलदूर्वालाङ्गलीच । ऋष्यप्रोक्ता । अतिबलामहाशतावरीकपिकच्छुश्च । कृष्णवृन्ता । पाटलीगम्भारीमाषपर्णीच । जीवन्ती । गुडूचीशाकवि

शेषोत्र्यन्दाच। लता। सारिवाप्रियंगुज्योतिष्मतीच। समुद्रान्ता। दुरालभाकार्पासीस्पृ
क्काच। हैमवती। हरीतकीश्वेतवचापीतदुग्धःसेहुएडःयस्यमूलञ्चोकइतिप्रसिद्धम्। अ
व्यथा हरीतकी। महाश्रावणीपद्मचारिणीच। षड्ग्रन्था। वचगन्धपलाशीकरञ्जीश्च।
वरदा। सुवर्चलाहुरहुरइतिलोकेअश्वगन्धावाराहींगेंठीतिलोके। इक्षुगन्धाः। काशःको
किलाक्षीगोक्षुरक्षीरविदारीच। कालस्कन्धः। तमालस्तिन्दुकंकालखदिरश्च। महौषधम्
शुण्ठीरसोनोविषञ्च। मधु। क्षौद्रंपुष्परसोमद्यञ्च। कपीतनः। आम्रातकःशिरीषोग
र्द्दभाण्डश्च। मदनः। पिण्डीतकोधत्तूरसिक्थकञ्च। शतपर्वा। वंशोदूर्वावचा।सहस्र
वेधीअम्लवेतसोमृगमदाहिंगुच। ताम्रपुष्पी। धातकीपाटलाश्यामात्रिवृच्च।सदापुष्पाः।
श्वेतार्कोरक्तार्कःकुन्दश्च।सुरभी।मल्लकीमुरेलवालुकम्।लक्ष्मीः। ऋद्धिर्वृद्धिःशमीच। का
लानुसार्य्यम्। कालीयकंतगरंशै॰॰यञ्च। चाम्पेयः। चम्पकोनागकेसरःपद्मकेसरश्च।
नादेयी। गणिकारिकाजलजम्बूर्जलवेतसीच। पाक्यम्। विडंसौवर्चलंयवक्षारश्च। वि
शल्या। लाङ्गलीगुडूचीलघुदन्तीच। इन्द्रद्रुः। ककुभोदेवदारुःकुटजश्च। काश्मीरम्।
कुंकुमंपुष्करमूलंकाश्मीरीगम्भारीच। गुन्द्रः।पटेरकःशरश्च। गुन्द्रा। प्रियंगुभद्रमुस्तक
श्च। चुक्रम्। चुक्रमम्लवेतसंवृक्षाम्लश्चपारिभद्राः। निम्बःपारिजातोदेवदारुश्च।
पीतदारु। हरिद्रादेवदारुसरलश्च। वीरः। ककुभोवीरणंकाकोलीचवीरतरुः। ककुभो
वीरणंशरश्च। मयूरः। अपामार्गोऽजमोदातुत्थश्च। रक्तसारः। रक्तचन्दनंपतंगंखदिर
श्च। वदरा। सुवर्चलाअश्वगन्धावाराहीच। वसिरः। रक्तापामार्गोगजपिप्पलीसमुद्रल
वणञ्च। सौवीरम्। अञ्जनभेदोवदरसन्धानभेदश्च। वञ्जुलःअशोकोवेतसस्तिनिश
श्च। शिला। मनःशिलाजतुगैरिकञ्च।सोमवल्ली। वाकुची गुडूचीब्राह्मीच। अक्षीवः।
शोभाञ्जनोमहानिम्बःसमुद्रलवणञ्च। कारवी। कालाजाजीशताह्वाजमोदाच। धामा
र्गवः। रक्तापामार्गोराजकोशातकीमहाकोशातकीच। दुःस्पर्शः। यवासःकपिकच्छूःक
ण्टकारीच। पलाशः। किंशुकोगन्धपलाशीपत्रञ्च। कालमेषी। मञ्जिष्ठावाकुचीश्यामा
त्रिवृच्च।पलंकषा।गुग्गुलुगोक्षुरोलाक्षाच।मधुरसा।द्राक्षामूर्वागम्भारीच।रसा।रास्नाशल्ल
कीपाठाच। श्रेयसी। हरीतकीरास्नागजपिप्पलीच। लोहम्। अयःकांस्यमगरुच। स
हा। मुद्गपर्णी। वलाभेदःककहीइतिलोके। शतपत्री। सेवतीगुलाबइतिलोके। रास्नाना
कुलीनीलपुष्पः। सिन्दुवारः॥ २॥

तीनअर्थवाले शब्द ॥

क्रमुक [सुपारी ब्रह्मदारु और पठानीलोध] क्षुरक [तालमखाना गोखुरू और तिलकनामपुष्प विशेष] प्रियक [मालकंगनी कदम्ब औरआसन] पृथ्वीका [कालाजीरा बड़ी इलायची और हिंगुपत्री] भूतीक [चिरायता कतृण और भूतृण] सोमवल्क [कायफल श्वेतकत्था और घृतपूर्णकरंजुआ] सौगन्धिक [कह्लार कतृण और गन्धक] भृंग [भंगरा दालचीनी और भ्रमर] अरिष्ट [नीम

लहसन औरमद्य] मर्कटी [किवांच लटजीरा और,करंजुआ] अम्बष्ठा [पाढ़ल चूका और माचिका] कृष्णा [पीपल कालाजीरा और नील] क्षीरणी [दूवी क्षीरकाकोली और सफेदअनन्तमूल] मधुपर्णी [गिलोयगंभारी औरनील]मंडूकपर्ण[सोनापाठाखोलिंगमेंमंजीठ औरब्राह्मणी]श्रीपर्णी[गंभारी गणकारिका और कायफल] अमृता [गिलोय हड़ और आमला] अनन्ता [जवासा नीलीदूव और लांगली] ऋष्यप्रोक्ता [अतिवला वडीसतावर और किवांच] कृष्णवृन्ता[पाटली गंभारीऔर मापपर्णी] जीवन्ती [गिलोय शाकविशेष औरवन्दा] लता [अनन्तमूल प्रियंगुऔर मालकांगिनी] समुद्रान्ता [जवासा कपास और स्पृका] हेमवती [हड़ सफेदवच और पीलेदूधकासेंहुड़ा] अव्यथा [हड़ मवडी मुंडी और पद्मचारिणी] षट्ग्रन्था [वच कपूरकचरी औरकरंजुआ] वरदा [हुरहुर असगन्ध औरगेंठी] इक्षुगन्धा [तालमखाना गोखुरू और क्षीरविदारी] कालस्कंध [तमाल तेंदू और कालाकत्था] महौषधि [सोंठ लहसन और विष] मधु [सहत पुष्परस और मद्य] कपीतन [आमरासिरस औरगर्दभाण्ड] मदन [मैनफल धतूरा और मोम] शतपर्व्वा [वांस दूव और वच] सहस्रवेधी [अमलवेत कस्तूरी और हींग] ताम्रपुष्पी [पाढ़ल धाई और कालानिशोत] सदापुष्प [सफेदमदार कालामदार औरकुन्द] सुरभी [सनई मरोरफली और एलवालू] लक्ष्मी [ऋद्धि वृद्धि औरसमी] कालानुसार्य्यम् [कालीयक तगर और शैलेय] चांपेय [चम्पा नागकेशर और पद्मकेशर] नादेयी [गणकारिकाजलजामुन और जलवेत] पाक्य [बिड़ कालानोन और जवाखार विशल्या [करिहारी गिलोय और छोटीदन्ती] इन्द्रद्रु [अर्जुन देवदारु और कुरैया] काश्मीर [केशर पुष्करमूल औरगंभारी] गुन्द्र [पटेरकतर्प] गुन्द्रा [प्रियंगु और भद्रमोथा] चुक्र [चूका अ. मलवेत और वृक्षाम्ल] पारिभद्र [नींव पारिजात और देवदारु] पीतदारु [हल्दी देवदारु और सरल [वीर [अर्जुनवीरन और काकोली] वीरतरु [अर्जुन वीरन और सर] मयूर [लटजीरा अजमोद और तूतिया] रक्तसार [रक्तचंदन पतंग और कत्था] वदरा [सौवर्चल असगंध और वाराहीकन्द] वसिर [लाललटजीरा गजपीपल औरसमुद्रकानोन] सौवीर [अंजनभेद वेर और संधानभेद] वञ्जुल [अशोकवेत और तिनिश] शिला [मैनसिल सिलाजीतऔरगेरू] सोमवल्ली [वकुची गिलोय और ब्राह्मी] अक्षीव [सहजन महानिंव और समुद्रलवण] कारवी [काला जीरा सौंफ और अजमोद] धामार्गव [लाललटजीरा और दोनोंतोरई] दुष्पर्श [जवासा किवांच और भटकटैया] पलाश [टेसू कपूरकचरी और पत्ता] कालेमेषी.[मजीठ वाकुची और कालानिशोत] पलंकशा [गूगल गोखुरू और लाख] मधुरसा [दाख मरोरफली और गंभारी] रसा [रास्ना सल्लकी और पाठा] श्रेयसी [हड़ रास्ना और गजपीपल] लोह [लोहा कांसा और अगर] सहा [मुद्गपर्णी ककही और सेवती गुलाब] सुवहा[रास्ना नाकुली औरनीलेपुष्पकासिंदुवार]२ ॥

अथ वह्वर्थानिनामानि ॥

अक्षशब्दःस्मृतोऽष्टासुसौवर्चलविभीतके । कर्षपद्माक्षशकटेन्द्रियपाशके । ककाख्यः काकमाचीचकाकोलीकाकणान्तिका ॥ काकजंघाकाकनासाकाकोदुम्बरिकापिच । सप्तस्वर्थेषुकथितःकाकशब्दोविचक्षणैः॥सर्पद्विरदमेषेषुसीसकेनागकेसरे। नागवल्ल्यानागदन्त्यानागशब्दःप्रयुज्यते ॥ मांसेद्रवेचेक्षुरसेपारदेमधुरादिषु । वालरोगेविषेनीरेरसोनम सुवर्त्तते ॥ ३ ॥ इतिश्रीभावप्रकाशेहरीतक्यादिद्रव्याणांनामानिगुणाश्च ॥

अनेकार्थक नाम ॥

भक्ष (कालानिमक बहेड़ाकर्ष पद्माक्ष रुद्राक्ष शकट इन्द्री और पाशा) काक (काकमाची काकोली घोंघची काकजंघा काकनासा काकोदुम्बरिका और काकाक्ष)नाग (सर्प हाथी मेढ़ा सीसा नागकेसर नागवल्ली और नागदन्ती) रस (मांसरस ईखकारसपारा मधुरादिकछः रस बालरोगविष और जल ३ ॥

इतिश्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेहरीतकीआदिद्रव्योंके नामऔरगुण समाप्त ॥

अथमानपरिभाषा ॥

नमानेनविनायुक्तिर्द्रव्याणांजायतेक्वचित् । अतःप्रयोगकार्यार्थमानमत्रोच्यतेमया ॥ चरकस्यमतंवैद्यैराद्यैर्यस्मान्मतंततः । विहायससर्वनामानि मागधंमानमुच्यते ॥ १ ॥

अथमानपरिभाषा ॥

तोलके विना किसी द्रव्यकी युक्तिकहीं ठीक नहीं होती इस कारण से व्यवहार की सुगमताके लिये यहांपर मानका वर्णन करते हैं प्राचीन वैद्यलोगों ने चरक काहीमत मानाहै इसलिये सम्पूर्ण मानोंको छोड़कर मागध मान कहतेहैं ॥ १ ॥

त्रसरेणुर्बुधैःप्रोक्तस्त्रिंशतापरमाणुभिः । त्रसरेणुस्तुपर्य्यायेनाम्नावंशीनिगद्यते ॥ जालान्तरगतैःसूर्य्यकरैर्वंशीविलोक्यते । षड्वंशीभिर्मरीचिःस्यात्ताभिःषड्भिश्चराजिका ॥ तिसृभीराजिकाभिश्चःसर्षपःप्रोच्यतेबुधैः । यवोष्टसर्षपैःप्रोक्तोगुञ्जास्यात्तच्चतुष्टयम् ॥ षड्भिस्तुरक्तिकाभिस्स्यान्माषकोहेमधानकौ । माषैश्चतुर्भिःशाणःस्याद्धरणःसनिगद्यते ॥ टङ्कःसएवकथितस्तद्द्वयंकोलउच्यते । क्षुद्रकोवटकश्चैवद्रङ्क्षणःसनिगद्यते ॥ कोलद्वयन्तुकर्षःस्यात्सप्रोक्तःपाणिमानिका । अक्षःपिचुःपाणितलंकिञ्चित्पाणिश्चतिन्दुकम् ॥ विडालपदकंचैवतथाषोड़शिकामता । करमध्योहंसपदंसुवर्णकवलग्रहः ॥ उदुम्बरञ्चपर्य्यायैःकर्षमेवनिगद्यते । स्यात्कर्षाभ्यामर्द्धपलंशुक्तिरष्टमिकातथा ॥ शुक्तिभ्याञ्चपलंज्ञेयंमुष्टिराम्रञ्चतुर्थिका । प्रकुञ्चःषोड़शीबिल्वंपलमेवात्रकीर्त्यते ॥ पलाभ्यांप्रसृतिर्ज्ञेयाप्रसृतञ्चनिगद्यते । प्रसृतिभ्यामञ्जलिःस्यात्कुडवोर्द्धशरावकः ॥ अष्टमानञ्चसज्ञेयःकुडवाभ्याञ्चमानिका । शरावोऽष्टपलंतद्वज्ज्ञेयमत्रविचक्षणैः ॥ शरावाभ्यांभवेत्प्रस्थःचतुःप्रस्थैस्तथाढकः । भाजनंकांस्यपात्रंचचतुःषष्टिपलश्चसः ॥ चतुर्भिराढकैर्द्रोणःकलशोनल्वणोऽर्मणः ।उन्मानश्चघटोराशिर्द्रोणपर्यायसंज्ञितः ॥ द्रोणाभ्यांसूर्प्यकुम्भौचचतुःषष्टिशरावकः । सूर्प्याभ्याञ्चभवेद्द्रोणीवाहोगोणीचसास्मृता ॥ द्रोणीचतुष्टयंखारीकथितासूक्ष्मबुद्धिभिः । चतुस्सहस्रपलिकायन्नवत्यधिकाचसा ॥ पलानांद्विसहस्रञ्चभारएकप्रकीर्त्तितः। तुलापलशतंज्ञेसंसर्वत्रैवैषनिश्चय ॥ माषटङ्काक्षबिल्वानिकुडवप्रस्थमाढकम् । राशिर्गोणीखारिकेतियथोत्तरचतुर्गुणम् ॥ मागधपरिभाषायाषड्रत्तिकोमाषश्चतुर्विंशतिरत्तिकष्टङ्कः षण्णवतिरत्तिकःकर्षः । अयञ्चरकसम्मतः । सुश्रुतमते । पञ्चरत्तिकोमाषोविंशतिरत्ति

कष्टङ्कोऽशीतिरत्तिकःकर्षः। अयमेवकालिंगपरिभाषायामपि। यतस्तत्राष्टरत्तिकोमाषो द्वात्रिंशद्रत्तिकष्टङ्कसार्द्धटङ्कद्वयमितःकर्षः॥ २॥

तीस प्रमाणु का एक त्रसरेणु अथवा वंशी कहतेहैं झरोखे आदि मेंसे आईहुई सूर्य्यकी किरणों से जोसूक्ष्म पदार्थ दिखाई देते हैं उनको त्रसरेणु और वंशी कहते हैं छः वंशीकी एकमरीचि छःमरीचि की राई तीन राई की सरसों आठ सरसोंकाजव चारजवकी रत्ती छःरत्ती का मासा इसको हेम और धामक भी कहते हैं चार मासे का शाण इसको धरण और टंकभी कहते हैं दोशाणकाकोल इसको क्षुद्र वटक और द्रंक्षण कहते हैं दोकोल का कर्ष इसको पाणिमानिक अक्ष पिचु पाणि तल किंचित् पाणि तिंदुक बिडाल पदक पोडशिका कर मध्या हंसपद सुवर्ण कवलग्रह और उदुम्बर कहते हैं दो कर्षका अर्द्धपल इसको शुक्ति और अष्टमिका कहते हैं दोशुक्ति काएकपल इसको मुष्टि मात्र चतुर्थिका प्रकुंच पोडशी और बिल्व कहते हैं दोपलकी प्रसृति इसको प्रसृत भी कहते हैं दोप्रसृति की अंजली इसको कुडव अर्द्ध शराव और अष्टमान दोकुडवकी एकमानिका इसको शराव और अष्टपद दोशराव काप्रस्थ चारप्रस्थ का आढक इसको भाजन कांस्यपात्र और चतुष्पष्टि पल कहतेहैं चार आढकका द्रोण इसको कलश नल्वण अर्मन उन्मान घटऔर राशिकहतेहैं दो द्रोणका सूर्प इसकोकुंभभी कहतेहैं यह चौसठ शरवाका होता है दोसूर्पकी द्रोणी इसको वाह और गोणी कहते हैं चार द्रोणीकी एक खारी यह चार हजार छयानवे पलकी होती है दोहजार पलका एकभार होता है एकसौ पलकी एकतुलाहोती है मासाटंक अक्ष बिल्व कुड़व प्रस्थ आढकराशि गोणी और खारी यहसब क्रमसे उत्तरोत्तर चौगुने हैं जैसे मासे से चौगुना टंक इत्यादि मागध परि भाषा में छः रत्ती का मासा चौबीस रत्तीका टंक और छयानवे रत्तीका कर्ष यह चरक का मत है सुश्रुतके मत में ५ रत्ती का मासा २० रत्तीकाटंक और अस्सी ८० रत्ती का कर्ष और इसी प्रकार से कलिङ्ग परिभाषा में भी आठरत्ती का मासा बत्तीस रत्ती काटंक और ढाई टंकका कर्ष होताहै॥ २॥

गुञ्जादिमानमारभ्ययावत्स्यात्कुडवस्थितिः। द्रवार्द्रशुष्कद्रव्याणांतावन्मानंसमंमतम्॥ प्रस्थादिमानमारभ्यद्विगुणंतद्द्रवार्द्रयोः। मानन्तथातुलायास्तुद्विगुणंनक्वचित्स्मृतम्॥ मृद्वृक्षवेणुलोहादेर्भाण्डंयच्चतुरंगुलम्। विस्तीर्णञ्चतथोच्चञ्चतन्मानंकुडवंवदेत्॥ इतिमागधमानम्॥ ३॥

रत्तीमादिसे लेकर कुड़व पर्य्यन्त द्रवआर्द्र और शुष्क द्रव्योंकामान तुल्यहोताहै प्रस्थसे आदिले कर संपूर्ण द्रव और आर्द्र पदार्थोंका प्रमाण दूनाग्रहण करना चाहिये और तुलाका मान द्विगुण कभी नहींहोता मृत्तिका वृक्ष वांस और लोहा आदिके पात्र जो चार अंगुल लंबे चारअंगुलचौड़े और चार ४ अंगुल गहरे होतेहैं उनमें जितना पदार्थ माताहै उसे कुड़व कहतेहैं इतिमागधमानं (३)॥

कालिंगमानम्॥

यतोमन्दाग्नयोह्रस्वाहीनसत्वानराःकलौ। अतस्तुमात्रातद्योग्याप्रोच्यतेसुज्ञसम्मता॥ यवोद्वादशभिर्गौरसर्षपैःप्रोच्यतेबुधैः। यवद्वयेनगुञ्जास्यात्त्रिगुञ्जोवल्लउच्यते माषोगुञ्जाभिरष्टाभिःसप्तभिर्वाभवेत्क्वचित्। चतुर्भिर्माषकैःशाणःसनिष्कष्टङ्कएवच॥ गद्याणोमाषकैःषड्भिःकर्षःस्याद्दशमाषिकः॥ चतुःकर्षैःपलंप्रोक्तंदशशाणमितंबुधैः॥ चतुः

पलेश्चकुडव प्रस्थाद्या पूर्ववन्मताः । स्थितिर्नास्त्येवमात्रायाःकालमग्निंवयोबलम् ॥ प्रकृतिदोषदेशौचदृष्ट्वामात्रांप्रकल्पयेत् । नाल्पंहन्त्यौषधंव्याधियथाम्भोऽल्पंमहानलम् ॥ अतिमात्रचदोषायशस्योसस्थेवह्रूदकम् । इतिमानपरिभाषा ॥ ४ ॥

अथकलिंगमानम् ॥

कलियुगमें मंदाग्नि ह्रस्व और सत्व से हीन पुरुष होतेहैं इससे उनके योग्य मात्राकही जाती है बारहसफेद सरसोंका जव दो जवोंकी एकरत्ती तीन रत्तीका वल्ल आठ अथवा सातरत्ती का मासा चारमासेका शाण इसको निष्क और टंककहतेहैं छः मासेका गद्याण दशमासेका कर्ष चारकर्षका अथवा दशशाणका पल चारपलका कुडव और प्रस्थादिक पूर्वके समान होतेहैं मात्राका कोई नियम नहीं है काल अग्नि बल अवस्था प्रकृति दोष और देश इनको विचारकर मात्राकी कल्पना करनी चाहिये जैसे थोडासा जल बहुतसी आग्निको नहीं बुझासक्ताहै इसी प्रकार बडे रोगको थोडी औषधि नहीं नाशकरतीहै और जैसे बहुत जल खेतमें अन्नकी हानिकरताहै इसीप्रकार बहुत औषधिभी दोषों को करती है इससे योग्यही मात्रादेनी चाहिये इतिमानपरिभाषा ॥ ४ ॥

अथ भेषजानांविधानानि ॥

स्वरसश्चतथाकल्कः क्काथश्चहिमफाण्टकौ । ज्ञेया कषायाःपञ्चैतेलघवः स्युर्यथोत्तरम् ॥ ५ ॥

औषधोंकीविधि ॥

स्वरस कल्क क्काथ हिम और फांट यह पांचप्रकार के कषाय उत्तरोत्तर हलके होतेहैं ॥ ५ ॥

तत्रादौस्वरसविधिः ॥

आहतात्तत्क्षणाकृष्टाद्द्रव्यात्क्षुण्णात्समुद्भवेत् । वस्त्रान्निष्पीडितोयश्चस्वरसोरसउच्यते ॥ आहतात्शीताग्निकीटादिभिरनुपहतात् । क्षुण्णात् । सपिष्टात्कुडवञ्चूर्णितंद्रव्यंक्षिप्तञ्चद्विगुणेजले । अहोरात्रंस्थितंतस्माद्भवेद्वारमउत्तम ॥ चूर्णितञ्चूर्णीकृत । आदायशुष्कद्रव्यंवास्वरसानामसम्भवे । जलेऽष्टगुणितेसाध्यंपादशिष्टंचगृह्यते ॥ स्वरसस्यगुरुत्वाच्चपलमर्द्धंप्रयोजयेत् । निशोषितञ्चाग्निसिद्धंपलमात्ररसंपिबेत् ॥ निशोषितनिशायामुषितसितामधुगुडक्षारान्जीरकलवणतथा । घृततैलञ्चचूर्णादीन्कोलमात्रान्रसेक्षिपेत् ॥ कोलंटङ्कद्वयंच ॥ ६ ॥

स्वरसकीविधि ॥

पाला अग्नि तथा कीट आदिकोंसे नहीं बिगडीहुई औषधको लाकर उसी क्षण कूटकरजोवस्त्रके द्वारा अर्क निकाला जाताहै उसको स्वरस कहते हैं अथवा १२ तोले चारमासे औषधको कूटकर दूने जलमें एकदिन रात भिगोवे फिर छानले यह उत्तम रस होताहै अथवा सूखी औषधोंका जबरस न निकलसके तब अठगुने पानीमेंपकावे और चौथाई रहजानेपर छानले स्वरसके भारीहोनेसे १ तोला ८ मासे पीना चाहिये जलमें भिगोयके और आगमें औटाकर निकलाहुआ रस तीनतोला चारमासे पीना चाहिये चीनी सहत गुड़ क्षार जीरा नोन तेल और चूर्णादिक आठमासे स्वरसमें छोड़नेचाहिये ६।

तण्डुलजलविधिः ॥

कण्डितंतण्डुलपलञ्जलेऽष्टगुणितेक्षिपेत् । भावयित्वाजलंग्राह्यंदेयंसर्वत्रकर्मसु ॥ भावयित्वाकोमलीकृत्य ॥ ७ ॥ चावलके पानीकी विधि ॥

कूटेहुये चारतोले चावल अठगुने जलमें भिगोवे और भीजजाने पर जल छानले इसकोसब कार्यों में व्यवहार करे ॥ ७ ॥ अथ हिमविधिः ॥

क्षुण्णंद्रव्यंपलंसम्यक्षड्भिर्नीरपलैःप्लुतम्।निशोषितंहिमःसस्यात्तथाशीतकषायकः॥ तस्यमानंमतंपानेपलद्वयमितंवुधैः । क्षुण्णंचूर्णीकृतं ॥ ८ ॥

इनकी विधि ॥

चारतोले औषध को खूबकूट कर छः गुने जल में भिगोवे और रात्रिभरभीज जाने पर छानले इस को हिम और शीतकषाय कहते हैं यहआठ तोले पीना चाहिये ॥ ८ ॥

अथ मंथविधिः ॥

जलेचतुःपलेशीतेक्षुण्णंद्रव्यपलंक्षिपेत् । मृत्पात्रेमन्थयेत्सम्यक्तस्माच्चद्विपलंपिवेत् ॥ क्षुण्णंचूर्णीकृतम्मन्थयेत्मथ्नीयात् ॥ ९ ॥

मन्थकी विधि ॥

कूटी हुई चारतोले औषध को सोलह तोले ठंढे जलमें भिगोकर मृत्तिका के पात्र में अच्छेप्रकार से मथले इसको मंथ कहते हैं यह आठतोले पीना चाहिये ॥ ९ ॥

अथफाण्टविधिः ॥

क्षुण्णेद्रव्यपलेसम्यक्जलमुष्णंविनिःक्षिपेत्।मृत्पात्रेकुडवोन्मानंततस्तुस्रावयेत्पटात् ॥ सस्याच्चूर्णद्रवःफाण्टस्तन्मानंद्विपलोन्मितम् । क्षौद्रंसितागुडादींस्तुकर्षमात्रान्विनिःक्षिपेत् ॥ क्षुण्णेचूर्णीकृतेसचूर्णद्रवःफाण्ट.स्यादित्यन्वयः ॥ १० ॥

फांटकी विधि ॥

कूटी हुई चारतोले औषध को सोलह तोले गरम जल डालकर मट्टी के पात्रमें रक्खे फिर कपड़े में छानले इसको फांट कहते हैं इसकी मात्रा आठतोले की है इसमें सहत चीनी और गुड़ आदिक तोले भरमिलावे ॥ १० ॥ अथ कल्कविधिः ॥

द्रव्यमार्द्रंशिलापिष्टंशुष्कंवासजलंभवेत्। प्रक्षिप्यगालयेद्वस्त्रेतन्मानंकर्षसंमितम् ॥ कल्केमधुघृतंतैलंदेयंद्विगुणमात्रया । सितागुडसमन्दद्याद्द्रवोदेयश्चतुर्गुणः ॥ ११ ॥

कल्ककी विधि ॥

गीली औषधको अथवा सूखी औषधको जलसे शिलपर पीसकर छानले इसकी मात्रा एकतोले की है इसमें सहत घी और तेल दूना छोड़ना चाहिये चीनी तथा गुड़ समभाग और अन्य गीली वस्तु चौगुनी छोड़नी चाहिये ॥ ११ ॥

अथ चूर्णविधिः ॥

अत्यन्तशुष्कंयद्द्रव्यंसुपिष्टंवस्त्रगालितम्।तस्याच्चूर्णरजःक्षोदस्तन्मात्राकर्षसंमिता॥

चूर्णेगुडःसमोदेयःशर्कराद्विगुणामता। चूर्णेषुभर्जितंहिंगुदेयंनोत्क्लेदकृद्भवेत्॥ लिहेच्चूर्णं द्रवैःसर्वैर्घृताद्यैर्द्विगुणोन्मितैः। पिबेच्चतुर्गुणैरेवंचूर्णमालोडितंद्रवैः॥ १२॥

चूर्णकीविधि॥

अत्यन्त सूखीहुई औषधको खूबपीसकर कपड़े से छानले इसको चूर्णरज और क्षोदकहते हैं इसकीमात्रा तोलेभरकीहै चूर्ण में गुड़ बराबरऔर चीनी दूनीडालनी चाहिये चूर्ण में हींगमिलानीहोय तो भूनके मिलावे जो चूर्ण को चाटे तो घृतआदिक गीलेपदार्थ दूने मिलाने चाहिये और जो घोल करपिये तो चौगुनांडाले॥ १२॥

चूर्णावलेहगुटिकाकल्कानामनुपानकम्। पित्तवातकफातङ्कत्रिद्व्येकपलमाहरेत्॥ यथा तैलंजलेप्राप्तंक्षणेनैवविसर्पति। अनुपानबलादंगेतथासर्पतिभेषजम्॥ १३॥

चूर्ण अवलेह गुटिका और कल्कका अनुपान पित्त वात और कफकेरोग में क्रमसे बारहतोले आठ तोले और चारतोले होने चाहिये जैसेजल में तेलछोड़ने से बहुतजल्दी फैलजाताहै उसी प्रकार औषधभी अनुपानके बलसे शरीर मे फैलतीहै॥ १३॥

भावनाविधिः॥

द्रवेणयावतासम्यक्चूर्णंसर्वंप्लुतम्भवेत्। भावनायाःप्रमाणंतुचूर्णेप्रोक्तंभिषग्वरैः॥१४॥

भावनाकी विधि॥

श्रेष्ठवैद्योंने कहाहै कि चूर्ण जितनी गीलीवस्तुके छोड़नेसे डूबजावे उतनीहीछोड़नीचाहिये॥१४॥

अथ पुटपाकविधिः॥

पुटपाकस्यकल्कस्यस्वरसोगृह्यतेयतः। अतस्तुपुटपाकानांयुक्तिरत्रोच्यतेमया॥ पुटपाकस्यपाकोऽयंलेपस्यांगारवर्णता। लेपंचद्व्यंगुलंस्थूलंकुर्याद्व्यंगुलमात्रकम्॥ काश्मरीवटजम्ब्वादिपत्रैर्वेष्टनमुत्तमम्। पलमात्रोरसोग्राह्यःकर्षमात्रंमधुक्षिपेत्॥ कल्कचूर्णद्रवाद्यास्तुदेयाःकोलमिताबुधैः॥ १५॥

पुटपाककी विधि॥

पुटपाककरके कल्ककास्वरस लियाजाताहै इसलिये यहां पुटपाककी विधि कहतेहैं गंभारी बरगद और जामनआदि के पत्तोंसे लपेटकर दोअंगुल अथवा एकअंगुलका मट्टीका लेपकरे फिरजबतक लेप रक्तवर्णनहोय तबतक अग्निमें पकावे इसका चारतोलेरसलेनाचाहिये सहततोलेभर कल्कचूर्ण तथाअन्यकोई गीलीवस्तु आठमासे छोडनीचाहिये॥ १५॥

उष्णोदकविधिः॥

अष्टमेनांशशेषेणचतुर्थेनार्द्धकेनवा॥अथवाक्वथनेनैवसिद्धमुष्णोदकंभवेत्॥श्लेष्मामवातमेदोघ्नंवस्तिशोधनदीपनम्। कासश्वासज्वरान् हन्तिपीतमुष्णोदकंनिशि॥ उष्णोदकंमुद्रघटाइतिलोके॥ १६॥ गरमजलकी विधि॥

जल अग्निमें औटानेसे अष्टमांश चतुर्थांश या अर्द्धांश रहजानेपर लेनाचाहिये अथवा केवलउबाल हीले गरमजल रात्रिमें पीने से कफऔरमेद आमवात खांसी श्वास तथा ज्वरका नाशक मूत्राशय काशोधक और दीपनहोताहै॥ १६॥

क्षीरपाकविधिः ॥

क्षीरमष्टगुणंद्रव्यात्क्षीरान्नीरंचतुर्गुणम् । क्षीरावशेषंतत्पीतंशूलमामोद्भवंजयेत् ॥ १७ ॥

क्षीरपाकविधि ॥

जिस वस्तुके साथदूध औटानाहो उसका अठगुना दूध दूधका चौगुना जल मिलाके औटावे जब केवल दूध बाकीरहै तब उसको पिवै इससे आमका शूल नष्ट होताहै ॥ १७ ॥

क्वाथविधिः ॥

पानीयंषोडशगुणंक्षुण्णेद्रव्यपलेक्षिपेत् । मृत्पात्रेक्वाथयेद्ग्राह्यमष्टमांशावशेषितम् ॥ कर्षादौतुपलंयावद्दद्यात्षोडशकंजलम् । ततस्तुकुडवंयावत्तोयमष्टगुणंभवेत् ॥ चतुर्गुणमतश्चोर्द्ध्वंयावत्प्रस्थादिकंजलम्।षोडशिकंषोडशगुणम्॥ तज्जलंपाययेद्धीमान्कोष्णंमृद्वग्निसाधितम् । शृतःक्वाथःकषायश्चनिर्यूहःसनिगद्यते ॥ १८ ॥

क्वाथकीविधि ॥

चार तोले कुटीहुई औषध सोलह गुने जलके साथ मृत्तिका के पात्रमें औटावे जब आठभागका एक भाग रहजाय तब छानले एक तोले से चारतोलेतक,औषधमें सोलहगुना जल चारतोले से सोलह तोलेतक अठगुना जल और सोलह तोलेसे चौंसठ तोलेतक चौगुना जल क्वाथबनाने में छोड़नाचाहिये बुद्धिमान् पुरुष मन्द आग्निमें पकेहुए जलको कुछ उष्णपिलवावे इसको श्रित क्वाथ कषाय और निर्यूहकहतेहैं ॥ १८ ॥ क्वाथपानमात्रामाह ॥

मात्रोत्तमापलेतत्स्यात्त्रिभिरक्षैस्तुमध्यमा । जघन्याचपलार्द्धेनस्नेहक्वाथौषधेषुच॥ तन्त्रान्तरे ।क्वाथ्यद्रव्यपलेवारिद्विरष्टगुणमिष्यते।चतुर्भागावशिष्टन्तुपेयंपलचतुष्टयम्॥ दीप्तानलंमहाकायंपाययेदञ्जलिंजलम् । अन्येत्वर्द्धंपरित्यज्य प्रसितिंतुचिकित्सिकाः॥ क्वाथत्यागमनिच्छन्तस्त्वष्टभागावशेषितम् । पारम्पर्योपदेशेन वृद्धवैद्याःपलद्वयम् ॥ अष्टभागावशेषितस्य चतुर्भागावशिष्टापेक्षयागुरुत्वात् दीप्तानलंमहाकायंपलद्वयंपाययेन्मध्यमाग्निमल्पकायंपलमात्रंपाययेत् मात्रोत्तमापलेनस्यादित्यादिवचनात् ॥ क्वाथे क्षिपेत्सितामंशैश्चतुर्थाष्टमषोडशैः । वातपित्तकफातङ्केविपरीतंमधुस्मृतम् ॥ जीरकंगुग्गुलंक्षारं लवणंचशिलाजतु । हिंगुत्रिकटुकंचैव क्वथिशाणोन्मितंक्षिपेत् ॥ क्षीरंघृतंगुडंतैलंमूत्रंचान्यद्द्रवंतथा । कल्कंचूर्णादिकंक्वाथे निक्षिपेत्कर्षसंमितम् ॥ तत्रोपविश्यविश्रान्तः प्रसन्नवदनेक्षणः । औषधंहेमरजतं मृद्भाजनपरिस्थितम् ॥ पिबेत्प्रसन्नहृदयः पीत्वापात्रंमधोमुखम् । विधायाचम्यसलिलं ताम्बूलाद्युपयोजयेत् ॥ १९ ॥

क्वाथपीनेकीमात्रा ॥

चारतोलेकी उत्तम तीन तोलेकी मध्यम और दो तोलेकी निकृष्टमात्रा होती है स्नेह क्वाथ और औषधोंकी यह मात्राहै तंत्रान्तरमें कहागया है कि चारतोले क्वाथकी औषधमें सोलह गुनापानी डालकर गरम करने में जब चौथाई बाक़ीरहै तबउस सोलह तोले जलकोपिये दीप्ताग्नि और बड़े शरीर वाले पुरुषको सोलह तोलेक्वाथ पिलावे और जो मन्दाग्नि तथा छोटे शरीर वालेहों उनके

आधात्यागकर आधापिलाना चाहिये और जो क्वाथको त्याग न करना चाहते हों वह अष्टमांशवाकी रहे तवपियें यहवृद्ध वैद्योंका संमतहै चतुर्थान्श क्वाथकी अपेक्षा अष्टमांश वचाहुआ क्वाथभारीहोताहै इसलिये दीप्ताग्नि और वडे शरीर वाले पुरुषोंको आठतोले और मध्यमाग्नि तथा छोटे शरीर वाले पुरुषोंको चारतोले क्वाथ पिलाना चाहिये क्योंकि उत्तममात्रा चार तोलेकी होती है इत्यादिक वचन कहेगये हैं क्वाथमें जो चीनी छोड़नीहोय तो वातपित्त,तथा कफके रोगोंके क्रमसे चतुर्थान्श अष्टमांश और षोडशांश छोड़दे परन्तु सहतकी मात्रा इस्से विपरीत है जैसे वात रोगमें षोड़शांश इत्यादि जीरा गूगल जवाखार सैंधव शिलाजीत हींग सोंठ पीपल और मिरच यहसब वस्तु मिलानीहोंय तो चारमासे मिलावे दूध घृत गुड़ तेल मूत्र अथवा अन्यकोई गीलापदार्थ और कल्क तथा चूर्ण आदिक क्वाथमें एक तोलेभर मिलावे अच्छे प्रकारसे वैठकर प्रसन्नमुख नेत्रवाला पुरुष सुवर्ण चांदी अथवा मृत्तिकाके पात्रमें रक्खीहुई औषधको खुशीमनसे पीकर पात्रको औंधादे फिरजलसे मुखको धोकर तांबूल आदिको खाय ॥ १९ ॥

अवलेहविधिः ॥

क्वाथादेर्यत्पुनःपाकाद्घनत्वंसारसक्रिया । सोऽवलेहश्चलेहश्चतन्मात्रास्यात्पलोन्मिता ॥ सिताचतुर्गुणाकार्य्या चूर्णाच्चद्विगुणोगुडः । द्रवंचतुर्गुणंदद्यादितिसर्वत्रनिश्चयः ॥ सुपक्वेतन्तुमत्वंस्यादवलेहेऽप्सुमज्जनम् ॥ स्थिरत्वपीडितेमुद्रांगन्धवर्णरसोद्भवः ॥ दुग्धमिक्षुरसंयूषंपञ्चमूलकषायजम् । वासाक्वाथंयथायोग्यमनुपानंप्रशस्यते ॥ २० ॥

अवलेहचटनी की विधि ॥

ऊपरके कहेहुए क्वाथ आदिकों को फिर औटाकर गाढ़ाहोने से अवलेह अथवा लेहकहा जाताहै इसकी मात्राचार तोलेकीहै अवलेह वनानेमें औषधके चूर्णसे चौगुनी शक्कर दूनागुड़ और चौगुनेही सब द्रवपदार्थ छोड़े पकेहुए अवलेहकी यह परीक्षाहै कि जलमें छोडनेसे डूवजाय तारसेछूटे दवाने से स्थिर वनारहै सुगन्धआवे और वर्णतथा रसठीकहो अवलेह खानेके पीछेदूध ईषकारस पंचमूलका काढ़ा अथवा वासाका काढ़ा इनमेंसे किसी को उचित समझकर पिये ॥ २० ॥

वटकाविधिः ॥

वटकाअथकथ्यन्तेतन्नामगुटिकावटी । मोदकोवटिकापिण्डीगुडोवर्तिस्तथोच्यते ॥ लेहवत्साध्यतेवह्नौगुडोवाशर्कराथवा । गुग्गुलुर्वाक्षिपेत्तत्रचूर्णतन्निर्मितावटी ॥ तत्रवह्निसिद्धेगुड़ादौ । कुर्याद्वह्निसिद्धेनक्वचिद्गुग्गुलुनावटी द्रवेणमधुनावापिगुटिकांकारयेद्बुधः ॥ सिताचतुर्गुणादेयावटीषुद्विगुणोगुडः । चूर्णाच्चूर्णसमःकार्यो गुग्गुलुः मधुतत्समम् ॥ (तत्समम् । चूर्णसमम्) द्रवंतुद्विगुणदेयंमोदकेषुभिषग्वरैः ॥ द्रवंद्रवरूपद्रव्यं कर्षप्रमाणंतन्मात्रावलंदृष्ट्वाप्रयुज्यते । वलामितिकालादेरप्युपलक्षणम्॥ २१ ॥

गोलीकीविधि ॥

वटक गुटिका वटी मोदक वटिका पिंडी गुड़ और वर्त्ति यह गोली के नाम हैं गुड़ चीनी अथवा गूगलको अवलेह के समान अग्निमें पकाकर औषधियोंके चूर्ण मिलानेसे गोली वनतीहै कहीं२

अग्निमें विना पकाये गूगल अथवा सहत आदिक गीली वस्तुसे गोली वनाई जातीहै मोदक वनाने में जो चीनी छोडनीहोवे तो चौगुनी गुड़दूना और चूर्ण गूगल तथा सहत औषधियों के चूर्णके बराबर डालने चाहियें और जो गीली वस्तु डालनीहोतो दूनी छोड़े इसकी मात्रा एकतोलेकीहै अथवा वल देश तथा काल अवस्था आदि विचारकर मात्रादेनी चाहिये ॥ २१ ॥

घृततैलयोर्विधिः ॥

कल्काच्चतुर्गुणीकृत्यघृतंवातैलमेवच । चतुर्गुणद्रवेसाध्यंतस्यमात्रापलोन्मिता ॥ मात्रापलोन्मिता । भक्षणार्थ ॥ निक्षिप्यक्काथयेत्तोयंकाथ्यद्रव्याच्चतुर्गुणम् । पादशिष्टंगृहीत्वातुस्नेहस्तेनैवसाधयेत् ॥ चतुर्गुणंमृदुद्रव्येकठिनेऽष्टगुणंजलम् । मृद्वादिक्काथ्यसंघातेदद्यादष्टगुणंपयः॥ अत्यन्तकठिनेद्रव्येनीरंषोडशिकंमतम्। मृदुद्रव्ये आर्द्रद्रव्येगुडूच्यादौ ॥ कठिनेशुष्कद्रव्येशुंठ्यादौ अत्यन्तकठिने । चिरशुष्केदेवदार्व्यादौ ॥ कर्षादितः पलंयावत्क्षिपेत्षोडशिकंजलम् । तदूर्ध्वंकुडवंयावत् भवेदष्टगुणंपयः॥ प्रस्थादितःक्षिपेन्नीरंखारीयावच्चतुर्गुणम् । पूर्वंचतुर्गुणंमृदुद्रव्यइत्यादिनाक्काथ्यद्रव्यंतन्मृदुत्वादिगुणभेदेनजलगतपरिमाणमुक्तम् ॥ इदानींकेचिदाचार्याःकर्षादितःपलंयावदित्यादिवचनैःक्काथ्यद्रव्यगतपरिमाणभेदेनजलगतपरिमाणंमन्यन्ते। अम्बुक्काथरसैर्यत्रपृथक्स्नेहस्यसाधनम् ॥ कल्कस्यांशन्तत्रदद्याच्चतुर्थंषष्ठमष्टमम्।अस्यायमर्थः॥अम्बुनास्नेहसाधनेकल्कंस्नेहस्यचतुर्थमंशंदद्यात्।क्काथनस्नेहसाधनेस्नेहस्यषष्ठभागंकल्कंदद्यात्॥स्वरसैःस्नेहसाधनेस्नेहस्याष्टमभागंकल्कंदद्यात्।पुनर्विशेषमाह॥दुग्धेदधिरसेतक्रेकल्कोदेयोऽष्टमांशिकः । कल्काच्चसम्यक्पाकार्थंतोयमत्रचतुर्गुणम्॥ कल्कात् । कल्कद्रव्यात् ॥ चतुर्गुणंतोयंपेषणार्थम्। द्रवाणियत्रस्नेहेपुपञ्चादीनिभवन्तिहि॥तत्रस्नेहसमान्याहुर्यथापूर्वंचतुर्गुणम् ॥ अस्यायमर्थः । यत्रस्नेहेपुआदीनिपञ्चद्रव्याणिदुग्धदधिस्वरसतक्रकल्कोपयुक्तजलानिप्रत्येकंस्नेहसमानित्रीद्रव्यानियथापूर्वम् । दुग्धदधिस्वरसतक्रंसमुदितंस्नेहाच्चतुर्गुणंभवति । द्रव्येणकेवलेनैवस्नेहपाकोभवेद्यदि ॥ तत्राम्बुपिष्टःकल्कःस्याज्जलञ्चात्रचतुर्गुणम् ॥ अत्रकल्कद्रव्ये । क्काथेनकेवलेनैवपाकोयत्राऽदितःक्वचित् क्काथ्यद्रव्यस्यकल्कोऽपितत्रस्नेहेप्रयुज्यते ॥ कल्कहीनस्तुयःस्नेहःससाध्यःकेवलेद्रवे । केवलेद्रवे ॥ क्काथेतरस्मिन्स्वरसादिरूपे । पुष्पकल्कस्तुयःस्नेहस्तत्रतोयंचतुर्गुणम् ॥ स्नेहात्स्नेहाष्टमांशश्चपुष्पकल्कःप्रयुज्यते ॥ वर्त्तिवत्स्नेहकल्कःस्याद्यदांगुल्याविवर्त्तितः । शब्दहीनोऽग्निनिक्षिप्तःस्नेहःसिद्धोभवेत्तदा ॥ यदाफेनोद्गमेतैलेफेनशान्तिश्चसर्पिपि । वर्णगन्धरसोत्पत्तिःस्नेहःसिद्धोभवेत्तदा ॥ स्नेहपाकस्त्रिधाप्रोक्तोमृदुर्मध्यखरस्तथा । ईपत्सरसकल्कस्तुस्नेहपाकोमृदुर्भवेत । मध्यपाकस्यसिद्धिश्चकल्केनीरसकोमले ईपत्कठिनकल्कश्चस्नेहपाकोभवेत्खरः॥तदूर्ध्वंदग्धपाकःस्याद्दाहकृन्निःप्रयोजनः।आमपकश्चनिर्वीर्योवह्निमान्द्यकरोगुरुः ॥ तस्यार्थंस्यान्मृदुःपाकोमध्यमःसर्वकर्मसु ।

संधानकी विधि ॥

पतले पदार्थमें बहुतदिनतक औषधको भिगोनेसे जो आसव और अरिष्ट आदिक भेद बनतेहैं उनको संधान कहतेहैं ॥ २३ ॥ तत्रआसवारिष्टयोर्लक्षणमाह ॥

यदपक्वौषधाम्बुभ्यां सिद्धंमद्यंसआसवः । अरिष्टःक्वाथसाध्यःस्यात्तयोर्मानंपलोन्मितम् ॥ (सामान्यतोऽरिष्टविधिः) अनुक्तमानारिष्टेषुद्रवाद्द्रोणगुडात्तुलम् । क्षौद्रं क्षिपेद्गुडादर्द्धं प्रक्षेपंदशमांशिकम् ॥ दशमांशिकम् । गुडस्यैवदशमांशं ॥ २४ ॥

आसव और अरिष्टके लक्षण ॥

कच्ची औषधि और जलके द्वारा जो मद्य बनतीहै उसको आसव कहतेहैं और क्वाथकरके जो मद्य बनतीहै उसको अरिष्ट कहतेहैं इनदोनोंकी मात्रा चारतोलेकीहै जहां अरिष्ट बनानेका प्रमाण न लिखाहो वहां जल एक द्रोण गुड़ ४०० तोले सहत २०० तोले और औषधि गुड़का दशांश डालना चाहिये ॥ २४ ॥ द्विविधंसीधुमाह ॥

ज्ञेयःशीतरसः सीधुरपक्वमधुरद्रवैः (मधुरद्रवैरिक्षुरसादिभिः) सिद्धःपक्वरसःसीधुः सम्पक्वमधुरद्रवैः । परिपक्वान्नसन्धानात् समुत्पन्नांसुरांजगुः ॥ सुरामण्डः प्रसन्नास्यात्ततःकादम्बरीघना । तदधोजगलोज्ञेयोमेदकोजगलाद्घनः ॥ २५ ॥

दोप्रकारके सीधुके लक्षण ॥

विना पकाये हुए मधुर रसयुक्त ईखके रस आदि पतले पदार्थोंसे जो मद्य बनताहै उसको शीत रस सीधु कहतेहैं और मधुर रसयुक्त पतले पदार्थोंको पकाय करके जो मद्य बनता है उसको पक्व रस सीधु कहतेहैं अन्नको पकाकर उसके संधानकरनेसे जो मद्य बनताहै उसको सुरा कहतेहैं मद्यके ऊपर के निर्मल अंशको प्रसन्ना उससे कुछ घनेको कादंबरी कादंबरी के नीचेके अंशको जगल, और जगलसेभी घने अंशको मेदक कहतेहैं ॥ २५ ॥

वक्कसोहृतसारःस्यात्सुराबीजंचकिण्वकम् । सुराबीजम् ॥ यवगोधूमतण्डुलादि यत्तालखर्जूररसैःसन्धितासाहिवारुणी ॥ कन्दमूलफलादीनिसस्नेहलवणानिच । विनष्टंसन्धितोयस्तुतच्छुक्तमभिधीयते ॥ अभिपूयन्ते। द्रवेणाल्पसन्धीयन्ते ॥ विनष्टमम्लतांयातंमद्यंवामधुरद्रवः। विनष्टंसन्धितोयस्तुतच्छुक्तमभिधीयते ॥गुडाम्बुजासतैलेनकन्दशाकफलैस्तथा । सन्धितश्चाम्लतांयातंगुडचुक्रंप्रचक्षते ॥ एवमेवहिशुक्तस्यान्मृद्वीकासम्भवंतथा । तुषाम्बुसन्धितंज्ञेयमामैर्विदलितैर्यवैः ॥ यवैस्तुनिस्तुषैःपक्वैःसौवीरंसाधितंभवेत् । आरनालन्तुगोधूमैरामैःस्यान्निस्तुषीकृतैः ॥ पक्वैर्वासंहितैस्तत्तुसौवीरसदृशंगुणैः । कल्माषधान्यमण्डादिसंहितंकांजिकंविदुः ॥ शिण्डाकिसहिताज्ञेयामूलकैःसर्षपादिभिः ॥ २६ ॥

. सारांश रहित मद्यको वक्कस जो गेहूं और चावल आदि जिन वस्तुओंसे मद्य बनतीहै उनको किण्व और ताड़केरस तथा खजूरके रसको संधान करके जो मद्य बनतीहै उसको वारुणी कहते हैं जिस पतले पदार्थमें तेल तथा लवणयुक्त कन्दमूल फल आदिक भिगोयकरके संधान कियेजाते

हैं उसको शुक्त कहतेहैं मद्य अथवा मधुर रसयुक्त पतलीनस्तुको संधान करके स्वाभाविक रसनष्ट होजानेपर उसको शुक्त कहतेहैं और गुड़का शर्वत जल तेल कन्द शाक तथा फल इनको संधान करके खट्टे होजानेपर गुड़ शुक्त कहतेहैं इसीप्रकार मुनक्काको भी संधान करके शुक्त वनताहै कच्चे भूसी सहित जवोंको पीसकर संधान करनेसे तुषाम्बु वनताहै भूसी रहित जवोंको पकाकर संधान कियेहुएको सौवीर कहतेहैं कच्चे अथवा पके भूसीरहित गेहुँओंको संधान करके जो वस्तु वनतीहै उस को आरनाल कहतेहैं इसमें सौवीरके समान गुण होतेहैं नाजके मंडके साथ कुछ भीजेहुए गेहूं आदि को संधान करके कांजी वनतीहै मूली और सरसों आदिको संधानकरके संढाकी वनतीहै ॥ २६ ॥

अथ धातूनांशोधनमारणविधिः ॥

तत्रमारणाययोग्यंसुवर्णमाह । दाहेरक्तंसितच्छेदेनिकषेकुङ्कुमप्रभम् ॥ तारशुल्वो ज्झितंस्निग्धंकोमलंगुरुहेमसत् । सत् ॥ उत्तमं । तच्छेदेकठिनंरूक्षंविवर्णंसमलंदलम् । दाहेछेदेसितंश्वेतंकषेस्फुटलघुस्त्यजेत् ॥ २७ ॥

धातुओं के शोधन और मारण की विधि मारने के योग्य सुवर्ण ॥

जो सुवर्ण तपाने में लाल काटने में श्वेत और कसने में केसर के समान होता है और जो रूपे अथवा तांवे के मेल से रहित स्निग्ध कोमल और भारी होताहै वह श्रेष्ठ है जो सुवर्ण श्वेत कठोर रूखा वर्ण रहित मलयुक्त दलसहित और तपाने में काटने में श्वेत चोट लगाने से फटनेवाला हलका तथा कस में श्वेत हो वह निकृष्ट है॥ २७ ॥

शोधन विधिः ॥

पत्तलीकृतपत्राणिहेम्नावह्नौप्रतापयेत् । निषिञ्चेत्तप्ततप्तानितैलेतक्रेचकाञ्जिके ॥ गो मूत्रेचकुलत्थानांकषायेतुत्रिधात्रिधा । एवंहेम्नःपरेषाञ्चधातूनांशोधनंभवेत् ॥ २८ ॥

सुवर्ण के शोधने की विधि ॥

सुवर्ण के वहुत पतले पत्रों को आग में तपाकर तिलों का तेल मट्ठा कांजी गोमूत्र और कुलथी का काढ़ा इन सव में तीन तीन वार वुझावे इस रीति से सुवर्ण शुद्ध होता है और अन्य धातु भी शुद्ध होती हैं ॥ २८ ॥ अथाशुद्धस्यसुवर्णस्यदोषमाह ॥

वलंसवीर्यंहरतेनराणांरोगव्रजंपोषयतीहकाये । असौख्यकार्येचसदासुवर्णंशुद्धमेतन्म रणञ्चकुर्यात् ॥ २९ ॥ अशुद्ध सुवर्ण के दोष ॥

विना शोधा हुआ सुवर्ण वलवीर्य का नाश रोगोंकी उत्पत्ति कार्य्य में अनुत्साह और मृत्यु को भी करता है ॥ २९ ॥ स्वर्णस्यमारणविधिः ॥

स्वर्णस्यद्विगुणंसूतंमम्लेनसहमर्दयेत् । तद्गोलकसमंगन्धंनिदध्यादधरोत्तरम् ॥ स्वर्णस्यअतितनूकृतपत्रस्यगन्धम् ।गन्धकचूर्णम्गोलकञ्चततोरुध्वशरावदृढसंपुटे॥ त्रिंशद्वनोपलैर्दद्यात्पुटान्येवचतुर्दश । निरुत्थंजायतेभस्मगन्धोदेयःपुनःपुनः ॥ रु ध्वासवस्त्रकुट्टितचिक्कणमृत्तिकयावनोपलः।गोइठाइतिलोकेनिरुत्थंयत्पुनर्नजीवति३०॥

सुवर्ण के मारण की विधि ॥

शुद्ध सुवर्ण को दूने पारे के साथ खटाई में घोटे फिर गोला वनाकर उसके ऊपर और नीचे गंधक

का चूरा रक्खे फिर उस गोले को सकोरों के मजवूत सम्पुट में रखकर वस्त्र युक्त कूटी हुई चिकनी मट्टी से वन्द कर दे फिर तीस विनवां के कण्डों से चौदह वार पुट पाक करे इस प्रकार वारम्वार गन्धक देकर पुट देने से सुवर्ण की निरुत्थ (जो फिर न जी सके) भस्म होती है ॥ ३० ॥

अथान्यप्रकारः ॥

काञ्चनेगलितेनाङ्गंषोडशांशेननिःक्षिपेत् । चूर्णयित्वातथाम्लेनघृष्ट्वाकृत्वातुगोलकम् ॥ गोलकेनसमंगन्धंदत्त्वाचैवाधरोत्तरम् । शरावसम्पुटेधृत्वापुटेद्विंशद्वनोपलैः एवं सप्तपुटैर्हेमनिरुत्थंभस्मजायते । अत्रापिपूर्ववद्गन्धः प्रदातव्या ॥ ३१ ॥

दूसरा प्रकार ॥

सुवर्ण को गलाकर उसका सोलहवां हिस्सा सीसा छोड़े फिर चूर्ण करके खटाई में पीस गोला वनावे और गोले के ऊपर नीचे गोले के समान गन्धक लपेटे इस प्रकार वारम्वार गन्धक देकरके वीस वीस विनवां कण्डों से सात पुट देवे इस रीति से सुवर्ण की निरुत्थ भस्म होती है ॥ ३१ ॥

अन्यच्च ॥

काञ्चनाररसैर्घृष्ट्वासमसूतकगन्धयोः । कज्जलींहेमपत्राणि लेपयेत्समयातथा ॥ हेमपत्रसमया । काञ्चनारत्वचःकल्कैर्मूषायुग्मंप्रकल्पयेत् । धृत्वातत्सम्पुटेगोलं मृन्मूषासम्पुटेचतत् ॥ निधायसन्धिरोधञ्चकृत्वासंशोष्यगोलकम् । वह्निंखरतरंकुर्यादेवंदत्त्वापुटत्रयम् ॥ निरुत्थंजायतेभस्मसर्वकर्मसुयोजयेत् । काञ्चनारप्रकारेणलाङ्गलीहन्तिकाञ्चनम् ॥ (लाङ्गलीकरिहारी) ज्वालामुखीतथाहन्यात् तथाहन्तिमनःशिला । शिलासिंदूरयोश्चूर्णंसमयोरर्कदुग्धकैः ॥ सप्तधाभावनान्दद्याच्छोषयेच्चपुनःपुनः । ततस्तुगलितेहेम्निकल्कोऽयंदीयतेसमः ॥ पुनर्धमेदतितरांयथाकल्कोविलीयते । एवंवेलात्रयंदद्यात्कल्कंहेमम्रुतिर्भवेत् ॥ ३२ ॥ तीसरी विधि ॥

सम भाग पारे और गन्धककी कजलीकरे फिर इसको कचनारके रसमें पीसकर समभाग सुवर्ण के पत्रोंपैलपेटै और गोला वनावे फिर कचनारकी छालको पीसकर दो घरिया वनावे उनमें गोलेको रक्खे फिर इन घरियाओंमें वन्दहुये सुवर्णको घरियासमेत मिट्टीके सकोरोंमें रक्खे और कपड़ों करके सुखावे फिर अत्यन्ततीक्ष्ण अग्निमें तीन पुटपाकदेवे इसप्रकारसे सुवर्णकी सत्र कामकेयोग्य निरुत्थ भस्म होजातीहै ऊपर कही हुई कचनार की विधि के अनुसार करिहारी अरनी अथवा मैनसिलसे सुवर्ण की भस्म होतीहै मैनसिल और सिन्दूर कासमभाग चूर्णकरके आकके दूधसे सातवार भावना देदेकर सुखावे फिर सुवर्णको गलाकर उसमें इसीचूर्णको समभाग छोड़े और अत्यन्त तीक्ष्ण अग्नि में ऐसी आंच देवे जिससे कि यह कल्क भस्महोकर लुप्तहो जाय तीनवार इस रीतिके करनेसे सुवर्ण की भस्म ठीक होती हैं ॥ ३२ ॥

एवंमारितस्यसुवर्णस्यगुणाः ॥

सुवर्णंशीतलंवृष्यंबल्यंगुरुरसायनम् । स्वादुतिक्तंचतुवरंपाकेचस्वादुपिच्छिलम् ॥ पवित्रंबृंहणंनेत्र्यंमेधास्मृतिमतिप्रदम् । हृद्यमायुष्करंकान्तिवाग्विशुद्धिस्थिरत्वकृत् ॥

विषद्वयक्षयोन्मादत्रिदोषज्वरशोपजित् । वृष्यमह्लषायकामुकायहितम् ॥ असम्यङ्मारितंस्वर्णंबलंवीर्यंश्चनाशयेत् । करोतिरोगान्मृत्युश्चतद्धन्याद्यत्नतस्ततः ॥ ३३ ॥

सुवर्ण की भस्म के गुण ॥

सुवर्ण शीतल कामी लोगों को हित वलकारी भारी रसायन मधुर तिक्त कपैला पाक में मधुर पिच्छिल पवित्र धातुवर्द्धक नेत्रों को हित मेधाकारी स्मृति तथा बुद्धिदायक हृदय को हित आयुकारी कान्तिवर्द्धक वाणी का शोधक स्थिरताकारी और दोनों प्रकार के विष क्षय उन्माद त्रिदोष ज्वर तथा राजयक्ष्मा नाशक होता है अच्छे प्रकार से नहीं मरा हुआ सोना वल वीर्य्य की हानि रोगोंकी उत्पत्ति और मृत्युकोभी करता है इससे बड़े यत्नपूर्वक सुवर्णको भस्मकरनाचाहिये ॥३३॥

धात्वादिमारणोपयुक्तान्पुटप्रकारानाहरसप्रदीपे ॥

लोहादेरपुनर्भावस्तद्गुणत्वंगुणाढ्यता । सलिलेतरणञ्चापितात्सिद्धिःपुटनाद्भवेत् ॥ गम्भीरोविस्तृतेकुण्डेद्विहस्तेचतुरस्रके । वनोपलसहस्रेणपूरितंपुनरौषधम् ॥ कोष्ठेरुद्धेप्रयत्नेनगोविष्ठोपरिधारयेत् । वनोपलसहस्रार्द्धंकोष्ठिकोपरिनिःक्षिपेत् ॥ वह्निंविनिक्षिपेत्तत्रमहापुटमितिस्मृतम् । कोष्ठंमृणमूषा गोविष्ठागोइटा महापुटम् ॥ ३४ ॥

रसप्रदीप में कहेहुये धातुआदिकों के मारनेके योग्य पुटोंके प्रकार-महापुट ॥

भस्म किये हुये लोहा आदिक का फिर न जीना और जल में डालने से तैरना ठीक भस्महोने का और गुण युक्त होनेका चिह्नहै और यह चिह्न पुटपाकही सेहोतेहैं दीर्घ चौडे और गंभीर दो हाथ के चौकोने कुंड में एकहजार अरने कंडे रक्ख कर मट्टीकी घरिया में रक्खी हुई औषधिको अच्छे प्रकार बन्द करके कंडोंपर रक्खे फिर पांच सौ कंडे उसके ऊपर रक्ख कर अग्नि लगादे यह महापुट कहलाता है ॥ ३४ ॥

सपादहस्तमानेनकुण्डेनिम्नेतथायते । वनोपलसहस्रेणपूर्णोमध्येविधारयेत् ॥ पुटनद्रव्यसंयुक्तांकोष्ठिकांमुद्रितांमुखे । अथार्द्धानिकरण्डानिअर्द्धान्युपरिनिक्षिपेत् । एतद्गजपुटंप्रोक्तंस्यातंसर्वपुटोत्तमम् ॥ हस्तेश्चतुर्विंशत्यंगुलप्रमाणःससपादःतेनत्रिंशदंगुलप्रमाणेनेत्यर्थःअतएवोक्तम् । साधारणनरांगुल्यात्रिंशदंगुलकोगजःइतिगजपुटम् ॥ ३५ ॥

गजपुट का वर्णन ॥

सवाहाथ (तीसअंगुल) लंबे चौडे कुंड में हजार अरने कंडे भरे फिर औषधि युक्त अच्छे प्रकारसे बन्द मट्टीकी घड़िया को उसपररक्खे फिर उसपर पांच सौ कंडे रखकर आगलगादे यह सम्पूर्ण पुटों में श्रेष्ठ गजपुट कहाताहै ऊपर कहेहुये सवाहाथ (तीसअंगुल) से एकगज समझना चाहिये क्योंकि, ऐसाही कहा हुआ है कि मनुष्योंके साधारण तीसअंगुलका एक गजहोताहै ॥ ३५ ॥

अरत्निमात्रेकेकुण्डेपुटंवाराहमुच्यते । वितस्तिमात्रकेखातेकथितंकौक्कुटंपुटम् ॥ अरत्निस्तुकनिष्ठेनमुष्टिनेत्यमरः । निःसृतकनिष्ठयामुष्ट्योपलक्षितोहस्तोऽरत्निरित्यर्थः ॥ षोडशांगुलकेखातेकस्यचित्कौकुटंपुटम् ॥ ३६ ॥

फैली हुई कनिष्ठिका उंगली समेत मुट्ठी युक्त हाथभरके गहरे चौड़े कुंड में पुटदेनेको वाराहपुट

और विलस्त भर के गहरे चौड़े कुंड में पुट देनेको कुक्कुट पुट कहते हैं कोई२ लोग सोलह उंगलके लंबे चौड़े गहरेकुंड में पुट देने को कुक्कुट पुट कहते हैं ॥ ३६ ॥

यत्पुटंदीयतेखातेअष्टसंख्यैर्वनोपलैः । कपोतपुटमेतत्तुकथितंपुटपण्डितैः ॥ गोष्ठान्तर्गोखुरक्षुण्णशुष्कंचूर्णितगोमयम् । गोवरंतत्समाख्यातंवरिष्ठंरससाधने ॥ बृहद्भाण्डस्थितैर्यत्रगोवरैर्दीयतेपुटम् ॥ तद्गोवरपुटंप्रोक्तंभिषग्भिःसूतभस्मनि । बृहद्भाण्डेतुषैःपूर्णेमध्येमूषांविधारयेत् । क्षिप्त्वाग्निंमुद्रयेत्भाण्डंतद्भाण्डंपुटमुच्यते ॥ ३७ ॥

आठकंडे भरने वाले कुंड में जो पुटपाक दिया जाता है उसको कपोत पुट कहते हैं गोशालाओंमें गौओं के खुरोंसे पिसे हुये गौओंके मलको गोवर कहते हैं यह पारेके साधन करने में श्रेष्ठ है बड़े पात्र में स्थित गोवर के द्वाराजहाँ पुट दिया जाता है उसको गोवर पुट कहते हैं इस्से पाराभस्म होताहै भूसी से भरे हुये किसी बड़े पात्रके बीचमें औषध युक्त घड़ियाको रक्खे और अग्नि लगाकर पात्रको बन्द करदे यह भांडपुट कहलाताहै ॥ ३७ ॥

अथ यन्त्रप्रकारानाहतत्रैव ॥

भाण्डेवितस्तिगम्भीरेमध्येनिहितकूपिके।कूपिकाकण्ठपर्यन्तंवालुकाभिःप्रपूरिते॥ भेषजंकूपिकासंस्थंवह्निनायत्रपच्यते । वालुकायन्त्रमेतद्धियन्त्रंतत्रबुधैःस्मृतम् ॥ वालुकायन्त्रम् ॥ ३८ ॥ यंत्रोंके प्रकार । वालुकायंत्र ॥

एकविलस्त गहरे पात्रके बीच में औषध युक्त सीसीको रक्खे और सीसी के गले तक वालूभरदे फिर अग्नि के द्वारा औषध को पकावे यह वालुका यंत्र कहलाता है ॥ ३८ ॥

निबद्धमौषधंसूतंभूर्जेतत्त्रिगुणंवरे । रसपोटलिकाकाष्ठेदृढंबध्वागुणेनहि ॥ सन्धानपूर्णकुम्भान्तःखावलंबनसंस्थितम् । अधस्तात्ज्वालयेदग्निंतत्तदुक्तक्रमेणहि ॥ दोलायन्त्रमिदंप्रोक्तंस्वेदनाख्यंतदेवहि । दोलायन्त्रम्सन्धानंकाञ्जिकादि ॥ ३९ ॥

दोलायंत्र ॥

पारे समेत औषधि को भोजपत्र में लपेट कर तीनतहकी पोटली वनावे फिर उस पोटली को किसी काठके टुकड़े में बांधकर कॉजी आदिसे भरे हुये पात्र में पेंदीको न छूतीहुई लटकावे और उसपात्र के नीचे आगवलाकर क्रमसे अग्निदे इसको दोलायंत्र अथवा स्वेदन यंत्र कहते हैं ॥ ३९ ॥

साम्बुस्थालीमुखेबद्धेवस्त्रेस्वेद्यंनिधायच।पिधायपच्यतेयत्रतद्यन्त्रंस्वेदनंस्मृतम् ॥ स्वेदनंयन्त्रं ॥ ४० ॥

जलसे भरी हुई बटलोई के मुखपर बंधे हुये कपड़े में उवालने की औषध को रक्ख कर उसका मुखवन्दकरदे और पाक करे इसको स्वेदन यंत्र कहते हैं ॥ ४० ॥

अथस्थाल्यांरसंक्षिप्त्वानिदध्यात्तन्मुखोपरि । स्थालीमूर्ध्वमुखींसम्यङ्निरुध्यमृदुमृत्स्नया ॥ ऊर्ध्वस्थाल्यांजलंक्षिप्त्वाचुल्ल्यामारोप्ययत्नतः । अधस्ताज्ज्वालयेदग्निंयावत्प्रहरपञ्चकम् ॥ स्वांगशीतंततोयन्त्रादुद्गृह्णीयाद्रसमुत्तमम्। विद्याधराभिधंयन्त्रमेतत्तज्ज्ञैरुदाहृतम्॥ विद्याधरयन्त्रम् ॥ ४१ ॥

विद्याधर यंत्र ॥

एकपात्र में पारा छोड़कर उसकेऊपर एक ऊर्ध्वमुख दूसरा पात्र रक्खे और उसकी संधिकोगीली मट्टीसे वन्द करदे फिर ऊपर के पात्र में जलभर के चूल्हे पर चढ़ावे और नीचे पांच पहर तक आगवलावे फिरअच्छे प्रकारसे शीतल होजानेपर पारेको निकालले इसको विद्याधर यंत्रकहतेहैं ४१॥

वालुकाभिःसमस्ताङ्गगर्तेमूषांरसान्विताम्। दीप्तोपलैःसंटणुयाद्यन्त्रंभूधरनामकम्॥ भूधरयन्त्रम्॥ ४२॥

भूधर यंत्र ॥

पारे समेत घड़िया को वालूसे अच्छे प्रकार ढककरके सब ओर से जलते हुये कंडों की आंचदे इसको भूधरयंत्र कहते हैं ॥ ४२॥

यन्त्रडमरुसंज्ञंस्यात्तत्स्थाल्योर्मुद्रितेमुखे। डमरुयन्त्रम्॥ ४३॥

डमरूयंत्र ॥

दोपटलों के मुखोंको परस्पर संपुट जोड़कर जो यंत्र वनताहै उसको डमरू यंत्र कहतेहैं ॥ ४३॥

अथ मारणाययोग्यंरूप्यमाह ॥

गुरुस्निग्धंमृदुश्वेतंदाहच्छेदघनक्षमम्। स्वर्णादिरहितंस्वच्छंतारंनवगुणंशुभम्॥ (अथायोग्यम्)कठिनंकृत्रिमंरूक्षंरक्तंपीतदलंलघु।दाहच्छेदघनैर्नष्टंरूप्यंदुष्टंप्रकीर्तितम्॥४४

मारनेके योग्य चांदी ॥

जो चांदीभारी स्निग्ध कोमल तपाने वा काटने से श्वेत चोटकी सहने वाली सुवर्णादि धातुओं के मेलसे रहित और निर्मल होती है वहउत्तम है और जो चांदी कठोर कृत्रिम रूखी लाल पीतदल युक्त हलकी और तपाने से काटने से अथवा घनकी चोटसे नष्टहोजाती है वह दोषयुक्त है ॥ ४४॥

अथशोधनविधिः ॥

पत्तलीकृतपत्राणितारस्याग्नौप्रतापयेत्।निषिञ्चेत्तत्ततप्तानितैलेतक्रेचकाञ्जिके॥ गोमूत्रेचकुलत्थानांकषायेचत्रिधात्रिधा। एवंरजतपत्राणांविशुद्धिःसम्प्रजायते ॥ ४५॥

चांदीके शुद्धकरने की विधि ॥

चांदीके पतले पत्रोंको अग्निमें तपा२ कर क्रमसे तेल मट्ठा कौंजी गोमूत्र और कुलथी के काढ़े में तीन२ बार बुझावे इसप्रकार से चांदी शुद्ध होतीहै ॥ ४५॥

अथाशुद्धस्यरूप्यस्यदोषमाह ॥

रूप्यंत्वशुद्धंप्रकरोतितापंविवन्धकंवीर्य्यवलक्षयञ्च॥ देहस्यपुष्टिंहरतेतनोतिरोगांस्ततःशोधनमस्यकुर्यात्॥ ४६॥ अशुद्ध चाँदीके दोष ॥

अशुद्धचांदी ताप विवन्ध वीर्य वलका नाश देहकीपुष्टता का नाश और अनेक रोगोंको करतीहै ४६॥

अथरूप्यमारणविधिः ॥

भागैकंतालकंमर्द्यंयाममम्लेनकेनचित्। तेनभागत्रयंतारपत्राणिपरिलेपयेत् ॥ धृत्वामूषाःपुटेरुध्वापुटेत्त्रिंशद्वनोपलैः। समुद्धृत्यपुनस्तालंदत्त्वारुध्वापुटेपचेत् ॥ एवंचतुर्द्दशपुटैस्तारभस्मप्रजायते। अथान्यप्रकारः। स्नुहीक्षीरेणसंपिष्टंमाक्षिकंतेनलेपयेत्।

तालकस्यप्रकारेणतारपत्रस्यबुद्धिमान् ॥ पुटेच्चतुर्दशपुटैस्तारम्भस्मप्रजायते ॥ ४७ ॥

चाँदीमारने की विधि ॥

एकभाग हरताल को पहरभर किसी खटाई से मर्दन करे उसको तीनभाग चाँदीके पत्रोंपर लपेटे फिर उनपत्रों को घड़ियामें रखकर उसका मुखबन्द करदे और तीस कंडों में पुटपाक करे इसप्रकार वारंवार हरताल लेप करके चौदह पुट देनेसे चाँदीभस्म होती है-दूसरा प्रकार-थूहरके दूधमें सोना मक्खी को पीसकर हरिताल के समान चाँदीके पत्रोंपर लेपकरके पहले कहीहुई विधि से चौदह पुटदेनेसे चाँदी भस्म होती है ॥ ४७ ॥

एवंमारितस्यरूप्यस्यगुणः ॥

रौप्यंशीतंकषायञ्चस्वादुपाकरसंसरम् । वयसःस्थापनंस्निग्धलेखनंवातपित्तजित् ॥ प्रमेहादिकरोगांश्चनाशयत्यचिराद्ध्रुवम् ॥ ४८ ॥

चाँदी की भस्म के गुण ॥

चाँदी शीतल कषैली रस और पाक में मधुर दस्तावर अवस्थाको स्थित रखने वाली स्निग्ध लेखन वात पित्त नाशक और प्रमेहादिक रोगों की शीघ्र नाशक होती है ॥ ४८ ॥

अथमारणयोग्यंताम्रमाह ॥

जवाकुसुमसङ्काशंस्निग्धंगुरुघनक्षमम् ॥ लोहनागोज्झितंताम्रंमारणायप्रशस्यते ॥ ४९ ॥

मारने के योग्य तांबा ॥

जोतांबा गुड़हर के समान लाल स्निग्ध कोमल घन का सहनेवाला और लोहे सीसे के मैल से रहित होताहै वह श्रेष्ठहै ॥ ४९ ॥ अथायोग्यताम्रमाह ॥

कृष्णंरूक्षमतिस्वच्छंश्वेतंचापिघनासहम् ॥ लोहनागयुतंचेतिशुल्वंदुष्टंप्रकीर्तितम् ॥ ५० ॥

अयोग्य तांबा ॥

जो तांबा कालेरंग का रूखा बहुत स्वच्छ श्वेतवर्ण घन को नहीं सहने वाला और लोहे तथा सीसे से युक्त होता है वह दोषयुक्त होता है ॥ ५० ॥

अथशोधनविधिः ॥ पत्तलीकृतपत्राणिताम्रस्याग्नौप्रतापयेत् । निषिञ्चेत्तत्ततप्तानि तैलेतक्रेचकाञ्जिके ॥ गोमूत्रेचकुलत्थानांकषायेचत्रिधात्रिधा । एवंताम्रस्यपत्राणांविशुद्धिःसंप्रजायते ॥ एकोदोषोविषेताम्रेत्वशुद्धेऽष्टौभ्रमोवमिः । विरेकःस्वेदउत्क्लेदोमूर्छादाहोऽरुचिस्तथा ॥ नविषंविषमित्याहुस्ताम्रन्तुविषमुच्यते । एकोदोषोविषेताम्रेत्वष्टौदोषाःप्रकीर्तिताः ॥ ५१ ॥ तांबा शुद्ध करने की विधि ॥

तांबेकेसूक्ष्म पत्रोंको अग्निमें तपा २ कर तेल मट्ठा कांजी गोमूत्र और कुलथीके काढ़ेमें तीन २ वार बुझावे इस रीति से तांबा शुद्ध होता है विष में एक दोष और अशुद्ध तांबे में भ्रम छर्दि दस्त स्वेद क्लेद मूर्च्छा दाह तथा अरुचि यह आठदोषहैं इसी कारणसे एक दोषयुक्त विषको विष न कहकर आठ दोष युक्त अशुद्ध तांबे को विष कहते हैं ॥ ५१ ॥

अथताम्रस्य मारणविधिः ॥

सूक्ष्माणिताम्रपत्राणि कृत्वासंस्वेदयेद्बुधः । वासरत्रयमम्लेन ततः खल्वेविनिः

क्षिपेत् ॥ पादांशसूतकंदत्त्वा याममम्लेनमर्दयेत्। ततउद्धृत्यपत्राणिलेपयेद्द्विगुणेनच ॥ गन्धकेनाम्लघृष्टेनतस्यकुर्याच्चगोलकम् । ततःपिष्ट्वाचमीनाक्षींचांगेरींवापुनर्नवाम् ॥ (चांगेरीचतुष्पत्राम्लालोनिकाभेदः) तत्कल्केनबहिर्गोलेलेपयेद्व्यंगुलोन्मितम्॥ धृत्वा तद्गोलकंभाण्डेसरावेणचरोधयेत्। वालुकाभिःप्रपूर्य्याथविभूतिलवणाम्बुभिः॥ दत्त्वाभा ण्डमुखेमुद्रांततश्चुल्ह्यांविपाचयेत्। क्रमवृद्ध्याग्निनासम्यक्यावद्यामचतुष्टयम् ॥ स्वा ङ्गशीतंसमुद्धृत्यमर्दयेच्छूरणद्रवैः। यामैकंगोलकंतच्चनिःक्षिपेच्छूरणोदरे ॥ मृदालेपस्तु कर्त्तव्यःसर्वतोऽङ्गुष्ठमात्रकः। पाच्यंगजपुटेक्षिप्तंमृतंभवतिनिश्चितम्॥ वमनंचविरेकं चभ्रमंक्लममथारुचिम्। विदाहंस्वेदमुत्क्लेदंनकरोतिकदाचन ॥ ५२ ॥

तांबा मारने की विधि ॥

तांबेके बारीक पत्रोंको आगमें तपाकर तीन दिन खटाई में भिगोवे फिर चौथाई पारा मिलाकर खटाई समेत खरल में एक पहर मर्दन करे फिर खरल से निकालकर खटाई से पीसीहुई दूनी गन्धक से उन पत्रों पर लेप करके गोला बनावे और मकोय चूका अथवा पुनर्नवाको पीस कर गोले के ऊपर दो अंगुल का मोटा लेप करे फिर इस गोले को किसी पात्र में रखकर पात्रमें बालू भर के और उसे सकोरेसे बन्दकरके मट्टीनोन और जल इनसबको मिलाके उसकेमुखको बन्द करदे और चूल्हे पर चढ़ायके धीरे २ अग्नि को बढ़ाता हुआ चार पहर तक आगदेवे फिर अच्छे प्रकार शीतल होजानेपर उस गोले को निकाल के जिमींकन्द के रस में एकपहर खरलकरे और फिर गोलाबनाकर जिमींकन्दके बीचमें रक्खे और उस पर एक अंगुलका मोटा मट्टी का लेपकरके गज पुटमें पाक करे इसप्रकार से निस्सन्देह तांबेकी उत्तम भस्म होती है और यह तांबा वमन विरेचन भ्रम ग्लानि अरुचि विदाह स्वेद तथा क्लेदको नहीं करता है ॥ ५२ ॥

एवंमारितस्य ताम्रस्यगुणाः ॥

ताम्रंकषायंमधुरंसतिक्तमम्लञ्चपाकेकटुसारकञ्च। पित्तापहंश्लेष्महरञ्चशीतंतद्रो पणंस्याल्लघुलेखनञ्च ॥ पाण्डूदरार्शोज्वरकुष्ठकासश्वासक्षयान्पीनसमम्लपित्तम् । शोथंकृमिंशूलमपाकरोतिप्राहुर्बुधाबृंहणमल्पमेतत् ॥ एकोदोषोविषेताम्रेत्वसम्यग्मारि तेपुनः। दाह स्वेदोऽरुचिर्मूर्च्छाक्लेदोरेकोवमिर्भ्रमः॥ रेकोविरेकः ५३॥

तांबे की भस्म के गुण ॥

तांबा कषेला मधुर तिक्त खट्टा पाकमें कटु दस्तावर कफ पित्तनाशक शीतलघावको भरनेवाला हलका लेखन कुछ धातुवर्द्धक और पांडु उदर बवासीर ज्वर कुष्ठ खांसी श्वास क्षय पीनस अम्ल पित्त सूजन कृमि तथा शूल नाशक होता है विषमें एक दोष और अच्छे प्रकारसे नहीं बने तांबेमें दाह स्वेद अरुचि मूर्च्छा क्लेद विरेचन छर्दि और भ्रम यह आठ दोष होते हैं ॥ ५३ ॥

अथ वङ्गस्यरूपनिरूपणम् ॥

वङ्गंचगिरिजंतच्चखुरकंमिश्रकंद्विधा । तयोस्तुखुरकंश्रेष्ठमिश्रकंत्वहितंमतम् ५४

वंगकास्वरूप.॥

वंग और जस्ता यहदोनों खुरक और मिश्रक भेदसे दोप्रकारकेहैं इनमें से खुरकश्रेष्ठ और मिश्रक अहित होताहै ॥ ५४ ॥ तस्याशुद्धस्यदोषमाह ॥

वङ्गंविधत्तेखलुशुद्धिहीनमाक्षेपकम्पौचकिलासगुल्मौ । कुष्ठानिशूलंकिलवातशोथं पाण्डुप्रमेहञ्चभगंदरञ्च ॥ विषोपमंरक्तविकारवृन्दंक्षयञ्चकृच्छ्राणिकफज्वरञ्च । मेहाऽश्मरीविद्रधिमुष्करोगान्नागोऽपिकुर्यात्कथितान्विकारान् ५५ ॥

अशुद्ध वंगके दोष ॥

अशुद्ध वंग आक्षेप कम्प किलास गुल्म कुष्ठ शूल वात सूजन पांडु प्रमेह भगंदर विषके समान रुधिर के विकार क्षय मूत्रकृच्छ्र कफ ज्वर मोह पथरी विद्रधि और अंडकोश के रोगोंको उत्पन्न करताहै ॥ ५५ ॥ तस्यशोधनमभिधीयते ॥

वङ्गनागौप्रतप्तौचगलितौतौनिषेचयेत् । त्रिधात्रिधाविशुद्धिःस्याद्रविदुग्धेऽपिचत्रिधा ॥ निषेचयेत्तैलतक्रकाञ्जिकगोमूत्रकुलत्थकाथेषुप्रत्येकंत्रिधा त्रिधाततोऽर्कदुग्धेऽपित्रिधा ५६ ॥ वंगकेशोधनकी विधि ॥

वंग और सीसेको पिघलाकर तेल मट्ठा कांजी गोमूत्र कुलथीकाकाढा और आकका दूधइनसबमें तीन २ बारक्रमसे बुझावे इसप्रकारसे सीसा और रांगा शुद्धहोताहै ॥ ५६ ॥

अथवङ्गस्यमारणविधिः ॥

मृत्पात्रेद्राविते वङ्गेचिञ्चाश्वत्थत्वचोरजः । क्षिप्त्वावङ्गचतुर्थांशमयोदर्व्याप्रचालयेत् ॥ चिञ्चाम्लिका । रजश्चूर्णम्अयोदर्वीकरछुली । ततोद्वियाममात्रेणवङ्गंभस्मप्रजायते ॥ अथभस्मसमंतालंक्षिप्त्वाम्लेनविमर्दयेत् । ततोगजपुटेपक्त्वापुनरम्लेनमर्दयेत् ॥ तालेनदशमांशेनयाममेकंततःपुटेत् ॥ एवंदशपुटैःपक्वंवङ्गंभवतिमारितम् ५७ ॥

वंगमारनेकीविधि ॥

मिट्टीके पात्रमें वंगको गलाकर चतुर्थांश इमली और पीपलकी छालका चूर्ण छोड़े और लोहे की कलछीसे चलावे इसरीति से दोपहरमें वंगभस्महोती है फिर भस्मके समान भाग हरताल मिलाकर खटाईमें घोटे और गजपुटमें पाककरे फिर दशमांश हरिताल मिलाकर एक पहरतक पुटपाककरे इसप्रकार दशवार पुट देनेसे वंगकी भस्महोतीहै ॥ ५७ ॥

एवंमारितस्यवङ्गस्यगुणाः ॥

वंगंलघुसरंरूक्षंकुष्ठंमेहकफक्रिमीन् । निहन्तिपाण्डुंसश्वासंनेत्र्यमीषत्तुपित्तलं ॥ सिंहोगजौघंतुयथानिहन्तितथैववंगोऽखिलमेहवर्गम् । देहस्यसौख्यंप्रबलेन्द्रियत्वंनरस्यपुष्टिंविदधातिनूनम् ॥ ५८ ॥ वंगकी भस्मके गुण ॥

वंग हल्की दस्तावर रूखी नेत्रोंकोहित कुछ पित्तकारी और कुष्ठ प्रमेह कफ कृमि पांडु तथा श्वास रोगकी नाशकहोतीहै जैसे सिंह हाथियोंके समूहको मारताहै उसी प्रकार वंग सब प्रकारके प्रमेहोंको नाशकरतीहै और यह सुख इन्द्रियोंमें सामर्थ्य और शरीरकी पुष्टताको बढ़ातीहै ॥ ५८ ॥

अथ यशदस्यस्वरूपं ॥

यशदंगिरिजंतस्यदोपाःशोधनमारणे । वंगस्येवहिवोद्धव्यागुणांस्तुगणयाम्यथ ॥ यशदंवसरंतिक्तशीतलंकफपित्तहृत् । चक्षुष्यंपरमंमेहान्पाण्डुंश्वासञ्चनाशयेत् ॥ ५९ ॥

जस्तेकास्वरूप ॥

जस्तेके दोप शोधन और मारन वंगके समान हैं जस्ता कपैला तिक्त शीतल नेत्रोंको हित और कफ पित्त प्रमेह पांडु तथा श्वासनाशक होताहै ॥ ५९ ॥

अथ सीसकस्यशोधनम् ॥

तस्यसाहजिकादोपारङ्गस्येवनिदर्शिता । शोधनञ्चापितस्यैवभिषग्भिर्गदितंपुरा ६० ॥

सीसेकाशोधन ॥

सीसेके स्वाभाविक दोप और शोधन वंगके समानकहेहैं ॥ ६० ॥

अथसीसस्यमारणविधिः ॥

ताम्बूलरससंपिष्टंशिलालेपात्पुनःपुनः द्वात्रिंशद्भिःपुटैर्नागानिरुत्थंभस्मजायते ॥ शिलामनःशिलाः (अन्यच्च) अश्वत्थचिञ्चात्वक्चूर्णञ्चतुर्थांशेननिक्षिपेत् । मृत्पात्रे विद्रुतोनागोलोहदर्व्याप्रचालितः ॥ यामेकेनभवेद्भस्मतत्तुल्यास्यान्मनःशिला । काञ्जिकेनद्वयंपिष्ट्वापचेद्गजपुटेनच ॥ स्वाङ्गशीतंपुनःपिष्ट्वाशिलायाकाञ्जिकेनच । पुनःपचेत्सरावाभ्यामेवंषष्टिपुटैर्मृतिः ॥ ६१ ॥

सीसेकेमारणकीविधि ॥

पानके रसमें पिसीहुई मैनसिलका वारंवार लेपकरके बत्ती संपुटमें सीसेकी निरुत्थ भस्महोती है (दूसरीविधि)मृत्तिकाके पात्रमें सीसेकोगलायकर पीपल और इमलीकीछालकाचूर्ण उसकाचतुर्थांश उसमें छोड़े और लोहेकी कलछीसे उसको चलावे इसप्रकार एक पहरमें भस्महोतीहै फिर भस्मके समान मैनसिल मिलायकर दूनी कांजीमें पीस गजपुटमें पाककरे फिर शीतल होजानेपर मैनसिल मिलाके कांजीमें पीस पुटपाककरे इसप्रकार सातपुटपाक करने से सीसेकी भस्महोतीहै ॥ ६१ ॥

एवंमारितस्यसीसस्यगुणाः ॥

सीसंरङ्गगुणंज्ञेयंविशेषान्मेहनाशनम् ॥ नागस्तुनागशततुल्यबलंददाति व्याधिञ्चनाशयतिजीवितमातनोति । वह्निंप्रदीपयतिकामबलंकरोति मृत्युञ्चनाशयतिसन्तसेवितःसः ॥६२॥

सीसेकीभस्मकेगुण ॥

सीसेमें वंगके समान गुणहोते हैं और विशेषकरके प्रमेहोंको नाशकरताहै सदैव सेवनकियागया सीसा सौहाथियों के समान बलदायक व्याधिनाशक आयुवर्द्धक दीपन काममें बलदायक और मृत्युकाभी नाशकहोताहै ॥ ६२ ॥

अथ लोहस्याशुद्धस्यदोषमाह ॥

खण्डत्वकुष्ठामयमृत्युकारीहृद्रोगशूलौकुरुतेऽश्मरीञ्च । नानारुजानांचतथाप्रकोपं कुर्याच्चहृल्लासमशुद्धलोहम् ॥ अतस्तस्यदोपशान्त्येशोधनमभिधीयते । पत्तलीकृतपत्रा

णिलोहस्याग्नौप्रतापयेत्।निषिञ्चेत्तप्ततप्तानितैलेतक्रेचकाञ्जिके॥ गोमूत्रेचकुलत्थानां कषायेचत्रिधात्रिधा। एवंलोहस्यपत्राणांविशुद्धिःसंप्रजायते ॥ ६३ ॥

अशुद्धलोहेकेदोष ॥

अशुद्ध लोहा नपुंसकता कुष्ठ मृत्यु हृदयके रोग शूल पथरी मतली और अनेक प्रकारके रोगोंको उत्पन्न करताहै इससे उसके दोषोंकी शान्तिकेलिये लोहेका शोधन कहतेहैं लोहेके सूक्ष्म पत्रोंको अग्निमें तपा २ कर तेल मट्ठा कांजी गोमूत्र और कुलथीके काढ़ेमें तीन २ वारबुझावे इसरीतिसे लोहा शुद्ध होजाताहै ॥ ६३ ॥

अथ लोहस्य मारणविधिः ॥

शुद्धेलोहभवंचूर्णंपातालगरुडीरसैः। मर्द्दयित्वापुटेवह्नौ दद्यादेवंपुटत्रयम् ॥ पुटत्रयंकुमार्याश्च कुठारच्छिन्निकारसैः। पुटषट्कंततोदद्यादेवं तीक्ष्णमृतिर्भवेत् (अन्यच्च) क्षिपेद्द्वादशमांशेन दरदंतीक्ष्णचूर्णतः । मर्द्दयेत्कन्यकाद्रावैर्यामयुग्मंततःपुटेत् ॥ एवं सप्तपुटैर्मृत्युं लोहचूर्णमवाप्नुयात् ॥ ६४ ॥

लोहेके मारनेकी विधि ॥

शुद्धलोहे के चूर्णको पातालगरुड़ी (इन्द्रायण) के अर्कमें घोटकर तीनवारपुट पाककरे फिर घीकुवारके रसमें घोटकर तीनवार पुटपाककरे फिर कुरैयाके रस में घोटकर छःवार पुट पाककरे इस रीतिसे लोहा भस्महोताहै(दूसराप्रकार) लोहचूर्ण का दशमांश सिंगरफ मिलाके घीकुवारकेरस में घोटे दोपहरतक फिर पुटपाककरे इसप्रकार सातवार पुटपाक करनेसे लोहा भस्महोताहै ॥ ६४ ॥

सत्योऽनुभूतोयोगन्द्रैः क्रमोऽन्योलोहमारणे। कथ्यंतेरामराजेनकौतूहलधियाऽधुना॥ सूतकात्द्विगुणंगन्धंदत्त्वाकुर्य्याच्चकज्जलीम् । द्वयोःसमंलोहचूर्णंमर्द्दयेत्कन्यकाद्रवैः ॥ यामयुग्मंततः पिण्डंकृत्वाताम्रस्यपात्रके। धर्म्मेधृत्वारुबूकस्यपत्रैराछादयेद्बुधः॥ यामद्वयाद्भवेदुष्णं धान्यराशौन्यसेत्ततः। दत्त्वोपरिसरावंतु त्रिदिनान्तेसमुद्धरेत्॥ पिष्ट्वाचगालयेद्वस्त्रादेवंवारितरंभवेत्। दाड़िमस्यदलंपिष्ट्वातच्चतुर्गुणवारिणा ॥ तद्रसेनायसञ्चूर्णंसन्नीयच्छावयेदिति । आतपेशोषयेत्तच्चपुटेदेवंपुनःपुनः ॥ एकविंशतिवारैस्तंम्रियतेनात्रसंशयः। एवंसर्वाणिलोहानि स्वर्णादीन्यपिमारयेत् ॥ ६५ ॥

योगी लोगों से अनुभव की हुई लोहे के मारने की अन्य विधि कुतूहल पूर्व्वक राम राजा ने कही है कि पारे से दूनी गधक लेकर कजली करे फिर कजली के समान लोहे का चूर्ण मिलाय घीकुवार के रस में दो पहर घोटि के गोला बनावै गोले को तावे के पात्र में रखकर दो पहर रेंडी के पत्तों से ढककर धूप में रक्खे फिर गोलेके गरम होजाने पर सकोरेसे ढककर तीन दिन तक धान्य राशिमें रक्खे फिर तीन दिन के पीछे निकालकर कपड़े से छानले इस रीति से लोहा पानी में तैरने लगताहै फिर उससे चौगुने पानी में अनार की पत्ती को पीस कर उस के रस में लोहे को भिगोवे और धूपमें सुखावे और पुट पाक करे उस रीतिसे इक्कीस वार पुटपाक देने से निस्सन्देह लोहे की भस्म होती है ॥ ६५ ॥

एवंमारितस्य लोहस्यगुणाः॥

लोहंतिक्तसरंशीतंकषायंमधुरंगुरु। रूक्षंवयस्यंचक्षुष्यं लेखनंवातलंजयेत्॥ कफं पित्तङ्गरंशूलंशोफार्शः प्लीहपाण्डुताः। मेदोमेहक्रिमीन्कुष्ठंतत्किट्टंतद्वदेवहि॥ गुञ्जामेकां समारभ्य यावत्स्युर्नवरक्तिकाः। तावल्लोहंसमश्नीयाद्यथादोषानलंनरः॥ कूष्माण्डं तिलतैलंच माषान्नंराजिकांतथा। मद्यमम्लरसञ्चैववर्जयेल्लोहसेवकः॥ शिलागन्धार्क दुग्धाक्ताः स्वर्णाद्याःसर्वधातवः। म्रियन्तेद्वादशपुटैः सत्यंगुरुवचोयथा॥ ६६॥

लोहे की भस्म के गुण॥

लोहा तिक्त दस्तावर शीतल कषेला मधुर भारी रूखा अवस्था का रखने वाला नेत्रों को हित लेखन वादी और कफ पित्त गर दोष शूल सूजन बवासीर प्लीहा पांडु मेद प्रमेह कृमि तथा कुष्ठ रोग नाशक होताहै इसकी कीटोंमें भी इसी के समान गुण होते हैं दोष और अग्नि के बल को विचार कर एक रत्ती से लेकर नौरत्ती तक लोहा खाना चाहिये लोह सेवन करने वाला पुरुष पेठा तिलों का तेल उर्द राई मद्य और खटाई को त्याग कर दे मैनसिल गन्धक और आकके दूधमें भि-गोई हुई संपूर्ण धातु बारह पुटों में भस्म होती हैं यह निस्सन्देह गुरू का वचनहै॥ ६६॥

अथोपधातूनांमारणप्रकारमाह। तत्रस्वर्णमाक्षिकस्या शुद्धस्यदोषमाह॥

मन्दानलत्वंबलहानिमुग्रांविष्टम्भितांनेत्रगदांशकुष्ठान्। मालांतथैवव्रणपूर्विका ञ्चकुर्यादशुद्धंखलुमाक्षिकञ्च॥ अतस्तस्यदोषशान्तये शोधनमभिधीयते। माक्षिक स्यत्रयोभागाभागैकंसैन्धवस्यच। मातुलुंगद्रवैर्वाथजम्बीरस्यद्रवैःपचेत्॥ चालयेल्लो हजेपात्रेयावत्पात्रंसुलोहितम्। भवेत्ततस्तुसंशुद्धिं स्वर्णमाक्षिकमृच्छति॥ ६७॥

उपधातुओं के मारण का प्रकार, अशुद्ध। सोना मक्खी के दोष॥

अशुद्ध सोनामक्खी मन्दाग्नि बलहानि विष्टंभ नेत्र रोग कुष्ठ गंडमाला और घाव को करती है इससे उसके दोषोंकी शान्तिकेलिये शुद्धकरनेकी विधिकही जातीहै सोनामक्खी तीन भाग और सेंधानोन एक भाग मिलायकर बिजौरा अथवा जंभीरी नींबूके रसों से लोहेके पात्रमें पाककरे और जबतक पात्र लाल न होजाय तबतक चलातारहै इसरीतिसे सोनामक्खी शुद्धहोतीहै॥ ६७॥

अथ मारणविधि॥

कुलत्थस्यकषायेणघृष्ट्वातैलेनवापुटेत्।तक्रेणवाजमूत्रेणम्रियतेस्वर्णमाक्षिकम् ६८॥

सोनामक्खी मारनेकी विधि॥

कुलथीके काढ़े में तेलमें मट्ठे में अथवा बकरेके मूत्रमें घोटकर पुटपाक करने से सोनामक्खी भस्म होती है॥ ६८॥

अथ तारमाक्षिकस्यशोधनमाह॥

सुवर्णमाक्षिकवद्दोषाविज्ञेयास्तारमाक्षिके। अतस्तद्दोषशान्त्यर्थंशोधनंतस्यकथ्यते॥ कर्कोटीमेषशृंगुत्थे द्रवैर्जम्बीरजैर्दिनम्। भावयेदातपेतीव्रे विमलाशुद्ध्यतिध्रुवम्॥ वि मलातारमाक्षिकम्। कर्कोटीखखसा॥ मेषशृङ्गीमेढाशृङ्गी॥

रूपामक्खीका शोधन ॥

रूपामक्खीमें भी सोनामक्खीके समान दोषहोते हैं इससे उसके दोषों के शान्त करनेके लिये उसका शोधन लिखतेहैं खिखसा मेढ़ासिंगी और जंभीरी नीबूके रससे तेज धूप में एकदिन भावना देनेसे रूपामक्खी शुद्धहोती है ॥ ६९ ॥

अथ मारणम् ॥

कुलत्थस्यकषायेणघृष्ट्वातैलेनवापुटेत्।तक्रेणवाजमूत्रेणतारमाक्षिकमृच्छति॥७

रूपामक्खीका मारण ॥

कुलथीका काढ़ा तेल मट्ठा अथवा बकरेका मूत्र इनमें घोटकर पुटपाक करने से रूपामक्खी भस्महोतीहै ॥ ७० ॥

अथ तयोर्विशिष्टगुणाः ॥

नकेवलंस्वर्णरूप्य गुणास्तापीजयोर्मता । द्रव्यान्तरस्यसंसर्गात्सन्त्यन्येऽपिगुणास्तयोः॥माक्षिकंमधुरंतिक्तंस्वर्य्यंवृष्यंरसायनम्।चक्षुष्यंवस्तिरुक्कुष्ठपाण्डुमेहविषोदरम् ॥ अर्शःशोफंक्षयंकण्डूंत्रिदोषञ्चनियच्छति ॥ ७१

सोनामक्खी और रूपामक्खीके गुण ॥

सोनामक्खी और रूपामक्खीमें केवल सोने और चांदीकेही गुणनहींहोते किन्तु द्रव्यान्तरके संयोग से अन्य २ गुणभीहोतेहैं सोनामक्खी और रूपामक्खी मधुर तिक्त स्वरकोहित वीर्यवर्द्धक रसायन नेत्रोंकोहित और वस्तिकी पीडा कुष्ठ पांडु प्रमेह विष उदर बवासीर सूजन क्षय खुजली तथा त्रिदोषनाशक होतीहै ॥ ७१ ॥

अथ तुत्थस्यशोधनमाह ॥

विष्टयामर्दयेत्तुत्थमार्जारककपोतयोः । दशांशंटङ्कणंदत्त्वापचेल्लघुपुटेततः ॥ पुटंदद्यापुटंक्षौद्रे देयंतुत्थविशुद्धये ॥ ७२ ॥

तूतियेका शोधन ॥

बिल्ली और कबूतरकी विष्ठासे तूतियेको पीसे फिर दशांश सुहागा मिलाकर लघुपुट में पाककरे फिर दहीकेसाथ पुटपाककरे और सहतकेसाथ पुटपाककरे इसरीतिसे तूतिया शुद्धहोताहै ॥ ७२ ॥

एवं शुद्धस्यतुत्थस्यगुणाः ॥

तुत्थकंकटुकंक्षारंकषायंवामकंलघु । लेखनंभेदनंशीतञ्चक्षुष्यंकफपित्तहृत् ॥ विषाश्मकुष्ठकण्डूघ्नंतद्गुणंखर्परमतम् ॥ ७३ ॥

शुद्धतूतियाके गुण ॥

शुद्धतूतिया कटुक्षार कषेला छर्दिकारी हलका लेखन भेदक शीतल नेत्रोंको हित और कफ पित्त विष पथरी कुष्ठ तथा खुजली नाशकहोताहै खपरियामें भी इसीके समान गुणहैं॥ ७३॥

अथ कांस्यस्यरीतेश्चशोधनन्त्वभिधीयते । पत्तलेकृतपत्राणिकांस्यस्याग्नौप्रतापयेत् । निषिञ्चेत्तत्तप्तानि तैलेतक्रेचकाञ्जिके ॥ गोमूत्रेचकुलत्थानांकषायेत्रित्रिधात्रिधा । एवंकांस्यस्यरीतेश्चविशुद्धिःसंप्रजायते ॥ ७४ ॥

कांसा और पीतलके शुद्ध करनेकी रीति ॥

कांसे और पीतलके वारीक पत्रोंको अग्निमें तपा २ कर तेल मट्ठा कांजी गोमूत्र और कुलथीके काढेमें तीन २ वार बुझावे इससे कांसा और पीतल शुद्धहोताहै ॥ ७४ ॥

अथ मारणविधिः ॥

अर्कक्षीरेणसंपिष्टोगन्धकस्तेनलेपयेत् । समेनकांस्यपत्राणिशुद्धान्यम्लद्रवैर्मुहुः । ततोमूषापुटेधृत्वापचेद्गजपुटेनच । एवंपुटद्वयात्कांस्यरीतिश्चम्रियतेध्रुवम् ॥ ७५ ॥

कांसे और पीतलके मारनेकी विधि ॥

गंधकको आकके दूधमें पीसकर समभाग कांसे और पीतलके शुद्ध पत्रोंपर लेपकरे और खटाईमें वारम्वार शुद्धकरे फिर घडियामें रखकर गजपुटमें दोवार पाककरे इसप्रकारसे कांसे और पीतलकी भस्म होतीहै ॥ ७५ ॥

एवंमारितयोःकांस्यस्यरीतेश्चगुणाः ॥

कांस्यंकषायंतीक्ष्णोष्णंलेखनंविशदंसरम् । रीतिकातुभवेद्रूक्षासतिक्तालवणारसे ॥ शोधिनीपाण्डुरोगघ्नी कृमिहन्नातिलेखनी ॥ ७६ ॥

कांसे और पीतलकी भस्मके गुण ॥

कांसा कपैला तीक्ष्ण उष्ण लेखन विशद दस्तावर भारी नेत्रोंकोहित रूखा और कफ पित्तनाशक होताहै पीतल रूखी तिक्त नमकीन शोधक कुछलेखन और पांडु तथा कृमिनाशकहोतीहै ॥ ७६ ॥

अथ सिन्दूरस्यशोधनमाह ॥

दुग्धाम्लयोगतस्तस्यविशुद्धिर्गदिताबुधैः । अथगुणाः ॥ सिन्दूरउष्णोवीसर्पकुष्ठकण्डूविषापहः । भग्नसन्धानजननो व्रणशोधनरोपणम् ॥ ७७ ॥

सिंदूरका शोधन और गुण ॥

दूध और खटाई के संयोगसे सिंदूरशुद्ध होताहै शुद्धसिंदूर उष्ण टूटेको जोडनेवाला घावका शोधक और भरनेवाला और वीसर्प कुष्ठ खुजली तथा विप नाशकहोताहै ॥ ७७ ॥

अथ शिलाजतुनःशोधनमाह तत्रशोधनायोग्यशिलाजतुमाह ॥

गोमूत्रगन्धवत्कृष्णंस्निग्धंमृदुतथागुरु ॥ तिक्तंकषायंशीतञ्चसर्वश्रेष्ठंतदायसम् । (आयसम्अयसउपधातुः) विन्ध्यादौवहुलंतन्तुतत्रलोहंयतोऽधिकम् । तच्छोधनमृते व्यर्थमनेकमलमेलनात् । शिलाजतुसमानीयसूक्ष्मंखण्डंविधायच ॥ निक्षिप्यात्युष्णपानीयेयामैकंस्थापयेत्सुधीः । मर्दयित्वाततोनीरंगृह्णीयाद्वस्त्रगालितम् ॥ स्थापयित्वाच मृत्पात्रेधारयेदातपेबुधः । उपरिस्थंघनंयत्स्यात्तत्क्षिपेदन्यपात्रके । एवंपुन.पुनर्नीतंद्विमासाभ्यांशिलाजतु ॥ भवेत्कार्य्यक्षमंवह्नौक्षिप्तंलिङ्गोपमम्भवेत्। निर्धूमश्चततःशुद्धंसर्वकर्मसुयोजयेत् ॥ अथान्यप्रकारः । तत्रप्रथमतरतस्यवहिर्मलमपाकर्त्तुकेवलजलेनप्रक्षालनं कर्त्तव्यं । ततस्तदन्तर्गतमृत्तिकासिकतादिदोषदूरीकरणायवक्ष्यमाणक्वाथेनतत्रभावना देया (तदाहवाग्भटः) व्याधिव्याधितसात्म्यंसमनुसरन्भावयेदयःपात्रे । प्राक्केवले

लधोतंशुष्कंक्काथैस्ततोभाव्यम्॥तुल्यंगिरिजेनजलेवसुगुणितेभावनौषधंक्काथ्यम्।तत्क्काथेपादांशेपूतोष्णेप्रक्षिपेद्गिरिजम्। तत्समरसताप्रातंसशुष्कंप्रक्षिपेद्रसे। भूयःस्वैःस्वैरेवंक्काथैर्भाव्यंवारान्भवेत्सप्त॥ अथास्निग्धस्यशुद्धस्यघृतंतिक्तकसाधितम्। त्र्यहंयुञ्जीत गिरिजमेकैकेनतथात्र्यहम्॥ फलत्रयस्ययूपेणपटोल्यांमधुकस्यच। शिलाजमेवंदेहस्य भवन्त्यत्युपकारकम्॥ ७८॥

शिलाजीतका शोधन और शोधने के योग्य शिलाजीत॥

गोमूत्र कीसी गन्धवाले कृष्णवर्ण स्निग्ध कोमल भारी तिक्त कषैला और शीतल शिलाजीत सब से श्रेष्ठ होताहै शिलाजीत विन्ध्य आदि पर्वतों में लोहेकी अधिकताके कारण बहुत उत्पन्न होताहै यह शोधन के विना व्यर्थ है क्योंकि उसमें अनेक मल मिले रहते हैं शिलाजीत के छोटे२ टुकडे करके एकपहरतक गरमजल में भिगोवें फिर मलकर उसपानी को कपड़े में छानले और मृत्तिका के पात्र में भरकर धूप में रक्खे उसके ऊपर जमेहुये घने भागको दूसरे पात्रमें रक्खे इसप्रकार दो महीने में बारम्बार करनेसे शिलाजीत शुद्धहोताहै शिलाजीत अग्निमें जलनेसे लिंगके समान और धूमरहित होयतो शुद्ध जानकर सम्पूर्ण कार्योंमें व्यवहारकरे दूसराप्रकार शिलाजीत को बाहरके मल के दूरकरने के लिये प्रथम केवल जल से धोवे फिर उसके भीतरी मृत्तिका और बालू आदिदोषों के दूर करने को आगे कहेहुये क्काथसे भावनादे और वाग्भटनेभी ऐसाही कहाहै कि रोगीके सात्म्य [स्वभाव] को देखकर पहले शिलाजीत को केवल जलसे धोकर सुखावे और क्काथ के द्वारा लोहे के पात्र में भावना दे शिलाजीत के समानक्काथ की औषधों को लेकर अठगुने पानीमें पाककरे फिर चतुर्थांश रहजाने पर उसको छानकर उसमें शिलाजीत छोड़े फिर क्काथ में मिलजाने परसुखाके दूसरी बार रसमें छोडे इसप्रकार वारंवार सम्पूर्ण क्काथों से सात २ भावनादे फिरतिक्त वस्तुओंसे बनाये हुये घृत में तीनदिन भिजोवे इसके उपरांत तीनदिन त्रिफलाके क्काथ में तीन दिन परवल के क्काथमें और तीन दिन मुलहठीके क्काथमें भिगोवे इसप्रकारसे बनकर शिलाजीत शरीरको अत्यन्त उपकारी होता है॥ ७८॥ क्काथद्रव्याणिभावानापलञ्चाहहारीतः॥

लोहस्थितंनिम्बगुडूचिसर्पिर्यवैर्यथावत्परिभावयेत्तत्। सन्तानिकाकीटपतङ्गदंशदुष्टौषधीदोषनिवारणाय॥सन्तानिकातद्बहिःसंलग्नमृत्तिकादिमयी। एवंभावनांदत्त्वासं शोष्यकेवलेनजलेनशोधनंकर्त्तव्यम्॥(तत्प्रकारमाहअग्निवेशः) उष्णेचकालेरवितापयुक्तेव्यभ्रेनिवातेसमभूमिभागे। चत्वारिपात्राण्ययितामसानिन्यस्यातपेतत्रकृतावधानः॥ शिलाजतुश्रेष्ठमवाप्यपात्रेप्रक्षिप्यतस्माद्द्विगुणञ्चतोयम्। उष्णंतदर्द्धकथितञ्चदत्त्वाविशोधयेत्तंमृदितंयथावत्॥ ततस्तुयत्कृष्णमुपैतिचोर्ध्वंसन्तानिकावद्रविरश्मितप्तम्। पात्रेतदन्यत्रततोनिदध्यात्तत्रापरंकोष्णंजलंक्षिपेच्च॥पुनश्चतस्मादपरत्रपात्रेपश्चाच्चपात्रादपरत्रभूयः। यदाविशुद्धंजलमेवमूर्ध्वंकृष्णंसमस्तंमलमेत्यधस्तात्॥ तदात्यजेत्तत्सलिलंमलञ्चशिलाजतुस्याज्जलशुद्धमेवम्॥ ७९॥

हरीतकी कहीहुई क्काथकी वस्तु और भावना काफल॥

* नींब गिलोय और जवोंके क्काथसे शिलाजीतमें मृत्तिका आदिक बाहरके मैल कीट पतंगों केकाटने

से उत्पन्नहुये दोष और दोषयुक्त औषधियों के संयोग से उत्पन्न हुये दोष के निवृत्त करने के लिये भावना देकर सुखावे और फिर केवल जलसे धोवे अग्निवेशने कहा है कि मेघोंसे और वायु से रहित धूपयुक्त ग्रीष्म ऋतु के दिनोंमें चारकाले रंग वाले लोहे के पात्र,समतल की पृथ्वीपर धूप में रक्खे फिर उत्तम शिलाजीत को लेकर एक पात्र में रक्खे उसमें दूना गरमजल और आधा भाग क्वाथ डालकर मल करके शुद्ध करे फिर धूप में धरे२ जबउसपर काली मलाई सी पड़जाय तोउसको दूसरे पात्र में रखदे और गरमजल छोड़ कर धूप में रखदे फिर उसीप्रकार मलाई सी पड़जानेपर अन्यपात्र में रक्खे इसप्रकार वारम्वार करने से जबऊपर निर्मल जल आजाय और सम्पूर्ण काला मैलनीचे बैठजाय तब उसजल और मैलको फेंकदे इस प्रकार शिलाजीत केवल जल से शुद्ध होजाती है ॥ ७९ ॥ एवंशोधितस्यशिलाजतुनोगुणानाह ॥

शिलाजतुस्मृतंतिक्तंकटूष्णंकटुपाकिच । रसायनंयोगवाहिश्लेष्ममेहाश्मशर्करा ॥ मूत्रकृच्छ्रंक्षयंश्वासंशोथमर्शांसिपाण्डुताम् । वातरक्तंतथाकुष्ठमपस्मारोदरंहरेत् ॥ ८० ॥

शुद्ध शिलाजीत के गुण ॥

शुद्ध शिलाजीत तिक्त कटु उष्ण पाक में कटु रसायन योगवाही और कफ प्रमेह पथरी शर्करा मूत्रकृच्छ्र क्षय श्वास सूजन ववासीर पांडु वातरक्त कुष्ठ मृगी तथा उदरनाशक होती है ॥ ८० ॥

अथ रसस्यशोधनविधिः । तत्रस्वेदनम् ॥

नानाधान्यैर्यथाप्राप्तैस्तुपवर्जैर्जलान्वितैः। मृद्भाण्डंपूरितंरक्षेद्यावदम्लत्वमाप्नुयात् ॥ तन्मध्येभृङ्गरामुण्डीविष्णुक्रान्तापुनर्नवा । मीनाक्षीचैवसर्पाक्षीसहदेवीशतावरी ॥ त्रिफलागिरिकर्णीचहंसपादीचचित्रकम्। समूलंकुट्टयित्वातुयथालाभंविनिःक्षिपेत् ॥ पूर्वाम्लभाण्डमध्येतुधान्याम्लकमिदंस्मृतम् । स्वेनादिपुसर्वत्ररसराजस्ययोजयेत् ॥ विष्णुक्रान्तागिरिकर्णीचअपराजितेवश्वेतनीलपुष्पभेदात् । अत्यम्लमारनालंवातदभावेप्रयोजयेत् (तदभावेधान्याम्लाभावे) त्र्यूषणंलवणंजाजीरजनीत्रिफलार्द्रकम्। महाबलानागबलामेघनादःपुनर्नवा ॥ मेषशृङ्गीचित्रकञ्च नवसारंसमंसमम् । एतत्समस्तंवापूर्वाम्लेनैवपेषयेत् ॥ प्रालेप्येत्तेनकल्केनवस्त्रमंगुलमात्रकम् ।तन्मध्येनिःक्षिपेत्सूतंबद्ध्वातत्त्रिदिनंपचेत् ॥ दोलायन्त्रेऽम्लसंयुक्तेजायतेस्वेदितोरसः । मेघनादःचवराई शाक विशेषः। मेषशृङ्गी मेढ़ाशृंगी । तदलाभेकर्कट शृंगीग्राह्या । नवसारं। नवसादरं । अन्यच्च । मूलकानलसिन्धूत्थत्र्यूषणार्द्रकराजिका । रसस्यषोड़शांशेनद्रव्यंयुञ्ज्यात्पृथक्पृथक्द्रवेष्वनुक्तमानेषुमतंमानमितंवुधैः ॥ पट्टाद्वनेपुचैतेषुसूतंप्रक्षिप्यकाञ्जिके ॥ स्वेदयेद्दिनमेकञ्चदोलायन्त्रेणवुद्धिमान् । स्वेदात्तीव्रोभवेत्सूतोमर्दनाच्चसुनिर्मलः ।. मूलकमुरई अनलश्चित्रकम् ॥ त्र्यूषणंत्रिकटुराजिकाराई ॥ ८१ ॥

पारे का शोधन । प्रथम स्वेदन ॥

जहांतक मिलसके वहांतक भूसी रहित अनेक प्रकारोंके धान्योंको लेकर मृत्तिका के पात्र में जल से भिगोवे फिर खटाई आजाने पर भँगरा गोरखमुण्डी विष्णुक्रान्ता पुनर्नवा मछेछी नागफनी

सहदेई सतावर त्रिफला नीले फूल की विष्णुक्रान्ता और चीता इन सब पदार्थोंको जहां तक मिल सकें जड़ समेत कूटकर उसी पात्र में छोड़े इसको धान्याम्ल कहते हैं और जो धान्याम्ल न मिले तो बहुत खट्टे आर्नाल को काम में लावे यही धान्याम्ल पारे के स्वेदनआदि सब कार्यों में व्यवहार किया जाता है ॥ सोंठि मिर्च पीपल सेंधानोन राई हल्दी हड़ बहेड़ा आंवला अदरक बरियारा गुलसकरी चौराई पुनर्नवा मेढ़ासिंगी चीता और नौसादर यह सम्पूर्ण वस्तु सम भाग लेकर इकट्ठे अथवा अलग अलग धान्याम्ल में पीसे इसी कल्क से वस्त्र के ऊपर एक अंगुल मोटा लेप करे और उस में पारा रख के बांध कर तीन दिन तक किसी पात्र में खटाई भरकर दोला यंत्र में पाक करे इस प्रकार से पारे का स्वेदन होता है ऊपर कहीहुई औषधियों में मेढ़ासिंगी के अभाव में काकड़ासिंगी लेनीचाहिये (दूसराप्रकार) मूली चीता सेंधानोन सोंठि मिर्च पीपल अदरक और राई यह सम्पूर्ण औषध प्रत्येक पारे के सोलहवें हिस्से लेकर जहां कोई ठीक ठीक परिमाण नहीं कहा हुआ हो वहां सम प्रमाण लेना चाहिये फिर किसी कपड़े में यह सब औषध और पारे को बांधकर कांजी में छोड़े और एक दिन दोलायंत्र में पाक करे स्वेदन से पारा तीव्र और मर्दन से निर्बल होता है ॥ ८१ ॥

अथमर्दनम् ॥

इष्टिकाचूर्णचूर्णाभ्यामार्दोमर्योरसस्ततः । दध्नागुड़ेनसिन्धूत्थराजिकागृहधूमकैः ॥ अन्यच्च । कुमारिकाचित्रकरक्तसर्पपैःकृतैः कषायैर्वृहतीविमिश्रितैः । फलत्रिकेणापिविमर्दितोरसोदिनत्रयंसर्वमलैर्विमुच्यते ॥ ८२ ॥

मर्दनकी विधि ॥

सुरखी और चूनेसे पारे को मलकर दही गुड़ सेंधानोन राई और घरके धुयें से मर्दनकरे अथवा घीगुआर चीता लाल सरसों भटकटैया और त्रिफला के काढ़े से तीन दिन तक मर्दन किया हुआ पारा सम्पूर्ण मलों से अलग हो जाता है ॥ ८२ ॥

अथमूर्च्छनम् ॥

त्र्यूपणंत्रिफलावन्ध्याकन्दैःक्षुद्राद्वयान्वितैः ॥ चित्रकोर्णानिशाक्षारकन्यार्ककनकद्रवैः । सूतंकृतेनयूषेणवारान्सप्ताभिमर्दयेत् । इत्थंसंमूर्च्छितःसूतस्त्यजरसप्तापिकञ्चुकात् । वन्ध्याकन्दःवांझखेखसाकन्दःक्षुद्राद्वयंछोटीकटाईबड़ीकटाई । उर्णा । उर्ण मेपका । निशाहरिद्राक्षारः यवक्षारःकन्याकुमारिकाअर्कपत्ररसः । कनकधत्तूरपत्ररसः ॥ ८३ ॥

पारे का मूर्च्छन ॥

सोंठ पीपल मिर्च हड़ बहेड़ा आंवला बांझखेखसा दोनों भटकटैया चीता ऊन हल्दी जवाखार घीगुआर आक के पत्तों का और धतूरे के पत्तोंका रस इन सब के काढ़े में सातबार पारे को मर्दनकरे इस रीति से मूर्च्छित हुआ पारा सात केंचुलों को छोड़ता है ॥ ८३ ॥

अथोर्द्ध्वपातनम् ॥

मयूरग्रीवताप्याभ्यान्नष्टपिष्टीकृतस्यचायन्त्रेविद्याधरेकुर्याद्रसेन्द्रस्योर्द्ध्वपातनम् ॥ ताप्यमृसुवर्णमाखी । नष्टपिष्टीकृतस्य ॥ कुमारिकाद्रवयोगेनतावन्मर्दनं कर्त्तव्यंयावत्पारदः पृथक्नदृश्यतइत्यर्थः । विद्याधरयन्त्रेडमरुयन्त्रे ॥ ८४ ॥

पारे का ऊर्ध्वपातन ॥

तृतिया सोनामक्खी और घीगुआर के रस से पारेको इतना रगड़े कि वह अलग नहीं दिखलाई पड़े फिर विद्याधर यंत्र में पारे को उड़ावे ॥ ८४ ॥

अथाधः पातनम् ॥

त्रिफलाशिग्रुशिखिभिर्लवणानुरिसंयुतेः।नष्टपिष्टंरसंकृत्वालेपयेदूर्ध्वभाजनम्॥ ततोदीप्तैरधःपातमुपलैस्तस्यकारयेत्। यन्त्रेभूधरसंज्ञेतुततःसूतोविशुध्यति ॥ स्वेदनादिक्रियाभिस्तुशोधितोऽसौयदाभवेत । तदाकार्याणिकुरुतेप्रयोज्यःसर्वकर्मसु ॥ ८५ ॥

पारे का नीचे गिराना ॥

हड़ बहेड़ा आंवला सहँजना चीता सेंधानोन और राई इन वस्तुओं से पारे को खूब रगड़ कर ऊपर के पात्रमें लेप करदे और भूधर यंत्र में कण्डों की आंच देकर नीचे गिरावे इस रीति से भी पारा शुद्ध होता है स्वेदन आदिक क्रियाओंसे शुद्धपारा सम्पूर्ण कार्योंके लिये योग्य होता है ॥ ८५ ॥

अथ मुख्यदोपहरःशोधनविधिः ॥

गृहकन्याहरतिमलंत्रिफलाग्निंचित्रकोविषंहन्ति । तस्मादेभिर्मिश्रैर्वारान्संमूर्च्छयेत्सप्त ॥ ८६ ॥ मुख्य दोष की नाश करनेवाली शोधन की विधि ॥

पारे के मल को घीगुआर अग्नि दोष को त्रिफला और विष दोष को चीता नाशकरता है इसलिये इन सम्पूर्ण वस्तुओं से पारेको सात बार मूर्च्छित करना चाहिये ॥ ८६ ॥

अथ सर्वदोपहरःसंक्षिप्तशोधनविधिः ॥

कुमारिकाचित्रकरक्तसर्षपैःकृतःकषायैर्बृहतीविमिश्रितैः । फलत्रिकेणापिविमर्दितोरसोदिनत्रयंसर्वमलैर्विमुच्यते ॥ ८७ ॥

सर्व दोष नाशक संक्षिप्त शोधन की विधि ॥

घीगुआर चीता लाल सरसों भटकटैया और त्रिफला इनके क्वाथ से तीन दिन तक मर्दन करने से पारे के सम्पूर्ण मल छूट जाते हैं ॥ ८७ ॥

कुमार्याचनिशाचूर्णैर्दिनंसूतंविमर्दयेत्। एवंकदर्थितःसूतोषण्ढोभवतिनिश्चितम्॥ ब्रह्मौषधीकषायेणस्वेदितःसबलोभवेत् । सर्पाक्षीचिञ्चिकावन्ध्यामृङ्गाब्दैःस्वेदितोभलीततःसपावकद्रावैःस्विन्नःस्याद्दतिदीप्तिमान् । सर्पाक्षी । नाराकर्णीचिञ्चिकाअम्लिलोयन्ध्यावांभःखिलसामृङ्गःभृंगराजः । अब्दोमुस्तापावकःचित्रकम्॥ ८८ ॥

घीगुआर और हल्दी के चूर्ण से एकदिन मर्दन किया गया पारा निस्सन्देह नपुंसक होजाता है फिर बहुत औषधियों के क्वाथ से स्वेदन किया गया बलवान् होजाता है नागफनी इमली बांझ खेखसा भांगरा और नागरमोथा इन औषधियों के द्वारा स्वेदन करने से पारा बली होता है और चीते के रस से स्वेदन किया हुआ पारा अत्यन्त दीप्तिमान् होता है ॥ ८८ ॥

अथरसस्यमारणविधिः ॥

धूमसारंरसंतोरीगन्धकंनवसादरम्।यामैकंमर्दयेदम्लैर्भागंकृत्वासमंसमम्॥ काचकूप्यांविनिक्षिप्यतांचमृद्वस्त्रमुद्रया। विलिप्यपरितोवक्त्रेमुद्रान्दत्त्वाविशोषयेत् ॥ अधः

सच्छिद्रपिठरीमध्येकूपींनिवेशयेत् । पिठरींवालुकापूरैर्भृत्वाचाकूपिकागलम् ॥ निवेश्यचुल्यांतदधोवह्निंकुर्याच्छनैःशनैः । तस्मादप्यधिकंकिञ्चित्पावकंज्वालयेत्क्रमात्॥ एवंद्वादशभिर्यामैर्म्रियतेरसउत्तमः । स्फोटयेत्स्वाङ्गशीतंतमूर्द्ध्वगंगन्धकंत्यजेत् ॥ अधस्थञ्च मृतंसूतंगृह्णीयात्तन्तुमात्रया ॥ यथोचितानुपानेनसर्वकर्मसुयोजयेत् ॥ ८९ ॥

पारे की मारण विधि ॥

शुद्ध पारा गन्धक और नौसादर इनसब वस्तुओं को समभाग लेकर एकपहर खटाई में घोटेफिर इनऔषधियोंको शीशी में रखकर कपड़ौटी करे और धूपमें सुखावे फिर किसी हाँड़ी के बीच में छेद करके उसमें शीशी रक्खे और उस हाँड़ी में शीशी के गलेतक बालू भरदे फिरइस हाँड़ी को चूल्हेके ऊपर चढ़ाकर नीचे मन्दी२ अग्नि जलावे और धीरे२ अग्नि तेजकरता जाय इसप्रकार बारहपहर में पारा भस्म होता है फिर शीतल होजाने पर शीशी फोड़ कर ऊपर की गन्धक को छोड़ करनीचे स्थित हुई पारेकी भस्म को लेले और इसे यथायोग्यअनुपानके साथ संबकार्योंमें व्यवहारकरे ॥ ८९॥

अथान्यप्रकारः ॥

अपामार्गस्यबीजानांमूषायुग्मंप्रकल्पयेत् । तत्संपुटेक्षिपेत्सूतंमलयूदुग्धमिश्रितम्॥ (मलयूकाष्ठोदुम्बरिका) द्रोणपुष्पीप्रसूनानिविडंगमरिमेदकः । एतच्चूर्णमधश्चोद्र्ध्वं दत्त्वामुद्रांप्रदीयते ॥ तद्गोलंस्थापयेत्सम्यक्मृन्मूषासंपुटेपचेत् । एवमेवपुटेनैव सूत कम्भस्मजायते ॥ तत्प्रयोज्यंयथास्थानेयथामात्रंयथाविधि ॥ ९० ॥

अथान्यप्रकार ॥

लटजीरेकेबीजों से दोघड़िया बनावे उन के संपुट में कठिया गूलर के दूध से घुटेहुए पारेको रक्खे फिर गूमाके फूल वायविड़ंग और दुर्गन्धित खैरके चूर्णको घड़ियोंके ऊपर और नीचे लपेटकर और बंदकरके माटी की घड़ियाओं में रक्खे और पुटपाक करे इसप्रकार पुट देने से पारा भस्म होताहै योग्यस्थान में मात्रा के अनुसार विधि पूर्व्वक इस का व्यवहार करना चाहिये ॥९०॥

अथान्यप्रकारः ॥

काष्ठोदुम्बरिकादुग्धैरसंकिञ्चिद्विमर्दयेत् । तद्दुग्धघृष्टहिंगोश्चमूषायुग्मंप्रकल्पयेत् ॥ क्षिप्त्वातत्संपुटेसूतंतत्रमुद्रांप्रदापयेत् । धृत्वातद्गोलकं प्राज्ञोमृन्मूषासंपुटेऽधिके॥९१ ॥

अथान्यप्रकार ॥

कठियागूलर के दूध में पारे को कुछ घोटकर कठियागूलर के दूध से हींग को पीस कर बनाई हुई घड़ियाओं में रक्खे और उस संपुटको बन्दकरदे और इस गोले को मट्टी की घड़ियाओं में रखकर गज पुट में पाककरे इस रीति से पारा भस्म होताहै ॥ ९१ ॥

अन्यप्रकार ॥

नागवल्लीरसैर्घृष्टः कर्कोटीकंदगर्भितः।मृन्मूषासंपुटेपक्वःसूतोयात्येवभस्मताम्॥९२ ॥

अन्यप्रकार ॥

पान के रसमें घुटे हुए पारेको ककड़ी की जड़के भीतर भर के मट्टीकी घड़ियाओं केसंपुट में पाक करने से पारा भस्म होताहै ॥ ९२ ॥

अथ कर्पूररसस्यविधिः ॥

तत्रपारदस्यसंक्षिप्तं शोधनंकर्त्तव्यं। शुद्धसूतसमंकुर्यात्प्रत्येकंगौरिकंसुधीः। इष्टिका खटिकांतद्वत्स्फटिकां सिन्धुजन्मच ॥ वल्मीकंक्षारलवणंभाण्डरञ्जकमृत्तिकाम्। सर्वा एयेतानिसञ्चूर्ण्यवाससाचापिशोधयेत् ॥ खटिकाखरी। स्फटिकाफटकरीसिन्धुजन्म। सैन्धवम्। वल्मीकम्ववडरक्षारलवणम्। खारीनोनभाण्डरञ्जकमृत्तिका। काविसा। एभिश्चूर्णैर्युतंसूतं यावद्यामंविमर्दयेत्। तच्चूर्णसहितंसूतंस्थालीमध्येपरिक्षिपेत् ॥ तस्या स्थाल्यामुखेस्थालीमपरांधारयेत्समाम्। सवस्त्रकुट्टितमृदामुद्रयेदनयोर्मुखम् ॥ संशोष्य मुद्रयेद्भूयो भूयःसंशोष्यमुद्रयेत्। सम्यग्विशोष्यमुद्रांतांस्थालींचुह्यांविधारयेत् ॥ अग्निंनिरन्तरंदद्याद्यावद्दिनचतुष्टयम्। अङ्गारोपरितद्यन्त्रंरक्षेद्यत्नादहर्निशम् ॥ शनै रुद्घाटयद्यन्त्रमूर्ध्वस्थालीगतंरसम्। कर्पूरवत्सुविमलंगृह्णीयाद्गुणवत्तरम् ॥ तदेव कुसुमचन्दनकस्तूरीकुङ्कुमैर्युतम्। खादन्हरतिफिरंगव्याधिंसोपद्रवंसपदि ॥ विन्दति वह्निर्दीप्तिंपुष्टिवीर्यंबलंविपुलम्। रमयतिरमणीशतंकरसकर्पूरस्यसेवकःसततम् ॥ इति कर्पूररसः ॥ ९३ ॥

कपूर रस की विधि ॥

पारेको संक्षेप से शुद्धकरके गेरू ईंट खड़िया फिटकड़ी सेंधानोन वामी की मिट्टी खारी नोन खपरा यह प्रत्येक औषध पारेके समभाग लेकर चूर्णकर के छानले फिर इन चूर्णोंके साथ एकपहर पारे को रगड़कर इन चूर्णों समेत पारे को किसी वटले आदि में रखकर उसके ऊपर दूसरा वटला रक्खे और वस्त्र समेत कूटी हुई मिट्टी से उन दोनोंके मुखको बन्दकरके सुखाले इस प्रकारसे वारम्वार कपड़ौटी करे फिर सूख जाने पर उसको चूल्हे परचढ़ावे और चार दिनतक वरावर आगवाजता रहै और इस पात्रके अंगारों पर रक्खे हुये की यत्न पूर्व्वक रक्षाकरे फिर शीतल होजानेपर धीरे से यन्त्र को खोलकर ऊपरके वटलेमें स्थित कपूरके समान निर्मल अत्यन्त गुणकारी रसको ले ले लौंग चन्दन कस्तूरी और केशर के साथ इसका सेवन करने से शीघ्रही उपद्रव सहित फिरंग रोग नष्टहोता है और कपूर रसका सेवन करने वाला पुरुष अग्निकी दीप्ति शरीर की पुष्टता तथा बलवीर्य की वृद्धिको और सौ स्त्रियों के साथ रमणकी शक्तिको प्राप्त होताहै ॥ ९३ ॥

अथ सिन्दूररसः ॥

शुद्धसूतस्यगृह्णीयाद्भिषग्भागचतुष्टयम्। शुद्धगन्धस्यभागैकंतावत्कृत्रिमगन्धकम् ॥ अथवापारदस्यार्द्धंशुद्धगन्धकमेवहि। तयोःकज्जलिकांकुर्य्याद्दिनमेकंविमर्दयेत् ॥ मृत्तिकांवाससासार्द्धंकुट्टयेदतियत्नतः। तयावारत्रयंसम्यक्काचकूपींप्रलेपयेत् ॥ मृत्तिकांशोषयित्वातुकूप्यांकज्जलिकांक्षिपेत्। तांकूपींवालुकायन्त्रेस्थापयित्वारसंपचेत् ॥ अग्निंनिरन्तरं दद्याद्यावद्दिनचतुष्टयम्। गृह्णीयादूर्ध्वसंलग्नंसिन्दूरसदृशंरसम् ॥ इतिसिन्दूररसः ॥ ९४ ॥

सिंदूर रस ॥

चारभाग शोधाहुआ पारा एकभाग शुद्ध गन्धक और एकभाग कृत्रिम गन्धक अथवा पारे की आधी शुद्ध गन्धक मिलाकर एक दिन पारे और गन्धक की कजली करे फिर अच्छे प्रकार कूटीहुई



मिट्टीसे शीशी पर तीनबार कपड़ौटी करे और सूख जाने पर शीशी में कज्जली भरकर शीशी को वालुकायन्त्रमें चढ़ावे और चारदिनतक निरन्तर आगदेतारहे फिर शीतल होजानेपर शीशीके ऊपर लगेहुए सिन्दूरसमान रसको पोंछकरलेले ॥ ९४ ॥

एवंमारितस्यमूर्च्छितस्यपारदस्यगुणाः ॥

पारदःकृमिकुष्ठघ्नोजयदोदृष्टिकृत्सरः । मृत्युहृज्जमहावीर्य्योयोगवाहीज्वरापहः ॥ स्म स्योजोरूपदोवृष्योवृद्धिकृद्धातुवर्द्धनः । षण्डत्वनाशनःशूरःखेचरःसिद्धिदःपरः ॥ पारदः सकलरोगहास्मृतषड्रसोनिखिलयोगग्राहकः । पञ्चभूतमयएपकीर्तितस्तेनतद्गुणगणैर्वि राजते । रसामृतेयस्यरोगस्ययोयोगस्तेनैवसहयोजितः । रसेन्द्रोहन्तितंरोगंनरकुञ्जर वाजिनाम् ॥ ९५ ॥ इसप्रकार मारेहुए और मूर्छित पारेके गुण ॥

पारा कृमि और कुष्ठनाशक जयदायक दृष्टिकारी दस्तावर मृत्युनाशक अत्यन्त वीर्यवाला योग वाही वृद्धावस्था नाशक स्मृति तथा ओजवर्द्धक रूपको उत्तम करनेवाला कामियोंकोहित धातुवर्द्धक नपुंसकतानाशक शूरताकारी और आकाश गमनमें शक्ति तथा सिद्धिदेनेवालाहोताहै पारा संपूर्ण रोगोंका नाशक छः रसों से युक्त सबका योगवाही और पंचभूतात्माहोने से पांचों भूतोंके गुणों से युक्त होताहै रसामृतमेंकहाहै कि मनुष्य घोड़ा और हाथी इनके जिन २ रोगोंका जौन २ सायोगहै पारा उनयोगोंके साथ संपूर्ण रोगोंको नाश करताहै ॥ ९५ ॥

अथोपरसानां शोधनविधिः । तत्रहिंगुलस्य शोधनविधिः ॥

मेषीक्षीरेणदरदमम्लवर्गैश्चभावितम् । सप्तवारान्प्रयत्नेनशुद्धिमायातिनिश्चितम् ९६ ॥

उपरसोंका शोधन । सिंदरफका शोधन ॥

भेड़ीका दूध और अम्लवर्गकेद्वारा सातवार भावनादियाहुआ सिंदरफ निस्सन्देहशुद्धहोताहै ॥ ९६ ॥

एवंशोधितस्य हिंगुलस्यगुणाः ॥

तिक्तंकषायंकटुहिंगुलंस्यान्नेत्रामयघ्नंकफपित्तहारि । हृल्लासकण्डुज्वरकामलांश्चप्लीहा मवातौचगरंनिहन्ति ॥ ९७ ॥ सोधेहुए सिंदरफके गुण ॥

सिंदरफ तिक्त कषेला कटु और नेत्ररोग कफ मतली खुजली ज्वर कामला प्लीहा आमवात तथा गरदोष नाशकहोताहै ॥ ९७ ॥ अथ हिंगुलाद्रसाकर्षण विधिः ॥

निम्बूरसैर्निम्बपत्ररसैर्वायाममात्रकम् । घृष्ट्वादरदमूर्ध्वन्तुपातयेत्सूतयुक्तिवत् ॥ तत्रोर्ध्वपिठरीलग्नंगृह्णीयाद्रसमुत्तमम् । शुद्धमेवहितंसूतंसर्वकर्मसुयोजयेत् ॥ ९८ ॥

सिंदरफसे पारा निकालनेकी विधि ॥

निंबू अथवा नींबके पत्तों के रससे सिंदरफको एक पहर घोटकर कहीहुई विधिसे पारे के समान ऊर्ध्व पातन करे और ऊपरके पात्रमें लगेहुये पारेको लेले यहपारा शुद्धहितकारी और संपूर्णकार्यों में व्यवहार करने के योग्य होताहै ॥ ९८ ॥

अथ गन्धकस्याशुद्धस्यदोषमाह ॥

अशुद्धोगन्धकःकुर्यात्कुष्ठंपित्तरुजांभ्रमम् । हन्तिवीर्यंबलंरूपंतस्माच्छुद्धःप्रयुज्यते ॥

अशुद्ध गन्धकके दोष ॥

अशुद्ध गन्धक कुष्ठ पित्तरोग तथा भ्रमकारक और वीर्य वल तथा रूपनाशक होता है इससे शुद्ध गन्धक व्यवहार में लावे ॥ ९९ ॥

अथ शोधनविधिः ॥

लोहपात्रेविनिःक्षिप्यघृतमग्नौप्रतापयेत् । तप्तेघृतेतत्समानंक्षिपेद्गन्धकजंरजः ॥ विद्रुतंगन्धकंदृष्ट्वातनुवस्त्रेविनिःक्षिपेत् । यथावस्त्राद्विनिःसुत्यदुग्धमध्येऽखिलंपतेत्॥ए वंसगन्धकःशुद्धोसर्वकर्मोचितोभवेत् ॥ १०० ॥

गन्धक शुद्धकरने की विधि ॥

लोहेके पात्र में घीको गरम करके उसमें उसीके समान गन्धक का चूरा छोड़े फिर गन्धक को ढिघला हुआ जानकर किसी पतले कपड़े से दूधमें छानले इसप्रकार से शुद्धहुआ गन्धक सम्पूर्ण कार्यो के योग्य होता है ॥ १०० ॥

एवंशुद्धस्यगन्धकस्यगुणाः ॥

गन्धकःकटुकस्तिक्तोवीर्य्योष्णस्तुवरः सरः । पित्तलः कटुकः पाकेकण्डूवीसर्पजन्तु जित् ॥ हन्तिकुष्ठक्षयप्लीहकफवातान्रसायनम् ॥ १०१ ॥

शुद्धगन्धकके गुण ॥

गन्धक कटु तिक्त वीर्य में उष्ण कषैली दस्तावर पित्तवर्द्धक पाक में कटु और खुजलीवीसर्प कृमि कुष्ठ क्षय प्लीहा कफ तथा वात नाशक होताहै ॥ १०१ ॥

अथाभ्रकस्याशुद्धस्यदोषमाह ॥

पीड़ांविधत्तेविविधान्नराणांकुष्ठंक्षयंपाण्डुगदञ्चकुर्य्यात् । हृत्पार्श्वपीड़ाञ्चकरोत्य सह्यामशुद्धमभ्रंगुरुवह्निहस्स्यात् ॥ १०२ ॥

अशुद्ध अभ्रकके दोष ॥

अशुद्ध अभ्रक भारी अग्निनाशक और मनुष्योंको अनेक प्रकारकी पीडा कुष्ठ क्षय पांडु हृदयकी पीड़ा और पसलीकी अत्यन्त पीड़ाको करताहै ॥ १०२ ॥

अथाभ्रकस्यशोधन विधिमाह ॥

कृष्णाभ्रकंधमेद्वन्हौततःक्षीरेविनिःक्षिपेत्।भिन्नपत्रंतुतत्कृत्वातण्डुलीयाम्लयोर्द्रवैः ॥ भावयेदष्टयामंतदेवमभ्रंविशुद्ध्यति ॥ १०३ ॥

अभ्रकका शोधन ॥

काले अभ्रकको आगमें तपाकर दूधमें बुझावे फिर पत्रोंको अलग करके चौराई सागकेरस और खट्टे रसमें आठपहर भावनादे इसप्रकार अभ्रक शुद्ध होताहै ॥ १०३ ॥

अथ तस्यमारणम् ॥

कृत्वाधान्याभ्रकंतच्चशोषयित्वाथमर्दयेत् । अर्कक्षीरेर्दिनंखल्वेचक्राकारंचकारयेत् ॥ वेष्टयेदर्कपत्रैश्चसम्यग्गजपुटेपचेत् । पुनर्मर्द्यपुनःपाच्यंसप्तवारानपुनःपुनः ॥ ततोवट

जटाक्वाथैस्तद्वद्देयंपुटत्रयम् । म्रियतेनात्रसंदेहःप्रयोज्यंसर्वकर्मसु ॥ तुल्यंघृतंमृताभ्रेण लोहपात्रेविपाचयेत् । घृतेजीर्णेतदभ्रन्तुसर्वयोगेषुयोजयेत् ॥ १०४ ॥

अभ्रक मारनेकी विधि ॥

धान्याभ्रक बनायकर सुखाले और आकके दूधसे एकदिन खरलकरके टिकिया बनाले फिर आकके पत्तोंमें लपेटकर गजपुटमें पकावे इसीप्रकार सातवार घोट २ कर गजपुटमें पाककरे फिर बरगदकी जटाओंके क्वाथसे घोट २ कर तीनवार पुटपाककरे इसप्रकारसे निस्संदेह अभ्रक भस्म होजाताहै अभ्रककी भस्मकेसम भाग घी मिलाकर लोहेके पात्रमें पाककरे घीके जलजानेपर उस अभ्रकको सब कार्योंमें व्यवहारकरे ॥ १०४ ॥

अथ धान्याभ्रकस्याविधिः ॥

पादांशशालिसंयुक्तमभ्रंबध्वाथकम्बले । त्रिरात्रंस्थापयेन्नीरेतत्क्लिन्नंमर्दयेत्करैः ॥ कम्बलाद्गलितंसूक्ष्मंवालुकारहितञ्चयत् ॥ तद्धान्याभ्रमितिप्रोक्तमभ्रमारणसिद्धये १०५ ॥

धान्याभ्रककी विधि ॥

अभ्रकमें चौथाई शालिधान्य मिलाकर कंबलमें बांधे फिर तीनदिनतक पानीमें भिजोकर गीला होजानेपर हाथोंसे उसकोमले फिर वालूके समान जो अभ्रक उसकम्बलसे छने उसको धान्याभ्रक कहतेहैं इससे अभ्रकका मारना सिद्धहोताहै ॥ १०५ ॥

एवंमारितस्याभ्रकस्यगुणाः ॥

अभ्रंकषायंमधुरंसुशीतमायुष्करन्धातुविवर्द्धनञ्च । हन्यात्त्रिदोषंव्रणमेहकुष्ठंप्लीहोदरं ग्रन्थिविषकृमींश्च ॥ रोगान्हन्तिदृढयतिवपुर्वीर्य्यवृद्धिंविधत्ते तारुण्याढ्यंरमयतिशतं योषितांनित्यमेव ॥ दीर्घायुष्कान्जनयतिसुतान्सिंहतुल्यप्रभावान् । मृत्योर्भीतिंहरति सुतरांसेव्यमानंमृताभ्रम् ॥ १०६ ॥

अभ्रककी भस्मके गुण ॥

अभ्रक कषैला मधुर शीतल आयुकारी धातुवर्द्धक और त्रिदोष घाव प्रमेह कुष्ठ प्लीहा उदर ग्रन्थि विष तथा कृमिनाशकहोताहै अभ्रककी भस्मकेसेवनसे रोगोंकानाश शरीरकी पुष्टता तरुण सौस्त्रीके भोगनेकी शक्ति सिंहकेतुल्य पराक्रमवाले दीर्घायु पुत्रोंके उत्पन्नकरनेकी सामर्थ्य और मृत्युके भय का नाशहोताहै ॥ १०६ ॥ अथ तालकस्याशुद्धस्यदोषमाह ॥

अशुद्धंतालमायुर्हृत्कफमारुतमेहकृत् । तापस्फोटाङ्गसङ्कोचंकुरुतेतेनशोधयेत् १०७॥

अशुद्ध हरतालके दोष ॥

अशुद्ध हरताल आयुनाशक और कफ वात प्रमेह ताप विस्फोटक तथा अंग संकोचकारीहोत इसलिये इसको शुद्धकरना चाहिये ॥ १०७ ॥

अथ तालस्यशोधनमाह ॥

तालकंकणशःकृत्वातच्चूर्णंकाञ्जिकेपचेत् । दोलायंत्रेणयामैकंततःकूष्माण्डजद्रवैः ॥ तिलतैलेपचेद्यामंयामञ्चत्रिफलाजले । एवंयंत्रेचतुर्यामंपक्वंशुद्ध्यतितालकम् ॥ १०८ ॥

हरतालका शोधन ॥

हरतालको चूर्णकरके दोलायन्त्रकेद्वारा कांजी कुम्हढ़ेकारस तिलकातेल और त्रिफलाके काथमें पहर २ भर पाककरे इसप्रकार चारपहर पाककरनेसे हरताल शुद्धहोताहै ॥ १०८ ॥

अथ तालस्यमारणविधिः ॥

सदलंतालकंशुद्धंपौनर्नवरसेनतु । खल्वेविमर्दयेदेकंदिनंपश्चाद्विशोषयेत् ॥ ततः पुनर्नवाक्षारैःस्थाल्यामर्द्धप्रपूरयेत् । तत्रतद्गोलकंधृत्वापुनस्तेनैवपूरयेत् ॥ आकण्ठंपिठरंतस्यापिधानंधारयेन्मुखे । स्थालीचुल्यांसमारोप्यक्रमाद्वह्निविवर्द्धयेत्॥दिनान्यन्तरशून्यानिपञ्चवह्निंप्रदापयेत् । एवंतन्म्रियतेतालंमात्रातस्यैकरक्तिका ॥ अनुपानान्यनेकानियथायोग्यंप्रयोजयेत् ॥ १०९ ॥

हरतालकी मारण विधि ॥

शुद्ध तबकिया हरतालको पुनर्नवाके रसमें एक दिन खरलकरके सुखावे फिर किसी बटलेमें आधीदूरतक पुनर्नवाके खारकोभरके उसमें उसहरतालके गोलेकोरक्खे और उसके ऊपर पुनर्नवाका खार ऊपरतक (गलेतक) भरदे फिर सकोरे आदिसे बटलेके मुखको बन्दकरके चूल्हेके ऊपरचढ़ाकर अग्निबलाकर क्रम २ से बढ़ाताजाय इसप्रकार निरन्तर पाककरनेसे हरतालकी भस्महोतीहै इसकी मात्रा एकरत्तीकी होतीहै और अनुपान यथा योग्य विचारके अनेक प्रकारसे व्यवहारकरे ॥ १०९ ॥

एवंशोधितस्यमारितस्यतालकस्यगुणाः ॥

हरितालंकटुस्निग्धंकषायोष्णंहरेद्विषम् । कण्डूकुष्ठास्यरोगास्रकफपित्तकचव्रणान् ॥ अन्यच्चतालकंहरतेरोगान्कुष्ठमृत्युज्वरापहम् । शोधितंकुरुतेकान्तिंवीर्य्यवृद्धिंतथायुषम् ॥ ११० ॥

हरतालकी भस्मके गुण ॥

हरताल कटु स्निग्ध कषैली उष्ण और विष,खुजली कुष्ठ मुखरोग रक्तदोष कफ पित्त तथाकेशोंके घावका नाशकहोता है औरभी कहागयाहै कि शुद्ध हरताल कुष्ठ आदि रोग मृत्यु तथा वृद्धावस्था नाशक और कान्ति वीर्यकी वृद्धि और आयुकारक होताहै ॥ ११० ॥

अथ मनःशिलायाअशुद्धायादोषमाह ॥

तालकस्यैवभेदोऽस्तिमनोगुप्तस्तदन्तरम् । तालकंत्वतिपीतंस्याद्भवेद्रक्तामनःशिला ॥ मनःशिलामन्दबलंकरोतिजन्तुंध्रुवंशोधनमन्तरेण । मलस्यबन्धंकिलमूत्ररोधंसशर्करंकृच्छ्रगदञ्चकुर्यात् ॥ १११ ॥

अशुद्ध मैनशिल के दोष ॥

मैनशिल हरतालका भेदमात्रहै विशेषता यहहै कि हरताल पीला और मैनशिल लालहोताहै अशुद्ध मैनशिल बलकी घटाने वाली कृमिकारक मल मूत्र की रोधक और शर्करा सहित मूत्रकृच्छ्रकारी होतीहै ॥ १११ ॥

अथतच्छोधनविधिः ॥

पचेत्त्र्यहमजामूत्रे दोलायन्त्रेमनःशिलाम् । भावयेत्तत्सप्तधापित्ते रजायाःसाविशुद्ध्यति ॥ ११२ ॥

मैनशिल का शोधन ॥

मैनशिल को तीनदिन तक बकरे के मूत्र में दोलायन्त्रसे पकाकर बकरे के पित्तेसे सातवार भावनादे इसरीतिसे मैनशिल शुद्धहोतीहै ॥ ११२ ॥

एवंशोधितायामनःशिलायागुणानाह ॥

मनःशिलागुरुर्वर्ण्यासरोष्णालेखनीकटुः । तिक्तास्निग्धाविषश्वासकासभूतविषास्रनुत् ॥ ११३ ॥

शुद्ध मैनशिल के गुण ॥

शुद्ध मैनशिल भारी वर्ण को हित दस्तावर उष्ण लेखन कटुतिक्त स्निग्ध और विष श्वास खांसी भूतावेश कफ तथा रक्त दोष नाशक होती है ॥ ११३ ॥

अथ खर्परस्तुत्थभेदस्तस्यशोधनविधिः ॥

नरमूत्रेचगोमूत्रेसप्ताहंरसकम्पचेत्।दोलायंत्रेणशुद्ध स्यात्ततःकार्य्येषुयोजयेत्॥ ११४ ॥

तूतियाका भेद खपरियाका शोधन ॥

नरमूत्र और गोमूत्र में सातवार दोलायंत्रके द्वारा खपरियाको पाककरे इस प्रकारसे शुद्धहुई खपरिया सब कार्योंके योग्य होती है ॥ ११४ ॥

अथ तस्यगुणाः ॥

खर्परंकटुकंक्षारंकषायंवामकंलघु । लेखनंभेदनंशीतंचक्षुष्यंकफपित्तहृत् ॥ विषाश्मकुष्ठकण्डूनांनाशनंपरमंमतम् ॥ ११५ ॥

खपरियांके गुण ॥

खपरिया कटु खारी कषेली छर्दिकारक हलकी लेखन भेदक शीतल नेत्रोंको हित और कफ पित्त विष पथरी कुष्ठ तथा खुजली नाशक होती है ॥ ११५ ॥

अथ सर्वोपरसानांसाधारणशोधन विधिः ॥

सूर्य्यावर्त्तोवज्रकंदःकदलीदेवदालिका। शिग्रुःकोशातकीवन्ध्याकाकमाचीचवालकम्॥ एषामेकरसेनैवत्रिक्षारैर्लवणैःसह । भावयेदम्लवर्गैश्चदिनमेकंप्रयत्नतः ॥ ततःपचेच्च तद्द्रवैर्दोलायन्त्रेदिनंसुधीः । एवंशुद्ध्यन्तितेसर्वेप्रोक्ताउपरसाहिये ॥ विशेषश्च । कंकुष्ठं गैरिकंशङ्खःकासीसंटङ्कणंतथा । नीलाञ्जनंशुक्तिभेदाःक्षुल्लकाःसवराटकाः ॥ जम्बीरवारिणास्विन्नाःक्षालिताःकोष्णवारिणा ॥ शुद्धिमायान्त्यमीयोज्याभिषग्भिर्योगसिद्धये । एवंशोधितानामुपरसानांपृथग्गुणागुणग्रन्थेद्रष्टव्याः ॥ ११६ ॥

सम्पूर्ण उपरसोंकी साधारण शोधन विधि ॥

सूर्यावर्त्त वज्रकन्द केला देवदाली सहँजना तुरई वांझखिखसा काकमाची और सुगन्धवाला इन में से किसी एकका रस जवाखार सज्जी सुहागा सेंधानोन और अम्लवर्गके साथ एक दिन भावना देकर इसी रसके साथ एकदिन दोलायंत्रमें पाककरे इसप्रकार सम्पूर्ण उपरस शुद्धहोते हैं मुर्दासिंग गेरू शंख हीराकसीस सुहागा नीलासुरमा सीपीकेभेद घोंघे और कोड़ी यह संपूर्ण उपरस जंभीरी नींबूके रसके साथ पाककरके कुछ गरम जलसे धोनेसे शुद्ध होतेहैं इस प्रकार शुद्ध कियेगये उपरसों के अलग २ गुण गुण ग्रन्थमें देखने चाहिये ॥ ११६ ॥

अथ रत्नानांशोधनमारणविधिः । तत्राशुद्धस्यवज्रस्यदोपमाह ॥
अशुद्धंकुरुतेवज्रंकुष्ठंपार्श्वव्यथांतथा।पाण्डुतापंगुरुत्वञ्चतस्मात्संशोध्यमारयेत् ११७॥

रत्नोंके शोधन और मारणकी विधि । अशुद्ध हीरेके दोप ॥

अशुद्धहीरा कुष्ठ पसलियोंमें पीड़ा पांडु और लूलेपनको करता है इससे हीरेको शुद्धकरके भस्म करना चाहिये॥ ११७॥ अथ वज्रस्यशोधनविधिः ॥

कुलत्थकोद्रवक्वाथेदोलायन्त्रेविपाचयेत् । व्याघ्रीकन्दगतंवज्रंत्रिदिनंतद्विशुद्ध्यति॥ व्याघ्रीकण्टकारिका । अन्यःशोधनविधिः । गृहीत्वाह्निशुभेवज्रंव्याघ्रीकन्दोदरेक्षिपेत् ॥ माहिषीविष्ठयालिप्ताकारीपाग्नौविपाचयेत् ॥ त्रियामायांचतुर्यामंयामिन्यन्तेऽश्वमूत्रके । सेचयेत्पाचयेदेवंसप्तरात्रेणशुद्ध्यति ॥ ११८ ॥

हीरा शुद्ध करनेकी विधि ॥

हीरेको भटकटैयाकी जड़ में भरकर कुलथी और कोदोंके काढ़ेके साथ तीन दिनतक दोलायंत्र में पाककरे तो हीरा शुद्धहोवे दूसरी विधि शुभ दिनमें हीरालेकर भटकटैयाकी जड़में रक्खे और उस में भैंसका गोबर लपेटकर रातभर कंडोंकी आंचमें पकावे और प्रातःकाल घोड़ेके मूत्रमें बुझावे इस प्रकार सात रात्रितक पाककरने और बुझाने से हीरा शुद्ध होताहै ॥११८ ॥

अथ वज्रस्यमारणविधिः ॥

हिंगुसैन्धवसंयुक्तेक्षिपेत्क्वाथेकुलत्थजे । तप्तंतप्तंपुनर्वज्रंभवेद्भस्मत्रिसप्तधा (अन्य मारण प्रकारः) मेषशृंगभुजंगास्थिकूर्मपृष्ठाम्लवेतसम् ॥ शशदन्तंसमम्पिष्ट्वावज्री क्षीरेणगोलकम् । कृत्वातन्मध्यगंवज्रंधियतेध्मातमेवहि ॥ ११९ ॥

हीरा मारनेकी विधि ॥

हीरेको तपाकर हींग और सेंधेनोनके साथ कुलथीके काढ़ेमें इक्कीसबार बुझानेसे हीरा मरजाता है (दूसरी विधि) मेढ़ेकेसींग सर्पकी हड्डी कछुयेकी पीठ अमलवेत और खरगोशके दांत इन सब को सम भाग लेकर थूहरके दूधमें पीसकर गोलाबनावै इस गोलेके बीचमें हीरा रखकर पाककरने से शीघ्रही भस्म होताहै ॥ ११९ ॥ मारितस्यवज्रस्यगुणाः ॥

आयुःपुष्टिंबलंवीर्यंवर्णंसौख्यंकरोतिच । सेवितंसर्वरोगघ्नंमृतंवज्रंनसंशयः ॥ १२० ॥

हीरेकी भस्मके गुण ॥

हीरेकी भस्म आयु पुष्टता बल वीर्य वर्ण तथा सुखकारी और सम्पूर्ण रोगनाशक होती है॥१२० ॥

अथ शेषरत्नानांशोधनमारण विधिः ॥

वज्रवत्सर्वरत्नानिशोधयेन्मारयेत्तथा । शुद्धानांमारितानाञ्चतेषांशृणुगुणानपि ॥ मण योवीर्यतःशीतामधुरास्तुवरारसात् । चक्षुष्यालेखनाश्चापिसारकाविपहारकाः ॥ धारणा त्तुमंगल्याग्रहदृष्टिहराअपि । उपरत्नानांशोधनमारणविधिश्चिन्त्यः ॥ १२१ ॥

शेप रत्नोंके शोधन मारणकी विधि ॥

हीरेकेसमान सम्पूर्ण रत्नोंकाशोधन और मारणहोताहै इनकेगुण रत्न वीर्यमें शीतल मधुर कपैले नेत्रों

का हित लेखन दस्तावर और विषनाशक होतेहैं यहधारणकरने से यह दृष्टिनाशक और मंगलकारी होतेहैं॥१२१॥अथविषाणांशोधनविधिः। तत्रवत्सनाभस्य स्वरूप निरूपणम् ॥

सिन्दुवारसदृक्पत्रोवत्सनाभ्याकृतिस्तथा॥यत्पार्श्वेनतरोर्वृद्धिर्वत्सनाभःसभाषितः १२२

विषोंकी शोधनविधि । वत्सनाभ का स्वरूप वर्णन ॥

जिसवृक्षके पत्ते निर्गुण्डीके पत्तों के समान जिसकी आकृति बछड़ेकी नाभिके समान और जिस के निकटके वृक्षोंकी वृद्धि नहो उसको वत्सनाभ कहतेहैं ॥ १२२ ॥

विषस्यशोधन विधिः ॥

गोमूत्रेत्रिदिनंस्थाप्यंविषंतेनविशुद्ध्यति॥रक्तसर्षपतैलाक्तेतथाधार्य्यञ्चवाससि ॥ ये गुणागरलेप्रोक्तास्तेस्युर्हीनाविशोधनात्। तस्माद्विषंप्रयोगेतुशोधयित्वाप्रयोजयेत् १२३

विषका शोधन ॥

विषको तीन दिनतक गोमूत्रमें भिजोकर लाल सर सों के तेलसे भींगे हुये कपड़े में तीन दिन तक रक्खे विष में जो दोष कहे गयेहैं वह शुद्ध करने से हीनहोजाते हैं इस विषको शोध कर काम में लाना चाहिये ॥ १२३ ॥ अथ विषस्यगुणाः ॥

विषंप्राणहरंप्रोक्तंव्यवायिचविकाशिच । आग्नेयंवातकफहृद्योगवाहिमोहावहम् ॥ व्यवायिसकलकायगुणव्यापनपूर्व्वकपाकगमनशीलं । विकाशिओजःशोषणपूर्व्वकस न्धिवन्धशिथलीकरणशीलम्। आग्नेयम्अधिकाग्न्यंशं ॥ योगवाहिसंगिगुणग्राहकम् मोहावहंतमोगुणप्राधान्येनबुद्धिविध्वंसकम् ॥ तदेवयुक्तियुक्तन्तुप्राणदायिरसायनम् । योगवाहिपरंवातश्लेष्मजित्सन्निपातहृत् ॥ १२४ ॥

विषके गुण ॥

विष प्राणनाशक संपूर्ण शरीर में अपने गुणके फैल जाने पर पाकहोने वाला ओज को सुखाकर संधियों के बन्धन को शिथिल करने वाला अधिक अग्नि के गुणवाला संगीके गुण का ग्राहक कफ वात नाशक और तमो गुणकी प्रधानतासे बुद्धिका नाशक होताहै परन्तु युक्तिपूर्वक व्यवहार करनेसे प्राण दायक रसायन योग वाही और वात कफतथा सन्निपातका अत्यन्त नाशक होताहै॥१२४॥

अथोपविषाणां निरूपणम् ॥

अर्कक्षीरंस्नुहीक्षीरंलांगलीकरवीरकः। गुञ्जाहिफेनोधत्तूरःसप्तोपविषजातयः॥एतेषां शोधनंचिन्त्यंगुणास्तत्रतत्रद्रष्टव्याः॥ १२५ ॥

उप विषोंका वर्णन ॥

आकका दूध थूहर का दूध कारिहारी कनेर घोंघची अफीम और धतूरा यहसात उपविषहैं इनका शोधन विचार लेनाचाहिये और इनका गुण वहाँदेखना चाहिये जहाँ इनका वर्णन होचुकाहै॥ १२५॥

अथ द्रव्याणांगुणवत्तामवधिः ॥

गुणहीनंभवेद्वर्षादूर्ध्वंतद्रूपमौषधम् । मासद्वयात्तथाचूर्णंलभतेहीनवीर्य्यताम् ॥ हीनत्वंगुटिकालेहौलभेतेवत्सरंयदि। हीनास्युर्घृततैलाद्याश्चतुर्मासाधिकास्तथा ॥ घृत

तैलाद्याइतियोगविशेषणम् । चतुर्मासाधिकाःवत्सरादुपरिचत्वारोमासाअधिकायेषुते। घृततैलयोर्विशेषमाह। तन्त्रान्तरे। घृतमब्दात्परंपक्कंहीनवीर्य्यत्वमाप्नुयात् । तैलंपक्कमपक्कञ्चचिरस्थायिगुणाधिकम् ॥ तदपिषोडशमासाभ्यन्तरेणपक्कंतैलंगुणाधिकंबोद्धव्यम् ओषध्योलघुपाकाःस्युर्निर्वीर्य्योवत्सरात्परम् । ओषध्योधान्यादयःलघुपाकाःशीघ्रपाकाः निर्वीर्य्याःस्युःपुराणाःस्युर्गुणैर्युक्ताआसवाधातवोरसाः॥ १२६॥

द्रव्योंके गुणोंकी अवधि॥

एकवर्ष के उपरांत तद्रूप औषध गुण रहित होजाती है चूर्ण की हुई औषध दोमहीने के उपरांत हीन वीर्य होजाती है गुटिका तथा अवलेह एकवर्षमें हीन वीर्य होजाते हैं और घृत तथा तेल आदिक एकवर्ष चार महीने के पीछे हीनवीर्य होजाते हैं तन्त्रान्तर में घृत और तेलके विषय में विशेषता कही गई है कि पक्कघी एकवर्ष के ऊपर हीनवीर्य होजाताहै परन्तु तेल कच्चाहो चाहे पक्काहो जितना पुराना होगा उतनाही अधिक गुणकारी होगा इसपरभी सोलह महीनोंके भीतर पक्का तेल अधिक गुणकारी होता है शीघ्र परिपाक होने वाले धान्यादिक एकवर्ष के उपरांत हीन वीर्य होजातेहैं और आसव धातु तथारस यह पुरानेही अधिक गुणकारी होते हैं॥ १२६॥

अथ स्नेहपानविधिः॥

स्नेहश्चतुर्विधःप्रोक्तोघृततैलंवसातथा । मज्जाचतंपिबेन्मर्त्यःकिञ्चिदभ्युदितेरवौ॥ स्थावरोजङ्गमश्चैवद्वियोनिःस्नेहउच्यते । तिलतैलंस्थावरेषुजङ्गमेषुघृतंवरम्॥ द्वाभ्यां त्रिभिश्चतुर्भिर्वायमकस्त्रिवृतोमहान । अस्यायमर्थः । द्वाभ्यांस्नेहाभ्यांघृततैलाभ्यांयमकाख्य स्नेहःस्यात् । त्रिभिःस्नेहैःघृततैलवसारूपैस्त्रिवृत्ताख्यःस्यात् । चतुर्भिर्घृततैलवसामज्जाभिर्महान्महास्नेहःस्यादित्यर्थः (पिबेत्त्र्यहंचतुरहंपञ्चाहंषड्हानिचेतियदुक्तम्) मृदुकोष्ठस्त्रिरात्रेणस्निग्धस्नेहोपसेवया । मध्यकोष्ठश्चतुर्भिश्चदिवसैःस्निह्यतिध्रुवम्॥ पञ्चभिर्वाथषड्भिर्वादिनैःक्रूरोविशुद्ध्यति । सप्तरात्रात्परंस्नेहःसात्मीभवतिसेवितः ॥ मृदुमध्यक्रूरकोष्ठानांसर्वेषांसप्तरात्रात्परंसात्मीभवति । वातानुलोम्यवह्निर्दीप्तिकोष्ठशुद्धिमृदास्निग्धाङ्गतास्वरवचनाङ्गलाघवधातुपुष्टिद्विजदार्ढ्यं निर्जरतावलवर्णकारीभवति॥ नतुभक्तद्वयेवातानुलोम्यादीन्करोति । दोषकालवयोवह्निबलान्यालोक्ययोजयेत् । हीनाञ्चमध्यमांज्येष्ठांमात्रांस्नेहस्यबुद्धिमान् ॥ अमात्रयातथाऽकालेमिथ्याहारविहारतः। स्नेहःकरोतिशोथार्शस्तन्द्रानिद्राविसंज्ञिताः॥ देयादीप्ताग्नयेमात्रास्नेहस्यैकपलोन्मिता। मध्यमायात्रिकर्षास्याज्जघन्यायद्विकार्षिकी॥ मध्यमायमध्यमाग्नयेजघन्यायहीनाग्नये अथवास्नेहमात्राःस्युस्तिस्रोन्याःसर्वसम्मताः । अहोरात्रेणमहतीजीर्य्यत्यह्नितुमध्यमा॥ जीर्य्यत्यल्पादिनार्द्धेनसाविज्ञेयासुखावहा (अयमर्थः)याहोरात्रेणजीर्यतिसामात्रा महती। एवंमध्यमाकनिष्ठाचज्ञेया। अल्पास्याद्दीपनीवृष्यास्वल्पदोषेप्रपूजिता । मध्यमा स्नेहनीज्ञेयाबृंहणीभ्रमहारिणी॥ ज्येष्ठाकुष्ठविषोन्मादग्रहापस्मारनाशिनी ॥ १२७ ॥

स्नेह पानकीविधि ॥

स्नेह चार प्रकार का होताहै घी तेल चरबी और मज्जा कुछ सूर्य उदय होने पर स्नेह पानकरना चाहिये स्थावर तथा जंगम कारणों के भेदसे स्नेह दो प्रकारका होताहै उन में से स्थावर में तिलकातेल और जंगम में घृत सबसे श्रेष्ठ होताहै घी और तेल मिलकर जो स्नेह बनता है उसकोयमक घी तेल और चरबी मिलकर जो स्नेह बनताहै उसको त्रिवृत और घी तेल चरबी और मज्जा इन चारोंके मिलने से जो स्नेह बनताहै उसको महास्नेह कहते हैं कोमलकोष्ठवाली तीन दिन मध्यम कोष्ठवाला चारदिन और कठिन कोष्ठवाला पांच अथवा छःदिन स्नेहपानकरे क्योंकि कहाहुआहै कि कोमल कोष्ठवाला तीनदिन स्नेह पानकरनेसे स्निग्ध मध्यम कोष्ठ वाला चारदिन स्नेह पान करने से स्निग्ध और क्रूर कोष्ठ वाला पांच अथवा छः दिन स्नेह पान करने से शुद्धहोताहै कोमल मध्यम और क्रूर कोष्ठ वाले सबहीको सात दिनके उपरान्त स्नेह सात्म्य (स्वभावकेअनुकूल) होजाता है और स्नेह के सेवनसे वातकी अनुलोमता (नीचेका जाना) अग्नि दीप्ति कोष्ठ शुद्धि शरीर की कोमलता तथा स्निग्धता स्वर वचन तथाशरीर का हलकापन वृद्धावस्था का नाश और बल वर्ण की उत्तमता होती है इससे भोजनमें अरुचि और शरीरमें ग्लानि आदिक नहीं होती दोष काल अवस्था बल और अग्निके बलको विचारकर हीन मध्य अथवा बड़ी मात्रा से स्नेह को काममें लाना चाहिये मात्रा के विना अकाल में अथवा नियम रहित आहार करने से स्नेहपान करने वालेको सूजन बवासीर तन्द्रा निद्राऔर संज्ञारहित होना यह सबरोग उत्पन्न होते हैं और दीप्ताग्निको चार तोलेकी मात्रा मध्यम अग्निवाले को तीन तोलेकी और मन्द अग्निवालेको दो तोले स्नेह की मात्रा देनी चाहिये स्नेह पीने की अन्यभी तीन मात्रा सर्व संमतहैं जितना स्नेह एक रात दिनमें पचे वह बड़ी मात्रा एक दिनमें जितना पचे वह मध्यम मात्रा और आधे दिनमें जितना पचे वह हीन मात्रा कह लातीहै हीनमात्रा दीपन वीर्य वर्द्धक और थोड़ेदोष में हितकारी होती है मध्यम मात्रा स्निग्ध करने वाली धातुवर्द्धक और श्रम नाशक होती है और बड़ी मात्रा कुष्ठ विष उन्माद ग्रह दोष मृगी नाशक होतीहै ॥ १२७ ॥

सुश्रुतःपुनरेवाह । यामात्राप्रथमेयामेगतेजीर्य्यतिवासरे । सामात्रादीपयत्यग्निमल्पदोषेचपूजिता ॥ यामात्रावासरस्यार्द्धेव्यतीतेपरिजीर्य्यति । सात्दृष्याद्बृंहणीचस्यान्मध्यदोषेप्रपूजिता ॥ यामात्राचरमेयामेस्थितेऽह्नःपरिजीर्य्यति । सामात्रास्नेहनीज्ञेयाबहुदोषेपुपूजिता ॥ केवलंपैत्तिकेसार्पिर्वातिकेलवणान्वितम् । देयंबहुकफेवह्निव्योपक्षारसमन्वितम् ॥ रूक्षक्षतविषार्त्तानांवातपित्तविकारिणाम् । हीनमेधास्मृतीनाञ्चसर्पिःपानंप्रशस्यते ॥ कृमिकोष्ठानिलाविष्टाप्रवृद्धकफमेदसः । पिबेयुस्तैलसात्म्यास्तुतैलंदार्ढ्यार्थिनस्तुये ॥ व्यायामाकर्षिताःशुष्करेतोरक्तामहारुजाः । क्रूराशयाःक्रूरकोष्ठाःसर्वतःसर्वस्मात्स्नेहात् । शीतकालेदिवास्नेहमुष्णकालेपिबेन्निशि । वातपित्ताधिकेरात्रौवातश्लेष्माधिकेदिवा ॥ नस्याभ्यञ्जनगण्डूषमूर्द्धकर्णाक्षितर्पणे॥ तैलंघृतंवायुञ्जीतदृष्ट्वादोषबलाबलम्॥घृतेकोष्णजलंपेयंतैलेयूषःप्रशस्यते।वसामज्ञोपिबेन्मण्डमनुपानंसुखावहम् १२८॥

फिर सुश्रुत ने कहाहै कि जोमात्रा दिन के एकपहर व्यतीत होने पर परिपाक होतीहै वह दीपन

और थोड़े दोपमें हितहै जोमात्रा आधादिन व्यतीत होनेपरपरिपाक होतीहै वह वीर्यतथा धातुवर्द्धक और मध्य दोपमें हित है और जोमात्रा दिन के चौथे पहर में परिपाक होतीहै वह स्निग्ध करने वाली और बहुत दोपमें हित है पित्तरोगमें केवलघी वातज रोगमें सेंधानोन युक्तघी और बहुतकफ में चीता त्रिकटु तथा जवाखार युक्तघी पानकराना चाहिये रूखे क्षत तथा विपसे व्याकुल वात पित्त के रोगसे ग्रसित और हीन हुई मेधा तथा स्मृति वाले पुरुपों को घी पीना श्रेष्ठहै कृमि रोगी क्रूर कोष्ठवाले कफ तथा मेदकी वृद्धि से युक्त सदैव तेल सेवन करनेवाले पुष्टता चाहनेवाले व्यायामसे दुर्बल क्षीण वीर्य तथा रुधिर वाले और महारोग से ग्रसित पुरुपोंको तेल पीना उचित है शीतल काल में दिनको उष्णकाल में तथा वात पित्तके कोप में रातको और कफ वात के कोप में दिन को स्नेह पान करना चाहिये नासलेने में शरीरके लगानेमें कुल्ला करने में शिर पर लगानेमें और कानतथा नेत्रोंके भरने में तेल अथवा घीका व्यवहार दोपके बलाबलको देखकर करना चाहिये घी का कुछ उष्णजल तेलका यूप और चर्बी तथा मज्जाका माड़ अनोपान करना चाहिये ॥ १२८ ॥

स्नेहद्विषःशिशून्वृद्धान्सुकुमारान्कृशानपि । तृष्णालुकानुष्णकालेसहभक्तेनपाययेत् ॥ सर्पिष्मतीबहुतिलायवागूस्वल्पतण्डुला । सुखोष्णासेव्यमानातुसद्यःस्नेहनकारिणी ॥ शर्कराचूर्णसंयुक्तेदोहनस्थेघृतेतुगाम् । दुग्ध्वाक्षीरंपिबेद्रूक्षःसद्यःस्नेहनमुत्तमम् ॥ मिथ्याचाराद्बहुत्वाद्वायस्यस्नेहोनजीर्य्यति । विष्टम्भावापिजीर्येतवारिणोष्णेनवामयेत् ॥ स्नेहस्याजीर्णशङ्कायांपिबेदुष्णोदकंनरः । तदोद्गारोभवेच्छुद्धोभक्तेप्रातेरुचिस्तथा । स्नेहेनपैत्तिकस्याग्निर्यदातीक्ष्णतरीकृतः । तदास्योदीर्य्यतेतृष्णांविपमान्तस्यपाययेत् ॥ शीतलंपायसंतेनतृष्णातस्यप्रशाम्यति ॥ १२९ ॥

स्नेह से द्वेप करने वाले बालक वृद्ध सुकुमार कृश और तृपा से व्याकुल पुरुपोंको उष्णकाल में भात के साथ स्नेह पान कराना चाहिये अधिक तिलयुक्त और थोड़ेचावलयुक्त यवागूको घीके साथ कुछ उष्ण पान करने से बहुत शीघ्र स्नेहन होताहै दुहनेके पात्रमें शक्कर और घी छोड़कर गौको दुहै है उसके पीने से रूखा पुरुप शीघ्रही स्निग्ध होजाता है नियम रहित आचार से अथवा अधिकता से जो स्नेह न पचे अथवा देरमें पचेतो उष्णजल पीकर वमनकरना चाहिये स्नेहके अजीर्णहोने के सन्देह में उष्णजल पान करना चाहिये इससे डकारकी शुद्धता और अन्न में रुचिहोती है जोस्नेह से पित्त प्रकृति वाले पुरुपकी अग्नि तीक्ष्ण होकर अत्यन्ततृपाको उत्पन्नकरे तो शीतलजल पिलाकर वमन कराने से तृपा निवृत्तहोतीहै ॥ १२९ ॥

अजीर्णोवर्जयेत्स्नेहमुदरीतरुणज्वरी ॥ दुर्बलोऽरोचकीस्थूलोमूर्च्छितोमेहपीड़ितः दत्तवस्तिर्विरक्तश्चवान्तस्तृष्णाश्रमान्वितः ॥ अकालप्रसवानारीदुर्दिनेचविवर्जयेत् । स्नेह्यःसंशोध्यमद्यस्त्रीव्यायामासक्तचित्तकाः ॥ वृद्धबालकृशारूक्षाःक्षीणास्त्राःक्षीणरेतसः । वातार्त्तास्तिमिरार्त्तायेतेषांस्नेहनमुत्तमम् ॥ वातानुलोम्यदीप्ताऽग्निर्वर्चःस्निग्धमसंहतम् । मृदुस्निग्धांगताग्लानिःस्नेहद्वेषोऽथलाघवम् ॥ विमलेन्द्रियतासम्यक्स्निग्धेरूक्षेविपर्य्ययः । भक्तद्वेषोमुखस्रावोगुदेदाहःप्रवाहिका ॥ तन्द्रातीसारपण्डत्वंभृशंस्निग्धस्यलक्षणम् । रूक्षस्यस्नेहनंस्नेहैरतिस्निग्धस्यरूक्षणम् ॥ १३० ॥

अजीर्ण उदर नवीन ज्वर दुर्बलता अरुचि स्थूलता मूर्च्छा प्रमेह तृषा तथाश्रम से युक्त वमन किया हुआ विरेचनकियाहुआ जिसको वस्ति दीगई हो ऐसा पुरुष और अकालमें प्रसूताहुई स्त्री स्नेह पान न करे और दुर्दिनमें भी स्नेह पान न करे श्वेदन तथा संशोधन करने के योग्य मतवाले स्त्रियोंमें आसक्त व्यायाम करनेवाले वृद्ध बालक कृश रूखे क्षीणवीर्य तथा रुधिरवाले वातसे व्याकुल और तिमिर रोगवाले पुरुषों को स्नेहपान विशेष उपकारी होता अच्छे प्रकारसे स्नेहपान कियेहुए पुरुषकी वायुकी शुद्धता अग्नि की दीप्ति कोष्ठकी शुद्धता शरीर की कोमलता तथा स्निग्धता ग्लानि स्नेहसे द्वेष हलकापन और इन्द्रियों की निर्मलता होती है और रूखे पुरुष के इससे विपरीत लक्षण होतेहैं अधिक स्नेहपान करनेसे भोजनमें अरुचि मुखका बहना गुदा में दाह प्रवाहिका तन्द्रा अतीसार और पीलापन होताहै रूखेको स्निग्ध करना और बहुत स्निग्धको रूखा करना चाहिये ॥१३०॥

श्यामाकचणकाद्यैश्चतक्रपिण्याकशक्तुभिः। दीप्ताग्निःशुद्धकोष्ठश्चपुष्टधातुर्दृढेन्द्रियः निर्जरोबलवर्णाढ्यःस्नेहसेवीभवेन्नरः। स्नेहेव्यायामसंशीतवेगाघातप्रजागरान् ॥ दिवास्वप्नमभिष्यन्दिरूक्षाशश्चविवर्जयेत् ॥ १३१ ॥

सामा चने मट्ठा खल अथवा सत्तू आदिकोंके साथस्नेहपान करने से अग्नि की दीप्ति कोष्ठकी शुद्धता धातुओंकी पुष्टता इन्द्रियों की दृढता वृद्धावस्थाकानाश बलकी अधिकता और वर्णकी उत्तमताहोतीहै स्नेहपान करके व्यायाम शीत वेगों का रोकना रात्रि में जागरण दिनकासोना और अभिष्यन्दी तथा रूखा अन्न त्याग करना चाहिये ॥ १३१ ॥

अथ पञ्चकर्माणि ॥

प्रथमंवमनंपश्चाद्विरेकश्चानुवासनम्।एतानिपञ्चकर्माणिनिरूहोनावनंतथा१३२॥

पंचकर्म ॥

प्रथम वमन फिर विरेचन फिर अनुवासन फिर निरूहवस्ति और सब के पीछे नाशलेना यह पांचकर्म हैं ॥ १३२ ॥

अथ वमनविधिः ॥

शरत्कालेवसन्तेचप्रावृट्कालेचदेहिनाम्। वमनंरेचनञ्चैवकारयेत्कुशलोभिषक् ॥ बलवन्तकफव्याप्तंहल्लासादिनिपीडितम् ॥ तथावमनसात्म्यञ्चधीरचित्तञ्चवामयेत् ॥ विषदोषेस्तन्यरोगेमन्देऽग्नौश्लीपदेऽर्बुदे ॥ हृद्रोगेकुष्ठवीसर्पमेहाजीर्णभ्रमेषु च ॥ विदारिकापचीकासश्वासपीनसवृद्धिषु ॥ अपस्मारेज्वरोन्मादेतथारक्तातिसारिषु ॥ नासतालौष्ठपाकेषुकर्णस्रावेऽधिजिह्वके ॥ गलशुण्ड्यामतीसारेपित्तश्लेष्मगदेतथा ॥ मेदोगदेऽरुचौचैववमनंकारयेद्भिषक् ॥ स्तन्यरोगेदुष्टदुग्धजनितेबालस्यरोगे ॥ १३३ ॥

वमन की विधि ॥

चतुर वैद्य मनुष्योंको शरद वसन्त औरप्रावृट् ऋतु मेंवमन तथा विरेचन करावें बलवान् कफसे व्याप्त मतली आदिरोगों से व्याकुल व मन में अभ्यास रखने वाले और धीर चित्तवाले पुरुषों को वमन कराना चाहिये विषदोष दुग्धरोग मन्दाग्नि श्लीपद अर्बुद हृदय के रोग कुष्ठ वीसर्प प्रमेह अजीर्ण भ्रम विदारिका अपची खांसी श्वास पीनस वृद्धि मृगी ज्वर उन्माद रक्तातीसार नासिका

पकना तालु और ओष्ठका पकना कानका बहना अधिजिह्वक गलशुंडी अतीसार कफ तथा पित्तके रोग मेदरोग और अरुचि में वमन कराना श्रेष्ठहै ॥ १३३ ॥

नवामनीयस्तिमिरीनगुल्मीनोदरीकृशः ॥ नातिवृद्धोगर्भिणीचनस्थूलोनक्षतातुरः॥ मदार्तोबालकोरूक्षःक्षुधितश्चनिरूहितः ॥ उदावर्त्योर्ध्वरक्तीचदुश्छर्द्यःकेवलानिली ॥ पाण्डुरोगीकृमीव्याप्तःपठनात्स्वरघातवान् ॥ एतेऽप्यजीर्णव्यथितावाम्यायेविषपीड़िताः। कफव्याप्ताऽश्चतेवाम्यामधुकक्काथपानतः॥ ऊर्ध्वरक्तीयस्यनासाक्षिकर्णास्यमार्गैरक्तंप्रवर्त्तेतसः । भुक्तरूक्षकर्कशद्रव्याद्वैश्छर्द्यःमधुकस्थानेमधुकेतिद्वितीयःपाठः ॥ १३४ ॥

तिमिर गुल्म (वायगोला)तथा उदररोगवाले कृश अत्यन्त वृद्ध गर्भिणी स्त्री स्थूल क्षतसे व्याकुल मदसे पीडित बालक रूखे क्षुधायुक्त निरूहवस्ति युक्त उदावर्त्त तथा ऊर्ध्व रक्तवाले केवलवात रोगी रूखी अथवा कठोर वस्तु भोजन करनेवाले पांडुरोगी कृमियुक्त वातके द्वारा स्वरभंगवाले इन पुरुषोंको वमन न कराना चाहिये और इन्हीं लोगोंसेयुक्त भी अजीर्ण तथा विषसे पीडित और कफ से व्याप्त होय तो मौहेके काढ़ेसे वमन कराना चाहिये ॥ १३४ ॥

सुकुमारंकृशम्बालंवृद्धंभीरुञ्चवामयेत् । पाययित्वायवागूंवाक्षीरतक्रदधीनिच ॥ असात्म्यैःश्लेष्मलैर्भोज्यैर्दोषानुत्क्लेश्यदेहिनाम्।स्निग्धस्विन्नायवमनंदत्तंसम्यक्प्रवर्त्तते॥ वमनेषुचसर्वेषुसैन्धवंमधुवाहितम् । वीभत्संवमनंदद्याद्विपरीतंविरेचनम् ॥ वीभत्संअरुच्यंविपरीतमरुच्यम् ॥ १३५ ॥

सुकुमार कृश बालक वृद्ध और भयभीत पुरुष को यवागू दूध मट्ठा अथवा दही पिलाकर वमन करानी चाहिये स्निग्ध और स्वेदन युक्त पुरुष को असात्म्य और कफकारी भोजनों से दोषोंको उखाड़कर वमन कराने से अच्छे प्रकार दोषनिकलजातेहैं संपूर्ण वमन की औषधियों में सेंधानोन और सहत मिलाना हितकारीहै वमन कराने वाली औषध अरुचिकारी और विरेचनकारी औषधरुचि युक्त देनी चाहिये ॥ १३५ ॥

क्वाथ्यद्रव्यस्यकुडवंस्त्रपयित्वाजलाढके । अर्द्धभागावशिष्टञ्चवमनेष्ववचारयेत् ॥ क्वाथपानेनवप्रस्थाज्येष्ठामात्राप्रकीर्त्तिता । मध्यमापरिमताप्रोक्तात्रिप्रस्थाचकनीयसी ॥ वमनेचविरेकेचतथाशोणितमोक्षणे । अर्द्धत्रयोदशपलंप्रस्थमाहुर्मनीषिणः ॥ अर्द्धत्रयोदशपलंसार्द्धषट्कम् । कल्कचूर्णावलेहानांत्रिपलंमात्रयोत्तमम् । मध्यमंद्विपलंविद्यात्कनीयस्तुपलंभवेत् ॥ वमनेचाष्टवेगास्यु·पित्तान्ताउत्तमास्तुते । षड्वेगामध्यमावेगाचत्वारस्त्वपरेमताः ॥ कफंकटुकतीक्ष्णोष्णैःपित्तंस्वादुहिमैर्जयेत् । सस्वादुलवणाम्लोष्णै·संसृष्टंवायुनाकफम् ॥ कृष्णांकट्फलसिन्धुंचकफेकोष्णजलैःपिवेत् ।पटोलवासानिम्बश्चपित्तेशीतजलैःपिवेत् ॥ कट्फलंमयनफलम् ।सश्लेष्मवातपीड़ायांसक्षीरंमदनंपिवेत् । अजीर्णकोष्णपानीयंसिन्धुंपीत्वावमेत्सुधीः ॥ मदनं(मयनफलम्)वमनंपाययित्वातुजानुमात्रासनेस्थितम् । कण्ठमेरण्डनालेनस्पृशन्तंवामयेद्भिषक् ॥प्रसेकोहृद्ग्रहःकोठ·कण्डूदुश्छर्दितेभवेत् । अतिवान्तेभवेत्तृष्णाहिक्कोद्गारोविसंज्ञता । ।जिह्वानिःसरणंचाक्ष्णोर्व्यावृ

त्तिहनुसंहतिःरक्तच्छर्दिःष्ठीवनञ्चकण्ठपीडाचजायते॥हनुसंहतिःहन्वोरमिलनम् १३६ ॥

क्वाथ की औषध को एककुडवमात्र लेकर आढकभर जलमें औटावे जबआधावाकीरहे तबउसेकाम मेंलावे वमन के क्वाथ की बड़ीमात्रा ९ प्रस्थ मध्यममात्रा ६ प्रस्थ औरछोटीमात्रा ३ प्रस्थकी होतीहै वमन विरेचन और फस्त लेनेमेंसाढ़ेछः पलका एक प्रस्थ लियाजाताहै कल्क चूर्ण और अवलेह की बड़ीमात्रा ३ पलकी मध्यममात्रा२ पलकी और छोटीमात्रा एकपलकी होतीहै वमनमें आठवार वेग होनाउत्तमहै इनकेअन्तमें पित्तगिरताहै छःवारवेगहोनामध्यम और चारवारवेगहोना हीन गिना जाता हैवमनकेद्वारा कफको कटु तीक्ष्ण तथा उष्ण वस्तुओंसे पित्तको मधुर तथाशीतल वस्तुओंसे औरवात युक्तकफको मधुर लवण खट्टी तथा उष्ण वस्तुओंसे नाशकरे कफमें पीपल मैनफल तथा सेंधेनोनको उष्ण जलसेपान करके पित्तमें परवल वांसा तथा नीवको शीतल जलसे पान करके कफयुक्त वातमें मैनफल को दूध के साथपान करके और अजीर्ण में सेंधेनोन युक्त गरम जलको पीकर वमनकरे वमन की औषधिको पिला के उकड़ू बैठाकर और गलेको रेंड़ीकी नालसे स्पर्श कराकर वमनकरावे वमन के विगड़ जानेसे लारकावहना हृदय के रोग कोढ़ और खुजली होजाती है अत्यन्त वमनकरने से तृपा हिचकी डकार अज्ञानता जिह्वाकानिकालना नेत्रों का उलटनापलटना जावड़ोंका न मिलना वमन में रुधिरका गिरना थूकना और कंठमें पीड़ा यह लक्षण होतेहैं ॥ १३६ ॥

वमनस्यातियोगेतुमृदुःकुर्य्याद्विरेचनम् । वमनेनप्रविष्टायांजिह्वायांकवलग्रहः॥ स्निग्धाम्ललवणैर्युक्तैर्घृतक्षीररसैर्हितैः । (रसैर्मांसरसैः)फलान्यम्लानिखादेयुस्तस्यचान्येऽग्रतोनराः ॥ निःसृतान्तुतिलद्राक्षाकल्कलिप्तांप्रवेशयेत् । (निःसृतांजिह्वां)व्यावृत्तेऽक्षिणघृताभ्यक्तेपीडनञ्चशनैःशनैः । हनुमोक्षेस्मृतःस्वेदोनस्यञ्चश्लेष्मवातहृत् ॥ रक्तपित्तविधानेनरक्तष्ठीवमुपाचरेत् ॥ १३७ ॥

वमनकी अधिकतामें हलका विरेचन देनाचाहिये और वमनकेद्वारा जिह्वा के भीतर प्रविष्टहोजा, ने पर स्निग्ध खट्टे लवणयुक्त हृदयको हित घी दूध और मांस के रस के द्वारा ग्रासबनाकर मुख में रक्खे और दूसरे पुरुप उसके सन्मुख खट्टे फलों कोखायं जो वमन के वेग से जिह्वावाहर निकल आईहो तो तिल और मुनक्काओं को पीसकर जिह्वा में लेपकर के भीतर को प्रविष्ट करे जोवमनसे नेत्रों में वाधा पहुंचे तो घी लगाकर धीरे २ दवावे जो वमन से दोनोंजावड़े परस्पर नामिलतेहों तो कफ वात नाशकस्वेद औ नासका प्रयोग करना चाहिये और वमनसे जो मुखके द्वारा रुधिर निकलताहो तो रक्त पित्त की विधि से शान्त करना चाहिये ॥ १३७ ॥

धात्रीरसाञ्जनोशीरलाजाचन्दनवारिभिः ॥ मन्थंकृत्वापाययेच्चसघृतंक्षौद्रशर्करम् । शाम्यन्त्यनेनतृष्णाद्यारोगश्छर्दिसमुद्भवाः ॥ हृत्कण्ठशिरसांशुद्धिर्दीप्ताग्नित्वञ्चलाघवम् । कफपित्तविनाशश्चसम्यग्वान्तस्यलक्षणम् ॥ ततोऽपराह्णेदीप्ताग्निंमुद्गषाष्ठिकशालिभिः । हृद्यैश्चजाङ्गलरसैःकृत्वायूषञ्चभोजयेत् ॥ तन्द्रानिद्रास्यदौर्गन्ध्यंकण्डूञ्चग्रहणींविषम् । सुवान्तस्यनपीडायैभवन्त्येतेकदाचन ॥ अजीर्णंशीतपानीयंव्यायामंमैथुनंतथा । स्नेहाभ्यङ्गञ्चरोषञ्चदिनमेकंसुधीस्त्यजेत् ॥ (इतिवमनाधिकारः) १३८ ॥

आमला रसौत खस खील चन्दन और सुगन्धवाला इनको मथकर घी सहत और शक्कर मिला

के पीने से वमन से उत्पन्न होनेवाले तृपा आदिक सम्पूर्ण उपद्रव शान्तहोते हैं अच्छे प्रकारसे वमन होनेपर हृदय कंठ और शिरकी शुद्धता अग्निकी दीप्ति हलकापन और कफ पित्तका नाश होता है फिर अच्छी तरहसे वमन होजाने पर तीसरे पहर दीप्ताग्नि पुरुषको मूंग साठी और चावलोंके साथ जंगली जीवोंके मांसका मनोहर जूसवनाकर पिलाना चाहिये तन्द्रा निद्रा मुखकी दुर्गन्धि खुजली ग्रहणी और विष यह सब अच्छी रीतिसे वमन करने वाले को पीड़ानहीं देते हैं वमनके उपरान्त एक दिन अजीर्ण कारी वस्तु शीतल जल व्यायाम मैथुन तैलादि लगाना और क्रोध का त्यागकरे इति वमनाधिकारः १३८॥ अथ विरेचनविधिः॥

स्निग्धस्विन्नायवान्तायदद्यात्सम्यग्विरेचनम्। अवान्तस्यत्वधःस्रस्तोग्रहणींछादयेत्कफः॥ मंदाग्निंगौरवंकुर्य्याज्जनयेद्वाप्रवाहिकाम्। अथवापाचनैरामंवलासंपरिपाचयेत्॥ ऋतौवसन्तेशरदिदेहशुद्धौविरेचयेत्। अन्यदात्ययिकेकार्य्येशोधनंशीलयेद्बुधः॥ आत्ययिके प्राणसङ्कटे। पित्तेविरेचनंयुञ्ज्यादामोद्भूतेगदेतथा। उदरेचतथाध्मानेकोष्ठशुद्धौविशेषतः॥ दोषाःकदाचित्कुप्यन्तिजितालङ्घनपाचनैः। शोधनैःशोधितायेतुनतेषांपुनरुद्भवः॥ वालोवृद्धोभृशंस्निग्धःक्षतक्षीणोभयान्वितः। श्रान्तस्तृषार्त्तःस्थूलश्चगर्भिणीचनवज्वरी॥ नवप्रसूतानारीचमंदाग्निश्चमदात्ययी। शल्यार्दितश्चरूक्षश्चनविरेच्याविजानता॥ १३९॥ विरेचनकी विधि॥

स्नेहन स्वेद और वमनके उपरान्त विरेचन देना चाहिये विना वमन कराये विरेचन देने से कफ नीचे जाकर ग्रहणी को आच्छादित करके मन्दाग्नि शरीर का भारी पन अथवा प्रवाहिका को उत्पन्न करताहै अथवा पाचन औषधों से कच्चे कफ के परिपाक होने पर विरेचन दे वसन्त और शरद ऋतुमें देहकी शुद्धता के लिये विरेचन दे और प्राणोंके संकट आजाने पर अन्य ऋतुओं में भी विरेचन देना चाहिये पित्तमें आमसे उत्पन्न हुए रोग में उदर तथा आध्मान रोग में और कोष्ठकी शुद्धता के लिये विरेचन देना चाहिये लंघन और पाचन के द्वारा शान्त हुए दोष चाहे फिर कुपित होजांय परन्तु वमन आदिके द्वारा निकाले हुए दोष फिर नहीं उत्पन्न होतेहैं बालक वृद्ध अत्यन्त स्निग्ध क्षतसे क्षीण भय भीत श्रान्त तृषित स्थूल गर्भिणी स्त्री नवीन ज्वर वाला नवीन प्रसूतास्त्री मन्दाग्नि वाला मदात्यय से युक्त शस्त्रसे पीड़ित और रूखा इन सबको कदापि विरेचन न देना चाहिये॥ १३९॥

जीर्णज्वरीगरव्याप्तोवातरोगीभगन्दरी। अर्शःपाण्डूदरग्रन्थिहृद्रोगारुचिपीड़िताः॥ योनिरोगप्रमेहार्त्तागुल्मप्लीहव्रणार्दितः। विद्रधिच्छर्दिविस्फोटविसूचीकुष्ठसंयुताः॥ कर्णनासाशिरोवक्त्रगुदमेढ्रामयान्विताः॥प्लीहशोथाक्षिरोगार्त्ताःकृमिक्षारानिलार्दिताः॥ शूलिनोमूत्रघातार्त्ताविरेकार्हानरामताः॥बहुपित्तोमृदुःप्रोक्तोबहुश्लेष्माचमध्यमः॥ बहुवातक्रूरकोष्ठोदुर्विरेच्यःसकथ्यते। मृद्वीमात्रामृदौकोष्ठेमध्यकोष्ठेचमध्यमाः॥ क्रूरेतीक्ष्णामताद्रव्यैर्मृदुमध्यमतीक्ष्णकैः। मृदुर्द्राक्षापयश्चञ्चुतैलैरपिविरिच्यते॥ मध्यमस्त्रिवृतातिक्ताराजवृक्षैर्विरिच्यते। क्रूरार्कपयसाहेमक्षीरीदन्तीफलादिभिः॥चञ्चुतैलमेरण्डतैलम्। राजवृक्षः॥

धनवहेरा। हेमक्षीरी। चोकदन्तीफलम्।वृहदन्तीफलम्। जयपालेतिप्रसिद्धम् ॥ १४० ॥

जीर्णज्वर गरदोष वातरोग भगन्दर बवासीर पांडु उदर ग्रन्थि हृदय के रोग अरुचि योनिरोग प्रमेह गुल्म प्लीहा व्रण विद्रधि छर्दि विस्फोटक विशूचिका कुष्ठ कान तथा नासिकाके रोग शिर मुख गुदा तथा लिङ्ग के रोग प्लीहा की सूजन नेत्ररोग कृमि क्षार तथा वातकी पीडा शूल और मूत्राघात इनसंपूर्ण रोगोंमें विरेचन देना उचितहै अधिक पित्तवाले का कोष्ठ कोमल और अधिक कफवाले का मध्यम और अधिक वातवाले कोष्ठ क्रूर (कठिनता से विरेचन देनेके योग्य) होताहै कोमल कोष्ठ में कोमल दस्तावर औषधों की हलकी मात्रामध्यम कोष्ठ में मध्यम दस्तावर ओषधियों की मध्यम मात्रा और क्रूर कोष्ठमें तीक्ष्ण दस्तावर औषधियों की वडीमात्रा देनी चाहिये दाख रेंडीकातेल और दूधके द्वारा कोमल कोष्ठका विरेचन होताहै निसोथ कुटकी और अमलतास के द्वारा मध्यम कोष्ठ का विरेचन होताहै और आकका दूध चोक और जमालगोटाके द्वारा क्रूर कोष्ठ का विरेचन होताहै॥१४०॥

मात्रोत्तमाविरेकस्यत्रिंशद्वेगैःफलान्तकः। वेगैर्विंशतिभिर्मध्याहीनोक्तादशवेगिका ॥ द्विपलंश्रेष्ठमाख्यातंमध्यमंचपलंभवेत्। पलार्द्धञ्चकषायाणांकनीयस्तुविरेचनम्॥ कल्क मोदकचूर्णानांकर्षमध्वाज्यलेहतः। कर्षद्वयंपलंवापिवयोरोगाद्यपेक्षया ॥ पित्तोत्तरेत्रिवृच्चूर्णंद्राक्षाक्काथादिभिःपिबेत्। त्रिफलाक्काथगोमूत्रैःपिबेद्व्योषंकफार्दितः॥ त्रिवृत्सैन्धव शुण्ठीनांचूर्णमम्लैःपिबेन्नरः। वातार्दितोविरेकायजाङ्गलानांरसेनवा ॥ ऐरण्डतैलंत्रिफलाक्काथेनद्विगुणेनवा। युक्तंपीतंपयोभिर्वानचिरेणविरिच्यते॥ शीघ्रमेवविरिच्यतइत्यर्थः। त्रिवृताकौटजंबीजंपिप्पलीविश्वभेषजम्। समृद्वीकारसंक्षौद्रंवर्षाकालेविरेचनम्॥ त्रिवृद्दुरालभामुस्तशर्करोदीच्यचन्दनम्। द्राक्षाम्बुनासयष्ट्याह्वशीतलञ्चघनात्यये॥उदीच्यम्वालाघनात्ययेशरदि। पिप्पलीनागरंसिन्धुंश्यामांत्रिवृतयासह ॥ लिह्यात्क्षौद्रेणशिशिरेवसन्तेचविरेचनम्॥ श्यामाकृष्णसाएड॥त्रिवृताशर्करातुल्याग्रीष्मकालेविरेचनम्१४१॥

विरेचन की जिस मात्रा से तीस दस्तआवें वह उत्तम है इसके अन्तमें कफगिरताहै मध्यम मात्रा मेंबीस दस्त और हीनमात्रा में दश दस्त आते हैं और दस्तावर औषधियों के क्काथकी पूरी मात्रा दोपल मध्यम मात्रा एकपल और हीनमात्रा आधे पलकी होती है कल्क मोदक और चूर्ण एकतोलेघी और सहत के साथ दोकर्ष अथवा एकपल रोगी की अवस्था और रोग आदि को विचार कर देनी चाहिये पित्त के कोपमें मुनका आदिके काढ़े के साथ निसोथका चूर्ण कफके कोपमें त्रिफला के क्काथ तथा गोमूत्र के साथ त्रिकुटा का चूर्ण और वात के कोप में खटाई अथवा जंगली जीवोंके मांस के रस के साथ निसोथ सेंधानोन तथा सोंठके चूर्ण को अथवा द्विगुण त्रिफला के क्काथ तथा दूधके साथ रेंडीकेतेल को पिये इनसे शीघ्रही विरेचन होता है वर्षा कालमें निसोथ इन्द्रजो पीपल और सोंठ को मुनक्का के काढ़ेके साथ सहत मिलाकर विरेचन के लिये पिये शरदऋतु में विरेचन के लिये निसोथ जवासा नागरमोथा शक्कर सुगन्धवाला लालचन्दन और मुलहठी को मुनक्काके काढ़ेके साथ पानकरे हेमन्तऋतु में विरेचन के लिये निसोथ चीता पाढ़र जीरा सरल वच और चोक यह सब गरमजलके साथ चूर्ण करके पिये शिशिर तथा बसन्तऋतु में पीपल सोंठ सेंधानोन काला निसोथ और सफेद निसोथ इनसबके चूर्णको सहतके साथ चाटे और

ग्रीष्मऋतुमें विरेचन के लिये निसोथका चूर्ण और शक्कर समभाग मिलाकर सेवनकरे॥ १४१॥

अभयामरिचंशुण्ठींविडङ्गामलकानिच। पिप्पलीपिप्पलामूलंत्वक्पत्रंमुस्तमेवच॥ एतानिसमभागानिदन्तीतुत्रिगुणाभवेत्॥त्रिवृताष्टगुणाज्ञेयाषड्गुणाचात्रशर्करा॥ मधुना मोदकान्कृत्वाकर्षमात्रान्प्रमाणतः। एकैकंभक्षयेत्प्रातःशीतञ्चानुपिवेज्जलम्॥ ताव द्विरिच्यतेजन्तुर्यावदुष्णंनसेवते। पानाहारविहारेषुभवेन्नियन्त्रणःसदा॥ विषमज्वरमन्दा ग्निपांडुकासभगन्दरान्। पृष्ठपार्श्वोरुजघनजङ्घोदररुजंजयेत्॥ स्नेहाभ्यङ्गञ्चरोष ञ्चदिनमेकंसुधीस्त्यजेत्। सततंशीलनादेवपलितानिप्रणाशयेत्। अभयामोदकाह्येते रसायनवराःस्मृताः॥ इतिअभयादिमोदकः॥ १४२॥

हड मिर्च सोंठ वायविडंग आंवला पीपल पीपरामूल दालचीनी तेजपात नागरमोथा यह संपूर्ण समभाग इनका तिगुना जमालगोटा अठगुनानिसोथ और छःगुनी शक्कर मिलाकर सहत के साथ दो २ तोलेके मोदकबनावे प्रातः कालउठकर शीतल जलके अनुपानसे एक२मोदक रोजखाय जब तक गरम जल न पियेगा तबतक दस्त आते रहेंगे इन मोदकोंके सेवनमेंपान आहार और विहारकी कोई रोक नहीं है विषमज्वर मन्दाग्नि पांडु खांसी भगन्दर कुष्ठ गुल्म बवासीर गलगण्ड उदर भ्रम पीठ तथा पसलियोंकी पीड़ा जंघा पिंडली नितंब तथा उदरकीपीड़ा इनसब रोगोंका इसके सेवन से नाश होताहै इनको खाकर एकदिन तेलमर्दन और क्रोध न करे इनके सदैव सेवन करनेसे श्वेत बाल काले होजातेहैं यह अभयादि मोदक रसायनोंमें श्रेष्ठ कहे गये हैं इति अभयादि मोदकः॥१४२॥

पीत्वाविरेचनंशीतजलैःसंसिच्यचक्षुषी। सुगन्धिकिञ्चिदाघ्रायताम्बूलंशीलयेद्बु धः॥निर्वातस्थोनवेगांश्चधारयेन्नशयीतच। शीताम्बुनस्पृशेत्क्वापिकोष्णनीरंपिबेन्मुहुः॥ बलासौषधपित्तानिवायुर्वान्तेयथाव्रजेत्॥रेकात्तथामलपित्तंभेषजंचकफोव्रजेत्॥१४३॥

विरेचन औषधको पीकर शीतल जलसे नेत्रोंको सींचे और कोई सुगन्धित वस्तु सूंघकर तांबूल खाके वातरहित स्थान में बैठे और वेगोंका धारण शयनतथा शीतल जलका स्पर्श न करे वारंवार गरम जल पिये जैसे वात वमनके अंतमें कफ पित्त और औषधियों से मिलजातीहै इसी प्रकार विरेचनके अन्तमें मल पित्त और औषधियों के साथ कफ मिल जाता है॥ १४३॥

दुर्विरिक्तस्यनाभेस्तुस्तब्धताकुक्षिशूलरुक्। पुरीषवातसङ्गश्चकण्डूमण्डलगौरवम्॥ विदाहोऽरुचिराध्मानंभ्रमश्छर्दिश्चजायते। तंपुनःपाचनैःस्नेहैःपक्वास्निग्धन्तुरेचयेत्॥ तेनास्योपद्रवायान्तिदीप्ताग्निर्लघुताभवेत्। विरेकस्यातियोगेनमूर्च्छाभ्रंशोगुदस्यच॥ शूलंकफातियोगःस्यान्मांसधावनसन्निभम्। मेदोनिभञ्जलाभासंरक्तञ्चापिविरिच्यते॥ तस्यशीताम्बुभिःसिक्त्वाशरीरंतण्डुलाम्बुभिः। मधुमिश्रैस्तथाशीतैःकारयेद्वमनंमृदु॥ सहकारत्वचःकल्कोदध्नासौवीरकेनवा। पिष्ट्वानाभिप्रलेपेनहन्त्यतीसारमुल्वणम्॥ सौ वीरंतुयवैरामैःपक्वैर्वानिस्तुषीःकृतैः। सौवीरंसन्धानम्। अजाक्षीररसञ्चापिविष्किरंहारि णंतथा॥ शालिभिःषष्टिकैस्तुल्यैमसूरैर्वापिभोजयेत्। वर्तिकालावविकरकपिञ्जलक तित्तिराः॥ चकोरक्रकराद्याश्चविष्किराःसमुदाहृताः। कपिञ्जलइतिस्यातोलोकेकपिश

तित्तिराः ॥ क्रकरः । कण्टइतिलोकेहारिणस्ताम्रवर्णःस्यान्मृगःशीतैःसंग्राहिभिर्द्रव्यैः कुर्यात्संग्रहणंभिषक् १४४ ॥

जिसको अच्छे प्रकार से विरेचन नहीं होते हैं उसके नाभि का जकड़ना कोख में पीड़ा मल तथा वायुका न निकलना खुजली चकत्ते भारीपन विदाह अरुचि आध्मान भ्रम और छर्दि होतीहै ऐसी दशा में स्निग्ध तथा पाचक औषधियों से दोषों को परिपाककरके फिर विरेचन देना चाहिये इसरीति से उपद्रवों का नाश अग्नि की दीप्ति और हलकापन होताहै विरेचनकी अधिकतामें मूर्च्छा गुदभ्रंश कफ का बहुत निकलना शूल औरमांसके धोवन मंद जल अथवारुधिरके समान दस्त होता है ऐसी दशामें रोगाके शरीरमें शीतल जल सींचकर चावलों के शीतल जल में सहत मिलाकर पान कराके कुछ वमन करावे अथवा दही (सौ वीर कच्चे अथवा पके भूसी सहित यवोंको संधान करके जो वस्तु बनतीहै उसे सौवीर कहतेहैं) के साथ आम की छाल को पीसकर नाभि पर लेप करे इससे बहुत बढ़ा हुआ भी अतीसार शान्त होताहै और बकरी का दूध विष्किर (बटेर लवा कपिशवर्ण तीतर चकोर औरकराट आदिक विष्किर कहलातेहैं) पक्षी अथवालालमृगके मांसकारस चावल साठी और मसूरके साथ पानकरावे और शीतल तथा ग्राही वस्तुओंसे दस्तोंकोरोके १४४ ॥

लाघवेमनसस्तुष्टावनुलोमङ्गतेऽनिले । सुविरिक्तंनरंज्ञात्वापाचनंपाययेन्निशि॥इन्द्रियाणांबलंबुद्धेःप्रसादोवह्निदीप्तिता । धातुस्थैर्य्यंवयस्थैर्य्यम्भवेद्रेचनसेवनात् ॥ प्रतापसेवांशीताम्बुस्नेहाभ्यंगमजीर्णताम् । व्यायामंमैथुनञ्चैवनसेवेतविरेचितः ॥ शालिपष्ठिकंमुद्गाद्यैर्यवागूम्भोजयेत्कृताम् । जङ्गालविष्किराणांवारसैःशाल्योदनंहितम्॥ हरिणैणकुरङ्गर्ष्यवातायुमृगमात्रका ॥ राजीवःपृषतश्चैवजङ्गालाःशरभादयः१४५ ॥

शरीर का हलकापन मनकी प्रसन्नता और वायु का नीचे जाना इनबातों से अच्छी रीति का विरेचन हुआ जान के रात्रि के समय पाचन औषधियों का पान करावे विरेचन के सेवन से इन्द्रियों में बल बुद्धि की प्रसन्नता अग्निकी दीप्ति और धातु तथा अवस्था की स्थिरता होती है और विरेचन वस्तुका सेवन करनेवाला अत्यन्त वायु शीतल जल तैलमर्दन अजीर्णकारी वस्तुओंका भोजन व्यायाम तथा मैथुन का त्याग करदे विरेचन के उपरान्त चावल साठी और मूंग की यवागू (अथवाजंघाल हरिण एण कुरंग ऋष्य वातायु राजीव पृषत और शरभादिक जंघाल कहलाते हैं) और विष्किर जीवों के मांस के रस के साथ भात खिलावे ॥ १४५ ॥

अथस्नेहवस्तिविधिः ॥

वस्तिर्द्विधानुवासाख्योनिरूहश्चततःपरम्। यःस्नेहोदीयतेसःस्यादनुवासननामकः॥ कषायक्षीरतैलैर्योनिरूहःसनिगद्यते । वस्तिभिर्दीयतेयस्मात्तस्माद्वस्तिरितिस्मृतः ॥ वस्तिर्मृगादीनांमूत्राशयेः तत्रानुवासनाख्योहिवस्तिर्यःसोऽत्रकथ्यते ।अनुवासनभेदश्चमात्रावस्तिरुदीरितः॥ पलद्वयन्तस्यमात्रातस्माद्वापिवाभवेत् । अनुवासस्तुरूक्षःस्यात्तीक्ष्णाग्निःकेवलानिली १४६ ॥

अथस्नेहवस्तिविधि ॥

वस्ति दो प्रकार की होतीहै एक अनुवासन दूसरी निरूह केवल स्नेहके द्वारा जो वस्ति दीजाती

है वह अनुवासन और क्वाथ दूध तथा तेल के द्वारा जो वस्ति दीजातीहै उसको निरूह कहतेहैं वस्ति (मृगादिकों के मूत्राशय) द्वारा इसका व्यवहार कियाजाताहै इसलिये इसको वस्ति क्रिया कहतेहैं इनमें से प्रथम अनुवासन को कहतेहैं मात्रा वस्ति अनुवासन वस्ति का भेद कहीगईहै इसकी मात्रा दो अथवा एक पलकी होतीहै रूखे दीप्ताग्नि वाले और केवल वात की प्रबलता वाले पुरुषों को अनुवासन हितहै ॥ १४६ ॥

: नानुवास्यस्तुकुष्ठीस्यान्मेहीस्थूलस्तथोदरी । नास्थाप्यानानुवास्याश्चजीर्णोन्मादतृड्अर्दिताः ॥ शोथमूर्च्छारुचिभयश्वासकासक्षयातुराः ॥ १४७ ॥

कुष्ठ प्रमेह स्थूलता और उदर रोग वालों को अनुवासन हितकारी नहींहै अजीर्ण उन्माद तृषा सूजन मूर्च्छा अरुचि भय श्वास खांसी तथा क्षयसे व्याकुल पुरुषों को अनुवासन और आस्थापन दोनों निषिद्ध हैं ॥ १४७ ॥

नेत्रंकार्य्यंसुवर्णादिधातुभिर्वृक्षवेणुभिः ॥ नलैर्दन्तैर्विषाणाग्रैर्मणिभिर्वाविधीयते।नेत्रंनाडीतथाचोक्तंविश्वप्रकाशे । नेत्रंमन्थगुणेवस्त्रेतरुमूलेविलोचने । नेत्रवन्धेचनाड्यांच नेत्रोनेतरिभेद्यव ॥ एकवर्षात्तुषड्वर्षाद्यावन्मानंतुषडंगुलम् । ततोद्वादशकंयावन्मानंस्यादष्टसम्मितम् ॥ ततःपरंद्वादशभिरंगुलैर्नेत्रदीर्घता । मुखच्छिद्रंकलायाभंछिद्रंकोलास्थिसन्निभम् ॥ यथासङ्ख्यंभवेन्नेत्रंश्लक्ष्णंगोपुच्छसन्निभम् । गोपुच्छसन्निभंमूलेस्थूलंतस्मात्क्रमात्कृशम् ॥ मुखच्छिद्रादिप्रमाणंनेत्रंक्रमेणपड्वर्षायद्वादशवर्षायतदूर्ध्ववर्षायज्ञेयम् आतुरांगुष्ठमानेनमूलेस्थूलंविधीयते । कनिष्ठिकापरीणाहमग्रेचगुटिकामुखम् ॥ परिणाहोऽग्रस्थौल्यम् । तन्मूलेकर्णिकेद्वेचकार्येभागाच्चतुर्थकात् । कर्णिकागवादिकर्णवत् । योजयेत्तत्रवस्तिञ्चवन्धद्वयविधानतः । मृगाजशूकरगवांमहिषस्यापिवाभवेत् ॥ वस्तिरितिशेषः । मूत्रकोशस्यवस्तिस्तुनदलाभेतुचर्मणः । कषायरक्तःसमृदुर्वस्तिःस्निग्धोदृढोहितः ॥ व्रणवस्तेस्तुनेत्रंस्यात्श्लक्ष्णमष्टांगुलोन्मितम् । मुद्गच्छिद्रंगृध्रपक्षनलिकापरिणाहिच ॥ शरीरोपचयंवर्णंबलमारोग्यमायुषः । कुरुतेपरिवृद्धिञ्चवस्तिःसम्यगुपासितः ॥ दिवाशीतेचसन्तेचस्नेहवस्तिःप्रदीयते । ग्रीष्मवर्षाशरत्कालेरात्रौस्यादनुवासनम् ॥ नचातिस्निग्धमशनंभोजयित्वानुवासयेत्।मदंमूर्च्छाञ्चजनयेद्द्विधास्नेहःप्रयोजितः ॥द्विधाभोजनेवस्तौच । रूक्षंभुक्तवतोत्यन्तंवलंवर्णञ्चहापयेत् । युक्तस्नेहमतोजन्तुंभोजयित्वानुवासयेत् ॥ युक्तस्नेहंयथोचितस्नेहंभोज्यंभोजयित्वेत्यर्थः ॥ १४८ ॥

सुवर्णादि धातु वृक्ष वांस नलदांत सींगोंके अग्रभाग अथवा मणियोंके द्वारा नेत्र (नल) बनावे नेत्र शब्दका नल अर्थ विश्वप्रकाश कोश में लिखा है.मथानी की रस्सी वस्त्र वृक्षोंकी जड़आंख आंखोंकीपट्टी नली और नायक यहनेत्र शब्दके अर्थहैं एकवर्षसे छः वर्षकी अवस्थाके बालकको छः अंगुल छः वर्षसे बारहवर्षतक के बालकको आठ अंगुल और बारहवर्ष के उपरांत चाहे जितनीअवस्थाहो बारह अंगुलकी लंबीनली होनीचाहिये नलीका छेद क्रमसे मूंग मटर और बेरकी गुठली के बराबर करना चाहिये यह चिकनीऔर गौकीपूंछ के समान मूलमें स्थूल और नीचेकी ओर क्रमक्रम

से पतलीहोती है नलीकामूल रोगी के अंगूठेके समान मोटा अग्रभाग कनिष्ठा उंगली के समान मोटा और मुख वहुत चिकना तथा गोलीके समान गोलवनाना चाहिये और नलीके मूल के चतुर्थ भाग में दोगोके से कान वनाने चाहिये उनमें वस्तिको दोवन्धनोंसे बांधे मृग वकरा शूमर वैलअथवा भैंसेकी मूत्राशय वस्ति में श्रेष्ठहोती है परन्तु इनके अभाव में चमडेकीवस्ति वनवानी चाहिये सवप्रकार की वस्ति कपायवर्ण से रंगीहुई कोमल स्निग्ध और मजबूत होनी चाहिये घाव में देने की वस्तिकी नली कोमल तथा आठउंगलकी लंवी साफहोनी चाहिय उसके मुखका छिद्र मूंगकेसमान और मुटाई गिद्ध के परके समान होनी चाहिये अच्छेप्रकार से वस्ति क्रिया होजाने पर शरीर की पुष्टता वर्णकी उत्तमता वल आरोग्य और आयुकी वृद्धिहोती है शीततथा वसन्त ऋतु में दिन को और ग्रीष्म वर्षा तथा शरद ऋतु में रात्रि को स्नेह वस्ति लेनी चाहिये अत्यन्त स्निग्ध भोजन कराय के स्नेह वस्ति नहीं देनी चाहिये क्योंकि एकसमय में भोजन और वस्ति दोनों से सेवना किया हुआ स्नेह मद और मूर्छा को उत्पन्नकरता है और अत्यन्त रूखी वस्तु खिलाकरकेभी स्नेह वस्ति देनेसे वल और वर्णका नाशहोता है इसी कारण से यथायोग्य स्निग्ध भोजन करायकर स्नेह वस्ति देनी चाहिये ॥ १४८ ॥

हीनमात्रावुभौवस्तीनातिकार्य्यकरौस्मृतौ। अतिमात्रौतथानाहक्लमातीसारकारकौ॥ उभौवस्तीअनुवासननिरूहाख्यौ । उत्तमास्यात्पलैःषड्भिर्मध्यमास्यात्पलैस्त्रिभिः। पलाद्यर्द्धेनहीनास्यादुक्तमात्रानुवासने ॥ शताह्वासैन्धवाभ्याञ्चदेयंस्नेहेचचूर्णकम्। तन्मात्रोत्तममध्यान्त्याषट्चतुर्द्वयमापकैः॥ १४९ ॥

हीन मात्रा से व्यवहार की गई दोनों वस्ति अच्छे प्रकार से कार्यको नहीं सिद्धकरसकी हैं और मात्रा की अधिकता से आनाह ग्लानि तथा अतीसारको उत्पन्न करती हैं स्नेह वस्तिकी उत्तममात्राछः पल मध्यम मात्रा तीनपल और हीन मात्रा डेढ़ पलकी होती है जिस स्नेह से वस्ति देनी हो उसमें सौंफ और सैंधोनोनके चूर्ण को मिलावे इसचूर्ण की उत्तममात्रा छः मासेकी मध्यममात्रा चारमासे की और हीन मात्रा दोमासेकी होती है ॥ १४९ ॥

विरेचनात्सप्तरात्रेगतेजातबलायच। भुक्तान्नायानुवास्यायवस्तिर्देयोऽनुवासनः॥ अथानुवास्यंस्वभ्यक्तमुष्णाम्बुस्वेदितंशनैः। भोजयित्वायथाशास्त्रंकृतचंक्रमणंततः॥ उत्सृष्टानिलविण्मूत्रंयोजयेत्स्नेहवस्तिना॥ उष्णाम्बुस्वेदितम्। उष्णाम्बुनास्नपितं १५०

विरेचनके पीछे सात रात्रि व्यतीत होजाने पर और बलहोजाने पर भोजन करायके स्नेहवस्ति देनीचाहिये जिसको वस्ति देनीहोय उसे शरीर में तेल मल के उष्णजल से स्नानकरावे फिर विधिके अनुसार भोजन कराकर कुछ टहलावे फिर वायु मूत्र और मल के त्यागहोजाने पर स्नेहवस्ति देवे ॥ १५० ॥

सुप्तस्यवामपार्श्वेनवामजङ्घाप्रसारिणः। कुञ्चितापरजङ्घस्यनेत्रंस्निग्धेगुदेन्यसेत्॥ बद्ध्वावस्तिमुखंसूत्रैर्वामहस्तेनधारयेत्। पीडयेद्दक्षिणेनैवमध्यवेगेनधीरधीः॥ जृम्भाकासक्षवादींश्चवस्तिकालेनकारयेत्। त्रिंशन्मात्रामितःकालःप्रोक्तोवस्तेस्तुपीडने॥ ततः प्रणिहितेस्नेहेउत्तानोवाकृशतंभवेत्। स्वजानुनःकरावर्त्तंकुर्य्याच्छोटिकयापुनः॥ एषा

मात्राभवेदेकासर्वत्रैवेषनिश्चयः । निमिषोन्मेषणंपुंसामंगुल्याछोटिकाथवा ॥ गुर्वक्षरोच्चारणंवास्यान्मात्रेयंस्मृताबुधैः । प्रसारितैःसर्वगात्रैर्यथावीर्य्यंप्रसर्पति ॥ यथावीर्य्यंस्नेहादि । ताडयेत्तलयोरेनन्त्रींस्त्रीन्वारानशनैःशनैः । स्फिजोश्चैवतथाश्रोणीशय्याश्चैवोत्क्षिपेत्ततः ॥ स्फिजोश्चैनंस्वपाणिभ्यांपूर्ववत्ताडयेद्बुधः। शय्याञ्चपदतस्तस्यत्रीन्वारानुत्क्षिपेत्ततः ॥ जातेविधानेतुततःकुर्य्यान्निद्रांयथासुखम् । सानिलःसपुरीषश्चस्नेहः प्रत्येतियस्यतु ॥ उपद्रवंविनाशीघ्रंससम्यगनुवासितः । उपद्रवस्थानेतुपचौषाविति सुश्रुतेपाठः ॥ १५१ ॥

वस्ति देनेके समय रोगीको बाईं करवट से सुलाकर बाईं जांघको फैलवावे और दक्षिण जांघको सुकडवावे फिर गुदा में तेललगाकर वैद्य बायेंहायसे सूत्रोंसे बंधेहुये वस्ति के मुखको पकड़ेरहै और दाहिने हाथसे धीरे २ नलीको भीतर डाले वस्तिदबाने का समयतीसमात्रा(अपने घुटनेके चारों तरफ चुटकी बजाकर हाथ घुमाने में जितना समय लगता है उसको एकमात्रा कहते हैं अथवा नेत्रोंका एक बार खोलना मूंदना जितने समयमें हो पुरुषों के चुटकी बजाने में जो समय हो अथवा एक गुरु अक्षर के बोलने में जितना समयहो उसको मात्रा कहतेहैं) का कहागया है और वस्तिदेनेके समय जंभाई खांसी तथा छींकको त्यागदे इस प्रकारसे स्नेह भीतर प्रविष्ट होजानेपर सौवाक्य के उच्चारण करने में जितनी देर लगतीहै उतनीदेर तक चित्त पड़ारहै संपूर्ण अंगोंके फैलाने से स्नेह आदिक अपने वीर्यके अनुसार फैलजातेहैं रोगीके नितंब और दोनों हाथोंको तीन २ बारफैलवावे फिर हाथ पैरके तलए और कमर में हाथसे ताडन करे और पगां तनकी ओरसे शय्याको तीन बार ऊंचे को उचकावे फिर एड़ियों में हाथसे थपकी लगावे इस प्रकार संपूर्ण विधानके होजानेपर रोगीको सुखपूर्वक निद्रा करावे जिसके उपद्रवोंके विना वायु और मल सहित स्नेह फिर निकल आवे उसका अनुवास न अच्छे प्रकारसे हुआ जानों ॥ १५१ ॥

जीर्णान्नमथसायाह्नेस्नेहेप्रत्यागतेपुनः । लघ्वन्नंभोजयेत्कामंदीप्ताग्निस्तुनरोयदि ॥ अनुवासितायदातव्यमितरेऽह्निसुखोदकम् । धान्यशुण्ठीकषायंवास्नेहव्यापत्तिनाशनम् ॥ सुखोदकमुष्णोदकव्यापत्तिर्व्याधिः । अनेनविधिनाषड्वासप्तवाष्टौनवापिवा । विधेयावस्तयस्तेषामन्तेचैवनिरूहणम् ॥ १५२ ॥

स्नेह के निकलजाने पर जो क्षुधा लगे तो सायंकाल के समय खूब गलाहुआ अथवा कोई हलका अन्न भोजन करावे दूसरे दिन उष्ण जल अथवा धनियां और सोंठ का काढ़ा पिलावे इससे स्नेह की संपूर्ण व्याधि नष्टहोजातीहै इस प्रकारसे छः सात आठ अथवा नौवार स्नेह वस्ति देकर निरूह वस्ति दे ॥ १५२ ॥

दत्तस्तुप्रथमोवस्तिःस्नेहयेद्वस्तिवंक्षणौ । सम्यग्दत्तोद्वितीयस्तुमूर्ध्वस्थमनिलंजयेत् ॥ बलंवर्णञ्चजनयेत्तृतीयस्तुप्रयोजितः । चतुर्थपञ्चमौदत्तौस्नेहयेतांरसासृजी ॥ षष्ठोमांसंस्नेहयतिसप्तमोमेदएवच । अष्टमोनवमश्चापिमज्जानञ्चयथाक्रमम् ॥ यथाक्रममितिवचनादष्टमोऽस्थिस्नेहयेत् । एवंशुक्रगतान्दोषान्द्विगुणःसाधुसाधयेत् ॥ (अ

ष्टादशादधिकवस्तिः)ऋष्टादशाष्टदशकान्वस्तीनांयोनिषेवते। सकुञ्जरबलोऽश्वस्यअत्र तुल्योऽमरप्रभः ॥ रूक्षायबहुवातायस्नेहवस्तिंदिनेदिने । दद्याद्वैद्यस्तथान्येषामग्न्या बाधभयात्त्र्यहात् ॥ स्नेहोऽल्पमात्रोरूक्षाणांदीर्घकालमनत्ययः । अनत्ययः । अबाधः । तथानिरूहःस्निग्धानामल्पमात्रःप्रशस्यते । अथवायस्यतत्कालंस्नेहोनिर्यातिकेवलः ॥ तस्याप्यल्पतरोदेयोनहिस्निग्धेऽवतिष्ठते । अवतिष्ठतेदत्तःस्नेहइतिशेषः । अशुद्धस्य मलोन्मिश्रःस्नेहोनैतियदापुनः । तदाङ्गसदनाध्मानेशूलंश्वासश्चजायते ॥ पक्वाशयेगुरु त्वञ्चतत्रदद्यान्निरूहणम् । तीक्ष्णंतीक्ष्णौषधैर्युक्तंफलवर्तिमथापिवा ॥ यथानुलोमनोवा युर्मलःस्नेहश्चजायते । तथाविरेचनंदद्यात्तीक्ष्णंनस्यञ्चशस्यते ॥ १५३ ॥

पहली वस्ति देने से मूत्राशय और वंक्षण स्निग्ध होतेहैं दूसरी वस्ति से मस्तक की वायुशान्त होतीहै तीसरी वस्ति से बल तथा वर्ण की उत्तमता होतीहै चौथी तथा पांचवीं वस्ति से रस तथा रक्त छठी वस्तिसे मांस सातवीं वस्ति से मेद आठवीं से हड्डी और नवीं वस्ति से मज्जा स्निग्धहोतीहै अठारहदिन तक वस्ति लेने से वीर्य्यके संपूर्ण दोष नष्ट होतेहैं और छत्तीस दिनतक वस्तिलेने से हाथी के समान बल घोडे के समान वेग और देवताओं के समान कांति होतीहै रूखापन और वायु की अधिकता होने पर प्रतिदिन स्नेहवस्तिदे परन्तु अन्यस्थानों में मन्दाग्निके भय से तीन दिनका अन्तर देकर स्नेहवस्तिदे रूखे पुरुषों को थोड़ीमात्रा से बहुत दिनतक स्नेह देनेमें दोषनहीं इसी प्रकार स्निग्ध पुरुषोंको थोड़ीमात्रासे निरूह वस्ति देना श्रेष्ठहै जिसके वस्तिदेनेसे तत्क्षण केवलस्नेह निकल आवे उसको फिर बहुत थोड़ीमात्रा देनी चाहिये वमन विरेचनादिकों के द्वारा शरीर को विना शुद्धकिये स्नेहवस्ति देनेसे जो स्नेह मलके साथमिलकर बाहरन निकले तो शरीरकी शिथिलता आध्मान शूल श्वास और पक्वाशयमें भारीपन मालूम होताहै उससमय निरूह वस्ति अथवा तीक्ष्ण औषध सहित तीक्ष्ण फलवर्ति (इसका आगे वर्णन होगा) का प्रयोग करे वायु मल और स्नेह के नीचे जाने के लिये विरेचन और तीक्ष्ण नासदे ॥ १५३ ॥

यस्यनोपद्रवंकुर्य्यात्स्नेहवर्त्तिरनि सृतः।सर्व्वोऽल्पोऽयावृतोरौक्ष्यादुपेक्ष्यःसविजानता॥ अनायातन्त्वहोरात्रेस्नेहंसंशोधनैर्हरेत्।स्नेहवस्तावनायातेनान्यःस्नेहोविधीयते॥१५४॥

जिसके स्नेह वस्ति निकलनेसे कोई उपद्रव नहो वहांरूखेपनका कारणसमझकर कोई यत्न न करे एक रात्रि और दिन तक जो स्नेह न निकले तो शोधक औषधियोंके द्वारा स्नेह को निकाले स्नेह वस्तिके न निकल ने पर दूसरे वार स्नेह देना अनुचित है ॥ १५४ ॥

गुडूच्येरण्डपूतीकभार्गीवृषकरौहिषम् । शतावरीसहचरंकाकनासांपलोन्मिताम् ॥ यवमाषातसीकोलकुलत्थान्प्रसृतोन्मितान् । चतुर्द्रोणेऽम्भस.पक्त्वाद्रोणशेषेणतेनच ॥ पचेत्तैलाढकंसर्वैर्जीवनीयैःपलोन्मितैः । अनुवासनमेतद्धिसर्ववातविकारनुत् ॥ पूतीकःक रञ्जः । रौहिषंइपत्सुगंधतृणविशेषः । काकनासाकौआठोढ़ी । प्रसृतम् । पलद्वयम् । घो द्वासस्व्यापदस्तुजायतेवस्तिकर्म्मणः । दूषितान्समुदायेनतांश्चिकित्स्यात्सुश्रुतान् ॥ समुदायेनसमुचितनेत्रादिसामग्र्या ॥ १५५ ॥

गिलोय रेंड़ी करंजुआ भारंगी वांसा आगि यासतावर झिंटी और काक जंघा यह संपूर्ण एक २ पल जौ उर्द अलसी वेर और कुलथी यह सब दो २ पल इन सबको चार द्रोण पानी में औटा कर एक द्रोण बाकी बचने पर उस पानी को छानले और उस पानी से एक आढ़क तेल जीवनीय गण का एक २ पल औषधियोंका कल्क मिलाकर पकावे इस तेलके द्वारा अनुवासन करने से सब वात रोगों का नाश होता है अयोग्य नली आदि के द्वारा वस्ति क्रिया करने से छहत्तर रोग उत्पन्न होते हैं सुश्रुत के मतसे इन रोगोंकी चिकित्सा करे ॥ १५५ ॥

पानाहारविहाराश्च परिहाराश्चकृत्स्नशः । स्नेहपानसमाःकार्य्या नात्रकार्य्याविचारणा ॥ १५६ ॥

वस्ति क्रिया में पान आहार विहार और संपूर्ण त्याग करने के योग्य वस्तु स्नेहपान के समान जाननी चाहिये ॥ १५६ ॥ अथ निरूहवस्ति विधिः ॥

निरूहवस्तिबहुधाभिद्यतेकारणान्तरैः । तैरेवतस्यनामानिधृतानिमुनिपुङ्गवैः॥कारणान्तरैः । समवायिकारणभेदैः । निरूहस्यापरन्नामप्रोक्तमास्थापनंबुधैः । स्वस्थानेस्थापनाद्दोषधातूनांस्थापनंमतम् ॥ निरूहस्यप्रमाणंतुप्रस्थपादोत्तरंपरम् । मध्यमंप्रस्थमुद्दिष्टंहीनञ्चकुडवास्त्रयः ॥ परंश्रेष्ठम् ॥ १५७ ॥

निरूहवस्ति की विधि ॥

निरूहवस्ति बहुधा कारणों के भेदसे अनेक प्रकारकी होतीहै और उन्हीं कारणों के अनुसार उसके नाम होते हैं दोष और धातु ओंको अपने २ स्थानमें स्थापित करने से निरूह वस्तिका दूसरा नाम आस्थापन है निरूहवस्तिकी श्रेष्ठमात्रा सवाप्रस्थ मध्यममात्रा एकप्रस्थ और हीनमात्रा तीन कुडवकी होती है ॥ १५७ ॥

अतिस्निग्धोऽक्लिष्टदोषःक्षतःक्षीणःकृशस्तथा । अक्लिष्टदोषः । अदत्तोत्क्लेशनइतियावत्क्षतोरस्कःउरःक्षतवान् । आध्मानछर्दिहिक्कार्शःकासश्वासप्रपीड़ितः॥ गुदशोफातिसारार्त्तोविसूचीकुष्ठसंयुतः ॥ गर्भिणीमधुमेहीचनास्थाप्यश्चजलोदरी ॥ १५८ ॥

अत्यन्त स्निग्ध ऊपर को गये दोष वाला छातीमें घाववाला कृश औरउदर आध्मान छर्दि हिचकी बवासिर खांसी श्वास गुदा के रोग सूजन अतीसार विशूचिका कुष्ठ मधुप्रमेह तथा जलन्धर रोगसे ग्रसित पुरुष और गर्भिणी स्त्रीको आस्थापन न दे ॥ १५८ ॥

वातव्याधावुदावर्त्तेवातासृग्विषमज्वरे ॥ मूर्च्छातृष्णोदरानाहमूत्रकृच्छ्राश्मरीषुच । वृद्ध्यासृग्दरमंदाग्निप्रमेहेषुनिरूहणम् ॥ शूलेऽम्लपित्तेहृद्रोगेयोजयेद्विधिवद्बुधः । उत्सृष्टानिलविण्मूत्रंस्निग्धंस्विन्नमभोजनम् ॥ मध्याह्नेगृहमध्येचयथायोग्यंनिरूहयेत् ॥ स्निग्धमस्वभ्यक्तम् । उष्णाम्बुस्नापितम् । स्नेहवस्तिविधानेनबुधःकुर्य्यान्निरूहणम् । जातेनिरूहेचततोभवेदुत्कटकासनः ॥ तिष्ठन्मुहूर्तमात्रन्तुनिरूहागमनेच्छया । अत्रमुहूर्त्तमात्रशब्देनैतदपिबोधितम्निरूहप्रत्यागमनकालोमुहूर्त्तमात्र ॥ अनायातंमुहूर्त्तेनुनिरूहंशोधनैर्हरेत् । निरूहैरेवमतिमान्क्षारमूत्राम्लसैन्धवैः ॥ १५९ ॥

वातव्याधि उदावर्ते वातरक्त विषम ज्वर मूर्च्छा तृषा उदर आनाह मूत्र कृच्छ्र पथरी वृद्धि प्रदर मन्दाग्नि प्रमेह शूल अम्ल पित्त और हृदय के रोगों में विधिपूर्वक वस्ति देनी चाहिये वायु मल और मूत्र का त्याग कर के और तेल लगाकर के गरम जल से स्नान करे फिर विना भोजन किये घरमें बैठालकर मध्याह्नकेसमय यथा योग्य निरूह वस्तिदेवे स्नेह वस्तिकेसमान निरूहवस्ति देनी चाहिये निरूह वस्तिके होजानेपर उसके निकलनेके लिये एकमुहूर्त भर उकड़ू बैठे जो मुहूर्त भर में बाहर न निकले तो शोधन ओषधियों से अथवा क्षार मूत्र खटाई और सेंधा नोन के द्वारा फिर निरूह वस्तिदेकर उस को निकाले १५९॥

यस्यक्रमेणगच्छन्तिविट्पित्तकफवायवः। लाघवंचोपजायेतसुनिरूहंतमादिशेत्। यस्यस्याद्वस्तिवद्धाल्पवेगोहीनमलानिलः॥ मूर्च्छार्त्तिजाड्यारुचिमान्दुर्निरूहंतमादिशेत्। विविक्ततामनस्तुष्टिःस्निग्धताव्याधिनिग्रहः॥ आस्थापनेस्नेहवस्त्योःसम्यग्दानेतुलक्षणम्॥ विविक्तता। दत्तोपधनिःसरणम्अनेनविधिनायुञ्ज्यान्निरूहंवस्तिदानवित्॥ द्वितीयंवातृतीयंवाचतुर्थंवायथोचितम्॥ १६०॥

कफ पित्त वात और मल इनके निकलजानेसे शरीरमें हलकापन मालूमदे तो अच्छेप्रकारसे हुई निरूह वस्ति जानना जिसके वस्ति के वेगकी अल्पता से वायु तथा मल कमनिकले मूत्र रुकजाय और जड़ता तथा अरुचि उत्पन्न हो उसकी निरूहवस्ति बिगड़ी हुई जानना चाहिये ओषधियों का अच्छी रीति से निकल जाना मनकी प्रसन्नता स्निग्धता और रोग की शान्ति यह स्नेह और निरूहवस्ति के अच्छे प्रकार से होजाने के लक्षण हैं इसप्रकारसे दो तीन अथवा चार बार यथा योग्य विचार कर निरूहवस्ति लेनी चाहिये॥ १६०॥

सस्नेहएकःपवनेपित्तेद्वौपयसासह॥ कषायकटुमूत्राद्याःकफेतूष्णास्त्रयोहिताः॥ पित्तश्लेष्मानिलाविष्टंक्षीरयूषरसैःक्रमात्। निरूहंभोजयित्वाचततस्तमनुवासयेत्॥ सुकुमारस्यवृद्धस्यबालस्यचमृदुर्हितः। वस्तिस्तीक्ष्णःप्रयुक्तस्तुतेषांहन्याद्बलायुषी॥ दद्यादुत्क्लेशनंपूर्वंमध्यंदोषहरन्ततः॥ पश्चाच्छमनीयञ्चदद्याद्वस्तिंविचक्षणः॥ १६१॥

वायु रोगमें स्नेह सहित एकवार पित्तरोग में दुग्ध सहित दोवार और कफजरोगोंमें उष्ण कषैले तथा कटु मूत्रादिकों के साथ तीनवार वस्ति देनी चाहिये निरूह वस्ति देनेके उपरान्त पित्तवाले को दूध कफवाले को जूष और वातवाले को मांस का रस खिलाकर अनुवासन वस्ति देनी चाहिये सुकुमार वृद्धऔर बालकको कोमलवस्ति हितहै क्योंकि इनको तीक्ष्णवस्ति देनेसे बल और आयुकी हानिहोती है पहले उत्क्लेशनवस्ति मध्यमें दोषहरवस्ति और पीछे संशमनीयवस्ति लेनीचाहिये१६१॥

एरण्डबीजंमधुकंपिप्पलीसैन्धवंवचा। हवुषाफलकल्कश्चवस्तिरुत्क्लेशनःस्मृतः॥ इत्युत्क्लेशनवस्तिःशताह्वामधुकंबिल्वंकौटजंफलमेवच॥ सकाञ्जिकःसगोमूत्रोवस्तिर्दोषहरःस्मृतः। इतिदोषहरवस्तिः॥ प्रियङ्गुर्मधुकंमुस्तातथैवचरसाञ्जनम्। सक्षीरःशस्यते वस्तिर्दोषाणांशमनःस्मृतः॥ इतिशमनवस्तिः॥ १६२॥

रेंड़ी के बीज मुलहठी पीपल सेंधानोन वच और हाऊबेर इनके कल्कसे जोवस्ति दीजाती है उस को उत्क्लेशन कहते हैं सतावर मुलहठी बेल और इन्द्र जो इनसब को कांजी और गोमूत्र के साथ

जो वस्ति दीजाती है उसको दोषहर कहते हैं मालकंगनी मुलहठी नागरमोथा और रसौत इनसब को दूध के साथ मिलाकर जो वस्ति दीजाती है उसको शमन वस्ति कहते हैं ॥ १६२ ॥

त्रिफलाक्काथगोमूत्रक्षौद्रक्षारसमायुताः॥ऊपकादिप्रतीवापैर्वस्तयोःलेखनाःस्मृताः।ऊषकादिप्रतीवापाः । ऊपकादिगणविशेषेणचूर्णप्रक्षेपाः ॥ इतिलेखनवस्तयः ॥ १६३

त्रिफलाकाकाढा गोमूत्र सहत और जवाखारके साथ ऊपकादि गणका चूर्ण मिलाकर जो वस्ति दीजाती है उसको लेखनवस्ति कहतेहैं इति लेखनवस्ति ॥ १६३ ॥

बृंहणद्रव्यनिष्क्वाथैः कल्कैर्मधुरकैर्युताः ॥ सर्पिर्मांसरसोपेतावस्तयोबृंहणाःस्मृताः ॥ इतिबृंहणवस्तयः ॥ १६४ ॥

बृंहण [धातुपोषक] औषधियों के क्वाथ और जीवनीय गणके कल्कके साथ घी और मांसकारस मिलाकर जो वस्ति दीजातीहै उसको बृंहणवस्ति कहते हैं इतिबृंहणवस्ति ॥ १६४ ॥

बदर्य्यैरावतीशेलुशाल्मली पुष्पजांकुराः ॥ ऐरावती । नारङ्गी । शेलुः । बहुआर । क्षीरसिद्धाःक्षौद्रयुक्तानाम्नापिच्छिलसंज्ञिताः । अजोरभ्रैणरुधिरैर्युक्तादेयाविचक्षणैः ॥ अजश्छागः । उरभ्रोमेषः॥एणःकृष्णमृगः । मात्रापिच्छिलवस्तीनांपलैर्द्वादशभिर्मता ॥ इतिपिच्छिलवस्तयः ॥ १६५ ॥

बेर नारंगी बहुआर सेंमर के फूलके अंकुर इन संपूर्ण वस्तुओं को दूधके साथ परिपाक करके सहत और रुधिरके साथजो वस्तु दीजातीहै उसको पिच्छिल वस्ति कहतेहैं बकरा मेढा और काले मृगकारुधिर वस्तियोंमें युक्त करना चाहिये पिच्छिल वस्तिकी मात्रा बारह पलकी होती है इति पिच्छिलवस्ति ॥ १६५ ॥

दत्त्वादौसैन्धवस्याक्षमधुनःप्रसृतिद्वयम् । विनिर्म्मथ्यततोदद्यात्स्नेहस्यप्रसृतित्रयम् ॥ एकीभूतेततःस्नेहेकल्कस्यप्रसृतिङ्क्षिपेत् । संमूर्च्छितेकषायन्तुचतुःप्रसृतिसम्मितम् ॥ गृह्णीयाच्चतदावायमन्तेद्विप्रसृतोन्मितम् । क्षिप्त्वाविमथ्यदद्याच्चनिरूहंकुशलोभिषक ॥एवंप्रकल्पितोवस्तिर्द्वादशप्रसृतिर्भवेत्।वातेचतुष्पलंक्षौद्रंदद्यात्स्नेहस्यषट्पलम्॥ पित्तेचतुष्पलंक्षौद्रंस्नेहंदद्यात्पलत्रयम्।कफेतुषट्पलंक्षौद्रंक्षिपेत्स्नेहंचतुष्पलम् १६६॥

पहले एकतोला सेंधानोन सोलह तोले सहत एकमें मिलाकर चौबीस तोलेघी आठतोलेकल्क की औषधि बत्तीसतोले क्वाथ और सोलह तोले उसमें छोड़ने की औषधि यह संपूर्ण वस्तु एकमें मिलाकर मथले फिरइसीसे निरूह वस्ति लेनी चाहिये इसकाप्रमाण चौबीस पलका है बातरोगमें सोलह तोले सहत और चौबीस तोले स्नेह पित्तरोगमें सोलह तोलेसहत और बारहतोले स्नेह और कफके रोगोंमें चौबिस तोलेसहत और सोलह तोले स्नेहके द्वारा निरूह वस्ति देनी चाहिये इति निरूहमात्रा ॥ १६६ ॥

एरण्डक्काथतुल्यांशंमधुतैलंपलाष्टकम् । शतपुष्पापलार्द्धेनसैन्धवार्द्धेनसंयुतम् ॥ मधुतैलकसंज्ञोऽयंवस्तिर्दारुविलोडिताः । मेदोगुल्मकृमिप्लीहमलोदावर्तनाशनः ॥ बलवर्णकरश्चैवघ्टष्योदीपनबृंहणः । मधुतैलकवस्तिः ॥ १६७ ॥

रेड़ी का क्वाथ बत्तीसतोले सहत और तेलमिला हुआ बत्तीस तोले सौंफ दो तोले और सेंधानोन दोतोले इनसब वस्तुओं को मिलाकर किसी काष्ठ के टुकड़े से खूबचलावे इसरीति से जो वस्तिदीजाती है उसको मधुतैलक कहते हैं इससे मेद गुल्म कृमि प्लीहा मल तथा उदावर्त्त का नाश बल तथा वर्णकी वृद्धि अग्नि की दीप्ति और वीर्य तथा धातुओं की पुष्टता होती है इति मधुतैलक वस्ति १६७॥

क्षौद्राज्यक्षीरतैलानांप्रसृतंप्रसृतंभवेत्। हवुषासैन्धवाक्षांशोवस्तिःस्याद्यापनःपरः॥ इतिपाचनसारकःयापनवस्तिः॥ १६८॥

सहत घी और दूध आठ २ तोले और हाऊ बेर तथा सेंधानोन एक २ तोले इनसम्पूर्णवस्तुओंसे जो वस्ति दीजाती है उसको यापन कहते हैं इति यापन वस्ति ॥ १६८ ॥

एरण्डमूलनिष्क्काथोमधुतैलंससैन्धवम् । एषयुक्तरथोवस्ति सवचापिप्पलीफलः ॥ इतियुक्तरथोवस्तिः ॥ १६९ ॥

रेड़ीका क्वाथ सहत तेल सेंधानोन वच और पीपल इनसबको मिलाकर जो वस्ति दीजाती है उसको युक्तरथकहते हैं इति युक्तरथ वस्ति ॥ १६९ ॥

पञ्चमूलस्यनिष्क्काथैस्तैलंमागधिकामधुससैन्धवःसयाष्टयह्वःसिद्धवस्तिरितिस्मृतः॥ इतिसिद्धवस्तिः ॥ १७० ॥

पंचमूल का काढ़ा तेल पीपल सहत सेंधानोन और मुलहठी इनसबकी वस्ति को सिद्धवस्ति कहते हैं इति सिद्धवस्ति ॥ १७० ॥

स्नानमुष्णोदकैःकुर्य्याद्दिवास्वप्नमजीर्णताम्।वर्जयेद्परंसर्वमाचरेत्स्नेहवस्तिवत्१७१॥

निरुह वस्ति के उपरान्त उष्ण जल से स्नानकरे दिनमें न सोवे अजीर्णकारी वस्तु न खाय और संपूर्ण कार्य स्नेह वस्ति के समान करे ॥ १७१ ॥

अथोत्तरवस्तिविधिः ॥

अतःपरम्प्रवक्ष्यामिवस्तिमुत्तरसंज्ञितम्। निरुहादुत्तरोयस्मात्तस्मादुत्तरसंज्ञकः ॥ द्वादशाङ्गुलकंनेत्रंमध्येचकृतकर्णिकम्। मालतीपुष्पवृन्ताभञ्छिद्रंसर्षपनिर्गमम्॥पञ्चविंशतिवर्षाणामधोमात्राद्विकार्षिकी।तदूर्ध्वम्पलमात्राचस्नेहस्योक्ताभिषग्वरैः॥१७२॥

उत्तर वस्ति की विधि ॥

निरूह वस्ति के उपरान्त यहदीजाती है इसी से इसको उत्तरवस्ति कहतेहैं इसकी विधि अब कहतेहैं उत्तर वस्ति की नली बारह अंगुल की लंबी होती है उसके बीचमें गौ के कानके समान एक कर्णिका होतीहै यह चमेली के फूल की डंडी के समान बनीहुई होती है और इसके अग्र भाग में सरसों निकलने के लायक एक छिद्र होताहै पच्चीस वर्ष से कम अवस्थावाले को दो तोले की मात्रा और इससे अधिक अवस्था वाले को आठ तोले स्नेह की मात्रा श्रेष्ठ है ॥ १७२ ॥

अथस्थापनशुद्धस्यतृप्तस्यस्नानभोजनैः।स्थितस्यजानुमात्रेचविष्टेस्निग्धशलाकया॥ स्निग्धयामेढ्रमार्गेतुततोनेत्रन्नियोजयेत् । शनैःशनैर्घृताभ्यक्तंमेढ्ररन्ध्राङ्गुलानिषट् ॥ ततोऽवपीडयेद्वस्तिंशनैर्नेत्रंविनिर्हरेत्॥ततःप्रत्यागतेस्नेहेस्नेहवस्तिक्रमोहितः॥१७३॥

रोगीको आस्थापनसे शुद्धकरके स्नान भोजनकराके घुटनोंके बलखड़ा करे फिर स्नेहयुक्त शलाका

के द्वारा अच्छे प्रकारसे देखकर स्नेहयुक्तनली को धीरे २ लिंगमें प्रवेशकरे छः अंगुल तक प्रवेश करके वस्ति को दबावे फिर धीरे २ नलीको निकालले फिर स्नेह के बाहर निकल आनेपर स्नेह वस्ति के समान विधिकरे ॥ १७३ ॥

स्त्रीणांकनिष्ठिकास्थूलन्नेत्रंकुर्य्याद्दशांगुलम् । मुद्गप्रवेशयोज्यञ्चयोन्यन्तश्चतुरंगुलम् ॥ द्व्यंगुलंमूत्रमार्गेचसूक्ष्मंनेत्रंवियोजयेत् । मूत्रकृच्छ्रविकारेषुबालानांत्वेकमंगुलम् ॥ शनैर्निष्कम्पमाधेयंसूक्ष्मंनेत्रंविचक्षणैः। मालतीपुष्पवृन्ताभन्नेत्रमित्युदितंपुनः । सूक्ष्मशब्दाभिधानेबालानांततोऽपिनेत्रस्यसूक्ष्मताबोधनार्थं । योनिमार्गेपुनारीणांस्नेहमात्राद्विपालिकी ॥ मूत्रमार्गेपलोन्मानंबालानांचद्विकार्षिकी । उत्तानायैस्त्रियैदद्यादूर्द्ध्वजान्वैविचक्षणः । अप्रत्यागच्छतिभिषग्वस्तावुत्तरसंज्ञिते ॥ भूयोवस्तिविदध्याद्वासंयुक्तंशोधनैर्गुणैः । फलवर्तिविदध्याद्वायोनिमार्गेदृढाम्भिषक् ॥ सूत्रैर्विनिर्मितांस्निग्धांशोधनद्रव्यसंयुताम् । दह्यमानेतथावस्तौदद्याद्वास्तिविशारदः ॥ क्षीरवृक्षकषायेणपयसाशीतलेनवा । दह्यमानेवस्तौ । यस्मिन्स्थानेवस्तिर्दत्तस्तस्मिन्दह्यमाने ॥ १७४ ॥

स्त्रियोंके लिये दश अंगुल लंबी और कनिष्ठिकाके समान मोटी नली बनानी चाहिये और उसका छेद एक मूंग जाने के समान होना चाहिये योनि के भीतर चार अंगुल और जिस छिद्र से मूत्र निकलता है उस में दो अंगुल नली छोड़नी चाहिये लड़कियों के मूत्रकृच्छ्र रोग में एक अंगुल प्रमाण की पतली नली धीरे२ इस प्रकार से छोडनी चाहिये कि वह किसी प्रकार से हिल ने न पावे नली की आकृति चमेली के फूल की डंडी के समान होनी चाहिये स्त्रियोंके योनि मार्ग में आठ तोले की स्नेह मात्रा मूत्र मार्ग में चारतोले की मात्रा और लड कियों के लिये दो तोले की मात्रा होनी चाहिये स्त्री को चित्त सुलाकर और दोनों घुटने उठा कर वस्ति देनी चाहिये जो उत्तर वस्ति फिर बाहर न निकल आवे तो संशोधक औषध मिलाकर फिर वस्ति दे अथवा योनि मार्ग में सूत्रसे बनी हुई स्निग्ध शोधन औषधि युक्त दृढ फल वर्ति रक्खे जो वस्ति लेनेसे वस्ति के स्थान में दाह उत्पन्न हो तो क्षीर वृक्षों के काढ़ेसे अथवा शीतल जल से वस्ति दे ॥ १७४ ॥

वस्तिशुक्ररुजः पुसांस्त्रीणामार्त्तवजारुजः।हन्यादुत्तरवस्तिस्तुनोचितोमेहनात्क्वचित्॥ सम्यग्दत्तस्यालिङ्गान्व्यापदःक्रममेवच।वस्तेरुत्तरसंज्ञस्यसमानःस्नेहवस्तिना॥१७५॥

वस्ति देनेसे पुरुषोंके वीर्य दोष और स्त्रियों के रज दोष नष्ट होते हैं परन्तु प्रमेह वालों को उत्तर वस्ति कभी नहीं देनी चाहिये उत्तर वस्ति के अच्छे प्रकार देने के तथा उसके बिगडने के चिह्न और क्रम संपूर्ण स्नेह वस्ति के समान होते हैं ॥ १७५ ॥

अथ फलवर्तिविधिः ॥

घृताभ्यक्तेगुदेक्षिप्त्वाश्लक्ष्णास्वांगुष्ठसन्निभा । मलप्रवर्तिनीवर्त्तिं फलवर्त्तिश्चसा स्मृता ॥ १७६ ॥

फलवर्तिकी विधि ॥

गुदा में घृतलगाकर रोगी के अंगूठेके बराबर आकारवाली चिकनी औरमलको निकालने वाली जोबत्ती रक्खी जाती है उसको फलवर्ति कहते हैं ॥ १७६ ॥

रेंड़ी का क्वाथ बत्तीसतोले सहत और तेलमिला हुआ बत्तीस तोले सौंफ दो तोले और सेंधानोन दोतोले इनसब वस्तुओं को मिलाकर किसी काष्ठ के टुकड़े से खूबचलावे इसरीति से जो वस्तिदीजाती है उसको मधुतैलक कहते हैं इस्से मेद गुल्म कृमि प्लीहा मल तथा उदावर्त्त का नाश बल तथा वर्णकी वृद्धि अग्नि की दीप्ति और वीर्य तथा धातुओं की पुष्टता होती है इति मधुतैलक वस्ति १६७॥

क्षौद्राज्यक्षीरतैलानांप्रसृतंप्रसृतंभवेत्। हवुषासैन्धवाक्षांशोवस्तिःस्याद्यापनःपरः॥ इतिपाचनसारकःयापनवस्तिः॥ १६८॥

सहत घी और दूध आठ २ तोले और हाऊ बेर तथा सेंधानोन एक २ तोले इनसम्पूर्णवस्तुओंसे जो वस्ति दीजाती है उसको यापन कहते हैं इति यापन वस्ति॥ १६८॥

एरण्डमूलनिष्क्वाथोमधुतैलंससैन्धवम्। एषयुक्तरथोवस्तिःसवचापिप्पलीफलः॥ इतियुक्तरथोवस्तिः॥ १६९॥

रेंड़ीका क्वाथ सहत तेल सेंधानोन वच और पीपल इनसबको मिलाकर जो वस्ति दीजाती है उसको युक्तरथकहते हैं इति युक्तरथ वस्ति॥ १६९॥

पञ्चमूलस्यनिष्क्वाथस्तैलंमागधिकामधु।ससैन्धवःसयाष्ट्यह्वःसिद्धवस्तिरितिस्मृतः॥ इतिसिद्धवस्तिः॥ १७०॥

पंचमूल का काढ़ा तेल पीपल सहत सेंधानोन और मुलहटी इनसबकी वस्ति को सिद्धवस्ति कहते हैं इति सिद्धवस्ति॥ १७०॥

स्नानमुष्णोदकैःकुर्य्याद्दिवास्वप्नमजीर्णताम्।वर्जयेदपरंसर्वमाचरेत्स्नेहवस्तिवत्१७१॥

निरुह वस्ति के उपरान्त उष्ण जल से स्नानकरे दिनमें न सोवे अजीर्णकारी वस्तु न खाय और संपूर्ण कार्य स्नेह वस्ति के समान करे॥ १७१॥

अथोत्तरवस्तिविधिः॥

अतःपरम्प्रवक्ष्यामिवस्तिमुत्तरसंज्ञितम्। निरुहादुत्तरोयस्मात्तस्मादुत्तरसंज्ञकः॥ द्वादशाङ्गुलकंनेत्रंमध्येचकृतकर्णिकम्। मालतीपुष्पवृन्ताभञ्छिद्रंसर्षपनिर्गमम्॥पञ्चविंशतिवर्षाणामधोमात्राद्विकार्षिकी।तदूर्ध्वम्पलमात्राचस्नेहस्योक्ताभिषग्वरैः॥१७२॥

उत्तर वस्ति की विधि॥

निरुह वस्ति के उपरान्त यहदीजाती है इसी से इसको उत्तरवस्ति कहतेहैं इसकी विधि अब कहतेहैं उत्तर वस्ति की नली बारह अंगुल की लंबी होती है उसके बीचमें गौ के कानके समान एक कर्णिका होतीहै यह चमेली के फूल की डंडी के समान बनीहुई होती है और इसके अग्र भाग में सरसों निकलने के लायक एक छिद्र होताहै पच्चीस वर्ष से कम अवस्थावाले को दो तोले की मात्रा और,इससे अधिक अवस्था वाले को आठ तोले स्नेह की मात्रा श्रेष्ठ है॥ १७२॥

अथस्थापनशुद्धस्यकृतस्यस्नानभोजनैः।स्थितस्यजानुमात्रेचपीठेस्निग्धशलाकया॥ स्निग्धयामेढ्रमार्गंतुततोनेत्रन्नियोजयेत्। शनैःशनैर्घृताभ्यक्तंमेढ्ररन्ध्राङ्गुलानिषट्॥ ततोऽवपीडयेद्वस्तिंशनैर्नेत्रंविनिर्हरेत्॥ततःप्रत्यागतेस्नेहेस्नेहवस्तिक्रमोहितः॥१७३॥

रोगीको आस्थापनसे शुद्धकरके स्नान भोजनकराके घुटनोंके बलखड़ा करे फिर स्नेहयुक्त शलाका

के द्वारा अच्छे प्रकारसे देखकर स्नेहयुक्तनली को धीरे २ लिंगमें प्रवेशकरे छः अंगुल तक प्रवेश करके वस्ति को दवावे फिर धीरे २ नलीको निकाललें फिर स्नेह के बाहर निकल आनेपर स्नेह वस्ति के समान विधिकरे ॥ १७३ ॥

स्त्रीणांकनिष्ठिकास्थूलंनेत्रंकुर्य्याद्दशांगुलम् । मुद्गप्रवेशयोग्यञ्चयोन्यन्तश्चतुरंगुलम् ॥ द्व्यंगुलंमूत्रमार्गेचसूक्ष्मंनेत्रंवियोजयेत् । मूत्रकृच्छ्रविकारेषुबालानांत्वेकमंगुलम् ॥ शनैर्निष्कम्पमाधेयंसूक्ष्मंनेत्रंविचक्षणैः। मालतीपुष्पवृन्ताभंनेत्रमित्युदितंपुनः । सूक्ष्मशब्दाभिधानेबालानांततोऽपिनेत्रस्यसूक्ष्मताबोधनार्थं । योनिमार्गेपुनारीणांस्नेहमात्राद्विपालिकी ॥ मूत्रमार्गेपलोन्मानंबालानांचद्विकार्षिकी । उत्तानायैस्त्रियैदद्यादूर्द्ध्वजान्वैविचक्षणः । अप्रत्यागच्छतिभिषग्वस्तावुत्तरसंज्ञिते ॥ भूयोवस्तिंविदध्याच्चसंयुक्तंशोधनैर्गुणैः । फलवर्त्तिंविदध्याद्वायोनिमार्गेदृढाम्भिषक् ॥ सूत्रैर्विनिर्मितांस्निग्धांशोधनद्रव्यसंयुताम् । दह्यमानेतथावस्तौदद्याद्वास्तिविशारदः ॥ क्षीरवृक्षकषायेणपयसाशीतलेनवा । दह्यमानेवस्तौ । यस्मिन्स्थानेवस्तिर्दत्तस्तस्मिन्दह्यमाने ॥ १७४ ॥

स्त्रियोंके लिये दश अंगुल लंबी और कनिष्ठिकाके समान मोटी नलीबनानी चाहिये और उसका छेद एक मूंग जाने के समान होना चाहिये योनि के भीतर चार अंगुल और जिस छिद्र से मूत्र निकलता है उस में दो अंगुल नली छोड़नी चाहिये लड़कियों के मूत्रकृच्छ्र रोग में एक अंगुल प्रमाण की पतली नली धीरे२ इस प्रकार से छोडनी चाहिये कि वह किसी प्रकार से हिल ने न पावे नली की आकृति चमेली के फूल की डंडी के समान होनी चाहिये स्त्रियोंके योनि मार्ग में आठ तोले की स्नेह मात्रा मूत्र मार्ग में चारतोले की मात्रा और लड कियों के लिये दो तोले की मात्रा होनी चाहिये स्त्री को चित्त सुलाकर और दोनों घुटने उठा कर वस्ति देनी चाहिये जो उत्तर वस्ति फिर बाहर न निकल आवे तो संशोधक औषध मिलाकर फिर वस्ति दे अथवा योनि मार्ग में सूत्रसे बनी हुई स्निग्ध शोधन औषधि युक्त दृढ फल वर्ति रक्खे जो वस्ति लेनेसे वस्ति के स्थान में दाह उत्पन्न हो तो क्षीर वृक्षों के काढेसे अथवा शीतल जल से वस्ति दे ॥ १७४ ॥

वस्तिःशुक्ररुजः पुंसांस्त्रीणामार्त्तवजारुजः।हन्यादुत्तरवस्तिस्तुनोचितोमेहनात्क्वचित्॥ सम्यग्दत्तस्यालिङ्गानिव्यापदःक्रममेवच।वस्तेरुत्तरसंज्ञस्यसमानःस्नेहवस्तिना॥१७५॥

वस्ति देनेसे पुरुषोंके वीर्य दोष और स्त्रियों के रज दोष नष्ट होते हैं परन्तु प्रमेह वालों को उत्तर वस्ति कभी नहीं देनी चाहिये उत्तर वस्ति के अच्छे प्रकार देने के तथा उसके बिगडने के चिह्न और क्रम संपूर्ण स्नेह वस्ति के समान होते हैं ॥ १७५ ॥

अथ फलवर्तिविधिः ॥

घृताभ्यक्तेगुदेक्षिप्त्वाश्लक्ष्णास्वांगुष्ठसन्निभा । मलप्रवर्तिनीवर्त्तिःफलवर्त्तिश्चसास्मृता ॥ १७६ ॥

फलवर्तिकी विधि ॥

गुदा में घृतलगाकर रोगी के अंगूठेके बराबर आकारवाली चिकनी औरमलकी निकालने वाली जोबत्ती रक्खी जाती है उसको फलवर्ति कहते हैं ॥ १७६ ॥

अथ नस्यग्रहणविधिः ॥

नस्यंतत्कथ्यतेधीरैर्नासाग्राह्यंयदौषधम् । नावनंनस्यकर्मेतितस्यनामद्वयंमतम् ॥ नस्यकर्मनासिकायांकर्मचिकित्सायेनतत्नस्यकर्म । नस्यभेदोद्विधाप्रोक्तोरेचनंस्नेहनंतथा । रेचनंकर्षणंप्रोक्तंस्नेहनंबृंहणंमतम् ॥ कफपित्तानिलध्वंसीपूर्वमध्यापराह्णके । दिनस्यगृह्यतेनस्यंरात्रावप्युत्कटेगदे ॥ दिनस्य । त्रिधाविभक्तस्य । पूर्वभागादौ ॥ १७७ ॥

नासलेने की विधि ॥

नासिका के द्वारा जो औषध ग्रहण की जाती है उसको नस्य नावन और नस्य कहते हैं नस्य दोप्रकार की होती है रेचन और स्नेहन इनमेंसे रेचन घटाने वाली और स्नेहन बढ़ाने वालीहोती है कफ पित्त तथा वायु के नास करने के लिये क्रमसे पूर्वाह्ण मध्याह्न और पराह्ण में नास लेनी चाहिये और बड़ी कठिन व्याधि में रात्रिकेसमय भी नासलीजाती है ॥ १७७ ॥

नस्यन्त्यजेद्भोजनान्तेदुर्दिनेचोपतर्पितः । तथानवप्रतिश्यायीगर्भिणीज्वरदूषितः ॥ अजीर्णीदत्तवस्तिश्चपीतस्नेहोदकासवः । क्रुद्धःशोकाभिभूतश्चतृषार्त्तोवृद्धवालकौ ॥ वेगावरोधीश्रान्तश्चस्नातुकामश्चवर्ज्जयेत् । नस्यमितिशेषः ॥ १७८ ॥

भोजन के अन्त में मेघोंसे छाये हुये दिनमें तर्पण क्रिया में नयेजुकाममें गर्भ में ज्वरमें अजीर्ण में वस्ति क्रिया के उपरांत स्नेह जल अथवा मदिरा पीकर क्रोधमें शोक में तृषा में वृद्धतामें लड़कपन में वेगोंके रोकने में थकावट में और स्नान करने के समय नस्य का त्याग करे ॥ १७८ ॥

अष्टवर्षस्यबालस्यनस्यकर्मसमाचरेत् ।अशीतिवर्षादूर्ध्वंचनावनंनैवदीयते॥१७९॥

अथवैरेचनंनस्यंग्राह्यंतैलेसुतीक्ष्णकैः । तीक्ष्णंभेषजासिद्धैर्वास्नेहैःक्वाथैःरसैस्तथा ॥ नासिकारन्ध्रयोरष्टौषट्चत्वारश्चविन्दवः । प्रत्येकंरेचनंयोग्यंमुख्यमध्याल्पमात्रया ॥ नस्यकर्माणिदातव्यंशाणैकंतीक्ष्णमौषधम् । हिङ्गुस्यायवमात्रन्तुमाषकंसैन्धवंमतम् ॥ क्षीरञ्चैवाष्टशाणंस्यात्पानीयञ्चत्रिकार्षिकम्।कार्षिकंमधुरद्रव्यंनस्यकर्म्मणियोजयेत् १८०

आठवर्ष कीअवस्था के भीतर और अस्सी वर्ष के उपरात नासन लेनी चाहिये ॥ १७९ ॥ रेचन नस्य लेने में अत्यन्त तीक्ष्ण तैल अथवा तीक्ष्ण औषधियों से वनेहुये स्नेह क्वाथ और रसके द्वारा नास लेनी चाहिये नासिका के छिद्रों में उत्तम मध्यम और हीनमात्रा के अनुसार क्रमसे आठ विन्दु छः विन्दु और चार विन्दु विरेचन हुलास लेनी चाहिये नस्य कर्म में तीक्ष्ण औषध एक शाण तीन मासे हींग एक जौ सेंधानोन छः रत्ती दूध दो तोले पानी तीन तोले और मधुर पदार्थ एक तोलेभर ग्रहण करना चाहिये ॥ १८० ॥

अवपीडःप्रधमनंद्वौभेदावपरौस्मृतौ । शिरोविरेचनस्यार्थेतौतुदेयौयथायथम् ॥ कल्कीकृतादौषधाद्यःपीडितोनिःसृतोरसः । सोऽवपीडःसमुद्दिष्टस्तीक्ष्णद्रव्यसमुद्भवः ॥ षडंगुलाद्विवक्त्रायानाडीचूर्णन्तयाधमेत् । तीक्ष्णंकोलमितंवक्त्रातेप्रधमनंहितम् ॥ ऊर्ध्वजत्रुगतेरोगेकफजेस्वरसक्षये । अरोचकेप्रतिश्यायेशिरःशूलेचपीनसे ॥ शोफापस्मारकुष्ठेपुनस्यंवैरेचनंहितम् । भीरुस्त्रीकृशबालानांनस्यंस्नेहेनशस्यते ॥ गलरोगेसन्निपाते

निद्रायांविषमज्वरे । मनोविकारेकृमिषुपूज्यतेचावपीडनम्॥ अत्यंतोत्कटदोषेषुविसंज्ञेषु चदीयते ।चूर्णंप्रधमनंधीरैस्तद्धितीक्ष्णतरंयतः (नस्यंवैरेचनंयथा) नस्यंस्याद्गुड़शुण्ठी भ्यांपिप्पलीसैन्धवेनवा । जलपिष्टेनकर्णाक्षिनासामूर्द्धभवागदाः ॥ मन्याहनुगलोद्भूता नश्यन्तिभुजपृष्ठजाः ॥ १८१ ॥

नस्यके और भी दो भेदहैं अवपीड़ और प्रधमन यह दोनों शिर के विरेचनके लिये देनीचाहिये तीक्ष्ण औषधियों को कूटकर उनका रस निकालकर जो नास लीजाती है उसको अवपीड कहते हैं छः अंगुल की लंबी दोनों ओर मुखवाली भीतरसे पोली नली में छः मासे तीक्ष्ण औषधियोंकाचूर्ण भरकर फूंकने से नासिका के छिद्र में चूर्ण के प्रवेश कराने को प्रधमन कहते हैं गले की हँसली के ऊपर के रोगों में कफ जनित स्वरभंग में अरुचि प्रतिश्याय (जुकाम) शिरकी पीड़ा पीनस सूजन मृगी और कुष्ठमें रेचन नास हितकारी है भयभीत स्त्री कृश और बालकों को स्नेहननास हितकारी है गले के रोग सन्निपात निद्रा विषमज्वर मनके विकार और कृमि रोगों में अवपीड़ नास श्रेष्ठ है अत्यन्त प्रवल दोषों में और संज्ञारहितहोने में बुद्धिमान् लोग प्रधमन नासदेतेहैं क्योंकि यहअत्यन्त तीक्ष्ण है गुड़ और सोंठ समभाग मिलाकर अथवा पीपल और सेंधा नोंन यह दोनों समभाग जल में पीस कर इनके द्वारा नासलेने से नासिका गलेके पीछे की नस मस्तक जावडे गला और कान तथा नेत्र के ऊपरके रोग नष्टहोतेहैं और हाथ तथा पीठके रोगभी नाशको प्राप्तहोतेहैं ॥ १८१ ॥

मधूकसारकृष्णाभ्यांवचामरिचसैन्धवैः ॥ नस्यंकोष्णाम्भसापिष्टंदद्यात्संज्ञाप्रबोध नम्। अपस्मारेतथोन्मादेसन्निपातेऽपतन्त्रके ॥ सैन्धवंश्वेतमरिचंसर्षपाकुष्ठमेवच । वस्तमूत्रेणसंपिष्टंनस्यन्तन्द्रानिवारणम् (श्वेतमरिचंसहिजनकाबीजं) रोहितस्यचपित्ते नभावितंमरिचंवचा । कट्फलंचेतितच्चूर्णंदेयंप्रधमनंबुधैः ॥ १८२ ॥

महुवे का गाभा पीपल वच मिर्च और सेंधानोंन इनसम्पूर्ण औषधियों को समभाग लेकर गरम जलसे पीसले फिर इसकी नास लेनेसे जड़ता दूर होकर संज्ञा आजातीहै मिरगी उन्मादसन्निपात औ अपतन्त्रक रोग मेंभी ये नासलेनी चाहिये सेंधानोंन सहंजनके बीज सरसों और कूट इनसबको बकरे के मूत्रमें पीसकर नासलेने से तन्द्रा का नाश होताहै रोहू मछलीके पित्तसे मिर्च वच और कायफल के चूर्णको भावना देकर इसकेद्वारा प्रधमन नासलेनेसे तन्द्राका नाशहोताहै१८२॥

अथबृंहणनस्यस्यकल्पनाकथ्यतेऽधुना । मर्शश्चप्रतिमर्शश्चद्वौभेदौस्नेहनेमतौ ॥ मर्शस्यतर्पणीमात्रामुख्याशाणैःस्मृताऽष्टभिः मध्यमातुचतुःशाणैर्हीनाशाणमितामता॥ एकैकस्मिंस्तुमात्रेयंदयानासापुटेबुधैः । मर्शस्यद्वित्रिविलंवावीक्ष्यदोषबलाबलम् ॥ एकां तरंद्व्यन्तरंवानस्यंदद्याद्विचक्षणः (एकांतरएकंदिनमन्तरंनस्यशून्यंयत्रतदेकान्तरम्) त्र्यहंपञ्चाहमथवासप्ताहंवासुयन्त्रितः । अथवात्र्यहम् । त्रीण्यहानियावत । प्रतिदिनं एवंपञ्चाहंसप्ताहञ्च । सुयन्त्रितः । सावधानः । यथाऽच्छिन्नंभवति । मर्शेशिरोविरेके चव्यापदोविविधाःस्मृताः ॥ दोषोत्क्लेशात्क्षयाच्चैवविज्ञेयास्तायथाक्रमम् ॥ दोषोत्क्लेश निमित्तासुयुञ्ज्याद्वमनशोधनम् (वमनरूपं शोधनम्) अथक्षयनिमित्तासु यथास्वंबृंह णंहितम् ॥ १८३ ॥

अब बृंहण नस्य का विधान कहा जाता है। इसके मर्श औ प्रतिमर्श दोभेद हैं मर्शकी उत्तममात्रा दो तोलेकी मध्यम मात्रा एकतोले की और हीनमात्रा तीनमाशे की होती है नासिका के एक २ छिद्र में इतनी २ मात्रा देनी चाहिये दोषके बलाबल को देखकर दिनमें दोवार तीनवार अथवा एक दिनका या दो दिनका अन्तर दे कर तीनदिन पांचदिन अथवा सातदिन तक मर्श नस्यका ग्रहण करे मर्श औ विरेचन नस्यके प्रयोगसे क्रम पूर्वक दोषोंकीवृद्धि और क्षयके द्वारा अनेक उपद्रव होसक्ते हैं इसलिये दोषोंकी वृद्धिसे भये उपद्रवों में वमन रूप शोधन और क्षयसे भयेउपद्रवोंमें क्षयके अनुसार बृंहणक्रिया करनी चाहिये ॥ १८३ ॥

शिरोनासाक्षिरोगेषुसूर्य्यावर्त्तार्द्धभेदके ॥ दंतरोगेऽबलेहीनेमन्यावाह्वंशरोगदे। मुखशोषेकर्णनादेवातपित्तगदेतथा ॥ अकालपलितेचैवकेशश्मश्रुप्रपातने। पूज्यतेबृंहणंनस्यंस्नेहैर्वामधुरद्रवैः ॥ १८४ ॥

शिरनासिका तथा नेत्र के रोगों में सूर्य्यावर्तमें अर्द्धाव भेदकमें दन्तरोग बलकी क्षीणता गलेके पीछे की नसके रोग भुजाओं के रोग कन्धेके रोग मुखका सूखना तथा कानमें शब्द उठने में और वात पित्त रोग में स्नेह अथवा मधुर पतली वस्तुओंसे बृंहणनस्य देना चाहिये और विनासमय के बालोंका पकना और बालोंका अथवा दाढ़ीका गिरना इन रोगोंमें भी नस्य देनी चाहिये ॥ १८४ ॥

बृंहणनस्यंयथा ॥

सशर्करपयःपिष्टंभृष्टमाज्येनकुंकुमम्। नस्यप्रयोगंतोहन्याद्वातरक्तभवारुजः ॥ भ्रूशङ्खाक्षिशिरःकर्णसूर्य्यावर्त्तार्द्धभेदकान्। नस्यंस्यादणुतैलेनतथानारायणेनवा ॥ माषादिनावासर्पिभिस्तद्भेषजसाधितैः (अणुतैलमुक्तंसुश्रुतेनतद्यथा) तिलपरिपीडनोपकरणकाष्ठान्याहृत्ययैरनल्पकालंतिलाः परिपीडितास्तान्यणूनिखण्डशः कल्पयित्वाउलूखलेसंकुट्यः कटाहेपानीयेनाक्काथयेत्ततस्तैलं निःसरतितत्तैलंहस्तेनजलान्निःसार्य्य वातघ्नौषधकल्केनपचेत्। तदणुतैलमितितद्वातरोगहरम् ॥ तैलकफेस्याद्वातेचकेवलेपयनेतथा। दद्यान्नस्यंसदापित्तेसर्पिर्मज्जानमेवच ॥ १८५ ॥

बृंहणनस्य ॥

केसरको घीमें भूनकर शकर और दूधके साथ पीसलेय इसके नस्य लेने से वात रक्त जनित रोग सूर्य्यावर्त अर्द्धाव भेदक और भौंह शिर की हड्डी नेत्र शिर और कानके रोग नष्टहोते हैं अणु तैल नारायण तैल अथवा उर्द आदि यथा योग्य औषधियोंसे बनाये भये घीके द्वारानस्य लेनेको बृंहणनस्य कहते हैं (अणुतैल की सुश्रुत में कहीहुई विधि) जिनकाष्ठों से तिल पेरेजातेहों उनको लाकर छोटे २ टुकड़े करके ओखलीमें कूटे फिर कढ़ाईमें पानीकेसाथ औटानेसे काठमें लगाहुआ तेल निकलता है इसतेलको ठंढेहोनेपर हाथकेद्वारा जल से निकालकर वातनाशक औषधियों के कल्ककेसाथ पाककरे इसको अणुतैल कहतेहैं यह वातनाशकहोताहै कफ वात जनितरोगोंमें तैलकी नास केवल वातरोगोंमें चरवीकीनास और पित्तकेरोगोंमें घी तथामज्जाकी नासलेनीचाहिये १८५ ॥

माषात्मगुप्तरास्नाभिर्बलारुबुकरोहिषैः। कृतोऽश्वगंधयाक्काथोहिंगुसैंधवसंयुतः ॥ कोष्णोनस्यप्रयोगेणपक्षाघातंसकम्पनम्। जयेदर्दितवातञ्चमन्यास्तम्भापबाहुको १८६

उड़ै किवांच रासना वरियारा रेड़ी गन्धतृण और असगन्ध इनसंपूर्ण वस्तुओंका काढ़ाकरके हींग और सेंधानोंन मिलावे फिर कुछ उष्णता बाकी रहनेपर इसकी नासले इससे पक्षाघात कम्प अर्दित वात गलेकेपीछेकी नसका जकड़ना और अपबाहुकरोगका नाशहोताहै ॥ १८६ ॥

प्रतिमर्शस्यमात्रातुद्वित्रिविन्दुमितामता। प्रत्येकशोनासिकायास्नेहनेऽतिविनिश्चितम्। स्नेहग्रंथिद्वयंयावन्निमग्नाचोद्धृतात्ततः ॥ तर्जनीयंस्रवेद्विन्दुंसामात्राविन्दुसंज्ञिता। एवंविधैर्विंदुसंज्ञैरष्टाभिःशाणउच्यते॥सदेयोमर्शनस्येषुप्रतिमर्शोद्विविंदुकः॥१८७॥

प्रतिमर्शकी मात्रा नासिकाके दोनों छिद्रों में दो अथवा तीन बिन्दु देनी चाहिये तर्जनी उंगली को दोपोरुएतक स्नेह में डुबोकर निकालने से जो बूंद टपकतीहै उसीकी यहां बिंदुसंज्ञाहै इन आठ बिंदुओंका एक शाण होताहै यही एक शाण मर्शनस्यकी मात्रा है और प्रतिमर्शनस्य की मात्रा दो बिंदुकी होती है ॥ १८७ ॥

समयाःप्रतिमर्शस्यबुधैःप्रोक्ताश्चतुर्दश। प्रभातेदन्तकाष्ठान्तेगृहान्निर्गमनेतथा ॥ व्यायामाध्वव्यवायान्तेविण्मूत्रान्तेऽञ्जनेकृते।कवलान्तेभोजनान्तेदिवास्वप्नोत्थितेतथा॥ वमनान्तेतथासायंप्रतिमर्शःप्रयुज्यते । ईषदुच्छिङ्कनात्स्नेहोयथावक्त्रंप्रपद्यते ॥ नस्येनिषिक्तन्तंविन्द्यात्प्रतिमर्शःप्रमाणतः। (मात्रायुक्तम्) उच्छिष्टन्नपिवेच्चैतन्निष्ठीवेन्मुखमागतम् (उच्छिष्टम्। नस्यावशिष्टं) क्षीणेतृष्णास्यशोषार्त्तेबालेवृद्धेचपूज्यते। प्रतिमर्शान्नजायन्तेरोगाश्चैवोर्द्धजत्रुजाः॥ वलीपलितनाशश्चबलमिन्द्रियजंभवेत् १८८॥

पंडितलोगों ने प्रतिमर्श नस्य के चौदह समय कहे हैं प्रातःकाल दन्तधावन के पीछे घरसे बाहर निकलने के समय व्यायामके पीछे मार्ग पर्य्यटनके पीछे मैथुनके उपरांत मलमूत्र का त्यागकरके अंजन लगाकर कवलके उपरान्त भोजन करके दिनमें सोकर वमनके उपरान्त,और सायंकाल में जितना स्नेह सूंघकरछींकलेने से मुखमें आजाय वही प्रतिमर्शका प्रमाणहै जो स्नेह नासिकासेमुख में आजाय उसको थूकदे पिये नहीं क्षीणता तृषा तथा मुखके सूखनेसे व्याकुल बालक और वृद्धको प्रतिमर्श उत्तम होता है और इससे हँसलीके ऊपरके रोग झुर्री बालोंका पकना इन रोगोंका नाश होताहै और इन्द्रियों में बल होताहै ॥ १८८ ॥

विभीतंनिम्बगम्भारीशिवाशेलुश्चकाकिनी।एकैकतैलनस्येनपलितंनश्यतिध्रुवम् १८९

बहेड़ा नींब गंभारी हड़ बहुआर और कौआटोंटी इन में से किसी का तेल बनाकर नास लेनेसे बालोंका पकना नष्ट होताहै ॥ १८९ ॥

अथनस्यविधिंवक्ष्येनस्यग्रहणहेतवे। देशेवातरजोमुक्तेकृतदन्तनिघर्षणम्॥ विशुद्धंधूमपानेनखिन्नभालगलंतथा । उत्तानशायिनंकिञ्चित्प्रलम्बशिरसंनरम्॥ आस्तीर्णहस्तपादञ्चवस्त्राच्छादितलोचनम् । समुन्नामितनासाग्रंवैद्योनस्तेनयोजयेत् ॥ कोष्णेनाच्छिन्नधारेणहेमताराादिशुक्तिभिः । शुक्त्यावायंत्रयुक्त्यावाप्लोतैर्वानस्यमाचरेत् (प्लोतैर्वस्त्रैस्तदुपलक्षितैस्तूलैरपि) नस्येष्वासिच्यमानेषुशिरोनैवप्रकम्पयेत् । नकुप्येन्नप्रभाषेतनोच्छिङ्केन्नहसेत्तथा ॥ एतैर्हिविहितःस्नेहोनैवान्तःसम्प्रपद्यते । ततःकासप्रति

क्र्यायशिरोऽक्षिगदसम्भवः॥ शृंगाटकमभिव्याप्यस्थापयेन्नगिलेद्द्रवम्। पञ्चसप्तदशैवा स्यमात्रास्नेहस्यधारणे ॥ उपविश्याथनिष्ठीवेन्नासावक्त्रागतंद्रवम्। वामदक्षिणपार्श्वा भ्यांनिष्ठीवेत्संमुखन्नहि॥नीतेनस्येमनस्तापंरजःक्रोधश्चसन्त्यजेत्।शयीतनिद्रान्त्यक्त्वा चप्रोत्तानोवाक्शतन्नरः॥ तथाशिरोविरेकान्तेधूमोवाकवलोहिता । नस्येत्रीण्युपदिष्टा निलक्षणानिप्रयोगतः॥ १९० ॥

नासलेने की विधि ॥

वायु और धूलसे रहित स्थान में दन्तधावन और धूम्रपान कराकर मस्तकपर पसीना आजाने पर चित्त सुलाकर हाथ पैर फैलावे और शिरको कुछ लंबा रक्खे फिर किसी वस्त्र से नेत्रमूंदकर नासिका के अग्र भागको कुछ उठाकर नासदेवे सुवर्ण और चाँदी आदि से बनी हुई सीपी अथवा साधारण सीपी या वस्त्र अथवा रुईके द्वारा कुछ उष्ण नासकी औषधिकी धार लगातार छोड़े और यन्त्रके द्वाराभी नास दीजातीहै नासलेनेके उपरान्त शिरका कंपाना क्रोध बोलना छींकना और हंसी का त्यागकरे क्योंकि शिरके कंपाने आदिसे छोड़ाहुआ स्नेह भीतर नहीं आता और खांसी जुकाम शिरके रोग तथा नेत्रके रोग उत्पन्न होते हैं शृंगाटक पर्य्यन्त स्नेहके पहुंचजाने पर इसको निगले नहीं पांच सात अथवा दशमात्रा तक स्नेहको धारण करे नासिका केद्वारा मुखमें आये हुये गीले पदार्थको बैठकर बाईं अथवा दाहिनी ओरको थूंकदे परन्तु सन्मुख न थूंके नस्यको त्यागकरके मन का ताप रजोगुण के कार्य्य और क्रोधको त्याग करदे और सौवाक्य के उच्चारण में जितना समय लगताहै उतनी देरतक चित्त लेटेपरन्तु सोवेनहीं शिरके विरेचनके उपरान्त धूम अथवा कवलका ग्रहण करना हितहै शास्त्रज्ञ पंडितों ने प्रयोगके अनुसार शुद्धिहीन और अतियोग यह तीन लक्षण नस्य के कहेहैं ॥ १९० ॥

शुद्धहीनातियोगाहिविज्ञेयाशास्त्रचिन्तकैः । लाघवंमलसंशुद्धिःस्रोतसांव्याधिसंक्ष यः॥ चित्तेन्द्रियप्रसादश्चशिरसःशुद्धिलक्षणम्। कण्डूप्रदेहोगुरुतास्रोतसांकफसंस्रवः॥ मूर्द्धिहीनविशुद्धेस्तुलक्षणंपरिकीर्तितम् (हीनविशुद्धेर्हीननस्येनविशुद्धेः) मस्तुलुङ्गाग मोवातवृद्धिरिन्द्रियविभ्रमः॥ शून्यताशिरसश्चापिमूर्ध्निगाढंविरेचिते॥मस्तुलुङ्गम्।मस्त कान्तःस्नेहःइन्द्रियविभ्रमः। इन्द्रियाणामन्यथाविषयग्रहणः । हीनातिशुद्धेशिरसिकफ वातघ्नमाचरेत्॥ तत्रहीनेननस्येनशुद्धेवातघ्नमाचरेत्।सम्यक्विशुद्धेशिरसिसर्पिर्नस्येन दीयते॥ कफप्रसेकःशिरसोगुरुतेन्द्रियविभ्रमः ॥ लक्षणन्तदतिस्निग्धेतत्ररूक्षंप्रदाप येत्॥ भोजयेच्चानभिष्यन्दिनस्येवातिकमादिशेत्॥ वातिकम्।वातलमुपादिशेत् । इति पञ्चकर्माणि॥ १९१ ॥

इन में से हलकापन स्रोतोंके मलकी शुद्धता रोगकानाश और मन तथा इन्द्रियों की प्रसन्नता यह शिरके शुद्ध होनेके लक्षणहैं खुजली भारीपन स्रोतों में कफका बहना और ग्लानि यह शिरके अच्छे प्रकार न शुद्धहोनेके लक्षणहैं मस्तक के भीतरसे स्नेहका निकलना वायुकी वृद्धि इन्द्रियोंका भ्रम और मस्तककी शून्यता यह शिरके अधिक विरेचन होनेसे अति योग लक्षण कहलाताहै हीन शुद्धि में कफनाशक और अति योग में वातनाशक क्रिया करनी चाहिये हीननस्यसे शुद्धता होनेपर

वातघ्न क्रिया करे शिरके अच्छेप्रकार शुद्ध होजानेपर नाशमें घी छोड़े शिरके अत्यन्त चिकनेहोजाने पर कफका बहना मस्तकका भारीपन और इन्द्रियोंका भ्रम होताहैऐसी अवस्थामें रूक्षक्रियाकरनी चाहिये और अभिष्यन्द रहितभोजन तथावादी ओषधियोंकेद्वारा नासलेनीचाहिये इतिपंचकम्॥१६१॥

अथधूमपानविधिः॥

धूमस्तुषड्विधःप्रोक्तःशमनोबृंहणस्तथा॥ रेचनःकासहाचैववामनोव्रणधूमनः॥ शमनस्यतुपर्य्यायोमध्यःप्रायोगिकस्तथा॥बृंहणस्यचपर्य्यायोस्नेहनोमृदुरेवच। रेचनस्यापिपर्य्यायोशोधनस्तीक्ष्णएवच॥ १९२॥ धूमपान विधि॥

धूमपान छः प्रकार का है शमन बृंहण रेचन कासघ्न वामन और व्रणधूपन शमनधूम को मध्य तथा प्रायोगिकभी कहतेहैं बृंहण को स्नेहनतथा मृदु कहतेहैं और रेचन धूमको शोधन तथा तीक्ष्ण भी कहतेहैं॥ १९२॥

अधूमार्हाश्चखल्वेतेश्रांतोभीतश्चदुःखितः। दत्तबस्तिर्विरिक्तश्चरात्रौजागरितस्तथा॥ पिपासितश्चदाहार्त्तस्तालुशोषीतथोदरी। शिरोऽभितापीतिमिरीच्छर्द्याध्मानप्रपीड़ितः॥ क्षतोरस्कःप्रमेहार्त्तःपाण्डुरोगीचगर्भिणी। रूक्ष क्षीणोऽभ्यवहृतक्षीरक्षौद्रघृतासवः॥ भुक्तान्नदधिमत्स्यश्चबालोवृद्धःकृशस्तथा। अकालेचातिपीतश्चधूमःकुर्य्यादुपद्रवान्॥ तत्रेष्टंसर्पिषःपानंनावनांजनतर्पणम्। सर्पिरिक्षुरसंद्राक्षांपयोवाशर्कराम्बु वा॥ मधुराम्लौरसौवापिवमनायप्रदापयेत्॥ १९३॥

थकाहुआ भीत दुःखी वस्ति अथवा जिसको विरेचन दियागयाहो रात्रिमें जागाहुआ तृषित दाहयुक्त और तालूका सूखना उदर शिरकेरोग तिमिर छर्दि आध्मान उरक्षत प्रमेह तथा पांडुरोग से युक्त गर्भिणी स्त्री रुक्षतायुक्त क्षीण दूध सहत अथवा आसवपान कियेहुए अन्न दही अथवा मछली खायेहुए बालक वृद्ध और कृश इनसबको धूमपान अयोग्यहै और समयके बिना भी धूमपान करनेसे उपद्रव उत्पन्न होतेहैं उपद्रवों के उत्पन्न होनेपर घृतपान नस्य अंजन तथा संतर्पणक्रिया करनीचाहिये और घी ईखकारस दाख दूध शर्बत अथवा मधुर अम्लरस के द्वारा वमनकरे॥ १९३॥

धूमस्तुद्वादशात्वर्षात्गृह्यतेशीतकातनच। कासश्वासप्रतिश्यायान्मन्याहनुशिरोरुजः॥ वातश्लेष्मविकारांश्चहन्याद्धूमःसुयोजितः। धूमोपयोगात्पुरुषप्रसन्नेन्द्रियवाङ्मनः॥ दृढ़केशद्विजश्मश्रुःसुगन्धिवदनोभवेत्॥ १९४॥

बारह वर्ष की अवस्थासे लेकर अस्सीवर्ष तक धूमपान कराना चाहिये अच्छे प्रकार धूमपान करनेसे खांसी श्वास जुकाम गलेकेपीछे की नसतथा जावड़े के रोग शिरकी पीड़ा और वातकफके रोगशान्तहोतेहैं और इन्द्री वाक्‌तथा मनकी प्रसन्नता केश दांततथा दाढ़ीकी दृढ़ता और मुखमें सुगन्ध होजाती है॥ १९४॥

धूमनाड़ीभवेत्तत्रत्रिखण्डाचत्रिपर्व्विका। कनिष्ठिकापरीणाहाराजमाषागमान्तरा॥ (राजमाषागमःमस्तानाड़ी) धूमनाड़ीभवेद्दीर्घाशमनेरोगिणोऽङ्गुलैः। चत्वारिंशन्मितैस्तद्वद्द्वात्रिंशद्भिर्मृदौमता॥ (मृदौबृंहणे) तीक्ष्णेचतुर्विंशतिभिःकासघ्नेषोड़

शोन्मितैः। तीक्ष्णेरेचने) दशांगुलेर्वामनीयेतथास्याद्व्रणनाड़िका (तथादशांगुलमिना) कलायमण्डलस्थूलाकुलत्थागमरंध्रिका ॥ १९५ ॥

धूमपाने की नली तीनखंड तथा तीनपोरवाली बनानी चाहिये इसकी मुटाई कनिष्ठा उंगली के समान और छेदबड़ेउर्द के जाने के लायक होना चाहिये नलीकी लम्बाई शमन धूममें रोगीके चालीस अंगुल बृंहणधूममें बत्तीस अंगुल रेचन धूममें चौबीस अंगुल कासघ्न धूममें सोलह अंगुल और वमनधूममेंदशअंगुल की होनी चाहिये व्रणधूपन धूममें दशअंगुलकी लम्बाईमटर के समान मुटाई और कुलथी के जाने भरेका छेद होना चाहिये ॥ १९५ ॥

अथेषिकांप्रलिम्पेच्चसुश्लक्ष्णंद्वादशांगुलाम् । (ईषिकाम्शरकाण्डम्) धूमद्रव्येन कल्केनलेपश्चाष्टाङ्गुलःस्मृतः।कल्कंकर्षमितंलिप्त्वाच्छायाशुष्कंचकारयेत् ॥ इषिका प्रपनीयाथस्नेहाक्तांवर्त्तिमादरात् । अंगारैर्दीपितांकृत्वाधृत्वानेत्रस्यरंध्रके ॥ वदनेनपिवेद्धूमंवदनेनैवसंत्यजेत् । नासिकाभ्यांततःपीत्वामुखेनैववमेत्सुधीः ॥ १९६ ॥

बारह अंगुल के लम्बे एक सरकंडेपर एकतोला धूमपान की औषधियों के कल्क से आठ अंगुल तक चारोंओर लेप करके छाया में सुखावे फिर सूखजाने पर सरकंडे को धीरे धीरे निकालकर उस पोली बत्ती में तेल लगाकर और अंगारे से जलाकर नलीके छेदपर रक्खे पहले मुख से धूमपीकर मुखही से निकाले फिर नाकसे धुआं पीकर मुखमें से निकाले ॥ १९६ ॥

शरावसंपुटेक्षिप्त्वाकल्कमंगारदीपिताम् । छिद्रेनेत्रंनिवेश्याथव्रणंतेनैवधूपयेत् ॥ एलादिकल्कंशमनेस्निग्धंसर्ज्जरसंमृदौ । रेचनेतीक्ष्णकल्कंचश्वासघ्नेक्षुद्रकोषणम् ॥ वमनेस्नायुचर्माद्यंदद्याद्धूमस्यपानकम् । व्रणेनिम्बवचाद्यंचधूपनंसंप्रशस्यते ॥ १९७ ॥

किसी सकोरे में औषधियों का कल्क धरके अंगारोंपर रक्खे और उसे एकछिद्र युक्त सकोरेसे बंद करदे फिर उसी सकोरेके छेदमें नली लगाकर घावमें धूप देवे शमनधूममें इलायचीआदि औषधियों का कल्क बृंहण में चिकना राल का रस रेचन में तीक्ष्ण औषधियों का कल्क का सघ्न में भटकटैया तथा मिर्च और वामन में स्नायु चर्मादिक पीने के लिये ग्रहण करने चाहिये और व्रणमें नींब तथा बच आदिके कल्क से धुआं देना श्रेष्ठ है ॥ १९७ ॥

अन्येऽपिधूमागेहेषुकर्त्तव्यारोगशांतये । (सयथा) मयूरपिच्छंनिम्बस्यपत्राणिबृह तीफलम्॥मरिचंहिंगुमांसीचबीजंकार्पाससम्भवम् । छागरोमाहिनिर्मोकोविष्ठावैडालिकी तथा ॥ (अहिनिर्मोक सर्पकंचुकः) गजदंतश्चतच्चूर्णंकिंचिद्घृतविमिश्रितम् । गेहेषुधूपनंदत्तंसर्वान्बालग्रहान्हरेत् ॥ पिशाचानराक्षसान्हत्वासर्व्वज्वरहरंभवेत् । (इत्यपराजितोधूमः) ॥ १९८ ॥

रोगों के नाशके लिये घरमें औरभी धूमकाम में लाने चाहिये जैसे मोर की पूंछ नींबकेपत्ते भटकटैया का फल मिर्च हींग जटामांसी बिनौला बकरे के रोयें सांप की कैंचली बिल्ली की बिष्टा और हाथीदांत इनसबका चूर्ण करके कुछ घी मिलाय घर में धूपदेने से संपूर्ण बालग्रह पिशाच तथा राक्षसोंकानाश होकर संपूर्ण ज्वरों का नाश होताहै इति अपराजित धूप ॥ १९८ ॥

मनस्तापंरजःक्रोधोधूमपानेनिवारयेत्।नेत्राणिधातुजान्याहुर्नलंवंशादिजान्यपि॥१६६॥

धूमपानकरके मनकाताप रजोगुणके काम और क्रोधको त्यागदेवे धूमपानकीनली धातुकी अथवा वांसआदि की बनावे॥१६९॥ अथ गण्डूषकवलप्रतिसारणविधिः॥

तत्रगण्डूषकवलप्रतिसारणानांभेदकानिलक्षणान्याह। तत्रगण्डूषः। स्नेहक्षीरकषायादिद्रवैःसम्पूर्णमाननम्॥ आपूर्य्यस्थीयतेतावद्विधिर्गण्डूपधारणे। कफपूर्णास्यतायावच्छेदोदोषस्यवाभवेत्॥नेत्रघ्राणस्रुतिर्य्यावत्तावद्गण्डूपधारणम्।गण्डूषान्सुस्थितःकुर्य्यात्स्विन्नभालगलादिकः॥ मनुषास्त्रींस्तथापञ्चसप्तवादोषनाशनात्। गलादिकइत्यादिशब्देनगण्डकपोलौगृह्येतेसुश्रुतोक्तत्वात्॥चतुर्विधःस्याद्गण्डूषःस्नेहनःशमनस्तथा॥ शोधनोरोपणश्चैवकवलश्चापितादृशः। स्निग्धोष्णैःस्नैहिकोवातेस्वादुशीतैःप्रसादनः॥ पित्तेकट्वम्ललवणैरुष्णैःसंशोधनङ्कफे। कषायतिक्तमधुरैःकटूष्णोरोपणोव्रणे। दद्याद्द्रवेषुचूर्णञ्चगण्डूषेकोलमात्रकम्। कर्षप्रमाणःकल्कश्चकवलेदीयतेबुधैः॥ धार्य्यन्तेपञ्चमाद्धर्षाद्गण्डूषाःकवलादयः। व्याधेरपचयस्तुष्टिर्वैशद्यंवक्त्रलाघवम्॥ इंद्रियाणांप्रसादश्चगण्डूषेविधृतेभवेत्। हरेदास्यस्यवैरस्यंशोपपाकंव्रणंतृषाम्॥ दन्तचालञ्चगण्डूपोवैशद्यंतुकरोतिहि॥ २००॥

गंडूप (कुल्ला) कवल (ग्रास) और प्रतिसारण (मंजन) की विधि गंडूपकवल और प्रतिसारणकेअलग २ लक्षण॥

गंडूप स्नेह दूध अथवा क्काथ आदिक पतले पदार्थों को मुख में भरके रखने को गंडूप धारण कहतेहैं जबतक मुख मे कफ भरारहे अथवा दोषों का नाश होवे और नेत्र तथा नासिकासे जल टपकनेलगे तबतक गंडूप धारणकरे स्वस्थ होकर जबतक माथे और गले आदिमें स्वेद न आजावे तबतक कुल्ले करता रहै एक दो तीन पांच अथवा सात बार दोपके नाशहोनेके लिये कुल्ले करे गंडूप (गरारा) चार प्रकार का है स्नेहन शमन शोधन और रोपण और इसी प्रकारसे ग्रासके भी यही चारप्रकार होतेहैं वात रोगमें स्निग्ध तथा उष्ण औषधियोंके द्वारा स्नेहन गंडूप पित्तकी अधिकतामें मधुर तथा शीतल औषधियों के द्वारा शमन गंडूप कफकी अधिकता में कटु अम्ल तथा लवण रसयुक्त उष्ण औषधियों के द्वारा शोधन गंडूप और घाव में कषैली तिक्त मधुर कटु तथा उष्ण औषधियों के द्वारा रोपण गंडूप को काम में लाना चाहिये गंडूप के लिये पतली वस्तुओं में औषधियों का चूर्ण छः मासे और ग्रासके लिये एक तोला कल्क देना चाहिये पांच वर्ष की अवस्था के उपरांत गंडूप और ग्रास आदिको धारण करना चाहिये गंडूप धारण करनेसे रोग का नाश संतुष्टता प्रसन्नता मुखमें हलकापन तथा इन्द्रियों की चैतन्यता होती है और मुख की विरसता सूखना पकना घाव तृषा तथा दांतों का हिलना नष्टहोताहै और मुख निर्मल होजाताहै॥ २००॥

अथकवलः॥

वातपित्तकफघ्नस्यद्रव्यस्यकवलंमुखे। अर्द्धानि क्षिप्यसंचर्व्यनिष्ठीवेत्कवलेविधिः॥ कवलःकुरुतेकाङ्क्षम्भक्षेपहरतेकफम्।तृष्णांशोपञ्चवैरस्यंदन्तचालञ्चनाशयेत्२०१

ग्रास की विधि ॥

वात पित्त और कफनाशक वस्तुओं के ग्राससे आधा मुखभर के चबाकर थूक देनेको ग्रास विधि कहतेहैं ग्रासधारण करनेसे भोजन में रुचि और कफ तृषा मुखका सूखना विरसता तथा दांतोंका हिलना नष्ट होताहै ॥ २०१ ॥

अथप्रतिसारणम् ॥

दन्तजिह्वामुखानांयच्चूर्णकल्कावलेहकैः। शनैर्घर्षणमंगुल्यातदुक्तंप्रतिसारणम् ॥ वैरस्यंमुखदौर्गन्ध्यंमुखशोकंतथातृषाम्। अरुचिन्दन्तपीडाञ्चनिहन्तिप्रतिसारणम् ॥ हीने जाड्यकफोत्क्लेशाग्ररसज्ञानमेवच। अतियोगान्मुखेपाकःशोषस्तृष्णावमिःक्लमः॥ २०२॥

प्रतिसारण की विधि ॥

चूर्ण कल्क अथवा अवलेहको उंगलियों में लगाकर दांत जिह्वा और मुखके धीरे२ रगड़ने को प्रतिसारण कहतेहैं प्रतिसारण से मुखकी विरसता तथा दुर्गन्धि मुखकासूखना तृषा अरुचि और दांतों की पीड़ा का नाशहोताहै परन्तु प्रतिसारण के अच्छेप्रकारसे न होने में मुखकी जड़ता कफकी वृद्धि और रसों के ग्रहण करने में असामर्थ्य होता है प्रतिसारणकी अधिकता में मुखका पकना सूखना तृषा छर्दि और ग्लानि होतीहै ॥ २०२ ॥

अथस्वेदविधिः ॥

स्वेदश्चतुर्विधःप्रोक्तस्तापोष्मस्वेदसंज्ञितः ॥ उपनाहोद्रवःस्वेदःसर्ववातार्त्तिहारिणः तापस्वेदउष्मस्वेदश्चताभ्यांसंज्ञितः। उपनाहःस्वेदः । स्वेदौतापोष्मजौप्रायःश्लेष्मघ्नौ समुदीरितौ। उपनाहस्तुवातघ्नःपित्तसङ्गेद्रवोहितः॥ द्रवोहिद्रवस्वेदः। महाबलेमहाव्याधौशीतेस्वेदोमहान्स्मृतः। दुर्बलेदुर्बलःस्वेदोमध्यमेमध्यमोमतः॥ वलासेरूक्षणःस्वेदोरूक्षस्निग्धःकफानिले। रूक्षणःरूक्षयतीतिरूक्षणःनन्द्यादित्वात्नुप्रत्ययः॥ २०३ ॥

स्वेद की विधि ॥

स्वेद चारप्रकारकाहोताहै तापसस्वेद उष्ण स्वेद उपनाह स्वेद और द्रवस्वेद यहचारों प्रकार के स्वेद वातनाशक होते हैं तापस स्वेद तथा उष्ण स्वेद यह दोनों कफनाशक उपनाह स्वेद वातनाशक और द्रवस्वेद पित्त नाशक होताहै बलवान् अथवा बड़ेरोग से युक्त अथवा शीतकाल में महास्वेद दुर्बल में स्वल्पस्वेद और मध्यम अवस्थावाले को मध्यम स्वेददेतहै कफ में रूखा स्वेद कफवातमें रूखा और चिकनास्वेद देना चाहिये ॥ २०३ ॥

कफमेदोवृतेवातेकोष्णंगेहंरवेःकरान्। नियुद्धंमार्गगमनंगुरुप्रावरणंध्रुवम् ॥ चिन्ताव्यायामभारांश्चसेवेतामयमुक्तये। येषांनस्यंप्रदातव्यंवस्तिश्चापिहिदेहिनाम् ॥ शोधनीयाश्चयेकेचित्पूर्वंस्वेद्याश्चतेमताः। स्वेद्याऊर्द्ध्वन्त्रयोऽपीहभगन्दर्य्यर्शसस्तथा॥अश्मर्य्यातुरोजन्तुःशमयेच्छस्त्रकर्मणः। शस्त्रकर्मणःऊर्द्ध्वेपश्चाच्चेतिसुश्रुते।पश्चात्स्वेद्याहृतेशल्येमूढगर्भगदेतथा। कालेप्रजाताऽकालेवापश्चात्स्वेद्यानितम्बिनी ॥ २०४ ॥

कफ तथा भेदकेद्वारा वायुके रुकजानेपर उष्णघरमें रहना धूप युद्ध मार्ग गमन भारी वस्त्रोंका ओढ़ना चिन्ता व्यायाम और बोझालेचलना इन सबबातोंका सेवनकरे जिनको नस्य तथा वस्तिदेनी होय अथवा विरेचन आदिकेद्वारा शुद्धकरनाहो उनको प्रथम स्वेद कराना चाहिये भगन्दर बवासीर

और पथरी इन रोगोंमें शस्त्रकर्मकेपीछे स्वेद करानाचाहिये मूढगर्भरोग (वायुसे गर्भका टेढ़ाहोजाना) मे शस्त्रके निकाललेनेपर और समयमें अथवा वेसमयमें प्रसवहोने के उपरान्त स्वेददेनाचाहिये२०४

सर्वान्स्वेदान्निवातेचजीर्णेन्तेवाविचारयेत्। स्वेदाद्धातुस्थितादोषाःस्नेहक्लिन्नस्य देहिनः ॥ द्रवत्वंप्राप्यकोष्ठांतंगत्वायांतिविरेकताम्। स्नेहाभ्यक्तशरीरस्यशीतैराच्छाद्यचक्षुषी ॥ स्विद्यमानशरीरस्यहृदयंशीतलैःस्पृशेत् (शीतैरार्द्रवस्त्रादिभिः) २०५ ॥

संपूर्ण स्वेद भोजनके परिपाकहोजानेपर वायु रहित स्थानमें निकालने चाहिये स्नेह धारणकिये हुए पुरुषको स्वेद देनेसे धातुओंमें स्थित संपूर्ण दोष पिघलकर कोष्ठके भीतर जातेहैं और दस्त के द्वारा निकलजातेहैं शरीरमें तेलआदिक लगायेहुए मनुष्यके नेत्रोंको शीतल वस्त्रसेढकेफिर पसीना निकालकर इसके हृदयको शीतल वस्तुसे स्पर्शकरे ॥ २०५ ॥

अजीर्णीदुर्बलीमेहीक्षतःक्षीणःपिपासितः। अतीसारीरक्तपित्तीपाण्डुरोगीतथोदरी ॥ मेदस्वीगर्भिणीचैवनहिस्वेद्याविजानता। (स्वेदादेषांयांतिदेहोविनाशंनिसाध्यत्वंयाति चैषांविकाराः) एतान्यपिमृदुस्वेदैःस्वेदसाध्यानुपाचरेत्। मृदुस्वेदंप्रयुञ्जीततथाहृन्मुष्कदृष्टिषु ॥ २०६ ॥

अजीर्ण दुर्बलता प्रमेह घावसे क्षीणता तथा तृषासेयुक्त और गर्भिणी स्त्रीको स्वेद नहीं देनाचाहिये और अतीसार रक्त पित्त पांडु उदर तथा मेदसे युक्त कोभी स्वेद दिवाना हितकारी नहीं है क्योंकि इनको स्वेद देने से रोगियों के शरीर नष्ट होजाते हैं अथवा रोग असाध्य होजाते हैं और इनको जो स्वेदहीसे साध्यसमझे तो थोड़ा स्वेददेहृदय अंडकोश और नेत्रोंमेंभी कोमल स्वेद देनाचाहिये२०६॥

अतिस्वेदात्सन्धिपीड़ादाहस्तृष्णाक्लमोभ्रमः। पित्तासृक्पिडिकाकोपस्तत्रशीतैरुपाचरेत् ॥ २०७ ॥

अधिक स्वेददेनेसे सन्धियों में पीड़ा दाह तृषा ग्लानि भ्रम रक्त पित्त और पिडिका (फुंसी) उत्पन्न होतीहैं इनउपद्रवोंमें शीत इलाज करना चाहिये ॥ २०७ ॥

तत्रतापस्वेदमाह ॥

तेषुतापाभिधःस्वेदोवालुकावस्त्रपाणिभिःप्रतप्तैरम्लसिक्तैश्चकायेऽलक्तकवेष्टिते२०८ ॥

तापस्वेद की विधि ॥

शरीर में लत्ते लपेटकर वालूवस्त्र अथवा हाथों को खटाई में भिगोकर और गरम करके जो स्वेद दिया जाताहै उसको ताप स्वेद कहते हैं ॥ २०८ ॥

उष्मस्वेदमाह ॥

अथवावातनिर्नाशिद्रव्यक्वाथरसादिभिः। उष्णैर्घटंपूरयित्वापार्श्वेच्छिद्रंविधायच ॥ त्रिमुख्यास्यंत्रिखण्डांचधातुजांकाष्ठजामुत। षडंगोलास्यांगोपुच्छांनाडींयुंज्याद्विहस्तकाम् ॥ सुखोपविष्टंस्वभ्यक्तंगुरुप्रावरणावृतम्। हस्तिशुण्डिकयानाड्यास्वेदयेद्वातरोगिणाम् ॥ त्रिखण्डामितिस्वेदमोक्षार्थमुपडंगुलास्यामिति। मूलेषडंगुलंविशालमुखंगोपुच्छमिवक्रमकृशम्। तेनाग्रगोपुच्छाग्रपरिमाणेनकृशाम्नाडीम्अन्तःसरन्ध्रांहि

हास्तिकामहस्तद्वयपरिमाणाम्॥हस्तिशुण्डिकयेतिहस्तिशुण्डेवक्रमशःकृत्वाग्राव्याइयं संज्ञा ॥ २०९ ॥

उष्ण स्वेद ॥

किसी घटमें वात नाशक औषधियों का उष्ण क्वाथ अथवा रसादिक भरके उसका मुख बन्द करे और उसके किसी ओर एकछिद्र करके तीन खंडवाली धातु अथवा काष्ठ से बनीहुई भीतरसे पोली मूल में छः अंगुल के मुखवाली दो हाथ की लंबी और गो की पूंछके समान गावदुम बनीहुईनली लगावेवातरोगीकोतेल आदि लगाकर और भारी वस्त्र उढ़ाकर सुख पूर्वक बैठावे फिरहस्तिशुंडिक (हाथी की शूंड के समान होने से हस्तिशुंडक कहाती है) नामनली से स्वेद देवे ॥ २०९ ॥

पुरुषायाममात्रांवाभूमिंसंमार्ज्यखादिरैः॥काष्ठैर्दग्ध्वातथाभुक्ष्यक्षीरधान्याम्लवारिभिः॥ वातघ्नपत्रैराच्छाद्यशयानंस्वेदयेन्नरम्। एवंमाषादिभिःस्विन्नैःशयानंस्वेदमाचरेत् २१०

जितना बड़ारोगी हो उतनी पृथ्वी को सफाकरके उसपर कत्थे की लकड़ी को जलाकर पीछे दूध औरकांजी छिड़ककर वातनाशक पत्ते बिछावे फिर उनपर रोगीको सुलाकर उर्द आदिकोंके द्वारा स्वेद देवे ॥ २१० ॥

उपनाहस्वेदः ॥

तथोपनाहस्वेदञ्चकुर्य्याद्वातहरौषधैः। प्रदह्यदेहंवातार्त्तंक्षीरमांसरसादिभिः ॥ अम्लपिष्टैःसलवणैःसुखोष्णैःस्नेहसंयुतैः। उतग्राम्यानूपमांसैर्जीवनीयगणेनच ॥ दधिसौवीरकक्षीरैर्वीरतरवादिनातथा। कुलत्थमाषगोधूमैरतसीतिलसर्षपैः ॥ शतपुष्पादेवदारुशेफालीस्थूलजीरकैः॥एरण्डमूलजीरैश्चरास्नामूलकशिग्रुभिः।मिसिकृष्णाकुठेरैश्चलवणैरम्लसंयुतैः ॥ प्रसारण्यश्वगन्धाभ्यांबलाभिर्दशमूलकैः । गुडूच्यावानरीबीजैर्यथालाभसमाहृतैः॥ क्षुण्णैःस्विन्नैश्चवस्त्रेणबद्धैःसंस्वेदयेन्नरम्। महाशाल्वणसंज्ञोऽयंयोगःसर्वानिलार्त्तिहृत् ॥ अस्यायमर्थः। उपनाहस्वेदञ्चकुर्य्यात्केनप्रकारेणेत्याकांक्षायांतत्प्रकारमाह। वातहरौषधैःकथम्भूतैः। अम्लपिष्टैः। अम्लेनकाञ्जिकतक्रादिनापिष्टैःसलवणैः। स्नेहसंयुतैः। क्षीरमांसरसन्वितैः। सुखोष्णैः।वातार्त्तदेहंप्रदह्यप्रलिप्यस्वेदयेदित्यर्थः। अथवाम्लेनसंपिष्टैःकोष्णैःसूक्ष्मपुटस्थितैः। भेषजैःस्वेदयेत्किंवास्विन्नैःकोष्णैःपटास्थितैः२११

उपनाह स्वेद ॥

कांजी से वातनाशक औषधियों को पीसकर लवण तेल आदिक दूध तथा मांसके रसादिकोंको मिलावे फिर कुछ गरमकरके वातरोगी के शरीर में लेपकरके उपनाह स्वेद देवे अथवा ग्रामीण तथा अनूपदेश के जीवों के मांसकारस जीवनीयगण दही सौवीर दूध औरवीरतरु आदिगण के द्वारा स्वेद देना चाहिये कुलथी उर्द गेहूं अलसी तिल सरसों सौंफ देवदारु शेफालिका कालीजीरी रेंड़ी कीजड़ जीरा रासना मूली सहँजन सौंफ पीपल सफेद तुलसी सेंधानोन कांजी गन्धप्रसारणी असगन्ध बरियारा दशमूल गिलोय और किवांच के बीज इनसंपूर्ण औषधियों में से जितनी मिलसकें उनकोलेकर कूटकर उबाले फिर किसी वस्त्रमें बांधकर स्वेददेवे यह महा शाल्वण नाम स्वेद संपूर्ण वात रोगों का नाशक है ऊपर कही हुई औषधियों को कांजी आदिसे पीसकर कुछ उष्ण करके अथवा उबालकर कुछउष्णता रहनेपर वस्त्र में बांध के स्वेद देवे ॥ २११ ॥

द्रवस्वेदमाह ॥

द्रवस्वेदस्तुवातघ्नद्रव्यक्काथेनपूरिते । कटाहेकोष्ठकेवापिसूपविष्टेवगाहयेत् ॥ सौवर्णं राजतंवापिताम्रंलोहञ्चदारुजम् । कोष्ठकन्तत्रकुर्वीतोच्छ्रायेषड्विंशदंगुलम् ॥ आयामेनातदेवस्याच्चतुष्कोणन्तुचिक्कणम् (पक्षान्तरमाह । नाभेःषडंगुलंयावन्मग्नंक्काथस्य धारया ॥ कोष्णयाःस्कन्धयोःसिक्तस्तिष्ठेत्स्निग्धतनुर्नरः ॥ अयमर्थः) प्रथमतोवातघ्न द्रव्यक्काथेनकण्ठपूरिते कोष्ठकेकटाहेवासूपविष्टस्तिष्ठेत् ॥ अथवानाभेःषडंगुलमूर्द्धंयाव त्क्काथेमग्नउपविष्टः। पश्चात्क्काथस्यधारयास्कन्धयोःसिच्यमानस्तिष्ठेत् ॥ यावत्कोष्ठकं परिपूर्णंभवतीत्यर्थः। क्काथपक्षेप्रथतःस्नेहाभ्यक्तननुरुपविशेत् ॥ मुहूर्त्तंकंसमारभ्ययाव त्स्यात्तच्चतुष्टयम्। तावत्तदवगाहेतयावदारोग्यनिश्चयः ॥ एवंतैलेनदुग्धेनसर्पिषास्वेद येन्नरम्। एकांतरोद्व्यन्तरोवायुक्तःस्नेहोऽवगाहने ॥ एतावताक्काथोदुग्धञ्चनित्यमेवयुज्य तेस्नेहस्तुदिनमेकन्द्वेवादिनेगमयित्वायुक्तः । अग्निमान्द्यशङ्कयेतिभावः ॥ शिरामुखै र्लोमकूपैर्धमनीभिश्चतर्पयेत्। शरीरेबलमाधत्तेयुक्तःस्नेहोऽवगाहने ॥ जलसिक्तस्यवर्द्ध न्तेयथामूलेऽकुरादयः । तथैवधातुवृद्धिर्हिस्नेहसिक्तस्यजायते ॥ नातः परतरःकश्चि दुपायोवातनाशनः। शीतशूलव्युपरमेस्तम्भगौरवनिग्रहे ॥ दीप्तेऽग्नौमार्दवेजातस्वेद नाद्विरतिर्मता: ॥ २१२ ॥ द्रव स्वेद ॥

वातनाशक औषधियोंकेकाढ़े से किसी कढ़ाव अथवा हौजको भरके उसमें रोगीको बैठालकर स्नान करावेसुवर्ण चाँदी तांबा लोहा अथवा काष्ठकेद्वारा चौकोना चिकना हौदबनावे यहऊंचाई तथा चौड़ाई मेंछब्वीस अंगुलका होना चाहिये(दूसरा प्रकार)रोगी शरीरमें तैलमर्दन करके नाभिके छःअंगुलऊपर तकके धड़को डुबोकर कढ़ाव अथवा हौज़में बैठे और उसकड़ाह अथवा हौज़ में वातनाशक औषधियों का क्काथभरदे फिर रोगीके कन्धेपर धीरे २ कुछ गरम क्काथकी धारा तबतक छोड़तारहे जबतक वह कड़ाह अथवा हौज़ ऊपरतक भरनजाय चारमुहूर्त्त तक अथवा जबतक रोगके नाशका निश्चय न होजाय तबतक उसीमें बैठारहे इसप्रकार तैल दूध अथवा घृतके द्वारा स्वेददेवे परन्तु तैलादिक स्नेहके द्वारा एक अथवा दो दिनका बीच देकर स्वेददेवे क्योंकि स्नेहके द्वारा नित्य स्वेदके देने से मन्दाग्नि होनेका संदेह होताहै अवगाहनके द्वारा स्नेह देनेसे रोमकूप सिराओं के मुख और धमनियों के द्वारा संपूर्ण शरीरमें स्नेह प्रविष्ट होकर शरीरकी तृप्ति और बलको बढ़ाताहै जैसे जड़ में जलके सींचने से अंकुरादि उत्पन्न होतेहैं उसी प्रकार स्नेह के द्वारा सिंचेहुए शरीरकी धातुबढ़तीहैं इस्से बढ़कर और कोई वातके नाशकरने का उपाय नहीं है शीतलता शूल स्तब्धता तथा भारी पनके निवृत्त हो जानेपर और अग्निकी दीप्तितथा शरीरमें कोमलता उत्पन्न होनेपर स्वेदको नहीं देनाचाहिये २१२॥

अथ मूर्द्धतैलविधिः ॥

अभ्यङ्गःपरिषेकश्चपिचुर्वस्तिरितिक्रमात्। मूर्द्धतैलञ्चतुर्द्धास्याद्बलवत्तद्यथोत्तरम् ॥ अभ्यंगःतैलेनशिरसोमर्दनम्। परिषेकः। शिरसिधारापातनंपिचुः। तैलाक्ततूल। इतिलोकेवस्तिर्वक्ष्यमाणः ॥ त्रयोऽभ्यंगादयःपूर्वंप्रसिद्धाःसर्वतःस्मृताः । शिरषेतो ॥

चर्मार्द्रमाहिषंयद्वत्प्रोच्यतेसंमितस्तयोः। शीतस्तनुर्विशोषीचप्रलेपःपित्तहन्मतः॥ आ
र्द्रोघनस्तथोष्णःस्यात्प्रदेहःश्लेष्मवातहा। नरात्रौलेपनंकुर्य्याच्छुष्यमाणंनधारयेत्॥
शुष्यमाणमुपेक्षेतप्रदेहंपीडनम्प्रति। तमसापिहितोह्यूष्मालोमकूपमुखेस्थितः॥ विना
लेपनर्निर्यातिरात्रौनलेपयेदतः। तमसारात्र्यन्धकारेण। रात्रावपिप्रलेपादिर्व्रणेदेयोविच
क्षणैः। अपाकिन्यतिगम्भीरेरक्तश्लेष्मसमुद्भवे॥ लेपोयथा। मधुकंचन्दनंमूर्वानलमू
लञ्चपर्पटम्। उशीरंवालकंपद्मंप्रलेपःपित्तशोथहृत॥ प्रदेहोयथा। बीजपूरजटाहिंस्रादेव
दारुमहौषधम्। रास्नाऽरणिःप्रदेहोऽयंवातशोथविनाशनः॥ अरणिरग्निमन्थः। कृष्णा
पुराणपिण्याकशिग्रुत्वक्सिकताशिवा। गोमूत्रपिष्टःकोष्णोऽयंप्रदेहःश्लेष्मशोथहा २२०॥

अवलेपकी विधि कहीजातीहै॥

प्रलेप और प्रदेह यह लेप के दोभेद हैं यह भैंसे के गीले चमड़े की मुटाई के समान प्रमाण में होनी चाहिये शीतल और सुखाने वाला पतला लेप प्रलेप कहलाता है इससे पित्तकानाश होता है गीले गाढ़े और उष्ण लेपको प्रदेह कहते हैं इससे कफवात का नाश होताहै रात्रि के समय लेप नहीं लगाना चाहिये और सूख जानेपर छुड़ा डालना चाहिये परन्तु घाव आदि से पीव निकालने के लिये सूखा लेप भी लगारहनेदे अन्धकार के द्वारा ढकी हुई रोमकूपों में स्थित ऊष्मा रात्रिके समय निकलतीहै इसलिये रात्रिकेसमय लेप न करना चाहिये परन्तु नहींपकेहुए बहुत गंभीर और रक्तकफसे उत्पन्नहुए घावमें रात्रिमें भी लेपलगाना चाहिये प्रलेपकी विधि मुलहठी लाल चन्दन मरोरफली चीतेकीजड़ पित्तपापड़ा खससुगन्धवाला और कमल इनके लेपकरनेसे पित्तजनित सूजन का नाशहोता है प्रदेह बिजौरा नींबूकीजड़ जटामांसी देवदारु सोंठ रासना और अरणी काष्ठ इनका लेपवातजनित सूजन का नाशकरता है पीपल पुरानीतिलकीखली सहँजने की छाल बालू और हड़ इनसबको गोमूत्रमें पीसगरम २ लेपकरने से कफजनित सूजन नष्टहोतीहै २२० ॥

अथ शोणितस्रावणविधिः॥

शोणितंस्रावयेज्जन्तोरामयंप्रसमीक्ष्यच। प्रस्थंप्रस्थार्द्धमथवाप्रस्थार्द्धार्द्धमथापिवा॥ शर
त्कालेस्वभावेनशोणितंस्रावयेन्नरः। त्वग्दोषग्रन्थिशोथाद्यानऽयन्तिरुधिरोद्भवाः। व्यभ्रे
वर्षासुविद्युत्सुशीतेग्रीष्मेशरद्यपि। मध्याह्नेशीतकालेचरुधिरंस्रावयेद्बुधः॥ २२१॥

रक्तस्रावण [फस्त] की विधि॥

प्राणी के रोगको देखकर एकप्रस्थ आधे प्रस्थ अथवा चौथाई प्रस्थ रुधिर निकलवावे शरदऋतुमें स्वभावही से रुधिर निकलवाना चाहिये इससेरुधिर जनितत्वचाके दोष ग्रंथि औरसूजनआदिकनष्ट होतेहैं वर्षा शीत ग्रीष्म और शरदऋतुमें मेघरहित मध्याह्नकालमें रुधिर निकलवानाचाहिये २२१॥

मधुरंलवणंतोरक्तमशीतोष्णंतथागुरु। शोणितंस्निग्धविस्रञ्चविदग्धंपित्तकृद्भवेत्॥ वि
स्रताद्रवतारागश्चलनंविलयस्तथा। भूम्यादिपञ्चभूतानामेतेरक्तेगुणाःस्मृताः॥ २२२॥

मधुररकवर्ण अनुष्ण शीत भारी स्निग्ध आमकीसी गन्धिसे युक्त और विदाही रुधिरपित्तकारक होताहै रुधिर में आमकीसी दुर्गन्धि पतलापन रक्तता चलना और लीन होजाना यह पृथ्वी आदि पांचों महाभूतों के गुणहैं॥ २२२॥

रक्तेदुष्टेभवेच्छोथोरक्तमण्डलमेवच । व्यथादाहश्चपाकश्चकण्डूश्चपिडिकोद्गमः ॥ वृद्धेरक्ताङ्गनेत्रत्वंशिराणांपूर्णतातथा । गात्राणांगौरवंनिद्रामेहोदाहश्चजायते॥क्षीणेऽस्रे मधुराकांक्षामूर्च्छाचत्वाचिरूक्षता । शैथिल्यञ्चशिराणांस्याद्वातादुन्मार्गगामिता ॥ वातात्रूक्षक्षेण्यजनितात् ॥ २२३ ॥

रुधिर दूषित होने से सूजन रुधिरके चकत्ते व्यथा दाह पकना खुजली और फुन्सी उत्पन्न होती हैं रुधिर अधिक होनेसे शरीर तथा नेत्रोंमें रक्तता शिराओं की पूर्णता शरीरका भारीपन अधिक निद्रा मद और दाह उत्पन्न होताहै रुधिर क्षीणहोनेपर मधुर वस्तुकी इच्छा मूर्च्छा त्वचामें रूखापन तथा शिराओंकी शिथिलता होतीहै और रूखेपन वा क्षीणतासे उत्पन्नहुई वायु ऊपरको जाती है॥२२३॥

अरुणंफेनिलंरूक्षंपरुषंतनुशीघ्रगम् । अस्कन्दिसूचीनिस्तोदिरक्तस्याद्वातदूषितम् ॥ पित्तेनपीतंहरितंनीलंश्यावञ्चविस्रकम् । अस्वादूष्णंमाक्षिकाणांपिपीलिकामनिष्टकम् ॥ शीतलंबहुलंस्निग्धङ्गैरिकोदकसन्निभम् । मांसपेशीप्रभंस्कन्दिमन्दगंकफदूषितम् ॥ द्विदोषदुष्टंसंसृष्टंत्रिदुष्टंपूतिगन्धकम् । सर्वलक्षणसंयुक्तंकाञ्जिकाभञ्चजायते ॥ विषदुष्टंभवेत्श्यावंनासिकोन्मार्गगंतथा । विस्रंकाञ्जिकसंकाशंसर्वकुष्ठकरंतथा ॥ इन्द्रगोपप्रभंज्ञेयंप्रकृतिस्थमसंहतम् ॥ २२४ ॥

वायुसे दूषित रुधिर लाल फेनायुक्त रूखा कर्कश पतला शीघ्रगामी विशद और शरीर में सुई चुभोने के समान पीड़ा देताहै पित्त से दूषित रुधिर पीत हरा नीला श्याम आमकी दुर्गन्धिवाला मधुरता रहित उष्ण और मक्खी तथा चेंटियों को अप्रिय होताहै और कफ से दूषित रुधिर शीतल बहुत चिकना गेरू मिलेहुये जल के समान वर्णवाला मांसपेशी के समान कान्तिवाला पिच्छिल और धीरेचलने वाला होताहै दो दोषोंसे दूषित रुधिर दो दोषों के लक्षणवाला और तीन दोषोंसे दूषित रुधिर आम के समान गन्धियुक्त कांजी के समान आभा वालातथा त्रिदोषों के संपूर्णलक्षणों से युक्त होताहै विष दूषित रुधिर श्याम वर्ण आमकी गन्धि वाला कांजी के समान आभायुक्त नाक के द्वारा ऊपर से निकलनेवाला और सबप्रकारोंके कुष्ठों का उत्पन्न करने वाला होताहै निर्दोष रुधिर वीरबहूटी के समान वर्ण वाला और पतलाहोताहै ॥२२४॥

शोथेदाहेऽङ्गपाकेचरक्तवर्णोऽसृजःस्रुतौ । वातरक्तेतथाकुष्ठेसपीडेदुर्जयेऽनिले ॥ पाण्डुरोगेश्लीपदेचविषदुष्टेचशोणिते । ग्रन्थ्यर्बुदापचीक्षुद्ररोगाधिमन्थकाभिधे ॥ विदारीस्तनरोगेषुगात्राणांसादगौरवे। रक्ताभिष्यन्दतन्द्रायांपूतिघ्राणास्यदेहिके ॥ यकृत्प्लीहविसर्पेषुविद्रधौपिडिकोद्गमे । कर्णौष्ठघ्राणवक्त्राणांपाकेदाहेशिरोरुजि॥ उपदंशेरक्तपित्तेरक्तस्रावेप्रशस्यते । दोषेष्वेषुप्रक्षणैर्वाजलौकालाबुकादिभिः ॥ अथवापिशिरामोक्षैःकारयेद्रक्तपातनम् ॥ २२५ ॥

सूजन और दाह शरीर का पकना शरीरका रक्तवर्णहोना रुधिर कावहनावात रक्त कुष्ठ अत्यन्त पीड़ादायक दुर्जयवात पांडु श्लीपद रुधिर का विषसे दूषित होना ग्रन्थि अर्बुद अपची छिद्ररोग अधिमन्थ विदारी दूधके रोग शरीर का टूटना तथाभारीपन रक्ताभिष्यन्द तंद्रा नासिकाकी दुर्गन्धि

मुखकादाह यकृत् प्लीहा वीसर्प विद्रधि फुन्सी कान ओठ नासिका तथा मुखकापकना दाह शिरके रोग उपदंश और रक्तपित्त इनसम्पूर्ण रोगोंमें रुधिर निकलवाना श्रेष्ठहै ऊपर कहेहुए रोगोंमें सींगी. जोंक तोंवी के द्वारा अथवा फस्त लेकर रुधिर निकलवाना चाहिये ॥ २२५ ॥

नकुर्वीतशिरामोक्षंकृशस्यातिव्यवायिनः । क्लीबस्यभीरोर्गर्भिण्याःसूतायाःपाण्डुरोगिणः ॥ पञ्चकर्म्मविशुद्धस्यपीतस्नेहस्यचार्शसाम् । सर्वाङ्गशोथयुक्तानामुदरिश्वासकासिनाम् ॥ छर्द्यतीसारकुष्ठानामतिस्विन्नतरोरपि । ऊनषोड़शवर्षस्यगतसप्ततिकस्यच ॥ आघातात्स्रुतरक्तस्यशिरामोक्षोनशस्यते । तथाचस्रुतरक्तस्यरक्तपित्तादिनागतरक्तस्य, एषांचात्ययिकेरोगेजलौकाभिर्विनिर्हरेत् । तथाचविषजुष्टानांशिरामोक्षोनशस्यते ॥ गोश्रृङ्गेनजलौकाभिरलावुभिरपित्रिधा । वातपित्तकफैर्दुष्टंशोणितंस्रावयेद्बुधः ॥ द्विदोषाभ्यान्तुदुष्टंयत्त्रिदोषैरपिदूषितम् । दूषितंस्रावयेद्युक्त्याशिरामोक्षैःपदैस्तथा ॥ २२६ ॥

कृश अत्यन्त मैथुन करनेवाला नपुंसक भयभीत गर्भिणी शीघ्रप्रसूतास्त्री पांडुरोगी पंचकर्म शुद्ध स्नेहपान कियेहुए ववासीर रोगवाला सवअंगोंमें सूजन वाला और उदर श्वास खांसी छर्दि अतीसार तथाकुष्ठरोग से व्याकुल इनसवको फस्तलेना हितकारी नहीं है अत्यन्त स्वेददियागया सोल हवर्ष कीउमर से कम सत्तरवर्ष की अवस्था से ऊपर और जिस के रक्त पित्तादिरोगोंसे रुधिर निकल गयाहो इनसवको भी फस्त लेना हितकारी नहीं है परन्तु यह सम्पूर्ण रोग मिलेझुले होंतो जोंक लगवाकर रुधिर निकालना चाहिये और जो विषसेयुक्त होयँतो फस्त लेनाउपकारी है वातपित्त तथाकफके द्वारा रुधिर के दूषित होनेपर क्रमसे सिंगी जोकतथा तोंवी के द्वारा रुधिर निकलवाना चाहिये दोदोष अथवा तीनदोषोंसे रुधिरनदूषित होनेपर युक्ति पूर्वक फस्तसे अथवा पद से रुधिर निकलवाना चाहिये ॥ २२६ ॥

गृह्णातिशोणितंश्रृङ्गंदशांगुलमितम्वलात् । जलौकाहस्तमात्रंतुतुम्बीतुद्वादशांगुलम् ॥ पदमंगुलमात्रस्यशिरासर्वाङ्गशोधिनी ॥ २२७ ॥

सींगीसे दशअंगुल तक का जोंकों से हाथ भरका तोंवी से बारह अंगुलतकका पद से एक अंगुल तक का और फस्त लेनेसे संपूर्ण शरीर भरेका रुधिर शुद्ध होताहै ॥ २२७ ॥

शीतेनिरन्नेमूर्च्छार्त्तिनिद्राभीतिमदश्रमैः ॥ युक्तेनाश्रावयेद्रक्तंतथाविण्मूत्रसङ्गिनाम् ॥ शोणितेचाप्रवृत्तेतुकुष्ठत्रिकटुसैन्धवैः ॥ मर्दयेत्व्रणवक्त्रञ्चतेनरक्तंप्रवर्त्तते ॥ तस्मान्नशीते नात्युष्णेनास्विन्नेनातितापिते ॥ पीत्वायवागूंतस्यस्रावयेच्छोणितंबुधः ॥ अतिस्विन्नस्योष्णकालेतथैवातिशिराव्यधात् ॥ अतिप्रवर्त्ततेरक्तंतत्रकुर्य्यात्प्रतिक्रियाम् ॥ अतिप्रवृत्तेरक्तेतुलोध्रसर्ज्जरसाञ्जनैः ॥यवगोधूमचूर्णैश्चयवधन्वनगैरिकैः ॥ सर्पनिर्म्मोकिकाचूर्णैर्वामतःस्थापितंनरः ॥ मुखंव्रणस्यवद्ध्वाचशीतैश्चोपचरेद्व्रणम् ॥ विध्येदूर्ध्वंशिरान्तावद्दहेत्क्षारेणवह्निना ॥२२८॥

शीत उपवास निद्रा भय मद श्रम और मल मूत्र के वेग में रुधिर नहीं निकलवाना चाहिये जो फस्त देने से रुधिर निकले तो कूट त्रिकटु और सेंधानोन मिलाकर घाव के ऊपर रगड़ने से रुधिर

निकलताहै शीतकाल अत्यन्त उष्ण ऋतु स्वेदक्रिया और संतर्पणक्रिया में रुधिर नहीं निकलवाना चाहिये बुद्धिमान्वैद्य यवागू को पिलाकर तृप्तहुए मनुष्य का रुधिर निकलवावे अत्यन्त स्वेदयुक्त मनुष्यका उष्णकाल में अथवा बड़ीसिराके छिदजाने से जो बहुत रुधिर निकले तो उसका यत्न करे बहुत रुधिर के बहने पर लोध राल रसौत जौ तपागेहुंओंकाआटा धवई जवासा गेरू सर्पकी काँचलीका चूर्ण अथवा रेशमी कपड़े की भस्म के द्वारा घाव के मुखको बाँधकर शीतल इलाजकरे और ऊपर की नस को छेदकर क्षार अथवा अग्नि से घाव के मुख को जलावे ॥ २२८ ॥

व्रणंकषायंसन्धत्तेरक्तंस्कन्दयतेहिमः । व्रणास्यंभोजयेत्क्षारोदाहःसङ्कोचयेच्छिराः ॥ रक्तेदुष्टेऽवशिष्टेऽपिव्याधिर्नैवप्रकुप्यति। अतोरक्षेत्सावशेषंरक्तंनातिस्रुतिर्हिता॥ आन्ध्य माक्षेपकंतृष्णान्तिमिरंशिरसोरुजः ।पक्षाघातंश्वासकासौहिक्कादाहौचपाण्डुताम्॥ कुरु तेऽतिस्रुतंरक्तंमरणंवाकरोतिच । देहस्योत्पत्तिरसृजोदेहस्तेनैवधार्य्यते ॥ रक्तंजीवस्यचा धारस्तस्माद्रक्षेदसृग्बुधः । शीतोपचारैःकुपितेस्रुतरक्तस्यमारुते॥ कोष्णेनसर्पिषाशोथं सव्यथंपरिषेचयेत् । क्षीणस्यैणशशोरभ्रहरिणच्छागमांसजः॥रसःसमुचितैःपानेक्षीरंषष्टि कयाहितम् । पीड़ाशान्तिर्लघुत्वंचव्याध्युपद्रवसंक्षयः ॥ मनःस्वास्थ्यम्भवेच्चिह्नंसम्यक् निःसारितेऽसृजि। व्यायाममैथुनंक्रोधशीतस्नानप्रवातकान् ॥ एकाशनंदिवानिद्राक्षारा म्लकटुभोजनम् । शोकंवादमजीर्णञ्चत्यजेदाबलदर्शनात् ॥ २२९ ॥

कषाय घाव को जोड़ताहै शीत क्रिया रुधिर को गाढ़ा करती है क्षार घाव के मुखको जोड़ताहै और जलाने से सिरा सिकुड़जातीहै जो दूषितरुधिर कुछ बाकीभी रहजाय तो रोग कुपित नहींहोता इसलिये कुछ रुधिर बचालेना चाहिये क्योंकि रुधिर का बहुत निकलना अच्छा नहीं होता बहुत रुधिर निकलवानेसे अन्धता आक्षेप तिमिरि तृषा शिरकोपीड़ा पक्षाघात श्वास खांसी हिचकी दाह पांडुरोग और मृत्युभी होती है रुधिर से शरीर की उत्पत्ति तथा स्थिति होतीहै और रुधिरही जीव का आधारहै इसलिये यत्नपूर्वक रुधिर की रक्षा करना चाहिये रुधिर निकलवानेवालेकी वायु जो शीतल क्रियाओं से कुपित होजाय तो कुछ उष्ण घी से पीड़ायुक्त घाव की सूजन को सींचे रुधिर निकलनेसे क्षीण होनेवाले पुरुषको एण खरगोश भेड़ हिरन अथवा बकरे के मांसका रस पिलावे या सांठी के चावलों की खीर पिलावे पीड़ा की शांति शरीरका हलकापन रोगके उपद्रवोंका नाश और मनकी प्रसन्नता यह अच्छेप्रकारसे रुधिर निकलने के लक्षणहैं रुधिर निकलवाके जबतक बल न आजाय तबतक व्यायाम मैथुन क्रोध शीतक्रिया स्नान अधिक वायु एकबार भोजन दिनको सोना खार खटाई तथा कटु वस्तुका खाना शोक बकवाद और अजीर्णकारी वस्तुओंका भोजन इन सबको त्याग करे ॥ २२९ ॥

अथ प्रसादन कर्म्माणि ॥

सेकआश्च्योतनंपिण्डीविडालस्तर्पणंतथा ॥ पुटपाकेऽञ्जनञ्चेतिकृत्वानेत्रमुपाचरेत्२३०

नेत्रप्रसादन कर्म ॥

सेक आश्च्योतन पिंडी विडाल तर्पण पुटपाक और अंजन इनसब उपायों से नेत्रोंका इलाजकरना चाहिये ॥ २३० ॥

अथ कल्पोविधिः। तत्रसेकविधिः॥

सेकस्तुसूक्ष्मधाराभिःसर्वस्मिन्नयनेहितः। मीलिताक्षस्यमर्त्यस्यप्रदेयश्चतुरंगुलात्॥ ससस्नेहोभवेत्वातेपित्तेरक्तेचरोपणः। लेखनस्तुकफेकार्य्यस्तस्यमात्राभिधीयते॥ षड्भिर्वाचांशतैःस्नेहेचतुर्भिश्चैवरोपणे। तैस्त्रिभिर्लेखनेकार्य्यःसेकोनेत्रप्रसादने॥ निमेषोन्मेषणंपुंसामंगुल्याच्छोटिकाथवा। गुर्वक्षरोच्चारणंवावाङ्मात्रेयंस्मृताबुधैः॥ सेकस्तुदिवसेकार्योरात्रौचात्यन्तिकेगदे। एरण्डस्यदलैःपिष्टैःपक्कमाज्यंपयोहितम्॥ सुखोष्णंनेत्रयोरन्तःसिक्तंवातार्त्तिनाशनम्॥ २३१॥

सेककी विधि॥

नेत्रको मीचेहुए पुरुषके नेत्रपर चार अंगुल की दूरीसेसूक्ष्म धाराके द्वारा सींचना हितकारीहोताहै वातरोगमें स्नेहन(चिकनाई)पित्त अथवा रुधिरके रोगमें रोपण और कफकेरोगोंमें लेखन(कृशाकारक) सेक हितकारीहै स्नेहनसेकका काल ६०० मात्रा रोपण सेकका ४०० मात्रा और लेखन सेकका काल ३०० मात्राका होताहै नेत्रोंका खोलना मूंदना चुटकी बजाना अथवा एक गुरुअक्षरका उच्चारण करना इनमें जितना समय लगताहै उसको एक वाङ्मात्रा कहतेहैं सेकक्रिया दिनमें करनी चाहिये परन्तु अत्यन्त कठिन पीड़ा होनेपर रात्रिको भी करे रेंड़ीके पत्ते जड़ तथा छालके द्वारा बकरीके दूधको पकाकर कुछ गरम२ नेत्रोंके भीतर सेकदेनेसे वातके सबरोग दूरहोते हैं॥ २३१॥

अथाश्च्योतनविधिः॥

क्वाथक्षौद्रासवस्नेहविन्दुनायत्तुपातनम्॥ द्व्यंगुलोन्मीलितेनेत्रेप्रोक्तमाश्च्योतनंहितत्। विन्दवोऽष्टौलेखनेपुरोपणेदशविन्दवः॥ स्नेहेतेद्वादशप्रोक्ताःशीतलेकोष्णरूपिणः॥ उष्णेतुशीतरूपाःस्युःसर्वत्रैवेषनिश्चयः। वातेतिक्तंतथास्निग्धंपित्तेमधुरशीतलम्॥ कफेतिक्तोष्णरूक्षंचक्रमादाश्च्योतनंहितम्। आश्च्योतनानांसर्वेषांमात्रास्याद्वाक्शतोन्मिता॥ ततःपरंलोचनानाम्भेषजानामयोगतः। आश्च्योतनंनकर्त्तव्यंनिशायांकेनचित्क्वचित्॥ (तद्यथा) विल्वादिपञ्चमूलेनवृहत्येरण्डशिग्रुभिः। क्वाथआश्च्योतनेकोष्णोवाताभिष्यन्दनाशनः २३२॥

आश्च्योतनकीविधि॥

खुलेहुए नेत्रोंमें क्वाथ सहत आसव तथा स्नेहकी बूंदोंका दोअंगुलकी दूरीसे टपकाना आश्च्योतन कहाताहै लेखनमें आठ बूंद रोपणमें दश बूंद और स्नेहनमें बारह बूंद छोड़नी चाहिये शीतसे हुए नेत्ररोगमें कुछ उष्ण और उष्णतासे हुए नेत्ररोगमें शीतल आश्च्योतन हितकारीहै वात रोगमें तिक्त और स्निग्ध पित्तरोगमें मधुर और शीतल तथा कफरोगमें तिक्त उष्ण और सूखा आश्च्योतन हितकारीहै सम्पूर्ण आश्च्योतन धारण करनेका समय एकसौ मात्राहै इससे अधिक न धारण करना चाहिये क्योंकि इसके उपरान्त नेत्रोंमें औषधिका योग नहीं होता और रात्रिके समय कभी आश्च्योतन न करना चाहिये बेल आदिक पञ्चमूल भटकटैया रेंड़ी और सहँजना इनसब के कुछ उष्ण क्वाथके द्वारा आश्च्योतन करनेसे वातका अभिष्यन्द नष्टहोताहै॥ २३२॥

अथ पिण्डीविधिः ॥

युक्तभेषजकल्कस्यपिण्डीकवलमात्रया। वस्त्रखण्डेनसंबध्वानेत्रेऽभिष्पन्दनाशिनी॥ स्निग्धोष्णापिण्डिकावातेपित्तेसाशीतलामता । रूक्षोष्णाश्लेष्मणिप्रोक्ताविधिरुक्तोबुधैरयम्॥ (सा यथा) धात्रीविरचितापित्तेशिग्रुपत्रकृताकफे २३३ ॥

पिंडी (पोटली) की विधि ॥

यथायोग्य औषधियोंके कल्कसे एक ग्रासके समान बनाईहुई पिंड़ियाको वस्त्रमें बाँधकर नेत्रोंमें लगानेको पिंडी विधि कहतेहैं इस्से नेत्रोंका अभिष्पन्द नष्टहोताहै वात रोगमें स्निग्ध तथा उष्ण पिंडी पित्तरोगमें शीतल पिंडी और कफरोगमें रूखी तथा उष्ण पिंडी कही गईहै रेंडीकी जड़ तथा छालकी पिंडी वातरोग नाशक होतीहै आंवलेकी पिंडी पित्तरोग नाशक और सहँजनेके पत्तोंकी पिंडी कफ रोग नाशक होती है ॥ २३६ ॥

अथ विडालकविधिः ॥

विडालकोबहिर्लेपोनेत्रपक्ष्मविवर्जितः । तस्यमात्रापरिज्ञेयामुखालेपविधानवत् ॥ यष्टीगैरिकसिन्धूत्थदार्वीतार्क्ष्यैःसमांशकैः। जलपिष्टैर्बहिर्लेपःसर्वनेत्रामयापहः २३४ ॥

विडालक की विधि ॥

पलकों को छोड़कर नेत्रोंके ऊपर लेपकरने को विड़ालक कहतेहैं विड़ालककी मात्रा मुखके लेपके समान होतीहै मुलहठी गेरू सेंधानोन दारुहल्दी और रसौत यह संपूर्ण समभाग लेकर जलसे पीस नेत्रोंके ऊपर लेपकरने से नेत्रोंके सबरोग दूर होतेहैं ॥ २३४ ॥

अथ तर्पणविधिः ॥

वातातपरजोहीनेवेश्मन्युत्तानशायिनः । अभितोमाषचूर्णेनक्लिन्नेनपरिपिण्डितौ ॥ समौदृढौचसम्बाधौकर्त्तव्यौनेत्रकोशयोः । पूरयेत्घृतमण्डेनविलीनेनसुखोदकैः ॥ सर्पिषाशतधौतेनक्षीरजेनघृतेनवा । निमग्नान्यक्षिपक्ष्माणियावत्स्युस्तावदेवहि ॥ पूरयेन्मीलितेनेत्रेततउन्मीलयेच्छनैः। भिषग्भिरेषविस्यातस्तर्पणस्योदितोविधिः ॥ यद्रूक्षञ्चपरिष्पन्दिनेत्रंकुटिलमाविलम्। शीर्णपक्ष्मशिरोत्पातकृच्छ्रोन्मीलनसंयुतम् ॥ तिमिरार्जुनशुक्राद्यैरभिष्पन्दाधिमन्थकै । शुष्काक्षिपाकशोथाभ्यांयुतंवातविपर्य्ययैः ॥ दत्तेनतर्पयेत्सम्यङ्नेत्ररोगविशारदः। तर्पणंधारयेद्वर्त्मरोगेवात्तांशतंबुधैः ॥ स्वस्थेकफेसन्धिरोगेवाचांपञ्चशतानिच । षट्शतानिकफेकृष्णारोगेसप्तशतानिहि ॥ दृष्टिरोगेशतान्यष्टावधिमन्थेसहस्रकम् । सहस्रंवातरोगेपुधार्यमेवहितर्पणम्॥ पूर्णंचापाङ्गमार्गेणस्रावयित्वाक्षिशोधयेत् । स्विन्नेनयवपिष्टेनस्नेहवीर्येरितंततः ॥ यथास्वन्धूमपानेनकफमस्यविरेचयेत् । एकाहंवात्र्यहंवापिपञ्चाहंतर्पणञ्चरेत् ॥ तर्पणेतृप्तिलिङ्गानिनेत्रस्येतानिलक्षयेत् । सुखंस्वप्नावबोधत्वंवैशद्यंनेत्रपाटनम् ॥ निर्वृत्तिर्व्याधिशान्तिश्चक्रियालाघवमेवच । निर्वृत्तिःसुखंक्रियालाघवम् । नेत्रस्यक्रियायांनिमेषोन्मेषादौ

लघुता । गुर्वाविलमतिस्निग्धमश्रुकण्डूपदेहवत् ॥ घर्षतोदयुतंनेत्रमतितर्पितमादिशेत् ॥ आस्रावशोफपीडाथमुपदेहसमाकुलम् । रूक्षमस्रावमरुणंनेत्रंस्याद्धीनतर्पितम् ॥ अनयोर्दोषबाहुल्यात्प्रयतेतचिकित्सिते ॥ रूक्षस्निग्धोपचाराभ्यामेतयोःस्यात्प्रतिक्रिया ॥ (अनयोःअतितर्पितहीनतर्पितयोः) दुर्दिनात्यूष्णशीतेषुचिन्तायांसंभ्रमेषुच । अशान्तोपद्रवेचाक्षितर्पणंनप्रशस्यते. २३५ ॥

तर्पणकी विधि ॥

वायु धूप और धूलरहित स्थानमें रोगीको चित्तलिटाकर उर्दकी पिठीसे दोनों नेत्रोंमें कटोरीके समान मज़बूत घेराबनावे और नेत्र बन्दकराकर उसमें टियलाहुआ घी मांड़ गरमजल सौवीरका धोया हुआ अथवा दूधसे निकालाहुआ घी जवतक पलकें न डूबजायँ तवतक भरे फिर धीरे २ रोगीसे नेत्र खुलवावे यह वैद्यलोगोंने तर्पणकी विधि वर्णनकी है रूखापन सूखता कुटिलता मैलापन पलकोंका गिरना सिराओंका उत्पात कठिनतासे खुलना तिमिर अर्जुन शुक्र अभिष्यन्द अधिमंथपाक सूजन और वात विपर्यय इनदोषों वाले नेत्रोंमें तर्पणविधि उत्तमकही है वर्त्मरोगमें एकसौ मात्रातक कफकी स्वस्थता तथा सन्धिरोगमें पांचसौमात्रा कफरोगमें छःसौमात्रा कृष्ण रोगमें सातसौमात्रा दृष्टिरोगमें आठसौमात्रा और अधिमन्थ तथा वातरोगमें हज़ार मात्रातक तर्पणका धारणकरनाचाहिये यह पंडितों का मतहै फिर नेत्रके कोनेसे उसभरेहुए पदार्थको निकालकर जौके आटेसे स्नेहवीर्य (नेत्रोंमें तेल आदि लगानेसे जो क्लेशहो) कानाश और नेत्रोंका शोधनकरे फिर यथायोग्य धूमपान कराकर कफ निकलवावे एकदिन तीनदिन अथवा पांच दिनतक तर्पणकरे अच्छे प्रकारसे तर्पण होजानेके यह लक्षण हैं कि सुखपूर्वक निद्रा नेत्रोंकी निर्मलता सामर्थ्यसुख खोलने मूंदने में शीघ्रता और रोगकी शान्ति वहुत तर्पण होनेसे भारीपन मैलापन वहुत चिकनापन आंसुओंका वहना खुजली रगड़नेसे पीड़ा और उपदेह (नेत्रोंका लिपाहुआ सा होना) होताहै तर्पणके अच्छे प्रकारसे नहोनेपर आंसुओंका वहना सूजन पीड़ा ललाई रूखापन मैलापन और उपदेह होताहै तर्पणकी अधिकता और हीनतामें दोषोंकी अधिकता होनेमें चिकित्साकरे रूखे और स्निग्ध उपचारोंसे इनकी चिकित्सा होतीहै मेघसे छायेहुये दिनमें अत्यन्त उष्ण तथा शीतकालमें चिन्तामें भ्रममें और उपद्रवोंके शान्त न होनेमें नेत्रोंका तर्पण न करना चाहिये ॥ २३५ ॥

अथ पुटपाकविधिः ॥

द्वेबिल्वेस्निग्धमांसस्यपरद्रव्यपलंमतम् । द्रवस्यकुड़वोन्मानंसर्वमेकत्रपेषयेत् ॥ तदेकत्रसमालोड्यपत्रैःसुपरिवेष्टितम् । पुटपाकविधानेनतत्पश्चात्तद्रसंबुधैः। तर्पणोक्तेन विधिनायथावदवधारयेत् ॥ दृष्टिमध्येनिषेच्यःस्यान्नित्यमुत्तानशायिनः ।. स्नेहनोलेखनश्चैवरोपणश्चेतिसत्रिधा ॥ हितःस्निग्धोऽतिरूक्षस्यस्निग्धस्यसतुलेखनः । दृष्टेर्वलार्थःइतरःपित्तासृग्व्रणवातनुत् ॥ (इतरोरोपणः) स्नेहमांसवसामज्जामेदःस्वादौषधैःकृतः । स्नेहनःपुटपाकःस्याद्धार्योऽयंवाक्शतंनरः ॥ जांगलानांयकृन्मांसैर्लेखनद्रव्यसंयुतैः । कृष्णलोहरजस्ताम्रशंखविद्रुमसिन्धुजैः ॥ समुद्रफेनकासीसस्रोतोऽञ्जदधिमस्तुभिः । लेखनोवाक्शतंतस्यपरंधारणमिष्यते ॥ स्तन्यजांगलमध्वाज्यतिक्तद्रव्यविपा

चितम्। लेखनात्त्रिगुणोधार्यःपुटपाकस्तुरोपणः ॥ (तिक्तकद्रव्याण्याह) निम्बामृताद्वषपटोलनिदिग्धिकाभिःस्यात्पंचतिक्तकइतिप्रथितोगणोऽयम् ॥ आचरेत्तर्पणोक्तांतुक्रियांव्यापत्तिदर्शने । व्यापत्तिदर्शनेमिथ्याकृतपुटपाकजनितव्याधिदर्शने ॥ तेजांस्यनिलमाकाशमादर्शम्भास्वराणिच । नेक्षेततर्पितेनेत्रेयश्चवापुटपाकवान् ॥ २३६ ॥

पुटपाककी विधि ॥

स्निग्ध मांसके दोपल अन्यऔषधी एकपल औरपतली वस्तु आठपल इनसबको एकसाथ पीसकर एकमेंमिलायकर पुटपाककी विधिसे पत्तोंमें लपेटकर पाककरे फिर रोगीको चित्त लिटाकर पुटपाक में कही हुई विधि के अनुसार इन औषधियोंका रस नेत्रमें छोड़े स्नेहन रोपण और लेखन भेद से पुटपाक तीनप्रकारका है अत्यन्त रूखे को स्नेहन स्निग्धको लेखन और दृष्टि में बल उत्पन्न करने केलिये रक्तपित्त घाव तथा वातके शान्त करने के लिये रोपण पुटपाक हितकारी है स्नेह मांस चरबी मज्जा मेद और मधुर औषधियों के द्वारा स्नेहन पुटपाक होता है यह दोसौ वाक्य उच्चारण पर्य्यन्त नेत्रों में धारण करना चाहिये जांगलपशुओं की यकृत तथा मांस लेखन औषध काले लोहकाचूर्ण तांबा शंख मूंगा सैंधानोन समुद्र फेन कसीस सुरमा और दहीका तोड़ इनसब वस्तुओं से लेखन पुटपाक होताहै यहएकसौ वाक्य उच्चारण पर्य्यन्त धारण करनाचाहिये दूध जंगली पशुओंकी मज्जा तथा घी और तिक्त द्रव्य (नींव, गिलोय बांसा परवल और भटकटैया यहसब मिलकर पंचतिक्तक कहाते हैं) केद्वारा रोपण पुटपाक होताहै यहतीन सौ वाक्य उच्चारण पर्य्यन्त धारण करना चाहिये पुटपाक के बिगड़ जानेसे रोगोंके उत्पन्न होनेपर तर्पण में कहीहुई क्रिया के द्वारा चिकित्सा करे तर्पण अथवा पुटपाक के उपरान्त तेजयुक्त पदार्थ वायु आकाश दर्पण और चमकीली वस्तुओं को नदेखे ॥ २३६ ॥

अथाञ्जनविधिः ॥

अथसंपक्वदोषस्यप्राप्तमञ्जनमाचरेत् । अंजनंक्रियतेयेनतद्द्रव्यंचांजनंमतम् (तद्यथा) रसोवटीस्तथाचूर्णमितित्रिविधिमंजनम् । यथापूर्वबलंतेषुस्नेहमाहुर्मनीषिणः ॥ २३७ ॥

अंजनकी विधि ॥

दोषोंके परिपाक होजाने पर यथा योग्य अंजनकरे जिन वस्तुओंका नेत्रमें अंजन लगाया जाता है उनको अंजन कहते हैं अंजन तीन प्रकार का है गोली रस और चूर्ण यहक्रम से उत्तरोत्तर अधिक बलतथा स्नेह से युक्त होते हैं ॥ २३७ ॥

तत्प्रत्येकंत्रिधाप्रोक्तंलेखनंरोपणंतथा।स्नेहनंचेतिलिङ्गानितेषांविस्तरतःशृणु ॥ लेखनैःक्षारतीक्ष्णाम्लरसैरंजनमुच्यते । नेत्रवर्त्मशिराजालस्रोत्रशृंगाटकस्थितम् ॥ मुखनासाक्षिभिर्दोषमुत्क्लिश्यस्रावयेच्चतत् । कषायंतिक्तकंचापिसस्नेहंरोपणंमतम् ॥ स्नेहस्यशैत्यात्वर्ण्यंस्यात्दृष्टेश्चबलवर्द्धनम् । मधुरंस्नेहमण्डंतदंजनंस्यात्प्रसादनम् ॥ दृष्टिदोषप्रसादार्थस्नेहनार्थञ्चतद्धितम् । ऐरण्डमात्रावर्त्तिस्तुलेखनीस्यात्प्रमाणतः ॥ सार्द्धहरेणुकमितारोपणीवर्त्तिरिष्यते । क्रियतेस्नेहनीवर्त्तिर्द्विहरेणुकमात्रया ॥ रसांजनस्यमात्रातुपिष्टावर्त्तिमितामता ॥ २३८ ॥

यहलेखन रोपण और स्नेह न भेदसे तीन२ प्रकार के हैं क्षार तीक्ष्ण तथा खट्टी वस्तुओं से जो अंजन वनताहै उसको लेखन कहतेहैं लेखन अंजन लगाने से नेत्रवर्त्म शिरा कान और शृंगाटक में स्थित दोष मुख नासिका तथा नेत्रों के द्वारा उखडकर निकल जाता है कषैली तिक्त वस्तु और स्नेह के द्वारा जो अंजन वनता है उसको रोपण कहते हैं रोपण अंजन स्नेहकी शीतलता से वर्ण का उत्तम करने वाला और नेत्रों के वलकावढ़ाने वाला होताहै मधुर वस्तु और स्नेह के द्वारा जो अंजन बनता है वह स्नेहन कहाताहै दृष्टिके दोषोंकीशान्ति और स्नेहन के लिये यह श्रेष्ठ होताहै अंजन लगानेके लिये लेखनीवर्त्ति (सलाई) हरेणु (गगनधूल) के समान रोपणी वर्ति (सलाई) डेढ़ हरेणु के समान परिमाणवाली और स्नेहनी वर्ति दोहरेणुके समान परिमाणवाली होती है और रसांजन की मात्रा पिष्ट वर्ति के समान होती है ॥ २३८ ॥

चूर्णन्तुलेखनंवैद्यैर्द्विशलाकंप्रदीयते । रोपणंत्रिशलाकंस्याद्वतस्र.स्नेहनांजने ॥ (चतस्रःशलाकाःस्नेहनांजनेचूर्णे) मुखेयामुकुलाकाराकलायपरिमण्डला । अष्टांगुलाशलाकास्यादश्मजाधातुजाथवा ॥ (कलायपरिमण्डलाअग्रेकलायवद्वर्तुला)ताम्रलोहाश्मसंजाताशलाकालेखनेमता । सुवर्णरजतोद्भूतास्नेहनेसमुदाहृता ॥ अंगुलीचमृदुत्वेन रोपणेसंप्रयुज्यते । कृष्णभागावधिलिम्प्यादपांगंयावदंजनम् ॥ हेमंतशिशिरेचैवमध्याह्नेऽञ्जनमिष्यतेपूर्वाह्णेवापराह्णेवाग्रीष्मेशरदिचेष्यते । वर्षास्वनभ्रेनात्युष्णेवसंतेतुसदैवहि ॥ अथवासर्वदाप्रातःसायंवाञ्जनमाचरेत् । नातिशीतोष्णवाताभ्रेवेलायांतत्प्रयुज्यते ॥ श्रान्तोऽथरुदितेभीतेपीतमद्येनवज्वरे । अजीर्णेवेगघातेचनांजनंसंप्रयुज्यते ॥ रागोपदेहौतिमिरंशूलंसंरम्भमेवच । निद्राक्षयंचकुरुतेनिषिद्धेयुक्तमंजनम् ॥ २३९ ॥

लेखन अंजन का चूर्ण दोशलाका निरूपण का तीनशलाका और स्नेहनका चारशलाका प्रयोग करना चाहिये शलाका मुखमें फूलकी कली के समान अग्रभागमें मटर के समान गोल आठ उंगल की लम्वी पत्थर अथवा धातुकीहोनी चाहिये लेखनमें ताम्र लोह अथवा पत्थर की शलाका स्नेहन में चाँदी अथवा सुवर्ण की शलाका और रोपणमें कोमलताके कारण शलाकाके स्थानमें उंगली का व्यवहार करना चाहिये नेत्रके कृष्ण भागसे लेकर कोरतक अंजन लगाना चाहिये हेमन्त तथा शिशिरऋतुमें मध्याह्न के समय ग्रीष्म तथा शरदऋतुमें पूर्वाह्ण अथवा पराह्णमें वर्षामें मेघ रहित अथवा अत्यन्त उष्णतासे रहित समय में और वसन्त ऋतुमें सदैव अंजन लगाना उचितहै अथवा सम्पूर्ण ऋतुओं में प्रात काल और सायंकाल में अंजन लगाना चाहिये अत्यन्त शीत उष्ण वायु और मेघों से रहित समय में अंजन लगाना चाहिये थकाहुआ रोदन कियाहुआ भययुक्त मद्यपिये हुआ नवीन ज्वरवाला अजीर्णवाला और मल मूत्र आदिवेगों का धारण करने वाला इनसबको अजन लगाना हितकारी नहीं है निषिद्ध अवस्था में अंजन लगानेसे ललाई नेत्रलिपेहुए से मालूम होना तिमिर शूल घबराहट और निद्राका नाश होताहै ॥ २३९ ॥

अथ वटालेखनीयथा ॥

शङ्खनाभिर्विभीतस्यमज्जापथ्यामनःशिलाः । पिप्पलीमरिचंकुष्ठंवचाचेतिसमांशकम् ॥ छागक्षीरेणसंपिष्यवर्त्तिकुर्याद्यवोन्मिताम् । एरण्डमात्रांसंपिष्यजलैःकुर्याद्यथा

ञ्जनम् ॥ तिमिरंमांसवृद्धिंचकाचंपटलमर्बुदम् । रात्र्यन्धंवार्षिकंपुष्पंवर्त्तिश्चन्द्रोदया हरेत् ॥ (इतिचन्द्रोदयावर्त्तिलेखनी) २४० ॥

लेखनी वत्ती ॥

शंख की नाभि वहेड़ेकी मींगी हड़ मैनशिल पीपल मिर्च कूट और वच यह सम्पूर्ण समभाग वकरी के दूधमें जोंके समान वत्ती वनावे फिर इसको हरेणु के परिमाण जल में पीसकर अंजन लगावे यहचन्द्रोदय नामवत्ती तिमिर मांसवृद्धि काच पटल अर्बुद रतोंधी और कालेतिलकी फुल्लीको नष्ट करतीहै ॥ २४० ॥

अथ रोपणीवर्त्तिः ॥

अशीतिस्तिलपुष्पाणिषष्टिःपिप्पलितण्डुलाः । जातीपुष्पाणिपंचाशन्मरिचानितु षोड़शः ॥ सूक्ष्मपिष्टाम्बुनावर्त्तिःकृताकुसुमकाभिधा । तिमिरार्जुनशुक्राणांनाशिनीमांसवृद्धिनुत्॥एतस्याअंजनेप्रोक्तामात्रासार्द्धहरेणुका॥(इतिकुसुमिकारोपणीवटी) २४१ ॥

रोपणी वत्ती ॥

तिल के फूल अस्सी पीपल के दानेसाठ चमेली के फूल पचास और मिर्च सोलह इनको जल से खूब पीसकर वत्ती वनावे इसको कुसुमिका कहतेहैं इसके अंजन लगानेसे तिमिर अर्जुन शुक्र और मांसवृद्धि का नाश होताहै इसकी मात्रा आधे हरेणुकी होतीहै ॥ २४१ ॥

अथ स्नेहनीवर्त्तिः ॥

धात्र्यक्षपथ्यावीजानिएकद्वित्रिगुणानिच । पिष्ट्वावर्त्तिञ्जलैःकुर्य्यादंजनंद्विहरेणुकम् ॥ नेत्रस्रावंहरत्याशुवातरक्तरुजन्तथा ॥ २४२ ॥

स्नेहनी वत्ती ॥

आमले के वीज एकभाग वहेडे के वीज दो भाग और हडके वीज तीन भाग इनसवको पानी में पीसकर वत्तीवनावे इसकी मात्रा दो हरेणु होतीहै इसके द्वारा आंसुओं का वहना और वात रक्त की पीड़ा का नाशहोताहै ॥ २४२ ॥

अथ रसक्रियालेखनी ॥

तुत्थमाक्षिकसिन्धूत्थासिताशंखमनःशिलाः।गैरिकंसिन्धुफेनंचमरिचंचेतिचूर्णयेत्। संयोज्यमधुनाकुर्य्यादञ्जनार्थंरसक्रियाम्॥वर्त्मरोगार्मतिमिरंकाचशुक्रहरींपराम्॥२४३॥

लेखनीरस क्रिया ॥

तूतिया सोना मक्खी सेंधानोन चीनी शंख मैनसिल गेरू समुद्रफेन और मिर्च इनसवकाचूर्ण करके सहतके साथ अंजन लगावे इस्से वर्त्मरोग अर्म्म तिमिर काच और शुक्ररोगका नाशहोताहै२४३॥

अथ रोपणीरसक्रिया ॥

रसाञ्जनंसर्जरसोजातीपुष्पंमनःशिलाः। समुद्रफेणोलवणंगैरिकंमरिचन्तथा ॥ एतत्समांशंमधुनापिष्टंप्रक्लिन्नवर्त्मने । अञ्जनंक्लेदकण्डूघ्नंपक्ष्मणाञ्चप्ररोहणम् ॥ २४४ ॥

रोपणी रसक्रिया ॥

रसोत राल चमेलीकेफूल मैनसिल समुद्रफेन सेंधानोन गेरू और मिर्च इनसवको समभाग सहत में पीसकर अंजन लगानेसे क्लिन्नवर्त्म क्लेद तथा खुजली का नाशहोताहै और पलकें उगती हैं॥२४४॥

अथ स्नेहनीरसक्रिया ॥

कतकस्यफलंघृष्टामधुनानेत्रमञ्जयेत्।ईपत्कर्पूरसहितंस्मृतन्नेत्रप्रसादनम्॥ २४५ ॥

स्नेहनीरस क्रिया ॥

निर्मली को सहत के साथ पीसकर कुछ कपूर मिलाकर अंजन लगानेसे नेत्र निर्मल होते हैं॥२४५॥

अथ चूर्णतल्लेखनंयथा ॥

दक्षाण्डत्वच्छिलाकाचशङ्खचन्दनसैन्धवैः । अञ्जनंहरतेनित्यंसर्वानक्षिगदान्वला त्॥(दक्षःकुक्कुटःतथाचनिघण्टुः)कृकवाकुस्तथादक्षःकालज्ञोऽथशिखण्डिकइति॥२४६॥

लेखन चूर्ण ॥

मुर्गे के अंडेके छिलके मैनसिल कचनोन शंख लालचन्दन और सेंधानोन इनको समभाग चूर्ण कर अंजन लगाने से नेत्रके सम्पूर्ण रोग नष्ट होते हैं ॥ २४६ ॥

अथ रोपणचूर्णम् ॥

शिलायांरसकंपिष्टासम्यगाप्लाव्यवारिणा । गृह्णीयात्तज्जलंसर्वंन्त्यजेच्चूर्णमधोगत म् ॥ शुष्कंतच्चजलंसर्व्वपर्पटीसन्निभंभवेत् । विचूर्ण्यभावयेत्सम्यक्त्रिवेलंत्रिफलारसैः । कर्पूरस्यरजस्तत्रदशमांशेननिःक्षिपेत् । अञ्जयेन्नयनन्तेनसर्वदोपप्रशान्तये ॥ समस्त नेत्ररोगघ्नंचूर्णमेतन्नसंशयः ॥ २४७ ॥ रोपणचूर्ण ॥

खपरियाको शिलपर पीसकर पानीमें घोले फिर थोड़ीदेर रक्खकर ऊपरके पानीकोलेले और नीचेके बैठेचूरेको फेंकदे पीछे उस जलको सुखाकर जो पपड़ीसी जमें उसको पीसकर तीनवार त्रिफलाके रसमें भावनादे और उसमें दशमांश कपूर मिलाकर अंजनलगावे इस्से निस्संदेह नेत्रके संपूर्ण रोग नष्ट होते हैं ॥ २४७ ॥ अथ स्नेहनंचूर्णम् ॥

अग्नितप्तंहिसौवीरंनिपिञ्चेत्त्रिफलारसैः । सप्तवेलंतथास्तन्यैःस्त्रीणांसिक्तंविचूर्णित म् ॥ (सौवीरंश्वेतमञ्जनम्) अञ्जयेत्तेननयनेप्रत्यहंचक्षुषोर्हितम् । सर्व्वानक्षिविका रांस्तुहन्यादेतन्नसंशयः ॥ २४८ ॥ स्नेहन चूर्ण ॥

सफेद सुरमाको आगमेंतपा २ कर सातवार त्रिफलेके रसमें और सातवार स्त्रीके दूधमें बुझावे फिर पीसकर निरन्तर अञ्जन लगानेसे निस्सन्देह सम्पूर्ण नेत्रके रोग नष्ट होतेहैं ॥ २४८ ॥

अथ प्रत्यञ्जनविधिः ॥

गतदोपमपेताश्रुपश्येत्सम्यगम्भसि । प्रक्षाल्याक्षियथादोपंकार्य्यंप्रत्यञ्जनन्त तः ॥ तथानिर्वातदोपेक्षिधावनंसम्प्रयोजयेत् । प्रत्यञ्जनेकृतेदद्याच्चूर्णंतीक्ष्णप्रसादनम्॥ (तद्यथा) शुद्धनागेन्द्रतुल्यन्तुशुद्धंसूतंविनिक्षिपेत् । कृष्णाञ्जनंतयोस्तुल्यंसर्वमेकत्रच र्णयेत् ॥ दशमांसेनकर्पूरंतस्मिंश्चूर्णेविनिःक्षिपेत् । एतत्प्रत्यञ्जनंनेत्रगदाजिन्नयनामृतम्॥ (कृष्णाञ्जनंस्रोतोऽञ्जनम् तथाचमदनपालः) स्रोतोऽञ्जनन्तुतद्विधादञ्जनाभंयदञ्जन म् ॥ (नयनामृतंप्रत्यञ्जनम्) ॥ २४९ ॥

प्रत्यंजनकी विधि ॥

दोपतथा अश्रुरहित अच्छे प्रकार खुलेहुए नेत्रोंको जल से अच्छीरीति पर धोकर दोप के अनुसार प्रत्यंजन क्रियाकरे परन्तु दोपोंकी शान्तिहुए बिना नेत्रोंको न धोवे ऐसी अवस्थामें तीक्ष्ण चूर्णके द्वारा प्रत्यंजन क्रियाकरे शुद्धसीसेको टिवलाकर समभाग शुद्धपारा मिलावे और इनदोनों के समान काला सुरमा मिलाकर पीसले फिर दशमांश कपूर मिलाकर अजन लगावे इस प्रत्यंजन से नेत्रोंके संपूर्ण रोग नष्ट होतेहैं यह नेत्रोंके लिये अमृत समान है यह नयनामृत प्रत्यंजन है॥ २४९॥

अथ दृष्टिप्रसादनीशलाका ॥

त्रिफलाभृङ्गशुण्ठीनांरसैस्तद्वच्चसर्पिषा । गोमूत्रमध्वजाक्षीरैः सिक्तोनागःप्रतापितः तच्छलाकांहरत्येवसर्वान्नेत्रभवान्गदान् । (इतिभेषजानांविधानानि) ॥ २५० ॥

दृष्टि प्रसादिनी शलाका॥

सीसेको आगमें तपा२कर इससे त्रिफलेकारस भंगरेकारस सोंठकारस घी गोमूत्र सहत और बकरी के दूधमें बुझावे फिर इस सीसेकी सलाई बनवावे यह सलाई संपूर्ण नेत्रोंके रोगोंको दूर करती है इति औषधियों के बनाने की विधि ॥ २५०॥

अथ भेषजभक्षणसमयः ॥

भैषज्यमभ्यवहरेत्प्रभातेप्रायशोबुधः । कषायांस्तुविशेषेणतत्रभेदस्तुदर्शितः ॥ ज्ञेयः पञ्चविधःकालोभैषज्यग्रहणेनृणाम् । किञ्चित्सूर्योदयेजातेतथादिवसभोजने ॥ सायन्तनेभोजनेचमुहुश्चापितथानिशि ॥ २५१ ॥

औषधखाने के समय लिखते हैं॥

बहुधा औषध खाना प्रातःकालही उचित है और क्वाथ तो विशेष करके प्रातःकालही सेवनकरनाचाहिये मनुष्यों के औषध खाने के पांच समय कहेगये हैं कुछ सूर्य केउदय होने पर दिनके भोजन के समय सायंकाल के भोजन के समय वारम्वार और रात्रि में ॥ २५१॥

तत्रप्रथमकालः ॥

प्रायःपित्तकफोद्रेकेविरेकवमनार्थयोः। लेखनार्थेचभैषज्यंप्रभातेऽनन्नमाहरेत्॥ २५२ ॥

पहलासमय ॥

बहुधा पित्त तथा कफकी वृद्धि में और विरेचन वमन तथा लेखन के निमित्त प्रातःकाल बिना भोजन किये औषध खाना चाहिये ॥ २५२ ॥

अथद्वितीयकालः ॥

भैषज्यंविगुणेपानेभोजनाग्रेप्रशस्यते । अरुचौचित्रभोज्यैश्चमिश्रंरुचिरमाहरेत् ॥ समानवातेविगुणेमन्देऽग्नावतिदीपनम् । दद्याद्भोजनमध्येचभैषज्यंकुशलोभिषक् ॥ व्यानकोपेतुभैषज्यंभोजनान्तेसमाहरेत् । हिक्काक्षेपककम्पेषुपूर्वमन्तेचभोजनात्॥२५३॥

दूसरा समय ॥

अपान वायुके कुपित होने पर भोजन के पहले औषध खाना चाहिये अरुचि में अनेक प्रकारके सुन्दर भोजनों में मिलाकर औषध खानाचाहिये समान वायुके कोप तथा मन्दाग्नि में भोजन के

मध्य अत्यन्त दीपन औषध देनी चाहिये व्यानवायु के कोपहोने पर भोजन के अन्तमें औषध देनी चाहिये और हिचकी आक्षेप तथा कंपहोने पर भोजन के पहले और पीछे औषध देनीचाहिये २५३ ॥

अथ तृतीयकालः ॥

उदानेकुपितेवातेस्वरभंगादिकारिणि । ग्रासेग्रासांतरेदेयंभैषज्यंसांध्यभोजने ॥ प्राणेप्रदुष्टेसांधस्यभुक्तस्यांतेप्रदीयते।औषधंप्रायशोधीरैःकालोऽयंस्यात्तृतीयकः२५४॥

तीसरा समय ॥

स्वर भंग आदिक रोगोंके उत्पन्न करने वाले उदान वायु के कुपित होनेपर सायंकाल के भोजन में हरएक ग्रासके बीचमें औषध देनीचाहिये और प्राण वायुके कुपित होने पर सात्म्य (हितकारी) भोजन के अन्त में औषध देनीचाहिये ॥ २५४ ॥

अथ चतुर्थकालः ॥

मुहुर्मुहुश्चतृट्छर्दिहिक्काश्वासगरेषुच । सान्नंचभेषजंदद्यादितिकालश्चतुर्थकः २५५॥

चौथा समय ॥

तृषा छर्दि हिचकी श्वास रोग और दोष के उत्पन्न होने पर अन्नके साथवारम्वार औषध देवे यह चौथा कालहै ॥ २५५ ॥

अथ पञ्चमकालः ॥

ऊर्ध्वजत्रुविकारेषुलेखनेबृंहणेतथा । पाचनेशमनेदेयमनन्नंभेषजंनिशि ॥ (इति पञ्चमकालः) २५६ ॥

पांचवां समय ॥

हंसली के ऊपर के रोगोंमें लेखन क्रिया में बृंहण में पाचनमें और शमनमें रात्रिके समय विना भोजन कराये औषध देनी चाहिये ॥ २५६ ॥

निरन्नस्यभेषजस्यगुणमाह ॥

वीर्य्याधिकंभवतिभेषजमन्नहीनं हन्यात्तदामयमसंशयमाशुचैव ॥ तद्बालवृद्धयुवतीमृदुभिश्चपीतं ग्लानिंपरांनयतिचाशुबलक्षयञ्च ॥ २५७ ॥

विना भोजन किये औषध खाने के गुण ॥

विनाभोजन किये खाई हुई औषध अधिक वीर्यवाली होतीहै इसीसे शीघ्र रोगोंका नाश करतीहै परन्तु बालक वृद्ध युवती और कोमल शरीर वालोंको विना भोजन किये औषध सेवन करनेसे अत्यन्त ग्लानि और बलकानाश होताहै ॥ २५७ ॥

सान्नस्यभेषजस्यगुणमाह ॥

शीघ्रंविपाकमुपयातिबलंनहिंस्यादन्नावृतन्नचमुहुर्वदनान्निरेति ॥ एतद्धितंस्थविरबालकृशाङ्गनाभ्यः प्राग्भोजनाद्यदशितंकिलतच्चतद्वत् ॥ (अन्नावृतवत्भेषजमितिशेषः) २५८ ॥

अन्नके साथ खाईहुई औषध के गुण ॥

भोजनके साथ सेवनकीहुई औषध शीघ्र परिपाक को प्राप्त होतीहै बलको नाश नहीं करती और बारंबार मुखसे बाहर नहीं निकलती यहवृद्ध बालक कृश और स्त्रियोंको हितकारीहै भोजन से पहले खाईहुई औषधि के भी यही गुणहैं ॥ २५८ ॥

औषधशेषेभुक्तंभोजनशेषेयदौषधंपीतम् । नकरोतिगदोपशमंप्रकोपयत्यन्यरोगांश्च ॥ (पीतमित्युपलक्षणंलीढादिकंच) अनुलोमोऽनिलःस्वास्थ्यंक्षुत्तृष्णासुमनस्कताः । लघुत्वमिन्द्रियोद्गारशुद्धिर्जीर्णौषधाकृतिः ॥ क्लमोदाहोऽङ्गसदनंभ्रममूर्च्छाशिरोरुजः । अरतिर्बलहानिश्चसावशेषौषधाकृतिः ॥ २५९ ॥

खाइहुई औषधि के बिनापरिपाक हुए भोजन करनेसे और भोजन के बिना परिपाक हुए औषधि खाने से रोगशान्ति नहीं होतीहै किन्तु अन्यरोगों की वृद्धि होतीहै वायुकी अनुलोमता (नीचेजाना) स्वस्थता क्षुधा तृषा मनकी प्रसन्नता इन्द्रियोंका हलकापन और डकार की शुद्धता यह औषधि के परिपाक होने के लक्षणहैं और औषधिके परिपाक न होनेपर ग्लानि दाह अंगोंमें शिथिलता भ्रांति मूर्च्छा शिर में पीड़ा बेचैनी और बलका नाश होताहै ॥ २५९ ॥

अथ भेषजलक्षणविधिमाहचरकः ॥

देवान्गुरूंस्तथाविप्रान्पूजयित्वाप्रणम्यच । आशिषश्चसमादायश्रद्धयाभेषजंभजेत् ॥ रसायनामिवर्षीणांदेवानाममृतंयथा । सुधेवोत्तमनागानांभैषज्यमिदमस्तुते ॥ ब्रह्मदक्षाश्विरुद्रेन्द्रभूचन्द्रार्कानिलानलाःदेवाश्चसौषधिग्रामाभूमिदेवाश्चपांतुवः२६०॥

चरकमें कहीहुई औषध खानेकी विधि ॥

देवता गुरू और ब्राह्मणों को पूजन तथा प्रणाम करके और उनके आशीर्वादोंको लेकर औषध का सेवनकरे जैसे ऋषियोंको रसायन देवताओंको अमृत और सर्पोंको सुधा उपकारी होतीहै उसी प्रकार यह तुमको हितकारी हो ब्रह्मा दक्ष अश्विनीकुमार रुद्र इन्द्र पृथ्वी चन्द्रमा सूर्य्य वायु अग्नि ऋषि सम्पूर्ण औषधि और ग्राम तथा पृथ्वीके देवता तुम्हारी रक्षाकरें यह आशीर्वादके वचनहैं२६०॥

औषधंहेमरजतमृद्भाजनपरिस्थितम् । पिबेदाप्तजनस्याग्रेप्रसन्नवदनेक्षणः॥विश्रान्तस्तूपविश्याथपीत्वापात्रमधोमुखम् । निःक्षिप्याचम्यसलिलंताम्बूलाद्युपयोजयेत्२६१॥

इतिश्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचिते भावप्रकाशेपञ्चमंप्रकरणं चिकित्सायांसप्ताङ्गानिसम्पूर्णानि ॥ ५ ॥

श्रम रहित बैठकर और नेत्र मुखको प्रसन्नकरके अपने हितकारी पुरुषोंके आगे सोने चांदी अथवा मृत्तिकाके पात्रमें औषध पीकर पात्रको औंधादे फिर जलसे मुखको धोकर ताम्बूलादिकखाय २६१ ॥

इतिश्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचितभावप्रकाशस्यभाषानुवादे पञ्चमप्रकरणचिकित्साकेसातोंअंगसम्पूर्ण ॥

अथ चिकित्सार्थेरोगिणःपरीक्षातत्रवाग्भटः ॥

दर्शनस्पर्शनप्रश्नैस्तंपरीक्षेतरोगिणम् । आयुरादिदृशास्पर्शाच्छीतादिप्रश्नतःपरम्॥ आयुरादिआदिशब्दात्साध्यत्वासाध्यत्वादिदृशादर्शनेनअत्रसम्पदादिभ्यश्चभावेक्विप् ।

स्पर्शनशीतादिशीतोष्णमृदुकठिनत्वादिनाडीपरीक्षणंवा । प्रश्नतःउदरलाघवगौरव तृषाऽतृषाबुभुक्षाऽनुभुक्षाबलाबलादि॥ मिथ्यादृष्टाविकाराहिदुराख्यातास्तथैवचातथादु. ष्परिदृष्टाश्चमोहयेयुश्चिकित्सकान्॥ (तत्रदर्शनंनेत्रजिह्वामूत्रादीनांकर्त्तव्यम्)॥१॥

चिकित्साकेलिये रोगीकी परीक्षा॥

वाग्भटने कहाहै कि दर्शन स्पर्श और प्रश्नके द्वारा रोगीकी परीक्षा करनी चाहिये दर्शनके द्वारा आयु साध्यता तथा असाध्यता आदि स्पर्शके द्वारा शीतलता उष्णता कोमलता तथा कठोरता आदिक अथवा नाड़ी और प्रश्नकेद्वारा उदरका हलकापन भारीपन तृषा तृषाका न होना क्षुधा क्षुधाका न होना तथा बलाबल आदिकी परीक्षा करनीचाहिये अच्छेप्रकारसे विना देखे विचारपूर्वक विना कहे और भलीभांति विना पूंछे वैद्यको अच्छेप्रकारसे रोगका ज्ञान नहीं होताहै नेत्रजिह्वा और मूत्र आदि की परीक्षा दर्शनसे करनी चाहिये॥ १॥ तत्रनेत्रपरीक्षायथा॥

नेत्रंस्यात्पवनाद्रूक्षंधूम्रवर्णंतथारुणम्॥ कोणंगतंप्रविष्टंचतथास्तब्धविलोकनम्॥ हरिद्राखण्डवर्णंवारक्तंवाहरितंतथा॥ दीपद्वेषिसदाहञ्चनेत्रंस्यात्पित्तकोपतः॥ चक्षुर्बलासबाहुल्यात्स्निग्धंस्यात्सलिलप्लुतम्॥ तथाधवलवर्णञ्चज्योतिर्हीनंबलान्वितम्॥ नेत्रंद्विदोषबाहुल्यात्स्याद्दोषद्वयलक्षणम्॥ त्रिदोषलिंगसङ्कुनतन्मारयातिरोगिणम्॥ त्रिदोषदूषितंनेत्रमन्तर्मग्नंभृशंभवेत्। त्रिलिंगंसलिलस्राविप्रान्तेनोन्मीलयत्यपि॥ २॥

नेत्र परीक्षा॥

वायु के कोपमें नेत्र रूखे धूमले तथा रक्तवर्ण भीतर को घुसेहुए और स्तब्ध दृष्टि वाले होते हैं पित्तके कोपमें नेत्र हल्दीके समान वर्णवाले रक्त अथवा हरे दाहयुक्त और दीपकको न देखसकने वाले होते हैं कफके कोपमें नेत्र स्निग्ध (चिकने) आंसूभरे श्वेतवर्ण तेजरहित और बलयुक्त रहते हैं दो दोषों की अधिकता में दो दोषों के लक्षण मालूम होतेहैं और त्रिदोष के कोप में नेत्र भीतर को बहुत घुसेहुए सदैव आंसूबहते हुए कोरोंमें खुलेहुए और तीनों दोषोंके लक्षणोंसे युक्त होते हैं त्रिदोष के सम्पूर्ण लक्षण होनेपर रोगी मरजाते हैं॥ २॥

अथ जिह्वापरीक्षा॥

शाकपत्रप्रभारूक्षास्फुटनारसनानिलात्। रक्ताश्यावाभवेत्पित्ताल्लिप्ताद्रार्धवलाकफात्॥परिदग्धाखरस्पर्शाकृष्णादोषत्रयेऽधिकेसेवदोषद्वयाधिक्येदोषद्वितयलक्षणम्॥३॥

जिह्वा परीक्षा॥

वायुके कोपमें जिह्वा सागके पत्तोंके समान कांतिवाली रूखी तथा कटीहुई होतीहै पित्तके कोपसे रक्तवर्ण अथवा धूसर वर्णवाली होतीहै कफके कोपसे लिपीहुई गीली और श्वेतवर्ण होतीहै दो दोषोंकी अधिकतामें दो दोषोंके लक्षण होतेहैं और त्रिदोषके कोपमें जिह्वाजली हुई सीगऊ की जिह्वाके समान कठोर स्पर्शवाली और कृष्ण वर्ण होती है॥ ३॥

अथमूत्रपरीक्षा॥

वातेनपाण्डुरंमूत्रंरक्तंनीलञ्चपित्ततः। रक्तमेवभवेद्रक्ताद्धवलंफेनिलंकफात्॥ (अथ शरीरस्यशैत्योष्णत्वादिज्ञानार्थंस्पर्शनंकार्य्यम्)॥ ४॥

मूत्रपरीक्षा ॥

वायुसे पांडु वर्ण पित्तसे रक्त अथवा नीलवर्ण रुधिरसे रक्तवर्ण और कफसे श्वेत तथा फेनेसे युक्त मूत्र होताहै शरीरकी शीतलता और उष्णता आदिक जाननेकेलिये स्पर्श करना चाहिये ॥ ४ ॥

तत्रनाडीपरीक्षामाह ॥

पुंसोदक्षिणहस्तस्यस्त्रियोवामकरस्यतु । अंगुष्ठमूलगांनाडींपरीक्षेतभिषग्वरः ॥ अंगुलीभिस्तुतिसृभिर्नाडीमवहितःस्पृशेत् । तच्चेष्टयासुखंदुःखंजानीयात्कुशलोऽखिलम् ॥ सद्यःस्नातस्यसुप्तस्यक्षुत्तृष्णातपशीलिनः । व्यायामश्रान्तदेहस्यसम्यक्नाडीनबुध्यते ॥ वातेधिकेभवेनाडीप्रव्यक्तातर्जनीतले । पित्तेव्यक्तामध्यमायांतृतीयांगुलिकाकफे ॥ तर्जनीमध्यमामध्येवातपित्ताधिकेस्फुटा । अनामिकायांतर्जन्यांव्यक्तावातकफेभवेत् ॥ मध्यमानामिकामध्येस्फुटापित्तकफेऽधिके । अंगुलित्रितयेऽपिस्यात्प्रव्यक्तासान्निपाततः ॥ वाताद्वक्रगतिन्धत्तेपित्ताद्द्रुतप्लुत्यगामिनी । कफान्मन्दगतिर्ज्ञेयासान्निपातादतिद्रुता ॥ वक्रमुत्प्लुत्यचलतिधमनीवातपित्ततः । वहेद्वक्रञ्चमन्दञ्चवातश्लेष्माधिकंत्वतः । उत्प्लुत्यमन्दञ्चलतिनाडीपित्तकफेऽधिके ॥ कामात्क्रोधाद्वेगवहाक्षीणाचिन्ताभयप्लुता ॥ स्थित्वास्थित्वाचलेद्यासाहन्तिस्थानच्युतातथा । अतिक्षीणाचशीताचप्राणान्हन्तिनसंशयः ॥ ज्वरकोपेनधमनीसोष्णावेगवतीभवेत् । मन्दाग्नेःक्षीणधातोश्चसेवंमन्दतरामता ॥ चपलाक्षुधितस्यस्यात्तृप्तस्यभवतिस्थिरा । सुखिनोस्थिराज्ञेयातथाबलवतीमता ॥ ५ ॥

नाडी परीक्षा ॥

पण्डित वैद्य पुरुषके दाहिनेहाथकी और स्त्रीके बायेंहाथकी अंगूठेके मूलमें स्थित नाडीकी परीक्षा करे सावधान होकर तीन उंगलियोंसे नाड़ीको स्पर्श करे और उसकी चेष्टासे सम्पूर्ण सुख तथा दुःखको जानले शीघ्र स्नान कियेहुएकी सोयेहुएकी भूखेकी प्यासेकी धूपसे संतप्तकी और व्यायाम के द्वारा थकेहुए की नाडी अच्छेप्रकारसे नहीं मालूम होतीहै वायुकी अधिकता में तर्जनी के नीचे पित्तकी अधिकता में मध्यमा के नीचे और कफकी अधिकता में तीसरी अनामिका उंगलीके नीचे नाड़ी अधिक फड़कतीहुई मालूम होती है वात पित्तकी अधिकता में तर्जनी तथा मध्यमाके बीचमें कफ वातकी अधिकतामें अनामिका और तर्जनीके नीचे और पित्त कफकी अधिकतामें मध्यमा तथा अनामिकाके बीच में नाड़ीका फड़कना अधिक मालूम देताहै सन्निपातमें तीनों उंगलियोंके नीचे सम मालूम होतीहै वायुकी अधिकतामें वक्रगतिवाली पित्तकी अधिकतामें उछल२कर चलनेवाली कफकी अधिकतामें मन्दगतिवाली और सन्निपात में बहुत शीघ्र चलनेवाली होतीहै वात पित्तकी अधिकतामें टेढ़ी और उछल २ कर चलनेवाली वात कफकी अधिकतामें टेढ़ी और धीरे २ चलने वाली तथा कफ पित्तकी अधिकतामें धीरे२ उछल २ कर नाड़ी चलनेवाली होतीहै कामसे अथवा क्रोधसे वेगवती और चिन्ता अथवा भयसे नाड़ीक्षीण होतीहै जो नाड़ी ठहर२ कर चले अपनेस्थान से हटजाय अत्यन्त क्षीण होय अथवा अत्यन्त शीतल होय वह नाड़ी निस्सन्देह प्राणोंको नाशकरतीहै ज्वरके कोपमें नाड़ी उष्ण और वेगवती होतीहै मन्दाग्नि और क्षीण धातुवालेकी नाड़ी अत्यंत

मन्द होती हे भूखेकी नाड़ी चंचल तृप्तकी नाड़ी स्थिर और सुखी पुरुषकी नाड़ी स्थिर और बलवती होतीहै ॥ ५ ॥ अथ येनयेनरोगाणांज्ञानंस्यात्तत्तदाह ॥

हेतुस्तदनुसंप्राप्तिंपूर्वरूपञ्चलक्षणम् । तथैवोपशयःपञ्चरोगविज्ञानहेतवः ॥ ६ ॥

जिनके द्वारारोगका ज्ञान होताहै उनका वर्णन ॥

हेतु संप्राप्ति पूर्वरूप लक्षण और उपशय यह पांचरोगोंके जाननेके कारणहैं ॥ ६ ॥

तत्रहेतोर्लक्षणमाह ॥

यत्तुनस्याद्विनायेनतस्यतद्धेतुरुच्यते । शास्त्रेसंव्यवहारायतत्पर्यायान्प्रचक्ष्महे ॥ निदानकारणंहेतुर्निमित्तंचनिबन्धनम् । मूलमायतनंतत्रप्रत्ययोऽपिनिगद्यते ॥ (तत्र हेतुर्व्याधीनांज्ञानायहेतुर्यथा) वर्षारूक्षश्रमंहिमानशनानि मैथुनशोकचिन्ताभयादयो वातप्रकोपहेतवोवातजान्व्याधीन्बोधयन्ति । शरत्कट्वम्लोष्णतीक्ष्णक्रोधतृषाक्षुधा भिघातातपादयः ॥ पित्तप्रकोपहेतु पित्तजान्व्याधीन्बोधयन्ति । वसन्तमधुरस्निग्ध शीतादयःकफप्रकोपहेतवःकफजान्व्याधीन्बोधयन्ति ॥ ७ ॥

हेतुका लक्षण ॥

जिसके विना जो कार्य्य न होसके उसे हेतु कहतेहैं निदान कारण हेतु निमित्त निबन्धन मूल आयतन यह उसके नाम चिकित्सा शास्त्रमें व्यवहारके निमित्त कहेगयेहैं उसमें हेतुरोगोंके जानने के लिये कहागयाहै जैसे वर्षाकाल रूक्षता परिश्रम शीत उपवास मैथुन शोक चिन्ता और भय आदिक वायुके कोप होनेके हेतुहैं यह वातजरोगोंको उत्पन्न करतेहैं शरदऋतु कटु तथा खट्टी वस्तु उष्ण तथा तीक्ष्ण वस्तु क्रोध तृषा क्षुधा चोट और धूप आदिक पित्तके कोपके कारणहै इनके द्वारा पित्तके रोग उत्पन्न होतेहैं वसन्तऋतु मधुर तथा स्निग्धवस्तु और शीतादिक कफके कोपके हेतु हैं इनसबकेद्वारा कफकेरोग उत्पन्न होते हैं ॥ ७ ॥

अथ संप्राप्तिलक्षणमाह ॥

यथादुष्टेनदोषेणयथाचानुविसर्पता । उत्पत्तिर्यामयस्यासोसंप्राप्तिर्जातिरागतिः ॥ यथादुष्टेनदोषेणयथाकारणभेदेनदोषेणयथाचानुविसर्पिता । अनेकधादोषाणांविसर्पता मूर्द्धाधस्तिर्यगादिगतिभेदेन । तथाचविसर्पता । आमयस्ययाउत्पत्तिः । असौसंप्राप्तिः । शास्त्रव्यवहारायसंप्राप्तेः पर्य्यायानाहजातिरागतिरिति ॥ ८ ॥

संप्राप्तिका लक्षण ॥

कारणके अनुसार दोषको प्राप्तहुए दोष ऊपर नीचे और तिरछे फैलकर जैसे रोगोंको उत्पन्नकरतेहैं उसको संप्राप्ति कहते हैं जाति और आगति यह उसके नामहैं ॥ ८ ॥

संप्राप्तेरौपाधिकभेदानाह ॥

संख्याविकल्पप्राधान्यबलकालविशेषतः । साभिद्यतेयथात्रैववक्ष्यन्तेऽष्टौज्वराइति ॥ संख्यादिरूपविरोधास्तेभ्यःसासंप्राप्तिर्भिद्यतेभेदवतीक्रियतइत्यर्थः । तत्रसंख्यांविवृणोति । यथाज्वरोऽष्टधाअतीसारःषड्विधइत्यादि ॥ ९ ॥

॥ संप्राप्तिके उपाधिसे हुए भेद ॥

संख्या विकल्प प्राधान्य वल और काल इन विशेषोंसे संप्राप्तिके भेद होतेहैं संख्याकी विशेषता जैसे आगेकहेंगे कि आठप्रकारकेज्वर और छःप्रकारके अतीसार इत्यादि॥ ९॥

॥ विकल्पंविवृणोति ॥

दोषाणांसमवेतानांविकल्पोऽशांशकल्पना। समवेतानांसमुदितानांदोषाणांअंशांशिकल्पनाहीनमध्याधिकभेदेभागकल्पनाविकल्पः (प्राधान्यंविवृणोति) स्वातन्त्र्यपारतंत्राभ्यांव्याधेःप्राधान्यमादिशेत।व्याधेःस्वातन्त्र्येणप्राधान्यंपारतन्त्रेणऽप्राधान्यंचवदेदित्यर्थः।यथास्वतन्त्रस्यज्वरस्यप्राधान्यंज्वराधीनानांश्वासादीनामप्राधान्यम् (वलंविवृणोति)हेत्वादिकात्स्न्यावयवैर्वलावलविशेषम्। अत्रापिव्याधेरित्यनुवर्ततेहेत्वादेःहेतुपूर्वरूपरूपाणाम्। कात्स्न्र्येनसाकल्येनअवयवैःएकदेशेनव्याधेरवलावलयोर्विशेषणम्।विशेषबोधः (कालंविवृणोति) नक्तंदिनर्तुभुक्तांशैर्व्याधिकालोयथामलम् ॥ नक्तमत्राव्ययंरात्रिवाचकम्। एतेनैतदुक्तंयस्मिन्नक्तादिरंशोयस्यदोषस्यप्रकोपउक्तोऽस्तिसोंऽशस्तस्यदोषजस्यव्याधेःकालइत्यर्थः। नक्तादेरंशेषुवातादेःप्रकोपेउक्तोवाग्भटेन। तेव्यापिनोऽपिहृन्नाभ्योरधोमध्योर्ध्वसंश्रयाः।वयोऽहोरात्रिभुक्तानामन्तमध्यादिगाःक्रमादिति ॥वातपित्तकफा (ऋतुषुवातादिकोयथा) वर्षासुशिशिरेवायुःपित्तंशरदिउष्णके ॥ वसन्तेतुकफःकुप्येदेषाप्रकृतिरात्तवी १० ॥

विकल्प परस्पर मिलेहुए वातादिक दोषों की अंशाश कल्पना अर्थात् वातादि दोषों में प्राप्त रूक्षता आदिका हीन मध्य और अधिक भेदोंके विभागके निश्चयको विकल्प कहते हैं(इसरोगमें वातादि दोषों में से किसके कितने अंश है यह निश्चय करना) प्राधान्य स्वतन्त्रता और परतन्त्रतासे व्याधि की प्रधानता और अप्रधानताको क्रमसे जानना चाहिये जैसे स्वतन्त्र ज्वर की प्रधानता और उसके आधीन श्वासादिकों की अप्रधानता वल हेतु पूर्वरूप और रूप इनसंपूर्ण लक्षणों के होनेसे रोग का वलऔर इनमें से किसी २ के होनेसे अवल जानना चाहिये काल रात्रि दिन ऋतु और भोजन का समय इनमेंसे जौनसा अंश जिस दोषकेकोप का कहागया है वही अंश उसीदोष से उत्पन्न हुए रोगका काल कहाजाता है रात्रि आदिकों के किस अंशमें किसदोषका कोप होताहै यह वाग्भट्टने कहाहै कि वातपित्त और कफ यह सम्पूर्ण शरीर में रहने वाले होकर भी क्रमसे हृदय और नाभिके नीचे बीचमें, औरऊपर रहतेहैं अवस्था दिन रात्रि और भोजन इनके अन्त मध्य और आदिमें क्रम से वातपित्त और कफका कोप होता है किस ऋतुमें किस दोषका कोप होताहै यह कहते हैं जैसे कि वर्षा तथा शिशिर में वातका शरद तथा ग्रीष्म में पित्तका और वसन्तमें कफका कोप होताहै ॥ १० ॥

(संप्राप्तिव्र्याधीनांज्ञानायहेतुर्यथा) मिथ्याहारविहारकुपितावातादयआमाशयगमनरसद्रूपेण कोष्ठाग्निवहिर्निस्सरणरूपंज्वरोत्पत्तिप्रकारम्बोधयति। तथाव्याधीनांसंख्यादोषांशकल्पनाप्राधान्यवलकालांश्चबोधयति। तेषुज्ञातेषुचिकित्साविशेषश्चस्यात् ११ ॥

संप्राप्ति रोगोंके जाननेका कारणहै ॥ जैसे नियम रहित आहार विहारके द्वारा कुपित हुएवाता-

दिक दोष आमाशय में जानेसे रसको दूषित करने से और जठराग्निको बाहर निकलने से ज्वर की उत्पत्ति के प्रकार को प्रकट करते हैं इसप्रकार रोगों की संख्या दोषों की अंशांश कल्पना प्राधान्य बल और काल यह प्रकट होते हैं और इन सम्पूर्णके ज्ञातहोनेपर विशेषतासे चिकित्सा होतीहै ॥११॥

अथ पूर्वरूपस्य लक्षणमाह ॥

पूर्वरूपन्तुतत्येन विद्याद्भाविनमामयम् । सामान्यञ्चविशिष्टञ्च द्विविधंतदुदाहृतम् ॥ सामान्यंतत्रदोषाणां विशेषैरनधिष्ठितम् । विशिष्टमीषद्व्यक्तंस्याद्विशेषैश्चसमन्वितम् ॥ दोषाणांविशेषाः जृम्भातिशयनेत्रदाहाग्निमान्द्यादयः । तत्रपूर्वरूपंव्याधीनांज्ञानायहेतु र्यथा । श्रमादयोभाविनंज्वरंबोधयन्ति । अथचअतएवश्रमादयोऽतिशयितजृम्भायुक्ता भाविनंवातज्वरंनेत्रदाहयुक्ताः पित्तज्वरंवह्निमान्द्ययुक्ता भाविनंकफज्वरंबोधयन्ति॥१२॥

पूर्व रूपका लक्षण ॥

जिसके द्वारा होने वाला रोग निश्चितहोताहै उसको पूर्वरूप कहते हैं पूर्वरूप दो प्रकारका है सामान्य और विशेष उनमेंसे दोषोंके जम्भाई बहुत नेत्रों का जलना और मन्दाग्नि आदि विशेषोंसे जो युक्त नहो उसको सामान्य कहतेहैं और दोषोंके विशेषों से युक्त कुछ प्रकट लक्षण वाले पूर्वरूप को विशिष्ट कहते हैं पूर्वरूप रोगों के ज्ञानका कारण है जैसे श्रम आदिक से होने वाला ज्वर मालूम पड़ताहै और इसी श्रमआदिके साथ अत्यन्त जम्भाई आती हों तो होनेवाला वातज्वर जो नेत्रमें अत्यन्त दाहहो तो होने वाला पित्त ज्वर और जो मन्दाग्नि हो तो होने वाला कफ ज्वर मालूम होता है ॥ १२ ॥ अथलक्षणस्यलक्षणमाह ॥

पूर्वरूपंविशिष्टंपद्व्यक्तंतत्लक्षणंस्मृतम् । संस्थानंलिङ्गंचिह्नञ्चव्यञ्जनंरूपमाकृतिः ॥ विशिष्टंपूर्वरूपम् । ईषद्व्यक्तंरूपम् । तदेवसम्यग्व्यक्तंलक्षणंस्मृतंतस्यशास्त्रे व्यवहारायपर्यायानाहसंस्थानमित्यादि. लक्षणंव्याधेर्ज्ञानायहेतुर्यथा । स्वेदावरोधःसन्तापःसर्वाङ्गग्रहणन्तथा।युगपद्यत्ररोगेतुसज्वरःपरिकीर्त्तितः॥युगपदेतल्लक्षणंज्वरंबोधयति॥१३॥

लक्षण का लक्षण ॥

विशिष्ट पूर्वरूप जो अच्छे प्रकार से प्रकट हो तो उसको लक्षण कहते हैं संस्थान लिंग चिह्न व्यंजन रूप और आकृति यह लक्षण के नाम हैं लक्षण रोगों के जानने का कारण है जैसे कि स्वेद का मालूम होना संताप और सब शरीर में पीडा यह संपूर्ण लक्षण जिसरोग में होयँ उसको ज्वर कहते हैं ॥ १३ ॥ अथोपशयस्यलक्षणमाह ॥

औषधान्नविहाराणामुपयोगंसुखावहम्।नृणामुपशमंविद्यात्सहिसात्म्यमितिस्मृतः॥१४॥

उपशय का लक्षण ॥

सुखदायक औषध, अन्न और विहारके सेवन को उपशय कहतेहैं और इसको सात्म्यभी कहतेहैं॥१४॥

तत्रवातस्योपशममाह॥

मधुरलवणसाम्लस्निग्धनस्योष्णनिद्रा गुरुरविकरवस्तिस्वेदसम्मर्दनानि । दधिजलदारोपाभ्यङ्गसन्तर्पणानि प्रकुपितपवमानंशान्तमेतानिकुर्युः॥ १५ ॥

वायु का उपशय ॥

मधुर अम्ल लवण तथा स्निग्ध वस्तु नासलेना उष्ण वस्तु निद्रा भारीवस्तु धूप वस्ति क्रिया स्वेद मर्द्दन दही तेलकालगाना संतर्पण और वर्षाका अन्त यह सम्पूर्ण कुपित वायुको शान्त करतेहैं १५॥

अथ पित्तस्योपशममाह ॥

तिक्तस्वादुकषायशीतपवनच्छायानिशाव्यञ्जनं ज्योत्स्नाभूगृहयन्त्रवारिदजलंस्त्रीगात्रसंस्पर्शनम् । सर्पिःक्षीरविरेकसेकरुधिरस्रावप्रदेहादिकं पानाहारविहारभेषजमिदं पित्तप्रशान्तिन्नयेत् १६ ॥

पित्तका उपशय ॥

तिक्त मधुर कषैली तथा शीतलवस्तु वायु छाया रात्रि पंखा चांदनी तहखाना फव्वारे का जल कमल स्त्रियों के अंगका स्पर्श घी दूध विरेचनसेके रुधिर निकलवाना और लेप आदिक इन सम्पूर्ण पान आहार विहार और औषधों के द्वारा पित्त शान्त होता है ॥ १६ ॥

अथ कफस्योपशममाह ॥

रूक्षाक्षारकषायतिक्तकटुकव्यायामनिष्ठीवनं धूमान्युष्णशिरोविरेकवमनस्वेदोपवासादिकम् । स्त्रीसेवाध्वनियुद्धजागरजलक्रीडाङ्गनासेवनं पानाहारविहारभेषजमिदंश्लेष्माणमुग्रंहरेत् ॥ जलक्रीडाकफंकथंहरति । तदाह । जलक्रीडाजनितशैत्येनावरुद्धोष्मापङ्कलिप्ताभितः पाकाग्निरिवोग्रोभूत्वाकफंशोषयतीतिसमाधिः ॥ उपशमोव्याधेर्ज्ञानायहेतुर्यतउक्तंचरकेण । गूढलिंगंसंकीर्णलक्षणंचव्याधिमुपशमानुपशमाभ्यांपरीक्षेदिति। तथाचसुश्रुते । अभ्यङ्गस्वेदनस्नेहैर्विकारोवातिकस्तुयः । नशाम्येत्तत्रविज्ञेयोरक्तमत्रास्तिदूषितम् १७॥

कफका उपशय ॥

रुक्ष क्षार कषैली तिक्त तथा कटुवस्तु व्यायाम थूकना धूम उष्णवस्तु नासलेना वमन स्वेद उपवास तृषा वायु मार्गचलना युद्ध जागना जलक्रीड़ा और मैथुन इनसबपान आहार विहार और औषधके सेवनसे बहुत बढ़ाहुआभी कफ शान्त होताहै जलक्रीड़ा किसप्रकारसे कफको शान्तकरती है इसका उत्तर कहतेहैं कि जलक्रीड़ा से उत्पन्न हुये शीतके द्वारा रुकीहुई ऊष्मा सबओर पंकके लेप से रुककर बहुत प्रचंड होनेवाली पाककी अग्निके समान उग्र होकर कफको सुखातीहै उपशय रोगके ज्ञानका कारणहै क्योंकि यह चरकने कहाहै कि छिपे हुये लक्षणवाले और मिलेहुये लक्षण वाले रोगोंकी उपशय और अनुपशय से रक्षाकरे और सुश्रुतने भी कहा है किजो तेलादि लगाना स्वेद और स्नेहके द्वारा वातजनित रोग शान्त न होय तो रुधिरको दूषित जाननाचाहिये ॥ १७ ॥

सर्वेषामेवरोगाणांनिदानंकुपितामलाः । तत्प्रकोपस्यतुप्रोक्तंविविधाहितसेवनम् ॥ सर्वेषांरोगाणांनिदानंसंनिकृष्टंकारणम् । कुपितास्वहेतुदुष्टामलाःवातपित्तकफाएवेत्यन्वयः (तथाचवाग्भटः) दोषाएवहिसर्वेषांरोगाणामेककारणमिति । नन्वागन्तुजव्याधिपुव्यभिचारःस्यात् । तन्न । तत्राप्युत्पत्त्यनंतरंदोषप्रकोपस्यावश्यम्भावित्वात् । उत्पन्नद्रव्येषुगुणयोगस्येव (उक्तंचचरके) आगन्तुर्हियथापूर्वोजायते। पश्चान्निजैर्दोषैरनुबध्य

तइति। तत्प्रकोपस्यतु। दोषप्रकोपस्यतु। निदानम्। विविधानिनानाविधानि। यान्यहितान्यसात्म्यान्याहारविहारादीनि। तेषांसेवनम् १८॥

अपने कारणों से दोषयुक्त वात पित्त और कफ यही तीनों संपूर्ण रोगोंके समीपी कारण हैं और अनेक प्रकारके अहितकारी आहार विहार आदिकोंका सेवन दोषोंके कोपका कारणहै और ऐसाही वाग्भटने कहाहै कि वात पित्त और कफ यही संपूर्णरोगोंके मुख्य कारणहैं अब यह शंका होतीहै कि कि आगन्तुक रोगोंमें वातादिक दोष कारण नहीं होते हैं इसका उत्तर यहहै कि जैसे कोई वस्तु जब उत्पन्न होलेतीहै तब उसमें गुणोंका संयोग होता है उसीप्रकार आगन्तुक रोगोंके उत्पन्न होतेही दोषोंका कोप होताहै और चरकनेभी कहाहै कि पहले आगन्तुक रोग उत्पन्नहोताहै फिर अपने दोषों से युक्त होजाताहै॥ १८॥

यथावायोः प्रकोपस्यनिदानानि॥

नीवारस्त्रिपुटःसतीनचणकःश्यामाकमुद्गाढकी निष्पावश्चमकुष्ठकश्चवरटामङ्गल्यकःकोद्रवः॥ यद्द्रव्यंकटुकंसतिक्ततुवरंशीतञ्चरूक्षंलघु स्वल्पाशोविषमाशनंनिरशनंभुक्तेह्यजीर्णेऽशनम्॥ भुक्तेजीर्णतरंपरिश्रमभरोगर्त्तादिकोष्णंघनं बाहुभ्यान्तरणन्तनोःप्रतपनंमार्गेऽतियानम्पदा॥ दण्डादिप्रहतिस्तथोच्चपतनंधातुक्षयोजागरः मार्गस्यावरणंव्यवायभृशतावाताादिवेगाहतिः॥ अत्यर्थंवमनंविरेचनमतिस्रावोऽधिकश्चासृजो रोगान्मांसविहीनतातिमदनश्चिन्ताचशोकोभयम्॥ वर्षावैशिशिरेदिनस्यरजनेर्भागौततीयौघनाः प्राग्वातस्तुहिनंशरीरमरुतोदुष्टेरमीहेतवः॥ नीवारःप्रसाधिकाः। तीनीइतिलोके। त्रिपुटःखेसारीइतिलोके। सतीनःवर्त्तुलकलापःनिष्पावः। कोलशिम्बीसदृशफलो। राजशिम्बिस्तस्यात्रीजमन्नंभवति। वरटिवराटिका। कुसुम्भबीजम्। बररेइतिलोके। मङ्गल्यकोमसूरः। विषमाशनम्। बहुस्तोकमकालेवाभुक्तंतद्विषमाशनम्। अतियानम्। पादाभ्यामतिचलनम्। तरोःप्रपतनम्। तरोरित्युपलक्षणम्। जागरःरात्रौ। वाताादिवेगाहतिः। आदिशब्देनविण्मूत्राश्रुछिक्कोद्गारच्छर्दिशुक्रक्षुत्तृषोच्छ्वासनिद्राःसंगृह्यन्ते। दिनस्यत्रिधाविभक्तस्य। एवंरजनेश्च। यस्यपुनरुक्तिस्तेनतेनवातस्यातिदुष्टिर्बोद्धव्या॥ १९॥

वायुके कोपके निदान॥

तिन्नीके चावल खिसारी मटर चने सामा मूंग अरहड़ सेम मोठ कुसुमके बीज मसूर कोदों कटु तिक्त कषाय शीतल रूखी तथाहलकी वस्तु स्वल्प भोजन विषमाशन [अधिक थोड़ाया विनासमय के भोजन] उपवास भोजनके पचेविना फिरभोजन करना भोजनका अच्छेप्रकार से पचजाना परिश्रम भार उष्णगर्त्त मेव भुजाओंसे तैरना वृक्षादि गिरना बहुतपैदल चलना दांत आदिकी चोट उच्चस्थानसे गिरना धातुक्षय रात्रिमें जागना मार्गका रुकना अत्यन्त मैथुन वात मल मूत्र आंशू हिचकी डकार छर्दि वीर्य क्षुधा तृषा ऐंड़ाई तथा निद्राके वेगकारोकना अत्यन्त वमन अत्यन्त विरेचन बहुत रुधिर निकलवाना रोगसे मांसका घटना अत्यन्त काम चिन्ता शोक भय वर्षा शिशिरऋतु दिन तथा रात्रिका पिछला तिहाई भाग मेघ पूर्वकी वायु और हिम इनसबकेद्वारा शरीरकी वायु

कुपित होतीहै इनमेंसे जो २ वातें दोबार कहीगई हैं उनसे वायु अत्यन्त कुपित होता है यहजानना चाहिये ॥१६॥ अथ पित्तस्यप्रकोपकारणानि यथा ॥

कट्वम्लोष्णविदाहितीक्ष्णलवणक्रोधोपवासातपस्त्रीसम्भोगतृषाक्षुधाभिहननव्याया ममद्यादिभिः । भुक्तेजीर्य्यतिभोजनेचशरदिग्रीष्मेतथाप्राणिनांमध्याह्नेचतथार्द्धरात्र समयेपित्तप्रकोपोभवेत् ॥ (विदाहिलक्षणम्) विदाहिद्रव्यमुद्गारमम्लंकुर्य्यात्तथातृषाम्। हृदिदाहञ्चजनयेत्पाकंगच्छतिताच्चिरात् ॥ (अन्यच्च) माषैस्तिलैःकुलत्थैश्चमत्स्यैर्मेषा मिषेणच । गव्येणदधितक्रेणनृणांपित्तंप्रकुप्यति ॥ २० ॥

पित्तके कोपहोने के कारण ॥

कटु अम्ल लवण उष्ण विदाही (जो वस्तु खट्टी डकारलावे तृपा तथा हृदयमें दाह करे और बहुत देरमें पचे उसे विदाही कहते हैं) तथा तीक्ष्णवस्तु क्रोध उपवास धूप स्त्री प्रसंग तृपा तथा क्षुधाका रोकना व्यायाम मद्य भोजनके पचनेका समय शरद तथा ग्रीष्मऋतु मध्याह्न और अर्द्ध रात्रि यह सब पित्तके कोपके कारणहैं औरभी कहाहै कि उर्द तिल कुलथी मछली मेढ़ेकामांस और गौका दही तथा मट्ठा इन सबसे पित्त कुपित होताहै ॥ २० ॥

अथ श्लेष्मप्रकोपकारणानि यथा ॥

गुरुपटुमधुराम्लस्निग्धमाषैस्तिलैश्च द्रवदधिदिननिद्राशीतसर्पिःप्रपूरैः ॥ प्रथम दिवसभागेरात्रिभागेऽपिचाद्ये भवतिहिकफकोपोभुक्तमात्रेवसन्ते ॥ प्रथमदिवसभागे त्रिधाविभक्तस्यदिवसस्यप्रथमभागे । एवंरात्रेश्चाद्यभागे ॥ ननुसर्व्वेषांरोगाणांनिदानं दोषाएवकिमन्यदप्यस्तीतिसंशयेचरकआह । निदानार्थकरोरोगोरोगस्याप्युपलक्ष्यते ॥ इतिरोगस्यनिदानार्थकरःनिदानस्यरोगोऽपिउपलक्ष्यतेदृश्यते। अत्रदृष्टान्तमाह ॥ तद्य थाज्वरसन्तापाद्रक्तपित्तमुदीर्य्यते। रक्तपित्ताज्वरस्ताभ्यांश्वासश्चाप्युपजायते॥ प्लीहाभि वृद्ध्याजठरंजठराच्छोफएवच । अर्शोभ्योजाठरंदुःखंगुल्मश्चाप्युपजायते ॥ प्रतिश्याया दथोत्कासःकासात्संजायतेक्षयः । अन्येत्वाहुर्मधुकोशे । रोगस्यरोगश्चेन्निदानंतथानिदा नमित्येवोच्येत । तद्विहायनिदानार्थकरइतिवचनमेतद्बोधयति । रोगस्यरोगोनिदाना र्थकरः । निदानकार्य्यकरणेसहायः । निदानन्तुरक्तपित्तादीन्कतिचिद्रोगान्प्रतिज्वरा दिरेवहेतुरितिसिद्धान्तः । अतएवाग्रेस्पष्टमेवचरकः।कश्चिद्धिरोगोरोगस्यहेतुर्भूत्वेति। प्रथमस्यरोगस्यज्वरादेर्योदुष्टोदोषोहेतुः सएवपश्चाद्भाविनोरक्तपित्तादेरपिरोगस्यहेतुः । सर्वेषामेवरोगाणांनिदानंकुपितामलाः ॥ इतिनियमात्तत्रयदारक्तपित्तादेरुपद्रवलक्षण योगेनरोगत्वाविघातःस्यात्ततः सर्वेषामितिवचनंसामान्यम् । निदानार्थकरइतिविशेष वचनात् ॥ २१ ॥

कफ के कोपके कारण ॥

भारी लवण मधुर खट्टी तथा स्निग्धवस्तु उर्द तिल पतलीवस्तु दही दिनमेंसोना शीत परिश्रमादि का न करना दिन तथा रात्रिकी पहली तिहाई वसंत ऋतु और भोजन का अन्त यह सब कफके

कोप के कारण हैं केवल दोपही सम्पूर्ण रोगों के कारण हैं अथवा कोई औरभी इस सन्देहके दूरकरने को चरक ने कहा है कि एक रोग दूसरे रोगका निदान कार्य में सहायक होताहै जैसे ज्वरके संताप से रक्त पित्त उत्पन्न होताहै रक्तपित्त से ज्वर होता है और इनदोनोंसे राजयक्ष्मा रोगहोताहै प्लीहाके बहुत बढ़नेसे उदर और उदरसे सूजन उत्पन्न होतीहै बवासीरसे दुखदाई उदररोग और गुल्म उत्पन्नहोताहै जुकामसे खांसी और खांसी से क्षयरोग उत्पन्नहोताहै और लोगों ने मधुकोश में कहाहै कि जो रोगका रोगही निदानहै तो पिछले वाक्यमें ऐसा न कहकर निदानार्थकर यह वचन कहागया है उससे यह प्रकट होता है कि एक रोग दूसरे रोगका निदान कार्य्यमें सहायकहोताहै परन्तु रक्तपित्त आदिक कुछ रोगों के ज्वरादिक ही कारण हैं यह सिद्धान्त है इसी से चरक ने कहाहै कि कोई रोग किसी रोग का कारणहोकर इत्यादि पहले ज्वर आदिक रोगका जो दोप युक्त दोप कारणहोताहै वही पीछे होनेवाले रक्त पित्त आदिकोंकाभी कारणहोताहै क्योंकि संपूर्ण रोगों के निदानकोपयुक्त दोपही होतेहैं यह नियमहै तबजो यहकहो किरक्त पित्त आदि कों में उपद्रवकालक्षण मिलेगा इस निमित्त उनको रोगन कहसकेंगे तो संपूर्ण इस वचनको सामान्य माननाचाहिये क्योंकि निदानार्थ कर यह विशेप वचनहै ॥ २१ ॥ रोगस्यहेतोरोगस्यवैचित्र्यमाह ॥

कश्चिद्धिरोगोरोगस्यहेतुर्भूत्वाप्रशाम्यति । यथाज्वरोरक्तपित्तमुत्पाद्यस्वयंप्रशाम्यतिननुयोदोषोद्रेकेणज्वरोरक्तपित्तमुत्पादितवांस्तस्मिन्सतिसतुज्वरःकथंशाम्यति । तत्रव्याधिस्वभावएवकारणमितिनदोपः । नप्रशाम्यतिचाप्यन्योहेत्वर्थंकुरुतेऽपिच । अन्योहेत्वर्थमपिकुरुतेस्वयञ्चनप्रशाम्यतियथाप्रतिश्यायः कासंकरोतिस्वयञ्चनप्रशाम्यति । तथार्शोजठरगुल्मौकरोतिस्वयञ्चननिवर्त्ततइति । (अथदोपधातुमलानांक्षीणानाञ्चचिकित्सामाहसुश्रुतः) अत्यन्तकुत्सितावेतौसदास्थूलकृशौनरौ । श्रेष्ठोमध्यशरीरस्तुस्थूलःक्षीणोनपूजितः ॥ कर्पयेद्बृंहयेच्चापिसदास्थूलकृशौनरौ । रक्षणञ्चापिमध्यस्यकुर्वीतकुशलोभिपक् ॥ (अन्यच्च) क्षपयेद्बृंहयेच्चापिदोपधातुमलान्भिपक् । नरोरोगान्वितोयावद्रोगेणरहितोभवेत् ॥ क्षपयेदतिप्रवृद्धान्दोपधातुमलांस्तत्तत्क्षेपणहेतुभिरौपधान्नविहारैर्ह्रासयित्वासमीकुर्य्यात् । बृंहयेत् । क्षीणान्दोपादींस्तत्तद्वृद्धिहेतुभिरौपधान्नविहारैर्वर्द्धयित्वासमीकुर्य्यात् ॥ २२ ॥

रोगका रोगही कारणहै इसमें विचित्रता कहते हैं ॥

कोई रोग किसीरोगको उत्पन्न करके शान्तहोजाता है जैसे ज्वर रक्त पित्तको उत्पन्न करके आप शान्तहोजाताहै अब यह सन्देह होताहै कि जिसदोपसे ज्वर रक्तपित्तको उत्पन्न करता है उस दोप के वर्त्तमानरहनेपर ज्वर किसप्रकार शान्तहोसका है इसका उत्तर यह है कि रोगका स्वभावही इसका कारणहै कोईरोग अन्यरोगोंको उत्पन्न करतेहैं और आपनहीं शान्तहोते जैसे जुकाम खांसीको उत्पन्न करके आप नहीं शान्तहोता और बवासीर उदर तथा गुल्मरोगको उत्पन्नकरके आप नहीं शान्तहोती बढ़े हुए तथा क्षीणहुए दोप धातु और मलों की चिकित्सा सुश्रुतने कही है कि स्थूल और कृश यह दोनों प्रकार के मनुष्य अत्यन्त निन्दितहैं मध्यम शरीरवाला सबसे श्रेष्ठहै इस्से चतुरवैद्य स्थूलको कृश और कृशकोस्थूल करे और मध्य शरीरवालेकी रक्षाकरे रोगी के बढ़ेहुए दोप धातु और मलको

क्षीणकरने वाली औषधि अन्न और विहारसे क्षीणकरकेसमकरे और क्षीणहुए दोष धातुतथामलको वृद्धिकरनेवाली औषधि अन्न और विहार से बढ़ाकर समकरे ॥ २२ ॥

अस्वस्थोयेनविधिनास्वस्थोभवतिमानवः । तमेवकारयेद्वैद्योयतःस्वास्थ्यंसदेप्सितं २३

जिसप्रकारसे बेचैन पुरुष सुचित्तहोजाय वही रीति वैद्यको करनीचाहिये क्योंकि सुचित्तताही को लोगसदैव चाहते हैं ॥ २३ ॥

स्वस्थस्यलक्षणमाह ॥

समदोषःसमाग्निश्चसमधातुमलक्रियाः। प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाःस्वस्थइत्यभिधीयते ॥ समक्रियः । शरीरानुरूपकर्मा । आत्माशरीरं । तन्त्रान्तरेऽपि । विण्मूत्राखिलदोषधातुसमताकांक्षान्नपानेरुचिर्भुक्तंजीर्य्यतितुष्टयेपरिणतिःस्वप्नावबोधेःसुखम् ॥ गृह्णीतोविषयान्यथास्वमुचितान्वृत्तिंमनोवृत्तितः स्वस्थस्याभिहितंचतुर्दशविधंजन्तोरिदंलक्षणम् ॥ रुचिःशरीरकान्तिःनन्वहर्निशर्तुभुक्तवस्तुदोषाणांवृद्धेःकथंसमदोषता ।उच्यते। अहोरात्रप्रथमभागादिषुतत्तद्दोषवृद्धेःस्वस्थवृत्तोक्तविधि भिरुपशमात्समदोषतेतिनदोषः (किञ्च) यत्समत्वंहिदोषाणांभिषग्भिरवधार्य्यते। नतत्स्वास्थ्यंविनावक्तुंशक्यमन्येनहेतुना ॥ तेनसमदोषस्वस्थयोर्लक्षणमन्योन्यापेक्षयास्वस्थःसमदोषःस्वस्थःस्वस्थेभ्योहितंचतत्दोषधातुमलानां स्वप्रमाणस्थितानां साम्यानुवृत्तिहेतुर्यद्व्यापन्नस्वस्थानुवृत्तिङ्करोति । ऋतुचर्य्याध्यायेसेव्यत्वेनोक्तम् । तथामात्राशीलयेत्तृतीयेऽध्यायेरक्तशालिः षष्ठिकयवगोधूमजाङ्गलमांसजीवन्तीशाकादिमोदकक्षीरादि ॥ तथायदोजस्करंरसायनं वाजीकरणंसर्व्वदाशीलनीयत्वेननिर्दिष्टम् ॥ २४ ॥

स्वस्थ का लक्षण ॥

जिसके दोष अग्नि और धातु समहोंय शरीरके अनुरूप कार्य्यकरनेमें सामर्थ्य होय और शरीर इन्द्री तथामन प्रसन्न हो उसको स्वस्थ कहतेहैं और ग्रन्थान्तर में भी कहाहै कि मल मूत्र संपूर्ण दोषतथा धातुओं की समता अन्न तथा पान में रुचि शरीर में कांति भोजन का परिपाक होना तथा परिपक्व होकर पुष्टताकारी होना सुखपूर्वक निद्राआना यथायोग्य विषयों का ग्रहण करना और मनकी वृत्तिका ठीक होना यह १४ स्वस्थ के लक्षण हैं अब यह सन्देह होता है कि रात्रि दिन ऋतु और भोजन के अनुसार दोषोंकी वृद्धि होती है तो दोषों की समता कैसेहोसकी है इसका उत्तर यहहै कि रात्रि दिन के प्रथम आदिक भागों में दोषों की वृद्धिहोती है परन्तु स्वस्थके लिये कहीहुई विधियों के द्वारा उसके शान्तहोजानेसे दोषों की समता होजातीहै इस से कोई दोष नहीं है किन्तु वैद्य लोग जिसको दोषों की समता कहते हैं वह स्वस्थता के बिना और किसी हेतु से होनहीं सक्ती इससे दोषों की समता और स्वस्थता यह दोनों एकलक्षण वाले हैं तो स्वस्थको समदोषऔर सम दोष को स्वस्थ कहसक्तेहैं जो वस्तु अपने प्रमाण में स्थितदोष धातुतथा मलकी समता करने वाली और स्वस्थता को बनाये रखने वाली होती है वह स्वस्थ लोगों को हितकारी है ऋतुचर्य्या अध्याय में सेवन करने के योग्य जो वस्तु कही गई हैं मात्रा शीलयेत् इत्यादिक तृतीयाध्याय में लाल धान्य सांठी जौ गेहूं जंगलीपशुओं का मांस जीवन्ती आदि का शाक मोदक तथा दुग्धादिक जो कहे गये

हैं और ओज करने वाले रसायन तथा वाजीकरण यह संपूर्ण स्वस्थचित्तके लिये हितकारी हैं इनका सेवन करना चाहिये ॥ २४ ॥

अथ दोष धातु मलानांवृद्धेर्निदानान्याह ॥

तत्तद्वृद्धिकराहारविहारातिनिषेवणात्।दोषधातुमलानांहिवृद्धिरुक्ताभिषग्वरैः॥ २५ ॥

दोष धातु और मल की वृद्धि के निदान ॥

दोष धातु और मलको बढ़ाने वाले आहार विहारोंके अधिक सेवनसे इनकी वृद्धिहोतीहै ॥ २५ ॥

अतिवृद्धानां तेषांलक्षणान्याह ॥

वातेवृद्धेभवेत्कार्श्यंपारुष्यंचोष्णकामिता।गाढंमलंबलञ्चाल्पंगात्रस्फूर्तिर्विनिद्रता॥ विण्मूत्रनेत्रगात्राणांपीतत्वंक्षीणमिन्द्रियम् । शीतेच्छातापमूर्च्छाःस्युःपित्तेवृद्धेऽल्पमूत्रता ॥ विड़ादिशौक्ल्यंशीतत्वंगौरवञ्चातिनिद्रता ॥सन्धिशैथिल्यमुत्क्लेदोमुखसेकःकफेऽधिके ॥ रसेवृद्धेऽन्नविद्वेषोजायतेगात्रगौरवम् । लालाप्रसेकश्छर्दिश्चमूर्च्छासादोभ्रमः कफः ॥ प्रवृद्धंरुधिरंकुर्य्याद्गात्रमारक्तवर्णकम् । लोचनञ्चतथारक्तंशिराःपूरयतेऽपिच ॥ (अन्यच्च)रक्तन्तुकुरुतेवृद्धंविसर्पप्लीहविद्रधीन् । कुष्ठंवातास्रकंगुल्मशिरापूर्णत्वकामले ॥ गात्राणांगौरवंनिद्रामदोदाहश्चजायते ॥व्यङ्गाग्निसादसंमोहरक्तत्वङ्नेत्रमूत्रताः ॥ गुदमेढ्रास्यपाकार्शःपिड़कामशकास्तथा ॥ इंद्रलुप्तांगमर्दासृग्दरास्तापंकरांघ्रिषु । शमयेद्रक्तवृद्ध्युत्थान्रक्तस्रुतिविरेचनैः ॥ २६ ॥

बहुत बढ़ेहुए दोष धातु और मल के लक्षण ॥

वायु के बढ़ने पर कृशता चर्म में कठोरता उष्ण वस्तु में अभिलाषा मलका गाढ़ापन थोड़ाबल शरीर का फड़कना और निद्रा की हानि यह सब बातें होतीहैं पित्त बढ़ने पर मल मूत्र नेत्र तथा शरीरकी पीतता इन्द्रियों की क्षीणता शीतकीइच्छा संताप मूर्च्छा और मूत्रकी अल्पता यहसब लक्षण होतेहैं कफ बढ़ने पर मल आदि की श्वेतता शीत भारीपन बहुत निद्रा संधियोंकी शिथिलतामतली और मुख से कफ गिरना यह लक्षण होतेहैं रस बढ़ने पर अन्न में अरुचि शरीर में भारीपनलार बहना छर्दि मूर्च्छा शिथिलता भ्रम और कफ की अधिकता यह लक्षण होतेहैं रुधिर बढ़नेपर शरीर तथा नेत्रों की रक्तता और सिराओं की रुधिर से पूर्णताहोती है और भी कहाहै कि रुधिर बढ़नेपर वीसर्प प्लीहा विद्रधि कुष्ठवात रक्त गुल्म सिराओं का भरना कामला शरीर का भारीपन निद्रा मद दाह व्यंग मंदाग्नि मूर्च्छा त्वचा नेत्र तथा मूत्रकी रक्तता गुदा लिंग तथा मुखका पकना बवासीर फुंसी मस्से इन्द्रलुप्त शरीर का टूटना प्रदर और हाथ पैरों में संताप यह लक्षण होते हैं रुधिर के बढ़ने से उत्पन्न हुये रोगों को रुधिर के निकलवाने और विरेचन से शुद्धकरै ॥ २६ ॥

मांसवृद्धन्तुगण्डोष्ठस्फिगुपस्थोरुबाहुषु।जङ्घयोःकुरुतेवृद्धिंतथागात्रस्यगौरवम्॥ उदरेपार्श्वयोर्वृद्धिकासश्वासादयस्तथा । दौर्गन्ध्यंस्निग्धतागात्रेमेदोवृद्धौभवेदिति॥(अन्यच्च)प्रवृद्धंकुरुतेमेदःश्रममल्पेऽपिचेष्टिते । तद्वत्स्वेदगलगण्डोष्ठरोगमेहादिजन्मच ॥ श्वासंस्फिग्जठरग्रीवास्तनानांलम्बनंतथा । वृद्धान्यस्थीनिकुर्व्वन्तिअस्थीन्यन्यानिचा

स्थिषु॥आचरन्तितथादन्तान्विकटान्महतस्तथा। मज्जाद्वृद्धसमस्तांगनेत्रगौरवमाचरेत्॥शुक्राश्मरीशुक्रवृद्धौशुक्रस्यातिप्रवर्त्तनम्। मलप्रवृद्धावाटोपोजायतेजठरेव्यथा॥ मूत्रेमुहुर्मुहुर्मूत्रमाध्मानंवस्तिवेदना। स्वेदेवृद्धेतुदौर्गन्ध्यंत्वचिकण्डूश्चजायते॥ आर्तवातिप्रवृत्तिःस्याद्दौर्गन्ध्यश्चार्त्तवेभवेत्। अंगमर्दश्चजायेतलिंगस्यादार्त्तवेऽधिके॥ स्तनयोरतिपीनत्वंक्षीरस्रावोमुहुर्मुहुः। तोदश्चतत्रभवतिस्तन्याधिक्यस्यलक्षणम्॥ उदरादिप्रवृद्धिस्तुवृद्धेगर्भेऽभिजायते। स्वेदश्चगर्भवत्याःस्यात्प्रसवेव्यसनंमहत्॥ २७॥

मांस बढ़नेपर कपोल ओष्ठ कूला लिंग जंघा भुजा और पिंडली की वृद्धि तथा शरीर में भारीपन होता है मेदबढ़नेपर उदर तथा पसलियोंमें वृद्धि खांसी श्वास आदिक रोग और शरीर में दुर्गन्धि तथा स्निग्धता होती है और भी कहागयाहै कि मेदबढ़नेपर थोड़ेसे काममें भी परिश्रम तृषा स्वेद गलगंड ओष्ठ रोग श्वास प्रमेहादिकरोग और कूला उदर ग्रीवा तथा दोनों स्तनों की वृद्धि यह सब लक्षण होते हैं हड्डियोंके बढ़नेपर हड्डीपरहड्डी निकलती हैं और दांत विकट तथा बड़े होजाते हैं मज्जाबढ़नेपर सम्पूर्ण शरीर और नेत्रों में भारीपन होता है वीर्य बढ़नेपर वीर्य्य की पथरी उत्पन्न होती है और वीर्य अधिक गिरता है मलकी वृद्धिहोनेपर उदर में गड़गड़ाहट और पीड़ा होती है मूत्र बढ़ने पर वारम्वार मूत्रका वेग आध्मान और मूत्राशय में पीड़ा होती है स्वेद बढ़नेपर शरीरमें दुर्गन्धि और त्वचा में खुजली होती है आर्त्तव के बढ़नेपर आर्तव का बहुत गिरना आर्तव में दुर्गन्धि और शरीर में पीड़ा होती है दुग्धबढ़नेपर दूध का वारम्वार बहना और स्तनों में बहुत मुटाई तथा पीड़ा होती है गर्भ के बढ़नेपर उदर की बहुत वृद्धि स्वेद और प्रसव कालमें अत्यन्त दुःख होताहै२७॥

अथातिवृद्धानां दोषाणां मलानांह्रासनमाह॥

तत्तद्ध्रासकराहारविहारपरिषेवणात्। दोषधातुमलानांहिह्रासोनिगदितोनृणाम्॥ पूर्वःपूर्वोऽतिवृद्धत्वाद्वर्द्धयेद्धिपरंपरम्। तस्मादतिप्रवृद्धानांधातूनांह्रसनंहितम्॥ २८॥

बहुत बढ़ेहुए दोष तथा मलोंके घटानेका उपाय॥

दोष धातु और मलके घटानेवाले आहार बिहारके सेवनसे इनकी क्षीणता होतीहै पहली २ धातुके बढ़नेसे पिछली २ धातुकी भी वृद्धि होती है इस्से बहुत बढ़ी हुई धातुओं का घटाना हितकारी है॥ २८॥ अथ दोषधातुमलानां क्षयस्यनिदानान्याह॥

असात्म्यान्नसदाक्रोधशोकचिन्ताभयश्रमैः। अतिव्यवायानशनात्यर्थसंशोधनैरपि॥ वेगानांधारणाच्चापिसाहसादभिघाततः। दोषाणामथधातूनांमलानाञ्चभवेत्क्षयः॥२९॥

दोषधातु और मलोंकेक्षयके निदान॥

विरुद्ध अन्न सदैव क्रोध शोक चिन्ता भय श्रम अत्यन्त मैथुन लंघन वमन आदिकी अधिकता मलमूत्रादि वेगोंकाधारण सहसाकर्म और चोट इन कारणोंसे दोषधातु और मलका क्षयहोताहै२९॥

तेषांक्षीणानां लक्षणान्याह॥

वातक्षयेऽल्पचेष्टत्वंमन्दवाक्त्वंविसंज्ञता। पित्तक्षयेऽधिकश्लेष्मावह्निमान्द्यंप्रभाक्षयः॥ सन्धयःशिथिलामूर्च्छारौक्ष्यन्दाहःकफक्षये। हृत्पीडाकण्ठशोषौत्वक्शून्यातृट्

रसक्षये॥शिराःश्लथाहिमाम्लेच्छात्वक्पारुष्यंक्षयेऽसृजः।गण्डोष्ठकन्धरास्कन्धवक्षो जठरसन्धिषु॥ उपस्थशोथपिण्डीषुशुष्कतागात्ररूक्षता। तोदोधमन्यःशिथिलाभवेयु मांससंक्षये॥ प्लीहाभिवृद्धिःसन्धीनांशून्यतातनुरूक्षता। प्रार्थनास्निग्धमांसस्यलिंग स्यान्मेदशःक्षये॥ अस्थिशूलन्तनोरौक्ष्यंनखदन्तत्रुटिस्तथा। अस्थिक्षयेलिंगमेतद्वैद्यैः सर्व्वैरुदाहृतम्॥ शुक्राल्पत्वंपर्वभेदस्तोदःशून्यत्वमस्थिनि। लिंगान्येतानिजायन्तेनरा णांमज्जसंक्षये॥ शुक्रक्षयेरतेशक्तिर्व्यथाशेफसिमुष्कयोः। चिरेणशुक्रसेकःस्यात्सेके रक्ताल्पशुक्रता॥ ३०॥

दोषादिकोंकी क्षीणताके लक्षण॥

वायुके क्षय होनेपर चेष्टाकी अल्पता वाक्यकी मन्दता और संज्ञाका न होना यह लक्षण होतेहैं पित्तके क्षयहोनेपर कफकी वृद्धि शरीरमें कान्तिका न होना और मन्दाग्नि होतीहै कफके क्षयहोनेपर सन्धियोंकी शिथिलता मूर्च्छा रूखापन और दाह होताहै रसके क्षय होनेपर हृदयमें पीड़ा गलेकासू खनात्वचाकी शून्यता और तृषा होतीहै रुधिरके क्षय होनेपर सिराओंकी शिथिलता शीतल तथाखट्टी वस्तुओं में इच्छा और त्वचामें रूक्षता होती है मांसके क्षयहोनेपर कपोल ओष्ठ ग्रीवा कन्धे छाती उदर संधि लिंग नितंब तथा पिंडलियों में सूखापन रूक्षता पीड़ा और नाड़ियोंमें शिथिलता होतीहै मेदके क्षय होनेसे प्लीहाकी वृद्धि संधियोंकी शून्यता शरीरमें रूक्षता और स्निग्ध वस्तु तथा मांसमें अभिलाष होतीहै हड्डियों के क्षय होनेपर हड्डियोंमें पीड़ा शरीर में रूक्षता और नख तथा दांतोंकी हानि होती है मज्जाके क्षयहोनेपर वीर्यकी अल्पता पोरुओं में पीड़ा शरीरमें सुइयांसी चुभना और हड्डियोंमें शून्यता होतीहै वीर्य्यके क्षयहोनेपर मैथुन करनेकी शक्तिका न होना लिंग तथा अंडकोशोंमें पीड़ा और बहुत देरमें थोड़ा वीर्य रुधिर समेत गिरना यह लक्षण होते हैं॥ ३०॥

अथौजःक्षयस्यनिदानमाह॥

ओजःसंक्षीयतेकोपाच्चिन्ताशोकश्रमादिभिः।रूक्षतीक्ष्णोष्णकटुकैःकर्षणैरपरैरपि ३१

ओजके क्षयका निदान॥

क्रोध चिंता शोक तथा श्रमादिकों से और रूखी तीक्ष्ण उष्ण कटु तथा अन्य कृशताकारक वस्तुओं से ओजका क्षय होताहै॥ ३१॥

अथ क्षीणोजसोलक्षणमाह॥

बिभेतिदुर्बलोऽभीक्ष्णञ्चिन्तयेद्व्यथितेन्द्रियः।अभ्युत्थायोन्मनारूक्षःक्षामःस्यादोजसः क्षये॥पुरीषस्यक्षयेपार्श्वेहृदयेचव्यथाभवेत्।सशब्दस्यानिलस्योर्द्ध्वंगमनंकुक्षिसंवृतिः॥ (उदरसङ्कोचः) मूत्रक्षयेऽल्पमूत्रत्वंवस्तौतोदश्चजायते। स्वेदनाशेत्वचोरौक्ष्यञ्चक्षुषोर पिरूक्षता॥स्तब्धाश्चरोमकूपाःस्युर्लिंगस्वेदक्षयेभवेत्।आर्त्तवस्यस्वकालेचाभावस्तस्या ल्पताथवा॥जायतेवेदनायोनौलिङ्गंस्यादार्त्तवक्षये॥अभावःस्वल्पतावास्यात्स्तन्यस्यभव तस्तथा॥ म्लानोपयोधरावेतल्लक्षणंस्तन्यसंक्षये॥ अनुन्नतोभवेत्कुक्षिगर्भस्यास्पन्दन न्तथा॥ इतिगर्भक्षयेप्राज्ञैर्लक्षणंसमुदाहृतम्॥ ३२॥

ओजके क्षयका लक्षण ॥

ओजके क्षयहोनेसे भय दुर्बलता निरन्तर चिंताकरना इन्द्रियोंमें पीड़ा बुरीछाया मनमें विकलता और शरीरमें रूखापन तथा कृशताहोती है मलके क्षयहोनेपर पसली तथा हृदयमें पीड़ा होती है और शब्द सहित वायु ऊपर जाताहै और उदरमें संकोच होता है मूत्रके क्षय होनेपर मूत्रकी अल्पता और मूत्राशय में पीडा होती है स्वेदके नाशहोनेपर स्वेदका नाश त्वचा तथा नेत्रोंकी रूक्षता और रोम कूप जकड़जातेहैं आर्त्तवके क्षयहोनेपर समयके अनुसार आर्तवका न निकलना अथवा स्वल्प निकलना और योनि में पीड़ा यह लक्षण होते हैं दुग्धके क्षयहोनेपर दूधकी स्वल्पता अथवा अभाव और स्तनों में संकोच होताहै गर्भके क्षयहोनेपर उदरकाउन्नत न होना और गर्भका नफड़कना यह लक्षणहोते हैं ॥ ३२ ॥ अक्षक्षीणानांधातुदोपमलानांवर्द्धनमाह ॥

तत्तत्संवर्द्धनाहारविहारातिनिषेवणात् ॥ तत्तत्प्राप्यनरःशीघ्रंतत्तत्क्षयमपोहति ॥
ओजस्तुवर्द्धतेनृणांसुस्निग्धैःस्वादुभिस्तथा ॥ वृष्यैरन्यैर्विशेषात्तुक्षीरमांसरसादिभिः ॥
(अन्यच्च)दोपधातुमलक्षीणोवलक्षीणोऽपिमानवः । तत्तत्संवर्द्धनंयत्तदन्नपानंप्रकांक्षते ॥
यद्यदाहारजातन्तुक्षीणःप्रार्थयतेनरः ॥ तस्यतस्यसलाभेनतत्तत्क्षयमपोहति ॥ ३३ ॥

क्षीण हुये धातु दोप तथा मलोंके वढ़ानेका उपाय ॥

दोपादिकों में से जो कोई क्षीणहुआहो उसके वढ़ानेवाले आहारविहारोंके अत्यन्त सेवनसे क्षीणताका नाशहोताहै स्निग्ध मधुर तथा वृष्य (कामियोंकाहित) वस्तु और दूध तथा मांसके रसादिकों के सेवनसे ओजकी वृद्धि होती है औरभी कहागया है कि दोप धातु मल और बल इनमें से जो कोई क्षीण होताहै उसी के वढ़ानेवाली वस्तु पर रोगी की इच्छाहोती है इस्से क्षीण पुरुप जिस २ पदार्थ की अभिलाषाकरे उसी २ वस्तुके सेवनसे क्षीणताका नाशहोता है ॥ ३३ ॥

तत्रकेनक्षीणःकिंकांक्षतीत्याकांक्षायामाह ॥

कषायकटुतिक्तानिरूक्षशीतलघूनिच॥यवमुद्गप्रियंगूश्चवातक्षीणोऽभिकांक्षति॥३४॥

किसकी क्षीणतामें किसपदार्थकी अभिलाषा होती है उसको कहते हैं ॥

वायुकी क्षीणताहोने पर कषैली कटु तिक्त रूखी शीतल तथा हलकी वस्तु यव मूंग और काकुनमें अभिलाप होताहै ॥ ३४ ॥

पित्तक्षीणःकिंकांक्षतीत्याकांक्षायामाह ॥

तिलमाषकुलत्थादिपिष्टान्नविकृतिन्तथा । यस्तुशुक्ताम्लतक्राणिकाञ्चिकञ्चतथा दधि ॥ कट्वम्ललवणोष्णानितीक्ष्णंक्रोधंविदाहिच । समयंदेशमुष्णञ्चपित्तक्षीणोऽभिकांक्षति ॥ ३५ ॥

पित्त क्षीणमें कौनसी वस्तुओंका अभिलाष होताहै उसको कहते हैं ॥

तिल उर्द कुलथी पीठीकी बनीहुई वस्तु दहीका तोड़ सिरका खट्टा मट्ठा कॉजी दही कटु अम्ल लवण तथा उष्ण वस्तुतीक्ष्ण तथा विदाही वस्तु क्रोध और उष्ण काल तथादेश इनसंपूर्ण वस्तुओंकी इच्छा पित्तक्षीण मनुष्य करताहै ॥ ३५ ॥

मधुरंस्निग्धशीतानिलवणाम्लगुरूणिच।दधिक्षीरंदिवास्वप्नंकफक्षीणोऽभिकांक्षति३६ ॥

जिस पुरुष का कफक्षीण होगयाहो वह मधुर स्निग्ध शीतल लवण अम्ल तथा भारीवस्तु दही दूध और दिनमें सोनेकी इच्छाकरताहै ॥ ३६ ॥

रसक्षीणोनरःकांक्षत्यम्भोऽतिशिशिरंमुहुः ।रात्रिनिद्रांहिमंचन्द्रंभोक्तुञ्चमधुरंरसम् ॥ इक्षुमांसरसंमन्थंमधुसर्पिगुडोदकम् । द्राक्षादाड़िमशुक्तानिसस्नेहलवणानिच ॥ रक्तसिद्धानिमांसानिरक्तक्षीणोऽभिकांक्षति । अन्नानिदधिसिद्धानिषाड़वांश्चबहूनपि ॥ स्थूलक्रव्यादमांसानिमांसक्षीणोऽभिकांक्षति । षाड़वामधुराम्लादिरससंयोगपाचिता गुडावप्रभृतयः ॥ मेदःसिद्धानिमांसानिग्राम्यानूपौदकानिच । साक्षाराणिविशेषेणमेदःक्षीणोऽभिकांक्षति ॥ अस्थिक्षीणस्तथामांसंमज्जास्थिस्नेहसंयुतम् । स्वाद्वम्लसंयुतंद्रव्यंमज्जाक्षीणोऽभिकांक्षति ॥ शिखिनःकुक्कुटस्याण्डंहंससारसयोस्तथा ॥ ग्राम्यानूपौदकानाञ्चशुक्रक्षीणोऽभिकांक्षति ॥ यवान्नंयवकान्नञ्चशाकानिविविधानिच । मसूरमाषयूषञ्चमलक्षीणोऽभिकांक्षति ॥ पेयमिक्षुरसंक्षीरंसगुडम्बदरोदकम् । मूत्रक्षीणोऽभिलषति त्रपुसैर्वारुकाणिच ॥ अभ्यंगोद्वर्त्तनेमद्यंनिवातशयनासने । गुरुप्रावरणंचैवस्वेदक्षीणोऽभिकांक्षति॥कट्वम्ललवणोष्णानिविदाहीनिगुरूणिच । फलशाकानिपानानिस्त्रीकांक्षत्यार्त्तवक्षये ॥ सुराशाल्यान्नमांसानिगोक्षीरंशर्करांतथा । आसवंदधिहृद्यानिस्तन्यक्षीणोऽभिवाञ्छति ॥ मृगाजाविवराहोरोणांगर्भान्वाञ्छतिसंस्कृतान् । वसाशूल्यप्रकारादीन्भोक्तुंगर्भपरिक्षये ॥ ३७ ॥

रस क्षीण मनुष्य वारंवार शीतल जल रात्रि में निद्रा हिम चाँदनी मधुररस ईख मांसरस मन्थ सहत घी और गुड़ का शर्बत इन वस्तुओं की अभिलाषा करताहै रक्त क्षीण मनुष्य दाख अनार मक्खन स्नेहयुक्त लवण और रुधिर में पका हुआ मांस इन वस्तुओं की अभिलाषा करताहै मांस क्षीण पुरुष दही के साथ बनेहुए अन्न षाड़व (मधुर तथा खट्टे आदि रसोंको मिलाकर जो वस्तु परिपाक की जातीहै उसको षाड़व कहतेहैं) और स्थूल तथा मांसखाने वाले पशुओं के मांस की इच्छा करताहै मेद क्षीण पुरुष मेदके साथ परिपाकहुए ग्रामीण तथा जल के जीवोंके मांस क्षारसहित चाहना करताहै अस्थिक्षीण पुरुष मज्जा अस्थि तथा स्नेहयुक्त मांस की इच्छा करताहै मज्जा क्षीण पुरुष मधुर तथा खट्टी वस्तुओं की अभिलाषा करताहै वीर्य क्षीण पुरुष मोर मुर्गा हंस तथा सारस के अंडे और ग्राम अनूप देश तथा जल के जीवों के मांस की अभिलाषा करताहै मल क्षीण पुरुष जो छोटेजो अनेक प्रकार के शाक और मसूर तथा उर्द की दालका यूष इनवस्तुओं की अभिलाषा करताहै मूत्र क्षीण मनुष्य ईखकारस दूध गुड़ युक्त वेरकापन्ना खीरा और ककड़ी इन वस्तुओं की अभिलाषा करताहै स्वेद क्षीण मनुष्य तैलमर्दन उबटना मद्य वातरहित स्थानमें शयन करना तथा बैठना और भारी ओढ़ना इन वस्तुओं की इच्छा करताहै आर्त्त व क्षीण स्त्री कटु अम्ल लवण उष्ण विदाही तथा भारीवस्तु फलशाक और जलकी अभिलाषा करती है दुग्धक्षीणस्त्री मद्य चावल मांस गौकादूध शर्करा आसव दही और हृदय के हितकारी वस्तु ओंको चाहतीहै गर्भक्षीणस्त्री मृगी बकरी भेड़तथा शूकरी के पकाये हुए गर्भ चरबी और शल्य (कवाव) आदिक अनेक प्रकार की वस्तुओंके भोजन करनेकी इच्छा करतीहै ॥ ३७ ॥

अथ वललक्षणमाहुसुश्रुतमते ॥

रसादिशुक्रपर्य्यन्तंपुष्टधातुनिमित्तकम्। चेष्टासुपाटवंयत्तत्र्वलंतदभिधीयते ॥ ३८॥

सुश्रुतमें कहाहुआ वलका लक्षण ॥

रसकोआदि लेकर वीर्य पर्यन्त धातुओंकी पुष्टता के कारण जो कार्य में सामर्थ्य होती है उसको वलकहते हैं ॥ ३८॥

अथ वलस्यक्षयनिदानमाह ॥

अभिघाताद्भयात्क्रोधाच्चिंतयाचपरिश्रमात् । धातूनांसंक्षयाच्छोकाद्वलंसंक्षीयते नृणाम् ॥ ३९ ॥

वलक्षयका निदान ॥

चोट भयक्रोध चिन्ता परिश्रम धातुक्षय और शोक इनकारणोंसे मनुष्योंका वलक्षीण होताहै३९॥

अथवलक्षयस्यलक्षणम् ॥

गौरवंस्तब्धतागात्रेमुखम्लानिर्विवर्णता ॥तन्द्रानिद्रावातशोथोवलव्यापत्तिलक्षणं ४०

वलक्षयकालक्षण ॥

शरीर में भारीपन तथा स्तब्धता मुखमें म्लानता वर्णका विगड़ना तंद्रा निद्राकी अधिकता और वात की सूजन यह वलक्षय के लक्षणहैं ॥४० ॥

अथवलवृद्धिनिदानमाह ॥

दोषसाम्यकरंयत्तुवह्निसाम्यकरञ्चयत् ॥ धातुपुष्टिकरंद्रव्यंबलन्तदभिवर्द्धयेत्॥४१ ॥

वलवृद्धि का निदान ॥

जिन वस्तुओं के द्वारा दोषतथा अग्निकी समता और धातुओंकी पुष्टता होती है उन्हीं के द्वारा वलकी वृद्धि होतीहै ॥ ४१ ॥

अथवलावललक्षणमाह ॥

कृशोऽपिवलवान्कश्चित्स्थूलोऽप्यल्पवलीयतः ॥ तस्माच्चेष्टापटुत्वेनवलवन्तंविदुर्बुधाः ॥४२ ॥

इतिश्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचिते
भावप्रकाशेषष्ठप्रकरणंसम्पूर्णम् ॥

वलावलका लक्षण ॥

कोई कृशहोकर भी वलवान् और कोई स्थूल होकर भी थोड़े वलवाला होता है इससे कार्य्य में सामर्थ्य देखकर वलावलका निश्चय करना चाहिये ॥ ४२ ॥

इतिश्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचितभावप्रकाशस्यभाषानुवादेषष्ठःप्रकरणंसम्पूर्णम् ॥

इतिप्रथमखण्डः समाप्तः ॥

शारीर, गर्भावक्रांति शारीर, गर्भव्याकरण शारीर, शरीर संख्या व्याकरण शारीर, प्रत्येक कर्म निर्देश शारीर, सिरावर्णन विभक्ति शारीर, सिराव्यधि विधि शारीर, धमनी व्याकरण शारीर, गर्भिणी व्याकरण शारीर का वर्णन, द्विव्रणीय, सद्योव्रण, भग्नरोग, वात व्याधि महावातव्याधि, ववासीर, पथरी, भगंदर, कुष्ठ, महाकुष्ठ, प्रमेह, मधुप्रमेह, पेटरोग, मूढ गर्भ, विद्रधि, विसर्प, नाड़ी, स्तनरोग, ग्रन्थि, अपची, अर्बुद, गलगंडरोग, वृद्धि, उपदंश, फीलपांव, छोटे २ रोग, शूकरोग, मुखरोग, शोफरोग और नपुंसकता इनसब रोगोंकी उत्तमोत्तम चिकित्सा वर्णितहै और वमन और जुलाव किनरोगोंमें योग्यहै तिसका वर्णन, स्थावर और जंगम विषकी चिकित्सा, नेत्र, कर्ण, नासा, और शिरोरोगकी चिकित्सा, रेवतीग्रह पूतनाग्रह इत्यादि ग्रहों की चिकित्सा, ज्वर, अतीसार, राजरोग, वायुगोला, हृदयके रोग, पांडुरोग, रक्त पित्त, मूर्च्छा औरसम्पूर्ण मदों की चिकित्सा, प्यास, वमन, हिचकी, दमा, खांसी स्वरभेद, कृमिरोग, उदावर्त्त, हैजा, अरुचि, मूत्रदोष, मृगी रोग और उन्माद इत्यादि रोगोंकी चिकित्सा उत्तमोत्तम काढ़े चूर्ण गोली तेल और घी इत्यादिके द्वारा वर्णन की गई है जिसको जिलारोहतक मौजे बेरी ग्राम निवासि पण्डित रविदत्तवैद्यने मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के खर्चसे प्रत्यक्षरका भाषा में उल्था कियाहै और उन्नाम प्रदेशान्तर्गत तारगांव निवासि पण्डित रामविहारी सुकुल ने कठिन शब्दों का कोष और अकारादि सूचीपत्र और साधारण सूचीपत्र रचना कर विभूषित कियाहै यह पुस्तक अवश्य प्रत्येक मनुष्यके देखने के योग्यहै इससे सम्पूर्ण चिकित्साका कामहोसक्ता है ॥

निघण्टरत्नाकर भाषा

जिसमें सम्पूर्ण ज्वर, सम्पूर्ण अतीसार, संग्रहणी ववासीर, अजीर्ण, हैजा, अलस विलम्बिका कृमिरोग, पांडुकामला, हलीमक, रक्तपित्त, राजरोग, शोषरोग, खांसीरोग, हिचकीरोग, श्वासरोग स्वरभेद रोग, अरोचकरोग, छर्दिरोग, तृषा रोग, मूर्च्छा, मोह, भ्रम, तन्द्रा, निद्रा, संन्यास, मदात्ययरोग, दाहरोग, उन्मादरोग, भूतादिक के उन्मादका, तंत्रमंत्र डाकिनी साकिनी निवारणोपायप्रत्यक्ष हाजरायतयंत्र, मिरगी रोग, सम्पूर्ण वातव्याधि, अल्पकेशीकी चिकित्सा, ऊरुस्तम्भरोग, आमवात पित्तव्याधि, कफव्याधि, वातरक्तरोग, शूल रोग, उदावर्त्त, आनाह रोग, गुल्मरोग, यकृत्प्लीहारोग हृद्रोग, मूत्रकृच्छ्ररोग, मूत्राघात, पथरी, प्रमेह, पेटकेरोग, दुर्बलता, सूजन, अंडवृद्धि, बदरोग, गलगंड, फीलपांव, विद्रधि, घाव, अग्निदग्ध, भग्नरोग, नसूर, भगंदर, आतशक, शूकरोग, कुष्ठ, अम्लपित्त, विस्फोटक अर्थात् शीतला, फिरंगरोग, छोटे २ रोग, शिर, नेत्र, कान और मुंहके रोग, स्थावर जंगम विषरोग, स्त्रियोंके प्रदर आदि सब रोग, बालकों के रोग और नपुंसकताकी उत्तमोत्तम काढ़े चूर्ण, गोली, रस, तेल और घी इत्यादि के द्वारा वर्णन कीगई है इसका भी जिला रोहतक मौजे बेरी ग्राम निवासि पण्डित रविदत्त वैद्यने मुंशी नवलकिशोर (सी आई, ई) के खर्च से अक्षरशः का भाषामें उल्था कियाहै यह पुस्तक भी अवश्य देखने योग्यहै क्योंकि इसी एक पुस्तकसे चिकित्सा का पूरा २ काम निकल सक्ता है ॥

शार्ङ्गधरसंहिता भाषा टीका सहित॥

जिसमें सुश्रुत चरक आदि वैद्यकके सवग्रन्थों से सारी ज्वर, अतीसार, संग्रहणी, ववासीर, अजीर्ण हैजा, कृमिरोग, पांडुरोग, रक्त पित्त, राजरोग, खांसी, हिचकी, दमा, स्वरभेद, अरुचि, वमन, प्यास, मूर्च्छा, दाहरोग, उन्मादरोग, मृगीरोग, वातव्याधि, शूलरोग, गुल्मरोग, हृदयकेरोग, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, पथरी, प्रमेह, पेटके रोग, सूजन, अंडवृद्धि, बदरोग- फीलपांव, गलगंड- व्रणरोग, अग्निदग्ध

शारीर, गर्भावक्रांति शारीर, गर्भव्याकरण शारीर, शरीर संख्या व्याकरण शारीर, प्रत्येक कर्म निर्देश शारीर, सिरावर्णन विभक्ति शारीर, सिराव्यधि विधि शारीर, धमनी व्याकरण शारीर, गर्भिणी व्याकरण शारीर का वर्णन, द्विव्रणीय, सद्योव्रण, भग्नरोग, वात व्याधि महावात-व्याधि, बवासीर, पथरी, भगंदर, कुष्ठ, महाकुष्ठ, प्रमेह, मधुप्रमेह, पेटरोग, मूढ़ गर्भ, विद्रधि, विसर्प, नाड़ी, स्तनरोग, ग्रन्थि, अपची, अर्बुद, गलगंडरोग, वृद्धि, उपदंश, फीलपांव, छोटे २ रोग, शूकरोग, मुखरोग, शोफरोग और नपुंसकता इनसब रोगोंकी उत्तमोत्तम चिकित्सा वर्णितहै और वमन और जुलाब किनरोगोंमें योग्यहै तिसका वर्णन, स्थावर और जंगम विषकी चिकित्सा, नेत्र, कर्ण, नासा, और शिरोरोगकी चिकित्सा, रेवतीग्रह पूतनाग्रह इत्यादि ग्रहों की चिकित्सा, ज्वर, अतीसार, राजरोग, वायुगोला, हृदयके रोग, पांडुरोग, रक्त पित्त, मूर्छा औरसम्पूर्ण मदों की चिकित्सा, प्यास, वमन, हिचकी, दमा, खांसी स्वरभेद, कृमिरोग, उदावर्त्त, हैजा, अरुचि, मूत्रदोष, मृगी रोग और उन्माद इत्यादि रोगोंकी चिकित्सा उत्तमोत्तम काढ़े चूर्ण गोली तेल और घी इत्यादिके द्वारा वर्णन की गई है जिसको जिलारोहतक मौजे बेरी ग्राम निवासि पण्डित रविदत्तवैद्यने मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के खर्चसे प्रत्यक्षरका भाषा में उल्था कियाहै और उन्नाम प्रदेशान्तर्गत तारगांव निवासि पण्डित रामविहारी सुकुल ने कठिन शब्दों का कोष और अकारादि सूचीपत्र और साधारण सूचीपत्र रचना कर विभूषित कियाहै यह पुस्तक अवश्य प्रत्येक मनुष्यके देखने के योग्यहै इससे सम्पूर्ण चिकित्साका कामहोसका है ॥

निघण्टरत्नाकर भाषा

जिसमें सम्पूर्ण ज्वर, सम्पूर्ण अतीसार, संग्रहणी बवासीर, अजीर्ण, हैजा, अलस विलम्बिका, कृमिरोग, पांडुकामला, हलीमक, रक्तपित्त, राजरोग, शोषरोग, खांसीरोग, हिचकीरोग, श्वासरोग-स्वरभेद रोग, अरोचकरोग, छर्दिरोग, तृषा रोग, मूर्छा, मोह, भ्रम, तन्द्रा, निद्रा, संन्यास, मदात्ययरोग, दाहरोग, उन्मादरोग, भूतादिक के उन्मादका, तंत्रमंत्र डाकिनी साकिनी निवारणोपायप्रत्यक्ष हाजरापतयंत्र, मिरगी रोग, सम्पूर्ण वातव्याधि, अपतंत्रकी चिकित्सा, ऊरुस्तम्भरोग, आमवात पित्तव्याधि, कफव्याधि, वातरक्तरोग, शूल रोग, उदावर्त्त, आनाह रोग, गुल्मरोग, पेटतृल्लीहरोग, हृद्रोग, मूत्रकृच्छ्ररोग, मूत्राघात, पथरी, प्रमेह, पेटकेरोग, दुर्बलता, सूजन, अंडवृद्धि, बदरोग, गलगंड, फीलपांव, विद्रधि, घाव, अग्निदग्ध, भग्नरोग, नसूर, भगंदर, आतशक, शूकरोग, कुष्ठ, अम्लपित्त, विस्फोटक अर्थात् शीतला, फिरंगरोग, छोटे २ रोग, शिर, नेत्र, कान और मुंहके रोग, स्थावर-जंगम विषरोग, स्त्रियोंके प्रदर आदि सब रोग, बालकों के रोग और नपुंसकताकी उत्तमोत्तम काढ़े, चूर्ण, गोली, रस, तेल और घी इत्यादि के द्वारा वर्णन कीगई है इसका भी जिला रोहतक मौजे बेरी ग्राम निवासि पण्डित रविदत्त वैद्यने मुंशी नवलकिशोर (सी आई ई) के खर्च से अक्षर २ का भाषामें उल्था कियाहै यह पुस्तक भी अवश्य देखने योग्यहै क्योंकि इसी एक पुस्तकसे चिकित्सा का पूरा २ काम निकल सकाहै ॥

शार्ङ्गधरसंहिता भाषा टीका सहित॥

जिसमें सुश्रुत चरक आदि वैद्यकग्रन्थ सबग्रन्थों के मतसे ज्वर, अतीसार, संग्रहणी, बवासीर, अजीर्ण हैजा, कृमिरोग, पांडुरोग, रक्त पित्त, राजरोग, खांसी, हिचकी, दमा, स्वरभेद, अरुचि, वमन, प्यास, मूर्छा, दाहरोग, उन्मादरोग, मृगीरोग, वातव्याधि, शूलरोग, गुल्मरोग, हृदयकेरोग, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, पथरी, प्रमेह, पेटके रोग, सूजन, अंडवृद्धि, बदरोग, फीलपांव, गलगंड, व्रणरोग, अग्निदग्ध,

भावप्रकाश सटीक के मध्यखण्ड के

प्रथम भाग का सूचीपत्र ॥

मध्यखण्ड ॥ द्वितीयोभागः ॥



भावप्रकाशे मध्यखण्डः ॥

तत्रादौज्वराधिकारमाह ॥

यतःसमस्तरोगाणांज्वरोराजेतिविश्रुतः।अतोज्वराधिकारोऽत्रप्रथमंलिख्यतेमया॥ १ ॥

भावप्रकाश मध्यखण्ड ॥

ज्वराधिकार ॥

ज्वर सम्पूर्ण रोगों का राजा कहागया है इसलिये मैं प्रथम ज्वराधिकार को लिखताहूं ॥ १ ॥

तत्रज्वरस्यप्रथममुत्पत्तिमाहसुश्रुतः ॥

दक्षापमानसंक्रुद्धरुद्रनिःश्वाससम्भवः।ज्वरोऽष्टधापृथग्द्वन्द्वसङ्घातागन्तुजःस्मृतः॥ अस्यायमर्थः। दक्षकर्तृकोयोऽपमानस्तेनसंक्रुद्धोयोरुद्रस्तस्ययोनिःश्वासस्तस्मात्संभव उत्पत्तिर्यस्यसज्वरः। क्रुद्धरुद्रनिःश्वाससम्भूतत्वेनज्वरःस्वभावात्पैत्तिकइतिबोध्यते। य तउक्तंचरकेण। क्रोधात्पित्तमित्यादितेनसर्वज्वरेषुपित्तोपशमनकारिणीचिकित्साकर्त्तव्या अतएववाग्भटः। ऊष्मापित्तादृतेनास्तिज्वरोनास्त्यूष्मणाविना। तस्मात्पित्तविरुद्धानि त्यजेत्पित्ताधिकेऽधिकम्॥ २ ॥

सुश्रुतकी कही हुई ज्वरकी उत्पत्ति ॥

दक्षके अपमानसे क्रुद्ध होकर श्रीशिवजी महाराजने जो श्वास छोड़ाहै उससे ज्वर उत्पन्न हुआ है वह ज्वर पृथक् द्वन्द्व सन्निपात और आगन्तुक भेदसे आठ प्रकार का है क्रोध युक्त शिवजीके श्वास के द्वारा उत्पन्न होनेके कारण ज्वर स्वभावही से पैत्तिक होताहै क्योंकि चरक ने भी कहाहै कि क्रोध से पित्त उत्पन्न होताहै इत्यादि इसलिये सम्पूर्ण ज्वरों में पित्तके शान्त करने वाली चिकित्साकरनी चाहिये इसी से वाग्भट ने भी कहाहै कि पित्तके विना ऊष्मा नहीं होती और ऊष्माके विना ज्वर नहीं होता इसलिये संपूर्ण ज्वरों में पित्त विरुद्धवस्तुओं को त्यागकरदे और अधिक पित्त वाले ज्वर में अधिक त्याग करदे ॥ २ ॥

अधिकमिति। रुद्रसभूतत्वेनज्वरस्यदेवतात्मकत्वात्पूजार्हत्वंचोपदर्शितम् अतएव वयदेहः। ज्वरःसंपूजनैर्वापिसहसैवोपशाम्यतीति ॥ ३ ॥

ज्वर शिवजीसे उत्पन्न हुआहै इसलिये देवतात्मकहै इसीसे पूजन के योग्य कहा गयाहै वैदेह ने भी कहाहै कि ज्वर पूजनके द्वारा शीघ्र शान्त होजाता है ॥ ३ ॥

मूर्तिरप्यस्योक्तासुश्रुतेन।

रुद्रकोपाग्निसम्भूतःसर्वभूतप्रतापनः। त्रिपाद्भस्मप्रहरणस्त्रिशिराःसुमहोदरःव्याघ्रचर्मवसनःकपिलोमाल्यविग्रहः॥ पिङ्गेक्षणोह्रस्वजङ्घोवीभत्स्योबलवान्महान्॥ पुरुषोलोकनाशार्थमसौज्वरइतिस्थितः। तैस्तैर्नामभिरन्येषांसत्वानांपरिकीर्त्यते॥ जन्मादौनिधनेचैवप्रायेविशतिदेहिनाम्। ऋतेदेवमनुष्याभ्यांनान्योविसहतेहितम्॥ ४ ॥

सुश्रुतमें कही हुई ज्वरकी मूर्ति ॥

शिवजी की क्रोधाग्नि से उत्पन्न हुआ ज्वर सब प्राणियों को संताप देनेवालाहै ज्वरके तीन पैर तीन शिर बड़ाउदर व्याघ्र के चर्मका ओढ़ना कपिल वर्ण मालाधारी पिंगलवर्ण नेत्र और छोटी पिंडली होती हैं बुरी आकृति वाला बड़ाबलवान् पुरुष लोक के नाश करने के लिये स्थित रहता है यह ज्वर अन्य अन्य प्राणियों के शरीरमें प्रविष्टहुआ अन २ नामों से कहा जाताहै जैसे हाथियों का पालक घोड़ोंका अभिताप इत्यादि जन्मके आदिमें और मृत्युके समय ज्वर प्रायःप्राणियोंके शरीर में प्रविष्ट होताहै देवता और मनुष्यों को छोड़कर और कोईप्राणी ज्वरको नहीं सहसकाहै४॥

तस्यज्वरस्यसंख्यारूपांसम्प्राप्तिमाह॥

ज्वरोऽष्टधेतिअष्टत्वंविवृणोति पृथगितिवातिकःपैत्तिकःश्लेष्मिकश्चेतित्रयः द्वन्द्वजास्त्रय.वातपैत्तिकःवातश्लेष्मिकःपित्तश्लेष्मिकश्चेतिसंघातजःसान्निपातिकएकः। युल्वणैकोल्वणैः षट्स्युर्हीनमध्याधिकैश्चषट्। समश्चैकोविकारास्तेसन्निपातास्त्रयोदश॥ इतिचरके॥ त्रयोदशसन्निपाता उक्तास्तेयथावातोल्वण.पित्तोल्वण। कफोल्वणः। वात पित्तोल्वणः। वातश्लेष्मोल्वणः। पित्तश्लेष्मोल्वणः। एवंषट्। अधिकवातोमध्यपित्तोहीनकफः। अधिकवातोमध्यकफोहीनपित्तः। अधिककफोमध्यपित्तोहीनवात अधिककफोमध्यवातोहीनकफःअधिकपित्तो मध्यकफोहीनवातःअधिकपित्तोमध्यवातोहीनकफश्चेतिषट्। उल्वणएकःएवंत्रयोदश। अत्रतुत्रिदोषजत्वेनसाम्यात्सान्निपातिकएकःएवंगणितः॥ ५ ॥ ज्वरकी संख्यारूप संप्राप्ति कही जाती है ॥

ज्वर आठ प्रकारका है जैसे पृथक् अर्थात् वातका पित्तका और कफका इन तीन प्रकारकाहै द्वंद्वजतीन प्रकार का है जैसे वात पित्तका वात कफका और पित्तकफका एक सन्निपातका धरकने कहा है कि दो दोष उल्वण (बढ़ेहुए) तथा एकदोष उल्वण होने से छः प्रकार काहै दोषोंकी हीनता मध्यता और अधिकता से छःप्रकार काहै और दोषों की समतासे एक प्रकारकाहै इस प्रकार सन्निपात तेरह प्रकार का है जैसे वातोल्वण पित्तोल्वण कफोल्वण वात पित्तोल्वण वातश्लेष्मोल्वण तथा पित्तश्लेष्मोल्वण इन छः प्रकारोंका होताहै और अधिक वात मध्यपित्त हीन कफ अधिक वात

मध्य कफहीन पित्त अधिक कफ मध्यपित्तहीन वात अधिक कफ मध्य वातहीन पित्त अधिक पित्त मध्य कफ हीन वात अधिक पित्त मध्य बात हीन कफ इन छःप्रकारोंका होताहै और तीनों दोषोंकी वृद्धि वाला एक इस प्रकार से तेरह सन्निपात होते हैं परन्तु यहाँ तो सन्निपात त्रिदोप से उत्पन्न होताहै इस समता को लेकर एकही गिनागयाहै ॥ ५ ॥

आगन्तुजइति । अत्रागन्तुशब्देनाभिघातादयोहेतवउच्यन्ते कुत्रचिद्व्याधयः कार्य्यकारणयोरभेदोपचारात्आगन्तुजाअभिघाताद्यनेककारणयोगादनेकेभवन्ति । तथाप्यागन्तुजत्वेनसाम्यादागन्तुकोऽप्यत्रैकएवगणितः । नत्वागन्तुजेऽपिज्वरेवातादिलक्षणदर्शनादागन्तुजःकथंदोषजाद्भिन्नः । उच्यते,उत्तरकालंदोषोत्पत्तेतथाचचरके । आगन्तुर्हिव्यथापूर्वंजायतेपश्चाद्भिन्नैर्दोषैरनुबध्यतइति ॥ ६ ॥

यहां आगन्तु शब्द से चोट आदिक कारण लिये जाते हैं और कहींपर कार्य्य कारण के अभेदको माननेसे व्याधिभी आगन्तु कहीजाती हैं आगन्तुज ज्वर चोट आदिक अनेक कारणोंके होनेसे अनेक होते हैं परन्तु आगन्तुजपने की समतासे आगन्तुक ज्वर भी यहां एकही गिनागयाहै अब यह सन्देह होता है कि आगन्तुक ज्वरमें भी वातादिकों के लक्षण दिखाई देते हैं तो आगन्तुज दोपजसे कैसे अलग होसका है इसका उत्तर यहहै कि आगन्तुकरोगमें दोषों का कोपपीछे होता है और ऐसाही चरक में भी कहा है कि आगन्तुज ज्वर पहले चोट आदिकों से उत्पन्न होता है और पीछेसे भिन्न २ दोषों करके युक्त होता है ॥ ६ ॥

अथज्वरस्यविप्रकृष्टकारणकथनपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥

मिथ्याहारविहाराभ्यांदोषाह्यामाशयाश्रयाः । बहिर्निरस्यकोष्टाग्निंज्वरदाःस्युरसानुगाः ॥ मिथ्याहारविहाराभ्यां अनुचिताहारचेष्टाभ्यां हेतुभूताभ्यांदोषः वातपित्तकफाः आमाशयाश्रयाःआमाशयंगतारसानुगाःरसदूषकाः बहिर्निरस्यकोष्टाग्निंकोष्टगताग्नेरूष्माणं । नतुसमस्तमग्निंतदादोषपाकासम्भवःस्यात् । बहि प्रक्षिप्यज्वरदाःस्यु ज्वरकारिणोभवेयुरित्यर्थः ७ ॥

ज्वर के समीपी कारण के कथन पूर्वक संप्राप्तिको कहते हैं

अनुचित आहार विहार के द्वारा आमाशयमें गयेहुए वातपित्त कफ रसको दूपितकरतेहुए कोष्ठाग्नि को बाहर निकालके (कोष्ठमें प्राप्त अग्नि की ऊष्मा को न कि सम्पूर्ण अग्निको क्योंकि सम्पूर्ण अग्नि के निकलने से दोषों का परिपाक होना असम्भव होजायगा) ज्वरको उत्पन्न करते हैं ॥ ७ ॥

अथज्वरस्यसामान्यविशिष्टंचपूर्वरूपमाह ।

श्रमोऽरतिर्विवर्णत्वंवैरस्यंनयनप्लवः । इच्छाद्वेषौमुहुश्चापिशीतवातातपादिषु॥जृम्भाङ्गमर्दोगुरुतारोमहर्षोऽरुचिस्तमः । अप्रहर्षश्चशीतञ्चभवन्त्युत्पत्स्यतिज्वरे ॥ सामान्यतोविशेषात्तुजृम्भात्यर्थंसमीरणात् । पित्तान्नयनयोर्दाहःकफान्नानाभिनन्दनम् ॥ श्रमोव्यापारंविनैवअरतिरस्वस्थचित्तत्वंविवर्णत्वंम्लानगात्रता । वैरस्यंमुखस्याऽप्रकृतरसता । नयनप्लवःनयनयोरश्रुपूर्णत्वम् । शीतवातातपादिषुमुहुरिच्छाद्वेषौआदिशब्दाज्ज्वलनेज

लेच। यतउक्तंचरकेण। ज्वलनातपवातेपुभक्तिद्वेपावानिश्चिताविति। शयनादिष्वित्यन्ये अंगमर्दोऽगमोटनम्। गुरुतागात्रस्य। रोमहर्षःरोमाञ्चताअरुचिर्भोज्ये। तमःतमोमग्नस्येवज्ञानम्। अप्रहर्षःहर्षाभावः। शीतंलगतिचकाराद्बलहानिः। उपदेशद्वेपादयोऽपिभवन्ति। तृतीयश्लोकस्थम्सामान्य इतिपूर्वश्लोकाभ्यांसम्बन्धनीयः। तेनसामान्यतोज्वरेउत्पत्स्यतिभविष्यतिश्रमादयःपूर्वमेवभवंतीत्यर्थः। उत्पत्स्यतीत्यात्मनेपदिमोपिशतृंङ्भावआर्षत्वात्विशेषात्उच्यते। समीरणात्ज्वरेउत्पत्स्यतिअतिशयेनजृम्भाभवति। पित्तज्वरेउत्पत्स्यतिअत्यर्थंनयनयोर्दाहोभवति। कफज्वरेउत्पत्स्यतिअत्यर्थंननाभिनन्दनमअन्नाकाङ्क्षानभवति। जृम्भादयोभवन्तियतःसामान्यधर्माक्रांतोविशिष्टोधर्मोभवति ८॥

ज्वरका सामान्य और विशिष्ट पूर्वरूप॥

परिश्रम के विना कियेहुये श्रम मालूम होना चित्तकी व्यग्रता का होना अंगों का मलिन होना मुखका विरस होना नेत्रोंसे आंसूबहना शीत वायु तथा आतप आदिकमें (आदि शब्द से अग्नि और जल लेना चाहिये क्योंकि चरक में कहाहुआ है कि अग्नि धूप तथा वायु में कभी इच्छा होय कभी अनिच्छा और कोई कहते हैं कि आदि शब्द से शयन आदिकोंका ग्रहण होता है) वारम्वार इच्छा तथा अनिच्छा का होना अंगों में पीड़ा शरीरमें भारीपन जमुहाई रोमांच भोजन में अरुचि अन्धेरे मेदवाह आसा मालूम होना हर्षकानहोना निर्मलता उपदेश न मानना और जाड़ा लगना सामान्यता से यह सम्पूर्ण लक्षण जब ज्वर उत्पन्न होनेवाला होताहै तब होते हैं बहुत जमुहाइयों के द्वारा वातज अत्यन्त नेत्रों में दाह होने से पित्तज और अन्न में अत्यन्त अरुचि से कफ ज्वर उत्पन्न होने वाला है यह जानलेना चाहिये यह विशेष लक्षण हैं॥ ८॥

द्वन्द्वजपूर्वरूपमाह॥

रूपैरन्यतराभ्यांतुसंसृष्टैर्द्वन्द्वजंविदुः॥अन्यतराभ्यांजृम्भानेत्रदाहाभ्याम्। जृम्भान्नारुचिभ्यांनेत्रदाहान्नारुचिभ्यांवासंसृष्टैरूपैःश्रमादिभिर्द्वन्द्वजंद्विदोपजंपूर्वरूपंविदुः९॥

द्वन्द्वज का पूर्वरूप॥

दो दोषों के मिलेहुये लक्षणों से द्वन्द्वज ज्वर का पूर्व रूप जानना चाहिये श्रम आदिक सामान्य पूर्व रूपों करके सहित जमुहाई तथा नेत्रों में दाह के द्वारा वात पित्तज जमुहाई तथा अन्न में अरुचि के द्वारा वात कफज और नेत्रोंमें दाह तथा अन्न में अरुचि के द्वारा पित्तकफ ज्वर होने वाला जानना चाहिये॥ ९॥

त्रिदोपजपूर्व्वरूपमाह।

सर्वलिंगसमवायःसर्व्वदोपप्रकोपजे। सर्व्वरूपजेसर्व्वरूपेसर्व्वलिङ्गसमवायः अतिशयितजृम्भानेत्रदाहान्नारुचिसहितानांश्रमादीनांसमवायोभवति॥ १०॥

त्रिदोष ज्वर का पूर्वरूप

अत्यन्त जमुहाई नेत्रोंमें दाह तथा अन्नमें अरुचि इन विशेष लक्षणोंसे युक्त श्रम आदिक सब सामान्य लक्षणों के होनेपर त्रिदोष ज्वर का पूर्व्वरूप जानना चाहिये॥ १०॥

अथज्वरस्यसामान्यलक्षणमाह ।

स्वेदावरोधःसन्तापःसर्वांगग्रहणन्तथा । युगपद्यत्ररोगेतुसज्वरोव्युपदिश्यते ॥ तापइतिवक्तव्येसन्तापाभिधानंदेहेन्द्रियमनसांसन्तापबोधनार्थं । यतउक्तंचरकेणज्वर विशेषणंदेहेन्द्रियमनस्तापीति । तत्रदेहसन्तापोदेहेन्द्रियोष्णता । इन्द्रियसन्तापइन्द्रि यतापवैकृत्यंमनःसन्तापवैचित्यलक्षणम् । यतउक्तं । इन्द्रियाणांतुवैकृत्यंयत्रसन्तापल क्षणम् । वैचित्यमरतिर्ग्लानिर्मनःसन्तापलक्षणमिति ॥ सर्वांगग्रहणम् । सर्वेषामं गानांवेदनयाग्रहणंसर्वाण्यङ्गानिस्तम्भनगृहीतानीववाभवन्तियुगपदिति । मिलितमे तल्लक्षणम् । प्रत्येकस्यव्यभिचारात् । यथास्वेदावरोधः । कुष्ठंपूर्वरूपे । तथासंतापो दाहव्याधौ । तथासर्वांगग्रहणंसर्वांगरोगाख्यवातव्याधौ ११ ॥

ज्वरका सामान्य लक्षण ॥

जिस रोगमें पसीनेका रुकना संताप सबशरीर में पीड़ा यह सब लक्षण इकट्ठे होतेहैं उसको ज्वर कहते हैं यहाँ तापके स्थान में संताप कहने से देहइन्द्री तथा मनका ताप ग्रहण किया जाता है क्योंकि चरकने देह इन्द्री तथा मनमें तापवाला यह ज्वरकाविशेषण कहाहै देह सन्ताप अर्थात् देह की इन्द्रियोंकी उष्णता इन्द्रिय सन्ताप अर्थात् इन्द्रियोंमें तापरूप विकार और मनका संताप अर्थात् चित्तकी विकलता और ऐसाही कहाभीहै कि इन्द्रियोंके विकारको इन्द्रिय संताप और असावधानता किसी बातमें चित्तका न लगना तथा ग्लानिको मनका संताप कहतेहैं यह सब लक्षण इकट्ठे होंय न कि अलग अलग होने से अन्यरोगों के लक्षण होते हैं जैसे पसीनेका रुकना कुष्ठके पूर्व्वरूप में संताप दाह रोगमें और संपूर्ण अंगमें पीड़ा सर्वांग नाम वातरोगमें होतीहै ॥ ११ ॥

प्रस्वेदानिर्गमनपक्षेकारणमाह ॥

रुणद्धिचाप्यपांधातून्यस्मात्तस्माज्ज्वरातुरः । भवत्यत्युष्णगात्रश्चनस्विद्यतेनचस र्वशः ॥ यस्माज्ज्वरोऽत्रभवतिसर्वशःस्विद्यतेचन १२॥

पसीनेके न निकलनेका कारण ॥

ज्वरातुर मनुष्यकी जल संबंधी धातुओंके रुकनेसे शरीर अत्यन्त उष्ण होजाताहै और सब शरीरमें पसीना नहीं निकलताहै ज्वर होनेके कारणसेही स्वेदका रुकना होता है ॥ १२ ॥

अथसामान्यतोज्वरस्याचिकित्सामाह ॥

अंशांशंयत्रदोषाणांविवक्तुंनैवशक्नुयात् । साधारणींक्रियांतत्रविदधात्तुचिकित्सकः ॥ सामान्यतोज्वरीपूर्वंनिर्वातेनिलयेवसेत् । निर्वातमायुषोवृद्धिमारोग्यंकुरुतेयतः ॥ व्यज नस्यानिलस्तृष्णास्वेदमूर्च्छाश्रमापहः । तालवेत्रभवोवातस्त्रिदोषशमनोमतः ॥ वंशव्य जनजःसोष्णोरक्तपित्तप्रकोपनः । चामरोवस्त्रसम्भूतोमायूरोवेत्रजस्तथा ॥ एतेदोषजि तावाताःस्निग्धाहृद्याःसुपूजिताः । नवज्वरीभवेद्यत्नाद्गुरूष्णावसनावृतः ॥ यथर्तुपक्वपा नीयंपिबेत्तत्किंचिन्निवारयन् १३ ॥

ज्वरकी सामान्य चिकित्सा ॥

जहाँ वातादिक दोषोंके अंश अलग २ न किये जासकें तहाँ वैद्यको साधारण चिकित्सा करना चाहिये सामान्यतासे ज्वरवाला मनुष्य प्रथम वायु रहित स्थान में रहै क्योंकि वायु रहित स्थान आयुवर्द्धक और आरोग्यकारी होताहै पंखेकी वायु तृषा स्वेद मूर्च्छा तथा श्रम नाशक ताड़के पंखे की वायु त्रिदोष नाशक बांसके पंखेकी वायु उष्ण तथा रक्तपित्तकारी चमर वस्त्र मोरके पंख तथा बेंतके पंखेकी वायु त्रिदोष नाशक स्निग्ध हृदयकोहित और अत्यन्त उपकारी होती है नवीनज्वर वाला मनुष्य भारी तथा गरम वस्त्रको ओढ़रहै और जिसऋतुमें जैसे लिखाहो उसीप्रकार परिपाकहुए जलको कुछ ठहर २ कर थोडा २ पिये ॥ १३ ॥

विनापिभेषजैर्व्याधिःपथ्यादेवनिवर्त्तते ॥ नतुपथ्यविहीनस्यभेषजानांशतैरपि । ततो ज्वरेवर्ज्जनीयान्याहसुश्रुतः ॥ परिषेकान्प्रदेहांश्चस्नेहान्संशोधनानिच । दिवास्वप्नं व्यवायश्चव्यायामंशिशिरंजलम् ॥ क्रोधप्रवातभोज्यांश्चवर्ज्जयेत्तरुणज्वरी । परिषेकः स्नानादिः,प्रदेहोऽनुलेपनाभ्यङ्गादिः ॥ स्नेहान् । पानैर्निषिद्धानि ॥ १४ ॥

औषधोंके विना केवल पथ्यहीसे रोग निवृत्त होजाताहै परन्तु पथ्यके विना सैकड़ों औषधोंसेभी रोग नहीं निवृत्त होता है इसलिये सुश्रुतमें कहेहुये नवीनज्वरमें त्यागकरनेके योग्य वस्तु वर्णनकी जातीहै तरुणज्वरमें स्नानादिक लेप तथा तैल मर्दनादिक पीनेमें निषिद्ध स्नेह शोधक औषधकदिन में निद्रा मैथुन व्यायाम शीतलजल क्रोध अत्यन्त वायु और भोजन करनेके पदार्थ इन सबको त्याग करदे ॥ १४ ॥

निषेधाद्दोषमाह ॥

शोषंछर्द्दिमदंमूर्च्छांभ्रमंतृष्णामरोचकम् । प्राप्नोत्युपद्रवानेतान्परिषेकादिसेवनात्॥ आदिशब्देनप्रदेहादयोगृह्यन्ते । हारीतेनप्रत्येकदूषणमुक्तञ्च ॥ व्यायामाज्ज्वरसंवृद्धिर्व्यवायात्स्तम्भमूर्च्छनम् । मृतिश्चस्नेहपानाद्यैर्मूर्च्छाच्छर्दिर्म्मदोऽरुचिः॥ गुर्वन्नभोजनात्स्वप्नाद्विष्टम्भोदोषकोपनम् । अग्निसादःखरत्वञ्चस्रोतसांचप्रवर्त्तनम्॥ मृतिरितिव्यवायादित्यत्रसम्बध्यते । स्वप्नात्दिवास्वापात् ॥ १५ ॥

इनके सेवनकरने में दोष ॥

स्नानादिकों के सेवनसे शोष छर्दि मद मूर्च्छा भ्रम तृषा तथा अरुचि यह संपूर्ण उपद्रव पैदा होतेहैं आदि शब्द से लेपादिकों का ग्रहण कियाजाताहै हारीतने इन सबके अलग अलग दोषवर्णन कियेहैं व्यायामसे ज्वरकी वृद्धि मैथुनसे स्तंभ मूर्च्छा तथा मृत्यु स्नेह पान करनेसे मूर्च्छा छर्दि मद तथा अरुचि होतीहै और भारी अन्न के भोजन तथा दिन के सोने से विष्टंभ दोषोंका कोप मंदाग्नि शरीर में कठोरता और श्रोतोंका रुकना होताहै ॥ १५ ॥

अन्यच्चवर्ज्जयेत् । सज्वरोज्वरमुक्तोवाविदाहीनिगुरूणिच ॥ असात्म्यान्नानिपानानिविरुद्धाध्यशनानिच । व्यायाममतिचेष्टांवाऽभ्यङ्गंस्नानंचवर्ज्जयेत् ॥ तेनज्वरःशमंयातिशान्तश्चनपुनर्भवेत ॥ १६ ॥

ज्वरमुक्त अथवा ज्वर से छुटाहुआ मनुष्य विदाहीतथा भारी वस्तु अहित अन्न तथा पान विरुद्ध

भोजन व्यायाम बहुत कामकरना तैलमर्दन और स्नान इनसबको त्यागदे इससे ज्वर शान्त होता है और शान्तहुआ ज्वर फिर नहीं होता है ॥ १६ ॥

ज्वरीलङ्घनंकुर्य्यादित्याहचरकोवाग्भटश्च । आमाशयस्थोहत्वाग्निसामोमार्गान्पिधापयन् ॥ विदधातिज्वरंदोषस्तस्माल्लङ्घनमाचरेत् । यथा । ज्वरादौलङ्घनंप्रोक्तं ज्वरमध्येतुपाचनम् ॥ ज्वरान्तेभेषजंदद्याज्ज्वरमुक्तेविरेचनम् । त्रिविधंत्रिविधेदोषेतत्समीक्ष्यप्रयोजयेत् ॥ दोषेऽपिलङ्घनंपथ्यं मध्येलङ्घनपाचनम् । प्रभूतेशोधनंतच्चमूलादुन्मूलयेन्मलान् ॥ चक्रदत्तश्च । नरुणंतुज्वरंपूर्वंलङ्घनेनक्षयंनयेत् ॥ आमदोषमलिंगाद्वा लङ्घयेन्नयथाविधि ॥ १७ ॥

ज्वरमें लंघन करनाचाहिये यह चरक और वाग्भटने कहाहै जैसे कि आम सहितदोष आमाशय में स्थित हुआ अग्नि को मन्द करके स्रोतों को ढककर ज्वर को उत्पन्न करताहै इसलिये लंघन करना चाहिये ज्वर के आदिमें लंघन मध्य में पाचन और अन्त में औषध ज्वरके छूटजाने पर विरेचन देना चाहिये तीन प्रकार के दोषों में यह सब तीन प्रकार से विचार करना चाहिये दोषके कम होने पर लंघन मध्यदोषमें लंघन तथा पाचन और बहुत बढ़ेहुए दोषमें शोधन करना चाहिये क्योंकि शोधन के द्वारा दोष जड़ से नष्टहोजातेहैं चक्र दत्तने कहा है कि नवीन ज्वर में लंघन देकर आम दोषकोनष्टकरना चाहिये और जो उसके लक्षणनमालूम पड़ैंतोभी विधिपूर्वक लंघनदेनाचाहिये १७॥

अन्यच्च ॥

वातःपचातिसप्ताहात्पित्तंतुदशभिर्दिनैः । श्लेष्मद्वादशभिर्घस्रैःपच्यतेवदतांवर ॥ लङ्घनंलङ्घनीयस्तुकुर्य्याद्दोषानुरूपतः । त्रिरात्रमेकरात्रंचाऽहोरात्रमथवाज्वरे ॥ निर्वातसेवनात्स्वेदाल्लङ्घनादुष्णवारिणः । पानादामज्वरेक्षीणेपश्चादौषधमाचरेत् ॥ १८ ॥

अन्यप्रकार ॥

सातदिनमें वायु दश दिनमें पित्त और बारह दिनमें कफ परिपाक को प्राप्त होताहै लंघनके योग्य मनुष्य दोषों के अनुसार ज्वर में तीन रात्रि एकरात्रि अथवा एक रात्रि दिन लंघनकरे वायु रहित स्थान में रहनेसे स्वेद से लंघन से और उष्ण जल के पान से आमज्वर के क्षीण होने पर पीछे से औषधि देनी चाहिये ॥ १८ ॥

(आत्रेयेणोक्तम्) ज्वरादौलङ्घनंप्रोक्तंज्वरममध्येतुपाचनम् । ज्वरान्तेभेषजंदद्याज्ज्वरमुक्तेविरेचनम् ॥ दोषशेषस्यपाकार्थमग्नेःसन्धुक्षणायच । लङ्घितश्चाप्यदोषश्चेद्यवागूपानमाचरेत् ॥ शालिषाष्टिकमुद्गानांयूषंवाशस्तमाचरेत् । पञ्चकोलेनसंसिद्धांयवागूंमध्यलङ्घने ॥ अत्यर्थलङ्घितंदृष्ट्वातस्यसंतर्पणंहितम् । द्राक्षादाडिमखर्ज्जूरपियालैःसपरूषकैः ॥ तर्पणार्हस्यकर्त्तव्यन्तर्पणंज्वरशान्तये ॥ १९ ॥

आत्रेयजीने कहाहै कि ज्वरके आदि में लंघन ज्वरके मध्यमें पाचन ज्वरके अन्तमें औषध और ज्वरके छूटजाने पर विरेचन देनाचाहिये लंघनकिये हुए मनुष्यको शेष दोषों के परिपाक के लिये और अग्निको प्रज्वलितकरने केलिये शालि तथा साठीके चांवलोंकी यवागू अथवा मूंगका यूष पिलावे मध्यमलंघन युक्त पुरुषको पंचकोलसे बनीहुई यवागूपानकरावे और अत्यन्त लंघनयुक्त पुरुषको

संतर्पण हितकारीहै दाख अनार खजूर चिरौंजी और फालसे के द्वारा संतर्पण के योग्य पुरुषको ज्वर की शांतिके लिये संतर्पण देनाचाहिये ॥ १६ ॥

अत्रलङ्घनशब्देनानशनमुच्यते । (यतआहसुश्रुतः) आनद्धस्तिमितैर्दोषैर्यावन्तं कालमातुरः । तावत्वनशनंकुर्य्यात्ततःसंसर्गमाचरेत् ॥ आनद्धस्तिमितैर्दोषैःसम्बद्धः(संसर्गऔषधान्नादिप्रसङ्गम् (यतआहचरकः) चतुःप्रकारा संशुद्धि पिपासामारुतातपौ । पाचनान्युपवासश्चव्यायामश्चेतिलङ्घनम् ॥ चतुःप्रकाराःसंशुद्धिर्वमनञ्चविरेचनम् । निरूहवास्तिशिरोविरेचनानि । नत्वनुवासनंतस्यबृंहणत्वात् । अत्रलङ्घनंकर्षणमित्यर्थः। (तथाचसुश्रुतः) शरीरलाघवकरंयद्द्रव्यंकर्म्मवापुनः । तंलङ्घनमितिज्ञेयंबृंहणंतुपृथग्विधम् ॥ लङ्घनकर्षणादन्यत्शरीरपोषकमित्यर्थः ॥ २० ॥

यहां लंघन शब्द से अनाहार लेनाचाहिये क्योंकि सुश्रुत में कहाहैकि जबतक रोगी संबद्धदोषों से युक्तहै तबतक उपवासकराना चाहिये पीछे औषध और आहारका सेवनकरे चरकने कहाहै किचार प्रकार की संशुद्धि तृपा वायु धूप पाचन उपवासऔर व्यायाम इनसबको लंघन (कृशकरना) कहते हैं चारप्रकारकी संशुद्धि अर्थात् वमन विरेचन निरूहवस्ति और शिरका विरेचन यहां अनुवासन का ग्रहण नहीं होताक्योंकि वह धातुवर्द्धक है और ऐसाही सुश्रुतने कहा है कि जो द्रव्य अथवा कार्य्य शरीरको हलकाकरने वाला होता है उसको लंघनकहते हैं और बृंहण इससे पृथक् अर्थात् कर्षणसे विपरीत शरीरका पुष्टकरने वाला होताहै ॥ २० ॥

ननुआनद्धस्तिमितैर्दोषैरित्यादिपूर्वोक्तसुश्रुतवचनात्सामान्यतोज्वरिणोयथा ऽनशनरूपंलङ्घनंक्रियते । तथाचतु प्रकारासंशुद्धिः इत्यादि चरकवचनाद्वमनादिरूपंलङ्घनंसर्व्वैर्ज्वरिभिःकथंनक्रियते । तत्रोच्यतेवमनादिकमवस्थाविशेषेपुक्रियतेनतुसर्व्वज्वरेषु (तथाचसुश्रुतः) सोत्क्लेशेबलिनेदेयंवमनंश्लेष्मिकज्वरे । पित्तप्रायेविरेकस्तुकार्य्यःप्रशिथिलाशये ॥ सरुजेऽनिरुजेकार्य्यंसौदावर्त्तेनिरूहणम् । कफाभिपन्नेशिरसिकार्य्यमूर्ध्वविरेचनं ॥ २१ ॥

अबयह सन्देह होताहै कि [आनद्धस्तिमितै दोषैः]इत्यादि पूर्वोक्त सुश्रुत के वचनकेद्वारा सामान्यतासे ज्वरयुक्त मनुष्य जैसे उपवासरूप लंघन करतेहैं उसी प्रकार[चतुःप्रकारा संशुद्धिः] इत्यादि चरकके वचनसे व मनादिरूप लंघन सपूर्ण ज्वरवाले क्योंनहीं करते इसकाउत्तर यहहै कि व मनादिक अवस्था के अनुसार दियेजातेहैं संपूर्ण ज्वरवालोंको नहीं और ऐसाही सुश्रुत ने कहाहै कि मतली युक्त बलवान् मनुष्य को कफ ज्वर में वमन पित्तकी अधिकता तथा आशयकी शिथिलतामें विरेचन पीड़ायुक्त अथवा पीड़ा रहित उदावर्त्त समेत ज्वरमें निरूहण और शिरमें कफ भरेहोने पर शिरका विरेचन देनाचाहिये ॥ २१ ॥

अपिच । सर्व्वज्वरिभिःपिपासाविग्रहश्चनकार्य्यं (यतआहहारीतः)तृष्णागरीयसी घोरासद्यःप्राणविनाशिनी । तस्माद्देयंतृषार्त्तायपानीयंप्राणधारणम् ॥ अतोऽवस्थाविशेषेएवपिपासासहनंज्वरिभिमारुतसेवनंचकार्य्यं । सुश्रुतेनप्रवातसेवनस्यसर्व्वथानिषिद्ध

त्वात् । अतोमारुतसेवनमप्यवस्थाविशेषएवउक्तम् । आतपसेवनंचावस्थाविशेषेएव युक्तम् ॥ २२ ॥

संपूर्णज्वरोंमें तृषाका रोकना अनुचितहै क्योंकि हारीतने कहाहै कितृषा अत्यन्तभयंकर और शीघ्रही प्राणोंकी नाशकरने वाली होतीहै इसलिये तृषासे व्याकुल मनुष्य को प्राणों के धारण करने के लिये जल देना चाहिये इसीसे अवस्था के अनुसार तृषा का रोकना और वायुका सेवन ज्वर वालों को उचितहै क्योंकि सुश्रुत ने वायुके सेवनका सब प्रकारसे निषेध किया है इसीलिये वायुका सेवन अवस्था विशेषमेंही कहा गयाहै और धूप का सेवनभी अवस्था विशेषही में योग्यहै ॥ २२ ॥

लङ्घनाम्बुयवागूभिर्य्यदादोषोनपच्यते । तदातुमुखवैरस्यं तृष्णारोचकनाशनैः । ज्वरघ्नैःपाचनैर्हृद्यैःकषायैःसमुपाचरेत् ॥ इत्यत्रलङ्घनपाचनयोःस्फुटएवभेदः । व्यायामोऽपिनकार्य्यस्तस्यातिनिषिद्धत्वात् । अवस्थाविशेषेपुनःपार्श्वपरिवर्त्तनादिरूपःसोऽपिकर्त्तव्यःतस्माच्चतुःप्रकाराःसंशुद्धिरित्यादिश्लोकेलङ्घनपदंकर्षणपर्य्यायमितिनिर्णीतं॥ २३॥

लंघन जल तथा यवागू के द्वारा दोष का परिपाक न होय तो मुखकी विरसता तृषा तथा अरुचि नाशक ज्वरघ्न पाचन और हृदयको हित कषायों के द्वारा वैद्यको चिकित्सा करनी चाहिये। यहां लंघन और पाचन का भेद स्फुट (प्रकट) है ज्वर में व्यायाम भी न करने चाहिये क्योंकि इसका अत्यन्त निषेधहै परन्तु अवस्था विशेष में करवट लेना आदिक व्यायाम करना चाहिये इससे (चतुः प्रकारा संशुद्धिः) इत्यादि श्लोक में लंघन शब्द कर्षणवाची है यह निश्चय हुआ ॥ २३ ॥

अनशनरूपस्यलङ्घनस्यफलमाह ॥

लङ्घनेनक्षयंनीतेदोषेसन्धुक्षितेऽनले । विज्वरत्वंलघुत्वंचक्षुच्चैवास्योपजायते ॥ लङ्घनेनअनशनेनदोषेप्रवृद्धेक्षयंनीते । यतआह । आहारंपचतिशिखीदोषाहारवर्ज्जितःपचतीतिसन्धुक्षितेऽनलेआच्छादकदोषेक्षीणे ऽग्नौप्रदीप्तेयथोक्तसम्प्राप्तिसामग्रीविघटनात् विज्वरत्वंशरीरस्यगौरवाभावेनलघुत्वम् । क्षुतबुभुक्षाचजायतेइत्यर्थः ॥ २४ ॥

अनाहाररूप लंघन का फल ॥

लंघन के द्वारा दोषों के क्षय होनेपर और अग्नि के दीप्त होनेपर ज्वर का नाश शरीर में हलकापन और क्षुधाहोतीहै और ऐसाही कहागयाहै कि अग्नि आहारको परिपाक करतीहै और आहार के अभाव में दोषों का परिपाक करती है अर्थात् अग्नि के द्वारा इसके ढकने वाले दोषों के क्षीण होजाने से अग्नि दीप्त होनेपर पहली कहीहुयी सम्प्राप्ति की सामिग्री का नाश होताहै इसीसे ज्वर चलाजाता है शरीर में हलकापन और क्षुधा उत्पन्न होती है ॥ २४ ॥

अन्यच्चाहसुश्रुतः । अनवस्थितदोषाग्नेर्लङ्घनंदीपपाचनम् । ज्वरघ्नंदीपनंकांक्षारुचिलाघवकारकम् ॥ अनवस्थितदोषाग्नेःस्वस्थानादितस्ततोगतोदोषोअग्निश्चयस्यज्वरिणः काङ्क्षाअन्नाभिलाषःरुचिःलङ्घनेनामपाकान्मुखशोषादिनाशेमुखस्ययत्प्रकृतत्वं सैवरुचिःशोभारुचिःस्त्रीदीप्तिशोभायामभीष्टार्थाभिलाषयोरितिमेदिनीकारः ॥ २५ ॥

सुश्रुतने और भी कहाहै कि जिसके दोष तथा अग्नि अपने स्थानसे इधर उधर चले जातह

उस ज्वरवाले को लंघनदोषों का पचाने वाला ज्वरघ्न अन्नमें रुचि नामके परि पाक होने से मुखके सूखने आदिको नाशकरके शोभा करने वाला और शरीरको हलका करने वाला होताहै ॥ २५ ॥

सम्यक्कृतस्यलंघनस्यलक्षणमाह ॥

वातमूत्रपुरीषाणांविसर्गेगात्रलाघवे । हृदयोद्गारकण्ठास्यशुद्धौतन्द्राक्लमेगते ॥ स्वेदेजातेऽरुचौचापिक्षुत्पिपासासहोदये । कृतंलंघनमादेश्यं निर्व्यथेचान्तरात्मनि ॥ हृदयस्यशुद्धिरनवरोधः। उद्गारशुद्धिःसधूमाम्लोद्गाराभावः कण्ठस्यप्रकृतरसत्वम्। तंद्राक्लमेतंद्राचक्लमश्चतस्मिंस्तंद्रानिद्राक्लमेऽत्रग्लानिःक्षुत्पिपासासहोदये। क्षुत्पिपासयोःसहयुगपदुदये। अन्तरात्मनिमनसि। एतानिलक्षणानिमिलितान्येवसम्यक्कृतलङ्घनंबोधयन्ति। नतुप्रत्येकम् ॥ २६ ॥ अच्छे प्रकारसे किये हुए लंघनके लक्षण ॥

अच्छे प्रकार लंघन किये जानेपर आगे कहेहुए संपूर्ण लक्षण इकट्ठे होते हैं वात मूत्र तथामल का निकलना शरीर में हलकापन हृदय की शुद्धता (हृदयका नरुकना) डकारकी शुद्धता (मधुर और खट्टी डकारका न आना) कंठकी शुद्धता (कंठमें कफलिपा हुआसानहोना) मुखकी शुद्धता (मुखमें स्वाभाविक रसका होना) तन्द्रा तथा ग्लानिका नाश क्षुधा और तृषाकी साथही उत्पत्ति स्वेद निकलना रुचिहोना और मनका प्रसन्न होना ॥ २६ ॥

हीनस्य लंघनस्यलक्षणमाह ॥

कफोत्क्लेशःसहृल्लासःष्ठीवनंचमुहुर्मुहुः । कण्ठस्यहृदयाशुद्धिस्तंद्रास्याद्धीनलंघने ॥ उपस्थितवमनत्वमिवकफोत्क्लेशः कफस्यवमनायोपस्थितिः । हृल्लासःष्ठीवनं हृदयात्कफनिर्गमः ॥ २७ ॥ हीन लंघन के लक्षण ॥

कफका उत्क्लेश (मानोंवमनहोना चाहतीहै) हृल्लास (मतली) बार बार हृदयसे कफकानिकलना कंठ तथा हृदयकी अशुद्धता और तन्द्रा यह हीनलंघनके लक्षणहैं ॥ २७ ॥

अतिशयितस्यलंघनस्यलक्षणमाह ॥

पर्वभेदोऽङ्गमर्दश्चकासःशोषोमुखस्यच । क्षुत्प्रणाशोऽरुचिस्तृष्णादौर्बल्यंश्रोत्रनेत्रयोः॥मनसःसंभ्रमोऽभीक्ष्णमूर्ध्ववातास्तमोहृदि।देहाग्निबलहानिश्चलंघनेऽतिकृतेभवेत्॥ अरतिर्बलहानिश्चलंघनेऽतिकृतेभवेत्। कर्णनेत्रयोःस्वंविषयग्रहणासामर्थ्यम्॥ मनसःसंभ्रमःभ्रांतिः। ऊर्ध्ववातःउद्गारबाहुल्यम्॥ हृदितमःअंधकारप्रविष्टस्येवज्ञानम्॥ २८ ॥

लंघनकी अधिकताके लक्षण ॥

लंघनकी अधिकता में आगे कहे हुए लक्षण होते हैं संधियोंका टूटना शरीरमें पीड़ा खांसी मुख का सूखना क्षुधा न लगना अरुचि तृषा कान तथा नेत्रों की शक्तिका घटना भ्रान्ति वारंवार डकार आना अंधकारमें घिराहुआसा मालूम होना और देह तथा अग्निके बलका नाश अथवा ग्लानितथा बलका नाश ॥ २८ ॥

बलरक्षणं लङ्घनंकारयेदित्याह ॥

बलाविरोधिनाचैनंलंघनेनोपपादयेत् । बलाधिष्ठानमारोग्यंयदर्थोऽयंक्रियाक्रमः ॥

अयमर्थः। एनंरोगिणंबलाविरोधिनाअनतिबलक्षयकारिणालंघनेनउपपादयेत्उपचरेत् कुतइतिचेत्तत्राह। यदर्थमस्मैआरोग्यायअयंक्रियाक्रमः॥ चिकित्सोपक्रमः। ततःआरोग्यंबलाधिष्ठानंबलाश्रयमित्यर्थः॥ २९ ॥

बल रक्षक लंघन कराना चाहिये इसको कहते हैं॥

रोगीको जिस्से बहुत बलका क्षय न होय ऐसा लंघन कराके चिकित्सा करनी चाहिये क्योंकि चिकित्सा आरोग्य के लिये हुआ करती है और आरोग्यका आशय बलहै ॥ २९ ॥

केषाञ्चिदनशनस्यनिषेधमाहसुश्रुतः। तद्भिमारुततृष्णाक्षुत्मुखशोषभ्रमान्वितैः॥ न कार्य्यंगुर्व्विणीबालवृद्धदुर्बलभीरुभिः॥नक्षयाध्वश्रमक्रोधकामशोषचिरज्वरी। तत्र अनशनं। उल्वणमारुतयुक्तेनज्वरिणानकार्य्यमारुतेऽत्रनिरामोबोद्धव्यः॥ सामेमारुतेलंघनंकार्यमेव। यतआहतंत्रान्तरे। अवश्यमेवकुर्वीतज्वरीसामेसमीरणे॥ लंघनंह्यामपाकार्थं नतदूर्ध्वंयथाकफे॥ तदूर्ध्वंआमपाकादूर्ध्वम्। अतएवोक्तम्। कफपित्तेद्रवेधातूसहेतेलंघनंबहु। आमक्षयादूर्ध्वमपिवायुर्नसहतेक्षणम्। लाघवात्॥ ३०॥

कुछेक रोगियोंके लंघनका निषेध सुश्रुत ने कहाहै॥

अधिक वायु तृषा क्षुधा मुखका सूखना तथा भ्रमसे युक्त गार्भिणी स्त्री बालक वृद्ध दुर्बल भय भीत और क्षय मार्गका श्रम क्रोध खांसी शोष तथा जीर्णज्वरसे युक्त इन सबको लंघन नहीं कराना चाहिये यहाँ वायु शब्द से आम रहित वायु लेनी चाहिये क्योंकि आमयुक्त वात में लंघन कराना उचितहै ऐसाहीतंत्रान्तरमें कहागयाहै कि ज्वरवाला आमयुक्त वातमें आमके परिपाकके लियेलंघन करे परन्तु कफके समान आमके परिपाक के उपरान्त लंघन न करे इसीसे कहागया है कि कफ और पित्त पतली धातुहैं यह आमके परिपाकके उपरान्त भी बहुत लंघनको सहसके हैं परन्तु वायु आमके परिपाकके उपरान्त क्षण भरभी लंघनको नहीं सहसक्ती॥ ३० ॥

आमस्यलक्षणमाह॥

आहारस्यरसःसारोयोनपक्वोऽग्निनाचसः। आमसंज्ञाञ्चलभतेबहुव्याधिसमाश्रयः॥ तन्त्रान्तरेतु। आममन्नरसंकेचित्केचित्तुमलसञ्चयम्। प्रथमंदोषदुष्टिंवाकेचिदामंप्रचक्षते॥ अविपक्वमसंशक्तंदुर्गंधंबहुपिच्छिलं। सादनंसर्वगात्राणामामइत्यामशब्दितः॥ तेनामेनसमायुक्ता दोषादूष्याश्चताद्दशाः। तदुद्भवाआमयाश्चसामइति बुधैःस्मृताः॥ ३१॥

आमकालक्षण॥

आहारका सारांश रस जोकि अग्निकेहलके पनेसे परिपाकको नहीं प्राप्तहोताहै वह आमकहलाता है इससे बहुतसे रोग होतेहैं तन्त्रान्तरमें कहागयाहै कि कोई २ पंडित अन्न के रसको कोई २ संचित मलको और कोई २ दोष के प्रथम विकारको आमकहते हैं परिपाक को नहीं प्राप्तहुआ विना मिला हुआ दुर्गन्धि युक्त बहुत चिकना और संपूर्ण शरीरको पीड़ा देनेवाला आमकहलाताहै आमयुक्त दोष (वात पित्त कफ) तथा दूष्य (रस रुधिर मांस मेद अस्थि मज्जा और वीर्य) और आमजनित रोग साम कहलातेहैं॥३१॥

तत्रसामस्यवातस्यलक्षणमाह ॥

वायु.सामोविबन्धाग्निःसादतंद्रांत्रकूजनैः । वेदनाशोथनिस्तोदैःक्रमशोऽङ्गानिपीडयेत् ॥ विचरेद्युगपच्चापिगृह्णातिकुपितोभृशम् । स्नेहाद्यैर्वृद्धिमायातिमेघ.सूर्य्योदयेनिशि ॥ विचरेदयुगपत्वायुरामश्चैककालंविचरेत्तुकुपितःसामोवायुः । भृशमतिशयेनगृह्णात्यङ्गानीत्यर्थः ॥ ३२ ॥

आमयुक्त वातके लक्षण ॥

आम युक्त वात विबन्ध मंदाग्नि तन्द्रा आंतोंमें गुड़गुड़ाशब्द सूजन और सुईगडने के समान क्रमसे संपूर्ण शरीरमें पीड़ाकरती है कुपित आमयुक्त वात आमके साथ इकट्ठी संपूर्णशरीरमें विचरती हुई सर्वांगोंको ग्रहण करती है और स्नेहादिकों से मेघोंके आगमन में सूर्य्य के उदयमें तथा रात्रिमें वृद्धिको प्राप्तहोती है ॥ ३२ ॥

वातस्यतस्यैवनिरामस्यलक्षणमाह ॥

निरामोविशदोरूक्षोनिर्गन्धोऽत्यल्पवेदनः।विपरीतगुणैःशांतिःस्निग्धैर्जातिविशेषतः ३३

आमरहित वात के लक्षण ॥

आमरहित वात विशद रूखी गन्धरहित और थोड़ी पीड़ावाली होती है और विपरीत गुणोंसे और विशेषकरके स्निग्ध वस्तुओं से इसकी शान्ति होतीहै ॥ ३३ ॥

अथप्रसङ्गात्सामस्यपित्तस्यलक्षणमाह ।

पित्तंसामंभवेदम्लंदुर्गंधंहरितंगुरु । अम्लिकाकण्ठहृद्दाहकरंश्यावंतथास्थिरम् ॥ अम्लिकाअम्बिलस्तुचुकीतिलोके ॥ ३४ ॥

प्रसंग से आम सहित पित्तके लक्षण ॥

आम सहित पित्त खट्टा दुर्गन्धियुक हरा भारी खट्टीडकार लाने वाला कण्ठ तथा हृदयमें दाह करने वाला धूम्रवर्ण और स्थिर होता है ॥ ३४ ॥

पित्तस्यतस्यनिरामस्यलक्षणमाह ।

निरामंपित्तमाताम्रमत्युष्णंकटुकंसरम् । दुर्गन्धिरुचिकृद्वह्निबलवर्द्धनमीरितम् ३५ ॥

आमरहित पित्तके लक्षण ॥

आमरहित पित्त ताम्रवर्ण अत्यन्तउष्ण कटुदस्तावर दुर्गन्धियुक्त रुचिकारक और अग्निके बलको बढ़ाने वाला होताहै ॥ ३५ ॥ अथ सामकफस्यलक्षणमाह ॥

आलस्यतन्द्राहृदयाविशुद्धिर्दोषाप्रवृत्त्याविलमूत्रताभिः । गुरूदरत्वारुचिसुप्ततामि रामान्वितंव्याधिमुदाहरन्ति ॥ आमक्षयेल्लङ्घनकोष्णपेयालघ्वन्नसूपौदनतिक्तयूषैः । विरूक्षणस्वेदनपाचनैश्चसंशोधनैरूर्द्ध्वमधस्तथैव।तद्दिमारुतत्तृष्णायांलङ्घनंकार्य्यमेवच । तथामुखशोषभ्रमावपिनिरामावेवविवक्षितौसामयोस्तुतयोर्लङ्घनंकार्य्यमेवगुर्विणीबालवृद्धादिभिरपिनिरामैरेवनैवलङ्घनंकार्य्यंसामैःपुनस्तैरपिलङ्घनंकार्य्यमेव । क्षयेधातुक्षयेराजयक्ष्माचवातजेज्वरे ॥ ३६ ॥

आमसहित कफ के लक्षण ॥

आमसहित कफ से आलस्य तन्द्रा हृदय में शुद्धता का न होना दोषों न निकलना गँदला मूत्र होना उदरका भारी होना अरुचि और निद्रा अधिकहोतीहै लंघन कुछ उष्णपेया हलकाअन्न दाल भात तिक्तयूष रूखास्वेद पाचन और ऊपर तथा नीचे का शोधन इनसबसे आम का नाश करना चाहिये मुखका सूखना और भ्रम यहजब आमरहित मनुष्य में होयँ तो लंघन न करावे और जो आम सहित होंय तो करावे गर्भिणीस्त्री बालक और वृद्धादिक जो आमरहित होंतो लंघन न करें और आम सहित होयँ तो यह भी लंघन करें ॥३६ ॥

लङ्घनंनकार्य्यंज्वरीलङ्घनेऽपिजलंपिवेदित्याहसुश्रुतः । तृषितोमोहमायातिमोहात्प्राणान्विमुञ्चति । अतःसर्व्वास्ववस्थासुनक्वचिद्वारिवर्ज्जयेत् । हारीतेनोक्तम् । तृष्णागरीयसीघोरासद्यःप्राणविनाशिनी।तस्माद्देयंतृषार्त्तायपानीयंप्राणधारणम्। अवश्यंपेयमपिजलंज्वरीकिञ्चिद्वारयन्पिवेत् । यतआहसुश्रुतएव। जीवनंजीविनंजीवोजगत्सर्व्वन्तुतन्मयम् । अतोऽत्यन्तनिषेधेननक्वचिद्वारिवारयेत् ॥ जीवनंजलंकिंचित्तुवारयेदेव । तथाच ज्वरेनेत्रामयेकुष्ठेमन्देऽग्नावुदरेतथा। अरोचकेप्रतिश्यायेप्रसेकेश्वयथौक्षये ॥ व्रणेचमधुमेहेचपानीयंमन्दमाचरेत् । मुखप्रसेकेअल्पंपिवेत् मन्दमाचरेत्पिवेत् ॥ यतआह । अतियोगेनसलिलंतृषितोऽपि प्रयोजितम्प्रयातिश्लेष्मपित्तत्वंज्वरितस्यविशेषतः ॥ ३७॥

ज्वरवाला लंघन में भी जलपिये यह सुश्रुतने कहाहै कि प्यासा जल न मिलनेसे मोह को प्राप्त होताहै और मोह से प्राणों को त्याग करताहै इसलिये किसी अवस्थामें भी जलपान निषेध नहीं है हारीतने कहाहै कि तृषा अत्यन्त भयंकर और शीघ्रही प्राणकी नाश करनेवाली होती है इसलिये प्राणों के धारण करने के निमित्त प्यासे को जल देना चाहिये यद्यपि जलपीना अवश्य है तथापि ज्वर वाला कुछ रुक रुक कर जल पिये क्योंकि सुश्रुत ने हीं कहाहै कि जल जीवों काजीवनहै और संपूर्ण संसार जलमयहै इसलिये जलका अत्यन्त निषेध कहींभी न करना चाहिये अर्थात् कुछनिषेध करना चाहिये और ऐसा कहागयाहै कि ज्वर नेत्ररोग कुष्ठ मंदाग्नि उदर अरुचि जुकाम मुखसेपानी छूटना सूजन क्षय घाव और मधुप्रमेह इनरोगों में बहुत थोड़ा जलपीना चाहिये तृषा लगनेपर भी बहुत पिया हुआजल कफ और पित्त रूपहोजाताहै और विशेष करके ज्वरवाले को ॥ ३७ ॥

तद्यजलंनवज्वरीशीतलंनपिवेदित्याहसुश्रुतः । नवज्वरेप्रतिश्यायेपार्श्वशूलेगलग्रहे। सद्यःशुद्धौतथाध्मानेव्याधौवातकफोद्भवे ॥ अरुचिग्रहणीगुल्मश्वासकासेषुविद्रधौ । हिक्कायांस्नेहपानेचशीतंवारिविवर्ज्जयेत् (अन्यच्चसएव) सेव्यमानेनशीतेनज्वरस्तोयेनवर्द्धते। अत्रशीतंजलंअक्वथितंनिषिद्धम् । तथासतिक्वथितमायातम् ॥ ३८ ॥

नवीन ज्वरवाला शीतल जल न पिये यह सुश्रुत ने कहाहै कि नवीन ज्वर जुकाम पसली की पीड़ा गलेका रोग जिसको शीघ्रही वमन विरेचनादि दिये गयेहों आध्मान (अफरा) वात तथा कफके रोग अरुचि ग्रहणी गुल्म श्वास खांसी विद्रधि हिचकी और स्नेहपान इन संपूर्ण बातों में शीतलजल वर्जित है और भी सुश्रुतहीने कहाहै कि शीतल जल पीनेसे ज्वर बढ़ताहै यहां शीतल जल बिन औटाया हुआ निषिद्धहै न कि औटायाहुआ ॥ ३८ ॥

तत्रक्वथितस्यविधिर्गुणश्च ॥

क्वाथ्यमानंतुनिर्वेगंनिष्फेनंनिर्म्मलंचयत्। तत्तोयंक्वथितंज्ञेयंदोषघ्नंपाचनंलघु॥ ३९ ॥

जलके क्वाथकीविधि और गुण ॥

अग्निमें धीरे२ औटायागया फेना रहित निर्मल जलको क्वाथ कियाहुआ जल कहतेहैं यह दोषघ्न पाचक और हलका होताहै ॥ ३९ ॥

निर्वेगंशनैःक्वथितस्यविधानमाहसुश्रुतः ॥

वातश्लेष्मज्वरार्त्तायहितमुष्णाम्बुतृप्यते । दीपनंस्यात्तुकफजेवातपित्तानुलोमनम् ॥ तद्धिमार्दवकृद्दोषःस्रोतसांशीतमन्यथा । वाग्भटश्चतृष्णायांप्राप्तमुष्णाम्बुपिबेद्वातकफ ज्वरे। तत्कफंविलयंनीत्वातृष्णामाशुनिवर्त्तयेत्॥ उद्दीप्यचाग्निस्रोतांसिमृदूकृत्यविशोध येत्। वातपित्तकफस्वेदशकृन्मूत्राणिसारयेत् ॥ ४० ॥

क्वाथकियेहुए जलकी विधि सुश्रुतने कहीहै ॥

वात कफ ज्वर और कफ ज्वरमें गरम जल हितकारी दीपन तृप्तिकारी वात पित्तको ठीक करने वाला और दोष तथा श्रोतोंको कोमल करने वाला होता है और शीतल जल इससे विपरीतगुण वालाहै और वाग्भटने कहा है कि वात कफ ज्वर में प्यास लगने से गरम जल पिये उससे कफका नाश होकर शीघ्रही तृषा निवृत्त होतीहै अग्नि दीप्त होकर श्रोत कोमल होकर शुद्ध होजातेहैं और वात पित्त कफ स्वेद मल तथामूत्र यहसब निकलजातेहैं ॥ ४० ॥

अथोष्णोदकस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

क्वाथ्यमानन्तुनिर्वेगंनिष्फेणंनिर्म्मलंतथा । अर्द्धावशिष्टंयत्तोयंतदुष्णोदकमुच्यते ॥ ज्वरकासकफश्वासपित्तवातामभेदसाम्। नाशनंपाचनञ्चैवपथ्यमुष्णोदकंसदा ॥ ४१ ॥

उष्ण जल के लक्षण और गुण ॥

जो जलमन्द अग्निमें धीरे२गरम करनेसे आधा बाकीरहे और फेनारहित तथा निर्मलहो उसको उष्ण जल कहते हैं यह ज्वर खांसी कफ श्वास पित्त वात आम तथा मेद नाशक पाचक और सदैव पथ्य होता है ॥ ४१ ॥

अथर्त्तुभेदेजलस्यपाकभेदः ॥

त्रिपादशेषंसलिलंग्रीष्मेशरदिशस्यते (अन्येतु) निदाघेत्वर्द्धपादोनंपादहीनंतुशा रदम्। हिमेऽर्द्धशेषंशिशिरेतथावर्षावसन्तयोः॥ शिशिरेचवसंतेचहिमेचार्द्धावशेषितम्। अष्टमाशावशेषंतुवारिवर्षासुशस्यते ॥ इतिकेचिद्वुधाःप्राहुस्त्वर्ज्यैप्यागमदर्शनात् (के चित्)पक्षयोस्त्रिषुवेदेषुत्राणेष्वंगेषुवस्तुषु। एषुभागावशेषंस्यादम्बुवर्षादिषुक्रमात्॥४२॥

ऋतुके भेद से जलके पाककरने का भेद ॥

शरद तथा ग्रीष्म ऋतुमें तिहाई जलाहुआ जल और हेमन्त शिशिर वर्षातथा वसन्त में आधा जलाहुआ जल श्रेष्ठ होता है और कोई कहतेहैं कि ग्रीष्म ऋतुमें अष्टमाश जलाहुआ शरद ऋतु म चौथाई जलाहुआ शिशिर वसन्त तथा हेमन्त ऋतुमें आधाजला हुआ और वर्षा ऋतुमें अष्ट मांश

बचाहुआ जल श्रेष्ठ होताहै कोई पंडित तो शास्त्रोंको देखकर ऐसा कहतेहैं कि वर्षा ऋतुमें आधाबचाहुआ शरद ऋतुमें तिहाई बचाहुआ हेमन्त ऋतुमें चौथाई वसन्त में पंचमांश ग्रीष्म ऋतुमें षष्ठांश और प्रावृट ऋतुमें सप्तमांश बचाहुआ जल श्रेष्ठ होताहै ॥ ४२ ॥

अत्रदोषाणांयथोल्वणताहीनतावातथाऽव्यवस्थाकल्पनीया । तत्पादहीनंपित्तघ्नमर्द्धहीनंतुवातनुत् । त्रिपादहीनंश्लेष्मघ्नंसंग्राह्यग्निप्रदीपनम् ॥ गुणाश्चत्रिपादहीनस्यतंत्रांतरे । आरोग्याम्बुसंज्ञातस्यलक्षणं । पादशेषंतुयत्तोयमारोग्यांबुतदुच्यते । आरोग्यांबुसदापथ्यंकासश्वासकफापहम् । सद्योज्वरहरंग्राहिदीपनंपाचनंलघु । आनाहपाण्डुशूलार्शोगुल्मशोथोदरापहम् ४३ ॥

यहां दोषोंकी वृद्धि तथा हीनता के अनुसार व्यवस्था करनी चाहिये चौथाई जलाहुआ जल पित्तनाशक आधाजलाहुआ वात नाशक और चौथाई बचाहुआ जल कफ नाशक ग्राही और दीपन होता है चौथाई बचेहुए जलको तन्त्रान्तर में आरोग्य जल कहाहै इसके लक्षण और गुण कहे जातेहैं औटानेसे चौथाई बचाहुआ जल आरोग्य कहाताहै यह सदैव पथ्य शीघ्र ज्वर नाशक ग्राही दीपन पाचक हलका और खांसी श्वास कफ आनाह पांडु शूल बवासीर गुल्म सूजन तथा उदरनाशक होताहै ४३॥

अथऋतुभेदेजलस्यग्रहणायदेशभेदः ॥

वारिविगैर्बोधव्यं हेमंतेशिशिरेचांबुसारसंवातडागजम् । वसंतग्रीष्मयोःकौप्यंवाप्यंवानैर्झरंहितम् ॥ नादेयंवारिनादेयंवसन्तग्रीष्मयोर्बुधैः । विषवत्पत्रपुष्पादिदुष्टनिर्झरयोगतः ॥ औद्भिदंचान्तरीक्षंवाकौप्यंवाप्राव्टपिस्मृतम् । शस्तंशरदिनादेयंनीरसमशूदकंपरम् ॥दिवारविकरैस्तप्तंनिशिशीतकरांशुभिः। ज्ञेयमंशूदकंनामस्निग्धदोषत्रयापहम् ॥ अनभिष्यन्दिनिर्दोषंचान्तरीक्षजलोपमम् ।बल्यंरसायनंमेध्यंशीतलंलघुसुधासमम् (अन्यच्च) शरद्यगस्त्येरुदयादखिलंसलिलंहितम् (वृद्धसुश्रुतः) कार्त्तिकेमार्गशीर्षेचजलमात्रंप्रशस्यते ॥ अथर्त्तुपक्रमपिजलंविषयविशेषेशीतलंपिबेदित्याहसुश्रुतः । दाहार्तीसारपित्तास्रमूर्च्छामद्यविषार्तिषु ।मूत्रकृच्छ्रेपाण्डुरोगेतृष्णाच्छर्दिश्रमेषु च। मद्यपानसमुद्भूतेरोगेपित्तोत्थितेतथा ॥ सन्निपातसमुत्थेपुश्रृतशीतंप्रशस्यते ॥ ४४॥

ऋतु भेदसे जलके लेनेके लिये देश भेद ॥

हेमन्त तथा शिशिर ऋतुमें सरोवर तथा तड़ागका जल वसन्त तथा ग्रीष्मऋतु में कूपका बावड़ीका तथा झरनेका जल ग्रहण करना चाहिये और वसंत तथा ग्रीष्मऋतुमें नदीका जल नहीं ग्रहण करना चाहिये क्योंकि पत्र पुष्पादिकों के द्वारा दूषित झरनोंके योगसे यह विषके तुल्यहोंजाताहै वर्षाऋतुमें उद्भिज अन्तरिक्ष तथा कुएँका जल श्रेष्ठहै शरदऋतु में नदीका जल और अंशूदक अत्यन्त श्रेष्ठ है (दिनभर सूर्य्यकी किरणों से तपाहुआ और रात्रिभर चन्द्रमा की किरणोंसे शीतल हुआ जल अंशूदक कहाताहै) यह स्निग्ध दोषनाशक अभिष्यन्द रहित अन्तरिक्ष जलके समाननिर्दोष बलकारक रसायन मेधाको हित शीतल हलका और अमृतके समान गुणकारी होताहै औरभीकहा गयाहै कि शरदऋतुमें अगस्त्यके उदयहोनेसे संपूर्ण जल हितकारी होतेहैं वृद्ध सुश्रुतने कहाहै कि

कार्तिक और अगहनमें संपूर्ण जल श्रेष्ठ होतेहैं ऋतुके अनुसार औटाया हुआ जल अवस्था विशेष में शीतल करके पीना चाहिये ऐसाही सुश्रुतने कहाहै कि दाह अतीसार रक्तपित्त मूर्च्छा मद्य तथा विषसे पीड़ित मूत्रकृच्छ्र पांडुरोग तृषा छर्दि श्रम मद्यपानसे हुए रोग पित्तरोग और त्रिदोष जनित रोग युक्त मनुष्यको औटाया हुआ जल शीतल करके पीना चाहिये ॥ ४४ ॥

अथ क्वथितस्यजलस्यशीतलीकृत विशेषमाहसुश्रुतः ॥

शृताम्बुतत्त्रिदोषघ्नंयदन्तर्वाशीतलम् । अरूक्षमनभिष्यन्दिकृमितृट्ज्वरहल्लघु ॥ धारापातेनविष्टम्भिर्दुर्जरंपवनाहतम् । भिनत्तिश्लेष्मसंघातंमारुतञ्चापकर्षति ॥ अजीर्णंजरयत्याशुपीतमुष्णोदकंनिशि । अन्तर्वाप्यशीतलम्पिहितमेवशीतलम् ॥ ४५ ॥

औटायेहुये जलके शीतल करने में विशेषता ॥

सुश्रुत ने कहाहै कि औटाय करके ढकाहुआ जो जल शीतल होताहै वह त्रिदोष नाशक रूक्षता और अभिष्यन्द रहित और कृमि तृषा तथा ज्वर नाशकहोताहैधार डाल डाल कर जो जल शीतल कियाजाताहै वह विष्टंभी और देरमें पचने वाला होताहै वायुके द्वारा जो जल शीतल कियाजाता है वह मिले हुए कफ का भेदक और वात नाशक होताहै रात्रिमें पियाहुआ उष्ण जल शीघ्रहीअजीर्णको नाश करताहै ॥ ४५ ॥

अत्रापरेऽपिविशेषाः ॥

दिवाश्रृतंपयोरात्रौगुरुतामधिगच्छति । रात्रौश्रृतंदिवापीतंगुरुत्वमधिगच्छति ॥ तत्तु पर्य्युषितंवह्निगुणोत्सृष्टंत्रिदोषकृत्गुर्व्वम्लपाकंविष्टम्भिसर्वरोगेषुनिन्दितम् । श्रृतंशीतं पुनस्तप्तंतोयंविषसमंभवेत् ॥ निर्यूहोऽपितथाशीतःपुनस्तप्तोविषोपमः ॥ ४६ ॥

इसमें औरभी विशेषताकहीजाती है ॥

रात्रिका औटाया हुआ जल दिन में और दिन का औटाया हुआ जल रात्रि में भारी होजाता है और औटायाहुआ बासी जल अग्नि के गुणों को त्याग करके त्रिदोषकारी भारी पाकमें खट्टा विष्टंभी और संपूर्ण रोगोंमें निन्दित होताहै औटाया हुआ जल और क्वाथ शीतल होनेसे फिर गरम करने पर विष तुल्य होजाताहै ॥ ४६ ॥

रात्रौतूष्णोदकस्यलक्षणमन्यदाह । अष्टमांशानांशेषेणचतुर्थेनार्द्धकेनवा । अथवा क्वथनेनैवसिद्धमुष्णोदकंवदेत् ॥ अथतस्यगुणाः श्लेष्मानिलाममेदोघ्नंदीपनंवास्तिशोधनम् । श्वासकासज्वरहरंपीतमुष्णोदकंनिशि ॥ ४७ ॥

रात्रिमें उष्ण जलका अन्य लक्षण कहाजाताहै जैसे किअष्टमांश बचाहुआ चौथाई बचाहुआ और आधा बचाहुआ अथवा केवल औटाया हुआ जल उष्णोदक कहाताहै रात्रिमें उष्ण जल पीनेसे कफ वातआमदोषमेद श्वास खांसी तथा ज्वरका नाश अग्निकी दीप्तिऔरमूत्राशयकीशुद्धता होती है ४७॥

रात्रौचउष्णमेवाम्बुतस्मेवपिवेदित्याह ॥

उष्णंतदग्निजननंलघवच्छंवस्तिशोधनम् । पार्श्वरुक्पीनसाध्मानंहिक्कानिलकफापहम् ॥ शस्तंतट्श्वासशूलेषुसद्यःशुद्धौनवज्वरे ॥ ४८ ॥

रात्रिमें औटाया हुआ जल गरम पीना चाहिये यह कहते हैं ॥

औटाया हुआ गरम जल दीपन हलका निर्मल मूत्राशय का शोधक और पसली की पीड़ा पीनस आध्मान हिचकी वात तथा कफकानाशक और तृषा श्वास शूल शीघ्र हुई वमनादिक शुद्धता और नवीन ज्वरमें हितकरी है ॥ ४८ ॥

विषयविशेषेत्वाममेवजलंशीतलंपिवेदित्याहसुश्रुतः । मूर्च्छापित्तोष्णदाहेषुविषेरक्ते मदात्यये।भ्रमश्रमपरीतेषुतमकेऽवयथौतथा।धूमोद्गारेऽविदग्धेऽन्नेशोषेचमुखकण्ठयोः। ऊर्ध्वगेरक्तपित्तेचशीतलाम्बुप्रशस्यते ॥ शीतलंजलम् आममेवनतुक्वथितमक्वथितन्तु शीतंदाहादिषुयदुक्तं । तत्सज्वरेषुविज्वरेषुनदाहादिष्वामंशीतंप्रशस्यतइतिभेदः ॥४६॥

विशेष अवस्थाओंमें कच्चाही शीतलजल पीनाचाहिये यह सुश्रुतने कहाहै कि मूर्छा पित्त उष्ण दाह विषदोष रक्त दोष मदात्यय भ्रम श्रम तमक श्वास सूजन धुमेली डकार विदग्धअन्न मुखका सूखना कंठका सूखना और ऊर्ध्वगत रक्त पित्तमें शितलजलश्रेष्ठ है यहाँ कच्चाशीतल जल न कि औटाया शीतल जल और औटाया हुआ शीतलजल जोदाहादिकमें कहागयाहै वह ज्वरवालों के लिये है और ज्वर रहित दाहादिकोंमेंतो कच्चाहीशीतल जल श्रेष्ठहै यही भेदहै ॥ ४९ ॥

आमादिजलानांजठराग्नीनांपाककालावधिमाह ॥

आमंजलंपाकमुपैतियामंपक्वंपुनःशीतलमर्द्धयामम् । पक्वंकदूष्णञ्चततोऽर्द्धकालास्त्र यःसुपीतेतुजलस्यपाके ॥ ५० ॥

कच्चे आदिजलकी उदरमें परिपाक होनेकी अवधि ॥

कच्चाजल एकपहर में औटायाहुआ शीतलजल आधेपहरमें और औटायाहुआ कुछ गरमजल चौथाई पहरमें परिपाकको प्राप्तहोताहै नियमके अनुसार पियेहुए जलके यहतीनकाल परिपाकहोनेकेहैं ५०॥

रोगविशेषेजलसंस्कारमाह ॥

पित्तमद्यविषार्त्तेषुतिक्तकैःशृतशीतलम् । जलंहितमितिशेषःतिक्तानिबहुलानितेभ्यो निश्चित्ययोगमाहसुश्रुतः ॥ मुस्तपर्पटकोदीच्यच्छत्राख्योशीरचन्दनैः । शृतंशीतंज लंदद्यात्तृड्दाहज्वरशान्तये (छत्राऽत्रधान्याकः) यतआहनिघण्टौधन्वन्तरिः । कुस्तु म्बुरुःस्वर्णिकाछत्राधान्यंवितुन्नकम् ॥ इत्यादितद्गुणाश्च धान्यकंदीपनंरुच्यंपाचनं स्वादुपाकिच । दोषत्रयतृषादाहश्वासकासज्वरप्रणुदित्यादि ॥ ५१ ॥

रोगविशेष में जल के संस्कार कहतेहैं ॥

पित्त मद्य तथा विषसे पीड़ित मनुष्य को तिक्त द्रव्यों के द्वारा औटाया हुआ शीतल जल श्रेष्ठहै तिक्त वस्तु बहुतसीहैं उनमें से सुश्रुत का कहाहुआ योग कहाजाताहै मोथा पित्त पापड़ा सुगन्ध वाला छत्रा खस और चन्दन इनके साथ परिपाक कियेगये और शीतल कियेहुए जलको तृषा दाह तथा ज्वर की शान्तिके लिये दे यहां छत्रा का अर्थ धनियां क्योंकि निघंटु में धन्वन्तरिने कहाहै कि कुस्तुंबुरु स्वर्णिका छत्रा धान्य और वितुन्नक यहधनियेंके नामहैं धनियेंकेगुण धनियां दीपन रुचि-कारी पाचन पाकमें मधुर औरत्रिदोष तृषा दाह श्वास खांसी तथा ज्वरनाशक होताहै ॥ ५१ ॥

चक्रदत्तवङ्गसेनवृन्दादयश्छत्रास्थाने नागरंपठन्तितदुक्तंयथामुस्तपर्पटकोशीरचन्द

नोदीच्यनागरैः।नागरमकटुकमपिनात्रपित्तजनकंमधुरपाकित्वादितितेषामभिप्रायः। नागरंमुस्तकमितिकेचित्क्वचिदेकदेशेनसमुदायोऽवगम्यते। यथाभीमोभीमसेनइतिचन्दनैरित्यत्रसहार्थेतृतीयातेनमुस्तादिभिः षड्भिरामेवक्षुण्णैःसहितंजलम् शृतंजलमेवकेवलंयथर्तुपक्वंपश्चात्तच्छीतलीकृतंदद्यात् ॥ ५२ ॥

चक्रदत्त वंगसेन और वृन्दादिक छत्राके स्थानमें नागर (सोंठ) कहते हैं क्योंकि सोंठ कटुभी पाकमें मधुर होनेसे पित्तकारक नहीं होती यह उनका अभिप्रायहै कोई२ कहतेहैं कि नागर शब्दसे नागरमोथे का ग्रहण होताहै क्योंकि कहीं एकदेश कहनेसे समुदाय भरका ग्रहण होता है जैसे भीम कहनेसे भीमसेन का बोध होताहै यहां चन्दन शब्दमें तृतीया विभक्ति सहार्थ में हैं इससे मोथा आदिक छः वस्तुओं को कच्ची कूटकर ऋतुओं के अनुसार परिपाक किये हुए जलमें मिलायके शीतल करे और पिये ॥ ५२ ॥ तथाचवङ्गसेनः ॥

यदप्सुशृतशीतासुषडङ्गादिप्रयुज्यते । कर्षमात्रंततोद्रव्यंग्राहयेत्प्रास्थिकेऽम्भसि ॥ अस्यायमर्थः यद्धेतोरप्सुजलेशृतशीतासुशृतासुकेवलास्त्वेवयथर्तुपक्वासुशीतासुशीतलीकृतासुषडङ्गादिद्रव्यं प्रयुज्यते आममेवसंक्षुद्यजलेस्थाप्यते ततःप्रक्षेप्यत्वात्कर्षमात्रं द्रव्यंसमुचितंषडङ्गादिप्रास्थिकेऽम्भसि। प्रस्थमात्रेक्वथितशीतलेजलेक्षेप्तुंग्राहयेत् अतएवषडङ्गमभिधायषडङ्गपानीयमितिवङ्गसेनादिभिरुक्तम् अस्मिन्पक्षेचन्दनंश्वेतमेवग्राह्यंनतुरक्तंतत्कषायलेपयोरवप्रयोक्तुम्यतआह। कषायलेपयोःप्रायोयुज्यतेरक्तचन्दनमिति ॥ षडङ्गपानीयमिदं ॥ ५३ ॥

ऐसाही वंगसेनने कहाहै ॥

जिसकारण से ऋतुके अनुसार औटाये हुए जलको शीतल करके षड़ंगादि वस्तु कच्ची कूटकर छोड़ीजाती हैं इसलिये चौंसठ तोले जलमें एक तोले औषध छोड़नी चाहिये इसीसे षड़ंग कहकर षडंग जल वंगसेनादि में कहाहै यहां चन्दन कहनेसे श्वेतचन्दन लेनाचाहिये लाल न लेना चाहिये क्योंकि लालचन्दन कषाय और लेपमें डालाजाताहै इसीलिये कहा गयाहै कि प्रायः कषाय और लेपमें लालचन्दन छोड़नाचाहिये यह षड़ंग जलकहलाताहै ॥ ५३ ॥

षडङ्गादेःपानेऽनुविधातव्येप्रक्रियाविहितामहावंगसेनेन ॥

कर्षमात्रंतथाद्रव्यंग्राहयेत्प्रास्थिकेऽम्भसि । अर्द्धशृतंप्रयोक्तव्यंपानेपेयादिसंविधौ ॥ आदिशब्देनयूषयवागूविलेपीभक्तानिगृह्यन्तेपानप्रक्रियांशार्ङ्गधरोऽप्येतामेवाह। क्षुण्णंद्रव्यंपलंसाध्यंचतुःषष्टिपलेजले। अर्द्धशिष्टंतुतद्देयंपानेपेयादिसंविधौ ॥ पानप्रयोगञ्चषडंगमुक्तवान्। अस्मिन्पक्षेचन्दनंरक्तंग्राह्यम्। कषायलेपयोःप्रायोयुज्यतेरक्तचन्दनम्। इतिवचनात् ॥ ५४ ॥

षड़ंगादिके पीनेकी विधि यह आगे कहीहुई प्रक्रिया महावंगसेनने कहीहै ॥

चौंसठ तोले जलमें एक तोले औषध डालकर औटावे जब आधा रहजाय तबपीनेके लिये और पेया यूषयवागू विलेपी तथा भातमें काममें लावे शार्ङ्गधरने भी यही पान करनेकी प्रक्रिया कहीहै

कि चौंसठ पल जलमें एक पल कुटीहुई औषध छोड़कर औटानेसे जब आधा रहजाय तब पीने के लिये और पेयादिकों में प्रयोगकरे और पानका प्रयोग पडंग कहाहै यहां चन्दन कहने से लालचन्दन ग्रहणकरनाचाहिये क्योंकि ऐसा कहागयाहै कि कषाय और लेपमें लालचन्दन प्रायःछोड़ाजाताहै ५४॥

तथारक्तचन्दनस्यगुणः॥

रक्तंहिमंस्वादुपाकंछर्दितृष्णास्रपित्तजित्।तिक्तंनेत्रहितंवृष्यंज्वरव्रणविषापहम्॥५५॥

लाल चन्दन के गुण॥

लाल चन्दन शीतल पाकमें मधुर तिक्त नेत्रोंको हित वीर्यवर्द्धक और छर्दि तृषा रक्तपित्त ज्वर घाव तथा विषनाशक होताहै॥ ५५॥

पडंगादिप्रयुज्यतइत्यादिशब्देनवक्ष्यमाणादयोयोगाउच्यंतेयथा। श्रीपर्णीचंदनोशीरसमधूकपरूपकं। श्रीपर्णीपरूपकयोःफलंग्राह्यंमधुकस्यतुपुष्पकम्। पानंपित्तज्वरं हन्यात्सारिवाद्यंसशर्करम्। अन्यच्च। हन्यात्सयष्टिमधुकंतथैवोत्पलपूर्वकम्। पानेशृतंकिंवासोत्पलंशर्करायुतम्। हन्यात्पित्तज्वरमितिशेषःउत्पलमत्रकमलमित्यादि ५६॥

पडंग आदिका प्रयोग करना चाहिये यहाँ आदिशब्दसे आगे कहेजाने वाले योग लक्षित होतेहैं जैसे बेर लालचन्दन खस महुएके फूल और फालसा इनसबका पूर्वोक्त रीतिसे बनाहुआ जलपित्त ज्वरको नष्ट करता है और शारिवादि गणके द्वारा बनाहुआ जल शक्कर सहित पित्तज्वरको नाश करता है और भी कहागयाहै कि कमलकाफूल और मुलहठी इनका पूर्वोक्त रीतिसे बनाहुआ जल अथवा कमल डालकर औटाया हुआ जल शक्कर सहित पीनेसे पित्तज्वरको नाश करताहै॥ ५६॥

दिवास्वापंनकुर्वीतयतोऽसौस्यात्कफावहः। ग्रीष्मवर्ज्जेषुकालेषुदिवास्वापोनिषिध्यते॥ उचितोहिदिवास्वापो नित्यंयेषांशरीरिणाम्। वातादयःप्रकुप्यंति तेषामस्वपतां दिवा॥ ५७॥

दिनको न सोवे क्योंकि इससे कफ बढ़ताहै परन्तु ग्रीषम ऋतुको छोड़कर अन्य ऋतुओंमेंदिन का सोना निषेधहै जिन मनुष्योंको दिनका सोना नित्य उचितहै उनके दिनमें न सोनेसे वातादिकों का कोप होता है॥ ५७॥ येषांदिवास्वप्नमुचितंतानाह॥

व्यायामप्रमदाध्ववाहनरतक्लान्तानतीसारिणः शूलश्वासवमीतृषापरिगतान्हिक्काम रुत्पीड़ितान्। क्षीणांक्षीणकफान्शिशून्मदहतान्वृद्धान्तथाजीर्णिनो रात्रौजागरितान्निरसनान्कामंदिवास्वापयेत्॥ ५८॥

जिनको दिनमें सोना उचितहै उनको कहतेहैं॥

व्यायाम स्त्रीप्रसंग मार्गगमन सवारीपर चढ़नेकी थकावट ग्लानि अतीसार शूल श्वास छर्दि तृषा हिचकी वात अजीर्ण क्षीणता कफकी क्षीणता तथा रात्रिमें जागरण इनसे युक्त बालक मदसे व्याकुल वृद्ध और उपवास करने वाले इनमनुष्योंको दिनमें यथेष्ट सोना चाहिये॥ ५८॥

अथवातिकज्वराणांपाकावधिमाह॥

वातिकःसप्तरात्रेणदशरात्रेणपैत्तिकः। श्लेष्मिकोद्वादशाहेनज्वरःपाकमुपैतिहि॥ रसस्यामत्वेऽवधिमतिक्रम्यापिज्वरस्तिष्ठति। यतआहसुश्रुतः। बहुदोषस्यमन्दाग्नेः

सप्तरात्रात्परंज्वरे । लङ्घनाम्बुयवागूभिर्य्यदादोषोनपच्यते ॥ तदातन्मुखवैरस्यतृष्णा रोचकनाशनैः । कषायपाचनैर्ह्यैर्ज्वरघ्नैःसमुपाचरेदिति ॥ ५६ ॥

वातजआदि ज्वरोंके परिपाककीअवधि ॥

वातज्वर सातरात्रि में पित्तज्वर दशरात्रि में और कफज्वर बारहरात्रिमें परिपाकको प्राप्तहोता है रसके आम होनेपर अवधिसे अधिक भी ज्वर रहताहै क्योंकि सुश्रुतने कहाहै कि बहुत दोष युक्त और मन्दाग्निवाले मनुष्यका लंघन षडंगजल और यवागूके सेवनसे दोष जो परिपाक को न प्राप्त होयं तो मुखकी विरसता तृषा तथा अरुचि नाशक हृदय को हित पाचन और ज्वरघ्न क्वाथों के द्वारा उसकी चिकित्सा करे ॥ ५६ ॥ ज्वरस्यतारुण्यंमध्यावस्थाजीर्णतावधि ॥

आसप्तरात्रात्तरुणंज्वरमाहुर्मनीषिणः । द्वादशाहमभिव्याप्यमध्यंजीर्णंततःपरम् ॥ आसप्तरात्रादितिअत्ररात्रिपदादयंरात्रिशब्दोदिवसस्योपलक्षकः । तेनसप्तमदिवसाद र्वाग्ज्वरस्तरुणइत्यर्थः । (तथाचोक्तंतन्त्रान्तरे) ज्वरेऽव्यतीतेषड्हेजीर्णइत्युच्यतेबुधैरि ति । द्वादशाहात्परंजीर्णमाहुरन्येमनीषिणः ॥ (अतएवजातूकर्णः) जीर्णस्त्रयोदशेदि वसइति ६० ॥ ज्वरकी तरुणता मध्यावस्था और जीर्णावस्था की अवधि ॥

पण्डित लोग ज्वरको आरंभसे सातरात्रि पर्य्यन्त तरुण बारह रात्रितक मध्य और इसके उपरांत जीर्ण कहते हैं यहाँ रात्रिशब्द दिनका जनाने वालाहै इससे सात दिन पर्य्यन्त ज्वर तरुण रहताहै इत्यादि जानना चाहिये और तन्त्रान्तर में कहा गयाहै कि छःदिनके उपरान्त ज्वर जीर्ण होजाता है यह कोई२ पण्डित कहते हैं और कोई २ कहते हैं कि बारह दिनके उपरान्त ज्वरजीर्ण कहलाता है इसी से जातू कर्ण ने कहाहै कि तेरहवें दिन ज्वर जीर्ण होजाताहै ॥ ६० ॥

अथज्वरेयुंजीतभेषजम् ॥

वातिकेसप्तरात्रेतुदशरात्रेणपैत्तिके । श्लैष्मिकेद्वादशाहेनज्वरेयुंजीतभेषजम् ॥ सप्त रात्रात्परंरात्रिशब्दोदिवसस्योपलक्षक.अतएवोक्तम् । पाययेदातुरंसाऽममौषधंसप्तमेदि ने । शमनेनाथवाहृष्ट्वानिरामन्तमुपाचरेदिति ॥ शार्ङ्गधरेणोक्तम् । गुडूचीपिप्पली मूलनागरैःपाचनंश्रृतम् । वातज्वरेतथापेयंकालिंगसप्तमेऽहनीति ॥ हारितेनोक्तम् । ए तांक्रियांप्रयुंजीतषड्रात्रंसप्तमेऽहनि । पिबेत्कषायसंयोगात्पेयांज्वरविनाशिनीम् ॥ एतां क्रियांलङ्घनादिरूपांकषायसंयोगात्कषायेणसाधितांपेयामित्यर्थः (खरनादेनाप्युक्तम्) इतिषड्रात्रिकःप्रोक्तोनवज्वरहरोविधिः । ततःपरंपाचनीयंशमनीयंज्वरेहितम् ॥ ततो ज्वरमध्येकरणीयमित्यर्थः॥६१॥ ज्वरमें औषध देनेका समय ॥

वातज्वर में सातवें दिन पित्तज्वर में दशवें दिन और कफज्वरमें बारहवें दिन औषध देनी चाहिये आमयुक्त रोगीको सातवें दिन औषध पिलावे अथवा आम रहित देखकर शमन औषधियों के द्वारा चिकित्सा करे शार्ङ्गधरने कहाहै कि वात ज्वरमें गिलोय पीपलामूल और सोंठ इनसे पाचन औषध बनाके अथवा इन्द्रजौका काढ़ा सातवें दिन पिलावे हारीतने कहाहै कि यह लंघनादिरूप चिकित्सा छः दिनतक करनी चाहिये और सातवें दिन क्वाथके द्वारा बनीहुई ज्वरनाशक पेया पान

करे खरनादने भी कहाहै कि नवीन ज्वरनाशक यह विधि छःदिनकेलिये कहीगईहै फिर ज्वरकेमध्य में पाचक और शमन औषध करनीचाहिये ॥ ६१ ॥

वाग्भटश्च । सप्ताहादौषधंकेचिदाहुरन्येदशाहतः । लङ्घनेभोजितेकेचिद्देयमामोल्ब णेनतु ॥ सप्ताहात्सप्ताहमारभ्येत्यर्थःअत्रलघ्वल्लोपेकर्मणिपञ्चमीअतएवसुश्रुतः । दश रात्रात्परंसर्वैर्दातव्यमितिनिश्चितमितिअतएवदशरात्रेद्वादशाहेवेतिलङ्घनवताव्यतीते नइत्यर्थः(अत्रचरकस्त्वेवमाह) ज्वरितंषडहेऽतीतेलघ्वन्नप्रतिभोजितम् । पाचनंपाययेद्द्व्योनिरामंसप्तमेऽहनि ॥ सप्तमेऽहनिलघ्वन्नंदत्वाअष्टमेदिनेकषायंपाययेदित्यर्थः ६२

वाग्भटने कहाहै कि किसीके मतमें सातवें दिनसे किसीके मतमें दशवें दिनसे और किसीकेमत में लंघनके उपरान्त कुछ हलका अन्न भोजन करायके औषध देनीचाहिये परन्तु जो आमका दोष अधिक वर्त्तमानहो तो औषध नदेवे इसीसे सुश्रुतने कहाहै कि दश रात्रिके उपरान्त औषध देनी चाहिये यह सबका निश्चयहै यहां चरक ने तो ऐसा कहाहै कि ज्वरवाले को छः दिनके व्यतीत होजाने पर सातवें दिन आमसे रहित होजाने पर हलका अन्न भोजन करायके आठवें दिन क्वाथ पिलावे ॥ ६२ ॥

तथाचसुश्रुतः । सप्तरात्रात्परंकेचिन्मन्यंतेदेयमौषधमिति । सप्तरात्रात्परम् अष्टमे ऽहनीत्यर्थः । केचिच्चरकादयः । चक्रदत्तेऽपि । सप्तरात्रेणपच्यन्तेसप्तधातुगतामलाः । निरामस्तुततःप्रोक्तोज्वरप्रायोऽष्टमेदिने ॥ एवंसतिकषायदानेसप्तमाष्टमयोर्दिवसयोर्वि कल्पः । तत्रापिवयोबलाग्निर्दोषःदेशकालोचितंकुर्यात् ६३ ॥

ऐसाही सुश्रुतने भी कहाहै कि सात दिनके उपरान्त आठवें दिन कोई २ चरकादिक औषधदेना कहतेहैं चक्रदत्तने भी कहाहै कि सातों धातुओंके दोष सात दिनमें परिपाक होजातेहैं इस लिये प्रायः आठवें दिन ज्वर आमरहित होजाताहै इस प्रकारसे सातवें और आठवें दिनमें क्वाथ देनेका विकल्प अर्थात् मतभेद पायागयाहै ऐसा होनेपरभी अवस्था बलअग्नि दोष देश और कालके अनुसार चिकित्सा करनीचाहिये ॥ ६३ ॥

भेषजमन्नञ्चदोषपाकंदृष्ट्वादद्यादित्याहसुश्रुतः। पातिकेचज्वरेदेयमल्पकालसमुत्थि त । अचिरेज्वरितस्यापिभेषज्यंदोषपाकतइति ॥ अस्यायमर्थः । अल्पकालसमुत्थितेपै त्तिकेज्वरेदोषपाकंदृष्ट्वाभैषज्यं देयंनतुतत्रदशरात्रापेक्षातथाअचिरज्वरितस्यापिपैत्तिकेत रनवज्वरयुक्तस्यापिदोषपाकंदृष्ट्वाभैषज्यंदेयमित्यर्थः ६४ ॥

औषधि और भोजन दोषोंके परिपाकको देखकर देनेचाहिये यह सुश्रुतने कहाहै थोड़े समय से होनेवाले पित्तज्वरमें औषध देनीचाहिये यहां दश दिन व्यतीत होनेकी प्रतीक्षा न करे और दोषके परिपाकको देखकर पित्तज्वरके सिवाय अन्य नवीनज्वरोंमें भी औषधदेनीचाहिये ॥ ६४ ॥

दोषपाकलक्षणमाहसुश्रुतः ॥

मृदोज्वरेलघौदेहेप्रचलेषुमलेषुच । पक्वंदोषंविजानीयाज्ज्वरेदेयंतदौषधमिति ॥ ज्व रेमृदौस्वल्पाभूते । मलेषुवातपित्तकफमूत्रपुरीषेषुप्रचलेषुस्वमार्गसञ्चारिषु । पक्वंनिरा

मं दोषप्रकृतिर्वैकृत्यादेतेषांपकलक्षणम् । दोषाणांदुष्टवातपित्तकफानांप्रकृतिः ज्वरस्य तदुपद्रवाणांचोत्पादनम् । तस्याःवैकृत्यंवैपरीत्यंतस्माद्दोषपाकंज्ञानंकेषांमते । क्षुत्क्षाम त्वंलघुत्वञ्चगात्राणांज्वरमार्दवम् । दोषप्रकृतिरुत्साहोनिरामज्वरलक्षणम् ॥ दोषःप्रकृतिःदोषाणांस्वमार्गसंचारः ६५ ॥

सुश्रुतका कहाहुआ दोषोंके परिपाकका लक्षण ॥

ज्वरकी स्वल्पता शरीरका हलकापन और वातपित्त कफ मल तथा मूत्र इनको अपने २ मार्गसे चलनेपर दोषोंका परिपाक हुआ जानकर ज्वरवालेको औषध देनी चाहिये और दोषयुक्त वात पित्त और कफकी ज्वर और ज्वरके उपद्रवोंका उत्पन्न करना यह प्रकृतिहै उसका विपरीत होनाभी दोषों के परिपाक होनेका लक्षणहै किसी२ का यह मतहै कि क्षुधासे क्षीणहोना शरीरका हलकापन ज्वर की कमी होनी दोषोंका अपने मार्गसे चलना और उत्साह यह आमरहित ज्वरकेलक्षणहैं ॥ ६५ ॥

ज्ञेयापञ्चविधःकालोभैषज्यग्रहणेनृणाम् । तत्रानुक्तेप्रभातंस्यात्कषायेषुविशेषतः६६॥

मनुष्यों के औषध सेवन करने के पांच समय हैं उनमें से जहाँ कोई समय न कहाहो वहाँ प्रातः काल देना चाहिये और क्वाथतो विशेषकर के प्रातःकालही पीनाचाहिये ॥ ६६ ॥

मुख्यभैषज्यसम्बन्धोनिषिद्धस्तरुणज्वरे । तोयपेयादिसंस्कारेत्वदोषंतत्रभेषजम् ॥ मुख्यभैषजंक्वाथःतस्यसम्बन्धःपानम् । यतश्चाह । नकषायंप्रशंसंतिनराणांतरुणेज्वरे । कषायेनाकुलीभूतादोषाजेतुंसुदुस्तराः ॥ आकुलीभूताःप्रवृद्धाःस्वमार्गंपरित्यज्यइतस्ततोगताः । अत्रकषायशब्देनक्वाथोगृह्यते ६७ ॥

नवीन ज्वर में क्वाथ पीना निषिद्धहै परन्तु जल अथवा पेय आदिकोंके संस्कार के लिये जोऔषध दीजाती है वह निर्दोष है क्योंकि कहागया है कि मनुष्यों को तरुण ज्वरमें कषाय हितकारी नहीं है क्यों कि कषाय के द्वारा बढ़ेहुए वातादिकदोष अपने २ मार्ग को छोड़कर इधर उधर गयेहुए फिर शान्तकरने के लिये अत्यन्त दुस्तर होजातेहैं यहां कषाय शब्दका अर्थ क्वाथलेना चाहिये ६७ ॥

उक्तांश्चक्वाथस्यपर्य्यायाः ॥

शृतंक्वाथकषायञ्चनिर्यूहःसनिगद्यतइति । तोयपेयादिसंस्कारेनिर्दोषंतत्रभेषजमिति । तत्रतरुणज्वरेभेषजंमुख्यभेषजंक्वाथरूपंनतुकल्पनमुद्दिश्यकषायः प्रतिषिध्यतइतिकल्पनंतोयपेययवाग्वादिकम् ६८ ॥

क्वाथ के नाम ॥

शृतक्वाथ कषाय और निर्यूह यह क्वाथके नामहैं यहाँ तरुणज्वर में क्वाथ पीना निषिद्ध है परन्तु पेया आदिके बनाने में क्वाथका निषेध नहीं है ॥ ६८ ॥

नतुस्वरसश्चतथाकल्कःक्वाथश्चहिमफाण्टको । ज्ञेयाकषायाःपञ्चैतेलाघवःस्युर्यथोत्तरम् ॥ इतिवचनात्स्वरसादयोऽपिकथन्ननिषिध्यन्तेतत्राह । तत्रयस्तुकषायःस्यात्सवर्ज्यस्तरुणज्वरेइति । चतुर्थभागावशेषकरणेनाष्टमभागशेषकरणेच । कषायवर्णःकषायरसश्चस्यात् । सकषायःक्वाथःसतरुणज्वरेनिषिद्धः ६९ ॥

अब यह सन्देह होता है कि स्वरस कल्क क्वाथ हिम और फांट यह पांच प्रकारके कषाय एक से

एक क्रमसे हलके होते हैं इसवचन के अनुसार स्वरस आदिक पांचों कपायों का निषेध क्यों नहीं किया जाताहै इसकाउत्तर यहहै कि तरुण ज्वरमे पांचों कपायोंका निषेधनहीं है चतुर्थांश बचाहुआ अथवा अष्टमांश बचाहुआ जो कपायवर्ण क्वाथ नाम कपाय बनताहै वहीतरुणज्वरमें निषिद्धहै ६९ ॥

क्वाथस्यलक्षणमाह ॥

पादशिष्टकपायःस्यात् । अत.षडङ्गादिस्तरुणज्वरेननिषिद्धः । पाकादूर्ध्वपाकेचोक्तलक्षणभावेनकषायत्वाभावात् ॥ ७० ॥

क्वाथ के लक्षण ॥

सोलह गुने पानी में औषध छोडकर औटानेसे चौथाई बचनेपर कपाय कहलाताहै इसीसे नवीन ज्वरमें षड़ंग आदिक जल निषिद्ध नहीं हैं क्योंकि उनमें परि पाक नहोने से अथवा अर्द्धांश बचने से ऊपर कहेहुए लक्षण के न मिलने के कारण कपाय पना नहीं है ॥ ७० ॥

अथ तरुणज्वरेकपायदोषमाह ॥

दोषाबद्धा.कपायेणस्तम्भितास्तरुणज्वरे। स्तभ्यन्तेनविपच्यंतेकुर्व्वंतिविषमज्वरम्॥ कपायेणस्तम्भिताप्रवृत्तयेनिवारिताः । यतश्चाह । कषायरसगुणान् । कपायःकपायस्तम्भन.शीतोरूक्षपित्त.कफापहःइत्यादि । स्तभ्यन्ते । आध्मानंकुर्वन्तिनविपच्यंते । सुखेननविपच्यंते । दुःखंदत्त्वाविलम्बेनविपच्यंतेइतियावत् ॥ ७१ ॥

नवीन ज्वर में कपाय का दोष ॥

नवीन ज्वरमें कपाय देने से दोष बढ़कर अपने २ मार्ग से निवृत्तहोजाते हैं आध्मान को उत्पन्न करते हैं अत्यन्त कष्ट पूर्वक बहुत देर में परिपाकको प्राप्त होते और विषम ज्वर को उत्पन्न करते हैं क्यों कि कपाय के गुण यह कहेगये हैं कि कपाय स्तंभन शीतल रूखा और कफ पित्त नाशक होता है ॥ ७१ ॥

(अन्यच्च) नतरुणेनपच्यन्तेकपायैःस्तम्भितामला । तिर्य्यग्विमार्गगावातेघोरंकुर्य्या.नवज्वरम् ॥ ७२ ॥

और भी कहागया है कि नवीन ज्वर में कपाय देने से दोष जकड़ कर न निकलते हैं और न परिपाकको प्राप्तहोतेहैं अथवा दोष तिरछेहोकर मार्गसे रहितहो के अत्यन्त घोर नवीन ज्वर को उत्पन्न करतेहैं ॥ ७२ ॥

अनवस्थितदोषाणांवमनंतरुणेज्वरे । हृद्रोगंश्वासमानाहंमोहंचकुरुतेभृशम् ॥ अयमर्थः। कफादिदोदोषोपस्थितोस्वयमेवचेद्भवतिवमनंनतद्दोषाय।अनवस्थितदोषाणांतरुणज्वरेवमनंयत्नकृतंहृद्रोगादीन्करोतीत्यर्थः ॥ एतेनवचनेनतरुणज्वरेयत्नाद्वमनंनिषिद्धम । अवस्थाविशेषेतदपिकर्तव्यमित्याह । सद्योभुक्तस्यवाजातेज्वरेसंतर्पणोत्थिते । वमनंवमनार्हस्यशस्तमित्याहवाग्भटः ॥ वमनंचेतिविकल्पोलंघनापेक्षया । वमनार्हस्येत्यनेनगर्भिण्यतिकृशातिवृद्धादिनिषेधः ॥ ७३ ॥

दोषोंके विना उपस्थित हुए नवीनज्वरमें वमन करानेसे हृदयके रोग श्वास अफरा और मोह उत्पन्न होतेहैं इसका यह भाशयहै कि कफादि दोषोंके उपस्थित होनेपर जो स्वयं वमन होजाय

तो कोई दोष नहीं है परन्तु दोषों के उपस्थित हुएविना नवीन ज्वर में यत्नपूर्वक वमन कराने से हृदयके रोगादिक उत्पन्न होतेहैं इस वचनके द्वारा नवीनज्वरमें यत्न पूर्वक वमन कराना निषिद्ध है यहसिद्धहुआ परन्तु अवस्था विशेषमें वमन करानाभी चाहिये क्योंकि वाग्भटने कहाहै कि भोजन करनेके उपरान्त जो शीघ्रही ज्वर आजाय अथवा संतर्पण क्रियासे ज्वरआवे तो वमन योग्य (गर्भिणी कृश और वृद्ध आदिक वमनके अयोग्य हैं)मनुष्योंको वमन करावे ॥ ७३ ॥

अत्रवृद्धवाग्भटः । वमितंलंघयेत्प्राज्ञोलंघितंनतुवामयेत् । वमनंक्लेशबाहुल्याद्धन्यात्लंघनकर्षितम् ॥ नकार्य्यंगुर्विणीबालवृद्धदुर्बलभीरुभिः । अनशनमितिशेषः अनेनानशनवचनेनगुर्व्विण्यादीनामनशननिषेधः ।ज्वरेसामेपाचनंनिरामेशमनपथ्यान्नमण्डादिकञ्चदद्यात् । पाचनलक्षणंपश्चात्गुणप्रस्तावेबोधव्यम् ॥ ७४ ॥

यहांपर वृद्ध वाग्भटने कहा है कि वमन कियेहुये को लंघन करावे परन्तु लंघन कियेहुएको वमन न करावे क्योंकि लंघनकेद्वारा क्षीणमनुष्य को वमन कराने से बहुत क्लेशके कारण उसका नाशभी होसकताहै गर्भवती बालक वृद्ध भयभीत और दुर्बलको लंघन न करावे इस वचनसे गर्भिणीआदिकोंको लंघनका निषेध कियागया इसलिये इनको आमसहित ज्वर में पाचन और आमरहित ज्वर में शमन औषध और पथ्य अन्न मण्डादिक देने चाहिये पाचन और शमन के लक्षण पीछे गुणों के वर्णन में कहेगये हैं ॥ ७४ ॥

पाययेदातुरंसामंपाचनंसप्तमेदिने । शमनेनाथवाष्टष्वानिरामंतमुपाचरेत् ॥ (अन्यच्च) कृशंचैवाल्पदोषञ्चशमनीयैरुपाचरेत् ॥ ७५ ॥

आम सहित ज्वरवाले को सातवें दिन पाचन औषध पिलावे और आमके परिपाकको देखकर शमन औषध के द्वारा चिकित्सा करे औरभी कहागयाहै कि कृश तथा अल्पदोषवाले की चिकित्सा शमन औषध से करना चाहिये ॥ ७५ ॥

(ननु) लालाप्रसेकोहल्लासोहृद्याशुद्ध्यरोचकौ ॥ तन्द्रालस्याविपाकास्यवैरस्यं गुरुगात्रता । क्षुन्नाशोबहुमूत्रत्वंस्तब्धतावलवान्ज्वरः ॥ आमज्वरस्यलिंगानिनदद्यात्तत्रभेषजम् । भेषजंह्यामदोषस्यभूयोजनयतिज्वरम् ॥ भूयोबाहुल्येन ॥ ७६ ॥

अबयह सन्देह होताहै कि लारकाबहना मतली हृदयका शुद्ध न होना अरुचि तन्द्रा आलस्य परिपाकका नहोना मुखकी विरसता शरीर का भारीपन क्षुधाकानाश मूत्रकी अधिकता शरीर का अकड़ना और बहुत ज्वर यह आमज्वर के लक्षण हैं इसमें औषध न देनीचाहिये क्योंकि आमदोषवाले को औषध देने से ज्वर बहुत बढ़जाता है ॥ ७६ ॥

(अन्यच्च) पाययेद्दोषहरणंमोहादामज्वरेतुयः । सप्तमंकृष्णसर्पन्तुकराग्रेणपरामृशेत् ॥ इतिवचनादामज्वरेभेषजनिषेधात्कथंसामेज्वरेवापाचनदेयम् । उच्यते । निरुपद्रवेमामज्वरेपाचनंदेयम् । सोपद्रवेतुसामेभेषजंनिषिद्धम् । तथाचवाग्भटः ॥ सप्ताहात्परतोऽदुष्टेसामेस्यात्पाचनंज्वरे । निरामेशमनंस्तब्धेसामेनौषधमाचरेत् ॥ अदुष्टेनिरुपद्रवे स्तब्धेसोपद्रवे ॥ ७७ ॥

औरभी कहागयाहै कि जो वैद्य अज्ञानता से आमज्वरमें दोषनाशक औषध पिलाताहै वह सोयेहुए

कालेसर्पको हाथसे पकडताहै इनवचनोंकेद्वारा आमसहित ज्वरमें औषध का निषेधहोनेसे आमज्वर में पाचन औषध किस प्रकार देनी चाहिये इसका उत्तरयहहै कि उपद्रव रहित आम ज्वर में पाचन औषध देनी चाहिये और उपद्रवसहित आमज्वर में तो औषधका निषेध है ऐसाही वाग्भटनेभी कहा है कि सातदिन के उपरान्त दोष रहित आम ज्वर में पाचन देना चाहिये आमरहित ज्वर में शमन देनाचाहिये और उपद्रव सहित आम ज्वरमें औषध देना निषिद्ध है ॥ ७७ ॥

अथ सामान्यज्वरेपाचन कषायमाहसुश्रुतः ॥

नागरंदेवकाष्ठञ्चध्यामकंबृहतीद्वयम् । दद्यात्पाचनकंपूर्वंज्वरितेभ्योज्वरापहम् ॥ ध्यामकंरोहिषंतद्दलाभालुशीरंदद्यात् । बृहतीद्वयंबृहत्फलासूक्ष्मफलाबृहतीक्षुद्राबृहतीचेति कण्टकारीद्वयंवादद्यात् ॥ कण्टकारीद्वयंशुण्ठीध्यामकंसुरदारुचेतिशार्ङ्गधरेणोक्तत्वात् नागरादिःक्वाथःसर्व्वज्वरेषु ॥ ७८ ॥

सुश्रुतका कहाहुआ सामान्य ज्वर में पाचन कषाय ॥

सोंठ देवदारु रोहिष (सुगन्धिततृण) और दोनों भटकटैया इनका क्वाथ करके ज्वर वालों को ज्वरके नाशके लिये देवे और जो रोहिष न मिले तो खसडाले यह सम्पूर्ण ज्वरोंपर नागरादि नाम क्वाथ है ॥ ७८ ॥ सामान्यतःसंशमनीयान्याह सुश्रुतः ॥

अथसंशमनीयाणिकषायाणिनिबोधमे । सर्वज्वरेषुदेयानियानिवैद्येनजानता ॥ वृश्चीवोबिल्ववर्षाभूःपयःसोदकमेवच । पचेत्क्षीरावशेषन्तत्पेयंसर्वज्वरापहम् ॥ वृश्चीवःश्वेतपुनर्नवावर्षाभूःरक्तपुनर्नवा । तथाचमदनपालः । पुनर्नवःश्वेतमूलोवृश्चीवोदीर्घपत्रकः । पुनर्नवाऽपरारक्तावर्षाभूरक्तपुष्पकः ॥ ७९ ॥

सुश्रुत के कहेहुए सामान्य शमन कषाय ॥

अब शमन कारक कषाय मैं कहताहूं जिनको कि ज्ञानवान् वैद्य सम्पूर्ण ज्वरों में देसक्ता है वृश्चीरबेल वर्षाभू दूध और जल यह सबपाक करके जब केवल दूध बाकी रहजाय तब सम्पूर्ण ज्वरों के शान्त करने के लिये वृश्चीर अर्थात् श्वेत गदहा पूरना वर्षाभू अर्थात् लाल गदहा पूरना ऐसाही मदनपालने कहा है कि श्वेत जडवाली लम्बेपत्तेवाली को वृश्चीर और लाल पुष्पवाली लाल गदहा पूरना को वर्षाभू कहते हैं ॥ ७९ ॥

पाकप्रकारमाह ॥

क्षीरमष्टगुणंद्रव्यात्क्षीरान्नीरंचतुर्गुणम् । क्षीरावशेषंपातव्यंक्षीरपाकेत्वयंविधिः ॥ द्रव्यात्पलपरिमितात् (अन्यच्च) उदकाद्विगुणंक्षीरंशिंशिपोशीरमेवच ॥ तत्क्षीरशेष क्वथितंपेयंसर्वज्वरापहम् ॥ ८० ॥

क्षीर पाककी विधि ॥

औषध से अठगुना दूध और दूधका चौगुना जल इनको मिलाकर औटाने से जब केवल दूध बाकी रहजाय तब उतारले यह क्षीरपाककी विधि है यहां औषध चार तोले होनी चाहिये दूसरा प्रकार पानी से दूना दूध मिलाकर उसमें शीशम और खस छोडकर पाककरने से जब केवल दूध बाकी रहे तब पिये इससे सम्पूर्ण ज्वरों का नाशहोता है ॥ ८० ॥

गुडूचीधान्यकारिष्टंपद्मकंरक्तचन्दनम्। एषांक्राथःसुप्रसिद्धःसर्वज्वरहरःस्मृतः॥ दीपनोदाहहल्लासतृष्णाच्छर्द्यरुचिंहरेत्। गुडूच्यादिक्राथःसंशोधनंतरुणज्वरेनिषिद्धम्। तदाहसुश्रुतः छर्दिमूर्च्छामदश्वासभ्रमतृड्विषमज्वरान्॥संशोधनस्यपानेनप्राप्नोतितरुणज्वरी॥ ८१॥

गिलोय धनियां नींब पद्माक और लालचन्दन इनसबका क्वाथ सम्पूर्ण ज्वरोंका नाशक प्रसिद्धहै. यह दीपन और दाह मतली तृषा छर्दि तथा अरुचि नाशक होता है यह गुडूच्यादि क्वाथ संशोधन होने के कारण नवीन ज्वर में निषिद्ध है ऐसाही सुश्रुतने भी कहा है कि नवीन ज्वर में संशोधन. औषध पीने से छर्दि मूर्च्छा मद श्वास भ्रम तृषा तथा विषम ज्वर उत्पन्न होता है॥ ८१॥

निषिद्धमपिसंशोधनमवस्थाविशेषेदेयम्। (यतआह) रोगेशोधनसाध्येतुयंविद्याद्दोषदुर्बलम्॥ तंसमीक्ष्यभिषक्कुर्याद्दोषप्रच्यावनंमृदु। दोषदुर्बलमदोषैरुपचितैर्दुर्बलं नतूपवासादिकृशमत्रतएवसमीक्ष्येति॥ ८२॥

निषिद्ध भी संशोधन अवस्था विशेष में देना चाहिये क्योंकि कहागया है कि इकट्ठे हुए दोषोंके द्वारा दुर्बल जिस रोगी के शोधन साध्यरोगहोवे वैद्य उसको देखकर कोमलतासे दोष निकालने वाली औषध देवे॥ ८२॥

शोधनसाध्य रोगमाह॥

'सद्योज्वरेविषेऽजीर्णेमन्देऽग्नावुदरेतथा। स्तन्यरोगेचहृद्रोगेकासश्वासेषुवामयेत्॥ जीर्णज्वरगरच्छर्दिगुल्मप्लीहोदरेषुच। शूलेशोथेमूत्रघातकृमिरोगेविरेचयेत्॥(अन्यच्च) चलेदोषेमृदौकोष्ठेनेक्षेतुतत्रबलंनृणाम्। अव्यापदुर्बलस्यापिशोधनंहितदाभवेत्॥ कुतोबलंनापेक्षणीयमित्याशङ्कायामाहतदातस्यामवस्थायांशोधनंदुर्बलस्यापिदोषदुर्बलस्यापिअव्यापद्भवेत्। छर्द्यादिव्याधिकृन्नभवतीत्यर्थः॥ ८३॥

शोधनसे साध्यरोग॥

नवीनज्वर विष अजीर्ण मंदाग्नि उदर दुग्धरोग हृदयकेरोग खांसी और श्वासमें वमन कराना चाहिये जीर्णज्वर गरदोष छर्दि गुल्म प्लीहोदर शूल सूजन मूत्राघात और कृमिरोगमें विरेचन देना चाहिये औरभी कहा गयाहै कि दोषोंके चलायमान होनेपर और कोष्ठके मृदु होनेपर मनुष्योंके बल को बिना देखे दुर्बल मनुष्यकोभी संशोधन देनेसे कोई दोष नहीं होता बलका विचार क्यों नहीं करना चाहिये इस सन्देह के दूर करने को कहतेहैं कि ऐसी अवस्थामें दोषोंके द्वारा दुर्बल मनुष्यको शोधन औषध देने से छर्दि आदिक दोष नहीं उत्पन्न होतेहैं॥ ८३॥

बलवतःपुरुषस्यपक्वस्यदोषस्यस्वस्थानस्थितस्यशोधनाविधानेदोषमाहसुश्रुतः॥ पक्वोऽप्यनिर्हृतोदोषोदेहेतिष्ठन्महात्ययम्। विषमंवाज्वरंकुर्याद्बलव्यापदमेववा॥ पक्वःलङ्घनाम्बुपानपेयादिभिःअनिर्हृतःअधोमार्गेणानुत्सृष्टःमहात्ययंविषमंज्वरंचातुर्थिकंतस्यैवमहात्ययत्वादितिगदाधरः (गम्भीरमितिकार्त्तिकः) महात्ययंमहाकष्टंवाबलव्यापदं बलक्षयम्॥ ८४॥

बलवान् पुरुषके अपने स्थान में स्थित परिपक्क दोषोंके शोधन न करने में सुश्रुतने दोष कहा है जैसे कि विरेचनादिके द्वारा नहीं त्याग किया गया लंघन जलपान तथा पेया आदिकों से परिपाक को प्राप्तहुआ दोष शरीर में स्थित होकर अत्यन्त कृच्छ्रसाध्य विषमज्वर और बलक्षयको करता है यहाँ अत्यन्त कृच्छ्र विषमज्वरका अर्थ गदाधरने चौथिया कियाहै क्योंकि यहीज्वर अत्यन्त कृच्छ्रसाध्य है और कार्तिक ने गंभीरज्वर अथवा अत्यन्त कष्टदायक ज्वर यहअर्थ कियाहै ॥ ८४ ॥

संशोधनमाह ॥

आरग्वधग्रन्थिकमुस्ततिक्ताहरीतकीभिःक्कथितःकषायः । सामेसशूलेकफवातपित्ते ज्वरेहितोदीपनपाचनश्च ॥ इतिआरग्वधादिःक्काथः (अन्यच्च) पथ्यारग्वधतिक्तात्रिवृदामलकैःशृतंतोयम् । पाचनसारकमुक्तंमुनिभिर्जीर्णज्वरेसामे । इतिआरोग्यपञ्चकद्वयम् ॥ ८५ ॥

संशोधनका वर्णन ॥

अमलतास पीपलामूल मोथा कुटकी और हड़ इनसबका क्काथकरके आम तथा शूलयुक्त कफ वात तथा पित्तके ज्वर में देना चाहिये यह दीपन और पाचकहै यह आरग्वधादि क्काथ कहलाताहै और भी कहागया है कि हड़ अमलतास कुटकी निशोथ और आंवला इनके द्वारा औटायाहुआ जल पाचन और दस्तावर कहागयाहै यह आम सहित जीर्णज्वर में देना चाहिये यहदो आरोग्य पंचक कहलाते हैं ॥ ८५ ॥

अनन्तावालकंमुस्तनागरंकटुरोहिणी । पिष्ट्वासुखाम्बुनाकल्कंपाययेदक्षसंमितम् ॥ कल्कःस्वल्पेनकालेनहन्यात्सर्व्वज्वरामयान् । विदध्यात्कोष्ठसंशुद्धिंदापयेच्चहुताशनम् ॥ अनन्तासारिवासारिवादिकल्कः ॥ ८६ ॥

सारिवा सुगन्ध वाला मोथा सोंठ और कुटकी इनसबको पीसकर कुछ गरमजल के साथ तोले भर कल्क पिलावै यह थोड़ेही कालमें संपूर्ण ज्वरोंका नाशकरताहै और कोष्ठको शुद्ध करके अग्निको दीप्त करता है इति सारिवादि कल्क ॥ ८६ ॥

संशोधनंसंशमनंचयेषांनिषिद्धंतानाह ॥

पीताम्बुर्लङ्घितःक्षीणोऽजीर्णीभुक्तःपिपासितः । नपिबेदौषधंजन्तुःसंशोधनमथेतरत् ॥ पीताम्बुःपीततिक्ताम्बुःभुक्तोभुंक्तवानित्यर्थः । अत्राध्यवसितादित्वात्कर्तरिक्तप्रत्ययः इतरत्संशमनं ॥ ८७ ॥

जिनको शोधन और शमनका निषेधहै उनका वर्णन ॥

तिक्त जल पिये हुए लंघन किये हुए क्षीण अजीर्णवाला भोजनकिया हुआ और प्यासा इनसब को शोधन और शमन औषधका निषेधहै ॥ ८७ ॥

त्रिफलारजनीयुग्मंकण्टकारीयुगंशटी । त्रिकटुग्रन्थिकंमूर्वागुडूचीधन्वयासकः ॥ कटुकापर्पटोमुस्तंत्रायमाणाचवालकम् । निम्बःपुष्करमूलञ्चमधुयष्टीचवत्सकः ॥ यवानीन्द्रयवोभार्गीशिग्रुबीजंसुराष्ट्रजा । वचात्वक्पद्मकोशीरचन्दनातिविषावलाः ॥ शालिपर्णीपृष्टिपर्णीविडङ्गन्तगरंतथा । चित्रकंदेवकाष्ठञ्चचव्यंपत्रंपटोलजं ॥ जीवकर्षभकौचे

वलवङ्गंवंशलोचनम्। पुण्डरीकञ्चकाकोलीपत्रकंजातिपत्रकम्॥ तालीसंपत्रमेतानिसम भागानिचूर्णयत्। अर्द्धांशंसर्व्वचूर्णस्यकिरातंप्रक्षिपेत्सुधीः॥ एतत्सुदर्शनंनामचूर्णंदोष त्रयापहम्। ज्वरांश्चनिखिलान्हन्तिनात्रकार्य्याविचारणा॥ दोषजागन्तुकांश्चापिधातु स्थानविषमज्वरान्। सन्निपातोद्भवांश्चापिमानसानपिनाशयेत्॥ शीतादीनपिदाहादी न्मोहंतन्द्रांभ्रमंतृषाम्। कासंश्वासञ्चपाण्डुञ्चहृद्रोगंकामलामपि॥ त्रिकपृष्ठकटीजानु पार्श्वशूलंनिवारयेत्। शीताम्बुनापिबेदेतत्सर्व्वज्वरनिवृत्तये॥ सुदर्शनंयथाचक्रंदानवा नांविनाशनम्। तथाज्वराणांसर्वेषांचूर्णमेतत्प्रणाशनम्। पुष्करमूलाभावेतुकुष्टमपिदद्या त्भार्गीभावेकण्टकारीमूलम्। सौराष्ट्र्यभावेस्फटिकांदद्यात्। तगरालाभेकुष्टंदेयंजीवक र्षभकयोरलाभेविदारीकन्दस्यभागद्वयंदद्यात् पुण्डरीकंश्वेतकमलंकाकोल्यभावेऽश्वग न्धामूलंतालीसपत्रकाभावेस्वर्णतालीसप्रदीयतइति। अथवाकण्टकारीजटादेया (इ तिसुदर्शनचूर्णम्)॥ ८८॥

हड़ बहेड़ा आमला हल्दी दारुहल्दी दोनों भटकटैया कचूर सोंठ मिर्च पीपल पीपलामूल मरोरफली गिलोय धमासा कुटकी पित्तपापड़ा मोथा त्रायमाण सुगन्धवाला नींबकीछाल पुष्करमूल मूलहठी कुरैया अजवाइन इन्द्रयव भारंगी सहजनके बीज सोरठीमट्टी बच दालचीनी पद्माक खस चन्दन अतीस वरियारा शालिपर्णी पृष्ठपर्णी वायविडंग तगर चीता देवदारु चव्य परवलकेपत्ते जीवक ऋषभक लौंग वंशलोचन श्वेतकमल काकोली तेजपात जावित्री और तालीस इनसबको समभाग लेकर चूर्णकरे फिर सब चूर्णका आधा चिरायता मिलावे यह सुदर्शननाम चूर्ण त्रिदोषनाशक और संपूर्ण ज्वरोंका मूल नाशकहै यह दोष जनित आगन्तुक धातुओं में स्थित विषमज्वर सन्निपातज्वर मानसज्वर शीत अथवा दाहादिकेज्वरोंका नाशक और प्रमेह तन्द्रा भ्रम तृषा खांसी श्वास पांडु हृदय के रोग कामला त्रिकशूल पीठकी पीड़ा कमरकी पीड़ा घुटनोंकी पीड़ा और पसलीकी पीड़ाकी नाशकरता है संपूर्ण ज्वरोंके नाशकरनेके लिये शीतल जलके साथ इसका पान करना चाहिये जैसे सुदर्शन चक्र दैत्योंका नाश करताहै इसीप्रकार यह सुदर्शन चूर्णभी संपूर्ण ज्वरोंको नाशकरता है इसचूर्णमें पुष्करमूलके अभावमें कूट भारंगीके अभाव में भटकटैयाकी जड़ सोरठीमिट्टी के अभावमें फिटकरी तगरके अभावमें कूट जीवकऋषभकके अभावमें विदारीकन्दके दोभाग काकोलीकेअभाव में असगंध की जड़ तालीसके अभावमें स्वर्ण तालीस अथवा भटकटैयाकी जड़ देनी चाहिये इति सुदर्शन चूर्णम्॥ ८८॥

निम्बपत्रवराव्योषजवानीलवणत्रयम्। क्षारोद्वयब्धिरामेषुत्रिनेत्रक्रमशोंऽशकान्॥ सर्वमेकीकृतंचूर्णंप्रत्यूषेभक्षयेन्नरः। एकाहिकंद्व्याहिकञ्चतथात्रिदिवसज्वरम्॥ चातु र्थकंमहाघोरांसततंसन्ततंदिवा। धातुस्थञ्चत्रिदोषोत्थंज्वरंहन्तिनसंशयः॥ निम्बा दिचूर्णम्॥ ८९॥

नींबकी पत्ती १० भाग हड़ बहेड़ा आमला तीनभाग सोंठ मिर्च पीपल ३ भाग अजवाइन ५ भा० सेंधा काला तथा बिटनोन ३भा० और सज्जी तथा जवाखार २ भाग इनसबकोचूर्ण करकेप्रातःकाल

खाय यह एकाहिक द्याहिक त्र्याहिक अत्यन्तघोर चातुर्थिक सतत संतत धातुस्थ और त्रिदोष-जनित ज्वरको नाशकरताहै इति निंबादिचूर्णम् ॥ ८९ ॥

शटीनिशाद्वयंदारुशुण्ठीपुष्करमूलकम् । एलागुडूचीकटुकापर्पटश्चयवासकः ॥ शृंगीकिराततिक्तश्चदशमूलीतथैवच । क्वाथमेषांपिवेत्कोष्णंसिन्धुचूर्णयुतन्नरः ॥ ज्वरान्सर्वान्नद्रुतंहन्तिनात्रकार्याविचारणा (इतिशट्यादिक्वाथः) अनुभूतमिदम् ९० ॥

शट्यादि क्वाथ ॥

कचूर हल्दी दारुहल्दी देवदारु सोंठ पुष्करमूल इलायची गिलोय कुटकी पित्तपापड़ा धमासा काकड़ासिंगी चिरायता और दशमूल इनसबका क्वाथ सेंधानोन डालकर कुछ गरम २ पिये यह संपूर्ण ज्वरोंको नाशकरताहै इसमें किसी प्रकारका भी संदेह नहींहै यह अनुभव किया हुआ है ॥ ९० ॥

हरीतकीत्रवृद्द्वदारकाणांपृथग्भवेत् । पलद्वयंकणाशुण्ठीगुडूचीगोक्षुरीवरी ॥ सहदेवीविडंगंचप्रत्येकम्पलसम्मितम् । मधुनावटिकांकृत्वाखादेज्ज्वरमपोहति ॥ कासंश्वासंमलस्तम्भवह्निमान्द्यंनियच्छति (इतिहरीतक्यादिगुटी) अनुभूतम् ९१ ॥

हरीतक्यादि गोली ॥

हड निसोथ और विधारा यह सब दो२ पल पीपल सोंठ गिलोय गोखरू शतावर सहदेई और वायविड़ंग यहसब एक२ पल इन संपूर्ण औषधियोंको पीसकर सहतकेसंग गोली बनावे इसके खाने से ज्वर खांसी श्वास मलका रुकना और मंदाग्निका नाशहोताहै यह अनुभव कियाहुआहै ॥ ९१ ॥

लाक्षादशाक्षात्वरुणापङ्क्षासचन्दनंलोहितचन्दनंच । त्वक्पत्रकंवारिसुरासमुस्ता प्रत्येकमेतानिपलोन्मितानि ॥ किराततिक्तात्रिवृतासतिक्ताऽमृताकणापर्पटकण्टकार्यो । विडङ्गविश्वामलकानिवासारसानिशावीरणसिन्दुवाराः ॥ एतानिदेयानिपृथक्पलार्द्धमानानिसर्व्वाणिचभेषजानि । कल्कानमीषांविदधीतगव्यदुग्धेनवैसार्द्धतुलामितेन । तैलंतिलानान्तुतुलानुमानं तेनैवकल्केनशनैःपचेच्च ॥ हन्याज्ज्वरांस्तैलमिदंसमस्तान् कुर्य्याद्बलंवीर्यमतीवपुष्टिम् । विमर्द्दनादाशुपरिश्रमंश्रमंशमंनयेत्संजनयेत्द्युतितनोः ॥ तथा व्यथामस्थिसमुद्भवामपिप्रहत्यनिद्रांसमुपार्जयेत्सुखम् ॥ अरुणामञ्जिष्ठावारिवालंरसा रास्ना । इतिलाक्षादितैलम् ९२ ॥

लाक्षादि तैल ॥

लाख १० तो० मजीठ ९तो० सफेद चन्दन लाल चन्दन दालचीनी तेजपात सुगन्धवाला मरोड़फली और मोथा यहसब चार २ तोले चिरायता निशोथ कुटकी गिलोय पीपल पित्तपापड़ा भटकटैया वायविडंग सोंठ आंवला वांसा रासना हल्दी खस और संभालू यहसब दो २ तोले इन संपूर्णऔषधियोंकाकल्क दोसौ तोले गौकादूध और चारसौ तोले तिलका तेल इनसबको विधिपूर्वक धीरे २ पाककरके सेवन करे यह तैल संपूर्ण ज्वरोंकानाशक बलवीर्य्य अत्यन्त पुष्टता और शरीरमें कान्तिकारी होताहै इसके मर्दनकरने से परिश्रम भ्रम और हड्डियोंकी पीड़ाका नाश होकर सुखपूर्वक निद्रा आती है ॥ ९२ ॥

के साथ सेवन करनेसे त्रिदोषज एकाहिक द्याहिक त्र्याहिक चातुर्थिक विषमज्वर और जीर्णज्वर का नाश होता है यह महाज्वरांकुश रस सर्वसंमतहै ॥ ९७ ॥

एकोभागोरसाच्छुद्धाच्छैलेयःपिप्पलीशिवा।आकारकरभोगन्धःकटुतैलेनसाधितः॥ फलानिचेन्द्रवारुण्याश्चतुर्भागमिताअमी। एकत्रमर्दयेच्चूर्णमिन्द्रवारुणिकारसैः॥ माषोन्मितांवटींकृत्वादद्यात्सद्योज्वरेबुधः। छिन्नारसानुपानेनज्वरघ्नीवटिकामता॥ शैलेयः छरइतिलोकेशिवाहरीतकी। आकारकरभःअकरकराइतिलोके। चतुर्भागमिताअमीशैलेयादयः। षट्समुदिताभागचतुष्टयमिताः॥ ज्वरघ्नीवटिकाशार्ङ्गधरे ॥ ९८ ॥

शार्ङ्गधरमें कहीहुई ज्वरनाशक गोली ॥

शुद्धपारा १ भा० छर पीपल हड़ अकरकरा कटुतेल में शोधी हुई गन्धक और इन्द्रायणके फल यह सब चारभाग इनसब औषधियोंको चूर्ण करके इन्द्रायण के रस में खरल करे और उर्द के बराबर गोली बांधे इस गोली को गिलोयके रसके साथ सेवन करनेसे नवीन ज्वरका नाशहोताहै ९८॥

रसगन्धश्चदरदंजैपालंक्रमवर्द्धितम्। दन्तीरसेनसंपिष्यवटीगुञ्जामिताभवेत्॥ प्रभातेसितयासार्द्धमसिताशीतवारिणा। एकेनदिवसेनैपानवज्वरहरीभवेत्॥ (इति ज्वरघ्नीवटिकारसरत्नप्रदीपे ॥ ९९ ॥

रसरत्नप्रदीप में कहीहुई ज्वरनाशक गोली ॥

पारा १ भाग गंधक २ भाग सिंदरफ ३ भागजमालगोटा ४ भाग इन सबको जमालगोटे के रस में पीसकर एक रत्ती की गोली बनावे फिर प्रातःकाल शक्कर के साथ अथवा शक्कर न होतो शीतल जलके साथ इसका सेवन करनेसे एकही दिनमें नवीन ज्वरका नाशहोताहै ॥ ९९ ॥

रसगन्धौविषंशुण्ठीपिप्पलीमरिचानिच। पथ्याविभीतकंधात्रीदन्तीबीजंचशोधितम्॥ चूर्णमेषांसमांशानांद्रोणपुष्पीरसैःपुटेत्। वटींमाषनिभांकुर्य्याद्भक्षयेन्नूतनेज्वरे॥ नवज्वरहरीवटी ॥ १०० ॥ नवीन ज्वर नाशकगोली ॥

शुद्धपारा शुद्धगन्धक शुद्धसींगिया सोंठ पीपल मिर्च हड़ बहेड़ा आंवला और शुद्ध जमालगोटा इन सबको समभाग लेकर चूर्णकर गूमाके रसमें खरलकरके पुटपाककरे फिरउर्दके समान गोली बनाय कर नवीन ज्वर में सेवनकरे ॥ १०० ॥

एकभागोरसोभागद्वयंशुद्धश्चगन्धकम्।गरलस्यत्रयोभागाचतुर्भागाहिमावती॥ जैपालकःपञ्चभागोनिम्बुद्रवविमर्दितः। कृमिघ्नप्रमितावत्यःकार्यासर्वज्वरच्छिदः॥ शृङ्गवेरेण दातव्या वटिकैकादिनेदिने। जीर्णज्वरेतथाऽजीर्णसमेवाविषमेतथा॥ ज्वरंसर्वंनिहन्तासो दावोवनमिवानलः॥ नवज्वरेरसः॥ १०१ ॥

नवीन ज्वर पर रस ॥

पारा १ भाग शुद्धगन्धक २ भाग विष ३ भाग मकोय ४ भाग और जमालगोटा ५ भाग इनसबको नींबूकेरसमें घोटकर बायविडंगके समान गोली बनावे फिर अदरकके रस के साथ एक गोली रोज खानेसे जीर्ण ज्वर आम सहित ज्वर और सम तथा विषम आदिक संपूर्ण ज्वरोंका नाशहोताहै जैसे दावाग्नि से वन का नाश होताहै उसी प्रकार यह भी संपूर्ण ज्वरों का नाशकरताहै ॥ १०१ ॥

अथसामान्यज्वरेरसाः ॥

शुद्धसूतंविषंगन्धंधूर्त्तबीजंत्रिभिःसमम् । चतुर्णांद्विगुणंव्योषचूर्णंगुञ्जाद्वयोन्मितम् ॥ आद्रकस्यरसेःकिंवाजम्बीरस्यरसैर्युतम् । महाज्वरांकुशोनाम्नासर्वज्वरविनाशनः ॥ एकाहिकंद्व्याहिकञ्चत्र्याहिकञ्चचतुर्थकम् । विषमंवात्रिदोषंवाज्वरंहन्तिनसंशयः ॥ प्रक्रियाशुद्धपारदटङ्क १ शुद्धविषटङ्क १ शुद्धगन्धकटङ्क १ धत्तूरबीजटङ्क ३ त्रिकुटाप्रत्येक टङ्क ४ सर्वेषांचूर्णमतिसूक्ष्मंकर्तव्यम् । इतिमहाज्वराङ्कुशःसर्वज्वरेषु ॥ १०२ ॥

सामान्य ज्वर पर रस महाज्वरांकुश रस ॥

शुद्धपारा शुद्धविष शुद्धगन्धक यह सब एक २ भाग धतूरेके बीज ३ भाग और इनचारोंका दूना त्रिकटु का चूर्ण इन सब औषधियोंको चूर्ण करके अदरकके रस अथवा जंभीरी नींबूके रसके साथ दो रत्ती इस महाज्वरांकुश रस के सेवन करनेसे एकाहिक द्व्याहिक त्र्याहिक तथा चातुर्थिक विषम ज्वर और त्रिदोषज यह सब प्रकारके ज्वर निस्सन्देह नाशको प्राप्त होतेहैं ॥ १०२ ॥

सूतंगन्धंविषंचैवटङ्कणंचमनःशिलाम् । एतानिटङ्कमात्राणिमरिचंत्वष्टटङ्ककम् ॥ कटुत्रयंटङ्कषट्कंखल्लेक्षिप्त्वाविचूर्णयेत् । रसःश्वासकुठारोऽयंसर्वज्वरहरःपरः ॥ इति श्वासकुठारोरसः श्वासेसर्वज्वरेरसरत्नाकरे ॥ १०३ ॥

श्वास कुठाररस ॥

शुद्धपारा गन्धक विषसुहागा और मैनसिल यहसब चार२ मासे मिर्चबत्तीसमासे औरत्रिकुटाचौबीस मासे इन सब औषधियों को एक साथ पीसकर चूर्णकरे इस श्वास कुठार रसके सेवनसे श्वास और सब प्रकारके ज्वरोंका नाश होताहै ॥ १०३ ॥

दारुमूखांशिखिग्रीवांरसकञ्चपृथक्पृथक् । टङ्कत्रयानुमानेनगृहीत्वाकनकद्रवैः ॥ मर्द्दयेत्त्रिदिनंकार्य्यावटीचणकमात्रया । मरिचैरेकविंशत्यासप्तभिस्तुलसीदलैः ॥ खादे द्वटीद्वयंपथ्यंदुग्धभक्तंसशर्करम् । तरुणंविषमंजीर्णंहन्यात्सर्वज्वरंध्रुवम् ॥ दारुमूखा दारुमूसी शिखिग्रीवातुत्थंरसकञ्खपरिआप्रत्येकंस्यात् । टङ्क३धत्तूरपत्रस्यरसेनमर्द्दये त् ज्वरांकुशःसर्वज्वरेषु ॥ १०४ ॥

सम्पूर्णज्वरोंपर ज्वरांकुश रस ॥

दारुमूसी तूतिया और खपरिया यहसब तोले २ भर लेकर धतूरे के पत्तोंके रसमें तीन दिन तक खरलकरे फिर चनेके बराबर गोली बनाके इकीस कालीमिर्च और सात तुलसी दलोंके साथ दो गोली खाय और शक्कर सहित दूध भात का भोजनकरे इस से नवीन विषम तथा जीर्ण यह सब प्रकारके ज्वर निस्संदेह नाश को प्राप्त होते हैं ॥ १०४ ॥

नागरंकर्षमात्रञ्चटङ्कणंकर्षकद्वयम् । मरिचंसार्द्धकर्षंस्यात्तावद्दग्धवराटकम् ॥ विषं कर्षचतुर्थांशंसर्वमेकत्रचूर्णयेत् ॥ रसोहुताशनोनाम्नाखाद्योगुञ्जामितोज्वरे । इतिहुता शनोरसः ॥ १०५ ॥

हुताशनरस ॥

सोंठ १ तोला सुहागा २ तोला मिर्च १ तोला कौड़ीकी भस्म १॥ तोला और विष तीनमासे इन

लाक्षारससमंतैलंतैलान्मस्तुचतुर्गुणम्। अश्वगन्धानिशादारुकौन्तीकुष्ठाब्दचन्दनैः॥ समूर्वारोहिणीरास्नाशताह्वामधुकैःसमैः। सिद्धंलाक्षादिकंनामतैलमभ्यञ्जनादिना॥सर्व्वज्वरक्षयोन्मादश्वासापस्मारवातनुत्॥यक्षराक्षसभूतघ्नंगर्भिणीनांचशस्यते॥मस्तु दधिजलं॥कौन्तीरेणुका॥चन्दनमत्रश्वेतमेवनतुरक्तम्॥रोहिणीकटुका॥इतिलाक्षादि ९३॥

दूसरा लाक्षादि तैल॥

लाखके रसके समान तिलोंका तेल और उसका चौगुना दहीका तोड़ इनमें असगंध हल्दी देवदारु रेणुका कूट नागरमोथा श्वेतचन्दन मरोड़फली कुटकी रासना शतावर और मुलहठी इन सब समभाग औषधियों का कल्क छोड़कर विधिपूर्वक परिपाक करने से लाक्षादिनाम तैल बनताहै यह मर्दनादिकों से सब प्रकार के ज्वर क्षय उन्माद श्वास मृगी वात यक्ष राक्षस तथा भूतोंको नाश करताहै और गर्भिणी स्त्रियोंको अत्यन्त हितकारीहै॥ ९३॥

लाक्षाहरिद्रामाञ्जिष्ठाफेनिलंमधुकंबला। लामज्जकंचन्दनंचचम्पकंनीलमुत्पलम्॥ प्रत्येकमेषांपट्मुष्टीःपक्त्वातोयेचतुर्गुणे। चतुर्भागावशेषेतुगर्भेचैतत्समावपेत्॥ रेणुकापद्मकञ्चैववाजिगन्धातथैवच॥वेतसञ्चोरकंकुष्ठंदेवदारुनखंत्वचम्॥ शतपुष्पापुण्डरीकंमांसीमधुकमेवच। एभिरक्षमितैःकल्कैःकषायेणैवपेषितैः॥ मस्तुशुक्तारनालानामाढ़कांशंसमापयेत्। क्षीराढ़कसमायुक्तंतैलप्रस्थंविपाचयेत्॥ अभ्यंगात्तैलमेतद्धिशीघ्रंदाहमपोहति। व्यपोहतितथावातंपित्तश्लेष्मभवज्वरम्॥ सप्रलापंसतृष्णञ्चतालुशोषभ्रमान्वितम्। ग्रहोपसृष्टायेबालारक्षसःदूषिताश्चये॥ तेषांकष्टंप्रशमयेत्तैलंलाक्षादिकंमहत्। फेनिलंवदरी॥ लामज्जकमुशीरवत्पीतश्चितृणविशेषः॥लामज्जकंयदानस्यादुशीरन्दीयतेतदा। चम्पकमित्यस्यस्थानेकुत्रापिगैरिकमितिपाठः॥ नीलोत्पलस्यालाभेतुकुमुदंदेयमिष्यते। समावपेत्प्रक्षिपेदित्यर्थः॥ चोरकग्रन्थिपर्णस्यभेदोभटेउरइतिनेपालदेशेभवतितदलाभेग्रन्थिपर्णदेयम्। पुण्डरीकंश्वेतकमलम्॥ मस्तुदधिजलम्॥ शुक्तंसन्धानभेदः॥ आरनालःसोऽपिसन्धानभेदः। इतिमहालाक्षादितैलम्॥ ९४।

महालाक्षादि तैल॥

लाख हल्दी मजीठ बेर महुआ खरियारा लामज्जक (खसके समान पीला तृण विशेष इसके अभावमें खस डाली जातीहै) चन्दन चम्पा अथवा गेरू और नीलकमल (इसके अभावमें कोकाबेली छोड़ीजाती है) इन सब औषधियोंको चौबीस२ तोले लेकर चौगुने जल में पाक करे जब चौथाई रहजाय तब उतारले फिर इसमें रेणुका पद्माक असगंध वेत चोरक (यह कुकुरोंधेका भेद भटेउर नामसे नेपालमें प्रसिद्धहै इसके अभावमें कुकुरोंधा लेना चाहिये) कूट देवदारु नख दालचीनी सौंफ श्वेत कमल जटामासी और मुलहठी इन सब तोले२ औषधियोंका कषायके द्वारा पिसा हुआ कल्क दहीका तोड़ दोसौ छप्पन तोले सिरका दोसौ छप्पन तोले आरनाल दोसौछप्पन तोले दूध दोसौ छप्पनतोले और तिलका तेल चौंसठ तोले मिलाके पाककरे इसतेलके लगानेसे शीघ्रही दाहका नाश होताहै और प्रलापतृषा तालूका सूखना तथा भ्रम सहित वात पित्त कफसे उत्पन्न ज्वर

नाशको प्राप्त होताहै यह महा लाक्षादि तैल ग्रहोंसे दूषित बालक और राक्षसों से पीड़ित होनेवालेके कष्टको दूरकरता है ॥ ९४ ॥

अथ नवज्वरेरसाः ॥

सूतोगन्धष्टङ्कणःशोषणश्चसर्वैस्तुल्याशर्करामत्स्यपित्तः। भूयोभूयोमर्दयेत्तत्त्रिरात्रं वल्लोदेयःशृङ्गवेरद्रवेण॥ तापेशीतंव्यञ्जनैस्तक्रभक्तंवृन्ताकाढ्यंपथ्यमेतत्प्रदिष्टम्। अह्ने वैग्रंहन्तिसद्योज्वरन्तुपित्ताधिक्येमूर्ध्नितोयंचदद्यात् ॥ अस्यप्रक्रियापाराशुद्धभाग १ गन्धकभाग १ सोहागाभृष्टभाग १ मरिचभाग १ शर्कराभाग ४ रोहितमत्स्यपित्तभाग ४ प्रतिदिनसर्वदिनत्रयंमर्दयेत्। रसमिमंरक्तिकात्रयमितमार्द्रकरसेनदद्यात्। ओदनं तक्रंवृन्ताकफलंभोक्तुंदद्यात् । व्यञ्जनाद्यैःशीतलमुपचारंकुर्य्यात्। उदकमञ्जरीरसो नवज्वरेषुरसरत्नप्रदीपे ॥ ९५ ॥

नवीन ज्वरपररस ॥

शुद्धपारा १ भाग गन्धक १ भाग सुहागा १ भाग मिर्च १ भाग और शकर ४ भाग इनसब औषधियों को चारभाग मछली के पित्तेके द्वारा तीन दिनतक बारंबार घोटे फिर तीनरत्ती यहरस अदरक के रसके साथ सेवन करने को देवे मट्ठा भात और बैंगन का पथ्यदेवे दाहमें व्यजन आदिकेद्वारा शीतल उपचार करे और पित्तकी अधिकतामें शिरपर जलछोड़े उसके सेवनसे एकहीदिनमें नवीन उग्रज्वर का नाश होताहै इति उदकमंजरी रस ॥ ९५ ॥

अद्यात्समंसूतसमुद्रफेणंहिंगुंसगन्धंपरिमृद्ययामम् । नवज्वरेवल्लयुगंत्रिघस्रमार्द्राम्भसाऽयंज्वरधूमकेतुः (अथप्रक्रिया) पाराशुद्ध गन्धक शुद्ध हिंगुलशुद्धसमुद्रफेणसमभागंसर्वयाममेकमार्द्रकरसेनसंमर्द्य रक्तिकाषट्कमितमार्द्रकरसेनदिनत्रयं नवज्वरीभक्षयेत् दिनत्रयान्नवज्वरोनश्येत् इतिज्वरधूमकेतुः ॥ रसेन्द्रचिंतामणौ ॥ ९६ ॥

रसेन्द्रचिन्तामणिमें कहाहुआ ज्वर धूमकेतुरस ॥

शुद्धपारा शुद्धगन्धक शुद्धसिंदरक और शुद्धसमुद्रफेन इन सबको समभाग लेकर अदरकके रसमें एक पहर घोटे फिर अदरक के रसकेसाथ छः रत्ती रस तीनदिनतक खाय तो इस धूमकेतु रससे नवीनज्वर का नाश होता है ॥ ९६ ॥

शुद्धसूतोविषंगंधःप्रत्येकंशाणसंमितः। धूर्त्तबीजंत्रिशाणंस्यात्सर्वेभ्योद्विगुणाभवेत्॥ हेमाह्वाकारयेदेषांसूक्ष्मंचूर्णंप्रयत्नतः । जम्बीरबीजकेर्देयंचूर्णंगुञ्जाद्वयोन्मितम्। आर्द्रकस्यरसेनापिज्वरंहंतित्रिदोषजम् । एकाहिकंद्व्याहिकञ्चत्र्याहिकञ्चचतुर्थकम् ॥ विषमञ्चज्वरंहन्यान्नवंजीर्णञ्चसर्व्वथा । महाज्वरांकुशोनाम्नारसोऽयंसर्व्वसम्मतः ॥ प्रक्रिया, शुद्धपाराशुद्धगन्धकशुद्धविष प्रत्येकंटङ्क १ धत्तूरबीजटङ्कं ३ चोकटङ्क १२ सर्व्वेषांचूर्णमतिसूक्ष्मंकर्त्तव्यम् (इतिमहाज्वरांकुशःसर्व्वज्वरेषुशार्ङ्गधरे) ॥ ९७ ॥

शार्ङ्गधरमें कहाहुआ संपूर्ण ज्वरोंपर महाज्वरांकुशरस ॥

शुद्धपारा शुद्धविष शुद्धगन्धक यहसब चार२ मासे धतूरेके बीज बारह मासे और चोक चारतोले इनसब औषधियोंका सूक्ष्म चूर्णकरे फिर दोरत्ती रस जंभीरी नींबूके रसके साथ तथा अदरकके रस

सब औषधियोंको एकसाथ चूर्णकरे यह हुताशन नाम रस ज्वरमें एक रत्ती खानाचाहिये ॥ १०५ ॥

शुद्धजैपालटंकतुकट्वीटंकद्वयोन्मितम् । गैरिकंटंकमेकञ्चकन्यानीरेणमर्दयेत् ॥ कला यसदृशीकार्य्यावटिकाताञ्चभक्षयेत् ॥ शीतलेनजलेनैववटीजीर्णज्वरापहा । इतिज्वर घ्नीवटिका ॥ १०६ ॥

ज्वरनाशक गोली ॥

शुद्ध जमालगोटा ४ मासे कुटकी आठ मासे और गेरू ४ मासे इन सबको घीकुआरके रस में घोटकर मटरके समान गोली बनावे इस गोली को शीतल जल के साथ सेवन करने से जीर्णज्वर का नाश होताहै ॥ १०६

द्विभागतालेनहतंचताम्रंरसंचगन्धंचसमीनमायुः । विषंसमंचद्विगुणञ्चताम्रंत्रिः सप्तवारेणदिवाकरांशो॥विमर्द्यचारिष्टरसेनचूर्णगुञ्जैकदत्तंसितयासमेतम्। ज्वराकुंशोऽयं रविसुन्दराख्योज्वरान्निहन्याष्टविधानसमस्तान् ॥ अस्यप्रक्रियापाराटंक १ गन्धटङ्क १ विषटङ्क १ द्विगुणतालकहतताम्रटङ्क २ रोहूमत्स्यकेपित्तटङ्क १ सर्वमेकत्रचूर्णयित्वानि म्बपत्ररसेभावयित्वाउष्णे संशोष्यरत्तिकामात्र १ श्वेतशर्करयाभक्षणीयं सर्वज्वरेरवि सुन्दरोरसः १०७॥

सब ज्वरोंपर रविसुन्दर रस ॥

दूनी हरतालके द्वारा माराहुआ तांबा ८ मासे शुद्धपारा गंधक विष और रोहू मछलीका पित्ता यह सब चार ४ मासे इन सब औषधियों को एकसाथ पीसकर नींबके पत्तों के रससे धूपमें सुखा सुखा कर २१ भावनादेवे फिर श्वेत शक्करके साथ एक रत्ती इस रविसुन्दर रसको खाय तो आठों प्रकारके सब ज्वरोंका नाशहोताहै ॥ १०७ ॥

शुद्धसूतंतथागन्धंखल्वेताबद्धिमर्दयेत् । सूतनदृश्यतेयावत्किन्तुतत्कज्जलंभवेत् ॥ एषाकज्जलिकाख्याताबृंहणीवीर्य्यवर्द्धिनी॥नानानुपानयोगेनसर्वव्याधिविनाशिनी१०८॥

शुद्धपारा और शुद्ध गन्धकको समभाग लेकर तबतक खरलकरे जबतक कि पारा और गन्धक मिलकर कजली न होजाय यह कजली धातु तथा वीर्यवर्द्धक और अनेक प्रकारोंके अनुपानोंके योग से सम्पूर्ण रोगों की नाशक होती है ॥ १०८ ॥

कज्जलिकाविधानंतद्गुणाश्चरसरत्नप्रदीपे ॥

जपापत्ररसेनाथवर्द्धमानरसेनच । भृङ्गराजरसेनापिकाकमाच्यारसेनच ॥ रसंसंशो धयेत्तेनतत्समंशोधयेद्बलिम् । भृङ्गराजरसेःपिष्ट्वाशोषयेदर्करश्मिभिः ॥ सप्तधावात्रिधा वापिपश्चाच्चूर्णन्तुकारयेत् । चूर्णयित्वासमंतेनरसेनसहमर्दयेत् ॥ नष्टसूतंयदाचूर्णंभ वेत्कज्जलसन्निभम्। निर्धूमबदरांगारेद्रवीकुर्य्यात्प्रयत्नतः ॥ तत्रतंमाहिषीविष्ठास्थापि तेकदलीदले । निक्षिपेत्तदुपर्य्यन्यत्पत्रंदत्वाप्रपीड़येत् ॥ शीतलञ्चततःपत्रात्समुद्धृत्य विचूर्णयेत् । एवंसिद्धाभवेद्व्याधिघातिनीरसपर्पटी ॥ ज्वरादिव्याधिभिर्व्याप्तंविश्वंदृ ष्ट्वापुराहरः । चकारकृपयायुक्तःसुधावद्रसपर्पटीम्। रत्तिकासंमितातावद्भ्रष्टजीरकसंयु ताम्॥ गुञ्जार्द्धभ्रष्टहिंग्वाढ्यांभक्षयेद्रसपर्पटीम् । रोगानुरूपभैषज्यैरर्पितांभक्षयेद्बुधः ॥

पिवेत्तदनुपानीयंशीतलञ्चुलुकत्रयम् । प्रत्यहंतस्यचैकैकांरत्तिकांवर्द्धयेद्भिषक् । नाधिकांदशगुञ्जातोभक्षयेत्तांकदाचन ॥ एकादशदिनारम्भात्तांत्वष्टौवापकर्षयेत् । एवमेतांसमश्नीयान्नरोविंशतिवासरान् ॥ शिवंगुरूंस्तथाविप्रान्पूजयित्वाप्रणम्यच । श्रद्धया भक्षयेदेतांक्षीरमांसरसाशनः॥ ज्वरञ्चग्रहणींवापितथातीसारमेवच । कामलांपाण्डुरोगञ्चशूलप्लीहजलोदरम् ॥ एवमादीन्गदान्हत्वाहृष्टःपुष्टश्चवीर्य्यवान् । जीवेद्वर्षशतंसाग्रंवलीपलितवर्ज्जितः ॥ इतिरसपर्पटी ॥ १०९ ॥

रसरत्नप्रदीप में कजलीकी विधि और गुण ॥

गुड़हरके पत्तोंका रस रेंड़ीके पत्तोंका रस भंगरेका रस और काकमाचीका रस इनसे पारेको शुद्ध करके पारेके समान गन्धकको शुद्ध करके भंगरेके रससे पीस२ कर सात बार अथवा तीन बार धूप में सुखावे फिर पारे और गन्धककी कजली करे और धूम रहित बेरीकी लकड़ीके कोयलोंपर उस कजलीको गलाकर भैंसके गोबरपर रक्खे हुए केलेके पत्तेपर डाले फिर उसके ऊपर दूसरा पत्ता डालकर दबादे इसके उपरान्त शीतल होजानेपर उसको पत्तेसे निकालकर पीसले इस प्रकार सम्पूर्ण रोगनाशक रस पर्पटी सिद्ध होतीहै पूर्वकालमें ज्वरादि रोगोंसे सम्पूर्ण संसारको व्याकुल देखकर श्री शिवजीने कृपाकरके यह रस पर्पटी बनाईथी प्रथम दिन एक रत्ती पर्पटी रसको एकरत्ती भुने जीरे और आधी रत्ती भुनी हींगके साथ खाय पंडित लोग रोगके अनुसार औषधियोंके साथ इसको सेवन करें और औषध खानेके उपरान्त तीन चुल्लू जल पियें वैद्यको चाहिये कि इसकी एक २ रत्ती रोज बढ़ाताजाय परन्तु दश रत्तीसे अधिक कभी न बढ़ावे फिर ग्यारहवें दिनसे इसी प्रकार एक २ रत्ती घटाताजाय इस रीतिसे बीस दिन तक रस पर्पटीका सेवन करे श्रीशिवजी गुरू और ब्राह्मणोंको पूजन तथा नमस्कार करके श्रद्धापूर्वक इस रसका सेवन करना चाहिये इसके साथ दूध और मांसके रसका सेवन करे इसके सेवनसे ज्वर ग्रहणी अतीसार कामला पांडु शूल प्लीहा तथा जलंधर आदि रोगोंसे छूटकर झुर्री तथा बालोंकी श्वेततासे रहित होके हृष्टपुष्ट होकर सौवर्षतक जीताहै इतिरस पर्पटी ॥ १०९ ॥

अथ ज्वरिणोऽन्नदानसमयस्तत्रचरकः ॥

क्षुत्सम्भवतिपक्वेषुरसदोषमलेषुच । कालेवायदिवाऽकालेसोऽन्नकालउदाहृतः ॥ (अन्यच्च) आमेपाकंगतेनॄणांयदाभोजनलालसा । भवेत्कालेह्यकालेवासोऽन्नकाल उदाहृतः ॥ (तत्रकालमाह) ज्वरस्यपाकावस्थानदानकालः ॥ ११० ॥

ज्वरवालेको अन्नदेनेका समय ॥

इसमें चरकने कहाहै कि रसदोष तथा मलोंके परिपाक होनेपर क्षुधा लगतीहै इसीलिये समय हो अथवा असमयहो वही अन्नका समय कहागयाहै और भी कहागयाहै कि समय अथवा असमय पर आमके परिपाक होनेसे मनुष्योंको जब क्षुधालगे वही भोजनका समयहै वह काल यहकहागया है कि ज्वरकेपाक होनेकी अवस्था अन्नदेनेका समयहै ॥ ११० ॥

ज्वरस्यपाककालश्च ॥

वातिकःसप्तरात्रेणदशरात्रेणपैत्तिकः । श्लैष्मिकोद्वादशाहेनज्वरःपाकमुपैतिहि ॥

ज्वरस्यपाकउपशमः ज्वरपाकेनैवरसपाकोदोषपाकोऽपिकथितः यथादोषपाकंविनाज्वरपाकोनभवतिरसपाकंविनादोषपाकश्चनभवति। ननुयथापैत्तिकज्वरो । दशाहोरात्रेणपाकंयाति । एकादशदिनेऽन्नंदीयते । यथाश्लैष्मिकोज्वरोद्वादशाहोरात्रेणपाकंयाति । त्रयोदशेदिवसेऽन्नंदीयते । तथावातिकोज्वरः सप्ताहोरात्रेणपाकंयातिअष्टमेदिवसेऽन्नं कथंनंदीयते। कथंसप्तमएवदिवसेऽन्नंदीयतेइतिउच्यते ॥ १११ ॥

ज्वर के परिपाक होने का समय॥

वातज्वर सात रात्रिमें पित्तज्वर दशरात्रिमें और कफज्वर बारह दिनमें परिपाक अर्थात् शान्ति को प्राप्त होता है यहां ज्वर के परिपाक कहने से रसतथा दोषोंका भी परिपाक कहागया यह जानना चाहिये क्योंकि दोषों के पाक के विनाज्वर का पाक नहीं होता और रस के पाक हुये बिना दोषों का पाक नहीं होता अबयह सन्देह होता है कि जैसे पित्तज्वर दशरात्रि में पाकको प्राप्त होता है ग्यारहवें दिन अन्न दिया जाताहै,औरकफ ज्वर बारह रात्रिमें पाकहोकर तेरहवें दिन अन्नदिया जाता है इसी प्रकार वात ज्वर सातरात्रि में परिपाक होताहै तो आठवें दिन अन्नक्यों नहीं दिया जाता सातवें ही दिन क्यों दियाजाता है ॥ १११ ॥

कफपित्तेद्रवेधातूसहेतेलंघनंबहु । आमक्षयादूर्ध्वमपिवायुर्नसहतेक्षणम् ॥ इति वचनादामरसपाकेजातेआहारलाभंविनावायुः क्षणमात्रमपिसोढुंनशक्नोति सचआशुकारित्वात् क्षणादाक्षेपकादीन्विकारान्सञ्जनयति । अतोवातिकेज्वरेपाकदिनानामन्तिमे। सप्तमएवदिनेऽन्नंदीयते ॥ ११२ ॥

इसका उत्तर यहहै कि कफ और पित्त यह पतली धातुहैं इसीसे यह बहुत लंघन सहसकी हैं परन्तु वात आमके परिपाक होने के उपरान्त क्षण भरभी लंघन को नहीं सहसकी है इस वचनसे यह ज्ञात होता है कि आमरसके परिपाक के उपरान्त वात क्षण भरभी आहारके बिना नहींरहसकी है और शीघ्रकारी होने के कारण क्षणभरही में आक्षेपादिक रोगोंको उत्पन्न करती है इसलिये वात ज्वर के परिपाक के दिनों के अन्तके सातवें ही दिनअन्न दियाजाताहै ॥ ११२ ॥

(तथाच धन्वन्तरिः) ज्वराभिभूतःषडहेव्यतीते विपक्वदोषःकृतलङ्घनादिः। योभेषजं खादतिवैद्यवश्योनिःसंशयंहन्त्यचिरात्मरोगान् ॥ ज्वराभिभूतःवातज्वराभिभूः विपक्वदोषःपक्ववातःकृतलङ्घनादिः । आदिशब्दातकृतपक्वजलपान निर्वातगृहवासगुरूष्णवसनधारणादिः भेषजमित्यन्नस्याप्युपलक्षणम्। (अतएवाह चरकः) ज्वरितंषडहेऽतीते लघ्वन्नंप्रतिभोजितम्। पाचनंशमनीयंवा कषायंपाययेत्तुतम् इति ॥ ज्वरितंवातज्वरिणम्। पडहेऽतीतइत्युपलक्षणम् । पित्तज्वरिणं दशाहेऽतीते । श्लेष्मज्वरिणं द्वादशाहेऽतीते। लघ्वन्नंभोजितंज्वरिणम् ॥ ११३ ॥

और धन्वन्तरि ने कहा है कि लंघनादिक (आदिशब्दसे पक्केजलका पीना वायु रहित स्थानमें रहना और भारी तथा उष्ण वस्त्र का धारण करना आदिक लियेजातेहैं) कियेहुए परिपाकहुएवात वाला वातज्वर छ:दिनके व्यतीत होजानेपर वैद्यके वशीभूतहोकर जो औषध तथा अन्नादि का सेवन

करताहै वह निस्सन्देह ज्वरका नाश करताहै चरकने कहाहै कि वात ज्वर वाले को छःदिनके उपरान्त पित्त ज्वर वालेको दश दिनके उपरान्त और कफ ज्वर वालेको बारहदिनके उपरान्त हलकाअन्न भोजन कराकर पाचन अथवा शमन कषाय पानकरावे ॥ ११३ ॥

सज्वरंज्वरमुक्तम्वादिनान्तेभोजयेल्लघु । गुर्वभिष्यन्द्यकालेच ज्वरीनाद्यात्कथञ्चन॥ दिनान्तेऽंतशब्दोऽत्र मध्यवाचीतेनत्रिधा विभक्तस्यदिवसस्यमध्यभागे पित्तस्यप्राधान्यसमये। उक्तञ्च वाग्भटेन॥ तेव्यापिनोऽपिहृन्नाभ्यो रधोमध्योर्ध्वसंश्रयाः। वयोऽहोरात्रभुक्तानान्तेऽन्तमध्यादिमाःक्रमात् ॥ तेवातपित्त श्लेष्माणः ॥ ११४ ॥

ज्वर युक्त अथवा ज्वर रहित मनुष्यको दिनके अन्त में हलका भोजन करावे और भारी तथा अभिष्यन्दी वस्तु अथवा अकालमें ज्वर वालेको भोजन न कराना चाहिये यहाँ अंत शब्दका अर्थ मध्य है इसलिये दिनके तीनभाग करके पित्तकी प्रधानता वाले मध्य भागमें भोजन देना चाहिये और वाग्भटने भी कहाहै कि वात पित्त और कफ यह व्यापक होने परभी क्रमसे हृदयतथा नाभि के नीचे मध्यमें तथा ऊपर स्थितरहते हैं और अवस्था दिनरात्रि तथा भोजन के अन्त मध्य और आदिमें प्रबल होते हैं ॥ ११४ ॥

पित्तकालोऽपिमध्याह्नादर्वाक् । यतआह ॥ याममध्येनभोक्तव्यं याममुग्मंनलङ्घयेत्। याममध्येरसोत्पत्तिर्यामयुग्माद्बलक्षयः ॥ एतत्संख्य परमितिचेत्तन्नयत आह । श्लेष्मक्षयेप्रवृद्धोष्मा बलवाननलस्तदा । वेगापायेऽन्यथातद्धि ज्वरवेगाभिवर्द्धनम् ॥ तदापित्तप्राधान्यसमये अन्यथा उक्तसमयादन्यथा वेगापाये जठराग्निवेगनाशे तद्भोजनं ज्वरवेगाभिवर्द्धनं भवतीत्यर्थः ॥ ११५ ॥

पित्तके समयमें भी मध्याह्नसे पहले भोजनकरना चाहिये क्योंकि कहागया हैकि पहले पहरके भीतर और दोपहरके उपरान्त भोजन न करे क्योंकि पहले पहरमें रसकी उत्पत्ति होतीहै और दोपहरके उपरान्त बलका नाशहोताहै यह संख्याके लिये कहागयाहै इसका सन्देह नहीं करना चाहिये क्योंकि कहागया है कि ऊष्माके बढ़नेसे कफका क्षयहोजाने पर अग्नि बलवान्होती है इससे पित्तकी अधिकताके समय भोजन अवश्य देनाचाहिये नहीं तो जठराग्निके वेगके नाशहोजाने पर भोजनदेने से ज्वरका वेगबढ़ता है ॥ ११५ ॥

अत्र विषमज्वरिणोऽन्नदानकाल विशेषमाह चरकः ॥

सर्वज्वरेषुसप्ताहं मात्रावल्लघुभोजयेत् । वेगापायेऽन्यथा तद्धि ज्वरवेगाभिवर्द्धनम् ॥ सर्वज्वरेषुसर्वविषमज्वरेषुवेगापाये ज्वरवेगापाये भोजयेत् । अन्यथा ज्वरवेगापायेविनातद्भोजनं ज्वरवेगाभिवर्द्धनं भवति ॥ ११६ ॥

विषमज्वरमें अन्नदेनेका विशेषसमयचरकने कहाहै ॥

सब प्रकारके विषम ज्वरमें ज्वरके वेगके शान्तहोजाने पर सातदिनतक मात्राके अनुसार हलका भोजनदेना चाहिये और ज्वरके वेगके शान्तहुए विना भोजनदेने से ज्वरका वेगबढ़ताहै ॥ ११६ ॥

अथान्नग्रहणाय स्थानमाह ॥

आहारनिर्हारविहारयोगाः सदैवसद्भिर्विजनेविधेयाः । इति ॥ ११७ ॥

भोजनकरनेका स्थान ॥

सज्जन लोग आहार मलमूत्रका त्याग और विहार सदैव निर्जन स्थानमें करें ॥ ११७ ॥

अत्यबलस्य ज्वरितस्य भोजनायोपवेशनप्रकारमाह सुश्रुतः ॥

ज्वरेप्रमेहोभवतिस्वल्पैरपिविचेष्टितैः । निषण्णंभोजयेत्तस्मान्मूत्रोच्चारौचकारयेत् ॥ निषण्णंयथास्थानस्थितमेव नतुस्थानान्तरं नीतम् ॥ ११८ ॥

अत्यन्तनिर्बलज्वरवालेको सुश्रुतका कहाहुआभोजनकेलिये बैठनेकाप्रकार ॥

ज्वरमें थोड़ीभी चेष्ठाकरनेसे मोह उत्पन्न होताहै इसलिये उसको अन्य स्थानमें न लेजाकर जिस स्थानमें बैठाहो उसी स्थानमें भोजन करावे और मल मूत्रका त्यागभी वहीं करावे ॥ ११८ ॥

अन्नग्रहणसमये प्रथमं ज्वरितेनकवलः कर्त्तव्य इत्याह ॥

यथादोषोचितैर्द्रव्यैः कर्त्तव्यःकवलग्रहः । अरोचकास्यवैरस्य मलपूतिप्रसेकहृत् ॥ भृष्टजीरकचूर्णेन सिंधुजन्मयुतेनच । जिह्वादंतान्मुखस्यान्तर्घृष्ट्वाकवलमाचरेत् ॥ मुखे मलंविगन्धत्वं विरसत्वंचनश्यति । मनःप्रसन्नंभवति भोजनेऽतिरुचिर्भवेत् ॥ ११९ ॥

भोजनके समय ज्वरवालेको प्रथम कवलका ग्रहण करना चाहिये ॥

ज्वरवाला दोषके अनुसार औषधियोंके द्वारा कवलका ग्रहण करे इससे अरुचि मुखकी विरसता मैल दुर्गन्धि और लार बहना आदिक नष्ट होतेहैं भुनाहुआ जीरा सेंधानोन मिलायके चूर्णकरे उसके द्वारा जिह्वा दांत और मुखके मध्यमें रगड़कर पूर्वोक्त विधिके अनुसारकवलके ग्रहणकरने से मुखका मल दुर्गन्ध तथा विरसताका नाश और मनकीप्रसन्नता तथा भोजनमें रुचि होतीहै ११९॥

ज्वरितोहितमश्नीयाद्यद्यप्यस्यारुचिर्भवेत् । अन्नकालेह्यभुञ्जानःक्षीयतेम्रियतेऽपि च ॥ अयमर्थः। यद्यपिज्वरितस्याहितेभक्ष्येऽरुचिर्भवेत्। तथापिज्वरितोहितमेवाश्नीयादितिनियमः (यतआहसुश्रुतः) गुर्वभिष्यन्दिकालेचज्वरीनाद्यात्कथञ्चन । नतुतस्याहितंभुक्तमायुषेवासुखायच ॥ आनद्धस्तिमितैर्दोषैर्यावन्तंकालमायुषः । तावत्कालंसलघ्वन्नमश्नीयात्सविरक्तवत् ॥ आनद्धःस्तिमितैर्दोषैःअपक्वैर्दोषैर्व्यातइत्यर्थः । ननुहितेवस्तुनिकथमरुचिःस्यादतआह ॥ सातत्यात्स्वाद्वभावाच्चपथ्यंद्वेष्यत्वमागतमिति । सातत्यादेकस्यैवभक्ष्यस्यसर्वदोपयोगात्स्वाद्वभावात्भक्ष्यान्तरादपिविस्वादुतः । पथ्यमप्रियंस्यात्तथापितदेवपथ्यम् ॥ कल्पनाविधिभिस्तैस्तैःप्रियत्वंगमयेत्पुनरिति । अथज्वरितोऽन्नकालेऽश्नीयादेवेतिद्वितीयोनियमःकुतइतिचेत्हियतहेतोःअभुञ्जानःक्षीयते ॥ पक्वदोषधातुर्भवतिततःम्रियतेऽपिच ॥ १२० ॥

ज्वरवाला मनुष्य हित भोजनमें अरुचि होनेपरभी हितकारीही भोजन करे अहितकारी न करे यह नियमहै भोजनके समय भोजन न करने से क्षीणता और मृत्युभी होती है सुश्रुतने कहाहै कि देरमें पचनेवाली और अभिष्यन्दी (दहीआदि) वस्तु और अकालमें भोजन ज्वरवाला त्यागकरदे

क्योंकि अहित भोजन आयु और सुखकारी नहींहोताहै रोगी जबतक परिपाक रहित दोषोंसे व्याप्त हो तबतक विरेचन वालेके समान हलका भोजनकरे हितकारी वस्तुमें अरुचि क्यों होती है इस सन्देहके दूरकरनेको कहते हैं कि निरन्तर एक भी वस्तुके खानेसे अथवा स्वादुके न होने से जो पथ्यमें अरुचि होजाय तो अनेक प्रकारकी भोजन बनानेकी विधियोंसे रोगीको फिर रुचि उत्पन्न करावे ज्वरवालेको भोजनके समय अवश्य भोजन करना चाहिये यह दूसरा नियमहै क्योंकिसमय पर भोजन न करनेसे दोष और धातुओंका परिपाक होकर क्षय होनेसे मृत्युतक होजाती है॥१२०॥

ज्वरितायहितान्यन्नादीन्याह ॥

रक्तशाल्यादयःशस्ताःपुराणाःषष्टिकैःसह। यवाग्वोदनलाजार्थेज्वरितानांज्वरापहाः॥ मुद्गान्मसूरांश्चणकान्कुलत्थान्समकुष्ठकान्। यूषार्थेयूषसात्म्यानांज्वरितानांप्रदापयेत् ॥ पटोलपत्रंवार्त्ताकुंकुलकंकारवेल्लकम्। कर्कोटकंपर्पटकंगोजिह्वांबालमूलकम्॥ पत्रंगुडूच्याशाकार्थेज्वरितानांज्वरापहे १२१ ॥

ज्वरवालेको हितअन्नादिक ॥

पुराने लाल धान्यादिक और साठी यह ज्वर नाशक होते हैं इसलिये ज्वर वालेको इनकी यवागू भात और खीलें श्रेष्ठ हैं मूंग मसूर चने कुलथी और मोठ इनका यूप ज्वर वालोंको देवे पर्वल के पत्ते बैंगन पर्वल करेला खिकसा पित्तपापड़ा गोभी कच्ची मूली और गिलोयकी पत्ती इन का शाक ज्वर वाले को ज्वर के नाश करने को देवे ॥ १२१ ॥

लावान्कपिञ्जलानेणान्हरिणान्पृपतान्शशान्। कुरंगान्कालपुच्छांश्चतथैवमृगमातृकान्। मांसार्थेमांससात्म्यानांज्वरितानांप्रदापयेत् ॥ सारसक्रौञ्चशिखिनस्तथातित्तिरकुक्कुटान्। गुरूष्णत्वान्नसंशन्तिकेचिदेवंव्यवस्थिताः ॥ तित्तिरइत्यन्यकृष्णतित्तिरः ॥ १२२ ॥

मांस के अभ्यास वाले ज्वर रोगी को लवा सफेद तीतर काला हिरन ताम्रवर्ण हिरन चित्र वर्ण हिरन खरगोश कुछताम्र वर्ण के बड़े हिरन काली पूंछ वाले हिरन और मोटे मृग इनसबका मांस देवे सारस कुरर मोर काला तीतर और मुर्गा इनसबका मांस भारीपन और उष्णता से ज्वरवाले को हितकारी नहीं है यह किसी२ का मतहै ॥ १२२ ॥

ज्वरितानांप्रकोपंतुयदायातिसमीरणः। तदैतेऽपिहिशस्यन्तेमात्राकालोपपादिताः॥ निम्बुकंदाडिमंधात्रीफलमम्लंप्रकांक्षते । प्रदद्यादम्लसात्म्यायकाञ्जिकंवापुरातनम् ॥ एतेषांगुणनामानिपूर्वोक्तानि ॥ १२३ ॥

जिस समय ज्वरवाले की वायु कुपितहो उस समय यह संपूर्ण मांस भी समय और मात्राके अनुसार हितकारी हैं खटाईके अभ्यासवाले ज्वर रोगी को निंबू अनार आंवला अथवा पुरानी कांजी देनी चाहिये इनसबके नाम और गुण पहले कहे गये हैं ॥ १२३ ॥

अथान्नसाधनप्रक्रियामाह। तत्रमण्डस्यलक्षणंविधिर्गुणाश्च ॥

तण्डुलानांसुसिद्धानांचतुर्दशगुणेजले। रसःसिक्थैर्विरहितोमण्डइत्यभिधीयते ॥

शुण्ठीसैन्धवसंयुक्तोदीपनःपाचनश्चसः। अन्नस्यसम्यक्सिद्धान्नज्ञेयामण्डस्यसिद्धता॥ पेयायूपयवागूनांविलेपीभक्तयोरपि। मण्डोग्राहीलघुःशीतोदीपनोधातुसाम्यकृत्॥ ज्वरघ्नस्तर्पणोबल्यःपित्तश्लेष्मश्रमापहः॥ १२४॥

अन्नबनाने की प्रक्रिया मण्डके लक्षण विधिऔर गुण॥

चौदह गुने जलमें परिपाक किये गये चावलों के भात रहित रसको मण्ड कहतेहैं सोंठ और सेंधव युक्त मण्ड दीपन और पाचन होताहै मण्ड पेया यूप यवागू विलेपी और भात इन सबमें अन्न का खूब परिपाक होजानाही सिद्ध होजाने का लक्षण है मण्ड ग्राही हलका शीतलदीपन धातुओंको समकरने वाला ज्वर नाशक तृप्तिकारी बलकारक और पित्त कफ तथा श्रम नाशक होताहै॥ १२४॥

अथ पेयायाविधिर्गुणाश्च॥

चतुर्दशगुणेनीरेरक्तशाल्यादिभिःकृता। द्रवाधिकास्वल्पसिक्थापेयाप्रोक्ताभिषग्वरैः॥ सातिलघ्वीग्राहिणीचधातुपुष्टिविधायिनी। तृट्ज्वरानिलदौर्बल्यकुक्षिरोगविनाशिनी॥ स्वेदाग्निजननीज्ञेयावातवर्चोऽनुलोमनी। शुण्ठीसैन्धवसंयुक्तादीपनीपाचनीचसा॥ आमशूलहरीरुच्यास्याद्विबन्धविनाशिनी॥ १२५॥

पेयाकीविधि औरगुण॥

चौदहगुने जलमें परिपाक कियेगये लालधानोंके चावल थोड़ेहों और जलअधिकहो इसको वैद्य लोग पेया कहते हैं पेयाबहुत हलकी ग्राही धातुओंकी पुष्टकरने वाली स्वेद तथा अग्निवर्द्धक वात तथा मलको अपने मार्गमें लेजाने वाली और तृषाज्वर वाय दुर्बलता तथा कोखके रोगकी नाशकरने वाली होतीहै यह सोंठ और सेंधानोनसे युक्त दीपन पाचन रुचिकारक और आमशूल तथा विबन्ध नाशक होती है॥ १२५॥

अथ प्रमथ्यायाविधिर्गुणाश्च॥

प्रमथ्याप्रोच्यतेद्रव्यपलात्कल्कीकृताच्छृता। तोयेऽष्टगुणितेतस्याःपानमाहुःपलद्वयम्॥ द्रव्यंपाचद्रव्यंतस्याःपलद्वयशेषायागुणैःप्रमथ्यापेयावत्ततोलघ्वीविशेषतः॥१२६॥

प्रमथ्याकी विधि औरगुण॥

चारतोले वस्तुअठगुनेजलमें परिपाक करनेसे जब आठतोलेबाकीरहे तब उतारले इसकोप्रमथ्या कहतेहैं प्रमथ्यामेंपेयाके समान गुणहोतेहैंऔरयहविशेषकरके पेयाकीअपेक्षाहलकीहोतीहै १२६॥

अथ यूपस्यविधिर्गुणाश्च॥

अष्टादशगुणेनीरेशिम्बीधान्यसृतोरसः। विरलोऽन्नोघनःकिञ्चित्पेयातोयूपउच्यते॥ उक्तःसएवनिर्यूहोरुचिकृच्चविशेषतः॥ १२७॥

यूपकीविधि औरगुण॥

अठारहगुने जल में शिम्बी धान्य को परिपाक करनेसे पेयाकी अपेक्षा कुछ गाढ़ा और थोड़ेअन्न वालाजो रसतैयार होताहै उसको यूप और निर्यूहभीकहतेहैं यह विशेषकरके रुचिकारीहोताहै १२७॥

यूपस्यप्रकारान्तरमाह ॥

कल्कद्रव्यपलंशुण्ठीपिप्पलीचार्द्धकार्षिकी । वारिप्रस्थेनविपचेत्तद्रवोयूपउच्यते॥ अयमर्थः। यूपान्तंपलमितंतत्कल्कीकृतम् । शुण्ठीपिप्पलीचसमुदितार्द्धकर्षमितात्कल्कीकृतात्। उभयमपिप्रस्थमितेनवारिणापचेत्। तद्रवोयूपः । यूपोबल्योलघु.पाकेरुच्यःकण्ठ्यःकफापहः॥ १२८॥

यूपकी दूसरीविधि ॥

जिस अन्नका यूप बनानाहो उस अन्नको चार तोले कूटकर छःमासे कुटीहुई सोंठ और पीपल मिलावे फिरचौंसठ तोले जलमें परिपाक करे इसके रसको यूप कहते हैं यूप बलकारी हलका रुचिकारी कंठको हित और कफनाशक होताहै॥ १२८॥

अथ मुद्गयूपविधिः। वृन्दटीकायान्तन्त्रान्तरे ॥

मुद्गानांद्विपलंतोयेश्तमर्द्धाढकोन्मिते । पादस्थंमर्दितंपूतंदाडिमस्यपलेनतत् ॥ युक्तंसैन्धवविश्वाह्वधान्यकैःपादकार्षिकैः । कणाजीरकयोश्चूर्णश्क्ष्णैःकेनावचूर्णितम्॥ संस्कृतोमुद्गयूपोऽयंपित्तश्लेष्महरोमतः ॥ (अथमुद्गयूपगुणाः) मुद्गानामुत्तमोयूपो दीपनःशीतलोलघु॥ व्रणोऽर्द्धजन्तुतृट्दाहकफपित्तज्वरास्रजित्। (अथमुद्गामलकयूपगुणाः) मुद्गामलकयूपस्तुभेदीपित्तानिलापहः ॥ तृट्दाहशमनःशीतोमूर्च्छाश्रममदापहः (अथ मसूरयूपगुणाः) मसूरयूपःसंग्राहीवृंहीस्वादु.प्रमेहनुत्॥ १२९॥

मूंगके यूपकी विधि ॥

आठतोले मूंगको एकसौ चौबीस तोले जलमें पाककरे जब चौथाई जल बाकी रहे तब खूबघोटकर चार तोले अनार का रस सेंधानोन सोंठ धनियां जीरा और पीपल का चूर्ण मिलावे इसप्रकार से सिद्ध हुआ मूंगका यूप कफ पित्त नाशक होता है मूंगका उत्तम यूप दीपन शीतल हलका और घाव हंसली के ऊपर की पीड़ा दाह कफ पित्त ज्वर तथा रक्त पित्त नाशक होताहै और मिलेहुयेमूंग और आंवलेका यूप दस्तावर शीतल और पित्त वात तृषा दाह मूर्च्छा श्रम तथा मदका नाशकहोता है मसूर का यूप ग्राही धातु वर्द्धक मधुर और प्रमेह नाशकहोता है॥ १२९॥

अथ यवाग्वादिविधिर्गुणाश्च ॥

यवागूःषड्गुणेतोयेसंसिद्धाघनसिक्थका । पृथक्द्रवस्तुविरलैःसंयुक्ताज्वरिणेहिता ॥ यवागूर्दीपनीलघ्वीतृष्णाघ्नीवस्तिशोधिनी । श्रमग्लानिहरीपथ्याज्वरेचैवातिसारिके॥ १३०॥ यवागू आदिकी विधि और गुण ॥

छःगुने जलमें चावलोंको परिपाक करके जब चावल और पानी अलग २ बनारहै तब उतारले यह विधि पूर्वक पीहुई ज्वरवालेको हितकारीहै यवागू दीपन हलकी तृषानाशक मूत्राशयकी शोधक श्रम तथा ग्लानिकी नाशक ज्वरातीसार में हितकारीहै॥ १३०॥

अथ विलेप्याविधिर्गुणाश्च ॥

चतुर्गुणाम्बुसंसिद्धाविलेपीघनसिक्थका । पृथक्द्रवेणरहितारूयाताशिथिलभक्ति

का॥ संसिद्धाप्रतीवसिद्धाविलेपीगिलहथीइतिलोके । विलेपीदीपनीवल्याहृद्यासंग्राहिणीलघुः । व्रणाक्षिरोगिणांपथ्यातर्पणीतृट्ज्वरापहा ॥१३१॥

विलेपीकी विधि और गुण ॥

चौगुने जलमें चावलोंको बहुत पकायके जब भात अधिक होय जल कमहो और पानी अलगन हो इसको विलेपी और शिथिल भक्तिका (गुलार्थी) कहतेहैं विलेपी दीपन बलकारी हृदयकोहित ग्राही हलकी घाव तथा नेत्ररोग वालोंको पथ्य तृप्तिकारी और तृषाज्वर नाशक होती है ॥ १३१ ॥

अथ भक्तस्यविधिर्गुणाश्च ॥

जलेचतुर्दशगुणेतण्डुलानांचतुष्पलम्। विपचेत्स्रावयेन्मण्डतद्भक्तंमधुरंलघु॥(चक्रदत्तस्तु) अन्नम्पञ्चगुणेतोयेयवागूंषड्गुणेपचेत् । तत्रान्नंभक्तंतथाच । भिस्सास्त्रीभक्तमथोऽन्नमोदनोऽस्त्रीसदीदिविरित्यमरः। भक्तंवह्निकरंपथ्यंतर्पणंमूत्रलंलघु॥ सुधौतंप्रस्रुतंचोष्णविशदङ्गुणवत्तरम्। अधौतमस्रुतंशीतंत्वप्यङ्गुरुकफप्रदम्॥ अत्युष्णंवलहृद्भक्तंशीतंशुष्कञ्चदुर्ज्जरम्। अतिक्लिन्नंग्लानिकरंदुर्ज्जरन्तण्डुलान्वितम्॥ अतिक्रान्तसजलंयत्पर्युषितम्। भृष्टतण्डुलजंरुच्यंसुगन्धिकफहृल्लघु॥ वातास्थापितमन्दाग्निविविक्तानांप्रशस्यते ॥ १३२ ॥

भातकी विधि और गुण ॥

चारपल चावल चौदहगुने जलमें परिपाक करके मांड़ निकालने से भात बनताहै यह मधुर और हलका होता है चक्रदत्तने कहाहै कि पचगुने जलमें अन्न और छःगुने जलमें यवागूका पाक करे यहां अन्न शब्दका अर्थ भात है क्योंकि अमरसिंह ने भिस्साभक्त अन्न ओदन और दीदिविभात के नाम कहेहैं भात दीपन पथ्य तृप्तिकारी मूत्रवर्द्धक और हलका होता है अच्छे प्रकार धोयेहुये चावलों का मांड़ निकालाहुआ कुछ उष्ण निर्म्मल भात अधिक गुणकारी होताहै बिनधोये चावलोंका बिन मांड़ निकाला हुआ ठंढा भात पुष्टिकारक भारी और कफकारक होता है अत्यन्त उष्ण भात बल नाशक शीतल तथा रूखाहुआ भात बहुतदेरमें पचनेवाला बहुत गीला भातग्लानिकारक कुछ कच्चा भात बहुत देरमें पचनेवाला और भूनेहुए चावलोंका भात रुचिकारक सुगन्धित कफनाशक हलका और जिनको वमन विरेचन तथा आस्थापन दियागयाहो तथा मन्दाग्निवालोंको हितकारीहोताहै१३२

अथरसौदनविधिः। वृन्दटीकायान्तन्त्रान्तरे ॥

मांसलंशक्थिजंमांसंतथानस्थिचतैत्तिरम्। चतुःपलोन्मितंसूक्ष्मञ्छिपतंक्षालितञ्जले॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलंशुण्ठीजीरकधान्यकैः॥ द्विशाणैःसंयुतेतोयेकाष्यमर्द्धाढकोन्मिते। पादस्थितंजलंतत्रदाडिमात्कुट्टिताद्धरेत्। तंरसंमर्दितांहिंगुभृष्टसैन्धवजीरकैः॥ युक्तंप्रधूपितंपथ्यंशुद्धानांशुद्धिकांक्षिणाम्। (अथरसौदनगुणाः) रसौदनोगुरुर्वृष्योवल्योवातज्वरापहः॥ १३३ ॥ रसौदनकीविधि औरगुण ॥

तीतरकी जांघके अस्थि रहित मोटे सोलह तोले मांसको खूबकाटकर पानीमें धोकर पीपल पीपलामूल सोंठ जीरा और धनियां यह सब आठ २ माशे मिलायके एकसौ चौबीस तोलेजलमें

पाककरे जब चौथाई रहजाय तब उसमें भूनीहींग सैंधानोन और जीरायुक्त अनारकारस मिलावे यह कुछ गरम २ भातकेसाथ खायाहुआ वमन विरेचनादिसे शुद्ध और शुद्धताके चाहने वालोंको पथ्यहै रसोदन भारी वीर्य्यवर्द्धक बलकारी और वातज्वर नाशक होताहै ॥ १३३ ॥

केवलजलसाध्यान्मण्डादीनभिधायौषधसाध्यानांतेषांप्रक्रियामाह ॥

साध्यंचतुःपलंद्रव्यंचतुःषष्टिपलेऽम्बुनि। तत्क्वाथेनार्द्धशिष्टेनमण्डपेयादिसाधयेत्॥ वृद्धवैद्याःपलंद्रव्यंग्राहयत्याढकेऽम्भसि। भेषजस्यातिवाहुल्यात्कदाचिदरुचिर्भवेत्॥ यैरन्नौषधैर्येश्चकृतामण्डादयोबुधैः। विचार्य्यतद्गुणानेतांस्तद्गुणानेवनिर्दिशेत् ॥ १३४ ॥

केवलजलकेद्वारा सिद्धहोनेवाले मंडादिकोंकोकहकर औषधसेसिद्धहोनेवालोंकी प्रक्रियाकहतेहैं ॥ चारपल औषधको चौंसठपल जलमें औटायके जब आधा बाकीरहे तब उसीक्काथसे मांड तथा पेया आदिक बनावे वृद्धवैद्य एकपल औषधको चौंसठपल जलमें क्काढाबनाना कहते हैं क्योंकि औषधके बहुत होनेसे कभी २ अरुचि होजाती है जिनअन्न और औषधियोंके द्वारा मांड़आदिक बनाये जातेहैं उन औषधियों और अन्नके गुणोंको विचारकर मंडआदिके गुणकहने चाहिये ॥ १३४ ॥

अथौषधसिद्धापेयागुणाः ॥

अन्नकालेहितापेया यथास्वंपाचनैःकृता । दीपनीपाचनीलध्वी ज्वरार्त्तानांज्वरापहा ॥ यथास्वंपाचनैःकृता यथा दोषंपाचनैःकृता ॥ १३५ ॥

औषधसे सिद्धपेया आदि के गुण ॥

दोषके अनुसार पाचन औषधियोंसे की हुई पेया भोजनके अवसरमें सेवनकीगई दीपन पाचन हलकी और ज्वरवालोंके ज्वरकी नाशक होती है ॥ १३५ ॥

यथा ॥

पञ्चमूल्याःकषायन्तुपाचनंवातिकज्वरे । सक्षौद्रंपैत्तिकेमुस्तकटुकेंद्रयवैःकृतम् ॥ पिप्पल्यादिकषायन्तुपाचनंकफजेज्वरे । लघुनापञ्चमूलेन पिप्पल्यासहधान्यया ॥ महत्यापञ्चमूल्याथ व्याघ्रीदुःस्पर्शगोक्षुरैः । सिद्धानिभिषगन्नानि प्रयुञ्जीतयथाक्रमम् ॥ वातपित्तेश्लेष्मपित्ते कफवातेत्रिदोषजे। अयमर्थः। वातपित्तेपुलघुनापञ्चमूलेन सिद्धान्यन्नानिभिषक्प्रयुञ्जीत ॥ शालिपर्णीपृश्निपर्णी कण्टकारीद्वयंतथा । गोक्षुरःपञ्चमःप्रोक्तः पञ्चमूलमिदंलघु ॥ श्लेष्मपित्तेपिप्पल्यासहधान्ययाकफवाते महत्यापञ्चमूल्या ॥ श्रीफलःसर्वतोभद्रापाटलागणिकारिका । श्योनाकःपंचमःप्रोक्तंपंचमूलमिदंमहत् ॥ यवासःत्रिदोषजेव्याघ्रीदुःस्पर्शगोक्षुरैःव्याघ्रीकण्टकारिकादुःस्पर्शः १३६॥

दोषके अनुसार पाचन औषध ॥

वात ज्वरमें पंचमूलका क्काथ पित्तज्वरमें मोथा कुटकी तथा इन्द्रजोका सहतयुक्त क्काथ और कफ ज्वरमें पिप्पल्यादि गणका क्काथ पाचनहोता है वात पित्त ज्वरमें छोटे पंचमूल (शालिपर्णी पृश्निपर्णी दोनों भटकटैया यह छोटा पंचमूलहै)के क्काथसे बनेहुए अन्नदेवे कफपित्त ज्वरमें पीपल तथा धनिये

के क्वाथसे पाक कियेहुए अन्नदेवे कफ वात ज्वरमें बड़े पंचमूल(बेल गम्भारी पाटला अरनी और सोनापाढ़ा यह,बड़ा पंचमूलहै) के क्वाथसे पाक कियेहुए अन्नदेवे और त्रिदोष ज्वरमें भटकटैया जवासा तथा गोखुरू के क्वाथसे पाक कियेहुए अन्नदेवे ॥ १३६ ॥

पेयांवारक्तशालीनांवस्तिपार्श्वशिरोरुजि॥श्वदंष्ट्राकण्टकारीभ्यांसिद्धांज्वरहरींपिवेत्॥ विवद्धवर्चाःसयवांपिप्पल्यामलकैःशृताम् । सर्पिष्मतींपिवेत्पेयांज्वरीदोषानुलोमिनीम्॥ कासीश्वासीचहिक्कीचपञ्चमूलीशृतंपिवेत् । यवोऽन्नान्तःअत्रपञ्चमूलीवृहतीलघ्वीचहिता ॥ तथाशृतांपेयांपिवेदित्यर्थः ॥ पेयाभेषजसंयोगाल्लघुत्वाच्चाग्निदीपनी । वातमूत्र पुरीषाणांदोषाणांचानुलोमिकाम् ॥ स्वेदनायचसोष्णत्वाद्द्रवत्वात्तृट्क्षयायच । आहार भावात्प्राणायसरत्वाल्लाघवायच ॥ ज्वरघ्नीहेतुसाम्यत्वात्तस्मात्तांपूर्वमाचरेत् । हेतुसाम्यत्वाद्धेतवःवातपित्तकफास्तेषांसाम्यत्वात् ॥ १३७ ॥

गोखुरू और भटकटैयाके क्वाथसे पाक कीगई लालधानके चावलोंकी ज्वरनाशक पेया मूत्राशय पसली तथा शिरकी पीड़ा में पीनी चाहिये ज्वरवाला मलके रुकजानेपर जौ सहित पीपल और आंवलोंके क्वाथके द्वारा पाककी हुई पेयाको घी डालकरपिये यह दोषोंको अपने २ मार्गपर करदेती है खांसी श्वास तथा हिचकीवाला छोटे अथवा बड़े पंचमूल के क्वाथसे पाक कीहुई पेया को पिये पेया औषधके संयोगसे तथा हलकेपनसे दीपन और वात मूत्र तथा मलकी अपने मार्गके अनुसार करनेवाली होतीहै पेया उष्णताके कारण स्वेदकारक पतलेपनसे तृषानाशक आहार होने से प्राण धारक दस्तावर होने से हलका करनेवाली और वात पित्त तथा कफकी समता करनेके कारण ज्वर नाशकहोती है इसलिये पहले पेया का पान करे ॥ १३७ ॥

पञ्चमुष्टिकयूषः ॥

यवकोलकुलत्थानांमुद्गमूलकशुण्ठयोः । एकैकमुष्टिमादायपचेदष्टगुणेजले ॥ पञ्चमुष्टिकइत्येषवातपित्तकफापहः । शूलेप्रशस्यतेगुल्मेकासेश्वासेक्षयेज्वरे ॥ १३८ ॥

पंचमुष्टिक यूष ॥

जौ बेर कुलथी मूंग और सूखी मूली इन सबको चार २ तोले लेकर अठगुने जलमें पाककरे यह पंचमुष्टिक नाम यूष वात पित्त तथा कफ नाशक और शूल गुल्म खांसी श्वास क्षय तथाज्वर में श्रेष्ठ होताहै ॥ १३८ ॥

रुद्धमूत्रपुरीषस्यगुदेवर्तिंनिधापयेत । पिप्पलीपिप्पलीमूलयवानीचव्यसाधिताम् ॥. पाययेत्तुयवागूंवामारुताद्यनुलोमिनीम् ॥ १३९ ॥

जिसकामल मूत्र रुक गयाहो उसकी गुदा में वत्ती रक्खे अथवा पीपल पीपलामूल अजवाइन और चव्य इन सब के क्वाथ से पाक की गईवातादिकोंको अपने मार्गमें लेजाने वाली यवागू पिलावे ॥ १३९ ॥

पेयायवाग्वोऽश्चक्वचिदपवादमाह ॥

मदात्ययेमद्यनित्येग्रीष्मेपित्तकफोत्थिते ॥ ऊर्ध्वगेरक्तपित्तेचयवागूर्नहिताज्वरे १४०॥

पेया और यवागूका कहीं २ निषेध कहाजाता है ॥

मदात्ययरोग में नित्य मद्य पीने वालेको ग्रीष्म ऋतु में पित्त तथा कफसे हुए ज्वर में और ऊपर गयेहुए रक्तपित्त में यवागू हितकारी नहीं है ॥ १४० ॥

दाहच्छर्द्यर्दितंक्षामंनिरन्नंतृष्णयान्वितम्। घर्मार्तमद्यपञ्चापितोयालोड़ितशक्तुकम् ॥ शर्करामधुसंयुक्तंपाययेल्लाजतर्पणम् । लाजतर्पणंलाजशक्तुरूपंतर्पणम् ॥ ज्वरापहैः फलरसैर्युक्तमन्नंहितंक्वचित् ॥ १४१ ॥

दाहतथा छर्दिसे पीड़ित क्षीण लंघन कियेहुए प्यासे धूपसे व्याकुल और मद्यपीने वालोंकोशक्कर और सहत युक्त लाजातर्पण (तृप्तिकारी खीलोंके सत्तू) पिलावे और कहीं२ ज्वर नाशक फलोंके रससे युक्त अन्न हितकारी होताहै ॥ १४१ ॥

सन्तर्पणस्वरूपञ्चाहधन्वन्तरिः ॥

द्राक्षादाडिमखर्जूरमृदिताम्बुसशर्करम् । लाजचूर्णसमध्वाज्यंसन्तर्पणमुदाहृतम् ॥ लाजचूर्णद्राक्षादिजलशर्करामध्वाज्यसहितंतर्पणमुक्तमित्यर्थः ॥ १४२ ॥

धन्वन्तरिका कहाहुआ संतर्पणका स्वरूप ॥

दाख अनार खजूर घी और सहत इनके साथ खीलोंके चूर्णको शक्कर सहित जलमें घोलले यह संतर्पण कहाताहै ॥ १४२॥ लाजशक्तुगुणाःगुणाधिकारे ॥

लाजानांशक्तवःक्षौद्र सितायुक्ताविशेषतः । छर्द्यतीसारतृड्दाहाविषमूर्च्छाज्वरापहाः ॥ (चरकस्तु) तत्रतर्पणमेवादौप्रदेयंलाजशक्तुभिः । ज्वरापहैःफलरसैर्युक्तंसमधुशर्करम् ॥ १४३ ॥

गुणाधिकारमें कहेहुए खीलों के सत्तुओंके गुण ॥

सहत और शक्करयुक्त खीलोंके सत्तू विशेष करके छर्दि अतीसार तृषा दाह विष मूर्च्छा तथा ज्वर नाशकहोतेहैं चरकने तो कहाहै कि ज्वरनाशक फलोंके रस सहत और शक्करयुक्त खीलोंके सत्तुओंके द्वारा पहले तर्पण देना चाहिये ॥ १४३ ॥

ज्वरघ्नानिफलान्याहचरकएव ॥

द्राक्षादाड़िमखर्जूरप्रियालैःसपरूषकैः । तर्पणार्हस्यदातव्यंतर्पणंज्वरनाशनम् ॥ प्रियालमत्रपक्वफलंनतन्मज्जागुरुत्वात् । तर्पणार्हस्य। दाहच्छर्दितृषार्त्तस्यलंघितस्यक्षीणस्येत्यर्थः ॥ १४४ ॥ चरकके कहेहुए ज्वरघ्नफल ॥

दाख अनार खजूर चिरोंजी और फालसा इनके द्वारा तर्पणके योग्य (दाह छर्दि तथा तृषा से व्याकुल लंघन कियेहुए और क्षीण) मनुष्योंको तर्पण देना चाहिये इससे ज्वरका नाशहोताहै यहां चिरोंजी का पक्का फल ग्रहण कियाजाता है उसकी मज्जा नहीं ग्रहण कीजाती है क्योंकि वह भारी होती है ॥ १४४ ॥

श्रमोपवासानिलजेहितंनित्यंरसौदनम् । रसोऽत्रमांसस्यरसः । तेनसिक्तोओदनो रसौदनः । अन्नेनव्यञ्जनमित्यनेनसमासः। मुद्गयूषौदनश्चैवहितंकफसमुत्थिते। सएव

सितयायुक्तःशीतःपित्तज्वरेहिताः ॥ सएवमुद्गयूषोदनमेव । कृशोऽल्पदोपोयःक्षीणकफो जीर्णज्वरान्वितः । विबन्धासृष्टदोपश्चरुक्षपित्तानिलज्वरी ॥ पिपासार्त्तःसदाहश्चपय सासमुखीभवेत् (अन्यच्च) अजादुग्धंगुडोपेतपातव्यंज्वरशांतये । तदेवतुपयःपीतं तरुणेहन्तिमानवम् ॥ तरुणेज्वरे (अन्यच्च) जीर्णेज्वरेकफेक्षीणेक्षीरंस्यादमृतोपमम् । तदेवतरुणेपीतंविषवद्धन्तिमानवम् ॥ १४५ ॥

श्रम उपवास तथा वातजनित ज्वरमें मांसके रसके साथ भात खाना सदैव हितहै कफज्वरमें मूंगके यूपकेसाथ भात हितहै और पित्तज्वरमें शक्करयुक्त मूंगके यूपकेसाथ शीतल भात हितहै कृश अल्पदोपवाला क्षीण कफ वाला जीर्णज्वरसे युक्त रुकेहुए दोप वाला रुखा पित्त तथा वातज्वर से युक्त तृपासे व्याकुल और दाह युक्त इन सबको दूध हितहै और कहागयाहै कि गुड़युक्त बकरीका दूध ज्वर के दूर करनेको पीना चाहिये परन्तु वही दूध जो नवीन ज्वर में पियाजावे तो मनुष्य का नाश होताहै और भी कहा गया है कि जीर्णज्वर और कफ की क्षीणता में दूध अमृतके समान होता है परन्तु वहीदूध नवीन ज्वर में पीने से विपके समान मनुष्य को मारताहै ॥ १४५ ॥

अथज्वरिणोनियमानाह ॥

नद्विरद्यान्नपूर्वाह्णेनाभिष्यन्दिकदाचन । नतीक्ष्णन्नगुरुप्रायंभुञ्जीततरुणज्वरी ॥ नजातुतर्पयेत्प्राज्ञःसहसाज्वरकर्पितम् । तेनसंशमितोऽप्यस्यपुनरेवभवेज्ज्वरः ॥ १४६॥

ज्वरवाले के नियम ॥

नवीन ज्वर वाला दोवार अथवा पूर्वाह्ण में भोजन न करे और अभिष्यन्दी तीक्ष्ण तथा भारी वस्तुओंको न खाय बुद्धिमान् वैद्यज्वरसे रुग्णमनुष्यको सहसा किसी प्रकारका तर्पण न देवे क्योंकि इससे शान्तहुआभी ज्वर फिर उत्पन्न होजाताहै ॥ १४६ ॥

अथज्वरविमुक्तेपूर्वरूपमाह ॥

दाहास्वेदोभ्रमस्तृष्णाकम्पविड्भेदसंज्ञता । कूजनञ्चातिवैगन्ध्यमाकृतिर्ज्वरमोक्षणे॥ विड्भेदोमलप्रवृत्तिरत्रसम्पदादिभ्योभावेक्तिप्कूजनंकुन्थनंअतिवैगन्ध्यंगात्रस्य । ज्वर मुक्तोभविष्यत्यामेतल्लक्षणंभवति ॥ नतुदोषक्षयंविनानव्याधिनिवृत्तिःक्षीणाश्चदोपाःक थमेवंविधंरूपंकरिष्यति । उच्यतेकश्चिक्षीणेऽपिविनाशकालेस्वशक्तिंदर्शयति ॥ यथा निर्वाणावस्थायांदीपोविशेपात्प्रज्वलति ॥ वाग्भटोऽप्याह ॥ धातून्प्रक्षोभयन्दोपोमो क्षकालेविलीयते । ततोनरःश्वसन्कूजन्वमन्स्विद्यन्नचेष्टतइति । नचेष्टतेऽचेष्टः स्यात् । त्रिदोपजेज्वरेह्येतदन्तर्वेगेचधातुगे । लक्षणंमोक्षकालेस्यादन्यस्मिन्स्वेददर्श नम् ॥ एतद्दाहादिकंलक्षणंमोक्षकालेएतेष्वेवज्वरेषुस्यात् । केपुत्रिदोपजेपु अन्तर्वेगेधा तुगेज्वरेअन्यस्मिन्स्वेदमात्रदर्शनंभवति ॥ १४७ ॥

ज्वरछूटनेका पूर्वरूप ॥

दाह स्वेद भ्रम तृषा कंप मलकी प्रवृत्ति संज्ञाका होना अव्यक्त शब्द और शरीरमें बहुत दुर्गन्ध यह सब लक्षण जब ज्वरछूटने वाला होताहै तब होतेहैं अब यह सन्देह होता है कि दोपके नाशके

विनारोग नहीं निवृत्तहोसका तो क्षीणहुए दोष उसप्रकारके लक्षणोंको कैसेकर सकेहैं इसका उत्तर यह है कि जैसे दीपक बुझनेके समय वहुत प्रज्वलित होताहै उसीप्रकार क्षीणहुआ भी कोई कोई दोष नाशके समय अपनी शक्ति को दिखाताहै वाग्भटनेभी कहाहै कि दोष आनेके समय धातुओं को क्षोभित करताहुआ नाशकोप्राप्तहोताहै उसीसे मनुष्य हांफताहुआ खींचता हुआ वमन करता हुआ और स्वेद युक्तहो चेष्टा रहित होजाताहै ऊपर कहेहुये लक्षण त्रिदोष ज्वर भीतर वेगवाले ज्वरतथा धातुओं में स्थित ज्वर के छूटनेकेसमय होतेहैं और अन्यज्वरोंमें केवल पसीनाआताहै ॥ १४७ ॥

अथज्वरमुक्तस्यलक्षणमाह ॥

देहोलघुर्व्यपगतक्लममोहतापःपाकोमुखेकरणसौष्टवमव्यथत्वम् । स्वेदक्षयःप्रकृतियोगिमनोऽन्नलिप्साकण्डूश्चमूर्ध्निविगतज्वरलक्षणानि ॥ (सुश्रुतोऽप्याह) स्वेदोलघुत्वंशिरसःकण्डूपाकोमुखस्यच। क्षवथुश्चान्नकांक्षाचज्वरमुक्तस्यलक्षणम् ॥ १४८ ॥

ज्वरके छूटने के लक्षण ॥

शरीरमें हलकापन ग्लानिकानाश मोह तथा तापका नाश मुखमें फुंसियोंका निकलना इन्द्रियों की प्रसन्नता व्यथाका न होना स्वेद छींक मनका यथावस्थित होना अन्नमें इच्छा और शिरमें खुजली यह ज्वरके छूटने के लक्षणहैं सुश्रुतने भी कहाहै कि स्वेद शरीर में हलकापन शिरमें खुजली मुखमें फुंसी निकलना छींक और अन्नमें इच्छा यह लक्षण होतेहैं ॥ १४८ ॥

अथ ज्वरमुक्तस्यनियमाः ॥

व्यायामञ्चव्यवायञ्चस्नानञ्चंक्रमणानिच । ज्वरमुक्तोनसेवेतयावन्नोबलवान्भवेत् ॥ अन्यच्चव्यव्यापायञ्चप्रवातंशिशिरंजलम् । ज्वरमुक्तोनसेवेतयावन्नोबलवान्भवेत् । जन्तोज्वरविमुक्तस्यस्नानंकुर्यात्पुनर्ज्वरम् । तस्माज्ज्वरविमुक्तोऽपिस्नानंविषमिवत्यजेत् ॥ बलवर्णाग्निवपुषांयावन्नप्रकृतिर्भवेत्। तावज्ज्वरेणमुक्तोऽपिवर्जनीयानिवर्जयेत् ॥ १४९ ॥

ज्वर से छूटेहुए के नियम ॥

जिसका ज्वर छूटगयाहो वह जब तक बलवान् न हो तबतक व्यायाम मैथुन स्नान और भ्रमण इनका सेवन न करे और भी कहागयाहै कि जिसका ज्वर छूटगयाहो वह बलवान् होनेतक व्यायाम मैथुन अधिक वायु और शीतल जलका सेवन न करे ज्वर से छूटेहुए मनुष्यको स्नान करने से फिर ज्वर आजाताहै इसलिये ज्वरके छूटजाने परभी जबतक बल न आवे तबतक स्नान को विषके तुल्य त्याग करदेवे बल वर्ण अग्नि और शरीर जबतक पहलासा न होजावे तबतक ज्वरके छूटजाने परभी निषिद्ध पदार्थोंका सेवन न करे ॥ १४९ ॥

अथ वातज्वराधिकारमाह ।

तत्रवातज्वरस्यविप्रकृष्टसन्निकृष्टकारणकथनपूर्विकांसंप्राप्तिमाह ॥

वातलाहारचेष्टाभ्यांवायुरामाशयाश्रयः वहिर्निरस्यकोष्ठाग्निंज्वरकृत्स्याद्रसानुगः १५०॥

वात ज्वरका अधिकार । वात ज्वरके दूरवाले और समीपी कारणों समेत संप्राप्ति का वर्णन ॥

वातकारी आहार और विहारोंकेद्वारावायु आमाशयमें प्रविष्ट होकर जठराग्निको वाहर निकालतीहै और रसको दूषित करके ज्वरको उत्पन्न करतीहै ॥ १५० ॥

अथतस्यपूर्वरूपमाह ॥

जृम्भात्यर्थंसमीरणादितिसमीरणज्वरेउत्पत्स्यतिअत्यर्थंजृम्भास्यात् जृम्भाचश्रमादिपूर्विकाभवति १५१ ॥

वातज्वरका पूर्वरूप ॥

वातज्वरके होनेसेपहले सामान्यज्वर सम्बन्धी पूर्वरूपके श्रमादिक लक्षणोंसमेत बहुत जंभाई आती हैं १५१ ॥

अथवातज्वरस्यलक्षणमाह ॥

वेपथुर्विषमोवेगःकण्ठोष्ठ मुखशोषणम् । निद्रानाशःक्षवःस्तम्भोगात्राणांरौक्ष्यमेव च ॥ शिरोहृद्गात्ररुक्वक्त्रवैरस्यंबद्धविट्कता । शूलाध्मानेजृम्भणञ्चभवत्यनिलजे ज्वरे ॥ एतानिलक्षणानिप्रायोभावित्वेनसुश्रुतेनिर्दिष्टानि । चकारादन्यान्यपिचरकनिदानोक्तानिबोद्धव्यानि ॥ तान्येवश्लोकेनप्रदर्शयति । भवन्तिविविधावातवेदनास्यादसुप्तता । पिण्डिकोद्वेष्टनंकर्णस्वनोवक्त्रकषायताः ॥ गात्रसादोहनुस्तम्भोविश्लेषःसन्धिजानुनोः । शुष्ककासोवमिर्लोमदन्तहर्षःश्रमभ्रमौ ॥ अरुणंमूत्रनेत्रादितृट्प्रलापोष्णगात्रता । विषमोवेगः । शरीरोष्णतादिरूपोज्वरवेगो । विषमोभवतीत्यर्थःक्षवस्तम्भः छिकायाःअभावःतथाचवाग्भटः । हर्षोरोमांगदन्तेषुवेपथुःक्षवथुग्रहः । भ्रमःप्रलापोघर्मेच्छाविलापश्चानिलज्वरे ॥ इतिचरकोऽपिक्षवथूद्गारविनिग्रहइतिशिरोहृद्गात्ररुक् । गात्रपदेप्रयुक्तेशिरोहृच्छब्दप्रयोगः । तत्रतत्रविशेषेणवेदनाबोधनार्थः १५२ ॥

वातज्वरके लक्षण ॥

वातज्वरमें कंप विषमवेग (कभीकमकभीअधिक) कंठओष्ठ तथा मुखकासूखना निद्राकानाश छींक का बन्दहोना शरीरमेंसूखापन शिर हृदय तथा अंगोंमेंपीड़ा मुखकी बिरसता मलकारुकना शूल अफरा और जंभाई यहलक्षण होतेहैं यहलक्षण प्रायःहोते हैं इसलिये सुश्रुतने कहेहैं और चकारसे चरकके कहेहुए अन्यलक्षणभी जानने चाहिये वहीआगे कहे जातेहैं अनेकप्रकारकी वायुकीपीड़ा निद्राकानाश पिंडलियोंमेंऐंठन कानोंमेंशब्द मुखमेंकषैलापन शरीरमेंशिथिलताजावड़ेकाजकड़ना संधितथा घुटनों में टूटने की सी पीड़ा सूखी खांसी छर्दि रोमांच दांतोंमें सरसराहट श्रम भ्रम मूत्र तथा नेत्रादिकी ललाई तृषा प्रलाप और शरीरमें उष्णता यह वात ज्वरके लक्षणहैं यहां विषम वेगशब्द से शरीर में उष्णता आदि ज्वर वेगका विषम होना लियाजाताहै और छींकका रुकना अर्थात् नआना वाग्भटने भी कहाहै कि वात ज्वर में रोमांच शरीर में शिथिलता दांतोंमें सरसराहट कंप छींकका न आना भ्रम प्रलाप धूपकी इच्छा और विलाप यह लक्षण होते हैं और चरकने भी कहाहै कि वात ज्वर में छींकतथा डकारका नआना औरमस्तक हृदय तथा शरीरमें पीड़ाहोतीहैयहां शरीरमेंपीड़ाकहनेसे शिर- और हृदयकाबोध होताहै तो इनके फिर कहनेसे इनमें विशेष पीड़ा होतीहै यहजानना चाहिये १५२

अथवातज्वरचिकित्सा ॥

आमाशयस्थोहत्वाग्निंसामोमार्गान्पिधापयन् । विदधातिज्वरंदोषस्तस्माल्लंघनमाचरेत् ॥ इतिवचनात्सामान्यतोज्वरितगात्रस्ययावदारोग्यदर्शनंलङ्घनाभिधानेत्रातज्वरिणोलङ्घनविधानेविशेषमाहचरकः । ज्वरितंषडहेऽतीतेलघ्वन्नंप्रतिभोजितम् ।

पाचनंशमनीयञ्चकषायंपाययेद्भिषक् ॥ सुश्रुतोऽप्याह । वातिकेसप्तरात्रेणदशरात्रेण पैत्तिके । श्लैष्मिकेद्वादशाहेनज्वरेयुंजीतभेषजम् ॥ नन्वन्नंवैप्राणिनांप्राणाइतिश्रुतिः तदन्नंविनाप्राणिभिःकथंस्थातव्यमित्याह । दोषाणामेवसाशक्तिर्लंघनेयासहिष्णुता। नहिदोषक्षयेकश्चित्सहतेलंघनंमहत् ॥ कफपित्तेद्रवेधातुसहेतेलंघनंबहु। आमक्षयादूर्ध्वमपिवायुर्नसहतेक्षणम् १५३ ॥

वातज्वर की चिकित्सा ॥

आमाशयमें स्थित आम सहित दोष अग्निको मंद करके मार्गोंको रोकताहुआ ज्वरको उत्पन्न करताहै इसलिये लंघनकरना चाहिये इस वचन के द्वारा सामान्यता से संपूर्ण ज्वर वालोंको आरोग्य पर्य्यन्त लंघनका विधान कियागया परन्तु वातज्वरवाले को लंघन करानेमें चरकने विशेषता कहीहै जैसेकि ज्वरवालेको छःदिनके उपरान्त हलकाअन्न भोजनकराय के पाचन और शमन कषाय पिलाना चाहिये सुश्रुतनेभी कहाहै कि वातज्वरमें सातवेंदिन पित्तज्वरमें दशवेंदिन और कफज्वरमें बारहवें दिन औषध देनीचाहिये अब यह सन्देह होताहै कि अन्नही प्राणियोंकेप्राणहैं इस श्रुतिके अनुसार अन्न के बिना प्राणी कैसे रहसकेहैं इसका उत्तर यहहै कि रोगी जो लंघनोंको सहताहै यह दोषोंही की शक्तिहै दोषोंके क्षय होजानेपर कोई भी बहुत लंघन नहीं सहसक्ताहै कफ और पित्त यह पतली धातुहैं इसलिये आमके परिपाक होजानेपर भी बहुत लंघन सहसक्तेहैं और वात आमके परिपाक होजानेपर क्षणभरभी लंघनको नहीं सहसक्ती ॥ १५३ ॥

तत्रभेषजमाह ॥

श्रीफलःसर्वतोभद्राकामदूतीचशोणकः । तर्कारीगोक्षुरःक्षुद्राबृहतीकलशीस्थिरा ॥ रास्नाकणाकणामूलंकुष्ठंशुण्ठीकिरातकः। मुस्तावलामृतावालद्राक्षावासःशताह्विका ॥ एषांक्वाथोनिहन्त्येवप्रभञ्जनकृतंज्वरम्। सोपद्रवञ्चयोगोऽयंसर्वयोगवरःस्मृतः ॥ श्रीफलोबिल्वःसर्वतोभद्रागम्भारीकामदूतीपाटला । शोणकःशोनापाठाइतिलोकेतर्कारीगणिकारीकलशीपृष्टिपर्णीस्थिराशालिपर्णी बलासुगन्धबालाद्राक्षायासोयवासः । दशमूलादिक्वाथः ॥ १५४ ॥

औषधियोंका वर्णन दशमूलादिक्वाथ ॥

बेल गंभारी पाटला सोनापाठा अरणी गोखरू छोटी बड़ी भटकटैया पृष्टपर्णी शालिपर्णी रासना पीपल पीपलामूल कूट सोंठ चिरायता मोथा गिलोय सुगन्धबाला बरियारा दाख जवासा और सतावर इन सब औषधियोंका क्वाथ उपद्रव युक्त वात ज्वरको नष्ट करताहै यह योग सम्पूर्ण योगों में श्रेष्ठ है ॥ १५४ ॥

सुश्रुतः। पञ्चमूलीकषायन्तुपाचनंवातिकेज्वरेइति । अत्रपंचमूलीबृहत्पंचमूलीश्च तएवत्रिशती। श्रीपर्णीतर्कारीश्रीफलटुण्टुकपाटलामूलैः । पाचनमुचितंमारुतजनितज्वरहारिवारिणाकथितैः। इतिबृहत्पञ्चमूलीक्वाथः ॥ १५५ ॥

बृहत्पञ्चमूलीक्वाथ ॥

सुश्रुतने कहाहै कि पंचमूलका काढ़ा वातज्वर में दोषका पचानेवाला होताहै यहां पञ्चमूल कहने

से बड़ा पञ्चमूल लेना चाहिये इसीसे त्रिशतीका मतहै कि गम्भारी अरणी वेल सोनापाठा और पाटला इन औषधियोंकी जड़केकाथसे वातज्वरमें ज्वरकेनाशके लिये पाचन देनाचाहिये ॥१५५॥

किरातकामृतोदीच्यबृहतीद्वयगोक्षुरैः। त्रिपर्णीकलशीविल्वैःक्वाथोवातज्वरापहः॥ उदीच्यंबालकंत्रिपर्णीशालिपर्णीकलशीपृष्टिपर्णीकिरातादिक्वाथः ॥ १५६ ॥

किरातादिक्काथ ॥

चिरायता मोथा गिलोय सुगन्धवाला दोनों भटकटैया गोखुरू शालिपर्णी पृष्टपर्णी और वेल इन औषधियोंका क्वाथ वातज्वरनाशक होताहै ॥ १५६ ॥

गुडूचीपिप्पलीमूलनागरैःपाचनंश्रुतं। वातज्वरेतथापेयंकालिंगंसप्तमेहनि ॥ कालिंगश्रुतमिन्द्रयवन्तस्यश्रुतंत्रिशती ॥ १५७ ॥

गिलोय पीपलामूल और सोंठ इन औषधियोंकाक्वाथ अथवा इन्द्रजौका क्वाथ वातज्वरमें सातवें दिन पाचनके लिये पीनाचाहिये ॥ १५७ ॥

विश्वामृताग्रंथिकसिद्धतोयमरुज्वरःस्यात्पिवतःकुतोऽयम्। क्वाथोऽथकुस्तुम्बुरदेवदारुक्षुद्रौषधैःपाचनमत्रचारु ॥ इतिविश्वाशुण्ठीक्वाथः। औषधंपाचनमितिवेदाःप्रमाणमितिवत् ॥ १५८ ॥

विश्वादि क्वाथ ॥

सोंठ गिलोय और पीपलामूल इनका काढ़ा पीनेसे वातज्वर नष्टहोताहै धनिया देवदारु और भटकटैया इनका काढ़ा वातज्वरमें पाचन होताहै औषधियोंके द्वारा पाचनहोताहै इसे वेदकेप्रमाण के समान प्रामाणिक समझनाचाहिये ॥ १५८ ॥

पञ्चमूलीबलारास्नाकुलत्थैःसहपौष्करैः। क्वाथोहन्याच्छिरःकम्पंपर्वभेदम्मरुज्ज्वरम् ॥ इतिपञ्चमूलीविल्वादिः। वृहत्पञ्चमूल्यादिक्वाथः ॥ १५९ ॥

वृहत्पञ्चमूल्यादिक्वाथ ॥

वेल सोनापाठा गंभारी पाटला अरणी बरियारा रासना कुलथी और पुष्करमूल इनसब औषधियोंकाक्वाथ शिरका कांपना और पोरुओंका टूटना इन समेत वातज्वरको नष्ट करताहै ॥ १५९ ॥

कणारसोनामृतवल्लिविश्वानिदिग्धिकासिंदुकभूमिनिम्बैः। समुस्तकैराचरितःकषायोहिताशिनांहन्तिगदानिमांस्तु॥ ज्वरम्मरुद्ष्टसमुद्भवन्तथाबलासजंचानलमन्दताञ्च। कण्ठावरोधंहृदयावरोधंस्वेदञ्चरोम्णाञ्चहिमत्वमोहान् ॥ इतिकणादिक्वाथः ॥ १६० ॥

कणादिक्वाथ ॥

पीपल लहसन गिलोय सोंठ भटकटैया सेंधानोन चिरायता और मोथा इन औषधियोंकेक्वाथके सेवनसे पथ्यकरनेवालोंके आगेकहेहुए रोग नष्टहोते हैं वातज्वर कफज्वर मन्दाग्नि कंठका रुकना हृदयका रुकना स्वेद रोमांच शीतलता और मोह ॥ १६० ॥

शुद्धंशङ्करशुक्रमक्षतुलितंमारारिनारीरजस्तद्वत्तावदुमापतिस्फुटगलालङ्कारवस्तुस्मृतम्॥तावत्येवमन शिलाचविमलातावत्तथाटङ्कणम्। शुण्ठीद्वयक्षमिताकणाचमरिचं दिक्पालसंख्याक्षकम् ॥ विषादिवस्तूनिशिलोपरिष्टाद्विचूर्णयेद्वासरसिशोधयेच्च। ततस्तु

खल्वेरसगन्धकौचचूर्णञ्चतद्यामयुगंविमर्द्य ॥ कल्पतरुर्नामधेयोयथार्थनामारसःश्रेष्ठः। समीरणश्लेष्मगदांहरतेमात्रास्यस्मृतागुञ्जैका ॥ आर्द्रकेणसममेषभक्षितोहन्तिवातकफसम्भवंज्वरम्। श्वासकासमुखसेकशीततावह्निमांद्यविसूचीश्चनाशयेत् ॥ नस्यनखेच हरतिशिरोऽर्तिकफवातजां। मोहंमहान्तमपिचप्रलापंक्षयथुग्रहम्॥ कल्पतरुरसः १६१॥

कल्पतरुरस ॥

शुद्धपारा शुद्धगन्धक विष मैनसिल सोनामक्खी और सुहागा यह सब तोले २ भर सोंठ और पीपल दो२ तोले मिर्च दशतोले विषआदिक वस्तुओंको शिलपर पीसकर वस्त्रमें छानले फिरपारा और गन्धकको खरलमें दोपहरघोटे इसके पीछे सब वस्तुओं को एकमें मिलादे यह कल्पतरु नाम रस यथार्थ नामवाला बहुत श्रेष्ठहै इस्से वात तथा कफ के रोगोंका नाशहोता है इसकी मात्रा एकरत्ती अदरकके रसके साथ सेवन किया हुआ यह रस वात तथा कफ जनित ज्वर श्वास खांसी मुखसे लार बहना शीतलता मंदाग्नि और विशूचिका का नाशकरताहै यह नासलेने से और लेपकरने से कफ वात जनित शिरकी पीड़ा प्रलाप छींककारुकना और अत्यन्त मोह इनसबको नाशकरताहै ॥१६१॥

सामान्यज्वरचिकित्सोक्तोमहाज्वरांकुशःप्रदेयोऽत्र ॥ १६२ ॥

सामान्य ज्वरकी चिकित्सामें कहाहुआ महाज्वरांकुशरस भी वातज्वर में देना चाहिये १६२ ॥

विषमहौषधमागधिकोषणद्युमणिरक्तकमार्द्रकमर्दितम् । क्रमविवर्द्धितमुद्दलितंज्वर त्रिपुरभैरवएषपरमोवरः।द्युमणि। मारितंताम्रंतस्यभागाःपञ्चरक्तकंहिंगुलंतस्यभागाःषट्। मात्रास्यरक्तिकार्द्धत्रिपुरभैरवोरसोज्वरे ॥ १६३ ॥

ज्वरपर त्रिपुरभैरव रस ॥

शुद्ध विष १ भा० सोंठ २ भा० पीपल ३ भा० मिर्च ४ भा० तांबेकी भस्म ५ भा० और शुद्धसिंगरफ ६ भा० इनसब औषधियों को अदरक के रसमें घोटकर आधरत्ती सेवनकरे यह ज्वरों के नाश करनेमें बहुत श्रेष्ठहै ॥ १६३ ॥

वातश्लेष्मज्वरेस्वेदंजङ्घापार्श्वास्थिशूलिनि।पीनसश्वासबाधिर्येकारयेत्तद्विधानवित्॥स्रोतसांमार्द्दवंकृत्वानीत्वापावकमाशयम्। हत्वावातकफ स्तम्भंस्वेदोज्वरमपोहति ॥१६४॥

वात कफ ज्वरमें पिंडली पसली तथा हड्डियोंकी पीड़ामें और पीनस श्वास तथा बधिरता में स्वेद देनाचाहिये स्वेद श्रोतोंको कोमलकर के अग्निको उसके स्थानमें ले जाकर और वायु तथा कफकी रुकावट को दूरकर के ज्वरको नाशकरताहै ॥ १६४ ॥

खर्परभृष्टपटस्थितकाञ्जिकसंसिक्तवालुकास्वेदः ॥ शमयतिवातकफामयशूलाङ्गभङ्गादीन्। (बालुकास्वेदः) कम्पेशिरोहृदयगात्रव्यथायांजृम्भायांपादसुप्ततायाम् ॥ पिण्डिकोद्वेष्टनेऽङ्गसादेहनुस्तम्भेचलोमहर्षे ॥ १६५ ॥

खपरेमें बालूको भूनकर कपड़े में रखकर कांजीसे भिजोवे इसके द्वारास्वेद लेनेसे वात तथा कफ जनितरोग कंप मस्तक हृदय और शिरकी पीड़ा जँभाई पैरोंकी सुन्नता पिंडलियोंकी पीड़ा शरीरकी शिथिलता जावड़ेका जकड़ना और रोमांच इनका नाशहोताहै यह बालुका स्वेद कहलाताहै ॥१६५॥

मातुलुङ्गफलकेशरोद्धृतःसिन्धुजन्ममरिचान्वितोमुखे । हन्तिवातकफरोगमास्यगं शोषमाशुजड़तामरोचकम् ॥ (इतिकवलःकण्ठोष्ठमुखशोषे) ॥ १६६ ॥

कंठ ओठ तथा मुख के सूखने पर कवलकी विधि ॥

सेंधानोन और मिर्चयुक्तनींबूके जीरेको मुखमें रखने से वात कफ मुखरोग कंठ ओठ तथा मुख का सूखना जड़ता और अरुचि इनसबका शीघ्र नाशहोताहै ॥ १६६ ॥

अन्यच्च ॥

शर्करादाड़िमाभ्याञ्चद्राक्षादाड़िमयोस्तथा । कल्कंविधारयेदास्येशोषवैरस्यनाशनम् ॥ द्राक्षामलकयोःकल्कंसघृतंवदनेक्षिपेत् । तेनघृष्ट्वामुखस्यान्तःकुर्वीतप्रतिसारणम् ॥ तेनतालुगलान्तस्थःसंशोषश्चैवशाम्यति ।सरसंजायतेवक्त्रंरुचिर्भवतिभोजने॥१६७॥

अन्यप्रकार ॥

शक्करतथा अनार अथवा दाख तथा अनारके कल्कको मुखमें रखने से मुखकी विरसता और मुखके सूखनेका नाशहोताहै दाख और आंवलेके कल्कको घृत सहित मुखमें रक्खे उसको मुखमें घिसके उगलदे इस्से तालु तथा गलेका सूखना नष्टहोताहै मुख सुरसहोजाताहै और भोजन में रुचिहोतीहै ॥ १६७ ॥

निद्रानाशस्य निदानमाह ॥

नावनंलङ्घनंचिन्ताव्यायामःशोकभीरुषः।एभिरेवभवेन्निद्रानाशःश्लेष्मातिसंक्षयात्१६८

निद्राके नाशका निदान ॥

नासलेना लंघन चिन्ता व्यायाम शोक भय क्रोध और कफका अत्यन्त नाश इनकारणों से निद्रा का अत्यन्त नाशहोता है ॥ १६८ ॥

अथ तस्याश्चिकित्सामाह ॥

भृष्टन्तुविजयाचूर्णंमधुनानिशिभक्षयेत् । निद्रानाशेऽतिसारेचग्रहण्यांपावकक्षये ॥ गुड़ंपिप्पलिमूलस्यचूर्णेनालोड़ितंलिहेत् । चिरादपिचसन्नष्टांनिद्रामाप्नोतिमानवः ॥ वायसजङ्घामूलंबद्धंवाशिरसिकाकमाच्याश्च । विधृतंनिद्राजनकंत्वङ्मूलंवाशृतंसगुड़म् ॥ पीतमितिशेषः मूलन्तुकाकमाच्यावद्धंसूत्रेणमस्तकेनियतम् । विदधातिनष्टनिद्रेमाश्वेव सिद्धमिदम् ॥ शीलयेन्मन्दनिद्रस्तुक्षीरमद्यरसान्दधि । अभ्यङ्गोद्वर्त्तनस्नानमूर्द्धकर्णाक्षितर्पणम् ॥ रसंमांसरसम् । कान्ताबाहुलताश्लेष्मोनिर्वृत्तिःकृतकृत्यता ॥ मनोनुकूलाविषयाःकामंनिद्रासुखप्रदा । रसेशाकेचसूपेचसर्पिर्यूषपयःसुच ॥ निद्रांसञ्जनयत्याशुपलाण्डुरुपयोजितः । रसेमांसरसे ॥ एक्षवंपोतकीमाषःसुरामांसरसःपयः । गोधूमतिलमत्स्याश्चनिद्रांकुर्वन्तिदेहिनामनिद्रनाशे ॥ १६९ ॥

निद्रा नाशकी चिकित्सा ॥

भूनी हुई भंगके चूर्णको शहत के साथ रात्रिमें खानेसे निद्राका न आना अतीसार ग्रहणी और मंदाग्नि इनरोगों का नाश होताहै पीपलामूलके चूर्णको गुड़में मिलाकर चाटने से बहुतदिनसे नष्ट हुई भी निद्राको मनुष्य प्राप्त होता है काकजंघाकी जड़ अथवा काकमाचीकी जड़ शिरमें बांधनेसे

निद्रा आतीहै अथवा ऊपर लिखीहुई औषधोंकी छाल और जड़के क्राथमें गुड़ मिलाकर पीनेसे निद्राआतीहै यह सिद्धयोग है निद्राकी अल्पता होने पर दुग्ध मद्य मांस रस तथा दहीके सेवनसे तैल मर्द्दन उबटन तथा स्नान करने से और शिर कान तथा नेत्रों को तैलादिके द्वारा पूर्ण करनेसे निद्रा आतीहै उत्तम स्त्रीका आलिङ्गन कफकी उत्पत्ति कृतार्थता और मनके अनुकूल भोगादिक इनसब से सुख पूर्व्वक निद्राआती है मांसरस शाक दाल घी यूप और दूध इनमें प्याजडालकर खानेसे शीघ्र निद्राआती है शक्कर आदिक ईखके पदार्थ पोय उर्द सुरा मांसरस दूध गेहूं तिल और मछली इन के सेवनसे निद्रा आती है॥ १६६ ॥

दारुहैमवतीकुष्ठशताह्वाहिङ्गुसैन्धवैः । लिम्पेत्कोष्णैरम्लपिष्टैःशूलाध्मानयुतोदरम् । हैमवतीश्वेतवचादारुपट्कालेपःशूलाध्माने ॥ १७० ॥

शूल तथा अफरा पर दारु पट्कलेप॥

देवदारु श्वेतवच कूट सौंफ हींग इनऔषधियों को कांजी के साथ पीसकर कुछ गरम २ पेटपर लेपकरने से शूल तथा अफरेका नाशहोता है ॥ १७० ॥

कटुतैलंकणाहिङ्गुवचालसुनसाधितम् । उष्णंविनिहितंहन्तिकर्णयोर्निःस्वनंव्यथाम् ॥ तैलंकर्णस्वनेकणासुगन्धिवचयायवान्याचसमन्विता । ताम्बूलसहिताहन्तिशुष्ककासंमुखेधृता ह्वनिशुष्ककासे ॥ १७१ ॥

पीपल हींग वच और लहसन इनको कड़वे तेलमें पाककरे इसतेल को कानमें छोंडने से पीड़ा और कानों के शब्दका नाश होताहै पीपल सुगन्धित वच अजवाइन और पान इनके एकसाथ मुख में रखने से सूखी खांसीका नाश होताहै ॥ १७१ ॥

अथान्न माह ॥

श्रमोपवासानिलजेहितोनित्यंरसौदनः । मुद्गामलकयूपस्तुबद्धविट्कायदीयते ॥ रसो मांसरसः । पेयांवारक्तशालीनांवस्तिपार्श्वशिरोरुजि ॥ श्वदंष्ट्राकण्टकारीभ्यांसिद्धांज्वरहरींपिवेत् । कासीश्वासीचहिक्कीचपञ्चमूलीश्रृतंपिवेत् ॥ पेयामितिशेषःइतिवातज्वराधिकारः ॥ १७२ ॥ वातज्वरमें देनें के योग्य अन्न ॥

परिश्रम उपवास तथा वात जनित ज्वरमें मांसके रस के साथ भात खाना सदैव हितकारी है ज्वरमें जो मूत्राशय पसली तथा शिरमें पीड़ाहोय तो गोखुरू और भटकटैया के क्राथसे बनी हुई लाल धानके चावलों की पेयापिये खांसी श्वास तथा हिचकी आनेपर पंचमूलसे बनीहुई पेया पिये इति वातज्वराधिकार ॥ १७२ ॥

अथ पित्तज्वराधिकारः ॥

तत्रपित्तज्वरस्यविप्रकृष्टसान्निकृष्टकथनपूर्विकांसंप्राप्तिमाह । पित्तलाहारचेष्टाभ्यांपित्तमामाशयाश्रयम् ॥ वहिर्निरस्यकोष्ठाग्निंज्वरकृत्स्याद्रसानुगः । पित्तस्यपङ्गुत्वात्तेनकोष्टाग्नेरुष्मावहिर्नेतुंनशक्यते ॥ यतआह । पित्तंपङ्गुःकफःपङ्गुःपङ्गवोमलधातवः॥ वायुनायत्रनीयन्तेतत्रगच्छन्तिमेघवत् । इतिततोऽत्रपित्तंवातसहायेनैवोधव्यं॥यत आह ।

द्रव्यमेकरसंनास्तिनरोगोऽप्येकदोपजः । एकस्तुकुपितोदोपइतरानपिकोपयेत्॥१७३॥

पित्तज्वरका अधिकार ॥

पित्तज्वरके दूर और समीपी कारणों सहित संप्राप्ति का वर्णन इसप्रकार करते हैं कि पित्त वर्द्धक आहार विहारों के द्वारा आमाशयमें गयाहुआ पित्त जठराग्नि को बाहर निकालकर और रस को दूषित करके ज्वरको उत्पन्न करताहै पित्त पंगुहै इसलिये जठराग्नि की गरमी को बाहर नहीं निकाल सक्ताहै क्यों कि कहागया है कि पित्त कफ मल और धातु यहसब पंगु हैं (चलनेमें असमर्थ हैं) मेघोंके समान वायु जहाँ इन्हें लेजातीहै वहाँजाते हैं इसलिये पित्तवायु की सहायता से ऊपर कहे हुए कार्य्य को करताहै क्योंकि कहागयाहै कि कोई द्रव्य एक रसयुक्त नहींहै और एकही दोषसे उत्पन्न हुआ कोई रोगनहीं एकदोष कुपित होकर अन्यदोषोंकोभी कुपित करताहै ॥ १७३ ॥

इतितस्यपूर्वरूपमाह ॥

पित्तान्नयनयोर्दाहइति।पित्तज्वरेउत्पत्स्यतिनेत्रदाहःस्यात्सचश्रमादिपूर्वकोभवति १७४

पित्तज्वरका पूर्वरूप ॥

पित्तज्वरके उत्पन्नहोनेकेपहले श्रमआदिक सामान्य ज्वरके पूर्वरूप सहित नेत्रोंमें दाह होताहै १७४॥

अथ पित्तज्वरस्य लक्षणमाह ॥

वेगस्तीक्ष्णोऽतिसारश्चनिद्राल्पत्वंतथावमिः । कण्ठौष्ठमुखनासानांपाकःस्वेदश्चजायते ॥ प्रलापोवक्त्रकटुतामूर्च्छादाहोमदस्तृषा । पीतविण्मूत्रनेत्रत्वंपैत्तिकेभ्रमएवच ॥ अतीसारःपित्तस्यतस्यसरत्वात्सद्रवमलप्रवर्त्तिनंत्वतिसारवत्तस्यज्वरोपद्रवत्वात्वमिः । यदापित्तंकफस्यस्थानंयातितदाबोद्धव्यम् ॥ प्रलापोऽनर्थकंवचःमूर्च्छारूपादिरज्ञानम् । (मदः) पूगकोद्रवधत्तूरभक्षणादिवमत्तता ॥ भ्रमश्चक्रारूढस्येवज्ञानंचकाराद्रक्तकोठादयोबोद्धव्याः ॥ १७५ ॥

पित्तज्वर के लक्षण ॥

पित्तज्वरमें तीक्ष्ण वेग अतीसार निद्राकी अल्पता छर्दि कण्ठ ओठ मुख और नासिकाकापकना स्वेद प्रलाप (अनर्थक वचन) मुखकी कटुता मूर्च्छा दाह मद तृषा मलमूत्र तथा नेत्रोंकी पीतता और भ्रम यह लक्षण होतेहैं यहा अतीसार शब्दसे पित्तके दस्तावर होनेके कारण मलका पतलापन होना चाहिये अतीसाररोग न जाननाचाहिये क्योंकि यह ज्वरका उपद्रव मात्रहै पित्तज्वर में जब पित्तकफ के स्थानमें जाताहै तब छर्दि होतीहै यहां भ्रमशब्दका अर्थ चक्करमें पड़ा हुआसा मालूम होताहै और चकारसे रक्तकोठादिरोग जाननाचाहिये ॥ १७५ ॥

अथ पित्तज्वरस्यचिकित्सा ॥

आमाशयस्थोहत्वाग्निंसामोमार्गान्पिधापयन्। विदधातिज्वरंदोपस्तस्माल्लङ्घनमाचरेत्॥ इतिवचनात्सामन्यतोज्वरिमात्रस्ययावदारोग्यदर्शनंलङ्घनाभिधानम्। पित्तज्वरिणोलङ्घनविधानेविशेषमाह । सुश्रुतः । पैत्तिकेदशरात्रेणज्वरेयुञ्जीतभेषजमिति । (दशरात्रेणलङ्घनवताव्यतीतेनेत्यर्थः) ॥ १७६ ॥

पित्तज्वरकी चिकित्सा ॥

आम सहित दोष आमाशयमें स्थित हुआ अग्निको मन्दकरके रसके लेचलनेवाली नाड़ियोंको रोककर ज्वरको उत्पन्न करताहै इसलिये लंघन कराना चाहिये इस वचनके द्वारा सम्पूर्ण ज्वर वालोंको सामान्यतासे आरोग्य पर्य्यन्त लंघन देना चाहिये यह सिद्ध होताहै इसमें पित्त ज्वरवाले को लंघन देनेके लिये विशेषता कहीहै जैसे कि पित्तज्वर में दश दिन लंघन कराके ग्यारहवें दिन औषध देनी चाहिये ॥ १७६ ॥

किंतद्भेषजंतदाह ॥

तिक्तामुस्तायवैःपाठाकटूफलाभ्यांसहोदकम् । पक्वंसशर्करंपीतंपाचनंपैत्तिकेज्वरे ॥ (तिक्तादिक्वाथः) ॥ १७७ ॥

औषधियोंका वर्णन तिक्तादिक्वाथ ॥

कुटकी मोथा जव कायफल पाढ़ा और सुगन्धवाला इन औषधियोंके क्वाथमें शक्कर डालकर पीने से पित्तज्वरमें पाचन होताहै ॥ १७७ ॥

पर्पटोवासकस्तिक्ताकैरातोधन्वयासकः । प्रियंगुश्चकृतःक्वाथएषांशर्करयायुतः ॥ पिपासादाहपित्तास्रयुक्तंपित्तज्वरंहरेत् । (पर्पटादिक्वाथः) ॥ १७८ ॥

परपटादिक्वाथ ॥

पित्तपापड़ा वांसा कुटकी चिरायता जवासा और मालकांगनी इन औषधियोंके क्वाथमें शक्कर डालकर पीनेसे तृषा दाह तथा रक्तपित्तज्वरका नाशहोताहै ॥ १७८ ॥

द्राक्षाहरीतकीमुस्ताकटुकाकृतमालकः । पर्पश्चकृतःक्वाथएषांपित्तज्वरापहः ॥ मुखशोषप्रलापार्त्तिदाहमूर्च्छाभ्रमप्रणुत् । पिपासारक्तपित्तानांशमनोभेदनोमतः ॥ (द्राक्षादिक्वाथः) ॥ १७९ ॥

द्राक्षादिक्वाथ ॥

दाख हड़ मोथाकुटकी अमलतास और पित्तपापड़ा इनऔषधियोंकाक्वाथ पीनेसेपित्तज्वर मुखका सूखना प्रलाप अन्तर्दाह मूर्च्छाभ्रम तृषा तथा रक्तपित्तकानाशहोताहै और मलका भेदहोता है१७९

पटोलयवधान्यकमधुकंमधुसंयुतम् (क्वाथः) हन्तिपित्तज्वरंदाहंतृष्णाञ्चातिभ्रमाथिनीम् ॥ (पटोलादि) ॥ १८० ॥

पटोलादिक्वाथ ॥

परवल इन्द्रजो धनिया और मुलहठी इनका काढ़ा शहत डालकर पीनेसे पित्तज्वर दाह और अत्यन्त तृषाको दूर करताहै ॥ १८० ॥

गुडूच्यामलकैर्युक्तःकेवलोवापिपर्पटः । पित्तज्वरंहरेत्तूर्णंदाहशोषभ्रमान्वितम् ॥ (गुडूच्यादिक्वाथः) ॥ १८१ ॥

गुडूच्यादिक्वाथ ॥

गिलोय और आंवले समेत पित्तपापड़ेका क्वाथ अथवा केवल पितपापड़ेका क्वाथ पानकरनेसे दाह शोष तथा भ्रमसहित पित्तज्वरको शीघ्रनाश करताहै ॥ १८१ ॥

एकःपर्पटकःश्रेष्ठःपित्तज्वरविनाशनः । किंपनर्यदियज्ञीतचन्दनोशीरवालकैः ॥ १८२ ॥

केवल पित्तपापड़ेकाही काथ पित्तज्वर को नाशकरताहै और चन्दन खस तथा सुगन्धवालाके योगहोने पर तो क्याही कहनाहै ॥ १८२ ॥

ह्रीवेरचन्दनोशीरघनपर्पटसाधितम् । दद्यात्सुशीतलंवारितृट्छर्दिज्वरदाहनुत् ॥ (ह्रीवेरादिक्काथः) १८३ ॥ ह्रीवेरादिक्काथ ॥

सुगन्धवाला लालचन्दन खस मोथा और पित्तपापड़ेका क्काथ ठंढा करके पीने से तृषा छर्दि ज्वर तथा दाहका नाशहोताहै ॥ १८३ ॥

भूनिम्बातिविषालोध्रमुस्तकेन्द्रयवामृता । वालकंधान्यकंविल्वंकषायोमाक्षिकान्वितः ॥ विड्भेदश्वासकासांश्चरक्तपित्तज्वरंहरेत् । (भूनिम्बादिक्काथः) ॥ १८४ ॥

भूनिंबादिक्काथ ॥

चिरायता अतीस लोध मोथा इन्द्रजौ गिलोय सुगन्धवाला धनियां और बेल इन औषधियों के काढ़ेमें शहत डालकर पान करनेसे मल भेद श्वास खांसी रक्त पित्त तथा ज्वर का नाशहोताहै १८४॥

द्राक्षाचन्दनपद्मानिमुस्तातिक्तामृतापिच । धात्रीवालमुशीरंचलोध्रेन्द्रयवपर्पटाः ॥ परूषकंप्रियंगुश्चयवासोवासकस्तथा । मधुकंकुलकञ्चापिकिरातोधान्यकंतथा ॥ एषां काथोनिहन्त्येवज्वरंपित्तसमुत्थितम् । तृष्णांदाहंप्रलापञ्चरक्तपित्तंभ्रमंक्लमम् ॥ मूर्च्छां छर्दिंतथाशूलंमुखशोषमरोचकम् । कासंश्वासञ्चहृल्लासंनाशयेन्नात्रसंशयः ॥ (महाद्राक्षादिक्काथः) ॥ १८५ ॥ महाद्राक्षादि काथ ॥

दाख लालचन्दन पद्माक मोथा कुटकी गिलोय आमला सुगन्धवाला खस लोध इन्द्रजौ पित्तपापड़ा फालसा मालकांगनी जवासा वांसा मुलहठी परवल चिरायता और धनियां इनसब औषधियोंका क्काथ पीनेसे पित्तज्वर तृषा दाह प्रलाप रक्तपित्त भ्रम ग्लानि मूर्च्छा छर्दि शूल मुखकासूखना अरुचि खांसी श्वास तथा मतली का नाशहोताहै ॥ १८५ ॥

ससितोनिशिपर्युषितःप्रातर्धान्याकक्काथः । पीतःशमयत्यचिरादन्तर्दाहज्वरंपित्तम् ॥ (धान्याकक्काथः) ॥ १८६ ॥ धनियेकाकाथ ॥

धनियेका वासीक्काथ शक्कर डालकर प्रातःकाल पीनेसे अत्यन्त शीघ्र अन्तर्दाह सहित पित्तज्वर नाशहोता है ॥ १८६ ॥

अमृतायाहिमःप्रातःससितःपैत्तिकंज्वरम् । वासायाश्चतथाकासरक्तपित्तज्वरान् जयेत् ॥ १८७ ॥

गिलोयको कूटकर सायंकाल में भिजोदे फिर प्रातःकाल उसको छानके शक्करसहित पीने से पित्तज्वर नाशहोता है इसीप्रकार वाँसेके भी कषाय के पानकरने से खांसी रक्तपित्त तथा ज्वरका नाशहोता है ॥ १८७ ॥

गुडूचीभूमिनिम्बश्चवालंवीरणमूलकम् । लघुमुस्तंतत्त्वद्धात्रीद्राक्षावासाचपर्पटः ॥ एषांक्काथोहरत्येवज्वरंपित्तकृतंद्रुतम् । सोपद्रवमपिप्रातर्निपीतोमधुनासह ॥ गुडूच्यादिक्काथः ॥ १८८ ॥

गडूच्यादिक्वाथ ॥

गिलोय चिरायता सुगन्धबाला खस छोटा मोथा निसोथ आंवला दाख वांसा और पित्तपापड़ा इन औषधियों का क्वाथ सहत डालकर प्रातःकाल पीनेसे उपद्रव सहित पित्त ज्वर का नाश होता है ॥*१८८॥

पलाशस्यबदर्यावानिम्बस्यमृदुपल्लवैः।अम्लपिष्टैःप्रलेपोऽयंहन्याद्दाहयुतंज्वरम् १८९ ॥

पलाश (ढाक) बेर अथवा नींबके कोमल पत्तोंको कांजीसे पीसकर लेप करनेसे दाहयुक्त ज्वर का नाश होताहै ॥ १८९ ॥

उत्तानसुप्तस्यगंभीरताम्रकांस्यादिपात्रेनिहितेचनाभौ। शीताम्बुधाराबहुलापतन्ती निहन्तिदाहंज्वरितज्वरञ्च ॥ १९० ॥

रोगीको चित्तसुलाकर नाभिपर तांबे अथवा कांसे आदिके गहरेपात्रको रखकर उसमें शीतल जलकीधार छोड़नेसे शीघ्रही दाह और ज्वर का नाश होताहै ॥ १९० ॥

पथ्यांतैलघृतक्षौद्रैर्लिहन्दाहज्वरापहाम् । कासासृक्पित्तवीसर्पश्वासान्हन्तिवमीमपि ॥ (तैलघृतक्षौद्रैरित्यत्रनसमुच्चयस्तेनकेवलेनक्षौद्रेणापिलिह्यात्) ॥ १९१ ॥

हड़को पीसकर तेल घी तथा सहतके साथ चाटनेसे खांसी रक्तपित्त विसर्प श्वास छर्दि दाह तथा ज्वरका नाशहोताहै तेल घी और सहत इनको इकट्ठा न लेकर केवल सहतकेसाथही चाटनेसे रोगोंका नाश होताहै ॥ १९१ ॥

काञ्जिकार्द्रपटेनावगुण्ठनंदाहनाशनम्।अथगोतक्रसंस्विन्नंशीतलीकृतवाससा॥१९२॥

कांजीसे भिगोयेहुए वस्त्रके ओढ़नेसे भी दाहका नाश होताहै अथवा गौके मट्ठेमें भीगेहुए शीतल वस्त्रको लपेटनेसे दाहका नाश होताहै ॥ १९२ ॥

द्राक्षामलककल्केनकवलोऽत्रहितोमतः। पक्वदाडिमबीजैर्वाधानाकल्केनवक्वचित् ॥ (इतिकवलः। धानात्रधान्यकंइतिकल्कः) ॥ १९३ ॥

दाख और आंवलेके कल्कसे पके अनारके बीजोंके कल्कसे अथवा धनियें के कल्कके द्वारा कवल ग्रहणकरनेसे दाहका नाश होताहै ॥ १९३ ॥

अथान्यमाह ॥

दाहकम्पार्दितंक्षामंनिरन्नंतृष्णयान्वितम् । शर्करामधुसंयुक्तंपाययेल्लाजतर्पणम् ॥ (लाजतर्पणम्लाजशक्तुरूपंतर्पणंसन्तर्पणस्वरूपमुक्तंसामान्यज्वरचिकित्सायां) मुद्गयूषौदनोदेयःसितयापैत्तिकेज्वरे १९४ ॥

पित्तज्वरवालेको अन्न ॥

दाह तथा कंपसे पीड़ित क्षीण लंघनी और प्यासे पित्तज्वरवालेको शक्कर और सहत युक्त खीलोंके सत्तुओंका तर्पण देनाचाहिये अथवा शक्कर सहित मूंगके यूषकेसाथ भातदेनाचाहिये १९४ ॥

हर्म्येशुभ्राभ्रसङ्काशेशशाङ्ककरशीतले।मलयोदकसंसिक्तेसुप्यात्पित्तज्वरीनरः॥ १९५ ॥

पित्तज्वरवाला शुभ्रमेघोंके समान कांतिवाले चन्द्रमाकी किरणोंसे शीतल और, चन्दनसे सिंचे हुए स्थानमें सोवे ॥ १९५॥

हारावलीचन्दनशीतलानांसुगन्धपुष्पाम्बरभूपितानाम् । नितम्बिनीनांसुपयोधराणामालिङ्गनान्याशुहरन्तिदाहम् ॥ आह्लादश्चास्यविज्ञायनस्त्रीरपनयेत्पुनः । हितञ्चभोजयेदन्नंनप्रीतिसुरतंमहत् ॥ १९६ ॥

हार तथा चन्दनसे शीतल अंगवाली सुगन्धित पुष्प तथा वस्त्रोंसे आभूषित सुन्दर पयोधरवाली स्त्रियोंके आलिंगनसे शीघ्रही दाहका नाश होताहै इस प्रकार पुरुषको आनन्दित जानकर स्त्रियोंको फिर हटवावे नहीं और हित अन्न भोजन करवावे परन्तु बहुत मैथुन करना हितकारी नहीं है१९६॥

वाप्यःकमलहासिन्योजलयन्त्रगृहाःशुभाः । नार्यश्चन्दनदिग्धाङ्ग्योदाहदैन्यहरामताः ॥ (इतिपित्तज्वराधिकारः) ॥ १९७ ॥

फूलेहुए कमलवाली बावड़ी फव्वारेयुक्तघर और चन्दनलगेहुए अंगवालीस्त्री यह सब दाह और दीनताको नाश करतेहैं इति पित्तज्वराधिकार ॥ १९७ ॥

अथ श्लेष्मज्वराधिकारः (अथश्लेष्मज्वरस्यविप्रकृष्टसन्निकृष्टकारणकथनपूर्विकांसंप्राप्तिमाह) ॥

श्लेष्मलाहारचेष्टाभ्यांकफमामाशयाश्रयः । वहिर्निरस्यकोष्ठाग्निंज्वरकृत्स्याद्रसानुगः ॥ कफस्यकोष्ठाग्नितेजसोवाहिर्नयनेनपंगुत्वादाशङ्कायांजातायांपित्तस्येवसिद्धान्तोवोद्धव्यः ॥ १९८ ॥

कफज्वराधिकार कफज्वरके दूर और समीपीकारण सहित संप्राप्तिका वर्णन ॥

कफकारी आहार और विहारोंके द्वारा आमाशयमें गयाहुआ कफ जठराग्निकी ऊष्माको बाहर निकालकर रसको दूषित करता हुआ ज्वरको उत्पन्न करताहै कफ पंगुहै इसलिये जठराग्निकी ऊष्माको बाहर नहीं निकाल सक्ताहै इस सन्देहके उत्तर में पित्तके समान सिद्धान्त यहां भी जानना चाहिये ॥ १९८ ॥ अथतस्यपूर्वरूपमाह ॥

कफान्नाद्याभिनन्दनमितिकफज्वरेउत्पत्स्यति । अनन्नाभिलापःस्यात्सचश्रमादिपूर्वकोभवति १९९ ॥ कफज्वरका पूर्वरूप ॥

कफज्वरके उत्पन्न होनेके पहले श्रम आदिक सामान्य ज्वरके पूर्वरूप सहित अन्नमें अनिच्छा होती है ॥ १९९ ॥ अथश्लेष्मज्वरस्यलक्षणमाह ॥

स्तैमित्यंस्तिमितोवेगआलस्यंमधुरास्यता॥शुक्लमूत्रपुरीषत्वंस्तम्भस्तृप्तिरथापिवा॥गौरवंशीतमुत्क्लेदोरोमहर्षोऽतिनिद्रिता । प्रतिश्यायोऽरुचिःकासःकफजेऽक्ष्णोश्चशुक्लता॥ स्तैमित्यमङ्गानांआर्द्रपटावगुण्ठितत्वमिव । स्तिमितोवेगःज्वरस्यमन्दोवेगःआलस्यंसमर्थस्यापिकर्मण्यनुत्साहः। क्लेदःवमनोपस्थितमिवस्तम्भःअङ्गानांनघतातृप्तिः॥ अन्नानभिलापःसत्यपिभोजनसामर्थ्यात्गौरवंगात्राणाम् । शीतंलगतिउत्क्लेदःवमनोपस्थितिरितिच । अतिनिद्रतानिद्राधिक्यंप्रतिश्यायोनासारोगविशेषः । अरुचिःभोजनानिच्छाचकारात्पिडिकाशीतामुखप्रसेकछर्दिस्तन्द्राहृदयोपलेपउष्णाभिलापोवह्निमान्द्यमिति च

तउक्तम्। प्रसेकःपिड़िकाशीतश्छर्दिस्तन्द्रोष्णकामिता । कफेनलिप्तंहृदयंभवेदग्नेश्च मन्दता २०० ॥

कफज्वरके लक्षण ॥

शरीरमें गीलाकपडा लिपटाहुआ सामालूम होना ज्वरका वेग मन्द होना आलस्य मुख मधुरहै मूत्र तथा मलका श्वेतहोना शरीरका अकड़ना अन्नमें अनिच्छा शरीरका भारीपन शीतलगना मचली रोमांच निद्राकी अधिकता जुकाम अरुचि खांसी और नेत्रोंकी शुक्लता यह लक्षण कफज्वरमें होतेहैं चकारसे मुख तथा नासिका का बहना फुंसी शीत छर्दि तंद्रा उष्णताकी इच्छा कफसे भराहुआ साहृदय और मन्दाग्नि यह लक्षण होतेहैं ॥ २०० ॥

अथश्लेष्मज्वरस्यचिकित्सा ॥

आमाशयस्थोहत्वाग्निंसामोमार्गांपिधापयन्। विदधातिज्वरंदोषस्तस्माल्लंघनमाचरेत् ॥ इतिवचनात्सामान्यतोज्वरीमात्रस्य यावदारोग्यदर्शनमूलंघनाभिधानंश्लेष्मज्वरिणोलंघनविधानेविशेषमाहसुश्रुतः। श्लैष्मिकेद्वादशाहेनज्वरेयुंजीतभेषजमिति। द्वादशाहेवलंघनवताव्यतीतेनेत्यर्थः २०१ ॥

कफज्वरकी चिकित्सा ॥

आमाशयमें स्थितदोष अग्निको मन्दकरके स्वेद तथा रसके बहनेवाले श्रोतोंको आच्छादन करता हुआ ज्वरको उत्पन्न करताहै इसलिये लंघनकरना चाहिये इसवचनके द्वारा सामान्यतासे सम्पूर्ण ज्वरवालोंको लंघनकरना रोगकी निवृत्तितक उचितहै इनमें कफज्वरके रोगमें सुश्रुतने विशेषता कहीहै जैसे कि कफज्वरमें बारहदिन लंघन करायके तेरहवें दिन औषध देनी चाहिये ॥ २०१॥

किंतद्भेषजंतदाह ॥

पिप्पल्यादिकषायंतुकफजेपरिपाचनम् (पिप्पल्यादिगणमाह) पिप्पलीपिप्पलीमूलं मरिचंगजपिप्पली। नागरंचित्रकंचव्यंरेणुकैलाजमोदिका ॥ सर्षपोहिंगुभार्गीचपाठेन्द्रयवजीरकाः। महानिम्बवचामूर्वाविषातिक्ताविडंगकम्॥ पिप्पल्यादिगणोह्येपकफमारुतनाशनः। गुल्मशूलज्वरहरोदीपनस्त्वामपाचनः ॥ पिप्पल्यादिक्वाथः २०२ ॥

औषधियोंका वर्णन, पिप्पल्यादि क्वाथ ॥

पिप्पल्यादि गणका क्वाथ कफज्वरमें पाचन होताहै पिप्पल्यादिगण पीपल पीपलामूल मिर्च गजपीपल सोंठ चीता चव्य रेणुका इलायची अजवाइन सरसों हींग भारंगी पाढ़ा इन्द्रजौ जीरा महानिंब वच मरोड़फली अतीस कुटकी और वायविडंग यहसब पिप्पल्यादि गणकहाते हैं यह कफवात वायगोला शूल तथा ज्वरनाशक दीपन और आमकापचाने वालाहोता है ॥ २०२ ॥

क्षौद्रोपकुल्यासंयोगश्वासकासज्वरापहः।प्लीहानंहन्तिहिक्कांचबालानामपिशस्यते॥ पिप्पलीत्रिफलाचापिसमभागानज्वरीलिहन्।मधुनासर्पिपाचापिकासीश्वासीसुखीभवेत्२०३

सहतके साथ पीपलचाटनेसे श्वास खांसी ज्वर प्लीहा तथा हुशकीका नाश होताहै और यही बालकों कोभी श्रेष्ठहै पीपल और त्रिफला समभाग सहत और घीके साथ चाटनेसे खांसी श्वास तथा ज्वरका नाश होता है ॥ २०३ ॥

चतुर्भद्रिका ॥

कट्फलंपौष्करंशृंगीकृष्णाचमधुनासह।श्वासकासज्वरहरोलेहोऽयंकफनाशनः २०४॥

चतुर्भद्रिका ॥

कायफल पुष्करमूल काकड़ासिंगी और पीपल इनको सहतके साथचाटनेसे खांसी श्वास ज्वर तथा कफका नाश होताहै ॥ २०४ ॥

अष्टांगावलेहः ॥

कट्फलंपौष्करंशृंगीयवानीकारवीतथा। कटुत्रयञ्चसर्वाणिसमभागानिचूर्णयेत्॥आर्द्रकस्यरसैर्लिह्यान्मधुनावाकफज्वरी॥कासश्वासारुचिच्छर्दिहिकाश्लेष्मानिलापहः २०५

अष्टांगावलेह ॥

कायफल पुष्करमूल काकड़ासिंगी अजवाइन सोंफ सोंठ मिर्च और पीपल इनसब औषधियोंको समभाग लेकर अदरकके रस अथवा सहतके साथचाटने से कफज्वर खांसी श्वास अरुचि छर्दि हिचकी कफ तथा वातका नाश होताहै ॥ २०५ ॥

सिन्दुवारदलक्काथंकणाढ्यंकफजेज्वरे । जङ्घयोश्चबलेक्षीणेकर्णेचपिहितेपिबेत् ॥ यवानीपिप्पलीवासायथाखाखसवल्कलम्।एषांक्काथंपिबेत्कासेश्वासेचकफजेज्वरे२०६॥

कफज्वरमें पिंडलियोंके बलके क्षीण होजाने में और कानोंके बन्दहोजाने में पीपल डालकर निर्गुण्डीके क्वाथका पानकरे अजवाइन पीपल वांसा और पोस्तके छिलके इन औषधियोंका क्वाथ पीने से श्वास खांसी तथा कफज्वरका नाशहोताहै ॥ २०६ ॥

वासादिक्काथः ॥

वासाक्षुद्रामृताक्काथःक्षौद्रेणज्वरकासहृत् ॥ २०७ ॥ (मरिचादि क्काथः) मरिचंपिप्पलीमूलंनागरंकारवीकणा । चित्रकंकट्फलंकुष्ठंससुगन्धिवचाशिवा ॥ कण्टकारीजटाश्रृङ्गीयवानीपिचमन्दकः । एषांक्काथोहरत्येवज्वरंसोपद्रवंकफात् ॥ २०८ ॥

वासादि क्काथ ॥

वांसा भटकटैया और गिलोय इनके क्वाथमें सहत डालकर पीने से ज्वर तथा खांसीका नाशहोता है २०७ (मरिचादि क्काथ) मिर्च पीपलामूल सोंठ सोंफ पीपल चीता कायफल कूट सुगन्धित वच हड़ भटकटैयाकीजड़ काकड़ासिंगी अजवाइन नींबकीछाल इन औषधियोंका क्वाथ पीने से उपद्रव सहित कफज्वरका नाश होताहै ॥ २०८ ॥

कफवातव्याधिहरत्वाद्वाताधिकरोक्तकल्पतरुरसोयोज्यः । सिन्धुत्रिकटुराजीभिरार्द्रकेणकफेहितःकवलइतिशेषः ॥ २०९ ॥

वातज्वराधिकारमें कहाहुआ कल्पतरुनामरस कफज्वरमें देनाचाहिये क्योंकि वह कफ और वातरोगों का नाशकहै सेंधानोन सोंठ मिर्च पीपल और राई इनको अदरकके रसमें मिलाकर ग्रास बनाकर मुखमें रखनेसे कफका नाश होताहै ॥ २०९ ॥

अथान्य माह ॥

मुद्गयूषोदनोदेयो ज्वरे कफसमुत्थिते । (इतिश्लेष्मज्वराधिकारः) ॥ २१० ॥

(कफज्वरमें अन्न) कफज्वरमें मूंगका यूष और भातदेना चाहिये इतिकफज्वराधिकार ॥ २१० ॥

अथ वातपित्तज्वराधिकारः ॥

विप्रकृष्टसन्निकृष्टकारणकथनपूर्विकांसंप्राप्तिमाह । (तत्रवातपित्तज्वरस्य) वात पित्तकरैर्वातपित्तेआमाशयाश्रये । बहिर्निरस्यकोष्ठाग्निंरसगेज्वरकारिणी ॥ स्याता मितिशेषः ॥ २११ ॥ (अथ तस्यपूर्वरूपमाह) प्राग्रूपेवातपित्तस्यभवतोवातपैत्तिके ज्वरइतिशेषः ॥ २१२ ॥ । वातपित्त ज्वराधिकार ॥

द्वंद्वज ज्वरके दूर और समीपी कारणों समेत संप्राप्ति कही जातीहै इनमें से पहले वात पित्त ज्वर का वर्णन करते हैं वात पित्तवर्द्धक आहार बिहारों के सेवनसे आमाशय में गये हुए वात पित्त जठराग्नि की ऊष्मा को बाहर निकाल कर और रसको दूषित करके ज्वरको उत्पन्न करतेहैं ॥२११॥ (वात पित्त ज्वर का पूर्वरूप) वात पित्त ज्वरके उत्पन्न होनेके पहले वात ज्वर और पित्तज्वर के पूर्व रूप सम्बन्धी मिलेहुये लक्षण होते हैं ॥ २१२ ॥

अथ वातपित्तज्वरलक्षणमाह ॥

तृष्णामूर्च्छाभ्रमोदाहोनिद्रानाशःशिरोरुजा। कण्ठास्यशोषोवमथूरोमहर्षोरुचिस्तमः॥ पर्वभेदश्चजृम्भाचवातपित्तज्वराकृतिःपर्वभेदःपर्वाणिभिद्यन्तइतिसन्धिषुव्यथा॥२१३॥ (अथ वातपित्तज्वरस्यचिकित्सा) वातपित्तज्वरेदेयमौषधंपञ्चमेहनि ॥ २१४ ॥

वात पित्तज्वर का लक्षण ॥

तृषा मूर्च्छा भ्रम दाह निद्राका नाश शिरमें पीड़ा कंठतथा मुखका सूखना छर्दि रोमांच अरुचि तम संधियों में पीड़ा और जंभाई यह वात पित्तज्वर के लक्षण हैं ॥ २१३ ॥ (वातपित्त ज्वरकी चिकित्सा) वात पित्त ज्वरमें पांचवें दिन औषध देना चाहिये ॥ २१४॥

किरातादिक्वाथः ॥

किराततिक्तममृताद्राक्षामामलकंशटी। निःक्वाथ्यसगुडंक्वाथंवातपित्तज्वरेपिवेत्॥२१५॥

किरातादि क्वाथ ॥

चिरायता गिलोय दाख आंवला और कचूर इन औषधियों का क्वाथ गुड़ मिलाकर वात पित्त ज्वर में पीना चाहिये ॥ २१५ ॥

पञ्चभद्रक्वाथः ॥

गुडूचीपर्पटोमुस्तंकिरातोविश्वभेषजम्। वातपित्तज्वरेदेयंपञ्चभद्रमिमंशुभम्॥२१६॥

पंच भद्र क्वाथ ॥

गिलोय पित्तपापड़ा मोथा चिरायता और सोंठ यह पंचभद्र नामक्वाथ पित्तज्वरमें देनाचाहिये॥२१६॥

त्रिफलादिक्वाथः ॥

त्रिफलाशाल्मलीरास्नाराजवृक्षाटरूषकैः। शृतमम्वुहरत्याशुवातपित्तभवंज्वरम्॥२१७॥

त्रिफलादि क्वाथ ॥

हड़ वहेड़ा आंवला सेमर रासना अमलतास और वांसा इन औषधियों का क्वाथ वात पित्तज्वर को शीघ्रही नाश करताहै ॥ २१७ ॥

मधुकंसारिवाद्राक्षामधूकंचन्दनोत्पलम्। काश्मरीफलकंलोध्रत्रिफलापद्मकेसरम्॥

परूषकंमृणालञ्चक्षिपेत्संचूर्ण्यवारिणि । निशोषितंमिताक्षौद्रलाजयुक्तन्तुतत्पिवेत् ॥ वातपित्तज्वरंदाहंतृष्णांमूर्च्छांरुचिभ्रमान् । शमयेद्रक्तपित्तञ्चजीमूतमिवमारुतः ॥ अत्रमधुकादिमृणालान्तसमुदितम् । पलद्वयपरिमितंसंचूर्ण्यंक्षिपेत् ॥ वारिणिषट्पलपरिमितेमधुकादिहिमोदाहे ॥ २१८ ॥

दाह पर मधुकादि हिम ॥

मुलहठी सारिवा दाख महुआ लालचन्दन नीलकमल गंभारीका फल लोध त्रिफला कमल की केशर फालसा और,कमल की डंडी यहसब वस्तुमिलाकर आठतोले लेकर चूर्णकरे और इसमें चौवीस तोलेजल छोड़े रातभर भिगोके प्रातःकाल सहत शक्कर और खीलोंका चूर्ण छोड़कर पिये जैसे वायुके द्वारामेघ दूर होजाते हैं उसी प्रकार इसके सेवनसे वात पित्तज्वर दाह तृषा मूर्च्छा अरुचि भ्रम तथा रक्त पित्त यह सब दूरहोते हैं॥ २१८ ॥

अथान्नमाह ॥

मुद्गामलकयूषस्तुवातपित्तज्वरेहितः ।महादाहेप्रदातव्योयूषश्चणकसम्भवः ॥ दाडिमामलकमुद्गसम्भवोयूषउक्तः । इतिवातपैत्तिके ॥ २१९ ॥

वात ज्वरमें अन्न ॥

वात पित्तज्वरमें मूंग तथा आमलेका यूष हितकारीहै और बहुत दाह उत्पन्न होनेपर चनेका यूष देना चाहिये वात पित्तज्वरमें अनार आमला और मूंग का यूष देनाचाहिये ॥ २१९ ॥

कफपित्तहरामुद्गाःकारवेल्यादयस्तथा । प्रायेणनचतेदेयावातपित्तोत्तरेज्वरे ॥ दत्तास्तुज्वरविष्टम्भशूलोदावर्त्तकारिणः । इतिर्वातपित्तज्वराधिकारः ॥ २२० ॥

मूंग और करेला आदिक कफपित्त नाशक होतेहैं इसलिये वातपित्त ज्वरमें प्रायःयह न देनेचाहिये क्योंकि इनके देनेसे ज्वर विष्टंभ शूलऔर उदावर्त्त उत्पन्न होताहै इति वातपित्त ज्वराधिकार॥२२०॥

अथ वातश्लेष्मज्वराधिकारः ॥

तत्रतस्यविप्रकृष्टसन्निकृष्टकारणकथनपूर्विकांसंप्राप्तिमाह । वातश्लेष्मकरैर्वातकफावामाशयाश्रयौ । बहिर्निरस्यकोष्ठाग्निंरसगौज्वरकारिणौ ॥ २२१ ॥ (पूर्वरूपमाह) प्राग्रूपेवातकफयोःस्यातांवातकफज्वरे ॥ २२२ ॥

वात कफ ज्वराधिकार ॥

वात पित्त के दूर और समीपी कारणों समेत संप्राप्ति कहते हैं वात कफ वर्द्धक आहार विहारोंके सेवन से आमाशय में गये हुये वातकफ जठराग्नि की ऊष्माको बाहर निकालकर रसको दूषितकरते हुए ज्वरको उपन्न करतेहैं ॥ २२१ ॥ (वातकफ ज्वरका पूर्वरूप) वातकफ ज्वरके होनेसे पहले वात ज्वर और कफज्वर सम्बन्धी पूर्वरूपके लक्षणहोते हैं ॥ २२२ ॥

अथतस्यलक्षणमाह ॥

स्तैमित्यंपर्वणांभेदोनिद्रागौरवमेवच । शिरोग्रहःप्रतिश्यायःकासःस्वेदाप्रवर्त्तनम् ॥ सन्तापोमध्यवेगश्चवातश्लेष्मज्वराकृतिः । स्वेदाप्रवर्त्तनंस्वेदस्यआसमन्ताद्भावेनप्रवृ

त्तिः (तथाचहारीतः) शिरोग्रहःस्वेदभवश्चकासोज्वरस्यलिंगंकफवातजस्येति । स्त्रे दोभवःस्वेदोत्पत्तिः ॥ २२३ ॥

वात कफ ज्वर के लक्षण ॥

शरीरमें गीला कपड़ा लिपटा हुआसा मालूम देना पोरुओंमें पीड़ा निद्रा,शरीरमें भारीपन,शिरमें पीडा जुकाम खांसी स्वेदाप्रवर्त्तन (बहुत पसीना) संताप और ज्वरका वेग मध्यम यह वात कफ ज्वर के लक्षणहैं यहां स्वेदापवर्त्तन शब्दका अर्थ बहुत पसीनेका निकलनाहै क्योंकि ऐसाही हारीत ने कहाहै कि वात कफ ज्वर में शिरकी पीड़ा पसीना निकलना और खांसी यह लक्षण होतेहैं ॥ २२३ ॥

ननुस्वेदःपित्तस्यधर्मअतएवपित्तज्वरेकण्ठौष्ठमुखनासानांपाकः स्वेदश्चजायतेइत्युक्त.। तस्मात्कथंवातश्लेष्मज्वरेस्वेदस्यातिप्रवृत्तिः । उच्यते । विकृतिविषमसमवायारब्धत्वान्नदोषइतिकार्त्तिकः । प्रकृतिसमवायस्यविकृतिविषमसमवायस्यचायमर्थःप्रकृत्याहेतुभूतयासमःकारणानुरूपःसमवाय ।कार्य्यकारणभाव.सम्बन्धःप्रकृतिसमवायः । कारणानुरूपंकार्य्यमितियावत्यथाप्रकृतेर्यथास्थितेः । शुक्लैस्तन्तुभिसमवायकारणैरारब्धःपटःशुक्लएवभवति ।यथाचप्रकृतेनकेवलेनवातेनपित्तेनकफेनवातजनितोज्वरोवाताद्युचितैर्धर्मैर्वेपथुवेगाधिक्यस्तैमित्यादिभिर्युक्तोभवति ।विकृतिविषमसमवायस्तुविकृत्याहेतुभूतयाविषमःकारणानुरूपःसमवायःकार्य्यस्यकरणेसम्बन्धः । यथा । संयोगाद्विकृताभ्यांहरिद्राचूर्णाभ्यां हेतुभूताभ्यांविषमःकारणानुरूपो लोहितोवर्णोजायतेतथायोगेन विकृताभ्यांवातश्लेष्माभ्यां हेतुभूताभ्यांविषमःकारणानुरूपो स्वेदस्यातिप्रवृत्तिरितिसिद्धान्तः ॥ २२४ ॥

अब यह सन्देह होताहै कि पसीना निकलना पित्तकाधर्म्महै क्योंकि कहागयाहै कि पित्तज्वरमें कंठ ओष्ठ मुख तथा नासिकाका पकना और पसीना निकलना यह लक्षण होते हैं इसलिये वात कफ ज्वर में पसीना कैसे निकलसक्ताहै इसका उत्तर यहहै कि विकृति विषम समवायारब्धहोनेके कारण कोई दोष नहींहै यह कार्तिकने कहाहै प्रकृति सम समवाय और विकृति विषम समवायका यह अर्थहै कि प्रकृतिका अर्थ हेतु भूत समका अर्थ कारणको अनुरूप और समवायका अर्थ कार्य्य कारण भाव सम्बन्धतो प्रकृति सम समवायका अर्थ हुआ कि कारण के अनुरूप कार्य्य जैसे स्वाभाविक श्वेत तंतुरूपकारणोंसे प्रारंभ किया गया पटरूप कार्य्य श्वेतही होताहै इसी प्रकार हेतु भूत केवल वात पित्त अथवा कफके द्वारा उत्पन्नहुआ ज्वर वातादिकोंके उचित कम्पवेगकी अधिकता अथवा शरीरमें गीलाकपड़ालिपटाहुआसा मालूम होना इत्यादि धर्मों से युक्तहोता हैं विकृति विषम समवाय अर्थात् हेतु भूत विकृति के द्वारा कारण के अनुरूप कार्य्यका नहोना जैसे कि संयोग के द्वारा विकार को प्राप्त हुये हेतुभूत हल्दी और चूने से विषम अर्थात् कारण के विपरीत रक्तवर्ण उत्पन्नहोता है उसी प्रकार सयोग के द्वारा विकारको प्राप्त हुये हेतुभूत वात कफों से विषम अर्थात् कारण से विपरीत स्वेद की अत्यन्त प्रवृत्ति होतीहै यह सिद्धान्तहैं ॥ २२४ ॥

अथवातश्लेष्मज्वरस्यचिकित्सामाह । वातश्लेष्मज्वरेदेयमौषधंनवमेऽहनि ॥२२५॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलंचव्यचित्रकनागरैः। दीपनीयःस्मृतोवर्गोवातश्लेष्मज्वरापहः॥ कोलमात्रोपयोगित्वात्पञ्चकोलमिदंस्मृतम्॥ तीक्ष्णोपाचनंश्रेष्ठंदीपनंकफदाहनुत्। गुल्मप्लीहोदरानाहशूलघ्नंपित्तकोपनम् २२६॥

(वातकफज्वरकी चिकित्सा)वात कफ ज्वर में नवेंदिन औषध देनी चाहिये॥ २२५॥ (पंच कोल)पीपल पीपलामूल चव्य चीता और सोंठ यह वर्गदीपन औरवात कफ ज्वरका नाशकहै यह सब दो २ कोल (तीन २ मासे) प्रयोग की जातीहैं इसलिये इसको पंचकोल कहते हैं यह पंच-कोल तीक्ष्ण उष्ण पाचक दीपन और कफवात वायगोला प्लीहा उदर आनाह तथा शूल नाशक है और पित्तको कुपित करता है॥ २२६॥

द्वितीयकिरातादिक्काथः॥

किरातविश्वामृतवल्लिसिंहिकाव्याघ्रीकणामूलरसोनासिन्दुकैः। कृतःकषायोविनिहन्तिसत्वरंज्वरंसमीरात्सकफात्समुत्थितम्॥ २२७॥

दूसरा किरातादि क्काथ॥

चिरायता सोंठ गिलोय भटकटैया पीपल पीपलामूल लहसन और संभालू इन औषधियों का क्काथ शीघ्रही वात कफ ज्वर को नाश करता है॥ २२७॥

पिप्पल्यादिक्काथः

पिप्पल्यादिगणक्काथंपिवेद्वातकफज्वरी।नातःपरंकिञ्चिदस्तिज्वरेभेषजमुत्तमम्॥२२८॥

पिप्पल्यादि क्काथ॥

पिप्पल्यादि गणका क्काथ वात कफ ज्वर में पीना चाहिये इससे बढ़कर और ज्वर की उत्तम औषध नहीं है॥ २२८॥

बृहत्पिप्पल्यादि क्काथ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलं चव्यचित्रकनागरम्। वचासातिविषाजाजी पाठावत्सकरेणुका॥ किराततिक्तकीमूर्वा सर्षपामरिचानिच। कट्फलंपुष्करंभार्गी विडङ्गंकर्कटाह्वयम्॥ अर्कमूलंबृहत्सिंही श्रेयसीसदुरालभा। दीप्यकश्चाजमोदाच शुकनासासहिंगुका॥ एतानिसमभागानि गणएकोऽष्टविंशतिः। एषांक्काथोनिपीतःस्याद्वातश्लेष्मज्वरापहः॥ हन्तिवातंतथाशीतं प्रस्वेदमतिवेपथुम्। प्रलापश्चातिनिद्रांच रोमहर्षारुचीतथा॥ महावातेऽपतन्त्रेचशून्यत्वेसर्व्वगात्रजे। पिप्पल्यादिमहाक्काथोज्वरेसर्वत्रपूजितः॥२२९॥

बृहत्पिप्पल्यादि क्काथ॥

पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ वच अतीस कालाजीरा पाढ़ा कुरैया रेणुका चिरायता मरोड़-फली सरसों मिर्च कायफल पुष्करमूल भारंगी वायविडंग काकड़ासिंगी आक की जड़ बड़ी भटक-टैया रास्ना जवासा अजवाइन अजमोद सोनापाढ़ा और हींग इन अट्ठाईस औषधियोंका एक गण इनसब औषधियों को समभाग लेकर क्काथकरके पीनेसे वात कफ ज्वर वात शीत स्वेद अत्यन्त कम्प प्रलाप अति निद्रा रोमांच अरुचि महावात अपतंत्रवात और सर्वांगपीड़ा इनसबका नाश होताहै यह बृहत्पिप्पल्यादिक्काथ संपूर्ण ज्वरोंमें हितकारीहै॥ २२९॥

दशमूलीरसःपीतः कणाढ्यःकफवातजे । ज्वरेविपाकेनिद्रायां पार्श्वरुक्श्वासकास के ॥ दशमूली क्वाथः । अत्रश्रेयसीरास्नाः वातश्लेष्मज्वर हरत्वात् ॥ २३० ॥

दशमूलीक्वाथ ॥

दशमूल के क्वाथमें पीपलका चूर्ण छोड़कर पीनेसे वात कफ ज्वर अपरिपाक अधिकनिद्रा पसलियोंकी पीडा श्वास और खांसी इनसब का नाशहोताहै ॥ २३० ॥

पिप्पलीभिःशृतंतोयमनभिष्यन्दिदीपनम् । वातश्लेष्मज्वरंहन्ति सेवितंप्लीहनाश नम् ॥ (पिप्पली क्वाथः) ॥ २३१ ॥

पिप्पली क्वाथ ॥

पीपलका क्वाथ बनाकर सेवन करनेसे वात कफ ज्वर और प्लीहाका नाशहोताहै यह क्वाथ अभिष्यन्दरहित और दीपनहै ॥ २३१ ॥

सूतकंटङ्कणंभृष्टं गन्धंशुद्धंसमंसमम् । द्विगुणंसूतकाद्देयं जैपालंतुषवर्जितम् ॥ सैंधवंमरिचञ्चिंचा त्वक्क्षारःशर्करापिच । प्रत्येकंसूततुल्यंस्याज्जम्बीरैर्मर्दयेद्दिनम् ॥ सूर्यशेखरनामायं रसोगुञ्जाद्वयोन्मितः । भक्षितस्तप्ततोयेन वातश्लेष्मज्वरापहः ॥ सूर्यशेखरीरसो वातश्लेष्मज्वरे शीतज्वरेच रसप्रदीपे ॥ २३२ ॥

रसप्रदीप में कहाहुआ वात कफ और शीतज्वरपर सूर्यशेखरनाम रस ॥

शुद्धपारा भुनासुहागा और शुद्धगन्धक यह समभाग और पारेकादूना छिलाहुआ जमालगोटा सेंधानोन मिर्चें इमलीकी छालका खार और शक्कर यहसब प्रत्येकपारेके समभागले इनसब औषधियों को जंभीरी नींबूके रसमें एकदिन घोटकर दोरत्ती सेवनकरे और ऊपरसे गरम जलपिये इस्से वात कफ ज्वर का नाशहोता है ॥ २३२ ॥

स्वेदोद्गमेभृष्टकुलत्थचूर्णं निपातनंशस्तमितिब्रुवन्ति । जीर्णशकृद्वोर्लवणस्यभाजनं संचूर्णितंस्वेदहरंसुधूलनात् ॥ २३३ ॥

पसीना निकलनेपर भुनीहुई कुलथी का चूर्ण मलना श्रेष्ठ है पुराने गोबरका चूर्ण और नोनके पात्रका चूर्ण मलने से पसीने का नाशहोता है ॥ २३३ ॥

मरिचंपिप्पलीशुण्ठी पथ्यालोध्रञ्चपौष्करम् । भूनिम्बकटुकाकुष्ठं कर्चूरोलिङ्गिकाशटी ॥ एतानिसमभागानि सूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् । एतदुद्धूलनंश्रेष्ठं स्रोतोवत्स्वेदनिर्गमे ॥ लिङ्गिकापंचगुरिआइतिलोकेअत्रशटीगंधपलाशी (मरिचाद्युद्धूलनम्)२३४॥

मरिचादि उद्धूलन ॥

मिर्चें पीपल सोंठ हड़ लोध पुष्करमूल चिरायता कुटकी कूट कचूर पचगुरिया और गन्धपलाशी इनसब औषधियों को समभाग लेकर महीन पीस धूराकरने से स्रोत के समानभी बहता हुआ पसीना निवृत्त होता है ॥ २३४ ॥

भूनिम्बकारवीतिक्ता वचाकटफलजंरजः । एषामुद्धूलनंश्रेष्ठं सततंस्वेदसंस्रवे ॥ भूनिम्बाद्युद्धूलम् ॥ २३५ ॥

भूनिंबादि उद्धूलन ॥

चिरायता अजमोद कुटकी वच और कायफल इन औषधियों को चूर्ण करके धूराकरने से निरन्तर वहताहुआ पसीना नष्टहोता है ॥ २३५ ॥

पूर्व्वोक्तोवालुकास्वेदोऽप्यत्रसमुचितः। यदुक्तम्। पीनसश्वासवाधिर्य्ये जङ्घापार्श्वास्थिशूलिनि। वातश्लेष्मज्वरेदेयं ओषधंतद्विधानवित्॥ मातुलुङ्गफलकेशरोधृतःसिन्धुजन्ममरिचान्वितोमुखे। हन्तिवातकफरोगमास्यगंशोषमाशुजडतामरोचकम्॥ २३६ ॥

प्रथम कहाहुआ वालुका स्वेद भी वात कफ ज्वरमें देना चाहिये क्योंकि कहागया है कि पीनस श्वास वधिरता पिंडली पसली तथा हड्डियों की पीड़ा और वात कफ ज्वर में स्वेदकी विधिका जाननेवाला वैद्य स्वेद दे सेंधानोन और मिर्च सहित नींबूके जीरे को मुखमें रखनेसे वात कफ जनित रोग मुखका सूखना मुखकी जड़ता और अरुचिका नाशहोता है ॥ २३६ ॥

अथान्नमाह ॥

महत्यापञ्चमूल्यान्नं सम्यक्सिद्धंचिकित्सकः। सप्तमेदिवसेदद्यात् ज्वरेवातबलासजे ॥ इति वातश्लेष्मज्वराधिकारः ॥ २३७ ॥

वात कफ ज्वरमें अन्न ॥

वात कफ ज्वरवालेको पंचमूल के क्वाथके द्वारा पकाहुआ अन्न सातवें दिन देवे इति वात कफ ज्वराधिकार ॥ २३७ ॥

अथ पित्तश्लेष्मज्वराधिकारः ॥

तत्रतस्यविप्रकृष्ट सन्निकृष्टकारण कथनपूर्व्विकां संप्राप्तिमाह ॥ पित्तश्लेष्मकरैःपित्तकफावामाशयाश्रयौ। बहिर्निरस्यकोष्ठाग्निं रसगौज्वरकारिणौ ॥ २३८ ॥

पित्त कफ ज्वराधिकार ॥

पित्त कफ ज्वर के दूर और समीपी कारणों समेत संप्राप्ति का वर्णन करते हैं पित्तकफ वर्द्धक आहार विहारोंके सेवनसे आमाशयमें प्राप्तहुए पित्त और कफ जठराग्निकी ऊष्मा को बाहर निकाल कर और रसको दूषित करके ज्वर को उत्पन्न करते हैं ॥ २३८ ॥

पूर्व्वरूपमाह ॥

प्राग्रूपेपित्तकफयोः स्यातांपित्तकफज्वरे ॥ २३९ ॥

पित्त कफ ज्वरका पूर्व्वरूप ॥

पित्त कफ ज्वरके होनेसे पहले पित्तज्वर और कफज्वर सम्बन्धी पूर्वरूपके लक्षणहोतेहैं २३९॥

तस्यलक्षणमाह ॥

लिप्ततिक्तास्यतातन्द्रा मोहःकासोऽरुचिस्तृषा। मुहुर्दाहोमुहुश्शीतं पित्तश्लेष्मज्वराकृतिः॥ आस्यतिक्तत्वंपित्तेनलिप्तत्वंकफेनतन्द्राअर्द्धोन्मीलितनेत्रत्वंमोहोमूर्च्छा २४०॥

पित्त कफज्वर के लक्षण ॥

पित्त कफ ज्वरमें पित्त से मुखका कड़ुआपन तथा कफसे मुखका लिपाहुआसा मालूम होना तन्द्रा मूर्च्छा खांसी अरुचि तृषा और कभी शीत कभी दाह यह लक्षण होते हैं ॥ २४० ॥

अथ पित्तश्लेष्मज्वरस्यचिकित्सा ॥

पित्तश्लेष्मज्वरेदेयमौषधंदशमेऽहनि॥ २४१ ॥

पित्त कफ ज्वरकी चिकित्सा ॥

पित्त कफ ज्वर में दशवें दिन औषध देनी चाहिये ॥ २४१ ॥

गुडूचीनिम्बधान्याकंचन्दनंकटुरोहिणी । गुडूच्यादिरयंक्राथोपाचनोदीपनःस्मृतः ॥ तृष्णादाहारुचिच्छर्दिपित्तश्लेष्मज्वरापहःइतिगुडूच्यादिः ॥ २४२ ॥

गुडूच्यादि क्राथ॥

गिलोय नींब धनियां लालचन्दन और कुटकी इन संपूर्ण औषधियोंका क्राथ पाचन दीपन और तृषा दाह अरुचि छर्दि तथा पित्त कफज्वर नाशक होताहै ॥ २४२ ॥

अमृताकटुकारिष्टपटोलघनचन्दनम् । नागरेन्द्रयवंचैतदमृताष्टकमीरितम् ॥ क्थितंसकणाचूर्णंपित्तश्लेष्मज्वरापहम् । हृल्लासारोचकच्छर्दिस्तृष्णादाहनिवारणम् ॥ (अमृताष्टकम्) ॥ २४३ ॥ अमृताष्टक ॥

गिलोय कुटकी नींब पर्वल मोथा लालचन्दन सोंठ और इन्द्रजौ यह अमृताष्टक कहलाता है इन सब औषधियों का क्राथ पीपलका चूर्ण मिलाकर पीने से पित्त कफ ज्वर मतली अरुचि छर्दि तृषा और दाहका नाश होताहै ॥ २४३ ॥

कण्टकार्य्यमृताभार्गीविश्वेंद्रयववासकम् । भूनिम्बचन्दनंमुस्तंपटोलकटुरोहिणी ॥ विपाच्यपाययेत्क्राथंपित्तश्लेष्मज्वरापहम् । दाहतृष्णारुचिच्छर्दिकासशूलनिवारणम्॥ इतिकण्टकार्यादिक्राथः ॥ २४४ ॥

कंट काय्यांदि क्राथ ॥

भटकैया गिलोय भारंगी सोंठ इन्द्रजौ वांसा चिरायता लालचन्दन मोथा पर्वल और कुटकी इन औषधियों के क्राथ के पीने से पित्त कफज्वर दाह तृषा अरुचि छर्दि खांसी और शूल का नाश होता है ॥ २४४ ॥

नागरोशीरविल्वाब्दधान्यमोचरसाम्बुभिः । कृतःक्राथोभवेद्ग्राहीपित्तश्लेष्मज्वरापहः ॥ नागरादिक्राथः ॥ २४५ ॥

नागरादि क्राथ ॥

सोंठ खस बेल मोथा धनियां मोचरस और सुगन्धवाला इन औषधियों का क्राथ ग्राही और पित्त कफज्वर नाशक होताहै ॥ २४५ ॥

शर्करामक्षमात्रांचकटुकांचोष्णवारिणा । पीत्वाज्वरंजयेत्जन्तुःपित्तश्लेष्मसमुद्भवम् ॥ अत्रकटुकायाःद्वादशमाषाःशर्करयाश्चत्वारोमाषाएवंकर्षःइतिचरकः । वैद्यस्यव्यवहारेकटुकाशर्करयोःसमभागयोरेवकर्षः ॥ (कटुकीकल्कः) ॥ २४६ ॥

कर्ष कटुकी कल्क ॥

एकतोला कुटकी एकतोला शक्कर इनको गरमजलकेसाथ,पानकरनेसे पित्त कफज्वरका नाशहो-

ताहै यहां कुटकी बारहमासे और शक्कर चारमासे यह मिलकर चरककेमतमें एककर्ष होताहै परंतु वैद्यलोगोंके व्यवहारमें शक्कर और कुटकीका समभाग एककर्ष होताहै ॥ २४६ ॥

सपत्रपुष्पवासायाःरसःक्षौद्रसितायुतः। पित्तश्लेष्मज्वरंहंतिसाम्लपित्तंसकामलम् ॥ अत्रवासारसोऽर्द्धपलपरिमितोदेयः । मधुसितयोःप्रत्येकंटंकःप्रक्षेप्यः ॥ २४७ ॥

पत्र और पुष्पसहित वांसेका दोतोले रस तीन ३ मासे शक्कर और सहत मिलाकर पीनेसे पित्त कफज्वर अम्लपित्त और कामलाका नाशहोताहै ॥ २४७ ॥

अथान्नमाह ॥

कषायःपरिपीतस्तुशृंगवेरपटोलयोः। पित्तश्लेष्मज्वरवमीदाहकण्डुहरोभवेत् ॥ (अन्यच्च) पटोलधान्ययोर्यूषःपित्तश्लेष्मज्वरापहः। (इतिपित्तश्लेष्मज्वराधिकारः॥ २४८॥

पित्त कफज्वरमें अन्न ॥

अदरक और पर्वलका यूप पित्त कफज्वर छर्दि दाह और खुजलीको नष्ट करताहै और यह कहा गयाहै कि पर्वल और धनियेका यूप पित्त कफ ज्वरको नाश करताहै इति पित्त कफ ज्वराधिकार॥ २४८॥ अथ सन्निपातज्वराधिकारमाह ॥

तत्रसन्निपातज्वरस्यविप्रकृष्टसन्निकृष्टकारणकथनपूर्विकासंप्राप्तिमाह । त्रिदोषजनकैर्वातपित्तश्लेष्मामगेहगाः । वहिर्निरस्यकोष्टाग्निरसगाज्वरकारिणः ॥ २४९ ॥

सन्निपात ज्वराधिकार ॥

सन्निपातज्वरके दूर और समीपीकारण समेत संप्राप्तिका वर्णन करतेहैं त्रिदोषकारी आहार विहारोंके सेवनसे आमाशयमें गयेहुए वात पित्त और कफ जठराग्निकी ऊष्माको बाहर निकालकर और रसको दूषितकरके ज्वरको उत्पन्न करते हैं ॥ २४९ ॥

पूर्वरूपमाह ॥

प्राग्रूपाणित्रिदोषाणांस्युस्त्रिदोषज्वरेनृणाम् ॥ २५० ॥

सन्निपात ज्वरकापूर्वरूप ॥

सन्निपात ज्वरके होनेसे पहले वात कफ और पित्तज्वर संबंधी पूर्वरूपोंके लक्षण होतेहैं २५०॥

अथसन्निपातज्वरस्यसामान्यानिलक्षणान्याह ॥

क्षणेदाहःक्षणेशीतमस्थिसंधिशिरोरुजा । सस्रावेकलुषेरक्तेनिर्भुग्नेचापिलोचने ॥
सस्वनौसरुजौकर्णौकण्ठःशूकैरिवावृतः। तन्द्रामोहःप्रलापश्चकासश्वासोरुचिर्भ्रमः॥
परिदग्धाखरस्पर्शाजिह्वास्रस्ताङ्गतापरा । ष्ठीवनंरक्तपित्तस्यकफेनोन्मिश्रितस्यच ॥
शिरसोलोठनंतृष्णानिद्रानाशोहृदिव्यथा । स्वेदमूत्रपुरीषाणांचिराद्दर्शनमल्पशः ॥
कृशत्वंनातिगात्राणांसततंकण्ठकूजनम्। कोठानांश्यावरक्तानांमण्डलानाञ्चदर्शनम्॥
मूकत्वंस्रोतसांपाकोगुरुत्वमुदरस्यच ।- चिरात्पाकश्चदोषाणांसन्निपातज्वराकृतिः ॥
लोचनेसस्रावेसाश्रुणीकलुषेऽस्वच्छेनिर्भुग्नेनिर्गतेकुटिलेच । कण्ठःशूकैरिवावृतःधान्याग्रैरिवावृतः । जिह्वापरिदग्धापरिदग्धेवज्ञायते । अथवापरिदग्धाइवकृष्णादृश्यते

तेस्रस्ताङ्गताशिथिलांगता । ष्ठीवनमित्यादिकफसंयुक्तस्यष्ठीवनंशिरसोलोठनमितंस्त तश्चालनंकृशत्वन्नातिगात्राणामितिगात्राणां अतिशयितंकार्श्यनव्याधिप्रभावात्सततं निरन्तरंकोठःवरटीदंष्ट्रसंस्थानंकोटइत्यभिधीयतेश्यावःकपिशोवर्णः । मूकत्वमवचन त्वमल्पवचनत्वंवास्रोतसांकर्णनासादीनाम् ॥ २५१ ॥

सन्निपात ज्वरके सामान्यलक्षण ॥

सन्निपात ज्वर में कभी दाह कभी शीत हड्डी सन्धि तथा मस्तकमें पीड़ा नेत्रोंसे आंसू बहना निर्मल स्वच्छ न रहना रक्तवर्णहोना बाहर निकली हुईसी मालूम होना तथा टेढ़ीहोना कानोंमें पीड़ा तथा अकारण शब्द सुनाईदेना कंठमें कांटे पड़जाना तन्द्रा मोह प्रलाप खांसी श्वास अरुचि भ्रम जिह्वा जली हुईसी अथवा जलेहुएके समानकाली तथा कठोर अंगों में शिथिलता कफसहित रुधिर तथा पित्तका थूकना मस्तकका घुमाना तृषा निद्राकानाश हृदयमें पीड़ा स्वेद मूत्र तथा मलका बहुत देरमें थोड़ा निकलना शरीरका बहुत दुर्बल न होना गलेमें निरन्तर अव्यक्त शब्दहोना त्वचा पर कपिश तथा रक्तवर्ण बरों के काटेके समान चकत्तोंका पड़ना वचन कम बोलना अथवा बन्दहोजाना कान तथा नासिका आदिक स्रोतोंका पकना उदरका भारीपन और दोषोंका बहुतदेरमें परिपाकहोना यह लक्षण होतेहैं ॥ २५१ ॥

ननुवातादयःपरस्परविरुद्धगुणास्तेषांसंभूयैकत्रकार्य्यारम्भकत्वंनोपपद्यते । परस्परोपघातात्दहनसलिलयोरिवतत्कथंवातपित्तकफाः मिलित्वाविकारोत्पादकाः अत्रसमाधानमुक्तंदृढबलेन । विरुद्धैरपिनत्वेतेगुणैर्घ्नन्तिपरस्परम् । दोषाःसहजसाम्यत्वाद्विषंघोर महीनिव ॥ गदाधरस्तुहेत्वन्तरमुक्तवान् । दैवाद्दोषस्वभावाद्वादोषाणांसान्निपातिके । विरुद्धैश्चगुणैस्तैश्चनोपघातःपरस्परमिति ॥ २५२ ॥

यहां यह सन्देह होता हैकि वात पित्त और कफ इनके गुण परस्पर विरुद्धहैं तो यह परस्पर मिल कर एककार्यको कैसे करसकेहैं जैसे अग्नि और जलदोनोंके मिलने में एकके आघातसे दूसरेका क्षय होताहै उसीप्रकार वात पित्त और कफ परस्पर मिलकर एक दूसरेका आघात न करके रोगको कैसे उत्पन्न करसकेहैं इसका समाधान दृढ़बलने यह कहाहै कि वात पित्त और कफ परस्पर विरुद्ध *गुण वाले होकर के भी एक दूसरे का नाश नहीं करते जैसे दारुण विष सर्पों को नहीं नाश करता है* उसी प्रकार साथ उत्पन्नहोने और समताके कारण परस्पर विरोधी नहीं होते और गदाधरने दूसरा कारणकहाहै कि भाग्यसे अथवा स्वभावसे विरुद्ध गुणवाले दोषोंके परस्पर मिलनेपरभी एकके गुण दूसरेका नाशनहीं करते ॥ २५२ ॥

ननुभिन्नचयप्रकोपकालानांवातपित्तकफानांयुगपदुत्पन्नाभावात्कथंसम्भूयसन्निपात ज्वरारम्भकत्वमुत्पद्यतेउच्यते । त्रिदोषजनकनिदानबलेनयुगपदेषांप्रकोपादितिसिद्धान्तः ॥ २५३ ॥

अब यह सन्देह होता है कि वात पित्त और कफके सञ्चय और कोपके समयके अलग २ होने से यह एक साथ उत्पन्न नहीं हो सके तो तीनों मिलकर सन्निपात ज्वरको कैसे उत्पन्न करेंगे इसका उत्तर यहहै कि त्रिदोषकारी निदानोंके बलसे एकसाथ तीनोंद्दोष कुपितहोतेहैं यहसिद्धान्तहै ॥२५३॥

अथ सामान्यसन्निपातज्वरस्यत्रयोदशविशेषानाह ॥

एकोल्बणास्त्रयस्तेषुद्व्युल्बणाश्चतथेतिषट्। त्र्युल्बणश्चभवेदेकोविज्ञेयःसतुसप्तमः॥ प्रवृद्धःमध्यहीनैस्तुवातपित्तकफैश्चषट् । सन्निपातज्वरस्यैवंस्युर्विशेषास्त्रयोदश । तत्रप्रवृद्धवातःमध्यपित्तोहीनकफः १ मध्यवातःप्रवृद्धपित्तोहीनकफः २ हीनवातःप्रवृद्धपित्तोमध्यकफः ३ प्रवृद्धवातःहीनपित्तोमध्यकफः ४ मध्यवातःहीनपित्तःप्रवृद्धकफः ५ हीनवातोमध्यपित्तः प्रवृद्धकफः ६ इतिषट् ॥ २५४ ॥

सामान्य सन्निपात ज्वर के तेरह भेद कहे जाते हैं ॥

बढ़ेहुए एकदोष वाले तीन बढ़ेहुए दोदोष वाले तीन इसप्रकार छःहुए बढ़ेहुए तीनोंदोष वाला एक और वातपित्त तथाकफकी अधिकता मध्यता और हीनतासे छःइस प्रकारतेरह सन्निपातज्वर होतेहैं वातादिकों की अधिकता मध्यता तथा हीनताके द्वाराआगे कहेहुए यह छः प्रकारहोतेहैं अधिक वात मध्यपित्त हीनकफ एक मध्यवात अधिकपित्त हीनकफ दूसरा हीनवात अधिकपित्त मध्यकफ तीसरा अधिक वात हीन पित्त मध्य कफ चौथा मध्य वात हीन पित्त अधिककफ पांचवां हीनवात मध्यपित्त अधिककफ छठा ॥ २५४ ॥

तेषांनामानिक्रमादाह ॥

विस्फारकश्चाशुकारीकम्पनोबभ्रसंज्ञकः । शीघ्रकारीतथाभल्लुःसप्तमःकूटपाकलः॥ संमोहकःपालकश्च याम्यःक्रकचइत्यपि । ततःकर्कटकःप्रोक्तस्ततोवैदारिकाभिधः ॥ तन्त्रान्तरेविस्फारकइत्यत्रविस्फोरकइतिपाठः । बभ्रस्थानेबभ्रुरितिपाठःकुत्रापिवद्धइतिपाठःभल्लुरित्यत्रफल्गुरितिपाठःयाम्यइत्यत्रसंग्रामइतिपाठः कर्कटकइत्यत्रकर्कोटकइतिपाठः ॥ २५५ ॥

सन्निपातज्वरोंके क्रम से नाम॥

विस्फारक आशुकारी कंपन बभ्र शीघ्रकारी भल्लु कूटपाकल संमोहक पालक याम्य क्रकच कर्कटक और वैदारिक किसी२ ग्रंथ में विस्फारक के स्थानमें विस्फोरक बभ्रके स्थानमें बभ्रु अथवा कहीं २ वद्ध भल्लुके स्थानमें फल्गु याम्यके स्थानमें संग्राम और कर्कटक के स्थानमें कर्कोटक यह पाठहै२५५॥

तत्रवातोल्बणस्यलक्षणमाह ॥

श्वासःकासोत्तमोमूर्च्छाप्रलापोमोहवेपथुः । पार्श्वस्यवेदनाजृम्भाकषायत्वंमुखस्य च ॥ वातोल्बणस्यलिङ्गानिसन्निपातस्यलक्षयेत् । एषविस्फारकोनाम्नासन्निपातःसुदारुणः ॥ २५६ ॥

अधिक वातवाले सन्निपात के लक्षण ॥

श्वास खांसी भ्रम मूर्च्छा प्रलाप मोह कंपपसलीकीपीड़ा जंभाई और मुखमें कषैलापन यह अधिक वातवाले सन्निपात के लक्षणहैं इसका नाम विस्फारकहै और अत्यन्त भयानक होताहै ॥२५६॥

अथ पित्तोल्बणस्यलक्षणमाह ॥

अतिसारोभ्रमोमूर्च्छामुखपाकस्तथैवच ।गात्रेचबिन्दवोरक्तादाहोऽतीवप्रजायते ॥ पित्तोल्बणस्यलिङ्गानि सन्निपातस्यलक्षयेत् । भिषग्भिःसन्निपातोऽयमाशुकारीप्रकीर्तितः ॥ २५७ ॥

अधिक पित्तवाले सन्निपात के लक्षण ॥

अतीसार भ्रम मूर्च्छा मुखका पकना शरीर में लाल बिन्दु और अत्यन्त दाह यह आशुकारी नाम अधिक पित्तवाले सन्निपात के लक्षणहैं ॥ २५७ ॥

अथ कफोल्वणस्यलक्षणमाह ॥

जड़तागद्गदावाणीरात्रौनिद्राभवत्यपि । प्रस्तब्धेनयनेचैवमुखमाधुर्य्यमेवच ॥ कफोल्वणस्यलिङ्गानिसन्निपातस्यलक्षयेत् । मुनिभिःसन्निपातोऽयमुक्तःकम्पनसंज्ञकः॥२५८॥

अधिक कफ वाले सन्निपात के लक्षण ॥

जड़ता गद्गद वचन रात्रिमें निद्राका भी होना पथरीली आंखें होना और मुखमें मधुरता यह अधिक कफवाले सन्निपात के लक्षण हैं मुनि लोगोंने इस सन्निपात को कंपन नाम से प्रसिद्ध कियाहै २५८ ॥

अथ वातपित्तोल्वणस्यलक्षणमाह ॥

वातपित्ताधिकोयस्यसन्निपातःप्रकुप्यति । तस्यज्वरोमदस्तृष्णामुखशोषःप्रमीलकः॥ आध्मानारुचितन्द्राचकासश्वासभ्रमश्रमः॥मुनिभिर्बभ्रुनामायंसन्निपातउदाहृतः २५९

अधिक वातपित्त वाले सन्निपात के लक्षण ॥

मद तृषा मुखका सूखना नेत्रोंको बन्द किये रहना अफरा अरुचि तंद्रा खांसी श्वास भ्रम और श्रम यह अधिक वातपित्त वाले सन्निपात के लक्षणहैं इसका नाम बभ्रुहै ॥ २५९ ॥

अथवातश्लेष्मोल्वणस्यलक्षणमाह ॥

वातश्लेष्माधिकोयस्यसन्निपातःप्रकुप्यति ॥ तस्यशीतज्वरोमूर्च्छाक्षुत्तृष्णापार्श्वनिग्रहः । शूलमस्विद्यमानस्यतंद्राश्वासश्चजायते ॥ असाध्यःसन्निपातोऽयंशीघ्रकारीतिकथ्यते॥नहिजीवत्यहोरात्रमनेनाविष्टविग्रहः २६०॥

अधिक वात कफवाले सन्निपातके लक्षण ॥

शीतज्वर मूर्छा छींक तृषा पसलियों की ऐंठन पसीना न निकलनेपर अधिकपीडा तन्द्रा और श्वास यह अधिक वात कफ वाले सन्निपात के लक्षणहैं इस असाध्य सन्निपात को शीघ्रकारीकहते हैं इस सन्निपात में जो ग्रसित होताहै वह एकरात्रि दिनसे अधिकनहीं जीताहै ॥ २६० ॥

अथपित्तश्लेष्मोल्वणस्यलक्षणमाह ॥

पित्तश्लेष्माधिकोयस्यसन्निपातःप्रकुप्यति ॥ अंतर्दाहोबहिःशीतंतस्यतृष्णाप्रवर्द्धते । तुद्यतेदक्षिणेपार्श्वेउरःशीर्षगलग्रहः ॥ ष्ठीवतिश्लेष्मपित्तञ्चकृच्छ्रात्कोठश्चजायते । विड्भेदश्वासहिक्काचवर्द्धन्तेसप्रमीलकाः॥ऋषिभिर्भल्लुनामायंसन्निपातउदाहृतः २६१॥

अधिक पित्तकफवाले सन्निपातके लक्षण ॥

भीतरदाह बाहरशीत अत्यन्ततृषा दहनीपसली हृदय मस्तक तथा गलेमें पीड़ा कष्टसे पित्त तथा कफकाथूकना बरोंके काटनेकेसे चकत्ते मल पतलाहोजाना श्वास हिचकी और नेत्रोंका मूंदना यह अधिक पित्त कफवाले सन्निपातके लक्षणहैं मुनिलोग इससन्निपातको भल्लुनामकहतेहैं ॥ २६१ ॥

अथवातपित्तश्लेष्मोल्वणस्यलक्षणमाह ॥

सर्व्वदोषोल्वणोयस्यसन्निपातःप्रकुप्यति ॥ त्रयाणामपिदोषाणांतस्यरूपाणिलक्ष

येत् । व्याधिभ्योदारुणश्चैववज्रशस्त्राग्निसन्निभः ॥ केवलोच्छ्वासपरमस्तब्धाङ्गस्तब्ध लोचनः । त्रिरात्रात्परमेतस्यजंतोर्हरतिजीवितम् ॥ तदवस्थंतुतदृष्ट्वामूढाव्याहरतेज नः । धर्षितोराक्षसैर्नूनमवेलायांचरंतिये ॥ अम्बयात्ववतेकेचिद्यक्षिण्याब्रह्मराक्षसैः । पिशाचैर्गुह्यकैश्चैवतथान्यैर्म्मस्तकेहतम् ॥ कुलदेवार्च्चनाहीनंधर्षितंकुलदेवतैः । नक्षत्र पीडामपरेगरकर्म्मेतिचापरे ॥ सन्निपातमिमंप्राहुर्भिषजाःकूटपालकम् ॥ २६२ ॥

घात पित्त और कफ इनतीनों की अधिकतासे युक्तसन्निपातके लक्षण ॥

त्रिदोषजसन्निपातमें तीनों दोषों के लक्षणहोतेहैं यह संपूर्ण रोगों में प्रधान भयकारी वज्र शस्त्र तथा अग्नि के समानहोताहै इससे वहुत श्वासलेना शरीर का जकड़ना और नेत्रोंका न बन्दहोना यहलक्षणहोतेहैं यहसन्निपात तीनही रात्रि में मनुष्यके प्राणोंको हरलेताहै इससन्निपातसेयुक्तरोगी को देखकर मूर्ख लोग कहतेहैं कि इसको कुसमय में घूमनेवाले राक्षसोंने घेराहै कोई कहते हैं अंबा देवी ब्रह्मराक्षस यक्षणी पिशाच गुह्यक अथवा अन्य भूतादिक लगेहैं कोई कहतेहैं कि कुलदेवकापूजन न करनेसे कुलदेवोंने भादवायाहै कोई नक्षत्र पीडा कहतेहैं और कोई विषकादोष कहतेहैं इससन्नि पातको वैद्यलोग कूटपालकनाम कहते हैं ॥ २६२ ॥

अथ प्रवृद्धमध्यहीनवातादिजनितसन्निपातज्वराणांलक्षणान्याह ॥

प्रवृद्धमध्यहीनैस्तुवातपित्तकफैश्चयः । तेनरोगास्तएवोक्तायथादोषबलाश्रयाः ॥ प्रलापायाससंमोहकम्पमूर्च्छारतिभ्रमाः । एकपक्षाभिघातश्चतत्राप्येतेविशेषतः ॥ एष पसंमोहकोनाम्नासन्निपातःसुदारुणः । रोगास्तएवोक्ताःउक्ताएवतेरोगा व्यथावेपथुनि द्रानाशविष्टम्भादयोवातजाः दाहतृष्णोष्णतास्वेदादयःपित्तजाः गौरवाग्निमान्द्योत्काश नासिकामुखप्रसेकादयःकफजाः तत्रापिप्रलापादयःपक्षाघातानांविशेषाद्भवन्ति॥२६३॥

अधिक मध्य और हीनवातादिजनित सन्निपातों के लक्षण ॥

अधिकवात मध्यपित्त और हीनकफके द्वाराजो सन्निपात उत्पन्न होताहै उसमें पहलेकहेहुए वातादि दोषोंके रोगदोषोंके बलके अनुसार होतेहैं अर्थात् वेदना कम्प निद्राका नाश तथा विष्टंभादिक वात जनित दाह तृषा उष्णता तथास्वेद आदिक पित्तजनितऔर भारीपन मंदाग्नि वमनतथा मुख नासिका आदिका वहना यह कफजनित रोगहै औरइससन्निपातमें प्रलाप श्रम मोह कम्पमूर्च्छा ग्लानि भ्रान्ति और पक्षाघात यह लक्षण विशेष करके होतेहैं इस भयानक सन्निपातको संमोहक कहतेहैं ॥ २६३ ॥

ननुवातःप्रवृद्धःसज्वरंकरिष्यतिपित्तन्तुमध्यसममितियावत्तत्कथंज्वरंकरिष्यतिच तत्राह । धातवस्तन्मलादोषाःस्युर्नाशायासमास्तनो । समाःसुखायविज्ञेया बलायोपच यायच ॥ इतिउच्यते । अत्रपित्तमध्यमपि अप्रकृतमेवयतोऽप्रकृतयोर्वातश्लेष्मणोरपि क्षयामध्यं तेन मध्यकुपितमित्यर्थः । ननु कफक्षीणः सकथं ज्वरं करिष्यति हीनशक्ति त्वात् उच्यते दोषाः क्षीणाअपि व्याधीन कुर्वन्त्येव यत आह वातक्षयेऽल्पचेष्टत्व मन्दवाक्त्वविसंज्ञता । पित्तक्षयेऽधिकःश्लेष्मावह्निर्मन्दःप्रभाक्षयः ॥ शिथिला सन्धयो मूर्च्छारौक्ष्यदाहकफक्षयः । इत्याशङ्कासिद्धान्तश्चात्रपरत्रापि ॥ २६४ ॥

अब यह सन्देह होताहै कि अधिक वात ज्वर को उत्पन्न करतीहै यहठीकहै परन्तु मध्य अर्थात् समपित्त कैसे ज्वर उत्पन्न करताहै क्योंकि कहागयाहै कि धातु और धातुओंके मलरूप वातादिक दोष समता रहितहोकर शरीरको नष्टकरतेहैं औरसमहोकर सुखवल तथावृद्धिको करतेहैं इसका उत्तर यह है कि यहां मध्यपित्त भी विकार युक्त लियाजाता है क्योंकि विकार युक्तवात तथा कफकी अपेक्षा पित्तकी मध्यमताली जाती है इसलिये मध्यपित्तका अर्थ मध्य कुपितपित्त लेनाचाहिये दूसरा संदेह यह होताहै कि हीनकफ हीनशक्ति के द्वारा ज्वरको कैसे उत्पन्न करेगा इसका उत्तर यहहै कि दोष क्षीणहोकरभी रोगों को उत्पन्न करतेहैं क्योंकि कहागयाहै कि वायुके क्षीणहोनेपर चेष्टातथा वाणीकी अल्पता और संज्ञाका न होना यह लक्षण होतेहैं पित्तके क्षयहोनेपर कफकी अधिकता मंदाग्नि और कान्तिका नाशहोताहै और कफके क्षयहोनेपर संधियोंमें शिथिलता मूर्च्छा सुखापन और दाहहोता है यह सिद्धान्त यहां और अन्यअधिक मध्यतथा हीन दोष जनित सन्निपातोंमें जाननाचाहिये २६४॥

मध्यप्रवृद्धहीनैस्तुवातपित्तकफैश्चयः । तेनरोगास्तएवोक्तायथादोषबलाश्रयाः ॥ मोहप्रलापमूर्च्छास्युमन्यास्तम्भःशिरोग्रहः । कासःश्वासोभ्रमस्तन्द्रासंज्ञानाशोहृदिव्य था ॥ खेभ्योरक्तविसृजतिसंरक्तंस्तब्धनेत्रता । तत्राप्येतेविशेषाःस्युर्मृत्युरर्वाक्त्रिवासरा त् ॥ भिषग्भिःसन्निपातोऽयंकथितःपाकलाभिधः ॥ २६५ ॥

मध्यवात अधिकपित्त और हीनकफ जनित सन्निपातमें पूर्वोक्त वातादि जनितरोग दोषोंके बलके अनुसार होतेहैं और मोह प्रलाप मूर्च्छा गलेके पीछकी नसका जकड़ना शिरमेंपीड़ा खांसी श्वास भ्रम तंद्रा संज्ञा कानहोना हृदयमेंपीड़ा शरीरके सम्पूर्ण छिद्रोंसे रुधिरका बहना और नेत्रोंका रक्त वर्ण तथा बन्दनहोना यह सब लक्षण विशेषकरके होते हैं इस पाकलनाम सन्निपात में तीन दिन के भीतरमृत्युहोती है ॥ २६५ ॥

हीनप्रवृद्धमध्यैस्तुवातपित्तकफैश्चयः॥तेनरोगास्तए॥वोक्तायथारागवलाश्रयाः । हृदयं दह्यतेचास्ययकृत्प्लीहान्त्रफुप्फुसाः॥पच्यतेत्यर्थमूर्द्धाधःपूयशोणितनिर्गमः । शीर्णदन्त श्चमृत्युश्चतत्राप्येतद्विशेषतः॥भिषग्भिःसन्निपातोऽयंयाम्योनाम्नाप्रकीर्त्तितः॥२६६॥

हीन वात अधिकपित्त और मध्य कफसे जो सन्निपात उत्पन्न होताहै उसमें पहले कहेहुए वात पित्त और कफके रोगदोषोंके बलके अनुसार होतेहैं और हृदयमेंदाह यकृतप्लीहा आंतेंतथाफुप्फुसका प-कना ऊपर तथा नीचेसे पीवतथारुधिरका निकलना और दांतोंमें शिथिलता होती है यह याम्यनाम सन्निपात है इसमें मृत्युहोतीहै ॥ २६६ ॥

प्रवृद्धहीनमध्यैस्तुवातपित्तकफैश्चयः ॥ तेनरोगास्तएवोक्तायथादोषावलाश्रयाः । प्र लापायाससम्मोहःकम्पमूर्च्छारतिभ्रमाः ॥ मन्यास्तम्भेनमृत्युःस्यात्तत्राप्येतद्विशेषतः । भिषग्भिःसन्निपातोऽयंक्रकचःसम्प्रकीर्त्तितः ॥ २६७ ॥

अधिक वातहीन पित्त और मध्य कफके द्वारा जो सन्निपात उत्पन्न होताहै उसमें पहले कहेहुए वातादि दोषजनितरोग दोषोंके बलके अनुसार होते हैं और प्रलाप श्रम मोह कंप मूर्च्छा ग्लानि भ्रम और गलेके पीछेकी नसका जकड़ना इन विशेष लक्षणों समेत मृत्यु होती है इस सन्निपातको क्रकच कहतेहैं ॥ २६७ ॥

मध्यहीनप्रवृद्धेस्तुवातपित्तकफैश्चयः। तेनरोगास्तएवोक्तायथादोषबलाश्रयाः॥ अन्तर्दाहोविशेषोऽत्रनचवक्तुंसशक्यतोरक्तमालक्तकेनेवलक्ष्यतेमुखमण्डलम्॥पित्तेनाकर्षितःश्लेष्माहृदयान्नप्रसिच्यते। इषुणेवाहतम्पार्श्वंतुद्यतेखन्यतेहृदि॥ प्रमीलकःश्वासहिक्कावर्द्धतेतुदिनेदिने। जिह्वादग्धाखरस्पर्शागलःशूकैरिवावृतः॥विसर्गंनाभिजानाति कूजेच्चापिकपोतवत्। अतीवश्लेष्मणापूर्णःशुष्कवक्त्रौष्ठतालुकः॥तन्द्रानिद्रातियोगार्तोहतवाग्निहतद्युतिः। नरतिंलभतेनित्यंविपरीतानिचेच्छति॥ आयम्यतेचबहुशोरक्तंष्ठीवतिचाल्पशः। एषकर्कटकोनाम्नासन्निपातःसुदारुणः॥ २६८॥

मध्य वात हीन पित्त और अधिक कफके द्वारा जो सन्निपात होताहै उसमें वातादि जनितरोग दोषोंके बलके अनुसार होतेहैं औरविशेषकरके अन्तर्दाहकसाहोताहै जो कहा नहीं जाताहै मुखमहावरसे रँगासा होजाताहै पित्तसे खींचाहुआ कफ हृदयके बाहर नहीं निकलता पसलियोंमें बाण लगनेके समान पीड़ा होतीहै और हृदयमें खोदनेके समान पीड़ा होतीहै नेत्रोंका बंदहोना श्वास तथा हिचकी दिनोंदिन बढ़ती हैं जिह्वा जलेहुएकेसमान कठोर होतीहै गलेमें कांटे होजातेहैं मलमूत्रका निकलना मालूम नहीं होता कबूतरके समान शब्द होजाताहै मुख ओष्ठ तथा तालु अत्यन्त कफसे पूर्ण तथा सूखजातेहैं तंद्रा तथा निद्रा अधिक होतीहै बोलनेकी शक्ति तथा कान्तिका नाश होताहै किसी प्रकार चैन नहीं पड़ता विरुद्ध वस्तुओंकी इच्छा होतीहै श्रम बहुत होताहै और थोड़ेसे रुधिरकी वमन होतीहै इस भयंकर सन्निपातको कर्कटक कहते हैं॥ २६८॥

हीनमध्यप्रवृद्धेस्तुवातपित्तकफैश्चयः। तेनरोगास्तएवोक्तायथादोषबलाश्रयाः॥ अस्थिशूलंकटितोदोमध्येदाहोरुजाभ्रमः। भृशंक्लमःशिरोवस्तिमन्याहृदयवाग्रुजः॥ प्रमीलकःश्वासकासाहिक्काजाड्यंविसंज्ञता। प्रथमोत्पन्नमेनन्तुसाधयंतिकदाचन॥ एतस्मिन्संनिवृत्तेतुकर्णमूलेसुदारुणः। पिडिकाजायतेजन्तोर्यथाकृच्छ्रेणजीवति॥ सर्वैदारिकमंज्ञोऽयंसन्निपातःसुदारुणः। त्रिरात्रात्परमेतस्यव्यर्थमौषधकल्पनम्॥ २६९॥

हीन वात मध्य पित्त औरअधिक कफके द्वारा जो सन्निपात होताहै उसमें पहले कहेहुए वातादि जनितरोग दोषोंके बलके अनुसार होतेहैं हड्डी तथा कटिमें पीड़ा अन्तर्दाह पीड़ा भ्रम अत्यन्त ग्लानि मस्तक मूत्राशय गलेके पीछेकी नस हृदय तथा वाणीमें रोग नेत्रोंका बंदहोना श्वास खांसी हिचकी जड़ता और संज्ञाका न होना यह लक्षण विशेषकरके होतेहैं यह रोग पहले उत्पन्न होनेपर कदाचित् साध्य होताहै इसके किसी प्रकार निवृत्त होनेपर कानोंके मूलमें भयंकर गांठदार फुड़िया उत्पन्न होतीहै उससे मनुष्य बहुत कष्ट करके बचताहै इस सन्निपातको वैदारिक कहतेहैं इस सन्निपातमें तीनरात्रिके उपरान्त औषध करना व्यर्थहै॥ २६९॥

अथतन्त्रान्तरेवातोल्बणादीनांसन्निपातज्वरविशेषाणांत्रयोदशानांशीताङ्गादीनित्रयोदशनामान्तराणिलक्षणान्तराणिचाह॥

शीतांगरित्रमलोद्भवज्वरगणेतन्द्रीप्रलापीततोरक्तष्ठीवियिताचतत्रगणितःसम्भग्ननेत्रस्तथा॥साभिन्यासकजिह्वकश्चकथितःप्राक्सन्धिगोथान्तकोरुग्दाहःसहचित्तविभ्रम

इहद्वोकर्णकण्ठग्रहो ॥ तन्द्रीतन्द्रिकःप्रलापीप्रलापकःरक्तष्ठीवयितारक्तष्ठीवीसंभुग्ननेत्रः भुग्ननेत्रः। अभिन्यासकःअभिन्यासः कर्णकण्ठग्रहोकर्णग्रहः कर्णिकःकण्ठग्रहःकण्ठ कुब्जकः ॥ २७० ॥

तन्त्रान्तरमें वातोल्वणादि तेरह सन्निपात ज्वरोंके भेदोंके [illegible]तांग आदिक तेरह अन्यनाम लक्षण सहित कहेगये हैं वह आगे वर्णन किये जाते हैं ॥

शीतांग तन्द्रिक प्रलापक रक्तष्ठीवी भुग्ननेत्र अभिन्यास जिह्वक संधिग भन्तक रुग्दाह चित्तविभ्रम, कर्णिक और कंठकुब्जक यह तेरह सन्निपात ज्वर होते हैं ॥ २७० ॥

अथतेषांप्रत्येकंलक्षणानि ॥

हिमशिशिरशरीरःसन्निपातज्वरीयः श्वसनकसनहिक्कामोहकम्पप्रलापैः ॥ क्लमबहुक फवातादाहवम्यङ्गपीड़ास्वरविकृतिभिरार्त्तःशीतगात्रःसउक्तः ॥ २७१ ॥

इनके अलग २ लक्षण ॥

जिस सन्निपात वालेका शरीर पालेके समान शीतल हो और श्वास खांसी हिचकी मोह कंप प्रलाप ग्लानि बहुतकफ वात दाह छर्दि शरीरमेंपीड़ा और स्वर भंग उत्पन्न हो उसे शीतांग सन्निपात कहते हैं ॥ २७१ ॥

तन्द्रातीवततस्तृपातिसरणंश्वासोऽधिकःकासरुक्। सन्तप्तातितनुर्गलेश्वयथुनासा ह्वेऽपकण्डूकफः ॥ सुश्यामारसमाक्लमःश्रवणयोर्म्मान्द्यञ्चदाहंस्तथा। यत्रस्यात्सहित न्द्रिकोनिगदितोदोषत्रयोत्थाज्वरः ॥ २७२ ॥

जिस सन्निपात ज्वरमें अधिक तन्द्रा अधिक तृषा अतीसार अधिक श्वास खांसी पीड़ा शरीर में अत्यन्त ताप गलेमें शोथ नासिकाके अग्र भागमें शीतलता जिह्वामें अत्यन्तश्यामता ग्लानि बधिरता और दाह होताहै उसको तन्द्रिक कहतेहैं ॥ २७२ ॥

यत्रज्वरेनिखिलदोषनितान्तरोष जातेप्रलापबहुलासहसोत्थिताश्च । कम्पव्यथा पतनदाहविसंज्ञताःस्युर्नाम्नाप्रलापकइतिप्रथितःपृथिव्याम् ॥ २७३ ॥

जिस सन्निपातमें सम्पूर्ण दोष अत्यन्त कुपित हों सहसा बहुत प्रलाप उत्पन्नहो और कंप पीड़ा शरीरमें दाह तथा अज्ञानता होय उसको प्रलापक कहते हैं ॥ २७३ ॥

निष्ठीवोरुधिरस्यरक्तसदृशंकृष्णंतनौमण्डलम्। लौहित्यंनयनेतृपारुचिवमिश्वासा तिसारभ्रमाः ॥ अध्मानञ्चविसंज्ञताचपतनंहिक्काङ्गपीडाभृशम्। रक्तष्ठीविनिसन्निपातज नितेलिङ्गंज्वरेजायते ॥ २७४ ॥

रुधिरकी वमन शरीरमें रुधिरके समान तथा काले रंगके चकत्ते नेत्रोंमें ललाई तृषा अरुचि छर्दि श्वास अतिसार भ्रम अफरा अज्ञानता गिरना हिचकी और शरीरमें अत्यन्त पीड़ा यह रक्तष्ठीवी सन्निपातके लक्षण हैं ॥ २७४ ॥

भृशंनयनवक्रताश्वसनकासतन्द्राभृशं प्रलापमदवेपथुःश्रवणहानिमोहास्तथा ॥ पुरोनिखिलदोषजेभवतियत्रलिङ्गंज्वरे। पुरातनचिकित्सकैःसइहभुग्ननेत्रोमतः ॥ २७५ ॥

जिस सन्निपातमें नेत्रोंका बहुत टेढ़ापन श्वास खांसी तन्द्रा भ्रम प्रलाप मद कंप बधिरता और मोह यह लक्षण होतेहैं उसको प्राचीन वैद्य भुग्न नेत्र कहते हैं ॥ २७५ ॥

दोषास्तीव्रतराभवन्तिबलिनःसर्वेऽपियत्रज्वरे। सीहोऽतीवविचेष्टताविकलताश्वासोभृशंमूकता ॥ दाहश्चिक्कनमाननञ्चदहनोमन्दोबलस्यक्षयः । सोऽभिन्यासइतिप्रकीर्तितःइहप्राज्ञैर्भिषग्भिःपुरा ॥ २७६ ॥

जिस सन्निपातमें सम्पूर्ण दोष बहुत बलवान् होंय और अत्यन्त मोह चेष्टका न होना विकलता अत्यन्त श्वास मूकता दाह मुखमें चिकनापन मंदाग्नि और बलका नाशहोय उसको अभिन्यास कहतेहैं ॥ २७६ ॥

त्रिदोषजनितेज्वरेभवतियत्रजिह्वाभृशं । वृताकठिनकण्टकैस्तदनुनिर्भरंमूकता ॥ श्रुतिक्षतिबलक्षतिश्वसनकाससन्तप्तयः । पुरातनभिषग्वरास्तमिहजिह्वकञ्चक्षते॥ २७७॥

जिस सन्निपातमें जिह्वाबहुत कठिन कांटोंसे आच्छादितहो अत्यन्त मूकताहो बधिरता तथा बलक्षयहो और श्वास खाँसी तथा संताप हो उसको जिह्वक कहते हैं ॥ २७७॥

व्यथातिशयिताभवेच्छ्वयथुसंयुतासन्धिषु। प्रभूतकफतामुखेविगतनिद्रताकासरुक्॥समस्तमितिकीर्तितंभवातिलक्ष्मयत्रज्वरे। त्रिदोषजनितेबुधैःसहिनिगद्यतेसन्धिग॥२७८॥

अत्यन्त व्यथा संधियों में सूजन मुख में बहुत कफ निद्रा का नाश और खाँसी यह सब लक्षण जिस सन्निपात ज्वरमें होतेहैं उसको संधिग कहते हैं ॥ २७८ ॥

यस्मिन्लक्षणमेतदस्तिसकलेदोषेरुदीतेज्वरे । ऽजस्रंमूर्द्धविधूननसकसनंसर्वांगपीडाधिका ॥ हिक्काश्वाससदाहमोहसहितादेहेऽतिसंतप्तता। वैकल्यञ्चवृथावचांसिमुनिभिः संकीर्त्तितःसोऽन्तकः ॥ २७९ ॥

जिस सन्निपात में निरंतर शिर कंपना खाँसी सब शरीर में अत्यन्त पीडा हिचकी श्वास दाह मोह शरीर में अत्यन्त ताप व्याकुलता और अनर्थक वचन यह लक्षण होते हैं उसको अन्तक कहते हैं ॥ २७९ ॥

दाहोऽधिकोभवतियत्रतृषाचतीव्रा श्वासप्रलापविरुचिभ्रममोहपीडा ॥ मन्याहनुव्यथनकण्ठरुजःश्रमश्च । रुग्दाहसंज्ञउदितस्त्रिभवोज्वरोऽयम् ॥ २८० ॥

जिस सन्निपात में अत्यन्त दाह तीव्र तृषा श्वास प्रलाप अरुचि भ्रम मोह तथा पीड़ा होय गले के पीछे की नस जवड़ा तथा कंठ में खेद हो और श्रम होय उसको रुग्दाह कहते हैं ॥ २८० ॥

गायतिनृत्यतिहसतिप्रलपतिविकृतंनिरीक्ष्यतेमुह्येत् । दाहव्यथाभयार्त्तोनरस्तुचित्तभ्रमेज्वरेभवति ॥ २८१ ॥

जिस सन्निपात में रोगी गावे नाचे हँसे प्रलाप करे ठेढ़े नेत्रों से देखे मोह को प्राप्त हो और दाह पीड़ा तथा भयसे व्याकुल होय उसको चित्तभ्रम कहते हैं ॥ २८१ ॥

दोषत्रयेणजनिताकिलकर्णमूले तीव्राज्वरेभवतितुश्वयथुर्व्यथाच ॥ कण्ठग्रहोवधिरताश्वसनंप्रलापः प्रस्वेदमोहदहनानिचकर्णिकास्ये ॥ २८२ ॥

जिस सन्निपात में कर्ण मूल पर अत्यन्त सूजन तथा पीड़ा हो और कंठरोध बधिरता श्वास प्रलाप स्वेद मोह तथा दाह होय उसको कर्णिक कहते हैं ॥ २८२ ॥

कण्ठःशूकशतावरुद्धवदतिश्वासःप्रलापोऽरुचिः । दाहोदेहरुजातृपापिचहनुस्तम्भःशिरोर्त्तिस्तथा ॥ मोहोवेपथुनासहेतिसकलंलिङ्गंत्रिदोपज्वरे । यत्रस्यात्सहिकण्ठकुञ्जउदितःप्राच्यैश्चिकित्साबुधैः ॥ २८३ ॥

जिस सन्निपात में कंठके भीतर सैकड़ों कांटेसे मालूमपड़ें और अत्यन्त श्वास प्रलाप अरुचि दाह शरीर में पीड़ा तृषा जबड़ेका जकड़ना शिरमें पीड़ा मोह तथा कम्प होय उसको कंठकुब्ज कहते हैं ॥ २८३ ॥

सन्धिगस्तेषुसाध्यःस्यात्तन्द्रिकश्चित्तविभ्रमः । कर्णिकोजिह्वकःकण्ठकुब्जःपञ्चापिकष्टकाः ॥ रुग्दाहस्त्वतिकष्टेनसंसाध्यस्तेषुभाषितः । रक्तष्ठीवीभुग्ननेत्रःशीतगात्रःप्रलापकः ॥ अभिन्यासोन्तकाश्चैतेषडसाध्याःप्रकीर्त्तिताः ॥ २८४ ॥

ऊपर कहेहुये सन्निपातोंमें से सन्धिग साध्य है तन्द्रिक चित्तविभ्रम कर्णिक जिह्वक तथा कंठकुब्जक यहपाच कष्टसाध्य हैं रुग्दाह अत्यन्त कष्टसाध्य है और रक्तष्ठीवी भग्ननेत्र शीतगात्र प्रलापक अभिन्यास तथा अन्तक यह छः असाध्य कहे हैं ॥ २८४ ॥

अथतन्त्रान्तरेवातोल्वणादीनांसन्निपातज्वरविशेषाणांत्रयोदशानांकुम्भीपाकादीनित्रयोदशनामान्तराणिलक्षणान्तराण्याह ॥ कुम्भीपाकःप्रोर्णुनावःप्रलापीह्यन्तर्दाहोदण्डपातोऽन्तकश्च । एणीदाहश्चाथहारिद्रसंज्ञोभेदाएतेसन्निपातज्वरस्य ॥ अजघोपभूतहासीयंत्रापीड़श्चसंयामः । संशोपीचविशेपास्तस्यैवोक्तास्त्रयोदशान्यत्र ॥ २८५ ॥

तन्त्रान्तरमें वातोल्वणादि तेरह सन्निपात भेदोंके कुम्भीपाकादि अन्य तेरहनाम और लक्षण जो कहेगये हैं सो अथभागे कहते हैं कुम्भीपाक प्रोर्णुनाव प्रलापी अन्तर्दाह दंडपात अन्तक एणीदाह हारिद्रक अजघोष भूतहास यन्त्रापीड़ संन्यास और संशोषी यह तेरह सन्निपातज्वरके भेद हैं ॥ २८५ ॥

अथैषांलक्षणानि ॥

घोणाविवरभ्ररदबहुशोणासितलोहितंगाढ़म् । विलुठन्मस्तकमभितः कुम्भीपाकेनपीड़ितंविद्यात् ॥ २८६ ॥ इनकेलक्षण ॥

जिस सन्निपात में नासिका से लाल काला तथा गाढ़ा बहुत रुधिर गिरे और रोगी शिरको इधर उधर चलावे उसको कुम्भीपाक कहते हैं ॥ २८६ ॥

उत्क्षिप्ययःस्वमंगंक्षिपत्यधस्तान्नितांतमुच्छ्वसिति । तंप्रोर्णुनावजुष्टंविचित्रकष्टंविजानीयात् ॥ २८७ ॥

जिस सन्निपात में रोगी अपने अंगोंको ऊपर उठा २ कर नीचेडाले और बहुत श्वासले उस सन्निपातको प्रोर्णुनाव कहते हैं यह विचित्र कष्टदायक होताहै ॥ २८७ ॥

स्वेदभ्रमांगभेदाःकम्प्रोक्षवथुर्वमिर्व्यथाकण्ठे । गात्रञ्चगुर्वतीवप्रलापिजुष्टस्यजायतेलिंगम् ॥ २८८ ॥

जिस सन्निपातमें स्वेद भ्रम शरीरमें पीड़ा कम्प सन्ताप छर्दि कंठमें पीडा और शरीरमें बहुत भारीपन होय उसको प्रलापी कहते हैं ॥ २८८ ॥

अन्तर्दाहःशैत्यंबहिःश्वयथुररतिरपितथाश्वासः । अंगमविदग्धकल्पंसोऽन्तर्दाहा द्वितःकाथितः ॥ २८९ ॥

जिस सन्निपात में भीतर दाह बाहर शीत सूजन ग्लानि तथा श्वास और शरीर जलाहुआसा मालूमपड़े उसको अन्तर्दाह कहते हैं ॥ २८९ ॥

नक्तंदिवाननिद्रामुपैतिगृह्णातिमूढधीर्नभसः । उत्थायदण्डपातोभ्रमातुरःसर्व्वतो भ्रमति ॥ नभसोगृह्णातिआकाशात्किञ्चिद्गृहीतुंकरौप्रसारयतीत्यर्थः ॥ २९० ॥

जिस सन्निपात में रात्रि दिन निद्रा न पड़े रोगी आकाश से कुछ लेनेके लिये हाथ फैलावे और भ्रमातुर होकर उठकर इधर उधर चले उसको दंडपात कहते हैं ॥ २९० ॥

सम्पूर्य्यतेशरीरंग्रन्थिभिरभितस्तथोदरंमरुता । श्वासातुरस्यसततंविचेतनस्या न्तकार्त्तस्य ॥ २९१ ॥

जिस सन्निपात में शरीरपर गॉठें सी पड़ जांय पेट में वात भरजाय श्वास होय और निरंतर अचेतन्यता बनी रहै उसको अन्तक कहते हैं ॥ २९१ ॥

परिधावतीवगात्रेरुक्पात्रेभुजंगहरिणगणः। वेपथुमतःसदाहस्यैणीदाहज्वरार्त्तस्य॥ रुक्पात्रेपीड़ाभाजनेगात्रस्यविशेषणमेतत् ॥ २९२ ॥

जिस सन्निपात में पीड़ा युक्त शरीपर सर्प पतंग तथा हिरनसे दौड़ते मालूम पड़ें और कंप तथा दाह उत्पन्न हो उसको एणीदाह कहते हैं ॥ २९२ ॥

यस्याऽतिपीतमङ्गंनयनेसुतरांमलस्ततोऽप्यधिकम्। दाहोऽतिशीततावहिरस्यसहा रिद्रकोज्ञेयः ॥ २९३ ॥

जिस सन्निपात में शरीर तथा नेत्र पीलेहों और मल उनसे भी अधिक पीला होय भीतर दाह और बाहर शीतलता होय उसको हारिद्रक कहते हैं ॥ २९३ ॥

छगलकसमानगन्धःस्कन्धरुजावान्निरुद्धगलरन्ध्रः । अजघोषसन्निपातादाताम्रा क्षःपुमान्भवति ॥ २९४ ॥

जिस सन्निपातमें बकरेके समान दुर्गन्धिआवे कन्धोंमें पीड़ा होय कंठ रुकजाय और नेत्र ताम्र वर्ण होंय उसको अजघोष कहते हैं ॥ २९४ ॥

शब्दादीनधिगच्छतिनस्वान्विषयान्यदिन्द्रियग्रामैः। हसतिप्रलपतिपरुषंसज्ञेयोभूत हासार्त्तः ॥ २९५ ॥

जिस सन्निपातमें रोगी अपनी इन्द्रियोंसे शब्दादिक विषयोंको न ग्रहण करसके हँसे और कठोर प्रलाप करे उसको भूतहास कहतेहैं ॥ २९५ ॥

येनमुहुर्ज्वरवेगाद्यन्त्रेणेवावपीड्यतेगात्रम्। रक्तंपीतञ्चवमेद्यन्त्रापीड़ःसविज्ञेयः२९६

जिस सन्निपातमें ज्वरके वेगसे शरीर यन्त्रके द्वारा दबायासाजाय और रक्त तथा पीतवर्ण वमन करे उसको यन्त्रापीड कहतेहैं ॥ २९६ ॥

अतिसरतिवमतिकूजतिगात्राण्यभितश्चिरंनरःक्षिपति । संन्याससन्निपातेप्रलपत्युग्राक्षिमण्डलोभवति ॥ २६७ ॥

जिस सन्निपातमें अतीसार छर्दि गलेमें अव्यक्त शब्द अंगोंका इधर उधर पटकना प्रलाप और नेत्रोंकी उग्रता होय उसको संन्यास कहतेहैं ॥ २९७ ॥

मेचकवपुरेतिमेचकलोचनयुगलोमलोत्सर्गात् । संशोषिणीसितपिड़कामण्डलयुक्तोज्वरेनरोभवति ॥ २६८ ॥

जिस सन्निपातमें मलके त्याग करनेसे शरीर तथा नेत्र अत्यन्त काले रंग होजांय और श्वेतवर्ण मंडल युक्त फुड़िया उत्पन्न होंय उसको संशोषी कहतेहैं ॥ २९८ ॥

नारायणएवभिषक्भेषजमेतेपुजान्हवीनीरम्।नैरुज्यहेतुरेकोनित्यंमृत्युञ्जयोध्येयः२६६

इन सन्निपातोंमें नारायणही वैद्य औषध गंगाजीकाजल और आरोग्यके लिये निरन्तर श्रीमृत्युंजयका ध्यान करना चाहिये ॥ २९९ ॥

अथासाध्यस्यसान्निपातज्वरस्यलक्षणमाह॥

सन्निपातज्वरस्यान्तेकर्णमूलेसुदारुणः । शोथःसंजायतेतेनकश्चिदेवप्रमुच्यते ॥ स दारुण.मारकत्वात्। यतस्तेनशोथेनकश्चिदेवप्रमुच्यते ॥ कोऽपिजीवितंत्यजतिइत्यर्थः। सान्निपातज्वरान्कष्टानसाध्यानपरेजगुः । दोषेप्रवृद्धेनष्टेऽग्नौसर्व्वसम्पूर्णलक्षणः । सन्निपातज्वरोऽसाध्य कष्टसाध्यस्ततोऽन्यथा ॥ सर्व्वाणिदाहशीतादीनिसम्पूर्णानिआतुरगतानिप्रोक्तानियावल्लक्षणानियस्यसः । ततोऽन्यथादोषेपक्वेअग्नौदीप्तेस्वल्पलक्षणकःकष्टसाध्यइत्यर्थः ॥ ३०० ॥

असाध्य सन्निपात ज्वरका लक्षण ॥

सन्निपात ज्वरके अन्तमें करण मूलपर अत्यन्त भयानक सूजन उत्पन्न होतीहै इस सूजनके होनेसे प्रायः सबलोग मृत्युकोप्राप्त होतेहैं और कभी कोई दैवयोगसे बचभी जाताहै (सन्निपात ज्वरोंको कोई कष्टसाध्य और कोई असाध्य कहतेहैं) जिस सन्निपातमें दोष बहुत बढ़जांय अग्नि नष्ट हो जाय और पहले कहेहुए दाह शीतादिक सम्पूर्ण लक्षण मिलें वह असाध्यहै और जो दोष परिपक्व होंय अग्नि दीप्तिहोय और सब लक्षण न मिलें तो कष्ट साध्य जानना चाहिये ॥ ३०० ॥

अथसामान्यसान्निपातज्वरस्यचिकित्सा ।

सन्निपातार्णवेमग्नंयोऽभ्युद्धरतिमानवम् । कस्तेननकृतोधर्म्मःकाचपूजांनसोऽर्हति॥ मृत्युनासहयोद्धव्यंसन्निपातंचिकित्सता । यश्चतत्रभवेज्जेतासजेतामयसंकुले ॥३०१॥

सामान्य सन्निपात ज्वरकी चिकित्सा ॥

सन्निपात रूपी समुद्रमें डूबेहुए मनुष्यका जो उद्धार करताहै वह सब धर्मोंका करने वाला और सपर्ण पूजाओं के योग्यहै सन्निपातकी चिकित्सा करना मृत्युके संग युद्ध करनाहै इस युद्धमें जो कोई जीतते हैं वह सब रोगोंके जीतने वाले होतेहैं ॥ ३०१ ॥

श्लेष्मनिग्रहमेवादौकुर्य्याद्व्याधौत्रिदोषजे । संसर्गेयोगरीयान्स्यात्दुपक्रम्यसवैभवेत् ॥ शेषदोषाविरोधेनसन्निपातेतथैवच । संसर्गेदोषद्वयसंसर्गेगरीयान्बलत्तरः ॥ अंशांशंयत्रदोषाणांविवेक्तुंनैवशक्नुयात् । क्रियांसाधारणींतत्रविदधीतचिकित्सकः ॥ लङ्घनंवालुकास्वेदोनस्यंनिष्ठीवनंतथा । अवलेहोऽञ्जनंचैवप्राक्प्रयोज्यंत्रिदोषजे ॥ ज्वरइतिशेषः ॥ ३०२ ॥

सन्निपात रोगमें पहले कफको शांत करनाचाहिये और दो दोषोंके संसर्गसे जो रोग उत्पन्न हो उसमें जो दोष बलवान्हो उसकी चिकित्साकरे परन्तु दूसरे दोषके लिये जो हानिकारकहो उसमें दृष्टि रखनी चाहिये और त्रिदोषज रोगमें भी इसीप्रकार चिकित्सा करनीचाहिये वैद्य जहां दोषों के अंश २ अलग न करसके वहां साधारण चिकित्साकरे सन्निपातमें पहले लंघन बालुकास्वेद नस्य निष्ठीवन (कफनिकालना) अवलेह और अंजन इनकाप्रयोग करनाचाहिये ॥ ३०२ ॥

ननुक्रियायास्तुगुणालाभेक्रियामन्यांप्रयोजयेत् । पूर्व्वस्यांशान्तवेगायांनक्रियासङ्करोहितः॥ इतिवचनेनक्रियासङ्करस्यनिषिद्धत्वात्कथमत्रनस्यनिष्ठीवनावलेहांजनानियुगपद्विधीयन्तइत्याशङ्क्याह। क्रियाभिस्तुल्यरूपाभिःक्रियासांकर्यमिष्यते। भिन्नरूपतयातास्तुनहिकुर्वंतिदूषणम् ॥ ३०३ ॥

यहां यह सन्देह होताहै कि एक क्रियाके द्वारा कुछ उपकार न होनेपर दूसरी क्रिया करनीचाहिये परन्तु पहली क्रियाके वेगके शांत होजानेपर दूसरी क्रिया करनी चाहिये क्योंकि क्रियाओं का संयोग हितकारी नहीं होताहै इस वचनके द्वारा क्रियाओंके संयोगका निषेध हुआ तो यहां नस्य निष्ठीवन अवलेह और अंजन एक साथही क्यों विधान कियेजातेहैं इसका उत्तर यहहै कि समान क्रियाओं के एक साथ करनेमें दोषहोताहै और जुदीरक्रियाओंके करनेमें कोई दोष नहींहै ॥ ३०३ ॥

तत्रलङ्घनस्यावधिमाह ॥

त्रिरात्रंपञ्चरात्रंवादशरात्रमथापिवा । लङ्घनंसन्निपातेषुकुर्यादारोग्यदर्शनात् ॥ लङ्घनेत्रिरात्रादिकल्पदल्रथैवा । तत्राद्यापेक्षयादोषाणांशीघ्रमध्यमन्दशक्तित्वात् । व्याध्यभावाद्वा आरोग्यदर्शनादिति । यावदारोग्यदर्शनंस्यात्तावद्वालङ्घनंकुर्यात् । एतेनत्रिरात्राद्यवधेर्नेनियतत्वंसूचितम् । अतएवसुश्रुतःप्राह। सप्तमेदिवसेप्राप्तेदशमेद्वादशेपिवा। पुनर्घोरतरोभूत्वाप्रशमंयातिहन्तिवा॥घोरतरइतिस्वभावादेवतदाघोरतरोभूत्वेति ३०४

लंघनकी अवधि ॥

सन्निपात ज्वरमें तीन रात्रि पांच रात्रि दशरात्रि अथवा आरोग्य पर्य्यन्त लंघन करानाचाहिये यहां लंघनके विषयमें तीन रात्रि आदिक अलग २ कल्पना वातादिकोंकी वृद्धिके अनुसार दोषों की शीघ्र मध्यम तथा मन्दशक्तिके अनुसार अथवा रोगके स्वभावके अनुसार जाननी चाहिये जबतक आरोग्य न होय तबतक लंघनदेवे इससे तीन रात्रि आदि अवधिका निश्चित न होना सूचित होता है इसीसे सुश्रुतने कहाहै कि सातवें दशवें अथवा बारहवें दिन सन्निपातज्वर फिर स्वभावहीसे बढ़कर शांतहोताहै अथवा मारताहै ॥ ३०४ ॥

हननप्रशमयोःकारणमाह ॥

पित्तकफानिलवृद्ध्यादशदिवसद्वादशाहसप्ताहात् । हन्तिविमुञ्चत्यथवात्रिदोषजो धातुमलपाकात् ॥ त्रिदोषजोज्वरइतिशेषः । धातुमलपाकात् । धातुपाकाद्धन्तिमलपाकाद्विमुञ्चतीत्यर्थः । धातुमलपाकेप्राक्तनकर्म्मैवहेतुः । तत्रयदिजीवनसम्वर्द्धकंकर्म्मास्तितदामलपाकोऽन्यथाधातुपाकःसचरसादिशुक्रान्तधातूनांपाकोबोद्धव्यः ॥ ३०५ ॥

शान्तहोनेका अथवा रोगीके मारनेकाकारण ॥

सन्निपात ज्वर दशवें दिन बारहवें दिन अथवा सातवें दिन शान्तहोजाता है अथवा क्रमसे पित्त कफ तथा वायुकी वृद्धिके द्वारा मारता है अथवा धातु तथा मलके पाकके द्वारा मारताहै या शान्त होजाताहै अर्थात् धातुओंके पाकसे मारताहै और मलके परिपाक होनेसे शांत होताहै धातु तथा मलके परिपाकमें पूर्वजन्मके कर्महीं कारणहोतेहैं अर्थात् जो जीवनके बढ़ानेवाले कर्म्म हैं तो मलोंका पाक होताहै और नहींतो रसको आदिले वीर्य्य पर्यंत धातुओंका पाकहोताहै ॥ ३०५ ॥

तत्रधातुपाकस्यलक्षणमाह ॥

निद्रानाशोहृदिस्तम्भोविष्टम्भोगौरवारुची। अरतिर्बलहानिश्चधातूनांपाकलक्षणम् ॥ विष्टम्भउदरस्यगौरवंगात्राणाम् । अन्यच्च । संबाध्यमानोहृदिनाभिदेशेगात्रेषुवापाकरुजान्वितेपु । पीडाज्वरार्तोऽङ्गुलिभिश्चगच्छेत्सधातुपाकीकथितोभिषग्भिः । अपरञ्च । नाभेरूर्द्ध्वंहृदोऽधस्तात्पीडितेचेद्व्यथाभवेत् ।धातोःपाकंविजानीयादन्यथातुमलस्यच ॥ ३०६ ॥

धातुओंके परिपाकहोनेका लक्षण ॥

निद्राका नाश हृदयमें स्तम्भ उदरमें विष्टंभ शरीरमें भारीपन अरुचि ग्लानि और बलका नाश यह धातुओंके परिपाक होनेके लक्षणहैं अन्यप्रकार हृदय तथा नाभिमें पीड़ा शरीरका पकना पीड़ा और ज्वरसे पीडित होकर अंगुलियों के बलसे चलना यह धातुपाकके लक्षणहैं अन्य प्रकार नाभि और हृदय के बीचमें दबाने से पीड़ा होय तो धातुओं का पाक जानना चाहिये और इस बातके न होनेमें मलका परिपाक समझना चाहिये ॥ ३०६ ॥

अथ मलपाकलक्षणम् ॥

दोषप्रकृतिवैकृत्यंलघुताज्वरदेहयोः । इन्द्रियाणाञ्चवैमल्यंमलानांपाकलक्षणम् ॥ दोषावातादयस्तेषांप्रकृतिस्त्वेतुदाहतंद्रागौरवादिकरणंतस्यावैकृत्यंवैपरीत्यंवैमल्यंमलराहित्यम् । मलानांदोषाणांपाकलक्षणम् । अन्यच्च । शब्दत्वीन्द्रियपञ्चकस्यपटुतावह्नेश्चयत्रक्रमात् । तृष्णादिप्रशमोज्वरस्यमृदुतातंदोषपाकंवदेत् ॥ ३०७ ॥

मलदोषके परिपाकका लक्षण ॥

वातादि दोषोंकी प्रकृति की विकृति अर्थात् दाहतंद्रा और भारीपन आदिका न होना ज्वरका थोड़ा होना शरीरमें हलकापन और इन्द्रियोंकी निर्मलता यह दोषोंके परिपाक होनेका लक्षणहैं अन्यप्रकार सदैव पांचों इन्द्रियोंकी सामर्थ्य क्रमसे अग्निकी दीप्ति तृषा आदि उपद्रवोंकी शान्ति और ज्वरकी स्वल्पता यह दोषोंके पाकके लक्षणहैं ॥ ३०७ ॥

नस्य ॥

सेंधानोन श्वेतमिर्च सरसों और कूट इनसब औषधियोंको बकरेके मूत्रमें पीसकर नास लेने से तन्द्राका नाश होताहै इति सैंधवादि नस्य ॥ ३१२ ॥

मधूकसारसिंधूत्थवचोषणकणाःसमाः । श्लक्ष्णंपिष्ट्वाम्भसानस्यं दद्यात्संज्ञाप्रबोधनम् ॥ मधूकसारादि नस्यम् ॥ ३१३ ॥

महुएके वृक्षकासार सेंधा नोन वच मिर्च और पीपल इन सबको बराबर लेकर महीन पीसकर जल केसाथ नास लेनेसे चैतन्यता होतीहै इति मधूक सारादि नस्य ॥ ३१३ ॥

मातुलुंगार्द्रकरसं कोष्णंत्रिलवणान्वितम् । अन्यद्वासिद्धविहितं नस्यंतीक्ष्णंप्रयोजयेत् ॥ तेनप्रभिद्यतेश्लेष्मा प्रभिन्नश्चप्रसिच्यते । शिरोहृदयकण्ठास्य पार्श्वरुक्चोपशाम्यति ॥ मोहामयेनमुग्धं वोधयितुंयादृशःशक्तः । कल्पतरुर्नामधेयो रसोनतादृक्परं किञ्चित् ॥ इतिनस्यम् ॥ ३१४ ॥

नीबू तथा अदरकका रस और तीनोनोन इनको मिलायके कुछ गरम २ नास लेनी चाहिये अथवा इनसे अन्य और जो तीक्ष्ण हुलास कही गईहै वह देनी चाहिये और नासके द्वारा कफ गलाहोकर निकलजाताहै और शिर हृदय कंठ मुख तथा पसलियोंकी पीड़ा शान्त होतीहै मोह रोगसे मोहित मनुष्यको चैतन्य करनेके लिये जैसाकि कल्पतरु रसहै वैसी और कोई औषधि नहीं है इसलिये कल्पतरु रसकी नास लेनी चाहिये इति नस्य॥ ३१४ ॥

अथ निष्ठीवनम् ॥

जिह्वातालुगलक्लोम मरुत्पित्तेनदूषितम् । तदास्यशोषयेच्छोषं जिह्वाविरसतांतथा ॥ स्फुटनञ्चतदाजिह्वां लेपयेन्मधुपिष्टया । द्राक्षयासाज्यपातेन जिह्वास्यात्सरसामृदुः ॥ आर्द्रकस्वरसोपेतं सैंधवंकटुकत्रयम् । आकण्ठाद्धारयेदास्ये निष्ठीवेच्चपुनःपुनः ॥ तेनास्यतालुकोष्ठां शमन्यापार्श्वशिरोगलात् । लीनोऽप्याकृष्यतेश्लेष्मा लाघवंचास्यजायते ॥ पर्वभेदोज्वरोमूर्च्छा निद्राश्वासगलामयाः । मुखाक्षिगौरवंजाड्य मुत्क्लेशश्चोपशाम्यति ॥ सकृद्द्वित्रिश्चतुःकुर्य्याद् दृष्ट्वादोषवलावलम् । एतद्धिपरमंप्राहुः भेषजंसन्निपातिनाम् ॥ इतिकवलग्रहः ॥ ३१५ ॥

निष्ठीवन ॥

जिह्वा तालु कंठ और फुप्फुस यह जो वायु तथा पित्तके द्वारा दूषित होकर जिह्वाका सूखना विरसता और फटना उत्पन्नकरें तो दाख को पीसकर घी और सहत के साथ जिह्वा में लेपकरे इस्से जिह्वा सरस और कोमल होजाती है सेंधानोन सोंठ पीपल और मिर्च इनको पीसकर अदरक के रस में मिलाय के गले तक मुख में रखकर वारंवार थूके इस्से हृदय गलेके पीछे की नस पसली शिर तथा गले में, लिपटाहुआ कफ निकल जाता है इसकारण हलकापन होता है और पोरुओं की पीड़ा ज्वर मूर्च्छा निद्रा श्वास गलेके रोग मुखतथा नेत्रोंका भारीपन शरीरकी जड़ता और मतली यह सब निवृत्त होते हैं दोषोंके बलाबलको देख कर एकवार दो बार तीनवारअथ-

वा चार वार यह क्रियाकरनी चाहिये सन्निपात रोग वालों को यह ओपध परम हितकारी है इति कवल ग्रहण ॥ ३१५ ॥

अथावलेहः ॥

कट्फलंपौष्करंशृंगी व्योषंयासश्चकारवी । श्लक्ष्णचूर्णीकृतञ्चेतन्मधुनासहलेहयेत् ॥ एषावलेहिकाहन्ति सन्निपातंसुदारुणम् । हिक्कांश्वासञ्चकासञ्च कण्ठरोगञ्च नाशयेत् ॥ एततूयोज्यंकफोद्रेके चूर्णमार्द्रकजैरसैः । तंत्रांतरे चोक्तम् । अष्टांगमधुना लिह्यादार्द्रकस्वरसेनवा । संमोहंदारुणंहन्यात्तंद्राकाससमन्वितम् ॥ ३१६ ॥

अवलेह ॥

कायफल पुष्करमूल काकड़ासिंगी सोंठ पीपल मिर्च जवासा और कालाजीरा इनसबको पीस कर सहतकेसाथ चाटनेसे अत्यन्त कठिन सन्निपात हिचकी श्वास खांसी और कंठ रोगोंका नाशहोताहै अधिक कफवाले सन्निपात में यह अदरख के रसके साथ देना चाहिये और तन्त्रान्तर में कहा गयाहै कि अष्टांगावलेह सहत के साथ अथवा अदरकके रस के साथ सेवन करनेसे तन्द्रा और खांसी सहित भयंकर मोहका नाशहोता है ॥ ३१६ ॥

सर्व्वेषुसन्निपातेषु नक्षौद्रमवचारयेत् । शीतोपचारंक्षौद्रंस्याच्छीतंचात्रविरुध्यते ॥ सन्निपातज्वरेषु श्लेष्मानिग्रहार्थं सर्व्वदास्वेदोहितः । तत्राग्निसम्बंधेन देहस्योष्णता तिष्ठति । उष्णेनमधुना विरोधः ॥ उक्तंचसुश्रुतेन । उष्णैर्विरुध्यतेसर्व्वं विषान्वयतया मधु । उष्णार्त्तमुष्णैरुष्णञ्च तन्निहन्तियथाविषमिति ॥ शीतोपचारिक्षौद्रंस्यात् शीतं चात्रविरुध्यते । शीतेनोपचारोऽस्यास्तीतिशीतोपचारि ॥ शीतञ्चात्रसन्निपातेन विरुद्ध्यते ॥ ३१७ ॥

सम्पूर्ण सन्निपातों में सहत नहीं देनाचाहिये क्योंकि सहत शीतल वस्तुओंके साथ दिया जाता है और शीतलता सन्निपातों में विरुद्ध है सन्निपात ज्वरमें कफ के दूरकरनेकेलिये सदैव स्वेद हितकारीहै इस लिये सदैव अग्निके संयोग से शरीर उष्ण रहता है और उष्णताके साथ सहतका विरोध है और सुश्रुत ने कहाहै कि सहत विषके संबंध होने के कारण सब प्रकार उष्णताका विरोधी होताहै इसलिये उष्णता से व्याकुल मनुष्यों कोअथवा उष्ण वस्तुओं के साथ या उष्ण कियाहुआ सहत विषके समान मारने वाला होताहै ॥ ३१७ ॥

(अवलेहः) प्रायेणोर्द्ध्वजत्रुजरोगहरत्वात्सायमुपयुज्यते।यतउक्तंचरकेण। ऊर्द्ध्वजत्रुगदघ्नीयासा सायमवलेहिका । अधोरोगहरीयासा भोजनात्प्राक्प्रयुज्यते ॥ पौष्करं पुष्करमूलं तदलाभेकुठंदेयम् शृंगीकर्कटशृंगी । व्योषंशुण्ठी पिप्पली मरिचानि। या सोयवासः । केचिद्यासस्थाने यवानींप्रक्षिपन्ति । कारवीमगरेला इतिलोके । अष्टांगावलेहिका ॥ ३१८ ॥

अवलेह प्रायः हंसलीके ऊपर के रोगोंको दूर करताहै इसलिये सायंकालको देनाचाहिये क्योंकि चरकने कहा है कि जो अवलेह हंसली के ऊपर के रोगोंको दूर करताहै वह सायंकाल को देना चाहिये और जो अवलेह नीचेके रोगोंको नाशकरताहै वह भोजनके पहलेदेवे ॥ ३१८ ॥

स्विन्नमामलकम्पिष्ट्वा-द्राक्षयासहमेलयेत् । विश्वभेषजसंयुक्तं मधुनासहलेहये त्॥ तेनास्यशाम्यतिश्वासः कासोमूर्च्छारुचिस्तथा । इतिचतुरंगावलेहः ॥ ३१९ ॥

चतुरंगावलेह ॥

पके हुये आंवलोंको पीसकर दाख और सोंठ मिलाके सहतके साथचाटे इस्से श्वास खांसी तथा मूर्च्छाका नाशहोताहै ॥ ३१९ ॥

अथाञ्जनम् ॥

शिरीषबीजंगोमूत्रकृष्णामरिचसैन्धवैः । अञ्जनंस्यात्प्रबोधायसरसोनशिलावचैः ॥ (शिरीषबीजा) ॥ ३२० ॥

अंजन शिरीषबीजाद्यंजन ॥

सिरसके बीज गोमूत्र पीपल मिर्च सेंधानोन लहसन मैनसिल और वच इन औषधियों को पीसकर अंजन लगाने से रोगीको चैतन्यताहोतीहै ॥ ३२० ॥

अयोरजःश्वेतलोध्रंमरिचंचाञ्जनंतथा । गोमूत्रेणसमायुक्तंतन्द्रानाशनमुत्तमम् ॥ (लोहचूर्णाद्यञ्जनम्) अञ्जनंसम्यगारव्धंमधुसिन्धुशिलोषणैः । प्रमोहद्रोहिभवति भाषितंदण्डपाणिना ॥ इत्यञ्जनम् ॥ ३२१ ॥

लोहचूर्णाद्यंजन ॥

लोहचूर्ण सफेदलोध और मिर्च इनको गोमूत्र में पीसकर अंजन करनेसे तन्द्राका नाशहोताहै सहत सेंधानोन मैनसिल और मिर्च इनको पीसअंजन लगानेसे मोहका नाशहोताहै ॥ ३२१ ॥

सूतंविषश्चमरिचंतुत्थकंनवसादरम् । चूर्णितंस्वरसैर्मर्द्यधूर्त्तपत्ररसोनयोः ॥ सन्निपा तकृतेमोहेमूर्द्ध्निलिम्पेत्पदोपरि । अस्थिव्यथास्वनेनैवलेपंकुर्यात्पदोपरि॥ (पदम्पा च्छइतिलोके) ॥ ३२२ ॥ इतिअंजन ॥

पारा विष मिर्च तूतिया और नौसादर इनको बराबर लेकर धतूरेके पत्ते और लहसनके रस में पीसकर शिरमें और पैरोंपर लेपकरे इस्से सन्निपात जनित मोहका नाशहोताहै और हड्डियों में पीडाहोय तौभी इसीका लेप पैरोंपर करना चाहिये ॥ ३२२ ॥

क्वाथ ॥

विल्वःश्योनाकगम्भारीपाटलागणिकारिका । पित्तघ्नंवातकफहृत्पञ्चमूलमिदंमहत् ॥ शालिपर्णीपृष्ठिपर्णीवृहतीकण्टकारिका । गोक्षुरुर्वातपित्तघ्नंकनीयःपञ्चमूलकम् ॥ उभयं दशमूलंतत्पिप्पलीचूर्णसंयुतम् । सन्निपातज्वरंहन्तिहृद्कण्ठग्रहनाशनम् ॥ तन्द्रावातक फातङ्कश्वासपार्श्वार्त्तिकासनुत् । महान्तियानिमूलानिकाष्ठगर्भाणियानिच ॥ तेषान्तुव ल्कलंग्राह्यंह्रस्वमूलानिकृत्स्नशः । अत्रविल्वादीनांपञ्चानांमूलस्यवल्कलंग्राह्यम् ॥ (द शमूलीक्वाथ) ॥ ३२३ ॥ क्वाथ दशमूलीक्वाथ ॥

वेल सोनापाढ़ा गंभारी पाटला अरणी यह वृहत् पंचमूल कहलाताहै यह वात कफ तथा पित्त का नाशकरे शालिपर्णीपृष्ठपर्णी दोनों भटकैया और गोखुरू यह छोटा पञ्चमूल वात पित्तका

नाशकहै यहदोनों मिलकर दशमूल कहलातेहैं दशमूलका क्काथपीपलका चूर्णडालकर सेवन करने से सन्निपात ज्वर हृदयतथा कंठका अवरोध तंद्रा वात तथा कफके रोग श्वास पसलीकी पीडा और खांसीका नाशहोताहै जिन वृक्षों की जड़ मोटी और भीतर काष्ठ से भरीहुई होय उनकी छाललेनी चाहिये और जिन वृक्षोंकी जड़छोटी तथा भीतर काष्ठसे रहितहोय वहसंपूर्ण लेनी चाहिये यहां वेल आदिक पांचवृक्षोंकी छाललेनीचाहिये ॥ ३२३ ॥

दशमूलीकषायस्तुपिप्पलीपौष्करान्वितः । सन्निपातज्वरेदेयःश्वासकासससमन्विते ॥ (द्वादशाङ्गक्काथः) ॥ ३२४ ॥

द्वादशांगक्काथ ॥

दशमूल के काढेमें पीपल और पुष्करमूलमिलाकर पानकरने से सन्निपातज्वर श्वास तथा खांसीका नाशहोताहै ॥ ३२४ ॥

चिरज्वरेवातकफोल्वणेवात्रिदोषजेवादशमूलमिश्रः।किराततिक्तादिगणःप्रयोज्यःशुध्युर्थिनेवात्रिवृताविमिश्रः ॥ किराततिक्तादि । किराततिक्तकोमुस्तंगुडूचीविश्वभेषजम्। किरातादिर्गणोह्येपचातुर्भद्रकमित्यपि ॥ (इतिचतुर्दशाङ्गक्काथः) ॥ ३२५ ॥

चतुर्दशांगक्काथ ॥

पुराने ज्वर में और अधिक वात कफ वाले सन्निपात ज्वरमें दशमूल और किराततिक्तादिगण का क्काथ देना चाहिये और जिसको दस्तदेने होयँ उसको निसोथमिलाकर यह क्काथदेवे चिरायता मोथा गिलोय और सोंठ इनको किराततिक्तादि गण और चातुर्भद्रक कहतेहैं ॥ ३२५ ॥

दशमूलीशटीशृङ्गीपौष्करंसदुरालभम् ॥ भार्गीकुटजबीजञ्चपटोलंकटुरोहिणी ॥ अष्टादशांगइत्येपसन्निपातज्वरापहः । कासहृद्ग्रहपार्श्वार्तिश्वासहिक्कावमीहरः ॥ (अष्टादशांगक्काथः) ॥ ३२६ ॥

अष्टादशांगक्काथ ॥

दशमूल कचूर काकड़ासिंगी पुष्करमूल जवासा भारंगी इन्द्रजौ परवल और कुटकी यह अष्टांदशांग क्काथ सेवनकरने से सन्निपात ज्वर खांसी हृदयका रुकना श्वास पसलीकी पीड़ा हिचकी तथा छर्दिका नाशहोताहै ॥ ३२६ ॥

भूनिम्बदारुदशमूलमहौषधाब्दातिक्तेन्द्रबीजधनिकेभपणाकषायः।तन्द्राप्रलापकसनारुचिदाहमोहश्वासत्रिदोषजनितज्वरनाशनःस्यात् ॥ (द्वितीयोऽष्टादशांगक्काथः)उक्तंचवङ्गसेनेनअष्टादशांगइत्येषमृत्युकल्पंज्वरंजयेदिति ॥ ३२७ ॥

दूसराअष्टादशांगक्काथ ॥

चिरायता देवदारु दशमूल सोंठ मोथा कुटकी इन्द्रजौ धनियां और गजपीपल इनका क्काथ तन्द्रा प्रलाप खांसी अरुचि दाह मोह श्वास और सन्निपात ज्वरका नाशकरताहै और वंगसेनने कहाहै कि यह अष्टादशांगनाम क्काथ मृत्युके समान ज्वर को नाशकरताहै ॥ ३२७ ॥

अथ सन्निपातज्वरेरसाः ॥

विषंत्रिकटुकंगन्धंटङ्कणंमृतशुल्वकम् । धत्तूरस्यचबीजानिहिंगुलंनवमंस्मृतम् ॥ एतानिसमभागानिदिनैकंविजयाद्रवैः। मर्द्दयेच्चणकाकाराकर्त्तव्यावटिकाभिषजा ॥ भक्षणीया

नुपातव्योरविमूलकषायकः। मृतसंजीवनीनाम्नासन्निपातज्वरान्तकृत् ॥ इतिमृतसंजीव नीवटिकासन्निपातज्वरेरसप्रदीपे ॥ ३२८ ॥

सन्निपात ज्वरपर रस ॥

विष त्रिकुट गन्धक सुहागा तामेकी भस्म धतूरेके बीज और सिंगरफ इन सबको समभाग लेकर भांगके रसमें एकदिन खरलकरे और चनेके समान गोली बनावे इस गोलीको आककी जड़के क्वाथ के साथ सेवन करे यह मृतसंजीविनी नाम गोली सन्निपात ज्वरकी नाश करने वालीहै (इतिमृत्संजीविनी वटिका) ॥ ३२८ ॥

शुद्धसूतंसमंगन्धंसूतांशंमृतताम्रकम्। त्रिभिस्तुल्यैर्गवांक्षीरैःमर्दयेदातपेखरे ॥ मर्द्दयेद्दिनमेकन्तुनिर्गुण्डीशिग्रुजद्रवैः। विधायगोलन्तंगोलमन्धमूषागतंपचेत् ॥ त्रियामं वालुकायन्त्रेततःखल्वेविचूर्णयेत्। अष्टमांशंविषंतत्रक्षिपेत्तेनापिमर्द्दयेत्॥ त्रिनेत्राख्यो रसोह्येषदेयोगुञ्जाद्वयोन्मितः। पञ्चकोलकषायेणछागीदुग्धेनवासह ॥ रसेनानेनभुक्तेन सान्निपातज्वरोमहान् । संक्षयंव्रजतिक्षिप्रंकर्त्तव्योनात्रसंशय ॥ इतित्रिनेत्ररसः। सन्नि पातज्वरेरसप्रदीपे ॥ ३२६ ॥

सन्निपात ज्वरपर त्रिनेत्र रस ॥

शुद्धपारा शुद्ध गंधक और तांबेकी भस्म इन ओषधियोंको समभाग लेकर इन्हींके समान गौकेदूध में मर्दन करके तीक्ष्ण धूपमें सुखावे फिर निर्गुण्डी और सहजन के क्वाथ के द्वारा एकदिन मर्दन करे फिर गोला बनाकर अंध नाम घरियामें रखकर तीन पहर वालुकायन्त्रमें पाककरे इसके उपरान्त खरल में पीस के अष्टमांश विष मिलाकर घोटले यह त्रिनेत्र नामरस पंचकोलके काढ़े अथवा बकरीके दूधके साथ दो रत्ती सेवन करना चाहिये इससे अत्यन्त कठिन सन्निपात ज्वर का नाश होता है इसमें कोई सन्देह नहींहै ॥ ३२९ ॥

भस्मषोडशनिष्कंस्यादारण्योपलसम्भवम्। मरिचंनिष्कमात्रञ्चविषंनिष्कंविचूर्ण येत् ॥रसोभस्मेश्वरोनामसान्निपातज्वरान्तकृत। एकगुञ्जामितोभक्ष्यआर्द्रकस्यद्रवेणहि॥ इतिभस्मेश्वरोरसः। सन्निपातज्वरेरसेन्द्रचिन्तामणौ ॥ ३३० ॥

भस्मेश्वर रस ॥

अरने कंडोंकी भस्म चौंसठ मासे मिर्च चार मासे और विष चार मासे इन सबको पीसकर एकरत्ती के प्रमाण यह भस्मेश्वररस अदरकके रसके साथ सेवन करनेसे सन्निपात ज्वरका नाशकरताहै ३३० ॥

द्वौकर्षौसूतकाद्ग्राह्योगन्धकाद्द्वौतथैवच। यत्नतस्तूभयंमर्द्यंदिनंहंसपदीद्रवैः॥ क ल्कस्यवटिकांकृत्वानिक्षिपेत्काचभाजने। कर्षैकममृतंतत्रक्षिप्त्वावक्त्रंनिरोधयेत् ॥ कूपि कायाःपरोभागोवालुकाभिश्चपूरयेत्। सार्द्धयावदहोरात्रंतावत्तत्रपचेद्रसम् ॥ याम मात्रोऽनलोदेयःस्वाङ्गशीतंसमुद्धरेत्। तोलार्द्धममृतंतत्रक्षिपेत्तावत्तथोषणम् ॥ भक्षि तोरक्तिकामात्रोरसस्त्वग्निकुमारकः। सन्निपातज्वरंहन्याद्वातंमन्दाग्नितामपि ॥ शूलञ्च ग्रहणींगुल्मंक्षयंजत्रुगदन्तथा। श्वासकासादिकान्सर्व्वान्गदानेषविनाशयेत् ॥ इतिअ ग्निकुमारोरसः। सन्निपातज्वरादिषुरसेन्द्रचिन्तामणौ ॥ ३३१ ॥

अग्निकुमाररस ॥

पारा और गन्धक दो२ तोले लेकर हंसपदी जड़ीके रसमें एक दिन घोटे फिर उसकी गोली बना कर शीशीमें रक्खे और उसी शीशीमें १तोला विष छोड़कर शीशीका मुख बन्दकरदे और शीशीके दोनों ओर वालूभरके डेढ़ दिनतक अर्थात् बारह पहर तक दीपकके समान मन्द २ आंचदेवे फिर शीतल होजानेपे उसको निकाल कर आधे तोले विष और आधे तोले मिर्चमिलावे यह एक रत्ती सेवन करने से सन्निपात ज्वर वात मन्दाग्नि शूल ग्रहणी वाय गोला राजयक्ष्मा पसलीके रोग श्वास और खांसी आदिक सब रोगोंका नाशक है॥ ३३१ ॥

गन्धेशटङ्कमरिचंविषंधत्तूरजैर्द्रवैः दिनंसंमर्दितंशुष्कंपञ्चवक्त्रोरसोभवेत् आर्द्रकस्य द्रवेणपदातव्योरक्तिकामितः ।सन्निपातज्वरेदेयोघोरेतद्दोषनाशनः ॥ पञ्चवक्त्रोरसःस न्निपातेरसेन्द्रचिन्तामणौ ॥ ३३२ ॥

पंचवक्ररस ॥

पारा गन्धक सुहागा मिर्च और विष इनसब औषधियोंको धतूरे के पत्तोंके रसमें एक दिन घोट कर सुखालेवे यह पंचवक्र नाम रस अदरकके रसके साथ,एक रत्ती प्रमाण सेवन करने से घोर सन्निपात ज्वर का नाश करताहै ॥३३२॥

अमृतवराटकमरिचैर्द्विपञ्चनवभागयोजितैरचिता । वटिकामुद्गसमानाकफत्रिदोषा ग्निमान्द्यहरी ॥ अमृतादिवटी ॥ ३३३ ॥

अमृतादि वटी ॥

विष२ भाग कौड़ीकी भस्म ५ भाग और मिर्च ६ भाग इनसबको मिलाकर मूंगके समान बनाई हुई गोली सेवन करने से कफ त्रिदोष और मंदाग्निका नाश करतीहै ॥ ३३३ ॥

अथ शीतज्वरेरसाः ॥

सूतकंगन्धकञ्चैवहरितालंमनःशिलाः । एकनिष्कंद्विनिष्कञ्चचतुर्निष्कंतथैवच ॥ पञ्चनिष्कंरसैःकारवेल्याःसम्यक्प्रकल्पयेत् । ताम्रपत्राणितुल्यानितेनकल्केनलेपयेत् ॥ शरावसंपुटेतानिकृत्वातपामुपर्यपि । दद्यात्तांपिष्टिकांपश्चात्पुटपाकेनपाचयेत् ॥ ततः संचूर्णयेदेवंरसःक्षौद्रेणभक्षितः । यवैकमात्रयाहन्तिघोरंशीतज्वरंध्रुवम् ॥ पाराटंक १ गन्धकटङ्क २ हरतालटङ्क ४ मनःशिलाटङ्क ४ ताम्रपत्रटङ्क १२ शीतज्वरारिःरस प्रदीपे ॥ ३३४ ॥

शीतज्वरपररस ॥

पारा ४ मासा गंधक ८ मासा हरिताल १६ मासा और मेनसिल २० मासा इन औषधियों को करेलीके रसमें पीसले फिर उन्हीं औषधियोंके समान तांबेके पात्रोंपर औषधियोंका लेप करदे फिर सकोरेमें इनपत्रोंको रखकर सकोरेसेही बन्दकरदे और उसके ऊपरभी इन्हीं औषधियोंका लेपकरके पुटपाकमें पाककरे फिर पीसकर एकजौके प्रमाण इसरसको सहतके साथ खानेसे निस्सन्देह घोर शीतज्वरका नाशहोताहै ॥३३४॥

पारदंगन्धकञ्चैवतुल्यञ्चदरदंविषम् । विषाद्दृष्टगुणंयोज्यंमरिचंविश्वभेषजम् ॥ अ श्वगन्धाश्वविजयाकाममर्दःकठिल्लकः।चतुर्णाञ्चरसैरेतैःचूर्णान्येतानिमर्दयेत् ॥ तुलस्या

स्तुदलैःसार्द्धंभक्षितोरक्तिकामितः। हन्तिशीतज्वरंघोरंनाम्नायंशीतकेशरी ॥ ३३५ ॥

शीतकेशरीरस ॥

पारा गन्धक तूतिया सिंगरफ और विप यह समभाग और विप से अठगुनी मिर्च तथा सोंठ इन औषधियों को असगन्ध भंग कसौंदी और करेला इन चारोंके रसमें घोटे एकरत्ती के प्रमाण यह शीत केशरी नामरस तुलसीदल के साथ खानेसे घोर शीतज्वर को नाश करताहै ॥ ३३५ ॥

तालकंतुत्थकंताम्रंसूतगन्धकटङ्कणम्। सर्व्वमेतत्समंचूर्णंकारवेल्लीरसद्रवैः॥ दिनैकंमर्द्दयेत्तेनरसकर्द्दमकेनतु। ताम्रस्यभाजनस्यान्तर्लिपेदर्द्धांगुलोन्मितम्॥ तत्पचेद्वालुकायन्त्रेयवायावत्स्फुटन्तिहि। शीतलंतद्विगृह्णीयात्ताम्रपात्रोदराभिपक्॥ शीतभंजीरसोमापमात्रोमरिचसंयुतः। भक्षितापर्णखण्डेमनाशयेद्विषमज्वरान्॥ इतिशीतभंजीरसः। रसेन्द्रचिन्तामणौ॥ ३३६॥

शीतभंजी रस ॥

हरताल तूतिया तांबा पारा गन्धक और सुहागा इनसब बराबर औषधियों को पीसकर करेलेके रस में एक दिनतक खरल करके लुगदी बनाले फिर किसी तांबेके पात्रके भीतर आध अंगुल मोटा लेप करदे और वालुकायन्त्र में पाककरे यन्त्रपर जौ रख दे जब देखे कि जौ फूटगये तब उतार ले और शीतल होजाने पर तांबेके पात्रमें से औषध को छुड़ाले यह एकमासे प्रमाण शीतभंजी रस मिर्च और पानके साथ खानेसे विषम ज्वरों को नाशकरता है ॥ ३३६ ॥

तालकोदरदोद्भूत.पारदोगन्धकःशिला। क्रमाद्भागार्द्धरहितंकारवेल्यम्बुमर्दितम्॥ अनेनास्यप्रमाणेनताम्रपात्रंप्रलेपयेत्। अधोमुखंदृढेभाण्डेतन्निरुध्याथपूरयेत्॥ चुल्यांवालुकयाघस्रमग्निंप्रज्वालयेदधः। शीतंसंचूर्ण्यमापोऽस्यनागवल्लीदलेस्थितः॥ भक्षितोमरिचैःसार्द्धंसमस्तविषमज्वरान्। शीतदाहादिकांहन्तिपथ्यंशाल्योदनम्पयः॥ इतिशीतभंजीरसः। शीतज्वरादिविषमज्वरेपुरत्नप्रदीपे॥ ३३७॥

दूसरा शीतभंजी रस ॥

हरताल ४ भाग सिंगरफ से निकालाहुआ पारा २ भाग गन्धक १ भाग और मैनसिल आधा भाग इनसब औषधियों को करेले के रसमें मर्दन करे और इन्हीं औषधियों के बराबर तांबेके पत्रों पर सब पिसीहुई औषधियों का लेप करदे फिर किसी पात्रमें इनको रखकर दूसरे पात्रसे वन्दकरदे और संधियों पर लेपकरदे फिर वालुका यन्त्रमें उसके नीचे एक दिनतक आंचदे और शीतल हो जाने पर चूर्णकर एक उर्द के प्रमाण यह रस पान और मिर्च के साथ खाय यह शीत दाहादिक सम्पूर्ण विषम ज्वरों को नाशकरता है इसमें दूध भात का पथ्य करनाचाहिये ॥ ३३७॥

कट्फलंत्रिफलादारुचन्दनंसपरूपकम्। कटुकापद्मकोशीरंविपचेत्कर्षकञ्जले॥ त्रिदोषदाहतृष्णाघ्नंपानमात्रेप्रपूजितम्। दीर्घकालज्वरार्त्तानामेतत्स्यादमृतोपमम्॥ कर्षकट्फलाद्युशीरान्तानांसमुदितानांजलेप्रस्थमितेविपचेत्। अर्द्धशेषंकट्फलादिपानंतृष्णायांदाहेच॥ ३३८॥

तृषा और दाहमें कट्फलादि न ॥

कायफल हड़ बहेडा आंवला देवदारु चन्दन फालसा कुटकी पद्माक खस इनसब मिलीहुई एक तोले औषधियोंको लेकर चौंसठ तोले जल में परिपाककरनेसे जब आधा रहजाय तब लेले यह पान करनेसे त्रिदोष दाह तृषा इनको नाश करता है और बहुत कालके पुराने ज्वरवालोंको अमृत के समान है ॥ ३३८ ॥

सन्निपातेतुदाहार्त्तंयःसिञ्चेच्छीतवारिणा।आतुरःसकथंजीवेद्भिषग्वासकथम्भवेत्॥एषस न्निपातिनोदाहेशीताम्बुशेकनिषेधोरुग्दाहादन्यत्रतत्रवाप्यवगाहनस्योक्तत्वात् ३३९ ॥

सन्निपातमें दाहसे पीड़ित मनुष्यको जो शीतल जलसे सींचताहै वह वैद्य नहीं होसक्ताहै और वह रोगी नहीं जीसक्ताहै सन्निपातवालेको दाहमें शीतल जलसे सींचनेका यहनिषेध रुग्दाह सान्निपातको छोड़कर अन्यसन्निपातोंमें जानना चाहिये क्योंकि रुग्दाहमें वापीकास्नान लिखा है ३३९ ॥

अथान्नमाह । दुःस्पर्शगोक्षुरक्षुद्रासिद्धमाहारमर्पयेत् । दोषशान्तिबलाग्न्यर्थंत्रिदोष ज्वरिणोभिषक् ॥ दुःस्पर्शोयवासःआहारमुचितमन्नम् । लाजशक्तून्समश्नीयात्सैन्धवेनसमन्वितान् । तेचज्जीर्यन्त्यविघ्नेनज्वरीजीवेत्तदाध्रुवम् ॥ इतिकेचित् ॥ रक्तपित्तहितत्वेनतृपादाहज्वरेषुच । लाजानांशक्तवःशीतानैवतेऽत्रहितामताः ॥ पाचनोदीपनःस्वेद्योलाजमण्डोयतःस्मृतः । दशमूलादिसंसिद्धःसान्निपातज्वरेहितः ॥ ३४० ॥

सन्निपातवालेको देनेके योग्यअन्न ॥

सन्निपातवालेको दोषकी शांतिके लिये और बल तथा अग्निकी वृद्धिके लिये जवासा गोखुरू और भटकटैयाके द्वारा सिद्धअन्न खानेकोदे कोई कहतेहैं कि ज्वरवाला सैंधवयुक्त खीलके सत्तूखाय और वह जो सुखपूर्वक पचजांय तो रोगी अवश्यजीताहै खीलों के सत्तू शीतल होते हैं इसलिये वह रक्तपित्त तृषा और दाहयुक्त ज्वरमें हितकारी हैं परन्तु सन्निपातज्वरमें नहीं खीलोंकामांड़ दीपन पाचन और स्वेदकारी होता है इसलिये दशमूल आदिकोंके क्वाथ के द्वारा सिद्ध कियाहुआ खीलों कामांड देना हितहै ॥ ३४० ॥

सन्निपातज्वरीयस्तुकम्पतेप्रलपत्यपि। किंचिदेवनजानातिचिकित्सातस्यकथ्यते ॥ अभ्यञ्जयेत्पुराणेनसर्पिषापूर्वमेवतम् । बलारास्नागुडूच्याद्यैस्तैलैश्चपरिषेचयेत् ॥ वर्त्तकोवर्त्तिकालावो वार्त्ताकस्तित्तिरिःशशः । कुलिंगश्चरसेनैषां तर्पयेत्तयथानलम् ॥ वर्त्तकःबटेरि इतिलोके। वर्त्तिकाबटे इतिलोके । वार्त्ताकोवात चटकेति निघण्टुः। बगेरा इतिलोके। कुलिंगःगवरेञ्या इतिलोके ॥ सन्निपातेक्षुधार्त्तंयो भोजयेत्पिशितौदनम्। सकथंभिषगाख्यन्तु लभतेमनुजाधमः ॥ ३४१ ॥

जो सन्निपात ज्वर वाला कांपता हो अनर्थक वचनकहताहो और संज्ञारहित हो उसकोपहले पुराने घीसे मर्दन करके बरियारा रासना और गिलोय आदि के तेल से सींचे फिर बटेर बटई लवा वात चटक तीतर खरगोश और गौरैया इनके मांसके रस से अग्नि के बल के अनुसार तृप्त करावे सन्निपात ज्वर में भूखे रोगीको जो वैद्य मांसके साथ भात खिलाता है वह अधम मनुष्य वैद्यनाम को कैसे पासक्ता है ॥ ३४१ ॥

अथ वातोल्वण सन्निपातज्वरस्य चिकित्सा ॥

पञ्चमूलीकषायन्तु दद्याद्वातोल्वणेज्वरे । भृशोष्णंवासुखोष्णंवा दृष्ट्वादोषबलाबलम् । पञ्चमूलीमहतीप्रथमप्राप्तायास्त्यागेवचनाभावात् ॥ ३४२ ॥

वातोल्वण सन्निपात की चिकित्सा ॥

अधिक वात वाले सन्निपात में बड़े पंचमूल का क्राथ दोषों के बलके अनुसार बहुत अथवा थोड़ा उष्ण पान करावे ॥ ३४२ ॥

अथपित्तोल्वणसन्निपातज्वरस्यचिकित्सा ॥

परूषकञ्चत्रिफलादेवदारुचकट्फलम् । चन्दनंपद्मकंचैवतथाकटुकरोहिणी ॥ पृष्ठिपर्णीशृतंत्वेतिस्रूषितंशीतलंजलम् । पित्तोत्तरेनृणामेतत्सन्निपातचिकित्सितम् ॥ परूषादिक्काथः ॥ ३४३ ॥ पित्तोल्वण सन्निपात की चिकित्सा ॥

फालसा त्रिफला देवदारु कायफल लालचन्दन पद्माक कुटकी और पृष्ठपर्णी इन औषधियों का क्वाथ बासी करके शीतल पान करने से पित्तोल्वण सन्निपात का नाशहोताहै इति परूषादि क्राथ ॥ ३४३ ॥

किराततिक्तकंमुस्तंगुडूचीविश्वभेषजम् । पाठोदीच्यंमृणालञ्चतासृतंपित्ताधिकेपिवेत् इतिकिरातादिसप्तकम् ॥ ३४४ ॥

चिरायता मोथा गिलोय सोंठ पाठा सुगन्धबाला और कमल की डंडी इनका क्राथ अधिक पित्तवाले सन्निपात में पीना चाहिये इति किरातादि सप्तक ॥ ३४४ ॥

अथकफोल्वणसन्निपातज्वरस्यचिकित्सा ॥

वृहतीपौष्करंभार्गीशठीशृंगीदुरालभा । वत्सकस्यतुबीजानिपटोलंकटुरोहिणी ॥ वृहत्यादिगण.शस्तःसन्निपातकफोत्तरे ॥ श्वासादिषुचसर्व्वेषुहितःसोपद्रवेष्वपि ॥ (इति वृहत्यादि·) ॥ ३४५ ॥ कफोल्वण सन्निपात की चिकित्सा ॥

दोनों भटकटैया पुष्करमूल भारंगी कचूर काकड़ासिंगी जवासा इन्द्रजौ परवल और कुटकी यह वृहत्यादि गणका क्राथ श्वासादिक सब उपद्रवों सहित अधिक कफ वाले सन्निपातज्वर में श्रेष्ठ है इति वृहत्यादि क्राथ ॥ ३४५ ॥

अथ वातपित्तोल्वणसन्निपातज्वरचिकित्सा ॥

वातपित्तहरंवृष्यंकनीयम्पञ्चमूलकम्।तत्क्राथोमधुनाहन्तिवातपित्तोल्वणंज्वरम्॥३४६॥

वात पित्तोल्वण सन्निपातकी चिकित्सा ॥

छोटा पंचमूल वात पित्तनाशक और पुष्टिकारीहोताहै इसलिये इसकाक्राथ सहत डालकर पीने से अधिकवात पित्तवाले सन्निपातका नाश करताहै ॥ ३४६ ॥

अथ वातश्लेष्मोल्वणसंनिपातज्वरचिकित्सा ॥

किराततिक्तकम्मुस्तंगुडूचीविश्वभेषजम् । चातुर्भद्रकमित्याहुर्व्वातश्लेष्मोल्वणेज्वरे । चतुर्भद्रकःक्राथः ॥ ३४७ ॥

वात कफोल्वण सन्निपातकी चिकित्सा ॥

चिरायता मोथा गिलोय और सोंठ इन औषधियोंकाक्काथ अधिक वात कफवाले सन्निपात में देनाचाहिये इतिचातुर्भद्रकक्काथ ॥ ३४७ ॥

अथपित्तश्लेष्मोल्वणसन्निपातज्वरचिकित्सा ॥

पर्पटःकट्फलंकुष्ठमुशीरंचन्दनंजलम् । नागरंमुस्तकंशृङ्गीपिप्पल्येषांशृतंहितम् ॥ तृष्णादाहाग्निमान्द्येषुपित्तश्लेष्मोल्वणेज्वरे । पर्पटादिक्काथः ॥ ३४८ ॥

पित्त कफोल्वण सन्निपातकी चिकित्सा ॥

पित्तपापड़ा कायफल कूट खस लालचन्दन सुगन्धवाला सोंठ मोथा काकड़ासिंगी और पीपल इन औषधियोंका क्काथ तृषा दाह मन्दाग्नि और अधिक पित्त कफवाले सन्निपातमें हितहै इति पर्पटादि क्काथ ॥ ३४८ ॥

अथ वातपित्तश्लेष्मोल्वण सन्निपातज्वरचिकित्सा ॥

नागरंधान्यकंभार्गीपद्माकंरक्तचन्दनम् । पटोलंपिचुमन्दश्चात्रिफलामधुकंबला ॥ शर्कराकटुकामुस्तंगजाह्वाव्याधिघातकः । किराततिक्तममृतादशमूलीनिदग्धिका ॥ योगराजोनिहन्त्येपसन्निपातंत्रिकोल्वणम् । सन्निपातसमुत्थानंमृत्युमप्यागतंजयेत् ॥ गजाह्वागजपिप्पली । व्याधिघातकिरवालाकिराततिक्तंहिगुणयार्थंपृथक्पठितम् ॥ इति योगराजक्काथः ॥ ३४९ ॥

वात पित्त कफोल्वण सन्निपातकी चिकित्सा ॥

सोंठ धनियां भारंगी पद्माक लालचन्दन परवल नींव त्रिफला मुलहठी खरियारा शक्कर कुटकी मोथा गजपीपल अमलतास चिरायता गिलोय दशमूल और भटकटैया इन औषधियोंके क्काथ वह धनाकर पीनेसे तीनों दोषोंकी अधिकतासे युक्त सन्निपात ज्वरका नाशहोताहै यह क्काथ मांड़ दीपन द्वारा आईहुई मृत्युको भी जीतताहै इतियोगराजक्काथ ॥ ३४९ ॥ कियाहुआ खीलों

अथ प्रवृद्धमध्यहीनवातादिजनितसन्निपातज्वराणां चिकि

प्रवृद्धंकर्पयेद्दोपंक्षीणंसंवर्द्धयेद्भिषक्चिकित्सेयंविधातव्यादोषाचिकित्सातस्यकथ्यते ॥ यमर्थः । प्रवृद्धंदोपकर्पयेत् । ततुक्षेण्यहेतुभिरौषधान्नाद्यैर्व्यायैस्तैलैश्चपरिषेचयेत् ॥ क्षीणंदोपंसंवर्द्धयेत् । तद्वृद्धोहेतुभिरौपधान्नविहारैर्वर्द्धेश्चरसेनैषां तर्पयेतयथानलम् ॥ शमितेदोषेमध्यम.स्वयमेवहि । शान्तिंयातिशमर्वार्त्ताकोत्रात चटकेति निघण्टुः । वगेथः । वर्षासुवायुरनुवन्ध्यःप्रधानमितियावत् । सन्निपातेक्षुधार्त्तंयो भोजयेत्पिशितौदनम्। शरदिपित्तमनुवन्ध्यःकफोऽनुवन्धः । वृ॥ ३४१ ॥

वन्ध्येप्रशमंनीतेऽनुवन्धःस्वयमेवशा अनर्थक वचनकहताहो और संज्ञारहित हो उसकोपहले पु-
कृतेमध्यमोदोपः । हिनिश्चयेनस्वया और गिलोय आदि के तेल से सींचे फिर वटेर वटई लवा
अधिक मध्यतथा हीन हुआ इनके मांसके रस से अग्नि के वल के अनुसार तृप्त करावे
जो दोप अधिक होय उस दोपको वैद्य मांसके साथ भात खिलाताहै वह अधम मनुष्य वैद्यनाम

क्षीण करके समकरे और जो दोष क्षीणहोय उसको उसके बढ़ानेवाली औषध अन्न तथा विहारके द्वारा बढ़ाकर समकरे जैसे प्रधानके शान्तहोजानेपर अप्रधानभी शान्त होजाताहै उसीप्रकार बढ़े हुए दोषके शान्त होजानेपर मध्यम दोष आपही शांतहोजाताहै इसका यह तात्पर्य्यहै कि वर्षाकाल में वायु प्रधान और पित्त तथा कफ उसके अनुचर अर्थात् अप्रधान शरद ऋतुमें पित्त प्रधान और वात तथा कफ अप्रधान वसन्तऋतुमें कफप्रधान और वात तथा पित्त अप्रधान इन ऋतुओं में जैसे प्रधानके शांतहोजानेपर अप्रधान शांतहोजातेहैं उसीप्रकार बढ़ेहुए दोषके शांतहोकर समहोजानेपर मध्यम दोषनिस्संदेह आपही शांतहोजाताहै ॥ ३५० ॥

अथशीतांगादीनांसन्निपातज्वराणांत्रयोदशानांविशिष्टापिचिकित्सा ॥

तत्रशीताङ्गस्यचिकित्सामाह ॥

भास्वन्मूलंजीरकव्योषभार्गीव्याघ्रीशुण्ठीपुष्करंगोजलेन । सिद्धंसद्यःशीतगात्रार्ति मोहश्वासश्लेष्मोद्रेककासान्निहन्ति॥भास्वन्मूलंअर्कमूलम् ॥कर्कोटिकाकन्दरजःकुलत्थः कृष्णावचाकट्फलकृष्णजीरैः । किराततिक्तानलकट्फलाम्बुपथ्याभिरुद्वर्त्तनमत्रशस्तम् ॥ कर्कोटिकाकन्दरजःखेखसामूलरजः । रसंविषमरिचमहेशप्रियफलमस्मैकभूचतुर्व्वसुभिः । भागैर्म्मितमुद्धूलनमिदमतिस्वेदशैत्यहरम् ॥ ३५१ ॥

शीतांगादिक तेरहसन्निपातोंकी विशेष चिकित्सा कहीजातीहै ॥

शीतांगकी चिकित्सा ॥

आककी जड़ जीरा त्रिकटु भारंगी भटकटैया सोंठ पुष्करमूल इन औषधियोंको गोमूत्रके द्वारा [illegible] करके सेवन करनेसे शीघ्रही शीतांग मोह श्वास कफकी वृद्धि और खांसीका नाशहोताहै बांझ [illegible]ी जड़का चूर्ण कुलथी पीपल वच कायफल काला जीरा चिरायता चीता कायफल सुगंधवा- [illegible] इन औषधियोंको पीसकर शरीरमें मलनेसे हित होताहै पारा १ भाग विष३ भाग मिर्च [illegible] चरेका फल ८ भाग इन औषधियोंको शरीरमें मलनेसे अत्यन्त स्वेद और शीतलता

बृहतेः [illegible] हत्यादिगण [illegible] बृहत्यादिः) ॥ २३५१ ॥ अथतंद्रिकस्यचिकित्सा ॥

दोनों भटकटैया पुष्क[illegible]राणिशृतानिपीतानिशिवायुतानि । शुण्ठीकणागस्तिरसोपणा[illegible]नि ॥ मरिचकचपञ्चपचावचारुक्रिमिहरनागरशर्व्वरीगवा[illegible]ेतान्तंनासिनिहितानुतन्द्रिकंजयति ॥ कचः वालकः [illegible]क्रिमिहरःविडङ्गःशर्व्वरी हरिद्रागवाक्षी इन्द्रवारुणी ॥

बृहत्यादि गणका क्वाथ श्वास[illegible]

इति बृहत्यादि क्वाथ ॥ ३४५ ॥

अथ वातपि[illegible]

वातपित्तहरंवृष्यंकनीयम्पञ्चमूलकम्[illegible] [illegible]नमेन्दुमन शिलामागधिकामधूनि ॥ नियोजिता [illegible]रयन्ति । लवणोत्तमंसैन्धवं इन्दुः कर्पूरः ॥

वात पित्तोल्वण स[illegible]

छोटा पंचमूल वात पित्तनाशक और पुष्टिकारीहै [illegible]से अधिकवात पित्तवाले सन्निपातका नाश करताहै ॥ ३[illegible]

अथ वातश्लेष्मोल्वणसंनिपा[illegible] ॥

किराततिक्तकम्मुस्तंगुडूचीविश्वभेषजम् । [illegible] ज्वरे । चतुर्भद्रकःक्वाथः ॥ ३४७ ॥

[illegible]का क्वाथ हड़डालकर पीनाचाहिये सोंठ [illegible] [illegible]मासलेनेसे तंद्राका नाशहोता है मिर्च [illegible]न्द्रायण इनऔषधियों को वकरेकेमूत्रमें

पीसकर नासलेनेसे तंद्रा का नाशहोताहै घोड़े कीलार सेंधानोन कपूर मैनसिल और पीपल इनऔ-षधियोंको सहतके साथ नेत्रोंमें लगानेसे निस्सन्देह तंद्रा और अत्यन्त निद्राका नाशहोताहै ॥३५२॥

अथ प्रलापकस्यचिकित्सा ॥

सतगरवरतिक्तारेवताम्भोदतिक्ता नलदतुरगगन्धाभारतीहारहूराः ॥ मलयजदशमूलीशङ्खपुष्पीसुपक्का । प्रलपनमपहन्युःपानतोनातिदूरात् ॥ वरतिक्तोऽत्रपर्पटोनतुमहानिम्बस्तन्त्रान्तरानुरोधात् । नलदं लामज्जकं तदलाभादुशीरंग्राह्यम् भारतीब्राह्मीवरम्भीइतिलोके ॥ हारहूराद्राक्षा ॥ सान्त्वनैरञ्जनैस्तीक्ष्णैर्नस्यैस्तिमिरसेवनैः । सर्वतोविकृतंचित्तमस्यप्रकृतिमानयेत् ॥ ३५३ ॥

प्रलापककी चिकित्सा ॥

तगर पित्तपापड़ा अमलतास मोथा कुटकी लामज्जक असगन्ध ब्राह्मी दाख चन्दन दशमूल और शंख-पुष्पी इनऔषधियोंका क्वाथपानकरने से शीघ्रही प्रलापक सन्निपातका नाशहोताहै (तसल्ली) अञ्जन तीक्ष्णनस्य और अन्धकारका सेवन इनसबसे सबप्रकारकरके बिगड़ेहुए चित्तको प्रकृतिमेंलावे३५३॥

अथ रक्तष्ठीविनश्चिकित्सा ॥

रोहिषधन्वयवासकवासापर्पटगन्धलताकटुकाभिः । शर्करयासममेषकषायःक्षतजष्ठीविनउग्रदुपायः ॥ रोहिषम् सुगन्धतृणविशेषः । रोहिसइतिलोके॥गन्धलता प्रियंगू॥ पद्मकचन्दनपर्पटमुस्तंजातीजीवकचन्दनवारि । क्लीतकनिम्बयुतंपरिपक्कंवारिभवेदिह शोणितहारि ॥ क्लीतकं यष्टीमधुकम् । इहरक्तष्ठीविनिमधुकमधूकपरूपकयापाथश्चन्दनपल्लवदारुसनाथः ॥ श्रीपर्णीफलशीतकषायःससितइहस्यादस्रजया । पल्लवपत्रकं पाथः वालः श्रीपर्णी गम्भारी ॥ ३५४ ॥

रक्तष्ठीवीकी चिकित्सा ॥

रोहिष (सुगन्धितृणविशेष) जवासा बांसा पित्तपापड़ा प्रियंगु और कुटकी इनऔषधियोंका क्वाथ शक्कर डालकरपीनेसे क्षतसेहुए रक्तष्ठीवी सन्निपातका नाशहोताहै पद्माक लालचन्दन पित्त-पापड़ा मोथा चमेली जीवक श्वेतचंदन सुगन्धवाला मुलहठी और नींब इनऔषधियोंके क्वाथके पीनेसे रक्तष्ठीवी सन्निपातके रुधिरका नाशहोताहै मुलहठी महुआ फालसा सुगन्धवाला लालचं-दन तेजपात देवदारु गंभारी इनऔषधियोंका शीतल कषाय शक्करडालकर पीनेसे रक्तष्ठीवी सन्नि-पातका नाशहोता है ॥ ३५४ ॥

अथ भुग्ननेत्रस्यचिकित्सा ॥

तुरङ्गगन्धालवणोग्रगन्धामधूकसारोषणमागधीभिःवस्ताम्बुशुण्ठीलशुनान्विताभिर्नस्यंकृशंभुग्नदृशंकरोति ॥ ३५५ ॥

भुग्ननेत्रकी चिकित्सा ॥

असगन्ध सेंधानोन वच महुएकासाग मिर्च पीपल सोंठ और लहसन इनऔषधियोंको बकरेके मूत्रमें पीसकर नासलेनेसे भुग्ननेत्र सन्निपातका नाशहोताहै ॥ ३५५ ॥

अथाभिन्यासस्यचिकित्सा ॥

शृङ्गीभार्ग्यभयाजाजीकणाभूनिम्बपर्पटः । देवदारुवचाकुष्ठयासकट्फलनागरैः ॥ मुस्तधान्याकतिक्तेन्द्रयवपाठाहरेणुभिः । हस्तिपिप्पल्यपामार्गपिप्पलीमूलचित्रकैः ॥ विशालारग्वधारिष्टशटीवाकुचिकाफलैः । विडंगरजनीदार्व्वीयवानीद्वयसंयुतैः ॥ समांशैर्विहितःक्राथोहिङ्ग्वार्द्रकरसान्वितः । अभिन्यासज्वरंघोरंहन्तितन्द्राञ्चतत्क्षणात्॥ प्रमेहंकर्णशूलञ्चसन्निपातांस्त्रयोदश । हिक्कांश्वासञ्चकासञ्चतथासर्व्वानुपद्रवानइति शृंग्यादिक्राथः ॥ ३५६ ॥

अभिन्यासकी चिकित्सा ॥

काकडासिंगी भारंगी हड़ कालाजीरा पीपल चिरायता पित्तपापड़ा देवदारु वचकूट जवासाकायफल सोंठ मोथा धनियां कुटकी इंद्रजौ पाठा रेणुका गजपीपल लटजीरा पीपलामूलचीता इंद्रायण अमलतास नींब कचूर बकुची वायविड़ंग हल्दी दारुहल्दी दोनों अजवाइन इनसब बराबर औषधियों का क्राथहींग और अदरकका रसमिलाकर पीनेसे घोर अभिन्यास तंद्रा प्रमेह कानकीपीड़ा तेरह सन्निपात हिचकी श्वास खांसी और सबप्रकारके उपद्रवोंका नाशहोताहै इतिशृंग्यादिक्राथ ॥३५६॥

अथ जिह्वकस्यचिकित्सा ॥

किराततिक्ताकुलकृत्कुलिञ्जंकर्चूरकृष्णाकटुतैलयुक्तः । अम्लद्रवःसंशमयेद्रसज्ञा दोषांस्तुतोदाशरथिर्यथात्र ॥ आकुलकृत्अकलकरहाइतिलोके । अम्लद्रवःबीजपूरादिरसः इतिकिरातादिकवलः ॥ ३५७ ॥

जिह्वककी चिकित्सा ॥

चिरायता अकरकरा इन्द्रजौ कचूर पीपल और कडुआतेल इनसबको निंबूआदिके रसमें मिलाकर कवलग्रहण करनेसे जैसे स्तुति कियेगये श्री रामचंद्रजी दोषोंको नाशकरते हैं उसी प्रकार यह भी दोषोंको नाशकरताहै इतिकिरातादिकवल ॥ ३५७ ॥

शालूरपर्णीमालूरमूलामयमधुप्लुता । शङ्खपुष्पीसहितासेव्यावाचाविशुद्धये (पर्य्यादिःअवलेहः) शालूरपर्णीब्राह्मीमालूरमूलंबिल्वमूलंआमयःकुष्ट ॥ ३५८ ॥

ब्राह्मी बेलकीजड़ कूट और शंखपुष्पी इनऔषधियोंको पीसकर सहतके साथचाटनेसे वाणी शुद्धहोती है इतिशालूरपर्ण्यादि अवलेह ॥ ३५८ ॥

शालूरक्षुद्रानागरपुष्करामृतलताब्राह्मीवचासुव्रता भार्गीवासकयासतोयसुरसाक्राथोजयेज्जिह्वकम् । विश्वावर्मविभावरीयुगवरावत्सादनीवारिद व्याघ्रीनिम्बपटोलपुष्करजटारुग्दारुभिर्वाकृतः ॥ पुष्करम्पुष्करंमूलं तथाचामरसिंहः ।मूलेपुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणिपौष्करे । सुव्रतागन्धपलासीकाश्मीरेप्रसिद्धा । सुरसातुलसीविश्वादियोगान्तरम् । वर्मः पर्पटःविभावरीयुगंहरिद्रादारुहरिद्राच । वरात्रिफला । वत्सादनी गुडूचीव्याघ्रीकण्टकारिका ॥ ३५९ ॥

भटकटैया सोंठ पुष्करमूल गिलोय ब्राह्मी वच गंधपलासी भारगी बांसा जवासा सुगन्धवाला और तुलसी.इन ओषधियों का काथ जिह्वक सन्निपात को नाशकरता है सोंठ पित्तपापड़ा हल्दी दारुहल्दी त्रिफला गिलोय मोथा भटकटैया नींव पर्वल पुष्करमूल कूट और देवदारु इनकाकाथ जिह्वक सन्निपात का नाशकरताहै ॥ ३५६ ॥

अथसन्धिकस्यचिकित्सा ॥

शठीसुरतरूत्तमास्थविरदारुरास्नाःसमाः। सनागरसुधान्विताःपिबशतावरीसंयुताः॥ मृदुज्वलनपाचिताःसहपुरेणसन्धिग्रह। व्यथापहतयेवृथाशिशिरसेवनंमाकृथाः॥ उत्तमा त्रिफलास्थविरदारुविधाराइतिलोके। सुधागुडूचीपुरोगुग्गुलुः। वचाकवचकच्छुरास हचरामृताभंगुरा। सुराह्वघननागराऽतरुणदारुरास्नापुराः॥ वृषातरुणभीरुभिःसह भवन्तिसन्धिग्रह। व्यथोरुजडिमक्लमभ्रमणपक्षघातंद्रुहः॥ कवचःपर्पटकःकच्छुरायवा सः। भंगुराअतिविषासुराह्वोदेवदारु। अतरुणदारुवृद्धदारुपुरोगुग्गुलुः। वृषाव्रह द्दन्तीएरण्डवरपत्रविटपा। तदलाभेदन्तीचग्राह्यासमानगुणत्वात्॥ तरुणःएरण्डःभी रुःशतावरीसुवहाशुण्ठीमृताःशृताजलेसपुराः (रास्ना) शमयन्तिसेविताःसततंसन्धि गतंसदागतिम् (सुवहा) मुस्तैरण्डप्राणदावाणदारुछिन्नारास्नाभीरुकर्चूरतिक्ता। वा साविश्वापञ्चमूलाश्वगन्धाहन्यान्मन्यास्तम्भसन्धिग्रहार्त्तीः। प्राणदाहरीतकीवाणःनी लपुष्पसहचरः। तिक्ताकटुकी ॥ ३६० ॥

संधिग की चिकित्सा ॥

कचूर देवदारु त्रिफला बिधारा रासना सोंठ गिलोय और सतावर इनओषधियों का मन्दअग्नि में काथ करके गूगल डाल संधिग सन्निपात में पीड़ाके नाशकरने के लिये पीनाचाहिये और शीत का सेवन न करना चाहिये वच पित्तपापड़ा जवासा भिंटी गिलोय अतीस देवदारु मोथा सोंठ बिधारा रासना गूगल बड़ीदन्ती (इसके न मिलने में दन्ती लेनीचाहिये) रेंड़ी और सतावर इनओषधियोंकाकाथ संधिग्रह पीड़ा पेट का भारीपन ग्लानि भ्रान्ति और पक्षाघातको नाशकरताहै रासना सोंठ और गिलोय इनका काथ गूगल डालकर पीनेसे सन्धियोंमें घुसीहुई वातकी पीड़ा का नाशकरताहै मोथा रेंड़ी हड़ भिंटी देवदारु गिलोय रासना सतावर कचूर कुटकी बांसा सोंठ पंचमूल और असगन्ध इन ओषधियों का काथ सेवन करने से गले के पीछे की नसका जकड़ना और संधिग्रह का नाश होताहै ॥ ३६० ॥

अथान्तकेचिकित्सा ॥

इहापहायव्रतमुष्णवारिज्वरारियूपादिगदापहारि। ज्वरच्छिदंजीवितदञ्चनित्यंमृत्यु ञ्जयश्वेतसिचिन्तयस्व ॥ इहअन्तकेव्रतंलङ्घनादिनियमम्। कर्पूरप्रकरावदातवपुषंस योगमुद्राजुषम्। शश्वद्भक्तजनेषुभावुकजुषंभालस्फुरच्चक्षुषम्॥ सम्पूर्णामृतकुम्भसम्भृ नकरंशुभ्राक्षमालाधरम्। पिंगोत्तुंगजटाकलापरुचिरंचन्द्रार्द्धमौलिंस्तुहि ॥ भिषग्भिरि तिनिर्णीतंसन्निपातेऽन्तकाभिधे। भेषजंजाह्नवीनीरंवैद्योनारायणोहरिः॥ ३६१ ॥

अन्तक की चिकित्सा ॥

इस अन्तक सन्निपात में लंघन गरम जल और ज्वर नाशक यूप आदिकों को छोड़कर ज्वरके नाश करनेवाले और जीवन के देनेवाले श्री मृत्युंजय का ध्यान करना चाहिये कपूर के समानश्वेत वर्ण वाले संयोग मुद्राको धारण किये हुए निरंतर भक्तजनों के मंगल करनेवाले ललाटमें दीप्तिमान नेत्रवाले अमृतसे भरेहुए घटको हाथमें धारण कियेहुए रुद्राक्षपहरेहुए पिंगलवर्ण बड़ी२ जटाओंके समूहसे सुंदर और अर्द्धचंद्रको मस्तकमें धारण कियेहुए श्री शिवजी महाराज का ध्यानकरो वैद्यलोगोंने अन्तक नाम सन्निपात में यह चिकित्सा कही है कि औषध तो गंगाजी का जल और वैद्य नारायण हैं ॥ ३६१ ॥

अथरुग्दाहचिकित्सा॥

उशीरचंदनोदीच्यद्राक्षामलकपर्पटैः । शृतंशीतंजलंदद्याद्दाहतृड्ज्वरशांतये ॥ 'पडंगपानीयम् । ससितोनिशिपर्युषितः प्रातर्धान्याकतण्डुलक्काथः पीतःशमयत्यचिरादन्तर्दाहज्वरम्पैत्तम् । धान्याकतन्दुलाःकण्डितधान्याकबीजानि । इतिधान्याकक्काथः । पथ्यातैलघृतक्षौद्रैर्लिह्याद्दाहविनाशिनीम् । पथ्यातैलघृतक्षौद्रैरित्यत्रनसमुच्चयः ॥ तेनकेवलेनमधुनापिलिह्यात् । पथ्यावलेहः । प्रशमयतिदाहमचिराद्दधियुक्तकर्कन्धुपल्लवैर्लेपः ॥ लेपोहिमकरमलयजनिम्बदलैस्तक्रपिष्टैर्वा । हिमकरःकर्पूरः । तथाचघनसारश्चन्द्रसंज्ञइत्यमरः ॥ उत्तानसुप्तस्यगम्भीरताम्रकांस्यादिपात्रेनिहितेचनाभौ । शीताम्बुधाराबहुलापतन्तीनिहन्तिदाहंत्वरितंज्वरञ्च ॥ शीताम्भसातुशतशश्चविलोडितेन । गव्येनचन्दनयुतेनघृतेनदिग्धा । दाहज्वरीसकमलोत्पलमाल्यधारी । क्षिप्रंविशेत्सलिलकोष्ठमनल्पकालम् ॥ काञ्जिकार्द्रपटेनावगुण्ठनंदाहनाशनम् । अथगोतक्रसंस्विन्नशीतलीकृतवाससाम् ॥ ३६२ ॥

रुग्दाह की चिकित्सा ॥

खस लालचंदन सुगंधवाला दाख आंवला और पित्तपापड़ा इन औषधियों का क्काथ शीतल करके देने से दाह तृषा तथा ज्वरका नाशहोताहै इतिपडंगपानीय ॥ कुटेहुये धनिये के बीजोंको सायंकाल में भिजोकर प्रातःकाल क्काथ करके शक्कर डालकर पीनेसे अंतर्दाह और पित्तज्वर का नाश होताहै इतिधान्याक क्काथ॥हड़को पीसकर तेल घी और सहत इनमेंसे किसीके साथ चाटनेसे दाह का नाश होताहै इतिपथ्यावलेह॥बेरके पत्तोंको दही के साथ लेपकरने से अथवा कपूर चंदन और नींबके पत्तों को मट्ठेके साथ पीसकर लेप करने से दाहका नाश होताहै रोगी को चित्त सुलाकर उसकी नाभिपर गहरे तांबे अथवा कांसे आदिके पात्रको रखकर उसमें शीतल जलकी बड़ी धारछोड़नेसे दाह और ज्वरका नाशहोताहै शीतल जलसे सैकड़ों बार धोये गये गोके घी में चंदन मिला के शरीर में लेप करके और कमल तथा कोकाबेलियों की मालाओं को पहर के दाह ज्वरवाला शीघ्र ही जलसे भरेहुए हौज़ में प्रवेश करके बहुत देरतक उसी में रहै इससे दाहका नाश होता है कांजी में भिगोये हुए वस्त्र के लपेटने से अथवा गौके मट्ठे में भिगोये हुए शीतल वस्त्र के लपेटने से दाह का नाश होता है ॥ ३६२ ॥

अथान्नमाह ॥

दाहवम्यर्दितंक्षामंनिरन्नंतृष्णयान्वितम् । शर्करामधुसंयुक्तंपाययेल्लाजतर्पणम् ॥ (लाजशक्तुरूपतर्पणम्) ॥ ३६३ ॥

दाहवालेको देनेके योग्य अन्न ॥

दाह तथा छर्दि से व्याकुल क्षीण लंघन किया हुआ और तृषित इनको शक्कर तथा सहत युक्त खीलोंके सतुओं से तृप्त कराना चाहिये ॥ ३६३ ॥

वाप्यःकमलहासिन्योजलयन्त्रगृहाःशुभाः । नार्य्यश्चन्दनदिग्धांग्योदाहदैन्यहरा मताः ॥ ३६४ ॥

फूले हुए कमल वाली बावड़ी फव्वारे वाला घर और शरीर में चन्दन लगाये हुए स्त्री यह सब दाह की दीनता को दूर करतेहैं ॥ ३६४ ॥

मुक्तावलीचन्दनशीतलानांसुगन्धपुष्पाम्बरभूषितानाम्॥नितम्बिनीनांसुपयोधराणा मालिङ्गनान्याशुहरन्तिदाहम् ॥ प्रह्लादश्चास्यविज्ञायताःस्त्रीरपनयेत्पुनः । हितञ्चभोजयेद्न्नंयेनाप्नोतिसुखंमहत् ॥ (प्रह्लादंकामकृतहर्षम् ॥ ३६५ ॥

मोतियों की माला पहरने तथा चन्दन के लगाने से शीतल शरीर वाली सुगन्धित पुष्प तथा वस्त्रों से आभूषित नितंबवाली और सुन्दर स्तन युक्त ऐसी स्त्रियों के आलिंगन करने से शीघ्रही दाहका नाश होताहै इस प्रकार उस पुरुषको कामकी वृद्धि होय तब स्त्रियोंको हटादे और ऐसेहित कारी अन्नोंको भोजन करावे जिस्से उसको बहुत सुख होवे ॥ ३६५ ॥

अथ चित्तभ्रमस्यचिकित्सा ॥

कणोंपणोग्रालवणोत्तमानिकरञ्जबीजंप्रमदामलानि । पथ्याक्षसिद्धार्थकहिंगुशुण्ठीयुतानिवस्ताम्बुविमिश्रितानि ॥ पिष्ट्वागुटीयंनयनेनिधेयाप्रचेतनेऽतिप्रथितान्वितार्था । चित्तभ्रमापस्मृतिभूतदोषशिरोऽक्षिरोगभ्रमनाशहेतुः ॥ (वस्ताम्बुश्छागमूत्रं) कुम्भोद्भवतरोरम्भोगुडविश्वकणान्वितम् । निहितंनसिनूनंस्याच्चित्तभ्रमविनाशनम् ॥ कुम्भोद्भवतरोरम्भःअगस्तिवृक्षत्वक्कल्करसः ॥ ३६६ ॥

चित्तभ्रमकी चिकित्सा ॥

पीपल मिर्च वच सेंधानोन करंजकेबीज धतूरा आंवला हड़ बहेड़ा पीलीसरसों हींगऔरसोंठ इन औषधियों को समभाग लेकर बकरे के मूत्र में पीसके गोली बनावे इस गोलीको घिसकर नेत्र में लगाने से चैतन्यता होतीहै चित्तभ्रम मृगी भूतदोष शिर तथा नेत्रके रोग और भ्रम यहसब इसके लगानेसे दूर होतेहैं अगस्त्यके वृक्षकी छालके कल्क का रस गुड़ तथा पीपल युक्त नास लेने से चित्तभ्रम का नाश होताहै ॥ ३६६ ॥

सुरामूर्द्धजमेघाह्वमधूकमलयोद्भवैः । मरुत्तरुमधून्मिश्रैःपुरपाणिजपांशुभिः ॥ लोहलामज्जकैलामिर्धूपःचित्तभ्रमापहः । ग्रहदोषहरःश्रीदःसौभाग्यकरउत्तमः। मुराएकाङ्गी।

मूर्द्धजोवालाः। मरुत्तरुदेवदारु। पुरःगुग्गुलः पाणिजःनखःपांशुपपटकम्। लोहंअगुरु। लामज्जकम्उशीरवत्पीततृणविशेषःतद्लाभेउशीरंग्राह्यम्॥ ३६७॥

मरोड़फली सुगंधवाला मोथा महुआ चंदन देवदारु गूगल नखी पित्तपापड़ा अगर लामज्जक और इलायची इन औषधियों को सहत के साथ चाटने से चित्तभ्रम तथा ग्रहदोषों का नाश और शोभा तथा सौभाग्य की वृद्धि होती है॥ ३६७॥

मृद्वीकामरदारुमत्स्यशकलामुस्तामलक्योऽमृता। पथ्यारेवतरामसेनकरजोराजीफलैःसंयुताः। हन्युश्चित्तरुजोऽथदर्दुरदलापाठापटोलीपयः। पथ्यापर्पटराजवृक्षकटुकाशम्बूकपुष्पीशृताः॥ मृद्वीकाद्राक्षा। मत्स्यशकलाकटुकी। आरेवतःआरग्वधः। रामसेनकः किराततिक्तकः। रजःपर्पटकः। राजीफलःपटोलः। अथयोगान्तरमाह। दर्दुरदलामण्डूकपर्णीसाच ब्राह्मी। मञ्जिष्ठाशोणकश्चतथाप्यत्रब्राह्मीग्राह्या। यतःउक्तंद्रव्यगुणग्रंथे। ब्राह्मीमतिप्रदामेध्याज्वरहंत्रीरसायनी। ब्राह्मीवरम्भीतिलोकेपयःवालकम्। राजवृक्षःआरग्वधः। शम्बूकपुष्पीशंखपुष्पी॥ ३६८॥

दाख देवदारु कुटकी मोथा आंवले गिलोय हड़ अमलतास चिरायता पित्तपापड़ा औरपर्व्वल यह सब औषध चित्तभ्रमको नाशकरती है दर्दुरदला (ब्राह्मी) पाठा पर्व्वल सुगन्धवाला हड़ पित्तपापड़ा अमलतास कुटकी और शंखपुष्पी इन सब औषधियों का क्वाथ चित्तभ्रम सन्निपात को नाशकरताहै दर्दुरदला शब्दसे ब्राह्मी मजीठ और शोणक का ग्रहण कियाजाताहै परंतु यहां ब्राह्मी ही ग्रहण करनी चाहिये क्योंकि द्रव्य गुण ग्रंथमें कहाहै कि ब्राह्मी बुद्धि वर्द्धक मेधाको हित ज्वर नाशक और रसायन होतीहै॥ ३६८॥

अथ कर्णकस्यचिकित्सा॥

प्रलेपस्तमस्तन्नयत्यल्पमेकःसमुद्रिक्तशोथश्चरक्तावशेषः। पक्वेचशस्त्रक्रियापूयजित्सा व्रणत्वंगतेचोचितातच्चिकित्सा। अयमर्थः। अत्यन्तंकर्णिकंएकःप्रलेपःअस्तन्नाशन्नयति। तच्चिकित्साव्रणचिकित्सा। निशाविशालामयमाणिमन्थदार्व्यंगुदीमूलकृतःप्रलेपः। प्रभाकरक्षीरयुतःप्रभावाद्व्यस्तःसमस्तोऽप्यथकर्णिकघ्नः॥ कुलत्थःकट्फलंशुण्ठीकारवीचसमांशकैः। सुखोष्णैर्लेपनंकार्य्यंकर्णमूलेमुहुर्मुहुः॥ गैरिकंखठिनीशुण्ठीकट्फलारग्वधैःसमैः। उष्णैःकांजिकसम्पिष्टैर्लेपःकर्णकमूलनुत्॥ ३६९॥

कर्णक सन्निपातकी चिकित्सा॥

कर्णमूल की थोड़ीसी सूजन को एक लेपही नष्ट कर देताहै वहुत बढ़जाने पर रुधिर निकलवाना चाहिये पकजाने पर शस्त्रके द्वारा पीव निकलवाना चाहिये और घाव होजानेपर घावकी चिकित्सा करनी चाहिये हल्दी इंद्रायण कूट सेंधानोन दारुहल्दी और इंगुदी की जड़ इन सब औषधियों मेंसे एक एक अथवा संपूर्ण औषधियों को आकके दूधके साथ लेप करने से कर्णक सन्निपात का नाश होताहै कुलथी कायफल सोंठ और कालाजीरा इन सब औषधियों को वरावर लेकर कुछ गरम गरम वारंवार कर्ण मूल में लेपकरे गेरू खड़िया सोंठ कायफल और अमलतास इन

औषधियों को कांजीमें पीसकर कुछ गरम लेप करने से कर्ण मूल का नाश होताहै ॥ ३६९ ॥

शिग्रुराजिकयोःकल्कंकर्णमूलेप्रलेपयेत् । कर्णमूलभवःशोथस्तेनलेपेनशाम्यति । अशिशिरजलपरिमृदितंमरिचकणाजीरसिंधुजंत्वरितम् । नस्यविधिसेवितंननुकर्णकरुग्नाशकृद्गदितम् ॥ भार्गीजयापौष्करकण्टकारिकटुत्रिकोग्राघनकुण्डलीभिः । कुलीरश्रृङ्गीकटुकारसाभिःकृतःकषायःकिलकर्णकघ्नः॥भार्गीवभनेटीतिलोके । तद्वाभेकण्टकारीमूलंग्राह्यम् । जयागनिआरीतिलोकेपौष्करंपुष्करमूलम् । उग्रावचा । कुण्डलीगुडूची। कुलीरशृंगीकर्कटशृंगी । रसारास्ना । दशमूलमत्स्यशकलाचपलात्रिफलामहौषधकिरातयुतम् । मरिचंपरिक्कथितमाशुबलादपहन्तिकर्णरुजःसकलाः॥ चपलापिप्पली॥३७०॥

सहँ जना और राईके कल्कको कर्णमूलमें लेप करनेसे कर्णमूलकी सूजनका नाश होताहै मिर्च पीपल जीरा सैंधानोन इन सबको गरम जलमें पीसकर नासलेने से कर्णकरोग का नाश होता है भारंगी (इसके अभावमें भटकटैयाकी जड़) अरणी पुष्करमूल भटकटैया सोंठ पीपल मिर्च वच मोथा गिलोय काकड़ासिंगी कुटकी और रासना इनका क्काथ कर्णक सन्निपातको नाश करता है दशमूल कुटकी पीपल त्रिफला सोंठ चिरायता और मिर्च इनका क्काथ शीघ्रही कर्णक सन्निपातको नाश करताहै ॥ ३७० ॥

अथकण्ठकुब्जस्यचिकित्सा ॥

फलत्रिकत्र्यूषणमुस्तकट्वीकलिङ्गसिंहाननशर्व्वरीभिः । क्काथःकृतःकृंततिकण्ठकुब्जंकण्ठीरवःकुञ्जरमाशुतद्वत् ॥ किरातकटुकाकणाकुटजकण्टकारीशटी । (सिंहाननोवासकः । शर्वरीहरिद्रा) कलिद्रुकिलिमाभयाकटुककट्फलाम्भोधरैः । विषामलकपुष्करानलकुलीरश्रृङ्गीद्वयैः ॥ महौषधसखैरयंजयतिकण्ठकुब्जंगणः । शटीकर्च्चूरःकलिद्रुर्विभीतकःकिलिमंदेवदारुकटुकंमरिचंविषाअतीसद्वक्षःवक्षादिभिः किंविशिष्टैर्महौषधसखैः महौषधस्यसखिभिःतेनएतैःसहितेनमहौषधेनेत्यर्थः ॥ ३७१ ॥

कंठकुब्जकी चिकित्सा ॥

त्रिफला त्रिकटु मोथा कुटकी इन्द्रजौ बांसा और हल्दी इनका काढा जैसे सिंह हाथियोंका नाशकरताहै इसीप्रकार कंठकुब्ज सन्निपातको नाश करताहै चिरायता कुटकी पीपल कुरैया भटकटैया कचूर बहेड़ा देवदारु हड़ मिर्च कायफल मोथा अतीस आंवला पुष्करमूल चीता काकड़ासिंगी और वासा इनके क्काथमें सोंठ छोडकर पीनेसे कंठकुब्ज सन्निपातका नाशहोताहै ॥ ३७१ ॥

अथोल्वणवातादिप्रवृद्धमध्यक्षीणवातादिहेतुकानांकुम्भीपाकादिनांत्रयोदशानांचिकित्सातुल्यहेतुकानांविस्फुरकादीनामत्रयोदशानामिवविधातव्या (इतिसन्निपातज्वराधिकारः ॥ ३७२ ॥

अधिक वातादि और अधिक मध्य तथा क्षीण वातादि हेतुओंसे उत्पन्न कुम्भीपाकादितेरह सन्निपातोंकी चिकित्सासमान हेतुवाले विस्फोटक आदि तेरह सन्निपातोंकेसमान जाननी चाहिये इति सन्निपात ज्वराधिकार ॥ ३७२ ॥

अथागन्तुज्वराधिकारस्तत्रागन्तुकज्वरस्यनिदानान्याह ॥

अभिघाताभिषङ्गाभ्यामभिचाराभिशापतः । आगन्तुर्जायतेदोषैर्यथास्वन्तंविभावयेत् ॥ अभिघातःशस्त्रमुष्टिलगुडादिभिर्हननम्। अभिषंग.कामशोकभयक्रोधभूतादीनामावेशः ॥ अभिचारःकृत्याद्युत्पादनं अभिशापःब्राह्मणगुरुवृद्धसिद्धादिकृत.शापः।तंआगन्तुज्वरम्यथास्वंयथादोषलक्षणंदोषैर्विभावयेत्विजानीयात् ॥ ३७३ ॥

आगन्तुकज्वराधिकार। आगन्तुकज्वरके निदान ॥

अभिघात (शस्त्र घूसा और लाठी आदिसेमारना) अभिषंग (काम शोक भय क्रोध और भूतादिकोंका आवेश) अभिचार (कृत्यादिकरना) अभिशाप (ब्राह्मणगुरु वृद्धतथासिद्धादि पुरुषोंकाशाप) इनसब कारणोंसे आगन्तुक ज्वर उत्पन्नहोताहै इसआगंतुक ज्वरको दोषोंके लक्षणके अनुसार कुपितहुये दोषों से जानले ॥ ३७३ ॥

अपराण्यपिनिदानान्याह ॥

येभूतविषवाय्वग्निक्षतभंगादिसम्भवाः । रागद्वेषभयाद्यैश्चतेस्युरागन्तवोगदाः ॥ भयाद्यशब्देनक्रोधलोभादय.संगृह्यन्ते। तेनरागादयोभंगाद्यन्तायेहेतवोऽप्यागन्तुसंज्ञाः स्यु.कार्यकारणयोरभेदोपचारात्एतेनागन्तुज. इत्यत्राप्यागन्तुशब्दोहेतुवाचीआगंतुर्जायतेदोषैरित्यत्रव्याधिवाचीअभिघाताभिषंगाभ्यामित्यादि श्लोकेदोषैर्यथास्वंतंविभावयेयदिति वचने नैवंप्रतीयतेअभिघातादीनांविप्रकृष्टकारणत्वंमिथ्याहारविहाराणामिवदोषाणांसन्निकृष्टकारणत्वंतथासतिदक्षापमानसंक्रुद्धरुद्रेत्यादिश्लोके आगन्तुज्वरस्याष्टमत्वविधानोदोषजेष्वेवप्रवेशात् । उच्यते । आगन्तुज्वरस्यदोषाआरम्भका.नकिन्तु पश्चादनुबन्धिनः ॥ ३७४ ॥ अन्य निदान ॥

जो रोग भूतविष वायु अग्नि घाव भंग राग द्वेष और भयआदिकोंसे उत्पन्न होते हैं वह आगंतुक कहलातेहैं भयादि कहने से क्रोध और लोभादिकोंकाभी ग्रहणहोताहै रागको आदि लेकर जो हेतुकहे गयेहैं वहभी आगंतुक संज्ञक हैं क्योंकि कार्य्य और कारणमें अभेदकी कल्पना कीजातीहै इस्से आगंतुजस्मृतः इसवाक्य में आगंतु शब्द हेतु वाची है और आगंतुर्जायतेदोषै. इसवाक्यमें रोग वाची है अभिघाताभिषंगाभ्यां इत्यादिक श्लोक में दोषों के लक्षणों के अनुसार उसको जानना चाहिये इस वचनसे यह मालूम होताहै कि अभिघात आदिक मिथ्याहार विहारोंके समान दूरवाले कारणहैं और दोषसमीपी कारणहैं ऐसा होनेसे दक्षापमान संक्रुद्ध इत्यादिश्लोकमें आगन्तु ज्वरका आठवां कहनाठीक न होगा क्योंकि वह दोषज ज्वरोंमही आजायगा इसका उत्तरयहहै कि दोष आगन्तुज्वर के प्रारम्भ करने वालेनहीं हैं किन्तु पीछे से होनेवालेहैं ॥ ३७४ ॥

तथाचागन्तुज्वरस्यसंप्राप्तिमाह । चरकः । आगन्तुर्हिव्यथापूर्वोजायतेपश्चान्निजैर्दोषैरनुबध्यतइति॥तत्रकस्यागन्तोःकोनिजोदोषइत्यपेक्षायामाह॥ कामशोकभयाद्वायुःक्रोधात्पित्तंत्रयोमलाः। भूताभिषङ्गात्कुप्यन्तिभूतसामान्यलक्षणाः ॥ कामशोकभयात् कामशोकभयजादागन्तोः वायु.कुप्यति । क्रोधात्तुक्रोधजादागन्तोःपित्तंप्रकुप्यति ।

भूताभिषंगात्भूतावेशजादागन्तोःत्रयोमलादोषाकुप्यन्तीत्यर्थः । भूतसामान्यलक्षणाः भूतस्यभूतलक्षणस्यसामान्यंसमानतायेषांतानिभूतसामान्यानिलक्षणानियेषांते भूतसामान्यलक्षणाःमलाः ॥ ३७५ ॥

चरककीकहीहुई आगन्तुक ज्वरकीसंप्राप्ति ॥

आगन्तुज्वरमें पहले पीड़ाहोती है और फिरजिस आगन्तु ज्वर का जो दोषहै उस्से युक्त होताहै किस आगंतु ज्वरका कौनसा निज दोषहै यह कहतेहैं जैसेकि कामशोक तथा भयसे वायुक्रोधसे पित्त और भूतावेशसे भूतोंके लक्षणोंके समान लक्षणवाले तीनोंदोष कुपित होतेहैं ॥ ३७५ ॥

अथागन्तुज्वराणांहेतुभेदेनलक्षणभेदानाह ॥

इयावास्यताविषकृतेतथातीसारएवच । भक्तारुचिःपिपासाचतोदश्चसहमूर्च्छया ॥ विषकृतेस्थावरजंगमविषभक्षणकृतेज्वरेमुखःइयावःशुक्लानुविद्धःकृष्णोवर्णःशाकवर्णोवा । अतीसारःस्थावरविषेणैवतस्याधोगामित्वात् । तोदःसूचीव्यधनेनेवव्यथा ॥ ३७६ ॥

आगंतुज्वरोंके कारणोंके भेदसेलक्षणोंकेभेद ॥

विषखानेसे होनेवाले आगंतुज्वरमें मुखकी श्यामता अतीसार अन्नमें अरुचि तृषा सुईके गुभनेके समान पीड़ा और मूर्च्छा होतीहै विषखाना यह कहनेसे स्थावर और जंगम दोनो विषोंका ग्रहण होताहै परंतु अतीसार केवलस्थावर विषमें होताहै क्योंकि वह अधोगामी होताहै ॥ ३७६ ॥

औषधीगन्धजेमूर्च्छाशिरोरुग्वमथुस्तथा ॥ कामजेचित्तविभ्रंशस्तन्द्रालस्यमभोजनम् ॥ हृदयेवेदनाचास्यगात्रञ्चपरिशुष्यति । कामजेसमीहितकान्ताद्यप्राप्तिनिमित्तके ज्वरे । चकाराद्वाग्भटोक्तान्यपिलक्षणानिबोद्धव्यानि ॥ तानियथा । कामाद्भ्रमोऽरुचिर्दाहोह्रीनिद्राधीधृतिक्षयइति ॥ ३७७ ॥

किसी औषधके सूंघनेसे उत्पन्न हुए ज्वरमें मूर्च्छा शिरमें पीडा और छर्दि होती है कामज अर्थात् वाछित कांता आदिके नमिलने से उत्पन्न हुए ज्वरमें चित्तका विभ्रम तन्द्रा आलस्य हृदयमें पीड़ा और शरीरकी सुखावट होती है और चकारसे वाग्भटके कहे हुए अन्यलक्षणभी जानने चाहिये जैसे कि काम ज्वरमें भ्रम अरुचि दाह लज्जा निद्रा और बुद्धि तथा धैर्यकानाश होताहै ॥ ३७७ ॥

मूर्च्छांगमर्दस्तृट्नेत्रचापल्यंकुचवक्त्रयोः । स्वेदःस्यात्हृदिदाहश्चस्त्रीणांकामज्वरे भवेत् ॥ ३७८ ॥

स्त्रियों के कामज्वर में मूर्च्छा अंगोंमें पीड़ा तृषा नेत्रोंमें चपलता स्तन तथा मुखपर स्वेद और हृदयमें दाह होताहै ॥ ३७८ ॥

वालकंशतपत्राणिगंधसास्मुशीरकम् । चोपधान्येयकंमांसीक्वाथःकामज्वरापहः ॥ संध्यायांसस्तरःकार्यं सुगन्धेःकुसुमैर्भृशम् । क्रीडनीयंस्वकान्तेनसहरात्रौतथास्त्रिय. ॥ इदमपिकुत्रापिकथितंअत्रपुनः ॥ भयात्प्रलापःशोकाच्चभवेत्कोपाच्चवेपथुः । भयात्भयजेज्वरेप्रलापःशोकाच्चचकारेण । प्रलापएवानुकृष्यते । कोपाच्चकोपादपिवेपथुर्भवति । ननुवेपथुः वातस्यधर्मःततकथंकोपजेज्वरेवेपथुः । यतउक्तम् क्रोधोत्थितमिति । एकः

प्रकुपितोदोषइतरानपिकोपयेदितिवचनात्पित्तकोपित्तवातजन्यएवात्रवेपथुः क्रोधाद्वायु रपिभवति । यतउक्तंविदेहेन । क्रोधशोकौस्मृतौवातपित्तरक्तप्रकोपनाविति ३७९ ॥

सुगंधवाला कमल चंदन खस दालचीनी धनियां और जटामांसी इनके काथपीनेसे कामज्वर का नाशहोताहै संध्याके समय सुगंधित पुष्पादिकोंके द्वारा उत्तम शय्या बिछवाकर स्त्रियोंको अपने पतिकेसाथ और पुरुषोंको अपनी २ स्त्रियोंकेसाथ क्रीड़ाकरना चाहिये इस्सेकामज्वर का नाशहोता है कहींपर ऐसाभी कहागया है कि भयतथा शोकजनित ज्वरमें प्रलाप और क्रोधजनित ज्वरमें कंप होताहै अबयह संदेह होताहै कि कंपवायुका धर्म्महै तो क्रोधजनित ज्वरमें कंपकैसे होसकाहै क्योंकि कहागयाहै कि क्रोधसे पित्त कुपित होता है इसका उत्तर यहहै कि कुपितहुआ एकदोष अन्यदोषोंको भी कुपित करता है इसवचनके अनुसार कोपयुक्त पित्तके द्वारा कुपितहुई वायुकंपको उत्पन्न करती है अथवा क्रोधसे वायुभी कुपित होतीहै क्योंकि विदेहने कहाहै कि क्रोध और शोकवायु और रक्त-पित्तको कुपित करते हैं ॥ ३७९ ॥

भूताभिषङ्गादुद्वेगोहास्यरोदनकम्पनम् ॥ केचिद् भूताभिषङ्गोत्थंब्रुवतेविषमज्वरम् । भूताभिषङ्गोत्थोविषमज्वरोभवति ॥ कदाचिद्वेगवान् । कदाचिच्छान्तवेगइत्यर्थः । अभिचाराभिशापाभ्यांमोहस्तृष्णाचजायते । तृष्णाचेतिचकारेणहारीतानुवादिवाग्भटोक्तञ्चबोद्धव्यम् । तद्यथा । तत्राभिचारिकैर्मंत्रैर्हूयमानस्यतप्यते । पूर्व्वंमनस्ततोदेहस्ततोविस्फोटतृट्भ्रमैः ॥ सदाहमूर्च्छाग्रस्तस्यप्रत्यहंवर्द्धतेज्वरइति ॥ ३८० ॥

भूतोंके आवेशसे होनेवाले ज्वरमें उद्वेग अनर्थक हास्य रोदन और शरीरमें कंपहोता है और कोई २ कहते हैं कि भूतावेशमें विषमज्वर होता है अर्थात् कभी ज्वरका वेगअधिक और कभी न्यून होजाताहै अभिचार और अभिशापसे होनेवाले ज्वरमें मोहतथा तृषा होती है यहां चकारसे हारीत और वाग्भट के कहेहुए अन्यलक्षण भी जानने चाहिये जैसे कि अभिचारके मंत्रोंके द्वारा दुखित मनुष्यको पहले मनकाताप फिर शरीरमें उष्णता इसके पीछे विष्फोटक तृषा भ्रम दाह तथा मूर्च्छा होती है और ज्वर प्रतिदिन बढ़ता है ॥ ३८० ॥

अथतेषांचिकित्सा ॥

आगन्तुजेज्वरेनैवनरः कुर्वीतलङ्घनम् । तथाचवाग्भटः । शुद्धवातक्षयागन्तुजीर्णज्वरिपुलङ्घनम् नेष्यन्तइतिशेषः । अन्यच्च । लङ्घनंनहितकामशोकचिन्ताप्रहारजेभयभूतश्रमक्रोधलङ्घनैश्चकृतेज्वरे ॥ किन्त्वग्नौदीपितेतत्रदद्यान्मांसरसौदनम् । अभिघातज्वरेयुज्यात्क्रियामुष्णविवर्जिताम् ॥ कषायमधुरस्निग्धंयथादोषमथापिच । अभिघातज्वरोनश्येत्पानाभ्यङ्गेनसर्पिषः ॥ रक्तावसेकैर्म्मेध्यैश्चतथामांसरसौदनैः । मेध्यैर्मेधायहितैः ३८१ ॥

आगन्तुज्वरोंकी चिकित्सा ॥

आगन्तु ज्वरमें लंघन न कराना चाहिये और ऐसाही वाग्भटने भी कहाहै कि केवल वातजनित क्षयजनित आगन्तुज और जीर्णज्वर में लंघन श्रेष्ठनहीं होता और भी कहागयाहै कि काम शोक चिन्ता प्रहार भय भूतावेश श्रमक्रोध और उपवास इनसे उत्पन्न हुए ज्वरमें लंघन हितकारी नहीं है परन्तु इनकारणोंसे ज्वर आनेपर जो रोगीकी अग्नि दीप्तहोय तो मांसके रसकेसाथ भातदेवे अभिघा

तसे हुएज्वरमें उष्णता रहित चिकित्सा करनी चाहिये और कषाय मधुर तथा स्निग्ध वस्तु अथवा दोषके अनुसार वस्तु देनीचाहिये घीकेपीनेसे अथवा मलनेसे रुधिर निकलवाने से मेधाकी हितकारी वस्तुओं से और मांसके रसयुक्त भातखानेसे अभिघात ज्वरका नाशहोता है ॥ ३८१ ॥

व्यधबन्धश्रमात्यध्वभंगभ्रंशसमुद्भवान् । ज्वरानुपाचरेत्पूर्वंक्षीरमांसरसौदनैः ॥ व्यध ताडनंकर्णादिवेधोवा । भंगछेदभेदादिकःभ्रंशोवृक्षादितःपतनम् । अध्वश्रान्तेषुत्वभ्यंगं दिवानिद्रांश्चकारयेत् । औषधीगन्धविषजौविषपित्तप्रशमनैः ॥ जयेत्कषायैर्मतिमान्सर्वं गन्धकृतैर्भिषक् । सर्वगन्धमाह । चातुर्जातककर्पूरकंकोलागुरुकुंकुमम् । लवंगसहितं चैवसर्वगन्धंविनिर्दिशेत् ॥ ३८२ ॥

व्यध (ताड़ना अथवा कानआदिका छिदवाना) बन्धन श्रम बहुत मार्गचलना भंग (छेदनभेदनादिक) और वृक्षादि पतनके द्वारा उत्पन्न हुए ज्वरमें पहले दूध और मांस रसयुक्त भातके द्वारा चिकित्सा करे मार्ग चलने के द्वारा उत्पन्न हुए ज्वर में तेलादि मर्दन और दिन में शयन कराना चाहिये औषधियों के सूंघने से और विष के द्वारा उत्पन्नहुए ज्वर में विष तथा पित्तनाशक कषाय और सर्वगंधके क्वाथके द्वारा चिकित्सा करना चाहिये दालचीनी इलायची तेजपात नागकेशर कपूर कंकोल अगर केशर और लौंग यह सब सर्व गन्ध कहातीहै ॥ ३८२ ॥

क्रोधजेपित्तजित्कार्य्यन्धार्य्यन्सद्वाक्यमेवच । आश्वासेनेष्टलाभेनवायोः प्रशमनेन च । हर्षणैश्चशमंयान्तिकामक्रोधभयज्वराः । कामैरथमनोज्ञैश्चपित्तघ्नैश्चाप्युपक्रमैः ॥ सद्वाक्यैश्चशमंयातिज्वरःक्रोधसमुत्थितः (कामैःकामविषयैः) मनोघ्नैःधिक्कारादिभिर्भयजनकवचनैर्वा । कामात्क्रोधज्वरोनश्येत्क्रोधात्कामज्वरस्तथा । घातिताभ्यांमुभाभ्यां चकामक्रोधज्वरक्षयः॥घातिताभ्यामुभाभ्याम्मनसिनिगृहीताभ्यांकामक्रोधाभ्याम् ३८३॥

क्रोधज्वर में पित्त नाशक चिकित्सा धैर्य्य और श्रेष्ठ वचन हितकारी होते हैं आश्वास वाक्य (तसल्ली) वांछित वस्तुका मिलना वायुकी शान्ति और हर्षसे काम क्रोध तथा भयजनितज्वर शान्त होते हैं कामके विषय धिक्कार अथवा भयकारी वचन पित्तघ्न चिकित्सा और सद्वाक्यों के द्वारा क्रोध ज्वरशान्त होता है कामके द्वारा क्रोध ज्वर तथा क्रोध के द्वारा कामज्वर नष्टहोता है और इनदोनों को चित्त में रोकने से दोनों प्रकारके ज्वरों का नाशहोता है ॥ ३८३ ॥

भूतविद्यासमुद्दिष्टैर्बन्धावेशनताडनैः । जयेद्भूताभिषंगोत्थंमनःशान्त्येचमानसम् ॥ ताडनैरित्यत्रस्थानेकेचित्पूजनैरितिपठन्ति । सहदेवायामूलंविधिनाकण्ठेनिबद्धमपहरति । एकद्वित्रिचतुर्भिर्दिवसैर्भूतज्वरंपुंसाम् ॥ अभिचाराभिशापोत्थौज्वरौहोमादिभिर्जयेत् । दानस्वस्त्ययनातिथ्यैरुत्पातग्रहदुष्टिजौ ॥ इत्यागन्तुज्वराधिकारः ॥ ३८४ ॥

भूत विद्या में कहेहुए बंधन आवेशन और ताड़नके द्वारा भूतके आवेश से उत्पन्न होनेवालाज्वर नाश होताहै यहां ताड़न के स्थान में कोई २ पूजन यहपाठ कहते हैं मनकी प्रसन्नता से मानसी ज्वर का नाशहोता है सहदेई की जड़ विधिपूर्वक गले में बाँधने से एक दो तीन तथा चारदिन में भूतज्वर का नाश होताहै अभिचार तथा अभिशाप से उत्पन्नहुये ज्वरको होमादिकों से शान्तकरना

चाहिये और उत्पात तथा ग्रह पीड़ासे उत्पन्नहुए ज्वरको दान स्वस्त्ययन तथा अतिथि सत्कार के द्वारा शान्तकरे इति आगन्तु ज्वराधिकारः ॥ ३८४ ॥

अथविषमज्वराधिकारमाह । तत्रविषमज्वरस्यनिदानकथनपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥ दोषोऽल्पोऽहितसम्भूतोज्वरोत्सृष्टस्यवापुनः । धातुमन्यतमम्प्राप्यकरोतिविषमज्वरम् ॥ अयमर्थःज्वरोत्सृष्टस्यज्वरेणत्यक्तस्य । सन्निकृष्टहेतुमाह । दोषःअल्प.ज्वरमुक्तः स्वल्पोऽपिविप्रकृष्टहेतुमाह । अहितमाहारविहारादितेनसम्भूतः । सम्पूर्णोजातःअन्यतमन्धातुरसरक्तादिकम् । प्राप्यदूषयित्वापुनर्विषमज्वरंकरोति । ज्वरोत्सृष्टस्य चेतिवाशब्देनेतिबाध्यते । प्रथमतोविषमज्वरोभवति । यतउक्तम् । आरम्भाद्विषमोयस्तु ३८५॥

विषमज्वरका अधिकार विषमज्वरकी निदान समेत संप्राप्ति ॥

छूटेहुए ज्वरवाले मनुष्य का थोड़ा भी दोष अहितकारी आहार विहारादिकों के द्वारा पूराहोकर रस रक्त आदिक किसी धातुमें प्राप्तहोकर उसको दूषित करता हुआ फिर विषमज्वरको उत्पन्न करता है यहाँ वा शब्द से यह मालूम होताहै कि पहले भी विषम ज्वरहोता है क्योंकि कहागयाहै कि आरंभ से जो विषम होताहै इत्यादि ॥ ३८५ ॥

रसादिकन्धातुन्दूषयित्वाविषमज्वरंकरोति । इत्यपेक्षायामाह । संततंरसरक्तस्थःसततंरक्तधातुगः । दोष कुर्योज्वरम्पुंसांसोऽन्येद्युःपिशिताश्रितः ॥ मेदोगतस्तृतीयेऽह्निअस्थिमज्जागतःपुनः । कुर्याच्चातुर्थिकंघोरमन्तकंरोगसंकरम् ॥ अंतकमिवमारकत्वात् ३८६ ॥

रसआदिक धातुओंको दूषित करके विषमज्वर उत्पन्न होताहै इसलिये कहते हैं कि संतत ज्वर रसतथा रक्त धातु में स्थित सतत ज्वर रक्त धातु में स्थित अन्येद्युष्क ज्वर मांसमें स्थित तृतीयक ज्वर मेद धातु में स्थित और चातुर्थिक नाम विषमज्वर अस्थि तथा मज्जा में स्थित दोषोंसे उत्पन्न होताहै अत्यन्त घोर चातुर्थिक ज्वर यमराज के समान मारनेवाला और अनेक रोगोंका उत्पन्नकरनेवाला होताहै ॥ ३८६॥ अथ विषमज्वरस्यसामान्यंलक्षणमाह ॥

यःस्यादनियतात्कालात्शीतोष्णाभ्यांतथैवच ॥ वेगतश्चापिविषमोज्वरःसविषमः स्मृतः । यस्त्वनियतात् कालात्स्यादित्यस्यायमर्थः ॥ यथावातिकोज्वरःसप्तदिनानिपैत्तिकोदशदिनानिश्लैष्मिकोद्वादशदिनानिदोषाणांप्राबल्ये वातिकश्चतुर्दशदिनानिपैत्तिकोविंशतिदिनानिश्लैष्मिकश्चतुर्विंशतिदिनानिस्यात्तथाविषमज्वरोऽनियतंकालंव्याप्यनस्यादित्यर्थः । शीतोष्णाभ्यांगुणाभ्यामपितथास्यात् ॥ वेगतश्चापिविषम कदाचिदतिवेगवान् । कदाचिच्छान्तवेगः ॥ ३८७ ॥

विषमज्वरका सामान्य लक्षण ॥

जिस ज्वरका समय निश्चित न हो शीत तथा उष्णका नियम न हो और कभी अधिक कभी स्वल्प वेगहो उसको विषमज्वर कहतेहैं जिसका समय निश्चित न हो इसका यह तात्पर्यहै कि जैसे वातज्वर सात दिन पित्तज्वर दश दिन और कफज्वर बारह दिन, तथा दोषोंकी प्रबलता होने पर वातज्वर चौदहदिन पित्तज्वर बीसदिन और कफज्वर चौबीसदिन रहताहै इसप्रकार विषमज्वर का कोईकाल निश्चित नहींहै ॥ ३८७ ॥

विषमज्वरस्यभेदानाह ॥

सन्तत सततोऽन्येद्युस्तृतीयकचतुर्थकौ ॥ ३८८ ॥

विषमज्वरके भेद ॥

सन्तत सतत अन्येद्युष्क तृतीयक और चातुर्थिक यह पांच विषमज्वरके भेदहैं ॥ ३८८ ॥

तत्रसन्ततस्यलक्षणमाह ॥

सप्ताहंवादशाहंवाद्वादशाहमथापिवा । सन्तत्यायोऽविसर्गःस्यात्सन्ततःसनिगद्यते विकल्पोवातिकादिभेदात् । सन्तत्यानैरन्तर्य्येण अविसर्ग्गोअपरित्यागनिनुमुक्तानुब न्धित्वंविषमत्वमितिविषमलक्षणम् ॥ तदत्रनघटतइतिकथमयंविषमेषुपठ्यते । घटन एवेतिनदोषः ॥ यतउक्तंचरकेण । विसर्गंद्वादशेकृत्वादिवसेव्यक्तलक्षणम् ॥ दुर्लभोप शमःकालंदीर्घमेवानुवर्त्ततइति । यत्तुखरनादेनोक्तम् ॥ ज्वराःपञ्चतुयेप्रोक्ताःपूर्वसन्तत कादयः । चत्वारःसन्ततंहित्वाज्ञेयास्तेविषमज्वराइति॥तच्चिरेणत्यागाभिप्रायेण ३८९ ॥

संततज्वरका लक्षण ॥

सात दिन दश दिन अथवा बारह दिनतक निरन्तर जो ज्वर रहताहै उसको संतत कहतेहैं सात दिन आदिकी कल्पना वातादि दोषोंके भेदसे है अब यह सन्देह होताहै किमुक्तानुवन्धित्व (छोड कर फिर आजाना) ही विषमज्वरका लक्षणहै परन्तु संततज्वरमें यह बात नहींहै तो इसको विषम-ज्वरोंमें क्यों कहा इसका उत्तर यह है कि संततज्वरमें मुक्तानुबंधित्वहै इसलिये कोई दोष नहीं है क्योंकि चरकने कहाहै कि संततज्वर बारहवें दिन छूटकर अप्रकट लक्षणों से युक्त बहुत कालतक रहताहै इसके शांतहोनेका कालदुर्लभहै और खरनादने जो कहाहै कि जो संतत आदिक पांचज्वर पहलेकहेगयेहैं उनमेंसे संततको छोडकर बाकीके चारविषमज्वर कहलातेहैं इसका अभिप्रायकेवल ज्वरके बहुतकालतक छूटनेहीपर है ॥ ३८९ ॥

सततलक्षणमाह ॥

अहोरात्रेसततकौद्वौकालावनुवर्तते । द्वौकालौअहन्येककालंरात्रावेककालम् ॥ यतो दोषाणामहोरात्रेप्रत्येकंद्वौद्वौप्रकोपकालौ । यतउक्तंवाग्भटेनवयोऽहोरात्रिभुक्तानामन्त मध्यादिगाःक्रमादिति ॥ ३९० ॥ सततका लक्षण ॥

जो ज्वर दिन रात्रिमें दोबार आताहै उसको सतत कहतेहैं दिन रात्रि में दोबार आताहै इसका यह अर्थहै कि एकबार दिनमें आताहै और एकबार रात्रिमें आताहै क्योंकि दिनरात्रि में हरएक दोष के कुपितहोनेके दो२ कालहैं और ऐसाही वाग्भटने कहाहै कि अवस्था दिनरात्रि और भोजन इनके अन्तमध्य और आदिमें क्रमसे वातपित्त और कफकुपित होतेहैं ॥ ३९० ॥

अन्येद्युष्कलक्षणमाह ॥

अन्येद्युष्कस्त्वहोरात्रादेककालंप्रवर्त्तते ॥ एककालंदोषापेक्षयाएककालमपि । द्वि तीयंप्रथमकालेह्येवदोषास्थिते ॥ ३९१ ॥

अन्येद्युष्कका लक्षण ॥

जो ज्वर रात्रिदिनमें एकबार आताहै उसको अन्येद्युष्क कहतेहैं यहां एकबार दोषोंकी अपेक्षासे

कहागयाहै और एकबारभी दूसरेकालमें जाननाचाहिये क्योंकि पहलेकालमें दोप हृदयमें रहताहै ३६१॥

तृतीयकचतुर्थकयोर्लक्षणमाह ॥

तृतीयकस्तृतीयेऽह्निचतुर्थेऽह्निचतुर्थकः । तृतीयेऽह्निइत्यागमनदिनंगृहीत्वा ॥ यतउक्तम्‌दिनमेकमतिक्रम्ययोभवेत्‌सतृतीयक । दिनद्वयन्त्वतिक्रम्यय स्यात्‌सहिचतुर्थकइतिग्यत्राहसुश्रुतः ॥ कफस्थानविभागेनयथासंख्यंकरोतिहि । सततान्येद्यु तृतीयचतुर्थकप्रलेपकान्‌ ॥ अहोरात्रादहोरात्रेस्थानात्‌स्थानंप्रपद्यते । दोषआमाशयंप्राप्य करोतिविषमज्वरम्‌ ॥ अयमर्थ आमाशयोर कण्ठशिरःसन्धय पञ्चकफस्थानानिएषु तिष्ठन्‌दोषायथासंख्यंसततादीन्‌करोति । तत्रआमाशयेस्थितोदोषःसततंकरोतिद्वौकालौ ॥ अहोरात्रेकालद्वयेदोपप्रकोपात्‌हृदयेस्थितोदोप आमाशयमागत्य अन्येद्युष्क करोति । एककालंनैकदैकस्मिन्नेवाहोरात्रेदोपआमाशयमागत्य अन्येद्युष्कंकरोति ॥ तत्रद्वौदोषप्रकोपकालौएकस्मिनकालेहृदयेतिष्ठत्यपरस्मिन्नामाशयइति । कण्ठेस्थितोदोषोऽहोरात्रात्‌हृदयमायाति ॥ तृतीयेदिनेआमाशयमागत्यस्वप्रकोपकालेतृतीयकंज्वरंकरोति । एककालंनतुद्वौकालौस्वभावात्‌ ॥ एवमेवशिरस्थितोदोषोअहोरात्रात्‌कण्ठमायाति । तत पुनरहोरात्रात्‌हृदयमायातिचतुर्थेदिने । आमाशयमागत्यस्वप्रकोपकालेचतुर्थकंज्वरंकरोति । एककालन्नतुद्वौकालौस्वभावादेव ॥ ननुदोषस्यागमनंक्रमेणनिजस्थानगमनक्रमात्‌कथंतृतीयचतुर्थदिवसयोर्ज्वरागमनम्‌ । उच्यतेदोषोहिप्रकोपसमयेवेगंपरित्यज्यलाघवात्‌स्वस्थानन्तुवेगादिनएवयाति ॥ यतआहदोषःप्रकोपकालेहिवेगवत्त्वेनलाघवात्‌ । वेगवासरएवायंस्वस्थानमधिगच्छति ॥ सन्धिषुस्थितः प्रलेपकंकरोति । सन्धयश्चामाशयेऽपिसन्तितेषुस्थितःप्रलेपकंसर्व्वदाकरोति ॥ ३९२ ॥

तृतीयक और चातुर्थिकके लक्षण ॥

तीसरे दिन अर्थात एक दिन बीच में छोडकर जो ज्वर आताहै उसको तृतीयक अर्थात्‌ एकतरा और चौथे दिन अर्थात्‌ दोदिनका अन्तर देकर जो ज्वर आताहै उसे चातुर्थिक अर्थात्‌ तिजारी कहतेहैं तीसरा दिन ज्वर आनेके दिन को लेकर समझना चाहिये क्योंकि कहा गयाहै कि एक दिन का अन्तर देकर जो ज्वर आताहै वह तृतीयक और दोदिन का अन्तर देकर जो आताहै वह चातुर्थिक कहाताहै यहांपर सुश्रुत ने कहाहै कि दोप एक रात दिन में एक स्थानसे दूसरे स्थान में जाता है इस प्रकार क्रमसे कफ के स्थान के विभागोंके अनुसार आमाशय में प्राप्त होकर क्रम पूर्वक सतत अन्येद्युष्क तृतीयक चातुर्थिक और प्रलेपक नाम विषम ज्वरोंको करताहै इसका यह तात्पर्य है कि आमाशय हृदय कंठ शिर और सन्धि समूह यह पाच कफके स्थानहैं दोप इनइन स्थानोंमें स्थितहोकर क्रमसे सतत आदि ज्वरोंको करताहै इनमें से आमाशय में स्थित दोप दिन रात्रि में दोवार सतत ज्वर को उत्पन्न करता है क्योंकि दिन रात्रि मे दोषोंके कुपित होने के दोकाल हैं हृदय में स्थित दोष आमाशय में आकर अन्येद्युष्क ज्वर को दिन रात्रि में एकवार उत्पन्न करता है क्योंकि दिन रात्रि में दोपके कुपित होनेके दोकाल हैं उनमें से एक काल में हृदय में रहताहै और दूसरे काल में

आमाशय में जाकर ज्वर को उत्पन्न करताहै कंठ में स्थित दोष एक रात्रि दिन में हृदय में आता है और तीसरे दिन आमाशय में जाकर अपने कोप के समय एक वार तृतीयक ज्वर को उत्पन्न करता है दो वार नहीं उत्पन्न करने में स्वभाव ही कारण है इसी प्रकार शिर में स्थित दोष एक रात्रि दिनमें कण्ठमें आताहै इसके पीछे एक रात्रि दिनमें हृदयमें आताहै फिर चौथेदिन आमाशयमें आकर अपने कोपके समय एक वार चातुर्थिक ज्वर को उत्पन्न करताहै दोबारस्वभाव ही से नहीं उत्पन्न करताहै अब यह सन्देह होताहै कि दोष जितने दिनमें आमाशयमें जाताहै अपने स्थानमें जाने के लिये उतनाही समय चाहिये तो तीसरे और चौथे दिन ज्वर कैसे आताहै इसका उत्तर यहहै किदोष कोपके समय वेगको छोड़कर हलके होने के कारण उसी दिन अपने स्थानमें चलाजाताहै क्योंकि कहागयाहै कि दोष कोप के समय वेगवान् होकर हलके होनेके कारण वेगहीन केही दिन अपने स्थान को चला जाता है संधियों में स्थित दोष प्रलेपकको उत्पन्न करताहै और संधि आमाशय में भी हैं इसलिये संधियों में स्थित दोष निरन्तर प्रलेपक ज्वर को करताहै ॥ ३९२ ॥

निवृत्तःपुनरायातिविषमोनियतेदिने । स्वभावःकारणंतत्रमन्यंतेमुनिपुङ्गवाः ॥ स्वभावस्यकारणत्वेकफस्थानविभागनिरपेक्षाच्चतुर्थकादिविपर्य्ययाअपिज्वराः स्वस्वकाले प्रभवंति । अधिश्रितेयथाभूमिंबीजंकालेप्ररोहति ॥ अधिश्रितेतथाधातून्दोषःकालेप्रकुप्यति । सुश्रुतोऽप्याह । सचापिविषमोदेहंनकदाचित्प्रमुञ्चतिग्लानिगौरवकार्श्येभ्यःसयस्मान्नप्रमुच्यते । वेगेतुसमतिक्रांतेगतोऽयमितिलक्ष्यते ॥ धात्वंतरेषुलीनत्वात्सौक्ष्म्यान्नैवोपलभ्यते ॥ ३९३ ॥

मुनिलोगोंने कहाहै कि निवृत्त हुआ विषमज्वर नियत दिनमें फिर आजाताहै उसमें स्वभावही कारणहै स्वभावके कारण होनेसे कफके स्थानके विभागोंकी अपेक्षा न करके अपने२ समयमें ज्वर चातुर्थिक आदिके उलटेपनसे भी आजातेहैं जैसे पृथ्वीमे बोयाहुआ बीज अपने समयपर उंगता है उसीप्रकार धातुओंमें स्थित दोष समयपर कुपित होताहै और सुश्रुतने भी कहाहै कि विषमज्वर शरीरको कभी नहीं छोड़ता क्योंकि ग्लानि शरीरका भारीपन और दुर्बलता यह सब बनेरहते हैं और वेगके चलेजानेपर ज्वरचलागया सा मालूम होताहै परंतु धातुओंके बीचमें लीन होनेकेकारण सूक्ष्मतासे जाना नहींजाताहै ॥ ३९३ ॥

द्विदोषोल्वणस्यतृतीयकस्यलक्षणमाह ॥

कफपित्तात्त्रिकंग्राहीपृष्ठाद्वातकफात्मकः । वातपित्ताच्छिरोग्राहीत्रिविधःस्यात्तृतीयकः ॥ त्रिकग्राहीवेदनयात्रिकंगृह्णातीत्यर्थः । वातकफात्मकःपृष्ठात्व्यथयापृष्ठंग्राह्य भवतीत्यर्थःल्यब्लोपेकर्म्मण्यधिकरणेचेतिसूत्रेणपञ्चमी ॥ ३९४ ॥

अधिक दो दोषवाले तृतीयकज्वरके लक्षण ॥

जो तृतीयकज्वर कफ पित्तसे उत्पन्न होताहै उसमें रीढ़के नीचेकी हड्डियोंमें पीड़ा होतीहै जो तृतीयकज्वर वात कफसे उत्पन्न होताहै उसमें पीठमें पीडा होतीहै और जो तृतीयकज्वर वातपित्तसे उत्पन्न होताहै उसमें शिरकी पीड़ा होतीहै इसलिये तीनप्रकारका तृतीयकज्वर होताहै ॥ ३९४

कफोल्बणस्यवातोल्बणस्यचतुर्थकस्यलक्षणमाह ॥

चातुर्थिकोदर्शयतिस्वभावंद्विविधंज्वरः । जङ्घाभ्यांश्लैष्मिकःपूर्वंशिरसोऽनिलसम्भवःश्लेष्मिकःश्लेष्मोल्बणःतथाअनिलसंभवोवातोल्बणः नन्वास्तिपैत्तिकोपिचातुर्थिकःयतआहनागभर्तृतंत्रेऊर्द्ध्वंकायंतुयःपूर्वंगृह्णातिसोनिलात्मकःमध्यकायंतुगृह्णातिपूर्वंयस्तुसपित्तजःपूर्वंगृह्णात्यधःकायंश्लेष्मदृश्चतुर्थकः किंतुप्रायेणकफवाताभ्यांभवतितस्मात्पैत्तिकश्चतुर्थकश्चरकादिभिर्नोक्तः ॥ ३९५ ॥

अधिककफऔर अधिकवातवालेचातुर्थिक ज्वरका लक्षण ॥

चातुर्थिक ज्वर दो प्रकारके स्वभावोंको दिखाताहै उनमेंसे अधिक कफवाला पिंडलियोंसे चढ़ता है और अधिक वातवाला शिरसे चढ़ता है चातुर्थिकज्वर पैत्तिकभी होताहै क्योंकि नागभर्तृ तंत्रमें कहा है कि वातवाला चातुर्थिकज्वर पहले शिरसे चढ़ता है पित्तवाला चातुर्थिकज्वर शरीरके मध्यसे चढ़ता है और कफवाला चातुर्थिकज्वर शरीरके नीचेसे चढ़ताहै परन्तु प्रायः चातुर्थिकज्वर कफ और वातसे उत्पन्न होताहै इसलिये चरक आदिकोंने पित्तसेहुए चातुर्थिक ज्वरको नहीं कहाहै ॥ ३९५ ॥

संततादीनांत्रिदोषजत्वम् । यतउक्तंचरके प्रायशःसन्निपातेनपञ्चस्युर्विषमज्वराइति ॥ प्रायशोग्रहणादेकदोषजाद्विदोषजा अपिभवंतीति । जैय्यटःउल्बणश्लेष्मवातः पूर्व्वंप्रथमंजङ्घाभ्याम् ॥ व्यथयाजंघेव्याप्यपश्चात्सकलंशरीरंव्याप्नोति । एवमुल्बणवातजातःशिरसःपूर्व्वंव्यथयाशिरोव्याप्यसकलंशरीरंव्याप्नोतीत्यर्थः । विषमज्वरएवान्यश्चातुर्थिकविपर्य्ययः ॥ अस्थिमज्जागतोदोषश्चतुर्थकविपर्य्ययः । जायतेभिषजाज्ञेयोविषमज्वरएवसः ॥ अन्यःसंततादिपञ्चकादपरःचातुर्थिकःविपर्य्ययाख्योज्वरःसोऽपिविषमज्वरएववैद्येनज्ञातव्यःसकिंधातुस्थइत्यपेक्षायामाह । अस्थीत्यादि ॥ ३९६ ॥

संतत आदिक ज्वरोंका त्रिदोषजपन कहाजाता है चरकने कहाहै कि प्रायः पांचों विषमज्वर सन्निपातसे होतेहैं जैयटने कहाहै कि प्रायः शब्दसे यह मालूम होताहै कि एकदोष और दो दोषसे भी विषमज्वर होताहै अधिक कफवाला चातुर्थिकज्वर पहले पीड़ासे पिंडलियोंको व्याप्तकरके पीछे सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्तहोताहै इसीप्रकार अधिक वातसे उत्पन्नहुआ चातुर्थिकज्वर पहले पीड़ासे शिरको व्याप्तकरके सम्पूर्ण शरीरको व्याप्तकरता है संतत आदि पांचप्रकारके विषमज्वरोंसे भिन्न चातुर्थिक विपर्य्यय नामज्वर विषमज्वरों मेंही जानना चाहिये यह अस्थि और मज्जामें स्थित दोनोंसे उत्पन्न होताहै ॥ ३९६ ॥

तस्यचातुर्थिकविपर्य्ययस्यलक्षणमाह ॥

समध्येज्वरयत्यह्नीआद्यन्तेचविमुञ्चति । चतुर्थकविपर्य्ययःइत्युपलक्षणम् । सन्ततादिविपर्य्ययोऽपिबोद्धव्यः । यथाअहोरात्रेद्वौकालौमुञ्चतिशेषंसर्वमहोरात्रंतिष्ठतीतिसततविपर्य्ययः । अहोरात्रेएककालंमुञ्चतिशेषंसर्व्वमहोरात्रंतिष्ठतिअन्येद्युष्कविपर्य्ययः मध्येएकंदिनंज्वरंजनयति । आदावन्त्येचमुञ्चतीतिमध्येएकंदिनंज्वरयतिआदावन्त्येचदिनेमुञ्चतीतितृतीयकविपर्य्ययः ॥ ३९७ ॥

चातुर्थिक विपर्य्यय के लक्षण ॥

चातुर्थिक विपर्य्यय ज्वर मध्यमें दोदिन रहताहै और आदिअन्तके दोदिन नहीं रहता अर्थात् दो दिन ज्वर रहता है और बीचमें एक दिननहीं आता चातुर्थिक विपर्य्यय यह उपलक्षण मात्रहै इससे संततादिक विपर्य्यय भी जानना चाहिये जैसे जो ज्वर रात्रिदिनमें दो वार उतरे और बाकी रात्रि दिन चढ़ारहै वहसतत विपर्य्यय कहलाताहै जो ज्वररात्रि दिनमें एकसमय उतरे और बाकी संपूर्ण रात्रि दिन चढ़ारहै वह अन्येद्युष्क विपर्य्यय कहलाता है जो ज्वर मध्यमें एक दिनहोवे और आदि अन्तके दिनमें उतर जाय उसको तृतीयक विपर्य्यय कहते हैं ॥ ३९७ ॥

एतेविषमज्वरोपलक्षकाःअन्येरात्रिज्वरादयोऽपिविषमज्वरावोद्धव्याः यथासमो वातकफौयस्यक्षीणपित्तस्यदेहिनः ॥ रात्रौप्रायोज्वरस्तस्यदिवाहीनकफस्यतु । प्रायःबा हुल्येन ॥ ३९८ ॥

यह विषमज्वर उपलक्षण मात्र है इससे अन्यरात्रि ज्वरादिक भी विषमज्वर जानने चाहियेजैसे जिस मनुष्यके कफवात समहो तथा पित्त क्षीणहोवे उसको प्राय. रात्रिमें ज्वर आताहै और जिसका कफक्षीण होवे उसको बहुधादिनमें ज्वर आता है ॥ ३९८ ॥

सन्ततादीनांशीतपूर्वत्वेदाहपूर्वत्वेचहेतुमाह ॥

त्वक्स्थौश्लेष्मानिलौशीतमादौजनयतोज्वरम् । तयोःप्रशान्तयोःपित्तमन्तर्दाहंकरोतिच ॥ शीतंशीतसहितम् । प्रशान्तयोःप्रशान्तवेगयोःअन्तःअभ्यन्तरे । करोत्यादौतथा पित्तंत्वक्स्थंदाहमतीवच । तस्मिन्प्रशान्तेत्वितरौकुरुतःशीतमन्ततः॥अन्ततःहस्तपादा दितःशीतदाहादिज्वरयोःत्रिदोषजत्वमाह ।द्वावेतौदाहशीतादिज्वरौसंसर्गजौस्मृतौ।दाह पुर्वस्तयोःकष्टःसुखसाध्यतमोऽपरः ॥ संसर्गजौसान्निपातिकौ । कष्टःकष्टसाध्यः ॥३९९॥

संततादि ज्वरोंके पहले शीत तथादाह होनेका कारण ॥

कफ और वात त्वचा में स्थितहोकर ज्वरके आदि में शीतको उत्पन्न करते हैं और उनके वेगके शान्त होजाने पर पित्तभीतर दाहकोउत्पन्न करताहै त्वचामें स्थित पित्तज्वर पहले अत्यन्त दाह को उत्पन्नकरताहै और उसकेवेगके शान्तहोजानेपर कफ और वातहाथपैरोंमें शीत उत्पन्न करते हैं दाह पूर्व और शीतपूर्व यह दोनोंज्वर सन्निपातज होतेहैं इनमेंसे दाहपूर्व कष्टसाध्य,और शीतपूर्व अत्यन्त सुखसाध्य होताहै ॥ ३९९ ॥

विषमज्वरविशेषमाह ॥

विदग्धेऽन्नरसेदेहेश्लेष्मपित्तेव्यवस्थिते । तेनार्द्धशीतलंदेहमर्द्धमुष्णंप्रजायते॥अन्न रसेविदग्धे । आहारजेरसेदुष्टेदेहेश्लेष्मपित्तेव्यवस्थितेदुष्टेस्थिते । तेनहेतुनाशीतलंकफे नउष्णंपित्तेन अर्द्धत्वंचार्द्धनारीश्वराकारेणनरसिंहाकारेणवा ।कायेदुष्टंयदापित्तंश्लेष्माचा न्तेव्यवस्थितः । तेनोष्णत्वंशरीरस्यशीतत्वंहस्तपादयोः।(अन्तेहस्तपादादौ) कायेश्ले ष्मायदादुष्टःपित्तंचान्तेव्यवस्थितम् । शीतत्वंतेनगात्रेस्यादुष्णत्वंहस्तपादयोः ॥४००॥

विषमज्वरकी विशेषता ॥

विषमज्वरमें आहारके रसके दूषित होजानेपर और कफ तथा पित्तके दूषित होजानेपर आधा

शरीर कफके द्वारा शीतल और आधा शरीर पित्तके द्वारा उष्ण होताहै आधा शरीर शीतल और आधा शरीर उष्ण अर्द्धनारी श्वराकारसे अथवा नरसिंहाकारसे होताहै जब दोषयुक्त पित्त शरीर में और दोषयुक्त कफ हाथ पैरोंमें स्थित होताहै तब शरीर उष्ण और हाथ पैर शीतल होजातेहैं जब दोषयुक्त कफ शरीरमें और दोषयुक्त पित्त हाथपैरोंमें स्थितहोताहै उसरोगीका शरीर शीतल और हाथपैर उष्ण होतेहैं ॥ ४०० ॥

विषमज्वरविशेषस्यप्रलेपकस्यलक्षणमाह ॥

प्रलिपन्निवगात्राणिघर्मेणगौरवेणच। मन्दज्वरविलेपीचसशीतःस्यात्प्रलेपकः॥ गौरवेणउपलक्षितः। मन्दज्वरविलेपीमन्दवेगस्यसदासम्बन्धोऽस्यास्तीतिमन्दज्वरविलेपी। अयंविषमज्वरः। तथाचसुश्रुतः। प्रलेपकास्योविषमःप्रायशःक्लेशशोषिणाम् ॥ ज्वराश्चविषमाःसर्वेप्रायःक्लेशायशोषिणामिति ॥ ४०१ ॥

विषमज्वर विशेष प्रलेपकके लक्षण ॥

जिसज्वरमें शरीरभारी होवे अंगोंमें पसीनाभरा हुआ सामालूम होवे और ज्वर मन्दवेगसे सदैव बनारहे तथा शीतलगे उसको प्रलेपक कहतेहैं यह विषमज्वर है और ऐसाही सुश्रुतने कहा है कि प्रलेपक नाम विषमज्वर प्रायः क्लेशकारी राजयक्ष्मावाले के होताहै और प्रायः सम्पूर्ण विषमज्वर राजयक्ष्मा वालेको क्लेशकारी होते हैं ॥ ४०१ ॥

अथविषमज्वराणांसामान्यचिकित्सा ॥

ज्वराश्चविषमाःसर्वेसन्निपातसमुद्भवाः। यथोल्बणस्यदोषस्यतेषुकार्य्यश्चिकित्सितम्॥ विषमेष्वपिकर्त्तव्यमूर्ध्वञ्चाधश्चशोधनम्।स्निग्धोष्णैरन्नपानैश्चशमयेद्विषमज्वरम्॥ कालिंगकःपटोलस्यपत्रंकटुकरोहिणी। पटोलंसारिवामुस्तंपाठाकटुकरोहिणी॥ निम्बःपटोलंत्रिफलामृद्वीकामुस्तवत्सकौ। किराततिक्तममृताचंदनंविश्वभेषजम्॥ गुडूच्यामलकंमुस्तमर्द्धश्लोकसमापनाः। कषायाःशमयंत्याशुपञ्चपञ्चविधंज्वरम्॥ कालिंगकःइंद्रयवःवत्सकःकुटजः। चंदनमत्ररक्तचंदनम्। कषायाःपञ्चपञ्चविधंसंततसततान्येद्युष्कतृतीयकचतुर्थकरूपम्॥ ४०२॥

विषमज्वरों की सामान्य चिकित्सा॥

संपूर्ण विषमज्वर त्रिदोषसे उत्पन्न होतेहैं उनमें से जिस दोषकी अधिकता देखे उसकी चिकित्सा करे विषमज्वर में वमन विरेचनादिके द्वारा शोधन करके स्निग्ध और उष्ण अन्न पानके द्वारा विषमज्वर को शान्त करना चाहिये आगे कहे हुए पांच क्वाथ क्रमसे पांच प्रकारके विषमज्वरों को शान्त करतेहैं इन्द्रजो पर्वलके पत्तेऔर कुटकी१ पर्वल सारिवा (अनन्तमूल) नागरमोथा पाढ़ा और कुटकी २ नींब पर्वल त्रिफला दाखमोथा और कुरैयाकीछाल ३ चिरायता गिलोय लालचन्दन और सोंठ ४ गिलोय आंवला और मोथा ५ यहपांचो क्वाथक्रमसे संतत सतत अन्येद्युष्क तृतीयक और चातुर्थिक ज्वरको शान्तकरते हैं ॥ ४०२ ॥

महाबलामूलमहौषधाभ्यांक्वाथोनिहन्याद्विषमज्वरंहि। शीतंसकम्पंपरिदाहयुक्तंविनाशयेद्द्वित्रिदिनप्रयोगात्॥मुस्तामलकगुडूचीविश्वौषधकण्टकारिका। क्वाथःपीतःसकणा

चूर्णःसमधुर्विपमज्वरंहंति ॥ तिलतैललवणयुक्तःकल्कोलशुनस्यसेवितःप्रातःविपमज्व रमपहरेत्वातव्याधिनिशेपांश्च ॥ कालाजाजीतुसगुडाविषमज्वरनाशिनी । मधुनाचाभ यालीढ़ाहंत्याशुविपमज्वरान् ॥ कालाजाजीतुमंगरैलाइतिच । साचाकिञ्चिद्भृष्टागुड़ तुल्याकर्पमिताभक्षणीया। पीतोमरिचचूर्णेनतुलसीपत्रजोरसः । द्रोणपुष्पीरसोवापीनि हंतिविपमज्वरान् ॥ समगुड़मसितंजीरकमीपन्मरिचंभक्षितंसद्यः । एकाहिकंप्रशमयेत् समरेष्विवदानवानिंद्रः ॥ शुंठीजाजीगुड़ंपिष्टंपीतमुष्णेनवारिणा । जीर्णमद्येनतक्रेणतीव्रं शीतज्वरंजयेत् ॥ ४०३ ॥

सहदेईकी जड़ और सोंठ इनका काढ़ा शीतकम्प और दाहसमेत विपमज्वरको दोतीन दिनमें नष्टकरताहै मोथा आंवला गिलोय सोंठ और भटकटैया इनके काढ़ेमें पीपलका चूर्ण और सहत मिलाकर पीनेसे विपमज्वरका नाशहोता है लहसनको पीसकर तिलके तेल और सेंधानोनके साथखाने से विपमज्वर और सबवातव्याधियोंका नाशहोता है कालेजीरेको भूनकर उसके बराबर गुड़ मिलाकर एकतोलेखाने से विपमज्वरका नाशहोता है सहतकेसाथ हड़चाटनेसे विपमज्वरका नाश होताहै तुलसी अथवा गोमाके पत्तोंकारस मिर्चका चूर्ण मिलाकर सेवनकरने से विपमज्वरका नाश होताहै पुरानागुड़ और कालाजीरा बराबर लेकर कुछ मिर्चमिलाके खानेसे जैसे इन्द्रदैत्योंका नाश करतेहैं उसी प्रकार यह एकाहिक ज्वरका नाशकरता है सोंठ कालाजीरा और गुड़ यहसब बराबर पीसकर उष्णजल पुरानीमद्य अथवा मट्ठेके साथ सेवन करनेसे तीव्रशीतज्वरका नाशहोताहै ४०३॥

अथसंततादीनांविशिष्टाचिकित्सा ॥

अमृतायाःशतंचूर्णंवाससापरिशोधितम् । पृथक्पोडशभागाःस्युर्गुड़माक्षिकसर्पिषा ॥ यथाग्निंभक्षयेदेतन्नरोहितमिताशनः । नास्यकश्चिद्भवेद्व्याधिर्नजरापलितंनच ॥ नज्व राःविपमानैवमोहानानिलैरक्तकम् । नचनेत्रगतारोगाःपरमेतद्रसायनम् ॥ मेधाकरंत्रि दोपघ्नंप्रयोगादस्यबुद्धिमान् । जीवेद्वर्पशतंसाग्रंयथैवादितिजस्तथा ॥ इतिगुडूची मोदकः ॥ ४०४ ॥

संततादिज्वरोंकी विशेपचिकित्सा ॥

वस्त्रमें छानाहुआ गिलोयका चूर्ण १०० भा० गुड़ १६ भा० सहत १६ भा० और घी १६ भा० इनसबको एकमें मिलाकर अग्निके बलके अनुसार इसकोखाय और हितकारी तथा परिमित आहारखाय इसपरम रसायनके सेवनसे कोई व्याधि वृद्धावस्था बालोंका सफेदहोना विपमज्वर मोह वातरक्त और नेत्ररोगकभी भी नहीं होतेहैं यह मेधाकारी तथा त्रिदोप नाशकहै और इसके सेवनसे देवताओंके समान सौवर्पतक जीताहै इतिगुडूची मोदकः ॥ ४०४ ॥

अथान्नमाह ॥

तक्रंमांसंपयोमांसंदधिमांसमथापिवा । मापमांसञ्चभुञ्जानो मुच्यते विषमज्वरात् ॥ अग्निवेशेनोक्तम् । सुरासमण्डापानार्थेभोजनेचरणायुधाः । तित्तिराःविष्किराःपथ्याःकु क्कुटाःविपमज्वरेगृहकुक्कुटाःवनकुक्कुटाविष्किराः । वर्तिकालावाविष्किरचकोराद्याः॥४०५॥

अथअन्न ॥

मट्ठेके साथ जलके साथ अथवा दहीके साथ पाक किया गया मांस या उड़दोंके साथ पाक हुआ मांस भोजन करनेसे विषम ज्वरको नाश करताहै अग्नि वेशने कहाहै कि विषम ज्वर में पान करने के लिये मांड सहित सुरा और भोजन के लिये वनका मुर्गा घरका मुर्गा तीतर और विष्किर (बटेर लवा और चकोरादिक) पक्षियोंका मांस पथ्यहै ॥ ४०५ ॥

अथसततादीनांविशिष्टाचिकित्सा ॥

त्रायन्तीकटुकानन्तासारिवाभिःशृतंजलं ॥ पटोलाब्दवृषतिक्तासारिवाभिःशृतंजलम्।सततास्येज्वरेदेयंवातादीनांनिवृत्तये॥वृषाब्दहृदन्तीएरण्डवरपत्रविटपातदलाभेदन्ती चग्राह्यासमानगुणत्वात्।पटोलेन्द्रयवानन्तापथ्यारिष्टामृताजलम् । क्वथितंतज्जलंपीतंज्वरंसततकंजयेत् ॥ अनन्तासारिवा । अरिष्टःनिम्बः । जलंवालकम् । द्राक्षापटोलनिम्बाब्दशक्राह्वत्रिफलाशृतम् । जलंजन्तुःपिबेच्छीघ्रमन्येद्युर्ज्वरशान्तये॥ शक्राह्वःइन्द्रयवः ४०६॥

सतत आदि कों की विशेष चिकित्सा ॥

त्रायमाणा कुटकी जवासा तथा सारिवा इनका काढ़ा और पर्वल मोथा बड़ीदन्ती (इसकेन होनेमें दन्ती) कुटकी तथा अनन्त मूल इनका काढ़ा सतत नाम ज्वरमें वातादिकों के निवृत्तकरने के लिये देना चाहिये पर्वल इन्द्रजो अनन्त मूल हड़नीव गिलोय और सुगन्धवाला इनकाकाढ़ा पीनेसे सतत ज्वरका नाश होताहै दाख पर्वल नींव मोथा इन्द्रजो और त्रिफला इनका क्वाथ पीनेसे अन्येद्युष्क ज्वरका नाश होताहै ॥ ४०६ ॥

कर्म्मसाधारणंत्यक्त्वात्तृतीयकचतुर्थकौ । भिषजाप्रतिकर्त्तव्यौविशेषोक्तचिकित्सितैः उशीरंचन्दनंमुस्तंगुडूचीधान्यनागरम् ॥ अम्भसाक्वथितंपेयंशर्करामधुयोजितम् । ज्वरेतृतीयकेपुंसांतृष्णादाहसमन्विते ॥ अपामार्गजटाकट्यांलोहितैःसप्ततन्तुभिः । बद्धावारेरवेस्तूर्णंज्वरंहन्तितृतीयकम् ॥ स्थिरातामलकीदारुशिवावृषमहौषधैः । सितामधुयुताक्वाथश्चतुर्थकहरःपरःस्थिराशालिपर्णी ॥ तामलकीभूधात्रीशिवाहरीतकी । वृषोवासा ॥ ४०७ ॥

वैद्य तृतीयक और चातुर्थिक ज्वरमें साधारण चिकित्साको छोड़कर विशेष कहीहुई चिकित्सा करे खस चन्दन मोथा गिलोय धनियां और सोंठ इनके क्वाथ में शकर और सहत डालकर तृषा तथा दाह युक्त तृतीयक ज्वरमें पिये रविवार के दिन लटजीरेकी जड़ को लाल सात डोरों के द्वारा कमरमें बांधने से तृतीयक ज्वरका नाश होताहै शालि पर्णी भुई आंवला देवदारु हड़ वांसा और सोंठ इनके काढ़ेमें शकर और सहत डालकर पीनेसे चातुर्थिक ज्वरका नाश होता है ॥ ४०७ ॥

अगस्तिपत्रस्यरसेननस्यंनिहन्तिचातुर्थिकमुग्रवीर्य्यम् । शिरीषपुष्पस्यनिशाद्वयस्य कल्केनवातद्घृतसंयुतेनतत्नस्यमिति ॥ ४०८ ॥

अगस्त के पत्तों के रसकी नास लेनेसे और सिरस के फूल हल्दी तथा दारु हल्दी के कल्क में घी डाल कर नास लेनेसे चातुर्थिक ज्वरका नाश होताहै ॥ ४०८ ॥

ज्वरस्यवेगंकालंञ्चचिन्तयन्जीर्य्यतेतुयः । तस्येष्टैरद्भुतैर्वापिविषमैर्नाशयेत्स्मृतम् ॥

सन्ततंविषमंचापिसततंसुचिरोत्थितम्। ज्वरंसुभोजनैःपथ्यैरिष्टैश्चसमुपाचरेत्॥ सन्ततादिविपर्य्ययाणांविषमज्वराणांचिकित्सासन्ततादीनामिवकर्त्तव्या॥ ४०९॥

जो ज्वर वाला ज्वरकेवेग और समयको ध्यान करता हुआक्षीण होताहै उसकी यादकोवांछित आश्चर्यकारी अथवा विषम वस्तुओं के द्वारा नाश करनी चाहिये बहुत काल से हुए संतत और सतत नाम विषमज्वरमें सुन्दर हितकारी और वाँछित भोजनो से चिकित्सा करे संततादि विपर्य्यय विषम ज्वरों की चिकित्सा सन्ततादिके समान करनी चाहिये॥ ४०९॥

शीताभिभूतेपुरुषेकुर्य्याच्छीतहरींक्रियाम्। दाहाभिभूतेतुविधिविदध्याद्दाहनाशनम्॥ आच्छादनैर्बहुतरैर्गुरुभिःकम्बलादिभिः। तूलवत्यामहाशीतंशीतादिज्वरिणोहरेत् तूलवतीतुरजाईइतिलोके। तंस्तनाभ्यांसुपीनाभ्यांपीवरोरुर्नितम्बिनी॥ युवतीगाढ़मालिंगेत्तेनशीतंप्रशाम्यति। कान्तांगसंगसञ्जातंतद्वत्शीतेनिवारिते॥ प्रह्लादंचास्य विज्ञायपृथक्तांकारयेत्स्त्रियम्। ततोदाहेतुसञ्जातेपत्रैरेरण्डसम्भवैः॥ शीतलैर्द्धारितैरंगैर्दाहंतस्यापनोदयेत्॥ ४१०॥

शीत युक्त पुरुष की शीत नाशक और दाह युक्त पुरुष की दाह नाशक चिकित्साकरे शीतादिज्वर वालेको बहुत शीत लगने पर रजाई और कंबल आदिक बहुत भारी ओढ़ने की चीजोंसे शीत को निवृत्तकरे मोटी जंघावाली युवती स्त्री बहुत बड़े अपने स्तनों से उस शीत वाले पुरुष को अत्यन्त आलिंगन करे इस्से शीतका नाश होताहै और इस प्रकार स्त्रीके आलिंगन से शीतके निवृत्त होने पर उसकी कामकी इच्छा हुई जानकर उस स्त्री को हटाले फिरदाह के उत्पन्न होने पर रेंड़ीके पत्ते और शीतल वस्तुओं को शरीर पर रखनेसे दाहको नाश करे॥ ४१०॥

तालकंशुक्तिकाचूर्णंदत्तंतत्रोभयोरपि॥ नवमांशञ्चतुत्थंस्यान्मर्द्दयेत्कन्यकाद्रवैः। तत्तसंशुष्कमुपलैर्वन्यैर्गजपुटेपचेत्॥ शीतंतच्चूर्णयेच्चूर्णंगुञ्जामात्रंसितायुतम्। प्रभाते भक्षयेत्तेनयातिशीतज्वरक्षयम्॥ वान्तिर्भवतिकस्यापिकस्यचिन्नभवत्यपि। एकेनदिवसेनैवशीतज्वरहरंपरम्॥ मध्याह्नसमयेपथ्यंशिखरिण्योदनंतथा। इतिभूतभैरवचूर्णंशीतज्वरे ४११॥

शीतज्वरपर भूतभैरव चूर्ण॥

हरिताल और सीपका चूर्ण बराबर लेकर इन दोनोंका नवांभाग तूतिया मिलाके घीग्वार के रसमें घोटे फिर सूख जानेपर अरने कंडों में गजपुटके द्वारा पाककरे शीतल होजाने पर पीसकर शक्करके साथ एक रत्ती रसखाय तो इस्से शीतज्वरका नाश होताहै इस औषधिके खानेसे किसीको वमन होतीहै और किसीको नहींहोती यहएकही दिनमें शीतज्वरका नाशकरताहै इसमें मध्याह्नके समय शिखरन और भातका पथ्यदेना चाहिये॥ ४११॥

कायस्थानाकुलीतिक्तावयस्थापुरचोरकैः। सहदेवावचाकुष्ठैःशीतघ्नैर्धूपलेपनैः॥ एतैरेवौषधैःपिष्टैर्लवणक्षारसंयुतैः। साम्लैर्विपाचितंतैलमभ्यंगाच्छीतनाशनम्॥ कायस्था हरीतकी। नाकुलीरास्नाभेदःनाई इतिलोके। वयस्थागुडूची। पुरोगुग्गुलुः। चोरकः

भण्डीउरतदलाभेगठिवन । सहदेवाप्टहद्वला । क्षारोयवक्षारः । कायस्थादिधूपनंलेपनं तैलञ्च ॥ ४१२ ॥

कायस्थादि धूपनलेपन और तैल ॥

हड़ नाकुली (रासनाभेद) कुटकी गिलोय गूगल चोरक (इसके अभावमें गठिवन) सहदेई वच और कूट इनकी धूप देनेसे अथवा लेप करनेसे शीतज्वरका नाश होताहै और इन ओषधियोंके साथ नोन तथा जवाखार मिलाकर कांजीके साथ पीसकर विधि पूर्वक तेल निकाले इसके मर्दन से शीतका नाश होताहै ॥ ४१२ ॥

एरण्डस्यतुपत्राणिलिप्तभूमौनिधापयेत् । दाहादिज्वरिणोदेहेतानिपत्राणिधारयेत् ॥ तेन नश्यतिदाहोऽस्यज्वरश्चैवोपशाम्यतिदाहेशान्तेयदाशैत्यंतच्चयुक्त्यानिवारयेत् ॥४१३॥

लिपीहुई पृथ्वीमें रेंड़ीके पत्तोंको रक्खे फिर दाहादि ज्वरवालेके शरीर पर इन पत्तोंको रक्खे इस्से दाह और ज्वरका नाश होताहै दाहके शान्त होजाने पर जो शीतलगे तो उसको युक्ति पूर्वक निवृत्त करे ॥ ४१३ ॥

जघनचक्रचलन्मणिमेखलासरसचन्दनचन्द्रविलेपना । वनलतेवतनुंपरिवेष्टयेत्प्रबलदाहनिपीडितमङ्गना ॥ चन्द्रःकर्पूरः । तदङ्गसङ्गसञ्जातशैत्यैःदाहेनिवारिते । प्रह्लादश्चास्यविज्ञायतांस्त्रीमपनयेत्पुनः ॥ ४१४ ॥

नितंबोंमें चंचल मणियोंकी मेखला वाली और चंदन तथा कपूरके लेपवाली स्त्री वनकी लताके समान अत्यन्त दाहवाले पुरुषके शरीरको आलिंगन करे स्त्रीके अंग संगसे उत्पन्न हुई शीतलताके द्वारा दाहके निवृत्त होजानेपर और उस पुरुषको कामकी इच्छा उत्पन्न होनेपर उसस्त्रीको हटाले ४१४

मुर्वाचिकानागरकुष्ठमूर्वालाक्षानिशारोहितयष्टिकाभिः । सिद्धंहरेत्षड्गुणतक्रपक्वंतैलंज्वरंदाहसमन्वितंच ॥ इतिषट्तक्रतैलम् ॥ ४१५ ॥

षट् तक्र तैल ॥

सज्जी सोंठ कूट मरोड़फली लाख हल्दी और मजीठ इन ओषधियोंके द्वारा छः गुने मट्ठेमें तेलको परिपाक करके मर्दन करनेसे दाह सहित ज्वरका नाश होताहै ॥ ४१५ ॥

रास्नानागरकुष्ठचन्दननिशायष्ट्याह्वकृष्णाबलालाक्षासैन्धवसारिवामधुरसादेवाह्वरोहीतकैः ॥ सोशीराम्बुधिफेणरोहिषजलैस्तैलंपचेत्षड्गुणे । तक्रेतज्जयेत्ज्वरंदृढतरंदाहादिशीतादिकम् ॥ चन्दनमत्रश्वेतम् । मधुरसामूर्वारोहीतकःरोहिणीतिलोके । रोहिषतिरोहिततृणविशेषःजलम् । महाषट्तक्रतैलम् ॥ ४१६ ॥

महाषट् तक्रतैल ॥

रासना सोंठ कूट श्वेतचन्दन हल्दी मुलहठी पीपल बरियारा लाख सेंधानोन अनन्तमूल मरोड़फली देवदारु रोहिणी खस समुद्रफेन रोहिष सुगन्धवाला इन ओषधियोंके साथ छः गुने मट्ठेमें तेलको परिपाक करके मर्दन करनेसे दाहादि और शीतादि अत्यन्त कठिन ज्वरका नाशहोताहै ४१६

पद्मकोत्पलकल्हारमृणालबिसपौष्करैः । कुमुदोशीरमञ्जिष्ठापद्मगैरिककट्फलैः ॥ सारिवाद्वयलोध्राह्वक्षीरीखर्जुरमस्तकैः । धात्रीशतावरीयुक्तैःक्वाथेकल्केप्रयोजितैः ॥

लाक्षारसपयःशुक्तमस्तुभिःसहकांजिकैः । पक्वंतैलमिदंत्वच्यंदाहज्वरहरंपरम् ॥ लाक्षारसादिष्टथक्तैलतुल्यः । इतिपद्मकादितैलम् ॥ ४१७ ॥

पद्मकादि तैल ॥

पद्माक नीलकमल श्वेतकमल कमलकोंडएडी विष पुष्करमूल कोकावेली खस मजीठ कमल गेरू कायफल दोनों सारिवा लोध खिन्नी खजूर आंवला और शतावर इनके कल्कका काढा लाखका रस दूध सिरका दहीका तोड़ और कांजी इनके द्वारा विधि पूर्व्वक परिपाक कियाहुआ तेल त्वचाको हित और दाह ज्वरका अत्यन्त नाशक होताहै इसमें लाखके रसादिक अलग अलग तेलके समान होने चाहिये ॥ ४१७ ॥

प्रलेपकेप्रयुञ्जीतश्लेष्मज्वरहरींक्रियाम् ॥ ४१८ ॥

प्रलेपक नाम ज्वरमें कफज्वर नाशक चिकित्सा करे ॥ ४१८ ॥

रुद्रजटागोश्रृङ्गंविड़ालविष्टोरगस्यनिर्म्मोकः॥ मदनफलभूतकेश्यौवंशत्वग्रुद्रनिर्म्माल्यम् ॥ घृतयवमयूरपुच्छचन्द्रकछगलकलोमानिसर्षपाःसवचान्तः ॥ हिंगूगवास्थिमरीचाःसमभागाःछागमूत्रसंपिष्टाः । धूपनविधिनाशमयन्त्येतेसर्व्वांज्वरान्नियतम् ॥ ग्रहडाकिनीपिशाचप्रेतविकारानयंधूपः ॥ रुद्रजटाजटाधारीभूतकेशीजटामांसी । रुद्रनिर्म्माल्यंपुष्पादि । मयूरपुच्छंचन्द्रकम्इतिमाहेश्वरोधूपः ॥ ४१९ ॥

माहेश्वर धूप ॥

जटाधारी गौकासींग बिल्लीकीविष्टा सांपकी केंचुली मैनफल जटामांसी बांसकीछाल शिवजीका निर्माल्य घी जौ मोरपंख बकरेकेबाल सरसों वचहींग गौकीहड्डी और मिर्च इनऔषधियोंको बराबर लेकर बकरेके मूत्रमें पीसकर विधिपूर्व्वक धूपदेनेसे सबप्रकारके ज्वरग्रह डाकिनी पिशाच और प्रेतोंके विकार नष्ट होते हैं ॥ ४१९ ॥

सोमंसानुचरंदेवंसमातृगणमीश्वरम । पूजयन्प्रयतःशीघ्रंमुच्यतेविषमज्वरात् ॥ सोमंउमयासहितं । सानुचरंनन्द्यादिगणसहितम् । प्रयतःपवित्रः । विष्णुंसहस्रमूर्द्धानंचराचरपतिंविभुम् । स्तुवन्नामसहस्रेणज्वरान्सर्व्वान्व्यपोहति ॥ सहस्रमूर्द्धानमितिसहस्रशीर्षेत्यादिवेदाभिहितनामसहस्रेणभारतोक्तेनेत्यर्थः ॥४२० ॥

पवित्र होकर नन्दी आदिगण मातृका और पार्वतीसहित श्री शिवजीका पूजनकरने से शीघ्रही सम्पूर्ण विषमज्वरोंसे छूटजाताहै और सहस्र शिरवाले सबसंसारकेस्वामी व्यापक विष्णुभगवानकी सहस्र नाम(महाभारत अथवा वेदमेंकहेहुये)के द्वारा स्तुति करनेसे संपूर्ण ज्वरोंकानाश होताहै४२०॥

ज्वरस्यापिदेवत्वात्पूजाकार्य्या।यतश्चाहविदेहःतीर्थायतनदेवाग्निगुरुवृद्धोपसर्पणैः। श्रद्धयापूजनैश्चापिसहसाशाम्यतिज्वरःतीर्थंऋषिजुष्टंजलंआयतनम् । देवाधिष्ठितंपुरुषोत्तमक्षेत्रश्रीशैलादि । इतिविषमज्वराधिकारः ॥ ४२१ ॥

देवताहोनेसे ज्वरकाभी पूजन करना चाहिये क्योंकि विदेहने कहाहै कि तीर्थ (ऋषियोंसे सेवन किया हुआजल) आयतन (देवताओंसे युक्तपुरुषोत्तम क्षेत्र और श्रीशैलादिक) देवता अग्नि गुरू

तथावृद्ध इनकी उपासना करनेसे और भक्तिपूर्वक पूजनकरनेसे सहसा ज्वरका नाशहोताहै इति विषम ज्वराधिकार ॥ ४२१ ॥

अथरसादिधातुगतज्वरमाह ॥

गुरुताहृदयोत्क्लेशःसदनंछर्द्यरोचकौ । रसस्थेतुज्वरेलिङ्गंदैन्यंचास्योपजायते ॥ गुरुतागात्राणांहृदयस्थस्यदोषस्योपचितत्वाद्वमनमिवदैन्यंक्लीवचित्तता । रसस्थेरसधातुगते । अथतस्यचिकित्सा । रसस्थेतुज्वरेतस्मिन्कुर्याद्वमनलङ्घने ॥ ४२२ ॥

रसादिधातुओं में गयेहुएज्वरका वर्णन ॥

ज्वरके रसधातुमें प्राप्तहोजाने पर शरीरमें भारीपन हृदयमें दोषके इकट्ठे होनेसे जीमिचलानापीड़ा छर्दि अरुचि और दीनता होतीहै ज्वरके रसधातुमें प्राप्तहोनेपर वमन और लंघन करानाचाहिये ४२२॥

अथरक्तगतज्वरमाह ॥

रक्तनिष्ठीवनंदाहोमोहश्छर्दनविभ्रमौ । प्रलापःपिडिकातृष्णारक्तप्राप्तेज्वरेनृणाम् ॥ मोहोव्यग्रचित्तता । अथतस्यचिकित्सा । सेकःसंशमनोलेपःरक्तमोक्षमसृग्गते ॥४२३॥

रक्तधातु में गयेहुए ज्वरका वर्णन ॥

ज्वरके रक्त धातु में प्राप्त होने पर दाह चित्तकी व्यग्रता छर्दि भ्रम प्रलाप पिडिका और तृषाहोतीहै इसमें परिषेक शमनलेप और रुधिर निकलवाना यहसब चिकित्सा करवानी चाहिये ४२३॥

अथमांसगतमाह ॥

पिण्डकोद्वेष्टनंतृष्णासृष्टमूत्रपुरीषता । उष्णान्तर्दाहविक्षेपौग्लानिःस्यान्मांसगेज्वरे । उष्णान्तर्मोहविक्षेपावितिपठन्तितत्रउष्णाअन्तः विक्षेपःहस्तपादादिचालनम् तस्यचिकित्सा तीक्ष्णंविरेकंचतथाकुर्यात्मांसगतेज्वरे ॥ ४२४ ॥

मांसमें गयेहुये ज्वरका वर्णन ॥

ज्वरके मांस में प्राप्त होने परपिण्डलियोंमें पीडा तृषा मलमूत्रका निकलना शरीरके भीतर उष्णता हाथ पैरोंका पटकनाओर ग्लानि होतीहै मांसमेंगये हुएज्वर वालेको तीक्ष्ण वमन करानीचाहिये ४२४॥

मेदोगतमाह ॥

भृशंस्वेदस्तृषामूर्छा प्रलापश्छर्दिरेवच । दौर्गन्ध्यारोचकौग्लानिर्मेदस्थेचासहिष्णुता ॥ भृशंस्वेदःमेदोमलत्वात् तस्यचिकित्सा मेदस्थेमेदशोनाशं ॥ ४२५ ॥

मेदमें गयेहुए ज्वरका वर्णन ॥

ज्वरकेमेदधातुमें जानेपर अत्यन्त स्वेद तृषा मूर्छा प्रलाप छर्दि शरीरमें दुर्गन्धि अरुचि ग्लानि और असहिस्नुता (बर्दास्तनहोना) होतीहै इस में मेद नाशक चिकित्सा होनीचाहिये ॥ ४२५ ॥

अस्थिगतमाह ॥

भेदोस्थ्नांकूजनंश्वासोविरेकश्छर्दिरेवच । विक्षेपणञ्चगात्राणांविद्यादस्थिगतेज्वरे ॥ तस्यचिकित्सा । अस्थिस्थेतुज्वरेकुर्य्याद्वातनाशनकंविधिम् । वस्तिकर्म्मप्रयोक्तव्यमभ्यंगोन्मर्दनन्तथा ॥ ४२६ ॥

हड्डियोंमें गयेहुए ज्वरका वर्णन ॥

ज्वरके हड्डियोंमें प्राप्त होनेपर हड्डियोंमें पीड़ा कंठमें अव्यक्त शब्द श्वास दस्तआना छर्दि और अंगोंका पटकना यह सब लक्षण होतेहैं इसमें वात नाशक चिकित्सा वस्तिकर्म तैलादि मर्दन और उबटन यह सब करने चाहिये ॥ ४२६ ॥

मज्जागतमाह ॥

तमःप्रवेशनंहिक्काकासःशैत्यंवमिस्तथा। अन्तर्दाहोमहाश्वासोमर्मच्छेदश्चमज्जगे॥ असाध्यत्वान्नात्रचिकित्सा ॥ ४२७ ॥

मज्जामें गयेहुये ज्वरका वर्णन ॥

ज्वरके मज्जामें प्राप्त होने पर सब ओर अंधकार सा मालूम होना हिचकी खांसी बाहर शीत भीतर दाह छर्दि बहुत श्वास और मर्म्मोंमें छिदने के समान पीड़ा होतीहै यह ज्वर असाध्य होताहै इसीसे इसकी चिकित्सा नहींकही ॥ ४२७ ॥

शुक्रगतमाह ॥

मरणंप्राप्नुयात्तत्रशुक्रस्थानगतेज्वरे। शेफसस्तब्धतामोक्षःशुक्रस्यतुविशेषतः ॥ ननुशुक्रगतेमरणमित्युक्तंतच्चशुक्रंसर्वदेहगं। नैवम् स्वाश्रयस्थशुक्रेगेमरणम् ॥ ४२८ ॥

वीर्य्यमें गयेहुए ज्वरका वर्णन ॥

ज्वरके वीर्य्य स्थानमें प्राप्त होजाने पर लिंगकी स्तब्धता और वीर्य्यका बहुत निकलना यह लक्षण होतेहैं इसज्वरमें रोगीनहीं जीताहै अबयह सन्देह होताहै कि वीर्य्य में ज्वरके जानेपर मृत्यु होतीहै यह कहागयाहै और वीर्य्य सम्पूर्ण शरीरमें रहताहै यह कैसे होसक्ताहै इसका उत्तर यह है कि वीर्य्यके निजस्थानमें ज्वरके जानेपर मृत्युहोतीहै ॥ ४२८ ॥

अथजीर्णज्वराधिकारमाह ॥

तत्रजीर्णज्वरस्यसामान्यंलक्षणमाह । योद्वादशेभ्योदिवसेभ्यःऊर्द्ध्वंदोषत्रयेभ्योद्विगुणेभ्यऊर्द्ध्वं। नृणांतनौतिष्ठतिमन्दवेगोभिषग्भिरुक्तोज्वरएषजीर्णः ॥ ४२९ ॥

जीर्णज्वर का अधिकार जीर्ण ज्वरका सामान्य लक्षण ॥

बारह दिनके उपरान्त अथवा तीनों दोषोंकी अवधिके दूने दिनोंसे अधिक जो ज्वर मन्दवेग समेत शरीर में रहताहै उसको जीर्ण ज्वर कहतेहैं ॥ ४२९ ॥

जीर्णज्वरस्यैवविशेषंवातबलासकमाह ॥

नित्यंमन्दज्वरोरूक्षःशूनःकृच्छ्रेणसिध्यति । स्तब्धांगःश्लेष्मभूयिष्ठोनरोवातबलासकी ॥ वातबलासकीनरइंदृग्भवेत्। शूनःशोथी। श्लेष्मभूयिष्ठोबहुश्लेष्मकः ॥ ४३० ॥

जीर्णज्वर विशेष वात बलासक का लक्षण ॥

जिसके वात बलासक ज्वर होताहै उसके ज्वर का वेग मन्द सूजन रूक्षता शरीरमें शिथिलता और कफ की अधिकता होती है ॥ ४३० ॥

अथजीर्णज्वरस्यसामान्यचिकित्सा ॥

जीर्णज्वरीनरःकुर्यान्नोपवासंकदाचन । लङ्घनात्सम्भवेत्क्षीणोज्वरस्तुस्याद्बलीयतः॥

पुराणेऽपिज्वरेदोषायद्यपथ्ये पुनःस्तथा । लङ्घयेत्तत्रतत्पश्चात्पूर्व्वामेवाचरेत्क्रियाम् ॥ तथापूर्व्ववत् ॥ ४३१ ॥

जीर्ण ज्वर की सामान्य चिकित्सा ॥

जीर्णज्वर वाला मनुष्य उपवास कभी न करे क्योंकि उपवास करने से वह क्षीण होजाताहै और ज्वर बलवान् होजाताहै और जो कुपथ्य से पुराने ज्वर में भी नवीन ज्वरके समान दोष उत्पन्न होयँ तो लंघनकराना चाहिये और फिर पहले के समान चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ४३१

निदिग्धिकानागरकामृतानांक्वाथंपिबेन्मिश्रितपिप्पलीकं । जीर्णज्वरारोचककासशूलश्वासाग्निमान्द्यार्दितपीनसेषु ॥ हन्त्यूर्द्ध्वजामयम्प्रायःसायन्तेनोपयुज्यते । इति त्रिकण्टकक्काथः ॥ ४३२ ॥

त्रिकंटक क्काथ ॥

भटकटैया सोंठ और गिलोय इनके काढ़ेमें पीपल मिलाकर पीनेसे जीर्णज्वर अरुचि खांसी शूल श्वास मंदाग्नि पीनस और ऊर्द्ध्वगत रोगनष्ट होतेहैं यह सायंकालमें पीनाचाहिये ॥ ४३२ ॥

पिप्पलीमधुसंयुक्तःक्काथःछिन्नोद्भवोद्भवः । जीर्णज्वरकफध्वंसीपञ्चमूलकृतोऽथवा ॥ अमृतायाःकषायन्तुशीतलीकृतमीरितम् । मधुपादयुतम्पीतंजीर्णज्वरहरम्परम् ॥ पिप्पलीमधुसम्मिश्रंगुडूचीस्वरसंपिबेत् । जीर्णज्वरकफप्लीहकासारोचकनाशनम् ॥ जीर्णज्वरेऽग्निमान्द्येचशस्यतेगुडपिप्पली । कासाजीर्णारुचिश्वासहृत्पाण्डुकृमिरोगनुत् ॥ द्विगुणःपिप्पलीचूर्णाद्गुडोऽत्रभिषजांमतः । पिप्पलीमधुसंयुक्तामेदःकफविनाशिनी ॥ श्वासकासज्वरहरीपाण्डुप्लीहोदरापहा ॥ ४३३ ॥

गिलोय तथा पंचमूलके काढ़ेमें पीपल और सहत मिलाकर पीनेसे जीर्ण ज्वरका नाश होताहै गिलोयके काढ़ेको शीतल करके उसमें चतुर्थांश सहत मिलाके पीनेसे जीर्णज्वरका नाशहोता है गिलोयके स्वरसमें पीपल और सहत छोड़कर पीनेसे जीर्णज्वर कफ प्लीहा खांसी तथा अरुचि का नाश होताहै पीपलके चूर्णका दूना गुड़ मिलायके खानेसे जीर्णज्वर मन्दाग्नि खांसी अजीर्ण अरुचि श्वास पांडु तथा कृमिरोगका नाश होताहै सहतके साथ पीपलखानेसे मेद कफ श्वास खांसी ज्वर पांडु प्लीहा और उदररोगका नाशहोताहै ॥ ४३३ ॥

आमलंचित्रकंपथ्यापिप्पलीसैन्धवन्तथा ॥ चूर्णितोऽयङ्गणोज्ञेयःसर्व्वज्वरहरःपरः । भेदीरुचिकरःश्लेष्महन्तादीपनपाचनः ॥ इतिआमलक्यादिचूर्णम् ॥ ४३४ ॥

आमलक्यादि चूर्ण ॥

आमला चीता हड़ पीपल और सेंधानोन इनसबका चूर्ण सर्वज्वरनाशक भेदी रुचिकारी कफनाशक दीपन और पाचन होताहै ॥ ४३४ ॥

द्राक्षामृताशटीशृंगीमुस्तकंरक्तचन्दनम् । नागरंकटुकापाठाभूनिम्बःसदुरालभः ॥ उशीरंधान्यकम्पद्मम्बालकंकण्टकारिका । पुष्करंपिचुमंदञ्चदशाष्टांगमिदंस्मृतम् ॥ जीर्णज्वरारुचिश्वासकासश्वयथुनाशनम् । द्राक्षादिरष्टादशांगक्काथः ॥ ४३५ ॥

द्राक्षादि अष्टादशांग क्वाथ ॥

दाख गिलोय कचूर काकड़ासिंगी मोथा लालचन्दन सोंठ कुटकी पाढ़ा चिरायता जवासा खस धनियां पद्माक सुगन्धवाला भटकटैया पुष्करमूल और नीम इनसबका क्वाथसेवन करनेसे जीर्णज्वर अरुचि श्वास खांसी और सूजनका नाशहोताहै ॥ ४३५ ॥

त्रिवृद्ध्यापञ्चवृद्ध्यावासप्तवृद्ध्याथवापिवा । गव्यक्षीरेणसंपिष्टांपिवेद्दशदिनानिहि ॥ तथैवापनयेदेताएवंविंशतिवासरान् । पिवतांज्वरशान्तिःस्यात्पाण्डुरोगश्चशाम्यति ॥ कासश्वासोऽग्निमान्द्यञ्चकफाधिक्यञ्चनश्यति । त्रयादिवृद्धिर्यथाकफवृद्धिर्दुग्धवृद्धिर्यथाग्निवृद्धिः ॥ (इतिवर्द्धमानपिप्पली ॥ ४३६ ॥

वर्द्धमान पिप्पली ॥

पीपलको तीन पांच अथवा सातके क्रमसे प्रतिदिन वढ़ाताहुआ गौके दूधमें पीसकर दशदिनतक पिये और ग्यारहवें दिनसे इसीप्रकार दश दिनतक घटावे इसप्रकार वीस दिनतक पीपलके पीने से ज्वर पांडुरोग खांसी श्वास मन्दाग्नि और कफकी अधिकताका नाशहोताहै यहां तीन आदिकी वृद्धि कफकी वृद्धिके अनुसार और दूधकी वृद्धि जठराग्निके अनुसार करनीचाहिये ॥ ४३६ ॥

वातश्लेष्मज्वरोक्तास्यात्क्रियावातबलासके ॥ जीर्णज्वरेकफेक्षीणेदाहेतृष्णासमन्विते ॥ पयःपीयूषसदृशंतन्नवेतुविषोपमम् । चन्दनाद्यंहितंतैलंशोषाधिकारकीर्त्तितम् ॥ तथानारायणंतैलंजीर्णज्वरहरंपरम् । इतिजीर्णज्वराधिकारः ॥ ४३७ ॥

वात बलासक ज्वरमें वात कफ ज्वरमें कहीहुई चिकित्सा करे जीर्णज्वर कफकी क्षीणता और तृषा सहित दाह में दूध अमृतके समानहैं और नवीन ज्वरमें विषके समान शोषाधिकारमें कहा हुआ चन्दनादि तैल और नारायण तैल जीर्णज्वर का अत्यन्त नाशकहै इति जीर्ण ज्वराधिकार ४३७॥

अथ दुर्ज्जलजनितस्यज्वरस्यचिकित्सा ॥

हरीतकीनिम्बपत्रंनागरंसैन्धवोऽनलः । एषांचूर्णंसदाखादेद्दुर्ज्जलज्वरशान्तये ॥ इतिहरीतक्यादिचूर्णम् ॥ ४३८ ॥

बुरेजलसेउत्पन्नहुए ज्वरकी चिकित्सा हरीतक्यादिचूर्ण ॥

हड़ नींबकी पत्ती सोंठ सेंधानोन और चीता इनका चूर्ण सदैव सेवनकरनेसे बुरेजलसे उत्पन्न हुए ज्वरका नाशहोताहै ॥ ४३८ ॥

अरुचिमनलमान्द्यंपीनसश्वासकासानुदरमुदकदोषानाशुहन्यादशेषान् ॥ अनयतितनुकान्तिंचित्तनेत्रप्रसादम् । पलपरिमितशुण्ठीक्षौद्रसिद्धःकषायः ॥ इतिशुण्ठीक्वाथः ॥ ४३९ ॥

सुंठीक्वाथ ॥

चारतोले सोंठके काढ़ेमें सहत डालकर पीनेसे अरुचि मंदाग्नि पीनस श्वास खांसी उदर और बुरेजलसेहुए दोषका नाशहोताहै तथा कांतिकी वृद्धि और चित्ततथा नेत्रोंमें प्रसन्नता होतीहै ४३९॥

विषंभागद्वयंदग्धंकपर्दंपञ्चभागकम् । मरिचंनागरञ्चैवचूर्णंवस्त्रेणशोधयेत् ॥ आर्द्रकस्यरसेनास्यकुर्य्यान्मुद्गनिभांवटीम् । वारिणावटिकायुग्मंप्रातःसायञ्चभक्षयेत् ॥ अयं

रसोज्वरेयोज्यःसामेदुर्ज्जलजेऽपिच । अजीर्णाध्मानविष्टम्भशूलेषुश्वासकासयोः ॥ इतिदुर्ज्जलजेतारसः ॥ ४४० ॥

दुर्जलजेतारस ॥

विष २ भाग कौड़ीकीभस्म ५ भाग सोंठ ५ भाग और मिर्च ५ भाग इनसब औषधियोंके चूर्ण को वस्त्रमें छानकर अदरकके रसमें मूंगके समान गोलीबनावे प्रातःकाल और सायकाल जलके साथ दो गोलीखाय इस्से आमसहितज्वर बुरेजलसे होनेवालाज्वर अजीर्ण अफरा विष्टंभ-शूलश्वास और खांसीका नाशहोता हे ॥ ४४० ॥

पटोलमुस्तामृतवल्लिवासकंसनागरंधान्यकिराततिक्तकम् । कषायमेषांमधुनापिबेन्नरोनिवारयेद्दुर्ज्जलदोषमुल्बणम् ॥ इतिपटोलादिक्वाथः ॥ ४४१ ॥

पटोलादि क्वाथ ॥

परवल मोथा गिलोय वांसा सोंठ धनिया चिरायता इनका क्वाथ सहत डालकर पीनेसे बुरेजल से होनेवाले बहुत वडेदोषको भी नाशकरता है ॥ ४४१ ॥

किराततिक्तात्रिवृदम्बुपिप्पलीविडङ्गविश्वाकटुरोहिणीरजः । निहन्तिलीढंमधुनातिसत्वरंसुदुस्तरंदुर्जलदोषजंज्वरम् ॥ इतिकिरातादिचूर्णम् ॥ ४४२ ॥

किरातादि चूर्ण ॥

चिरायता निसोथ सुगन्धवाला पीपल वायविडंग सोंठ और कुटकी इनसबको चूर्णकरके सहत के संगचाटनेसे बहुत शीघ्र बुरेजलके दोषसे उत्पन्नहुआ अत्यन्त दुस्तरज्वर शान्तहोताहै ॥ ४४२ ॥

भोजनाग्रेनरैःभुक्तंशुण्ठीजाज्यभयोत्थितम् । कल्कन्तुसेवितंनित्यंनानादेशोद्भवंजलम् ॥सहार्द्रकयवक्षारोपीत्वाकोष्णेनवारिणा॥नानादेशसमुद्भूतंवारिदोषमपोहति ॥४४३॥

भोजनके पहले सोंठ कालाजीरा और हड़ इनकी चटनी पीसकर खानेसे अनेक देशोंके जलसे उत्पन्न हुआ ज्वरशान्त होताहै अदरक और जवाखार गरमजलके साथ पीनेसे अनेक देशोंके जलसे उत्पन्न हुआ दोषशान्त होताहै ॥ ४४३ ॥

अथ साध्यज्वरस्यलक्षणमाह ॥

बलवत्स्वल्पदोषेषुज्वरःसाध्योऽनुपद्रवः ॥ ४४४ ॥

साध्यज्वरका लक्षण ॥

जिसज्वरमें रोगी सबलहोय दोषथोड़े होयँ और कोई उपद्रव नहोयँ सोसाध्य हे ॥ ४४४ ॥

अथ ज्वरस्योपद्रवानाह ॥

श्वासोमूर्च्छारुचिश्छर्दिस्तृष्णातीसारविग्रहाः । हिक्काकासाङ्गदाहश्चज्वरस्योपद्रवा दश ॥ ४४५ ॥

ज्वरके उपद्रव ॥

श्वास मूर्च्छा अरुचि छर्दि तृषा अतीसार मलकारुकना हिचकी खांसी और दाह ये दशज्वरके उपद्रवहैं ॥ ४४५ ॥

अथ प्रसङ्गादुपद्रवाणांचिकित्साविशेषमाह ॥

सञ्जातोपद्रवोव्याधिस्त्याज्योनस्याच्चिकित्सकैः । व्याधौशान्तेप्रणश्यन्तिसद्यःसर्व्वे

ऽप्युपद्रवाः ॥ अतोव्याधिंजयेद्यत्नात्पूर्वंपश्चादुपद्रवान् । भिषग्यःकुशलःसोऽत्रजयेत्पूर्व्वमुपद्रवम् ॥ तेष्वपिप्रचुरेपुप्राङ्नाशयेदाशुकारिणम् । मूलव्याधिंजयेत्पूर्व्वंयत्रयोवा भवेद्वली ॥ अविरोधेनकार्य्यातदुभयोरपिचाक्रिया ॥ ४४६ ॥

प्रसंगसेज्वरके उपद्रवोंकीविशेष चिकित्सा ॥

वैद्यउपद्रवों के उत्पन्न होनेपर रोगको छोड़नदेवे क्योंकि रोगके शान्तहोजाने पर सम्पूर्ण उपद्रव शीघ्रही शान्तहोजाते हैं इसीसे पहले रोगको नाशकरे पीछे उपद्रवोंकी चिकित्साकरे और जो चतुरवैद्य होय तो पहले उपद्रवोंकोजीते परन्तु उपद्रवोंमें से जो उपद्रव वहुत शीघ्र हानिकारी होवे उसकी चिकित्सा पहले करे एक दूसरेके विरोधसे रहित पहले मुख्यरोगकी चिकित्साकरे अथवा जो बलवान होय उसकी चिकित्साकरे ॥ ४४६ ॥

तत्रज्वरेश्वासस्यचिकित्सा ॥

सिंहीव्याघ्रीताम्रमूलीपटोलीशृंगीपद्मापुष्करंरोहिणीच । शांकंशट्याःशैलमल्याश्च वीजंश्वासंहन्यात्सन्निपातंदशांगः ॥ सिंहीवड़ीकटेया । व्याघ्रीलघुकण्टकारी । ताम्रमूलीदुरालभा । रोहिणीकटुकी । शैलमल्लीकोरैया । दशांगप्रयोगः ॥ ४४७ ॥

ज्वरवालेके श्वासकी चिकित्सा ॥

बड़ी भटकटैया छोटी भटकटैया जवासा पटोली काकड़ासिंगी पद्माक पुष्करमूल कुटकी कचूर फाशाक कुरैया का बीज इनकाक्राथ सेवन करने से सन्निपातजश्वास का नाश होता है इतिदशांग प्रयोग ॥ ४४७ ॥

भार्गीनिम्बघनाभयामृतलताभूनिम्बवासाविषा । त्रायंतीकटुकावचात्रिकटुकस्योनाकशक्रद्रुमैः ॥ रास्नायासपटोलपाटलशटीदार्व्वीविशालात्रिवृत् । ब्राह्मीपुष्करसिंहिकाद्वयनिशाधात्र्यक्षदेवद्रुमैः ॥ क्राथोऽयंखलुसन्निपातनिवहान्द्वात्रिंशतांपानतो । दुर्द्धर्षान्निजतेजसाविजयतेसर्प्पान्गरुत्मानिव ॥ किञ्चश्वासबलासकासगुदरुग्हृद्रोगहिक्कामरुन्मन्यास्तम्भगलामयार्द्दितमलाविष्टम्भबध्मानपि ॥ विषाअतीसशक्रद्रुमःवकुलइतिलोके । देवद्रुमोदेवदारु । इतिद्वात्रिंशत्क्राथः ॥ ४४८ ॥

द्वात्रिंशत्क्राथ ॥

भारंगी नींब मोथा हड़ गिलोयचिरायता वांसा अतीस त्रायमाणा कुटकी वच सोंठ पीपल मिर्च सोनापाठा मोलसरी रासना जवासा पर्व्वल पटोली कचूर गाजवां इन्द्रायण निसोथ ब्राह्मी पुष्करमूल दोनोंभटकटैया हल्दी आंवला बहेड़ा और देवदारु इनका काढ़ा सर्पोंको गरुड़जी के समानसन्निपातों को जीतता है और श्वास कफ खांसी गुदाकीपीड़ा हृदय के रोग हिचकी वात गलेके पीछे की नसका जकड़ना गलेके रोग अर्दितवात विष्टंभ तथा अध्मको नाशकरता है ॥ ४४८ ॥

मधुनाकृष्णाकट्फलकर्कटशृंगीभवंचूर्णं । श्वासामयमहोग्रैर्लीढ्वालोकःसुखीभवति ॥ वन्योपलाग्नितापितदात्रस्याग्रेणपञ्जरेदाहः । अपहरतिश्वासामयसंशयंभाषितंमुनिभिः ॥ ४४९ ॥

पीपल कायफल और काकड़ासिंगी के चूर्णको सहत के साथ चाटने से बहुतबढ़े हुये श्वासरोग कानाश होता है अरने कंडोंमें खुरपे को गरम करके पांजर में दागनेसे निस्सदेह श्वास रोगका नाश होता है यहमुनिलोगोंने कहा है ॥ ४४९ ॥

अथ ज्वरेमूर्च्छायामूचिकित्सा ॥

आर्द्रकस्यरसैर्न्नरयंमूर्च्छायामाचरेन्नरः । अञ्जनञ्चप्रयुञ्जीतमधुसिन्धुशिलोषणैः ॥ शीताम्भसाक्षिसेकःसुरभिर्धूपः सुगन्धिपुष्पञ्च । मृदुतालवृन्तवातःकोमलकदलीदल स्पर्शः ॥ ४५० ॥

ज्वर में मूर्च्छा की चिकित्सा ॥

अदरखके रसकी नासलेने से और सहत सेंधानोन मैनशिल और मिर्चको पीसकर अंजनलगानेसे मूर्च्छाकानाश होता है शीतल जलको नेत्रों में सींचनेसे सुगन्धित धूप तथा पुष्पोंसे कोमल पंखेकी वायुसे और कोमल केलेके पत्तोंके स्पर्शसे मूर्च्छाका नाशहोता है ॥ ४५० ॥

अथ ज्वरेऽरुचेश्चिकित्सा ॥

अरुचौतुशृङ्गवेरजरसकैःसोष्णैःसासिन्धुजैःकवलः ॥ सिन्धूत्थमातुलुंगीफलकेशर धारणंवक्के ॥ ४५१ ॥

ज्वर में अरुचिकी चिकित्सा ॥

अरुचिमें गरम अदरक के रसको सेंधानिमक मिलाकर मुखमें रक्खे अथवा नींबूके रस में सेंधानिमक मिलाकर मुखमें रक्खे ॥ ४५१ ॥

अथ ज्वरेछर्देश्चिकित्सा ॥

क्वाथोगुडूच्याःसमधुःसुशीतःपीतःप्रशान्तिंवमनस्यकुर्य्यात् । विड्माक्षिकाणांमधुना ऽवलीढ्वासचन्दनाशर्करयान्विताचा ॥ ४५२ ॥

ज्वर में छर्दिकी चिकित्सा ॥

गिलोय के काढ़ेको ठंढाकर के सहत डालकर पीनेसे छर्दिका नाश होताहै मक्खी की वीटको सहत के साथ चन्दन अथवा शक्कर युक्त चाटने से छर्दिका नाशहोता है ॥ ४५२ ॥

अथज्वरेतृष्णायाश्चिकित्सा ॥

दन्तशठजम्भीरबीजपूरकदाड़िमवदरैः सचुक्रकैर्वदनेलेपोजयतिपिपासामथरजतगु टीमुखान्तःस्था ॥ शीतम्पयःक्षौद्रयुतंनिपीतमाकण्ठमाश्वेवतदुद्वमेच्च । तर्षंशमयेद्विच क्केधृत्वाथवाक्षौद्रवटाग्रलाजाम् ॥ ४५३ ॥

ज्वर में तृषाकी चिकित्सा ॥

बिजौरा नींबू जंभीरी नींबू अनार बेर और चूका इनसब औषधियों को मुख में लेप करनेसे और चाँदीकी गोली को मुखमें रखने से तृषाका नाश होताहै सहत युक्तठंढेदूधको गलेतक पीकर शीघ्र ही वमन करने से अथवा सहत बर्गद के अंकुर और खीलों को एक में मिलाकर मुखमें रखने से तृषा का नाश होता है ॥ ४५३ ॥

अथज्वरेऽतीसारस्यचिकित्सा॥

लङ्घनमेकंमुक्तानान्यदस्तीहभेषजंबलिनः । समुदीर्णदोषनिचयंशमयतितत्पाचयेद्द

पिच ॥ वत्सादनीवत्सकवारिवाहविश्वम्भरानिम्बविपासविश्वा । ज्वरेतिसारंस्वरितंजयन्तिविश्वामृतावत्सकवारिवाहाः (विश्वम्भराभूनिम्बः) पाठामृतापर्पटमुस्तविश्वाकिराततिक्तेन्द्रयवान्विपाच्यांपिवनहरत्येवहठेनसर्वानूज्वरातीसारानपिदुर्निवारान् ४५४॥

ज्वर में अतीसार की चिकित्सा ॥

बलवान ज्वर वालेको अतीसार में लंघनके सिवाय और कोई औषध नहीं है लंघनसे बढ़े हुये दोषोंकी शान्ति और परिपाक होता है गिलोय कुरैया मोथा चिरायता नींब धर्तास और सोंठइनके क्वाथ से शीघ्रही ज्वरके अतीसार का नाशहोता है सोंठ गिलोय कुरैया और मोथा इनके काढ़ेसे अतीसार कानाशहोताहै पाठा गिलोय पित्तपापड़ा मोथा सोंठ चिरायता और इन्द्रजौ इनके काढ़े के पीनेसे सम्पूर्ण दुर्निवार्य्य ज्वरातीसारों का भी नाशहोताहै ॥ ४५४ ॥

अथज्वरेविड्ग्रहस्यचिकित्सा ॥

विड्ग्रहेवातजित्कर्म्मकुर्य्यादत्रानुलोमनम् । मलम्प्रवर्तयेदाशुतीक्ष्णाभिःफलवर्त्तिभिः ॥ पथ्यारग्वधतिक्तात्रिवृदामलकैःश्रृतन्तोयम् । जीर्णज्वरेविबन्धेदद्यादाश्वेवविड्ग्रहःशाम्येत् ॥ ४५५ ॥

ज्वरमें मलरुक जानेकी चिकित्सा ॥

ज्वरमें मलके रुकजाने पर वात नाशक तथा वातकी नीचे लेजानेवाली चिकित्सा करे और तीक्ष्ण फल वर्त्तियों के द्वारा मलको निकाले हड़ अमलतास कुटकी निसोथ और आंवला इनके काढ़े को पीनेसे जीर्णज्वर में मलके रुकनेका नाश होताहै ॥ ४५५ ॥

अथज्वरेहिक्कायाश्चिकित्सा ॥

नीरेणसिन्धूत्थरजोऽतिसूक्ष्मंनस्येननूनंविनिहन्तिहिक्काम् । शुण्ठीहठाद्वासितयासमेताधूपोऽथवाहिंगुसमुद्भवश्च ॥ ४५६ ॥

ज्वरमें हिचकी की चिकित्सा ॥

सेंधानोन को जलमें महीन पीसकर नासलेनेसे अथवा सोंठ शक्करमें मिलाकर नास लेनेसे वा हींग की धूपदेने से हिचकी का नाश होताहै ॥ ४५६ ॥

अथज्वरेकासस्याचिकित्सा ॥

कासेकणाकणामूलंकलिंगद्रुमफलंरजः । सविश्वभेषजंलिह्यान्मधुनावाट्रूपाद्रसम् ॥ (रजःपर्पटकम्) पुष्करमूलकटुत्रिकशृंगी कट्फलयासककारविकाभिः । मधुललिताभिरयंखलुलेहःकासरिपुःकफरोगहरश्च ॥ ४५७ ॥

ज्वरमें खांसीकी चिकित्सा ॥

ज्वरमें खांसी आनेपर पीपल पीपलामूल बहेड़ा पित्तपापड़ा और सोंठ इनके चूर्ण को सहत के साथ चाटे अथवा वांसे के रस को सहत के साथ चाटे पुष्करमूल सोंठ पीपल मिर्च काकड़ासिंगी कायफल जवासा और कालाजीरा इन सब के चूर्ण को सहत के साथ चाटनेसे खांसी और कफ केरोगों का नाश होताहै ॥ ४५७ ॥

अथज्वरेदाहस्यचिकित्सा ॥

दाहाधिकारेलिखितंदाहेकुर्याच्चिकित्सितम्।परंज्वरेविरुद्धंयन्नोचितंतच्चिकित्सितम् ४५८

ज्वरमें दाहकी चिकित्सा ।

दाहाधिकारमें कही हुई चिकित्सा दाहमें करे, परन्तु ज्वर में जो विरुद्ध होयतो वह चिकित्सा नकरे ॥ ४५८ ॥

अथसुखसाध्यस्यज्वरस्यलक्षणम् ॥

सन्तापोऽभ्यधिकोवाह्येतृष्णादीनांचमार्दवम् । वहिर्वेगस्यलिंगानिसुखसाध्यत्वमेवच । तृष्णादीत्यादिशब्देनान्तर्दाहसन्ध्यास्थिव्यथाश्वासाग्रह्यन्तेतेषांमार्दवमल्पता । वहिर्वेगस्यज्वरस्य । वर्षाशरद्वसन्तेषुवाताद्यैःप्राकृतःक्रमात् । प्राकृतःसुखसाध्यस्तुज्वरःसुरभिसम्भवः (सुरभिर्वसन्तः) ॥ ४५९ ॥

सुखसाध्य ज्वर का लक्षण ॥

जिस ज्वरमें शरीरके बाहर बहुत संताप होवे और तृषा अन्तर्दाह संधि हड्डियोंमें पीड़ा तथाश्वास इनकी अल्पता होवे वह बाहर वेगवाला ज्वर होताहै यहसुख साध्य है वर्षा शरद और बसन्त इन ऋतुओंमें क्रमसे वात पित्त तथा कफके द्वारा स्वाभाविक ज्वर होता है इनमें से वसन्त में हुआ स्वाभाविक ज्वर सुख साध्यहै ॥ ४५९ ॥

अथ कष्टसाध्यस्यज्वरस्यलक्षणम् ॥

वैकृतोऽन्यःसदुःसाध्यःप्राकृतश्चानिलोद्भवः । अन्यःप्राकृतादन्यःवैकृतः ॥ ४६० ॥

कष्टसाध्य ज्वरकालक्षण ॥

वैकृत अर्थात् स्वाभाविक से विरुद्ध जैसे शरद ऋतुमें कफजइत्यादि और स्वाभाविक वात ज्वर कष्टसाध्य होताहै ॥ ४६० ॥

वर्षादिषुजातानांचिकित्साविशेषार्थप्राधान्यमाह ॥

वर्षासुमारुतोदुष्टःपित्तश्लेष्मान्वितोज्वरम् । कुर्यात्पित्तञ्चशरदितस्यचानुबलःकफः । कफोवसन्तेतमपिवातपित्तंभवेदनु ॥ ४६१ ॥

वर्षादिमें उत्पन्न ज्वरकी विशेष चिकित्साके लिये प्रधानता कहते हैं ॥

वर्षामें वायु दूषित होकर पित्त तथा कफसे युक्त ज्वर को उत्पन्न करतीहै शरद ऋतु में दूषित हुआ पित्त कफ के साथ ज्वर को उत्पन्न करताहै और वसन्त ऋतुमें दूषित हुआ कफ वात पित्त के साथ ज्वर को उत्पन्न करताहै ॥ ४६१ ॥

तस्यपित्तज्वरस्यचिकित्सामाह ॥

तत्प्रकृत्याविसर्गाच्चतत्रनानशनाद्भयम् । तत्प्रकृत्यातस्यपित्तस्यप्रकृत्यास्वभावेन ॥ ततुउक्तम् ॥ कफपित्तेद्रवेधातुमहेतेलङ्घनंवहु । इतिविसर्गाच्चशरदोविसर्गकालत्वाच्च ॥ यतुउक्तम् ॥ वर्षाशरद्धेमन्ताविसर्गकालास्तत्रोपचितबलाः । प्राणिनोभवन्तिसोमस्यत्रलवत्वादिति ॥ तत्रशरदिपित्तज्वरेअनशनाद्भयंन । वसन्तेकफज्वरेऽपिकफप्रकृत्यालङ्घनाद्भयंनभवति ॥ किन्तुवसन्तस्यादानकालत्वान्निःशङ्कंनकर्त्तव्यम् । यतुउक्तं ॥ शिशिर

वसन्तग्रीष्मास्त्वादानकालास्तत्रापचितबलाःप्राणिनोभवन्ति सूर्य्यस्यबलत्वादिति ॥ एतेनेदमुक्तम्। वर्षासुवायुःप्रधानमपित्तश्लेष्मणावप्रधाने ॥ शरदिपित्तंप्रधानम् कफोऽप्रधानःवसन्तेश्लेष्माप्रधानम् वातपित्तेअप्रधाने । तत्रप्रधानस्यप्राधान्येनचिकित्साकर्त्तव्यासाचाप्रधानेनिषिद्धानविधेया ॥ एवंवैकृतेष्वपिप्रधानस्यप्राधान्येनचिकित्साकर्त्तव्या । तथाचोक्तम् संसर्गेयोगरीयान्स्यादुपक्रम्यःसवैभवेत् ॥ शेषदोषाविरोधेनसन्निपातेतथैवच । इतिसंसर्गेदोषद्वयसंसर्गेगरीयान्प्रधानः । अन्तर्दाहोऽधिकात्तृष्णाप्रलापःश्वसनंभ्रमःसन्ध्यस्थिशूलमस्वेदोदोषवर्चोविनिग्रहः॥अन्तर्वेगस्यलिङ्गानिकष्टसाध्यत्वमेवच । वर्चोविनिग्रहःपुरीषाऽप्रवृत्तिः ॥ ४६२॥

पित्तज्वरकी चिकित्सा ॥

पित्तज्वरमें पित्तके स्वाभाविक पतलेपन से और विसर्ग कालहोनेसे लंघनदेनेमें कोई भयनहीं होता क्योंकि कहागयाहै कि कफ और पित्त यह दोनों पतली धातुहैं इसलिये बहुत लंघनको सह सकेहैं विसर्गसे अर्थात् शरदऋतुके विसर्गकालहोनेसे क्योंकि कहागयाहै कि वर्षा शरद और हेमन्त यह विसर्गकालहैं इनमें चन्द्रमाके बलवान होनेके कारण प्रायः मनुष्योंका बलबढ़ता होताहै इस लिये शरदऋतुके पित्तज्वरमें लंघनकरानेसे कोई भयनहीं है वसन्तऋतुके कफज्वरमेंभी कफके स्वाभाविक पतलेहोनेसेलंघनकरानेमें भयनहीं है परन्तु आदानकाल होने से निस्सन्देहहोकर लंघन नहीं करानाचाहिये क्योंकि कहागयाहै कि शिशिर वसन्त और ग्रीष्म यह आदानकालहैं इनमें सूर्यके बलवानहोनेसे प्रायः प्राणियोंका बलघटताहै इस्से यह मालूमहोताहै किवर्षामें वायुप्रधान पित्त तथा कफ अप्रधान शरदमें पित्तप्रधान कफअप्रधान और वसन्तमें कफप्रधान वात तथा पित्तअप्रधान होते हैं इस्से इनसब कालोंमें अप्रधानकी अविरोधी प्रधानकी चिकित्सा करनी चाहिये इसीप्रकार वैकृत ज्वरोंमेंभी अप्रधानकी अविरोधी प्रधानकी चिकित्सा करनीचाहिये क्योंकि कहागयाहै किदोदोष और सन्निपातमें जो दोष बलवानहो उसकी चिकित्साकरे परन्तु इसबातपर ध्यानरक्खे कि बाकी के दोषोंके विरुद्ध नहोवे भीतर दाहअधिकतृषा प्रलाप श्वास भ्रम संधि तथा हड्डियोंमेंपीडा पसीने का न निकलना और दोष तथा मलका न निकलना यह अन्तर्वेग ज्वरके लक्षण हैं यह कष्टसाध्य होता है ॥ ४६२ ॥

अथासाध्यस्यज्वरस्यलक्षणमाह ॥

ज्वरःक्षीणस्यशूनस्यगम्भीरोदीर्घरात्रिकः । असाध्योबलवान्यश्चकेशसीमन्तकृज्ज्वरः ॥ दीर्घरात्रिकःबहुरात्रानुबन्धीकेशसीमन्तकृत । प्रभावात्केशेषुसीमन्तंयःकरोति ॥ ४६३ ॥

असाध्य ज्वरका लक्षण ॥

क्षीणतथा सूजनयुक्त पुरुषका ज्वर और गंभीर तथा बहुत रात्रितक रहनेवाला ज्वर असाध्य होताहै और जिस बलवान ज्वरके द्वारा रोगीके बाल अकस्मात् जूड़ेसे बंधजायँ वह असाध्यहै ४६३॥

अथ गम्भीरज्वरस्यलक्षणमाह ॥

गम्भीरस्तुज्वरोज्ञेयोह्यन्तर्दाहेनतृष्णया । आनद्धत्वेनचात्यर्थंकासश्वासोद्गमेन च ॥ आनद्धत्वनविबद्धमलत्वेन ॥ ४६४ ॥

गम्भीरज्वरका लक्षण ॥

जिसज्वरमें भीतर दाह तृषा खांसी श्वास और मलकी बहुत रुकावटहो उसको गंभीरकहते हैं ४६४॥

सामान्यज्वरेकर्णमूलशोथस्यसुखसाध्यत्वादिकमाह ॥

ज्वरस्यपूर्वेज्वरमध्यतोवाज्वरान्ततोवाश्रुतिमूलशोथः। क्रमादसाध्यःखलुकृच्छ्रसाध्य.सुखेनसाध्योमुनिभिःप्रदिष्टः ॥ ४६५ ॥

सामान्यज्वरमें कर्णमूलकी सूजनकासुखपूर्व्वक साध्यपना आदि कहतेहैं ॥

ज्वरके पहले ज्वरके मध्यमें और ज्वरके अन्तमें कर्णमूलकी सूजन क्रमसे असाध्य कष्टसाध्य और सुखसाध्य होतीहै ॥ ४६५ ॥

अथारिष्टमाह ॥

रोगिणोमरणंयस्मात्अवश्यम्भाविलक्ष्यते । तल्लक्षणमरिष्टंस्यात्रिष्टमप्यभिधीयते॥हेतुभिर्बहुभिर्जातोबलिभिर्बहुलक्षणः। ज्वरःप्राणान्तःकृच्यश्चशीघ्रमिन्द्रियनाशनः ॥ शीघ्रमिन्द्रियनाशन.उत्पन्नमात्रएवचिकित्स्यमानोऽपिइन्द्रियाणां चक्षुरादीनांशक्तिंयोनाशयति ॥ ४६६ ॥

अरिष्टका लक्षण ॥

जिस लक्षणसे रोगीकी मृत्यु अवश्यहोगी यह निश्चयहो उसको अरिष्ट तथा रिष्ट कहतेहैं जो ज्वर बलवान् बहुतसे कारणोंसे उत्पन्न तथा बहुत लक्षणवाला होय वह अवश्य मारनेवाला होताहै और जो ज्वर उत्पन्न होतेही चिकित्साके होनेपरभी शीघ्र नेत्रादिक इन्द्रियोंकी शक्तिको नाशकरता है वह असाध्यहै ॥ ४६६ ॥

अन्यच्चारिष्टमाह ॥

विसंज्ञस्ताम्यतेयस्तुशेतेनिपतितोऽपिवा । शीतार्दितोऽन्तरुष्णश्चज्वरेणम्रियतेनरः ॥ विसंज्ञ.विगतज्ञानः। ताम्यतेनष्टहर्ष शेतेनिपतितोवाअत्रापिवाशब्दएवार्थः। निपतितएवतिष्ठतिनचोत्थातुंसमर्थः ॥ तथासनशेतेवाशीतार्दित.बहिः । अन्तरुष्णःअन्तर्दाहवान् ॥ (अन्यच्च) योहृष्टरोमारक्ताक्षोहृदिसङ्घातशूलवान् । वक्त्रेणचैवोच्छ्वसिति तंज्वरोहन्तिमानवम् ॥ हृष्टरोमाञ्चवान्हृदिसंघातवानसन्निपातिकशूलवान् । वक्त्रेणचैवोच्छ्वसितिनतुनासिकया॥(अन्यच्च) हिक्काश्वासतृषायुक्तंमूढविभ्रान्तलोचनम्। सन्ततोच्छ्वासिनक्षीणनीरक्षयतिज्वरः ॥ क्षपयतीसमापयतीत्यर्थः (अन्यच्च) हतप्रभेन्द्रियक्षाममरोचकनिपीडितम्। गम्भीरतीक्ष्णवेगार्त्तंज्वरितंपरिवर्ज्जयेत् ॥ हतप्रभेन्द्रियम् हताप्रभादीप्तिर्येषांअथवाहताप्रभाप्रतिभाविषयग्रहणशक्तिर्येषाम् तथाविधानि इन्द्रियाणियस्यतहतप्रभेन्द्रियम्। क्षामंक्षीणम् गम्भीरतीक्ष्णवेगार्त्तंगम्भीरःउक्तलक्षणकः॥ तीक्ष्णवेग-अतिदु.सहवेगः। ताभ्यांआर्त्तंदुःखितम् (अन्यच्च) मरणंप्राप्नुयात्तत्रशुक्रस्थानगतेज्वरे ॥ शेफसस्तब्धतामोक्षःशुक्रस्यतुविशेषतः । व्याख्यातोऽयंश्लोकः॥४६७॥

अन्यप्रकारके अरिष्ट जो मनुष्यज्वरके वेगसे ज्ञानरहित होजाय और शैयामें उठनेकी शक्तिसे रहित होकर पड़ारहे अथवा सोवे और भीतर दाह तथा बाहर शीतसे युक्तहो वह मरजाताहै अन्य

प्रकारके मरिष्ट जिस ज्वरवालेके शरीरमें रोमांचहोवें नेत्र लालहोंय हृदयमें सन्निपातकी पीड़ा होय मौर मुखसेही श्वाससे वह नहीं जीताहै अन्यप्रकार जिस ज्वरमें हिचकी श्वास तृषा मूर्च्छा नेत्रोंका इधर उधर चलाना तथा क्षीणताहो मौर निरन्तर श्वास चले वह मनुष्यको मारताहै अन्य प्रकार जिसज्वरवालेकी इन्द्रियोंकी दीप्ति अथवा विषयोंके ग्रहण, करनेकी शक्ति नष्ट होजाय क्षीणता तथा अरुचि होय मौर बहुत वेगके साथ गंभीर ज्वरहोय ऐसे रोगीको वैद्य त्याग करदे अन्य प्रकार वीर्य्य स्थानमें ज्वरके जानेपर लिंगकी शिथिलता और अधिक वीर्य्य पात होताहै इसमें रोगी नहीं जीताहै ॥ ४६७ ॥

अथ विषमज्वरस्यारिष्टमाह ॥

आरम्भाद्विषमोयस्तुयस्यवादीर्घरात्रिकः । क्षीणस्यचातिरूक्षस्यगम्भीरोयस्यहन्तितम् ॥ यस्यआरम्भाद्विषमः। प्रथममेवविषमःनतुज्वरोत्सृष्टस्य। यस्यदीर्घरात्रिकः। यस्यक्षीणस्यातिरूक्षस्यचगम्भीरोभवति। तंविषमोदीर्घरात्रिकोगम्भीरश्चहन्तीत्यर्थः। (इतिज्वराधिकारः) ॥ ४६८ ॥

* विषमज्वरका मरिष्ट ॥

जोज्वर उत्पन्न होतेही विषमहोय अथवा बहुत रात्रि तक रहै वह असाध्य है मौर क्षीण तथा रूखे शरीर वालेका गंभीर ज्वर मसाध्य होताहै इतिज्वराधिकार ॥ ४६८ ॥

अथातीसाराधिकारः। तत्रातीसारस्यप्रकृष्टानिनिदानान्याह ॥

गुर्व्वतिस्निग्धरूक्षोष्णद्रवस्थूलातिशीतलैः। विरुद्धाध्याशनाजीर्णैर्विषमैश्चापिभोजनैः ॥ स्नेहाद्यैरतियुक्तैश्चमिथ्यायुक्तैर्विषैर्भयैः। शोकदुष्टाम्बुमद्यातिपानैःसात्म्यर्त्तुपर्य्ययैः ॥ जलाभिरमणैर्वेगविघातैःकृमिदोषतः। नृणांभवत्यतीसारोलक्षणंतस्यवक्ष्यते ॥ गुरुमात्रयास्वभावेनसंस्कारेणचअतिशब्दःस्थूलान्तःसहसम्बध्यते। स्थूलम्असम्यक्पिष्टव्रीहिधूमादि। विरुद्धंसंयुक्तंक्षीरमत्स्यादि। अध्यशनम्अजीर्णेभुज्यतेयत्तदध्यशनमुच्यते। अजीर्णंआमंविदग्धञ्च। बहुस्तोकमकालेचभुक्तंयद्विषमंहितत्। भोजनैरितिगुर्व्वादिभिर्विषान्तैःसर्वैःसहसम्बध्यते। स्नेहाद्यैः स्नेहपानस्वेदनवमनविरेचनानुवासननिरूहान्तैःअतियुक्तैर्वारंवारंप्रयुक्तैर्मिथ्यायुक्तैःअविधिप्रयुक्तैश्चतैःविषैः विषाण्यत्रस्थावराणितेषामधोगत्वात्। शोकबन्धादिवियोगजनितमनःपीड़ा। सात्म्यर्त्तुपर्य्ययैःसात्म्यविपरीतैरसात्म्यैः॥ तथायस्मिन्ऋतौयदुचितंतद्विपरीतैः। जलाभिरमणैः जलक्रीड़ादिभिः। वेगविघातैःमूत्रपुरीषादिहठधारणैः। कृमिभिःपक्वाशयस्यदुष्टैः। एतानियथासम्भवंवातादीनांदुष्टे कारणानिबोद्धव्यानि। नन्वेवंसतिस्वहेतुदुष्टेनवातादिनातिसारोभवत्येवतावन्मात्रवाच्यंकिमर्थंगुर्वादिह्यभिधानंउच्यतेगुर्वादिहेतुदूषिताएव। वातादयोबाहुल्येनातिसारंजनयन्ति। ननुलङ्घनमुक्तजीर्णतादिलध्वन्नक्रोधतृपाक्षुधाभिहननदध्यारणात्व्यायामवर्षाशरद्वसन्तादिभिःकुपिताः। अतोगुर्वादीन्युच्यन्ते। एवमन्यत्रापिबोद्धव्यम् ॥ ४६९ ॥

अतीसाराधिकार अतीसारके दूरवालेनिदान ॥

भारी वस्तु (मात्रा स्वभाव अथवा संस्कारसे) बहुत चिकनीवस्तु बहुत रूखीवस्तु बहुत उष्ण वस्तु बहुत पतलीवस्तु बहुत स्थूलवस्तु (अच्छेप्रकारसे नहीं पिसे हुए गेहूं आदिक) तथा बहुत शीतलवस्तुके सेवनसे विरुद्ध (दूध तथा मछली आदिक संयोग विरुद्ध) अध्यशन (अजीर्णमेंभोजन) अजीर्ण (कच्चातथा अर्द्धपक अन्नादिक) तथा विषम (प्रमाणसे अधिक अथवा थोड़ा और अकालमें भोजन) भोजनसे स्नेहपान स्वेद वमन विरेचन अनुवासन तथा निरूह वस्तिके वारंबार देनेसे अथवा विधिपूर्व्वक न देनेसे विधिपूर्व्वक नहींदियेगये स्थावर विषोंसे भय शोक दूषितजल तथा मद्यके बहुत पीनेसे सात्म्य विपर्य्यय (स्वभावके विपरीत) तथा ऋतु विपर्य्यय (जिसऋतुमेंजो आहार विहार उचितहैं उनसे विपरीत) से जलक्रीडासे मलमूत्रादिकोंकेवेगके रोकने से और पक्वाशयके दुष्ट कृमियोंसे मनुष्योंको अतीसार रोगउत्पन्न होताहै यह संपूर्ण कारण यथा संभव वातादिकोंके दोषोंसे जानने चाहिये अब यह सन्देहहोताहै कि अपने हेतुओंसे दोषयुक्त वातादिकोंके द्वारा तो अतीसार होताहीहै फिर इतनाहीन कहकर भारीपन आदि कारण क्यों कहे इसका उत्तर यहहै कि भारी आदि कारणोंसे दोषयुक्त वातादिकही बहुधा अतीसारको उत्पन्न करतेहैं नकि लंघन भोजनका परिपाकहोना आदिक हलकाअन्न क्रोध तृषा क्षुधाकारोकना दही आरनाल (कांजीविशेष) व्यायाम वर्षा शरद और वसन्त आदिकोंसे दोषयुक्त वातादिक अतीसारको उत्पन्न करते हैं इसीलिये भारी आदि कारण कहे जातेहैं इसीप्रकार और स्थानोंमेंभी जाननेचाहिये ॥ ४६९ ॥

तस्यैवपूर्वरूपमाह ॥

हृन्नाभिपार्श्वोदरकुक्षितोदगात्रावसादानिलसन्निरोधाः । विट्सङ्गआध्मानमथाविपाकोभविष्यतस्तस्यपुरःसराणि ॥ विट्सङ्गःपुरीषाप्रवृत्तिःअविपाकोभुक्तस्यपुरःसराणि । एतानिलक्षणानिपूर्वभावीनि ॥ ४७० ॥

अतीसार का पूर्व रूप ॥

अतीसार रोग होनेसे पहले हृदय नाभि पसली तथा कुक्षिमें सुई गढ़ने के समान पीड़ा शरीर में शिथिलता वायु का रुकना मलका न निकलना अफरा और भोजन का न पचना यह लक्षण होतेहैं ॥ ४७० ॥

अथातीसारस्यसंप्राप्तिमाह ॥

संशम्यापांधातुरग्निंप्रवृद्धोवर्चोमिश्रोवायुनाधःप्रणुन्नः । सरत्यतीवाऽतिसारंतमाहुर्व्याधिंघोरंपड्विधन्तंवदन्ति ॥ अपांधातुःअत्रसमासाकरणाद्बहुत्वेनचरसजलमूत्रस्वेदमेदःकफपित्तरक्तादयोद्रवधातवोगृह्यन्ते । प्रवृद्धःअग्निंसंशम्यशमयित्वावर्चोमिश्रःपुरीषयुक्तःवायुनाअधःप्रणुन्नःअधःप्रेरितः । अथ सामान्यंरूपमाह । अतिसरतिनदीवत् अतीसारंतमाहुर्व्याधिंघोरमिति । योरसादिद्रवधातुःअतीवसरतीतिप्रकृतिमतिक्रम्यगुदाऽध्वनासरतितंव्याधिमतीसारमाहुः । किंविधंघोरंघोरंभीमंभयानकंघोरमित्यमरःअस्यसंख्यामाह । षड्विधन्तंवदन्तीतिषड्विधत्वंविवृणोति । एकैकशःसर्वशश्चापिदोषैःशोकेनान्यःषष्ठःआमेनचोक्तः ॥ ४७१ ॥

अतीसारकी संप्राप्ति ॥

जिसरोग में रस जल मूत्र स्वेद मेद कफ पित्त तथा रुधिरादिक जलकी धातु वढ़कर अग्नि को शान्त करके मलके साथ मिली हुई और वायुके द्वारा नीचे प्रेरणाकी गई निकलती है उसकोअतीसार कहतेहैं वैद्यलोग इस रोगको अत्यन्त भयंकर और छः प्रकारका कहतेहैं अतीसारका साधारण रूप यहहै कि रसादिक पतलीधातु अपने स्वभावको छोड़कर गुदाके मार्गसे बहुत निकलतीहैं इससे इस रोगको अतीसार कहते हैं इसकी संख्या वर्णन कीजाती है अतीसार छः प्रकारकाहै जैसे वातज पित्तज कफज त्रिदोषज शोकज और आमज ॥ ४७१ ॥

अथ सामान्यातीसारस्यचिकित्सामाह ॥

आमपक्वंक्रमंहित्वानातीसारेक्रियायतः।अतोऽतीसारेसर्व्वस्मिन्नामंपक्वञ्चलक्षयेत्४७२

अतीसारकी सामान्यचिकित्सा ॥

अतीसारमें आमके परिपाकके क्रमको छोड़कर और कोई चिकित्सा नहींहै इसलिये सम्पूर्ण अतीसारोंमें आम और परिपाक पर अधिक दृष्टिदेनी चाहिये ॥ ४७२ ॥

अथ क्रमचिकित्सा ॥

तत्रामपक्वयोर्लक्षणम्संसृष्टमामैर्दोषैस्तुन्यस्तमप्सुनिमज्जति । पुरीषंभृशदुर्गन्धि पिच्छिलञ्चामसंज्ञितम् ॥ एतान्येवतुलिङ्गानिविपरीतानियस्यवै । लाघवञ्चविशेषेण तन्तुपक्वंविनिर्दिशेत् ॥ ४७३ ॥

क्रमसेचिकित्साआम और पक्वका लक्षण ॥

आमसहित दोषोंसेयुक्त होनेके कारण जो मलजलमें डालने से डूबजाय औरअत्यन्त दुर्गन्धित तथा पिच्छिल होय उसको आमकहते हैं और इन लक्षणों से रहित तथा बहुत हलके मलको पक्वकहते हैं ॥ ४७३ ॥

नचसंग्राहकंदद्यात्पूर्वमामातिसारिणे । अकालेसंग्रहीतस्तुविकारान्कुरुतेबहून् ॥ दण्डकालसकाध्मानंग्रहण्यर्शोभगन्दरान् । शोथपाण्ड्वामयप्लीहगुल्ममेहोदरज्वरान् ॥ डिम्भस्य स्थविरस्यञ्चवात पित्तात्मकञ्चयः । क्षीणधातुबलञ्चापिबहुदोषोऽतिविश्रुतः ॥ आमोऽपिस्तम्भनीयःस्यात्पाचनान्मरणंभवेत् लङ्घनमेकंमुक्त्वानान्यदस्तीहभेषजंबलिनः, । समुदीर्णंदोषनिचयंतत्पाचयेत्तथाशमयेत्लङ्घनएवदोषदुःसहपिपासाया दोषपाकार्थंषडङ्गविधिनाद्दश्रुतम्। योगचतुष्टयमाह । धान्याम्बुभ्यांश्रृतंतोयंतृष्णादाहातिसारिणे ।ह्रीवेरशृङ्गवेराभ्यांमुस्तपर्पटकेनवा॥ मुस्तोदीच्यश्रृतंशीतंप्रदातव्यंपिपासवे॥ हितंलङ्घनमेवादौपूर्वरूपेऽतिसारिणे ॥कार्य्यंत्रानशनस्यान्तेप्रद्रवंलघुभोजनम् ॥ ४७४॥

आमातीसार में पहले ग्राही औषध न दे क्योंकि समयके बिना मलके रोकने से दंडक अलसक आध्मान ग्रहणी बवासीर भगन्दर सूजन पांडुप्लीहा गुल्मप्रमेह उदर और ज्वर यहसब विकार उत्पन्न होतेहैं बालक, वृद्ध वात पित्तवाले क्षीण धातु निर्बल और जिनकादोष बहुत निकल गया हो इनसबको आमहोने परभी ग्राही औषध देनीचाहिये क्योंकि इनको केवल पाचक औषध देने से मृत्युहोती है बलवान को अतीसार में लंघनके सिवाय और कोई औषध नहीं है क्योंकि लंघन से

बहुत बढ़ेहुए दोष परिपाक और शान्ति को प्राप्तहोतेहैं अतीसार वाले को बहुत तृषा होनेपर आगे कहे हुए चार योग पडंग जलकी विधिके अनुसार आधा जलबाकी रहजाने पर दोषों के परिपाक के लिये सेवनकराना चाहिये जैसे धनिया और सुगंधवाला का जल १ तृषा दाह युक्त अतीसारमें देना चाहिये सुगन्धवाला तथा सोंठ २ मोथा तथा पित्तपापड़ा ३ और मोथा तथा सुगन्धवाला ४ इनके द्वारा औट कर आधा बचाहुआ शीतल जल तृषामें देना चाहिये अतीसार के पूर्वरूपमें पहले लंघन हितकारी है और लंघनके अन्तमें पतली तथा हलकी वस्तुका भोजन कराना चाहिये ॥ ४७४ ॥

पथ्यादारुवचामुस्तैर्नागरातिविषान्वितैः । आमातीसारनाशायक्काथमेभि पिबेन्नरः इतिपथ्यादिक्काथ ॥ ४७५ ॥

पथ्यादिकाथ ॥

हड़ देवदारु वच मोथा सोंठ और अतीस इनका काढ़ा आमातीसारका नाश करताहै ॥ ४७५ ॥

पाठाहिङ्ग्वाजमोदोग्रापञ्चकोलाञ्जरज । उष्णाम्बुपीतसरुजंजयत्यामंससैन्धवम् पाठादिचूर्णम् ॥ ४७६ ॥

पाठादिचूर्ण ॥

पाठा हींग अजवाइन वच और पचकोल इनसबके चूर्णमें सेंधानोन मिलाकर गरमजलके साथ पीनेसे पीड़ायुक्त आमका नाशहोताहै ॥ ४७६ ॥

हरीतकीसातिविषाहिङ्गुसौवर्चलवचा । सैन्धवञ्चापिसंपिष्यपाययेदुष्णवारिणा ॥ आमातिसारयोगोऽयपाचयित्वाचिकित्सति । आमातीसारयोगोऽययचेतेननशाम्यति ॥ नतयोगशतेनापिचिकित्सतिचिकित्सकः ॥ इतिहरीतक्यादिकल्कः ॥ ४७७ ॥

हरीतक्यादिकल्क ॥

हड़ अतीस हींग कालानोन वच और सेंधानोन इनसब औषधियोंको पीसकर गरमजलके साथ पानकरानेसे पाचन होकर आमातीसारका नाशहोताहै जो आमातीसार इसयोगसेभी नशान्तहोवह सैकड़ोंयोगोंसे भी नहीं अच्छा होताहै ॥ ४७७ ॥

वत्सकातिविषाविल्वमुस्तकंवालकशटी । अतीसारंजयेत्सामंचिरजंरक्तशूलजित् ॥ इतिवत्सकादिक्काथ ॥ ४७८ ॥

वत्सकादि काथ ॥

कुरैया अतीस बेल सोंठ मोथा सुगन्धवाला और कचूर इनका काथ बहुत दिनके पुराने आमातीसार और रक्तशूलको नाशकरता है ॥ ४७८ ॥

एरण्डरससंपिष्टपक्कमामञ्चनागरम् । आमातीसारशूलघ्नंपाचनंदीपनंपरम् ॥ नागरस्यपुटपाकःकल्कश्च ॥ ४७९ ॥

सोंठकापुटपाक और कल्क ॥

सोंठको रेंडीके रसमें पीसकर इसका कल्कसेवनकरनेसे अथवा पुटपाक करके सेवन करनेसे आमातिसार तथा शूलका नाशहोता है और यह पाचन तथा दीपन है ॥ ४७९ ॥

धान्यवालकविल्वाब्दनागरैःपाचितजलम् । आमशूलविबन्धघ्नंपाचनंदीपनंपरम् ॥ इतिधान्यादिपञ्चकम् ॥ ४८० ॥

धान्यादि पंचक ॥

धनियां सुगन्धवाला वेल मोथा और सोंठ इनका काथ आम शूल तथा विबन्धनाशक और अत्यन्त दीपन पाचन होता है ॥ ४८०॥

पित्तेधान्यचतुष्कन्तुशुण्ठीत्यागाद्दन्तिहि । रक्तेऽपिपित्तसाधर्म्याद्देयंधान्यचतुष्टयम् ॥ इतिधान्यादिचतुष्कम् । इत्यामातीसारचिकित्सा ॥ ४८१ ॥

धान्यादि चतुष्क ॥

पित्तातीसारमें सोंठको छोड़कर धनियां आदिक चार औषधीदेनी चाहिये और रक्तातीसारमें भी ऐसाही करना चाहिये इत्यामातीसार चिकित्सा ॥ ४८१ ॥

सलोध्रंधातकीविल्वंमुस्ताम्रास्थिकलिङ्गकम् । पिबेन्माहिषतक्रेणपक्वातीसारनाशनम् ॥ लोध्रादिचूर्णम् ॥ ४८२ ॥

लोध्रादि चूर्ण ॥

लोध धवई वेल मोथा आमकी विजली और इन्द्रजौ इनऔषधियोंके चूर्णको भैंसके मट्ठेके साथ पीनेसे पक्वातीसारका नाश होताहै ॥ ४८२ ॥

समङ्गाधातकीपुष्पंमञ्जिष्ठालोध्रएवच । शाल्मलीवेष्टकोलोध्रोदाडिमद्रुफलत्वचौ ॥ आम्रास्थिमध्यंलोध्रश्चविल्वमध्यंप्रियंगुच । मधुकंशृङ्गवेरञ्चदीर्घवृन्तत्वगेवच ॥ चत्वारःएतेयोगास्युःपक्वातीसारनाशनाः । एतेयोगाःउपयोज्याःस्युःसक्षौद्रस्तण्डुलाम्बुना ॥ समङ्गालज्जालू । शाल्मलीवेष्टकोमोचरसः ॥ दाडिमस्यमद्रुफलयोःत्वचौ॥प्रियङ्गोर्नपुंसकमत्रफलेवर्तमानत्वात् ॥ शृंगवेरमत्रशुण्ठी । दीर्घवृन्तःशोणाकस्तस्यत्वचः ॥ समंगादीनिचत्वारिचूर्णानि ॥ ४८३ ॥

लज्जालू धवईकेफूल मजीठ तथा लोध १ मोचरसलोध और अनारकीछाल तथा अनारका छिलका २ आमकी गुठलीका मध्य लोध वेल तथा प्रियंगु (ककुनी) के फल ३ मुलहठी सोंठ सोना पाढ़ेकीछाल और दालचीनी ४ यह चारोंचूर्ण पक्वातीसारको नाशकरतेहैं यह चूर्णचावलके पानी और सहतके साथ सेवन करना चाहिये ॥ ४८३ ॥

कञ्चटदाडिमजम्बूशृङ्गाटकपत्रवर्हिष्टम् । जलधरनागरसहितंगंगामपिवेगवाहिनींरुन्ध्यात् ॥ कञ्चटचौराईशाकस्यभेदः । कञ्चटादिभिश्चतुर्भिःअत्रपंचशब्दःसम्बध्यते ॥ वर्हिष्टंवालकम् । गंगाधरक्काथः ॥ ४८४ ॥

गंगाधर क्वाथ ॥

कंचट (चौराईके सागकाभेद) अनार जामन सिंघाड़ा वेल सुगन्धवाला मोथा और सोंठ इनके काथके सेवनसे नदीके प्रवाहके समानभी दस्तोंका वेग रुक जाताहै कंचट आदिचार औषधियों की पत्तीलेनी चाहिये ॥ ४८४ ॥

मोचरसंमुस्तानागरपाठारलुधातकीकुसुमैः । चूर्णमथितसमेतंरुणद्धिगंगाप्रवाहमपिसद्यः॥अरलुःसोनापाठाः। मथितंनिर्जलंदधिवस्त्रपूतम्॥ इतिगंगाधरचूर्णम् ४८५॥

गंगाधर चूर्ण ॥

मोचरस मोथा सोंठ पाठा सोनापाठा और धवईकेफूल इनकाचूर्ण मथित (कपड़ेमें छानाहुआ जल रहित दही) के साथ गंगाजीके भी प्रवाहको वन्दकर देताहै ॥ ४८५ ॥

मुस्तावत्सकवीजमोचरसौविल्वधातकीलोध्रम् । गुड़मथितसंप्रयुक्तंगंगामपिवेगवाहिनींरुन्ध्यात् ॥ इतिद्वितीयगंगाधरचूर्णम् ॥ ४८६ ॥

द्वितीयगंगाधर चूर्ण ॥

मोथा इन्द्रजौ मोचरस वेल धवईके फूल और लोध इनसबका चूर्णगुड़ और मथितकेसाथ गंगाजीके भी प्रवाहको वंदकर देताहै ॥ ४८६ ॥

मुस्तारलुकशुण्ठीभिर्धातकीलोध्रवालकैः । विल्वमोचरसाभ्यांश्चपाठेन्द्रयववत्सकैः ॥ आम्रवीजंसमंगातिविपायुक्तैश्चचूर्णितैः । मधुतण्डुलपानीयंपीतंहंतिप्रवाहिकाम् ॥ हंतिसर्व्वानतीसारान्ग्रहणींहंतिवेगतः । वृद्धंगंगाधरंचूर्णंरुन्ध्यात्गीर्वाणवाहिनीम् ॥ इतिवृद्धगंगाधरचूर्णम् ॥ ४८७ ॥

वृद्धगंगाधर चूर्ण ॥

मोथा सोनापाढा सोंठ धवईकेफूल लोध सगधवाला वेल मोचरस पाढा इन्द्रजौ कुरैया आमकी गुठली लजालू और अतीस इनका चूर्ण सहत और चावलोंके पानीके साथ सेवन करनेसे प्रवाहिका सर्वअतीसार तथा ग्रहणीको नाशकरताहै और गंगाजीके भी प्रवाहको रोकसक्ता है ॥ ४८७ ॥

अङ्कोलमूलकल्कस्तण्डुलपयसासमाक्षिकःपीतः । सेतुरिववारिवेगंझटितिनिरुन्ध्यादतीसारम् ॥ अङ्कोल ढेलाइतिप्रसिद्धः ॥ ४८८ ॥

अंकोलकी जडका कल्क चावलके पानी और सहतके साथ पीनेसे जलके वेगको वांधके समान अतीसारों को रोकता है ॥ ४८८ ॥

कुटजत्वक्तुलामार्द्रांद्रोणनीरेपचेद्भिषक् । पादशेषंशृतंनीत्वावस्त्रपूतंपुनःपचेत् ॥ लज्जालूधातकीविल्वंपाठामोचरसस्तथा । मुस्ताचातिविपाचैवचूर्णमेपांपलपलम् ॥ निक्षिप्यविपचेत्तावद्यावद्दर्वीप्रलिप्यते । जलेनछागदुग्धेनपीतोमण्डेनवाजयेत् ॥ घोरान्सर्व्वानतीसारान्नानावर्णान्सवेदनान् । असृग्दरंसमस्तञ्चतथार्शांसिप्रवाहिकाम् ॥ इतिकुटजाष्टकावलेहः ॥ ४८९ ॥

कुटजाष्टकावलेह ॥

कुरैयाकी गीली ४०० तोले छालको एकहजार चौवीस तोले पानी में औटावे जब चौथाई रह जाय तबछानले और उस पानीको फिर चूल्हेपर चढ़ाकर लजालू धवईके फूल वेल पाढ़ा मोचरस मोथा और अतीस इन सब औषधियों का प्रथक् २ चार ४ तोले चूर्ण डालकर तबतक औटावे जब तक कि वह करछी में लगनेलगे यह औषध जल बकरी का दूध अथवा मांड़ के साथ सेवन करने से अत्यन्त भयंकर पीड़ायुक्त अनेक प्रकार के रंगवाले अतीसार सबप्रकार के प्रदर बवासीर और प्रवाहिका का नाश करती है ॥ ४८९ ॥

कृत्वालवालंसुदृढंपिष्टैरामलकैर्भिषक् । आर्द्रकस्यरसेनाशुपूरयेन्नाभिमण्डलम् ॥ न

दीवेगोपमंघोरंप्रवृद्धंदुर्द्धरंनृणाम् । सद्योऽतीसारमजयंनाशयत्येषयोगराट् ॥ पाठांपि
'ष्ट्वाचगोदध्नातथामध्यत्वगाम्रजा । अतीसारंव्यथानाहंहन्त्येवाशुनसंशयः ॥ ४९० ॥

आंवलों को पीसकर नाभि पर दृढ घेरासा बनाकर अदरक के रस से उसनाभिको ऊपरतकभर दे यह उत्तम योगनदी के समान वेगवाले भयंकर बहुत बढ़ेहुए कष्टदायक असाध्य अतीसार को भी नाश करता है पाढ़ाको गौके दहीमें पीसकर अथवा आमके वृक्षके भीतर की छालके साथ पीसकर सेवन करने से अतीसार व्यथा तथा दाह का नाश शीघ्रही निस्सन्देह होता है ॥ ४९० ॥

अथ वातातीसारस्यलक्षणमाह ॥

अरुणंफेनिलंरूक्षमल्पमल्पंमुहुर्मुहुः । शकृदामंसरुक्शब्दंमारुतेनातिसार्यते । अरुणमीषद्रक्तम् । शकृत्पुरीषम्सरुक्शब्दम् । शब्दोगुदेतत्साहचर्याद्रुगपिगुदएव बोद्धव्या ॥ ४९१ ॥ वातातीसार का लक्षण ॥

वातातीसार में कुछ लाल फेना युक्त रूखा और कच्चा मल शब्द तथा पीड़ा सहित बारंबार थोड़ा २ निकलता है ॥ ४९१ ॥

अथ तस्यचिकित्सा ॥

वचाचातिविषामुस्तंवीजानिकुटजस्यच । श्रेष्ठ कषायएतेषांवातातीसारशान्तये४९२॥

वातातीसार की चिकित्सा ॥

वच अतीस मोथा और इन्द्रजौ इन औषधियों का काढ़ा वातातीसार के नष्ट करने को अत्यन्त श्रेष्ठ है ॥ ४९२ ॥ अथ पित्तातिसारलक्षणमाह ॥

पित्तात्पीतंशकृद्रक्तंदुर्गन्धिहरितंद्रुतम् । गुदपाकतृषामूर्च्छादाहयुक्तंप्रवर्त्तते४९३

पित्तातीसार का लक्षण ॥

पित्तातीसार में लाल पीला हरा दुर्गन्धित मल गुदाका पकना तृषा मूर्च्छा और दाह सहित निकलता है ॥ ४९३ ॥ अथ तस्यचिकित्सा ॥

विल्वशक्रयवाम्भोदबालकातिविषाकृतः। क्वाथःकषायोहन्त्यतीसारंसामंपित्तसमुद्भव मितिविल्वादि ॥ ४९४ ॥

पित्तातीसार की चिकित्सा ॥

बेल इन्द्रजौ मोथा सुगन्धवाला और अतीस इनऔषधियों के क्वाथसे आम सहितपित्तातीसार का नाशहोता है इतिविल्वादि क्वाथ ॥ ४९४ ॥

रसाञ्जनंसातिविषकुटजस्यफलत्वचम् । धातकींशृंगवेरञ्चपाययेत्तण्डुलाम्बुना ॥ निहन्तिमधुनापीतंपित्तातीसारमुल्वणम् । अग्निंसंदीपयेदेतच्छूलमाशुनिवारयेत् ॥ इतिरसाञ्जनादिचूर्णम् ॥ ४९५ ॥

रसौत अतीस कुरैयाकी छाल इन्द्रजौ धवई के फूल और सोंठ इनका चूर्ण चावलके पानी और सहत के साथ सेवन करने से बढ़ेहुए अतीसार तथा शूल का शीघ्रनाश होताहै और अग्नि दीप्ति होतीहै इति रसाञ्जनादि चूर्ण ॥ ४९५ ॥

अथ पित्तातीसारभेदस्यरक्तातीसारस्यलक्षणसंप्राप्तिमाह ॥

पित्ताकृतिर्यदात्यर्थं द्रव्यमश्नातिपैत्तिके । तदास्यजायतेऽभीक्ष्णंरक्तातीसारउल्वणः ॥ ४९६ ॥

पित्तातीसार का भेद रक्तातीसारका लक्षण और संप्राप्ति ॥

पित्तातीसार में पित्तकारी वस्तुओं के अधिक सेवन करने से अत्यन्त घोर रक्तातीसार उत्पन्न होता है ॥ ४९६ ॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

वत्सत्वग्दाडिमतरुसलाटु फलसम्भवात्वकूच । त्वग्युगलंपलमानंविपचेदृष्टांशसम्मितेतोये ॥ अष्टमभागशेषंक्वाथंमधुनापिबेत्पुरुषः । रक्तातीसारमुल्वणमतिशयितनाशयेन्नियतम् ॥ इतिकुटजदाडिमक्वाथः ॥ ४९७ ॥

रक्ता तीसार की चिकित्सा कुटजदाडिमक्वाथ ॥

कुरैयाकी छाल और कच्चे अनारका छिलका इनदोनोंको एकपललेकर अठगुने जलमें औटावैफिर अष्टमांशबाकी रहजानेपर सहत डालकर पियें उस्सेवहुत बढ़ेहुये रक्तातीसार का नाशहोताहै४९७॥

कुटजातिविषामुस्तावालकंलोध्रचन्दनम् । धातकीदाड़िमंपाठाक्वाथमेषांसमाक्षिकम् ॥ पिबेद्रक्तातिसारेतुदाहशूलप्रशान्तये । कुटजादिकषायोऽयंसर्वातीसारनाशनः ॥ इतिकुटजादिक्वाथः ॥ ४९८ ॥ कुटजादि क्वाथ ।

कुरैया अतीस मोथा सुगन्धवाला लोध लाल चन्दन धवई के फूल अनार और पाढ़ा इनके क्वाथ में सहत डालकर पीनेसे रक्तातीसार दाह शूल और सब प्रकारोंके अतीसारोंका नाश होताहै ४९८॥

कल्कस्तिलानांकृष्णानांशर्करापञ्चभागिकः । आजेनपयसापीत सद्योऽतीसारनाशनः ॥ सवत्सक सातिविषः सविल्व सोदीच्यमुस्तश्चकृत कषायः । सामेसशूलेसहशोणितेचचिरप्रवृत्तेपिहितोऽतिसारे ॥ कृष्णामृएमधुकंलोध्रंकौटजंतण्डुलाम्बुना । पीतमेकत्रसक्षौद्रंरक्तसंग्राहणंपरम् ॥ ४९९ ॥

पिसेहुए काले तिल १ भाग और शकर ४ भाग इनको वकरी के दूध के साथ पीने से शीघ्रही अतीसार का नाश होता है कुरैया अतीस वेल सुगंधवाला और मोथा इनका क्वाथ आम शूल और रुधिर सहित बहुत पुराने अतीसारको भी नाश करता है काली मिट्टी मुलहठी लोध और इन्द्रजौ इन औषधियों को चावल के पानी और सहत के साथ पीने से रुधिर बन्द होताहै ॥ ४९९ ॥

गुड़ेनभक्षयेद्विल्वंरक्तातीसारनाशनम् । आमशूलविबन्धघ्नंकुक्षिरोगहरंपरम् ॥ इतिगुडविल्वम् ॥ ५०० ॥

गुड़ विल्व ।

गुड़केसाथ वेलखानेसे रक्तातीसार आमकी पीडा विबन्ध और कोखके रोगोंका नाश होताहै५००॥

जम्ब्वाम्रामलकीनान्तुकुट्टयेत्पल्लवाननवान् । संगृह्यस्वरसन्तेषांमजाक्षीरेणयोजयेत् ॥ तत्पीतंमधुनायुक्तंरक्तातीसारनाशनम् । इतिजम्ब्वादिस्वरसः ॥ ५०१ ॥

जम्ब्वादि स्वरस।

जामन आम और आँवले के नये पत्तोंको कूटकर रस निकाले उसको बकरीके दूध में मिलाकर सहत डालकर पीनेसे रक्तातीसार का नाश होताहै ॥ ५०१ ॥

निक्काथ्यमूलममलंगिरिमल्लिकायाः। सम्यक्पलद्वितयमम्बुचतुःशरावे ॥ तत्पाद शेषसलिलंखलुशोषणीयम। क्षीरेपलद्वयमितेकुशलैरजायाः ॥ प्रक्षिप्यमाषकानष्टौमधु नस्तत्रशीतले। रक्तातिसारीतत्पीत्वानैरुज्यंक्षिप्रमाप्नुयात्॥इतिकुटजक्षीरम् ॥ ५०२॥

कुटज क्षीर।

कुरैयाकी जड़ आठ तोले लेकर एक सौ अट्ठाईस तोले पानीमें औटावे फिर चौथाई बाकी रहने पर आठ तोले बकरी का दूध मिलावे फिर पानी जलकर केवल दूध बाकी रहने पर ठंढा करके आठ मासे सहत मिलाकर पिये इस्से शीघ्रही रक्तातीसार का नाश होताहै ॥ ५०२ ॥

पीत्वाशतावरीकल्कंपयसाक्षीरभुग्जयेत् । रक्तातीसारंपीत्वावातया सिद्धंघृतंनरः ॥ शतावरीकल्कः ॥ ५०३ ॥

शतावरी कल्क ॥

शतावरि के कल्क को दूध के साथ पीनेसे अथवा शतावरि के द्वारा सिद्ध किये हुए घृतके सेवन से रक्तातीसारका नाश होताहै ॥ ५०३ ॥

गोदुग्धंनवनीतञ्चमधुनासितयासह। लीढंरक्तातीसारेतुग्राहकंपरमंमतम्॥ नवनीतावलेहः ॥ ५०४ ॥

नवनीतावलेह ॥

गोकादूध मक्खन सहत औरशकर इनसबको मिलाकर चाटनेसे रक्तातीसारका नाशहोताहै ५०४॥

पीतंमधुसितायुक्तचन्दनंतण्डुलाम्बुना । रक्तातीसारजिद्रक्तपित्ततृड्दाहमेहनुत ॥ चन्दनमत्रश्वेतचन्दनम्। इतिचन्दनकल्कः ॥ ५०५ ॥

चन्दन कल्क ॥

सफेद चन्दन सहत और शकर समेत चावल के पानी के साथ सेवन करने से रक्तातीसार रक्तपित्त तृषा दाह और प्रमेहका नाश होताहै ॥ ५०५ ॥

विरेकैर्बहुभि र्यस्यगुदपित्तेनदह्यते । पच्यतेवातयोःकार्य्यंसेकप्रक्षालनादिकम् ॥ आदिशब्देनलेपादिग्रह । पटोलयष्टीमधुकक्वाथेनशिशिरेणहि ॥ गुदप्रक्षालनंकार्य्यंतै नैवगुदसेचनम्। दाहेपाकेहितंछागीदुग्धंसक्षौद्रशर्करम् ॥ गुदस्यक्षालनेसेकेयुक्तंपाने चभोजने। गुदस्यदाहपाकयोः ॥ ४०६ ॥

गुदाकेदाह और पकने की चिकित्सा ॥

अतीसार में बहुत दस्त आनेके कारण पित्तसे जो गुदा दाह युक्त होय और पकजाय तो परिषेक (सींचना) धोना और लेपादिक करे परवल और मुलहठीके शीतल क्वाथ से. गुदाको धोवे और सींचे गुदाके दाह तथापकनेमें शकर और सहत युक्त बकरीका दूध पीने तथा भोजन करने में और गुदाके धोने तथा सींचने में हितकारी है ॥ ५०६ ॥

अतिप्रवृत्यामहतीभवेद्यदिगुदव्यथा ॥ स्विन्नमूषकमांसेनतदासंस्वेदयेत्गुदम् ॥

अथगोधूमचूर्णस्यसंशीतस्यतुवारिणा । साज्यस्यगोलकंकृत्वामृदुसंस्वेदयेत्गुदम् ॥ अथगुदव्यथायाम् । गुदनिस्सरणेप्रोक्तंचांगेरीघृतमुत्तमम् ॥ ५०७ ॥

बहुत दस्त आनेसे जो गुदामें बहुत पीड़ा होय तो मूसे के मांसको उबाल कर गुदामें उसका वफारादे गेहूंके आटेको पानीमें सानकर दूध मिलाके गोलाबनावे,उस्से गुदामें धीरे २ स्वेददे गुदाके बाहर निकल आनेमें चांगेरी का घृत लगाना चाहिये ॥ ५०७ ॥

गुदभ्रंशेगुदंस्नेहैरभ्यज्यान्तःप्रवेशयेत् । प्रविष्टंस्वेदयेत्मन्दंमूषकस्यामिषेणहि ॥ मूषकस्यामिषेणकाञ्जिकेनस्विन्नेनएरण्डपत्रादिस्थापितेनस्वेदयेत् ॥ ५०८ ॥

गुदभ्रंशरोग में गुदा में तैलादिक स्नेह लगाकर गुदाको भीतर घुसेड़े फिर काञ्जीमें पकेहुएमूसे के मांसको रेंड़ीके पत्ते पर रखकर स्वेद देवे ॥ ५०८ ॥

शम्बूकमांसंसुस्विन्नंसतैललवणान्वितम् । ईषद्घृतेनचाभ्यज्यस्वेदयेत्तेनयत्नतः ॥ गुदभ्रंशमशेषेणनाशयेत्क्षिप्रमेवच । मूषकस्याथवसयापायुंसम्यक्प्रलेपयेत् ॥ गुदभ्रंशाभिधोव्याधिःप्रणश्यतिनसंशयः ॥ ५०९ ॥

घोंघेके मांसको उबालकर तेल तथा नोन मिलाने और कुछ घी लगाकर उस्से यत्नपूर्वक स्वेद देवे इस्से शीघ्रही गुदभ्रंशका नाश होताहै मूसेकी चरबीको गुदामें लेप करनेसे गुदभ्रंशका नाश होता है ॥ ५०९ ॥

चाङ्गेरीकोलदध्यम्लक्षारनागरसंयुतम् । घृतविपक्वंपातव्यंगुदभ्रंशगदापहम् चांगेरीचतुःपत्रीअमलोणिकातस्याःस्वरसः । कोलस्यक्वाथः ॥ दध्यम्लंदधिरूपमम्लम् । एतत्त्रयंमिलितंघृताच्चतुर्गुणंक्षारनागरयोःक्काथः ॥ इतिचाङ्गेरीघृतम् ॥ ५१० ॥

चांगेरी घृत ॥

चूकाका रस बेरका काढ़ा खट्टा दही और जवाखार तथा सोंठ का काढ़ा इन औषधियों के साथ परिपाक किये गये घृतके सेवनसे गुदभ्रंशका नाश होताहै इसमें चूका के रस आदि तीनों औषधियों का चौथाई घृत छोड़ना चाहिये ॥ ५१० ॥

कोमलंपद्मिनीपत्रंय:खादेच्छर्करान्वितम् । एतन्निश्चित्यनिर्दिष्टंनतस्यगुदनिर्गमः ॥ पद्मिनीपत्रंसंशोष्यसंचूर्ण्यशर्करायुक्तंखादेत । अयंतुगुदभ्रंशोऽतीसारंविनापिभवति ततःक्षुद्ररोगेषुलिखितः ॥ अत्रगुदस्यदाहपाकव्यथाप्रसंगाद्भ्रंशोऽपिलिखितः । चिकित्सातूभयत्रतुल्यैव ॥ ५११ ॥

कमलिनीके कोमल पत्ते को सुखाकर पीसके शक्करके साथ खाय इस्से निस्सन्देह गुदभ्रंशका नाश होताहै अतीसारके विनाभी गुदभ्रंश होताहै वह क्षुद्र रोगोंमें लिखागयाहै और गुदाकेदाहपाक तथा व्यथा के प्रसंगसे यहांभी लिखदियाहै इसकी चिकित्सा दोनोंजगह समानहै ॥ ५११ ॥

अथ श्लेष्मातीसारस्यलक्षणं ॥

श्वेतंस्निग्धंघनंबद्धंशीतलंमंदवेदनम् । गौरवारुचिसंयुक्तंश्लेष्मणासार्य्यतेशकृत् ५१२॥

कफातीसारका लक्षण ॥

कफातीसारमें स्वेद स्निग्धघना शीतल और बंधाहुआमल कुछपीड़ाके साथ निकलताहै इस में अरुचि और शरीरमें भारीपन होताहै ॥ ५१२ ॥

अथ तस्यचिकित्सा

श्लेष्मातिसारेप्रथमंहितंलंघनपाचनम् ।, योग्यश्चामातिसारघ्नोयथोक्तोदीपनो गण. ॥ ५१३ ॥

कफातीसार की चिकित्सा ॥

कफातीसार में पहले लंघन तथा पाचन हितहै और आमातीसार नाशक कहाहुआ दीपनगण देना चाहिये ॥ ५१३ ॥

चव्यंसातिविषामुस्तंबालविल्वंसेनागरम् । वत्सकत्वक्फलंपथ्याछर्दिश्लेष्मातिसारनुत् ॥ चव्यादिक्वाथः ॥ ५१४ ॥

चव्यादि क्वाथ ॥

चव्य अतीस मोथा कच्ची बेलगिरी कुरैयाकी छाल इन्द्रजो सोंठ और हड़ इनकाक्वाथ छर्दि और कफातीसारको नाशकरताहै ॥ ५१४॥

हिङ्गुसौवर्च्चलंव्योपमभयातिविषावचा।पीतमुष्णाम्बुनाचूर्णमेपांश्लेष्मातिसारनुत्॥ हिंग्वादिचूर्णम् ॥ ५१५ ॥

हिग्वादिचूर्ण ॥

हींग कालानोन त्रिकटु हड अतीस और वच इनका चूर्ण गरम जलके साथ पीने से कफातीसार को नाश करताहै ॥ ५१५ ॥

कृमिशत्रुवचाविल्वपाठाधान्याककट्फलम्। एषांक्वाथंभिषग्दद्यादतीसारेद्विदोषजे। तेषांचिकित्साप्रोक्तैवविशिष्टाचनिगद्यते । कट्फलंमधुकंलोध्रंत्वक्दाडिमफलस्यच ॥ सतण्डुलजलचूर्णवातश्लेष्मातिसारनुत् । इतिवातश्लेष्मातिसारेचित्रकातिविषामुस्त वालविल्वसनागरम् ॥ वत्सकत्वक्फलपथ्यावातपित्तातिसारनुत्। इतिवातपित्तातिसा रेमुस्तासातिविषामूर्वावचाचकुटज समा ।एषांकषायःसक्षौद्रःपित्तश्लेष्मातिसारनुत्॥ इतिपित्तश्लेष्मातिसारे ॥ ५१६ ॥

वायविडंग वच वेल पाठा धनिया और कायफल इनका क्वाथ दो दोषसे उत्पन्न हुए अतीसारमें देना चाहिये वात कफातीसार की चिकित्सा कायफल मुलहठी लोध अनारका छिलका इन औषधियोंके चूर्णको चावलके पानीके साथ सेवन करनेसे वात कफातीसारका नाश होताहै वात पित्तातीसारकी चिकित्सा चीता अतीस मोथा कच्चाबेल सोंठ कुरैयाकीछाल इन्द्रजौ और हड इनके काढ़ेसे वात पित्तातीसारका नाश होताहै पित्त कफातीसारकी चिकित्सा मोथा अतीस मरोरफली वच और कुरैया इनसब बराबरभागके काढ़ेमें सहत डालकर पीनेसे पित्तकफातीसारका नाशहोताहै ५१६॥

अथ सन्निपातातीसारस्यलक्षणम् ॥

तन्द्रायुक्तोमोहसादास्यशोषी वर्च्चं कुर्यात्नेकरूपंतृषार्त्त । सर्व्वोद्भूतेसर्व्वलिंगोपप त्ति कृच्छ्रःसाध्योबालवृद्धाऽबलानाम् ॥ ५१७ ॥

सन्निपातातीसारका लक्षण ॥

सन्निपातातीसारमें तीनों दोषोंके लक्षणहोतेहैं और तन्द्रा मोह शिथिलता मुखकासूखना अनेक प्रकारके मलका निकलना और तृषा होतीहै यह बालक वृद्ध और स्त्रियोंको कष्ट साध्यहै ॥५१७॥

अथतस्यचिकित्सा । पञ्चमूलींबलाबिल्व गुडूचीमुस्तनागरैः ॥ पाठाभूनिम्बबर्हिष्टकुटजत्वक्फलैःसृतम् । सर्वजंहन्त्यतीसारंज्वरश्चापितथावमिम् ॥ सशूलोपद्रवंश्वासंकासंचापिसुदुस्तरम् । पञ्चमूलञ्चसामान्यंपित्तेयोज्याकनीयसि ॥ वातेपुनर्बलासेच संयोज्यामहतीमता ॥ इतिपञ्चमूल्यादिकःक्काथः ॥ ५१८ ॥

सन्निपातातीसार की चिकित्सा ॥

पंचमूल बरियारा बेल गिलोय मोथा सोंठ पाठा चिरायता सुगन्धबाला कुरैयाकीछाल और इन्द्रजौ इन औषधियोंके काढ़ेसे पीड़ा तथा उपद्रव सहित सन्निपातातीसार ज्वर छर्दि श्वास और दुस्तर खांसीका नाश होताहै सन्निपातातीसारमें जो पित्त अधिक होय तो छोटा पंचमूल और जो वात तथा कफ अधिक होय तो बड़ा पंचमूल ग्रहण करना चाहिये इति पंचमूल्यादि क्काथ ॥ ५१८ ॥

अभयानागरंमुस्तंगुडेनसहयोजितम् । चतुःसमेयंगुटिकास्यात्सर्वातीसारनाशनम् ॥ आमातीसारमानाहंसाविबन्धंविसूचिकाम् । कृमीनरोचकंहन्याद्दीपयत्याशुचानलम् ॥ (इतिचतुःसमोमोदकः) ॥ ५१९ ॥

हड़ सोंठ मोथा और गुड़ इन चारोंको समभाग लेकर मोदक बनावे उसके सेवनसे आमातीसार सब प्रकारके अतीसार आनाह विबंध विशूचिका कृमितथा अरुचिका नाश होताहै और शीघ्रही अग्नि दीप्ति होतीहै इति चतुस्सम मोदक ॥ ५१६ ॥

तत्कालाकृष्टकुटजत्वंचतण्डुलवारिणा । पिष्ट्वाचतुःपलमितांजंबूपत्रेनवेष्टिताम् ॥ सूत्रेणबध्वागोधूमपिष्टेनपरिवेष्टिताम् । लिप्ताञ्चघनपङ्केननिर्दहेद्गोमयाग्निना ॥ अंगारवर्णाञ्चमृदंदृष्ट्वावह्नेःसमुद्धरेत् । ततोरससमादायशीतंक्षौद्रयुतंपिबेत् ॥ उक्तःकृष्णात्रिपुत्रेणपुटपाकस्तुकौटजः । जयेत्सर्वानतीसारानरक्तजान्सुचिरोत्थितान् ॥ (इतिकुटजपुटपाकः) ॥ ५२० ॥

चारपल कुरैयाकी ताजीछालको चावलोंके पानीमें पीसकर जामनके पत्तेमें सूतसे बांधे फिर उसपर गेहूंके आटेको लपेट कर गाढ़ीगाढ़ी मट्टीसे लेप करदे और कंडोंकी अग्निमें पाककरे जब देखे कि मट्टी लाल होगईहै तब अग्निसे निकालले फिर तोड़कर उसके रसको निकालकर ठंढा होनेपर सहत डालके पिये इस्से सब प्रकारके अतीसार और पुराने रक्तातीसारका नाश होताहै यह कृष्णात्रिपुत्रने कहाहै इति कुटज पुटपाक ॥ ५२० ॥

कुटजत्वक्कृतःक्काथोवस्त्रपुतोहिमीकृतः । सलीढोऽतिविषयुक्तःस्यात्त्रिदोषातिसारनुत् ॥ इच्छन्त्यत्राष्टमांशेनक्काथादतिविषरजः । लेहः । प्रक्षेपयेत्चतुर्थांशमितिकेचिद्वदन्तिहि ॥ (इतिकुटजावलेह) ॥ ५२१ ॥

कुरैयाके छालके काढ़ेको वस्त्रमें छानकर अष्टमांश अतीसका चूर्ण मिलाकर चाटे इस्से सन्नि-

पातज अतीसारका नाश होताहै इसमें कोई कोई पंडित काढ़ेका चौथाई अतीस मिलाना चाहिये ऐसा कहतेहैं इति कुटजावलेह ॥ ५२१ ॥

पलमङ्कोटमूलस्यपाठांदार्व्वींश्चततसमाम् । पिष्ट्वातण्डुलतोयेनवटकानक्षसंमितान् ॥ छायाशुष्कांश्चतान्कुर्य्यात्तेष्वेकंतण्डुलाम्बुनापेपयित्वाप्रदद्यात्तंपानायगदिनेभिषक् । वातपित्तकफोद्भूतान्द्वन्द्वजान्सन्निपातिकान् ॥ हन्यात्सर्वानतीसारान्वटकोऽयंप्रयोजितः । (इतिअङ्कोटवटकः) ॥ ५२२ ॥

हिंगोट की जड़ पाठा और दारुहल्दी इनसब औषधियों की एक २ पल लेकर चावलों के जलमें पीसकर तोले २ भर का बड़ा बनावे और छायामें सुखावे फिर एक बड़ा चावल के पानी में पीसकर पिलावे इससे वातज पित्तज कफज द्वन्द्वज और सन्निपातज सब प्रकारके अतीसारों का नाश होताहै इति अंकोट वटक ॥ ५२२ ॥

अथागन्तुजस्यशोकातीसारस्यसंप्राप्तिपूर्व्वकंलक्षणमाह ॥

तैस्तैर्भावैःशोचतोऽल्पाशनस्यवाष्पोष्मावैवह्निमाविश्यजन्तोः ॥ कोष्ठंगत्वाक्षोभयेत्तस्यरक्तंतच्चाधस्तात्काकणन्तीप्रकाशं ॥निर्गच्छेद्वैविड्विमिश्रंह्यविड्वानिर्गन्धंवागन्धवद्वातिसारः । शोकोत्पन्नोदुश्चिकित्स्योऽतिमात्रंरोगोवैद्यैःकष्टएवप्रदिष्टः ॥ अयमर्थः । तैस्तैर्भावैःबन्धुवित्तक्षयादिभिःशोचतःशोकंकुर्व्वतःजन्तोःप्राणिनःवाष्पोष्णावाष्पःशोकजःदेहोष्मणाजनितंनेत्रनासागलादिषुजलंतेनसहितः । ऊष्माशोकजंदेहतेजः । सकोष्ठङ्गत्वा वह्निमाविश्यजठराग्निःमन्दीकृत्वा । वाष्पसाहित्यादुष्मणापिवह्नेर्मन्दीभावःइतिनदोषः । वह्नेर्मन्दीभावादेव । अल्पाशनस्येति । जन्तोर्विशेषणम् । ततस्तस्यजन्तोःरक्तंक्षोभयेत् स्वस्थानाच्चालयेदितिसंप्राप्तिः । अथलक्षणम् । तच्चरक्तंअधस्ताद्गुदात् । काकणन्तीप्रकाशम् । गुञ्जाफलसदृशम् । विड्विमिश्रंगन्धवच्च । अविट्निर्गन्धंवानिर्गच्छेत्शोकोत्पन्नोऽतीसारः । अतिमात्रंदुश्चिकित्स्य । शोकापनोदनंविनाकेवलेनभेषजेनप्रतीकर्त्तुमशक्यत्वात् । एषोऽतीसारःकष्टसाध्यःकथितः ॥ ५२३ ॥

आगन्तुजशोकातीसार का संप्राप्ति समेत लक्षण।

बन्धु और धन आदिकों के नाश होनेसे शोच करतेहुए थोड़ा भोजन करने वाले मनुष्य की नासिका तथा गले आदिसे उत्पन्न जल और शोकजनित शरीर की ऊष्मा एक साथ कोष्ठमें जाकर जठराग्नि को मंद करके रुधिर को बिगाड़तीहै वह रुधिर मलयुक्त अथवा मल रहित गन्ध युक्त अथवा गंधरहित होकर घोंघचीके समान गुदाके द्वारा निकलताहै इसको शोकातीसार कहते हैं यह रोग अत्यन्त कष्टसाध्यहै यहां वाष्प सहित होनेके कारण ऊष्मासेभी अग्निके मन्द होनेमें कोई दोष नहींहै ॥ ५२३ ॥

अथागन्तुजेनभयातीसारस्यसंप्राप्तिपूर्व्वकंलक्षणमाह ॥

भयेनक्षोभिताःदोषाःदूषयंतिमलंतदातिसार्यतेजंतुःक्षिप्रमुष्णंजलंङ्घ्रम् । वातपित्तातीसारस्यप्रायोलिंगैःसमन्वितम् ॥ अभयोपशमाच्छर्म्मयस्मिन्स्यात्सभयात्स्मृतः

प्लवतिप्लवम् ॥ जलेप्लवमानम् । ननुभयातिसारस्यकथमागंतुजत्वमयमपिदोषजएव । यतश्चाह । भयेनक्षोभितादूषितादोषामलंदूषयंतितंमलमातिसरति । अत्रपूर्व्वमेव दोषसम्बन्धःउच्यते। रागद्वेषभयाच्चैवतेस्युरागंतवोगदाइतिवचनाद्भयातीसारआगन्तु जएव ॥ भयेनैवहेतुभूतेनदोषावातपित्तकफाःअतीसारंजनयंतिक्षोभितासञ्चालिताः ननुदूषिताभयेनत्रयाणामपिदोषाणां दूषणासम्भवात्अतिसर्त्तुंचलितावातपित्तकफाम लंदूषयंतितत्सर्व्वंवातपित्तकफमलंभयेनैवातिसार्य्यते। पश्चाद्वातसम्बन्धेनभयाद् वायुरितिवचनात् ॥ अतएवभयातिसारेवातहर्षवक्रियाकथितेतिसाधुः ॥ ५२४ ॥

आगन्तुकभयातीसारका संप्राप्ति पूर्व्वक लक्षण ॥

भयातीसार में भयके द्वारा क्षोभित दोषजव मलको दूषित करते हैं तब शीघ्रही जलमें बहता हुआ उष्ण और वात पित्तके अतीसारके चिह्नों से युक्तमल निकलताहै भयकी शान्तिसे सुखहोताहै इस्से इसको भयातीसार कहते हैं अबयह सन्देह होताहै कि भयातीसार दोषजहै इसको आगन्तुक क्यों कहते हैं और कहाभी गयाहै कि भयके द्वारा क्षोभित (चलायमान) दोषयुक्त वातादि दोषमलको दूषित करके अतीसारको उत्पन्न करतेहैं इस वचनके द्वारा रोग उत्पन्न होनेके पहलेही दोषोंका संबन्ध सूचित होताहै इसका उत्तर यहहै कि रागद्वेष और भयसे उत्पन्न रोग आगन्तुक कहलाते हैं इस वचनके द्वारा भयातीसार आगन्तुक है यहां भयके द्वारा दूषित दोषयह अभिप्रायनहीं क्योंकि तीनोंदोषोंका दूषित होना भयके द्वारा असंभव है अतीसारके लिये चलायमान वातपित्त और कफ मलको दूषित करतेहैं वह सम्पूर्ण वातपित्त कफका मल भयके द्वारा निकलता है और पीछे भयके द्वारा वायुहोतीहै इस वचनके अनुसार वायुका संबंध होताहै इसीसे भयातीसारमें वातनाशक क्रिया कही गईहै ॥ ५२४ ॥

अथ तयोश्चिकित्सा । भयशोकसमुद्भूतौज्ञेयौवातातिसारवत् ॥ तयोर्वातहरीकार्य्याहर्षणाश्वासनैःक्रिया । वातातिसारवत्वातातिसारलक्षणयोःतयोश्चिकित्साचहर्षण श्वासनपूर्विकावातहरीकर्त्तव्या ॥ ५२५ ॥

शोकातीसार और भयातीसारकी चिकित्सा ॥

भय और शोकजनित अतीसारमें हर्ष और आश्वास पूर्व्वके वातातीसारके समान वात नाशक चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ५२५ ॥

अथामातीसारस्यसंप्राप्तिपूर्वकंलक्षणमाह ॥

अन्नाजीर्णात्प्रद्रुताःक्षोभयंतोदोषाः कोष्ठेधातुसंघान्मलांश्च । नानावर्णानेकशःसारयंतिशूलोपेतंषष्ठमेनंवदंति ॥ अन्नंभुक्तंतदजीर्णञ्चेतिकर्म्मधारयेअन्नाजीर्णंतस्मात् प्रद्रुताक्षोभयन्तःचालयन्तः । नैकशइत्यत्रनाकादित्वान्नाक्षरविपर्य्ययःनत्वामेनदोषाद् प्यन्तेगुर्वादिभक्षणादिभिरिवतेचातीसारमुत्पादयन्ति ॥ नत्वामेनातीसारमुत्पादयन्ति। तेनामातीसारोऽपिदोषजएव किमर्थंपृथगुक्तम् उच्यते॥ अथामातीसारस्यचिकित्सा॥ अतीसारेषुसर्व्वेषुएवसंग्राहकमौषधमुक्तमामातीसारेतुग्राहकंनिषिद्धम् ॥ यतउक्तम्नामे

संग्राहकंदद्यादतीसारेकदाचन । संगृहीतोवलादामोविकारान्कुरुतेवहून् ॥ वलाद्भेषजवलात्विकारात्ग्रहण्याध्मानशूलगुल्मशोथोदरज्वरादीन् ॥ ५२६ ॥

आमातीसारका संप्राप्ति पूर्व्वक लक्षण ॥

अन्नके अजीर्ण होने से वात पित्त और कफ अपने २ मार्गसे हटकरके रस रक्तादिक धातुओंको और मलों को कोष्ठ में चलायमान करतेहुए क्रीड़ाके साथ अनेकप्रकार के वर्णयुक्त मलको वारम्बार निकालते हैं यह छठा आमातीसार कहाताहै अवयह सन्देह होताहै कि भारी आदि वस्तुओंकेद्वारा जैसे दोष दूषित होतेहैं उसीप्रकार आमके द्वारा दूषित होतेहैं और वही अतीसारको उत्पन्न करते हैं आम अतीसारको नहींउत्पन्न करता इसलिये आमातीसार भी दोषजहै इसको अलग क्योंकहा इसका उत्तर यह है कि सवप्रकार के अतीसारों में ग्राही औषध दीजाती है परन्तु आमातीसार में ग्राही औषधका निषेध है क्योंकि कहागयाहै कि आमातीसारमें ग्राही औषधि कभी न देना चाहिये क्योंकि औषधके वलके द्वारा आमको रोकने से ग्रहणी अफरा शूल गुल्म सूजन उदर और ज्वरादिक अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं ॥ ५२६ ॥

तस्याचिकित्सा ॥

वत्सकातिविषाशुण्ठीविल्वहिंगुयवाम्बुदाः । चित्रकेणयुतेःक्काथःआमातीसारनाशनः ॥ शोथातीसारस्यचिकित्सा । शोथघ्नेन्द्रयवापाठाश्रीफलातिविषाघनाः ॥ क्वथिताःसोषणापीताःशोथातीसारनाशनाः ॥ शोथघ्नीपुनर्नवा । उषणंमरिचं ॥ इतिशोथातीसारः ॥ ५२७ ॥

आमातीसार की चिकित्सा ॥

कुरैया अतीस सोंठ वेल हींग इन्द्रजौ और चीता इनके काढ़ेसे आमातीसारका नाश होताहै सूजन वाले अतीसार की चिकित्सा पुनर्नवा इन्द्रजौ पाठा वेल अतीस और मोथा इनके काढ़ेमें मिर्च डालकर पीनेसे सूजन युक्त अतीसार का नाश होताहै ॥ ५२७ ॥

आम्रास्थिमध्यमालूरफलक्काथःसमाक्षिकः । शर्करासहितोहन्यात्छर्द्यतीसारमुल्वणम् ॥ मालूरफलंविल्वफलं । कषायोभृष्टमुद्गस्यसलाजमधुशर्करः ॥ निहन्याच्छर्द्यतीसारंतृष्णांदाहंज्वरंभ्रमम् ॥ इतिछर्द्यतीसारः ॥ ५२८ ॥

आमकी विजली और वेलके क्काथ में शक्कर और सहत डालकर पीनेसे छर्दि अतीसार का नाश होताहै भुनीहुई मूंगके काढ़े में खील सहत और शक्कर डालकर पीनेसे छर्दिअतीसार तृषा दाह ज्वर और भ्रमका नाशहोता है इतिछर्दिअतीसार ॥ ५२८ ॥

दध्नाससारेणसमाक्षिकेणभुञ्जीतनिःसारकपीडितस्तु । सुतप्तकुप्यक्कथितेनवापिक्षीरेणशीतेनमधुप्लुतेन ॥ निसारकःनिठाहीतिलोके । सुतप्तकुप्यक्कथितेनसुतप्तसुवर्णरजतनिर्वापणक्कथितेनभुञ्जीतपथ्यमितिशेषः ॥ निःसारके ॥ ५२९ ॥

मरोड़ेसे पीड़ित मनुष्य विना मक्खन निकला दही और सहतके साथ पथ्य भोजन करे अथवा सोने या चांदीसे वुझाये हुए दूधको शीतल करके सहत डाल पथ्यसे भोजन करे ॥ ५२९ ॥

दीप्ताग्निर्निःपुरीषोयःसार्य्यतेफेनिलंशकृत् । सपिवेत्फाणितंशुण्ठीदधितैलंपयोघृतम् ॥

वला·विश्वाश्रृतंक्षीरंगुड़तैलानुयोजितम्· । दीप्ताग्निंपाययेत्प्रातःसुखदंवर्चसःक्षये ॥ पुरीपक्षये ॥ ५३० ॥

दीप्ताग्नि वाले पुरुपको मलके नाश होजाने पर जो फेनायुक्त पतले दस्त आवें तो सोंठ दही तिलका तेल दूध और,घी मिलाकर पिये वरियारा और सोंठके द्वारा दूधका पाक करके गुड़ और तेल छोड़कर प्रातः काल पीनेसे दीप्ताग्नि वालेको मलके क्षय होजाने पर सुख होताहै ॥ ५३० ॥

तुलांसंकुड्यावित्वस्यपचेत्पादावशेषितम् । सक्षीरंसाधयेत्तैलंश्लक्ष्णापिष्टैरिमैःसमैः विल्वंसधातकींकुष्ठंशुण्ठीरास्नापुनर्नवाः । देवदारुवचामुस्तंलोध्रमोचरसान्वितम् ॥ एभिर्मृद्वग्निनापक्वंग्रहण्यर्शोऽतिसारनुत् । विल्वतैलमितिख्यातमात्रिपुत्रेणभाषितम् ॥ ग्रहण्यर्शोऽधिकारेयेस्नेहाःसमुपदर्शिताः । प्रयोज्यास्तेऽतिसारेऽपित्रयाणांतुल्यहेतुना ॥ इतिविल्वतैलम् ॥ ४३१ ॥

चारसौ तोले वेल गिरीको कूटकर १०२४ एकहजार चोवीस तोले जलमें औटावे फिर चौथाई वाकी रहजाने पर तिलका तेल तथा दूधडाले फिर वेलगिरी धवईके फूल कूट सोंठ रासना पुनर्नवा देवदारु वच मोथा लोध और मोचरस इन सवको वरावर भाग लेकर छोड़कर मंदाग्निमें पाक कर यह विल्व तैल ग्रहणी ववासीर तथा अतीसारको नाश करताहै ग्रहणी और ववासीर के अधिकारमे जो स्नेह कहे गयेहैं वह अतीसार में भी काममें लाने चाहिये क्योंकि यह तीनों समान हेतुवाले हैं इति विल्व तैल ॥ ५३१ ॥

अथातीसारस्यभेदःप्रवाहिकातस्याःसंप्राप्तिपूर्वकंलक्षणमाह ॥

वायुःप्रवृद्धोनिचितंवलासंनुदत्यधस्तादहिताशनस्य । प्रवाहतोऽल्पंवहुशोमलाक्तंप्रवाहिकांतांप्रवदन्तितज्ज्ञाः ॥ अस्यायमर्थःअहिताशनस्यअतिशयेनवातलभक्ष्यभोजिनःप्रवृद्धोवायुःप्रवाहतः कण्ठेहृद्वलेनसशब्दंवायुमपानमार्गेणत्यजत निचितंसञ्चितंवलासंकफंमलाक्तंपुरीपयुक्तंअल्पंवहुशः वारंवारंअधस्ताद्गुदात्नुदतिवैद्याः तांप्रवाहिकां प्रवदन्ति ॥ ५३२ ॥

अतीसारको भेद प्रवाहिकाका संप्राप्ति पूर्वक लक्षण ॥

अत्यन्त वायुवर्द्धक आहारके करनेसे कुपितहुई वात संचित कफको नीचे लेजाती है इसलिये वहुत अपशब्दों सहित वारम्वार थोडामल सयुक्तकफ गुदाकेद्वारा निकलताहै इसरोगको वैद्यलोग प्रवाहिका कहते हैं ॥ ५३२ ॥

तस्यावातजादिभेदेनरूपमाह ॥

प्रवाहिकावातकृतासशूलापित्तात्सदाहासकफाकफाच्च । सशोणिताशोणितसम्भवाश्चताःस्नेहरूक्षप्रभवामतास्तु ।तत्ररूक्षप्रभवावातजास्नेहप्रभवाकफजातुशब्दात्तीक्ष्णोष्णप्रभवापित्तजारक्तजाच ॥ तासामतीसारवदादिशेच्चलिङ्गंक्रमंचामविपक्वतांच॥५३३

वातजादिभेदों सेप्रवाहिकाके लक्षण ॥

वातज प्रवाहिका पीड़ा सहित पित्तज प्रवाहिका दाह युक्त कफज प्रवाहिका कफ सहित और रक्तज प्रवाहिका रक्त सहित होतीहै रूखी वस्तुओंसे वातज स्नेहोंके सेवनसे कफज और तीक्ष्ण-

तथा उष्ण वस्तुओंके सेवनसे पित्तज तथा रक्तज प्रवाहिका उत्पन्नहोती हैं प्रवाहिकाओं के लक्षण क्रम और आमका परिपाक यह सब अतीसारोंके समान जानने चाहिये ॥ ५३३ ॥

तस्याश्चिकित्सामाह ॥

बिल्वपेशींगुडंलोध्रंतैलंमरिचसंयुतम्। लीढ्वाप्रवाहिकाक्रान्तःसत्वरंसुखमाप्नुयात् ॥ बिल्वादिअवलेहः॥ ५३४ ॥

प्रवाहिका की चिकित्सा ॥

बेल पुरानागुड लोध तिलका तेल और मिर्च इन सबको एकमें मिलाकर चाटने से प्रवाहिका का नाशहोताहै ॥ इति बिल्वाद्यवलेह ॥ ५३४ ॥

धातकीबदरीपत्रंकपित्थंरसमाक्षिकम्। सलोध्रमेकतोदध्ना पिबेन्निर्वाहिकार्दितः॥एकतःप्रत्येकंदध्नापिबेदित्यर्थः। इतिधातक्यादिः ॥ ५३५ ॥

धवईके फूल बेलकी पत्ती कैथेका रस सोनामक्खी और लोध इनमें से किसी एकको दही के साथ खाने से प्रवाहिका का नाशहोताहै ॥ इति धातक्यादि ॥ ५३५ ॥

अथासाध्यातीसारिणांलक्षणमाह ॥

पक्वजाम्बवसङ्काशंयकृत्खण्डनिभंतनु। घृततैलवसामज्जावेसवारपयोदधि ॥मांसधावनतोयाभंकृष्णंनीलारुणप्रभम्। कर्बुरंमेचकंस्निग्धंचन्द्रिकोपगतंघनम्॥ कुणपंमस्तुलुङ्गाभंसगन्धंकथितंवहु। तृष्णादाहारुचिश्वासहिक्कापार्श्वास्थिशूलिनम्॥ संमूर्च्छारतिसंमोहयुक्तंपक्ववलीगुदम्। प्रलापयुक्तञ्चभिषग्वर्जयेदतिसारिणम्॥ असंवृतगुदंक्षीणंशूलाध्मानैरुपद्रुतम्। गुदेपक्वेगतोष्माणमतीसारिणमुत्सृजेत् ॥ असंवृतगुदंगुदसंवरणाक्षमम्। गुदेपक्वेगुदपाकारम्भकेवित्तेविद्यमानेपिशीतगात्रंनष्टाग्निंवा ॥ श्वासशूलपिपासार्त्तंक्षीणंज्वरनिपीडितम्। विशेषेणनरंवृद्धंअतीसारोविनाशयेत् ॥ शोथंशूलंज्वरंतृष्णांश्वासंकासमरोचकम्। छर्दिंमूर्च्छांचहिक्कांचदृष्ट्वातीसारिणमुत्यजेत्॥ हस्तपादाङ्गुलीसन्धिप्रपाकोमूत्रनिग्रहः । पुरीषस्योष्णतातीवमरणायातिसारिणः ॥ अतीसारीराजरोगीग्रहणीरोगवानपि । मांसाग्निवलहीनोयोदुर्लभंतस्यजीवनम्॥ बालेवृद्धेत्वसाध्योऽयंलिङ्गैरेतैरुपद्रुतः अपियूनामसाध्यंस्यादतिदुष्टेषुधातुषु ॥ ५३६ ॥

असाध्य अतीसारवालों के लक्षण ॥

जिस अतीसार में रोगीका मल पकी जामनके समान तथा यकृतके खंडके समान वर्ण वाला हो पतलाहो घी तेल चरबी मज्जा वेसवार दूध अथवा दहीके तुल्य अथवा मांसके धोवनके समान होय काला नीला लाल अंजन अथवा मोरकी पूंछके समान सचिक्कण तथा नाना प्रकारके वर्णों से युक्तहोवे वह रोगी असाध्यहै जिस रोगीका मल दुर्गन्धयुक्त अथवा सुगंधित भेजेके समान बहुतसा निकले वह असाध्यहै अतीसारमें तृषा दाह अरुचि श्वास हिचकी पसली तथा हड्डियों में पीड़ा मूर्च्छा व्याकुलता मोह गुदाके चर्मोका पकना और प्रलापहोय तो असाध्य जानना चाहिये जिस अतीसारवालेको गुदाके बन्दकरने की शक्ति न होय शूल तथा अफराहोय गुदा पकजाय और ऊष्मा

न रहे उसको वैद्य त्यागदेवे जो अतीसारवाला श्वास शूल तथा तृषा से व्याकुल क्षीण और ज्वर से युक्तहो वह असाध्यहै वृद्ध मनुष्यको विशेषकरके अतीसार मारताहै सूजन शूल ज्वर तृषा श्वास खांसी अरुचि छर्दि मूर्च्छा और हिचकी इनसे युक्त अतीसार असाध्य होताहै जिस अतीसारमें हाथ पैर उंगली तथा संधियां पकी हुईसी मालूम पड़ें मूत्र रुकजाय और मल वहुतगरमहो वह असाध्य है अतीसार राजयक्ष्मा और ग्रहणीवाले जो मनुष्य मांस अग्नि तथा बलसे क्षीणहैं उनका जीना दुर्लभहै वालक और वृद्धोंका अतीसार इन सम्पूर्ण उपद्रवों से युक्तहोने पर असाध्य होताहै और धातुओंके अत्यन्त दूषित होजानेपर युवा पुरुषका भी अतीसार असाध्य होजाताहै ॥ ५३६ ॥

अथातीसारमुक्तस्यलक्षणम् ॥

यस्योच्चारंविनामूत्रंसम्यग्वायुश्चगच्छति । दीप्ताग्नेर्लघुकोष्ठस्यस्थितस्तस्योदरामयः ॥ ५३७ ॥

गयेहुए अतीसार के लक्षण ॥

जिसको मल त्यागकरनेके समय के बिना भी मूत्र तथा अपानवायु अच्छेप्रकारसे निकले अग्नि दीप्तहो कोष्ठ हलका होजाय उसको अतीसार रहित जानना चाहिये ॥ ५३७ ॥

अथातीसारिणोवर्ज्जनीयान्याह । स्नानावगाहमभ्यङ्गगुरुस्निग्धादिभोजनम् ॥ व्यायाममग्निसन्तापमतीसारीविवर्जयेत् । स्नानमुद्धृतजलेनअवगाहनंनद्यादौ॥५३८॥

अतीसार वालेको त्याज्य वस्तु ॥

भरेहुए जल से अथवा नदी आदिकमें स्नान शरीर में तैलादि मर्दन भारी तथा स्निग्ध वस्तुओं का भोजन व्यायाम और अग्निसे तपना यह अतीसार वालेको वर्जितहैं ५३८ ॥

प्रत्येकंदशगद्याणःशुद्धसूतकगन्धयोः । विंशतित्रिदिनंखल्वेपिष्ट्वाकुर्य्याच्चकज्जलीम् ॥ पश्चादर्कस्यदुग्धेनापेष्ट्वातांकज्जलींत्र्यहम् । ततोवज्रस्यदुग्धेनपिष्ट्वातांकज्जलींत्र्यहम् ॥ आर्द्रकंचित्रकंश्वेतंनिःसहायञ्चमर्द्दयेत् । पेषयेत्तद्रसैरेवंकज्जलीन्तांदिनत्रयम् ॥ पीतानाञ्चकपर्द्दीनांचूर्णंगद्याणविंशतिः । विंशति.शंखचूर्णस्यचत्वारिंशच्चमिश्रितम् ॥ त्रिदिनंमर्द्दयेत्खल्वेपूर्वोक्तेनक्रमेणच । त्र्यहमर्कस्यदुग्धेनवज्रीदुग्धेनचत्र्यम् ॥ तन्मध्येकज्जलींक्षिप्त्वाचित्रकार्द्ररसेनतु ॥ खल्वेपिष्ट्वात्रय.कार्यागुट्योबदरसम्मिताः॥लिप्त्वादग्ध्वाशुचूर्णेनपक्वकुल्हरिकान्तरम् । प्रक्षिप्यगुटिकास्तत्रचूर्णंलिप्तपिधानकम् ॥ दत्वावस्त्रंमृदालिप्त्वागर्तेहस्तप्रमाणिका । तद्गर्भेकुल्हरींमुक्त्वापुटोदेयश्चशाणकैः ॥ पश्चाच्चित्रकनीरेणस्वांगशीतञ्चपेषयेत् । गुटिकापूर्वरीत्यैवकृत्वादेयःपुनःपुटः॥ दग्धानांगुटिकानाञ्चचूर्णंकृत्वाथकूपके । क्षेप्यस्त्राम्रेवनिःपन्नोरसोऽयंशंखपोटली॥ आमज्वरातिसारेचश्वासेकासेतथैवच । श्लेष्मपित्तामवातेषुमन्दाग्नौग्रहणीषुच ॥ अष्टादशप्रमेहेषुजीर्णेजीर्णेवलेषुच । द्वात्रिंशन्मरिचैःसाकंसघृतंवल्लपञ्चकम् ॥ सर्वरोगेषुदातव्यंमरिच्याज्यंविनाज्वरे । शालयोदाधदुग्धादिभोजनंमधुरंहितम् ॥ कट्वम्लक्षारतैलाद्यादूरतःपरिवर्जयेत् । विधिनानेनकर्तव्योरसोऽसौशंखपोटली. ॥ क्रमेणविनिवर्त्तन्तेप्रोक्तरोगानसंशयः ॥ ५३९ ॥

शुद्ध पारा और गंधक पांच २ तोले लेकर एकसाथ तीन दिन घोटकर कज्जलीकरे फिर आकके दूध में तीन दिन घोटकर थूहरके दूधमें तीन दिन खरलकरे इसके उपरान्त अदरक और श्वेत चीते की जड़को विना जल के कूटकर रस निकाले उस रसमें तीन दिन कज्जली को घोटे फिर पीली कौड़ी और शंखका दश २ तोले चूर्ण एकमें मिलाकर पहली कहीहुई विधिसे तीन दिन घोटकर आकके दूधमें और थूहरके दूधमें तीन २ दिन घोटे फिर उसमें वह कज्जली मिलाकर अदरक और चीते के रसमें घोटकर वेरके वरावर गोली बनावै इसके उपरान्त खूब पकी कुल्हियाके भीतर चूने का लेपकरके पकावे फिर उसमें वह गोली भरदे और चूने से लिपेहुए ढकनेसे बन्दकरके कपड़ौटी करदे फिर हाथभरका गढ़ा खोदकर अरने कण्डोंसे उसमें पुटदे और शीतल होनेपर निकालके चीते के रसमें पीसकर पहलीसी गोली बनाले और उसीप्रकार से फिर पुटदे पीछे गोलियोंको निकाल पीसकर सीसीमें रक्खे फिर बत्तीस मिर्च और घी के साथ पन्द्रह रत्ती यह शंखपोटली नाम रस खाने से आमज्वर अतीसार श्वास खांसी कफ पित्त आमवात मंदाग्नि ग्रहणी अठारह प्रमेह जीर्णता और बलक्षयका नाश होता है ज्वर में मिर्च और घीके साथ न देना चाहिये धान दही दूध आदिक भोजन पथ्य हैं और कटु खटाई क्षार तथा तेल आदिक त्याज्यहैं इस प्रकारसे इस शंख पोटली नाम रस के सेवन करनेसे कहेहुए संपूर्ण रोगक्रमसे निस्सन्देह नाशको प्राप्त होतेहैं ॥ इति शंखपोटली रस ॥ ५३६ ॥

त्रैलोक्यविजयाजातीफलेतुल्येकलिंगके । गृहीत्वाद्विगुणंश्रेष्ठंलोहःसर्वातिसारनुत् ॥ विल्वमोचरसलोध्रधातकीपुष्पचूतफलवजिसंयुताम् । भक्षयेदतिविषावलेहिकांसिन्धु वेगमपिदुर्द्धरंध्रुवम् ॥ इत्यतीसाराधिकारः ॥ ५४० ॥

भांग तथा जायफल को समभाग लेकर इनके दूने इन्द्रजौ ले और इनसबका दूना लोहसार ले फिर सब को मिलाकर सेवन करनेसे सब अतीसारोंका नाश होताहै बेल मोचरस लोध धवई के फूल आमकी बिजली और अतीस इन सब औषधियों का अवलेह बनाकर खानेसे समुद्र के वेगके समान भी अतीसार रुकजाताहै ॥ इति अतीसाराधिकार ॥ ५४० ॥

अथज्वरातीसाराधिकारः । ज्वरातिसारयोरुक्तंनिदानंयत्पृथक्पृथक् । तस्माज्ज्वरातिसारस्यनिदानंनोदितंपुनः ॥ ५४१ ॥

ज्वरातीसार ॥

ज्वर और अतीसारका निदान पहले अलग२ कहचुके हैं इस लिये ज्वरातीसारका निदान फिर नहीं कहतेहैं ॥ ५४१ ॥

अथज्वरातीसारस्यचिकित्सा ॥

ज्वरातीसारयोरुक्तंभेषजंयत्पृथक्पृथक् । नतन्मिलितयोःकार्यमन्योन्यंवर्द्धयेद्यतः ॥ अयमभिप्रायः । ज्वरहरमनुलोमनम्भवति अतीसारहरंस्तम्भनम्भवति । अतःपरस्परविरुद्धत्वात्पृथगुक्तंभेषजंमिलितयोर्नकार्यम् । यतआह । अनुलोमनंज्वरघ्नंग्राहकमतीसारहृद्भवति । पृथगुक्तमौषधंतज्ज्वरातीसारेविरुद्धमन्योन्यम् ॥ अतस्तौप्रतिकुर्वीत विशेषोक्तचिकित्सितैः । लङ्घनमेकंमुक्त्वानचान्यदस्तीहभेषजंबलिनः ॥ समुदीर्णदोष

निचयंतत्पाचयेत्तथाशमयेत् । लङ्घनमुभयोरुक्तंमिलितेकार्यंविशेषतस्तदनु ॥ उत्पलष ष्ठकसिद्धलाजमण्डादिकंसकलम् । उत्पलषष्ठकयथा। पृष्ठपर्णीवलाविल्वधनिकानाग रोत्पलैः ज्वरातीसारयोर्वापिपिवेत्साम्लंश्रृतन्नरः। अत्रलाजामण्डाद्यपेक्षयावाशब्दः । अ तीसारपुरीषातिप्रत्याअम्लत्वञ्चदाडिमरसादिनाकर्त्तव्यम्।इतिउत्पलषष्ठकम् ५४२॥

ज्वरातीसारकी चिकित्सा ॥

ज्वर और अतीसारकी जो औषध अलग२ कहीगईहैं उनको मिलाकर खानेसे ज्वरातीसार नहीं जाताहै क्योंकि वह परस्पर विरुद्धहोकर एक दूसरे को बढ़ातीहैं इसका यह अभिप्रायहै कि ज्वरघ्न औषधमलको निकालने वाली और अतीसार नाशक औषध ग्राही होती है इस लिये परस्पर विरुद्धहोने के कारण अलग२ कही हुई औषध मिलाकर न करनी चाहिये क्योंकि कहागयाहै कि ज्वर घ्न औषध मलकी निकालनेवाली और अतीसारकी औषध ग्राही होती है इस कारण से अलगअलग कही हुई औषध ज्वरातीसार मे परस्पर विरुद्धहोती हैं इस लिये ज्वरातीसारमें विशेष कहीहुई औषधियोंके द्वारा चिकित्सा करनी चाहिये इसरोगमें बलवान पुरुषको लंघनके सिवाय और कोई औषध नहींहै लंघनके द्वारा दोष परिपाक और शान्तिको प्राप्तहोते हैं ज्वर और अतीसार इन दोनों में लंघन कहागयाहै और दोनोंके मिलेहोने पर विशेष करके लंघन कराना चाहिये लंघनके उपरान्त उत्पलषष्ठकके द्वारा सिद्ध हुआ खीलोंका मॉड़देना चाहिये पृष्ठपर्णी बरियारा बेल धनिया सोंठ और नील कमल यह उत्पलषष्ठक कहलाताहै इनके द्वारा काढ़ाकरके अनारकारस मिलाकर ज्वरातीसारमें देनाचाहिये इति उत्पलषष्ठक ॥ ५४२ ॥

कणाकरिकणालाजक्राथोमधुसितायुतः पीतोज्वरातिसारस्यतृष्णामाशुविनाशयेत्॥ इतिकणादिक्राथ. । नागरातिविषामुस्तामृताभूनिम्बवत्सकैः।क्राथःसर्वज्वरान्हन्ति अती सारंसुदारुणम् ॥ इतिनागरादिक्राथः । गुडूच्यातिविषाधान्यशुण्ठीबिल्वाब्दबालकैः । पाठाभूनिम्बकुटजचन्दनोशीरपर्पटैः ॥ पिबेत्कषायंसक्षौद्रज्वरातीसारनाशनम् । हल्ला सारुचितृड्दाहवमीनाञ्चनिवृत्तये ॥ वृहद्गुडूच्यादिक्राथः । उत्पलंदाडिमत्वक्चपद्म केशरमेवच । पीतंतण्डुलतोयेनज्वरातीसारनाशनम् ॥ इतिउत्पलादिचूर्णम् । विल्ववा लकभूनिम्बगुडूचीमुस्तवत्सकैः । कषाय.पाचनःशोथज्वरातीसारनाशनः ॥ विल्वादि क्राथः । नागरातिविषाविल्वगुडूचीमुस्तवत्सकैः । कषाय.पाचन.शोथ.ज्वरातीसारनाश नः ॥ इतिनागरादिक्राथ । दशमूलीकषायेणविश्वामक्षसमांपिवेत् । ज्वरेचैवातिसारेच सशोथेग्रहणीगदे ॥ इतिदशमूलीक्राथ. । इतिज्वरातीसाराधिकारः ॥ ५४३ ॥

पीपल गजपीपल खील इनके काढ़ेको शीतल करके सहततथाशक्कर मिलाकर पीने से ज्वरातीसार वाले की तृषाका नाशहोताहै इतिकणादिक्राथ सोंठ अतीस मोथा गिलोय चिरायता और इन्द्रजौ इनकेकाढ़े से संपूर्ण ज्वर और घोर [illegible]सारका नाशहोताहै इतिनागरादि क्राथ गिलोय अतीस धनियां सोंठ बेल सुगन्धवाला पाठा चिरायता कुरैया लालचन्दन खस और पित्तपापड़ा इनके काढ़ेमें सहत डाल कर पीने से ज्वरातीसार जीमिचलाना अरुचि तृषा दाह और छर्दिका नाशहोताहै इति वृहत्गुडूच्यादिक्राथ नीलकमल अनारके छिलके और कमलका जीरा इनके चूर्ण

को चावलोंके पानीकेसाथपीने से ज्वरातीसारका नाशहोताहै इतिउत्पलादिचूर्ण वेल सुगन्धवाला चिरायता गिलोय मोथा और इन्द्रजो इनका काढ़ा पाचक और सूजन तथा ज्वरातीसारका नाशक होताहै इतिविल्वादि क्वाथ सोंठ अतीस वेल गिलोय मोथा और इन्द्रजौ इनका काढ़ा पाचक और सूजन तथा ज्वरातीसारका नाशक होताहै इतिनागरादि क्वाथ तोले भर सोंठ दशमूल के काढ़ेके साथपीनेसे सूजन सहित ज्वर अतीसार और ग्रहणीका नाशहोताहै इतिदशमूलीक्वाथ ॥ इतिज्वरातीसाराधिकार ॥ ५४३ ॥

अथग्रहणीरोगाधिकारः। तत्रग्रहणीरोगस्यसम्प्राप्तिमाह ॥

अतीसारेनिवृत्तेऽपिमन्दाग्नेरहिताशिनः। भूयःसन्दूषितोवह्निर्ग्रहणीमपिदूषयेत् ॥ अपिशब्दादजातातीसारस्यापिग्रहणीरोगःस्यात् ॥ ५४४ ॥

ग्रहणीरोगाधिकारग्रहणीरोगकी संप्राप्ति ॥

अतीसारके निवृत्तहोजाने पर जो मन्दाग्नि वाला पुरुष अहित भोजनकरे तो दूसरीवार अग्नि दूषित होकर ग्रहणीको दूषित करती है अतीसारके न होनेपर भी ग्रहणी रोग होताहै ॥ ५४४ ॥

अथग्रहणीस्वरूपमाह ॥

ग्रहण्यग्निधराकला। यतआहचरके। अग्न्यधिष्ठानमन्नस्यग्रहणाद्ग्रहणीमता। अपक्वंधारयत्यन्नम्पक्वन्त्यजतिचाप्यधः ॥ सुश्रुतेऽपि। षष्ठीपित्तधरानामयाकलापरिकीर्त्तिता। आमपक्वाशयान्तस्थाग्रहणीसाभिधीयते ॥ ग्रहण्यावलमग्निर्हिसचापिग्रहणीमता। तस्मादग्नौप्रदुष्टेतुग्रहण्यपिविदुष्यति॥एतेननिवृत्तातिसारिणापिअहिताहारपरीहारःकरणीयःआवह्निवललाभादित्युक्तम्भवतिअतएवाहसुश्रुतः। तस्मात्कार्य्यःपरीहारोह्यतीसारेविरिक्तवत्। यावन्नप्रकृतिस्थःस्याद्दोषतःप्राणतस्तथा। विरिक्तेनैवविरिक्तवत् ॥ ५४५ ॥

ग्रहणीका स्वरूप ॥

अग्निकी धारण करनेवाली कलाको ग्रहणी कहते हैं क्योंकि चरकमें कहाहै कि अग्निके धारण करने वाली कला अन्नके ग्रहण करने से ग्रहणी कहलाती है यह कच्चे अन्नको धारण करती है और पक्के अन्नको नीचे छोड़ती है सुश्रुतने भी कहाहै कि आमाशय और पक्वाशय के बीचमें जो पित्तधरा नाम छठी कलाहै उसको ग्रहणी कहते हैं ग्रहणीका वल अग्निहै इसलिये अग्निको भी ग्रहणीकहते हैं इससे अग्निके दूषितहोने पर ग्रहणी भी दूषित होतीहै इससे यह सिद्ध होताहै कि अतीसार के निवृत्त होजानेपर जबतक अग्निमेंबल न आजाय तबतक अहितकारी आहारका त्यागकरना चाहिये इसी से सुश्रुतने कहाहै कि जबतक दोष और वल स्वाभाविक न होजायें तबतक अतीसारवाले को जुलाब लेनेवाले के समान अपथ्यका त्याग करना चाहिये ॥ ५४५ ॥

अथग्रहणीरोगस्यसंस्यापूर्वकंसामान्यंलक्षणमाह ॥

एकैकशःसर्व्वशश्चदोषैरत्यन्तमूर्च्छितैः। सादुष्टावहुशोभुक्तमाममेवविमुञ्चति ॥ पक्वंवासरुजंपूतिमुहुर्वद्धंमुहुर्द्रवम्। ग्रहणीरोगमाहुस्तमायुर्वेदविदोजनाः ॥ अतीसारेद्रवधातुप्रवृत्तिर्ग्रहण्यान्तुवद्धस्यापिमलस्यप्रवृत्तिरितितयोर्भेदः ॥ ५४६ ॥

॥ ग्रहणी रोगका संख्यापूर्वक सामान्य लक्षण ॥

. जिस रोगमें अलग, २, और मिलेहुए बहुत बढ़ेहुए वातादि दोषोंसे दोषयुक्त ग्रहणी भोजनकियेहुए पदार्थको कच्चा अथवा पक्का दस्तों में बहुतसा निकाले और मल कभी बंधा कभी पतलाहोकर दुर्गन्ध युक्त पीड़ाके साथ निकले उसको ग्रहणी रोग कहते हैं अतीसार में पतला मल निकलता है और ग्रहणी में बंधाहुआ भी मल निकलताहै यही इन दोनों में भेदहै ५४६ ॥

अथवातजायांग्रहण्यांनिदानसम्प्राप्तिपूर्व्वकंरूपमाह ॥

कटुतिक्तकषायातिरूक्षशीतलभोजनैः । प्रमितानशनादध्ववेगानिग्रहमैथुनैः ॥ मारुतःकुपितोवह्निंसञ्छाद्यकुरुतेगदम् । तस्यान्नंपच्यतेदुःखंशुक्तपाकःखरांगता ॥ कण्ठास्यशोषःक्षुत्तृष्णातिमिरंकर्णयोःस्वनः । पार्श्वोरुवंक्षणग्रीवारुगभीक्ष्णंविशूचिका ॥ हृत्पीडाकार्श्यदौर्बल्यंवैरस्यम्परिकर्त्तिका । गृद्धिःसर्वरसानाञ्चमनसःसदनन्तथा ॥ जीर्णेजीर्य्यतिचाध्मानंभुक्तेस्वास्थ्यमुपैतिच । सवातगुल्महृद्रोगप्लीहाशङ्कीचमानवः ॥ चिराद्दुःखंद्रवंशुष्कंतन्वामंशब्दफेणवत् । पुनःपुनःसृजेद्वर्चःकासश्वासार्द्दितोऽनिलात् ॥ प्रमित परिमितंगदंग्रहणीगदम् । शुक्तपाकम् ॥ ५४७ ॥

वातजग्रहणीका निदान और सम्प्राप्तिपूर्व्वक लक्षण ॥

कटु तिक्त कषाय रूखा तथा शीतल भोजन करनेसे थोड़ा भोजन लंघन बहुत मार्ग में घूमना वेगोंका रोकना और मैथुनकेद्वारा कुपितहुई वातअग्निको आच्छादितकरके ग्रहणीको उत्पन्नकरतीहै वात जग्रहणी में भोजन का बहुत देर में पचना तथा परिपाक में खट्टा होनाहै शरीर में कठोरता कृशता दुर्बलता कंठ तथा मुखका सूखना क्षुधा तृषा अन्धकार सा मालूम होना और पसली जंघा हृदय वंक्षण तथा ग्रीवा में पीड़ा होना विशूचिका मुखकी बिरसता गुदामें काटने के समान पीड़ा सब रसोंके खाने की इच्छा मनमें अप्रसन्नता भोजनके परिपाक होजाने पर अथवा परिपाक के समय अफरा भोजनके पीछे स्वस्थता बारंबार थोड़े २ फेने युक्त कच्चे मलका कष्ट के साथ बहुत देरमें निकलना और खांसी तथा श्वास के द्वारा व्याकुलता यह लक्षण होतेहैं इसरोग में बातगोला हृदय के रोग और प्लीहा होगईसी मालूमहोतीहै ॥ ५४७ ॥

अथपित्तजायाग्रहण्यानिदानसम्प्राप्तिपूर्व्वकंरूपमाह ॥

कटुतिक्तविदाह्यम्लक्षाराद्यैःपित्तमुल्वणम् । आप्लावयद्धन्त्यनलंजलंतप्तमिवानलम् ॥ सोऽजीर्णंपीतनीलाभंपीताभःसार्य्यतेद्रवम् । अत्यम्लोद्गारहृत्कण्ठदाहारुचितृपार्द्दितः ॥ आप्लावयत्मज्जयत्ननुपित्तमग्निगुणयुक्तंतत्कथमग्निंहन्तीत्याह । जलंतप्तमिवानलमितियथा । अग्निगुणयुक्तमपितप्तंजलमनलंहन्तितथापित्तमपिहन्ति । सार्य्यतेअत्रपित्रेनेतिकर्तृपदमध्याहरणीयम् ॥ ५४८ ॥

पित्तकी ग्रहणीका निदान और सम्प्राप्तिपूर्व्वक लक्षण ॥

कटु चिरपरा विदाही खट्टा तथा खारी आदि पदार्थों से बढ़ाहुआ पित्त गरम जलके समान अग्नि को डुबाता हुआ शान्त करता है पित्तजग्रहणी में पीले नीले अथवा केवल पीले पतले तथा कच्चे मलका निकलना खट्टी डकार हृदय तथा कंठमें दाह अरुचि और तृषा होतीहै ॥ ५४८ ॥

अथश्लेष्मजायाःग्रहण्याःनिदानपूर्व्वकांसम्प्राप्तिमाह ॥

गुर्वतिस्निग्धशीतादिभोजनादतिमैथुनात् । भुक्तमात्रस्यचस्वप्नाद्धन्त्यग्निंकुपितःकफः ॥ तस्यान्नंपच्यतेदुःखंहल्लासच्छर्घरोचकाः । अस्योपदेहमाधुर्यकासष्ठीवनपीनसाः॥ हृदयम्मन्यतेस्तब्धमुदरंस्तिमितंगुरु । दुष्टोमधुरउद्गारं सदनंस्त्रीष्वहर्षणम् ॥ भिन्नमश्लेष्मसंश्लिष्टंगुरुवर्चःप्रवर्त्तनम्।अकृशस्यापिदौर्बल्यमालस्यञ्चकफात्मके॥ भुक्तमात्रस्यचस्वप्नात्भुक्तेत्यत्राध्यवसितादित्वात्कर्त्रर्थेक्तः । तेनभुक्तवतःसद्यःशयनादित्यर्थः। आस्योपदेहःमुखस्यकफेनलिप्तत्वम्। स्तिमितंविवद्धंनिश्चलमितियावत् । स्त्रीपुअहर्षणम्रिरंसायाअभावः। भिन्नंस्फुटितमामपक्वंश्लेष्मसंश्लिष्टम्। ततएवगुरुवर्चःपुरीषंतस्यप्रवृत्तिः ॥ ५४९ ॥

कफजग्रहणीका निदान और संप्राप्ति पूर्व्वक लक्षण ॥

भारी वहुत स्निग्ध तथा शीतल आदि भोजनसे वहुत मैथुनसे और भोजनके उपरान्त तुरन्तही सोने से कुपित हुआ कफ अग्निको नष्ट करताहै कफज ग्रहणी में अन्नका वहुतदेर में पचना जी मिचलाना छर्दि अरुचि मुखका कफ से लिपारहना तथा मधुर रहना खांसी वहुत थूकना पीनस हृदय जकड़ाहुआसा मालूमहोना पेटकाभारी तथा निश्चलहोना विकारी मीठी२ डकार शिथिलता मैथुनकी इच्छाका न होना कफसहित विखरेहुए कच्चे तथा भारी मलका निकलना कृशताके विना भी बलरहित होना और आलस्य यह लक्षण होतेहैं ५४९॥

अथत्रिदोषजस्यग्रहणीरोगस्यनिदानपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥

पृथग्वातादिनिर्दिष्टहेतुलिंगसमागमे । त्रिदोषान्निर्दिशेदेवंतेषांवक्ष्यामिलक्षणम् ५५०

सन्निपातज ग्रहणीका निदान और संप्राप्तिपूर्व्वक लक्षण ॥

अलग २ कहेहुए वातादिकोंके हेतु और चिह्नोंके मिलनेसे त्रिदोषजग्रहणी जाननीचाहिये ५५०॥

अथग्रहणीरोगस्यभेदंसंग्रहणीरोगमाह ॥

द्रवंघनंमितंस्निग्धंसकटीवेदनंशकृत् । आमंबहुसुपैच्छिल्यंसशब्दंमन्दवेदनम् । पक्षात्मासाद्दशाहाद्वानित्यञ्चातिविमुञ्चति । अन्त्रकूजनमालस्यं दौर्बल्यंसदनम्भवेत् ॥ दिवाप्रकोपोभवतिरात्रौशांतिञ्चगच्छति । दुर्विज्ञयादुर्न्निवाराचिराकालानुबन्धिनी । साभवेदामवातेनसंग्रहग्रहणीमता । स्निग्धंस्नेहसदृशम्। दिवाप्रकोपोभवतिरात्रौशांतिञ्चगच्छतीतिव्याधेरेवप्रभावः ॥ ५५१ ॥

ग्रहणी रोगका भेद संग्रहणी रोगका वर्णन ॥

संग्रहणी रोगमें पतला गाढ़ा थोड़ा स्नेहके सदृश वहुत पिच्छिल और कच्चामल शब्द और थोड़ी थोड़ी पीड़ा सहित निकलताहै इस रोग में एक पक्ष भरमें महीने भरमें दश दिन में अथवा नित्य पहले कहेहुए लक्षणयुक्त एक रुक रुक कर दस्त आते हैं और आंतों में गुड़गुड़ाहट आलस्य दुर्बलता कमरमें पीड़ा तथा शरीर में शिथिलता होतीहै इसरोगमें स्वभावसेही दिनमें रोगकावेग और रात्रि में स्वस्थता होतीहै यह रोग वहुत कठिनतासे जाननेके योग्य वहुत दिनतक रहनेवाला और असा-

न्त कठिनतासे औषध करनेके योग्य आमवातसे उत्पन्नहोताहै इसको संग्रहणी कहते हैं ५५१ ॥

अथघटीयन्त्राख्यं ग्रहणीरोगभेदमाह ॥

प्रसुप्तिःपार्श्वयोःशूलंतथाजलघटीध्वनिः । तंवदन्तिघटीयंत्रमसाध्यंग्रहणीगदम् ॥ प्रसुप्तिःप्रकर्षेणशयनम् । तथाजलघटीध्वनिः । अधोमुखीकृतायाजलघटस्याजलनिःसरणेयथाध्वनिःतथामलानिर्गमसमयेभवति । यदागदोऽयंदेहंव्याप्नोतितदातस्यजीवितङ्गच्छति ॥ ५५२ ॥ घटीयंत्र नाम ग्रहणी रोगका भेद ॥

अधिक निद्रा और मल निकलने के समय जल से भरेहुए औंधाये हुए घट से जल निकलने के शब्दके समान दस्त में शब्द होताहै इसको घटीयंत्र ग्रहणी कहते हैं यह रोग जब मनुष्यके शरीर में व्याप्त होताहै तो उसकी मृत्यु होजाती है ५५२ ॥

अथसामान्यग्रहणीरोगस्यचिकित्सामाह ॥

ग्रहणीमाश्रितंरोगमजीर्णवदुपाचरेत् । लङ्घनैर्दीपनीयैश्चसदातीसारभेषजैः ॥ दोषसामन्निरामञ्चविद्यादत्रातिसारवत् । अतीसारोक्तविधिनातस्यामञ्चविपाचयेत् ॥ पेयादिपट्टुलघ्वन्नंपञ्चकोलादिभिर्युतम् । दीपनानिचतक्रंचग्रहण्यांयोजयेद्भिषक् ॥ कपित्थविल्वचांगेरीतक्रदाडिमसाधिता । यवागूपाचयत्यामंशकृत्संवर्त्तयत्यपि ॥ संवर्त्तयतिघनीकरोति ॥ ५५३ ॥ सामान्यग्रहणीरोगकीचिकित्सा ॥

ग्रहणी रोगकी चिकित्सा अजीर्णके समान करनी चाहिये और लंघन दीपन औषध तथा अतीसारमें कहीहुई औषधोंसे चिकित्साकरे इसमें दोषका आम सहित और आमसे रहितहोना अतीसार के समान जानना चाहियें अतीसारमें कहीहुई विधि के अनुसार आमका परिपाककरे पंचकोल आदिकोंसेयुक्त पेयादिक हलका अन्न दीपनवस्तु और मट्ठा ग्रहणीरोग में देनाचाहिये कैथा बेल चूका मट्ठा और अनार इनसबकेद्वारा सिद्धकीहुई यवागू आमको पचाती है और मलको बांधतीहै ५५३॥

अथ तक्रम् ॥

(अत्रगोदधिगुणाः) गव्यंदध्युत्तमंबल्यंपाकेस्वादुरुचिप्रदम् ॥ पवित्रंदीपनंस्निग्धंपुष्टिकृत्पवनापहम् । उक्तंदध्नामशेषाणांमध्येगव्यंगुणाधिकम् । (अथमाहिषीदधिगुणाः) माहिषंदधिसुस्निग्धंश्लेष्मलंवातपित्तनुत् । स्वादुपाकमभिष्यन्दिवृष्यंगुर्वास्रदूषणम् ॥ (अथछागीदधिगुणाः) आजंदध्युत्तमंग्राहिलघुदोषत्रयापहम् । शस्यतेश्वासकासार्शःक्षयकार्श्येषुदीपनम् ॥ उत्तमंग्राहिग्राहिण्यामतिश्रेष्ठमित्यर्थः ॥ ५५४ ॥

मट्ठेका वर्णन ॥

(गौके दहीके गुण)गौका दही श्रेष्ठ बलकारक पाकमें मधुर रुचिकारी पवित्र दीपन स्निग्ध पुष्टकारी वात नाशक और संपूर्ण दहियोंमें श्रेष्ठ होताहै(भैंसके दहीके गुण) भैंसका दही स्निग्धकफकारी वात पित्त नाशक पाकमें मधुर अभिष्यन्दी वीर्य्यवर्द्धक भारी और रक्तका दूषितकरनेवाला होता है (बकरीके दहीके गुण) बकरीका दही श्रेष्ठ ग्राही (ग्रहणीरोगमें अत्यन्तहित) हलका, त्रिदोष नाशक दीपन और श्वास खांसी बवासीर क्षय और कृशता को नाशकरताहै ॥ ५५४ ॥

अथ तक्रस्यभेदः॥

तक्रन्तुघोलंमथितोदश्वितत्तक्रप्रभेदतः। सुश्रुताद्यैर्मुनिश्रेष्ठैश्चतुर्द्धापरिकीर्त्तितम्॥ मसरंनिर्जलंघोलंमथितन्त्वसरोदकम्। तक्रंपादजलंप्रोक्तमुदश्विच्चार्द्धवारिकम्॥५५५॥

मट्ठेके भेद॥

तक्र घोल मथित और उदश्वित सुश्रुत आदि मुनियोंने यह चार मट्ठे के भेदकहेहैं मलाई सहित दहीके निर्जलके मट्ठे को घोल मलाई उतरेहुये दहीके निर्ज्जल मट्ठे को मथित चौथाई जल सहित मट्ठे को तक्र और आधे जल सहित मट्ठे को उदश्वितकहतेहैं॥ ५५५॥

वातपित्तहरंघोलंमथितंकफपित्तनुत्। उदश्वित्कफदंबल्यंश्रमघ्नंपरमंमतम्॥ (अथतक्रस्यगुणाः) तक्रंग्राहिकषायाम्लंमधुरंदीपनंलघु। वीर्य्योष्णंनलदंवृष्यंप्रीणनंवातनाशनम्॥ यान्युक्तानिदधीन्यष्टौतद्गुणंतक्रमादिशेत्। ग्रहण्यादिमतांतक्रंपथ्यंसंग्राहिलाघवात्॥ वातघ्नमम्लसान्द्रत्वात्सद्यस्कन्त्वविदाहिच। किञ्चंस्वादुविपाकञ्च अन्तेपित्तप्रकोपनम्॥ कषायोष्णविकाशित्वाद्रौक्ष्याच्चैवकफेहितम्॥ ५५६॥

घोल वात पित्त नाशक मथित कफ पित्त नाशक उदश्वित कफकारी बलिष्ठ तथा अत्यन्त श्रम नाशक होताहै तक्र ग्राही कषैला खट्टा मधुर दीपन हलका वीर्य में उष्ण बलकारी वीर्यवर्द्धक प्रीतिकारी और वातनाशक होताहै जोआठप्रकारके दहीकहेगयेहैं उसीप्रकारइनके मट्ठेकेभी गुण जानने चाहिये ग्रहणी आदि रोगवालोंको ग्राही और हलकेपनेसे तक्रपथ्यहै तक्र खट्टे तथा घनेपनसे वातनाशक होताहै ताजातक्र अविदाही पाकमें मधुर तथा अंतमें पित्तको कुपित करनेवालाहोताहै और कषैलेपनसे उष्णतासे और विकाशी तथा रूखेपनके गुणसे कफनाशक होताहै॥ ५५६॥

अथोद्धृतस्नेहस्यस्तोकोद्धृतस्नेहस्यानुद्धृतस्नेहस्यतक्रस्यगुणाः॥

समुद्धृतघृतंतक्रंपथ्यंलघुविशेषतः। स्तोकोद्धृतघृतंतस्माद्गुरुवृष्यंकफावहम्॥ अनुद्धृतघृतंसान्द्रंगुरुपुष्टिबलप्रदम्॥ ५५७॥

घीनिकलेहुए कुछघीनिकलेहुए औरविनघीनिकलेहुए मट्ठेकेगुण॥

जिस मट्ठेसे अच्छे प्रकार घी निकाल लियाजाता है वह पथ्य तथा बहुत हलकाहोता है जिस मट्ठे से थोड़ा घी निकाला जाताहै वह पहलेकी अपेक्षा भारी वीर्य वर्द्धक तथा कफ कारी होता है और जिस मट्ठेसे घी नहीं निकालाजाताहै वह गाढ़ा भारी पुष्टिकारी तथाबलवर्द्धक होताहै ५५७॥

अथदोषविशेषेतक्रविशेषाः॥

वातेम्लंसैन्धवोपेतंपित्तेस्वाद्वम्लशर्करम्। पिबेत्तक्रंकफेनापिक्षारत्रिकटुसंयुतम्॥ हिंगुजीरयुतघोलंसैन्धवेनावधूलितम्। ग्रहण्यर्शोऽतिसारघ्नंभवेद्वातहरम्परम्॥ रोचनंपुष्टिदंबल्यंवास्तशूलविनाशनम्॥ ५५८॥

दोषविशेषमें तक्र विशेष॥

वातकी अधिकतामें खट्टा तथा सेंधवयुक्त मट्ठा सेवन करनाचाहिये पित्तमें खटमिट्ठा मट्ठाशक्कर डालकर सेवन करना चाहिये और कफमें जवाखार तथा त्रिकटु युक्त मट्ठा पीना चाहिये हींग जीरा

तथा सेंधेनोनसे युक्त मट्ठा ग्रहणी ववासीर अतीसार वात तथा मूत्राशयकी पीड़ाका नाशक रुचिकारी पुष्टिकारी और बलवर्द्धक होताहै ॥ ५५८ ॥

अथामपक्वतक्रगुणाः ॥

तक्रमामंकफंकोष्ठेहन्तिकण्ठेकरोतिचापीनसश्वासकासादौपक्वमेवविशिष्यते५५९॥

कच्चे पक्के मट्ठे के गुण ॥

कच्चामट्ठा कोष्ठके कफको नष्टकरताहै तथा गलेके कफको बढ़ाताहै और पक्कामट्ठा पीनस श्वास तथा खांसी आदिमें विशेष गुणकारी होताहै ॥ ५५९ ॥

अथतक्रस्यनिषेधः ॥

नैवतक्रंक्षतेदद्यान्नोष्णकालेनदुर्बले । नमूर्च्छाभ्रमदाहेषुनरोगेरक्तपैत्तिके ॥ ५६० ॥

मट्ठेका निषेध ॥

क्षत ऊष्णकाल दुर्बलता मूर्च्छा भ्रम दाह और रक्तपित्त इनमें मट्ठा का निषेधहै ॥ ५६० ॥

अथतक्रस्यगुणोत्कर्षः ॥

नतक्रसेवीव्यथतेकदाचिन्नतक्रदग्धाःप्रभवंतिरोगाः । यथासुराणाममृतंसुखायतथा नराणांभुवितक्रमाहुः ॥ ५६१ ॥

मट्ठेके गुणोंकी बड़ाई ॥

मट्ठेका सेवन करनेवाला कभी व्यथित नहीं होता और मट्ठेके द्वारा नष्ट हुएरोग फिरनहीं उत्पन्न होतेहैं जैसे देवताओंको अमृत सुखदायकहै उसी प्रकार पृथ्वीमें मनुष्योंको मट्ठा सुखदाईहै ॥ ५६१

मुद्गयूषंरसंतक्रंधान्यजीरकसंयुतम् । सैन्धवेनान्वितन्दद्यात्पड्यूपणमितीरितम् ॥ रसंलघुग्राहिमांसरसम् । इतिपड्यूपगुणः ॥ ५६२ ॥

मूंगकायूप मांसका रस और मट्ठा इनमें धनियां जीरा और सेंधानोन मिलाकर देना चाहिये यह पड्यूपन कहलाताहै ॥ इति पड् यूपनम् ॥ ५६२ ॥

कर्षंगन्धकमर्द्धंपारदमुभेकुर्याच्छुभांकज्जलीम् । व्यक्षन्त्र्यूपणतश्चपञ्चलवणंसार्द्धञ्चकर्षंपृथक् ॥ भ्रष्टंहिंगुचजीरकद्वययुतंसर्वार्द्धभंगान्वितम् । खादेत्टंकमितंप्रवृत्तिगदवांस्तक्रेणविल्वेनवा ॥ इतिलाईचूर्णम् ॥ ५६३ ॥

गन्धक १ तोला पारा ६ मा० इन दोनोकी कज्जली करे फिर त्रिकटु २ तोला पांचोनोनडेढ़ २ तोले और भुनीहींग दोनोजीरे डेढ़ २ तोले और इनसबकी आधीभंग इन सबको मिलाकर मट्ठे अथवा बेलके साथ चारमासे रोजखानेसे दस्तवालेको हितकारी होताहै ॥ इति लाईचूर्ण ॥ ५६३ ॥

जातीफललवङ्गैलापत्रत्वङ्नागकेशरैः । कर्पूरचन्दनतिलत्वक्क्षीरीतगरामलैः ॥ तालीशंपिप्पलीपथ्यास्थूलजीरकचित्रकैः । शुण्ठीविडंगमरिचैःसमभागंविचूर्णितैः ॥ यावन्त्येतानिसर्वाणिदद्याद्भङ्गाञ्चतावतीम् । सर्वचूर्णसमंकृत्वाप्रदेयाशुभ्रशर्करा ॥ कर्षमात्रमिदंखादेन्मधुनाप्लावितंजनः । नाशयेद्ग्रहणींकासंक्षयंश्वासमरोचकम् ॥ इतिजातीफलादिचूर्णम् ॥ ५६४ ॥

जायफल लौंग इलायची तेजपात दालचीनी नागकेशर कपूर चन्दन तिल वंशलोचन तगर आँवला तालीस पीपल हड जीरा चीता सोंठ वायविडंग और मिर्च इनसब औषधियोंको समभाग लेकर चूर्ण करे और सबकी बराबर भंग मिलाकर सबके समान श्वेत शक्कर मिलावे और सहतके साथ एक तोले भरखाय इस्सेग्रहणी खांसीक्षय श्वासऔर अरुचिकानाश होताहै॥इति जातीफलादि चूर्ण५६४॥

चित्रकंपिप्पलीमूलंक्षारोलवणपञ्चकम्। व्योषंहिंग्वजमोदा च चव्यञ्चैकत्र चूर्णयेत्॥ वटिकामातुलुंगस्यरसैर्वादाडिमस्यच। कृताविपाचयत्यामन्दीपयत्याशु चानलम्॥ अजमोदायवानिका। चित्रकादिवटिका॥ ५६५॥

चीता पीपला मूल जवाखार पांचों नोन त्रिकटु हींग अजवाइन और चव्य इनसब औषधियों को चूर्ण करके नींबू अथवा अनारके रस में गोलीबांधे यह गोली आमको परिपाक करती है और अग्निको बढ़ातीहै॥ इति चित्रकादिवटिका॥ ५६५॥

श्रीफलसलाटुमज्जानागरचूर्णेनमिश्रितःसगुडः। ग्रहणीगदमत्युग्रंतक्रभुजाशीलितोजयति॥ श्रीफलशलाटुविल्वस्यामफलम्। गुडभागद्वयम्। इतिविल्वकल्कः॥५६६॥

कच्ची वेलगिरी और सोंठका चूर्ण दूना गुड़ मिलाकर खानेसे और मट्ठेका पथ्य करनेसे बहुत बढ़े हुए भी ग्रहणी रोगका नाश होता है॥ इति विल्व कल्क॥ ५६६॥

चतुःपलंसुधाकाण्डंत्रिफलालवणत्रयम्।वार्त्ताकोःकुडवञ्चार्कमूलाद्विल्वंतथानलात्॥ दग्ध्याद्रवेनवार्त्ताकोर्गुटिकाभोजनान्तरे। भुक्ताभुक्तंपचत्याशुनाशयेद्ग्रहणीगदम्॥ कासंश्वासंतथार्शांसिविसूचीञ्चहृदामयम्॥ इतिवार्त्ताकुगुटिका॥ ५६७॥

सेंहुड़ेकी मोटी टहनी ४ पल तीनों नोन ३ प० बनका बैंगन ४ प० और चीता तथा आककी जड़ चार २ तो० इनसब औषधियों को जलाकर बैंगन के रसमें गोली बनावे भोजन के उपरान्त इसगोली को खानेसे बहुत शीघ्र भोजन पचता है और ग्रहणी खांसी श्वास बवासीर विशूचिका तथा हृदय के रोगोंका नाशहोता है॥ इति वार्ताकु गुटिका॥ ५६७॥

मुस्तकातिविषाविल्वकौटजंसूक्ष्मचूर्णितम्। मधुनाचसमालीढंग्रहणींसर्वजांजयेत्॥ कौटजइन्द्रयवः॥ इतिमुस्तकादिचूर्णम्॥ ५६८॥

मोथा अतीस वेल और इन्द्रजौ इनका सूक्ष्म चूर्ण करके सहत के साथ चाटने से सब प्रकार की ग्रहणी का नाशहोता है॥ इति मुस्तकादि चूर्ण॥ ५६८॥

श्वेतोवायदिवारक्तःसुपक्वोग्रहणीगदः। गुडेनाधिकसर्ज्जेणभक्षितेनाशुनश्यति॥ इतिसर्ज्जरसचूर्णम्॥ ५६९॥

राल को गुड़के साथ खानेसे बहुत शीघ्र श्वेत तथा रक्त पकाहुआ ग्रहणी रोग नष्ट होताहै॥इति सर्ज्जरस चूर्ण॥ ५६९॥

विल्वाब्दशक्रयववालकमोचसिद्धमाजंपयः पिबतियोदिवसत्रयंवा॥ सोऽतिप्रवृद्धचिरजंग्रहणीविकारम् सामंसशोणितमसाध्यमपिक्षिणोति॥ ५७०॥

बेल मोथा इन्द्र जौ सुगन्धवाला और मोचरस इनके द्वारा क्षीर पाककी विधि से बकरीका

दूध तीनदिन तक पीनेसे वहुत वढ़े हुए वहुत पुराने और आम तथा रुधिर सहित असाध्य ग्रहणी रोग का नाश होता है ॥ ५७० ॥

प्रस्थत्रयंत्वामलकीरसस्यशुद्धस्यदत्वार्द्धतुलांगुड़स्य । चूर्णीकृतैर्ग्रन्थिकजरिचव्य व्योपैःसकृष्णाह्वयुपाजमोदैः। विड़ंगसिन्धुत्रिफलाजवानीपाठाग्निधान्यैश्चपलप्रमाणैः॥ दत्वात्रिवृच्चूर्णपलानिचाष्टावष्टौचतैलस्यपचेद्यथावत्। तंभक्षयेदक्षपलप्रमाणंयथेष्टचे ष्टस्त्रिसुगन्धियुक्तम् ॥ अनेनसर्वेग्रहणीविकाराःसश्वासकासास्वरभेदशोथाः । शाम्य न्तिचायंचिरमन्तरग्नेर्हतस्यपुँस्त्वस्यचवृद्धिहेतुः ॥ स्त्रीणान्तुवन्ध्यात्वविनाशनःस्यात्क ल्याणकोनामगुडःप्रसिद्धः। तैलेमनाग्त्रिवृद्भृष्टंत्रिफलायाःपलत्रयम् ॥ सिद्धेनिधेय मत्रैवगुड़ेकल्याणपूर्व्वके ॥ इतिकल्याणगुड़ः ॥ ५७१ ॥

आंवले का रस १२८ तो० शुद्धगुड़ २०० तो० पीपलामूल जीरा चव्य त्रिकटु गजपीपल हाऊ- वेर अजवाइन वायविड़ंग सेंधानोन त्रिफला अजमोद पाठा चीता धनियां दालचीनी इलायची तथा तेजपात यह सब एक २ पल और तेल तथा निसोथका चूर्ण आठ २ प० तेलमें निसोथ के चूर्णको कुछ भूनकर आंवलेका रस और गुड़ मिलाकर पाक करे फिर ऊपर कहीहुई संपूर्ण औषधियों का चूर्ण मिलावे यह एक रुद्राक्ष अर्थात् चार पांच मासे खानेसे सबप्रकार की ग्रहणी श्वास खांसी स्वरभेद सूजन मंदाग्नि तथा नपुंसकता को नष्ट करता है और स्त्रियों के वंध्यापनेको भी दूरकरता है ॥ इति कल्याण गुड़ ॥ ५७१ ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलंचित्रकंगजपिप्पली ।• धान्याकञ्चविड़ंगानिजवानिमरिचानि च॥त्रिफलाचाजमोदाचनीलनीजीरकस्तथा। सैन्धवंरोमकञ्चापिसामुद्रंरुचकंविड़म्॥ आरग्वधश्चत्वक्पत्रंसूक्ष्मैलाचोपकुञ्चिका । शुण्ठीशक्रयवाश्चैवप्रत्येकंकर्पसंमिताः॥ मृद्वीकायाःपलान्यत्रचत्वारिकथितानिहि । त्रिवृतायाः पलान्यष्टौगुड़स्यार्द्धतुलां तथा॥ तिलतैलपलान्यष्टावामलक्यारसस्यतु । प्रस्थत्रयमिदंसर्वंशनैर्मृद्वग्निनापचे त्॥ औदुंवरंचामलकंवदरञ्चयथावलम्। तावन्मात्रमिदंखादेद्भक्षयेद्वायथानलम्॥ निखिलान्ग्रहणीरोगान्प्रमेहांश्चैवविंशतिम् । उरोघातंप्रतिश्यायंदौर्व्वल्यंवह्निसंक्षय म्॥ ज्वरानपिहरेत्सर्व्वान्कुर्य्यात्कान्तिंमतिंवलम् । पाण्डुरोगान्जवाद्धन्तिरक्तपित्त ञ्चविड्ग्रहम्॥ धातुक्षीणोयक्ष्मीणःस्त्रीपुक्षीणःक्षयीचयः । तेभ्योहितश्चवन्ध्यायैमहा कल्याणकोगुड़ः॥ इतिमहाकल्याणकगुड़ः॥ ५७२ ॥

पीपल पीपलामूल चीता गजपीपल धनियां वायविड़ंग अजवाइन मिर्च त्रिफला अजमोद नीलनीजीरा सेंधानोन सांभरनोन समुद्रनोन कालानोन विट्नोन अमलतास दालचीनी तेजपात छोटी इलायची काला जीरा सोंठ और इन्द्रजौ यह सब एक२ तो० दाख १६ तो० निसोथ ३२तो० गुड़२००तोला तिलका तेल३२तो०और आंवलेका रस१६२तो०इनसबको विधि पूर्व्वक मंदाग्नि में पाककरे इसको गूलर के समान आंवलेके वरावर अथवा वेरके वरावर या अग्निके वलके अनुसारखाय इसके खानेसे संपूर्ण ग्रहणीरोग वीसों प्रमेह उरोघात जुकाम दुर्वलता मन्दाग्नि सर्वज्वर पांडु रक्त

पित्त तथा मलका रुकना इन सबका नाश होताहै और कांति मति तथा बलकी वृद्धि होतीहै यह धातु क्षीण वृद्ध स्त्री प्रसंग से क्षीण क्षय रोगी और वन्ध्या स्त्री इन सबको हितकारी हैं इति ॥ महाकल्याणक गुड़ ॥ ५७२ ॥

कूष्माण्डानांसुपक्वानांस्विन्नानांनिष्कुलत्वचाम् । सर्पिःप्रस्थंपलशतंताम्रपात्रेशनैः पचेत् ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलंचित्रकंगजपिप्पली । धान्यकानिविडङ्गानिनागरंमरिचानिच ॥ त्रिफलाचाजमोदाचकलिङ्गाजाजिसैन्धवम् । एकैकस्यपलञ्चैकंत्रिवृतोऽष्टौपलानिच ॥ तैलस्यचपलान्यष्टौगुडात्पञ्चाशदेवतु । आमलक्यारसस्यात्रप्रस्थत्रयमुदीरितम् ॥ तावत्पाकंप्रकुर्वीतमृदुनावह्निनाभिषक् । यावद्दर्व्याःप्रलेपंस्यात्तदेनमवतारयेत् ॥ औदुम्बरंचामलकंवादरंवायथाबलम् । तावन्मात्रमिदंखादेद्भक्षयेद्वायथानलम् ॥ अनेनैवविधानेनप्रयुक्तश्चादिनेदिने। निहन्तिग्रहणीरोगान्कुष्ठानर्शोभगंदरान् ॥ ज्वरमानाहहृद्रोगंगुल्मोदरविसूचिकाः । कामलांपाण्डुरोगञ्चप्रमेहांश्चैवविंशतिम् ॥ वातशोणितवीसर्पदद्रूयक्ष्माहलीमकान् । वातपित्तकफान्सर्वान्दुष्टान्शुद्धान्समाचरेत् ॥ व्याधिक्षीणावयःक्षीणास्त्रीपुक्षीणाश्चयेनराः। तेभ्योहितोगुडोऽयंस्याद्वन्ध्यानामपि पुत्रदः॥ वृष्योबल्योबृंहणश्चवयसःस्थापनंतथा। इतिकूष्माण्डकल्याणकगुड़ः ५७३॥

अच्छे प्रकार पके हुए छिलके और बीजसे रहित उबाले हुए कुंभडे को सौपल लेकर एक प्रस्थ घी और आठ पल तिल का तेल तांबेके पात्रमें डालकर भूने फिर आंवलेका रस ३ प्रस्थ और गुड़ २०० तोले डालकर पाक करे इसके उपरान्त पीपल पीपलामूल चीता गजपीपल धनियां बायविंडग सोंठ मिर्च त्रिफला अजवाइन इन्द्रजौ कालाजीरा और सेंधानोन यह सब एक एक पल और निसोथ आठपल इन सबको पीसकर उसमें डालकर मंदाग्नि से तबतक पाककरे जब तक कि करछीमें लगने लगे फिर उतारले यह गूलर आंवला अथवा बेर के बराबर या अग्नि के बलके अनुसार प्रति दिन खानेसे ग्रहणी कुष्ठ बवासीर भगंदर ज्वर आनाह हृदयके रोग गुल्म उदर विशूचिका कामला पांडुरोग बीसों प्रमेह वातरक्त वीसर्प दाद यक्ष्मा तथा हलीमकका नाश होताहै और दूषित वात पित्त तथा कफ शुद्धहोजातेहैं और व्याधि से क्षीण वृद्ध स्त्रियोंके द्वारा क्षीण मनुष्योंको हितकारी होताहै यह वंध्या स्त्रियोंको पुत्रदेने वाला वीर्य्य वर्द्धक बलकारी धातु वर्द्धक और अवस्थाका स्थित रखने वाला होताहै ॥ इति कूष्मांडकल्याणक गुड़ ॥ ५७३ ॥

अतीसाराधिकारालिखितंविल्वतैलञ्चात्रहितम् । इतिग्रहणीरोगाधिकारः ५७४ ॥

अतीसाराधिकार में कहा हुआ बेलकातेल भी ग्रहणी रोगमें हितकारीहै ॥ इति ग्रहणीरोगाधिकार ॥ ५७४ ॥

भावप्रकाशः द्वितीयभागः ॥

अथार्शोऽधिकारः ॥

तत्रार्शसः सन्निकृष्टानि निदानान्याह ॥

पृथग्दोषैःसमस्तैश्चशोणितात्सहजानिच । अर्शांसिषट्प्रकाराणिविद्याद्गुदवलित्रये ॥ केचित्रुधिरस्यापिदोषत्वंमन्यन्ते, तन्मतमाश्रित्याह, शोणितादिति । सहजानि शरीरेसहजातानि, संख्याचाह, षट्प्रकाराणीति, गुदवलित्रयेसार्द्धचतुरङ्गुलंगुदस्य मानम्, तस्यावयवभूतास्तिस्रोवलयः, शङ्खावर्त्तनिभाःउपर्य्युपरिसन्ति । तासांनामप्रवाहणीविसर्ज्जनीसम्वरणीचेति, तत्रगुदोऽष्टार्द्धांगुलमानस्तदूर्ध्वमंगुलमानप्रथमावलिःसार्द्धैकाङ्गुलमानाद्वितीयात्तृतीयाचतावती ॥ उक्तञ्च । अर्द्धांगुलप्रमाणेनगुदौष्ठंपरिचक्षते॥गुदौष्ठादंगुलञ्चैकंप्रथमान्तुवलिंविदुः॥सार्द्धैकांगुलमानेनपृथगन्येप्रकीर्त्तिते १॥

भावप्रकाश द्वितीयभाग ॥

ववासीरका अधिकार ॥

ववासीरके समीपी कारण ॥

गुदाके तीन चक्रों में छः प्रकार का ववासीर रोग उत्पन्न होताहै जैसे वातज पित्तज कफज सन्निपातज रक्तज और सहज (शरीर केसाथ उत्पन्न हुआ) गुदाके तीन चक्र अर्थात् साढे चार अंगुल का गुदाका प्रमाणहै और गुदा के अंग भूत तीन चक्र शंखावर्त्तके समान ऊपर ऊपरहैं उनका नाम प्रवाहणी विसर्ज्जनी और संवरणी है गुदाके मुखका प्रमाण आधा अंगुल है उसके ऊपरका चक्र १ अंगुल और उसके ऊपर दो चक्र डेढ डेढ अंगुलकेहैं और कहा गयाहै कि गुदाका मुख आधा अंगुल इसके ऊपर एक चक्र एक अंगुल और उसके ऊपरदो चक्र डेढ डेढ अंगुलकेहैं १ ॥

अथ वातार्शसोविप्रकृष्टं निदानमाह ॥

कषायकटुतिक्तानिरूक्षशीतलघूनिच । प्रमितात्यशनंतीक्ष्णंमद्यंमैथुनसेवनम् ॥ लङ्घनंदेशकालौचशीतौव्यायामकर्मच । शोकोवातातपस्पर्शोहेतुर्वातार्शसाम्मतः ॥ प्रमितमपरिमितंतीक्ष्णमितिमद्यविशेषणम् । पिष्टादिमृदुमद्यस्यवातशमकत्वात् ॥ आतपस्तूष्णवीर्य्योद्भूतरौक्ष्याद्वातप्रकोपेहेतुः । वातार्शसाम् ॥ नत्वर्शांसिसर्वाणित्रिदोषजानिच तत्राह। पञ्चात्मामारुतःपित्तंकफोगुदवलित्रये । सर्वएवप्रकुप्यन्तिगुदजानांसमुद्भवे ॥ तथाकथंवातार्शसामिति । उच्यते । तत्तदाधिक्याद्व्यपदेशभेदइतिनदोषः । अतएवाग्रेवक्ष्यतेवातोल्वणानामिति । तथाचचरकः । अर्शांसिनामजायन्तेनासान्निपातिकैस्त्रिभिः । दोषैर्दोषविशेषात्तुविशेषःकथ्यतेऽर्शसामिति ॥ २ ॥

वातज ववासीरके दूर वाले कारण ॥

कपैली कटु तिक्त रूखी शीतल तथा हलकी वस्तु बेप्रमाण वहुत भोजन तीक्ष्ण मद्य अधिक मैथुन लंघन शीतल देश तथा काल व्यायाम शोक और वायु तथा धूपका सेवन यह वातज ववासीर के कारणहैं अब यह सन्देह होताहै कि सम्पूर्ण ववासीर त्रिदोषजहै क्यों कि कहा गयाहै कि ववासीरके उत्पन्न होनेमें पांच प्रकारकी वात तथा पित्त और कफ यह सब गुदाके तीन चक्रों में कुपित होते हैं तो वातज ववासीर यह क्यों कहा इसका उत्तर यहहै कि दोषोंकी अधिकताके अनुसार वातज आदि भेदोंकी कल्पनाकी गईहै इस लिये कोई दोष नहीं है इसीसे आगे कहेंगे कि वातो त्वणोंके इत्यादि और ऐसाही चरकने भी कहाहे कि सन्निपातके विना ववासीर नहीं होती परन्तु दूषणोंके द्वारा दोषों की विशेषतासे वातज आदि भेदोंकी विशेष कल्पना करी जातीहै ॥ २ ॥

तथापित्तार्शसो विप्रकृष्टंनिदानमाहः ॥

कट्वम्ललवणोष्णानिव्यायामाग्न्यातपप्रभा । देशकालावशिशिरोक्रोधोमद्यमसूयनम् ॥ विदाहितीक्ष्णमुष्णञ्चसर्वंपानान्नभोजनम् । पित्तोल्बणानांविज्ञेयःप्रकोपेहेतुरर्शसाम् ॥ उष्णद्रव्यस्यस्पर्शनादिवोद्धव्यम् । उष्णपानभोजनस्याग्रेवक्ष्यमाणत्वात् ॥ अग्न्यातपप्रभाअग्न्यातपयोःप्रभातेजः अथवाअग्न्यातपतद्रव्यस्यतेजःदीप्तिःप्रभा । अशिशिरोदेशोमरुत्शरद्ग्रीष्मश्चकालः . क्रोधःदमःकोपःअसूयनंपरसम्पत्तौद्वेषः प्रकोपेउत्पत्तौ ॥ ३ ॥

पित्तज ववासीरके दूरवाले कारण ॥

कटु अम्ल तथा लवण रस उष्णवस्तुका स्पर्शादि व्यायाम अग्नि तथा धूपका सेवन उष्ण देश तथा काल क्रोध मद्यपान पराई सम्पतिमें द्वेष विदाही तीक्ष्ण तथा उष्ण वस्तुओंका पान भोजनादिक यह सम्पूर्ण पित्तकी ववासीरके कारणहैं ॥ ३ ॥

अथ कफार्शसो विप्रकृष्टनिदानमाह ॥

मधुरस्निग्धशीतानिलवणाम्लगुरूणिच । अव्यायामदिवास्वप्नशय्यासनसुखेरतिः॥ प्राग्वातसेवाशीतौचदेशकालावचिन्तनम्।श्लैष्मिकानांसमुद्दिष्टमेतत्कारणमर्शसाम् ४

कफकी ववासीरके दूरवाले कारण ॥

मधुर लवण स्निग्ध शीतल खट्टी तथा भारी वस्तु व्यायाम न करना दिनमें सोना शय्या तथा आसनके सुखमें अनुराग पुरवाई हवा शीतल देश तथा काल और चिन्ताका न होना यह कफज ववासीरके कारणहैं ॥ ४ ॥

अथ त्रिदोषार्शोविप्रकृष्टं निदानमाह ॥

सर्वोहेतुस्त्रिदोषाणांसहजैर्लक्षणंसमम् । जनकत्वेनत्रयोदोषाःयेषांतानित्रिदोषजानि । अर्शसांसर्वोहेतुःपृथग्वातपित्तकफार्शोहेतुः ॥ त्रिदोषार्शोलक्षणंश्वासरुजाविवन्धैःसहजार्शोभिःसमम् । ननुत्रिदोषाणामितिविशेषणंव्यर्थम् ॥ यतःसर्वएवव्याधयस्त्रिदोषजाः । उक्तञ्च ॥ द्रव्यमेकरसंनास्तिनरोगोऽप्येकदोषजः । एकस्तुकुपितोदोषइतरानपिकोपयेत् ॥ इतियुक्तिमप्याहस्वकारणाद्वृद्धोवायुः शैत्याद्यार्थद्रवत्वात्पित्तंवर्द्धयत

इतिउच्यते। यत्ररवस्वकारणात्त्रयोदोषाःकुप्यन्तितत्रात्रिदोषजव्यपदेशइतिनदोषः५॥

त्रिदोषकी बवासीरके दूरवाले कारण॥

वात पित्त और कफकी बवासीरके मिलेहुए सब कारण त्रिदोषकी बवासीरके जानने चाहिये और त्रिदोषकी बवासीरके लक्षण सहज बवासीरके समान होतेहैं अब यह सन्देह होताहै कि सम्पूर्ण रोग त्रिदोष वाले होतेहैं तो बवासीरका त्रिदोष वाली यह विशेषण क्यों दिया और कहा भी गयाहै कि कोई द्रव्य एक रसयुक्त नहींहै और एक दोषसे उत्पन्न कोई रोग नहीं है क्यों कि एक दोष कुपित होकर अन्य दोषोंको भी कुपित करताहै और युक्तिसे भी सिद्ध होताहै कि अपने कारणोंसे बढ़ीहुई वायु शीतगुणसे वातको और पतलेपनसे पित्तको बढ़ाती है इसका उत्तर यहहै कि जहां अपने अपने कारणोंसे तीनोंदोष कुपित होतेहैं वहां त्रिदोपज यह विशेषण दियाजाताहै इस्सेकोई दोषनहींहै॥५॥

अथार्शसःपूर्वरूपमाह॥

विष्टम्भोऽन्नस्यदौर्बल्यंकुक्षेराटोपएवच। कार्श्यमुद्गारबाहुल्यंसक्थिसादोल्पविट्कता॥ ग्रहणीदोषपाण्ड्वार्त्तेःप्रशङ्काचोदरस्यच। पूर्वरूपंविनिर्दिष्टमर्शसामभिवृद्धये ६॥

बवासीरका पूर्वरूप॥

बवासीर होनेसे पहले अन्नका अजीर्ण दुर्बलता कोषमें गुड़गुड़ शब्द कृशता बहुत डकार जंघाओंमें शिथिलता मलकी अल्पता और ग्रहणी पांडु तथा उदर रोगकी शंका यह लक्षण होतेहैं॥६॥

अथार्शसांप्राप्तिपूर्वकंसामान्यलक्षणमाह॥

दोषास्त्वङ्मांसमेदांसिसंदूष्यविविधाकृतीन्। मांसांकुरानपानादौकुर्वन्त्यर्शांसितान्जगुः॥ त्वंमांसपदेनत्वङ्मांसमाश्रितंरक्तमभिगृह्यते। किञ्चित्साधारणरक्तश्रावणोपदेशात्॥ आदिशब्देननासानेत्रनाभिमेढ्रादिष्वपिकुर्वन्ति॥७॥

बवासीरके संप्राप्ति पूर्वक सामान्य लक्षण॥

वातादिक दोष त्वचा मांस मेद और रुधिरको दूषित करके गुदा नासिका नेत्र नाभि तथा लिंग आदि स्थानोंमें अनेकप्रकारके आकारवाले मांसके अंकुरोंको उत्पन्न करतेहैं उन्हें बवासीर कहतेहैं७॥

वातार्शोलक्षणम्॥

गुदांकुरावह्वनिलाःशुष्काश्चिमिचिमान्विताः। म्लानाःश्यावारुणाःस्तब्धाविशदाःपरुषाःखराः॥ मिथोविसदृशावक्रास्तीक्ष्णाविस्फुटिताननाः। बिम्बीकर्कन्धुखर्जूरकर्कोटिफलसन्निभाः॥ केचित्कदम्बपुष्पाभाःकेचित्सिद्धार्थकोपमाः। शिरःपार्श्वांसकट्यूरूवंक्षणाभ्यधिकव्यथाः॥ क्षवथूद्गारविष्टम्भहृद्ग्रहारोचकप्रदाः। कासश्वासाग्निवैषम्यकर्णनादभ्रमावहाः॥ तैरार्त्तोग्रथितंस्तोकंसशब्दंसप्रवाहिकम्। रुक्फेनपिच्छानुगतंविबद्धमुपवेश्यते॥ कृष्णत्वङ्नखविण्मूत्रनेत्रवक्त्रंतथैवच। गुल्मप्लीहोदराष्ठीलासम्भवस्ततएवच॥ वह्वनिलाःवातोल्वणगुदांकुराः॥ अर्शांसिचिमिचिमान्विताः। चिमिचिमाव्यथाविशेषाः। चरचराइतिलोके तदन्विताः। श्यावारुणाःश्यावाधूम्रवर्णाः अरुणवर्णा वा। स्तब्धाःकठिनाःविशदाःपिच्छिलाः। परुषाःगोजिह्वावत्। खरस्पर्शाःकर्कशाः। खराक

कोटीफलवत्सूक्ष्मानेककण्टकाचिताः । विम्ब्यादिफलसन्निभाः ॥ आवृत्याअत्रविक ल्पबोधकंवक्ष्यमाणंकश्चित्केचिदितिपदंप्रतिसम्बद्धनीयम् ॥ कदम्बपुष्पाभाःस्थिरा नेकसूक्ष्मशिखराः । सिद्धार्थकोपमाःपीतसूक्ष्मपिटिकाचिताः ॥ तैरार्तइत्यर्शोभिःपीडि तः । तैरार्त्तोविबद्धमुपवेश्यतइत्यार्तस्यप्रयोज्यकर्त्तुःकर्म्मतार्पत्वात् ॥ ग्रथितंमलंगुंटि काग्रंथितविद्वर्त्तिरूपम्। पिच्छापिच्छिलोद्रवभागः ॥ बद्धंसंहतम्। त्रिशब्दोनपुंसकेऽप्य स्ति ॥ उपवेश्यतेत्याज्यते । ततएववातार्शएवगुल्मादीनांसम्भवः । अष्ठीलानाभे रधोभागेपाषाणपिण्डिकावद्वातव्याधिविशेषः ॥ ८ ॥

वातकी ववासीर के लक्षण ॥

वातकी ववासीर के मस्से सूखे चरचराहटवाले म्लान धुमेले अथवा लालवर्ण वाले कठोर विशद (पिच्छलतासे रहित) गौकीजिह्वा के समान खरखरे खिकसाके समान सूक्ष्म काँटेवाले परस्पर भिन्नरूप वाले टेढ़े नुकीले फटेहुए मुखवाले कुंदरू बेर खजूर तथा खिकसा के फलके समान आकृति वाले कोई कदंबके फूलके समान अनेक कांटोंसे युक्त कोई सरसों के समान फुंसियोंसे युक्त और शिर पसली कन्धे कमर जंघा तथा वंक्षण (जांघ और कमरका मध्य) में अधिक पीड़ा छींक डकार विष्टंभ हृदय के रोग अरुचि खांसी श्वास विषमाग्नि कानों में शब्द तथा भ्रमके करनेवाले होतेहैं इनसे पीड़ित मनुष्य को शब्द पीड़ा फेनाप्रवाहिका तथा सुद्दे युक्त पतलेपन सहित बन्धे दस्त आते हैं और उस मनुष्य के नख त्वचा मल मूत्र मुख तथा नेत्र काले होजाते हैं और इसी वातकी ववासीर से वायगोला पिलही उदर तथा अष्ठीला (नाभिके नीचे पत्थरकी बटियाके समा न वातव्याधि) उत्पन्न होती है ॥ ८ ॥

पित्तार्शोलक्षणम् ॥

पित्तोत्तरानीलमुखारक्तपीतासितप्रभाः।तन्वस्रस्राविणोविस्रास्तनवोमृदवःश्लथाः॥
शुकजिह्वायकृत्खण्डजलौकोवक्त्रसन्निभाः। दाहपाकज्वरस्वेदतृष्णामूर्च्छारतिप्रदाः॥
सोष्माणोद्रवनीलोष्णपीतरक्तामवर्चसः। यवमध्याहरित्पीतहारिद्रत्वङ्मुखादयः॥ तनु अघनम् । श्लथालम्बिनः ॥ सन्निभाआकृत्या । पाकोगुदस्यसोष्माणःउष्णस्पर्शाः ॥ हरिच्छाकवर्णम् । पीतंहरितालवर्णम् ॥ हारिद्रंहारिद्रावर्णम्। आदिशब्दान्मलमूत्रपु रीषाणांग्रहणम् ॥ ९ ॥

पित्तकी ववासीरके लक्षण ॥

पित्तकी ववासीर के मस्से नीले मुखवाले रक्त पीत तथा कृष्णवर्ण वाले पतलेरुधिर के वहाने वाले आमकी गन्धिवाले पतले कोमल लम्बे तोतेकी जीभ यकृत खंड अथवा जोंकके मुखके समान आकृतिवाले उष्ण स्पर्शवाले और जोंके समान मध्यवाले होतेहैं इनसे पीड़ित मनुष्य को दाह गुदाकापकना ज्वर स्वेद तृषा मूर्च्छा तथा बेचैनी होतीहै नीले पीले लाल तथा आम सहित पतले उष्णतायुक्त दस्त आतेहैं और रोगीकामुख त्वचा मल तथा मूत्रदरा और हरिताल तथा हल्दी के समान पीलाहोजाताहै ॥ ९ ॥

अथ पित्तोत्तरभेदरक्तार्शोलक्षणमाह ॥

रक्तोल्वणगुदेकीलापित्ताकृतिसमन्विताः। वटप्ररोहसदृशाःगुञ्जाविद्रुमसन्निभाः॥ अ त्यर्थंदुष्टमुष्णंचगाढविट्कप्रपीड़िताः । स्रवन्तिसहसारक्तंतस्यचातिप्रवृत्तितः ॥ भेका भ.पीड्यतेदुःखैःशोणितक्षयसंभवैः। हीनवर्णबलोत्साहोहतोजाःकलुषेन्द्रियः॥ विट्श्या वंकठिनंरूक्षमधोवायुर्नवर्त्तते । तनुचारुणवर्णंचफेनिलंवासृगर्शसाम् ॥ कट्यूरुगुदशू लञ्चदौर्बल्यंयदिवाधिकम्। तत्रानुबन्धोवातस्यहेतुर्यदिचरूक्षणम् ॥ शिथिलंश्वेतपीतं चविट्स्निग्धंगुरुशीतलम्। यद्यर्शसांघनंचासृक्तन्तुमत्पाण्डुपिच्छिलम् ॥गुदंसपिच्छं स्तिमितंगुरुस्निग्धंचकारणम्। श्लेष्मानुबन्धोविज्ञेयस्तत्ररक्तार्शसांबुधैः॥ गुदेतुकीला अर्शांसिपित्ताकृतिसमन्विताः। पित्तार्शोलक्षणयुक्ताः । आकारेणचवटप्ररोहसदृशा.दुः खैःरोगैःत्वक्पारुष्यात्मुशीतप्रार्थनादिभिः। कलुषेन्द्रियःव्याकुलसर्वेन्द्रियः। अथरक्त स्यापिवातोल्वणस्यलक्षणमाह । रक्तार्शसिअनुबन्धःउल्वणम् । रूक्षंरूक्षयतीतिरूक्षण म्। रूक्षंद्रव्यम्। पित्तोल्वणस्यतुलक्षणम्। रक्तोल्वणागुदेकीलाःपित्ताकृतिसमन्विताः। इत्यादिनैवोक्तंरक्तपित्तयोःसमानलिङ्गत्वात्। ॥ १० ॥

खूनी ववासीर के लक्षण ॥

खूनी ववासीर के मस्से पित्तकी ववासीर के समान लक्षण वाले बर्गदके अंकुर समान आकृति वाले और घोंघची तथा मूँगेके सदृश होते हैं मलके कड़ेहोने से पीड़ित हुएइनमस्सोंमें से एकाएकी गरम और दूषित बहुतसा रुधिर निकलता है रुधिर के बहुत बहनेसे मेंढक के समान रंगवाला रोगी रुधिर के क्षयसे उत्पन्नहुए त्वचाकी कठिनता तृषा तथा शीतकी इच्छा आदिक रोगोंसे पीड़ित होताहै वर्ण बल तथा उत्साह रहित होजाताहै ओजका नाशहोताहै सम्पूर्ण इन्द्रियां व्याकुल होजातीहैं मैला कठिन तथा रूखा मल उतरताहै और अधोवायु नहीं निकलती जो रूखी वस्तुके सेवनसे खूनी ववासीर होय और पतला लाल तथा फेने समेत रुधिर निकले और कमर जंघा तथा उदरमें पीड़ा और दुर्बलता होय तो उसमें वायुकी अधिकता जाननी चाहिये जो स्निग्ध तथा भारीवस्तु के सेवन से खूनी ववासीर हुईहोय और मल ढीला स्वेद पीला स्निग्ध भारी तथा शीतल होय रुधिर गाढ़ा पांडुवर्ण तन्तुओंसे भरा तथा चिकना होय और गुदा गीले कपड़े से ढकी हुईसी चिकनी होय तो उसमें कफकी अधिकता जाननी चाहिये और खूनी ववासीर के मस्से पित्तकी ववासीर के समान लक्षण वाले होतेहैं इत्यादि कहनेहीसे अधिक पित्तवाली खूनी ववासीर का लक्षण कहागया क्योंकि रुधिर और पित्तके लक्षण समान होते हैं ॥ १० ॥

कफोल्वणस्यलक्षणम् ॥

श्लेष्मोल्वणामहामूलाघनामन्दरुजःसिताः। उत्सन्नोपचिता.स्निग्धाःस्तब्धवृत्तगुरु स्थिराः ॥ पिच्छिला.स्तिमिताःश्लक्ष्णा.कण्ड्वाढ्याःस्पर्शनप्रियाः । करीरपनसास्थ्याभा स्तथागोस्तनसन्निभाः॥ वङ्क्षणानाहिन.पायुवस्तिनाभिविकर्षिणः । सकासश्वासहृल्लासा सप्रसेकारुचिपीनसाः॥ मेहकृच्छ्रशिरोजाड्यशिशिरज्वरकारिणः । क्लैव्याग्निमार्दवच्छ

दिरामप्रायविकारदाः ॥ वसाभासकफप्रायपुरीषाःसप्रवाहिकाः। उत्सन्नाःउन्नताः । उपचिताःस्थूलाः । स्निग्धाःस्नेहाभ्यक्ताः । स्थिरानिश्चलाः । पिच्छिलाःकफोल्वणत्वात् । स्तिमिताआर्द्रचर्म्मावगुण्ठिताइव। श्लक्ष्णामणिवन्मसृणाः। करीरोवंशांकुरः । पनसास्थिगोस्तनाः । तदाकृतयःवङ्क्षणानाहिनःवङ्क्षणयोरानाहकारिणः । पाय्वादिष्वाकर्षणवत्पीड़ाकारिणः । कृच्छ्रंमूत्रकृच्छ्रम्। शिरोजाड्यंशिरोभागेशीताक्रान्तमिव। क्लैब्यंस्त्रीष्वनिच्छाअत्रछर्दिशब्दःसान्तआर्पत्वात्। आमप्रायविकारदाः। आमवहुलाव्याधयोऽतीसारग्रहण्यादयःतान्ददति ॥ ११ ॥

कफकी ववासीरके लक्षण ॥

कफकी ववासीरके मस्से बड़ीजड़वाले घने थोड़ी पीड़ावाले श्वेत ऊंचे मोटे चिकनाई से भरे हुये अचल सचिकन गीलेवस्त्रसे ढकेहुएकेसमान मणियोंकेसमान स्वच्छ खुजलीवाले स्पर्शकरनेमें सुखदाई करील कटहलके बीज अथवा मुनक्काके समान आकारवाले वंक्षणमें बंधनसा करनेवाले गुदा मूत्राशय तथा नाभिमें खेंचनेकीसी पीड़ाकरनेवाले और खांसी श्वास मतली नाक मुखकाबहना अरुचि पीनस प्रमेह मूत्रकृच्छ्र शिरमें शीतसा मालूम होना शीतज्वर नपुंसकता मंदाग्नि छर्दि तथा अतीसार और ग्रहणीआदि आमके विकार इनसब रोगोंके करनेवाले होते हैं और रोगीको प्रवाहिका सहित अधिक कफसे युक्त चरवी केसे दस्त आतेहैं ॥ ११ ॥

द्वन्द्वजार्शोलक्षणम् ॥

हेतुलक्षणसंसर्गाद्विद्याद्द्वन्द्वोल्वणानिच ॥ १२ ॥

द्वंद्वज ववासीरका लक्षण ॥

ऊपरकहेहुए दोदोपोंके कारण और लक्षणोंके मिलनेसे द्वन्द्वज ववासीर जाननी चाहिये ॥ १२ ॥

अथ त्रिदोपजार्शःसहजार्शोलक्षणमाह ॥

सर्वैःसर्वात्मकान्याहुर्लक्षणैःसहजानिच। सर्वलक्षणैर्वातपित्तकफार्शोलक्षणैःप्रागुक्तैः सर्वात्मकानिसन्तितान्यर्शांसिअतस्तथातैरेवलक्षणैःसहजान्यर्शांस्याहुः ॥ १३ ॥

त्रिदोपज और सहज ववासीर के लक्षण ॥

ऊपरकहेहुए वात पित्त और कफके संपूर्ण लक्षणोंके मिलने से त्रिदोपज और सहज ववासीर जाननी चाहिये ॥ १३ ॥ तन्त्रान्तरेसहजार्शोलक्षणंपृथगाहुः ॥

अर्शांसिसहजातानिदारुणानिभवन्तिहि। दुर्दर्शनानिपाण्डूनिपरुषाण्यरुणानिच॥
अन्तर्मुखानितैरार्त्तःक्षीणःक्षीणस्वरोभवेत्। क्षीणानलःक्षीणरेताःशिरासन्ततविग्रहः॥
अल्पप्रजःक्रोधशीलोभग्नकांस्यस्वनान्वितः । शिरोदृक्कर्णनासासुरोगीहृल्लेखसेकवान् ॥ १४ ॥ तन्त्रान्तरमें कहाहुआ सहज ववासीरका अन्य लक्षण ॥

सहजववासीरके मस्से भयंकर दुर्दर्शन पांडु तथा रक्त वर्णवाले कठोर और भीतरकी ओर मुखवाले होतेहैं इनसे व्याकुल मनुष्य क्षीण क्रोधी फूटेकांसेके समान तथा क्षीणशब्दवाला मंदाग्नि अल्पवीर्य्यवाला निकलीहुई नसवाला मलकी रुकावटवाला थोड़ी सन्तानवाला और शिर दृष्टि

कान तथा नासिकाके रोगवाला होताहै और उसका हृदय लिपाहुआसा मालूमहोताहै और नासिका तथा मुखसे जल निकलताहै ॥ १४ ॥

सुखसाध्यार्शोलक्षणम् ॥

वाह्यायांतुवलौजातान्येकदोषोल्वणानिच । अर्शांसिसुखसाध्यानिनचिरोत्पतितानि च ॥ वाह्यायांवलौसंवरण्याम् । नचिरोत्पतितानिअतिक्रान्तसंवत्सराणिएतानि लक्षणमिलितानिसुखसाध्यत्वबोधकानि ॥ १५ ॥

सुखसाध्य ववासीरके लक्षण ॥

एक दोषकी अधिकतावाले वाहरके संवरणी नाम चक्रमें उत्पन्न होनेवाले और एकवर्षके भीतर के पैदाहोनेवाले ववासीरके मस्से सुखसाध्य होतेहैं ॥ १५ ॥

कष्टसाध्यार्शोलक्षणम् ॥

द्वन्द्वजानिद्वितीयायांवलौयान्याश्रितानिच । कृच्छ्रसाध्यानितान्याहुःपरिसंवत्सराणिच ॥ द्वितीयायांवलौसर्ज्जन्याम् । परिसंवत्सराणिपरिगतः संवत्सरोयेषांतान्यतीत संवत्सराण्यातियावत् । एतानिप्रत्येकंकष्टसाध्यलक्षणानि ॥ १६ ॥

कष्टसाध्य ववासीरके लक्षण ॥

दोदोषोंकी अधिकतावाले विसर्जनीनाम दूसरे चक्रमें पैदाहोनेवाले और एकवर्षके पुरानेववासीर के मस्से कष्टसाध्यहोतेहैं १६ ॥ असाध्यार्शोलक्षणम् ॥

सहजानित्रिदोषाणियानिचाभ्यन्तरांवलिम् । जायन्तेऽर्शांसिसंश्रित्यतान्यसाध्यानि निर्दिशेत् (अभ्यन्तरांवलिंप्रवाहिणीम्) (एतान्यपिप्रत्येकमसाध्यानिलक्षणानि ॥१७॥

असाध्य ववासीरके लक्षण ॥

सहज अथवा त्रिदोषज और प्रवाहिणी नाम भीतरके चक्रमें उत्पन्न होनेवाले ववासीर के मस्से असाध्य होते हैं ॥ १७ ॥

शेषत्वादायुषस्तानिचतुष्पादसमन्वये । याप्यन्तेदीप्तकायाग्नेःप्रत्याख्येयान्यतोऽन्यथा ॥ यद्यायु शेषोवर्त्ततेचिकित्सायाःचत्वारःपादास्तेयदावैद्यवचनकारीधनवानुदारोजितेन्द्रियोरोगी । शास्त्रकर्म्मणिकुशलोवैद्य अनलसः ॥ आप्त प्रियःपरिचारकः । षट्रसवीर्य्यादिकमौषधंएषांसमन्वयेसमागमे ॥ अतिदीप्तकायाग्नेःपुरुषस्यतानिअर्शांसियाप्यन्तेचिकित्सायाम् । अतोऽन्यथाप्रत्याख्येयानिचिकित्साहीनानीत्यर्थः ॥ १८ ॥

जो आयु वाकीहोय रोगी की अग्नि दीप्तहोय और चतुष्पाद मिलें तो असाध्यभी याप्य होते हैं और ऐसा न होवे तो चिकित्साके अयोग्यहैं चतुष्पाद अर्थात् वैद्यकी आज्ञामाननेवाला धनी दाता तथा जितेन्द्री रोगी शास्त्र तथा चिकित्सामें कुशल वैद्य आलस्य रहित विश्वासपात्र तथा प्रियपरिचारक और नवीन तथा रसवीर्य्यादि से युक्त औषध इन चारोंबातोंको चतुष्पाद कहते हैं ॥ १८ ॥

अथार्शोऽरिष्टमाह ॥

हस्तेपादेमुखेनाभ्यांगुदेवृषणयोस्तथा । शोथोहृत्पार्श्वशूलंच यस्यासाध्योऽर्शसोहि

सः ॥ असाध्यःसन्निहितमरणबोद्धव्यः । अर्शसःअर्शोरोगयुक्तः ॥ एतन्मिलितमरिष्ट लक्षणम् । हत्पार्श्वशूलंसंमोहश्छर्दिरङ्गस्यरुग्ज्वरः ॥ तृष्णागुदास्यपाकश्चनिहन्युर्गु दजातुरम् । गुदास्यचास्यमोष्ठदेशस्तस्यपाकः ॥ हत्पार्श्वशूलादिसमस्तंचारिष्टलक्षणं तृष्णारोचकशूलार्त्तमतिप्रस्रुतशोणितम् । शोथातीसारसंयुक्तमर्शांसिक्षपयन्तिहि १६॥

बवासीरका अरिष्ट ॥

जिस बवासीर वालेके हाथ पैर मुख नाभि गुदा तथा अंडकोशोंमें सूजनहोय और हृदय तथा पसलियों में पीडाहोय उसकी मृत्यु निकट जाननी चाहिये जिस बवासीर वाले के हृदय तथा पसलियोंमें पीडाहोय मूर्च्छा छर्दि शरीरकी पीड़ा ज्वर तथा तृषा उत्पन्नहो और गुदाका मुखपक जाय उसकी मृत्यु निकट जाननी चाहिये जो बवासीर वाला तृषा अरुचि शूल बहुत रुधिरकावहना सूजन और अतीसार इनसे युक्त होय उसकी मृत्युहोती है ॥ १६ ॥

मेढ्रार्शो लक्षणम् ॥

मेढ्रादिष्वपिवक्ष्यन्तेयथास्वंनाभिजानिच । गण्डूपदास्यरूपाणिपिच्छिलानिमृदूनि च ॥ यथास्वंयथात्मीयलक्षणम् । नचात्रोक्तनिदानपूर्वसम्प्राप्तिलक्षणंयुक्तम् ॥ तत्रार्शसःपदन्तुमांसांकुरःसाम्यात् । गण्डूपदःकञ्चुलकः ॥ २० ॥

लिंगादि की बवासीरकालक्षण ॥

लिंग आदिकोंमें भी अपने २ लक्षणोंके अनुसार मस्से उत्पन्न होतेहैं उनमेंसे नाभिमें हुए मस्से केंचुयेके मुख के समान आकृतिवाले सचिक्कण और कोमल होतेहैं ॥ २० ॥

अथ मांसांकुरसाम्यादत्राधिकारे चर्मकीलस्यसम्प्राप्तिपूर्वकंलक्षणमाह ॥

व्यानोगृहीत्वाश्लेष्माणंकरोत्यर्शस्त्वचोवहिः । कीलोपमंस्थिरखरंचर्मकीलंतुतद्विदुः ॥ खरकर्कशम् ॥ २१ ॥

मस्सोंके समान होनेके कारण इस अधिकारमें चर्मकीलका संप्राप्ति पूर्वक लक्षण कहाजाताहै ॥

व्यान वायु कफको ग्रहण करके त्वचाके ऊपर स्थिर कर्कश और कील के समान मस्सा उत्पन्न करती है उसको चर्मकील कहते हैं ॥ २१ ॥

तस्य च वातादि भेदेनलक्षणमाह ॥

वातेनतोदपारुष्यंपित्तादसितरक्तता । श्लेष्मणास्निग्धतातस्यग्रथितत्वंसवर्णता ॥ सवर्णताशरीरसमानवर्णता ॥ २२ ॥

वातादि भेदसे चर्मकीलके लक्षण ॥

वायुकी चर्म्मकील में पीड़ा तथा कठिनता पित्तकी चर्म्मकील में मस्से के मुखका कालापन और कफकी चर्म्मकील में स्निग्धता गठीलापन तथा शरीर के समान वर्ण होता है ॥ २२ ॥

अथ सामान्यतोऽर्शस.चिकित्सा ॥

यद्वातस्यानुलोम्याययदग्निबलवृद्धये । अन्नपानौषधंसर्वंतत्सेव्यंनित्यमर्शसैः ॥

अर्शसेःअर्शोरोगयुक्तेः। शालिषष्ठिकगोधूमयवान्नानिघृतेःसह॥ अजाक्षीरेणवानिम्बप टोलानांरसेनवा। कन्देर्वार्ताकुमूलानांशैःरसैर्मांसरसेनवा॥जीवन्त्युपोदिकाशाकेस्तण्डुली यकवास्तुकेः। अन्यैश्चसृष्टविण्मूत्रमरुद्भिर्वह्निदीपनैः॥ अर्शांसिभिन्नवर्चांसिहन्याद्वा तातिसारवत्। सतक्रंलवणंदद्याद्वातवर्चोऽनुलोमनम्॥ नप्ररोहंतिगुदजाःपुनस्तक्रस माहताः। तक्राभ्यासोऽर्शसेःकार्य्योवलवर्णोऽग्निवृद्धये। स्रोतःसुतक्रंशुद्धेषुसम्यक्च लतितद्रसः॥ तेनपुष्टिस्तथातुष्टिर्वलंवर्णश्चजायते। वातश्लेष्मविकाराणांशतञ्च विनिवर्त्तते॥ २३॥

बवासीर की सामान्य चिकित्सा॥

जो अन्न पान तथा औषध वायु के नीचे लेजानेवाले और अग्निवलको बढ़ानेवाले होयँ वह संपूर्ण ववासीरवालों को नित्य सेवन करना चाहिये बवासीर वालेको घृत सहित शालि सोंठी गेहूं और जौ इनको बकरी का दूध नींब पर्वलका रस ज़मींकंद बैंगन तथा मूलीका यूप मांसका रस इनमें से किसीके साथ सेवन करावे और जीवन्ती पोय चौराई बथुई और अन्य मलमूत्र की निकालने वाली वायुको नीचे लेजाने वाली तथा दीपन वस्तुओं के साथ सेवन करावे बवासीर में मलके भेद होजाने पर वातातीसार के समान चिकित्सा करे वायु तथा मलके नीचे लेजाने के लिये सैंधव सहित मट्ठेका सेवन करे मट्ठेके द्वारा नष्टहुई बवासीर फिर नहीं निकलती बवासीरवालोंको वल वर्ण तथा अग्निकी वृद्धिके लिये सदैव मट्ठेका सेवन करनाचाहिये मट्ठेके द्वारा स्रोतोंके शुद्ध होजाने पर रस अच्छीप्रकार से शरीर में फैलता है इस्से पुष्टता तुष्टता वल तथा वर्ण की उत्पत्ति होती है और वात कफके सैकड़ों विकार शान्त होजाते हैं॥ २३॥

चिरविल्वाग्निसिन्धूत्थनागरेन्द्रयवारलुः। तक्रेणपिवतोऽर्शांसिनिपतन्त्यसृजास ह॥ चिरविल्वःकरञ्जः। तस्यफलस्यात्रमज्जाग्राह्या॥ अरलुः शोणकः। इतिकरञ्जा दिचूर्णम्॥ २४॥

करंजुयेकी मींगी चीता सेंधानोन सोंठ इन्द्रजौ और सोनापाठा इनके चूर्णको मट्ठेके साथ पीनेसे रुधिर सहित मस्से गिर जातेहैं॥ इति करंजादि चूर्ण॥ २४॥

लेपंरजनिचूर्णेनसुधादुग्धयुतेनच। अर्शोरोगनिवृत्त्यर्थंकारयेत्तुचिकित्सकः॥पिप्पली सैन्धवंकुष्ठंशिरीषस्यफलंतथा। सुधादुग्धार्कदुग्धंवालेपोऽयंगुदजान्हरेत्॥ हरिद्राजा लिनीचूर्णंकटुतैलसमन्वितम्। एषलेपोवरःप्रोक्तोह्यर्शसामन्तकारकः॥ जालिनीकटु तोरइइतिलोके। असितानांतिलानान्तुपलंशीतजलेनच॥ खादतोऽर्शांसिशाम्यन्ति दृढ़ादन्ताभवन्तिच। शस्त्रेर्वाथजलौकाभिःप्रच्छन्नंकठिनार्शसः॥ शोणितंसञ्चितंदृ ष्ट्वाहरेत्प्राज्ञःपुनःपुनः॥ २५॥

थूहरके दूधके साथ हल्दीके चूर्णको लेप करनेसे बवासीर जातीहै पीपल सेंधानोन कूट सिरसके बीज इन सबको थूहर अथवा आकके दूधके साथ लेप करनेसे मस्सोंका नाश होताहै हल्दी और कड़वी तोरईका चूर्ण कड़ुये तेलके साथ लेप करनेसे बवासीरका नाशहोताहै चार तोले कालेतिल शीतलजलके साथ खानेसे बवासीर शान्त होजातीहै और दांत दृढ़ होजाते हैं जो कठोर मस्सों में

छिपाहुआ इकट्ठा रुधिर मालूम देतो बारम्बार शस्त्र अथवा जोंकोंकेद्वारा निकलवानाचाहिये २५॥

काशीसंसैन्धवंकृष्णाशुण्ठीकुष्ठञ्चलाङ्गली। शिलाभिदश्वमारश्चदन्तीजन्तुघ्नचित्रकम्॥ तालकंकुनटीस्वर्णक्षीरीचैतैःप्रचेद्भिषक्। तैलंस्नुह्यर्कपयसागवांमूत्रचतुर्गुणम्॥ एतदभ्यङ्गतोऽर्शांसिक्षारेणैवपतन्तिहि। क्षारकर्म्मकरंह्येतन्नचसन्दूषयेद्वलिम्॥ काशीसङ्कसीसइतिलोके। लाङ्गलीकरिहारीतिलोके। शिलाभित्पाषाणभेदः। अश्वमारःकनेलइतिलोके। स्वर्णक्षीरीचोराईइतिलोके। इतिवृहत्काशीसाद्यतैलम्॥ २६॥

कसीस सेंधानोन पीपल सोंठ कूट करिहारी पाषाणभेद कनेर दन्ती वायविड़ंग चीता हरिताल मैनशिल चोराई इन वस्तुओंके द्वारा तेलको थूहर तथा मदारका दूध और चौगुना गोमूत्र डालकर विधिपूर्वक पाककरे इस तेलके लगानेसे मस्से गिरपड़तेहैं यह तेलक्षारके कार्य्यको सिद्ध करताहै और चर्मोंको दूषित नहीं करताहै॥ इति वृहत्कासीसाद्यतैल॥ २६॥

शुण्ठीकणामरिचनागदलत्वगेलंचूर्णीकृतंक्रमविवर्द्धितमूर्द्धमन्त्यात्। खादेदिदंसमसितंगुदजाग्निमान्द्यगुल्मारुचिश्वसनकण्ठहृदामयेषु॥ तद्यथा एलाबीजमत्रसूक्ष्मंग्राह्यम्। अतआहमदनपालः। एलासूक्ष्माकफश्वासकासार्शोमूत्रकृच्छ्रनुदित्यादि। तस्याबीजंभागः १ तजभागः २ दलंपत्रकम् ३ नागंनागकेशरम्॥ अतआहनिघंटधन्वन्तरिः। नागपुष्पंमतंनागंकेशरंनागकेशरमित्यादि तस्यभागः ४ मरिच ५पीपरि ६ सोंठि ७ चिनीभाग १८ सम शर्करचूर्णम्॥ २७॥

छोटी इलायचीके दाने १ भाग तज २ भाग तेजपात ३ भाग नागकेशर ४ भाग मिर्च ५ भाग पीपल६ भाग सोंठ ७ भाग चीनी २८ भाग इन सब ओषधियोंको चूर्णकरके और लिखीहुई चीनी मिलाकर खाने से ववासीर मन्दाग्नि वायगोला अरुचि श्वास कंठ और हृदयके रोग यह सब नष्ट होतेहैं॥ इति समशर्करचूर्ण॥ २७॥

त्रिकत्रयंवचाहिंगुपाठाक्षारोनिशाद्वयम्। चव्यतिक्ताकलिङ्गानिशताङ्गालवणानिच॥ ग्रन्थिविल्वाजमोदाचगणोऽष्टाविंशतिर्मतः॥ एतानिसमभागानिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत्॥ चूर्णविडालपदकंपिवेदुष्णेनवारिणा। एरण्डतैलयुक्तंवालिह्याच्चूर्णमिदंनरः॥ हन्यादर्शांसिसर्वाणिश्वासशोषभगन्दरान्। हृच्छूलंपार्श्वशूलंञ्चवातगुल्मंतथोदरम्॥ हिक्कांकासंप्रमेहांश्चपाण्डुरोगंसकामलम्। आमवातमुदावर्त्तमन्त्रवृद्धिगुदक्रमीन्॥ अन्येचग्रहणीदोषाभिषग्भिर्य्येप्रकीर्त्तिताः। विजयोनामचूर्णोऽयंतान्सर्व्वान्नाशुनाशयेत्॥ महाज्वरोपसृष्टानांभूतोपहतचेतसाम्। अप्रजानाञ्चनारीणांहितमेतद्धिभेषजम्॥ त्रिकत्रयंत्रिफला। त्रिकटुत्रिसुगन्धीनि॥ क्षारौस्वर्जिकाजवक्षारश्च। लवणानिपञ्च ग्रन्थिपिप्पलीमूलम्। विडालपदकंकर्षइतिविजयचूर्णम्॥ २८॥

त्रिफला त्रिकटु त्रिसुगन्ध (दालचीनी तेजपात और इलायची) वच हींग पाठा जवाखार सज्जी हल्दी दारुहल्दी चव्य कुटकी इन्द्रजो सौंफ पांचोनोन. पीपलामूल वेल और अजमोद इन सबको समभाग लेकर महीन चूर्ण करे फिर १ तोले भर चूर्ण गरमजल के साथ पिये अथवा रेंडीके तेल

केसाथ चाटे इस्से संपूर्ण ववासीर श्वास सूजन भगन्दर हृदयकी पीड़ा पसलीकी पीड़ा वायगोला उदर हिचकी खांसी प्रमेह पांडुरोग कामला आमवात उदावर्त्त आंतका बढ़ना गुदाके कृमि और वैद्योंके कहेहुए ग्रहणी के संपूर्ण दोष यह सब शीघ्र नष्ट होतेहैं यह चूर्ण बहुत ज्वर से व्याकुल तथा भूतों से विकल चित्त वाले मनुष्यों को और वंध्यास्त्रियों को हितकारी है इति विजय चूर्ण ॥ २८ ॥

मरिचमहौषधचित्रकशूरणभागायथोत्तरंद्विगुणाः। सर्व्वसमोगुड़भागःसेव्योऽयंमोदकःप्रसिद्धफलः॥ ज्वलनंज्वलयतिजाठरमुन्मूलयतीहशूलसगुल्मगदान्। निःशेषयतिश्लीपदमर्शांसिविनाशयत्याशु॥ तद्यथामरिचभागः१।शुण्ठीभागः२।चीताभागः ४ शूरणभागः८। गुड़भागः१५। इतिलघुशूरणमोदकः॥ २९ ॥

मिर्च १ भा० सोंठ२ भा० चीता४ भा० जिमींकन्द८ भा० और गुड़१५ भा० इन सब औषधियों केमोदक बनावे इनके खानेसे उदरकी अग्नि दीप्त होतीहै और शूल वाय गोला श्लीपद और ववासीरका शीघ्र नाश होताहै इति लघु शूरण मोदक ॥ २९ ॥

षोड़शभाशूरणगावह्नेरष्टौमहौषध.स्यात्।अर्द्धेनभागयुक्तिर्मरिचस्यततोऽपिचार्द्धेन॥ त्रिफलाकणासमूलातालीशारुष्करकृमिघ्नानाम्। भागामहौषधसमादहनांशतालमूलीच॥ भागःशूरणतुल्योदातव्योवृद्धदारकस्यापि। भृङ्गेलेमरिचांशेसर्व्वाण्येकत्रकारयेच्चूर्णम्॥ द्विगुणेनगुड़ेनयुतःसेव्योऽयंमोदकःप्रकामधनैः। गुरुवृष्योभोजनरतैरितरेपूपद्रवंकुर्य्यात्॥ भस्मकमनेनजनितंपूर्वमगस्त्यस्ययोगराजेन। भीमस्यमारुतेरपिमहाशनोतेनतौयातौ॥ अग्निवलवर्णहेतुर्नकेवलंशूरणोमहावीर्य्यः। हन्ताशस्त्रक्षारानलैविनाप्यर्शसामेषः॥ श्वयथुश्लीपदगदहृद्ग्रहणीचकफानिलोद्भूताम्। नाशयतिवलीपलितंमेधांकुरुतेजरांचहरेत॥ हिक्कांकासंश्वासंचराजरोगंप्रमेहांश्च। प्लीहानंचतथोग्रंहन्त्याशुरसायनंपुंसाम्॥ एषांभागायथा॥शूरणभागः१६।चीताभागः८।शुण्ठीभागः४। मरिचभागः२।हररे। बहेरा। आँवरा। पीपरि। पिपरामूल। तालीश। भेलातदसह्यस्वेरक्तचन्दनम्। विडंगप्रत्येकंभागः४।तालमूलीभागः८।विधाराभागः१६। तजभागः १। इलायचीछोटीबीजभागः १। गुड़भागः१७६। इतिवृहच्छूरणमोदकः॥ ३० ॥

जिमींकन्द १६ भाग चीता ८ भाग सोंठ ४ भाग मिर्च दो भाग हड़ बहेड़ा आमला पीपल पीपलामूल तालीस भिलावाँ वायविड़ंग यहसब चारचार भाग तालमूली ८ भाग विधारा १६ भाग तज १ भाग छोटीइलाइची के दाने १ भाग गुड़ १७६ भाग इनसब औषधियों को चूर्ण करके गुड़के साथ मोदक बनावे यह औषध धनवानों को खानी चाहिये क्योंकि इसमें भारी और वीर्य्य वर्द्धक भोजन करना चाहिये और नहीं तो उपद्रव करतीहै इसके द्वारा अगस्त्य और भीमसेन को भस्मक रोग होगयाथा इसीसे वह बहुत खानेवालेहुए यह केवल अग्निवल तथा वर्णहीका बढ़ानेवालानहीं है किन्तुशस्त्र क्षार तथा अग्निके विनाभी ववासीरको नष्टकरताहै इसके द्वारा सूजन श्लीपद कफ तथा वात जनित ग्रहणी झुर्री वालोंकी सफेदी वृद्धावस्था हिचकी खांसी श्वास राजयक्ष्मा प्रमेह तथाप्लीहा इनसबकानाश होताहै और यह रसायन तथा बुद्धि वर्द्धकहै इति वृहच्छूरण मोदक॥ ३० ॥

त्रिवृत्तेजोवतीदन्तीश्वदंष्ट्राचित्रकंशटी । गवाक्षीमुस्तविश्वाह्वविडङ्गानिहरीतकी ॥ पलोन्मितानिचैतानिपलान्यष्टावरुष्करात् । वृद्धदारात्पलान्यष्टौशूरणस्यतुषोड्श ॥ जलेद्रोणद्वयेक्काथ्यंचतुर्भागावशेषितम् । पूतंपूतंरसंभूयःक्वाथेभ्यस्त्रिगुणंगुडम् ॥ मेल यित्वापचेत्तावद्यावद्दर्वीप्रलेपनम् । अवतार्य्यततःपश्चाच्चूर्णानीमानिदापयेत् ॥ त्रिवृत्ते जोवतीकन्दांचित्रकाद्विपलांशिकान् । एलात्वङ्मरिचं चापिनागाह्वञ्चापिषट्पलम् ॥ द्वात्रिंशच्चपलान्यत्रचूर्णयित्वानिधापयेत् ।ततोमात्रांप्रयुञ्जीतजीर्णेक्षीररसाशिनः॥कन्दः शूरणःहन्यादर्शांसिसर्व्वाणितथासर्व्वोदराण्यपि ॥ गुल्मानपिप्रमेहांश्चपाण्डुरोगंहली मकम् । दीपयेदनलंमन्दंयक्ष्माणंचापकर्षति ॥ आधिवातेप्रतिश्यायेपीनसेचहितोमतः । भवन्त्यनेनपुरुषाःशतंवर्षाण्यनामयाः ॥ दीर्घायुषःप्रजननेवलीपलितवर्जिताः । गुडः श्रीवाहुशालोऽयंरसायनवरोमतः ॥ दुर्नामान्तकरोह्येषदृष्टोवारसहस्रशः।यावद्दर्वीप्रलेपः स्याद्गुडोवातन्तुमान्भवेत् ॥तोयपूर्णेयदापात्रेक्षिप्तोनप्लवतेगुडः । क्षिप्तस्तुनिश्चलस्तिं ष्ठेत्पतितस्तुनशीर्य्यति॥एषपाकःसमस्तानांगुडानांपरिकीर्त्तितः । सार्द्धपलंपलंचार्द्धंभक्ष येद्गुडखण्डयोः ।गुडःश्रेष्ठातुमध्यमाहीनामात्रोक्तामुनिभिस्त्रिधा॥श्रीवाहुशालः ३१॥

निसोथ तेजोवती (चव्य) दन्ती गोखुरू चीता कचूर इन्द्रायन मोथा सोंठ वायविड़ंग और हड़ यह सब एक२पल भिलावा ८ प० बिधारा८ प० जमींकन्द १६प० इनसब औपधियोंको २०४८तोले पानीमें औटावे जब चौथाई बाकीरहै तबछानले फिर क्वाथकी औषधियोंका तिगुना गुड़ उसपानी में डालकर जबतककरछी में लगने लगेतबतक पाककरके उतारले फिर निसोथ चव्य ज़िमींकन्द चीता यह सब दो२पल इलायची तज मिर्च तथा गजपीपल यह सब छः२ पल इन सब बत्तीस पल औषधियोंके चूर्णको मिलावे इसको मात्राके अनुसार खाय और इसके पचजाने पर दूध तथा मांसके रसका पथ्यकरे इसके द्वारा सब प्रकारकी बवासीर सम्पूर्ण उदर वायगोला प्रमेह हलीमक पांडु मंदाग्नि राजयक्ष्मा अधिवात जुकाम तथा पीनसका नाश होताहै और झुर्री बालोंकी सुफेदी तथा संपूर्ण रोगोंसे निवृत्त होकर सन्तान उत्पन्न करने में समर्थ होके सौवर्ष तक जीता है यह श्री वाहु शाल नाम गुड़रसायनों में श्रेष्ठ है और बवासीरके नाश करने में यह सैकड़ोंवार अनुभव किया गया है जब करछी में लगने लगे सूतसा निकलने लगे पानीमें डालनेसे नघुले फेकने से निश्चलबनार है अथवा गिरकर बहने न लगे तब गुड़का परिपाक हुआ जानना चाहिये मुनि लोगोंने इसकी मात्रा तीनप्रकार की कही है श्रेष्ठमात्रा ६ तोले मध्यम मात्रा ४ तोले और हीन मात्रा २ तोले ॥ इति श्री वाहुशाल गुड़ ॥ ३१ ॥

तिलभल्लातकैःपथ्यं गुडश्चेतिसमांशकैः।दुर्नामश्वासकासघ्नं प्लीहपाण्डुज्वरापहम् ॥ पित्तश्लेष्मप्रशमनी कण्डूकक्षोरुजापहा। गुदजान्नाशयत्याशु भक्षितासगुडाभया॥३२॥

तिल भिलावा हड़ और गुड़ इन सबको समभाग लेकर खाने से बवासीर श्वास खांसी प्लीहा पांडु और ज्वरका नाशहोता है गुड़के साथ हड़को खाने से पित्त कफ खुजली तर खुजली और बवासीर का नाशहोता है ॥ ३२ ॥

प्रणम्यशङ्कररुद्रं दण्डपाणिमहेश्वरम् । जीवितारोग्यमन्विच्छन्नारदोऽपृच्छदीश्व रम् ॥ सुखोपायेनहेनाथ शस्त्रक्षाराग्निभिर्विना । चिकित्सामर्शसांनृणांकारुण्याद्वक्तुम र्हसि ॥ नारदस्यवचःश्रुत्वा नराणांहितकाम्यया । अर्शसांनाशनंश्रेष्ठं भैषज्यंशङ्करोऽव दत् ॥ पाराब्धवज्रादिलोहानामादायान्यतमंशुभम् । कृत्वानिर्म्मलमादौतुकुनट्यामाक्षि केणच ॥ पत्तूरमूलकल्केनलिम्पेद्रसयुतेनच । कुनटीमनःशिलाःमाक्षिकंसुवर्णमाक्षिकम्॥ पत्तूरपटकारइतिलोकेरसःपारदः । वह्नौनिक्षिप्यविधिवत्साराङ्गारेणनिर्द्धमेत् ॥ ज्वा लाचतस्यरोद्धव्यात्रिफलायारसेनच ।सारःकाष्ठं । ततोविज्ञायगलितंशंकुनोद्ध्र्वंसमुच्छ्र येत् । त्रिफलायारसेपूते तदाकृष्यतुनिर्द्धमेत् ॥ नसम्यक्गालितंयत्तु तेनैवविधिनापुनः। ध्मातंनिर्वापयेत्तस्मिं ल्लोहंतत्त्रिफलारसे ॥ यल्लोहंनमृतंतत्रपाच्यंभूयोऽपिपूर्ववत् । मार णान्नमृतंयच्च तत्पक्तव्यमलोहवत् ॥ ततःसंशोष्यविधिवच्चूर्णयेल्लोहभाजने । लौहंतच्च तथायत्स्याद् दृपदासूक्ष्मचूर्णितम्॥ कृत्वालोहमयेपात्रे मृत्तिकालिप्तरन्ध्रके । रसैःपङ्को पमंकृत्वा तंपचेद्गोमयाग्निना ॥ पुटानिक्रमशोदद्यात्पृथगेभिर्विधानतः । त्रिफलार्द्रकभृ ङ्गानांकेशराजस्यबुद्धिमान् ॥ मानकन्दकभल्लातवह्नीनांशूरणस्यच । हस्तिकर्णपलाश स्य कुलिशस्यतथैवच ॥ भृंगःभेंगरिआकेशराजःकेशरागइति । पुटेपुटेचूर्णयित्वा लो हात्षोडशिकंपलम् । तन्मात्रंत्रिफलायाश्च पलेनाधिकमाहरेत् ॥ अष्टभागावशेषेतुरसे तस्याःपचेद्बुधः । अष्टौपलानिदत्वाच सर्पिषोलोहभाजने ॥ ताम्रेवालोहदर्व्यातु चाल येद्विधिपूर्वकम् । ततःपाकविधानज्ञः स्वच्छेचोद्ध्र्वंचसर्पिषि॥मृदुमध्यादिभेदेनगृह्णीया त्पाकमागतं । आरम्भेतद्विधानज्ञः कृतकौतुकमंगलः ॥ आमरंघृतसयुक्तंविलिह्याद्रक्ति काक्रमात् ॥ द्वादशरक्तिकापर्य्यन्तंयथाग्निवलंखादेत् । वर्द्धमानानुपानञ्चगव्यक्षीरेणसं युतम् । गव्याभावेत्वजायाश्चस्निग्धश्व्यादिभोजनम्॥ सद्योवह्निकरञ्चैवभस्मकञ्च नियच्छति । हन्तिवातंतथापित्तंकुष्ठानिविषमज्वरम् ॥ गुल्माक्षिपाण्डुरोगांश्चनिद्राल स्यंमरोचकम् । शूलञ्चपरिणामञ्चप्रमेहमपबाहुकम् ॥ श्वयथुंरुधिरस्रावंदुर्न्नामानंवि शेषतः। वलकृद्बृंहणञ्चैव कान्तिदंस्वरबोधनम् ॥ शरीरलाघवकरमारोग्यपुष्टिवर्द्ध नम् । आयुष्यंश्रीकरञ्चैववलतेतस्करंशुभम् ॥ सश्रीकंपुत्रजननंवलीपलितनाशनम् । दुर्न्नामारिरयंनाम्नादृष्टोवारसहस्रशः ॥ अनेनार्शांसिदह्यन्ते यथातूलञ्चवह्निना । सौ कुमार्य्यात्पकायत्वा न्मद्यसेवीयदानरः ॥ जीर्णमद्यादियुक्तादिभोजनैःसहदापयेत् । लाव तित्तिरवर्त्तीर मयूरशशकादयः ॥ चटकःकलविङ्कश्चवर्त्तकाहरितालकः ॥ श्येनकश्चव्र हल्लावोवनविष्किरकादयः ॥ पारावतमृगादीनां मांसंजाङ्गलकंशुभम् । यर्त्तीरःवगेरीति लोके ॥ वनचटकःकलविङ्कोगृहचटकः । वर्त्तकावटेरिइतिलोके ॥ हरितालकःहरिलइ तिलोके । विष्किरावर्त्तकादयः ॥ मद्गुरोरोहितःश्रेष्ठः शकुलश्चविशेषतः । मत्स्यंराजा

इतिप्रोक्ता हितमत्स्यायदेहिने ॥ वृन्ताकरयफलंशस्तंपटोलंवृहतीफलम् ॥ प्रलम्बाभीरुवेत्राग्रन्ताड़कन्तण्डुलीयकम् ॥ प्रलम्बाबालम्बालावूः। भीरुःशतावर्य्याःपत्रमग्रपत्रशाकम्। ताडकंदेवदालीअकरकरोतिलोके। तथाचनिघण्टेधन्वन्तरिः। जीमूतकोदेवताड़ःकृतकोशोगरागरी ॥ प्रोक्ताखुविषहृद्वेणीदेवदालीचताड़कः ॥ देवदालीरसेतिक्ताकफार्शःशोथपाण्डुता। नाशयेदित्यादि ॥ वारतूकधान्यशाकञ्चचित्रकञ्च। कमर्द्दकम्। चक्रमर्द्दकञ्चकवड़शाकम् ॥ नालिकेरञ्चखर्ज्जूरंदाड़िमंलवलीफलम्। शृङ्गाटकञ्चपक्वाम्रंद्राक्षातालफलानिच ॥ हितान्येतानिवस्तूनिलोहमेतत्समश्नताम्। नाश्नीयाल्लकुचंकोलकर्कन्धूबदराणिच ॥ जम्बीरंवीजपूरञ्चतिन्तिड़ीकरमर्द्दकम्। कोलंक्षुद्रबदरम् ॥ कर्कन्धूर्बृहद्बदरम्। अनूपानिचमांसानिकरकंपुण्ड्रकाणिच। करकं। हंससारसदात्यूहचापक्रौञ्चबलाकिका। डाक् नीलकण्ठामानकन्दकंसेरुणिकतकञ्च। कलिङ्गकम् ॥ तरबूज। कूष्माण्डकञ्चकर्कोटंकमुकञ्चविशेषतः। कटुकंकालशाकञ्चकुन्दुरूकर्कटीतथा ॥ तिलकाड़ा। ककारादीनिसर्व्वाणिद्विदलानिचवर्ज्जयेत् ॥ शङ्करेणसमाख्यातोयक्षराजानुकम्पया। जगतामुपकारायदुर्न्नामारिरयंध्रुवम् ॥ स्थानाच्चलतिमेरुश्चपृथ्वीपर्य्येतिवायुना। पतन्तिचन्द्रताराश्चामिथ्याचेदहमब्रुवम् ॥ ब्रह्मघ्नाश्चकृतघ्नाश्चक्रूरायेऽसत्यवादिनः। वर्ज्जनीयाःसधर्म्मेणभिषजागुरुनिन्दकाः ॥ मुनिरसपिष्टंविडङ्गंमुनिरसलीढंचिरस्थितंधर्म्मे। द्रावयतिलोहदोषान्वह्निर्नवनीतपिण्डमिव ॥ मुनिरत्रागस्त्यः। कालेमलप्रवर्त्तिलाघवमुदरेविशुद्धिरुद्गारे ॥ अङ्गेपुनावसादोमनःप्रसादोऽस्यपरिपाके। क्रिमिरिपुचूर्णलीढंसहितंस्वरसेनवङ्गसेनस्य ॥ क्षपयत्यचिरान्नियतंलोहाजीर्णोद्भवंशूलम्। वङ्गसेनस्यअगस्तेः॥भवेद्यदातिमारस्तुदुग्धंपीत्वातुनंजयेत्। गुञ्जाद्वादशकादूर्ध्वंद्दिरस्यभयप्रदा ॥ शङ्करप्रणीतंलोहम्। इतिसामान्याक्रियाः ॥ ३३ ॥

एक समय संपूर्ण जीवोंके नीरोग करने की इच्छा करते हुए नारदजीने संपूर्ण संसार के कल्याण करने वाले दंडपाणि महेश्वर श्री शिवजीको प्रणाम करके पूछा कि हे नाथ, ऐसा कौनसा सुखदायी उपाय है कि जिस्से शस्त्र क्षारतथा अग्नि के विनाभी बवासीरों की चिकित्सा होजाय वह आप मनुष्यों पर दया करके कहिये ऐसे नारदके वचन सुनकर मनुष्योंके हित की कामना से श्री शिवजी ने बवासीर की नाश करने वाली परमउत्तम यह औषधी कही कि वज्र आदिक लोहोंमें से किसी प्रकार के लोहे को लेकर पारा लगाकर मेनसिल और सोना माखी से शुद्ध करे फिर पतंग की जड़का कल्क और पारेसे लेप करके सारनाम काष्ठके कोयलों में तपावे और जो आगकी लपट उठेतो उसको त्रिफले के काढ़े से बुझावे फिर उसको गला जानकर त्रिफले के क्वाथ में बुझावे और जितना लोहा अच्छे प्रकार से न गलाहो उसको उसी प्रकार से फिर गलाकर त्रिफले के क्वाथमें बुझावे इसप्रकार से लोहे के नमरनेपर पूर्वोक्त विधिसे फिर पाककरे और इसप्रकारसेभी जो लोहा न मरे उसको त्यागकरदे फिर मारी लोहेको सुखाके लोहे के पात्र में लोहेके ही दंडे से खूब महीनचूर्णकरे इसके

उपरान्त क्रमसे त्रिफला अदरक भांगरा जल भांगरा मानकेचू भिलावाँ चीता ज़मींकन्द हस्तिकर्ण ढाक और थूहर इनके द्वारा अलग २ क्वाथ करके लोहेकी लुगदी बनावे और उसको लोहेकेपात्र में रक्ख बन्दकरके मिट्टीसे लेपकरके और कंडोंकी आंचमें पुटपाक देवे हरएकपुटमें इसप्रिकारसे पाककरे फिर सोलहपल त्रिफलेको चौगुने जलमें पाककरके अष्टमांश बाकी रहनेपर उतारले फिर लोहे अथवा तांबेके पात्रमें आठपल घी डालके १६ पल लोहा मिलावे और उसमें वह क्वाथ मिला के मन्दाग्नि में पाककरे और लोहेकी डंडीसे चलाताजाय जबजलसूखकर घी बाकी रहे तब उतारले परन्तु पाककी विधिका जानने वाला वैद्य अवस्थाकेअनुसार और औषधोंको उसमें डालकरमृदुमध्य आदिकपाकदेकर उतारे औरऔषध सेवनके प्रारम्भमें कौतुक और मंगलकरके सहत और घीकेसाथएक रत्ती औषध से प्रारम्भकरे और अग्नि बलके अनुसार बारह रत्ती तक बढ़ावे और इसकेऊपरगौके दूध का अनुपानकरे और औषधके साथ अनुपानकोभी बढ़ाताजाय इसके द्वारा शीघ्रही अग्नि दीप्तहोतीहै और भस्मक वात पित्तकफ विषम ज्वर वायगोला नेत्ररोग पांडु अधिक निद्रा आलस्य अरुचि शूल परिणाम शूल प्रमेह अपबाहुक सूजन रुधिर का बहना तथा बवासीर इनसबका नाशहोताहै और यह औषधि बलकारी धातुवर्द्धक कान्तिकारी स्वरको हित शरीर को हलका करनेवाली आरोग्य कारी पुष्टि वर्द्धक आयुको हित शोभाकारी तथा तेजवर्द्धकहै और इस के द्वारा पुत्रउत्पन्नकरने में सामर्थ्य उत्पन्न होतीहै झुर्रीमिटजातीहै बालकाले होजातेहैं यह लोह बवासीर का परमशत्रुहै इसबातका सैकड़ोंबार अनुभव कियागयाहै जैसे अग्निके द्वारा रुई भस्महोतीहै इसीप्रकार इस औषधी से बवासीरोंका नाशहोताहै सुकुमार छोटे शरीर वाले अथवा मद्य के सेवन करनेवाले मनुष्यों को पुरानी मद्य तथा भोजन आदि के साथ यह औषध देनी चाहिये लवा तीतर बटेर मोर खरगोश बनकी गौरैया गैरी हारिल बाज बड़ालवा बनके विष्किर पक्षी कबूतर तथा मृगादिक बनके जीवोंका मांस हितकारीहै मद्गुर रोहू तथा शकुल यह मछलियों में श्रेष्ठ मत्स्यराज कहलाती हैं यह परम हितकारी है बैंगन परवल भटकटैया के फल लम्बी लौकी सतावर के पत्ते देवदाली (भकरकंरा) तथा चौराई बथुई धनियां चीता चकवड़ नारियल खजूर अनार हरफारेवड़ी सिंघाड़ा पक्का आम दाख और ताड़काफल यह ऊपर कहीहुई संपूर्ण वस्तु लोहे के सेवन करने वालों को हितहैं बड़हल छोटा बेर बड़ाबेर जंभीरी नींबू बिजौरा नींबू इमली करौंदा अनूपमांस केकड़ा पुंड्रक हंस सारस नीलकंठ चाप बक मानकेचू कसेरू निर्मली तरबूज कुंभड़ा खिकसा सुपारी कड़वी वस्तु कालशाक कुंदुरु ककड़ी ककारादि सब वस्तु और दो दलवाली सबवस्तु इन सबको लोहे का सेवन करने वाला छोड़दे संसार के उपकार के लिये श्रीशिवजीने यह बवासीर की नाश करने वाली औषधि कहीहै चाहे सुमेरु पर्वत अपने स्थान से हटजाय पृथ्वी वायुसे उड़जाय और चन्द्रमा तथा तारा गिरपड़ें परन्तु यह औषधि कभी मिथ्या नहीं होसकी है ब्रह्मघाती कृतघ्न क्रूर मिथ्यावादी और गुरु निन्दक इन मनुष्यों को धर्मात्मा वैद्य यह औषध न देवे अगस्तके रसमें बाय बिड़ंग को पीस कर धूपमें सुखावे फिर अगस्त के रसके साथ चाटे इस्से जैसे अग्निके संयोग से मक्खन पिघलताहै उसी प्रकार लोह खाने से हुए संपूर्ण दोष पिघल जातेहैं अर्थात् नष्ट होजाते हैं समय पर मलका त्याग डकारकी शुद्धता उदरमें हलकापन शरीर में शिथिलता का न होना और मनकी प्रसन्नता यह खाये हुए लोहेके परिपाक होजाने के लक्षण हैं अगस्त के रसके साथ बायबिड़ंगके चूर्ण के चाटने से शीघ्रही लोह के खानेसे अजीर्ण [illegible] नष्ट होजाता है लोहके सेवन

इतिप्रोक्ता हितमर्स्यायदेहिने ॥ वृन्ताकरयफलंशस्तंपटोलंवृहतीफलम् ॥ प्रलम्बाभी रुवेत्राग्रन्ताड़कन्तण्डुलीयकम् ॥ प्रलम्बाबालम्बालाबूः। भीरु शतावर्य्याःपत्रमुपत्र शाकम्। ताड़कंदेवदालीप्रकरकरोतिलोके। तथाचनिघण्टेधन्वन्तरिः। जीमूतकोदेव ताड़ःकृतकोशोगरागरी ॥ प्रोक्ताखुविषहृद्देवीदेवदालीचताड़कः ॥ देवदालीरसेतिक्ता कफार्शःशोथपाण्डुता। नाशयेदित्यादि ॥ वास्तूकधान्यशाकञ्चचित्रकञ्च। कमर्दकम्।च क्रमर्दकञ्चकवडशाकम् ॥ नालिकेरञ्चखर्ज्जूरंदाडिमंलवलीफलम्। शृङ्गाटकञ्चपक्वाम्रं द्राक्षातालफलानिच ॥ हितान्येतानिवस्तूनिलोहमेतत्समश्नताम्। नाश्नीयाल्लकुचंको लकर्कन्धुवदराणिच ॥ जम्बीरंबीजपूरञ्चतिन्तिड़ीकरमर्दकम्। कोलंक्षुद्रवदरम् ॥ क र्कन्धूर्वृहद्वदरम्। अनूपानिचमांसानिक्रकरंपुण्ड्रकाणिच। करकरं। हंससारसदा त्यूहचापक्रौञ्चबलाकिका। डाक् नीलकण्ठोमानकन्दकंसेरुणिकतकञ्च। कलिङ्गकम् ॥ तरबूज। कूष्माण्डकञ्चकर्कोटंक्रमुकञ्चविशेषतः। कटुकंकालशाकञ्चकुन्दुरुकर्कटीतथा ॥ तिलकाडा। ककारादीनिसर्व्वाणिद्विदलानिचवर्ज्जयेत् ॥ शङ्करेणसमाख्यातोयक्षरा जानुकम्पया। जगतामुपकारायदुर्न्नामारिरयंध्रुवम् ॥ स्थानाच्चलतिमेरुश्चपृथ्वीपर्य्ये तिवायुना। पतन्तिचन्द्रताराश्चमिथ्याचेदहमब्रुवम् ॥ ब्रह्मघ्नाश्चकृतघ्नाश्चक्रूरायेऽस त्यवादिनः। वर्ज्जनीयाःसधर्म्मेणभिषजागुरुनिन्दकाः ॥ मुनिरसपिष्टंविड़ङ्गंमुनिरसली ढंचिरस्थितंघर्म्मे। द्रावयतिलोहदोषान्वह्निर्नवनीतपिण्डमिव ॥ मुनिरत्रागस्त्यः। कां स्येमलप्रवर्त्तिर्लाघवमुदरेविशुद्धिरुद्गारे ॥ अङ्गेपुनावसादोमनःप्रसादोऽस्यपरिपाके। कि मिरिपुचूर्णलीढसहितंस्वरसेनवङ्गसेनस्य ॥ क्षपयत्यचिरान्नियतंलोहाजीर्णोद्भवंशूलम्। वङ्गसेनस्यअगस्तेः ॥ नैवक्षयातिसारस्तुदुग्धंपीत्वातुनंजयेत्। गुञ्जाद्वादशकादूर्ध्वंनैव। द्वि रस्यभयप्रदा ॥ शङ्करप्रणीतंलोहम्। इतिसामान्याक्रियाः ॥ ३३ ॥

एक समय संपूर्ण जीवोंके नीरोग करने की इच्छा करते हुए नारदजीने संपूर्ण संसार के कल्याण करने वाले दंडपाणि महेश्वर श्री शिवजीको प्रणाम करके पूछा कि हे नाथ ऐसा कौनसा सुखदायी उपाय है कि जिस्से शस्त्र क्षारतथा अग्नि के विनाभी ववासीरों की चिकित्सा होजाय यह आप मनुष्यों पर दया करके कहिये ऐसे नारदके वचन सुनकर मनुष्योंके हितकी कामना से श्री शिवजी ने ववासीर कीनाश करने वाली परमउत्तम यह औषधी कही कि वज्र आदिक लोहोंमें से किसी प्रकार के लोहे को लेकर पारा लगाकर मेनसिल और सोना माखी से शुद्ध करे फिर पतंग की जड़का कल्क और पारेसे लेप करके सारनाम काष्ठके कोयलों में तपावे और जो आगकी लपट उठेतो उसको त्रिफले के काढ़े से बुझावे फिर उसको गला जानकर त्रिफले के क्वाथ में बुझावे और जितना लोहा अच्छे प्रकार से न गलाहो उसको उसी प्रकार से फिर गलाकर त्रिफले के क्वाथमें बुझावे इसप्रकार से लोहे के नमरनेपर पूर्वोक्त विधिसे फिर पाककरे और इसप्रकारसेभी जो लोहा न मरे उसको त्यागकरदे फिर बाकी लोहेको सुखाके लोहे के पात्र में लोहेके ही दंडे से खूब मर्दनचूर्णकर इसके

उपरान्त क्रमसे त्रिफला अदरक भांगरा जल भांगरा मानकेचू मिलावाँ चीता ज़मींकन्द हस्तिकर्ण ढाक और थूहर इनके द्वारा अलग २ क्वाथ करके लोहेकी लुगदी बनावे और उसको लोहेकेपात्र में रक्ख बन्दकरके मिट्टीसे लेपकरे और कंडोंकी आंचमें पुटपाक देवे हरएकपुटमें इसीप्रकारसे पाककरे फिर सोलहपल त्रिफलेको चौगुने जलमें पाककरके अष्टमांश बाकी रहनेपर उतारले फिर लोहे अथवा तांबेके पात्रमें आठपल घी डालके १६ पल लोहा मिलावे और उसमें वह क्वाथ मिला के मन्दाग्नि में पाककरे और लोहेकी डंडीसे चलाताजाय. जबजलसूखकर घी बाकी रहै तब उतारले परन्तु पाककी विधिका जानने वाला वैद्य अवस्थाकेअनुसार और औषधोंको उसमें डालकरमृदुमध्य आदिकपाकदेकर उतारे औरऔषध सेवनके प्रारम्भमें कौतुक और मंगलकरके सहत और घीकेसाथएक रत्ती औषध से प्रारम्भकरे और अग्नि बलके अनुसार बारह रत्ती तक बढ़ावे और इसकेऊपरगौके दूध का अनुपानकरे और औषधके साथ अनुपानकोभी बढ़ाताजाय इसके द्वारा शीघ्रही अग्नि दीप्तहोतीहै और भस्मक वात पित्तकुष्ठ विषम ज्वर वायगोला नेत्ररोग पांडु अधिक निद्रा आलस्य अरुचि शूल परिणाम शूल प्रमेह अपवाहुक सूजन रुधिर का बहना तथा बवासीर इनसबका नाशहोताहै और यह औषधि बलकारी धातुवर्द्धक कान्तिकारी स्वरको हित शरीर को हलका करनेवाली आरोग्य कारी पुष्टि वर्द्धक आयुको हित शोभाकारी तथा तेजवर्द्धकहै और इस के द्वारा पुत्रउत्पन्नकरने में सामर्थ्य उत्पन्न होताहै झुर्रीमिटजातीहै बालकाले होजातेहैं यह लोह बवासीर को परमशत्रुहै इसबातका सैकड़ोंबार अनुभव कियागयाहै जैसे अग्निके द्वारा रुई भस्महोतीहै इसीप्रकार इस औष-धी से बवासीरोंका नाशहोताहै सुकुमार छोटे शरीर वाले अथवा मद्य के सेवन करनेवाले-मनुष्यों को पुरानी मद्य तथा भोजन आदि के साथ यह औषध देनी चाहिये लवा तीतर बटेर मोर खरगोश बनकी गौरेया गैरी हारिलु बाज बड़ालवा बनके किंकिर पक्षी कबूतर तथा मृगादिक बनके जीवोंका मांस हितकारीहै मद्गुर रोहू तथा शकुल यह मछलियों में श्रेष्ठ मत्स्यराज कहलाती हैं यह परम हितकारी हैं बैंगन परवल भटकटैया के फल लम्बी लौकी सतावर के पत्ते देवदाली (ककरकरा) तथा चौराई बथुई धनियां चीता चकवड नारियल खजूर अनार हरफारे बड़ी सिंघाड़ा पका आम दाख और ताड़काफल यह ऊपर कहीहुई संपूर्ण वस्तु लोहे के सेवन करनें वालों को हितहैं बड़हल छोटा बेर बड़ाबेर जंभीरी नींबू बिजौरा नींबू इमली करोंदा अनूपमांस केकड़ा पुंडूक हंस सारस नीलकंठ चाप चक मानकेचू कसेरू निर्म्मली तरबूज कुंभड़ा खिकसा सुपारी कड़वी वस्तु कालशाक कुंदुरु ककड़ी ककारादि सब वस्तु और दो दलवाली सबवस्तु इन सबको लोहे का सेवन करने वाला छोड़दे संसार के उपकार के लिये श्रीशिवजीने यह बवासीर की नाश करने वाली औषधि कहीहै चाहे सुमेरु पर्वत अपने स्थान से हटजाय पृथ्वी वायुसे उड़जाय और चन्द्रमा तथा तारा गिरपड़ें परन्तु यह औषधि कभी मिथ्या नहीं होसक्ती है ब्रह्मघाती कृतघ्न क्रूर मिथ्यावादी और गुरु निन्दक इन मनुष्यों को धर्मात्मा वैद्य यह औषध न देवे अगस्तके रसमें वाय विड़ंग को पीस कर धूपमें सुखावे फिर अगस्त के रसके साथ चाटे इस्से जैसे अग्निके संयोग से मक्खन टिघलताहै उसी प्रकार लोह खाने से हुए संपूर्ण दोष टिघल जातेहैं अर्थात् नष्ट होजाते हैं समय पर मलका त्याग डकारकी शुद्धता उदरमें हलकापन शरीर में शिथिलता का न होना और मनकी प्रसन्नता यह खाये हुए लोहके परिपाक होजाने के लक्षण हैं अगस्त के रसके साथ वायविड़ंगके चूर्ण के चाटने से शीघ्रही लोह के खानेसे अजीर्ण हुआ नष्ट होजाता है लोहके सेवन

इतिप्रोक्ता हितमत्स्यायदेहिने ॥ वृन्ताकरयफलंशस्तंपटोलंवृहतीफलम् ॥ प्रलम्बाभीरुवेत्राग्रन्ताड़कन्तण्डुलीयकम् ॥ प्रलम्बावालम्बालावूः। भीरुःशतावर्य्याःपत्रमुपत्र शाकम्। ताड़केदेवदालीअकरकरेतिलोके। तथाचनिघण्टेधन्वन्तरिः। जीमूतकोदेव ताड़ःकृतकोशोगरागरी ॥ प्रोक्ताखुविषहद्वेणीदेवदालीचताड़कः ॥ देवदालीरसेतिक्ता कफार्शःशोथपाण्डुता। नाशयेदित्यादि ॥ वास्तूकधान्यशाकञ्चचित्रकञ्च। कमर्द्दकम्।च कमर्द्दकश्चकवड़शाकम् ॥ नालिकेरञ्चखर्ज्जूरंदाड़िमंलवलीफलम्। शृङ्गाटकञ्चपक्वाम्रं द्राक्षातालफलानिच ॥ हितान्येतानिवस्तूनिलोहमेतत्समश्नताम्। नाश्नीयाल्लकुचंको लकर्क्कन्धूवदराणिच ॥ जम्बीरंबीजपूरञ्चतिन्तिड़ीकरमर्द्दकम्। कोलंक्षुद्रवदरम् ॥ कर्कन्धूर्बृहद्वदरम्। अनूपानिचमांसानिक्करंपुण्ड्काणिच। करकरं। हंससारसदात्यूहचापक्रौञ्चबलाकिका। डाक् नीलकण्ठमानकन्दकंसेरुणिकतकञ्च। कलिङ्गकम्॥ तरबूज। कूष्माण्डकञ्चकर्कोटंक्रमुकञ्चविशेषतः। कटुकंकालशाकञ्चकुन्दुरुकर्क्कटीतथा॥ तिलकाड़। ककारादीनिसर्व्वाणिद्विदलानिचवर्ज्जयेत् ॥ शङ्करेणसमाख्यातोयक्षरा जानुकम्पया। जगतामुपकारायदुर्नामारिरयंध्रुवम् ॥ स्थानाच्चलतिमेरुश्चपृथ्वीपर्य्येतिवायुना। पतन्तिचन्द्रताराश्चामिथ्याचेदहमब्रुवम्॥ ब्रह्मघ्नाश्चकृतघ्नाश्चक्रूरायेऽसत्यवादिनः। वर्ज्जनीयाःसधर्म्मेणभिषजागुरुनिन्दकाः ॥ मुनिरसपिष्टंविड़ङ्गंमुनिरसलीढंचिरस्थितंधर्म्मे। द्रावयतिलोहदोषान्वह्निर्नवनीतपिण्डामेव ॥ मुनिरत्रागस्त्यः। कालेमलप्रवर्त्तिर्लाघवमुदरेविशुद्धिरुद्गारे ॥ अन्नेपुनावसादोमनःप्रसादोऽस्यपरिपाके। क्रिमिरिपुचूर्णलीढसहितंस्वरसेनवङ्गसेनस्य ॥ क्षपयत्यचिरान्नियतंलोहाजीर्णोद्भवंशूलम्। वङ्गसेनरयअगस्तेः॥ भवेद्यद्यतिसारस्तुदुग्धंपीत्वातुनंजयेत्। गुञ्जाद्वादशकादूर्ध्वंबृद्धिरस्यभयप्रदा ॥ शङ्करप्रणीतंलोहम्। इतिसामान्याक्रियाः ॥ ३३ ॥

एक समय संपूर्ण जीवोंके नीरोग करने की इच्छा करते हुए नारदजीने संपूर्ण संसार के कल्याण करने वाले दंडपाणि महेश्वर श्री शिवजीको प्रणाम करके पूंछा कि हे नाथ ऐसा कौनसा सुखदायी उपाय है कि जिस्से शस्त्र क्षारतथा अग्नि के बिनाभी बवासीरों की चिकित्सा होजाय वह आप मनुष्यों पर दया करके कहिये ऐसे नारदके वचन सुनकर मनुष्योंके हित की कामना से श्री शिवजी ने बवासीर कीनाश करने वाली परमउत्तम यह औषधी कही कि वज्र आदिक लोहोंमें से किसी प्रकार के लोहे को लेकर पारा लगाकर मैनसिल और सोना माखी से शुद्ध करे फिर पतंग की जड़का कल्क और पारेसे लेप करके सारनाम काष्ठके कोयलोंमें तपावे और जो आगकी लपट उठैतो उसको त्रिफले के काढ़े से बुझावे फिर उसको गला जानकर त्रिफले के क्वाथ में बुझावे और जितना लोहा अच्छे प्रकार से न गलाहो उसको उसी प्रकार से फिर गलाकर त्रिफले के क्वाथमें बुझावे इसप्रकार से लोहे के नमरनेपर पूर्वोक्त विधिमे फिर पाककरे और इसप्रकारसेभी जो लोहा न मरे उसको त्यागकरदे फिर बाकी लोहेको सुखाके लोहे के पात्र में लोहेके ही डंडे से खूब महीनचूर्णकर इसके

उपरान्त क्रमसे त्रिफला अदरक भागरा जल भागरा मानकेचू भिलावाँ चीता जमींकन्द हस्तिकर्ण ढाक और थूहर इनके द्वारा अलग २ क्वाथ करके लोहेकी लुगदी बनावे और उसको लोहेकेपात्र मे रक्ख बन्दकरके मिट्टीसे लेपकरे और कंडोंकी आचमें पुटपाक देवे हरएकपुटमें इसीप्रकारसे पाककरे फिर सोलहपल त्रिफलेको चौगुने जलमें पाककरके अष्टमांश बाकी रहनेपर उतारले फिर लोहे अथवा तांबेके पात्रमें आठपल घी डालके १६ पल लोहा मिलावे और उसमें वह क्वाथ मिलाके मन्दाग्नि में पाककरे और लोहेकी दर्वीसे चलाताजाय जबजलसूखकर घी बाकी रहे तब उतारले परन्तु पाककी विधिका जानने वाला वैद्य अवस्थाकेअनुसार और औषधोंको उसमें डालकरमृदुमध्य आदिकपाकदेकर उतारे औरऔषध सेवनके प्रारम्भमें कौतुक और मगलकरके सहत और घीकेसाथएक रत्ती औषध से प्रारम्भकरे और अग्नि बलके अनुसार बारह रत्ती तक बढ़ावे और इसकेऊपरगोके दूध का अनुपानकरे और औषधके साथ अनुपानकोभी बढ़ाताजाय इसके द्वारा शीघ्रही अग्नि दीप्तहोतीहै और भस्मक वात पित्तकफ विषम ज्वर वायगोला नेत्ररोग पाडु अधिक निद्रा आलस्य अरुचि शूल परिणाम शूल प्रमेह अपबाहुक सूजन रुधिर का बहना तथा बवासीर इनसबका नाशहोताहै और यह औषधि बलकारी धातुवर्द्धक कान्तिकारी स्वरको हित शरीर को हलका करनेवाली आरोग्य कारी पुष्टि वर्द्धक आयुको हित शोभाकारी तथा तेजवर्द्धकहै और इस के द्वारा पुत्रउत्पन्नकरने में सामर्थ्य उत्पन्न होतीहै झुर्रीमिटजातीहै बालकाले होजातेहैं यह लोह बवासीर का परमशत्रुहै इसबातका सैकड़ोंबार अनुभव कियागयाहै जैसे अग्निके द्वारा रुई भस्महोतीहै इसीप्रकार इस औषधी से बवासीरोंका नाशहोताहै सुकुमार छोटे शरीर वाले अथवा मद्य के सेवन करनेवाले मनुष्यों को पुरानी मद्य तथा भोजन आदि के साथ यह औषध देनी चाहिये लवा तीतर बटेर मोर खरगोश बनकी गौरैया गैरी हारिलु बाज बडालवा बनके विष्किर पक्षी कबूतर तथा मृगादिक बनके जीवोंका मांस हितकारीहै मदूगुर रेहू तथा शकुल यह मछलियों में श्रेष्ठ मत्स्यराज कहलाती है यह परम हितकारी है बैंगन परवल भटकटैया के फल लम्बी लोकी सतावर के पत्ते देवदाली (अकरकरा) तथा चौराई बथुई धनिया चीता चकवड नारियल खजूर अनार हरफारेवड़ी सिंवाडा पक्का आम दाख और ताडकाफल यह ऊपर कहीहुई संपूर्ण वस्तु लोहे के सेवन करने वालों को हितहैं बडहल छोटा बेर बड़ाबेर जभीरी नींबू बिजौरा नींबू इमली करौंदा अनूपमांस केकडा पुडुक हस सारस नीलकठ चाप बक मानकेचू कसेरू निर्म्मली तरबूज कुभडा खिकसा सुपारी कडवी वस्तु कालशाक कुंदुरु ककडी ककारादि सब वस्तु और दो दलवाली सबवस्तु इन सबको लोहे का सेवन करने वाला छोड़दे ससार के उपकार के लिये श्रीशिवजीने यह बवासीर की नाश करने वाली औषधि कहीहै चाहे सुमेरु पर्वत अपने स्थान से हटजाय पृथ्वी वायुसे उडजाय और चन्द्रमा तथा तारा गिरपडें परन्तु यह औषधि कभी मिथ्या नहीं होसकी है ब्रह्मघाती कृतघ्न क्रूर मिथ्यावादी और गुरु निन्दक इन मनुष्यों को धर्मात्मा वैद्य यह औषध न देवे अगस्तके रसमें वाय बिडग को पीस कर धूपमें सुखावे फिर अगस्त के रसके साथ चाटे इससे जैसे अग्निके सयोग से मक्खन पिघलताहै उसी प्रकार लोह खाने से हुए सपूर्ण दोष पिघल जातेहैं अर्थात् नष्ट होजाते हैं समय पर मलका त्याग डकारकी शुद्धता उदरमें हलकापन शरीर में शिथिलता का न होना और मनकी प्रसन्नता यह खाये हुए लोहेके परिपाक होजाने के लक्षण हैं अगस्त के रसके साथ वायबिडगके चूर्ण के चाटने से शीघ्रही लोह के खानेसे अजीर्ण हुआ नष्ट होजाता है लोहके सेवन

से उत्पन्न हुआ अतीसार दूध के पीनेसे निवृत्त होताहै बारह रत्तीसे अधिक लोहखानेसे अत्यन्त कष्ट होता है ॥ इतिशंकरप्रणीत लोहम् ॥ इति ववासीरकी सामान्य चिकित्सा ॥ ३३ ॥

अथ रक्तार्शसांचिकित्सा ॥

रक्तार्शसामुपेक्षेतरक्तमादौस्रवद्भिषक् । दुष्टास्रनिःसृतेनस्युःशूलानाहासृगामयाः॥३४॥

खूनी ववासीर की चिकित्सा ॥

वैद्य खूनी ववासीर में पहले रुधिर को न बन्द करे क्योंकि दूषित रुधिरके निकल जानेपर शूल आनाह और रुधिर के रोग नहीं होते हैं ॥ ३४ ॥

चन्दनकिराततिक्तकधन्वजवासाःसनागराःक्वथिताः । रक्तार्शसांप्रशमनादार्वीत्वगुशीरनिम्बाश्च ॥ चन्दनमत्ररक्तम् । नागरमत्रमुस्तकम् ॥ इतिचन्दनादिक्काथः ॥३५॥

लालचन्दन चिरायता धमासा जवासा नागरमोथा दारुहल्दी दालचीनी खस और नींब इनका क्वाथ पीने से खूनी बवासीर शान्त होती है ॥ इति चन्दनादि क्वाथ ॥ ३५ ॥

नवनीततिलाभ्यासात्केशरनवनीतशर्कराभ्यासात् । दधिसरमथिताभ्यासाद्गुदजाः शाम्यन्तिरक्तवहाः ॥ दध्नस्तूपरियोभागोघनस्नेहयुतःसरः । मथितंसररहितंनिर्जलं वस्त्रपूतंदधि ॥ सपद्मकेशरंक्षौद्रंनवनीतंनवंलिहन् । शिताकेशरसंयुक्तंरक्तार्शसिसुखीभवेत् ॥ पयसाशृतेनयूषैःसतीनमुद्गाढकीमसूराणाम् । ओदनमद्याम्लैःशालिःशामाककोद्रवजम्॥शशहरिणलावमांसैःकपिञ्जलैरेणमांसैश्चाओदनमद्याम्लैरीषत्सुगंधैश्च३६

मक्खन तथा तिल मक्खन नाग केशर तथा शक्कर और दही की मलाई तथा मथित इनतीन योगोंसे खूनी बवासीर शान्त होतीहै निर्जल मलाई रहित वस्त्रके द्वारा छाने हुए दही को मथित कहते हैं कमल की केशर सहत ताजा मक्खन शक्कर और नाग केशर इनसबको चाटने से खूनी बवासीर नष्ट होतीहै मटर मूंग अरहड़ और मशूर इन सबको दूध के साथ परिपक्व करके इनका यूप बनावे उसके साथ धान सामा और कोदो का भात खाय मद्य तथा खट्टी वस्तु सहित तथा कुछ सुगन्ध युक्त इनवस्तुओंको खानेसे खूनी बवासीर शान्त होती है खरगोश हिरन लवा सफेदतीतर और काला हिरन इनके मांसके साथ भी ऊपर कहाहुआ भातखाना चाहिये ॥ ३६ ॥

समङ्गोत्पलमोचाकस्तिरीटोत्पलचन्दनैः । सिद्धंछागीपयोदद्याद्गुदजेशोणितात्मके ॥ समङ्गालजालू।मोचाकोमोचरसः।तिरीटोलोध्रः।चन्दनंरक्तम्।इतिसमंगादिदुग्धम्३७॥

लजालू नीलकमल मोचरस लोध तिल और लाल चन्दन इनके द्वारा बकरीके दूधको क्षीर पाक करके खूनी बवासीरमें देना चाहिये ॥ इति समंगादि दुग्ध ॥ ३७ ॥

भावितंरजनीचूर्णैस्नुहीक्षीरैःपुनःपुनः । बन्धनात्सुदृढंसूत्रंछिनत्त्यर्शोभगन्दरम् ॥ इतिक्षारसूत्रम् ॥ ३८ ॥

हल्दीके चूर्ण और थूहरके दूधसे सात दिन तक भावना दिये गये सूतको बहुत मजबूत कर बांधनेसे बवासीरके मस्से और भगंदर कट जाताहै इति क्षार सूत्र ॥ ३८ ॥

नासानाभिसमुत्थेपुतथामेढ्रादिजेष्वपि । त्रिष्वप्यर्शःसुकुर्वीततत्रतत्रयथोचितम् ॥ चर्मकीलन्तुसंछिद्यदहेत्क्षारेणचाग्निना ॥ ३९ ॥

नासिका नाभि तथा लिंग आदिमें मस्सोंके उत्पन्न होनेपर जिसमें जो चिकित्सा उचित होय सो करे और चर्म कीलको काटकर क्षार तथा अग्निसे जलावे ३९॥

वेगावरोधंस्त्रीपृष्ठयान्युत्कुटकाशनम् । यथास्वंदोषलंचान्तमर्शसःपरिवर्जयेत् ॥ (इत्यर्शोऽधिकारः) ॥ ४० ॥

मल मूत्रादिका वेग रोकना स्त्री प्रसंग हाथी आदि सवारियों पर चढ़ना उकडू बैठना और अपने अपने अनुसार दूषित अन्न इन सबको बव सीर वाला छोड़दे इति बवासीरका अधिकार ॥ ४० ॥

अथ जठराग्निविकाराधिकारः। तत्रसन्निकृष्टनिदानपूर्वकानुदराग्निविकारानाह ॥

कफपित्तानिलाधिक्यात्तत्साम्याज्जाठरोऽनलः । मन्दस्तीक्ष्णोऽथविषम समश्चेति चतुर्विधः ॥ ४१ ॥

जठराग्निके विकारका अधिकार ॥

समीपी कारणों समेत उदरके विकारोंका वर्णन ॥

कफ पित्त तथा वायुकी अधिकतासे और समतासे क्रम पूर्वक मन्द तीक्ष्ण विषम और समयह चार प्रकारकी अग्नि होती हैं ॥ ४१ ॥

मन्दस्याग्नेर्लक्षणमाह ॥

स्वल्पापिनैवमन्दाग्नेर्मात्राभुक्ताविपच्यते।छर्दिःसाद प्रसेक स्याच्छिरोजठरगौरवम्॥४२॥

मन्दाग्निका लक्षण ॥

मन्दाग्नि वाले पुरुषको थोडा भी भोजन नहीं पचता और छर्दि शिथिलता मुखसे पानी छूटना तथा शिर और पेटमें भारीपन होताहै ॥ ४२ ॥

तीक्ष्णस्यलक्षणमाह ॥

मात्रातिमात्राप्यशितातीक्ष्णाग्निःपच्यतेसुखम् । अतएवहिकेनापिमतस्तीक्ष्णाग्निरुत्तम ॥ ४३ ॥

तीक्ष्णाग्निका लक्षण ॥

तीक्ष्णाग्नि वाले पुरुषको अधिक भोजनभी सुखपूर्वक पचजाताहै इसलिये कोईकोई तीक्ष्णाग्निको उत्तम कहतेहैं ॥ ४३ ॥

विषमस्यलक्षणमाह ॥

अशिताखलुमात्रापिविषमाग्नेस्तुदेहिनः।कदाचित्पच्यतेसम्यक्कदाचिन्नविपच्यते॥
तस्याध्मानमुदावर्त्तशूलंजठरगौरवम्।प्रवाहणमतीसारस्तथास्यादन्त्रकूजनम्॥ ४४॥

विषमाग्निका लक्षण ॥

विषमाग्नि वाले पुरुषको प्रमाणके अनुसार भी भोजन कभी पचताहै और कभी नहीं पचता और आध्मान उदावर्त्त शूल पेटमें भारीपन प्रवाहिका अतीसार तथा पेटमें गड़गड़ाहट होतीहै ॥४४॥

समस्यलक्षणमाह ॥

समासमाग्नेरशितामात्रासम्यग्विपच्यते।सोऽग्निरुत्तमएतेषुनतीक्ष्णस्तूत्तमोमतः॥ सचमधुरस्निग्धादिभोज्य सम्यगग्नावुत्तमः । तर्हिकथंतीक्ष्णविकारमध्येगणना । उच्यते । समोऽग्निःक्षुधाविघाताद्यैश्चैवतथाविकारंनकरोति । तीक्ष्णस्तुस्वल्पकालमपिक्षुधा

विघातादाश्वेवपैत्तिकान्विकारानकुरुते । तीक्ष्णःपित्तसमुत्थजान्विषमोवातहेतुकान् । तथाकरोतिमन्दाग्निविकारान्कफसम्भवान् ॥ ४५ ॥

समाग्निका लक्षण ॥

समाग्नि वाले पुरुषको प्रमाणके अनुसार भोजन अच्छे प्रकारसे पच जाताहै यही अग्नि सम्पूर्ण अग्नियोंमें उत्तमहै और तीक्ष्णाग्नि उत्तमनहीं है अब यह सन्देह होताहै कि तीक्ष्णाग्नि मधुर स्निग्धादि भोजनोंको अच्छे प्रकारसे पचातीहै इसलिये उत्तमहै तोउसकी रोगोंमें गणना क्योंकरीहै इसका उत्तर यहहै कि सम अग्नि क्षुधाके रोकनेसे शीघ्रही विकारको नहीं करती और तीक्ष्णाग्नि थोड़ी देर भी क्षुधाके रोकनेसे शीघ्र पित्त सम्बन्धी विकारोंको करतीहै और ऐसाही कहाभी है कि तीक्ष्णाग्नि पित्त सम्बन्धी विषमाग्नि वात सम्बन्धी और मन्दाग्नि कफ सम्बन्धी विकारों को करती है ॥ ४५ ॥

भस्मकस्यनिदानसंप्राप्तिपूर्वकंलक्षणमाह ॥

नरःक्षान्नभुजांनराणांक्षीणेकफेमारुतपित्तवृद्धौ । अतिप्रवृद्धःपवनान्वितोऽग्निर्भुक्तंक्षणाद्भस्मकरोतियस्मात्॥तस्माद्सौभस्मकसंज्ञकोऽभूदुपेक्षितोऽयंपचतेचधातून्४६

भस्मक रोगका निदान संप्राप्ति पूर्वक लक्षण ॥

बहुत अत्यन्त रूखी वस्तुओंके खाने वाले मनुष्योंके कफके क्षीण होजाने पर और वात तथा पित्तके बढ़ने पर बहुत बढ़ी हुई वात सहित अग्नि भोजन को क्षण भरमें पचाती है इसीसे इसको भस्मक कहतेहैं इसमें तरह देनेसे यह धातुओंको पचातीहै ॥ ४६ ॥

भस्मकस्यसोपद्रवमरिष्टमाह ॥

तृट्स्वेददाहमूर्च्छादीन्कृत्वेपोऽत्यग्निसम्भवान् ।पकान्नमाशुधात्वादीन्साक्षिप्रंनाशयेद्ध्रुवम् ॥ ४७ ॥

भस्मकका उपद्रव सहित अरिष्ट ॥

तृषा स्वेद दाह तथा मूर्च्छा आदिको उत्पन्न करतीहुई अन्नको शीघ्रही पचाकर यह अग्निशीघ्रही धातु आदिकोंको भस्मकर देतीहै ॥ ४७ ॥

अथाजीर्णस्यविप्रकृष्टंनिदानमाह ॥

अत्यम्बुपानाद्विषमाशनाच्चसन्धारणात्स्वप्नविपर्ययाच्च । कालेऽपिसात्म्यंलघुचापि भुक्तमन्नंनपाकंभजतेनरस्य ॥ सन्धारणात् । क्षुत्रामूत्रपुरीषादीनाम् । स्वप्नविपर्ययात् दिवाशयनाद्रात्रौजागरणात् । लघुचापीत्यपिशब्दात्तस्निग्धोष्णादिगुणयुक्तमपि । (अन्यच्च) तृष्णाभयक्रोधपरिप्लुतेनलुब्धेनरुग्दैन्यनिपीडितेन। प्रद्वेषयुक्तेनचसेव्यमानमन्नं नसम्यक्परिपाकमेति॥ परिप्लुतेनेनव्याप्तेन। उक्तकारणेभ्योऽतिमात्रान्नभोजनंविशेषादजीर्णस्यकारणमजीर्णञ्चबहुव्याधीनांकारणमित्याह । अनात्मवन्तःपशुवद्भुञ्जन्तेयेऽप्रमाणतः । रोगानीकस्यतेमूलमजीर्णंप्राप्नुवन्तिहि॥ अनात्मवन्तः। अबुद्धिमन्तः। रोगानीकस्य विसूच्यादेर्मूलंकारणम् (अन्यच्च) प्रायेणाहारवैषम्यादजीर्णंजायतेनृणाम् । तन्मूलोरोगसङ्घातःतद्विनाशाद्विनश्यति ॥ अजीर्णविनाशाद्विनश्यति।रोगसङ्घातःरोगसमूहः४८॥

अजीर्णका दूरवाला निदान॥

बहुत, जलपान विषमाशन क्षुधा तथा मलमूत्रादि वेगोंका रोकना दिनमें सोना और रात्रि में जागना इनसब कारणोंसे सात्म्य हलका स्निग्ध तथा उष्णादि गुणयुक्त भोजन समयपर कियाहुआ भी परिपाकको नहीं प्राप्त होताहै(अन्यप्रकार)तृषा भय तथा क्रोधसे व्याकुल लोभी रोगी दीन और द्वेषी मनुष्यों को अन्न अच्छेप्रकार से नहीं पचता है ऊपर कहे हुए कारणों में से बहुत भोजनही अजीर्णका मुख्य कारणहै और अजीर्ण से बहुत रोग उत्पन्न होतेहैं जैसे कि जो निर्बुद्धि मनुष्य पशु के समान बेप्रमाण भोजन करतेहैं वह विसूचिका आदि रोगोंके कारण रूप अजीर्णको प्राप्त होतेहैं (अन्यप्रकार)प्रायः आहारकी विषमतासे मनुष्योंको अजीर्ण होताहै यह अजीर्ण अनेक रोगोंकाकारण है और इसके नष्ट होनेसे वहरोगभी नष्ट होजाताहै ॥ ४८ ॥

अजीर्णस्यसामान्यंलक्षणमाह ॥

ग्लानिर्गौरवविष्टम्भ भ्रममारुतमूढता ॥ विबंधोप्रवृत्तिर्वा सामान्याजीर्णलक्षणम्॥ मारुतमूढतावायोरवरोध. । विबंध.मलप्रवृत्तिः ॥ ४९ ॥

अजीर्णका सामान्य लक्षण ॥

ग्लानि भारीपन विष्टंभ भ्रम वायुका रुकना और मलका रुकना अथवा पतला होकर निकलना यह सामान्य अजीर्णके लक्षणहैं ॥ ४९ ॥

सन्निकृष्टकारणसहितानजीर्णस्यभेदानाह ॥

आमंविदग्धंविष्टब्धंकफपित्तानिलैस्त्रिभिः । त्रिभिरित्येकशोनतुमिलितैः ॥ अजीर्णकेचिदीच्छंतिचतुर्थंरसशेषतः।केचित्तुसुश्रुतादय.॥ रसशेषतःभुक्तस्यपक्वस्यसारभूतो योद्रवःसोरसः । सोऽपिपच्यतेभुक्तस्यसारभूतोयो ॥ द्रवःसचापक्व.सारःरसशेष.तस्मात् । चतुर्थमजीर्णम् ॥ नन्वामाजीर्णाद्रसशेषस्यकोभेदः । उच्यते ॥ आमंमधुरतांगत मपक्वमन्नमेव । रसशेषस्तुभुक्तस्यपक्वस्यसारभूतोयोद्रव सचापक्व इतिभेदः ॥ ५० ॥

समीपी कारणों समेत अजीर्णके भेद ॥

कफ पित्त और वायुके द्वारा क्रमसे आम विदग्ध और विष्टब्ध नामक तीनप्रकारका अजीर्ण होताहै और कोई २ सुश्रुतादिक अन्नके सारांशको भूतरसके न पकने से चौथारस शेष नाम अजीर्ण कहतेहैं अब यह सन्देहहै कि आमाजीर्ण और रसशेषाजीर्ण में क्या भेदहै इसका उत्तर यहहै किआम मधुरताको प्राप्तहोनेवाले कच्चे अन्नहीको कहतेहैं और रसशेष पचेहुये भोजन के सारांश भूत पतले रसके न पकनेको कहतेहैं यही भेदहै ॥ ५० ॥

अजीर्णंपञ्चमंकेचिन्निर्दोषंदिनपाकिच । निर्दोषंगौरवंभ्रमशूलादिदोषाऽजनकम् दिनपाकिच । अहोरात्रेणपाकंयातीतिस्वभावः । यत्तुमात्राकालसात्म्यातिदोषाद्दिनांतरेपाकंयातितद्दिनपाकि । अतएव । याममध्येनभोक्तव्यमितिवचनम् ॥ ५१ ॥

मात्रा काल तथा सात्म्य आदिके दोषसे जो भोजन रात्रि दिनमें पचताहै और भारीपन भ्रम तथा शूलादिक दोष नहीं उत्पन्न होतेहैं उसको भी कोई २ पंडित लोग दिनपाकी नाम पांचवा अजीर्ण कहतेहैं इसीसे दिनके प्रथम पहरमें न खाना चाहिये यह बचन कहाहै ॥ ५१ ॥

वदन्तिपष्ठञ्चाजीर्णंप्राकृतंप्रतिवासरम्। प्राकृतमविकारकम् । प्रतिवासरंप्रतिदिनभावी। भुक्तंयावन्नजीर्णंतावदजीर्णमित्युच्यते । एतदभिधानस्यप्रयोजनंपाकार्थवामपार्श्वेशयनंप्रियशब्दादिसेवनादिकम् । नचात्राहारस्यनिषेधः । प्रातराशेत्वजीर्णेतुसायमाशेनदुष्यतीतिवचनेनसायमाशस्यावश्यंकर्तव्यत्वात् ॥ ५२ ॥

प्रतिदिन भोजनके न पचजानेतक विकार रहित छठा अजीर्ण कहलाताहै इस अजीर्ण के मानने का यह प्रयोजनहै कि भोजनके परिपाकके लिये बाईं करवटसे सोवे और प्रिय वचनोंका श्रवण आदि करे और इस अजीर्ण में भोजनका निषेध नहींहै क्योंकि कहागयाहै कि प्रातःकाल के भोजनके न पचनेपर सायंकाल में भोजन करने से कोई दोषनहीं होता इस वचनसे सायंकाल में भोजन करना अवश्यहै यह बात सिद्ध हुई ॥ ५२ ॥

अथामजीर्णस्यलक्षणमाह ॥

तत्रामेगुरुतोत्क्लेशःशोथोगण्डाक्षिकूटगः । उद्गारश्चयथाभुक्तमविदग्धंप्रवर्त्तते ॥ गुरुताउदरागयोः । उत्क्लेशःउपस्थितवमनमिव ॥ अक्षिकूटोऽक्षिपुटकः ॥ ५३ ॥

आमाजीर्ण का लक्षण ॥

आमाजीर्ण में उदर तथा शरीरका भारीपन मतली गालतथा नेत्रोंके पोटोंमें सूजन और खटाई से रहित जैसा भोजन किया है उसी प्रकार की डकार यह लक्षण होते हैं ॥ ५३ ॥

अथ विदग्धाजीर्णस्यलक्षणमाह ॥

विदग्धेभ्रमतृण्मूर्च्छाःपित्ताच्चविविधारुजः । उद्गारश्चसधूमाम्लस्वेदोदाहश्चजायते ॥ विविधारुजःऊपचोषादयःदाहादयः॥ ५४ ॥

विदग्धाजीर्ण के लक्षण ॥

भ्रम तृषा मूर्च्छा धुएं समेत खट्टी डकार स्वेद दाह और ऊष चोष आदिक पित्तकी अनेक पीड़ा यह विदग्धाजीर्ण के लक्षण हैं ॥ ५४ ॥

अथ विष्टब्धाजीर्णस्य लक्षणमाह ॥

विष्टब्धेशूलमाध्मानंविविधावातवेदनाः। मलवाताऽप्रवृत्तिश्चस्तम्भोमोहोऽङ्गपीडनम्। वातवेदनाःतोदभेदादयः। स्तम्भोऽङ्गानाम्मोहोमूर्च्छा ॥ ५५ ॥

विष्टब्धाजीर्णके लक्षण ॥

शूल आध्मान तोदभेद आदिक वातकी अनेक पीडा मल तथा वायुका न निकलना शरीरमेंजड़ता तथा पीड़ा और मूर्च्छा यह विष्टब्धाजीर्ण के लक्षण हैं ॥ ५५ ॥

अथ रसशेषाजीर्णस्य लक्षणमाह ॥

रसशेषेऽन्नविद्वेषोहृदयाशुद्धिगौरवे ॥ ५६ ॥

रस शेष अजीर्ण के लक्षण ॥

अन्न में अरुचि और हृदय में अशुद्धता तथा भारीपन यह रसशेष अजीर्ण के लक्षणहै ॥ ५६ ॥

एतस्योपद्रवा नाह ॥

मूर्च्छाप्रलापोवमथुःप्रसेकःसदनंभ्रमः । उपद्रवाभवन्त्येतेमरणञ्चाप्यजीर्णतः ५७॥

अजीर्ण के उपद्रव ॥

मूर्च्छा प्रलाप छर्दि मुखमें पानी छूटना शिथिलता और भ्रम यह अजीर्ण के उपद्रव हैं और अजीर्ण से मृत्युभी होजाती है ॥ ५७॥

अतिशयितेभ्योऽचामाद्यजीर्णेभ्योविसूच्यादिरोगानाह ॥

आमंविदग्धंविष्टब्धमित्यजीर्णंयदीरितम्॥विसूच्यलसकौतस्माद्द्वेचापिविलम्बिका॥ नात्रयथासंख्यम् ॥ तदाविष्टब्धाद्विलम्बिकाभवितुमर्हसि। साचकफवाताभ्यांभवतीत्येके कतोऽजीर्णाद्विसूच्यादित्रयोत्पत्तिः ॥ ५८ ॥

बहुत बढ़े हुए आमादिक अजीर्णोंसे विसूचिका आदिक रोग उत्पन्न होते हैं जैसे ऊपर कहेहुए आमाजीर्ण विदग्धा जीर्ण और विष्टब्धा जीर्ण से विसूची अलसक और विलम्बिका यह रोग उत्पन्न होते हैं ॥ ५८ ॥

विसूच्यानिरुक्तिमाह ॥

सूचीभिरिवगात्राणितुदन्सन्तिष्ठतेऽनिलःयत्राजीर्णेनसावैद्यैर्विसूचीतिनिगद्यते ५६।

विसूचिकाकीनिरुक्ति ॥

अजीर्णके द्वारा जहां रोगीकेशरीरमें सुई गड़ने के समान पीड़ा करती हुई वायु स्थित होती है॥ तब उसको वैद्यलोग विसूचिका कहतेहैं ॥ ५६ ॥

विसूच्यानिदानमाह ॥

नतांपरिमिताहारालभन्तेविदितागमाःमूढास्तामजितात्मानोलभन्तेऽशनलोलुपाः॥ विदितागमाः । ज्ञातायुर्वेदाः ॥ ६० ॥

विसूचिकाका निदान ॥

प्रमाण सहित भोजन करनेवाले और वैद्यक शास्त्रके जानने वाले मनुष्यों को विसूचिका नहीं होती मूर्ख इन्द्रियोंके वशीभूत और भोजनके लोभी मनुष्योंको विसूचिका होतीहै ॥ ६० ॥

विसूच्यालक्षणमाह ॥

मूर्च्छातिसारोवमथु पिपासाशूलंभ्रमोद्वेष्टनजृम्भदाहाः । वैवर्ण्यकम्पौहृदयेरुजश्च भवन्तितस्याशिरसश्चभेदः ॥ उद्वेष्टनंहस्तपादयोः । शिरसोभेदःशिरःशूलम् ॥ ६१ ॥

विसूचिका के लक्षण ॥

मूर्च्छा अतीसार छर्दि तृषा शूल भ्रम हाथ पैरोंमें ऐंठन जंभाई दाह रंगका बिगड़ना कम्प हृदयमें पीड़ा और शिरमें पीड़ा यह विसूचिकाके लक्षणहैं ॥ ६१ ॥

विसूच्याउपद्रवानाह ॥

निद्रानाशोऽरतिःकम्पोमूत्राघातोविसंज्ञता । अमीउपद्रवाघोराविसूच्याःपञ्चदारुणाः ॥ अमीनिद्रानाशादयःउपद्रवाः । सर्वेषामेवरोगाणांघोराभयङ्कराः । विसूच्यापञ्च दारुणाः । विसूच्यास्तुपञ्चापियदिस्युस्तदादारुणाः । प्राणभयङ्कराः ॥ ६२ ॥

विसूचिकाके उपद्रव ॥

निद्राका नाश वेचैनी कम्प मूत्र का रुकना और वेहोशी का होना यहपांच, उपद्रव सभी रोगों में भयंकरहैं और विसूचिका में यह पांचो होयँ तो प्राण नाशक जानने चाहियें ॥ ६२ ॥

अलसकलक्षणमाह ॥

कुक्षिरानह्यतेऽत्यर्थम्प्रताम्यत्यथकूजति । निरुद्धोमारुतश्चैवकुक्षावुपरिधावति ॥ वातवर्चोनिरोधश्चयस्यात्यर्थम्भवेदपि । तस्यालसकमाचष्टेतृष्णोद्गारौचयस्यतु ॥ आनह्यतेआध्मायते । प्रताम्यतिताड़यति । कूजतिआर्त्तनादंकरोति । कुक्षौअजीर्णेन निरुद्धोमारुतः । उपरिधावति । हृदयकण्ठादिकंगच्छतिइत्यर्थः । काश्यपस्त्वाह । नायातिनचाप्यूर्ध्वमाहारोयेनपच्यते । कोष्ठेस्थितोऽलसीभूतस्ततोऽसावलसःस्मृतः ६३

अलसक का लक्षण ॥

कोखमें बहुत अफरा ताड़न कराहना कोखमें अजीर्ण के द्वारा रुकी हुई वायुका हृदय कंठादिकों में जाना वायु तथा मलकारुकना तृषा और डकार यह अलसक के लक्षण हैं काश्यपने तो कहा है कि भोजन न ऊपर जाय न नीचेजाय और विनापचा हुआ कोष्ठमें निश्चल होकर ठहरे इसको अलसक कहतेहैं ॥ ६३ ॥ विसूच्यलसकयोऽरिष्टमाह ॥

यःश्यावदन्तोष्ठनखोऽल्पसंज्ञोवम्यर्दितोऽभ्यन्तरयातनेत्रः ।क्षामस्वरःसर्वविमुक्तसंधिर्यायान्नरोऽसौपुनरागमाय ॥ सर्वाविमुक्ताःशिथिलीभूताःसन्धयोयस्यसः ॥ ६४ ॥

विसूचिका और अलसकके अरिष्ट ॥

जिस अलसक और विसूचिका रोग वालेके दांतओंठ तथा नख कालेहोजायँ वेहोशी आजाय छर्दि होय नेत्रभीतर घुसजायँ स्वर क्षीणहोजाय और सबसंधियां शिथिल होजायँ उसकी मृत्युहोतीहै६४॥

विलम्बिकालक्षणमाह ॥

दुष्टन्तुभुक्तंकफमारुताभ्यां प्रवर्त्ततेनोर्ध्वमधश्चयत्र । विलम्बिकान्तांभृशदुश्चिकित्स्यामाचक्षतेशास्त्रविदःपुराणाः ॥ भृशदुश्चिकित्स्याम्प्रत्याख्येयामनुपचरणीयाम् । इदमसाध्यश्चेतिजेज्जटः ॥ ६५ ॥ विलम्बिकाका लक्षण ॥

कफ और वायुके द्वारा दोषयुक्त भोजन ऊपर और नीचे नजाय इसको प्राचीन वैद्यलोग विलम्बिका कहतेहैं यह औषध करनेके योग्य नहींहै और जेय्यटने इसको असाध्य कहाहै ॥ ६५ ॥

अथजीर्णाहारस्यलक्षणमाह ॥

उद्गारशुद्धिरुत्साहोवेगोत्सर्गोयथोचितः । लघुताक्षुत्पिपासाचजीर्णाहारस्यलक्षणम् ॥ ६६ ॥ पचेहुये भोजन के लक्षण ॥

शुद्ध डकार आना उत्साह यथा योग्य मल मूत्रादि वेगों का निकलना शरीर में हलकापन क्षुधा और तृषा यह भोजन के पचजाने के लक्षण हैं ॥ ६६ ॥

तस्याश्चिकित्सा ॥

हरीतकीतथाशुण्ठीभक्ष्यमाणागुडेनच । सैन्धवेनयुतावास्यात्सातत्येनाग्निदीपनी ॥

गुडेनशुण्ठीमथचोपकुल्यांपथ्यांतृतीयामथदाड़िमंवा । आमेष्वजीर्णेषुगुदामयेषुवर्चो विबन्धेषुचनित्यमद्यात् ॥ ६७ ॥

॥ अजीर्ण की चिकित्सा ॥

हड़ और सोंठ को गुड़ अथवा सेंधे निमक के साथ निरन्तर सेवन करनेसे अग्नि दीप्तहोती है गुड़ के साथ सोंठ पीपरि हड़ अथवा अनार को नित्य खाने से आमाजीर्ण गुदाके रोग और मलकी रुकावट का नाशहोता है ॥ ६७ ॥

व्योषंदन्तींत्रिवृच्चित्रंकृष्णामूलंविचूर्णितम् । तच्चूर्णंगुडसम्मिश्रंभक्षयेत्प्रातरुत्थितः॥ एतद्गुडाष्टकन्नामबलवर्णाग्निवर्द्धनम् । शोथोदावर्त्तशूलघ्नंप्लीहपाण्ड्वामयापहम् ॥ स र्वचूर्णसमोगुडोदेयः । गुडाष्टकम् ॥ ६८ ॥

त्रिकटुदन्ती निसोत चीता और पीपलामूल इन सब औषधियों को समभाग चूर्ण करके और इन सबकी बराबर गुड़ मिलाके प्रातःकाल खानेसे बल वर्ण तथा अग्निकी वृद्धिहोतीहै और सूजन उदावर्त्त,शूल प्लीहा तथा पांडुरोग कानाश होताहै इतिगुड़ाष्टकम् ॥ ६८ ॥

दहनाजमोदसैन्धवनागरमरिचानिचाम्लतक्रेण । सप्ताहादग्निकरंपाण्डुर्शोनाशनम्प रमम् ॥ ६९ ॥

चीता अजमोद सेंधानोन सोंठ और मिर्च इनसबको खट्टे मट्ठेकेसाथ सातदिन सेवन करनेसे अग्निकी वृद्धि और पाण्डु तथा ववासीरका नाश होताहै ॥ ६९ ॥

तत्रामेवमनङ्कार्य्यंविदग्धेलङ्घनंहितम् । विष्टब्धेस्वेदनंशस्तंरसशेषेशयनिम ॥ वचा लवणतोयेनवान्तिरामेप्रशस्यते । कणासिन्धुवचाकल्कंपीत्वाचशिशिराम्भसा ॥ जल मत्रसरावमात्रम् । वचाकर्षार्द्धमिता । द्वयोश्चूर्णमुष्णेनजलेनपिवेत् । कणादिकल्कंवा पीत्वावान्तिरामेप्रशस्यते । इत्यनेनान्वयः । धान्यनागरसिद्धंवातोयंदद्याद्विचक्षणः ॥ आमाजीर्णप्रशमनंशूलघ्नंवस्तिशोधनम् ॥ भवेद्यदाप्रातरजीर्णशङ्कातदाभयानागरसै न्धवाभ्याम् । विचूर्णितांशीतजलेनभुक्त्वाभुञ्ज्यादशंकंमितमन्नकाले ॥ विदह्यतेयस्यतु भुक्तमात्रंदन्दह्यतेहृद्गलश्चयस्य । द्राक्षासितामाक्षिकसम्प्रयुक्तांलीढाभयांचापिसुखं लभेत ॥ ७० ॥

आमाजीर्ण में वमन विदग्धाजीर्ण में लंघन विष्टब्धाजीर्णमें स्वेदन और रस शेषाजीर्ण में शयन कराना चाहिये वच और सेंधानोन छ छः माशे लेकर गरमजलके साथ पीकर वमन करे इस्से आमाजीर्ण नष्टहोताहै पीपल सेंधानोन और वचके कल्कको शीतल जलके साथ पीकर वमनकरने से आमाजीर्ण नष्ट होताहै धनियाँ और सोंठके काढ़ेको सेवनकरनेसे आमाजीर्ण तथा शूलकानाश होताहै और मूत्राशय शुद्ध होताहै जो प्रातःकाल अजीर्णका सन्देह होय तो हड़ सोंठ और सेंधेनोन को शीतल जलके साथखावे फिर भोजनके समयपर निस्सन्देह होकर प्रमाणसहित भोजनकरे जो भोजनके उपरान्त विदाहहोय और हृदय तथा गलेमें जलन होय तो दाख और हड़को शक्कर और सहृत के साथ चाटै इस्से आनन्द होता है ॥ ७० ॥

त्रिकटुकमजमोदासैन्धवंजीरकेद्वेसमधरणधृतानामष्टमोहिंगुभागाः । प्रथमकवलभुक्तंसर्पिषाचूर्णमेतज्जनयतिजठराग्निंवातरोगांश्चहन्ति ॥ इतिहिंग्वष्टकम् ॥ ७१ ॥

त्रिकटु अजमोद सेंधानोन दोनों जीरे और इन सबकी अष्टमांश हींग सबको पीसकर प्रथमग्रास में घृतके साथसाथ इस्से अग्निकी वृद्धि होतीहै और वातरोगोंका नाशहोताहै इति हिंग्वष्टक ॥ ७१॥

द्वौक्षारौचित्रकंपाठा करञ्जंलवणानिच । सूक्ष्मैलापत्रकंभार्ङ्गीक्रमिघ्नंहिंगुपौष्करम् ॥ शटीदार्व्वीत्रिवृन्मुस्तंवचाचेन्द्रयवास्तथा । वृक्षाम्लंजीरकंधात्रीश्रेयसीचोपकुञ्चिका ॥ अम्लवेतसमम्लीका यवानीदेवदारुच । अभयातिविषाश्यामा हवुषारग्वधंसमम् ॥ तिलमुष्ककशिग्रूणांकोकिलाक्षपलाशयोः । क्षाराणिलोहकिट्टञ्च तप्तंगोमूत्रसेचितम् ॥ सूक्ष्मचूर्णानिकृत्वातु समभागानिकारयेत् । मातुलुंगरसेनैवभावयेद्दिवसत्रयम् ॥ दिनत्रयन्तुशूक्तेन तथार्द्रकरसेनच । अत्यग्निकारकंचूर्णं प्रदीप्ताग्निसमप्रभम् ॥ उपयुक्तंविधानेननाशयत्यचिराद्ददान् ॥ अजीर्णमथगुल्मञ्चप्लीहानंगुदजानिच ॥ उदराण्यन्त्रवृद्धिञ्चअष्ठीलांवातशोणितम् ॥ प्रणुदत्युल्वणान्दोषान्नष्टाग्निंचप्रदीपयेत् ॥ द्वौक्षारौस्वर्जिकायवक्षारश्च । लवणानिपञ्च । वृक्षाम्लंत्रिपामिलइतिलोके । श्रेयसीहरीतकी । उपकुञ्चिकामंगरैलाइतिलोके । अम्लवेतसस्याभावेचुक्रंदातव्यम् । श्यामाप्रियंगु । मुष्ककः घण्टापाडरिइतिलोके । कोकिलाक्षःकोइलपाइतिलोके ॥ इतिवृहदग्निमुखचूर्णम् ७२॥

सज्जी जवाखार चीता पाठा करंजुआ पांचोंनोन छोटी इलायची तेजपात भारंगी वायविड़ंग हींग पुष्करमूल कचूर दारुहल्दी निसोत मोथा वच इन्द्रजौ चूक जीरा आमला हड़ कालाजीरा अमलवेत (इसके अभावमें चूक देनाचाहिये) ईमली अजवाइन देवदारु हड़ अतीस प्रियंगु हाऊबेर अमलतास और तिल घंटापाढल सहिंजना छीला तथा पलाशकाखार और गोमूत्रमें बुझाया हुआ लोहका कीट इनसब औषधियोंको समभाग लेकर सूक्ष्म चूर्ण करके नींबूके रसमें तीनदिन भावना देवे और तीन २ दिन सिरके में तथा अदरकके रसमें भावनादे यह चूर्ण अत्यन्त अग्निवर्द्धक जलतीहुई अग्निके समानहै विधि पूर्वक इसका सेवन करनेसे अजीर्ण वायगोला प्लीहा ववासीर उदररोग आंत का वढ़ना अष्ठीला वात रक्त तथा दोषोंकी वृद्धि यहसब नष्ट होते हैं और नष्टहुई अग्निभी दीप्त होतीहै इति वृहदग्नि मुख चूर्ण ॥ ७२ ॥

स्नुह्यर्कचित्रकैरण्ड वरुणंसपुनर्नवम् । तिलापामार्गकदलीपलाशांतिन्तिड़ीतथा ॥ गृहीत्वाज्वालयेदेतत्प्रस्थंभस्माखिलंयथा ॥ जलाढकेविपक्तव्यंयावत्पादावशेषितम् । सुप्रसन्नंविनिस्राव्य लवणप्रस्थसंयुतम् ॥ पक्वंनिर्धूमकठिनसूक्ष्मचूर्णीकृतंपुनः ॥ जवानीजीरकव्योष स्थूलजीरकहिंगुभिः ॥ शीतोदकेनतच्चूर्णं पिबेत्प्रातर्हिमात्रया । तस्मिन्जीर्णेऽन्नमश्नीयाद्यूषजांगलजैरसैः ॥ ईषदम्लैःसलवणैः सुखोष्णैर्वह्निदीपनैः । एतेनाग्निर्विवर्द्धेत वलमारोग्यमेवच ॥ तत्रानुपानंशस्तंहितक्रंवाभोजनेहितम् । मन्दाग्न्यर्शोविकारेषुवातश्लेष्मामयेषुच ॥ सर्व्वाङ्गशोथरोगेषु शूलगुल्मोदरेषुच ॥ अश्मर्य्यांशर्करायाञ्च विण्मूत्रानिलरोगिषु ॥ वैश्वानरक्षारः ॥ ७३ ॥

थूहर आक चीता रेंड़ी वरना पुनर्नवा तिल लटजीरा केला ढाक और इमली इन सब समभाग औषधियोंको जलाकर सब की ६४ तोले भस्मको २५६ तोले जलमें औटावै चौथाई बाकी रहने पर ठहराकर किसी पात्रमें उड़ेललै फिर उस जलके साथ ६४ तोले निमक मिलाकर फिर पाक करे इसके उपरान्त धूम रहित कडा होजाने पर सूक्ष्म चूर्ण करे फिर अजवाइन जीरा त्रिकटु काला जीरा और हींग मिलाकर शीतल जलके साथ प्रातःकाल मात्राके अनुसार खाय और औषधके पच जाने पर यूप तथा जंगली जीवोंके मांसके रसके साथ अन्नखाय कुछ खट्टी तथा उष्ण लवण युक्त दीपन वस्तुओंके साथ अन्नखाय अनुपानमें अथवा भोजनमें मट्ठेका सेवन करे यह औषधि अग्नि वर्द्धक बल तथा आरोग्य कारी और मन्दाग्नि ववासीर वात कफके रोगसर्वांग सूजन शूल वायगोला उदर रोग पथरी शर्करा वातरोग तथा मलमूत्र रोग इन सबकी नाशकहै इतिवैरवा नरक्षार ॥ ७३ ॥

सामुद्रलवणंकार्य्य मष्टकर्षमितंबुधैः । सौवर्चलंपञ्चकर्षं विडसैन्धवधान्यकम् ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलं पत्रकंकृष्णजीरकम् ॥ तालीशंकेशरंचव्यमम्लवेतसकंतथा ॥ द्विकर्षमात्राण्येतानि प्रत्येकंकारयेद्बुधः । मरिचंजीरकंविश्व मेकैकंकर्षमात्रकम् ॥ दाड़िमंस्याच्चतुःकर्षंत्वगेलाचार्द्धकर्षिका । एतच्चूर्णीकृतंसर्व्वंलवणंभास्कराभिधम् ॥ भक्षयेच्छाणमानन्तु तक्रमस्तुककाञ्जिकैः॥ वातश्लेष्मभवंगुल्मं प्लीहानमुदरक्षयम् ॥ अर्शांसिग्रहणीकुष्ठंविबन्धश्चभगन्दरम्॥शूलंशोथंश्वासकासामदोषांश्चापिहृद्रुजम्॥ अश्मरींशर्कराञ्चापि पांडुरोगंकृमीनपि । मन्दाग्निंनाशयेदेतद्दीपनंपाचनंपरम् ॥ हितायसर्व्वलोकानां भास्करेणविनिर्म्मितम् । हन्यात्सर्व्वाण्यजीर्णानि भुक्तमात्रमसंशयम् ॥ अत्रदाड़िमस्य बीजानांकर्षचतुष्टयमितंदेयम् ॥ इतिभास्करलवणम् ॥ ७४ ॥

खारी निमक ८ तोले कालानोन ५ तोले विड़नोन सेंधानोन धनियां पीपलामूल तेजपात काला-जीरा तालीस नागकेशर चव्य तथा अमलवेत यह सब दो २ तोले मिर्च जीरा तथा सोंठ एक१तोला अनारदाना ४ तोला दालचीनी तथा इलायची छः २ मासे इनसब औषधियोंको एकसाथ चूर्ण करके मट्ठा दही अथवा कांजीके साथ चारमासे चूर्णखाय इस्से वात कफके रोग वायगोला प्लीहा उदर क्षय ववासीर ग्रहणी कुष्ट मलका रुकना भगन्दर शूल सूजन श्वास खांसी आमदोष हृदयकी पीड़ा पथरी शर्करा पांडुरोग कृमि तथा मन्दाग्निका नाशहोताहै और यह दीपन तथा पाचनहै सब संसारके हितके लिये भगवान् सूर्य्य देवताने इसको बनायाहै इसके खानेसे सब प्रकारके अजीर्ण निस्संदेह नष्ट होजातेहैं इति भास्कर लवण ॥ ७४ ॥

सैन्धवसमूलमगधाचव्यानलनागरपथ्या । क्रमवृद्धमग्निवृद्धोवड़वानलनामचूर्णं स्यात् ॥ इतिवड़वानलचूर्णम् ॥ ७५ ॥

सेंधानोन पीपलामूल पीपल चव्य चीता सोंठ और हड़ इन सब औषधियोंको क्रमसे एक एक भाग बढ़ाकर (सेंधानोन १ भाग पीपलामूल २ भाग इत्यादि) ले और चूर्णकर मात्राके अनुसार खाय इस्से अग्नि बढ़तीहै इति वड़वानल चूर्ण ॥ ७५ ॥

पथ्यानागरकृष्णाकरञ्जविल्वाग्निभिःसितातुल्यैः ॥ वड़वानलइवजरयतिवहुगुर्व्वीति भोजनंचूर्णम् ॥ इतिद्वितीयवड़वानलचूर्णम् ॥ ७६ ॥

हड़ सोंठ पीपल करंजुआ बेल और चीता यह सब समभाग चूर्ण करके इनकी बराबर शक्कर डाल कर सेवन करनेसे बहुत भारी भोजन भी परिपाक होजाताहै इतिद्वितीय बड़वानल चूर्ण ॥ ७६ ॥

एलात्वक्नागपुष्पाणांमात्रोत्तरविवर्द्धिता । मरिचंपिप्पलीशुण्ठी चतुष्पञ्चोत्तरोत्तरा ॥द्रव्याण्येतानियावन्तितावतीसितशर्करा।चूर्णमेतत्प्रयोक्तव्यमग्निसन्दीपनंपरम्॥ इतिसमशर्करचूर्णम् ॥ ७७ ॥

इलायची१ भाग दालचीनी२ भाग नाग केशर३ भाग मिर्च ४ भाग पीपल ५ भाग और सोंठ ६ भाग इन सबकी बराबर सफेद शक्कर इन सब औषधियों के मिलेहुए चूर्णके खानेसे अत्यन्त अग्निकी दीप्ति होतीहै इति समशर्कर चूर्ण ॥ ७७ ॥

अथाजीर्णेरसाः ॥

द्विपलंगन्धकंशुद्धंपलमेकन्तुपारदम् । मृतलोहंतथाताम्रंकर्षद्वयमितंपृथक्॥ सञ्चूर्ण्य सर्व्वंसम्मिश्रंद्रावयित्वाग्नियोगतः । सम्यक्कुट्टंसमस्तंतत्पञ्चांगुलदलेक्षिपेत् ॥ पुनः संचूर्ण्यंततसर्व्वंलोहपात्रेनिधापयेत् । जम्बीरस्यरसंतत्रपूतंपलशतंक्षिपेत्॥ चुह्ल्यांनिवेश्यतद्यत्नात् मृदुनावह्निनापचेत् ॥ रसेतस्मिन्घनीभूते तत्संशोष्यविचूर्णयत् ॥ पञ्च कोलकषायस्य चुक्रेणसहितस्यच । भावनातत्रदातव्या पश्चात्संशोषयेच्छनैः ॥ भृष्टटङ्कनचूर्णेन तुल्येनसहमेलयेत् । मरिचेनापितुल्येन तदर्द्धेनविडेनच ॥ भावयेत्सप्तकृत्वस्तु चणकाम्लजलेनच । ततःसंशोष्यसम्पिष्ट्य कूपमध्येनिधापयेत् ॥ रसक्रव्याद्नामायं भैरवानन्दयोगिना ॥ उक्तःसिंहलराजाय बहुमांसाशिनेपुराः ॥भक्षयेद्भोजनस्यान्ते माषद्वयमितंरसम् ॥ भक्षयित्वारसंपश्चात् पिबेत्तक्रंससैन्धवम् ॥ अत्यर्थंगुरुयद्भुक्तमतिमात्रमथापिच ॥ तत्सर्व्वंजीर्यतिक्षिप्रं रसस्यैतस्यभक्षणात् ॥ शूलंगुल्मश्वविष्टम्भं प्लीहानमुदरंतथा । रसःक्रव्यादनामाऽयंविनिहन्तिनसंशयः ॥ इतिक्रव्यादरसाजीर्णेरसेन्द्रचिन्तामणौरसरत्नप्रदीपेच ॥ ७८ ॥

अजीर्णपर रस ॥

शुद्ध गंधक २ पल शुद्धपारा १ पल लोहे तथा तांबेकी भस्मदो २ तोले इनसब औषधियोंको मिला कर आगपर खूब गलावे और गलाकर रेंडीके पत्तेपर डाले फिर उसको चूर्ण करके लोहेके पात्र में रक्खे और उस में ४०० तोले जंभीरी नींबूका रस छोड़कर चूल्हे पर चढ़ाय मन्दाग्नि से पाक करे इसके उपरान्त रसके गाढ़े होजाने पर सुखाके चूर्ण करे फिर चूक सहित पंच कोलके काढ़े में भावना देकर सूख जानेपर उसके समान भुना सुहागा तथा मिर्च और आधा भाग विड़नोन मिला कर चनोंके रसमें सातवार भावनादे फिर सुखायके और पीस के शीसी में रखछोड़े यह क्रव्याद नाम रस पूर्व कालमें बहुत मांसके खाने वाले सिंहलद्वीप के राजाके लिये भैरवानन्द योगीने कहा था भोजन के अन्त में दोमाशे इस रस को खाकर सेंधेनोन समेत मट्ठा पिये इस्से बहुत भारीतथा बहुत अधिकभी भोजन शीघ्र पचजाताहै और शूल वाय गोला विष्टंभ प्लीहा तथा उदर रोग सबनष्ट होतेहैं इति क्रव्यादरस ॥ ७८ ॥

क्षारत्रयंसूतगन्धौपञ्चकोलमिदंसमम् । सर्व्वैस्तुल्याजयाभृष्टातदर्द्धाशिग्रुजाजटा ॥ एतत्सर्व्वंजयाशिग्रुवह्नीनांकेवलैर्द्रवैः । भावयेत्त्रिदिनंघर्म्मेततोलघुपुटेपचेत् ॥ मार्कव स्यद्रवैर्घृष्टोरसोज्वालानलोभवेत् । निष्कोऽस्यमधुनालीढोऽनुपानंगुड़नागरम् ॥ हन्त्य जीर्णमतीसारंग्रहणीमग्निमार्दवम् । श्लेष्महृल्लासवमनमालस्यमरुचिंजयेत् ॥ (अथ पञ्चकोलम्)पिप्पलीपिप्पलीमूलंचव्याचित्रकनागरैः। जयात्रविजया।मार्कवःभृङ्गराजः ॥ इतिज्वालानलोरसः । अजीर्णेरसरत्नप्रदीपे ॥ ७९ ॥

जवाखार सज्जी सुहागा पारा गन्धक पीपल पीपला मूल चव्य चीता औरसोंठ यहसब समभाग और सबकी बराबर भुनी हुई भंग और भंगकी आधी सहिंजने की जड़ इन सब को मिलाकर भंग सहिंजना तथा चीतेके रसमें एकएक दिन भावनादेवे फिर हलके पुटमें पाककर के भांगरेके रस में घोटले चार माशे इस रसको सहतके साथ चाटे और सोंठ तथा गुड़ का अनुपान करे इसके द्वारा अजीर्ण अतीसार ग्रहणी मन्दाग्नि कफ मतली छर्दि आलस्य तथा अरुचिका नाश होताहै इति ज्वाला नल रस ॥ ७९ ॥

टङ्कणंरसगन्धौचसमभागंत्रयंविषात् । कपर्दःस्वर्ज्जिकाक्षारोमागधीविश्वभेषजम् ॥ पृथक्पृथक्कर्षमात्रंवसुभागमिहोषणम् । जम्बीराम्लैर्दिनंघृष्टंभवेदग्निकुमारकः॥विसू चीशूलवातादिवह्निमान्द्यप्रशान्तये।क्षारोजवक्षारः।अग्निकुमारोविसूच्यामजीर्णेरसरत्न प्रदीपे । रसेन्द्रचिन्तामणौ ॥ ८० ॥

सुहागा पारातथा गन्धक एक२ भाग विष३भागकौड़ी की भस्म सज्जी जवाखार पीपल तथासोंठ एक२ भाग और मिर्च ८भाग इनसब औषधियोंको जंभीरी नींबूके रसमें एक दिन घोटे फिर मात्रा के अनुसार सेवन करने से विसूचिका शूल और वातादि की मन्दाग्नि नष्ट होती है इति अग्नि कुमार रस ॥ ८० ॥

पारदामृतलवङ्गगन्धकंभागयुग्ममरिचेनमिश्रितम् । तत्रजातिफलमर्द्धभागिकांति न्तिड़ीफलरसेनमर्द्दितम् ॥ वह्निमांद्यदशवक्त्रनाशनोरामबाणइतिविश्रुतोरसः । संग्रहग्र हणिकुम्भकर्णकमामवातखरदूषणंजयेत् ॥ दीयतेतुमरिचानुपानतःसद्यएवजठराग्निदी पनः । रोचनःकफकुलान्तकारकःश्वासकासवमिजन्तुनाशनः ॥ पाराभाग १ । विषभा ग १ । लवङ्गभाग १ । गन्धकभाग १ । मरिचभाग २ । जायफरभागआधा । इतिरा मबाणरसः । रसेन्द्रचिन्तामणौ ॥ ८१ ॥

पारा बिष लौंग तथा गन्धक एकएक भाग मिर्च दोभाग जायफल आधा भाग इनसब औषधियों को इमली के रसमें पीसकर सेवनकरे यह रामबाण नाम रस मंदाग्नि रूपी रावण संग्रहणी रूपी कुंभकर्ण और आमवात रूपी खरदूषण को नाश करताहै मिर्चके अनुपानकेसाथ इसका सेवन करने से जठराग्निदीप्तहोतीहै रुचि होतीहै और कफ श्वास खांसी छर्दि तथा कृमियों का नाश होताहै इति राम बाणरस ॥ ८१ ॥

अथ शङ्खवटी ॥

पलञ्चिञ्चाक्षारंपरिमितमिदंपञ्चलवणम् द्वयंसम्यक्पिष्टंभवतिलघुनिम्बूफलरसैः॥ त

तःपिष्टेतस्मिन्पलपरिमितंशङ्खशकलम् क्षिपेद्वारान्सप्तद्रवमिहचतेनैवविधिना ॥ प लप्रमाणंकटुकत्रयञ्चपलार्द्धमानंवचहिंगुभागः । विषपलंद्वादशभागयुक्तंतावद्रसोगन्ध कएवचोक्तः ॥ वदरास्थिप्रमाणेनवटीमेतस्यकारयेत् । भक्षयेत्सेवयासाम्यात्सर्वाजी र्णप्रशान्तये ॥ सर्वोदरेषुशूलेषुविसूच्यांविविधेषुच । अग्निमान्द्येषुगुल्मेषुसदाशङ्खव टीहिता ॥ इतिशङ्खवटीरसः । रसरत्नप्रदीपे ॥ ८२ ॥

इमलीकाखार १ पल और पांचोंनोन एक २ पल इनको कागदी नींबूके रसमें खूब पीसे फिर १ पल शंखको सातवार तक्रादिक सात द्रवोंमें पहले कहीहुई विधिसे डालकर शुद्धकरके मिलावे इसके उपरान्त त्रिकटु १पल वच तथा हींग आधेपल विष पारा तथा गन्धक आधेपल इनसव औषधियोंको एकसाथ पीसकर बेरकी गुठलीके समान गोली बनावे फिर इसको संपूर्ण अजीर्णोंकी शान्तिके लिये खाय इसके द्वारा संपूर्ण उदर शूल विसूचिका अनेक प्रकारकी मन्दाग्नि और वायगोलेका नाश होताहै इति शंखवटी ॥ ८२ ॥

स्नुह्यर्कचिञ्चापामार्गरम्भातिलपलाशजान् । लवणानाददीतैषांप्रत्येकंकर्षमात्रया॥ लवणानिपृथक्पञ्चग्राह्याणिपलमात्रया । स्वर्ज्जिकाचयवक्षारष्टङ्कनंत्रितयंपलम् ॥ सर्वं त्रयोदशपलंसूक्ष्मंचूर्णंविधायच । निम्बूफलरसेप्रस्थसम्मितेतत्परिक्षिपेत् । तत्रशङ्ख स्यशकलंपलंवह्नौप्रताप्यतु । वाराञ्चिर्वापयेत्सप्तसर्वंद्रवतितद्यथा । नागरंत्रिपलंग्रा ह्यंमरिचन्तुपलद्वयम् । पिप्पलीपलमानास्यात्पलार्द्धंभृष्टहिंगुतः ॥ ग्रन्थिकंचित्रकञ्चापि जवानीजीरकंतथा । जातीफलंलवङ्गञ्चपृथक्कर्षद्वयोन्मितम् ॥ रसोगन्धोविषञ्चापिटङ्कण ञ्चमनःशिला । एतानिकर्षमात्राणिसर्वंसञ्चूर्ण्यमिश्रयेत् ॥ सरावार्द्धेणचुक्रेणवटिकांतस्य कारयेत् । माषप्रमाणसद्वैद्यैर्बृहच्छङ्खवटीस्मृता ॥ सर्वाजीर्णप्रशमनीसर्वशूलनिवारि णी । विसूच्यलसकादीनांसद्योभवतिनाशिनी । इतिबृहत्शङ्खवटीअजीर्णे ॥ ८३ ॥

थूहर आक इमली लटजीरा केला तिल तथा ढाक इनसबके क्षार एक १ तोले सेंधानोन१तो० पांचोंनोन एक१पल सज्जी जवाखार तथा सुहागा दो२ पल इनसब १३ पल औषधियोंको महीन चूर्ण करके एकप्रस्थ नींबूके रसमें छोड़े फिर एकपल शंखको सातवार अग्निमें तपा २ कर उस में बुझावे जिससे कि शंखगल जाय और सोंठ ३ पल मिर्च २ पल पीपल १ पल भुनीहींग आधापल पीपलामूल चीता अजवाइन जीरा जायफल तथा लौंग दो २ तोले पारा गन्धक विष सुहागातथा मैनसिल एक १ तो० इनसब औषधियोंको महीन पीसकर उसमें मिलावे फिर १६ तोले चूक मिला कर माशे २ भरकी गोली बनावे इसके सेवनसेसंपूर्ण अजीर्ण और शूल तथा विसूचिका और अल सक आदि रोगोंका नाश होताहै इति बृहच्छंखवटी ॥ ८३ ॥

टङ्कणकणामृतानांसहिंगुलानांसमंभागम् । मरिचस्यभागयुगलंनिम्बूनीरैर्वटीका र्य्या ॥ वटिकांकलायसदृशामेकांद्वेवासमश्नीयात् । सत्यमजीर्णंशान्त्यैवह्निर्टङ्कोकफध्व स्त्यै ॥ इतिअजीर्णकण्टकोरसः ॥ ८४ ॥

सुहागा पीपल विष तथा सिंगरफ एक २ भाग और मिर्च २ भाग इन सब औषधियोंको नींबूके

रसमें पीसकर मटरके समान गोली वनावे फिर एक अथवा दोगोली खानेसे अजीर्ण तथा कफका नाश होताहै और अग्नि दीप्त होतीहै इति अजीर्ण कंटक रस ॥ ८४ ॥

जलपीतमपामार्गंशूलंहन्याद्विसूचिकाम्।सतैलंकारवेल्यम्बुनाशयेद्विविसूचिकाम्॥ वालमूलस्यतुक्काथःपिप्पलीचूर्णसंयुतः। विसूचीनाशनःश्रेष्ठःजठराग्निविवर्द्धनः ८५॥

लटजीरेके काढ़ेको पीनेसे शूल तथा विसूचिकाका नाशहोताहै करेलेके रसमें तेल डालकर पीनेसे विसूचिकाका नाश होताहै कच्ची मूलीके काढ़ेमें पीपलका चूर्ण छोड़कर पीनेसे विसूचिकाका नाश और अग्निकी वृद्धिहोतीहै ॥ ८५ ॥

विल्वनागरनिक्काथोहन्याच्छर्दिविसूचिकाम् । विल्वनागरकैटर्य्यकाथस्तदधिकोगुणैः ॥ कैटर्य्यंकट्फलः ॥ ८६ ॥

वेल और सोंठके काढ़ेसे छर्दि तथा विसूचिकाका नाशहोताहै और वेल सोंठ तथा कायफलका काढ़ा इस्सेभी अधिक गुणकारी है ॥ ८६ ॥

व्योपंकरञ्जस्यफलंहरिद्रेरसंसमावाप्यचमातुलुंग्याः। छायाविशुष्कावटिकाकृतासा हन्याद्विसूचींनयनाञ्जनेन ॥ अनुभतमिदम्। अपामार्गस्यपत्राणिमरिचानिसमानिच। अश्वस्यलालयापिष्टाञ्जनाद्धन्तिविसूचिकाम् ॥ ८७ ॥

त्रिकटु करंजुआ हल्दी दारुहल्दी और नींबूकारस इन सम्पूर्ण औषधियोंको मिलाकर छायामें सुखाकर गोली बांधे इस गोलीको घिसकर अंजन लगानेसे विसूचिकाका नाशहोताहै यह अनुभव किया हुआहै लटजीरेकी पत्ती और मिर्च समभाग लेकर घोड़ेकी लारमें पीसकर अंजन लगानेसे विसूचिका का नाश होताहै ॥ ८७ ॥

विसूच्यामतिवृद्धायांतक्रंदधिसमंजलम्। नारिकेराम्बुपेयंवाप्राणत्राणाययोजयेत् ॥ त्वक्पत्रकैरएडुकशिग्रुकुष्ठैरम्लप्रपिष्टैःसवचाशताह्वैः । उद्वर्त्तनंखल्लिविसूचिकाघ्नंतैलंविपक्वञ्चतदर्थकारि ॥ कुष्ठसैन्धवयोःकल्कंचुक्रंतैलेतुसाधितम् । विसूच्यांमर्द्दनंतेनखल्लीशूलनिवारणम् ॥ पिपासायांतथोत्क्लेशेलवङ्गस्याम्बुशस्यते । जातीफलस्यवापीतंभूतंभद्रघनस्यवा ॥ ८८ ॥

विसूचिकाके वहुत वढ़जानेपर प्राणोंकी रक्षाके लिये मट्ठा समभाग जल मिलाहुआ दहीअथवा नारियलका जल पीना चाहिये दालचीनी तेजपात रासना अगर सहिंजन कूट वच और सौंफ इन सबको कांजीमें पीसकर उवटन लगानेसे वांयटे तथा विसूचिका का नाश होता है और इन्हीं औषधियों के द्वारा तेलको पकाकर मर्दन करनेसे वांयटे तथा विसूचिका का नाश होता है कूट तथा सेंधे नोनका कल्क और चूक इनको डाल तेलको पकाकर मर्दन करने से विसूचिकावाले के वॉयटे तथा शूल का नाश होताहै विसूचिका में तृषा तथा उत्क्लेश के होनेपर लौंग जायफल अथवा नागरमोथे का क्वाथ पिलाना चाहिये ॥ ८८ ॥ अथ उत्क्लेशस्यलक्षणम्

उत्क्लिश्यान्नंचनिर्गच्छेत्प्रसेकष्ठीवनेरितम् । हृदयंपीड्यतंचास्यतमुत्क्लेशंविनिर्दिशेदिति ॥ ८९ ॥

उत्क्लेशका लक्षण ॥

उनकाई आवे परन्तु अन्न न गिरे और प्रसेक (मुखसे पानी छूटना) धुकधुकी तथा हृदय में पीडाहोय उसको उत्क्लेश कहतेहैं ॥ ८९ ॥

सरुग्वानद्धमुदरमम्लैःपिष्टैःप्रलेपयेत् । दारुहैमवतीकुष्ठंशताह्वाहिंगुसैन्धवैः ॥ हैमवतीश्वेतवच । इतिदारुपट्कम् ॥ ९० ॥

पीड़ा सहित उदरके फूलने पर देवदारु श्वेत वच कूट सौंफ हींग और सेंधानोन इनसबको कांजीमें पीसकर लेपकरे इति दारुपट्क ॥ ९० ॥

तक्रेणयुक्तंयवचूर्णमुष्णंसक्षारमार्तिंजठरेनिहन्यात् । स्वेदोघटैर्वाप्यथवाष्पपूर्णैरुष्णैस्तथान्यैरपिपिण्डतापैः ॥ विलम्बिकालसकयोरयमेवक्रियाक्रमः । अतएवतयोरुक्तंपृथक्नहिचिकित्सितम् ॥ ९१ ॥

जौके चूर्ण और जवाखारको मट्ठे में मिलाकर गरमगरम पेटमें लेप करनेसे पीड़ाका नाश होता है भाफसे भरे हुए घड़ोंके द्वारा स्वेद लेनेसे अथवा अन्य उष्ण गोलेआदि के सेकनेसे पीड़ा का नाश होताहै विलम्बिका और अलसक कीभी चिकित्सा इसी क्रमसे होती है इसी हेतुसे उनकी चिकित्सा पृथक् नहीं लिखीगई ॥ ९१ ॥

तंभस्मकंगुरुस्निग्धसान्द्रमन्दहिमस्थिरैः।अन्नपानैर्नयेच्छान्तिपित्तघ्नैश्चविरेचनैः ॥ अत्युद्धताग्निशान्त्येमाहिषदधिदुग्धसर्प्पींषि । संसेवेतयवागूंसमपिष्टेपयसिसर्प्पिषासिद्धाम् ॥ असकृत्पित्तहरणंपायसप्रतिभोजनम् । श्यामात्रिवृत्त्विपक्वञ्चपयोदद्याद्विरेचनम् ॥ यत्किञ्चिन्मधुरमेध्यंश्लेष्मलंगुरुभोजनम् । सर्व्वंतदत्यग्निहितंभुक्त्वाप्रस्वपनंदिवा ॥ सितन्तण्डुलसितकमलंछागक्षीरेणपायसंसिद्धम् । भुक्त्वाचतेनपुरुषोदशदिवसात्तुच्छभोजनोभवति ॥ ९२ ॥

भारी स्निग्ध कठोर मन्द शीतल तथा स्थिर गुण युक्त अन्नपान के द्वारा और पित्त नाशक वस्तु तथा विरेचनके द्वारा भस्मक की शान्त करे बहुत बढ़ी हुई अग्नि को शान्त करने के लिये भैंसका दूध दही तथा घी सेवन करे और चावलोंका चूर्ण तथा दूध समभाग लेकर घीमें पाक कीगई यवागू का सेवन करे सदैव पित्तनाशक खीरका भोजन करे प्रियंगु और निसोत के द्वारा पाककिये हुए दूधसे विरेचनकरवावे मधुर मेधा को हित कफ कारी और भारी भोजन तीक्ष्णाग्नि वालोंको हितहै और भोजन के उपरान्त दिनमें सोना भी हितहै श्वेत चावल और श्वेत कमलके साथ बकरीके दूधकी खीर करके खानेसे दशदिनमें भूख कमहोजाती है ॥ ९२ ॥

अथ विशिष्टद्रव्याजीर्णेविशिष्टंपाचनद्रव्यमाह ॥

अलंपनसपाकायफलंकदलसम्भवम् । कदलस्यतुपाकायघृतंरपिघृतंहितम् ॥ घृतस्यपरिपाकायजम्बीरस्यरसोहितः ॥ नारिकेरफलंतालबीजयोःपाचकंसपादितण्डुलत्रिदुः । क्षीरमेवसहकारपाचनंचास्मज्जनिहरीतकीहिता ॥ मधूकमालूरनृपादनानांपरूषखर्ज्जूरकपित्थकानाम् । पाकायपेयंपिचुमन्दबीजंघृतेऽपितक्रेऽपितदेवपथ्यम् ॥ खर्ज्जूरश्च

गाटकयोःप्रशस्तंविश्वौषधंकुत्रचभद्रमुस्तम् । यज्ञांगवोधिद्रुफलेषुशस्तंक्षौद्रतथापर्य्युषितंप्रपीतं ॥ तण्डुलेपुचपयःपयःस्वथोदीपकन्तुचिपिटेकणायुतः । पष्टिकादधिजलेन जीर्यतेकर्कटीचसुमनेषुजीर्य्यति ॥ सुमनेषुगोधूमेषुजीर्य्यति ॥ गोधूममापहरिमन्थसतीन मुद्गपाकोभवेज्झटितिमातुलपुत्रकेण।मातुलपुत्रकंधत्तूरफलम्।कंगुश्यामा।खर्ज्जूरिकाविषकशेरुशितासुशस्तंशृंगाटकेमधुफलेष्वपिभद्रमुस्तम् ॥ कंगुश्यामाकनीवाराकुलत्थश्चाविलम्बितम् । दध्नोजलेनजीर्यन्तिवैदलन्काञ्जिकेनतु ॥ पिष्टान्नंशीतलंवारिकृशरासैन्धवंपचेत् । माषेण्डरीनिम्बुफलंपायसंमुद्गयूपकः ॥ वटोर्वेसवाराल्लवंगंनफेनीसमंपर्य्यटःशिग्रुवीजेनयाति । कणामूलतोलड्डकापूपसट्टादिपाकोभवेच्छष्कलीमण्डयाश्च ॥ वेसवारोवगसइतिलोके । तद्यथास्नेहोनिशाहिंगुलवङ्गकैलाधान्याकजीराद्रकनागराणि ॥ अम्लोषणंसैन्धवचूर्णमन्नेयथोचितंसंस्कृतयेप्रणीतम् । इतिसट्टासट्टकपानविशेषः।मण्डमाण्डेतिलोके ॥ ६३ ॥ द्रव्यविशेषके अजीर्ण में पाचन द्रव्य विशेष ॥

कटहलके परिपाकके लिये केला केलेके परिपाकके लिये घी घीके परिपाकके लिये जँभीरी नींबू का रस नारियल तथा ताड़के बीजके परिपाकके लिये चावल आमके परिपाकके लिये दूध और चिरोंजीके परिपाकके लिये हड़ हितकारीहै महुआ बेल चिरोंजी फालसा खजूर घी और मट्ठा इनके अजीर्णमें निंबोलीका पेय बनाकर पीना चाहिये खजूर और सिंघाड़ेके अजीर्णमें सोंठ और नागरमोथेका सेवन करना चाहिये गूलर पीपल और पकरियाके फलोंके अजीर्णमें सोंठ अथवा नागरमोथेका वासी काढ़ा पीना चाहिये चावलोंके अजीर्ण में दूध दूधके अजीर्णमें अजवाइन और चिड़वोंके अजीर्णमें पीपल और अजवाइनका सेवन करना चाहिये सांठीके चावलोंके अजीर्ण में दहीका तोड़ पीना चाहिये और ककड़ीका अजीर्ण गेहूंसे मिटजाताहै गेहूं उर्द चना मटर और मूंग इनके अजीर्ण में धतूरे के फल सेवन करने चाहिये काकुन सामा खजूर कमल की डंडी कसेरू शक्कर सिंघाड़ा और महुआ इनके अजीर्ण में नागरमोथेका सेवन करे काकुन सामा तिन्नी और कुलथी इनके अजीर्ण में दहीका तोड़ हितहै दालवाली चीजें कांजी से पचतीहैं पीठीकी चीजें शीतल जल से और खिचड़ी सेंधानोन से पचतीहै नींबू से इमरती और मूंग के यूपसे खार पचती है नोनसे वेसवार (तैलादिक स्नेह हल्दी हींग लौंग इलायची धनियां जीरा अदरक सोंठ खटाई मिर्च और सेंधानोन यह सब वस्तु यथोचित अन्नके सुधारने के लिये छोड़नी चाहिये इसको वेसवार कहतेहैं) पचताहै लौंग से फेनी पचतीहै पापड़ सहिंजनके वीज से पचताहै लड्डू मालपुआ और सट्टक(पन्नाविशेष) आदि पीपलामूल से पचतेहैं पूरी माड़से पचती हैं ॥ ६३ ॥

किमत्रचित्रंवहुमत्स्यमांसभोजीसुखीकाञ्जिकपानतःस्यात् । इत्यद्भुतंकेवलवह्निपक्वोमांसेनमत्स्यःपरिपाकमेति ॥ आममाम्रफलंमत्स्यतद्वीजंपिशितेहितम् । कूर्म्ममांसंयवक्षाराच्छीघ्रंपाकमुपैतिहि ॥कपोतपारावतनीलकण्ठकापिञ्जलानांपिशितानिभुक्त्वा । काशस्यमूलंपरिपिष्यपीतंसुखीभवेन्नावहुशोहिदृष्टम् ॥ कपोतोधवलःपाण्डुः ॥ मांसानिसर्वाण्यपियान्तिपाकक्षारेणसद्यस्तिलनालजेन ॥ ६४ ॥

मछली और मांस को वहुत साखाकर कांजी पीनेसे पचजाताहै यहकुछ आश्चर्य्य नहींहै परन्तु केवल अग्निमें पकाई हुई मछली मांसके साथ खाने से पचजातीहै यह आश्चर्य्यहै कच्चे आमसे मछली और आमकी विजली से मांस पचता है कछुएकामांस जवाखार से वहुत जल्द पचता है श्वेत तथा पांडुरंगका कवूतर नीलकंठ और सफेद तीतर इनके मांसको खाकर कांसकी जड़को पीसकर पीनेसे परिपाक होता है यह वहुत वार देखागयाहैतिलकी डंडीके क्षारसे संपूर्ण मांसपचते हैं॥६१॥

चञ्चूकसिद्धार्थकवास्तुकानांगायत्रिसारःकथितेनपाकः॥ चञ्चूकचेचूइतिलोके। गायत्रीखदिरः। पालङ्किकाकेवुककारवेल्लीवार्त्ताकुवंशांकुरमूलकानाम्। उपोतिकालावु पटोलकानांसिद्धार्थकोमेघरवश्चपक्ता॥ मेघरवःचौराइतिलोके। विपच्यतेशूरणकंगुडे नतथालुकंतण्डुलधावनेन। पिण्डालुकंजीर्य्यतिकोरदूपात्कशेरुपाकःकिलनागरेण॥ लवणस्तण्डुलतैयात्सर्पिर्जम्बीरकाद्यम्लात्। मरिचादपितच्छीघ्रंपाकंयात्येवकाञ्जिकात्तैलम्॥ ६५॥

चेंचू सरसों और वथुयेकाशाक खैरसारसे पचता है पालक केऊ करेला वैंगन वांसके अंकुर मूली पोय लौकी और परवल यह सव श्वेत सरसों और चौराई से पचते हैं जमींकंद गुड़ से और आलू चावल के धोवन से पचता है गोल आलू कोदोंसे और कसेरू सोंठसे पचताहै नोन चावलके पानीसे घी जंभीरी नींबू आदिकी खटाईसे अथवा मिर्चसे और तेलकांजी से पचताहै॥ ६५॥

क्षीरंजीर्य्यतितक्रेणतद्व्यंकोष्णमण्डकात्। माहिषंमानिमन्थेनशङ्खचूर्णेनतद्दधि॥ मण्डकःमाड़इतिलोके। रसालंजीर्य्यतिव्योपात्खण्डनागरभक्षणात्॥ सितानागरमुस्तेनतथेक्षुश्चाद्रिकारसात्॥ जरामिरागैरिकचन्दनाभ्यामभ्येतिशीघ्रंमुनिभिःप्रदिष्टं॥ उष्णेनशीतंशिशिरेणचोष्णंजीर्णो भवेत्क्षारगणस्तथाम्लैः॥ इरामदिरातप्ततप्तंहेमवातारमग्नोतोयेक्षिप्तंसप्तकृत्वस्तदम्भः। पीत्वाजीर्णन्तोयजातंनिहन्यात्तत्रक्षौद्रंभद्रमुस्तंविशेषात्॥ तत्रतोयाजीर्णे। इतिजठराग्निविकारः॥ ९६॥

दूध मठेसे गौका दूध कुछ गरम मांड़से भैंसका दूध सेंधेनोन से और भैंसका दहीशंखके चूर्ण से पचताहै पौंड़ा त्रिकटुसे खांड़ सोंठसे चीनी नागरमोथे से और ईख अदरक के रस से पचती है पुरानी मद्य गेरू तथा चन्दनसे शीतल वस्तु उष्ण वस्तुसे उष्ण वस्तु शीतल वस्तुसे और संपूर्ण क्षारखटाई से पचतेहैं जलपीने से अजीर्ण होनेमें सोने अथवा चांदीको आगमें तपातपा कर सात वार पानीमें वुझावे और उस पानीको पिये उससे अजीर्ण दूर होता है नागरमोथा औरसहत के द्वारा पानी का अजीर्ण नष्ट होताहै इतिजठराग्नि विकार॥ ९६॥

अथ कृम्यधिकारः। अथ कृमीनांभेदानाह॥

कृमयस्तुद्विधाप्रोक्तावाह्याभ्यन्तरभेदतः। तेपांनिदानान्याह। वहिर्म्मलकफासृग्विड्जन्मभेदाच्चतुर्विधाः॥ नामतोविंशतिविधावाह्यास्तत्रमलोद्भवाः॥ तत्रतेपुवाह्याःकृमय.मलोद्भवाः। त्वक्लग्नवहिर्मलस्वेदसम्भवाः तेपांरूपाण्याह। तिलप्रमाणसंस्थानवर्णाःकेशाम्वराश्रयाः। तिलानामिवपरिमाणानिवर्णायेपांतेवहुपादाश्चसूक्ष्माश्चयू

कालिख्याइचनामतः। द्विधातत्रयूकाबहुपादाकृष्णाकेशाश्रया। लिख्याःसूक्ष्माःश्वेताव स्त्राश्रयाः। तत्कर्त्तव्यविकारमाह। द्विधातेकोठपिटिकाकण्डुगण्डानप्रकुर्व्वते॥ ९७॥

कृमिरोगाधिकार कृमियोंके भेद॥

बाह्य और आभ्यन्तर प्रकार से कृमि दो प्रकार केहैं स्वेद कफ रक्त और मलसे वह उत्पन्न होते हैं इसलिये कारण भेदसे चार प्रकार के होते हैं और नाम भेद से बीस प्रकार के होतेहैं उनमेंसे मल अर्थात् स्वेद से उत्पन्न हुए कृमि बाह्य कहलातेहैं यह तिलके समान आकृति तथा वर्णवाले होतेहैं और बाल तथा वस्त्रों में रहते हैं इनमें से बहुत पैरवाले काले यूक (जुआं) नाम कृमि बालों में रहते हैं और सूक्ष्म श्वेत वर्ण वाले लिख्य (लीख) नामवाले कृमि वस्त्रों में रहते हैं यह दोनों प्रकारके कृमि चकत्ते फुंसी खुजली और फोड़ोंको उत्पन्न करते हैं॥ ९७॥

आभ्यन्तरकृमीनांविप्रकृष्टंनिदानमाह॥

अजीर्णभोजीमधुराम्लसेवीद्रवप्रियःपिष्टगुडोपभोक्तः। व्यायामवर्ज्जीचदिवाशयी चविरुद्धभोजीलभतेकृमींश्च॥ ९८॥

आभ्यन्तर कृमियों के दूरवाले कारण॥

अजीर्ण कारी वस्तु मधुर खट्टी तथा बहुत पतली वस्तु पीठी और गुड़के खाने से विरुद्ध भोजन से व्यायाम न करनेसे और दिनमें सोनेसे कृमि उत्पन्न होतेहैं॥ ९८॥

उत्पन्नकृमिलक्षणमाह॥

ज्वरोविवर्णताशूलंहृद्रोगःसदनंभ्रमः। भक्तद्वेषोऽतिसारश्चसञ्जातकृमिलक्षणम्॥ ९९॥

उत्पन्नहुए कृमियोंके लक्षण॥

आभ्यन्तर कृमियोंके उत्पन्न होनेपर ज्वर विवर्णता शूल हृदय के रोग शिथिलता भ्रम भोजनमें अरुचि और अतीसार यह लक्षण होतेहैं॥ ९९॥

अथ कफजकृमीणांविप्रकृष्टंनिदानमाह॥

मांसमाषगुडक्षीरदधिशुक्तैःकफोद्भवाःशुक्तंकालान्तरेणाम्लीभूतइक्षुरसविकारः॥ १००॥

कफके कृमियोंके दूर वाले कारण॥

मांस उर्द गुड़ दूध दही और सिरके के खाने से कफके कृमि उत्पन्न होते हैं॥ १००॥

कफजकृमीणांसम्प्राप्तिपूर्व्वकंलक्षणमाह॥

कफादामाशयेजाताःवृद्धाःसर्पन्तिसर्वतः। पृथुब्रध्ननिभाःकेचित्केचिद्गण्डुपदोपमाः॥ रूढ़धान्यांकुराकाराःतनुदीर्घास्तथाणवः। श्वेतास्ताम्रावभासाश्चनामतःसप्तधातुते॥ अन्त्रादाउदरावेष्टाहृदयादामहाकुहाः। चुरवोदर्भकुसुमाःसुगन्धास्तेचकुर्व्वते॥ हृल्लास मास्यश्रवणमविपाकमरोचकम्। मूर्च्छाच्छर्दिज्वरानाहकासक्षवथुपीनसान्॥ब्रध्नश्चर्म्म लतारूढ़ोऽङ्कुरितः। तनवःपरिणाहेनतथादीर्घास्तनुदीर्घाश्चुरवश्चुरमानः। तत्कर्त्तव्य विकाराहृल्लासादयः॥ १०१॥

कफके कृमियों के संप्राप्ति पूर्व्वक लक्षण ॥

कफसे आमाशयमें उत्पन्न हुए कृमि बढ़कर सब ओरको फैलतेहैं उनमें से कुछ स्थूल कुछ तस्में के समान कुछ केंचुए के समान कुछ उगे हुए नाजके अंकुरके समान और कुछ लंबे तथा कुछ पतले होतेहैं इनका वर्ण श्वेत अथवा तांबेकासा होताहै यह नामसे सात प्रकारके होते हैं जैसे अन्त्राद उदरावेष्टक हृदयाद महाकुह चुरु दर्भ कुसुम और सुगन्ध इनके द्वारा मतली मुखसे पानी छूटना भोजनका न पचना अरुचि मूर्च्छा छर्दि ज्वर अफरा कृशता छींक और पीनस यहसबरोग होतेहैं १०१॥

शोणितजकृमीणांविप्रकृष्टंनिदानमाह ॥

विरुद्धाजीर्णशाकाद्यैःशोणितोत्थाभवन्तिहि ॥ १०२ ॥

रुधिरके कृमियोंके दूरवाले कारण ॥

विपरीत भोजन और अजीर्ण कारी वस्तु तथा शाकादिक के खाने से रक्तज कृमि उत्पन्न होतेहैं१०२॥

अथ रक्तजकृमीणांसम्प्राप्तिपूर्वकलक्षणम् ॥

रक्तवाहिशिरास्थानारक्तजाजन्तवोऽणवः । अपादावृत्तताम्राश्चसौक्ष्म्यात्केचिददर्शनाः ॥ केशादालोमविध्वंसाःरोमद्वीपाउदुम्बराः । षट्तेकुष्ठैककर्म्माणःसहसौरसमातरः ॥ सौरसमातृभ्यांसहवर्त्ततइतिसहसौरसमातरः ॥ १०३ ॥

रक्तज कृमियों के संप्राप्ति पूर्व्वक लक्षण ॥

रुधिर के लेजाने वाली नाड़ियों में रक्तज कृमि उत्पन्न होतेहैं यह कृमि पैर रहित सूक्ष्म गोल और तांबेकेसे रंग वाले होतेहैं इनमेंसे कुछ सूक्ष्मता के कारण दिखाई नहींदेते यह नाम भेदसे छः प्रकारकेहैं जैसे केशाद रोम विध्वंस रोम द्वीप उडुम्बर सौरस और मातृ इन सबके द्वारा कुष्ठ रोग उत्पन्न होताहै ॥ १०३ ॥

पुरीषजानाहपुरीषजकृमीणांविप्रकृष्टन्निदानमाह ॥

पक्वाशयेपुरीषोत्थाजायन्तेऽधोविसर्पिणः।वृद्धास्तेस्युर्भवेयुश्चतेयदामाशयोन्मुखाः॥ तदास्योद्गारनिःश्वासविड्गन्धानुविधायिनः । पृथुवृत्ततनुस्थूलाश्यावपीतसितासिताः॥ तेपञ्चनाम्नाकृमयःककेरुकमकेरुकाः । सौसुरादाःसशूनाख्याःलेलिहाजनयन्तिच ॥ विड्भेदशूलविष्टम्भकार्श्यपारुष्यपाण्डुताः । रोमहर्षाग्निसदनगुदकण्डुर्विमार्ग्गगाः॥ वृद्धास्तेऽधोविसर्पिणःस्युःयदातेआमाशयोन्मुखाभवेयुरित्यन्वयः । तेविमार्ग्गगाःसन्तो विड्भेदादीन्जनयन्तिइत्यर्थः ॥ १०४ ॥

मलके कृमियों के दूरवाले कारण ॥

उर्द पीठी खटाई नोन गुड़ तथा शाकके खानेसे मलके कृमि उत्पन्न होतेहैं मलके कृमि पक्काशय में उत्पन्न होकर नीचेकी ओर जातेहैं यह बढ़कर जब आमाशय की ओर जातेहैं तब रोगी को डकार श्वास तथा मलमें दुर्गन्ध उत्पन्न होतीहै इनमें से कुछ स्थूल तथा गोल कुछ सूक्ष्म तथा स्थूल और धुमैले पीले श्वेत तथा काले वर्ण के होते हैं यह नामसे पांच प्रकारके होतेहैं जैसे ककेरुक मकेरुक सौसुराद सशून और लेलिह यह विपथगामी होकर मल भेद शूल विष्टंभ कृशता कठोरता पांडु वर्ण रोमांच मन्दाग्नि और गुदामें खुजली इन रोगों को उत्पन्न करते हैं ॥ १०५ ॥

अथक्रमीनांचिकित्सा ॥

विड्ङ्गव्योपसंयुक्तमन्नमण्डंपिवेन्नरः। दीपनंक्रमिनाशायजठराग्निविद्धये ॥ प्रत्यहं कटुकंतिक्तंभोजनंकफनाशनम्। क्रमीनांनाशनंरुच्यमग्निसन्दीपनंपरम् ॥ विड़ङ्गशृत पानीयंविड़ङ्गेनावधूलितम् । पीतंक्रमिहरंदृष्टंक्रमिजांश्चगदाञ्जयेत् ॥ लिह्याद्विडंग चूर्णंवामधुनाक्रमिनाशनम् । पलाशबीजस्यरसंपिवेन्माक्षिकसंयुतम्॥ पिवेत्तद्बीजक ल्कंवामधुनाक्रमिनाशनम् । कम्पिल्लचूर्णकर्षार्द्धंगुड़ेनसहभाक्षितम् ॥ पातयेत्तुक्रमीन् सर्व्वानुदरस्थान्नसंशयः । विड्ङ्गंकौटजंबीजंतथाबीजंपलाशजम् ॥ सञ्चूर्ण्यखादेत् खण्डेनक्रमीन्नाशयितुंनरः।निम्बपत्रसमुद्भूतंरसंक्षौद्रयुतंपिवेत् ॥ धत्तूरपत्रजंवापिक्रिमिनाशनमुत्तमम् ॥ १०५ ॥ कृमियों की चिकित्सा ॥

वायविडंग और त्रिकटु समेत मांड़ के पीनेसे कृमि नष्ट होतेहैं और अग्नि बढ़ती है प्रतिदिन कटु तथा तिक्त भोजन करनेसे कफ तथा कृमियों का नाश होताहै और रुचि तथा अग्नि की वृद्धि होतीहै वायविडंग के द्वारा औटाये हुए जलमें वायविडंग काही चूर्ण छोड़कर पीने से कृमि और कृमियोंसे उत्पन्न होनेवाले रोगोंका नाश होताहै वायविड़ंगके चूर्णको सहतके साथ चाटनेसे कृमियों का नाश होताहै पलास के बीजोंके काढ़ेमें सहत डाल कर पीनेसे अथवा ढाकके बीजों को पीसकर सहत मिलाकर चाटने से कृमियोंका नाश होताहैं ६ मासे कबीले के चूर्णको गुड़के साथ खाने से निस्सन्देह पेटके सब कृमि गिरपड़ते हैं वायविडंग इन्द्रजौ तथा ढाकके बीज इन सबको पीसकर खांड के साथ खानेसे कृमिनष्ट होते हैं नींबकी अथवा धतूरे की पत्तीमें सहत डालकर पीने से कृमियों का नाश होता है ॥ १०५ ॥

रसेन्द्रेणसमायुक्तोरसोधत्तूरपत्रजः। ताम्बूलपत्रजोवापिलेपोयूकाविनाशनः ॥ धत्तूरपत्रकल्केनतद्रसेनैवपाचितम्। तैलमभ्यङ्गमात्रेणयूकानाशयतिक्षणात् ॥ १०६ ॥

धतूरे की पत्ती के अथवा पानके रसमें पारा मिलाकर लेप करने से जुओंका नाश होताहै धतूरेकी पत्तीके रस और कल्कसे पाक कियेगये तेलको मर्दन करनेसे जुआओंका नाश होताहै ॥१०६॥

कृमीणांविट्कफोत्थानामेतदुक्तंचिकित्सितम् । रक्तजानान्तुसंहारंकुर्य्यात्कुष्ठचिकित्सया ॥ क्षीराणिमांसानिघृतानिचापिदधीनिशाकानिचपर्णवन्ति । अम्लंचमिष्टञ्चरसंविशेषात्क्रमीन्जिघांसुःपरिवर्ज्जयेद्धि ॥ इतिक्रम्यधिकारः ॥ १०७ ॥

मल और कफ से उत्पन्न हुए कृमियों की यह चिकित्सा कहीगई और रक्तज कृमियोंका नाश कुष्ठ की चिकित्सा से करना चाहिये दूध मांस घी दही पत्रशाक खटाई और मिठाई यहसब कृमि रोगवाले को छोड़ देना चाहिये इति कृमि अधिकार ॥ १०७ ॥

अथ पाण्डुरोगकामलाहलीमकाधिकारः ॥

तत्रपाण्डुरोगस्यसंख्यापूर्व्वकंसन्निकृष्टनिदानमाह ॥

पाण्डुरोगाःस्मृतापञ्चवातपित्तकफैस्त्रयः। चतुर्थःसन्निपातेनपञ्चमोभक्षणान्मृदः॥ पञ्चमोभक्षणान्मृदइतिननुमृत्तिकापिदूषितदोषद्वारेणैवपाण्डुरोगंजनयतीति मृद्भक्षणजः

पाण्डुरोगोदोषजादभिन्नएवंकथंपञ्चमइति। उच्यते। अपरकारणकुपितावातादयोऽन्या नपिरोगान्कुर्वन्ति। मृत्तिकाभक्षणात्कुपितास्तुवातादयोविशेषतःपाण्डुरोगमेवजनय न्त्येवेतिविशेषचिकित्साविशेषाच्चपञ्चमःचरकेणोक्तः ॥ १०८ ॥

पांडु कामला और हलीमकरोगका अधिकार ॥

पांडुरोगके संख्यापूर्वक समीपी कारण ॥

पांडुरोग पांच प्रकारकाहै जैसे वातज पित्तज कफज सन्निपातज और मृत्तिकाके खानेसे अत्रयहै सन्देह होताहै कि मिट्टी खानेसे दूषित हुए दोष पांडुरोगको उत्पन्न करतेहैं इसलिये मिट्टी खानेसें हुआ पांडुरोगभी दोषजसे अलग नहींहै तो उसको अलग पांचवां क्यों गिनाया इसका उत्तर यहहै कि अन्य कारणोंके द्वारा कुपित वातादिक अन्य रोगोंकोभी उत्पन्न करतेहैं परन्तु मिट्टी खानेसें कुपित दोष पांडुरोगकोही उत्पन्न करतेहैं यह विशेषताहै और चिकित्साकी विशेषतासे चरकने इस को पांचवां कहाहै ॥ १०८ ॥

अथ विप्रकृष्टंनिदानपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥

व्यवायमम्लंलवणानिमद्यंमृदंदिवास्वप्नमतीवतीक्ष्णम्। निषेव्यमाणस्यविदूष्यरक्तं दोषास्त्वचंपाण्डुरतांनयन्ति ॥ तीक्ष्णंराजिकादिः ॥ १०९ ॥

पांडुरोगकी दूरवाले कारणों समेत संप्राप्ति ॥

मैथुन खटाई नोन मद्यपान मृत्तिकाभक्षण दिनमेंसोनाओर बहुततीखीराईआदि वस्तुओंका सेवन इनकारणोंसे कुपित दोष रुधिरको दूषित करके त्वचाको पांडुवर्ण करतेहैं ॥ १०९ ॥

अथ पूर्वरूपमाह ॥

त्वक्स्फोटनिष्ठीवनगात्रसादमृद्भक्षणप्रेक्षणकूटशोथाः। विण्मूत्रपीतत्वमथाविपाकोभ विष्यतस्तस्यपुरःसराणि ॥ प्रेक्षणकूटशोथइतिअक्षिगोलकशोथः ॥ ११० ॥

पांडुरोगका पूर्वरूप ॥

पांडुरोग होनेसे पहले त्वचाका कुछ फटना थुकथुकी अंगोंकी शिथिलता मृत्तिकाकाभक्षण नेत्रके पोटोंमें सूजन मल मूत्रकापीलापन और भोजनका परिपाक नहोना यह लक्षण होतेहैं ॥ ११० ॥

अथ वातिकस्यपाण्डुरोगस्यलक्षणमाह ॥

त्वङ्मूत्रनयनादीनांरूक्षकृष्णारुणामता। वातपाण्ड्वामयेकम्पस्तोदानाहभ्रमादयः॥ कृष्णारुणामतापाण्डुत्वंनातिक्रामति अतएवसुश्रुतेसर्व्वेषुचैतेषुअपिपाण्डुभावोयतो ऽधिकोअतःखलुपाण्डुरोगइति। भ्रमादयइत्यादिशब्दात्भेदशूलादयः॥ १११॥

वातज पांडुरोगके लक्षण ॥

वातज पांडुरोगमें त्वचा मूत्र तथा नेत्रादिकोंमें रूखापन कालापन तथा ललाई होतीहै औरकंप शरीरमें पीडा आनाह भ्रम तथा शूलादिक उत्पन्न होतेहैं कालापन और ललाई पांडु वर्ण को उल्लं-घन नहीं करती क्योंकि सुश्रुतने कहाहै कि सब प्रकारके पांडुरोगोंमें पांडुता अधिक होतीहै इसलिये इसको पांडुरोग कहतेहैं ॥ १११ ॥

अथ पैत्तिकस्यलक्षणमाह ॥

पीतत्वङ्नखविण्मूत्रोदाहतृष्णाज्वरान्वितः । भिन्नविट्कोऽतिपीताभःपित्तपाण्ड्वामयेनरः ॥ भिन्नविट्कःसद्रवमलः ॥ ११२ ॥

पित्तज पांडुरोग का लक्षण ॥

पित्त के पांडुरोगों में त्वचा नख मल तथा मूत्र में पीलापन दाह तृषा ज्वर मलभेद और बहुत पीलापन यह लक्षण होते हैं ॥ ११२ ॥

अथ श्लेष्मिकस्यलक्षणमाह ॥

कफप्रसेकःश्वयथुःतन्द्रालस्यातिगौरवैःपाण्डुरोगीकफात्शुक्लैस्त्वङ्मूत्रनयनाननैः॥ अत्रोपलक्षणेनतृतीया ॥ ११३ ॥

कफके पांडु रोग के लक्षण ॥

कफ के पांडुरोग में मुखसे कफ निकलना सूजन तन्द्रा आलस्य शरीर में बहुत भारीपन और त्वचा मूत्र नेत्र तथा मुखमें श्वेतता यह लक्षण होते हैं ॥ ११३ ॥

सान्निपातिकस्यलक्षणमाह ॥

सर्व्वान्नसेविनःसर्व्वेदुष्टादोषास्त्रिदोषजम् । त्रिदोषलिङ्गंकुर्व्वन्तिपाण्डुरोगंसुदुःसहम् ॥ ११४ ॥

सन्निपातज पांडुरोग के लक्षण ॥

पांडु रोगकारी सम्पूर्ण वस्तुओं के सेवन से दूषितहुए सम्पूर्ण दोष अत्यन्त दुस्सह सन्निपातज पांडु रोग को उत्पन्न करते हैं इसमें तीनों दोषों के लक्षण होते हैं ॥ ११४ ॥

अथमृज्जस्यसम्प्राप्तिमाह ॥

मृत्तिकादनशीलस्यकुप्यन्त्यन्यतमोमलः । कषायामारुतंपित्तंमूषरामधुराकफम् ॥ कोपयेन्मृद्रसादींश्चरौक्ष्याद्भुक्तंचरुक्षयेत् । पूरयत्यविपक्वैवस्रोतांसिनिरुणद्ध्यपि ॥ इन्द्रियाणांबलंहत्वातेजोवीर्य्यौजसीतथा । पाण्डुरोगंकरोत्याशुबलवर्णाग्निनाशनम् ॥ स्रोतांसिशिरामुखानि। तेजोदीप्तिः ॥ ओजःसर्व्वधातुरसः ॥ ११५ ॥

मिट्टी खानेसे हुए पांडुरोगकी संप्राप्ति ॥

मिट्टी खानेसे वात पित्त अथवा कफ कुपित होताहै अर्थात् कषैली मिट्टीसे वायु क्षारमिट्टीसे पित्त और मधुर मिट्टीसे कफ कुपित होता है मिट्टी रूखेपन से रसादिकोंको और भोजन कियेहुए पदार्थ को रूखा करती है और आप कच्चीही स्रोतोंको भरकेरोकदेतीहै और इन्द्रियोंके बल तेज वीर्य्य तथा ओजको नष्टकरके शीघ्रही बल वर्ण तथा अग्नि के नाश करने वाले पांडु रोगको उत्पन्न करती है ११५

अथमृज्जस्यलक्षणमाह ॥

मृद्भक्षणाद्भवेत्पाण्डुस्तन्द्रालस्यनिपीडितः।सकासश्वासशूलार्त्तःसदारुचिसमन्वितः॥ शूनाक्षिकूटगण्डभ्रूःशूनपान्नाभिमेहनः । कृमिकोष्ठोऽतिसार्य्येतमलंसासृक्कफान्वितम् ॥ कृमिकोष्ठाउदराभ्यन्तरस्थकृमिर्भवेदित्यनेनसम्बध्यते । अतिसार्य्येतमलमितिकर्म्मक र्तृतत्कर्म्मवत्मन्तव्यम् ॥ तस्मिन्कर्म्मण्यर्थेऽत्रयत्प्रत्ययः ॥ ११६ ॥

मिट्टी खाने से हुए पांडुरोग के लक्षण ॥

मिट्टी खानेसे हुए पांडुरोग में तन्द्रा आलस्य खांसी श्वास शूल तथा सदैव अरुचि होती है और उदरमें कृमि होते हैं आंखों के पोटे गाल भृकुटी पैर नाभि तथा लिंगमें सूजन होतीहै और कफ तथा रुधिर सहित दस्त आते हैं ॥ ११६

अथासाध्यस्यलक्षणमाह ॥

जरारोचकहृल्लासच्छर्दितृष्णाक्लमान्वितः । पाण्डुरोगीत्रिभिर्दोषैस्त्याज्यःक्षीणोहतेन्द्रियः ॥ पाण्डुरोगश्चिरोत्पन्नःखरीभूतोनसिद्ध्यति । कालप्रकर्षात्शूनाङ्गोयोवापीतानिपश्यति ॥ खरीभूतःअतिरूक्षितःसर्वधातुः । बद्धाल्पविट्सहरितंसकफंयोऽतिसार्य्यते ॥ दीनःश्वेदातिदिग्धाङ्गःच्छर्दिमूर्च्छातृपान्वितः । पाण्डुदन्तनखोयस्तुपाण्डुनेत्रश्चयोभवेत् ॥ पाण्डुसङ्घातदर्शीचपाण्डुरोगीविनश्यति । पाण्डुसङ्घातदर्शीपीतवर्णस्यराशिंपश्यति ॥ अन्तेषुशूनंपरिहीनमध्यंम्लानंतथान्तेषुचमध्यशूनम् । गुदेमुखेशेफसिमुष्कयोश्चशूनंप्रताम्यन्तमसंज्ञकल्पम् ॥ विवर्जयेत्पाण्डुकिनंयशोऽर्थीतथापिसारज्वरपीड़ितञ्च । अन्तेषुहस्तपादादिषु ॥ म्लानंक्षीणम् । प्रताम्यन्तम्ग्लानिंगच्छन्तम् ॥ असंज्ञकल्पंमृतसदृशम् ॥ ११७

असाध्य पांडुरोग के लक्षण ॥

ज्वर अरुचि मतली छर्दि तृषा तथा ग्लानि के होनेपर क्षीणता तथा इन्द्रियोंकी शक्ति के नष्टहोजानेपर और तीनों दोषों के होनेपर पांडुरोग असाध्य जानना चाहिये बहुत पुराने पांडुरोगमें धातुओं के अत्यन्त रूखे होजानेपर असाध्य जानना चाहिये थोड़े दिन से होनेवाले पांडुरोगमें जो सूजन उत्पन्न हो और रोगी को सम्पूर्ण वस्तु पीलीदीखें तो असाध्य जानना चाहिये जिसपांडु रोगवाले का हरा कफ सहित बंधा हुआ थोड़ा २ मल निकले वह असाध्य है जो पांडुरोगी बहुत दीन स्वेद के द्वारा लिपेहुए से शरीर वाला और छर्दि मूर्च्छा तथा तृषा से व्याकुल होय वह असाध्य है जिस पांडुरोग वालेके दांतनख तथानेत्रपीले होजायँ और सबपदार्थ पीलेदीखें वहअसाध्यहै जिसपांडुरोग वाले के हाथ पैरों में सूजन होय शरीर का मध्यभाग क्षीण होजाय अथवा हाथ पैर क्षीण होयँ और मध्य में सूजन होय वह असाध्य है जिस पांडु रोग वाले के मुख लिंग गुदा तथा अंडकोशों में सूजन होय और ग्लानि वेहोशी अतीसार तथा ज्वर होय वह असाध्य है ॥ ११७ ॥

अथपाण्डुरोगभेदस्यकामलायानिदानपूर्व्विकासम्प्राप्तिमाह ॥

पाण्डुरोगीतुयोऽत्यर्थंपित्तलानिनिषेवते । तस्यपित्तमसृङ्मांसंदग्ध्वारोगायकल्प्यते ॥ पित्तमूकर्तदग्ध्वासन्दूष्यरोगायकामलारूपाय । पाण्डुरोगिणएवातिशयितपित्तलसेवयाकामलाभवतिनायंनियमः ॥ किन्तुकामलास्वतन्त्रापिभवति । यथाराजयक्ष्माकासादुपेक्षिताद्भवतिनायंनियमः ॥ किन्तुराजयक्ष्मास्वतन्त्रोपिभवति । तद्वदेव ॥ ११८ ॥

पांडुरोग का भेद कामला रोगकी निदान पूर्व्वक संप्राप्ति ॥

जिस पांडु रोग वाले को बहुत पित्त कारी वस्तुओं के सेवनसे बढ़ाहुआ पित्तरुधिर तथा मांसको दूषित करता है उसको कामला रोग उत्पन्न होता है पांडु रोग वाले कोही पित्तकारी वस्तुओंके से-

वनसे कामला रोग होता है यह नियम नहीं है किन्तु कामला अपने आपभीस्वतन्त्र होता है जैसे खांसी की उपेक्षा करने से राजयक्ष्मा होता है यह नियम नहीं है किन्तु राजयक्ष्मा स्वतन्त्र भी होता है उसी प्रकार यहां भी जानना चाहिये ॥ ११८ ॥

कामलायालक्षणमाह ॥

हारिद्रनेत्रःसुभृशंहारिद्रत्वङ्नखाननः । पीतरक्तसकृन्मूत्रोभेकवर्णोहतेन्द्रियः ॥ दाहाविपाकदौर्बल्यसदनारुचिकर्षितः । हारिद्रंहरिद्रावर्णम् ॥ पीतरक्तशकृन्मूत्रः । पीतेरक्तेवासकृन्मूत्रेयस्यसः ॥ भेकवर्णःवृहद्भेकवर्णः ॥ ११९ ॥

कामला का लक्षण ॥

कामला में नेत्र त्वचा नख तथा मुखका हल्दी के समान अत्यन्त पीला होना मल मूत्र का पीत अथवा रक्त होना बड़े मेंढक के समान वर्ण होजाना इन्द्रियों की शक्ति का नाश दाह भोजन कानपचना दुर्बलता शिथिलता और अरुचि यह लक्षण होते हैं ॥ ११९ ॥

तस्याभेदमाह ॥

कामलाबहुपित्तैषाकोष्ठशाखाश्रयामता । एकाकोष्ठाश्रया । अपराशाखाश्रया ॥१२०॥

कामला के भेद ॥

बहुत पित्तवाला यह कामलारोग एक कोष्ठाश्रय और दूसरा शाखाश्रय होताहै ॥ १२० ॥

तत्रकोष्ठाश्रयांकामलामाह ॥

कालान्तरात्खरीभूताकृच्छ्रास्यात्कुम्भकामला ॥ १२१ ॥

कोष्ठाश्रय कामलाका वर्णन ॥

बहुत कालका पुराना कामलारोग रूक्ष होकर कुंभकामला नाम कहाजाताहै यह कठिनता से साध्यहै ॥ १२१ ॥

कुम्भकामलीनामारिष्टलक्षणमाह ॥

छर्द्यरोचकहृल्लासज्वरक्लमनिपीडितःनश्यतिश्वासकासार्त्तोविड्भेदीकुम्भकामली १२२

कुंभ कामलाका अरिष्ट ॥

कुंभ कामलारोगवालेको जो छर्दि अरुचि मतली ज्वरग्लानि श्वास खांसी और मल भेदहोयतो वह नहीं जीताहै ॥ १२२ ॥

अथोभयोरपिकामलयोऽरिष्टलक्षणमाह ॥

कृष्णपीतसकृन्मूत्रोभृशंशूनश्चमानवः । सरक्ताक्षिमुखच्छर्दिविण्मूत्रोयश्चताम्यति ॥ दाहारुचितृषानाहतन्द्रामोहसमन्वितःनष्टाग्निसंज्ञःक्षिप्रंहिकामलावान्विपद्यते १२३ ॥

दोनों कामलाओंके अरिष्ट ॥

जिस कामलावालेका मल मूत्र काला पीला अथवा लाल होय नेत्र मुख तथा वमन रक्त वर्ण होय और सूजन तथा मोहहोय वह असाध्यहै जिस कामलावालेको दाह अरुचि आनाह तन्द्रा मोह तथा मन्दाग्नि और बेहोशीहोय वह नहीं जीताहै ॥ १२३ ॥

अथपाण्डुरोगस्यैवभेदंहलीमकमाह ॥

यदातुपाण्डोर्वर्णःस्याद्धरितश्यावपीतकः । बलोत्साहक्षयस्तन्द्रामन्दाग्नित्वंमृदुज्व

रः ॥ स्त्रीष्वहर्षोऽङ्गमर्दश्चश्वासतृष्णारुचिभ्रमाः । हलीमकन्तदातस्यविद्यादनिलपित्ततः ॥ पाण्डोःपाण्डुरोगिणः ॥ १२४ ॥

पांडुरोगके भेद हलीमकका वर्णन ॥

जो पांडु रोगवालेका वर्ण हरा धुमेला तथा पीलाहोय बलतथा उत्साहका क्षयहोय और तन्द्रा मन्दाग्नि थोड़ाज्वर मैथुनमेंअनिच्छा शरीरमेंपीड़ा श्वास तृषा अरुचि तथा भ्रमहोयतो उसे हलीमक रोग जानना चाहिये यह वायु और पित्तसे उत्पन्न होताहै ॥ १२४ ॥

अथतस्यपाण्डुरोगचिकित्सामाह ॥

सप्तरात्रंगवांमूत्रेर्भावितञ्चायसोरजः । पाण्डुरोगप्रशान्त्यर्थ्यम्पयसाप्रपिबेन्नरः॥ गोमूत्रसिद्धंमण्डूरचूर्णसगुडमश्नतः । पाण्डुरोगक्षयंयातिपंक्तिशूलञ्चदारुणम् ॥ अयोमलंसुसंतप्तंभूयोगोमूत्रसाधितम् । मधुसर्पियुतंलीढ्वापाण्डुरोगीसुखीभवेत् ॥ १२५ ॥

पांडुरोगकी चिकित्सा ॥

लोहेकी भस्मको सातदिन गोमूत्रमें भावना देकर सेवन करनेसे पांडुरोगका नाश होता है गोमूत्र के द्वारा बना हुआ मंडूर गुड़के साथ खानेसे पांडु और भयंकर परिणाम शूलका नाश होताहै मंडूर को बारम्बार अग्निमें तपा तपा कर गोमूत्रमें बुझावे फिर इसके चूर्णको घी और सहत के साथ चाटनेसे पांडुरोगका नाश होताहै ॥ १२५ ॥

पुनर्नवात्रिवृत्त्र्योपंविडङ्गंदारुचित्रकम् । कुष्ठंहरिद्रात्रिफलादन्तीचव्यंकलिंगकम् ॥ कटुकापिप्पलीमूलंमुस्तंशृंगीचकारवी ॥ यवानीकट्फलंचेतिपृथक्पलमितंसमम् ॥ मेण्डूरंद्विगुणंचूर्णाद्गोमूत्रेऽष्टगुणेपचेत् । गुडेनवटिकांकृत्वातक्रेणालोड्यतांपिबेत् ॥ पुनर्नवादिमण्डूरवटकोऽश्विविनिर्म्मितः । पाण्डुरोगंनिहन्त्याशुकामलाञ्चहलीमकम् ॥ श्वासंकासञ्चयक्ष्माणंज्वरंशोथंतथोदरम् । शूलंप्लीहानमाध्मानमर्शांसिग्रहणीकृमीन् ॥ वातरक्तञ्चकुष्ठञ्चसेवनान्नाशयेद्ध्रुवम् । अत्रपुनर्नवादिमण्डूरम२४।प्रत्येकपल१।लोहकीट्चूर्णपल४८।गोमूत्रपल१९२।पुनर्नवादिमण्डूरः ॥ १२६ ॥

पुनर्नवा निसोत त्रिकटु वायविडंग देवदारु चीता कूट हल्दी दारुहल्दी त्रिफला दन्ती चव्य इन्द्रजव कुटकी पीपलामूल मोथा काकड़ासिंगी कालाजीरा अजवाइन और कायफल यहसब एक २ पल और इनसबके चूर्णका दूना अर्थात् ४८ पल मंडूर इनसबको १९२ पल गोमूत्र में पाककरके गुड़ डालकर बड़े बनावे फिर मट्ठेमें इस बड़ेको घोलकर पिये यह पुनर्नवादि मंडूर वटक अश्विनी कुमारने बनायाहै इसके द्वारा पांडुरोग कामला हलीमक श्वास खांसी यक्ष्मा ज्वर सूजन उदरशूल प्लीहा आध्मान बवासीर ग्रहणी कृमि बात रक्त औरकुष्ठका नाशहोता है इति पुनर्नवादि मंडूर१२६॥

त्र्यूषणंत्रिफलामुस्तंविडङ्गंचित्रकंतथा । एतानिनवभागानिनवभागाहतायसः ॥ एवमेकीकृतंचूर्णंनरोऽष्टादशरक्तिकम् । प्रलिह्यात्मधुसर्पिभ्यांपिबेत्तक्रेणवासह ॥ गोमूत्रेणपिबेद्वापिपाण्डुरोगंविनाशयेत् । शोथंहृद्रोगमुदरकृमिकुष्ठंभगन्दरम् ॥ नाशयेदग्निमान्द्यञ्चदुर्नामकमरोचकम् । आर्द्रकस्यरसेनापिलिह्यात्कफसमृद्धिमान् ॥ अत्र

नवायसलोहंनवरक्तिकापरिमितंभक्षणीयम्। यतःउक्तंरसप्रदीपे॥ गुञ्जामेकांसमारभ्य यावत्स्युर्नवरक्तिका। तावत्लोहंसमश्नीयात्यथादोषानलंनरः॥ एवंसतिप्रथमदिने त्र्यूषणादिसाहितंरक्तिकाद्वयमितंप्रतिदिनंरक्तिकाद्वयंद्वयंवर्द्धयेत्। यावत्त्र्यूषणादिसहि तादृशरक्तिकास्युः॥ ततस्ताःप्रतिदिनंखादेत्। इतिनवायसंचूर्णम्॥ १२७॥

त्रिकटु त्रिफला मोथा वायविडंग तथा चीता यहसब एक २ भाग और लोहेकी भस्म ६ भा० इनसब औषधियोंको एकमें मिलाकर घी और सहतके साथ १८ रत्तीचाटे अथवा मट्ठे या गोमूत्रके साथ पिये इस्से पांडु सूजन हृदयके रोग उदर कृमि कुष्ठ भगन्दर मन्दाग्नि ववासीर तथा अरुचिका नाशहोताहै जिसके कफ अधिकहोय वहअदरकके रसके साथ इसकोचाटे यहांलोहा६रत्ती भर खाना चाहिये क्योंकि रस प्रदीपमें कहागयाहै कि दोष और अग्निके अनुसार एकरत्तीसे लेकर ६ रत्तीतक लोहा खाना चाहिये इसीसे पहले दिन त्रिकटु आदि सहित लोहा दोरत्तीखाय फिर प्रतिदिन दो २ रत्ती बढ़ाकर १८ रत्ती तक होजानेपर प्रतिदिन इतना २ ही सेवन करेइ ति नवायस चूर्ण॥ १२७॥

अथकामलाचिकित्सा॥

त्रिफलायागुडूच्यावादार्व्यामरिचकस्यवा। प्रातर्माक्षिकसंयुक्तःशीतलःकामलापहः॥ अञ्जनेकामलार्त्तानांद्रोणपुष्पीरसोहितः। गुडूचीपत्रकल्कंवापिवेत्तक्रेणकामली॥ धात्री लोहरजोव्योषनिशाक्षौद्राज्यशर्कराः। लीढानिवारयत्याशुकामलामुद्धतामपि॥ कुम्भा ख्यकामलायांतुहितःकामलिकोविधिः। गोमूत्रेणपिवेत्कुम्भकामलावान्शिलाजतुम्॥ दग्ध्वाक्षकाष्ठैर्मलमायसन्तुगोमूत्रनिर्व्वापितमष्टवारान्। विचूर्णयंल्लीढंमधुनाचिरेणकु म्भाव्हयंपाण्डुगदंनिहन्ति॥ अपहरतिकामलार्त्तिनस्येनकुमारिकाजलंसद्यः॥ १२८॥

कामला की चिकित्सा॥

त्रिफला गिलोय दारुहल्दी अथवा नींव के शीतल काढ़े में सहत डालकर प्रातःकाल पीनेसे कामला का नाशहोता है गूमाके रसका अंजन लगाना कामला वालोंको हितकारी है गिलोय के पत्तोंको पीसकर मट्ठेके साथपीनेसे कामला का नाशहोता है आंवला लोहचूर्ण त्रिकटु हल्दी सहत घी और शक्कर इनसबको मिलाकर चाटने से बहुत बढ़ेहुए भी कामला रोगका नाशहोता है कुम्भ कामलामें भी कामला केही समान चिकित्सा करनी चाहिये शिलाजीत को गोमूत्र के साथ पीनेसे कुम्भ कामला का नाशहोता है॥ १२८॥

अथहलीकमचिकित्सा॥

मारितमायसञ्चूर्णमुस्ताचूर्णेनसंयुतम्। खदिरस्यकषायेणपिवेद्धन्तुंहलीमकम्॥ शितातिलावलायष्टीत्रिफलारजनीयुगैः। लोहंलिह्यात्समध्वाज्यंहलीमकनिवृत्तये १२९

हलीमककी चिकित्सा॥

लोहेकी भस्म और मोथे के चूर्णको कत्थे के काढ़ेके साथ पीनेसे हलीमक का नाशहोता है शक्कर तिल वरियारा मुलहठी त्रिफला हल्दी और दारुहल्दी के साथ लोहेको सहत और घी मिला कर चाटने से हलीमक का नाशहोता है॥ १२९॥

अमृतलतारसकल्कंप्रसाधितंतुरगविद्विषः सर्पिः । क्षीरंचतुर्गुणमेतद्धिनरेच्चहलीमकार्त्तेभ्यः ॥ अमृतलताद्यंघृतम् ॥ १३० ॥

गिलोय के रस और कल्क के द्वारा भैंसके घीको भैंस केचौगुने दूध के साथ पाककरके हलीमक रोगमें देना चाहिये इति अमृतलतादिघृत ॥ १३० ॥

मधुरैरन्नपानैस्तंवातपित्तहरैर्हरेत् ।कामलापाण्डुरोगोक्तांक्रियांचात्रोपयोजयेत् १३१

मधुर तथा वात पित्त नाशक अन्नपान के द्वारा और पांडु रोग तथा कामला में कहीहुई चिकित्सा के द्वारा हलीमक को दूरकरे ॥ १३१ ॥

अथसामान्यतःपाण्डुरोगकामलाहलीमकचिकित्सा ॥

फलत्रिकामृतावासातिक्ताभूनिम्बनिम्बजःक्वाथः। क्षौद्रयुतोऽयंहन्याद्धलीमकंपाण्डुकामलारोगम्॥ १३२ ॥

पांडु कामला और हलीमक की सामान्य चिकित्सा ॥

त्रिफला गिलोय बांसा कुटकी चिरायता और नींब इनके क्वाथ में सहत डालकर पीनेसे हलीमक पांडु और कामला का नाशहोता है ॥ १३२ ॥

त्र्यूषणंत्रिफलामुस्ताविडङ्गंचव्याचित्रकम् । दार्वीत्वङ्माक्षिकोधातुग्रन्थिकोदेवदारुच ॥ एषांद्विपलिकान्भागान्कृत्वाचूर्णपृथक्पृथक् । मण्डूरचूर्णंद्विगुणंशुद्धंचाञ्जनसन्निभम् ॥ मूत्रेचाष्टगुणेपक्त्वातस्मिन्तत्प्रक्षिपेन्नरः । उदुम्बरसमाकारान्वटकान्स्तान्यथाग्निच ॥ उपयुञ्जीततक्रेणजीर्णेसात्म्यञ्चभोजनम् । मण्डूरवटिकाह्येषाप्राणदाःपाण्डुरोगिणाम् ॥ कुष्ठानिजठरंशोथमुरुस्तम्भंकफामयान् । अर्शांसिकामलामेहंप्लीहानंशमयन्तिच ॥ त्र्यूषणादिमण्डूरवटिका ॥ १३३ ॥

त्रिकटु त्रिफला मोथा वाय विडंग चव्य चीता दारुहल्दी दालचीनी सोनामक्खी पीपलामूल औरदेवदारु इनसबको दो दोपल लेकर पृथक् २चूर्णकरे और इनसबके दूने अञ्जन के समान पिसे हुए मंडूर के चूर्णको अठगुने गोमूत्र में पाककरके ऊपर कहेहुए चूर्णको गेरे फिर गूलर के समान बड़े बनाकर मट्ठेके साथ अपनी अग्नि के अनुसार सेवनकरे और पचजानेपर सात्म्य भोजन करे यह पांडुरोग वालोंको प्राणदायक है और कुष्ठ उदर सूजन जंघाओं का जकड़ना कफरोग बवासीर कामला प्रमेह तथा प्लीहा इनसबको नाशकरे है इति त्र्यूषणादि मंडूर वटिका ॥ १३३ ॥

किराततिक्तासुरदारुदार्व्वीमुस्तागुडूचीकटुकापटोलम् ।दुरालभापर्पटकंसनिम्बंकटुत्रिकंवह्निफलत्रिकञ्च ॥ फलंविडङ्गस्यसमांशिकानिसर्व्वैःसमंचूर्णमथायसश्च। सर्पिर्मधुभ्यांवटिकाविधेयातक्रानुपानात्भिषजाप्रयोज्या ॥ निहन्तिपाण्डुञ्चहलीमकञ्चशोथंप्रमेहंग्रहणीरुजञ्च। श्वासञ्चकासञ्चसरक्तपित्तमर्शांस्यथोवाग्ग्रहमामवातम्॥व्रणाञ्चगुल्मान्कफविद्रधिञ्चश्वित्रञ्चकुष्ठञ्चततःप्रयोगात्। इत्यष्टादशांगलोहम् १३४॥

चिरायता देवदारु दारुहल्दी मोथा गिलोयकुटकी पर्वल जवासा पित्तपापड़ा नींब त्रिकटु चीता त्रिफलातथा वायविडंग यहसब समभाग और इन सबकी बराबर लोहेका चूर्ण मिलाकर घी तथा

सहत के साथ मोदक बनावे फिर मट्ठेके अनुपानसे सेवनकरे इस्से पांडु हलीमक सूजन प्रमेह ग्रहणी श्वास खांसी रक्त पित्त बवासीर वचनका रुकजाना आमवात घाव वायगोला कफ विद्रधि श्वित्र (श्वेतकुष्ठ) और कुष्ठका नाश होताहै इति अष्टादशांग लोह ॥ १३४ ॥

यवगोधूमशाल्यन्नैरसैर्जाङ्गलजैर्हितैः । मुद्गाढकीमसूराद्यैरेषुभोजनमिष्यते ॥ एषु पाण्डुरोगकामलाहलीमकेषु १३५ ॥ इतिपाण्डुरोगकामलाहलीमकाधिकारः॥

पांडु कामला और हलीमकरोगमें जो गेहूं शालिधानों केचावलोंकाभात जंगलीजीवोंके मांसकारस मूंग अरहड औरमसूरआदिक भोजनकेलियेदनेचाहिये १३५इति पांडुकामलाहलीमक रोगाधिकारः ॥

अथरक्तपित्ताधिकारः। तत्ररक्तपित्तस्यनिदानपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥

घर्म्मव्यायामशोकाध्वव्यवायैरतिसेवितैः । तीक्ष्णोष्णक्षारलवणैरम्लैःकटुभिरेवच॥ पित्तंविदग्धंस्वगुणैर्विदहत्याशुशोणितम् । तीक्ष्णंमरिचादि ॥ उष्णमग्नितापादि।क्षारो यवक्षारादिः । विदग्धंदूषितम्स्वगुणैः स्वकारणैः । गुणैस्तीक्ष्णादिभिः । गुणैरितिबहुत्वे नतीक्ष्णाम्ललवणकटूष्णघर्म्मादयोगृह्यन्तेविदहतिदूषयति ॥ १३६ ॥

रक्त पित्तका अधिकार ॥ रक्त पित्तकी निदान पूर्वकसंप्राप्ति ॥

धूप व्यायाम शोक मार्ग तथा मैथुनके अत्यन्त सेवनसे और मिर्चादि तीक्ष्ण जवाखारादिक्षार अग्नि संतापादि उष्णता नोन खटाई तथा कटुवस्तुओंके सेवनसे दूषितहुआ पित्त तीक्ष्णादिअपने गुणोंसे शीघ्रही रुधिरको दूषित करताहै ॥ १३६ ॥

अथ रक्तपित्तस्यसामान्यलक्षणमाह ॥

ततःप्रवर्त्ततेरक्तमूर्द्ध्वञ्चाधोद्विधापिवा । अत्ररक्तमित्युपलक्षणम् । तेनसंसृष्टंपित्तञ्च । अतएवरक्तञ्चपित्तञ्चरक्तपित्तमितिद्वन्द्वइतिसुश्रुतः । रक्तञ्चतत्पित्तंचेतिरक्तपित्तंरागप्राप्तं पित्तरक्तमित्युच्यतेरक्तपित्तंकर्म्मधारयश्च । रक्तपित्तमनीषिभिरितिउभयत्रापिनदोषःका रणत्रयात्कारणत्रयमाह । संयोगात्दूषणात्तत्तुसामान्यात्गन्धवर्णयोःरक्तस्यापिपित्त माख्यातं । मार्गानाह । ऊर्ध्वंनासाक्षिकर्णास्यैर्मेढ्रयोनिगुदैरधः । कुपितंरोमकूपैश्चसम. स्तैस्तत्प्रवर्त्तते । कुपितंपित्तम् ॥ १३७ ॥

रक्त पित्तका सामान्य लक्षण ॥

ऊपर कहेहुये कारणोंसे कुपितहुआ रुधिर (यहाँ रुधिर उपलक्षण मात्रहै इस्से पित्तभी उसके साथ जानना चाहिये) ऊपरसे नीचेसे अथवा दोनों मार्गोंसे निकलताहै उनमें से ऊपर नासिका नेत्रकान तथा मुखके द्वारा और नीचे लिंग योनि तथा गुदाकेद्वारा कुपित हुआ रक्त पित्त निकलताहै और संपूर्ण रोम कूपोंसे भी रक्त पित्त निकलता है ॥ १६७ ॥

पूर्व्वरूपमाह ॥

सदनंशीतकामित्वं कण्ठधूमायनंवमिः । लोहगन्धश्चनिश्वासो भवत्यस्मिन्भवि ष्यति ॥ १३८ ॥

रक्त पित्त का पूर्व्व रूप ॥

शिथिलता शीतकी इच्छा गलेसे धुआं निकलना छर्दि और श्वास में लोहकीसी गन्ध यह लक्षण रक्त पित्त होनेके पहले होतेहैं ॥ १३८ ॥

विशिष्टरूपमाह ॥

सान्द्रंसपाण्डुसस्नेहंपिच्छिलंचकफान्वितम् (वातिकमाह) श्यावारुणंसफेनश्चतनु रूक्षञ्चवातिकम् (पैत्तिकमाह)रक्तपित्तंकषायाभंकृष्णगोमूत्रसन्निभम् । मेचकागारधूमा भमञ्जनाभञ्चपैत्तिकम् ॥ मेचकम्चिक्कणंकृष्णवर्णं । अञ्जनंस्रोतोञ्जनंतदाभंसंसर्गविशे षेणमार्गभेदमाह । संसृष्टलिंगंसंसर्गाद्त्रिलिंगंसान्निपात्तिकम् । ऊर्ध्वगंकफसंसृष्टमधो गंमारुतानुगम् ॥ द्विमार्गकफवाताभ्यामुभाभ्यांतत्प्रवर्त्तते ॥ १३६ ॥

रक्त पित्त के विशेपलक्षण ॥

कफज रक्त पित्त में गाढ़ा पांडु वर्ण स्नेहयुक्त और सचिक्कण रक्तनिकलताहै वातज रक्त पित्तमें धुमैला तथा रक्त वर्ण फेने समेत पतला और सूखा रक्त पित्त निकलताहै पित्तज रक्त पित्तमें कषाय के सदृश कृष्णवर्ण गोमूत्रके सदृश चिकने घरके धुयेंके समान अथवा अंजनके समानरक्त पित्त निक लताहै उपर कहेहुए दोदोषोंके लक्षणोंके मिलनेसे द्वन्द्वज और सबलक्षणोंके मिलनेसे सन्निपातज रक्त पित्त जानना चाहिये ऊपर गयाहुआ रक्त पित्त कफ युक्तनीचे गयाहुआरक्त पित्तवात युक्त और ऊपरतथा नीचे दोनों ओरसे गयाहुआ रक्त पित्त कफवात दोनोंसे मिलाहुआ जाननाचाहिये॥१३६॥

उपद्रवानाह ॥

दौर्बल्यंश्वासकासज्वरवमथुमदाःपाण्डुतादाहमूर्च्छा भुक्तेघोरोविदाहस्त्वधृतिरपि सदाहृद्यतुल्याचपीड़ा ॥ कृष्णाकोष्ठस्यभेदःशिरसिचतपनंपूयनिष्ठीवनञ्चद्वेषोभक्तेऽविपा कोविकृतिरपिभवेद्रक्तपित्तोपसर्गात् ॥ विकृतिःमांसप्रक्षालनाभतादिः ॥ १४० ॥

रक्त पित्त के उपद्रव ॥

दुर्बलता श्वास खांसी ज्वर छर्दिमद पांडुवर्ण दाहमूर्च्छा भोजनकी अत्यन्त कुपचताअधीरता हृ- दयमें बहुत पीड़ा तृषा मलभेद शिरमें सन्ताप पीपथूकना भोजनमें अरुचि भोजनका न पचना और रुधिर का मांसके धोवनके समान होना यह रक्त पित्तके उपद्रव हैं ॥ १४० ॥

साध्यत्वादिकमाह ।

एकदोषानुगंसाध्यंद्विदोषात्तुयाप्यमुच्यते । यत्त्रिदोषमसाध्यंस्यान्मन्दाग्नेरतिवेग वत् ॥ ऊर्ध्वंसाध्यमधोयाप्यमसाध्यंयुगपद्गतम् । व्याधिभिःक्षीणदेहस्यवृद्धस्याऽन श्नतस्तुयत् ॥ १४१ ॥

रक्त पित्तकासाध्यासाध्यआदिका वर्णन ॥

एक दोषवाला रक्त पित्त साध्य दोदोषवाला याप्य औरतीन दोषवाला असाध्य होताहै मन्दाग्नि वालेका अधिकवेग युक्त रक्तपित्त असाध्य होताहै ऊपर गयाहुआ साध्य नीचे गयाहुआ याप्य और दोनों ओर गयाहुआ रक्त पित्त असाध्य होताहै रोगोंसे क्षीण शरीर वालेकावृद्धका और भोजननकरने वालेका रक्त पित्त असाध्य होता है ॥ १४१ ॥

अथ साध्यमाह ॥

एकमार्गंबलवतोनातिवेगंनवोत्थितम् । रक्तपित्तंसुखेकालेसाध्यंस्यान्निरुपद्रवम् ॥ सुखेकालेहिमशिशिरयोः ॥ १४२ ॥

साध्य रक्त पित्त के लक्षण ॥

एक मार्गमें गयाहुआ नवीन उपद्रव रहित और थोड़े वेगवाला रक्त पित्त बलवान् रोगीकाहेमन्त और शिशिर ऋतुमें साध्य होता है ॥ १४२ ॥

असाध्यमाह ॥

मांसप्रक्षालनाभंक्वथितमिवचयत्कर्दमाम्भोनिभंवा मेदःपूयास्रकल्पंयकृदिवयदिवा पक्कजम्बूफलाभम् । कृतकृष्णंयच्चनीलंभृशमपिकुणपंयत्रचोक्ताविकारा स्तद्वर्ज्यंरक्तपित्तंसुरपतिधनुषायच्चतुल्यंविभाति ॥ उक्ताविकारादौर्बल्यादयः । सुरपतिधनुषातुल्य । नानावर्णम् । येनचोपहतोरक्तंरक्तपित्तेनमानवः । पश्येद्दृश्यंवियच्चापितदसाध्यमसंशयम् ॥ येनरक्तपित्तेनोपहतःमनुष्यःदृश्यघटपटादिकंरक्तंपश्यतिसनश्यतिवियच्चापिश्रदृश्यमपीत्यर्थः (अथारिष्टमाह) लोहितंछर्दयेद्यस्तुबहुशोलोहितेक्षणः । लोहितोद्गारदर्शीच मृयतेरक्तपैत्तिकः ॥ लोहितोद्गारदर्शीव्याधिमहिम्नोद्गारमपिलोहितंपश्यतीत्यर्थः॥१४३॥

असाध्य रक्त पित्त के लक्षण ॥

जोरक्त पित्त मांसके धोवनके काढ़ेके कीचड़से मिलेहुए जलके मेद तथा पीपके पकीजामुनके अथवा यकृतके समान होवे वह असाध्य है और जो रक्त पित्त काला नीला बहुत दुर्गन्धित ऊपर कहेहुए उपद्रवों से युक्त अथवा इन्द्र धनुष के समान अनेक रंग वाला होय वह असाध्य है जो रक्त पित्त वाला आकाश तथा सब दीखनेवाली वस्तुओंको लाल रंगका देखे वह निस्सन्देह असाध्य है जिस रक्त पित्त वाले को बहुत रुधिर की वमन होय और उद्गार लाल दीखे और जिसके दोनों नेत्र लाल होजावें उसकी मृत्यु होती है ॥ १४३ ॥

अथ रक्तपित्तस्यचिकित्सा ॥

पित्तास्रंस्तम्भयेन्नादौप्रवृत्तंबलिनोयतः । हृत्पाण्डुग्रहणीरोगप्लीहगुल्मज्वरादिकृत्॥ शालिषष्टिकनीवारकोरदूषप्रसाधिकाःश्यामाकाश्चप्रियंगुश्चभोजनंरक्तपित्तिनाम्॥प्रियंगुःकंगुः॥मसूरमुद्गचणकाःसमकुष्ठाढकीफलाःप्रशस्ताःसूपयूषार्थेकल्पितारक्तपित्तिनाम् ॥ दाड़िमामलकंविद्वानम्लार्थञ्चापिदापयेत्।पटोलनिम्बवेत्राग्रप्लक्षवेतसपल्लवाः ॥शाकार्थे शाकसात्म्यानांतण्डुलीयादयोहिताः । पारावतान्कपोतांश्चलावाद्रक्ताक्षवर्त्तकान् ॥ शशान्कपिञ्जलानेणान्हरिणान्कालपुच्छकान्।रक्तपित्तहरान्विद्याद्रसांस्तेषांप्रयोजयेत् ॥ ईषदम्लांश्चघृतभृष्टान्ससैन्धवान्। कफानुगेयूषशाकान्दद्याद्वातानुगेरसम् ॥ पथ्यंसतीनयूषेणससितैर्लाजशक्तुभिः ॥ १४४ ॥

रक्त पित्तकी चिकित्सा ॥

बलवान् रक्त पित्त वालेका पहले रुधिर बन्द नहीं करना चाहिये क्योंकि रुधिरके रोकनेसे हृदय

केरोग पांडुरोग ग्रहणी प्लीहा वायगोला और ज्वरादिक रोग उत्पन्न होतेहैं शालि धान्य साठी तिन्नी कोदों लालधान्य सामा और काकुन यह रक्त पित्तवालोंको भोजनके लिये हितकारी हैं मसूर मूंग चने मोठ और अरहड़ इनकी दालका यूप रक्त पित्तवालोंको देना चाहिये अनार और आमला खटाई के लिये देना चाहिये पवल नांब सरकंडेका अग्रभाग पकरिया बेंतकीपत्ती और चौराई आदिका शाक देना चाहिये श्वेत तथा पांडुवर्णके कबूतर लवा चकोर बटेर खरगोश श्वेततीतर कालाहिरन ताम्रवर्णका और कालीपूंछकाहिरन इन सबके मांसका रस रक्त पित्तमें हितकारीहै कफजरक्तपित्तमें कुछ खट्टे सेंधेनोन युक्त घीमें भूनकर यूप और शाकदेने चाहिये वातजरक्त पित्तमें मांसका रस हितहै मटर का यूप और शक्कर युक्त खीलोंके सत्तू पथ्यके लिये रक्तपित्तमें देनेचाहिये ॥ १४४ ॥

धान्याकधात्रीवासानांद्राक्षापर्पटयोर्हिमः । रक्तपित्तंज्वरंदाहंतृष्णाशोषश्चनाशयेत् ॥ धान्यकादिर्हिमः ॥ १४५ ॥

धनियां आमला वांसा दाख और पित्तपापड़ा इनके द्वारा शीत कपाय(औषध बनाने के प्रकरणमें देखो)बनाकर पिये इससे रक्त पित्तज्वर दाह तृषा और शोषकानाशहोताहै इतिधान्यकादिहिम १४५ ॥

ह्रीवेरमुत्पलंधान्यंचन्दनंयष्टिकामृता । उशीरश्चत्रिवृच्चैषांक्वाथंसमधुशर्करम् ॥ पाय येत्तेनसद्योहिरक्तपित्तंप्रणश्यति । रक्तपित्तंजयत्युग्रंतृष्णांदाहंज्वरंतथा ॥ पद्मोत्पलानां किञ्जल्कःपृश्निपर्णीप्रियंगुका । जलेसाध्यारसेतस्मिन्पेयास्यात्रक्तपित्तिनाम् ॥ वासा पत्रसमुद्भूतो रसःसमधुशर्करः । क्वाथोवाहरतेपित्तोरक्तपित्तंसुदारुणम् ॥ पिष्टानांवृषपत्रा णांपुटपाकरसोहिमः । समधुर्हरतेरक्तपित्तंकासज्वरक्षयान् ॥ उत्पलंकुमुदंपद्मंकह्लारंर्क्तो हितोत्पलम् । मधुकञ्चेतिपित्तासृक्तृष्णाछर्दिहरोगणः ॥ वासायांविद्यमानायामाशायां जीवितस्यच । रक्तपित्तीक्षयीकासीकिमर्थमवसीदति ॥ आटरूषकमृद्वीकापथ्याक्वाथः सशर्करः । क्षौद्राढ्यःसकलश्वासरक्तपित्तनिवर्हणः ॥ १४६ ॥

सुगन्धवाला नील कमल धनियां चन्दन मुलहठी गिलोय खस और निसोत इनके काढ़े में सहत और शक्कर डालकर पीनेसे रक्त पित्त तृषा दाह तथा ज्वर का नाशहोताहै कमलकी केशर नीले कमलकी केशर पृश्निपर्णी प्रियंगु (ककुनी) इन औषधियोंके काढ़ेसे पेया बनाकर रक्त पित्त वालोंको देना चाहिये और वांसेके पत्तोंके रस अथवा काढ़ेमें सहत और शक्कर डालकर पीनेसे अत्यन्त भयंकर रक्त पित्तका नाश होताहै वांसेके पत्तोंको पीसकर पुटपाक करके उसके शीतल रसमें सहत डाल कर पीनेसे रक्तपित्त ज्वर खांसी और क्षयकानाश होताहै उत्पल कुमुद पद्म कहार रक्तोत्पल यह पांचों प्रकारके कमल और मुलहठी इन औषधियोंके सेवनसे रक्तपित्त तृषा और छर्दिका नाशहोताहै जीवनकी आशाके होनेपर और वांसेके मिलनेपर रक्त पित्त क्षय और खासीवालेको कोई भय नहींहै वांसा दाख और हड़ इनके काढ़ेमें शक्कर और सहत डालकर पीनेसे खासी श्वास और रक्तपित्तका नाश होताहै ॥ १४६ ॥

दूर्व्वासोत्पलकिञ्जल्कमञ्जिष्ठाशैलवालुका । शीताशीतमुशीरञ्चमुस्तंचन्दनपद्म कम् ॥ विपचेत्कार्षिकैरेतैराजप्रस्थमितंघृतम् । तण्डुलानांजलंछागीक्षीरंदद्याच्चतुर्गु

णम् ॥ तत्पानंवमतोरक्तंनावनंनासिकागते। कर्णाभ्यांयस्यगच्छेत्तुतस्यकर्णौप्रपूरयेत् ॥ चक्षुःस्रवतिरक्तञ्चेत्पूरयेत्तेनचक्षुषी। मेढ्रपायुप्रवृत्तेतुवस्तिकर्म्मसुयोजयेत्॥ रोमकूप प्रवृत्तेतुतदभ्यङ्गंप्रयोजयेत्। सर्व्वेषुरक्तपित्तेषुतस्मात्श्रेष्ठमिदंघृतम् ॥ इतिदूर्व्वाद्यंघृतम्॥ १४७॥

दूब कमलकी केशर मजीठ एलवालुक शक्कर सफेद चन्दन खस मोथा लालचन्दन और पद्माक यहसब एक २ तोला बकरीका घी १ प्रस्थ चावलोंका पानी ४ प्र० और बकरीका दूध ४ प्र० इन सबके द्वारा विधि पूर्व्वक घी बनाकर जो रोगीके मुखसे रुधिर गिरता होय तो पान करावे जो नासिका से रुधिर निकलता हो तो नासदेवे और कानोंसे रुधिर निकलताहो तो कानोंमेंभरे जो नेत्रोंसे रुधिर बहता हो तो नेत्रोंमें भरे जो लिंग तथा गुदासे रुधिर बहता होय तो इस घीसेवास्ति देवे और जो संपूर्ण रोम कूपोंसे रुधिर बहता होय तो इसको सब शरीरमें मर्दन करे सब प्रकार के रक्त पित्तोंमें यहघी बहुत श्रेष्ठहै इति दूर्वाद्य घृत॥ १४७॥

मृद्वीकांचन्दनंलोध्रंप्रियंगुञ्चविचूर्णयेत्। चूर्णमेतत्पिवेत्क्षौद्रवासारससमन्वितम्॥ नासिकामुखपायुभ्योयोनिमेढ्रादिवेगिनम्। रक्तपित्तंस्रवद्धन्तिसिद्धएषप्रयोगराट् ॥ यच्च शस्त्रक्षतेनैवरक्तंगच्छतिवेगतः। तदप्येतेनचूर्णेनतिष्ठत्येवावचूर्णितम्॥ इक्षूणांमध्यकाण्डानिसकन्दंनीलमुत्पलम्। केशरंपुण्डरीकस्यमोचामधुकपद्मकैः॥ वटप्ररोहतुंगाश्च द्राक्षाखर्ज्जूरमेवच। एतानिसमभागानिकषायंसम्प्रकल्पयेत् ॥ उषितंमधुसंयुक्तंपाययेच्छर्करान्वितम्। सप्रमेहंरक्तपित्तंक्षिप्रमेतन्नियच्छति ॥ द्राक्षयाफलिनीभिर्व्वाप्रियालमधुकेनवा। श्वदंष्ट्रयाशतावर्य्यारक्तजित्साधितंपयः ॥ पक्वोदुम्बरकाश्मर्य्याःपथ्याखर्ज्जूरगोस्तनाः। मधुनाघ्नन्तिसंलीढारक्तपित्तंपृथक्पृथक् ॥ अत्रकाश्मर्य्याःफलमेवग्राह्यंफलसाहचर्य्यात्॥अतिनिश्रुतरक्तोवाक्षौद्रयुक्तंपिवेदसृक्। सकृद्वाभक्षयेदाज्ञ्मांसंवापित्तसंयुतम्॥नासाप्रवृत्तरुधिरंघृतभृष्टंश्लक्ष्णपिष्टमामलकम्। सेतुरिवतोयवेगंरुणद्धिमूर्ध्निप्रलेपेन ॥ घ्राणप्रवृत्तेजलमाशुपेयंसशर्करंनासिकयाचयोवा । द्राक्षारसंक्षीरघृतंपिवेद्वासशर्करञ्चेक्षुरसंहिताय ॥ नस्येदाडिमपुष्पस्यरसोदूर्व्वाभवोऽपिवा। आम्रास्थिजःपलाण्डोर्वानासिकास्रावरक्तजित् ॥ १४८ ॥

दाख लालचन्दन लोध और प्रियंगु इन सब औषधियों को पीसकर सहत और बांसे के रस में मिलाकर पिये इस से मुख नासिका गुदा योनि तथा लिंग आदि से निकलता हुआ रुधिर बन्द होता है शस्त्र आदि के घाव से बेग पूर्व्वक वहताहुआ रुधिर इस चूर्ण के लगानेसे बंद होजाता है ईख के बीच की पोई जड़सहित नील कमल की केशर मोचरस मुलहठी पद्माक बगद की जटा दाख और खजूर इन सब औषधियों को सम भाग लेकर क्वाथ करे फिर वासी क्वाथमें सहत और शक्कर डालकर पीने से प्रमेह तथा रक्तपित्त का शीघ्र नाश होता है दाख मालकागनी चिरोंजी मुलहठी भटकटैया अथवा सतावर के द्वारा क्षीर पाक करके पीने से रक्त पित्त का नाश होताहै पक्कागूलर गभारीकाफल हड़ खजूर तथा दाख इनमेंसे किसीको पीसकर सहतके साथ चाटने से रक्तपित्त का

नाश होताहै जिसके बहुत रुधिर वहताहोय वह सहत डालकर वकरेका रुधिर पिये अथवा सहत युक्त मांस या यकृत एकवार खाय नासिकाके द्वारा रुधिरके वहनेपर आमलेको घी में भूनकर महीन पीसके शिरमें लेपकरनेसे जैसे वांधसे जल रुकजाताहै उसी प्रकार रुधिर वन्द होजाताहै नासिका के द्वारा रुधिर वहनेपर जल तथा शक्कर दूध तथा शक्कर मुनक्काका काढा तथा शक्कर दूधसे निकला हुआ घी तथा शक्कर अथवा ऊखका रस तथा शक्कर नासिकाके द्वारा पीना चाहिये अनार के फूल दूब आमकी विजली अथवा प्याजके रसकी नास लेनेसे नासिकासे रुधिरका वहना वन्द होताहै। ४८॥

पुराणंपीनमानीयकूष्माण्डस्यफलंवृहत्।तद्वीजाधारवीजत्वक्शिराशून्यंसमाचरेत्॥ततस्तस्यतुलांनीत्वापचेज्जलतुलाद्वये ।तस्मिन्नीरेऽर्द्धशिष्टेतुयत्नतःशीतलीकृते॥तानिकूष्माण्डखण्डानिपीड़येत्दृढवाससा । यत्नतस्तज्जलंनीत्वापुनःपाकायधारयेत्॥कूष्माण्डंशोषयेद्धर्म्मेताम्रपात्रेततःक्षिपेत्॥क्षिप्त्वातत्रघृतंप्रस्थंकूष्माण्डंतेनभर्ज्जयेत्॥मधुवर्णंतदालोक्यतज्जलंतत्रनिक्षिपेत् । सितायाश्चतुलांतत्रक्षिप्त्वातल्लेहवत्पचेत्॥सुपक्केपिप्पलीशुण्ठीजीराणांद्विपलेपृथक्। पृथक्पलार्द्धंधान्याकंपत्रैलामरिचत्वचम् ॥ चूर्णमेषांक्षिपेत्तत्रघृतार्द्धंक्षौद्रमावपेत् । एतत्पलमितंखादेदथवाग्निवलंयथा ॥ खण्डकूष्माण्डलेहोऽयंरक्तपित्तञ्चनाशयेत् । पित्तज्वरंतृषांदाहंप्रदरंकृशतांवमिम् ॥ काशंश्वासश्चहृद्रोगंस्वरभेदंक्षतंक्षयम्॥नाशयेत्स्येवदृद्धिञ्चवृंहणोवलवर्द्धनः । इतिखण्डकूष्माण्डावलेहः १४६॥

पुराने वहुत वड़े मोटे कुंभडेको लाकर वीज वीजोंके रहनेके गूदे छिलके और नसोंको निकाल कर चारसौ तोले लेले फिर उसको आठसौ तोले जलमें पाक करे फिर जलके आधे वाकी रहने पर शीतल करके उस कुंभड़ेको मोटे कपड़ेमें निचोड़ले और धूपमें कुछ सुखाले इसके उपरान्त किसी तांवेके पात्रमें चौसठ तोले घी डालकर कुंभड़ेको भूनेफिर कुंभड़ेका रंग सहतके समान देखकर उस कुंभड़े के निचोड़े हुये जलको भी उसमें डालदे और चारसौ तोले शक्कर डालकर अवलेहके समान पाककरे पाक होजानेपर पीपल सोंठ तथा जीरा इनका चूर्ण आठ २ तोले और धनियाँ तेजपात इलायची मिर्च तथा दालचीनी इनका चूर्ण दो २ तोले उसमें छोड़े और घीका आधा सहत मिलावै इसको एकपल अथवा अग्नि वलके अनुसार सेवन करनेसे रक्त पित्त पित्तज्वर तृषा दाह प्रदर कृशता छर्दि खांसी श्वास हृदयके रोग स्वर भेद क्षत क्षय तथा वृद्धिरोगका नाश होताहै और धातु तथा वलकी वृद्धि होतीहै इति खंडकूष्मांडावलेह ॥ १४६ ॥

पुराणंपीनमानीयंकूष्माण्डस्यफलंदृढम् । तद्वीजाधारवीजत्वक्शिराशून्यंसमाचरेत् ॥ ततोऽतिसूक्ष्मखण्डानिकृत्वातस्यतुलांपचेत् । गोदुग्धस्यतुलामध्येमन्देऽग्नौवापचेच्छनैः ॥ शर्करायारतुलांसार्द्धंगोघृतंप्रस्थमात्रकम् । प्रस्थार्द्धंमाक्षिकञ्चापिकुडवंनारिकेरतः ॥ प्रियालफलमज्जानंद्विपलंतिखुरीपलम् । क्षिपेदेकत्रविपचेल्लेहवत्साधुसाधयेत् ॥ भिषक्सुपक्कमालोक्यज्वलनादवतारयेत् । कोष्णेतत्रक्षिपेदेषांचूर्णंतानिवदाम्यहम् ॥ एकोऽक्षःशतपुष्पायाअथक्षीरोयवानिका । गोक्षुरःक्षुरकःपथ्याकपिकच्छुफलानिच ॥ समीत्वक्चसर्वेषा मक्षयुग्मंपृथक्पृथक् । धान्यकंपिप्पलीमुस्त मश्वगन्धाशतावरी ॥

तालमूलीनागवलाबालकंपत्रकंशटी । जातीफललवंगञ्चसूक्ष्मैलाब्रहदेलिका ॥ शृंगाट कंपर्पटकंसर्व्वंपलमितंपृथक् । चन्दनंनागरन्धात्रीफलञ्चापिकशेरुकम् ॥ प्रत्येकंपञ्च कर्पाणिचत्वार्य्येतानिनिःक्षिपेत् । पलद्वयमुशीरस्यमपाणस्योपणस्यच ॥ कूष्माण्डस्यात्र लेहोऽयंभक्षितःपलमात्रया । किंवायथावह्निवलंभुकारोगान्विनाशयेत् ॥ रक्तपित्तंशीत पित्तमम्लपित्तमरोचकम् । वह्निमान्द्यंसदाहञ्चतृष्णांप्रदरमेवच ॥ रक्तार्शांऽपितथाछर्दिं पाण्डुरोगञ्चकामलाम् । उपदंशंविसर्पञ्चजीर्णञ्चविषमंज्वरम् ॥ लेहोऽयंपरमोवृष्योवृं हणोवलवर्द्धनःस्थापनीयःप्रयत्नेनभाजनेमृण्मयेनवे ॥ इतिवृहत्कूष्माण्डावलेहः ॥१५०॥

पुराने मोटे और बहुत मजबूत पेठेको लेकर बीज बीजोंके रहनेका गूदा छिलका और नसें निकाल डाले फिर उसके बहुत छोटे २ चारसौ तोले टुकड़े ४०० तोलेगौके दूधमें मंदाग्निके द्वारा पाककरे इसके उपरान्त ६०० तोले शक्कर ६४ तोले गौका घी ३२ तोले सहत ३२ तो० गोला ८ तो० चिरौंजी तथा ४ तोले तवाखीर इनसब ओषधियोंको इसमें डालकर अच्छेप्रकारसे पाक करे फिर परिपाक हुआ जानके उतारले और कुछ गरमी बाकी रहनेपर सौंफका चूर्ण १ तोले जवाखार अजवाइन गोखरू तालमखाना हड किवांचके बीज तथा दालचीनी इन सबका चूर्ण दो २ तोले धनियां पीपलमोथा असगन्ध सतावर तालमूली गुलशकरी सुगन्ध-वाला तेजपात कचूर जायफल लौंग छोटीइलायची बड़ीइलायची सिंघाड़ा पित्तपापड़ा इनसब का चूर्ण एक २ पल चन्दन सोंठ आमला और कशेरू इनकाचूर्ण पांच २ तोले खस बकुची तथा मिर्च इनसबका चूर्ण दो २ पल इनसबचूर्णों को उसमें मिलावे इसकूष्माण्डावलेह को एकपल अथवा अग्नि बल के अनुसार सेवनकरने से रक्त पित्तशीतपित्त अम्ल पित्त अरुचि मन्दाग्नि दाह तृषा प्रदर खूनी बवासीर छर्दि पांडु कामला उपदंश (आतशक) वीसर्प जीर्णज्वर तथा विषम ज्वरों का नाशहोता है और वीर्य्य बल तथा धातुकी वृद्धि होती है इस औषधको यत्न पूर्वक मिट्टी के नवीन पात्रमें रक्खे इति वृहत्कूष्माण्डावलेह ॥ १५० ॥

कूष्माण्डकस्यस्वरसंपलानांशतमात्रया । रसतुल्यंगवांक्षीरंधात्रीचूर्णपलाष्टकम् ॥ मृद्वग्निनापचेत्तावद्यावद्भवतिपिण्डवत् । धात्रीतुल्यासितायोज्यापलार्द्धंलेहयेदनु ॥ खण्डकूष्माण्डकंह्येतद्भुक्तमभ्यासतोहरेत् । रक्तपित्तमम्लपित्तंदाहंतृष्णाञ्चकामलाम् ॥ इति खण्डकूष्माण्डकम् ॥ १५१ ॥

पेठेकारस ४०० तो० गौकादूध ४०० तो० और आमले का चूर्ण ३२ तो० इनसब ओषधियों को मन्दाग्नि में पाककरे जब सबका पिंडसा होगया देखे तब ३२ तोले शक्कर मिलादे इसको दोतोले रोज सेवन करने से रक्त पित्त अम्ल पित्त दाह तृषा तथा कामला का नाशहोता है इति खंड कूष्माण्डक ॥ १५१ ॥

शतावरीच्छिन्नरुहावृषोमुण्डतिकावलाः । तालमूलीचगायत्रीत्रिफलायास्त्वचस्त था ॥ भार्गीपुष्करमूलश्चपृथक्पञ्चपलानिच । जलद्रोणेविपक्तव्यमष्टभागावशेषित म् ॥ दिव्यौषधिहतस्यापिमाक्षिकेणहतस्यवा । पलद्वादशकंदेयंरुक्मलोहस्य चूर्णितम् ॥ खण्डतुल्यंघृतंदेयंपलंषोडशकंबुधैः । पचेत्ताम्रमयेपात्रेगुडपाकोमतोयथा ॥ प्रस्थार्द्धम

घृतेदेयंशुभ्रास्मजतुकस्यच। शृङ्गीकृष्णांविडङ्गञ्चशुण्ठ्याजाजीपलंपलम्॥ त्रिफलाधान्यकंपत्रंकणामरिचकेशरम्। चूर्णंदत्त्वासुमथितंस्निग्धेभाण्डेनिधापयेत्॥ यथाकालंप्रयुञ्जीतविडालपदमात्रकम्। गव्यक्षीरानुपानञ्चसेव्योमांसरसःपयः॥ गुरुवृष्यान्नपानानिस्निग्धमांसादिबृंहणम्। रक्तपित्तंक्षयंकासंपार्श्वशूलंविशेषतः॥ वातरक्तंप्रमेहञ्चशीतपित्तंवमिंक्लमम्। श्वयथुंपाण्डुरोगञ्चकुष्ठंप्लीहोदरंतथा॥ आनाहंमूत्रसंस्रावमम्लपित्तंनिहन्तिच। चक्षुष्यंबृंहणंवृष्यमङ्गल्यंप्रीतिवर्द्धनम्॥ आरोग्यंपुत्रदंश्रेष्ठंकामाग्निबलवर्द्धनम्। श्रीकरंलाघवञ्चैवखण्डखाद्यंप्रकीर्त्तितम्॥ छागंपारावतंमांसंतित्तिरिःप्रकरःशशः। कुरंगःकृष्णसारश्चमांसमेषांप्रयोजयेत्॥ नारिकेरपयःपानंसुनिषण्णकवास्तुकम्। शुष्कमूलकजीवाख्यंपटोलंबृहतीफलम्॥ वार्त्ताकंपक्कमाम्रञ्चखर्ज्जूरंस्वादुदाडिमम्। ककारपूर्वकंयच्चमांसञ्चानूपसम्भवम्॥ वर्ज्जनीयंविशेषेणखण्डखाद्यंसमश्नता। लोहान्तरवदत्रापिपुटनादिक्रियेष्यते॥ नपुनर्माक्षिकेणेहशिलयेवहिमारणम्। भार्गीब्रमनेठी। दिव्योषधीमनःशिला। रुक्मलोहंगजवेलीइतिलोके। सुनिषण्णश्चतुःपत्रीशाकविशेषः। जीवन्तीजीवइतिशाकविशेषः। ककारपूर्वककटुकःकालशाकंकूष्माण्डंकर्कटीकर्कोटककलिंगकर्कन्धुकरमर्दककरीरकतककशेरुकाञ्जिकइत्यादिवर्जनीयम्। इतिखण्डखाद्यंलोहम्॥ १५२॥

सतावर गिलोय वांसा मुंडी वरियारा तालमूली खैरकी छाल त्रिफलाकी छाल भारंगी तथा पुष्करमूल इनसब औषधियों को बीस २तोले लेकर १०२४ तोलेजलमें पकावे जब अष्टमांश बाकी रहेतब मैनशिल तथा सोना मक्खी के द्वारा माराहुआ रुक्म नाम लोहे का४८तोले चूर्ण इसनेंदी शकर तथा ६४ तोले घी डालकर तांबेके पात्रमें गुड़पाक की विधिसे पाककरे फिर सहत ३२ तोले वंशलोचन शिलाजीत काकड़ासिंगी पीपल वायविडंग सोंठ तथा कालाजीरा यह सबचार ४ तोले त्रिफला धनियां तेजपात मिर्च तथा नागकेशर यह सबदो २ तोले इनसब औषधियोंका चूर्ण मिलाय के खूब चलावे और किसी चिकने पात्रमें रखदे फिर १ तोला रोजखाय और गौकादूध मांसरस अथवा जलका अनुपानकरे इसका सेवन करने वाला भारी तथा वीर्य्यवर्द्धक और सचिक्कण तथा मांसादिक धातु वर्द्धक पदार्थ खाय इसके द्वारा रक्त पित्त क्षय खांसी पसलीकी पीड़ा वात रक्त प्रमेह शीतपित्त छर्दि ग्लानि सूजन पांडु कुष्ठ प्लीहा उदर अफरा मूत्र वहना तथा अम्लपित्तका नाशहोता है और यह नेत्रोंको हित धातुवर्द्धक वीर्य्यवर्द्धक मंगलकारी प्रीतिदायक आरोग्यकारी पुत्रदायक कामाग्नि बलवर्द्धक शोभाकारी तथा शरीरका हलका करनेवाला होता है बकरा परेवा तीतर ककट्टा खरगोश लालहिरन तथा काला हिरन इनसबका मांस इस औषधके सेवन करनेवाले को खाना चाहिये नारियल का जलपीना चाहिये और चौपतिया बथुई सूखीमूली जीवन्ती परवल भटकटैयाकेफल बैंगन पक्काआम खजूर तथा मीठाअनार खानाचाहिये इसऔषधका सेवनकरनेवाला कटु कालशाक कूष्मांड ककड़ी कर्कोटक कलिंग (तरबूज) कर्कन्धु (बेर) कमरख करीलकतक कशेरुऔर कांजीआदिक ककारादिशब्द तथा अनूप देशके जीवोंकामांस त्यागकरदे अन्यलोहोंके

समान इसमेंभी पुटपाक आदिक क्रियाकरे परन्तुकेवल मैनशिल तथा सोनामक्खीकेहीद्वारा मारना उचित नहींहै ॥ इतिखंडखाद्यलोह ॥ १५२ ॥

शतावरीमूलकल्कंकल्कात्क्षीरंचतुर्गुणम् । क्षीरतुल्यंघृतंगव्यंसितयाकल्कतुल्यया॥ घृतशेषंपचेत्तन्तुपलार्द्धंलेहयेत्सदा । रक्तपित्तंह्यम्लपित्तंक्षयंश्वासञ्चनाशयेत् ॥ शतावरीपाक. । इतिरक्तपित्ताधिकारः ॥ १५३ ॥

पीसीहुई सतावरकी जड़ इसका चौगुना दूध तथा घी और उसकीही बराबर शक्कर इन सब औषधियोंको पाककरे जब केवल घी बाकी रहजाय तब उतारले इसको दोतोले खानेसे रक्त पित्त अम्लपित्त क्षय तथा श्वासका नाश होताहै॥ इति सतावरीपाक॥ इति रक्तपित्ताधिकार ॥ १५३ ॥

अथाम्लपित्ताधिकारः । तत्राम्लपित्तस्यविप्रकृष्टनिदानमाह ॥

विरुद्धदुष्टाम्लविदाहिपित्तप्रकोपिपानान्नभुजोविदग्धम् । पित्तंस्वहेतूपचितंपुरायत्त दम्लपित्तंप्रवदन्तिसन्त. ॥ दुष्टंव्यापन्नमन्नम् । पित्तप्रकोपीत्युक्तेऽपिअम्लविदाहीतिविशेषार्थम् । पित्तप्रकोपिपानंतक्रसुरादि । अम्लंमाषादि । स्वहेतूपचितंपुरावर्षास्वम्लविपाकैर्जलैरोषधीभिश्चतादृशीभिरुपचितम् । सञ्चितंअम्लपित्तं । तदम्लपित्तंवदन्तिअम्लपित्ताख्यंरोगंवदन्ति ॥ १५४ ॥

अम्लपित्तका अधिकार अम्लपित्तके दूरवाले कारण ॥

विरुद्धवस्तु दूषितअन्न खट्टी तथा बिदाहीवस्तु मट्ठा तथा मद्य आदिक पित्तकारी पीनेकीवस्तु उड़द आदिक पित्तकारी भोजनकी वस्तु इनसबके सेवनकरनेवाले पुरुषोंका वर्षासम्बन्धी खट्टे विपाक वाले जलतथा औषधियोंकेद्वारा संचितपित्त कुपितहोताहै इसको वैद्यलोग अम्लपित्तरोगकहतेहैं१५४॥

अथाम्लपित्तस्यव्याधेर्लक्षणमाह ॥

अविपाक क्लमोत्क्लेश.तिक्ताम्लोद्गारगौरवैः । हृत्कण्ठदाहाऽरुचिभिरम्लपित्तंवदेद्भिषक् ॥ अम्लपित्तंद्विधाप्रोक्तमधोगञ्चतथोर्ध्वगम् ॥ १५५ ॥

अम्लपित्तका लक्षण ॥

अन्नका न पचना ग्लानि मतली तिक्त तथा खट्टी डकार भारीपन हृदय तथा कंठमें दाह अरुचि यह लक्षण जिसके होंय उसको अम्लपित्त जानना चाहिये अम्लपित्त ऊर्ध्वगत और अधोगत भेदोंसे दो प्रकारकाहै ॥ १५५ ॥

तत्रोर्ध्वगस्यलक्षणमाह ॥

वांतंहरितपीतमनीलकृष्णमारक्तरक्ताभमतीवचाच्छम्। मत्स्योदकाभन्त्वपिपिच्छलाभंश्लेष्मानुजातंसहितंरसेन ॥आरक्तमईषल्लोहितम् । रक्तामंवा । अतीवचाच्छंनिर्मलम् । रसेनलवणकटुतिक्तरूपेण ॥ १५६ ॥

ऊर्ध्वगत अम्लपित्तके लक्षण ॥

ऊर्ध्वगत अम्लपित्तमें हरा पीला नीला काला कुछ लाल अथवा लाल निर्मल मछलीके धोवन के समान अत्यन्त सचिक्कण कफयुक्त और लवण कटु तथा तिक्त रसयुक्त वमन होताहै ॥ १५६ ॥

अधोगस्यलक्षणमाह ॥

तृट्दाहमूर्च्छाभ्रममोहकारिप्रयात्यधोवाविविधप्रकारम्। हृल्लासकोठानलसादहर्षस्वेदाङ्गपीतत्वकरंकदाचित् ॥ मूर्च्छासर्व्वदाज्ञानशून्यता। मोहोविपरीतंज्ञानम्अधोवेति वाशब्दऊर्ध्वगापेक्षया। विविधप्रकारम्। हरिद्रावर्णयोगात्। कदाचित्हृल्लासादिकरं चभवति ॥ १५७ ॥

अधोगत अम्लपित्तके लक्षण ॥

अधोगत अम्लपित्तमें तृषा दाह ज्ञानका न होना भ्रम तथा ज्ञानकी विपरीतताहोतीहै नीचेकेमार्ग से हल्दी आदिक अनेक रंगों समेत मल निकलताहै और कभी कभी मतली चकत्ते मन्दाग्नि रोमांच स्वेद तथा शरीरका पीलापन होताहै ॥ १५७ ॥

अम्लपित्तस्यावस्थाविशेषमाह।

भुक्तेविदग्धेऽप्यथवाप्यभुक्तेकरोतितिक्ताम्लवमिकदाचित्। उद्गारमेवंविधमेवकण्ठहृत्कुक्षिदाहंशिरसोरुजञ्च ॥ करचरणदाहमौष्ण्यंमहतीमरुचिज्वरंचकफपित्तम्। जनयातिकण्डुमण्डलपिड़िकाशतनिचितरोगचयम् ॥ भुक्तेविदग्धेतिक्ताम्लंवमिंकरोति। तथाउद्गारंएवंविधमेवतिक्ताम्लमेववमिंकरोति। तथाकण्ठहृत्कुक्षिदाहंशिरोरुजंवा॥ करोतितथाकरचरणदाहादिकंजनयति। तथाकंडूमण्डलपिड़िकाव्याप्तगात्ररोगचयम्करोति। अन्नविपाकक्लमादिकंजनयति ॥ १५८ ॥

अम्लपित्तकी विशेष अवस्था ॥

कभीकभी भोजनके परिपाकके समयमें अथवा भोजनके विनाकिये तिक्त तथा खट्टा वमन होताहै और इसी प्रकारकी डकारें आतीहैं कंठ हृदय कोख हाथ तथा पैरोंमें दाह होताहै शिरमें पीड़ा होती है हाथ पैर उष्ण रहतेहैं अरुचि होतीहै कफ पित्त जनित ज्वर होताहै खुजली मंडलाकार चकत्ते तथा फुंसियोंसे शरीर भरजाताहै और अन्नका अपरिपाक तथा मतली आदि रोग उत्पन्न होतेहैं ॥ १५८ ॥

अथाम्लपित्तदोष संसर्गमाह ॥

सानिलंसानिलकफंसकफंतच्चलक्षयेत्। दोषलिंगेनमतिमान्भिषङ्मोहकरंहितम् ॥ ऊर्ध्वाधःप्रवृत्त्याच्छर्द्यतीसाराभ्यांतुल्यतयावैद्यभ्रान्तिकृत ॥ १५९ ॥

अम्लपित्तमें दोषोंकासंसर्ग ॥

ऊर्ध्वगत अम्लपित्तमें वमनहोनेसे छर्दिऔर अधोगत अम्लपित्तमें दस्तआनेसे अतीसारकी भ्रान्ति वैद्योंकोहोतीहै इसलिये वातयुक्त वातकफयुक्त अथवा केवलकफयुक्त यहपरीक्षा लक्षणोंसे करनी चाहिये ॥ १५९ ॥

दोषभेदेन लक्षणभेदमाह ॥

कम्पप्रलापमूर्च्छाचिमिचिमिगात्रावसादशूलानि। तमसोदर्शन विभ्रमप्रमोहहर्षास्तथानिलेनयुतेन ॥ कफनिष्ठीवनगौरवजड़तारुचिशीतसादवमिलेपाः। दहनबलहानिः कण्डूनिद्राचिह्नंकफानुगेभवति ॥ उभयमिदमेवचिह्नंमारुतकफसम्भवेऽम्लपित्तेस्यात्। चिमिचिमिझिनिझिनीतिलोकेहर्षोरोमाञ्चः ॥ १६० ॥

दोषभेदसे लक्षणोंकाभेद ॥

वातयुक्त अम्लपित्तमें कम्प प्रलाप मूर्च्छा शरीरमें झनझनाहट शिथिलता शूल अंधेरा मालूमहोना भ्रांति मोह तथारोमांचहोताहै कफयुक्त अम्लपित्तमें कफका थूकना भारीपन जड़ता अरुचिशीत शिथिलता छर्दि मुखमेंकफसे लिप्तहोना मंदाग्नि निर्बलता खुजली तथा अधिक निद्राहोतीहै औरवातकफयुक्तअम्लपित्तमें वातऔरकफदोनोंके लक्षणमिलते हैं ॥ १६० ॥

तथाम्ल पित्तस्य साध्यत्वादिकमाह ॥

रोगोऽयमम्लपित्ताख्योयत्नात्संसाध्यतेनवः । चिरोत्थितोभवेद्याप्यःकृच्छ्रसाध्यःसकस्यचित् ॥ कस्यचित्हीनाहाराचारशीलस्य ॥ १६१ ॥

अम्लपित्तका साध्यासाध्यपन ॥

यहअम्लपित्त रोग यत्नसाध्यहोता है और बहुतदिनोंका पुराना अम्लपित्त याप्य अथवा किसी २ हीन आहारतथा आचारवालेका कष्टसाध्य होताहै ॥ १६१ ॥

अथ श्लेष्मपित्तस्यलक्षणमाह ॥

तमोमूर्च्छारुचिश्छर्दिरालस्यंचशिरोरुजा । प्रसेकोमुखमाधुर्यंश्लेष्मापित्तस्य लक्षणम् ॥ १६२ ॥

श्लेष्मपित्तके लक्षण ॥

अन्धकार मालूम होना मूर्च्छा अरुचि छर्दि आलस्य शिरमेंपीड़ा मुखमें जलभर आना और मुखका मीठा रहना यह श्लेष्मपित्तका लक्षणहै ॥ १६२ ॥

अथाम्लपित्तश्लेष्मपित्तयोश्चिकित्सा ॥

अम्लपित्तेतुवमनंपटोलारिष्टवासकैः । कारयेन्मदनैःक्षौद्रैःसैन्धवैश्चतथाभिषक् ॥ विरेचनंत्रिवृच्चूर्णमधुधात्रीफलद्रवैः । ऊर्ध्वंगंवमनैर्विद्वानधोगंरेचनैर्हरेत् ॥ वर्ज्जिताःअम्लपित्तमितिशेषः । यवगोधूमविकृतीस्तीक्ष्णसंस्काररहितास्ताःस्वंलाजशक्तूनवासितामधुयुतान्पिबेत् । निस्तुषयवबृषधात्रीक्वथितंसलिलंत्रिगन्धमधुयुक्तम् ॥ द्रुतमपहरतिवमिंसञ्जनितामम्लपित्तेन । छिन्नोद्भवानिम्बपटोलपत्रंक्षौद्रान्वितंपीतमनेकरूपम् ॥ सुदारुणं हन्तितदम्लपित्तंयथाशनिस्तालतरुंप्रवृद्धम् । वासामृतापर्पटकनिम्बभूनिम्बमार्कवैः । त्रिफलाकुलकैःक्वाथःसक्षौद्रश्चाम्लपित्तहा ॥ १६३ ॥

अम्ल पित्त और श्लेष्म पित्तकी चिकित्सा ॥

अम्ल पित्त रोग में परवल नींव वांसा तथा मेन फल के काढ़े में सहत और सैंधानोन डालकर पिलाके वमन करावे निसोथ और आम लेके क्वाथ में सहत डालकर पिला के दस्त करावे ऊर्द्ध्वगत अम्ल पित्त में वमन और अधोगत अम्ल पित्त मेंविरेचन कराना चाहिये अम्ल पित्त में जो और गेहूं के द्वारा तीक्ष्णता रहित भोजन बनाकर देवे अथवा दोष के अनुसार खीलों के सत्तू सहत और शक्कर के साथ पिये भूसी रहित जो वांसा और आमले के काढ़े में दालचीनी इलायची तेज पात और सहत डालकर पीनेसे बहुत शीघ्र अम्ल पित्तसे होने वाली छर्दि का नाश होताहै गिलोय नींव तथा परवल के पत्तों के काढ़े में सहत डालकर पीने से जैसे कि वज्रके लगनेसे बड़े ताड़ के वृक्षका नाश होता है उसी प्रकार बड़े भयंकर अम्ल पित्त का नाश होताहै वांसा गिलोय पित्तपापड़ा

नींव चिरायता भांगरा त्रिफला और परवल इन के काढे में सहत डालकर पीने से अम्ल पित्त का नाश होताहै ॥ १६३ ॥

• पाठापटोलयवचन्दनधान्यधात्री वासावरांगदलनागकणाभयाभिः । लेहःसिताब्जमधुभिःशितपालपिण्डी हन्त्यम्लपित्तमरुचिज्वरदाहशोपान् ॥ हन्त्यम्लपित्तवमनारुचिदाहमोह खालित्यमेहशिशिरव्रणशुक्रदोषान् । भुक्त्वानरःसततमामलकीरसेनवृद्धोऽप्यनेनहिभवेत्तरुणोरिरंसुः ॥ १६४ ॥

पाठा परवल धवई चन्दन धनियां आमला वांसा तज तेजपात गजपीपल और हड़ इन सब औषधियों को पीसकर शक्कर कमल और सहत के साथ चाटने से अम्लपित्त अरुचि ज्वर दाह शोष छर्दि मोह गंजापन प्रमेह शीतल घाव और वीर्यके दोष यह सब रोग नष्ट होतेहैं इसको आमलेके केसरके साथचाटने से वृद्धभीतरुण केसमान मैथुनमें इच्छाकरने वालाहोताहै ॥ १६४ ॥

कूष्माण्डकरसोग्राह्यःपलानांशतमात्रकम् । रसतुल्यंगवांक्षीरंधात्रीचूर्णपलाष्टकम् ॥ धात्रीतुल्यासितायोज्यागव्यमाज्यंपलद्वयम् । मन्दाग्निनापचेत्सर्वंयावद्घनतिपिण्डितम् ॥पलार्द्धंपलमेकंवाप्रत्यहंभक्षयेदिदम् ।खण्डकूष्माण्डकंख्यातमम्लपित्तापहंपरम् ॥ इतिखण्डकूष्मांडकोऽवलेहः ॥ १६५ ॥

पेठेकारस औरगौकादूध चारसौतोले आमलेकाचूर्ण औरशक्कर वत्तीस २ तोले गौकाघी ८ तोले इन सबको मंदाग्निमें पकावेजब पिण्डसा होजायतो उतारले चारतोले अथवादोतोले इसको नित्यखाने से अम्लपित्तका नाशहोताहै इतिखंडकूष्मांड का वलेह ॥ १६५ ॥

कुड़वंनारिकेरस्यजलेमृद्वग्निनापचेत् । नारिकेरजलाभावेगव्येपयसितत्पचेत् ॥ धान्यकंपिप्पलीमुस्तंचातुर्जातम्विचूर्णितम् । प्रत्येकंटङ्कमात्रंतुशीतेतस्मिन्विनिःक्षिपेत् ॥ पलमात्रस्तदर्द्धोऽपिभक्षितःप्रत्यहंनरैः । नारिकेरकखण्डोऽयंपुंस्त्वनिद्राबलप्रदः ॥ अम्लपित्तंरक्तपित्तंशूलञ्चपरिणामजम् । क्षयंप्रशमयतिक्षिप्रंशुष्कंदावानलोयथा ॥ पलमात्रगव्यघृतेननारिकेरस्यभञ्जनंकर्त्तव्यमितिसम्प्रदायः । इतिनारिकेरखण्डः ॥ १६६ ॥

१६ तोलेनारियलके गोलेको चारतोलेगौकेघीमेंभूनकर नारियलकेजल अथवागौके दूधकेसाथ पाककरेफिर शीतलहोजाने परधनियां पीपल मोथा दालचीनी इलायची तेजपात औरनाग केशर इनसब काचार२मासेचूर्ण उसमेंछोड़े इसकोचार तोले अथवा दो तोले नित्यखानेसे पुरुषार्थ निद्रा तथा बल कीवृद्धि होतीहैऔर अम्लपित्तरक्तपित्त परिणामशूल तथा क्षयकानाशहोताहै इतिनारिकेरखण्ड १६६ ॥

प्रस्थन्तुनारिकेरस्यसूक्ष्मंदषदिपेषितम् । निस्त्वचीकृतकूष्माण्डखण्डानामर्द्धमाढकम् ॥ तद्द्वयंभर्जयेद्गव्येघृतेतुकुड़वोन्मिते । ततस्तत्रक्षिपेच्छुद्धंगोदुग्धञ्चाढकोन्मितम् ॥ तत्रैवनिःक्षिपेद्धन्व्यांसितांप्रस्थद्वयोन्मिताम् । पचेत्सर्व्वाणिचैकत्रमृदुनावह्निनाभिपक् ॥ सुपक्वेशीतलेतत्रचूर्णीकृत्यविनिःक्षिपेत् । सूक्ष्मैलाधान्यकंधात्रीपर्पटंजलदंजलम् ॥ उशीरंचन्दनंद्राक्षांशृंगाटञ्चकशेरुकम् । त्वक्पत्रकंसकर्पूरंकर्षयुग्मंपृथक्पृथक् ॥ सर्व्वंसंमिश्रयेद्रक्षेद्भाजनेमृण्मयेनवे । पलमात्रमिदंप्रातर्भक्षयेद्वायथानलम् ॥ एतन्निषेवितं

हन्तिरोगानितान्नसंशयः। अम्लपित्तंज्वरंपित्तंरक्तपित्तमरोचकम्॥ वातरक्तंतृषांदाहंपा ण्डुरोगञ्चकामलाम्। क्षयंक्षपयतिक्षिप्रंशूलंचपरिणामजम्॥ नारिकेरस्यखण्डोऽयमश्वि भ्यांभाषितःपुरा। वर्णदोबृंहणोवृष्यःपुंस्त्वनिद्राबलप्रदः॥इतिबृहन्नारिकेरखण्डः१६७॥

नारियल की पिसी हुई गिरी ६४ तोले और छिले हुए पेठेके टुकड़े १२६ तोले इन दोनों को १६ तोले गौके घीमें भूनकर शुद्ध गौका दूध २५६ तोले और मिश्री १२८ तोले इसमें मिलावे फिर सबको एक साथ मन्दाग्नि में पाककरे पाक के होजाने पर शीतल करके छोटी इलायची धनियां आमला पित्त पापड़ा मोथा सुगन्धवाला खस चन्दन दाख सिंघाड़ा कशेरू दालचीनी तेजपात और कपूर इन सबका चूर्ण दोदो तोले मिलावे फिर सबको एक में मिलाकर मृत्तिका के नवीन पात्र में रक्खे इसको ४ तोले अथवा अपनी अग्नि के अनुसार प्रातः काल सेवन करने से अम्ल पित्त ज्वर पित्त रक्तपित्त अरुचि वातरक्त तृषा दाह पांडुरोग कामला क्षय तथा परिणामशूलका नाश होता है पूर्वकाल में अश्विनीकुमार ने इसको बनाया था यह वर्ण कोहित धातु तथा वीर्य्य वर्द्धक और पुरुषार्थ निद्रा तथा बलकारी होताहै इति वृहन्नारि केर खण्ड ॥ १६७ ॥

अथ पित्तश्लेष्म चिकित्सा ॥

अभयापिप्पलीद्राक्षासिताधान्ययवासकम्। मधुनाकण्ठदाहघ्नंपित्तश्लेष्महरंपरम्॥ पटोलयवधान्याकपिप्पल्यामलकानिच। एषांक्षौद्रयुतःक्वाथःपित्तश्लेष्महरःपरः॥ पित्त श्लेष्मवमीकण्डूकोठविस्फोटदाहनुत्। दीपनःपाचनःक्वाथःशृङ्गवेरपटोलयोः॥ पिप्पली खण्डपथ्याभिस्तुल्याभिर्मोदकःकृतः। पित्तश्लेष्महरोभुक्तोवह्निमान्द्यञ्चनाशयेत्॥ इत्य म्लपित्तश्लेष्मपित्ताधिकारः॥ १६८॥

पित्त श्लेष्म की चिकित्सा ॥

हड़ पीपल दाख मिश्री धनियां और जवासा इन सब को सहत के साथ चाटने से कंठदाह और पित्त श्लेष्मका नाश होताहै परवल इन्द्रजौ धनियां पीपल और आमला इन के काढ़ेमें सहत डाल कर पीनेसे पित्त श्लेष्मका नाश होताहै सोंठऔर परवल का काढ़ा पित्त श्लेष्म छर्दि खुजली चकत्ते विस्फोटक तथा दाहको नष्ट करताहै और दीपन तथा पाचन होताहै पीपल खांड़ और हड़ इनको समभाग लेकर मोदक बनावे इस्से पित्त श्लेष्म और मंदाग्नि का नाशहोताहै इतिअम्ल पित्त श्लेष्म पित्त धिकार॥ १६८ ॥

अथ राजयक्ष्माधिकारः तत्र राजयक्ष्मणोविप्रकृष्टंसन्निकृष्टञ्चनिदानमाह ॥

वेगरोधात्क्षयाच्चैवसाहसाद्विषमाशनात्। त्रिदोषोजायतेयक्ष्मागदोहेतुचतुष्टयात्॥ वेगोऽत्रवातमूत्रपुरीषाणिनिग्रहणातियदानर इतिचरकवचनात्। क्षयात्क्षीयतेऽनेने तिक्षयः। तेनातिव्यवायानशनेर्ष्यादयाधातुक्षयहेतवःक्षयशब्देनोच्यन्ते। साहसात्बल वतासममल्लयुद्धादितः। विषमाशनात्बहुस्तोकमकालंवाभुक्तंतद्विषमाशनम्। तस्मा त्त्रिदोषःसान्निपातिकः। हेतुचतुष्टयात्। अन्येऽपिहेतवोहेतुचतुष्टयएवान्तर्भवन्ति। यक्ष्मणःपर्य्यायाराजयक्ष्माक्षयशोषाः॥ १६९॥

राजयक्ष्माका अधिकार राजयक्ष्माके दूर वाले और समीपी कारण ॥

वात मूत्र तथा मल आदिक वेगका धारण मैथुन लंघन तथा ईर्षा आदिके द्वारा धातुक्षय बलवानके साथ मल्लयुद्ध आदिक साहसिक कार्य बहुत थोड़ा अथवा कुसमयका भोजन इनचारकारणों से त्रिदोषज राजयक्ष्मा नामरोग उत्पन्न होताहै इन्हीं चारकारणों में अन्यकारणभी जानने चाहिये राजयक्ष्मा क्षय और शोप यह इसके नामहैं ॥ १६९ ॥

यक्ष्मादीनां निरुक्तिमाह ॥

वैद्योऽप्यधिमतांयस्मात् व्याधेर्यत्नेनयक्ष्यते । सयक्ष्माप्रोच्यतेलोके शब्दशास्त्रविशारदैः ॥ यक्ष्यतेपूज्यते, राज्ञश्चन्द्रमसो यस्मादभूदेष किलामयः । तस्मात्तंराजयक्ष्मेति प्रवदन्ति मनीषिणः । क्रियाक्षय करत्वात्तु क्षय इत्यच्युतेबुधैः ॥ संशोषणाद्रसादीनां शोषइत्यभिधीयते ॥१७० ॥ यक्ष्मा आदि नामोंकी निरुक्ति ॥

इस रोगके कारण रोगियोंके द्वारा वैद्य यत्नपूर्वक पक्षित (पूजित) होताहै इसलिये इसरोगको यक्ष्मा कहतेहैं यह रोग पहले राजा अर्थात् चन्द्रमाके हुआथा इस्से इसको राजयक्ष्मा कहतेहैं यहरोग क्रियाओंके क्षयकरनेसे क्षय कहाजाताहै और यह रोग शरीरके रसादिकोंको सुखाताहै इसीसे इसे शोप कहते हैं ॥ १७० ॥

तस्यसम्प्राप्तिमाह । कफप्रधानैर्दोषैस्तुरुद्धेषुरसवर्त्मसु । अति व्यवायिनो वापि क्षीणेरेतस्य नन्तराः ॥ क्षीयन्ते धातवःसर्वे ततःशुष्यति मानवः । कफप्रधानैर्दोषैः रसवर्त्मसुरुद्धेषु अनन्तरा सर्व्वे धातवःक्षीयन्ते । ततोमानवः शुष्यति । कारणभूतस्य रसस्यक्षये कार्य्याणां रक्तादीनामनुक्रमेण क्षीयमाणत्वात् । मार्गावरोधे रसक्षयहेतुमाह चरकः। रसःस्रोतःसुरुद्धेषुस्वस्थानस्थोविदह्यते। सऊर्द्ध्वंकासवेगेनबहुरूपःप्रवर्त्तते॥ स्वस्थानस्थः हृदयस्थः कासंविनापि रसक्षयोभवति । मार्गावरोधकुपितवातेनरसस्य शोषणात् । उक्तञ्च वायोर्धातुक्षयात् कोपात्मार्गस्यावरणेनच । अनुलोमक्षयंदृष्ट्वा प्रति लोमक्षयावहः ॥ अति व्यवायिनो वा रेतसिक्षीणे प्रतिलोमक्रमेणानन्तराःसर्व्वे धातवोरसपर्य्यन्ताःक्षीयन्ते । तद्यथा। शुक्रेक्षीणे मज्जाक्षीयते । मज्जनिक्षीणे अस्थि क्षीयते एवंपूर्वंपूर्वं क्षीयते,ननु कार्यस्यशुक्रस्य क्षयेकथं कारणभूतानां मज्जादीनांक्षयः उच्यते शुक्रक्षयाद्वायुः कुप्यति । सवायुःसान्निध्यात् क्रमेणमज्जादीन् सर्व्वान्धातून्शोषयति। ततस्तदनन्तरं मानवःशुष्यति ॥ १७१ ॥

राजयक्ष्माकी संप्राप्ति ॥

कफप्रधान दोषोंकेद्वारा रसके मार्गोंके रुकजाने पर संपूर्ण धातु क्षीण होजातीहैं इस्से शोपरोग उत्पन्न होताहै अथवा बहुत मैथुनसे वीर्य्यके नष्टहोजानेपर संपूर्णधातु क्षीणहोतीहैं तब यह रोगउत्पन्न होताहै मार्गोंके रुकनेसे रसोंका क्षय होताहै यह चरकने कहाहै जैसे स्रोतोंके रुकजानेपर हृदय में स्थित रस दूषित होकर खांसीके वेगसे ऊपर और बहुत प्रकारोंसे निकलताहै स्रोतोंके रुकनेपरखांसी के बिनाभी कुपितवायुकेद्वारा रस सूखजाताहै क्योंकि कहा हुआहै कि स्रोतोंके रुकजानेसे और धातु-

ओंके क्षयसे वायुकुपित होताहै अनुलोमक्षयको देखकर प्रतिलोम क्षय होताहै जैसे बहुत मैथुनकरने वाले के वीर्य्य के क्षीणहोजानेपर उलटे क्रमसे रस पर्य्यन्त सम्पूर्ण धातु एकके उपरान्त एक क्षीण होतीहैं जैसे वीर्य्यके क्षीणहोनेपर मज्जा क्षीणहोतीहै मज्जाके क्षीणहोनेपर हड्डीक्षीण होतीहै इत्यादि क्रमसे पूर्व पूर्वधातु क्षीणहोती है अब यह सन्देह होताहै कि कार्य्यरूप वीर्य्यके क्षीणहोनेपर कारण रूप मज्जादिक धातुओं क्षीणहोतीहैं इसका उत्तर यहहै कि वीर्य्यके क्षयहोनेसे वायु कुपित होतीहै और वह वायु निकट होनेके कारण मज्जाआदि संपूर्ण धातुओंको क्रमसे सुखातीहै तबमनुष्यको शोष रोग होताहै ॥ १७१ ॥ पूर्व्वरूप माह ॥

श्वासांगसादकफसंश्रवतालुशोषवम्यग्निसादमदपीनसकासनिद्राः । शोषेभविष्य तिभवन्तिसचापिजन्तुःशुक्लेक्षणोभवतिमांसपरोरिरंसुः ॥ स्वप्नेषुकाकशुकशल्लकिनील कण्ठगृध्रास्तथैवकपयःकृकलासकाश्च । तंवाहयन्तिसनदीर्विजलांश्चपश्येच्छुष्कांस्त रूनपवनधूमदवार्दितांश्च ॥ १७२ ॥

राजयक्ष्माका पूर्व्वरूप ॥

राजयक्ष्मा होनेसे पहले श्वास शरीर में शिथिलता कफ थूकना तालुका सूखना छर्दि मन्दाग्नि मद पीनस खांसी निद्रा नेत्रोंकी श्वेतता मांस भोजन तथा मैथुन में इच्छा होतीहै और स्वप्नमें कौआ तोता सेई नीलकण्ठ गृद्ध बन्दर तथा गिर्गिटान यह इसको लेचलतेहैं और निर्ज्जल नदी सूखे तथा वायु धूम और दावाग्निसे व्याकुल वृक्ष उसको दिखाईपड़तेहैं यह लक्षण होतेहैं ॥१७२ ॥

पादयोःयक्ष्मिणो लक्षणमाह ॥

अंसपार्श्वाभितापश्चसन्तापःकरपादयोःज्वरःसर्व्वाङ्गिकश्चेतिलक्षणंराजयक्ष्मिणः॥ अंसयोःपार्श्वयोश्चाभितापःपीड़ाअत्रसकलधातुक्षयपूर्व्वकःसकलशरीरशोषोबोद्धव्यः । एतानित्रीणिलक्षणानिप्रायोभावित्वेनचरकेणोक्तानि ॥ सुश्रुतेनयक्ष्मणिषट्लक्षणान्यु क्तानिभक्तद्वेषोज्वरःश्वासःकासःशोणितदर्शनम् । स्वरभेदश्चजायन्तेषड्रूपेराजयक्ष्म णि ॥ उल्वणतयादोषाणांभेदाद्यक्ष्मणामेकादशलक्षणान्याह । स्वरभेदोऽनिलाच्छूलं सङ्कोचश्चांसपार्श्वयोः ॥ ज्वरोदाहोऽतिसारश्चपित्ताद्रक्तस्यचागमः । शिरसःपरिपूर्ण त्वमभक्तश्छन्दएवच ॥ कासःकण्ठस्यचध्वंसोविज्ञेयःकफकोपतः अनिलात्उल्वणात् । ए वंपित्तात्कफाच्च । यतआहसुश्रुतः । एकएवमतःशोषःसन्निपातात्मकोगदः । उद्रेकात्तत्र लिङ्गानिदोषाणांनिपतन्तिहि ॥ १७३ ॥

राजयक्ष्माके लक्षण ॥

राजयक्ष्मारोगमें कन्धे तथा पसलियोंमें पीड़ा हाथ पैरोंमें जलन और सर्वांग में ज्वर होताहै यह तीन लक्षण बहुधा होतेहैं इसलिये चरकने कहेहैं और सुश्रुतमें छः प्रकारके लक्षण कहेहैं जैसे भोजन में अरुचि ज्वरश्वास खांसी रुधिर थूकना और स्वर भेद यह छः लक्षण राजयक्ष्मामें होतेहैं दोषोंकी अधिकतासे राजयक्ष्मा के ग्यारह ११ लक्षणहैं वातके अधिकहोनेमें स्वर भेद शूल कन्धे तथा पसलियों में संकोच होताहै पित्तकी अधिकतामें रुधिर थूकना ज्वर दाह तथा अतीसार होता है

और कफकी अधिकता में शिरका भारीपन भोजनमें अरुचि खांसी और कंठभेद होता है सुश्रुतने कहाहै कि यक्ष्मारोग त्रिदोषज एकही होताहै परन्तु वातादि दोषोंकी अधिकता से अलग २ लक्षण होते हैं ॥ १७३ ॥

अथासाध्यंयक्ष्माणमाह ॥

एकादशभिरेभिर्वाषड्भिर्वापिसमन्वितम् ।त्रिभिर्वापीडितंलिङ्गैर्ज्वरकासासृगामयैः॥ जह्याच्छोपार्दितंजन्तुमिच्छन्सुविमलंयशः ॥ १७४ ॥

असाध्य राजयक्ष्माका लक्षण ॥

ऊपर कहेहुए ग्यारह लक्षण अथवा सुश्रुतके कहेहुए छःलक्षण या ज्वर खांसी और रुधिर थूकना इन तीन लक्षणों से युक्त राजयक्ष्मा वालेको वैद्य त्याग करदे ॥ १७४ ॥

तत्र विशेषमाह ॥

सर्व्वैरर्द्धैस्त्रिभिर्व्वापिलिंगैर्मांसबलक्षये । युक्तोवर्ज्यश्चिकित्स्यस्तुसर्वरूपोऽप्यतोऽन्यथा ॥ सर्वैर्लिंगैरेकादशभिःअर्द्धैःषड्भिस्त्रिभिर्ज्वरकासरुधिरवमनैः । अतोऽन्यथामांसबलेसतिसर्व्वरूपोऽपिनप्रत्याख्येयः किन्तुचिकित्स्यः । महाशनंक्षीयमाणमतीसारनिपीड़ितम् ॥ शूनमुष्कोदरञ्चैवयक्ष्मिणंपरिवर्ज्जयेत् । महाशनंक्षीयमाणमित्येकमसाध्यंलक्षणम् ॥ अतीसारनिपीड़ितमितिद्वितीयम् । यतउक्तम् मलायत्तंबलंपुंसांशुक्रायत्तञ्चजीवितम् । तस्मात्यत्नेनसंरक्षेत्यक्ष्मिणोमलरेतसी । शूनमुष्कोदरमितितृतीयम् । अथारिष्टमाह । शुक्लाक्षमन्नद्वेष्टारमूर्द्धश्वासनिपीड़ितम् ॥ कृच्छ्रेणबहुमेहन्तंयक्ष्माहन्तीहमानवम् । मेहन्तंशुक्रंक्षरन्तम् । शुक्लाक्षत्वाद्येकैकशोऽरिष्टलक्षणमाह । अवधिमाह । परंदिनसहस्रन्तुयदिजीवतिमानवः । सुभिषग्भिरुपक्रान्तस्तरुणःशोषपीड़ितः ॥ शोषपीड़ितोमानवश्चेत्तरुणोभवति । सुभिषग्भिरुपक्रान्तोभवति तदापरंदिनसहस्रंद्वितीयंदिनसहस्रंयदिजीवतितत्रजीवनविकल्पइत्यर्थः ।एतेनशोषपीड़ितोमानवश्चेत्तरुणोभवतिसद्वैद्यैश्चिकित्सितोभवतितदाप्रथमंदिनसहस्रंजीवेदेवेत्युक्तम् १७५॥

असाध्यता में विशेषता ॥

ऊपरकहेहुए ग्यारह छः अथवा तीन लक्षणों से युक्त यक्ष्मा वालेका मांस और बल क्षीण होगयाहो उसकी चिकित्सा नहीं करनीचाहिये परन्तु मांस और बलके होनेपर जो सम्पूर्ण लक्षण होंय तौभी चिकित्सा करनी चाहिये जो यक्ष्मा वाला बहुत आहार करनेपरभी क्षीणहोता चलाजाय वह असाध्य है जो यक्ष्मा में अतीसार होय तो असाध्य समझना चाहिये क्योंकि कहागयाहै कि मल के आधीन बल और वीर्य्य के आधीन जीवन होताहै इसलिये यक्ष्मा वालेके मल और वीर्य्य की रक्षायत्न पूर्व्वक करनी चाहिये जो यक्ष्मा में अंडकोश तथा उदरमें सूजन होय तो असाध्य जानियेजिस यक्ष्मा वालेके दोनोंनेत्र श्वेत होजायँ अन्नमें अरुचिहोय ऊर्ध्व स्वासचलेऔरबड़े कष्टसे बहुतसा वीर्य्य गिरे वह नहीं जीता है जो राजयक्ष्मा वाला तरुणहोय अच्छे वैद्यों से चिकित्सा कियाजाय तो एकहजार दिन से अधिक जीता है इससे यह सिद्ध होताहै कि जो राजयक्ष्मा वाला तरुण होवे और अच्छे वैद्यों से चिकित्सा कियाजाय तो एकहजारदिन अवश्य जीता है॥ १७५ ॥

अथ चिकित्सामाह ॥

ज्वरानुवन्धरहितंवलवंतंक्रियासहम्। उपक्रमेदात्मवन्तं दीप्ताग्निमकृशंनरम्॥ आत्मवन्तंयत्नवन्तंधृतिवन्तंवा ॥ १७६ ॥

चिकित्सा करनेके योग्य राजयक्ष्मा वाला ॥

जो राजयक्ष्मावाला ज्वर रहित वलवान क्रियाओंका सहनेवाला यत्नवान् दीप्ताग्नि और कृशता रहितहो वह चिकित्सा करने के योग्यहै ॥ १७६ ॥

अथ निदान विशेष शोषानाह ॥

व्यवायशोकवार्द्धक्यव्यायामाध्वप्रशोषितान्।.व्रणोरःक्षतसंज्ञौचशोषिणोलक्षणैःशृणु॥ व्रणशोषीउरःक्षतशोषीच ॥ १७७ ॥

कारणोंकी विशेषतासे यक्ष्माकी विशेषता ॥

मैथुन शोक वृद्धावस्था व्यायाम मार्गगमन घाव और उरक्षत इनके द्वारा जो शोषरोग उत्पन्न होताहै उसकेलक्षण अलग२ आगेकहतेहैं ॥ १७७ ॥

तत्रव्यवायशोषिणोलक्षणमाह ॥

व्यवायशोषीशुक्रस्यक्षयलिंगैरुपद्रुतः। पाण्डुदेहोयथापूर्वंक्षीयन्तेचास्यधातवः॥ शुक्रस्यक्षयलिंगैःसुश्रुतोक्तैः। तानियथाशुक्रक्षयेमेढ्रवृषणवेदनाव्यवायेचाशक्तिः। चिराद्वाप्रसेकःप्रसेकोऽल्पशुक्रदर्शनामिति । यथापूर्वंक्षीयन्तेचास्यधातवःप्रथमंशुक्रंक्षीयते पश्चाच्छुक्रक्षयजनितवायुनामज्जादयोऽपिधातवोयथापूर्वंक्षीयन्ते ॥ १७८ ॥

मैथुनकेशोष वालेकेलक्षण ॥

मैथुनकेद्वारा जिसको शोषहोताहै उसकेआगे लिखेहुए लक्षण होतेहैं जैसेलिंग तथा अंडकोशोंमें पीड़ा मैथुनमें अशक्त बहुतदेरमें थोड़ेसेवीर्य्यका गिरनाओर शरीरका पीलापन यहलक्षण होतेहैं और पूर्व २ के क्रमसेधातु क्षीण होती हैं अर्थात्पहले वीर्य्य क्षीणहोताहै फिरवीर्य्यके क्षीणहोनेसे कुपित वायुके द्वारा मज्जाआदिकधातु पूर्वके क्रमसे क्षीण होती हैं ॥ १७८ ॥

शोकशोषिणो लक्षणमाह ॥

प्रध्यानशील स्रस्तांगःशोकशोष्यपितादृशः। विनाशुक्रक्षयकृतैर्विकारैरुपलक्षितः॥ प्रध्यानशीलस्याभावेनशोकोजनितस्तद्ध्यानपरःस्रस्तांगःशिथिलांगः। तादृशःव्यवायशोषिसदृशः। तेनशुक्रादिसर्व्वधातुक्षययुक्तोभवति। परंशुक्रक्षयकृतैर्विकारैर्मेढ्रवृषणवेदनादिभिर्वर्ज्जितोभवतिव्याधिस्वभावात्॥ १७९ ॥

शोककेद्वारा होनेवाले शोषकेलक्षण ॥

शोकसेहोनेवाले शोषवाला इनआगे लिखेहुए लक्षणोंसे युक्तहोताहै जैसे जिसवस्तुकेलिये शोकहुआ होय उसका ध्यानकरना शरीरमें शिथिलता और वीर्य्यक्षयके लक्षणों से रहित मैथुनके शोषके लक्षण होते हैं ॥ १७९ ॥

जराशोषिणोलक्षणमाह ॥

जराशोषीकृशोमन्दवीर्य्यबुद्धिवलेन्द्रियः। कम्पनोरुचिमान्भिन्नकांस्यपात्रहतस्वरः॥

ष्ठीवतिश्लेष्मणाहीनंगौरवारुचिपीडितः। संप्रस्तुतास्यनासाक्षः शुष्करूक्षमलच्छविः॥ मन्दशब्दःस्वल्पार्थः। शुष्करूक्षमलच्छविःशुष्केरूक्षेमलच्छवीयस्यसःप्रसुप्तगात्रावयवः प्रसुप्तःस्पर्शाज्ञः॥ १८०॥

वृद्धावस्थासेहुए शोपकेलक्षण॥

जिसको वृद्धावस्थासे शोपउत्पन्न होताहै उसकेआगे कहेहुए लक्षणहोते हैं जैसे कि कृशता और वीर्य बुद्धि बल तथा इन्द्रियों की शक्तिकी अल्पता कम्प अरुचि फूटे कांसे के समान स्वर कफ रहित थूकना शरीरमें भारीपन मुख नासिका तथा नेत्रोंसे जल बहना और मल तथा वीर्यका सूखा तथा रूखा होना॥ १८०॥

अध्वशोषिणोलक्षणमाह॥

अध्वप्रशोपीस्रस्तांगःसम्भृष्टपरुपच्छविः। सम्भृष्टपरुपच्छविःप्रसुप्तगात्रावयवः शुष्कक्लोमगलाननः। सम्भृष्टस्येवपरुपाछविर्य्यस्यसः। प्रसुप्तगात्रावयवःप्रसुप्तःस्पर्शाज्ञः॥ १८१॥

मार्गसे हुए शोपवाले के लक्षण॥

मार्गचलनेसे होनेवाले शोपरोगमें शरीर की शिथिलता जलेहुए के समान छविका रूखापनहोना शरीर में स्पर्शका ज्ञान न रहना और क्लोम कंठ तथा मुखमें सूखापन यह सब लक्षण होते हैं१८१॥

अथ व्यायामशोषिणो लक्षणमाह॥

व्यायामशोपीभूयिष्ठमेभिरेवसमन्वितः। लिंगैरुरःक्षतकृतैःसंयुक्तश्चक्षतंविना॥ एभिरेवस्रस्तांगत्वादिभिरध्वशोपिलक्षणैरेवभूयिष्ठम् अत्यर्थम्॥ १८२॥

व्यायाम से हुए शोपके लक्षण॥

व्यायाम से हुए शोपमें मार्ग गमन से हुए शोप के संपूर्ण लक्षण अधिकतासे होतेहैं और क्षतको छोड़कर उरक्षतके भी संपूर्ण लक्षण होतेहैं॥ १८२॥

सनिदानंव्रणशोपमाह॥

रक्तक्षयाद्वेदनाभिस्तथैवाहारयन्त्रणात्।व्रणितस्यभवेच्छोपोसचासाध्यतमःस्मृतः १८३॥

कारण सहित घावसे हुए शोप का वर्णन॥

घाववाले को रुधिर के बहने से घाव की पीड़ासे और आहार के रोकने से शोप उत्पन्न होता है यह अत्यन्त असाध्यहै॥ १८३॥

उरःक्षतनिदानमाह॥

धनुपाद्यस्यतोऽत्यर्थंभारमुद्वहतेगुरुम्। युद्ध्यमानस्यबलिभिःपततोविपमोच्चतः॥ वृपंहयंवाधावन्तंदम्यंचान्यंनिगृह्णतः। शिलाकाष्ठाश्मनिर्घातान्क्षिपतोनिघ्नतःपरान्॥ अधीयानस्यचात्युच्चैर्दूरंवाव्रजतोद्रुतम्। महानदींवातरतोहयैर्वासहधावतः॥ सहसोत्पततोदूरंतूर्णञ्चापिप्रनृत्यतः। तथान्यैःकर्म्मभिःक्रूरैर्भृशमभ्याहतस्यवा॥ स्त्रीपुचातिप्रसक्तस्यरूक्षाल्पप्रमिताशिनः। विक्षतेवक्षसिव्याधिर्बलवान्समुदीर्य्यते॥ आयस्यतः आयासतः। आयासंकुर्व्वतःहयंवृपादिकम्। अन्यंगजोष्ट्रादिकम्शिलादीर्घपापाणःअश्मप्रस्तरखण्डः। निर्घातोऽस्त्रविशेषःव्याधिःउरःक्षताख्यः १८४॥

उरक्षत का निदान ॥

धनुष के खींचने आदिका परिश्रम भारी बोझे का उठाना बलवान के साथ युद्ध विषम अथवा ऊंचे स्थान से गिरना दौड़ते हुए बलवान बैल घोड़ा हाथी तथा ऊँट आदि को रोकना बड़े पत्थर काठ पत्थर के टुकड़े अथवा निर्घात नाम अस्त्र को फेंककर शत्रुओं को मारना बहुत ऊंचे स्वर से पढ़ना बहुत जल्दी दूरतक दौड़ना बड़ी नदीमें तैरना घोड़ोंके साथ दौड़ना एकाएकी बहुत दूरतक उछलना बहुत जल्दी नाचना तथा अन्य क्रूर कर्मों के द्वारा बहुत चोटसे बहुत मैथुन से और रूखे अथवा थोड़े भोजन से घावयुक्त हृदय में बलवान् उरक्षत नामरोग उत्पन्न होता है ॥ १८४ ॥

अथ उरःक्षतस्यलक्षणमाह ॥

उरोविरुज्यतेऽत्यर्थंभिद्यतेऽथविभज्यते । शूलंभवतितत्वादंशुष्यत्यंगंप्रवेपते ॥ प्रपीड्यतेततःपार्श्वेशुष्यत्यंगंप्रकम्पते । क्रमाद्वीर्य्यंबलंवर्णोरुचिरग्निश्चहीयते ॥ ज्वरोव्यथामनोदैन्यंविड्भेदोऽग्निवधस्तथा । दुष्टश्यावःसदुर्गन्धःपीतोविग्रन्थितोबहु ॥ कासमानस्यचाभीक्ष्णंकफःसासृक्प्रवर्त्तते । सक्षतःक्षीयतेऽत्यर्थंतथाशुक्रौजसोःक्षयात् ॥ विरुज्यतेपीड्यते । भिद्यतेविदार्य्यतइति । विभज्यतेद्विधाक्रियतइव । सक्षतःसपुरुषःक्षतः । उरःक्षतवान् । अत्यर्थंक्षीयतेक्षीणोभवति ॥ १८५ ॥

उरक्षत का लक्षण ॥

उरक्षत रोगमें छातीके भीतर टूटनेकीसी फटने कीसी तथा चीरनेकीसी पीड़ा होतीहै शूल पैरों का सूखना कम्प तथा पसलियोंमें पीडा होतीहै शरीर सूखताहै वीर्य्य बलवर्ण रुचि तथा अग्नि यह सबक्रम से क्षीण होतेहैं ज्वर पीडा मनमें ग्लानि मलभेद तथा मन्दाग्नि होतीहै खांसीके साथ दूषितधूमेला अथवा पीत वर्ण दुर्गन्धित गांठ युक्त रुधिर सहित बारम्बार बहुत सा कफ निकलताहै और वीर्य्य तथा ओजकेक्षयसे अत्यन्त क्षीणता होतीहै इसरोगका पूर्व्वरूप नहीं प्रकाशित होताहै १८५ ॥

अथोरःक्षतस्यविशिष्टंलक्षणमाह ॥

उरोरुक्शोणितच्छर्दिःकासोवैशेषिकःक्षते ।क्षीणेसरक्तमूत्रत्वंपार्श्वपृष्ठकटीग्रहः॥क्षते उरःक्षतवतिउरोरुक्शोणितच्छर्दिःकासोवैशेषिकःविशेषतःभवत्येवास्मिन्उरः क्षतवति क्षामकफशुक्रौजसांक्षयात्क्षीणेसरक्तमूत्रत्वंपार्श्वपृष्ठकटिग्रहश्चभवति ॥ १८६ ॥

उरक्षतका विशेष लक्षण ॥

उरक्षतवालेके छातीमें बहुत पीड़ा रुधिरकी छर्दि तथा बहुत खांसी होतीहै और क्षीण होजाने पर रुधिर सहित मूत्र निकलना और पसली पीठ तथा कमरमें पीड़ा होतीहै ॥ १८६ ॥

निदानविशेषेणोरः क्षतलक्षणमाह ॥

वेगरोधात्क्षयाच्चैवकोष्ठात्पूतिमलात्तथा । क्षतोरस्कस्यान्नपाकेनिःश्वासोयातिपूतिकः ॥ क्षयात्धातुक्षयहेतोरतिव्यवायोदितःकोष्ठात्प्रतिमलात्कोष्ठात्प्रतिमलवातेनप्रतिलोममलात्पूतिकः पूतिगन्धः ॥ १८७ ॥

निदानोंकी विशेषतासे उरक्षतका लक्षण ॥

वेगोंका रोकना तथा धातुओंके क्षयहोनेसे वातादिक दोष उलटे होकर उरक्षतको उत्पन्न करतेहैं इसमें अन्नके परिपाकके समय अत्यन्त दुर्गन्धित श्वास आताहै ॥ १८७ ॥

उरःक्षतस्यसाध्ययाप्यासाध्यलक्षणमाह ॥

अल्पलिंगस्यदीप्ताग्नेःसाध्योवलवतोनवः।परिसंवत्सरोयाप्यःसर्व्वलिङ्गंतुवर्ज्जयेत् १८८

उरक्षतका साध्य याप्य और असाध्य लक्षण ॥

दीप्ताग्नि तथा वलवान मनुष्यका नवीनथोड़े लक्षणवाला उरक्षत साध्यहोताहै एकवर्षकापुराना याप्य होताहै और संपूर्ण लक्षणोंसे युक्त उरक्षत असाध्य होताहै ॥ १८८ ॥

अथ राजयक्ष्मचिकित्सा ॥

वलिनोवहुदोषस्यपञ्चकर्माणिकारयेत् । यक्ष्मिणःक्षीणदेहस्यतत्कृतंस्याद्विषोपमम् ॥ मलायत्तंवलंपुंसांशुक्रायत्तञ्चजीवितम्।तस्माद्यत्नेनसंरक्षेद्यक्ष्मिणोमलरेतसी ॥ १८९ ॥

राजयक्ष्माकी चिकित्सा ॥

वहुत दोष युक्त वलवान यक्ष्मावालेकी वमन विरेचनादि पंच कर्म्मोंके द्वारा चिकित्सा करनी चाहिये परन्तु क्षीण शरीरवाले यक्ष्मा रोगीको वमनादिक पांचों कर्म्म विषके समान अहित कारीहैं मनुष्योंका वल वीर्य्यके आधीन [illegible] जीवन मलके आधीन होताहै इसलिये यक्ष्मावालेके मल और वीर्य्यकी रक्षायत्न पूर्व्वक करनी चाहिये ॥ १८९ ॥

शालिषष्टिकगोधूमयवमुद्गादयोहिताः।मद्यानिजाङ्गलाःपक्षिमृगाःपथ्याविशुष्यताम् १९०

शालि साठी गेहूंजौ और मूंगादिक मद्य जंगलीपक्षी तथा मृगोंके मांस राजयक्ष्मा वालेकोहितहैं १९०॥

सपिप्पलीकंसयवंसकुलत्थंसनागरम् । दाडिमामलकोपेतंस्निग्धंमाजंरसंपिवेत् ॥ तेनपुष्टिर्निवर्त्तन्तेत्रिकाराःपीनसादयः। द्रव्यतोद्विगुणंमांसंसर्व्वतोऽष्टगुणंजलम् ॥ पादस्थंसंस्कृतञ्चाज्येषडङ्गोयूषउच्यते॥ तथायवपल १। कुलत्थपल १। छागमांसपल ४।जल पल४८।शेषपल १२।ततःपलमितेघृतेसंस्कारणीयम्। तत्रकर्षमितंसैन्धवंदेयम् । सार्धहिंगुदेयम्।पिप्पलीनागरञ्चष्टथ्यांमलकदाडिमकल्कीकृत्यदेयम्। षडङ्गयूषः ॥ १९१ ॥

जौ तथा कुलथी एक २ पल वकरेका मांस चारपल और जल ४८ पल इनसवको एकसाथ पाककरे जब १२ पल जल वाकीरहे तब १ पल घी डालकर उसका संस्कार करे और १ तोले सैंधानोन थोड़ीसी हींग और पीपल तथा सोंठ आमला और अनारकारस एक २ मासे मिलाकर इस मांसके रसको सेवन करे इस्से पुष्टता होती है और पीनसआदिक रोग नष्ट होते हैं इति षडंगयूष ॥ १९१ ॥

ककुभत्वक्नागवलावानरीवीजंविचूर्णितम् । पयसा पीतंमधुघृतयुक्तंसहितंयक्ष्मादिकासहरम् ॥ छागमांसंपयश्छागंछागंसर्पिःसनागरम् । छागोपसेवीशयनंछागमध्येतुयक्ष्मनुत् ॥ मधुताप्यविडङ्गाश्मजतुलोहघृताभयाः । घ्नन्तियक्ष्माणमत्युग्रंसेव्यमानाहिताशिनः ॥ ताप्यंसुवर्णमाक्षिकम् शर्करामधुसंयुक्तंनवनीतंलिहन्क्षयी । क्षीराशीलभतेपुष्टिमतुल्येचाज्यमाक्षिके ॥ १९२ ॥

अर्जुनवृक्षकीछाल गुलशकरी और कवाँचके बीज इनके चूर्णको दूधकेसाथ पाक करके सहत घी और शक्कर मिलाकर खानेसे यक्ष्मा और खांसी आदि रोगोंका नाश होताहै बकरेका मांस बकरीका दूध सोंठ सहित बकरीका घी बकरों के साथ रहना और बकरों में सोना इनसबसे राजयक्ष्मा रोगका नाशहोता है सोनामक्खी वायविडंग शिलाजीत लोहकी भस्म और हड़ इनसबको सहत और घी के साथ चाटने से और पथ्य भोजन करनेसे अत्यन्त उग्र राजयक्ष्माका नाश होताहै शक्कर और सहत के साथ मक्खन चाटकर दूधपीने से और समतासे रहित घी तथा सहतको चाटकर दूध पीनेसे राजयक्ष्मावालेको पुष्टता होती है ॥ १९२ ॥

सितोपलातुगाक्षीरीपिप्पलीबहुलात्वचः । अन्त्यादूर्द्ध्वंद्विगुणिताश्चूर्णितामधुसर्पिषा ॥ लेहयेद्राजरोगार्त्तंकासश्वासज्वरातुरम् । पार्श्वशूलिनमल्पाग्निसुप्तजिह्वंरुचिच्युतम् ॥ हस्तपादांगदाहेचज्वरेरक्तेतथोर्द्ध्वगे । सितोपलामिश्री । बहुलासूक्ष्मैला । इति सितोपलादिरवलेहः ॥ १९३ ॥

मिश्री १६ भा० वंशलोचन ८ भा० पीपल ४ भा० छोटी इलायची दोभा० और दालचीनी १ भा० इनसबको सहत और घीके साथ चाटनेसे राजयक्ष्मा खांसी श्वास क्षय पसली की पीड़ा मंदाग्नि जिह्वास्तंभ अरुचि हाथ पैर तथा शरीरका दाह ज्वर और ऊर्ध्वगत रक्त पित्तका नाश होताहै इति सितोपलादि अवलेह ॥ १९३ ॥

जातीफलंविडंगानिचित्रकंतगरंतिलाः । तालीसंचन्दनंशुण्ठीलवंगमुपकुञ्चिका ॥ कर्पूरश्चाभयाधात्रीमरिचंपिप्पलीतुगा । एषामक्षसमाभागाश्चातुर्जातकसंयुताः॥ पलानिसप्तभृंगायाःसितासर्वसमामता । चूर्णमेतत्क्षयंकासंश्वासञ्चग्रहणीगदम् ॥ अरोचकंप्रतिश्यायंतथाचानलमन्दताम् । एतान्रोगान्निहन्त्येवहक्षमिन्द्राशनिर्यथा ॥ इतिजातीफलाद्यंचूर्णम् ॥ १९४ ॥

जायफल वायविडंग चीता तगर तिल तालीस चन्दन सोंठ लौंग कालाजीरा कपूर हड़ आमला मिर्च पीपल वंशलोचन दालचीनी इलायची तेजपात और नागकेशर यहसब तोले२भर भांगरा ७ पल और सबके बराबर मिश्री इस चूर्ण के खानेसे क्षय खांसी श्वास ग्रहणी अरुचि पीनस और मन्दाग्निका नाश होताहै इति जाती फलादि चूर्ण ॥ १९४ ॥

बालरोगाधिकारोक्तंतैलंलाक्षादियोजयेत् । अभ्यंगेयक्ष्मिणोनित्यंवृद्धवैद्योविशेषतः १९५

बालरोगों के अधिकार में कहाहुआ लाक्षादि तैल यक्ष्मा वालेको वृद्ध वैद्योंके उपदेशसे नित्य लगाना चाहिये ॥ १९५ ॥

वासकस्यरसप्रस्थंमाचिकासितशर्कराः।पिप्पल्याद्विपलंतावत्सर्पिषश्चशनैःपचेत् ॥ तस्मिन्लेहत्वमायातेशीतेक्षौद्रपलाष्टकम् । दत्वावतारयेद्वैद्योलीढ़ालेहोऽयमुत्तमः ॥ हन्त्येवराजयक्ष्माणंकासंश्वासंचदारुणम् । पार्श्वशूलंचहच्छूलंरक्तपित्तंज्वरंतथा ॥ वासावलेहः ॥ १९६ ॥

वांसे का रस तथा मिश्री दोनों चौसठ २ तोले और पीपल तथा घी आठ २ तोले इनसबको धीरे २ पाककरे जब अवलेह बनजाय तब शीतलहोजानेपर बत्तीस तोले सहतडालकर चाटे इससे

राजयक्ष्मा खांसी श्वास पसली तथा हृदयकी पीड़ा रक्त पित्त और ज्वरका नाश होता है इति वांसा अवलेह ॥ १९६ ॥

अथ व्यवायादिहेतुकशोपचिकित्सा ॥

तत्रव्यवायशोषिणंक्षीरसमांसाज्यभोजनैः। सुकूलैर्मधुरैर्हृद्यैर्जीवनीयैरुपाचरेत् ॥ रसःमांसरसःसुकूलैर्हितैः ॥ १९७ ॥

मैथुनादिसे उत्पन्न राजयक्ष्माकी चिकित्सा ॥

मैथुनसे हुए राजयक्ष्मावालेकी चिकित्सा मांस रस घी मधुर हितकारी तथा हृदय को हितकारी भोजनोंसे और जीवनीय गणसे करनी चाहिये ॥ १९७ ॥

अथ शोकशोषचिकित्सा ॥

हर्षणैःश्वसनैःक्षीरैःस्निग्धैर्मधुरशीतलैः।दीपनैर्लघुभिश्चान्नैःशोषरोगमुपाहरेत्१९८॥

शोकसे हुए राजयक्ष्माकी चिकित्सा ॥

हर्ष आश्वासवाक्य और दूध स्निग्ध मधुर शीतल हलकी तथा दीपन वस्तुओंकेद्वारा शोषसे हुए राजयक्ष्माकी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ १९८ ॥

अथ व्यायामशोषचिकित्सा ॥

व्यायामशोषिणंस्निग्धैःक्षतक्षयहितैर्हिमैः।उपाचरेज्जीवनीयैर्विधिनाश्लेष्मिकेनतु१९९॥

व्यायामसे हुए राजयक्ष्माकी चिकित्सा ॥

स्निग्ध तथा शीतल वस्तुओंसे जीवनीय गणसे और क्षत क्षय तथा कफकी चिकित्सा की विधिसे व्यायामसे होनेवाले राजयक्ष्माकी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ १९९ ॥

अध्वशोषचिकित्सा ॥

आस्यासुखैर्दिवास्वप्नैःशीतैर्मधुरबृंहणैः। अन्नमांसरसाहारैरध्वशोषमुपाचरेत्२००॥

मार्गचलनेसे होनेवाले राजयक्ष्माकी चिकित्सा ॥

शीतल मधुर तथा धातुवर्द्धक अन्न तथा मांसके रसके भोजनसे सुखपूर्व्वक बैठानेसे और दिनमें सुलानेसे मार्ग चलनेसे होनेवाले राजयक्ष्मा की चिकित्साकरे ॥ २०० ॥

व्रणशोष चिकित्सा ॥

व्रणशोषंजयेत्स्निग्धैर्दीपनैःस्वादुशीतलैः।ईषदम्लैरनम्लैर्वायूषमांसरसादिभिः॥२०१॥

व्रणसे हुये राजयक्ष्माकी चिकित्सा ॥

स्निग्ध दीपन मधुर तथा शीतल वस्तुओंसे कुछ खट्टे अथवा खटाई रहित यूषोंसे और मांसके रसादिकोंसे घावसे होनेवाले राजयक्ष्माकी चिकित्साकरे ॥ २०१॥

अथोरःक्षत चिकित्सा ॥

बलाश्वगन्धाश्रीपर्णीबहुपुत्रीपुनर्नवा। पयसानित्यमभ्यस्ताःशमयन्तिक्षतक्षयम् ॥ श्रीपर्णीकम्भारि। बहुपुत्रीशतावरी। इतिबलादिचूर्णम् ॥ २०२ ॥

उरक्षतकी चिकित्सा ॥

बरियारा असगंध गंभारी सतावर और पुनर्नवा इनसबको दूधके साथ नित्य सेवन करने से उरक्षतका नाश होता है इति बलादि चूर्ण ॥ २०२ ॥

एलापत्रत्वचोर्ध्वांक्षापिपल्यर्द्धपलंपृथक् । सितामधूकखर्ज्जूरमृद्वीकाश्चापलोन्मिताः ॥ संचूर्ण्यमधुनायुक्तावटिकाःसम्प्रकल्पयेत्। अक्षमात्राततश्चैकांभक्षयेत्तुदिनेदिने॥ क्षतंक्षयंज्वरंकासंश्वासंहिक्कांवामिंभ्रमम्। मूर्च्छांमदंतृषांशोषंपार्श्वशूलमरोचकम्॥ प्लीहानमाढ्यवातंचरक्तपित्तंस्वरक्षयम् । एलादिगुटिकाहन्तितृष्यासन्तर्पणीपरा ॥ इति एलादिगुटिका ॥ २०३ ॥

इलाइची तेजपात तथा दालचीनी यह तीनों छः२मासे पीपल दो तोले शक्कर मुलहठी खजूर तथा दाख चार चार तोले इन सबको पीसकर सहत के साथ एक एक तोले की गोली बनावे एक गोली रोज खानेसे क्षत क्षय ज्वर खांसी श्वास हिचकी छर्दि भ्रम मूर्च्छा मद तृषा शोष पसलीकी पीड़ा अरुचि प्लीहा आढ्य वात रक्त पित्त तथा स्वर भेद का नाशहोताहै और वीर्य्य की वृद्धि तथा सन्तर्पण होताहै इतिएलादि गुटिका ॥ २०३ ॥

द्राक्षायाःप्रस्थमेकन्तुमधुकस्यपलाष्टकम् । पचेत्तोयाढकेशुद्धेपादशेषेणतेनतु ॥ पलिकेमधुकद्राक्षेपिष्टेकृष्णापलद्वयम् । प्रदायसर्पिषःप्रस्थंपचेत्क्षीरेचतुर्गुणे॥ सिद्धेशीते पलान्यष्टौशर्करायाःप्रदापयेत्। एतद्द्राक्षाघृतंसिद्धंक्षतक्षीणसुखावहम्॥ वातंपित्तंज्वरं श्वासंविस्फोटकहलीमकान् । प्रदरंरक्तपित्तञ्चहन्यात्मांसबलप्रदम् ॥ इतिद्राक्षादि घृतम्॥ २०४ ॥

दाख ६४ तोले मुलहठी ३२ तोले इन दोनों को२५६ तोले जलमें औटावे जब चौथाईबाकी रहै तब मुलहठी तथा दाख चारचार तोले और पीपल आठ तोले इनसबको पीसकर उसमेंमिलावे और ६४ तोले घी और इसका चौगुना दूध डालकर इसका पाककरे जब पाक होकर शीतल होजाय तब ३२ तोले शक्कर मिलावे इस घृतके सेवनसे क्षत क्षीणवायु पित्त ज्वर श्वास विस्फोटक हलीमक प्रदर तथा रक्त पित्तका नाशहोताहै और मांस तथाबल की वृद्धि होती है ॥ इति द्राक्षादिघृत ॥ २०४ ॥

क्षीरधात्रीचमञ्जिष्ठाक्षीरिणाञ्चतथारसैः । पचेत्समैर्घृतंप्रस्थंमधुरैःकर्षसम्मितैः॥ द्राक्षाद्विचन्दनोशीरैःशर्करोत्पलपद्मकैः । मधूककुसुमानन्ताकाश्मरीतृणसंज्ञकैः ॥ प्रस्थार्द्धमधुनःशीतेशर्करार्द्धतुलांतथा । पलार्द्धिकांश्चसञ्चूर्ण्यत्वगेलापद्मकेशरान्॥विनीयतत्रसंलिह्यान्मात्रांनित्यंसुयन्त्रितः । अमृतप्राशमित्येतदश्विभ्यांपरिकीर्तितम् ॥ क्षीरमांसाशिनांहन्तिरक्तपित्तंक्षतंक्षयम्। तृष्णारुचिश्वासकासछर्दिमूर्च्छाप्रमर्द्दनम्॥ मूत्रकृच्छ्रज्वरघ्नञ्चबल्यंस्त्रीरतिवर्द्धनम्। अमृतप्राशावलेहः ॥ २०५ ॥

दूध घी आमलेकारस मजीठ का रस तथा क्षीरीवृक्षोंका रस यह सबचौंसठ २ तोले इनमें जीवक दाख दोनों चन्दन खस शक्कर कमल पद्माक महुएके फूल धमासा गम्भारी रोहित तृण इन सबका एक२तोले कल्क मिलाकर पाककरे पाकके शीतल होजानेपर ३२ तोले सहत २०० तोले शक्कर और दालचीनी इलायची तेजपात तथा नागकेशर यहसब दोदोतोले मिलावे यह अमृतप्राशअवलेह अश्विनी कुमारने बनाया है इसको मात्राके अनुसार खाकर दूध तथा मांसका आहारकरने

से रक्त पित्त उरक्षत क्षय तृषा अरुचि श्वास खांसी छर्दि मूर्च्छा शरीरकी पीडा मूत्र कृच्छ्र तथा ज्वरका नाश होताहै और वल तथा मैथुन शक्ति की वृद्धि होतीहै इति अमृत प्राशावलेह ॥२०५॥

यद्यच्चतर्पणंशीतमविदाहिहितंलघु । अन्नपानंनिषेव्यंस्यात्क्षतक्षीणैःसुखार्थिभिः ॥ शोकंस्त्रियःक्रोधमसूयतांचत्यजेदुदारान्विषयान्भजेच । तथाद्विजातींस्त्रिदशान्गुरूंश्चवाचश्चपुण्याःशृणुयाद्द्विजेभ्यः ॥ २०६ ॥

उरक्षतवाला मनुष्य शीतल विदाहरहित हितकारी हलके तथा तृप्तकारी अन्नपानका सेवनकरे शोक क्रोध स्त्रीप्रसंग तथा ईर्षाका त्यागकरे उत्तम विषयोंका सेवनकरे और ब्राह्मण देवता तथा गुरुओंका पूजन करे और ब्राह्मणोंसे पवित्र कथाओंको सुने ॥ २०६ ॥

राजयक्ष्मणिःरसाः ॥

रसभस्मामृतासत्वंलोहंमधुघृतान्वितम् । अमृतेश्वरनामायंषड्गुञ्जोराजयक्ष्मणि रसभस्ममारितोरसः । अमृतासत्वंगुडूचीसत्वम् । लोहंमारितम् । अमृतेश्वररसोराजयक्ष्मणिरसेन्द्रचिन्तामणौ ॥ २०७ ॥

राजयक्ष्मापररस ॥

पारेकीभस्म गिलोयकासत्त और लोहेकी भस्म इनको सहत और घी के साथ छः रत्तीखाने से राजयक्ष्माका नाश होता है इति अमृतेश्वररस ॥ २०७ ॥

त्र्यंशोऽशोमारितात्सूतादेकोंऽशोहेमभस्मतः । एकोंऽशोमृतताम्रस्यशिलागंधश्चतालकम् ॥ प्रत्येकंभागयुग्मंस्यादेतत्सर्व्वंविचूर्णयेत् । वराटीः पूरयेत्तेनछागीक्षीरेणटङ्कणम् ॥ पिष्ट्वातेनमुखंरुद्ध्वामृद्भाण्डेताश्चधारयेत् । कुर्य्यात्पचेत्गजपुटेस्वाङ्गशीतंसमुद्धरेत् ॥ रसोराजमृगाङ्कोऽयंचतुर्गुञ्जःक्षयापहः । मरिचैरूनविंशत्याकणाभिर्दशभिस्तथा ॥ मधुनासर्पिषाचापिदद्यादेतंरसंभिषक् । अनेननश्यतिक्षिप्रंवातश्लेष्मभवःक्षयः ॥ इतिराजमृगाङ्कोरसोराजयक्ष्मणिरसेन्द्रचिन्तामणौ ॥ २०८ ॥

पारेकीभस्म ३ भा० सोने तथा तांबेकीभस्म एक २ भा० मैनशिल गन्धक तथा हरिताल दोदो भा० इनसबको एकसाथ पीसकर कौडियों में भरदेवे फिर बकरीके दूधमें सुहागेको पीसकर उस सुहागेसे कौडियोंके मुखको बन्दकरके मट्टीके पात्रमें रखकर गजपुटमें पाककरे फिर शीतल होजाने पर निकालकर चाररत्तीरस उन्नीस मिर्चे तथा १० पीपल घी और सहतके साथ खाय इसके द्वारा वात कफसे होनेवाले राजयक्ष्माका शीघ्रही नाश होता है इति मृगांकरस ॥ २०८ ॥

शुद्धंसूतंद्विधागन्धंकुर्य्यात्खल्वेनकज्जलीम् । तयोःसमंतीक्ष्णचूर्णंमर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ॥ द्वियामसातपेगोलंताम्रपात्रेनिधापयेत् । आच्छाद्यैरण्डपत्रेणस्यादुष्णंयामयुग्मतः ॥ धान्यराशौन्यसेत्पश्चादष्टरात्रात्तदुद्धरेत् । सञ्चूर्ण्यगालयेद्वस्त्रेःसत्यंवारितरंभवेत् ॥ त्रिकटुत्रिफलैलाभिर्जातीफललवंगकैः । नवभागोन्मितैरेभिःसमैरेपरसोभवेत् ॥ निष्कद्वयमितंनित्यंमधुनासहलेहयेत् । अयमग्निरसोनाम्नाकासक्षयहरःपरः ॥ इतिअग्निरसःशार्ङ्गधरे । इतिराजयक्ष्माधिकारः ॥ २०९ ॥

शुद्धपारा १ भा० गन्धक दोभाग इनदोनोंकी कजली करे फिर इनदोनोंकी बराबर लोहेकी भस्म मिलाकर घीकारके रसमें घोटे और गोलासा होजानेपर तांबेके पात्र में रखकर दोपहरतक धूप में सुखावे फिर रेंडीके पत्तोंसे ढककर गरमही गरम उसको धान्यराशिमें रखदे फिर आठदिनके पीछे निकालकर पीसके कपड़े में छानले तब यह निसन्देह पानीमें तैरने लगताहै इसके उपरान्त त्रिकटु त्रिफला इलायची जायफल तथा लौंग यहसब समभाग और इनसबकी बराबर यहरस मिलावै और सहत के साथ चार चार मासे रोजखाय इस्से खांसी और राजयक्ष्माका नाश होता है इति अग्निरस इति राजयक्ष्माधिकार ॥ २०९ ॥

अथ कासाधिकारः। तत्रकासस्यनिदानसम्प्राप्तिपूर्व्वकंसामान्यलक्षणमाह ॥

धूमोपघाताद्रजसस्तथैवव्यायामरूक्षान्ननिषेवणाच्च। विमार्गगत्वादतिभोजनस्यवेगावरोधात्क्षवथोस्तथैवच ॥ प्राणोह्युदानानुगतःप्रदुष्टःसभिन्नकांस्यस्वनतुल्यघोषः। निरेतिवक्त्रात्सहसासदोषःमनीषिभिःकासइतिप्रदिष्टः॥सदोषःस्तादृक्प्राणानिलरूपः२१०॥

खांसीका अधिकार। खांसीका निदान संप्राप्ति पूर्व्वक सामान्य लक्षण ॥

४ मुख तथा नासिका में धुयें तथा धूलके जानेसे व्यायामसे रूखा अन्नखानेसे वेगोंके तथा छींकके रोकनेसे और बहुत भोजनके अपने मार्गके अनुसार पेटमें नजानेसे दोष सहित प्राण वायु उदानके साथ फूटे कांसेके समान शब्द करती हुई हठपूर्व्वक मुखसे निकलतीहै इसीको पंडित लोग खांसी कहते हैं ॥ २१० ॥

संख्यामाह ॥

पञ्चकासाःस्मृतावातपित्तश्लेष्मक्षतक्षयैः। क्षयायोपेक्षिताःसर्वेबलिनश्चोत्तरोत्तरम्॥ क्षयायराजयक्ष्मणे ॥ २११ ॥

खांसी की संख्या ॥

खांसी ५ प्रकारकी होती है जैसे वातज पित्तज कफज क्षतज और क्षयज यह पांचों उत्तरोत्तर बलवान हैं इनकी उपेक्षा करनेसे राजयक्ष्मा रोग उत्पन्न होताहै ॥ १११ ॥

अथ पूर्व्वरूपमाह ॥

पूर्व्वरूपंभवेत्तेषांशूकपूर्णगलास्यता। कण्ठेकण्डूश्चभोज्यानामवरोधश्चजायते ॥ कवलागिलनेकण्ठव्यथा ॥ २१२॥

खांसीका पूर्व्व रूप ॥

खांसीहोनेके पहले गले तथा मुखमें कॉंटेसे पड़ना गलेमें खुजली और भोजन करनेके समय गलेमें पीड़ा यह लक्षण होतेहैं ॥ २१२ ॥

अथ वातिकस्यरूपमाह ॥

हृच्छङ्खपार्श्वोदरमूर्द्धशूलीक्षामाननःक्षीणबलस्वरौजाः। प्रसक्तवेगस्तुसमीरणेन भिन्नस्वरःकासतिशुष्कमेव ॥ शंखोललाटैकदेशःशुष्कंश्लेष्मादिरहितम्॥ २१३ ॥

वातज खांसीके लक्षण ॥

वातज खांसीमें हृदय शंख (शिरकी हड्डियां) पसली उदर तथा शिरमें पीड़ा मुखमें क्षीणता बल स्वरतथा ओजकीक्षीणताऔरवेगपूर्व्वक स्वरभेद सहित सूखी खांसीआना यहलक्षणहोतेहैं२१३॥

पैत्तिकस्यरूपमाह ॥

उरोविदाहज्वरवक्त्रशोषैरभ्यर्दितस्तिक्तमुखस्तृषार्त्तः। पित्तेनपीतानिवमेत्कटूनिकासे त्सपाण्डुःपरिदह्यमानः । सपाण्डुःपाण्डुरोगयुक्तः ॥ २१४ ॥

पित्तज खांसीके लक्षण ॥

छातीमेंदाह ज्वर मुखकासूखना तथा तिक्तता तृषाशरीरमें दाह पांडुवर्ण और खांसीमें पीले तथा कडुए कफका गिरना यह पित्तज खांसीके लक्षणहैं ॥ २१४ ॥

श्लैष्मिकस्यरूपमाह ॥

प्रलिप्यमानेनमुखेनसीदत्शिरोरुजार्त्तःकफपूर्णदेहः । अभक्तरुङ्नीरवकण्डुयुक्तः कासेद्भृशंसान्द्रकफःकफेन ॥ प्रलिप्यमानेनमुखेनश्लेष्मलिप्तेनमुखेनोपलक्षितः । अभक्तरुक्नभक्तेरुक्रुचिर्यस्यसः कण्डूकण्ठएवच ॥ २१५ ॥

कफज खांसीके लक्षण ॥

मुखका कफसे लिपा रहना शिरमें पीड़ा देहमें कफभरा हुआसा मालूम पड़ना भोजनमें अरुचि भारीपन गलेमें खुजली और खांसीमें बहुत गाढ़े कफका निकलना यहकफज खांसीकेलक्षणहैं २१५॥

क्षतकासस्यनिदानपूर्वकांसम्प्राप्ति माह ॥

अतिव्यवायभाराध्वयुद्धाश्वगजनिग्रहैः । रूक्षस्योरःक्षतंवायुर्गृहीत्वाकासमावहेत् ॥ अश्वगजयोर्निग्रहोदमनम् ॥ २१६ ॥

उरक्षतकी खांसीका निदान और संप्राप्ति ॥

बहुत मैथुन भारउठाना मार्गगमन युद्ध और हाथी तथा घोड़ेका रोकना इनकारणोंसे वात रूखे पुरुषके उरक्षत उत्पन्न करके खांसीको उत्पन्न करतीहै ॥ २१६ ॥

लक्षणमाह ॥

सपूर्वंकासतेशुष्कंततःष्ठीवेत्सशोणितम् । कण्ठेनकूजत्यत्यर्थंविभग्नेनेवचोरसा ॥ सूचीभिरिवतीक्ष्णाभिस्तुद्यमानेनशूलिना । दुःखस्पर्शेनशूलेनभेदपीडाभितापिना ॥ पर्वभेदज्वरश्वासतृष्णावैस्वर्य्यपीडितः । पारावतइवाकूजन्कासवेगात्क्षतोद्भवात् ॥ कण्ठेनेत्युपलक्षणेतृतीयाएवमुरसेति ॥ २१७ ॥

क्षतज खांसीका लक्षण ॥

उरक्षतकी खांसीमें पहले सूखी खांसी आतीहै फिर रुधिर सहित थूक निकलता है गले में बहुत पीड़ाहोतीहै छातीमें टूटनेके समान तथा सुई गड़ने के समानपीड़ा तथा स्पर्शकी असह्यता होतीहै शूल तथा टूटने कीसी पीड़ासे व्याकुलता होतीहै पोरुओं का टूटना ज्वर श्वास तृषा तथा स्वरभंग होताहै और खांसीके वेगमें कबूतरके समान गलेसे शब्द निकलताहै यह लक्षण होतेहैं ॥ २१७ ॥

क्षयकासस्यनिदानपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥

विषमासात्म्यभोज्यातिव्यवायाद्वेगनिग्रहात् । घृणिनांशोचतांनृणांव्यापन्नेऽग्नौत्रयोमलाः ॥ कुपिताःक्षयजंकासंकुर्य्युर्देहक्षयप्रदम् । घृणिनांविचिकित्सायुक्तानां ॥२१८॥

क्षयज खांसीकी निदान पूर्वक संप्राप्ति ॥

विपम तथा असात्म्य भोजन अत्यन्त मैथुन मलमूत्रादि वेगोंका रोकना सन्देह और शोकके द्वारा अग्निके विगडने पर तीनों दोप कुपित होकर देहकी क्षय करनेवाली क्षयज नामखांसीको उत्पन्न करते हैं २१८ ॥

लक्षणमाह ॥

सगात्रशूलज्वरमोहदाहप्राणक्षयश्चोपलभेत्सकासी । शुष्कंविनिष्ठीवतिनिर्बलस्तुप्रक्षीणमांसोरुधिरंप्रपूयम्॥तंसर्वलिङ्गंभृशदुश्चिकित्स्यंचिकित्सितज्ञाक्षयजंवदन्ति२१९

क्षयकी खांसीका लक्षण ॥

शरीरमें पीडा ज्वर मोह दाह निर्बलता देहका सूखना मांसकी क्षीणता तथा पीपसहित रुधिरका थूकना और प्राणक्षय यह क्षयकी खांसीके लक्षणहैं इन सब लक्षणोंसे युक्त इस खांसीको वैद्य लोग अत्यन्त कठिनतासे चिकित्सा करनेके योग्य कहतेहैं ॥ २१९ ॥

असाध्यसाध्ययाप्यत्वमाह ॥

इत्येपक्षयजःकासःक्षीणानांदेहनाशनः । साध्योबलवतांवास्याद्याप्यस्त्वेवंक्षतोत्थितः ॥ एवंक्षतोत्थितःक्षीणानामसाध्यः । बलवतांसाध्योयाप्योवास्यात् ॥ नवाकदाचित् सिध्येतामपिपादगुणान्वितो सिध्येताक्षतजक्षयजौसद्वैद्यः सद्भेषजःसत्परिचारकयुक्तस्यसदातुरस्यजातौ ॥ "स्थविराणांजराकासःसर्वोयाप्यःप्रकीर्त्तितः" स्थविराणांजराकासःवृद्धानांयःकासोभवतिसजराकाससंज्ञःससर्वएववातजादिरपियाप्यः ॥ २२० ॥

साध्य असाध्य और याप्य लक्षण ॥

क्षयकी खांसी क्षीण मनुष्योंको असाध्य और बलवानोंको साध्य अथवा याप्य होतीहै क्षत तथा क्षयसे हुई खांसी जोथोड़ेदिनकी होय और सद्वैद्य उत्तमऔषध अच्छा परिचारक तथा वैद्यकी आज्ञा माननेवाला रोगी होय तोकभीकभी साध्यहोतीहै वृद्धपुरुषोंकी खांसीको जराकास कहतेहैं वहवातज आदिक सब याप्यहैं ॥ २२० ॥

त्रीनूपूर्वान्साधयेत्साध्यान्पथ्यैर्याप्यास्तुयापयेत् । स्वल्पोऽपिकासःउपेक्षणीयोनभवति ॥ किन्तुशीघ्रंप्रतिकरणीयइत्याह । ज्वरारोचकहृल्लासस्वरभेदक्षयादयः ॥ भवन्तुपेक्षयायस्मात्तस्मात्त्वरयाजयेत् ॥ २२१ ॥

वातज पित्तज तथा कफज यह तीन प्रकारकी खांसी साध्यहैं इस लिये इनकी चिकित्सा करनी चाहिये और याप्य खांसीको पथ्यकेद्वारा रोकेरहै थोड़ीसीभी खांसीकी उपेक्षा न करे किन्तु शीघ्रही उसका यत्नकरे क्योंकि कहा गयाहैकि खांसीकी उपेक्षा करनेसे ज्वर अरुचि मतली स्वरभेद और क्षय आदिक रोग उत्पन्न होतेहैं इसलिये शीघ्रही उसकी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ २२१ ॥

अथकासस्यचिकित्सा ॥ तत्रवातकासस्य चिकित्सा ॥

वास्तुकोवायसीशाकंमूलकंसुनिषण्णकम् । स्नेहास्तैलादयोभक्ष्याःतथेक्षुरसगौडिकाः ॥ दध्यारनालाम्लफलंप्रसन्नापानमेवच । शस्यतेवातकासेपुस्वाद्वम्ललवणानिच॥ वायसीशाकंमाचीकवैयाइतिलोके । सुनिषण्णकंसिरुआइतिलोके । शाकविशेपः ॥

चाङ्गेरीसदृशःपत्रैःसुनिषण्णंचतुर्दलम्। शाकोजलान्वितेदेशेचतुष्पत्रीतिचोच्यते ॥ चौपत्तीयाइतिलोके ॥ २२२ ॥ वातकी खांसीकी चिकित्सा ॥

बथुई केवैया मूली चौपातिया तेल आदिक स्नेह ऊखका रस गुड़ के बनेहुए भोजनके पदार्थदही आर्नाल खट्टेफल पना और मधुर खट्टे और लवण रस युक्त पदार्थ वातज खांसी में हितकारी हैं चौपातिया जल सहित स्थान में उत्पन्न होताहै इसमें चांगेरीके समान चारपत्ते होतेहैं ॥ २२२ ॥

ग्राम्यानूपोदकैःशालियवगोधूमषष्टिकान् । रसैर्माषात्मगुप्तानांयूषैर्वाभोजयेत्भिषक् ॥ ग्राम्यानूपोदकैरसैरित्यन्वयः । आत्मगुप्ताकिवांचइतिलोके ॥ दशमूलीकृताश्वासकासहिक्कारुजापहा । यवागूर्दीपनीवृष्यावातरोगविनाशिनी ॥ रसःकर्कटकानांवाघृतभृष्टःसनागरः । वातकासप्रशमनःशृङ्गीमत्स्यास्यवायुनः ॥ २२३ ॥

शालि धान्य जौ गेहूं और सांठी को जंगली अनूप देशके तथा जलके जीवों के मांसके साथ अथवा उर्द तथा किवांच के बीज के यूषके साथ भोजन करावे दशमूलके काढ़ेसे पाककी गई यवागू श्वास खांसी हिचकी तथा वात रोगों को नष्ट करतीहै और वीर्य्य तथा अग्नि को बढ़ाती है केकड़ा अथवा सींगवाली मछली का रस घी में परिपाक किया हुआ सोंठके साथ खानेसे वातकी खांसीका नाश होता है ॥ २२३ ॥

अथ पित्तकासस्य चिकित्सा ॥

कण्टकारीयुगंद्राक्षावासाकर्चूरबालकैः । नागरेणचपिप्पल्याक्कथितंसलिलंपिबेत् ॥ शर्करामधुसंयुक्तंपित्तकासहरंपरम् ॥ २२४ ॥

पित्तकी खांसीकी चिकित्सा ॥

दोनों भटकटैया दाख वांसा कपूर सुगन्धबाला सोंठ और पीपल इनके काढ़े में शक्कर और सहत डालकर पीनेसे पित्तकी खांसीका नाश होताहै ॥ २२४ ॥

अथ कफकासस्यचिकित्सा ॥

पिप्पलीकट्फलंशुण्ठीशृंगीभार्ङ्गीतथोषणम् । करवीकण्टकारीचसिन्दुवारोयवानिका ॥ चित्रकोवासकश्चैषांकषायंविधिवत्कृतम् । कफकासविनाशायपिबेत्कृष्णारजोयुतम्॥पिप्पल्यादिक्काथः॥ २२५ ॥ कफकी खांसीकी चिकित्सा ॥

पीपल कायफल सोंठ काकड़ासिंगी भारंगी मिर्च कालाजीरा भटकटैया निर्गुण्डी अजवाइन चीता और वांसा इनसबका विधि पूर्व्वक क्वाथ बनाकर पीपल का चूर्ण मिलाकर पीने से कफकी खांसी का नाश होताहै इति पिप्पल्यादि क्वाथ ॥ २२५ ॥

क्षतजकास चिकित्सा ॥

इक्षिक्षुवालिकापद्ममृणालोत्पलचन्दनम्। मधुकंपिप्पलीद्राक्षालाक्षाशृंगीशतावरी॥ द्विगुणाचतुगाक्षीरीसितासर्वचतुर्गुणा । लिह्यात्तन्मधुसर्पिर्भ्यांक्षतकासनिवृत्तये ॥ इक्षुवालिकाइक्षुभेदः । चंद्रइतिलोके । पद्मंपद्मकाष्ठंमृणालंबिसंउत्पलंकमलंचंदनमत्रधवलंचूर्णत्वात्शृंगीकर्कटशृंगीतुगाक्षीरीवंशरोचनासाचेक्षोर्द्विगुणा ॥ २२६ ॥

उरक्षतकी खांसीकी चिकित्सा ॥

ईख इक्षुबालिका (एक प्रकारकी ईख) पद्माक कमलकी डंडी कमल सफेद चन्दन मुलहठी पीपल दाख लाख काकड़ासिंगी सतावरि यह सब समभाग और वंशलोचन दोभाग और सबकी चौगुनी शक्कर इन सब औषधियों को मिलाकर सहत और घी के साथ चाटने से क्षतज खांसी का नाश होताहै ॥ २२६ ॥

अथ क्षयकास चिकित्सा ॥

चूर्णंकाकुभमिष्टंवासकरसभावितंबहुवारान् । मधुघृतसितोपलाभिर्लिह्यंक्षयकासरक्तहरम् ॥ काकुभचूर्णंककुभचूर्णम् ॥ २२७ ॥

क्षयकी खांसीकी चिकित्सा ॥

अर्जुनकी छालके चूर्ण में अनेक बार बांसेके रसकी भावना देकर सहत घी और मिश्री केसाथ चाटनेसे क्षयकी खांसी और रुधिर गिरने का नाश होताहै ॥ २२७ ॥

अथ कासस्यसामान्य चिकित्सा ॥

ताप्यमानस्यकासेननासास्रावेस्वरेजडे । क्षयथौगंधनासेचधूमपानंप्रयोजयेत् ॥ मनःशिलालमरिचंमांसीमुस्तेंगुदैःपिवेत् । धूमंत्र्यहञ्चतस्यानुपयश्चसगुडंपिवेत् ॥ एष कासान्पृथकद्वन्द्वसर्वदोषसमुद्भवान् । शतैरपिप्रयोगाणामसाध्यान्साधयेद्ध्रुवम् ॥ आलंहरितालं) बदरीदलमालिप्तंशिलयातपशोषितम् । तद्धूमपानंसक्षीरं महाकास निवारणम् ॥ २२८ ॥ खांसीकी सामान्य चिकित्सा ॥

खांसी के द्वारा नाक बहना स्वरकी जड़ता तथा छींक उपस्थित होनेपर और सूंघने की शक्ति के न होनेपर धूम्रपान कराना चाहिये मैनशिल हरिताल मिर्च जटामांसी मोथा और हिंगोट इनके द्वारा तीन दिन तक धूम्रपान करे और धूम्रपान करके गुड़ सहित दूध पिये इस के द्वारा अलग अलग द्वन्द्वज सान्निपातज और सब प्रकार की असाध्य खांसी भी नष्ट होतीहैं मैनशिल से बेरकी पत्तियों परलेप करके धूप में सुखावे और इनका धूम्र पान करके दूध पिये इससे बहुतबढ़ी हुई खांसी का नाश होताहै ॥ २२८ ॥

कण्टकारीकृतःक्वाथःसकृष्णःसर्वकासहाकण्टकार्याःकणायाश्चचूर्णंसमधुकासहृत २२९

भटकटैयाके काढ़ेमें पीपलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे सबप्रकारकी खांसीका नाश होताहै भटकटैया और पीपलके चूर्णको सहतके साथ चाटने से खांसीका नाश होताहै ॥ २२९ ॥

लवंगजातीफलपिप्पलीनांभागांश्चकर्षाक्षसमानमेषाम् । पलार्द्धमानंमरिचंप्रदेयं पलानिचत्वारिमहौषधस्य ॥ सितासमस्तेनसमाप्यचूर्णंरोगानिमानाशुवलान्निहन्ति । कासज्वरारोचकमेहगुल्मश्वासाग्निमान्द्यग्रहणीविकारान् ॥ समशर्करंचूर्णंवटिकावा २३०

लौंग जायफल तथा पीपल यह सब तोले २ भर मिर्च दो तोले सोंठ १६ तो० और इनसबकी बराबरशक्कर मिलाकर अथवा मोदक बनाकर खाने से खांसी ज्वर अरुचि प्रमेह वायगोला श्वास मन्दाग्नि और ग्रहणीका नाश होताहै इति समशर्करं चूर्णंवाबटिका ॥ २३० ॥

कुनटीसैन्धवव्योषंविडंगामयाहिंगुभिः । लेहःसाज्यमधुःकासश्वासहिक्कानिवारणः ॥

हरीतकीकणाशुण्ठीमरीचंगुडसंयुतम् । कासश्लेष्मापहंप्रोक्तंपरंवह्नेःप्रदीपनम् ॥ २३१
मैनशिल सेंधानोन त्रिकुटु वायविडंग कूट और हींग इनसबको पीसकर सहत और घीके साथ चाटने से खांसी श्वास और हिचकीका नाश होता है हड़ पीपल सोंठ और मिर्च इनके चूर्णको गुड़के साथ खानेसे खांसी तथा कफका नाशहोताहै और अग्निकी वहुत वृद्धि होती है ॥ २३१ ॥

कर्षःकर्षार्धपलंपलद्वयंस्यात्ततोऽर्द्धकर्षञ्च । मरिचस्यापिप्पलीनाञ्चदाड़िमगुड़याव शूकानाम् ॥ सर्वौषधिभिरसाध्याःकासायेवैद्यनिर्मुक्ताः अपिपूयच्छर्दयंतातेषामिदमौषधं परमम् ॥ कर्षांशोऽत्रकर्षद्वयं ॥ २३२ ॥
मिर्च १ तो० पीपल २ तो० अनारकी छाल ४ तो० गुड़ ८ तो० और जवाखार ६ माशे इन सब औषधियों को सेवन करनेसे सबप्रकारकी असाध्य खांसी भी नष्ट होती है और जिनको पीपकी वमन होतीहै उनके लियेभी यह औषधि हितकारीहै ॥ २३२ ॥

मरिचंकर्षमात्रंस्यात्पिप्पलीकर्षसम्मिता । अर्द्धकर्षोयवक्षारःकर्षयुग्मञ्चदाड़िमम् ॥ एतच्चूर्णीकृतंयुञ्ज्यादष्टकर्षगुड़ेनहि । शाणप्रमाणांगुटिकांकृत्वावक्त्रेविधारयेत् ॥ अस्याः प्रभावात्सर्व्वेऽपिकासायान्त्येवसंक्षयम् । दाड़िमफलत्वक्ग्राह्यंमरीचादिगुटिका २३३
मिर्च तथा पीपल एकएक तोला जवाखार ६ माशा अनारकी छाल २ तोला और गुड़ ८ तोले इन सबकी चार माशेकी गोली वनाकर मुखमें रखनेसे सब प्रकारकी खांसीका नाश होताहै इति मरिचादि गुटिका ॥ २३३ ॥

समूलवल्कच्छदकण्टकार्यास्तुलान्ततोद्रोणमितंजलञ्च । हरीतकीनांशतमेकपात्रे विपाच्यकुर्याच्चरणाम्बुशेषम् ॥ तस्मिन्कषायेतनुवस्त्रपूतेहरीतकीभिःसहितंगुड़स्य । तुलांविनिःक्षिप्यपचेत्सुपक्मेतत्समुत्तार्यसुशीतलञ्च ॥ पलंपलञ्चापिकटुत्रयञ्चतथाचतुर्जातपलंविचूर्ण्य । पलानिपट्पुष्परसस्यचापिविनिःक्षिपेत्तत्रविमिश्रयेच्च ॥ प्रयुज्यमानोविधिनेपलेहोयथाबलञ्चापियथानलञ्च । वातात्मकंपित्तकृतंकफोत्थंत्रिदोषजातान्यपिचात्रिदोषं ॥ क्षतोद्भवञ्चक्षयजञ्चकासंश्वासञ्चहन्यात्सहपीनसेन । यक्ष्माणमेकादशरूपमुग्रंहरीतकीयाभृगुणोपदिष्टा ॥ पुष्परसोमधु इतिभृगुहरीतकी ॥ २३४ ॥
जड़ पत्ती तथा पुष्प समेत भटकटैया ४०० तोला और १०० हड़ इन दोनों को १०२८ तोले जलमें पाक करके जब चौथाई बाकीरहे तव छानले फिर उसी काढ़े में ४०० तोले गुड़ और वही हड़ें डालकर पाककरे अच्छे प्रकार पाक होकर शीतल होजाने पर मिर्च पीपल तथा सोंठ चारचार तोले दालचीनी इलायची तेजपात तथा नागकेशर चारचार तोले और सहत २४ तोले इन सब औषधियोंको उसमें मिलाकर खूब चलादेवे फिर अग्नि वलके अनुसार इसको सेवन करनेसे वातज पित्तज कफज त्रिदोषज क्षतज तथा क्षयजआदि सबप्रकारकी खांसी श्वास पीनसऔर संपूर्णलक्षणों से युक्त यक्ष्मा रोगका नाशहोताहै इति भृगुहरीतकी ॥ २३४ ॥

कण्टकारीतुलांनीरद्रोणेपक्त्वाकषायकम् । पादशेपंगृहीत्वाचतत्रचूर्णानिदापयेत् ॥ पृथक्पलांशान्येतानिगुडूचीचव्यचित्रकौ । मुस्तककर्कटशृंगीचत्र्यूपणंधन्वयासकः ॥

भार्गीरास्नाशटीचैवशर्करापलविंशतिः । प्रत्येकंचपलान्यष्टौप्रदद्यात्घृततैलयोः॥ पक्वा लेहत्वमानीतेशीतेमधुपलाष्टकम्। चतुर्भागन्तुगाक्षीर्य्याःपिप्पलीचचतुःपलम् ॥ क्षिप्त्वानिदध्यात्सुदृढेमृण्मयेभाजनेशुभे । लेहोऽयंहन्तिहिक्कार्त्तिकासश्वासानशेषतः ॥ कण्टकार्य्यवलेहःइतिकासाधिकारः॥ २३५ ॥

४०० तोले भटकटैयाको१०२४तोले जलमें पाककरके चौथाईबाकीरहनेपर उतारले फिरगिलोय चव्य चीता मोथा काकड़ासिंगी सोंठ पीपल मिर्च जवासा भारंगी रासना तथा कचूर इनसबको पीसके चार चार तोले शक्कर अस्सी तोले घी तथा तेल बत्तीस २ तोले इनसब औषधियोंको उस में मिलाकर पाककरे फिर अवलेहसा बनकर शीतल होजानेपर सहत ३२ तोले और बंशलोचन तथा पीपल सोलह २ तोले मिलाकर मट्टी के पात्रमें रखछोड़े इसअवलेहके सेवनसे हिचकी खांसी तथा श्वासका नाशहोताहै इति कंटकादि अवलेह इतिकासाधिकार ॥ २३५ ॥

अथहिक्काधिकारः तत्रहिक्कायाःविप्रकृष्टंदानमाह ॥

विदाहिगुरुविष्टंभिरुक्षाभिष्यन्दिभोजनैः । शीतपानाशनस्नानरजोधूमातपानिलैः॥ व्यायामकर्मभाराध्ववेगाघातापतर्पणैः। हिक्काश्वासश्चकासश्चनृणांसमुपजायते॥ अपतर्पणमनशनादि ॥ २३६॥

हिचकीका अधिकार हिचकीके दूरवाले कारण ॥

विदाही भारी विष्टंभी रूखी शीतल तथा अभिष्यन्दी वस्तुओंके भोजनसे शीतल जल पीनेसे शीतल जलमें स्नानकरनेसे नासिकामें धूल तथा धुएंके जानेसे धूप तथा वायुके सेवनसे व्यायाम भार लेचलना मार्ग गमन तथा मल मूत्रादि वेग रोकनेसे और व्रत आदिकों से मनुष्योंको हिचकी श्वास और खांशी उत्पन्न होतीहै २३६ ॥

संप्राप्तिमाह ॥

वायुःकफेनानुगतःपञ्चहिक्काःकरोतिहि । अन्नजांयमलांक्षुद्रांगम्भीरांमहतीन्तथा२३७॥

हिचकीकी संप्राप्ति ॥

कफके साथ मिलीहुई वात पांच प्रकार की हिचकियों को उत्पन्न करती है जैसे अन्नजा यमला क्षुद्रा गंभीरा और महती ॥ २३७ ॥ सामान्यलक्षणमाह ॥

मुहुर्मुहुर्वायुरुदेतिसस्वनःयकृत्प्लिहान्त्राणिमुखादिवाक्षिपन्। सदोषवानाशुहिनस्त्यसून्यतस्ततस्तुहिक्केत्यभिधीयतेबुधैः ॥ वायुरत्रसोदानप्राणोबोधव्यः । उदेतिऊर्ध्वंयाति श्वसनःहिगितिशब्दवान्। ऊर्ध्वगमनंविशिनष्टियकृदित्यादि।प्लिहइतिशब्दोऽप्यस्तिदीर्घत्वविकल्पात्।मुखादितिल्यब्लोपे पञ्चमी तेनयकृत्प्लीहान्त्राणिमुखमानीयअक्षिपन् निःसारयनइवेत्यर्थःवायुः दोषवान्दोषोऽत्रकफः तद्वान्वायुःकफेनानुगतइतिसम्प्राप्तिःहिनस्तीतिहिक्कापृषोदरादित्वाद्रूपसिद्धिःहिगतिशब्दंकरोतीति ॥ २३८॥

हिचकीका सामान्य लक्षण ॥

कफ सहित प्राण तथा उदान वायु वारवार हिक् शब्द पूर्वक यकृतप्लीहा तथा आंतोंको मानो

मुखमें लातीहुई वाहर निकलती है इसमें शीघ्रही प्राणोंका नाश होता है इसलिये पंडित लोग इसको हिक्का वोलते हैं ॥ २३८ ॥ पूर्वरूपमाह ॥

कण्ठोरसोर्गुरुत्वञ्चवदनस्यकषायता । हिक्कानांपूर्व्वरूपाणिकुक्षेराटोपएवच ॥ वदनस्यकषायतावातात् ॥ २३९ ॥

हिचकी का पूर्वरूप ॥

हिचकी होनेके पहले कंठ तथा हृदय में भारीपन मुखमें कषेलापन और पेटमें गड़गड़ाहट यह लक्षण होतेहैं ॥ २३९ ॥ अन्नजालक्षणमाह ॥

पानान्नैरतिसंयुक्तैःसहसापीडितोऽनलः । हिक्कयेत्यूर्द्ध्वगोभूत्वातांविद्यादन्नजांभिषक्॥ अनिलः प्राणवायुः ॥ २४० ॥

अन्नजा हिचकी के लक्षण ॥

बहुत अन्न पानके सेवन से कुपित हुई प्राण वायु ऊर्ध्व गामी होकर हिचकी को उत्पन्न करती है इसको अन्नजा कहतेहैं ॥ २४० ॥ यमलालिङ्गमाह ॥

चिरेणयमलैर्वेगैर्याहिक्कासम्प्रवर्त्तते । कम्पयन्तीशिरोग्रीवांयमलांतांविनिर्दिशेत् २४१॥

यमला हिचकी के लक्षण ॥

जो हिचकी देर देरमें एक साथ दोवार आतीहै और शिर तथा ग्रीवामें कम्प होताहै उसको यमला कहतेहैं ॥ २४१ ॥ क्षुद्रामाह ॥

विकृष्टकालैर्यावेगैर्मन्दैःसमभिवर्त्तते । क्षुद्रिकानामसाहिक्का जत्रुमूलंप्रधावति ॥ विकृष्टकालैःचिरेण । जत्रुःकक्षोरसोःसन्धिः ॥ २४२ ॥

क्षुद्रा हिचकी का लक्षण ॥

जो हिचकी जत्रु (बगल और छाती की सन्धि) के मूलसे उठकर थोड़ेवेगके साथ देरमें आती है उसको क्षुद्रिका कहते हैं ॥ २४२ ॥ गंभीरामाह ॥

नाभिप्रवृत्तायाहिक्काघोरागम्भीरनादिनी । अनेकोपद्रवकरीगम्भीरानामसास्मृता ॥ अनेकोपद्रववतीतृष्णाज्वरादियुक्ता ॥ २४३ ॥

गंभीरा हिचकी का लक्षण ॥

जो हिचकी नाभिसे उठकर गंभीर शब्दके साथ आतीहै और तृषा तथा ज्वरादिक उपद्रवोंके सहित होतीहै उसको गंभीरा कहतेहैं ॥ २४३ ॥

महतीमाह ॥

मर्माणिपीडयन्तीवसततंयाप्रवर्त्तते । महाहिक्केतिसाज्ञेयासर्व्वगात्रप्रकंम्पिनी॥मर्माणिवस्तिहृदयशिरःप्रभृतीनि ॥ २४४ ॥

महती हिचकी के लक्षण ॥

जो हिचकी वस्ति हृदय तथा शिर आदि मर्मस्थलोंको पीड़ित करती हुई और सब अंगोंको कपाती हुई लगातार आतीहै उसको महती कहते हैं ॥ २४४ ॥

असाध्यत्वमाह ॥

आकम्पतेहिक्कतोयस्यदेहोदृष्टिश्चोर्ध्वंताम्यतेनित्यमेव। क्षीणोऽन्नद्विट्क्षौतियश्चातिमात्रंतौद्वौचान्त्यौवर्जयेद्धिक्कवन्तौ ॥ आकम्पतेविस्फूर्यतइवतौद्वाविति। आकम्पतइत्यादिनानित्यमेवेत्यनेनैकोहिक्कमानः ॥ क्षीणइत्यादिनातिमात्रमित्यन्तेनापरः। तौद्वौअन्त्यौचगम्भीरयामहतीहिक्कयाहिक्कमानौवर्जयेत् ॥ अपरञ्चअतिसञ्चितदोषस्यभक्तद्वेषकृशस्यच। व्याधिभिःक्षीणदेहस्यवृद्धस्यातिव्यवायिनः ॥ आयासाच्चसमुत्पन्नाहिक्काहन्त्याशुजीवितम् ॥ यमिकाचप्रलापार्त्तिमोहतृष्णासमन्विता ॥ २४५ ॥

असाध्य हिचकी के लक्षण ॥

जिस हिचकी में सम्पूर्ण शरीर कांपे नेत्र ऊपरको उठजायँ और मोहहोवे वह असाध्यहै जिस हिचकीमें क्षीणता अन्नमें अरुचि और वारंवार छींकहोय वहअसाध्य है और गंभीरा तथा महती हिचकी भी असाध्य हैं और भी कहा गया है कि दोषोंका वहुत इकट्ठा होना अन्नमें अरुचि कृशता रोगोंसे शरीरका क्षीण होना अथवा अत्यन्त मैथुन करना इन सबसे युक्तमनुष्योंकी हिचकी और परिश्रम से हुई हिचकी असाध्य होती हैं प्रलाप मोह और तृषा युक्त यमिका हिचकी असाध्य होती है ॥ २४५ ॥

साध्यत्वमाह ॥

अक्षीणस्याप्यदीनस्यस्थिरधात्विन्द्रियस्यच। तस्यसाधयितुंशक्यायमिकाहन्त्यतोऽन्यथा ॥ २४६ ॥

साध्य हिचकीके लक्षण ॥

क्षीणता तथा दीनता रहित और धातु तथा इन्द्रियोंकी स्थिरता वाले मनुष्य की यमिका हिचकी साध्यहोती है और इसके विशेष असाध्य होती है ॥ २४६ ॥

हिक्कायाश्चिकित्सा ॥

यत्किञ्चित्कफवातघ्नमुष्णंवातानुलोमनम्। भेषजंपानमन्नंवाहिक्काश्वासेषुतद्धितम्॥ हिक्काश्वासातुरेपूर्वंतैलाक्तेस्वेदइष्यते। ऊर्ध्वाधःशोधनंशस्तंदुर्वलेशमनंमतम् ॥ प्राणावरोधतर्जनविस्मापयनशीतवारिपरिषेकैः। चित्रैःकथाप्रयोगैःशमयेद्धिक्कांमनोऽभिघातैश्च ॥ २४७ ॥

हिचकी की चिकित्सा ॥

कफ वात नाशक उष्ण और वात को अपने मार्गके अनुसार करने वाली औषध तथा अन्नपान हिचकी और श्वास में हितकारी हैं हिचकी और श्वास वाले को पहले तेल लगाकर स्वेद देना चाहिये फिर वमन विरेचन के द्वारा शुद्ध करना चाहिये और दुर्बल मनुष्यको शमन औषध देना चाहिये प्राणायाम तर्जना आश्चर्य्य करना शीतल जलसे सींचना अनेक प्रकार की विचित्र कथा और मन के तोड़ने वाली क्रिया इन सबसे हिचकी निवृत्त होती है ॥ २४७ ॥

हिक्कार्त्तस्यपयश्छागंहितंनागरसाधितम्। मधुसौवर्चलोपेतंमातुलुङ्गरसंपिवेत् ॥ मधुकंमधुसंयुक्तंपिप्पलीशर्करान्विता। नागरंगुडसंयुक्तंहिक्काघ्नंनावनंत्रयम् ॥ प्रवालशङ्खत्रिफलाचूर्णमधुघृतप्लुतम्। पिप्पलीगैरिकञ्चैतिलेहोहिक्कानिवारणः ॥ नेपाल्यागोविषाणाद्वाकुष्ठात्सर्जरसस्यवा। धूपंकुशस्यवाकार्यंपिवेद्धिक्कोपशान्तये ॥ नेपालीमन

शिला। निर्धूमाङ्गारनिःक्षिप्तहिंगुमाषभवोरजः। हिक्कापञ्चापिहन्त्याशुधूमपीतीनसंशयः॥हरेणुककणानाञ्चकाथोहिंगुसमन्वितः।हिक्काप्रशमनश्रेष्ठोधन्वन्तरिवचोयथा २४८

सोंठ के द्वारा पाककियाहुआ बकरीका दूध अथवा सहत और काले नोनसे युक्त नींबूकारस पीनेसे हिचकी निवृत्तहोती है सहतयुक्त मुलहठी का चूर्ण शक्कर सहित पीपलका चूर्ण अथवा गुड़ सहित सोंठका चूर्ण इनके द्वारा नासलेनेसे हिचकीका नाशहोता है मूंगा शंख त्रिफला और पीपल तथा गेरू इनके चूर्णको सहत और घीके साथ चाटनेसे हिचकी का नाशहोता है मैनशिल तथा गौका सींग अथवा कूट तथा राल या कुशके द्वारा धूम्रपान करनेसे हिचकी नाशहोतीहै हींग और उर्दके चूर्ण को धूम रहित अंगारेपर छोड़कर उसके धुएंके पीनेसे पांचों प्रकारकी हिचकी का नाश होताहै मटर और पीपल के काढ़े में हींग डालकर पीनेसे हिचकीका नाशहोताहै यहधन्वन्तरका वचनहै॥ २४८॥

चन्द्रसूरस्यबीजानिक्षिपेदष्टगुणेजले। पदामृदुनिमृदियात्ततोवाससिगालयेत्॥ हिक्कातिवेगविकलस्तज्जलंपलमात्रया। पिबेत्पिबेत्पुनश्चापिहिक्कावश्यंप्रशाम्यति। चन्द्रसूररसःइतिहिक्काधिकारः॥ २४९॥

चन्द्रशूर के बीजों को अठगुने जलमें पाककरे जब चौथाई बाकी रहे तब धीरे २ कपड़ेमें छानले इसको एक२ पल बारम्बार पिये इससे बहुत वेगवालीभी हिचकी नष्टहोती है इतिचन्द्रशूररस इति हिक्काधिकार॥ २४९॥

अथ श्वासाधिकारः। तत्र निदानमाह॥

यैरेवकारणैर्हिक्कादेहिनांसम्प्रवर्त्तते। तैरेवबहुभिःश्वासोव्याधिर्घोरःप्रजायते॥ श्वासस्यभेदानाहमहोर्द्ध्वछिन्नतमकःक्षुद्रभेदैस्तुपञ्चधा। भिद्यतेसमहाव्याधिःश्वासएको विशेषतः॥ २५०॥

श्वासका अधिकार श्वासका निदान॥

जिनकारणोंसे हिचकी उत्पन्नहोती है उन्हींकारणों की अधिकतासे भयंकर श्वास रोग उत्पन्नहोता है महाश्वास ऊर्ध्व श्वास छिन्नश्वास तमकश्वास और क्षुद्रश्वास यह श्वासके पांचभेद हैं॥२५०॥

तस्यपूर्व्वरूपमाह॥

प्राग्रूपंतस्यहृत्पीडाशूलमाध्मानमेवच।आनाहोवक्त्रवैरस्यंशङ्खनिस्तोदएवच२५१॥

श्वासका पूर्व्वरूप॥

श्वासरोग उत्पन्नहोने के पहले हृदयमें पीड़ा शूल आध्मान आनाह मुखकी विरसता और शिर की हड्डियों में पीड़ा यह लक्षण होते हैं॥ २५१॥

सम्प्राप्तिमाह॥

यदास्रोतांसिसंरुध्यमारुतःकफपूर्व्वकैः। विष्वक्व्रजतिसंरुद्धस्तदाश्वासंकरोतिस। विष्वक्व्रजतिसर्व्वतोविमार्गानुयातिसंरुद्धःकफेनरुद्धमार्गः॥ २५२॥

श्वासकी संप्राप्ति॥

जब कफ युक्त वात स्रोतों को रोककरके और कफसे रुके हुए मार्ग वाली होकर सबओर अपने मार्गों से रहित होकर घूमती है तब श्वास रोग उत्पन्न होता है॥ २५२॥

महा श्वासस्यलक्षणमाह ॥

ऊद्र्ध्वायमानवातोयःशब्दवद्दुःखितोनरः। उच्चैःश्वसितिसन्नद्धोमत्तर्षभइवानिशम्॥ प्रनष्टज्ञानविज्ञानस्तथाविभ्रान्तलोचनः। विकृताक्षाननोबद्धमूत्रवर्चोविशीर्णवाक्॥ दीनस्यश्वसितञ्चास्यदूराद्विज्ञायतेभृशम्। महाश्वासोपसृष्टस्तुक्षिप्रमेवविपद्यते॥ ऊद्र्ध्वायमानवातःऊद्र्ध्वंनीयमानोवातोयस्यसःशब्दवत्सशब्दंयथास्यात्॥कीदृक्स शब्दस्तद्बोधयितुमाह। मत्तर्षभइव॥ उच्चैःश्वसितीत्यन्वयःसन्नद्धःआनद्धः आनाहयुक्त इतियावत्। ज्ञानंशास्त्रम्। विज्ञानंतदर्थविनिश्चयः॥ विशीर्णवाक्स्खलितवचनः। दीनःम्लानःमारकश्चायंमहाश्वासः॥ २५३॥

महाश्वास का लक्षण ॥

जिस मनुष्यकी वायु ऊपर लेजाईगईहोकर मतवाले बैलकेसे शब्द के साथ निरन्तर क्लेश सहित निकलती है शास्त्रज्ञान तथा उसके अर्थजानने की शक्ति नष्टहोजाती है नेत्र चंचलहोजाते हैं मुख तथा नेत्र खुले रहतेहैं मल मूत्र रुकजाता है वचनशक्ति नष्टहोजाती है म्लानता तथा अफराहोताहै और श्वासदूरसेसुनाई देताहै उसको महाश्वास कहतेहैंमहाश्वास वाला शीघ्रही मरजाताहै२५३॥

ऊद्र्ध्वश्वासमाह ॥

ऊद्र्ध्वंश्वसितियोऽत्यर्थंनचप्रत्याहरत्यधः।श्लेष्मावृतमुखस्रोतःक्रुद्धगन्धवहार्दितः॥ ऊद्र्ध्वदृष्टिर्विपश्यंस्तुविभ्रान्ताक्षइतस्ततः।प्रमुह्यन्वेदनार्त्तश्चशुष्कास्योरतिपीडितः॥ ऊद्र्ध्वश्वासेप्रकुपितेह्यधःश्वासोनिरुद्ध्यते।मुह्यतस्ताम्यतश्चोद्र्ध्वश्वासस्तस्यनिह न्त्यसून्॥ सर्वेषुश्वासेषुऊद्र्ध्वश्वासोऽत्रअत्यर्थमितिविशेषःनचप्रत्याहरत्यधःनश्वास मधःकरोति। श्लेष्मावृतेत्यादिश्लेष्मणावृतंयन्मुखंस्रोतांसिचतैःक्रुद्धोयोगन्धवहस्तेना र्दितः॥ विपश्यन्इतस्ततोविकृतंयथास्यादेवंपश्यन् अधःश्वासोनिरुद्ध्यतेश्वासोनाधः प्रवर्त्ततइत्यर्थः। मुह्यतोमोहंप्राप्नुवतस्ताम्यतोग्लानिंप्राप्नुवतश्चऊद्र्ध्वश्वासः असून् प्राणान्हन्ति २५४॥ ऊर्ध्वश्वास का लक्षण ॥

जो मनुष्य अत्यन्त ऊपर को श्वास छोडे नीचे को श्वास न खींचसके कफके द्वारा मुख और स्रोतके बन्द होजाने से कुपित हुई वायुके द्वारा पीडित होय ऊपर दृष्टि वाला भ्रम युक्त नेत्रवाला इधर उधर देखे मोह पीड़ा तथा मुख के सूखने से पीड़ित होय और बेचैनी से व्याकुल होय उस का ऊर्ध्वश्वास कहते हैं ऊर्ध्व श्वास के कुपित होने पर नीचेके श्वास रुक जाते हैं मोह तथा ग्लानि युक्त मनुष्य ऊर्ध्व श्वास में मरजाताहै॥ २५४॥

छिन्नमाह ॥

यस्तुश्वसितिविच्छिन्नंसर्वप्राणेनपीडितः। नवाश्वसितिदुःखार्त्तोमर्मच्छेदरुजार्दि तः॥ आनाहस्वेदमूर्च्छार्त्तोदह्यमानेनबस्तिना। विप्लुताक्षःपरिक्षीणःश्वसनूरक्तैकलो चनः॥ विचेताःपरिशुष्कास्योविवर्णःप्रलपन्नरः। छिन्नश्वासेनविच्छिन्नःसशीघ्रंविजहा

त्यसून् ॥ विच्छिन्नःसविच्छेदंसर्वप्राणेनसर्वबलेनमर्मच्छेदरुजार्दितः। हृदयशिरश्छेदवेदनयैवपीडितः ॥ दह्यमानेनवस्तिनाउपलक्षितः। विप्लुताक्षःअश्रुपूर्णनेत्रः ॥ विचेताः उद्विग्नचित्तःछिन्नश्वासेनविच्छिन्नः यस्तुश्वसितिविच्छिन्नमित्यादिलक्षणयुक्तोयःसनरः छिन्नश्वासेनविच्छिन्नःपीडितोवोद्धव्यःमारकश्चायंछिन्नश्वासः ॥ २५५ ॥

छिन्न श्वास का लक्षण ॥

जो मनुष्य पीड़ित होकर पूरेबल से ठहर ठहर कर श्वास लेवे अथवा श्वास न ले तथा कष्ट युक्त होय हृदय तथा मस्तक में छेदने के समान पीड़ासे युक्त होय आनाह स्वेद मूर्च्छा तथा मूत्राशय में दाह से व्याकुल होवे अश्रुपूर्ण तथा रक्त वर्ण नेत्र से युक्त होय बहुत क्षीणता से श्वास छोड़े उद्विग्न चित्त होवे और मुखका सूखना विवर्णता तथा प्रलापसे युक्तहोय उसको छिन्नश्वास वाला जानना चाहिये इनलक्षणोंसे युक्त रोगी शीघ्रही मरजाताहै ॥ २५५ ॥

तमकश्वासमाह ॥

प्रतिलोमोयदावायुः स्रोतांसिप्रतिपद्यते। ग्रीवांशिरश्चसंगृह्यश्लेष्माणंसमुदीर्य्य च ॥ करोतिपीनसंतेनकण्ठेघुर्घुरकंतथा। अतीवतीव्रवेगञ्चश्वासंप्राणप्रपीडकम् ॥ प्रताम्यतिसवेगेनत्रस्यतेसन्निरुध्यते। प्रमोहंकासमानश्चसगच्छतिमुहुर्मुहुः ॥ श्लेष्मण्यामुच्यमानेनभृशंभवतिदुःखितः। तस्यैवचविमोक्षान्तेमुहूर्त्तंलभतेसुखम् ॥ तथास्योद्ध्वंसतेकण्ठःकृच्छ्राच्छक्नोतिभाषितुम्। नचापिनिद्रांलभतेशयानःश्वासपीडितः ॥ पार्श्वेतस्यावगृह्णातिशयानस्यसमीरणः। आसीनोलभतेसौख्यमुष्णञ्चैवाभिनन्दति ॥ उच्छ्रिताक्षोललाटेनस्विद्यताभृशमार्तिमान्। विशुष्कास्योमुहुःश्वासोमुहुश्चैवावधम्यते ॥ मेघाम्बुशीतप्राग्वातैःश्लेष्मलैश्चविवर्द्धते। सयाप्यस्तमकश्वासःसाध्योवास्यान्नवोत्थितः ॥ संगृह्यव्यथयासमुदीर्य्यवर्द्धयित्वा। पीनसंनासास्रावंतेनश्लेष्मणाघुर्घुरं घुर्घुरशब्दंप्राणप्रपीडकम् ॥ प्राणाधिष्ठानहृदयप्रपीडकम्। प्रताम्यतितमसिप्रविशतीववेगेनश्वासवेगेनसन्निरुध्यतेनिश्चेष्टोभवति। इतिचरकः। सन्निरुध्यतेश्वासइतिजेयटः ॥ श्लेष्मणाऽमुच्यमानेनमुखंमुखमिवउद्ध्वंसंतव्यथितोभवतिशयानःशयननिहितान्गोऽवगृह्णातिपीडयतिउष्णञ्चैवाभिनन्दतिइत्यनेनतमकोवातकफारब्धइतिबोद्धव्यः। उच्छ्रिताक्षोऽशूनाक्षःललाटेनस्विद्यताउपलक्षितःअवधम्यतेगजारूढस्येवसर्वगात्रञ्चाल्यते ॥ तमकस्यैवपित्तानुबन्धजनितज्वरादियोगेनप्रतमकसंज्ञामाह। ज्वरमूर्च्छापरीतञ्चविद्यात्प्रतमकंभिषक् ॥ २५६ ॥

तमक श्वास का लक्षण ॥

जबवायु उलटी होकर संपूर्ण स्रोतों में प्राप्त होतीहै और ग्रीवा तथा शिरमें पीड़ा करती हुई कफको बढ़ाकर पीनसको उत्पन्न करतीहै तब उस कफसे रुकीहुई वायु बहुत तीव्र वेगके साथ गलेमें घुर घुर शब्द पूर्वक हृदय में पीड़ा कारी श्वास रोगको उत्पन्न करती है इससे युक्त होकर

मनुष्य अन्धकार में घुसाहुआसा चेष्टा रहित तथा अत्यन्त तृषा से युक्त होता है वारंवार खांसने से मोहको प्राप्त होताहै कफके न निकलने से बहुत दुःखित होताहै कफके निकल जानेसे कुछदेर सुखको प्राप्त होताहै कंठमें पीड़ासे युक्त होताहै बहुत कष्टसे बोलसक्ता है श्वास से पीड़ित होने के कारण सोने से निद्रानहीं आती है सोने से वायु के द्वारा पसलियों में पीड़ा होती है बैठने से कुछ सुखहोताहै उष्ण वस्तु में इच्छा होतीहै नेत्रोंमें सूजन तथा शिरमें पसीना आताहै मुखसूख जाताहै बहुत पीड़ा होतीहै बहुत श्वास आतेहैं और वारंवार हाथी पर सवार होने के समान शरीर काँपता है मेघ जल शीत पुरवाई हवा और कफ कारी वस्तुओं से यह रोग बढ़ता है यह तमक श्वास याप्य है और नवीन होयतो कभी कभी साध्यभी होता है तमकश्वास वालेको जो ज्वर और मूर्च्छा होवेतो उसको प्रतमक जानना चाहिये ॥ २५६ ॥

तस्यैवापरलक्षणमाह ॥

उदावर्त्तरजोजीर्णक्लिन्नकायनिरोधजः । तमसावर्द्धतेऽत्यर्थंशीतलैश्चप्रशाम्यति ॥ मज्जतस्तमसीवास्यविद्यात्प्रतमकन्तुतम् । उदावर्त्तोरोगविशेषःरजोधूलिःअत्राजीर्णाद्यादिक्लिन्नंविदग्धंकायनिरोधःअंगायोगानांनिरोधःतस्मादुत्पन्नः । अथवाक्लिन्नकायःवृद्धनरःनिरोधःवेगानान्तु ॥ २५७ ॥

प्रतमकश्वास का अन्य लक्षण ॥

उदावर्त्त रोग नासिका में धूलजाना अजीर्ण वृद्धावस्था तथा मलादि वेगोंके रोकने से प्रतमक श्वास उत्पन्न होता है यह अन्धकार से बहुत बढ़ता है और शीतल वस्तुओंसे शान्त होता है इस रोग से युक्त मनुष्य सदैव अन्धकार में घुसाहुआसा मालूम होता है इसको प्रतमक श्वास कहते हैं ॥ २५७ ॥

क्षुद्रश्वासमाह ॥

रूक्षायासोद्भवःकोष्ठेःक्षुद्रवातमुदीरयन् । क्षुद्रश्वासोनसोऽत्यर्थंदुःखेनांगप्रबाधकः ॥ हिनस्तिनचगात्राणिनचदुःखंयथेतरे । नचभोजनपानानांनिरुणद्ध्युचितांगतिम् ॥ नेन्द्रियाणांव्यथांचापिकांचिदुत्पादयेद्रुजम् । ससाध्यउक्तोबलिनःसर्वेचाव्यक्तलक्षणाः ॥ क्षुद्रःअल्पनिदानलिंगः उदीरयन्ऊर्ध्वंगच्छन्दुःखःदुःखप्रदःइतरेचत्वारः श्वासाःसर्वे महाश्वासादयोऽपि । अव्यक्तलक्षणाःसन्तःसाध्याः ॥ २५८ ॥

क्षुद्र श्वासका लक्षण ॥

रूखी वस्तुओंके सेवनसे और परिश्रम के द्वारा कोष्ठमें रहने वाली वायु ऊर्ध्वगामी होकर थोड़े निदान तथा लक्षण वाले क्षुद्र श्वास को उत्पन्न करती है यह क्षुद्र श्वास अत्यन्त क्लेशकारी पीड़ा शरीर में नहीं उत्पन्न करता है शरीर को हीन नहीं करता अन्य श्वासों के समान दुःखदाई नहीं होता अन्नपान की यथोचित गतिको नहीं रोकता और इन्द्रियों में पीड़ा तथा अन्य रोगों को नहीं उत्पन्न करता है यह श्वास साध्य है और बलवान् पुरुषों के महा श्वास आदिक संपूर्ण श्वास जो अप्रकट लक्षण वाले होवें तो साध्य हैं ॥ २५८ ॥

श्वासानांसाध्यत्वादिकमाह ॥

क्षुद्रःसाध्यतमस्तेषांतमकःकृच्छ्रउच्यते । त्रयःश्वासानसिध्यन्तितमकोदुर्बलस्यच ॥

कामंप्राणहरारोगाबहवोनतुतेतथा। यथाश्वासश्चहिक्काचहरतःप्राणमाशुवै ॥ बहवोऽज्वरादयः। तथायथाश्वासहिक्केहरतोजीवमाशुते ॥ २५९ ॥

श्वास के साध्या साध्य लक्षण ॥

क्षुद्र श्वास साध्य है तमक श्वास कष्टसाध्य है महाश्वास ऊर्ध्वश्वास तथा छिन्नश्वास यह तीनों असाध्य हैं और दुर्बल मनुष्य को तमकश्वास भी असाध्य है यद्यपि प्राणनाशक ज्वरादि अनेक रोग हैं परन्तु श्वास तथा हिचकी के समान शीघ्र प्राण नाशक और कोई रोग नहीं है२५९ ॥

अथ श्वासस्य चिकित्सा ॥

श्वासहिक्कातुरंप्रायःस्निग्धैःस्वेदैरुपाचरेत् ।युक्तैर्लवणतैलाभ्यांतैरस्यग्रथितःकफः श्वासोविलयमायातिमारुतश्चोपशाम्यति। स्विन्नंज्ञात्वाततश्चैनंभोजयेच्चरसौदनम् ॥ स्वरसंशृंगवेरस्यमाक्षिकेणसमन्वितम्। पाययेत्श्वासकासघ्नंप्रतिश्यायकफापहम् ॥ शृंगवेरमार्द्रकं । प्रस्थंविभीतकानामस्थिविनासाधयेदजामूत्रे ॥ अथावलेहोलीढोमधुसहितःश्वासकासघ्नः ॥ देवदारुबलामांसींपिष्ट्वावर्त्तिंप्रकल्पयेत् । तांघृताक्तांपिबेद्धूमं श्वासंहान्तिसुदारुणम् ॥ दशमूलीशटीरास्नापिप्पलीविश्वपौष्करैः। शृंगीतामलकीभार्गीगुडूचीनागराग्निभिः ॥ यवागूंविधिनासिद्धांकषायंवापिबेन्नरः । श्वासहृद्ग्रहपार्श्वार्त्तिहिक्काकासप्रशान्तये ॥ तामलकीभूम्यामलकी ॥ २६० ॥

श्वास की चिकित्सा ॥

श्वास तथा हिचकी वाले की प्रायः स्निग्ध स्वेदों से चिकित्सा करे नोन तथा तेलको मिलाकर स्वेद देनेसे लिपटा हुआ कफ तथा श्वास नष्ट होता है और वायु शान्त होती है इस प्रकार स्वेद देकर मांसके रसके साथ भातखिलावे अदरक केरसमें सहत डालकर पीने से श्वास खांसी पीनस तथा कफका नाशहोता है गुठली रहित ६४ तोले बहेडे को लेकर बकरी के मूत्र में पाक करे फिर इसको सहत के साथ चाटने से श्वास तथा खांसीका नाश होता है देव दारु खरियारा तथा जटामांसी को समभाग लेकर पीसकर बत्ती बनावे फिर उसको घीमें डुबोकर उसका धूमपान करे इससे अत्यन्त भयंकर श्वासका नाश होताहै दशमूल कचूर रासना पीपल सोंठ पुष्करमूल काकड़ासिंगी भुइँआमला भारंगी गिलोय सोंठ और चीता इन सबका काढ़ा अथवा इनके काढ़ेसे बनीहुई यवागूपीने से श्वास हृदय के रोग पसली की पीड़ा हिचकी तथा खांसीका नाश होताहै ॥ २६० ॥

दशमूलस्यवाक्वाथःपौष्करेणावचूर्णितः। श्वासकासप्रशमनःपार्श्वशूलनिवारणः ॥ रम्भाकुन्दशिरीषाणांकुसुमंपिप्पलीयुतम्। पिष्ट्वातण्डुलतोयेनपीत्वाश्वासमपोहति ॥ शृङ्गीमहौषधकणाघनपौष्कराणाम् चूर्णंशटीमरिचयोश्चसिताविमिश्रम् । क्काथेनपीतममृताश्पपञ्चमूल्याः श्वासंत्र्यहेणविनिहन्तिहिघोररूपम् ॥ पञ्चमूलीतुसामान्यापित्तेयोज्याकनीयसी। महतीमारुतेदेयासेवदेयाकफाधिके ॥ कूष्माण्डकशिफाचूर्णंपीतंकोष्णेनवारिणा। शीघ्रंशमयतिश्वासंकासञ्चापिसुदारुणम् ॥ हरिद्रांमरिचंद्राक्षांकणांरास्नांशटींगुडम्। कटुतैलेलिहन्हन्यात्श्वासान्प्राणहरानपि ॥ २६१ ॥

दशमूल के काढ़ेमें पुष्कर मूलके चूर्णको छोड़कर पीनेसे श्वास खांसी और पसली की पीड़ा का नाश होता है केला कुन्द और सिरस के फूलोंको पीसकर पीपल मिलाय के चावलोंके पानी के साथ पीने से श्वास का नाश होता है काकड़ासिंगी सोंठ पीपल मोथा पुष्कर मूल कचूर तथा मिर्चको समभाग लेकर इनके चूर्ण में सबकी बराबर मिश्री मिलाकर गिलोय बांसा और पंचमूल इनके काढ़ेके साथ पीने से तीन दिनमें अत्यन्त भयंकर श्वासका नाश होता है जो श्वास में पित्त की अधिकता होय तो छोटा पंचमूल और जो कफ तथा वात की अधिकता होय तो बड़ा पंचमूल लेना चाहिये कुंभड़ेकी जड़के चूर्ण को कुछ गरम जलके साथ पीने से शीघ्रही अत्यन्त भयंकरश्वास तथा खांसीका नाश होता है हल्दी मिर्च दाख पीपल रासना कचूर और गुड़ इन सबको कडुयेतेल के साथ चाटने से प्राण नाशक श्वासका भी नाश होता है ॥ २६१ ॥

शतंसंगृह्यभार्ग्यास्तुदशमूल्यास्तथाशतम् । शतंहरीतकीनाञ्चपचेत्तोयेचतुर्गुणे ॥ पादावशेषेतस्मिंस्तुरसेवस्त्रनिपीड़िते । आलोड्यचतुलांपूतांगुड़स्यत्वभयास्ततः ॥ पुनःपचेत्तुमृद्वग्नौयावल्लेहत्वमेतितत् । शीतेचमधुनस्तत्रषट्पलानिविनिक्षिपेत् ॥ त्रिकटुत्रिसुगन्धञ्चपलमात्रंपृथक्पृथक् । यवक्षारंकर्षयुग्मंसञ्चूर्ण्यंप्रक्षिपेत्ततः ॥ भक्षयेदभयामेकांलेहस्यार्द्धपलंतथा । श्वासंसुदारुणंहन्तिकासंपञ्चविधंतथा ॥ अर्शांस्यरोचकंगुल्मंशकृद्भेदंक्षयंतथा । स्वरवर्णप्रदोह्येषजठराग्नेश्चदीपनः ॥ नाम्नाभार्गीगुडःस्यात्तोभिषग्भिःसकलैर्मतः । भार्गीगुडः ॥ २६२ ॥

भारंगी दशमूल और हड़ इनको चार २ सौ तोले लेकर चौगुने जलमें पाककरे जब चौथाई बाकी रहै तब उतार कर छानले फिर उसी जलमें ४०० तोले गुड़ और वही हड़ें मिलाकर मन्दाग्नि में पाककरे जब अवलेह बन जाय तब उतारले और शीतल होजानेपर सहत २४ तोले सोंठ पीपल मिर्च दालचीनी इलायची तथा तेजपात चारचार तोले और जवाखार दो तोले यह सब उसमें मिलावे एक हड़ और दो तोले अवलेह रोजखाय इससे भयंकर श्वास पांच प्रकार की खांसी बवासीर अरुचि गोला मलभेद तथा क्षयका नाशहोताहै और स्वर वर्ण तथा जठराग्निकी वृद्धि होतीहै इति भार्गी गुड ॥ २६२ ॥

अष्टाङ्गचूर्णसंयुक्तंछागक्षीरंप्रयोजयेत् । श्वासंकासान्वितंघोरंहन्यादेतन्नसंशयः ॥ दशमूलरसंदेयंश्वासनिर्मूलशान्तये । अवश्यमरणीयोयःजीवेद्वर्षशतंनरः ॥ २६३ ॥

अष्टांग चूर्ण के साथ बकरी का दूधपीने से खांसी सहित भयंकर श्वास का निस्सन्देह नाशहोता है श्वासके निर्मूलशान्तिकेलिये दशमूलकारस पीनाचाहिये इससे जिसकी मृत्यु अवश्यहोती है वहभी सौ वर्षतक जीता है ॥ २६३ ॥

रसोगन्धोविषञ्चापिटङ्कणञ्चमनःशिला । एतानिकर्षमात्राणिमरिचंचाष्टकर्षकम् ॥ कटुत्रयंकर्षयुग्मंपृथगत्रविनिःक्षिपेत् । रसःश्वासकुठारोऽयंसर्वश्वासनिवारणः । इति श्वासकुठाररसःइतिश्वासाधिकारः ॥ २६४ ॥

पारा गन्धक विष सुहागा और मेनशिल यहसब एक २ तोले मिर्च ८ तोले और सोंठ पीपल

तथा मिर्च दो दो तोले इनसबको पीसकर सेवन करनेसे सबप्रकारके श्वासोंका नाश होताहै इति श्वास कुठाररस इति श्वासाधिकार ॥ २६४ ॥

अथ स्वरभेदाधिकारः। तत्रस्वरभेदस्यनिदानसम्प्राप्तिपूर्वकंलक्षणमाह ॥

अत्युच्चभाषणविषाध्ययनाभिघात सन्दूषणैःप्रकुपिताःपवनादयस्तु । स्रोतःसुतेस्व रवहेषुगताःप्रतिष्ठां हन्युःस्वरंभवतिचापिहि षड्विधःसः ॥ अध्ययनमुच्चैर्वेदादिपाठःअ भिघातःकण्ठादिदेशेलगुडादिभिः एतैरत्युच्चभाषणादिभिश्चतुर्भिःसंदूषणैरन्यैरपिनिजै र्दुष्टहेतुभिःस्रोतःसुस्वरवहेषुचतुर्षुप्रतिष्ठांस्थितिंगताःस्वरंहन्युरितिलक्षणंसस्वरभेदः ष ड्विधः। वातपित्तकफसन्निपातक्षयमेदोभवभेदैः ॥ २६५ ॥

स्वरभेदका अधिकारस्वरभेदका निदान और संप्राप्ति पूर्व्वक लक्षण ॥

बहुत जोरसे बोलना विषखाना उच्चस्वरसे वेदआदिक पढना और कंठादिकों में लाठी आदिकी चोट इनकारणों से कुपित वातादिक दोष स्वरके लेचलनेवाले चारों स्रोतोंमें स्थित होकर स्वरको बिगाड़तेहैं स्वरभेद ६ प्रकारकाहै जैसे वातज पित्तज कफज सन्निपातज क्षयज और मेदज॥ २६५ ॥

तत्रवातिकस्वरभेदिनोलक्षणमाह ॥

वातेनकृष्णनयनाननमूत्रवर्चा भिन्नंशनैर्वदतिगर्द्दभवत्स्वरञ्च। पित्तेनाह। पित्ते नपीतनयनाननमूत्रवर्चाब्रूयाद्गले नसचदाहसमन्वितेन । गलदाहवचनसमयएववो ढव्यः। कफेनाह। ब्रूयात्कफेनसततंकफरुद्धकण्ठः स्वल्पंशनैर्वदतिचापिदिवाविशेषात्॥ दिवासूर्यरश्मिभिःकफस्याल्पीभावात् । सन्निपातेनाह। सर्वात्मकेभवतिसर्वविकारसम्प त्तच्चाप्यसाध्यमृषयःस्वरभेदमाहुः । क्षयजमाह । धूम्येतवाक्क्षयकृतेक्षयमाप्नुयाच्च स्यादेवचापिहतवाक्परिवर्जनीयः। वाक्धूम्येतसधूमेवनिःसरतिदावंवाप्नुयाद्वागेय । मे दोभवमाह । अंतर्गलंस्वरमलक्ष्यपदंचिरेण। मेदोऽन्वयाद्वदतिदिग्धगलस्तृषार्तः। अ न्तर्गलंगलस्यमध्यएवस्वरंवदति। दिग्धगलःमेदसाश्लेष्मणाचालिप्तगलः ॥ तृषार्तः मेदसोष्मणात्तैवरोधात ॥ २६६ ॥

वातज स्वर भेद के लक्षण ॥

वातज स्वरभेदमें नेत्र मुख मूत्र तथा मलमें कालापन और धीरे२ गधेकेसमान कर्कश तथा भंग स्वर निकलताहै पित्तज स्वर भेदमें नेत्र मुख मूत्र तथा मलमें पीलापनहोताहै और बोलनेके समय गलेमें पीड़ाहोतीहै कफजस्वरभंगमें गलेमें सदैव कफकेभरेरहनेसे बोलनेकीशक्ति कमहोजातीहै और दिनमेंसूर्य्यकी किरणोंकेद्वाराकफके कमहोनेसे रात्रिकी अपेक्षा दिनमें धीरे २ कुछअधिक बोलाजाता है सन्निपातज स्वरभंगमें तीनोंदोषोंके लक्षणहोतेहैं यहस्वरभेद असाध्यहोताहै क्षयजस्वरभेदमें बो- लनेकीशक्ति क्षीणहोकरधुंएंसेयुक्त हुआसा वचन थोड़ानिकलताहै यह असाध्यहै मेदज स्वरभंगमें मेद तथा कफकेद्वारा कंठरुकाहुआसा मालूमहोताहै तृषा उत्पन्नहोतीहै और गले के भीतर बहुतदेर में स्पष्टता रहित वचन बोलताहै ॥ २६६ ॥

असाध्यत्वमाह ॥

क्षीणस्यवृद्धस्यकृशस्यचापिचिरोत्थितोयश्चसहोपजातः।मेदस्विनःसर्वसमुद्भवश्च स्वरामयोनैवससिद्धिमेति॥ क्षीणस्यक्षयरोगिणःकृशस्यअपुष्टस्य॥ २६७॥

असाध्य स्वर भेदका लक्षण ॥

क्षयरोगी वृद्ध कृश तथा मेदवाले मनुष्यका स्वरभेद अथवा बहुतकालका पुराना या जन्मही से उत्पन्न हुआ और सन्निपातज स्वरभेद असाध्य होताहै ॥ २६७॥

स्वरभेदचिकित्सा॥

वातादिजनितश्वासकासघ्नायेप्रकीर्त्तिताः। योगास्तानत्रयुञ्जीतयथादोषंचिकित्सकः वातेसलवणंतैलंपित्तेसर्पिःसमाक्षिकम्। कफेसक्षारकटुकंक्षौद्रंकवलईष्यते॥ गलेतालुनिजिह्वायादन्तमूलेषुचाश्रितः। तेनिष्कृष्यतेश्लेष्मास्वरश्चाशुप्रसीदति॥ आद्येकोष्णांजलंपेयंभुक्त्वाघृतरसौदनम्। क्षीराम्बुपानंपित्तोत्थेपिबेत्सर्पिरतन्द्रितः॥पिप्पलीपिप्पलीमूलंमरिचंविश्वभेषजम्। पिबेन्मूत्रेणमतिमान्कफजेस्वरसंक्षये॥ २६८॥

स्वर भेदकी चिकित्सा ॥

वातादि दोष जनित श्वास तथा खांसीके नाश करनेवाले जो योग कहे गयेहैं वही योग दोषके अनुसार स्वर भेदमें भी लेने चाहिये वातज स्वर भेदमें लवण युक्त तेलके द्वारा पित्तजमें सहत युक्त घी के द्वारा और कफज स्वर भेदमें जवाखार तथा त्रिकटु समेत सहतके द्वारा ग्रास लेना चाहिये कंठ तालु जिह्वा तथा दांतोंकी जड़में लगालगा कर ग्रास मुखमें रखना चाहिये इससे कफ निकल जाताहै और स्वर उत्तम होजाताहै वातज स्वरभेद में घी तथा मांसके रसके साथ भात खाकर कुछ उष्ण जल पीना चाहिये पित्तज स्वरभेद में दूधमें जल मिलाकर पीना चाहिये और घी भी पीना चाहिये कफज स्वर भेदमें पीपल पीपलामूल मिर्च और सोंठको गौके मूत्रके साथ पिये ॥ २६८॥

निदग्धिकातुलाग्राह्यातदर्द्धंग्रन्थिकस्यतु। तदर्द्धंचित्रकस्यापिदशमूलञ्चतत्समम्॥ जलद्रोणद्वयेक्काथ्यंगृह्णीयादाढकंततः। पूतेक्षिपेत्तदर्द्धन्तुपुराणस्यगुडस्यच॥ सर्वमेकत्रकृत्वातुलेहवत्साधुसाधयेत्। अष्टौपलानिपिप्पल्यास्त्रिजातकपलंतथा॥ मरिचस्यपलंचैकंसर्वमेकत्रचूर्णितम्। मधुनाकुडवंदत्वातदश्नीयाद्यथानलम्॥ निदग्धिकावलेहोऽयंभिषग्भिर्मुनिभिर्मतः। स्वरभेदहरोमुख्यःप्रतिश्यायहरस्तथा॥ कासश्वासाग्निमान्द्यादीन्गुल्ममेहगलामयान्। आनाहमूत्रकृच्छ्राणिहन्यात्ग्रन्थ्यर्बुदानिच॥ निदग्धिकावलेहः॥ २६९॥

भटकटैया ४०० तोला पीपलामूल २०० तोला चीता तथा दशमूल सौ २ तोला इन सबको २०४८ तोले जलमें पाककरके २५६ तोले बाकी रहनेपर उतारकर छानले फिर १२८ तोले पुराना गुड़ मिलायके अवलेहकासा पाककरे पाक होजाने पर पीपल ३२ तोले दालचीनी इलायची तेजपात तथा मिर्च चारचार तोले इन सबको पीसकर उसमें मिलावे और १६ तोले सहत मिलावे फिर अग्निके बलके अनुसार इसका सेवन करनेसे स्वर भेद पीनस खांसी श्वास मन्दाग्नि गोला

प्रमेह गलेके रोग आनाह मूत्रकृच्छ्र ग्रंथि और अर्बुद रोगका नाश होताहै इति निदग्धिका वलेह २६९

मृगनाभिःससूक्ष्मैलालवंगकुसुमानिच। त्वक्क्षीरीचेतिलेहोऽयंमधुसर्पिःसमायुतः॥ वाक्स्तम्भमुग्रं जयतिस्वरभ्रंशसमन्वितम्। मृगनाभ्यादिरवलेहः॥ २७०॥

कस्तूरी छोटी इलायची लौंग और वंशलोचन इन सबको सहत और घीके साथ चाटनेसे स्वर-भेद सहित अत्यन्त कठिन वाक्यस्तंभका नाश होताहै इति मृगनाभ्यादि अवलेह॥ २७०॥

ब्राह्मीवचाभयावासापिप्पलीमधुसंयुता। अस्यप्रयोगात्सप्ताहात्किन्नरैःसहगीयते॥ इतिस्वरभेदाधिकारः॥ २७१॥

ब्राह्मी वच हड़ वांसा और पीपल इनको सहतके साथ सात दिन सेवन करनेसे मनुष्य किन्नरों के साथ गानेके योग्य होजाताहै इति स्वर भेदाधिकार॥ २७१॥

अथारोचकाधिकारः। तत्रसनिदानमरोचकमाह॥

वातादिभिःशोकभयार्त्तिलोभक्रोधैर्मनोघ्नाशनरूपगन्धैः। अरोचकाःस्युःपरिहृष्टदन्तः कषायवक्त्रश्चमतोऽनिलेन॥ अरोचकाःनभोजनेरुचिमुत्पादयन्तीत्यरोचकाव्याधयःप ञ्चवातादिभेदैः। वातिकस्यलक्षणमाह। परिहृष्टदन्तःअम्लभक्षणेनेवपरिहृष्टोदन्तोय स्यसः। तथाकषायवक्त्रःकषायरसंवक्त्रंयस्यसः। पैत्तिकमाह। कट्वम्लमुष्णंविरसञ्चपू तीपित्तेनविद्याल्लवणञ्चवक्त्रम्। कट्वम्लमित्यादिनाविद्यादित्यनेनपैत्तिकस्यलक्षणमाह। श्लैष्मिकमाह। यतो विदग्धश्लेष्मास्यलवणभावमुपेतिलवणञ्चवक्त्रम्। तथामाधु र्य्यपैच्छिल्यगुरुत्वशैत्यस्निग्धत्वदौर्गन्ध्ययुतंकफेन। पैच्छिल्यंमुखस्याभ्यन्तरेस्निग्धत्वं वहिः। आगन्तुजमाह। अरोचकेशोकभयातिलोभक्रोधाद्यहृद्याशुचिगन्धजेस्यात्॥ स्वाभाविकञ्चास्यमथारुचिश्चत्रिदोषजेनेकरसंभवेच्च। क्रोधादिशब्देनाहृद्ययोरशनरूप योर्ग्रहणंस्वाभाविकञ्चअविकृतरसंत्रिदोषजमाहानेकरसम्अनेकरसमास्यंस्यात् २७२

अरुचिका अधिकार निदान सहित अरुचिका वर्णन॥

वातादिक दोष शोक भय पीड़ा लोभ क्रोध मनको अप्रिय भोजन रूप तथा गन्धके द्वारा अरुचि उत्पन्न होतीहै वातज पित्तज कफज सन्निपातज और आगन्तुक यह पांच प्रकारकी अरुचि होती है वातज अरुचिमें दन्तहर्ष (खटाई खायेसे हुए दांत) और मुखमें कषैलापन होताहै पित्तजअरुचि में कटु अम्ल तथा लवण रस युक्त उष्ण विरस और दुर्गन्धित मुख रहता है कफज अरुचि में मुख लवण तथा मधुररस युक्त सचिक्कण भारी शीतल तथा दुर्गन्धि युक्त रहताहै और मुखकेबाहर स्निग्ध-ता होतीहै आगन्तुक अरुचिमें शोक भय अत्यन्त लोभ क्रोधादिक और हृदयको अहित भोजन रूप तथा अपवित्र गन्धसे उत्पन्न हुए अरुचि रोगमें मुख स्वाभाविक रहताहै और भोजनमें अरुचि होती है सन्निपातज अरुचिमें कषाय आदिक अनेक रस मुखमें मालूम पड़ते हैं॥ २७२॥

वातजादिभेदेनमुखेविकृतिमभिधायान्यथाविकृतिमाह। हृच्छूलपीड़नयुतंपवनेनपि त्तात्तृड्दाहचोषबहुलंसकफप्रसेकम्। श्लेष्मात्मकंबहुरुजंबहुभिश्चविद्याद्वैगुण्यमोह जड़ताभिरथापरञ्च॥ हृच्छूलपीड़नयुतंहृदिशूलेनपीड़नंतेनयुतम्। चोषःपार्श्वस्थिता

ग्निनेवसन्तापःबहुभिः त्रिभिर्दोषैर्बहुरुजम् उक्तंवातादिरोगयुक्तं वैगुण्यंमनसोऽव्याकुलत्वं। जड़ताशून्यताऽपरम् आगन्तुजं ॥ २७३ ॥

वातज आदि भेदोंसे मुखके विकारोंको कहकर अन्यप्रकारके विकारोंको कहतेहैं जैसे वातज अरुचि में हृदयकी पीड़ासे व्याकुलता होतीहै पित्तज अरुचिमें तृषादाह तथा पास रक्खीहुई अग्नि से दाह के समान पीड़ाहोती है कफ अरुचिमें मुखसे कफज निकलता है सन्निपातज अरुचि में कही हुई वातादि रोगोंकी सब पीड़ा होती हैं और आगन्तुक अरुचि में मनकी व्याकुलता मोह तथा जड़ता होती है ॥ २७३ ॥

भक्तद्वेषभक्तच्छन्दौचरकसुश्रुताभ्यामरोचकत्वेनैवसंगृहीतौ । वृद्धभोजस्तेषांलक्षणानिपृथगाह । प्रक्षिप्तन्तुमुखेचान्नं यत्रनास्वादतेनरः । अरोचकःसविज्ञेयोभक्तद्वेषमतःशृणु॥ आस्वादतेअन्नस्यमिष्टतांनप्राप्नोति । तदन्नंमिष्टंलगतीतियावत् ॥ चिन्तयित्वातुमनसादृष्ट्वास्पृष्ट्वातुभोजनम् । द्वेषमायातियोजन्तुर्भक्तद्वेषःसउच्यते ॥ कुपितस्यभयार्त्तस्यतथाभक्तानिरोधिनः । यत्रनान्नेभवेच्छ्रद्धासभक्तच्छन्दउच्यते ॥ २७४ ॥

चरक और सुश्रुतमें भक्तद्वेष और अभक्तच्छन्द को भी अरुचिमें गिनाहै परन्तु वृद्धभोजने इन के लक्षण अलग अलग कहेहैं जैसे जो भोजनकी वस्तु मुखमें रखनेसे उसकी मधुरता न मालूम पड़े उसको अरुचि कहतेहैं किसी वस्तुको मनमें शोचकर देखकर अथवा सुनकर जो उसमें द्वेष होजाताहै उसको भक्त द्वेष कहतेहैं क्रोध युक्त भयभीत अथवा भक्ति रहित मनुष्यकी जो अन्नमें श्रद्धा न होय तो उसे अभक्तच्छन्द कहतेहैं ॥ २७४ ॥

अथारोचकस्यचिकित्सा ॥

भोजनाग्रेसदापथ्यंलवणार्द्रकभक्षणम् । रोचनंदीपनंवह्नेर्जिह्वाकण्ठविशोधनम् ॥ शृङ्गवेररसंवापिमधुनासहयोजयेत् । अरुचिश्वासकासघ्नंप्रतिश्यायकफापहम् ॥ २७५ ॥

अरुचिकी चिकित्सा ॥

भोजनके पहले सैंधोनोन के साथ अदरख सदैव खानी चाहिये यह रुचिकारी अग्नि दीपक और जिह्वा तथा कंठकी शोधकहै अदरकके रसमें सहत डालकर सेवन करने से अरुचि श्वास खांसी जुकाम तथा कफ का नाश होताहै ॥ २७५ ॥

पक्काम्लीकासिताशीतवारिणावस्त्रगालिता । एलालवङ्गकर्पूरमरिचैरवधूलिता ॥ पानकस्यास्यगण्डूषंधारयित्वामुखेमुहुः । अरुचिंनाशयत्येषपित्तंप्रशमयेत्तथा॥ अम्लीकापानम् ॥ २७६ ॥

पकी इमली तथा शक्कर को शीतल जलमें घोलकर वस्त्र में छाने फिर उसमें इलायची लौंग कपूर तथा मिर्च मिलावे इसपन्ने के वारंबार कुल्लेकरनेसे अरुचिका नाशहोकर पित्तकी शान्तिहोती है इति अम्लिकापान ॥ २७६ ॥

राजिकाजीरकौभृष्टौभृष्टंहिंगुसनागरम्।सैन्धवंद्विगोःसर्ववस्त्रपूतंप्रकल्पयेत्॥तावन्मात्रंक्षिपेत्तत्रयथास्याद्रुचिरुत्तमा। तक्रमेतद्भवेत्सद्योरोचनंवह्निवर्द्धनम्॥तक्रन्तुगव्यं॥२७७॥

राई जीरा तथा हींगकोभूनकर चूर्णकरे और सेंधानोन तथा सोंठ मिलाकर सबऔषधियों के बराबर गौकादही मिलावे फिरवस्त्रमें छानकर इसीकेबराबर गौकामट्ठा मिलावे इसके सेवन से रुचि और अग्नि दोनों बढ़तीहैं ॥ २७७

सम्यगावर्तितंदुग्धंनिबद्धंदाधिमाहिषम् । एकीकृत्यपटेघृष्टंशुभ्रशर्करयासमम् । एलालवङ्गकर्पूरमरिचैश्चसमन्वितम् ॥ नाम्नाशिखरिणीकुर्याद्रुचिंसकलवल्लभाम् । द्वेपलेदाडिमाम्लस्यखण्डंदद्यात्पलत्रयम् ॥ त्रिसुगन्धिपलंचैकंचूर्णमेकत्रकारयेत् । तच्चूर्णंमात्रयाभुक्तमरोचकहरंपरम् । दीपनंपाचनञ्चस्यात्पीनसज्वरकासजित् । (दाड़िमादिचूर्णम् ॥ २७८ ॥

गाढ़ेदूध और वस्त्रमेंबँधेहुए भैंसकेदहीको एकसाथ छानकर सुपेद शकर इलायची लौंग कपूर और मिर्च मिलावे इस्से अरुचि का नाशहोताहै इसको शिखरनकहतेहैं खट्टाअनार ८ तो० शकर१२ तो० और दालचीनी इलायची तथा तेजपात ४ तो० इनसबके चूर्णको मात्राके अनुसार खाने से अरुचि कानाश होताहै और यह चूर्ण दीपन पाचन तथा पीनस ज्वर और खांसी का नाशकहोता है इति दाड़िमादिचूर्ण ॥ २७८ ॥

लवंगकङ्कोलमुशीरचन्दनंनतंसनीलोत्पलकृष्णजीरकम् । जलंसकृष्णागुरुभृंगकेसरंकणाचविश्वानलदंसहेलया ॥ तुषारजातीफलवंशरोचनाःसिताद्धभागासकलंविचूर्णितम् । सरोचनंतर्पणमग्निदीपनंबलप्रदंवश्यतमंत्रिदोषजित् ॥ उरोविबन्धंतमकंगलग्रहंसकासहिक्कारुचियक्ष्मपीनसम् । ग्रहण्यतीसारमुरःक्षतंनृणांतथाप्रमेहान्निखिलान्निहन्ति ॥ कङ्कोलंसुगन्धविशेषः । नतंतगरम् । जलंवालकंभृङ्गंत्वकनलदमुशीरंतुषारःकर्पूरः । लवङ्गादिचूर्णम् ॥ २७६ ॥

लौंग कंकोल मिर्च खस चन्दन तगर नीलकमल कालाजीरा सुगन्धवाला कालाअगर दालचीनी नागकेशर पीपल सोंठ खस इलायची कपूर जायफल और वंशलोचन इन सब बराबर औषधियों को पीसकर सबकी आधीशकर मिलावे इसके सेवनसे रुचि तृप्ति अग्नि तथा बलकी वृद्धि होतीहै और त्रिदोष छातीका अकड़ना तमकश्वास गलग्रह खाँसी हिचकी अरुचि राजयक्ष्मा पीनस ग्रहणी अतीसार उरःक्षत तथा प्रमेहका नाश होताहै और यह चूर्ण अत्यन्त वशीकरणभीकरनेवालाहै इति लवंगादि चूर्ण ॥ २७९ ॥

जवानीदाड़िमंशुण्ठीतिन्तिरीकाम्लवेतसैः ।बदराम्लंचकुर्वीतचतुःशाणमितानिच॥ सार्द्धद्विशाणंमरिचंपिप्पलीदशशाणिका । त्वक्सौवर्चलधान्याकजीरकंद्विद्विशाणिकम् ॥ चतुःषष्टिमितेःशाणैःशर्करामत्रयोजयेत् । चूर्णितंसर्वमेकत्रयवानीखाण्डवाभिधम् ॥ चूर्णंजयत्पाण्डुरोगंहृद्रोगंग्रहणीज्वरम् । छर्दिशोषातिसारांश्चप्लीहानाहविबन्धताम् ॥ अरुचिंशूलमन्दाग्निमर्शोजिह्वागलामयान् । जवानीखाण्डवंचूर्णम् ॥ इत्यरोचकाधिकारः ॥ २८० ॥

अजवाइन मनार सोंठ इमली अमलवेत तथा वेर सोलह२मासे मिर्च १० मासे पीपल ४०मा० दालचीनी कालानोन धनिया तथा जीरा आठ २मासे और शकर २१ तोले चार मासे इनसब को पीसकर सेवन करने से पांडु हृदय के रोग ग्रहणी ज्वर छर्दि शोष अतीसार प्लीहा आनाह विबन्ध अरुचि शूल मन्दाग्नि ववासीर और जिह्वा तथा कंठके रोग नष्ट होते हैं इति यवानी खाडव चूर्ण इति अरोचिकाधिकार ॥ २८० ॥

अथ छर्द्यधिकारः । तत्रछर्दिविप्रकृष्टसन्निकृष्टनिदानपूर्विकांसंप्राप्तिमाह ॥

अतिद्रवैरतिस्निग्धैरहृद्यैर्लवणैरपि । अकालेचातिमात्रैश्चयथासात्म्यैश्चभोजनैः ॥ आमाद्भयात्तथोद्वेगादजीर्णात्कृमिदोषतः । नार्याश्चापन्नसत्वायास्तथातिद्रुतमश्नतः ॥ वीभत्सैर्हेतुभिश्चान्यैर्भुक्तमुत्क्लिश्यतेबलात् । आमात्असम्यक्पक्वाद्रसात्अजीर्णाद्यथास्थिताद्भुक्तात्आपन्नसत्वायाःप्राप्तगर्भायाः ॥ दुष्टैर्दोषैःपृथक्सर्वैर्वीभत्सालोकनादिभिः। छर्दयःपञ्चविज्ञेयाःतासांलक्षणमुच्यते। अन्यैर्वीभत्सैर्विकृतैर्हेतुभिःघृणाकारिभिः। अनिष्टश्रवणस्पर्शनदर्शनभक्षणपानैः । उत्क्लिश्यते ॥ २८१ ॥

छर्दिका अधिकार छर्दिके दूरवाले और समीपी कारणों समेत सम्प्राप्ति ॥

बहुत पतली बहुत स्निग्ध हृदय को अहित वस्तु तथा लवणके बहुत खानेसे समय के बिना अथवा बहुत या असात्म्य भोजनसे बहुत जल्दी भोजन करने से आमदोष भय घवराहट अजीर्ण तथा कृमियों के दोषसे स्त्रियों को गर्भ होनेसे और अन्य वीभत्स कारणों से कुपित दोषों के कारण भोजन करी हुई वस्तुकी वमन होती है छर्दि ५ प्रकार की होती है जैसे वातज पित्तज कफज सन्निपातज और आगन्तुक ॥ २८१ ॥

पूर्वरूपमाह ॥

हृल्लासोद्गारसंरोधौप्रसेकोलवणास्यता । द्वेषोऽन्नपानेचभृशंवमीनांपूर्वलक्षणम्२८२

छर्दिका पूर्व रूप ॥

छर्दि होनेके पहले मतली डकारका रुकना मुख से जल निकलना मुखका नमकीन होना और अन्नपान में द्वेष यह लक्षण होते हैं ॥ २८२ ॥

छर्देःसामान्यलक्षणमाह ॥

छादयन्नाननंवेगैरर्दयन्नङ्गभञ्जनैः । निरुच्यतेछर्दिरितिदोषोवक्त्रंप्रधावित. ॥ छादयन्पूरयन् अङ्गभञ्जनैःअंगभेदैःअर्दयन्अङ्गानि । पीडयन्वक्त्रप्रधावितःदोषःछर्दिरित्युच्यते ॥ २८३ ॥

छर्दिका सामान्य लक्षण ॥

जिस रोगमें दोष वेग तथा शरीरमें पीड़ा सहित ऊपर मुखकी ओर दौड़ता हुआ मुखको पूर्ण करके बाहर को निकलता है उसको छर्दि कहते हैं ॥ २८३ ॥

वातजाया लक्षणमाह ॥

हृत्पार्श्वपीडामुखशोषशीर्षनाभ्यर्तिकासस्वरभेदतोदाः । उद्गारशब्दप्रबलंसफेनंवि

च्छिन्नकृष्णंतनुकंकषायम् ॥ कृच्छ्रेणचाल्पंमहताचवेगेनार्तोऽनिलाच्छर्दयतीवदुःखम्। कषायंकषायरसम्दुःखमिवच्छर्दयति ॥ २८४ ॥

वातज छर्दिका लक्षण ॥

वातज छर्दिमें हृदय पसली मस्तक तथा नाभिमें पीडा मुखका सूखना खांसी स्वरभंग सुई चुभनेकीसी पीडा बहुत शब्द के साथ डकार और अत्यन्त कष्ट तथा वेग सहित फेने समेत उष्ण कषेले पतले पदार्थ की थोड़ीसी वमन होती है ॥ २८४ ॥

पित्तजामाह ॥

मूर्च्छापिपासामुखशोषमूर्द्धताल्वक्षिसन्तापतमोभ्रमार्त्तः। पीतंभृशोष्णंहरितञ्चतिक्तं धूम्रञ्चपित्तेनवमेत्सदाहम् ॥ २८५ ॥

पित्तजं छर्दिका लक्षण ॥

पित्तकी छर्दिमें मूर्च्छा तृषा मुखका सूखना अन्धकारसा मालूम होना भ्रम मस्तक तालु तथा नेत्रोंमें दाह और दाह सहित हर एककाले अथवा रक्तवर्ण अत्यन्त उष्ण तिक्त रसयुक्त पतले पदार्थ की वमन होती है ॥ २८५ ॥ कफजामाह ॥

तन्द्रास्यमाधुर्यकफप्रसेकसन्तोषनिद्रारुचिगौरवार्त्तः । स्निग्धंघनंस्वादुकफाद्विशु द्धंसलोमहर्षोऽल्परुजंवमेत्तु ॥ सन्तोषस्तृप्तिः ॥ २८६ ॥

कफकी छर्दिका लक्षण ॥

कफकी छर्दिमें तन्द्रा मुखकी मधुरता कफका बहना तृप्ति निद्राकी अधिकता रोमांच अरुचि तथा शरीरमें भारीपन होताहै और थोड़ी पीड़ा सहित स्निग्ध घने तथा मधुर रसयुक्त श्वेत पदार्थ की वमन होती है ॥ २८६ ॥ त्रिदोषजमाह ॥

शूलाविपाकारुचिदाहतृष्णाश्वासप्रमोहप्रबलाप्रसक्ता । छर्दिस्त्रिदोषाल्लवणाम्ल नीलसान्द्रोष्णरक्तंवमतान्नृणांस्यात् ॥ २८७ ॥

त्रिदोषज छर्दिका लक्षण ॥

त्रिदोषज छर्दिमें शूल भोजनका न पचना अरुचिदाह तृषा श्वास तथा मोह होता है और घने उष्ण नील तथा रक्त वर्ण लवण तथा अम्ल रसयुक्त पदार्थ की सदैव वमन होती है ॥ २८७ ॥

आगन्तुजामाह ॥

असात्म्यजाचकृमिजामजाचबीभत्सजादौहृदजाचयाहि । सापञ्चमीताश्चविभा वयेच्चदोषोच्छ्रयेणैवयथोक्तमादौ ॥ एताःपञ्चाप्यागन्तुजत्वेनसात्म्याद्वेकैव । अतएव सागन्तुजापञ्चमीविभावयेत्अनुबन्धयेत् ॥ २८८ ॥

आगन्तुज छर्दिका लक्षण ॥

आगन्तुज छर्दि पांच प्रकार की है जैसे असात्म्यज कृमिज आमज बीभत्सज और गर्भज यह पांचों प्रकार की छर्दि पहले कहेहुए वातज आदि छर्दियों के लक्षणोंके अनुसार दोषोंकी अधिकता से जाननी चाहिये ॥ २८८ ॥

उपद्रवानाह ॥

कासश्वासज्वरस्तृष्णाहिक्कावैचित्यमेवच । हृद्रोगस्तमकश्चैवज्ञेयाश्छर्देरुपद्रवाः ॥ वैचित्यंविकृतचित्तत्वंतमकोऽत्रतमःश्वासपदेनैवतमकाख्यस्यापिश्वासस्योक्तेः २८९ ॥

छर्दिके उपद्रव ॥

खांसी श्वास ज्वर तृषा हिचकी घबराहट हृदयकेरोग अन्धकारसा मालूम होना यहसब छर्दिके उपद्रव हैं ॥ २८९ ॥ असाध्यांसाध्याञ्चाह ॥

क्षीणस्ययाछर्दिरतिप्रसक्तासोपद्रवाशोणितपूर्ययुक्ता । सचन्द्रिकान्ताप्रवदन्त्यसाध्यांसाध्याञ्चिकित्स्येन्निरुपद्रवांच ॥सचन्द्रिकांमयूरपिच्छचन्द्रिकाप्रभायुक्ताम् २९० ॥

साध्यासाध्य छर्दिके लक्षण ॥

जो क्षीण पुरुषको उपद्रव सहित रुधिर तथा पीवसे मिलीहुई मोरकी पूंछके समान वर्णयुक्त सदैव वमन होय वह असाध्यहै औरजो उपद्रव सहित न होय तो साध्यहै ॥ २९० ॥

अथ छर्देश्चिकित्सा ॥

आमाशयोत्क्लेशभवाहिसर्वाश्छर्द्योमतालंघनमेवतस्मात् । विधीयतेमारुतजांविनातुसंशोधनंवाकफपित्तहारि ॥ हन्यात्क्षीरोदकंपीतंछर्दिःपवनसम्भवाम् । मुद्गामलयूषोवाससर्पिष्कःससैन्धवः ॥ (क्षीरोदकंनाशितस्यक्षीरस्योदकम्) गुडूचीत्रिफलानिम्बपटोलैःक्वथितंजलम् । पिबेन्मधुयुतंतेनछर्दिर्नश्यतिपित्तजा ॥ हरीतकीनांचूर्णन्तु लिह्यान्माक्षिकसंयुतम् । अधोमार्गीकृतेदोषेछर्दिःशीघ्रंनिवर्तते ॥विडङ्गत्रिफलाविश्वाचूर्णमधुयुतंजयेत् । विडङ्गप्लवशुण्ठीनांचूर्णंवाकफजांवमिम् ॥ (प्लवकैवर्त्तमुस्तकंगुड़तजीइतिलोके) पिष्ट्वाधात्रीफलंलाजान्शर्कराञ्चपलोन्मिताम् । दद्यामधुपलञ्चापिकुडवंसलिलस्यच ॥ वाससागालितंपीतंहन्तिछर्दिंत्रिदोषजाम् । गुडूच्यारचितंहन्तिहिमंमधुसमन्वितम् ॥ दुर्निवारामपिछर्दिंत्रिदोषजनितांवला॰ ॥ २९१ ॥

छर्दिकी चिकित्सा ॥

सब प्रकारकी छर्दि आमाशयमें दोषके इकट्ठे होनेसे उत्पन्न होतीहै इसलिये इसमें वमन कराना चाहिये परन्तु वातज छर्दिमें वमन न करानी चाहिये इसके उपरान्त कफ पित्तनाशक संशोधन औषध देनी चाहिये फटेहुये दूधका पानी अथवा मूंग और आमलेका यूप घी डालकर पीनेसे वातकी छर्दिका नाशहोताहै गिलोय त्रिफला नींब और परवलके काढ़ेमें सहत डालकर पीनेसे पित्तकी छर्दिका नाशहोताहै हड़के चूर्णको सहतके साथ चाटनेसे दोप नीचेको जाताहै इसलिये छर्दि शीघ्रही निवृत्त होजातीहै वायविड़ंग त्रिफला और सोंठको सहतके साथ चाटने से अथवा वायविड़ंग नागरमोथा सोंठ इनके चूर्णको सहतके साथ चाटनेसे कफकी छर्दिका नाशहोताहै आमला खील तथा शक्कर यहसब चारतोले लेकर और इनके साथ चारतोले सहत मिलाकर सोलहतोले जलमें छानकर पीनेसे सन्निपातजन्छर्दिका नाश होताहै गिलोयके शीत कपायमें सहत डालकर पीनेसे कृच्छ्र साध्य भी त्रिदोषज छर्दिका शीघ्र नाश होताहै ॥ २९१ ॥

एलालवङ्गगजकेसरकोलमज्जालाजाप्रियंगुघनचन्दनपिप्पलीनाम्। चूर्णानिमाक्षिकसितासहितानिलीढ्वाछर्दिंनिहन्तिकफमारुतपित्तजाताम्॥ (एलादिचूर्णम्॥ २९२॥
इलायची लौंग नागकेशर बेरकीगिरी खील मालकांगनी मोथा चन्दन और पीपल इनसबको चूर्णकरके सहतकेसाथ चाटनेसे वात पित्त और कफकीछर्दिकानाशहोताहै इति एलादि चूर्ण २९२॥
अश्वत्थवल्कलंशुष्कंदग्धंनिर्वापितंजले।तज्जलंपानमात्रेणछर्दिंजयतिदुर्जयाम्॥पथ्यात्रिकटुधान्याकजीरकाणांरजोलिहन्। मधुनानाशयेच्छर्दिमरुचिञ्चत्रिदोषजाम्॥विल्वत्वचोगुडूच्यावाक्काथःक्षौद्रेणसंयुतः। छर्दिंत्रिदोषजांहन्तिपर्पटःपित्तजांतथा। आम्रास्थिविल्वनिर्यूहःपीतःसमधुशर्करः। निहन्याच्छर्यतीसारंवैश्वानरइवाहुतिम्॥ निर्यूहः क्वाथः। जम्ब्वाम्रपल्लवशृतंलाजरजःसंयुतंशीतम्। शमयतिमधुनायुक्तंवमिमतिसारतृषामुग्राम्॥ २९३॥

पीपलकी सूखी छालको जलाकर पानीमें बुझावे इसपानीके पीनेसे दुस्साध्य छर्दिकाभी नाश होजाताहै हड़ त्रिकटु धनियाँ तथा जीरा इनको पीसकर सहतकेसाथ चाटनेसे त्रिदोषज छर्दि तथा अरुचिका नाश होताहै बेलकी छाल अथवा गिलोयके काढेमें सहत डालकर पीनेसे त्रिदोषज छर्दि का नाश होताहै और पित्तपापड़ेके काढेमें सहत डालकर पीनेसे पित्तकी छर्दिका नाश होता है आम की गुठली और बेलके काढेमें सहत और शक्कर डालकर पीनेसे छर्दि और अतीसारका नाशहोता है जामन और आमके पत्तोंके काढेको शीतल करके और खील तथा सहत डालकर पीने से बहुत भयंकर छर्दि अतीसार तथा तृषाका नाश होता है॥ २९३॥

बीभत्सजांहृद्यतमैरिष्टैर्दौर्हृदजांफलैः।लङ्घनैरामजांछर्दिंजयेत्सात्म्यैरसात्म्यजाम्॥ कृमिहृद्रोगवद्धन्याच्छर्दिंकृमिसमुद्भवाम्। तत्रतत्रयथादोषंक्रियांकुर्याच्चिकित्सकः॥ सोद्गारयांभृशंछर्द्यांमूर्वायाधान्यमुस्तयोः। समधूकाञ्चनंचूर्णंलेहयेन्मधुसंयुतम्॥ सौवर्चलमज्याजाजीवंशर्करा[illegible]रिचानिच। क्षौद्रेणससतंलीढंसद्यश्छर्दिनिवारणम्॥ (छर्द्यधिकारः॥ २९४॥

बीभत्सजछर्दि हृदयकी हितकारी वस्तुओंसे गर्भजछर्दि अभीष्ट फलोंसे आमजछर्दि लंघनोंसे और असात्म्यजछर्दि सात्म्य वस्तुओंसे निवृत्त होती है कृमिजछर्दिकी चिकित्सा कृमि तथा हृदय के रोगोंके समान करनी चाहिये वैद्यको दोषके अनुसार विचारकर चिकित्सा करनी चाहिये बहुत डकार सहित छर्दिके होनेपर मरोरफली धनियां मोथा मुलहठी और रसौतको सहतके साथ चाटे कालानोन जीरा शक्कर और मिर्च इनको सहतके साथ चाटनेसे शीघ्रही छर्दिका नाशहोता है इति छर्दि अधिकार॥ २९४॥

अथ तृष्णाधिकारः। तत्रतृष्णायाःनिदानपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह॥
भयश्रमाभ्यांबलसंक्षयाद्वाऊर्ध्वांचितंपित्तविवर्द्धनैश्च। पित्तंसवातंकुपितंनराणांतालुप्रपन्नंजनयेत्पिपासाम्॥ स्रोतःस्वपांवाहिषुदूषितेषुदोषैश्चतृट्सम्भवतीहजन्तोः। तिस्रःस्मृतास्ताःक्षतजाचतुर्थीक्षयात्तथान्यामसमुद्भवांच॥ भक्तोद्भवासप्तमिकेतितासांनि

बोधलिङ्गान्यनुपूर्वशस्तु ॥ नराणांपित्तंस्वस्थानएवसञ्चितंपित्तंसत्रातम् । पित्तविवर्द्धनैः कट्वम्लोष्णादिभिःकुपितात् । भयश्रमाभ्यांबलसंक्षयादुपवासापिदेश्चवातःकुपित तद्द यम्ऊर्ध्वंप्राप्तंऊर्ध्वंवशात्पिपासां जनयेत्नकेवलंतालुन्येवदूषितेतृषाभवतिकिन्तुजलवा हिस्रोतःस्वपि । अतआहस्रोतःस्वित्यादिमन्वत्रबहुवचनंनयुक्तंयतोजलवहेद्वेस्रोतसीसु श्रुतेनोक्ते । उच्यते । तयोरेवानेकप्रतानयोगान्नदोषःअपांवाहिषुस्रोतःस्वितिजिह्वादेर प्युपलक्षणम् । यतआह । चरकः ॥ रसवाहिनीश्चधमनीर्जिह्वाहृदयगलतालुक्लोमसंशो षान्नृणांदेहेषुकुरुतस्तृष्णामतिबलांपित्तानिलाविति॥संख्यामाह । तिस्रइत्यादि२९५॥

तृपाकाअधिकार तृपाकी निदान पूर्वक संप्राप्ति ॥

भय परिश्रम बलकाक्षय और पित्तवर्द्धक कटुअम्ल तथा उष्णादि वस्तुओंकेद्वारा कुपितहुए पित्त और वायु ऊर्ध्वगामी होकर तालुमें जातेहैं तब तृपा उत्पन्न होतीहै दूषित दोषोंके द्वारा जलके जाने वाले स्रोतों केदूषित होजानेपर तृपा उत्पन्नहोतीहै तृपा ७ प्रकारकी है जैसे वातज पित्तज कफज क्षतज क्षयज आमज और अन्नज अब यह सन्देह होताहै कि सुश्रुत में जलके जाने के दो स्रोतकहे गयेहैं तो यहाँ बहुवचन क्योंकहा इसका उत्तर यहहै कि दोहोनेपर भी बहुत शाखाओंके विस्तारसे बहुवचन कहागयाहै यहाँ जलके बहनेवाले स्रोत कहनेसे चरकके वचनके अनुसार जिह्वा हृदय कंठ तालु तथा क्लोमकाभी ग्रहणहोताहै अर्थात् वात और पित्त कुपित होकर इनस्थानोंमें भी स्थित होकर तृपाको उत्पन्न करतेहैं २९५ ॥

तृष्णायाःसामान्यंलक्षणमाह ॥

ताल्वोष्ठकण्ठास्यचतोददाहौसन्तापमोहौभ्रमविप्रलापाः । सर्वाणिरूपाणिभवन्तित स्यामुत्पत्तिकालेतुविशेषतोहि ॥ २९६ ॥

तृपाका सामान्य लक्षण ॥

तालु ओठ कंठ तथा मुखमें पीड़ा और दाह होताहै और सन्ताप मोह भ्रम तथा प्रलाप होताहै यहसब लक्षण तृपाके उत्पन्न होनेके समय होते हैं ॥ २९६ ॥

वातजामाह ॥

क्षामास्यतामारुतसम्भवायान्तोदस्तथाशङ्खशिरःसुचापि । स्रोतोनिरोधोविरसश्चव क्त्रंशीताभिरद्भिश्चविवृद्धिमेति ॥ शङ्खशिरःसुशङ्खयोःशिरसिचस्रोतोनिरोधःरसाम्बुवा हिनीधमनीनिरोधः ॥ २९७ ॥ वातज तृपाका लक्षण ॥

वातज तृपामें मुखकी मलिनता तथा विरसता माथेकी हड्डी तथा शिरमें पीड़ा और रस तथा जल के जानेकी नाड़ियों का रुकना यह लक्षण होते हैं और शीतल जल के सेवन से यह अधिक बढ़ती है ॥ २९७ ॥

पित्तजामाह ॥

मूर्च्छान्नविद्वेषविलापदाहारक्तेक्षणत्वंप्रततश्चशोषः । शीताभिनन्दामुखतिक्तताच पित्तात्मिकायांपरिधूपनञ्च ॥ विलापःप्रलापः प्रततश्चशोषः अविरतःशोषः शीताभि नन्दाशीतेच्छापरिधूपनंकण्ठाद्धूमनिर्गमइति ॥ २९८॥

पित्तज तृषाका लक्षण ॥

पित्तज तृषामें मूर्च्छा अन्नमें द्वेष प्रलाप दाह नेत्रोंका लालहोना मुखका अधिक सूखना शीतकी इच्छा मुखमें तीतापन गलेसे धुयेंका निकलना यहलक्षण होते हैं ॥ २९८ ॥

कफजमाह ॥

वाष्पावरोधात्कफसंवृतेऽग्नौतृष्णाबलासेनभवेन्नरस्य । निद्रागुरुत्वंमधुरास्यताच तयार्दितःशुष्यतिचातिमात्रम् ॥ अग्नौजठराग्नौकफसंवृतेस्वकारणकुपितेनकफेनोपरि प्राच्छादितेवाष्पावरोधात्अग्नेरूष्मावरोधात्अवरुद्धानलोष्मणाम्बुवहः स्रोतःशोषणा त्बलासेनकफेननरस्यतृड्भवेत्तथातृष्णयाऽर्दितःपीडितःशुष्यतिकृशोभवति २९९ ॥

कफकी तृषाके लक्षण ॥

अपने कारणोंसे कुपित कफ जठराग्निको आच्छादित करता है और अग्निकी ऊष्माको रोकता है फिर रुकीहुई ऊष्माके द्वारा जलके जानेवाले श्रोतोंके सूखजाने से कफकी तृषा उत्पन्न होती है इसमें अधिक निद्रा भारीपन मुखमें मधुरता तथा बहुत कृशता होती है ॥ २९९ ॥

क्षतजामाह ॥

क्षतस्यरुक्शोणितनिर्गमाभ्यांतृष्णाचतुर्थीक्षतजामतातु।क्षतस्यशस्त्रादिक्षतयुक्तस्य रुक्पीडा ॥ ३०० ॥

क्षतज तृषाका लक्षण ॥

शस्त्रमादिकेद्वारा घावयुक्त मनुष्यकोपीड़ा औररुधिर निकलनेके कारणक्षतजतृषाउत्पन्न होतीहै ३००

क्षयजामाह ॥

रसक्षयाद्याक्षयसम्भवासातयाभिभूतस्तुनिशादिनेषु । पेपीयतेऽम्भःसमुखंनयातितां सन्निपातादितिकेचिदाहुः ॥ रसक्षयेोक्तानिचलक्षणानितस्यामशेषेणाभिपश्येद्व्यवस्येत् । रसक्षयलक्षणानिसुश्रुतेनोक्तानिरसक्षयेहृत्पीडाकम्पःशोषः शून्यतातृष्णा चेतिव्यवस्येत जानीयात् ॥ ३०१ ॥

क्षयज तृषाका लक्षण ॥

रसके क्षयहोने से जो तृषा उत्पन्न होती है उसको क्षयज तृषा कहते हैं क्षयजतृषा में रात्रि दिन जलपीनेसे भी तृप्ति नहीं होती और रसक्षयके संपूर्ण लक्षण मिलते हैं कोई२इसको सन्निपातजतृषा भी कहते हैं रसक्षय के लक्षण सुश्रुत के कहे हुये यह हैं जैसे हृदय में पीड़ा कंप मुखका सूखना शून्यता और तृषा ॥ ३०१ ॥

आमजामाह ॥

त्रिदोषलिङ्गामसमुद्भवाचहृच्छूलनिष्ठीवनसादकर्त्री ॥ ३०२ ॥

आमज तृषाके लक्षण ॥

आमज तृषामें सन्निपातके चिह्न होते हैं और हृदय में पीड़ायुकथुकी तथा शरीर में शिथिलता होती है ॥ ३०२ ॥

भुक्तोद्भवामाह ॥

स्निग्धंतथाम्लंलवणञ्चभुक्तंगुर्वन्नमेवाशुतृषांकरोति । लवणञ्चेतिचकारात्कटुच३०३॥

अन्नज तृषाकालक्षण ॥

स्निग्ध अम्ल लवण कटु और भारी वस्तुओं के सेवन से शीघ्रही तृषा उत्पन्न होती है इसको अन्नजा तृषा कहते हैं ॥ ३०३ ॥

उपसर्गजामाह ॥

हीनस्वरःप्रताम्यन्दीनाननहृदयशुष्कगलतालुः । भवतिखलुसोपसर्गातृष्णासाशोषिणीकष्टा ॥ शोषिणीधातुशोषिणी ॥ ३०४ ॥

उपद्रवजतृषाके लक्षण ॥

जिस तृषामें स्वरकी क्षीणता मूर्च्छा तथा ग्लानि होय और मुख हृदय तथा तालु सूखजाय वह धातुओंकी सुखानेवाली तृषा उपद्रव सहित कष्टसाध्य होतीहै ॥ ३०४ ॥

उपसर्गानाह । तद्युक्तायाःअरिष्टत्वञ्चाह ॥

ज्वरमेहक्षयकासश्वासाद्युपसृष्टदेहानां । सर्वास्त्वतिप्रसक्तारोगकृशानांवमिप्रसक्तानां ॥ घोरोपद्रवयुक्तातृष्णामरणायविज्ञेया । आदिशब्दादतीसारादीनांग्रहणम् ॥ अतिप्रसक्ताःनितरांघोरोपद्रवयुक्ताःअतीवमुखशोषादियुक्ताः ॥ ३०५ ॥

तृषाके उपद्रव और अरिष्ट ॥

ज्वर प्रमेह क्षय खांसी तथा श्वास तथा अतीसारादिसे युक्त मनुष्योंकी अत्यन्त उपद्रव सहित संपूर्ण तृषाओररोगसेकृश तथा छर्दिसे व्याकुल मनुष्योंकी घोर उपद्रव युक्ततृषामृत्युकारीहोतीहै ३०५॥

अथ तृष्णायाश्चिकित्सा ॥

वातघ्नमन्नपानंमृदुलघुशीतञ्चवाततृष्णायाम् । तृष्णायांपवनोत्थायांसगुडंदधिशस्यते ॥ स्वादुतिक्तंद्रवंशीतंपित्ततृष्णापहंपरम् । मुस्तपर्पटकोदीच्यधन्याकोशीरचन्दनैः ॥ शृतंशीतंजलंदद्यात्तृट्दाहज्वरशान्तये । क्षत्राधान्यकंकश्चिद्धात्रीञ्चदद्यात्चन्दनमत्रयवलंतस्यातितृष्णाहरत्वात्शृतमर्द्धपक्वमत्रकर्त्तव्यम् । षडङ्गपानम् ॥ ३०६ ॥

तृषाकी चिकित्सा ॥

वातजतृषामें वातनाशक कोमल हलकी तथा शीतल वस्तुओंके द्वारा चिकित्सा करनी चाहिये और इसमें गुड़सहित दहीखाना श्रेष्ठहै पित्तज तृषामें मधुर तिक्त पतली तथा शीतल वस्तु हितकारी हैं मोथा पित्तपापड़ा सुगन्धवाला धनियाँ खस और चन्दन इनके द्वारा जलको पाककरने पर जब आधारहे तब शीतल करके पीनेसे तृषा दाह तथा ज्वर शान्त होताहै इति षड़ंगपानीय ॥ ३०६ ॥

लाजोदकंमधुयुतंशीतंगुड़विमर्दितम् । काश्मरीशर्करायुक्तंपिबेत्तृष्णार्दितोनरः॥ ३०७॥

खीलोंके द्वारा पाक कियेहुए जल में शीत होजानेपर सहत गुड़ गभारी और शक्कर छोड़कर पीनेसे तृषाका नाश होताहै ॥ ३०७ ॥

आस्तरणमार्द्रवासप्रावरणञ्चार्द्रवासःस्यात् । तेनपिपासाशाम्यतिदाहश्चोग्रोऽपि देहिनांनियतं ॥ गोस्तनीक्षुरसक्षीरयष्टीमधुमधूत्पलैः । नियतंनासिकापीतैस्तृष्णाशाम्यतिदारुणा ॥ वैशद्यंजनयत्यास्येसंदधातिमुखेजलम् । तृष्णादाहप्रशमनंमधुगण्डूषधारणम् ॥ जिह्वातालुगलक्लोमशोषेमूर्ध्निनिधापयेत् । केशरंमातुलुङ्गस्यघृतसैन्धव---

दाड़िमंबदरंलोध्रं कपित्थंबीजपूरकम् । पिष्ट्वामूर्द्धिनिलेपस्तु पिपासादाहनाशनः ॥ वारिशीतंमधुयुतमाकण्ठाद्वापिपासितम् । पाययेद्वामयेच्चाथतेनतृष्णाप्रशाम्यति ॥ प्रातःशर्करयोपेतःक्वाथोधान्याकसम्भवः । जयेत्तृष्णांतथादाहमवेत्स्रोतोविशोधनम् ॥ आमलंकमलंकुष्ठंलाजश्चवटरोहकम् । एतच्चूर्णस्यमधुनागुटिकांधारयेन्मुखे ॥ तृष्णां प्रवृद्धांहन्त्येषामुखशोषञ्चदारुणम् ॥ ३०८ ॥

गीले वस्त्रके ओढ़नेऔर बिछानेसे तृषा तथाअत्यन्त दाहका नाश होताहे दाखईखकारसदूधमुलहठी सहत और कमलकाफूल इनसब वस्तुओंको पीसकर नासिकाकेद्वारा पीनेसे तृषाका नाश होताहै मुखमें सहतका कुल्ला रखनेसे तृषा तथा दाहका नाशहोता है और मुख में निर्म्मलता होकर जल आताहै जिह्वा तालु कंठ तथा क्लोमके सूखनेपर नींबूकाजीरा घी और सैंधानोन इनसबको मस्तक पर लेपकरे अनार बेर लोध कैथा और बिजोरा नींबू इनसबको पीसकर शिरपर लेपकरनेसे तृषा तथा दाहका नाशहोताहै सहतयुक्त शीतल जल गलेतक पिलाकर वमन करानेसे तृषाका नाशहोताहै धनियेके काढ़ेमें शक्कर डालकर प्रातःकाल पीनेसे तृषा तथा दाहका नाशहोताहै और स्रोत शुद्ध होतेहैं आमला कमल कूट खील और वर्गदके अंकुर इनसबको पीसकर सहतके साथ गोली बनाकर मुखमें रखनेसे तृषा तथा मुखके सूखनको नाश होताहै ॥ ३०८ ॥

क्षतोद्भवांरुग्विनिवारणेनजयेद्रसानामसृजश्चपानैः । क्षयोत्थितंक्षीरजलंनिहन्यान्मांसोदकंवामधुरोदकंवा ॥ आमोद्भवांबिल्ववचायुतानांजयेत्कषायैरथदीपनानाम् । गुर्वन्नजामुल्लिखनैर्जयेच्चक्षयंविनासर्वकृताञ्चतृष्णाम् ॥ उल्लिखनैःलेखनद्रव्यैःस्निग्धेऽन्नेभुक्ते यातृष्णास्यात्तांगुडाम्बुनाशमयेत् । अतिरोगदुर्बलानांतृष्णांशमयेन्नृणामिहाशुपयः ॥ पयोत्रदुग्धं ॥ ३०९ ॥

क्षतजतृषाके नाशकरनेके लिये मांसरस और रुधिरका पानकरे क्षयजतृषामें जल मिलाहुआ दूध मांसकारस अथवा मधुर जल पिये आमजतृषाके दूरकरनेके लिये बेल तथा वचके द्वारा क्वाथ बनाकर पिये यह दीपनहै भारी भोजनसे उत्पन्न हुई तृषामेंलेखन वस्तुओं से चिकित्सा करे क्षयज तृषाको छोड़कर सबप्रकारकी तृषा लेखन वस्तुओं से निवृत्त होती हैं स्निग्ध भोजन करनेसे जोतृषा उत्पन्न होतीहै वह गुडके शर्बत पीनेसे शान्त होतीहै रोगके द्वारा अत्यन्त दुर्बल मनुष्योंकी तृषा दूध पीनेसे निवृत्त होती है ॥ ३०९ ॥

मूर्च्छाछर्दितृषानाहस्त्रीमद्यभृशकर्षिताः । पिबेयुःशीतलंतोयंरक्तपित्तेमदात्यये ॥ सात्म्यान्नपानभैषज्यैस्तृष्णांतस्यजयेत्पुनः । तस्यांजितायामन्योऽपिव्याधिःशक्यश्चिकित्सितुम् ॥ तृषंपूर्वामपक्षीणेनलभेतजलंयदि ॥ मरणंदीर्घरोगंवाप्राप्नुयात्त्वरितंनरः । तृषितोमोहमायातिमोहात्प्राणान्विमुञ्चति । तस्मात्सर्वास्ववस्थासुनक्वचिद्वारिवारयेत् ॥ अन्नेनापिविनाजन्तु प्राणान्धारयतेचिरम् । तोयाभावात्पिपासार्त्तःक्षणात्प्राणैर्विमुच्यते ॥ इति तृष्णाधिकारः ॥ ३१० ॥

मूर्च्छा छर्दि तृषा आनाह रक्त पित्त और मदात्यय रोगवालोंको और मद्य तथा मैथुनसे कृशमनुष्यों

को शीतल जल पिलाना चाहिये सात्म्य अन्नपान तथा औषधोंके द्वारा पहले तृषाको दूरकरै क्योंकि तृषाके निवृत्त होजानेपर अन्य रोगकी चिकित्सा होसकीहै प्यासेको जो शीघ्रही जल न मिले तो मरण अथवा किसी बड़ेरोगको प्राप्त होताहै तृषासे मोह होताहै और मोहसे मृत्यु होतीहै इसलिये किसी अवस्थामेंभी जल न रोकना चाहिये अन्नके विनाभी प्राणी वहुत कालतक जी सक्ता है परन्तु जलके विना प्यासा होकर क्षणभर मेंही मरजाताहै इति तृषाधिकार ॥ ३१० ॥

मूर्च्छाधिकारः । तत्रमूर्च्छायानिदानपूर्विकांसंप्राप्तिमाह ॥

क्षीणस्यबहुदोषस्यविरुद्धाहारसेविनः ॥ वेगाघाताद्भीघाताद्धीनसत्वस्यवापुनः । करणायतनेषूग्रावाह्येष्वभ्यन्तरेषुच । निविशन्तेयदादोषास्तदामूर्च्छन्तिमानवाः ॥ वहुदोषस्याधिकदोषस्यनत्वनेकदोषस्य । तदामूर्च्छात्रिदोषजैवस्यात्तथैवास्तुकोदोषः तत्रपृथक्दोषजानांमूर्च्छानांवक्ष्यमाणत्वात्वेगाघातात्मलादेः, अभिघातात्लगुडादिना, हीनसत्वस्यस्वल्पसत्वगुणस्य, अर्थादधिकतमोगुणस्ययतउक्तंमूर्च्छापित्ततमःप्रायेति, करणायतनेषुकरणंमनस्तस्यायतनेषुस्वस्थानेषुवाह्येषुकर्मेन्द्रियेषुअभ्यन्तरेषुबुद्धीन्द्रियेषु ॥ ३११ ॥

मूर्च्छाका अधिकार । मूर्च्छाकी निदान पूर्व्वक संप्राप्ति ॥

क्षीण वहुत दोषयुक्त तथा विरुद्ध आहार करनेवाले वेगोंके रोकनेवाले लाठीआदिके चोटवाले और हीनसत्व वाले मनुष्योंके मनकी स्थानरूप कर्मेन्द्रिय और बुद्धीन्द्रियोंमें जववहुत कठिन दोष प्राप्त होतेहैं तब मूर्च्छा उत्पन्न होतीहै ॥ ३११ ॥

सामान्यलक्षणमाह ॥

संज्ञावहासुनाड़ीषुपीड़ितास्वनिलादिभिः । तमोऽभ्युपैतिसहसासुखदुःखव्यपोहकृत् ॥ सुखदुःखव्यपोहाच्चनरःपततिकाष्ठवत् । मोहोमूर्च्छेतितामाहुःषड्विधासाप्रकीर्तिता ॥ तमोगुणःअज्ञानहेतुःअभ्युपैतिआगच्छतिसुखदुःखव्यपोहकृत् । सुखदुःखज्ञ ननाशकरंनष्टसुखदुःखज्ञानेनरःकाष्ठवत्पतति तांमोहोमूर्च्छेतिप्राहुरित्यन्वयःमूर्च्छायामूर्च्छायोऽपिपर्यायः । यतउक्तम् । संज्ञोपघातोमूर्च्छायोमूर्च्छास्यान्मूर्च्छनंतथा । कश्मलंप्रलयोमोहःसंन्यासस्तुमृतोपमः ॥ इतिषडपिमूर्च्छेविवृणोति । वातादिभिःशोणितेनमद्येनचविषेणच ॥ षट्स्वप्येतासुपित्तन्तुप्रभुत्वेनावतिष्ठते । यतउक्तम् । मूर्च्छापित्ततमःप्रायेति ॥ ३१२ ॥

मूर्च्छाका सामान्य लक्षण ॥

वातादिदोषोंके द्वारा ज्ञानके प्राप्तकरने वाली नाड़ियोंके ढकजाने पर सुख दुःखका नाश करने वाला तमोगुण वढ़ताहै इस्से मनुष्य काष्ठके समान गिरपड़ताहै इसको मूर्च्छा कहते हैं संज्ञोपघात मूर्च्छाय मूर्च्छा मूर्च्छन कश्मल प्रलय मोह संन्यास और मृतोपम यह मूर्च्छा के नाम हैं मूर्च्छा ६ प्रकारकी है जैसे वातिक पैत्तिक कफज रक्तज मद्यजऔर विषज इनछवों प्रकारकी मूर्च्छाओंमें पित्त प्रधानहै क्योंकि कहागया है कि मूर्च्छामें पित्त और तमोगुण अधिक होता है ॥ ३१२ ॥

तस्याःपूर्व्वरूपमाह ॥

हृत्पीड़ाजृम्भणंग्लानिःसंज्ञानाशोवलक्षयः । सर्व्वासांपूर्व्वरूपाणियथास्वन्तांविभावयेत् ॥ ३१३ ॥

मूर्च्छाका पूर्व्व रूप ॥

सबप्रकारकी मूर्च्छाओंके होनेसे पहले हृदयमें पीड़ा जंभाई ज्ञानकानाश ग्लानि और बलक्षय होताहै इनको दोषके अनुसार जानलेवे ॥ ३१३

तत्रवातिकमूर्च्छामाह ॥

नीलंवायदिवाकृष्णमाकाशमथवारुणम् । पश्यंस्तमःप्रविशतिशीघ्रञ्चप्रतिबुध्यते ॥ वेपथुश्चाङ्गमर्द्दश्चप्रपीड़ाहृदयस्यच ॥ कार्श्यंश्यावारुणाच्छायामूर्च्छायेवातसम्भवे ॥ नीलंनीलवर्णंकृष्णंकज्जलाभंअरुणंअलक्तरागंतमःप्रविशतिमूर्च्छतिश्यावारुणाच्छाया गात्रस्य ॥ ३१४ ॥

वातज मूर्च्छाका लक्षण ॥

वातज मूर्च्छामें रोगी आकाश को नीला काला अथवा लाल देखकर मूर्च्छित होता है औरशीघ्रही चैतन्य होताहै शरीरमें पीड़ा कम्प हृदयमें पीड़ा कृशता और धुमेला तथा रक्तवर्ण होजाताहै ३१४॥

पैत्तिकमाह ॥

रक्तंहरितवर्णंवाविपित्तन्तमथापिवा । पश्यंस्तमःप्रविशतिसस्वेदःप्रतिबुध्यते ॥ सपिपासःससन्तापोरक्तपित्ताकुलेक्षणः । सम्भिन्नवर्चाःपीताभोमूर्च्छायेपित्तसम्भवे३१५॥

पित्तकी मूर्च्छाके लक्षण ॥

पित्तज मूर्च्छामें रोगी आकाशकोलाल हरा अथवा पीला देखकर मूर्च्छित होता है और पसीना आनेपर चैतन्य होता है तृषा सन्ताप नेत्रोंमें ललाई तथा प्रलापन मलभेद और पीत वर्ण यह लक्षण होते हैं ॥ ३१५ ॥

श्लैष्मिकमाह ॥

मेघसङ्काशमाकाशतमोभिर्वाघनैर्वृतम् । पश्यंस्तमःप्रविशतिचिराच्चप्रतिबुध्यते ॥ गुरुभिःप्रावृतेरङ्गैर्यथैवार्द्रेणचर्मणा । सप्रसेकःसहृल्लासोमूर्च्छायेकफसम्भवे ॥ मेघसङ्काशंशुभ्रमेघसङ्काशमित्यर्थः। यतआहसुश्रुतः। कफेनपश्येद्रूपाणिश्वेताभ्रप्रतिमानित । घनैर्निविड़ैस्तमोभिःगुरुभिरङ्गैरुपलक्षितः ॥ ३१६ ॥

कफज मूर्च्छाके लक्षण ॥

कफज मूर्च्छा में रोगी आकाश को मेघों के समान अथवा घने अन्धकार से ढकाहुआसा देखकर मूर्च्छित होताहै और बहुत देरमें चैतन्य होताहै अंगोंमें भारीपन शरीर गीले कपड़ोंसे ढकाहुआसा मालूम होना लारबहना और मतली यह लक्षण होते हैं यहाँ मेघ शब्द से श्वेतमेघ लेना चाहिये क्योंकि सुश्रुतने कहाहै कि कफसे श्वेत मेघोंके समान रूप दिखाई देते हैं ॥ ३१६ ॥

मूर्च्छायःषड्विधउक्तःसुश्रुतेन। चरकस्तुसान्निपातिकमपिमूर्च्छायमाह॥ सर्व्वाकृतिः सन्निपातादपस्मारइवागतः । सजन्तुंपातयत्याशुविनाबीभत्सचेष्टितैः ॥ अपस्मारइवागतस्तेनमहताभिघातेन । पततिचिरेणप्रतिबुध्यतेतर्हितयोःकोभेदइत्यतआह । सन्नि

पातिकमूर्च्छायःविनावीभत्सचेष्टितैः । कफेनवमनदन्तघट्टनाक्षिविकृत्यादिभिर्विनापातयति ॥ ३१७ ॥

सुश्रुतने ६ प्रकारकी मूर्च्छा कहीहैं परन्तु चरकने सन्निपातज मूर्च्छा भी कहीहै जैसे सन्निपातज मूर्च्छा तीनों दोषोंके लक्षणोंसे युक्त होती है और इस में मृगीके समान शीघ्रही रोगी गिरपड़ता है और देरमें चैतन्य होताहै परन्तु मृगीके समान मुखसे फेन गिरना दांतोंका कटकटाना और नेत्रों में विकारादिक बीभत्स लक्षण नहीं होते हैं और यही इनदोनोंमें भेदहै ॥ ३१७ ॥

रक्तजायामूर्च्छायानिदानमाह ॥

पृथिव्यम्भस्तमोरूपंरक्तगन्धस्तदन्वयःतस्माद्रक्तस्यगन्धेनमूर्च्छन्तिभुविमानवाः ॥ तमोरूपंतमोवहुलंमानवाश्चयेतामसाः । नतुसात्विकाराजसाश्चअत्रेकेवदन्तिनैवायुक्तिःसमीचीनातर्हिचम्पकादिगन्धेनापिमूर्च्छाप्रसज्येतत्त्रापिगन्धस्यपार्थिवत्वात् । अत्राह ॥ द्रव्यस्वभावमित्येकेदृष्ट्वायदतिमुह्यति ॥ अत्राहभोजः । दर्शनादसृजस्तज्जाद्गन्धाच्चेवप्रमुह्यति ॥ ३१८ ॥ रक्तजमूर्च्छाका निदान ॥

पृथ्वी तथा जल यहदोनों तमोगुण रूप हैं और इन्हींसे रुधिर तथा गन्ध उत्पन्न होतेहैं इसीसे रुधिरकी गन्धि के द्वारा तामस मनुष्य मूर्च्छित होते हैं सात्विक और राजस नहीं मूर्च्छित होते हैं यहाँपर कोई २ यह कहतेहैं कि यह युक्ति ठीकनहींहै क्योंकि ऐसा होनेसे चम्पादिककी गन्धिसे भी मूर्च्छा होनी चाहिये क्योंकि उनमें भी पृथ्वी सम्बन्धी गन्धि है इसी से कहागया है कि देखकरजो मूर्च्छा होती है यह वस्तुओंका स्वभावहै यहाँपर भोजने कहा है कि रुधिरके देखनेसे और सूंघने से मूर्च्छा होती है ॥ ३१८ ॥

रक्तेनमूर्च्छितस्यलक्षणमाह ॥

स्तब्धाङ्गयष्टिस्त्वसृजादगूढोच्छ्वासश्चमूर्च्छितः ॥ ३१९ ॥

रक्तज मूर्च्छाका लक्षण ॥

रुधिरसे मूर्च्छित मनुष्यका शरीर तथा नेत्रस्तब्ध होजातेहैं और श्वास साफ२ नहीं आता ३१९

मद्यजविषजयोर्मूर्च्छयोर्निदानमाह ॥

गुणास्तीव्रतरत्वेनस्थितास्तुविषमद्ययोः।तएवतस्मात्ताभ्यान्तुमोहौस्यातांयथेरितौ ॥ येगुणाःलघुरूक्षाशुविशदव्यवायितीक्ष्णाविकाशिसूक्ष्मोष्णानिर्देश्यरसत्वादयः तैलादिद्रव्येभ्यस्तास्तीव्राश्चसन्ति । तएवगुणाःविषमद्ययोस्तुतीव्रतरत्वेनास्थिताःतत्रापिभेदः । तएवमद्येदृश्यन्तेविषेतुबलवत्तराइति ॥ ३२० ॥

मद्यज और विषज मूर्च्छाका निदान ॥

विष और मद्यमें लघु रूक्ष विशद आशु विवाई तीक्ष्ण विकाशी सूक्ष्म उष्ण और योगवाही आदिक गुण तीव्रतासे रहतेहैं इसी हेतुसे मद्य और विषके द्वारा मूर्च्छा होतीहै तन्त्रान्तर में इसमेंभी भेद कहागयाहै कि सान्निपातके कुपित करनेवाले जो विषके गुण कहे गयेहैं वही मद्यमेंभी हैं परन्तु विष में यह गुण अधिकतासे रहतेहैं ॥ ३२० ॥

मद्यजायाःमूर्च्छायालक्षणमाह ॥

मद्येनप्रलपन्शेतेनष्टविभ्रान्तमानसः। गात्राणिविक्षिपन्भूमौजरांयावन्नयातितत्॥ नष्टविभ्रान्तमानसःनष्टंसर्वथास्मृतिहीनंविभ्रान्तंरज्जौसर्पज्ञानयुक्तंमानसंयस्यसः। जरां जीर्णत्वंतन्मद्यम्॥ ३२१॥ मद्यज मूर्च्छाका लक्षण॥

मद्यज मूर्च्छामें स्मृतिका नाश तथा भ्रान्ति (रस्सीमें सर्पादिकका ज्ञान) युक्त चित्तहोताहै और जबतक मद्यका परिपाक नहीं होताहै तबतक मनुष्य प्रलाप करताहै और अंगोंको पटकता हुआ पृथ्वी में पड़ा रहताहै॥ ३२१॥

विषजायालक्षणमाह॥

वेपथुःस्वप्नतृष्णाःस्युस्तमश्चविषमूर्च्छिते। वेदितव्यंतीव्रतरंयथास्वंविषलक्षणैः॥ विषस्यमूलकन्दफलपत्रक्षीरादिभेदभिन्नस्ययथास्वंलक्षणमुक्तंसुश्रुतेकल्पस्थानेतल्लक्ष णंमद्यापेक्षयातीव्रतरंवेदितव्यंनतुसंज्ञानाशेनसाम्यधर्म्मात्॥ ३२२॥

विषज मूर्च्छा का लक्षण॥

विषज मूर्च्छामें कम्प निद्रा तृषा तथा अन्धकार मालूम होना और खायेहुए विषके लक्षण तीव्रता से मालूम होतेहैं मूल कन्द फल पत्र दूध आदि भेद युक्त विषके लक्षण सुश्रुतके कल्प स्थानमें कहे गयेहैं वह लक्षण मद्यकी अपेक्षा तीव्र कहे गयेहैं जोकि इन दोनोंमें संज्ञाका नाश होताहै केवल इसी लिये इनको शमन जानना चाहिये॥ ३२२॥

मूर्च्छाभ्रमतन्द्रादीनांकोभेदइत्यतआह॥

मूर्च्छापित्ततमःप्रायोरजःपित्तानिलाद्भ्रमः। तमावातकफात्तन्द्रानिद्राश्लेष्मतमोभवा॥ रजःपित्तानिलाद्भ्रमइतिनात्रसमुच्चयः। केवलपित्तज्वरेभ्रमस्योक्तत्वात्भ्रमश्च चक्रारूढस्येवभ्रमवस्तुज्ञानंस्वदेहस्यभ्रमतइवज्ञानञ्च॥ ३२३॥

मूर्च्छा भ्रम और तन्द्रा आदिका भेद॥

पित्त तथा तमोगुण की अधिकतामें मूर्च्छा पित्त वात तथा रजोगुणकी अधिकतामें भ्रम (चक्रपर चढ़ी हुई घूमती हुईसी सब वस्तुओंका मालूम होना) वात कफ तथा तमोगुणकी अधिकतामें तन्द्रा और कफ तथा तमोगुणकी अधिकतामें निद्रा उत्पन्न होतीहै॥ ३२३॥

तन्द्रायालक्षणमाह॥

इन्द्रियार्थेष्वसंवित्तिर्गौरवंजृम्भणंक्लमः। निद्रार्त्तस्येवयस्येतितस्यतन्द्रांविनिर्दिशेत्॥ इन्द्रियार्थानामर्थःप्रयोजनयेषु। घ्यर्थादिविषयेषु। असंवित्तिःअसम्यक्ज्ञानं। इतिइन्द्रियार्थःसम्यक्ज्ञानादिनिद्रायां प्रबुद्धस्यक्लमाभावस्तन्द्रायान्तुप्रबोधितस्यापिक्लमइत्यनयोर्भेदः॥ ३२४॥ तन्द्राका लक्षण॥

जब इन्द्रियोंमें विषयके ग्रहण करने की शक्ति नरहै शरीरमें भारीपन होय जंभाई आवे और नींदसे भरे हुएके समान क्लम मालूम होवे उसको तन्द्रा कहतेहैं निद्रा और तन्द्रामें यह भेदहै कि निद्रामें जागनेके उपरान्त क्लमजाता रहताहै और तन्द्रावालेको जागनेपरभी क्लममालूम होताहै ३२४

॥ क्लमस्यलक्षणमाह ॥

योनायासःश्रमोदेहप्रवृद्धःश्वाससङ्गतः । क्लमःसइतिविज्ञेयइन्द्रियार्थप्रबाधकः ॥ इन्द्रियाणांबुद्धीन्द्रियाणांकर्मेन्द्रियाणाञ्च । अर्थःप्रयोजनंविषयग्रहणंतस्यप्रबाधकःप्राबल्येन ॥ ३२५ ॥

क्लमका लक्षण ॥

जिसमें परिश्रमके विना श्रम मालूम देवें श्वास बड़े २ आवें और इन्द्रियांअपने२ कामको नकर सकें उसको क्लम कहतेहैं ॥ ३२५ ॥

निद्रालक्षणमाह ॥

यदातुमनसिक्लान्तेकर्मात्मानःक्लमान्विताः । विषयेभ्योनिवर्त्तन्तेतदास्वपितिमानवः ॥ क्लान्तोग्लानीश्रान्तइतियावत्कर्मात्मानक्लमान्विता । कर्मेन्द्रियाणिज्ञानेन्द्रियाणिचंक्लमान्विताःइन्द्रियाणिश्रान्ता ॥ ३२६ ॥

निद्राका लक्षण ॥

जिस समय मनुष्यका मन कर्मेन्द्रिय और बुद्धीन्द्रिय शान्त होकर विषयोंसे निवृत्त होजावैं, उसको निद्रा युक्त जानना चाहिये ॥ ३२६ ॥

संन्यासस्यसंप्राप्तिपूर्विकांलक्षणमाह ॥

वाग्देहमनसांचेष्टामाक्षिप्यातिबलामला । संन्यस्यन्त्यबलंजन्तुप्राणायतनमाश्रिताः॥ सनासंन्याससंन्यस्तःकाष्ठीभूतोमृतोपमः । प्राणैर्विमुच्यतेशीघ्रंमुक्त्वासद्यःफलांक्रियाम् ॥ आक्षिप्यविनाश्यसंन्यस्यन्तिमूर्च्छयन्तिप्राणायतनंहृदयंसंन्यस्तःमूर्च्छितःकाष्ठीभूतःक्रियारहितःअतएवमृतोपमइतिसद्यःफलांक्रियांसूचीव्यधनांजनावपीड़कपिकच्छुघर्षणवृश्चिकादिदंशनादिरूपां ॥ ३२७ ॥

संन्यासका संप्राप्ति पूर्व्वक लक्षण ॥

अत्यन्त बलवान् कुपित दोष प्राणोंके स्थान रूप हृदयमें स्थित होकर वाणी देह तथा मन की चेष्टाको नष्ट करके निर्बल मनुष्यको मूर्च्छित करतेहैं वह मूर्च्छित मनुष्य काष्ठके समान क्रिया रहित मराहुआसा पड़ा रहताहै इसको संन्यास कहतेहैं इसमें शीघ्र फलकारी सुई चुभाना अंजन लगाना किवांच रगड़ना और बिच्छूसे कटाना आदि क्रियाके बिना शीघ्रही प्राण निकल जातेहैं ॥ ३२७ ॥

संन्यासस्यमूर्च्छातोभेदमाह ॥

दोषेषुमदमूर्च्छायागतवेगेषुदेहिनः । स्वयमप्युपशाम्यन्तिसंन्यासोनौषधैर्विना ॥ ३२८ ॥

संन्यास और मूर्च्छाकाभेद ॥

मूर्च्छा में दोषोंके वेग अथवा मदके शान्त होजाने पर मनुष्य अपने आप चैतन्य हो जातेहैं परन्तु संन्यास औषधियों के बिना नहीं शान्त होताहै ॥ ३२८ ॥

अथ मूर्च्छायाश्चिकित्सा ॥

सेकावगाहामणयःसहाराःशीताःप्रदेहाव्यजनानिलाश्च । शीतानिपानानिचगन्धवन्तिसर्व्वासुमूर्च्छास्वनिवारितानि ॥ मणयश्चन्द्रकान्तादयःहारामुक्तादिहाराःशीताःप्रदे

ह्यःसकर्पूरचन्दनानुलेपनानि । शीतानिपानानिसितामलकादिपानकानि । गन्धवन्तिकर्पूरादिसुगन्धवन्तिसर्वासुमूर्च्छास्वनिवारितानिअस्यायमभिप्रायःसेकादीन्यन्यासुमूर्च्छासुहितान्येवकिन्तुवातश्लेष्मजास्वपिननिवारितानितत्रापिपित्तस्यप्राधान्यत्वात् । सिद्धानिवर्गेमधुरेपयांसिसदाडिमाजाङ्गलजारसाश्च । हितशालयश्चमूर्च्छासुपथ्याःससतीनमुद्गाः (सतीनःकलायः) ॥ ३२९ ॥

मूर्च्छाकीचिकित्सा ॥

मूर्च्छारोगमें जलसेसींचना स्नानकरवाना चन्द्रकान्तादिक मणियोंका धारण कराना मोतीआदिकेहार कपूर सहित चन्दनकालेप पंखेकीवायु शीतल तथा सुगंधित पीनेकीवस्तु इनके सेवन से बातज तथा कफज आदि संपूर्ण मूर्च्छा निवृत्त होती हैं मधुरवर्गके द्वारा पाक कियाहुआ दूध अनार सहित जंगली जीवोंके मांसकारस और जो लाल धान मटर तथा मूंग यह सब मूर्च्छामें पथ्यहैं ॥३२६॥

कोलमज्जोषणोशीरकेसरंशीतवारिणा । पीतंमूर्च्छांजयेल्लीढ्वाकृष्णांवामधुसंयुताम् ॥ शीतेनतोयेनविषंमृणालंकृष्णश्चपथ्यांमधुनावलिह्यात् । कुर्य्याच्चनासावदनावरोधंक्षीरंपिबेद्वाप्ययमानुपीणाम् ॥ द्राक्षासितादाडिमलाजवन्तिकह्लाङ्गनीलोत्पलपद्मवन्ति । पिबेत्कषायाणिचशीतलानिपित्तज्वरेयानिचयापयन्ति॥शिरीषबीजगोमूत्रकृष्णामरिचसैन्धवैः । अञ्जनंस्यात्प्रबोधायसरसोनशिलावचैः ॥ अन्यच्च । अञ्जनंसम्यगारब्धंमधुसिन्धुशिलोपणैः प्रमोहद्रेहिमवतिभाषितंभिषजांवरैः॥शिलामनशिला। ऊषणंमरिचः॥मधूकसारसिन्धूत्थवचोषणकणासमा । श्लक्ष्णांपिष्ट्वाम्भसानस्यंकुर्य्यात्संज्ञाप्रबोधनम् ॥ ३३० ॥

बेरकी गुठली मिर्च खस नागकेशर इन सबको शीतल जल के साथ पानकरनेसे अथवा सहतके साथ पीपल के चाटनेसे मूर्च्छाका नाश होताहै कमलकीडंडी पीपल तथा हड़को सहत के साथ चाटने से अथवा शीतल जलके साथ कमल की डंडी को पीनेसे मूर्च्छाका नाश होताहै नाक तथा मुखको बन्दकरनेसे अथवा स्त्री का दूध पीनेसे मूर्च्छाका नाश होताहै दाख शक्कर लजालू अनार खील कहलार कमल नील कमल और कमल इन सब औषधियोंका शीतल कषाय पीनेसे और पित्तज्वरमें कहीहुई क्रिया करने से मूर्च्छा शान्त होतीहै सिरसकेबीज गोमूत्र पीपल सेंधानोन रसौत मैनशिल और बच इन सबको पीसकर अंजन लगानेसे मूर्च्छा का नाश होताहै सहत सेंधानोन मैनशिल और मिर्च इन सब को पीस अंजन लगाने से मूर्च्छा का नाश होताहै महुआकासार सेंधानोन बच मिर्च तथा पीपल इन सब को पानीमें महीन पीस नास लेने से चैतन्यता होती है ॥ ३३० ॥

अथ रक्तजादीनांमूर्च्छानांचिकित्सा ॥

रक्तजायान्तुमूर्च्छायांहितःशीतक्रियाविधिः॥मद्यजानांपिबेन्मद्यंनिद्रांसेवेतवासुखम् ॥ विषजायांविषघ्नानिभेषजानिप्रयोजयेत् ॥ ३३१ ॥

रक्तज आदि मूर्च्छाओंकी चिकित्सा ॥

रक्तज मूर्च्छाओं में शीतल क्रियाकरनी चाहिये मद्यज मूर्च्छा में मद्यपान अथवा सुखपूर्वकसोवे और विषज मूर्च्छा में विषनाशक औषध देनीचाहिये ३३१ ॥

अथ संन्यासचिकित्सा ॥

प्रभूतदोषस्तमसोऽतिरेकात्सम्मूर्च्छितोनैवविबुध्यतेयः। संन्यस्तसंज्ञःसहिदुश्चिकित्स्योनरोभिषग्भिःपरिकीर्त्तितोऽसौ ॥ अञ्जनान्यवपीडाश्चधूमाःप्रधमनानिच । सूचीभिस्तोदनंशस्तंदाहपीडानखान्तरे ॥ लुञ्चनंकेशलोम्नाञ्चदन्तैर्दंशनमेवच । आत्मगुप्तावघर्षश्चाहितस्तस्यप्रबोधने ॥ अवपीडःकल्कीकृतौषधरसस्यनासापुटेदानम् । प्रधमनं घ्रौषधचूर्णस्यद्विमुख्य.नाडिकयामुखवातेननासापुटेदानंतस्यसंन्यस्तस्य ॥ ३३२ ॥

संन्यास कीचिकित्सा ॥

बहुत बढ़े हुए दोष और तमोगुण की अधिकता से जो मनुष्य मूर्च्छित होकर चैतन्य न होय उसको संन्यास रोग जानना चाहिये यह अत्यन्त कठिनता से चिकित्सा करनेके योग्यहै संन्यास रोगमें अंजन औषधके कल्कको नाकमें भरदेना धुआं देना दो मुख वाली नली के द्वारा फूंककर औषधियोंके चूर्ण को नाक में छोडना सुईचुभाना नखोंमें जलाना तथा पीडादेना वाल तथा रोमों कानोचना दांतोंसे काटना किवांचका रगड़ना यह सब वातें चैतन्य होने के लिये करना चाहियें ३३२॥

अथ मूर्च्छायांरसौ ॥

कणामधुयुतंसूतंमूर्च्छायांप्राशयेद्भिषक् । शीतसेकावगाहादीन्सर्वाङ्गेपीड़नंहठात् ॥ सूतंमारितं । ताम्रचूर्णसमोशीरकेशरंशीतवारिणा । पीतंमूर्च्छान्द्रुतंहन्याद्वृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ॥ताम्रचूर्णमारितताम्रचूर्णम् ॥ ३३३ ॥

मूर्च्छापररस ॥

पारेकीभस्म पीपल को सहत के साथ चाटने से शीतल जलके सींचनेसे तथा स्नानसे सब शरीर के दबाने से मिर्च तांबेकी भस्म तथा नागकेशर इन सबको समभाग लेकर शीतल जल के साथ पीने से जैसे इन्द्रके वज्रसे वृक्षका नाश होताहै इसी प्रकार शीघ्र मूर्च्छाका नाश होताहै ॥ ३३३ ॥

अथ भ्रमस्याचिकित्सा ॥

पिवेद्दुरालभाक्वाथंसघृतंभ्रमशान्तये। पथ्याक्वाथेनसंसिद्धंघृतंधात्रीरसेनवा ॥ शुण्ठीकृष्णाशताह्वानांसाभयानांपलंपलम् । गुडस्यषट्पलान्येषागुटिकाभ्रमनाशिनी ॥ ताम्रंदुरालभाक्वाथैःपीतन्तुघृतसंयुतम् । निवारयेत्भ्रमंशीघ्रंतांयथाशम्भुभाषितम् ॥३३४॥

भ्रमकी चिकित्सा ॥

जवासेका काढ़ा अथवा हड़का काढ़ा घी डालकर पीनेसे आमलेके रस के द्वारा घृतके सेवन से सोंठ पीपल सतावर तथा हड़ यह सब एक २ पल गुड़ ६ पल इनको मिलाके गोली बनाकर खाने से और जवासेके काढ़ेके साथ घी तथा तांबेकी भस्मके पीनेसे शीघ्रही भ्रमका नाश होताहै ३३४ ॥

अथ तन्द्रायाअतिनिद्रायाश्चिकित्सा ॥

तुरङ्गलालालवणोत्तमेन्दुमनःशिलामागधिकामधूनि । नियोज्यतान्यक्षिणिविनिश्चितानितन्द्रांसनिद्रांविनिवारयन्ति । (इन्दुःकर्पूरः) सैन्धवंश्वेतमरिचंसर्षपाःकुष्ठमेवच। वस्तमूत्रेणसम्पिष्टंनस्यंतन्द्रानिवारणम् ॥ श्वेतमरिचंशिग्रुबीजम् । शुण्ठीकणोग्रालव

णो त्तमानिनस्येनतन्द्राविजयोल्वणानि । क्षुद्रामृतापौष्करनागराणिभार्गीशिवाभ्यांकथि ता निपानात् ॥ शिवांहरीतकी ॥ इतिमूर्च्छाभ्रमनिद्रातन्द्रासंन्यासाधिकारः॥ ३३५ ॥

तन्द्रा और अति निद्राकी चिकित्सा ॥

घोड़ेकीलार सेंधानोन कपूर मैनशिल पीपल तथा सहतमें पीसकर अंजन लगानेसे निद्रा सहित तन्द्राका नाश होताहै सेंधानोन सहजनेके बीज सरसों तथा कूट इन सबको बकरेके मूत्रमें पीसकर नास लेनेसे सोंठ पीपल बच तथा सेंधानोन इनको पीसकर नास लेनेसे और भटकटैया गिलोय पुष्करमूल सोंठ भारंगी तथा हड़के क्वाथके पीनेसे तन्द्रा का नाश होताहै इति मूर्च्छा भ्रम निद्रा तन्द्रा संन्यासाधिकार ॥ ३३५ ॥

अथ मदात्ययाधिकारः। तत्रमदस्यस्वभावमाह ॥

मद्यंस्वभावतःप्राज्ञैर्यथैवान्नंतथास्मृतम् । अयुक्तियुक्तंरोगाययुक्तियुक्तंरसायनम् ॥ युक्तियुक्तेमहिमानमाह । प्राणाःप्राणभृतामन्नंतदयुक्त्यानिहन्त्यसून् । विषंप्राणहरंतद्वयु क्तियुक्तंरसायनम् ॥ विधिनामात्रयाकालेहितैरन्नैर्यथाबलम् । प्रहृष्टोयःपिबेन्मद्यंतस्य स्यादमृतंतथा ॥ ३३६ ॥

मदात्ययका अधिकार। मद्यका स्वभाव ॥

मद्य स्वभावसेही अन्नके समानहै नियमके अनुसार सेवन करनेसे रसायनहै और युक्तिके बिना सेवन करनेसे रोगकारी है अन्न मनुष्योंका प्राणहै परन्तु युक्तिके बिना इसका सेवन करने से प्राण नष्ट होते हैं विष प्राणोंका नाशक है परन्तु युक्ति पूर्वक सेवन करनेसे रसायन है इसीलिये विधि पूर्वक यथायोग्य समयमें मात्राके अनुसार प्रसन्न चित्त होकर जो कोई मद्यपान करता है उसको वह मद्य अमृतके समान गुणकारी होती है ॥ ३३६ ॥

तत्रविधिर्यथा ॥

कृतशारीरसंस्कारःशुचिरुत्तमगन्धवान् । उद्दामगन्धिभिःस्फीतैर्मृदुभिर्वसनैर्युतः ॥ विचित्रविविधःस्रग्वीरक्ताभरणभूषितःसानन्दःसावधानश्चपिबेन्मद्यंशनैःशनैः ३३७॥

मद्यपीनेकी विधि ॥

शरीरके संस्कार करके पवित्र उत्तम सुगन्धको लगाकर सुगन्धित सुन्दर कोमल वस्त्रोंको पहन कर अनेक प्रकारके विचित्र हारोंको धारणकर लाल २ आभूषणों से अलंकृत होकर और सावधान होके आनन्द पूर्वक धीरे २ मद्यको पिवै ॥ ३३७ ॥

देशोयथा ॥

उपवनेषुसुरभिसुरङ्गसुमनःसमूहमनोहरेषु । मञ्जुगुञ्जन्मधुकरनिकरेषुकूजत्कलक ण्ठेषु ॥ सुरभिशिशिरमधुरसमीरेषुमन्दिरेषु । सुधाशुभ्रेषुसुधूपधूपितेषुप्रधानेषु ॥ सं स्तीर्णविहितशयनासनेषु । उपविष्टोऽथवातिर्य्यकभूशंहृष्टःसुरांपिबेत् ॥ सौवर्णैराजतैःपा त्रैःपिबेन्मणिमयैरपि । रूपयौवनमत्ताभिर्वल्लभाभिर्विशेषतः ॥ वस्त्राभरणमाल्यैश्चभूषि ताभिर्यथर्तुकैः । दीयमानंमृगाक्षीभिःपिबेन्मद्यंमुदान्वितः ॥ ३३८

मद्यपीनेके योग्यस्थान॥

सुगन्धित तथा उत्तम रंगवाले पुष्पों से मनोहर मधुर गुंजार करतेहुये भ्रमरों से व्याप्त कूंजती हुई कोकिलाओंसे युक्त उद्यानमें शीतल मंद सुगन्ध पवन युक्त मन्दिरोंमें अमृतके समान श्वेत उत्तम धूपोंसे धूपित सुन्दर तकिये तथा बिछौने सहित शय्या और आसनोंपर बैठकर अथवा तिरछे होकर प्रसन्नता पूर्वक मद्यको पिये सोने चांदी अथवा मणियों के पात्रमें मद्यको पिये रूप तथा यौवन से मतवाली ऋतु के अनुसार वस्त्र आभूषण तथा मालाओं से आभूषित और अत्यन्त प्रिय मृगनयनी स्त्रियोंके हाथसे मद्य प्रसन्नचित्त होकर पिये॥ ३३८॥

मात्रयेतिमात्रातन्त्रान्तरेकथिता॥

शुद्धकायःपिबेन्मद्यंसोपदंशंपलद्वयम्। मध्याह्नेद्विगुणंतच्चसुस्निग्धंभक्षयेदनु॥ प्रदोषेष्टपलंतद्वन्मात्रामद्यरसायने। अनेनविधिनासेव्यंमद्यंनित्यमतन्द्रितैः॥ शुद्धकायः उत्सृष्टमलमूत्रः। पलद्वयंपारिशेष्यात्पूर्वाह्णेबोद्धव्यम्॥ अतन्द्रितैश्मात्रयासावधानैः अन्येत्वाहुः। बुद्ध्यादयोगुणायावद्दुल्लसन्तिनिरत्ययाः॥ मात्रेयंविहितामद्यपानेत्वारोग जन्मने॥ ३३९॥

तन्त्रान्तरमें कहीहुई मद्यपीनेकीमात्रा॥

मल मूत्रको त्याग करके पूर्वाह्नमें चटनी और गज्जक के साथ दोपल मद्यपिये मध्याह्नमें चार पलमद्य पीकर स्निग्ध भोजनकरे और अपराह्णमें आठपलमद्य पिये इस विधि के अनुसार सावधानता पूर्वक मात्रा से नित्य सेवनकी हुई मद्य रसायन होती है जितनी मद्य पीनेसे बुद्धि आदिक गुण सावधान बनेरहैं वही मद्यकी मात्राहै और इससे अधिकपीने से रोग उत्पन्न होते हैं यह अन्य लोगोंका मतहै॥ ३३९॥

कालइतियस्मिन्कालेयादृशंमद्यमुचितंतस्मिंस्तादृशंपेयम्। ऋतुसम्बन्धीयथा। ग्रीष्मेमद्यंहिमंस्वादुमाध्वीकादिसुखप्रदम्॥ प्रशस्यतेहिशीते उष्णतीक्ष्णंगौडिकपैष्टिकादि हितैरन्नैरिति। मद्यानुकूलैर्विविधैःफलैर्वर्णमनोहरैः॥ सुगन्धैर्लवणैर्हृद्यैर्भृष्टैर्मांसैःपृथग्विधैः। स्निग्धैरन्नैश्च भक्ष्यैश्चसहमद्यंपिबेन्नरः॥ अन्नैःसिद्धैरोदनपर्पटकादिभिः। भक्ष्यैः लड्डुकाफेणिकादिभिः॥ अभ्यंगोत्सादनस्नानवासोधूपानुलेपनैः। स्निग्धोष्णैस्तादृशै रन्नैर्वातप्रकृतिकःपिबेत्॥ शीतोपचारैर्विविधैर्मधुरस्निग्धशीतलैः। फलैरन्नैःसहनरःपित्तप्रकृतिकःपिबेत्॥ श्लेष्मिकोजांगलैर्मांसैर्मरिचैर्मदिरांपिबेत्॥ ३४०॥

यथा योग्य समयमें अर्थात् जिस समय में जैसी मद्य उचित होय वैसी पीना चाहिये ग्रीष्म ऋतुमें शीतल तथा मधुर दाख आदिकी सुखदाई मद्य श्रेष्ठहै और शीत काल में उष्ण तीक्ष्ण गौडिक तथा पीठी आदिकी मद्य श्रेष्ठहै मनुष्य मद्य के अनुकूल अनेक प्रकारके वर्णों से मनोहर फल सुगन्धित वस्तु लवण हृदय को हित पदार्थ भुने हुए नाना प्रकारके मांस स्निग्ध भात पापड़ आदि पदार्थ और लड्डू फेनी आदिक भक्ष्य पदार्थों के साथमद्य पान करे वात प्रकृति मनुष्य तैलादि मर्दन उबटन स्नान वस्त्र धूप और चन्दनादिका लेप इन सब से युक्त होकर स्निग्ध तथा उष्ण अन्नके साथ मद्य पान करे पित्त प्रकृति मनुष्य अनेक प्रकारों के शीतल उपचारोंको करके मधुर

स्निग्ध तथा शीतल फल और अन्नोंके साथ मद्य पानकरे कफ प्रकृति वाला मनुष्य जंगली जीवों के मांस और मिर्च के साथ मद्य पान करे ॥ ३४० ॥

प्राक्पिवेत्श्लैष्मिकोमद्यंभक्तस्योपरिपैत्तिकः। वातिकस्तुपिवेन्मध्येसमदोषोयथेच्छते ॥ वातिकस्तुपिवेन्मद्यंप्रायोगौड़िकपैष्टिकम् । कफपित्तात्मकोयस्तुमाध्वीकंमाधवंपिवेत् ॥ विधिर्वसुमतामेषकथितश्चरकादिभिः । यथोपपत्तिकंत्रापिपिवेन्मद्यंहिमात्रया३४१

कफप्रकृति मनुष्य भोजन के पहले पित्त प्रकृतिमनुष्य भोजन के पीछे वातप्रकृति मनुष्य भोजनके मध्य में और समप्रकृतिवाला मनुष्य इच्छा के अनुसार मद्य पानकरे वातप्रकृति वाला मनुष्य प्रायः गौड़िक तथा पैष्टिक और कफ तथा पित्तप्रकृतिवाला मनुष्य प्रायः माध्वीक तथा माधव मद्यको पिये चरक आदिकों ने धनवान् लोगों के लिये यह विधि कही है साधारण मनुष्य योग्यताके अनुसार मात्रासे मद्यपान करे ॥ ३४१ ॥

मद्यस्यगुणमाह ॥

रसवातादिमार्गाणांसत्वबुद्धीन्द्रियात्मनाम् । प्रधानस्यौजसश्चैवहृदयंस्थानमुच्यते ॥ मद्यंहृदयमाविश्यस्वगुणैरोजसोगुणान् । दशभिर्दशसंक्षोभ्यचेतोनयतिविक्रियाम् ॥ लघूष्णतीक्ष्णसूक्ष्माम्लव्यवायाशुकरंतथा।रूक्षंविकाशिविशदंमद्यंदशगुणंस्मृतम् ॥ गुरुशीतंमृदुस्निग्धंसान्द्रंस्वादुस्थिरंतथा।प्रसन्नंपिच्छिलंसूक्ष्ममोजोदशगुणंस्मृतम् ३४२

मद्यके गुण ॥

रस तथा वायुआदिके वहनेके स्रोत सत्वगुण ज्ञानेन्द्रिय आत्मा और प्रधान ओजधातु इनसब का हृदयही स्थानहै मद्य हृदयमें प्रवेश करके अपने आगेलिखेहुये दशगुणों से ओजके दशगुणोंको क्षोभित करके चित्त में विकार उत्पन्न करती है लघु उष्ण तीक्ष्ण सूक्ष्म अम्ल व्यवायी आशुकारी रूक्ष विकाशी और विशद यह दशमद्यके गुणहैं गुरु शीत मृदु स्निग्ध सान्द्र स्वादु स्थिर प्रसन्न पिच्छिल और सूक्ष्म यह दशओजके गुणहैं ॥ ३४२ ॥

गौरवंलाघवाच्छैत्यमौष्ण्यादम्लस्वभावतः।माधुर्य्यंमार्दवंतैक्ष्ण्यात्प्रसादञ्चाशुभावनात् ॥ रौक्ष्यात्स्नेहंव्यवायित्वात्स्थिरत्वंसूक्ष्मतामपि । विकाशिभावात्पैच्छिल्यंवैशद्यात्सान्द्रतांतथा ॥ सौक्ष्म्यान्मद्यंनिहन्त्येवमोजसास्वगुणैर्गुणान् । सत्वंतदाश्रयश्चाशुसंक्षोभ्यकुरुतेमदम् ॥ हृदिमद्यगुणाविष्टेहर्षस्तर्षोरतिःसुखम् । विकाराश्चयथासत्वंचित्राराजसतामसाः ॥ जायन्तेमोहनिद्रान्ताइत्येतन्मदलक्षणम् ॥ ३४३ ॥

गुरुको लघुसे शीतको उष्णसे मधुरको अम्लसे मृदुको तीक्ष्णसे प्रसन्नको आशुकारीसे स्नेहको रूक्षतासे स्थिरको व्यवाईसे सूक्ष्मको विकाशीसे पिच्छिलको विशदसे और सान्द्रको सूक्ष्मगुण से मद्य क्षोभित करती है इस प्रकार मद्य अपने गुणोंसे ओज के गुणोंको क्षोभित करती है मद्य सत्व गुण और हृदयको क्षोभित करके मदको उत्पन्न करती है मद्य के गुणोंके हृदय में प्रविष्ट होनेपर हर्ष तृषा अनुराग सुख तथा विकार आदिक सत्वगुण रहित अनेकप्रकारके राजस तथा तामसगुण उत्पन्न होते हैं और अन्त में मोह तथा निद्रा प्राप्त होती है यह मदके लक्षण हैं ॥ ३४३ ॥

हर्षमोजोबलंपुष्टिमारोग्यंपौरुषंतथा । युक्त्यापीतंकरोत्याशुमद्यंमदसुखप्रदम् ॥

रोचनंदीपनंहृद्यंस्वरवर्णप्रसादनम्। प्रीणनंबृंहणंवल्यंभयशोकश्रमापहम्॥ स्वापनंनष्टनिद्राणांमूकानांवाग्विशोधनम्। नाशनञ्चातिनिद्राणांविबन्धानांविबन्धनुत्॥ वधबन्धपरिक्लेशःदुःखानाञ्चाप्यबोधकम्। अपिप्रवयसांमध्यमुत्सर्गान्मोदकारकम्॥ बहुदुःखक्षतस्यास्यशोकेरुपहतस्यच। विश्रामोजीवलोकस्यमद्यंयुक्त्यानिषेवितम्॥ ३४४॥

युक्ति पूर्व्वक मद्यका सेवनकरनेसे हर्ष ओज बल पुष्टता आरोग्य और पुरुषार्थ उत्पन्न होतेहैं और सुखदायी नशा होताहै विधि पूर्व्वक सेवन की हुई मद्य रुचिकारी दीपन हृदयको हित स्वर तथा वर्णको उत्तम करनेवाली प्रीतिकारी धातु वर्द्धक बलकारी भय शोक तथा श्रम नाशक निद्रा रहित मनुष्योंको निद्रा करानेवाली गूंगों के वचनको शुद्ध करनेवाली अति निद्रा नाशक विबन्धकी नाश करनेवाली वध अथवा बन्धन आदिके क्लेश तथा दुःखके ज्ञान को भुलाने वाली वृद्धोंको भी आनन्द देनेवाली और बहुत दुःख क्षत तथा शोक से व्याकुल मनुष्योंको विश्राम देनेवाली होती है ३४४॥

मदस्त्रिलक्षणोभवति। एकोमदोऽधिकसत्त्वगुणस्यपुंसोभवति।द्वितीयोऽधिकरजोगुणस्यतृतीयोऽधिकतमोगुणस्य। अतएवोक्तञ्चरके॥ प्रधानाधममध्यानांरुक्मणांव्यक्तिदायकः। यथाग्निरेवंसत्त्वानांमद्यंप्रकृतिदर्शकमिति॥ ३४५॥

मद तीन प्रकारका है एक अधिक सत्त्व गुण वालेका दूसरा अधिक रजोगुणवालेका और तीसरा अधिक तमोगुणवालेका होताहै इसीसे चरकने कहाहै कि जैसे अग्नि में सुवर्णकी उत्तमता मध्यमता तथा निकृष्टता प्रकट होतीहै उसीप्रकार मद्यके द्वारा मनुष्योंकी उत्तमादि प्रकृति प्रकट होती है ३४५॥

तत्रसात्विकस्यमदस्यलक्षणमाह॥

बुद्धिस्मृतिप्रीतिकरःसुखश्चपानान्ननिद्रारतिवर्द्धनश्च। सम्पाठगीतस्वरवर्द्धनश्चप्रोक्तोऽतिरम्यःप्रथमोमदोहि॥ प्रीतिःपरेणमैत्री। सुखःसुखयतीतिसुखःसुखकरइत्यर्थः। पानादित्यादिपानादिष्वनुषङ्गवर्द्धनःअतिरम्यः मनोविकारित्वेऽपिनदुःखकरःप्रथमगुणत्रिकारित्वात्प्रथमःएवंद्वितीयंतृतीयञ्च॥ ३४६॥

सात्विक मदका लक्षण॥

सात्विकमद बुद्धि स्मृति सुख अन्य पुरुषोंके साथ मित्रता अन्नपान तथा निद्रामें अभिलाष पठन गीत तथा स्वर को बढ़ाताहै और अत्यन्त आनन्दकारी होताहै॥ ३४६॥

राजसस्यमदस्यलक्षणमाह॥

अव्यक्तबुद्धिस्मृतिवाग्विचेष्टःसोन्मत्तलीलाकृतिरप्रशान्तः। आलस्यनिद्राभिहतोमुहुश्चमध्येनमत्तःपुरुषोमदेन॥ अव्यक्तेत्यत्रईषदर्थेनञ्विचेष्टःउन्मत्तस्यलीलाकृतिभ्र्यांसहिः॥ ३४७॥ राजसमदके लक्षण॥

राजसमदसे बुद्धि स्मृति तथा बोलनेकी शक्ति अल्प होतीहै वारम्वार आलस्य तथा निद्रा आती है उन्मत्तकीसी लीला तथा आकृति होजातीहै शान्ति नष्टहोजातीहै और चेष्टा विरुद्ध होजातीहै ३४७॥

तामसस्यमदस्यलक्षणमाह॥

गच्छेदगम्यांनगुरूंश्चमन्येत्खादेदभक्ष्याणिचनष्टसंज्ञः। ब्रूयाश्चगुह्यानिहृदिस्थिता

निमदेतृतीयेपुरुषोऽस्वतन्त्रः॥मन्येइतिपरस्मैपदसार्पत्वात्अस्वतन्त्रःमदपरवशः ३४८

तामस मदके लक्षण ॥

तामस मद से मनुष्य अगम्या में गमन करताहै गुरुओंको नहीं मानता अभक्ष्य पदार्थों को खाताहै ज्ञान रहित हो जाताहै हृदय में स्थित छिपी हुई बातोंको भी कहने लगता है और मदसे परवश होजाताहै ॥ ३४८ ॥

यद्यपिमदास्त्रयःएवतथापिसुश्रुतानुरोधादतितामसमदलक्षणमाह । चतुर्थेतुमदेमूढोभग्नदार्विवनिष्क्रियः । कार्य्याकार्य्यविभागज्ञोमृतादपिपरोमृतः ॥ मूढ़ोमोहयुक्तः ॥ कोमदन्तादृशंगच्छेदुन्मादमिवचापरम् । बहुदोपमिवामूढःकान्तारंस्ववशःकृती ॥ अमूढ़ःविचारबहुलः ॥ ३४९ ॥

यद्यपि मद तीनही प्रकार के हैं तथापि सुश्रुत के मतके अनुसार अति तामस मदका लक्षण कहतेहैं जैसे अति तामस मदसे मनुष्य मोह युक्त टूटे हुए वृक्षके समान चेष्टा रहित कार्य्याकार्य्य के विचार से शून्य मरे हुए के समान मूर्च्छित होताहै कौन विचारवान् स्वाधीन और कृतकृत्य पुरुष बहुत दोष वाले बनके समान उन्माद रूपी उस प्रकारके मदमें प्राप्त होने की इच्छाकरेगा अर्थात् कोईभी नहीं करैगा ॥ ३४९ ॥

नातिमाद्यन्तिबलिनःकृताहारामहाशनाः । स्निग्धाःसत्वबयोयुक्तामद्यनित्यास्तदन्वयाः ॥ मेदःकफाधिकामन्दवातपित्तादृढाग्नयः । विपर्य्ययेऽतिमाद्यन्तिविष्टब्धाःकुपिताश्चये ॥ मद्येनचाम्लरूक्षेणसाजीर्णेबहुनापिच ॥ ३५० ॥

बलवान् स्निग्ध सत्त्व गुण युक्त अधिक अवस्था वाले अत्यन्त भोजन करनेवाले नित्य मद्य पीनेवाले भोजन किये हुए और जिनके पिता पितामहादिक मद्य पीते हैं ऐसे मनुष्यों को बहुत नशा नहीं होताहै अधिकमेद तथा कफवाले थोड़े वात पित्त तथा अग्नि वाले, विष्टम्भ तथा कोप युक्त और अजीर्ण वाले मनुष्योंको बहुत नशा होताहै बहुत खट्टी तथा रूखी मद्य से भी बहुत नशा होता है ॥ ३५० ॥

अथ मदात्ययानांनिदानमाह ॥

विषस्ययेगुणादृष्टाःसन्निपातप्रकोपणाः । तएवमद्येदृश्यन्तेविषेतुबलवत्तराः ॥ तस्मादविधिपीतेनतथमात्राधिकेनच । युक्तेनचाहितैरन्नैरकालेसेवितेनच ॥ तस्मादविधिपीतेनतथामात्राधिकेनच । युक्तेनचाहितैरन्नैरकालेसेवितेनच ॥ मद्यंनखलुजायन्तेमदात्ययमुखागदाः । अविधिप्रयुक्तंमद्यंविकारान्तरानुत्पादयन्ति । इत्यतआह । निर्भक्तमेकान्ततएवमद्यंनिषेव्यमानंमनुजेननित्यम् । उत्पादयेत्कष्टतमान्विकारानुत्पादयेच्चापिशरीरभेदनम् ॥ एकान्ततोनैरन्तर्येणविकारान्मदात्ययादीन् । शरीरस्यभेदंनाशम् ॥ ३५१ ॥

मदात्यय रोगका निदान ॥

सन्निपातके कुपित करनेवाले जोगुण विषमें हैं वही मद्यमेंभी हैं परन्तु विषमें विशेष करकेहैं इस लिये अविधि पूर्व्वक अधिक मात्रा से अहित अन्नों के साथ अथवा अकालमें मद्य पीने से मदात्यय आदिक रोग उत्पन्न होतेहैं बिना विधिके मद्य पान करनेसे अन्य २ विकार भी उत्पन्न होते हैं, जैसे

कि भोजनके विना निरंतर मद्य पान करनेसे अत्यन्त दुखदाई मदात्यय आदिक रोग उत्पन्न होते हैं और शरीर भी नष्ट हो जाताहै ॥ ३५१ ॥

मदात्ययादीनांहेत्वन्तरमाह ॥

क्रुद्धेनभीतेनपिपासितेनशोकाभितप्तेनबुभुक्षितेन । व्यायामभाराध्वपरिक्षतेनवेगाव रोधाभिहितेनचापि ॥ अत्यम्लरूक्षावततोदरेणसाजीर्णभुक्तेनतथाबलेन । उष्णाभित प्तेनचसेव्यमानंकरोतिमद्यंविविधान्विकारान् ॥तानेवविकारान्विवृणोति । पानात्ययंपर मदंपानाजीर्णमथापिच । पानविभ्रममत्युग्रंतेषांवक्ष्यामिलक्षणम् ॥ ३५२ ॥

मदात्यय आदिकों के अन्य कारण ॥

क्रुद्ध भयभीत तृषित शोक युक्त बुभुक्षित व्यायाम भारका लेचलना तथा मार्ग गमन से क्षीण वेगों के रोकने वाले चोटवाले बहुत जल पान तथा रूखी वस्तुके सेवनसे फूले हुए पेटवाले अजीर्ण में भोजन करने वाले दुर्बल और उष्णतासे संतप्त ऐसे मनुष्यों को मद्य पीनेसे अनेक रोग उत्पन्न होतेहैं वह रोग यहहैं जैसे पानात्यय पर मद्य पानाजीर्ण और पानविभ्रम इनके लक्षण आगे लिखे जाते हैं ॥ ३५२ ॥

तत्रमदात्ययस्यसामान्यंलक्षणमाह ॥

शरीरदुःखंबलवत्यमेहोहृदयव्यथा । अरुचिप्रततंतृष्णाज्वरःशीतोष्णलक्षणः॥शिरः पार्श्वास्थिसन्धीनांवेदनाविक्षतेयथा । जायतेऽतिबलाजृम्भास्फुरणंवेपनंश्रमः ॥ उरो विबन्धःकासश्चहिक्काश्वासोप्रजागरः । शरीरकम्पःकर्णाक्षिमुखरोगास्त्रिकग्रहः ॥ छर्दिवि ड्भेदरुतक्लेशोवातपित्तकफात्मकः । भ्रमप्रलापोरूपाणामसतांचैवदर्शनम् ॥ तृणभस्मल तापर्णपांशुभिश्चावपूरणम्प्रधर्षणंविहंगैश्चभ्रांतचेताःसमन्यते ॥व्याकुलानामशस्तानां स्वप्नानांदर्शनानिच । मदात्ययस्यरूपाणिसर्वाण्येतानिलक्षयेत ॥ ३५३ ॥

मदात्यय का सामान्य लक्षण ॥

शरीरमें बहुत क्लेश मोह हृदयमें पीड़ा अरुचि निरन्तर तृषा शीत तथा उष्ण लक्षणोंसे युक्तज्वर शिरमें पीड़ा पसली तथा रीढ़के नीचे हड्डियों में टूटनेकीसी पीड़ा हड्डियों की सन्धियोंमें पीड़ा बहुत जंभाई शरीर का फड़कना कम्प श्रम हृदय का जकड़ना खांसी श्वास हिचकी निद्राकानाश शरीर कांकंपना काननेत्र तथा मुखके रोग वातज छर्दि पित्तज मल भेद कफज मतली भ्रम प्रलाप असत् रूपोंका देखना तृण भस्म लता पत्र तथा धूलसे पूर्णसा मालूम होना चित्तके भ्रम युक्त होने से पक्षियोंसे घिरा हुआसा मालूम होना और व्याकुलता समेत बुरेस्वप्नोंकादेखना यह सबमदात्यय के लक्षण हैं ॥ ३५३ ॥

अथवातिकस्यमदात्ययस्यनिदानमाह ॥

स्त्रीशोकभयभाराध्वकर्मभिर्योऽतिकर्षितः । रूक्षाल्पप्रमिताशीचयःपिबत्यतिमात्रया ॥ रूक्षंपरिणतमद्यनिशिनिद्रान्निहत्यवाकरोति । तस्यतच्छीघ्रंवातप्रायंमदात्ययम् ॥ ततमद्य म् ॥ ३५४ ॥

वातज मदात्यय के निदान ॥

मैथुन शोक भय भार तथा मार्ग गमन से कृशशरीरवाला रूखा तथा अल्प भोजन करनेवाला मनुष्य रूखी तथा पुरानी मद्य रात्रि में जागरण कर के मात्रासे अधिक पियै तो उसको शीघ्रही वातज मदात्यय रोग होता है ॥ ३५४ ॥

अथ तस्यलक्षणमाह ॥

हिकाश्वासशिरःकम्पपार्श्वशूलप्रजागरैः॥विद्याद्बहुप्रलापस्यवातप्रायंमदात्ययम् ३५५

वातज मदात्ययका लक्षण ॥

वातज मदात्यय में हिचकी श्वास शिरका कंपना पसली में पीड़ा निद्राका नाश और अत्यन्त प्रलाप यहसब लक्षण होते हैं ॥ ३५५ ॥

अथ पैत्तिकस्य निदानमाह ॥

तीक्ष्णोष्णमद्यमम्लंचयोऽतिमात्रंनिषेवते । अम्लोष्णतीक्ष्णभोजीचक्रोधनोज्ञानवान्नरः ॥ तस्योपजायतेतीव्रपित्तप्रायोमदात्ययः॥ ३५६ ॥

पित्तजमदात्ययका निदान ॥

तीक्ष्ण उष्ण तथा खट्टी वस्तुओं से बहुत खानेवाले क्रोधी और ज्ञानवान् मनुष्य तीक्ष्ण उष्ण तथा खट्टी मद्यको अधिक सेवनकरे तो बहुत तेज पित्तज मदात्यय रोग उत्पन्नहोताहै ॥ ३५६ ॥

अथ तस्यलक्षणमाह ॥

तृष्णादाहज्वरस्वेदमोहातीसारविभ्रमैः॥विद्याद्धरितवर्णस्यपित्तप्रायंमदात्ययम् ३५७,

पित्तज मदात्ययका लक्षण ॥

पित्तज मदात्ययमें तृषा दाह ज्वर स्वेद मोह अतीसार भ्रम और शरीरका पीलापन यह लक्षण होते हैं ॥ ३५७ ॥ अथ श्लेष्मिकस्यमदात्ययस्यनिदानमाह ॥

मधुरस्निग्धगुर्वाशीयःपिबत्यतिमात्रया । अव्यायामदिवास्वप्नशय्यासनसुखेरतः॥ मदात्ययंकफप्रायंसनरोलभतेध्रुवम् ॥ ३५८ ॥

कफज मदात्ययका निदान ॥

मधुर स्निग्ध तथा भारी वस्तु खानेवाले व्यायाम रहित दिनमें सोनेवाले और शयन तथा बैठने के सुखको करनेवाले मनुष्य जो मात्रासे अधिकमद्यपानकरें तो उनको निस्सन्देह कफज मदात्यय रोग होता है ॥ ३५८ ॥ अथ तस्यलक्षणमाह ॥

छर्घरोचकहृल्लासतंद्रास्तैमित्यगौरवैः॥विद्याच्छीतपरीतस्यकफप्रायंमदात्ययम् ३५९

कफज मदात्ययके लक्षण ॥

कफज मदात्यय में छर्दि अरुचि मनली तन्द्रा शरीरमें गीला कपड़ा लिपटाहुआसा मालूम होनाभारीपन और शीतलगना यह लक्षण होते हैं ॥ ३५९ ॥

अथ सान्निपातिकस्यमदात्ययस्यलक्षणनिदानमाह ॥

त्रिदोषोहेतुभिःसर्वैःसर्वलिंगैर्मदात्ययः ॥ ३६० ॥

सन्निपातज मदात्ययके लक्षण और निदान ॥

त्रिदोषज मदात्यय ऊपरकहेहुये सब निदानोंसे उत्पन्न होताहै और इसमें सबके लक्षणहोते हैं ३६०

अथ परमदमाह ॥

श्लेष्मक्षयोऽङ्गगुरुताविरसास्यताच विण्मूत्रशक्तिरथतान्द्रिररोचकश्च । ।लिङ्गंपर,

स्यतुमदस्यवदन्तितज्ज्ञाः ॥ तृष्णारुजाशिरसिसन्धिषुचापिभेदःतन्द्रिस्तन्द्रा ॥३६१॥

परमदके लक्षण ॥

कफकी अधिकता अंगोमें भारीपन मुखकी विरसता मलमूत्रका रुकना तन्द्रा अरुचि तृषा शिर में पीड़ा और सन्धियों में टूटने की सी पीड़ा यह परमदके लक्षणहैं ॥ ३६१ ॥

पानाजीर्णमाह ॥

आध्मानमुग्रमथवोद्गिरणंविदाहः पानेत्वजीर्णमुपगच्छतिलक्षणानि । ज्ञेयानितत्र भिषजासुविनिश्चितानिपित्तप्रकोपजनितानिचकारणानि ॥ उद्गिरणंवान्तिरुद्गारोवापी यतइतिपानंमद्यम् ॥ ३६२ ॥ पानाजीर्णके लक्षण ॥

आध्मान छर्दि और दाह यह पानाजीर्णके लक्षणहैं और इसमेंपित्तके कुपितकरनेवाले कारणहोतेहैं ३६२

पानविभ्रममाह ॥

हृद्गात्रतोदकफसंस्रवकण्ठधूममूर्च्छावमीमदशिरोरुजनप्रदेहाः । द्वेषःसुरान्नविकृतेषु चतेषुतेपुतपानविभ्रममुशन्त्यखिलेषुधीराः ॥ कण्ठधूमःकण्ठाद्धूमानिर्गतइवप्रदेहःकफेन लिप्तास्यताद्वेपः सुरान्नविकृतेषुचतेषुतेपुसुराविकारेष्वन्नविकारेषुचद्वेषः अखिलेषुमद्यवि कारेषु ॥ ३६३ ॥ पान विभ्रम के लक्षण ॥

हृदय तथा शरीरमेंपीड़ा कफ बहना गलेसे धुआंसा निकलना मूर्च्छा छर्दि मद शिरमें पीड़ामुख कफसे लिपा हुआसा होना और अनेकप्रकारकी मद्य तथा अन्नकेपदार्थों में द्वेष यहपान विभ्रमके लक्षणहैं ॥ ३६३ ॥ असाध्यानांमदात्ययादीनांलक्षणमाह ॥

हीनोत्तरोष्ठमतिशीतममन्ददाहंतैलप्रभास्यमतिपानहतन्त्यजेच्च । जिह्वोष्ठदन्तम सितन्त्वथवापिनीलंपीतेचयस्यनयनेरुधिरप्रभेच ॥ हिक्काज्वरोवमथुवेपथुपार्श्वशूलाः कासभ्रमावपिचपानहतंत्यजेत्तम् ॥ ३६४ ॥

असाध्य मदात्यय आदि के लक्षण ॥

जिसका ओष्ठ क्षीण होजाय ऊपर शीत तथा भीतर बहुत दाह मालूमहोवे मुखमें तेललगा हुआ सा मालूमहोय ऐसा मदात्ययवाला असाध्यहै जिह्वा ओष्ठ तथा दांत नीले अथवा काले होयँ और दोनोंनेत्र पीले अथवा लाल होयें तो मदात्यय असाध्यजानना चाहिये हिचकी ज्वर छर्दि कंप पसली में पीड़ा खांसी और भ्रम इन सबसे युक्त मदात्ययवाले को त्याग करदेवे ॥ ३६४ ॥

अथ मदात्ययादीनांचिकित्सा ॥

मद्योत्थानाञ्चरोगाणांमद्यमेवहिभेषजम् । यथादहनदग्धानादहनंस्वेदनंहितम् ॥ मिथ्यातिहीनमद्येनयोव्याधिरुपजायते । समेनेवनिपीतेनमद्येनसहिशाम्यति ॥ वीजपू रकवृक्षाम्लकोलदाड़िमसंयुतम् । यवानीहवुषाजाजीशृङ्गवेरावचूर्णितम् ॥ सस्नेहैःशक्तु भिर्युक्तमुपदंशेश्चिरोत्थितम् । दद्यात्सलवणंमद्यंवातपैत्तिकशान्तये॥मद्यंसौवर्चलव्योप युक्तंकिञ्चिज्जलान्वितम् । जीर्णमद्यायदातव्यंवातपानात्ययापहम् ॥ चव्यंसौवर्चलंहिंगु पूरकंविश्वदीपकम् । चूर्णंमद्येनपातव्यंपानात्ययरुजापहम् ॥ ३६५ ॥

मदात्यय आदिकों की चिकित्सा ॥

जैसे अग्निसे जलेहुओंको अग्निके द्वारा स्वेद देना हितकारीहै इसी प्रकार मद्यसे हुए रोगों में मद्यही औषधहै विधि रहित अधिक अथवा थोडी मद्य पीनेसे जोरोग उत्पन्न होतेहैं वह मात्राके अनुसार मद्य पीने से शान्त होतेहैं बिजौरानींबू अमलवेत बेर तथा अनार के रस से युक्त घी मिले हुए सत्तुओंमें अजवाइन हाऊबेर जीरा सोंठ और सेंधानोन मिलाकर इनके साथ मद्य पान करने से बहुत दिनसे उत्पन्न हुआ वात पित्त सबधी मदात्यय रोग शान्त होताहै कालानोन त्रिकटु औरकुछ जल मिलाकर मद्य के पचजाने पर फिर मद्य पिलानेसे वातज मदात्यय शान्त होताहै अन्य काला नोन हींग बिजौरानींबू सोंठ और अजवाइनका चूर्ण मिलाकरपीनेसे मदात्यय रोगका नाशहोताहै३६५

लावतित्तिरदक्षाणारसैश्चशिखिनामपि। पक्षिर्णांमृगमत्स्यानामानूपानातयोदने ॥ स्निग्धोष्णलवणाम्लैश्चवेशवारैर्मुखप्रियै. । स्निग्धैर्गोधूमकैरन्नैर्वातप्रायमदात्ययम् ॥ नारीणायौवनोष्माणांनिर्दयैरुपगूहन । श्रोण्यूरुकुचभारैश्चमेरोधोष्णसुखप्रदै ॥ शयनाच्छादनैरुष्णैश्चान्तर्गेहे सुखप्रदे ।मारुते.प्रबले.शीघ्रप्रशाम्यतिमदात्यय ॥ ३६६॥

लवा तीतर मुर्गा तथा मोर बहसज पक्षी मृग मछली तथा अनूपजीवोंके मासकेरस भात स्निग्ध उष्ण लवण अम्ल तथा मुखको प्रिय वेसवार और गेहूके बने हुए स्निग्ध पदार्थ इनसबके साथ मद्य पीनेसे वातज मदात्यय नष्ट होताहै योवनसे मतवाली स्त्रियोंके आलिंगनसे तथा दाबनेमें सुखदायी उष्ण नितम्ब जंघा तथा स्तनोंसे उष्ण सुखदायी शय्या तथा आच्छादन से और उष्ण कोठरी आदि भीतरके गृहोंके सेवनसे वातज मदात्यय रोग नष्टहोताहै ॥ ३६६ ॥

पित्तपानात्ययेयोज्या सर्वतश्चक्रियाहिमा । सितामाक्षिकसंयुक्तमद्यमर्द्धोदकंपिवेत् ॥ मद्यंखर्जूरमृद्वीकापरूपकरसैर्युतम् । सदाडिमैरसंसशीतशक्तुभिश्चावचूर्णितम्॥सशर्करंवा माध्वीकसंयुक्तमथवापरम् । दद्याद्बहूदकंकालेपातुपित्तमदात्यये ॥ शशान्कपिञ्जलां नेणालावानशितपुच्छकान् । मधुराम्लान्प्रयुञ्जीत भोजनेशालिषष्टिकान् ॥ पटोलयूप मिश्रमाज्ञागलकल्पयेद्रमम् । सतीनमुद्गमिश्रंवादाडिमामलकान्वितम् । द्राक्षामलकखर्जूरपरूपकरसेनच ॥ कल्पयेत्तर्पणान्यूपान्रसांश्चविविधात्मिकान् । शीतानिचान्नपानानिशीतशय्यासनानिच । शीतवातजलस्पर्शा शीतान्युपवनानिच । ॥ क्षौमपद्मोत्पलानाञ्चमणीनामौक्तिकस्यच । चन्दनोदकशीनानांस्पर्शाश्चन्द्राशुशीतला ॥ ३६७ ॥

पित्तज मदात्यय रोगमें सब शीतल क्रिया करनी चाहिये शक्कर तथा सहत युक्त आधे जल से मिलीहुई मद्य पीनी चाहिये खजूर दाख फालसा तथा अनारके रससे युक्त शीतल मद्य सत्तुओं के साथ पानकरे शक्कर युक्त दाखकी मद्य अथवा अन्य किसी प्रकारकी अधिक जल मिलीहुई मद्यपान करे इससे पित्तज मदात्यय रोगनष्ट होतेहैं खरगोश श्वेततीतर मृग लवा दुम्बा मेढा तथा बकरा इनके मासकारस मधुर तथा खट्टेवस्तु परवल मटर तथा मूंगकायूप अनार तथा आमलेकी खटाई शालि धान्य साठीके चावल खिलावे अथवा दाख आमला खजूर तथा फालसेका यूप और अनेक प्रकारके मांसके रस तृप्तिके लिये देवे शीतल अन्न जल शय्या आसन वायु जल स्पर्श तथा उपवन इनसबका सेवन करना चाहिये रशमीवस्त्र कमल उत्पल मणि मोती चंदनयुक्त जल का स्पर्श और चन्द्रमाकी

किरण इनसबका सेवन करना चाहिये यह सब पित्तज मदात्यय रोग में हितकारी हैं ॥ ३६७ ॥

रूक्षतर्पणसंयुक्तंयवानीव्योषसंयुतम्। यवगोधूमकञ्चान्नंरूक्षयूपेणभोजयेत्॥कुलत्थकानांशुष्काणांमूलकानांरसेनवा। प्रभूतकटुसंयुक्तंयवान्नंवाप्रदापयेत् ॥ छागमांसरसंरूक्षमम्लंवाजाङ्गलंरसम्। व्योषयूषमनागम्लंपिबेत्कफमदात्यये॥ स्थाल्यामथकपालेवा भृष्टंकृत्वातुनीरसम्। कट्वम्ललवणंमांसंखादेत्कफमदात्यये ॥ वामकद्रव्ययुक्तेनमद्येनोल्लेखनंमतम्। मदात्ययेकफोद्भूतेलङ्घनञ्चयथाबलम्॥ ३६८ ॥

कफज मदात्ययरोगमें अजवाइन तथा त्रिकटुयुक्त रूखे तर्पण(तृप्तिकारी पदार्थ) और जो तथा गेहूंके पदार्थ रूखे यूपों के साथ अथवा कुलथी तथा सूखी मूलीके यूपके साथ भोजनकरावे या बहुत कटुता युक्त जौ के पदार्थ सेवनकरावे व करे अथवा जंगलीजीवों के मांसकारस घृतादि रहित कुछ खट्टा सेवन करे और त्रिकटु के यूपमें थोड़ी खटाई डालकर पानकरे हाँड़ी अथवा खपरे में कडवे अम्ल तथा लवणयुक्त नीरसमांसको भूनकर खाय वमन करानेवाली औषधियों से युक्त मद्य पिलाकर वमन कराने से और बलके अनुसार लंघन कराने से कफज मदात्यय नष्टहोता है ॥ ३६८ ॥

यदिदंकर्मनिर्दिष्टंवातपित्तकफान्प्रति। सर्वंजेसर्वमेवेदंप्रयोक्तव्यंचिकित्सकैः॥३६९॥

वातज पित्तज और कफज मदात्यय रोगमें जो चिकित्सा कही गई है वह संपूर्णमिलाकर सन्निपातज मदात्यय में करनी चाहिये ॥ ३६९ ॥

अथ प्रसङ्गात् कोद्रवादिमद चिकित्सा ॥

सगुडःकूष्माण्डरसःशमयतिमदमाशुकोद्रवजम्। धत्तूरजञ्चदुग्धंसशर्करञ्चाशुपानेन ॥ सच्छर्दिमूर्च्छातीसारंमदंपूगफलोद्भवम्। सद्यःप्रशमयेत्पीतमात्रमेवांरिशीतलम्॥ वन्यकरीषघ्राणाज्जलपानाल्लवणभक्षणादपिच। शाम्यतिपूगफलोद्भवमदःसशूलःशर्कराकवलात्॥ तत्क्षणान्मृदितंचूर्णंसमाघ्रातंप्रणाशयेत्। ताम्बूलोत्थमदंपुंसामेकमेव स्वभावतः ॥ जातीफलमदंशीघ्रंहन्तिपथ्यानिषेविता। शीततोयावगाहश्चशर्करादधियोजिता ॥ विभीतमदशान्त्यर्थमेतदेवमतापुनः। मद्यंपीत्वायदिनातत्क्षणमवलेढिशर्करांसघृताम्॥ जातुनमदयतिमद्यंमनागपिप्रथितवीर्य्यमपि ॥ इतिपानात्ययपरमदपानाजीर्णपानविभ्रमाधिकारः ॥ ३७० ॥—

प्रसंगसे कोदों आदिके मद की चिकित्सा ॥

कुंभडेके रसमें गुडमिलाकर पीने से कोदोंका मद नष्ट होताहै दूधमें शकर मिलाकर पीने से धतूरे के मदका नाशहोताहै तृप्ति पूर्वक शीतल जलपीने से छर्दि मूर्च्छा तथा अतीसार सहित सुपारीके मदका नाशहोताहै वनके कंडेके सूंघने से जलपीने से अथवा नोनखाने से भी सुपारीके मदका नाशहोताहै शकरके ग्रास को मुख में रखनेसे चूने से हुई मुखकी पीड़ा का नाशहोताहै चूने को मल कर सूंघनेसे पान के मदका नाश होताहै हड़के सेवन से जायफलके मदका शीघ्रनाशहोताहै शीतलजलमें स्नानकरने से और शकरसहित दहीके खानेसे बहेड़े के मदका नाश होताहै मद्यको पीकर जो शीघ्रही घीमें शकर मिलाकर चाटे तो बहुत नशीली मद्यकाभी मदनाश होताहै इति पानात्यय पर मदपानाजीर्ण पानविभ्रमाधिकार ॥ ३७० ॥—

अथ दाहाधिकारः । तत्रदाहःसप्तविधस्तेष्वादौपित्तजंदाहमाह ॥

पित्तज्वरसमःपित्तदाहःस्यात्तस्यसंक्रमः । दाहउष्मात्मकोव्याधिः पित्तज्वरसमानः पित्तज्वरलक्षणयुक्तः पित्तज्वरेत्वामाशयदुष्टादह्नांद्वयोऽधिकाइतिभेदः तस्यदाहस्य पित्तज्वरोक्तक्रमचिकित्सा ॥ ३७१ ॥

दाह का अधिकार ॥

दाह सातप्रकारका है उनमें से पहले पित्तज दाहको कहते हैं पित्तज दाहमें पित्तज्वरके लक्षण होते हैं (परन्तु भेद यह है कि पित्तज्वरमें बेचेनी तथा आमाशय में दोषअधिक होते हैं और दाहमें यह नहींहोते हैं) इस्से इसकी चिकित्साभी पित्तज्वरके समान होती है ३७१ ॥

रक्तजमाह ॥

कृत्स्नदेहानुगंरक्तमुद्रिक्तंदहतिध्रुवम् । सन्धूप्यतेचोष्यतेचताम्राभस्ताम्रलोचनः ॥ लोहगन्धाङ्गवदनोवह्निनेवावकीर्य्यते । उद्रिक्तमतिरक्तंसत्दहतिदाहाख्यंव्याधिकरोतिसन्दह्यते अग्निनादह्यतइवउष्यतेसमीपस्थेनेव वह्निनाताप्यतेचूष्यतइतिपाठान्तरे आचूषणेनेवपीडामनुभवतीत्यर्थः । वह्निनेवावकीर्य्यतेशरीरोपरिवह्निप्रक्षिप्यतइवशस्त्रादिक्षतनिःस्नुतइव ॥ ३७२ ॥ रक्तज दाहका वर्णन ॥

रक्तज दाहमें संपूर्ण शरीरका रुधिर कुपित होकर दाह को उत्पन्न करता है इसमें रोगी समीपमें धरी हुईसी अग्नि के द्वारा संतप्तके समान पीड़ित होताहै तृषित होताहै शरीर तथा नेत्र ताम्र वर्ण होजातेहैं शरीर तथा मुखमें लोहेकीसी गन्धि आती है और शरीर में चिन्गारियांसी गिरीहुई मालूमपड़ती हैं ॥ ३७२ ॥

रक्तपूर्णकोष्ठजमाह ॥

असृजापूर्णकोष्ठस्यदाहोऽन्यःस्यात्सुदुस्तरः । असृजाशस्त्रादिक्षतान्निःस्नुतरक्तेन ३७३ ॥

रक्तपूर्णकोष्ठज दाह का वर्णन ॥

शस्त्र आदिके द्वारा हुए घावसे बहने वाले रुधिर से कोष्ठके पूर्ण होजाने पर एक प्रकारका अत्यन्तदुस्तर दाह उत्पन्न होताहै इसको रक्तपूर्ण कोष्ठज कहते हैं ॥ ३७३ ॥

मद्यजमाह ॥

त्वचंप्राप्तःसपानोष्मापित्तरक्ताभिमूर्च्छितः । दाहंप्रकुरुतेघोरंपित्तवत्तत्रभेषजम् ॥ सपानोष्मामद्यपानजनितउष्मापित्तरक्ताभिमूर्च्छितः । पित्तरक्ताभ्यांवर्द्धितः ॥ ३७४ ॥

मद्यज दाहका वर्णन ॥

मद्यपीने से हुई ऊष्मा पित्त तथा रुधिर के साथबढ़ीहुई त्वचामें प्राप्तहोके भयंकर दाहको उत्पन्न करती है इसमें पित्तकी सी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ३७४ ॥

तृषानिरोधज माह ॥

तृष्णानिरोधादब्धातौक्षीणेतेजःसमुद्धतम् । सबाह्याभ्यन्तरंदेहंप्रदहेन्मन्दचेतसः ॥ संशुष्कगलताल्वोष्ठोजिह्वांनिःकाह्यवेपते । अब्धातोरसेक्षीणेक्षयंप्राप्तेतेजःसमुद्धतंदह्नं मन्दचेतसःअल्पबुद्धेःयतस्तेनतृषानिरोधःकृतः ॥ ३७५ ॥

तृषा निरोधज दाहका वर्णन ॥

जो मन्द बुद्धि मनुष्य तृषा होने पर जल नहीं पीताहै उसकी रस धातुके क्षीण होजानेपर बढ़ा हुआ तेज शरीरके भीतर तथा बाहर दाहको उत्पन्न करताहै इसमें कंठ तालु तथा ओठ सूखजाते हैं जिह्वा बाहर निकल आतीहैं और कंप होताहै ॥ ३७५ ॥

धातुक्षयजमाह ॥

धातुक्षयोत्थोयोदाहस्तेनमूर्च्छातृपान्वितः । क्षामस्वरः क्रियाहीनः ससीदेद्भृश पीडितः ॥ ३७६ ॥

धातु क्षयज दाहका वर्णन ॥

धातुक्षयज दाहमेंमूर्च्छा तृषा स्वरभंग कार्योंमे असमर्थता औरबहुत दाहहोनेसे मृत्युभीहोजातीहै३७६॥

मर्माभिघातजमाह ॥

मर्माभिघातजोऽप्यस्तिसोऽसाध्यःसप्तमोमतःमर्माणिशिरोहृदयवस्त्यादीनि॥३७७॥

मर्माभिघातज दाहका वर्णन ॥

शिर हृदय तथा मूत्राशय आदि स्थानोंमें चोटलगनेसे जोदाह उत्पन्न होताहै वहअसाध्यहै३७७॥

असाध्यदाहमाह ॥

सर्वएवचवर्ज्याःस्युःशीतगात्रस्यदेहिनः ॥ ३७८ ॥

असाध्य दाहके लक्षण ॥

शीतल शरीरवाले मनुष्योंके संपूर्ण दाह असाध्य होतेहैं ॥ ३७८ ॥

अथ दाहचिकित्सा ॥

शतधौतघृताभ्यक्तंलेपंवायवशक्तुभिः । कोलामलकयुक्तैर्वाधान्याऽम्लैरपिबुद्धिमान् । धान्याम्लंकाञ्जिकभेदः । छादयेत्तस्यसर्वाङ्गमारनालार्द्रवाससा । लामज्जकेनयुक्तेन चन्दनेनानुलेपयेत् ॥ चन्दनाम्बुकणास्यन्दितालवृन्तोपवीजनैः । सुप्याद्दाहार्दितोऽम्भोजकदलीदलसंस्तरे ॥ परिषेकावगाहेषुव्यजनानाञ्चसेवने । शस्यतेशिशिरन्तोयंदाह तृष्णोपशान्तये ॥ फलिनीलोध्रसेव्याम्बुहेमपत्रंकुटन्नटम् । कालीयकरसोपेतंदाहेशस्तं प्रलेपनम्॥फलिनीप्रियङ्गुःसेव्यंउशीरंअम्बुवालकंहेमपत्रंनागकेशरपत्रंकुटन्नटंवितुन्न कंगुड़तजीइतिलोके क्वचित्चम्बावती इतिनामकालीयकंकलम्बकइतिलोके । ह्रीवेरप द्मकोशीरचन्दनाम्बुजवारिणा ॥ सम्पूर्णामवगाहेतद्रोणींदाहार्दितोनरः ॥ ३७९ ॥

दाहकी चिकित्सा ॥

सौवारका धोया हुआ घी तथा जौके सत्तू मिलाकर लेप करनेसे बेर तथा आमले एकसाथ कांजी में पीसकर लेप करनेसे कांजी में भीगे हुए कपडेके ओढ़नेसे खस तथा चन्दनको शिरके में पीसकर लेपकरनेसे और कमल तथा केले के पत्तोंकी शय्यापर शयन करके चन्दन युक्त जलसे सिंचेहुए पंखों की वायुके सेवनसे दाहका नाश होताहै तृषा तथा दाहकी शान्तिके लिये जलसे सींचना स्नान करना तथा पंखोंपर छिड़कना इन सबकार्य्योंमें शीतल जल श्रेष्ठहै माल कंगनी लोध खस सुगन्धवाला नागकेशरके पत्ते और गुड़तजी इनसबको कलंबकके रसमें पीसकर लेपकरने से सुगन्धवाला पद्माक

खस चन्दन तथा कमलको पीसकर जलमें मिलाके फिर इस जलको हौजमें भरकर उसमें स्नान करनेसे दाहका नाशहोताहै ३७९॥

वाप्यःकमलहासिन्योजलयन्त्रगृहाःशुभाः। नार्य्यश्चन्दनदिग्धाङ्ग्योदाहदैन्यहरामताः॥ पाययेत्कमलस्याम्भःशर्कराम्भःपयोऽपिच। क्षीरमिक्षुरसञ्चापिकारयेत्पित्तजिद्विधिम्॥ ३८०॥

फूलेहुए कमलवाली वावड़ी फुहारेदार घर और शरीरमें चन्दन लगायेहुए स्त्री यह सब दाहकी नाशकहैं कमलका जल शक्करयुक्त जल अथवा दूध तथा ईखका रस इनका सेवन करनेसे और पित्त नाशक चिकित्सा करने से दाह का नाश होताहै॥ ३८०॥

पटीरपर्पटोशीरनीरनीरदनीरजैः। मृणालमिसिधान्याकपद्मकामलकैःकृतः॥ अर्द्धशिष्टःसिताशीतःपीतक्षौद्रसमन्वितः। क्वाथोऽपोहयेद्दाहंनृणाञ्चपरमोल्बणम्॥ पटीरंचन्दनम्। इतिचन्दनादिक्वाथः॥ ३८१॥

चन्दन पित्तपापड़ा खस सुगन्धवाला मोथा कमल कमलकीडंडी सौंफधनियां पद्माक और आमला इन सबके द्वारा आधा अवशिष्ट काढ़ा बनाकर शीतल होजानेपर शक्कर तथा सहत डालकर पीनेसे बहुत बढ़ेहुएभी दाहका नाश होताहै इति चन्दनादिक्वाथ॥ ३८१॥

तिलतैलंभवेत्प्रस्थंतत्षोडशगुणेशनैः। काञ्जिकेविपचेत्तस्याद्दाहज्वरहरंपरम्॥ इतिकाञ्जिकतैलम्। इतिदाहाधिकारः॥ ३८२॥

६४ तोले तिलके तेलको १६ गुनी कांजीमें पकाकर मर्दन करनेसे दाह ज्वरका नाश होताहै॥ इति काञ्जिकतैल इति दाहाधिकार॥ ३८१॥

अथोन्मादाधिकारस्तत्रोन्मादस्य निरुक्तिमाह॥

मदयन्त्युद्धतादोषायस्मादुन्मार्गमाश्रिताः। मानसोऽयमतोव्याधिरुन्मादइतिकीर्त्तितः॥ अयमर्थः। यस्माद्धेतोरुद्धताःप्रवृद्धाःदोषाःउन्मार्गमाश्रिताःमदयन्तिचित्तंविक्षिपन्ति अस्मिन्सोऽयमुन्मादइतिकीर्त्तितःसउन्मादःमानसोव्याधिःमनोवैकल्यकारणात्। तस्यैवावस्थाभेदेनामान्तरमाह॥ सचाप्रवृद्धस्तरुणोमदसंज्ञां बिभर्त्तिच। सउन्मादःतरुणोनवीनः ३८३॥ उन्मादका अधिकार उन्मादकी निरुक्ति॥

विमार्गमें प्राप्त बढ़ेहुए दोष चित्तको विकल करतेहैं इसलिये इसको उन्माद कहते हैं यह मानस रोगहै और वही उन्मादरोग जो बहुत बढ़ा न होय और नवीन होयतो उसको मद कहतेहैं॥ ३८३॥

उन्मादस्यविप्रकृष्टंलक्षणमाह॥

विरुद्धदुष्टाशुचिभोजनानिप्रधर्षणंदेवगुरुद्विजानाम्। उन्मादहेतुर्भयहर्षपूर्वोमनोऽभिघातोविषमाचचेष्टा,। दुष्टंधत्तूरबीजादिसहितंअशुचिरजस्वलास्पर्शादिप्रधर्षणमभिभवःविषमाचेष्टावलवद्विग्रहादिः॥ ३८४॥

उन्मादके दूरवाले कारण॥

विरुद्ध दुष्ट (धतूरेकेबीज आदिसे युक्त) तथा अशुचि (रजस्वलाओं आदिकोंसे छुएहुए) भोजन

से देवता गुरू तथा ब्राह्मणोंके तिरस्कारसे भयसे हर्षसे मनके तोडनेसे और बलवानके साथ युद्धादि से उन्माद रोग उत्पन्न होताहै ॥ ३८४ ॥

सन्निकृष्टंनिदानमाह ॥

एकैकशःसर्वशश्चदोषैरत्यर्थमूर्च्छितैः। मानसेनचदुःखेनसपञ्चविधउच्यते॥विषाद्भवतिपष्ठश्चयथास्वंतत्रभेषजम् । तस्यसंप्राप्तिमाह। तैरल्पसत्वस्यमलाःप्रदुष्टाःबुद्धेर्निवासंहृदयंप्रदूष्य ॥ स्रोतांस्यधिष्ठायमनोवहानिप्रमोहयन्त्याशुनरस्यचेतः। अल्पसत्वस्य अल्पसत्वगुणस्यमलावातादयः बुद्धेर्निवासंहृदयंप्रदूष्येतिएतेनाश्रयस्यदुष्ट्यातदाश्रितायाःबुद्धेरपिदुष्टिरुक्तामनोवहानिस्रोतांसिहृदयाश्रितानिदशएतानिविशेषतोबोद्धव्यानि। चरकेणसकलशरीरस्रोतांस्येवमनोऽधिष्ठानत्वेनोक्तानिप्रमोहयन्तिविकृतिंकुर्वन्ति३८५॥

उन्मादके समीपी कारण ॥

उन्माद ६ प्रकारकाहै वातज पित्तज कफज सन्निपातज मनके दुःखसे उत्पन्न और विषज इनमें अपने २ अनुसार चिकित्साकी जातीहै ऊपर कहेहुए कारणोंके द्वारा दूषित दोष थोड़े सत्वगुणवाले मनुष्यके बुद्धिके स्थान रूप हृदयको दूषित करके और मनके लेचलनेवाले स्रोतोंमे स्थित होकेचित्त को मोहितकरतेहैं ॥ ३८५ ॥ उन्मादस्यसामान्यरूपलक्षणमाह ॥

धीविभ्रमःसत्वपरिप्लवश्चपर्याकुलादृष्टिरधीरताच । अबद्धवाक्यंहृदयञ्चशून्यंसामान्यउन्मादगदस्यलिङ्गम् ॥ धीविभ्रमःशुक्तिकायांरजतज्ञानम्। सत्वंपरिप्लवःसत्वंमनस्तस्यचाञ्चल्यं ॥ अबद्धवाक्यम्असंबद्धभाषित्वं। शून्यंस्मृतिशून्यं ॥ ३८६ ॥

उन्मादका सामान्य लक्षण ॥

सामान्य उन्मादमें बुद्धि भ्रम मनकी चंचलता व्याकुलदृष्टि अधीरता असम्बद्धवाक्य और हृदय का स्मृतिसे रहितहोना यह लक्षण होतेहैं ॥ ३८६ ॥

वातिकोन्मादस्यनिदानपूर्विकांसंप्राप्तिमाह ॥

रूक्षोष्णशीतान्नविरेकधातुक्षयोपवासैरनिलोऽतिवृद्धः । चिन्तादिदुष्टंहृदयंप्रदूष्य बुद्धिंस्मृतिंचाप्युपहन्तिशीघ्रम्। प्रदूष्यंप्रकर्षेणदूषयित्वा ॥ ३८७ ॥

वातज उन्मादकी निदान पूर्वक संप्राप्ति ॥

रूखे तथा अल्प शीतल अन्नके भोजन से विरेचन से धातुक्षयसे और लंघनों से बहुत बढ़ी हुई वायु चिन्ता आदि से व्याकुल हृदयको दूषित करके बुद्धि तथा स्मृतिको शीघ्र नष्ट करती है ३८७॥

तस्यैवरूपमाह ॥

अस्थानहास्यस्मितनृत्यगीतवागङ्गविक्षेपणरोदनानि। पारुष्यकार्श्यारुणवर्णताच जीर्णेबलञ्चानिलजस्यरूपम् ॥ अस्थानेऽनवसरे । हास्यादीनिरोदनान्तानिजीर्णेआहारेबलंव्याधेः ॥ ३८८ ॥ वातज उन्मादका लक्षण ॥

वातज उन्मादमें बे कायदे हँसना मुसक्याना नाचना गाना बकना अंगोंका चलाना रोना रूक्षता कठोरता और रक्तवर्ण होना यह लक्षण होते हैं और भोजनके पचजाने पर यह रोग बढ़ताहै ३८८॥

पैत्तिकस्यनिदानपूर्विकांसंप्राप्तिमाह ॥

अजीर्णकट्वम्लविदाह्यशीतैर्भोज्यैश्चितंपित्तमुदीर्णवेगम् । उन्मादमत्युग्रमनात्मकस्यहृदिस्थितंपूर्ववदाशुकुर्यात् ॥ हृदिस्थितंपित्तंचित्तंसंचितंपुनःअजीर्णकट्वम्लविदाह्यशीतैर्भोज्यैरुदीर्णवेगंसत्उन्मादंकुर्यात्पूर्ववद्धृदयंप्रदूष्येत्यर्थः॥ ३८९॥

पित्तज उन्मादकी निदान पूर्वक संप्राप्ति ॥

अजीर्णकारी कड़वी खट्टी विदाही तथा उष्ण वस्तुओंके भोजनसे हृदय में इकट्ठा हुआ पित्त कुपित होकर हृदयको दूषित करके बहुत शीघ्र उन्माद को उत्पन्न करता है ॥ ३८९ ॥

तस्यरूपमाह ॥

अमर्षसंरम्भविनग्नभावाःसन्तर्जनाभिद्रवणौष्ण्यरोषाः । प्रच्छायशीतान्नजलाभिलाषाःपित्ताच्चयापित्तकृतस्यलिंगम् ॥ अमर्षोऽसहिष्णुतासंरम्भआरम्भटोआडम्बरइतियावत्। सन्तर्जनंपरित्रासनं । अभिद्रवणंपलायनंऔष्ण्यंगात्रेचोष्णोदाहविशेषः प्रच्छायइत्यादिच्छायायांशीतयोश्चान्नजलयोरभिलापः॥ ३९०॥

पित्तज उन्मादके लक्षण ॥

पित्तज उन्मादमें असहनता आडंबर नंगापन डरावना भागना शरीरमें कुछदाह क्रोध और छाया तथा शीतल अन्नपान में अभिलाप यह लक्षण होते हैं ॥ ३९० ॥

श्लैष्मिकस्यनिदानपूर्विकांसंप्राप्तिमाह ॥

सम्पूरणैर्मन्दविचेष्टितस्यसोष्माकफोमर्मणिसंप्रवृद्धः । बुद्धिंस्मृतिञ्चाप्युपहन्तिचित्तंप्रमोहयन्संजनयेद्विकारम् ॥ सम्पूरणैः। भोजनादिभि मन्दविचेष्टितस्यव्यायामरहितस्यसोष्माकफइतिकफोऽप्युन्मादंकरिष्यन् पित्तसहायमपेक्षते । व्याधिस्वभावात्मर्मणि अत्रमर्मशब्देनहृदयमुच्यतेविकारमुन्मादरूपम्॥ ३९१॥

कफज उन्मादकी निदान पूर्वक संप्राप्ति ॥

व्यायामादिरहित मनुष्य का बहुत भोजन आदिकों से पित्त सहित बढ़ाहुआ कफ हृदयमें स्थितहो कर बुद्धि तथा स्मृति को नष्ट करताहुआ चित्तको मोहित करके उन्माद को उत्पन्न करता है ३९१॥

तस्यरूपमाह ॥

वाक्चेष्टितंमन्दमरोचकश्चनारी विविक्तप्रियताचनिद्रा। छर्दिश्चलालाचबलञ्चभुक्तेनखादिशौक्ल्यञ्चकफात्मकेस्यात् ॥ वाक्चेष्टितंमन्दवचनमल्पंनारीविविक्तप्रियतानारीप्रियताविजनप्रियताचभुक्तेसतिबलंव्याधेः॥ ३९२॥

कफज उन्माद का लक्षण ॥

कफज उन्मादमें थोड़ा बोलना अरुचि स्त्रीमें प्रेम निर्जन स्थानमें रहने की इच्छा अधिक निद्रा छर्दि लार बहना और नख आदिकों में स्वेतता यह लक्षण होते हैं यहरोग भोजनके उपरान्त बलवान होता है ॥ ३९२॥

सान्निपातिकस्य निदानपूर्वकं लक्षणमाह ॥

यःसन्निपातप्रभवोऽतिघोरःसर्वैःसमस्तैःसतुहेतुभिःस्यात् । सर्वाणिरूपाणिविभर्त्ति तादृक्विरुद्धभैषज्यविधिर्विवर्ज्यः ॥ ससान्निपातिकउन्मादःसन्निपातग्रहणेनैवसर्वात्मकत्वेलब्धेपुनःसर्वैरितियत्कृतंतद्रजस्तमःप्रापणार्थेतेनरजस्तमोमिलितइत्यर्थः । तेनवातादयोरजस्तमोभिर्मनोदोषैर्मिलिताः॥समस्तैश्चनिदानैःकुपिताउन्मादंजनयन्ति । सर्वैर्हेतुभिःसमस्तैर्मिलितैःस्यात्यतोऽन्योव्याधिःसर्वैर्हेतुभिर्मिलितैरेवभवतीतिनियमोनास्ति । अयंतुव्याधिप्रभावात्सर्वैर्हेतुभिर्मिलितैःस्यात् । तादृगुन्मादःविरुद्धभैषज्यविधिरितिकोऽर्थः ॥ त्रिदोषजेप्रत्येकंवातादेरप्रत्यनीकाकार्या । साचपरस्परविरोधिनीत्रिदोषंहन्ति किञ्चिदेवद्रव्यंआमलकादि । तच्चात्रयौगिकंव्याधिप्रभावादतएवविवर्ज्यःनचिकित्स्या इत्यर्थः ॥ ३९३ ॥ सन्निपातज उन्मादका निदानपूर्वक लक्षण ॥

ऊपर कहे हुए संपूर्ण कारणों से कुपित हुए रजो गुणतमोगुण मिले हुए वातादिकदोष सान्निपातज उन्माद को उत्पन्न करते हैं इसमें ऊपरकहे हुए संपूर्ण निदान मिले हुए होते हैं यह रोगका प्रभावहै और इसमें ऊपरकहे हुए सबलक्षण मिलते हैं इस प्रकारके विरुद्ध चिकित्सा वाले घोर सन्निपातज उन्माद वालेको वैद्य त्याग करदे ॥ ३९३ ॥

मनोदुःखजस्यविप्रकृष्टंनिदानमाह ॥

चौरैर्नरेन्द्रपुरुषैररिभिस्तथान्यैर्वित्रासितस्यधनबान्धवसंक्षयाद्वा । गाढंक्षतेमनसि चप्रिययारिरंसोर्जायेतचोत्कटतरोमनसोविकारः॥ अन्यैःहिंस्रादिभिःगाढमतिशयेनक्षतेऽभिहतेप्रिययाप्राप्तुमशक्ययारिरंसोःपुरुषस्यविकारःउन्मादरूपः ॥ ३९४ ॥

मनके दुःखसे हुए उन्मादके दूर वाले कारण ॥

चोर राज पुरुष शत्रु अथवा अन्य हिंसक जीवों के भयसे धन तथा बन्धुओंके क्षयसे और बहुत काम से पीड़ित होकर अभिलाष की हुई स्त्रीके न मिलने से मनके क्षोभित होनेपर अत्यन्त भयंकर मानसिक उन्माद उत्पन्नहोताहै ॥ ३९४ ॥ तस्यरूपमाह ॥

चित्रंब्रवीतिचमनोऽनुगतंविसंज्ञोगायत्यथोहसतिरोदितिचातिमूढः । चित्रमाश्चर्य्यंमनोऽनुगतंगोप्यमपिविसंज्ञोविरुद्धज्ञानः ॥ अतीवमूढःअतीवज्ञानशून्यः । अत्रविकल्पो बोद्धव्यः ॥ ३९५ ॥ मनके दुःख से हुए उन्मादके लक्षण ॥

मानस उन्मादमें ज्ञानका विपरीत होना अथवा ज्ञानका न होना मनमें स्थित छिपाने के योग्य भी बातोंका कहना गाना हँसना और रोना यह लक्षण होतेहैं ॥ ३९५ ॥

विषजस्यरूपमाह ॥

रक्तेक्षणोहतबलेन्द्रियभाःसुदीनः। श्यावाननोविषकृतेतुभवेत्परासुः। परासुःमृतः ३९६॥

विषज उन्मादके लक्षण ॥

विषज उन्माद में नेत्रोंका लालहोना बल इन्द्री तथा कान्तिका नष्ट होना मुखका मलिन होना और अत्यन्त दीनता यह लक्षण होतेहैं इसमें रोगी मरजाताहै ॥ ३९६॥

अरिष्टमाह ॥

अवाङ्मुखस्तून्मुखोवाक्षीणमांसबलोनरःजागरूकोह्यसन्देहमुन्मादेनविनश्यति३९७॥

उन्मादके अरिष्ट ॥

जो उन्मादी रोगी नीचेको अथवा ऊपरको मुख किये रहे और उसका मांस तथा बल क्षीण होजाय निद्रा न आवे तो वह मरजाता है॥ ३९७॥

अथदेवादिकृतस्योन्मादस्यसामान्यंलक्षणमाह ॥

अमर्त्यवाग्विक्रमवीर्यचेष्टोज्ञानादिविज्ञानबलादियुक्तः। प्रकोपकालोनियतश्चयस्य देवादिजन्मामनसोविकारः ॥ अमर्त्यवाग्विक्रमवीर्यचेष्टःनमर्त्यस्येववागादयोयत्रसःवि. क्रमःपराक्रमःवीर्यंशौर्यंज्ञानादिविज्ञानबलादियुक्तःज्ञानंबुद्धिः आदिपदेनतद्भेदाः मेधावि चारणास्मृत्यादयोगृह्यन्ते। विज्ञानंशिल्पादिविषयकंज्ञानंबलंचेष्टापाटनम् ॥ आदिपदे नाभिमानादिगृह्यतेनियतःवक्ष्यमाणतिथ्यादिभिःमनोविकारउन्मादः ॥ ३९८ ॥

देवता आदिकों से हुए उन्मादका सामान्य लक्षण॥

जिस उन्मादमें वाणी पराक्रम शौर्य्य शरीरकी चेष्टा बुद्धि स्मृति मेधा विचार शिल्पादि विषयोंका ज्ञानतथा बल आदिक मनुष्यके से न होंय और रोगके कोपका समय निश्चित न होवे उसको देवादि कृत उन्माद कहतेहैं ॥ ३९८ ॥

तत्रदेवाविष्टस्यलक्षणमाह ॥

सन्तुष्टःशुचिरतिदिव्यमाल्यगन्धोनिस्तन्द्रोप्यवितथसंस्कृतप्रभाषी ॥ तेजस्वीस्थि रनयनोवरप्रदाता। ब्रह्मण्योभवतिनरःसदेवजुष्टः ॥ अतिदिव्यमाल्यगन्धः। अतिशये. नदिव्यस्यमाल्यस्येवगन्धोयस्यसः ॥ निस्तन्द्रोनिद्रारहितःअवितथंसत्यंब्रह्मण्यःब्राह्म णभक्तः ॥ ३९९ ॥

देवताओं से हुए उन्माद के लक्षण ॥

देवताओं से हुए उन्माद में रोगी संतुष्ट पवित्र अत्यन्त दिव्यमालाओं कीसी सुगन्धि से युक्त निद्रारहित सत्य संस्कृत बोलने वाला तेजस्वी स्थिर नेत्रवाला ब्राह्मण भक्त और वरदान देनेवाला होताहै ॥ ३९९॥

दैत्याविष्टमाह ॥

संस्वेदोद्विजगुरुदेवदोषवक्ता। जिह्माक्षोविगतभयोविमार्गदृष्टिः ॥ सन्तुष्टोभवतिन चान्नपानजातैर्दुष्टात्माभवतिसदैवशत्रुजुष्टः । विमार्गदृष्टिःकुमार्गरतःदुष्टात्मादुष्टस्व भावः ॥ ४०० ॥

दैत्यों से हुए उन्मादका लक्षण॥

दैत्योंसे हुए उन्मादमें स्वेद नेत्रोंमें कुटिलता निर्भय होना कुमार्ग गामीहोना अन्न पानादिकों में संतुष्ट न होना दुष्टता और ब्राह्मण गुरू तथा देवताओं के दोषोंको कहना यह लक्षण होतेहैं ॥ ४००॥

गन्धर्वाविष्टमाह ॥

हृष्टात्मापुलिनवनान्तरोपसेवीस्वाचारःप्रियपरिगीतगन्धमाल्यः । नृत्यन्वैप्रहसति. चारुचाल्पशब्दम्गन्धर्वग्रहपरिपीडितोमनुष्यः ॥ हृष्टात्माहृष्टजीवात्मापुलिनन्तोयोत्थि तंतटंवनान्तरंवनमध्यन्तयोःसेवीचारुचाल्पशब्दमितिहसनक्रियाविशेषणम्॥ ४०१॥

गन्धर्वोंसे हुए उन्माद का लक्षण ॥

गन्धर्वों से हुए उन्माद में अन्तःकरण की प्रसन्नता जलके किनारे तथा वनोंमें निवास करना अपने आचार में रहना गीत तथा सुगन्धित माला आदिकों में प्रीतिहोना सुन्दर नाचना और धीरे २ मनोहर हँसना यह लक्षण होतेहैं ॥ ४०१ ॥

यक्षाविष्टमाह ॥

ताम्राक्षःप्रियतनुरक्तवस्त्रधारीगम्भीरोद्रुतगतिरल्पवाक्सहिष्णुः । तेजस्वीवदतिच किंददामिकस्मैयोयक्षग्रहपरिपीडितोमनुष्यः ॥ ४०२ ॥

यक्षोंसे हुए उन्मादका लक्षण ॥

यक्षोंसे हुए उन्मादमें नेत्रोंका ताम्रवर्ण होना महीन तथा रक्त वस्त्रोंका पहरना गंभीरता जल्दी चलना थोड़ा बोलना सहन शीलता तेजस्वी होना और किसको क्या देदूं ऐसाकहना यह सब लक्षण होतेहैं ॥ ४०२ ॥

पित्राविष्टमाह ॥

प्रेतानांसदिशतिसंस्तरेषुपिण्डान् । शान्तात्माजलमपिचापसव्यवस्त्रः ॥ मांसेप्सुस्तिलगुड़पायसाभिलाषीतद्भक्तोभवतिपितृग्रहाभिजुष्टः । प्रेतानांमृतानांपितॄणांदिशति ददाति ॥ अपसव्यवस्त्रःदक्षिणस्कन्धकृतोत्तरीयः ॥ ४०३ ॥

पितरों के उन्माद के लक्षण ॥

पितरोंके उन्माद में रोगी शान्त होकर दक्षिण कन्धेमें यज्ञोपवीत रखकर और कुशोंको बिछाकर पितरोंको जल तथा पिंडदेता है पितरोंका भक्त और मांस तिल गुड़ तथा खीर खानेकी अभिलाषा किया करताहै ॥ ४०३ ॥

नागाविष्टमाह ॥

यस्तूर्व्यांप्रसरतिसर्पवत्कदाचितसृक्किण्योमुहुरपिजिह्वयावलेढि । क्रोधालुर्घृतमधुदुग्धपायसेप्सुर्विज्ञेयःसखलुभुजङ्गमेनजुष्टः ॥ प्रसरतिससर्पवत्उरसाचलतिसृक्किण्यौ ओष्ठप्रान्तौ ॥ ४०४ ॥

सर्पोंसे हुए उन्माद के लक्षण ॥

सर्पोंके उन्मादमें सर्पोंके समान छातीसे पृथ्वीपर चलना जिह्वासे ओठोंके किनारोंको बारम्बार चाटना क्रोधयुक्तहोना और घी सहत दूध तथा खीरखानेकीइच्छाकरना यहलक्षण जाननेचाहिये ४०४॥

राक्षसाविष्टमाह ॥

मांसासृग्विविधसुराविकारलिप्सुर्निर्लज्जोभृशमतिनिष्ठुरोऽतिशूरः । क्रोधालुर्विविधबलोनिशाविहारीशौचद्विड्भवतिसदाराक्षसैर्गृहीतः ॥ अतिनिष्ठुरोनिर्दयः ॥ ४०५ ॥

राक्षसोंसे हुए उन्मादके लक्षण ॥

राक्षसों से हुए उन्माद में मांस रुधिर तथा अनेक प्रकारकी मदिराओं में इच्छा निर्लज्जता बहुत निर्दयता बहुत शूरता क्रोध बहुतबल रात्रिमें घूमना और पवित्र न रहना यह लक्षण होते हैं ४०५॥

ब्रह्मराक्षसाविष्टमाह ॥

देवविप्रगुरुद्वेषीवेदवेदाङ्गनिन्दकः ।आत्मपीडाकरोऽहिंस्रोब्रह्मराक्षससेवितःअहिंस्रः अहिंसाशीलः ॥ ४०६ ॥

ब्रह्मराक्षसोंसे हुए उन्मादका लक्षण ॥

ब्रह्मराक्षससे हुए उन्मादमें देवता ब्राह्मण तथा गुरुओंसे द्वेष करना वेद वेदांगोंकी निन्दा करना अपनेको पीडादेना और हिंसा न करना यह लक्षण होतेहैं ॥ ४०६ ॥

पिशाचाविष्टमाह ॥

उद्धस्तः कृशपरुषोविरुद्धभाषीदुर्गन्धोभृशमशुचिस्तथातिलोलः । बह्वाशीविजनवनान्तरोपसेवीव्याचेष्टन्त्रसतिरुदन्पिशाचजुष्टः ॥ उद्धस्त नग्नः दिगम्बरइतिविदेहवचनात् कृशोनिर्मांसः। परुषोरूक्षः अतिलोलःसर्वस्मिन्नन्नपानादौलोलुपः व्याचेष्टन्विरुद्धमाचेष्टन् ॥ ४०७ ॥ पिशाचोंसे हुए उन्मादके लक्षण ॥

पिशाचोंसेहुए उन्मादमें रोगी नग्न कृश रूखा विरुद्ध बोलनेवाला सबप्रकारके अन्नपानादिमें लोभ युक्त दुर्गन्धित बहुत अपवित्र अत्यन्त खानेवाला निर्जन तथा वनमें रहनेवाला विरुद्ध चेष्टा युक्त तथा भयभीत होताहै और रोताहै ॥ ४०७ ॥

ग्रहाहिंसाक्रीडापूजार्थंगृह्णन्ति । अतएवोक्तम्अशुचिभिन्नमर्य्यादंक्षतंवायदिवाक्षतम् ॥ हिंस्रहिंसाविहारार्थंसत्कारार्थमथापिवा ॥ ४०८ ॥

ग्रह मनुष्योंको हिंसा क्रीडा अथवा पूजाके लिये ग्रहण करते हैं इसीसे कहागयाहै कि अपवित्र मर्य्यादा रहित घाव युक्त अथवा घाव रहित मनुष्यको देवादिग्रह हिंसा क्रीडा अथवा पूजनके लिये ग्रहण करतेहैं ॥ ४०८ ॥ तत्राहिंसार्थंगृहीतस्यलक्षणमाह ॥

स्थूलाक्षोद्रुतमटनःसफेणवामीनिद्रालुःपततिचकम्पतेचयोऽति । यश्चाद्रिद्विरदनगादिविच्युतःस्यात्सोऽसाध्योभवतितथात्रयोदशेऽब्दे ॥ यश्चाद्रिइत्यादियःपर्वतादिपतितःसनग्रहैर्गृह्यतइत्यर्थः। आदिशब्देनभित्तिप्रासादादयोगृह्यन्तेतथात्रयोदशेऽब्देसर्वएवदेवादिग्रहीताऽसाध्याः ॥ ४०९ ॥

हिंसाके लिये ग्रहण कियेगयेके लक्षण ॥

जो उन्मादी रोगी फैलेहुए नेत्रवाला जल्दीचलनेवाला तथा फेनेसहित वमन करनेवालाहोताहै निद्राके वशीभूत होकर गिरताहै और कांपताहै वह असाध्यहै जो उन्मादवाला पर्व्वत हाथी वृक्ष अथवा घर आदिकों पर से गिरताहै वह असाध्यहै और जन्म से तेरहवें वर्षमें होनेवाले सब प्रकारके उन्माद असाध्य होतेहैं ॥ ४०९ ॥ देवादीनामावेशसमयमाह ॥

देवग्रहाःपौर्णमास्यामसुराःसन्ध्ययोरपि । गन्धर्वाःप्रायशोऽष्टम्यांयक्षाश्चप्रतिपद्यथा॥ पितरःकृष्णपक्षेचपञ्चम्यामपिचोरगाः॥रक्षःपिशाचारात्रौचचतुर्दश्यांविशन्तिहि॥ कृष्णपक्षेऽमावास्यायांप्रायशः यदन्यत्रापितिथ्यभिधानप्रयोजनंलक्षणार्थंतत्रतिथौचबलिदानार्थम्ननुयादिदेवादयोविशन्तितदाविशन्तस्तेकथंनेत्यतआह। दर्पणादीन्यथाछायाशीतोष्णंप्राणिनोयथा ॥ स्वमणिंभास्करार्चिश्चयथादेहेचदेहधृक् । विशन्तिचनदृश्यन्तेग्रहास्तद्वच्छरीरिणांदर्पणादीनीत्यादिशब्देनान्यदपिनिर्मलद्रव्यंजलतैलादिग्रहवद्द्रव्यंचगृह्यतेछायाप्रतिबिम्बंस्वमणिःसूर्य्यमणिःदेहधृक्जीवात्मा ॥ ४१० ॥

देवता आदिकोंके आवेशका समय ॥

देवग्रह पौर्णमासीको असुरग्रह दोनों संध्याओंमे गन्धर्व प्रायः अष्टमीको यक्षप्रतिपदाको पितर कृष्णपक्षमें अमावास्याको सर्प पंचमीको राक्षस रात्रिके समय और पिशाच चतुर्दशी को मनुष्य के शरीरमें प्रवेशकरतेहैं अब यह सन्देहहोताहै किजोदेवता आदिक मनुष्योंके शरीरमें जिससमय प्रवेश करतेहैं वह दिखाई क्योंनहींदेते इसका उत्तर यहहै कि जैसे किसी वस्तुकी छाया दर्पण निर्मल वस्तु तथा जल तैलादिकोंमें प्रवेशकरतीहै शीत तथा उष्ण मनुष्यके शरीरमें प्रवेश करताहै ज्वाला जैसे सूर्य्य कान्तिमणिमें प्रवेशकरतीहै और जीवात्मामनुष्यके शरीरमें प्रवेशकरताहै और दिखाईनहींदेता उसीप्रकार देवता आदिकभी मनुष्यके शरीरमें प्रवेशकरतेहैं और दिखाईनहींदेतेहैं ॥ ४१० ॥

अथोन्मादस्यचिकित्सा ॥

वातिकेस्नेहपानंप्राग्विरेकःपित्तसम्भवे । कफजेवमनंकार्य्यंपरोवस्त्यादिकःक्रमः ॥ यच्चोपदीक्ष्यतेकिञ्चिदपस्मारेचिकित्सितम् । उन्मादेतच्चकर्त्तव्यंसामान्यंदोषदूष्ययोः ॥ जलाग्निद्रुमशैलेभ्योविषमेभ्यश्चतंसदा । रक्षेदुन्मादिनंयत्नात्सद्यःप्राणहरंहितत् ॥ तज्जलादि ॥ ४११ ॥

उन्मादकी चिकित्सा ॥

वातज उन्मादमें पहले स्नेहपान पित्तज उन्मादमें विरेचन और कफज उन्मादमें वमन कराना चाहिये पीछेसे बस्ति आदिक देनी चाहिये मिर्गीरोगमें जो कुछचिकित्सा कहीगईहै वह उन्मादमेंभी करनी चाहिये क्योंकि इनकेदोष और दूष्य (हृदयादिक) समहैं जल अग्नि वृक्ष पर्व्वत और ऊंचे स्थानादिकों से यत्न पूर्व्वक उन्माद वालेकी रक्षा करनी चाहिये क्योंकि इनसे शीघ्रही प्राणजानेका सन्देह रहताहै ॥ ४११ ॥

ब्राह्मीकूष्माण्डफलषड्ग्रन्थाशङ्खपुष्पिकास्वरसाः । दृष्टाउन्मादहृतःपृथगेतेकुष्ठम धुमिश्राः ॥ अयमर्थःब्राह्मीरसःतोला ४कुष्ठचूर्णमासे२मधुअष्टौमासाः८पेयाः । इत्येको योगःकूष्माण्डबीजचूर्णमासा ८कुष्ठचूर्णमासा२अयंद्वितीयोयोगः ॥ शंखपुष्पीस्वरसंप लैकं१कुष्ठचूर्णमाषद्वयं२मधुनःअष्टौमाषाःपेयाःतृतीययोगः ॥ ४१२ ॥

ब्राह्मीकारस ४ तोले कूटकाचूर्ण २ माशे तथा सहत ८ माशे इनको पीनेसे कुंभड़ेकेबीजोंकाचूर्ण ८ माशे कूटकाचूर्ण २ माशे तथा सहत ८ माशे इनके सेवनसे अथवा शंखपुष्पीकारस १ पल कूटका चूर्ण २ माशे सहत ८ माशे इनकेपीनेसे या श्वेतवच ८ माशे कूटकाचूर्ण २ माशे तथा सहत ८ माशे इनके सेवनसे उन्मादका नाशहोताहै ॥ ४१२ ॥

सिद्धार्थकोहिंगुवचाकरञ्जोदेवदारुचमञ्जिष्ठात्रिफलाश्वेताकटभीत्वक्कटुत्रयम् ॥ समांशानिप्रियंगुश्चशिरीषोरजनीद्वयम् । वस्तमूत्रेणपिष्टोऽयमगदःपानमञ्जनम् ॥ नस्यमालेपनञ्चैवस्नानमुद्वर्त्तनंतथा । अपस्मारविषोन्मादकृत्यालक्ष्मीज्वरापहम् ॥ भूतेभ्यश्चभयंहन्तिराजद्वारेचशस्यते । सर्पिरेतेनसंसिद्धंसगोमूत्रंतदर्थकृत् ॥ सिद्धार्थकादि ॥ ४१३ ॥

सरसों हींग वच करंजुआ देवदारु मजीठ त्रिफला श्वेतविष्णुक्रान्ता त्रिकटु कटभीकी छाल माल कांगनी सिरस दोनोंहल्दी इनसब औषधियोंको समभाग लेकर बकरेके मूत्रमें पीसकर पीनेसे अंजन

लगानेसे नासलेनेसे लेपकरनेसे स्नानकरनेसे और उवटनलगाने से मिर्गी विषउन्माद कृत्या अलक्ष्मी ज्वर तथा भूतोंके भयका नाशहोताहै और राजद्वारमें श्रेष्ठताहोतीहै ऊपर कहीहुई औषधियोंकेद्वारा गोमूत्र मिलाकर पाककिये घृतके सेवनसे यहीगुणहोतेहैं इति सिद्धार्थकादि ॥ ४१३ ॥

ब्रूयादिष्टविनाशञ्चादर्शयेदद्भुतानिच । बद्धंसर्षपतैलाक्तंरक्षेद्भुत्तानमातपे ॥ कपिकच्छाथवातप्तैर्लौहतैलजलैःस्पृशेत् । कशाभिस्ताडयेत्तंवासुबद्धंविजनेगृहे ॥ सर्पेणोधृतदंतेनदंशेत्सिंहैर्गजेश्चतम् । त्रासयेत्शस्त्रहस्तैश्चशत्रुभिस्तस्करैस्तथा ॥ अथवाराजपुरुषाबहिर्नीत्वासुसंयतम् । त्रासयेयुर्वधादेनंतर्जयन्तोनृपाज्ञया ॥ देहदुःखभयेभ्योहियतःप्राणभयंभवेत् । ततस्तस्यशमंयातिसर्वतोविद्रुतंमनः ॥ इष्टद्रव्यविनाशेन मनोयस्याभिहन्यते ॥ तस्यतत्सदृशप्राप्त्याज्ञात्वाश्वासैःशमन्नयेत् ॥ ४१४ ॥

उन्मादवालेको उसके इष्टपदार्थ कानाशहोजाना सुनावे अद्भुतपदार्थ दिखावे अथवा उसके शरीरमें कडुआतेल लगाकर बांधकर धूपमें चित्त सुलावे उन्मादवालेको किवांच गरम लोहा गरमजल तथा गरमतेलका स्पर्शकरावे निर्जन गृहमें बांधके कोड़ोंसे पीटे टूटेहुए दांतवाले सर्पसे कटावे सिंह हाथी शस्त्र धारणकियेहुए शत्रु अथवा चोरोंसे भयभीतकरावे अथवा राजाकीआज्ञासे राजाके पुरुषोंके द्वारा बाहर लेजाकर बधकरनेका भयदिखावे इस प्रकार शारीरक दुःख तथा प्राणोंके भयसे सब ओर से चलायमान चित्त शान्तहोजाताहै इष्ट वस्तुके नाशसे चित्तके विकल होजानेपर उसीप्रकारके पदार्थ के देनेसे और समुझानेसे उसको शान्तकरे ॥ ४१४॥

त्र्यूषणंहिंगुलवणंवचाकटुकरोहिणी । शिरीषस्यकरञ्जस्यबीजंगौराश्चसर्षपाः ॥ गोमूत्रपिष्टैरेभिस्तुवर्तिर्नेत्राञ्जनेहिता । हन्त्युन्मादमपस्मारंतथाचातुर्थिकंज्वरम् ॥ त्र्यूषणमञ्जनम् ॥ ४१५ ॥

त्रिकुट हींग सेंधानोन वच कुटकी सिरस करंजुआ और श्वेतसरसों इन सब औषधियों को गोमूत्र में पीसकर बत्तीबनाकर नेत्रोंमें अंजन लगाने से उन्माद मिर्गी और चातुर्थिक ज्वर का नाश होताहै इति त्र्यूषणाञ्जन ॥४१५॥

कुष्ठाश्वगन्धेलवणाजमोदेद्वेजीरकेत्रीणिकटूनिपाठा । माङ्गल्यपुष्पीचसमान्यमूनिसर्वैःसमानाञ्चवचांविचूर्ण्य ॥ ब्राह्मीरसेनाखिलमेवभाव्यं वारत्रयंशुष्कमिदंहिचूर्णम् । अक्षप्रमाणंमधुनाघृतेनलिह्यान्नरःसप्तदिनानिचूर्णम् ॥ माङ्गल्यपुष्पीशंखपुष्पीतिलोके । सारस्वतमिदंचूर्णंब्रह्मणानिर्मितंपुराहितायसर्वलोकानांदुर्मेधानांविचेतसाम् ॥ एतस्याभ्यासतःपुंसांबुद्धिर्मेधाधृतिःस्मृतिः । सम्पत्तिःकविताशक्तिःप्रवर्द्धेतोत्तरोत्तरम् ॥ सारस्वतचूर्णम् ॥ ४१६ ॥

कूट असगन्ध सेंधानोन अजवाइन दोनों जीरे त्रिकुटु पाठा और शंख पुष्पी यह सब समभाग और सबके बराबर वचके चूर्णको मिलाकर ब्राह्मी के रस में तीनबार भावना देवे फिर सूख जाने पर १ तोले चूर्ण घी और सहत के साथ सात दिनतक चाटे यह सारस्वत नाम चूर्ण निर्बुद्धि और विकल चित्त वालोंके लिये ब्रह्माजीने पूर्वकाल में बनाया था इसके सेवनसे मनुष्योंकी बुद्धि मेधा धैर्य स्मृति सम्पत्ति और कविता शक्ति यह सब क्रम से बढ़ती हैं इति सारस्वत चूर्ण ॥ ४१६ ॥

विश्वाजमोदेरजनीद्वयसैन्धवोग्रायष्टयाह्वकुष्ठमगधोद्भवजीरकाणाम्। चूर्णंप्रभातसमयेलिहतःससर्पिर्वाग्देवतानिवसतिस्वयमेववक्त्रे। विश्वाद्यच्चूर्णम् ॥ ४१७ ॥

सोंठ अजवाइन दोनों हल्दी सेंधानोन वच मुलहठी कूट पीपल और जीरा इन सब औषधियोंको चूर्ण करके घीके साथ प्रातः काल सेवन करने से सरस्वती देवी आपही मुखमें वास करती हैं इति विश्वाद्य चूर्ण ॥ ४१७ ॥

क्वाथेविचूर्णितेक्षिप्त्वातत्षोडशगुणंजलम्। पादशेषंप्रकर्त्तव्यमेषक्वाथविधिःस्मृतः॥ दशमूलीतथारास्नावातारिरछिन्नतावला । मूर्वाशतावरीचेतिक्वाथैस्तुकुडवैःपृथक् ॥ कृतैःक्वाथैर्घृतप्रस्थद्वयंमृद्वग्निनापचेत् । कल्कीकृतैर्वक्ष्यमाणद्रव्यैःसम्यक्पुनःपचेत् ॥ विशालात्रिफलाकौन्तीदेवदार्वेलवालुकम्। स्थिराऽनन्तारजन्यौद्वेप्रियंगुसारिवाद्वयम्॥ नीलोत्पलैलामञ्जिष्ठादन्तीदाडिमकेसरम् । विडङ्गंह्यग्निपत्रीचकुष्ठंचन्दनपद्मके ॥ अग्निपत्रीअग्निनौतीतिलोकेअगियाइतिच। तालीसपत्रंवृहतीमालतीकुसुमंनवम्॥अष्टाविंशतिभिःकल्कैरेतैःकर्षमितैःपृथक्। चतुर्गुणंजलंदत्त्वापिष्टैस्तद्विपचेद्घृतम्॥महाचेतसनामेदंसर्वचेतोविकारनुत् । अपस्मारेमहोन्मादेमन्देऽग्नौज्वरकासयोः॥ वातरक्तेप्रतिश्यायेशोषेकार्श्येतृतीयके । मूत्रकृच्छ्रेकटीशूलेविसर्पेऽभिहतेपुचपाण्ड्वामयेतथाकण्ड्वांविषेमेहेगरेपिच ॥ देवादिहतचित्तानांगद्गदानामचेतसाम् । शस्तंस्त्रीणाञ्चवन्ध्यानांधन्यमायुर्वलप्रदम् ॥ अलक्ष्मीपापरक्षोघ्नंसर्वग्रहनिवारणम्। हन्तिभ्रमंमदंमूर्च्छांमेधास्मृतिमतिप्रदम् ॥ महाचेतसंघृतम् ॥ ४१८ ॥

औषधियोंको कूटकर सोलहगुनेजलमें पाककरके चौथाई बाकीरहनेपर उतारले यहकाढ़ेकी विधि है दशमूल रासना रेंडी निसोथ बरियारा मरोड़फली और सतावर इनकेकाढ़े सोलह२तोले घी १२८ तोले इन सबको मिलाकर धीरे २ पाककरे फिर इन्द्रायण त्रिफला रेणुका देवदारु एलवालुक शालिपर्णी अनन्तमूल दोनों हल्दी मालकांगनी दोनों सारिवा नीलकमल इलायची मजीठ दन्ती अनार नागकेशर वायबिडंग अगियाकूट लालचन्दन पद्माक तालीस भटकटैया और चमेलीकेफूल इन २८ औषधियों के एक २ तोले कल्क में चौगुना जल मिलाकर पीसके उसको मिलाकर पाककरे इस घृतके सेवन से सब प्रकार के चित्त के रोग मिर्गी उन्माद मन्दाग्नि ज्वर खांसी वातरक्त पीनस शोष कृशता तिजारी मूत्र कृच्छ्र कमर की पीड़ा विसर्प पांडु खुजली विष प्रमेह गरदोष भ्रम मद मूर्छा स्वरका गद्गदहोना देवता आदिकों से हुआ चित्तका विकार चित्तकी शून्यता अलक्ष्मी पाप राक्षस तथा संपूर्णग्रह दोषोंका नाश होताहै वंध्यास्त्रियों कोहित और धनआयु बल मेधा स्मृति तथा बुद्धि की वृद्धि होतीहै इति महा चेतस घृत ॥ ४१८ ॥

अथदेवाद्याविष्टानांचिकित्सा ॥

पूजावल्युपहारेष्टिहोममन्त्राञ्जनादिभिः।जयेदागन्तुमुन्मादंयथाविधिशुचिर्भिषक्॥४१९॥

देवादिकों से उन्माद की चिकित्सा॥

पवित्र वैद्य पूजावलि उपहार होम इष्ट मंत्रकाजप और अंजनादिकों से आगन्तुक देवता आदिकों से हुए उन्माद को जीते ॥ ४१९ ॥

कृष्णामरिचासिन्धूत्थमधुगोरोचनाकृतम् । अञ्जनंसर्वदेवादिकृतोन्मादहरंपरम् ॥ कृष्णाद्यञ्जनम् ॥ ४२० ॥

पीपल मिर्च सेंधानोन सहत और गोरोचन इन सब औषधियों को पीसकर अंजन लगानेसे देवता आदिकों से हुए सब प्रकार के उन्माद नष्ट होतेहैं इति कृष्णाद्यंजन ॥ ४२० ॥

ऋक्षजम्बुकलोमानिशल्लकीलसुनंतथा । हिंगुमूत्रञ्चवस्तस्यधूममस्यप्रयोजयेत् ॥ एतेनशाम्यतिक्षिप्रंवलवानपियोग्रहः । ऋक्षलोमकोधूपः ॥ ४२१ ॥

रीछ तथा स्यारके रोम सेईका कांटा लहसन हींग और बकरे का मूत्र इन सबको मिलाकर धूनी देने से बलवान ग्रहदोष का भी शीघ्र नाश होताहै इति ऋक्षलोमक धूप ॥ ४२१ ॥

कल्याणकञ्चयुञ्जीतमहद्वाचैतसंघृतम् । तैलंनारायणंवाथमहानारायणंतथा ॥ ऋते पिशाचादन्येषुप्रातिकूल्यंनवाचरेत् । रोगिणांभिषजंयस्तेक्रुद्धाहन्युर्महौजसः ॥ इत्युन्मादाधिकारः ॥ ४२२ ॥

कल्याण घृत महा चैतस घृत नारायण तैल अथवा महा नारायण तैल उन्माद रोगों में काममें लाना चाहिये पिशाचोंके सिवाय और किसी देवादिकों के विरुद्ध कोई आचरण नकरे क्योंकि यह महा बलवान होनेके कारण रोगी अथवा वैद्यको मार डालते हैं इति उन्मादाधिकार ॥ ४२२ ॥

अथापस्माराधिकारः । तथापस्मारस्यनिदानपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥

चिन्ताशोकादिभिर्दोषाःक्रुद्धाहृत्स्रोतसिस्थिताः । कृत्वास्मृतेरपध्वंसमपस्मारंप्रकुर्वते ॥ तस्यसंख्यामाह । वातात्पित्तात्कफात्सर्वैर्दोषैःस्याच्चतुर्विधः ॥ ४२३ ॥

मिर्गीका अधिकार मिर्गीकी निदान पूर्वक संप्राप्ति ॥

चिन्ता तथा शोकादिकोंकेद्वारा कुपितहुए दोष हृदयके स्रोतमें स्थितहोकर स्मृतिको नष्ट करके मिर्गीरोगको उत्पन्न करतेहैं मिर्गी चारप्रकारकी है जैसे वातज पित्तज कफज और सन्निपातज ४२३॥

अथापस्मारस्यसामान्यंलक्षणमाह ॥

तमःप्रवेशःसंरम्भोदोषोद्रेकहृतस्मृतिः । अपस्मारइतिज्ञेयोगदोघोरतरोहिसः ॥ संरम्भःनेत्रविकृतिहस्तपादादिविक्षेपणादिकम् ॥ ४२४ ॥

मिर्गीका सामान्य लक्षण ॥

जिस रोगमें अन्धकार में घुसाहुआ सा मालूम पड़े नेत्रोंमें विकार होय रोगी हाथ पैरोंको फेंके और दोषोंकी अधिकता से स्मृतिका नाश होय उस भयंकर रोगको मिर्गी कहतेहैं ॥ ४२४ ॥

अथपूर्वरूपमाह ॥

हृत्कम्पःशून्यतास्वेदोध्यानंमूर्च्छाप्रमूढता॥ निद्रानाशश्चतस्मिंश्चभविष्यतिभवत्यथ शून्यताहृदयस्यैवध्यानंविस्मापनंमूर्च्छा मनोमोहःप्रमूढताइन्द्रियमोहःभविष्यतिभाविनि तस्मिन्नपस्मारे ॥ ४२५ ॥ मिर्गीकापूर्व्वरूप ॥

मिर्गीहोनेसे पहले हृदयमें कंप तथा शून्यता स्वेद ध्यान मूर्च्छा इन्द्रियोंकामोह और निद्राका नाश यह लक्षण होते हैं ॥ ४२५ ॥

तत्रवातिकस्यलक्षणमाह ॥

कम्पतेप्रदशेद्दन्तान्फेनोद्वामीश्वसित्यपि । अभितोऽरुणवर्णानिपश्येद्रूपाणिचानिलात् ॥ ४२६ ॥

वातज मिर्गीका लक्षण ॥

वातज मिर्गीमें कंप दांतोंका रगड़ना फेने उगलने ऊंचीश्वासलेना और सब ओर लालरूपोंका देखना यह लक्षण होतेहैं ॥ ४२६ ॥

पैत्तिकस्यलक्षणमाह ॥

पीतफेनाङ्गवक्त्राक्षः पीतासृग्रूपदर्शनः । सतृष्णोष्णानलव्याप्तलोकदर्शीचपैत्तिके ॥ पीतस्यासृग्रूपस्यवावस्तुनोदर्शनं यस्यसपीतासृग्रूपदर्शनः ॥ ४२७ ॥

पित्तजमिर्गीके लक्षण ॥

पित्तजमिर्गीमें पीत अथवा लालरंगका देखना फेना शरीर मुख तथा नेत्रोंमें पीतता तृषा और सबवस्तु अग्निसे भरीहुई सी मालूम होना यहलक्षण होते हैं ॥ ४२७ ॥

श्लैष्मिकस्यलक्षणमाह ॥

शुक्लफेनाङ्गवक्त्राक्ष शीतोहृष्टाङ्गजोगुरुः । पश्येच्छुक्लानिरूपाणिश्लैष्मिकेमुच्यतेचिरात् ॥ शीत शीताङ्ग.हृष्टाङ्गजोहृष्टरोमागुरु.गुरुगात्रता ॥ ४२८ ॥

कफज मिर्गीकेलक्षण ॥

कफज मिर्गीमें फेना अंग मुख तथा नेत्रोंका श्वेतहोना शरीरमें भारीपन शीत तथा रोमांचका होना सब वस्तुओंका श्वेत देखना और वहुत देरमें होशआना यहलक्षण होते हैं ॥ ४२८ ॥

सान्निपातिकस्यलक्षण माह ॥

समस्तैर्लक्षणैरेतैर्विज्ञातव्यस्त्रिदोषजः । अपस्मार.सचासाध्योय क्षीणस्यानवश्च य. ॥ सचत्रिदोषजःअसाध्य.तथाक्षीणस्यअनवश्चएकदोषजोऽप्यसाध्यइत्यर्थः४२९ ॥

सन्निपातज मिर्गीके लक्षण ॥

ऊपर कहेहुये संपूर्ण लक्षणोंसे सन्निपातज मिर्गी जाननी चाहिये यह असाध्य होती है और क्षीण मनुष्य के एकदोषसेभी हुई पुरानी मिर्गी असाध्य होतीहै ॥ ४२९ ॥

अपस्मारस्यारिष्टलक्षणमाह ॥

प्रस्फुरन्तञ्चवहुश क्षीणंप्रचलितभ्रुवम् । नेत्राभ्याञ्चविकुर्वाणमपस्मारोविनाशयेत् ॥ प्रस्फुरन्तगात्रस्फुरणयुक्तंनेत्राभ्याञ्चविकुर्वाणनेत्रविकृतेकुर्वतः ॥ ४३० ॥

मिर्गीके अरिष्ट ॥

जिस मिर्गीवालेके अंग वहुत फड़कते होंय नेत्रोंमें विकार होय भृकुटी चलायमान होवें और शरीर क्षीण होय उसकी मृत्यु होती है ॥ ४३०

प्रकोपकाल माह ॥

पक्षाद्वाद्वादशाहाद्वामासाद्वाकुपितामलाः । अपस्मारंप्रकुर्वन्तिवेगंकिञ्चिदथान्तरम् ॥ पक्षात्पित्तंद्वादशाहाद्वायुर्मासातकफः । अपस्मारंकरोतीत्यर्थः ॥ वेगंकिञ्चिदथान्तरंकि

श्चित्स्वल्पवेगंआन्तरम् । उक्तकालानामन्तरालेऽपिकुर्वन्तिननुहेतुभूतेषुदोषेषुविद्यमाने षुसदैवतद्व्याधिप्रकोप कथंनस्यादतआह ॥ देवेवर्षत्यपियथाभूमौवीजानिकानिचित् । शरदिप्रतिरोहन्तितथाव्याधिसमुच्छ्रयः ॥ अयमर्थः यथोत्पत्तिकारणसामर्थ्यात्सत्याम पिवर्षास्तुकादिवीजानिस्वभावाच्छरद्येवप्ररोहन्ति । तथाहेतुभूतेषुदोषेषुविद्यमानेष्वपिस्व भावादपस्मारोद्वादशाहादिष्वेववेगंकरोतीत्यर्थः ॥ ४३१ ॥

मिर्गीके कुपित होनेके समय ॥

पित्तज मिर्गी एक पक्षमें वातज बारह दिनमें और कफज महीने भरमें होतीहै और कुछ वेगकहे हुये समयके बीचमें भी होता है अब यह सदेह होताहै कि मिर्गीके कारण रूपदोषोंके सदैव वर्त्तमान रहनेपर मिर्गीभी सदैव क्योंनहीं रहती इसका उत्तर यहहै कि जैसे उत्पत्तिके कारण रूप वर्षाऋतु के होनेपर भी बथुईआदिके बीज स्वभावसे शरदऋतुमेंही उत्पन्न होतेहैं उसी प्रकार कारण रूपदो-षोंके वर्त्तमान होनेपर भी स्वभावसे मिर्गी बारहवें आदिकदिनोंमें कुपित होती है ॥ ४३१ ॥

अथापस्मारस्यचिकित्सा ॥

तैलेनलसुनःसेव्यःपयसाचशतावरी।ब्राह्मीरसश्चमधुनासर्व्वापस्मारभेषजम्४३२॥

मिर्गीकी चिकित्सा ॥

तेलके साथ लहसन दूधके साथ सतावर और सहतके साथ ब्राह्मीकारस सेवन करनेसे सब प्रकारकी मिर्गीका नाश होता है ॥ ४३२ ॥

चूर्णैःसिद्धार्थकादीनांभक्षितैरथवाऽपितैः। गोमूत्रपिष्टैःसर्वाङ्गलेपैःशाम्यत्यपस्मृतिः॥ सिद्धार्थशिग्रुकट्वङ्गकिणिहीभिःप्रलेपनम् । चतुर्गुणेगवांमूत्रेतैलमभ्यञ्जनेहितम् ॥ क ट्वङ्गःशोनापाठाकिणिहीचिरचिरी ॥ ४३३ ॥

सरसोंआदिके चूर्णके सेवनसे अथवा गोमूत्रमें पीसकर सबशरीरमें लेप करनेसे सरसोंसहजना सोना पाठा तथा लटजीरा इनसबके लेपसे अथवा इनमें गौके चौगुने मूत्रको मिलाकर विधि पूर्वक तेलको पकाकर शरीरमें मलनेसे मिर्गीका नाश होताहै ॥ ४३३ ॥

निर्गुण्डीभववन्दाकनावनस्यप्रयोगतः । उपैतिसहसानाशमपस्मारोमहागदः ॥ म नोह्वाताक्ष्यविष्टाचशकृत्पारावतस्यच । अञ्जनाद्धन्त्यपस्मारमुन्मादञ्चविशेषतः ॥ मनो ह्वामनःशिलाशकृद्विष्टा ॥ ४३४ ॥

निर्गुण्डीके बांदेकी नासलेनेसे शीघ्रही बडेभारी मिर्गीका नाश होताहै मैनसिल रसौत गोबर और कबूतरकी वीठ इनसबको मिलाकर अंजन लगानेसे मिर्गी और उन्मादका नाशहोताहै ४३४॥

यःखादेत्क्षीरभक्ताशीमाक्षिकेणवचारजः।अपस्मारंमहाघोरंचिरोत्थंसजयेद्ध्रुवम् ॥ वचाघोरवच । कूष्माण्डकफलोत्थेनरसेनपरिपेषितम् ॥ अपस्मारविनाशाययष्ट्याह्वंस पिवेत्त्र्यहम्।त्र्यहमितिएकस्यपानाद्दिवसत्रयेणैवापस्मारोपशमोभवतीत्यभिप्रायः४३५

वचके चूर्णको सहतके साथ चाटकर दूधभात खानेसे बहुत पुरानी मिर्गीकाभी नाश होताहै मुलहठीको पीसकर पेठेके रसकेसाथ एकदिन पीनेसे तीन दिनतक मिर्गी नहीं आतीहै ॥ ४३५ ॥

ब्राह्मीरसवचाकुष्ठंशङ्खपुष्पीश्रृतंघृतम् । पुराणंस्यादपस्मारोन्मादग्रहहरंपरम् ॥ तस्यप्रक्रिया । पुराणंगोघृतंप्रस्थमितम् ॥ वचाकुष्ठशङ्खपुष्पीनांसमुदितानांकुडवमितानाम् कल्कोप्रस्थमितब्राह्मीरसपिष्टेनपचेत् । ब्राह्मीघृतम् ॥ ४३६ ॥

गौका पुराना घी ६४ तोला वच कूट शंखपुष्पी यह तीनों सोलह २ तोले इन सबको ६४ तोले ब्राह्मी के रस में पीस कर उस के साथ घी को पाककर सेवन करने से मिर्गी उन्माद तथा ग्रह के दोषोंका नाश होता है इति ब्राह्मी घृत ॥ ४३६ ॥

कूष्माण्डकरसेसर्पिरष्टादशगुणेपचेत् । यष्ट्याह्वकल्कंतत्पानमपस्मारविनाशनम् ॥ कूष्माण्डकघृतं ॥ ४३७ ॥

अठारह गुने कुंभड़े के रस में घीको मुलहठी का कल्क डालकर पाक करके सेवन करने से मिर्गी का नाश होता है इति कूष्मांड घृत ॥ ४३७ ॥

हृत्कम्पोऽक्षिरुजायस्यस्वेदोहस्तादिशीतता । दशमूलीजलंतस्यकल्याणाख्यंप्रयोजयेत् ॥ पञ्चकोलंसमरिचंत्रिफलाविडसैन्धवम् । कृष्णाविडङ्गपूतीकजवानीधान्यजीरकम् ॥ पीतमुष्णाम्बुनाचूर्णवातश्लेष्मामयापहः अपस्मारेतथोन्मादेऽप्यर्शसांग्रहणीगदे एतत्कल्याणकंचूर्णनष्टस्याग्नेश्चदीपनम् ॥ ४३८ ॥

जो मिर्गी में हृदय का कांपना नेत्रों में पीड़ा स्वेद और हाथ पैरों में शीतलता होय तो दशमूल का क्राथ और कल्याण चूर्ण देवे पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ मिर्च हड़ बहेड़ा आमला बिटनोन सैंधानोन पीपल बायविडंग करंजुआ अजवाइन धनियां और जीरा इन सबके चूर्ण को गरम जल के साथ पीने से वात कफ के रोग मिर्गी उन्माद बवासीर ग्रहणी तथा मन्दाग्नि इन सबका नाशहोता है इति कल्याण चूर्ण ॥ ४३८ ॥

द्वौकीटसैद्धौविधिवदानीयरविवासरे । कण्ठेभुजेवासन्धार्य्यजयेदुग्रामपस्मृतिम् ॥ अयन्तुकीटोनदीतीरेसिकतामध्येतिष्ठति शिग्रुकुष्ठंजलाजाजीलसुनव्योषहिंगुभिः । वस्तमूत्रेश्रृतंतैलंनावनंस्यादपस्मृतौ ॥ जलंवालकंअजाजीरक.वस्त छाग.नावनंनस्यम् । उन्मादेषुयदुद्दिष्टंपथ्यंनस्याञ्जनौषधम् ॥ अपस्मारेऽपितत्सर्वंप्रयोक्तव्यंभिषग्वरैः । मृतसूताभ्रलोहञ्चशिलागन्धञ्चतालकम् ॥ रसाञ्जनञ्चतुल्यांशन्नरमूत्रेणमर्दयेत् । तद्वीत्लहिंगुणंगन्धंलोहपात्रेक्षणंपचेत् ॥ पञ्चगुञ्जोन्मितंभक्ष्यमपस्मारहरंपरम् । व्योषंसौवर्चलंहिंगुनरमूत्रेणसर्पिषा ॥ पिबेत्कर्षमितपश्चाद्रसोऽयंभूतभैरवः । भूतभैरवनामरसः इत्यपस्माराधिकारः ॥ ४३९ ॥

रवि वारके दिन विधि पूर्वक नदी के किनारे वालूके भीतर रहने वाले दो कीडों को लाकर कंठ और भुजा में बांधने से भयंकर मिर्गी का भी नाश होता है सहँजना कूट सुगन्धवाला जीरा लहसन त्रिकटु और हींग इन औषधियों के द्वारा और बकरे का मूत्र डालकर तेल को पकावे उसकी नास लेने से मिर्गी का नाश होता है उन्माद में जो पथ्य नस्य अंजन और औषध कही गई हैं वह सब मिर्गी में भी व्यवहार करनी चाहिये पारेकी भस्म अभ्रक की भस्म लोहे की भस्म मैनाशिल ग-

न्धक हरिताल और रसौत इन सब को बराबर लेकर मनुष्य के मूत्रमें पीसे फिर इसका गोला बनाकर गोलेकी दूनी गन्धक के,साथ लोहे के पात्र में क्षण भर पाककरे इसको पांच रत्ती खाने से मिर्गी का नाश होता है इसको खाकर त्रिकटु कालानोन और हींग इनसबको मनुष्य के मूत्र और घीके साथ १ तोले पिये इति भूतभैरव रस इति मिर्गी का अधिकार ॥ ४३९ ॥

अथ वातव्याध्यधिकारः । तत्रवातव्याधीनांसामान्यतो विप्रकृष्टानिनिदानान्याह ॥

कषायकटुतिक्तप्रमितरूक्षलघ्वन्नतः । पुरःपवनजागराप्रतरणाभिघातश्रमैः ॥ हिमादनशनात्तथानिधुवनाच्चधातुक्षयान्मलादिरवधारणान्मदनशोकचिन्ताभयैः ॥ अतिक्षतजमोक्षणाद्गदकृतातिमांसक्षयादतीवचलनान्नृणामातिविरेचनादामतः ॥ पयोदसमयेदिनक्षणदयोस्तृतीयांशगोजरामतिगतेशिशिरसंज्ञकालेऽपिच ॥ देहेस्रोतांसिरिक्तानिपूरयित्वाऽनिलोबली । करोतिविविधान्रोगान्सर्व्वाङ्गैकांगसंश्रयान् ॥ प्रमितञ्चत्र वैपरीत्येनोपसर्गस्तेनअपरिमितइत्यर्थः । प्रकर्षेणमितमत्यल्पंवालघ्वन्नम् ॥ अतिपुराणं शाल्यादि । कतिचिदन्नानिनवान्यपिवातलानि॥यतआहगुणरत्नमालायाम् । नीवारस्त्रिपुट.सतीनचणकश्यामाकमुद्गाढ़को । निष्पावाश्चमकुष्ठकंऽचवरटामङ्गल्यकःकोद्रवः।एते वातकराइतिशेषःनीवारःप्रसाधिकातीनीतिलोकेत्रिपुट.खेसारीसतीनःकलायः॥निष्पावो राजमाषःबोड़ाइतिलोके । मकुष्ठकःमोठइतिलोकेवरटावराटिकावरेइतिलोकेमङ्गल्यःमसूरी ॥ पुरःपवनःप्राग्वातःआमतः । आमेनमार्गावरणात् । यतुउक्तम् । वायोर्धातुक्षयात्कोपोमार्गस्यावरणेनचेतिपयोदसमयेवर्षासुजरामतिगते शितेभुक्तेऽतीवजीर्णेतांगतेदेहेस्रोतांसिइत्यादिनासंप्राप्तिरुक्ताकषायादिभिर्हेतुभिः वर्षादौसमयेहेतुभूतेबलीअनिलःप्रवृद्धोवायुःकरोतिविविधान्रोगान् ॥ ४४० ॥

वात व्याधि का अधिकार । वात व्याधियों के सामान्यता से दूर वाले कारण ॥

कषाय कटु तथा तिक्तवस्तु अपरिमित रूखा तथा हलका अन्न पूर्वकी वायु जागरण तैरना चोट श्रम हिम लंघन मैथुन धातुक्षय मलमूत्रादि वेगोंका रोकना कामवेग शोक चिन्ता भय घाव से बहुत रुधिर का निकलना रोग के द्वारामांस की अत्यन्त क्षय बहुत विरेचन तथा वमन आम दोष के द्वारा स्रोतों का रुकना वर्षा काल दिन तथा रात्रि का तीसरा भाग भोजनका अत्यन्त परिपाक होजाना और शिशिर ऋतु यह सब वायु के कोप होनेके कारण हैं यहां हलका अन्न कहनेसे बहुत पुराने शालि आदिक और कोई २ नवीन अन्नभी वातकारी जानने चाहिये क्योंकि गुणरत्नमाला में कहा है कि तिन्नी खिसारी मटर राजमाष मोठ चने सामा मूंग अरहड़ बेरें मसूर और कोदों यह सब वातकारी हैं ऊपर कहे हुये कारणों से कुपित हुआ बलवान वायु शरीर के खाली स्रोत को पूर्ण करके सब अंगोंमें अथवा एक २ अंगमें होने वाले अनेक प्रकार केरोगों को उत्पन्न करता है ४४० ॥

तेरोगाः कथ्यन्ते ॥

शिरोग्रहोऽल्पकृशताजृम्भात्यर्थंहनुग्रहः । जिह्वास्तम्भोगद्गदत्वंमिन्मिनत्वञ्चमूकता॥वाचालताप्रलापश्चरसानामनभिज्ञता । वाधिर्य्यंकर्णनादश्चस्पर्शाज्ञत्वंतथादितम्॥

मन्यास्तम्भोऽन्नगणितोवाहुशोषोऽपवाहुकः । वर्णिताचैवविश्वाचीऊर्ध्ववातउदीरितः ॥ आध्मानञ्चप्रत्याध्मानंवातष्टीलाप्रतिष्टीला । तूनीचप्रतितूनीचवह्निवैषम्यमेवच ॥ आटोपःपार्श्वशूलञ्चत्रिकशूलंतथैवच । मुहुश्चमूत्रणंमूत्रनिग्रहोमलगाढ़ता ॥ पुरीषस्याप्रवृत्तिश्चगृध्रसीचततःपरा । कलापखञ्जतावापिखञ्जतापङ्गुतातथा ॥ क्रोष्टुशीर्षकखल्लौचवातकण्टकएवच । पादहर्षःपाददाहआक्षेपोदण्डकाभिधः ॥ वातपित्तकृताक्षेपस्तथादण्डापतानकः । अभिघातकृताक्षेपआयासोद्विविधःस्मृतः ॥ आन्तरश्चतथावाह्योधनुर्वातश्चकुब्जकः । अपतन्त्रोपतानश्चपक्षाघातःखिलांगकः ॥ कम्पःस्तम्भोव्यथातोदोभेदश्चस्फुरणंतथा । रौक्ष्यंकार्श्यञ्चकार्ष्ण्यञ्चशैत्यंलोम्नाञ्चहर्षणम् ॥ अंगमर्दोऽङ्गविभ्रंशःशिरासङ्कोचएवच । अंगशोषश्चभीरुत्वंमोहश्चचलचित्तता॥निद्रानाशःस्वेदनाशोबलहानिस्तथैवच । शुक्रक्षयोरजोनाशोगर्भनाशःपरिभ्रमः ॥ एतएवाशीतिसंख्यारोगायोगेनरूढितः । वातव्याधीतिनामानोमुनिभिःपरिकीर्त्तिताः ॥ एतएव शिरोग्रहादयएवयोगेनवातेनवाताद्व्याधिर्वातव्याधिरितिनिरुक्त्या तदावातज्वरादिष्व,पिप्रसंगःस्यादतआह । रूढ़ितःप्रसिद्धितःशिरोग्रहादयोऽशीतिरेववातव्याधिसंख्याप्रसिद्धानतुवातज्वरादयः ॥ ४४१ ॥

इन अनेक प्रकारके रोगोंका वर्णन ॥

शिरोग्रह अत्यन्तकृशता अत्यन्त जंभाई जावड़ेका जकड़ना जिह्वास्तंभ गद्‌गदता मिन्मिनाहट मूकता वाचालता प्रलाप रसों का न जानना वहरापन कानोंमें शब्दहोना स्पर्श का न जानना अर्दित गले के पीछेकी नसका जकड़ना वाहुशोष अपवाहुक विश्वाची ऊर्ध्ववात आध्मान प्रत्याध्मान वात ष्ठीला प्रतिष्ठीला तूनी प्रतितूनी अग्निकी विषमता आटोप पसली का शूल रीढ़के नीचे की हड्डियोंकाशूल वारंवारमूतना मूत्रका रुकना मलका गाढ़ाहोजाना मलका न निकलना गृध्रसी कलापखंजता खंजता पंगुता क्रोष्टुशीर्षक खल्ली वातकंटक पादहर्ष पाददाह आक्षेप दंडक कफ पित्त युक्त आक्षेप दंडापतानक अभिघातज आक्षेप वाह्य आयास आन्तर आयास धनुर्वात कुब्जक अपतन्त्रिक अपतान पक्षाघात खिलांग कंप स्तंभ व्यथा तोद भेद स्फुरण रौक्ष्य कृशता कृष्णता शीत रोमहर्ष भंग मर्द अंगविभ्रंश शिरासंकोच अंगशोष भीरुत्व मोह चलचित्तता निद्रानाश स्वेदनाश वलहानि वीर्य्यक्षय रजोनाश गर्भनाश और परिभ्रमयही अस्सी रोगयोग और रूढ़सेवात व्याधि कहलाते हैं यहां केवलयोग कहने से वातज्वरादि कों काभी वात व्याधियों में ग्रहण न होय इस लिये रूढ़िकहाहै ॥ ४४१ ॥ अथ वातव्याधीनांसामान्यांचिकित्सामाह ॥

मधुरलवणसाम्लस्निग्धनस्योष्णनिद्रागुरुरविकरवस्तिस्वेदसन्तर्पणानि । दहनजलदशोपाभ्यंगसंमर्दनानिप्रकुपितपवमानंशान्तमेतानिकुर्य्युः ॥ ४४२ ॥

वातव्याधियों की सामान्य चिकित्सा ॥

मधुर लवण अम्ल तथा स्निग्धवस्तु नासलेना उष्णक्रिया निद्रा भारीवस्तु भूखवस्तिक्रिया स्वेद संतर्पण अग्नि शरदऋतु अभ्यंग और मर्दन यह सब कुपितहुई वायुको शान्त करते हैं ॥ ४४२ ॥

अथविशिष्टानांवातव्याधीनांलक्षणानिचिकित्साञ्चाह। तत्रादौशिरोग्रहस्यलक्षणमाह॥

रक्तमाश्रित्यपवनःकुर्य्यान्मूर्द्धधराःशिराः। रूक्षाःसवेदनाःकृष्णाःसोऽसाध्यःस्याच्छिरोग्रहः॥ मूर्द्धधराःग्रीवागताःसपवनःशिरोग्रहःस्यादित्यन्वयःसचासाध्यः॥ ४४३॥

वातव्याधियोंके विशेष लक्षण और चिकित्सा शिरोग्रह का लक्षण॥

कुपित वायु रुधिर का आश्रय करके शिरके धारण करने वाली ग्रीवाकी नसों को रूखी वेदना युक्त और कृष्ण वर्ण करतीहै इसको शिरोग्रह कहते हैं यह रोग असाध्य है॥ ४४३॥

अथ तस्यचिकित्सा॥

शिरोग्रहेतुकर्त्तव्याशिरागतमरुत्क्रिया। दशमूलीकषायेणमातुलुंगरसेनच॥ शृतेनतैलेनाभ्यंगःशिरोवस्तिश्चयुज्यते॥ ४४४॥

शिरोग्रह की चिकित्सा॥

शिरोग्रह में नसोंमें गई हुई वायुकी चिकित्सा करनीचाहियेदशमूल के काढ़े और नींबूके रससे तेल को पका कर लगाने से और शिरोवस्ति देनेसे शिरोग्रह शान्त होता है॥ ४४४॥

अथ जृम्भायालक्षणमाह॥

पीत्वैकंश्वासमनिलःपुनस्त्यजतिवेगवान्। आलस्यनिद्रायुक्तश्चसजृम्भइतिकथ्यते॥ जृम्भशब्दस्त्रिलिंगःतथाचजृम्भस्तुत्रिपुजृम्भणमित्यमरः॥ ४४५॥

जंभाई का लक्षण॥

एकबार श्वास लेकर फिरवेगसे श्वास छोड़ना आलस्य अधिक निद्रा यह जृंभाके लक्षणहैं ४४५॥

अथ तस्यचिकित्सा॥

शुण्ठीपिप्पल्युपणदीप्यकश्चासिन्धूद्भवंचेतिसर्व्वंपृथग्वा। तद्रूपंवासूक्ष्मचूर्णीकृतंवाजृम्भारम्भस्तम्भकृत्स्यात्तदैव। जृम्भावेगेसमुत्पन्नेशोभनेशयनेनरम्। स्वापयेत्तेननियमाज्जृम्भावेगःप्रशाम्यति॥ जृम्भावेगःक्षयंयातिकटुतैलेनमर्दनात्। भोजनात्स्वादुभोज्यानांतथाताम्बूलभक्षणात्॥ ४४६॥

जृंभाकी चिकित्सा॥

सोंठ पीपल मिर्च अजवाइन और सेंधानोन इन सबको एक साथ अथवा अलग २ सूक्ष्म चूर्ण करके सेवन करने से सुन्दर शय्यापर शयन कराने से कड़ुआ तेल मलने से मधुर पदार्थोंके भोजन से और ताम्बूल खानेसे जंभाई रुकजातीहै॥ ४४६॥

अथ हनुग्रहस्यसनिदानंलक्षणमाह॥

जिह्वानिर्लेखनाच्छुष्कभक्षणादभिघाततः। कुपितोहनुमूलस्थःस्रंसयित्वाऽनिलोहनुम्॥ करोतिविवृतास्यत्वमथवासंवृतास्यताम्। हनुग्रहःसतेनस्यात्कृच्छ्राच्चर्वणभाषणम्॥ स्रंसयित्वाश्रय कृत्वाविवृतास्यत्वंव्यात्तमुखत्वम्। निर्लेखनंकर्पणमशुष्कंचणकादिसंवृतास्यत्वंदन्तलग्नताम्॥ ४४७॥

हनुग्रह का निदानपूर्वक लक्षण ॥

जिह्वा के रगड़ने से सूखेचने आदिके खाने से और चोटसे जावड़ेके मूल में स्थित वायु कुपित होकर जावड़ों को नीचे करके मुखको खुलाहुआ अथवा बन्द करदेताहै इसको हनुग्रह कहतेहैं हनुग्रह में भोजन और भाषण दोनों में क्लेश होताहै ॥ ४४७ ॥

अथ तस्यचिकित्सा ॥

संवृतंचिबुकंस्निग्धंस्विन्नमुन्नमयेद्भिषक्। विवृतंनमयित्वातुकुर्य्यात्प्राप्तामिहक्रियाम्॥ पिप्पलीमार्द्रकञ्चापिसंचर्व्यचमुहुर्मुहुः । निष्ठीवेत्ततस्तोयेनशोधयेद्वदनांतरम् ॥ निष्कुल्यलशुनंसम्यक्संक्षुद्यतिलतैलवत् । सैन्धवेनान्वितंखादेद्धनुस्तम्भार्दितोनरः ॥ रसोनगुटिकामाषविदलंपरिपेष्यच। योजयेत्पिष्टिकान्ताञ्चसैन्धवार्द्रकहिङ्गुभिः ॥ ततस्तु वटकान्कृत्वातिलतैलेपचेच्छनैः । भक्षयेत्तान्यथावह्निर्हनुस्तम्भात्सुखीभवेत् ॥ अभ्यज्यपक्वतैलेनस्वेदयेन्मृदुनाग्निना । वस्तिंविधारयेन्मूर्ध्नितैलेनपरिपूरितम् ॥ ४४८ ॥

हनुग्रह की चिकित्सा ॥

वैद्य बन्दहुए मुख वाले हनुग्रहमें स्निग्ध स्वेद देकर ऊपर वालेको उठावे और नीचे वालेको नीचे करे और खुलेहुए मुखवाले हनुग्रह में स्निग्ध स्वेद देकर जावड़ोंको झुकावे फिर पीपल और अदरकको चबाकर गरम जल के कुल्ले करके मुखको शुद्धकरे छिलेहुए लहसनको तिलके समान पेलकर अर्क निकाल सेंधानोन डालकर खाय तो हनुग्रह दूर होताहै लहसन का जवा तथा उर्द की दाल को पीसकर अदरक हींग तथा सेंधानोन मिलावे फिर उसके बड़े बनाकर तिलके तेलमें धीरे २ पाककरे इनकोअपनी अग्निके अनुसार खानेसे और पकेहुये तेलको लगाकर मन्दी आंचसे स्वेद देनेसे और तेलसे भरकर शिरमें वस्ति धारण करनेसेहनुस्तंभ दूरहोताहै ॥ ४४८ ॥

समूलपत्रशाखायाःप्रसारण्याःशतंफलम् । सम्यक्संक्षुद्यसलिलेद्रोणमात्रेपचेद्भिषक् ॥ सलिलस्यचतुर्थांशंकषायमवशेषयेत् । ततोपलशतेतैलेतंकषायंपुनःपचेत् ॥ पचेत्पलशतंमस्तुकाञ्जिकंमस्तुन.समम् । ततःशुद्धंपचेद्दुग्धंगव्यंतैलाच्चतुर्गुणम् ॥ चित्रकंपिप्पलीमूलंमधुकंसैन्धवंवचा । शतपुष्पादेवदारुरास्नाचगजपिप्पली ॥ प्रसारणीभवमूलंमांसीरक्तञ्चचन्दनम् । तथा वातारिमूलंचबलामूलंचनागरम् तैलस्यचाष्टमांशेनसर्वैकल्कानिसाधयेत् ॥ नाम्नाप्रसारणीतैलंविख्याततंत्प्रयुज्यते । पानेनस्येशिरोवस्तौमर्दनेस्वेदनेतथा ॥ प्रयुक्तंवातजान्रोगान्सर्वानपिविनाशयेत् । विशेषतोहनुस्तम्भंजिह्वास्तम्भंतथार्दितम् ॥ गद्गदत्वञ्चविश्वाचींमन्यास्तम्भापबाहुकौ । त्रिकशूलंचगृध्रसीञ्चखञ्जतांपंगुतांतथा ॥ कलापखञ्जतांखञ्जंस्तम्भंसङ्कोचमेवच । आन्तरंबाह्यमायामंतथादण्डापतानकम् ॥ धनुर्वातञ्चकुब्जत्वंव्यपोहतिनसंशयः । क्षीणानांस्थविराणाञ्चवातसङ्कोचितात्मनाम् । प्रसारयेद्यतोऽङ्गानितदुक्तेषाप्रसारणी । (प्रसारणीतैलम्) ४४९॥

जड़ पत्ती तथा शाखा सहित सौ पल गन्धप्रसारणी को कूटकर १०२४ तोले जलमें पकावे फिर चौथाई बाकी रहजानेपर उसकाढ़ेमें ४०० तोले तेल डालकर फिर पाककरे इसके उपरान्त दही

का तोड़ तथा कांजी चार २ सौ तोले डालकर पाककरे फिर गौका बेपानी दूध तेलका चौगुना डालकर पाककरे चीता पीपलामूल मुलहठी सेंधानोन वच सौंफ देवदारु रासना गजपीपल गन्ध-प्रसारणीकी जड़ जटामांसी लालचन्दन अरंडकीजड़ वरियारा की जड़ और सोंठ इनसबका कल्क ५० तोले लेकर तेलमें डालकर पाककरे इस तेलके पीनेसे नासलेनेसे शिरोवस्तिसे मलनेसे और स्वेद देनेसे सब प्रकारके वातरोग हनुस्तंभ जिह्वास्तंभ अर्दित गद्गदता विश्वाची मन्यास्तंभ अप-वाहुक रीढ़के नीचेकी हड्डियोंका शूल गृध्रसी खंजता पंगुता कलाप खंजता खल्ली स्तंभसंकोच आन्तर तथा बाह्य आयास दंडापतानक धनुर्वात तथा कुब्जता इनसबका नाशहोताहै और इसके द्वारा क्षीण वृद्ध तथा वायुसे सुकड़ेहुये शरीरवाले मनुष्योंके अंग फैलतेहैं इसलिये इसको प्रसारणी कहतेहैं इति प्रसारणी तैल ॥ ४४९ ॥

जिह्वास्तम्भस्य लक्षणमाह ॥

वाग्वाहिनीशिरासंस्थोजिह्वांस्तम्भयतेऽनिलः । जिह्वास्तम्भःसतेनान्नपानवाक्येष्वनीशता ॥ अनीशताऽसामर्थ्यम् ॥ ४५० ॥

जिह्वास्तंभ का लक्षण ॥

वाणी की ले चलने वाली नस में स्थित वायु कुपित होकर जिह्वा को स्तंभित करती है इस जिह्वा स्तंभ से रोगी अन्न पान ग्रहण करने में और बोलने में असमर्थ होता है ॥ ४५० ॥

तस्यचिकित्सा ॥

जिह्वास्तम्भेयथावस्थंवातव्याधिचिकित्सितम् । सामान्योक्ताक्रियाचात्रार्दितस्यापिहितामता ॥ ४५१ ॥

जिह्वास्तंभ की चिकित्सा ॥

जिह्वास्तंभ में अवस्था के अनुसार वायु रोगों कीसी सामान्य चिकित्सा करनी चाहिये और अर्दित रोग की भी क्रिया इस में हितकारी है ॥ ४५१ ॥

अथ मूकगद्गदमिन्मिनानां लक्षणमाह ॥

आवृत्यवायु'सकफोधमनीशब्दवाहिनी । नरान्करोत्यवचनान्मूकामिन्मिनगद्गदान् ॥ अवचनात्अत्रईषदर्थेनञ्तेनईषद्वचनात्सएववायु.प्रबलश्चेत्तदामूकान्अवचनातमिन्मिनान्सानुनासिकवचनात्गद्गदान्लुप्तपदव्यञ्जनाभिधायिनःकरोतीत्यन्वयःएपांसमानाधिकरणत्वेऽपिदुष्टेऽनुत्कर्षादिनाऽदृष्टत्रशाद्वाभेदोवोद्धव्यः ॥ ४५२ ॥

मूक गद्गद और मिन्मिनों के लक्षण ॥

कफ सहित वायु शब्दके ले चलने वालीनसोंको ढककर मूक (वचनरहित) मिन्मिन (नाकसेवचन) और गद्गद (अव्यक्त वचन) इन ३ वाक्य नाशक रोगों को उत्पन्न करती है ॥ ४५२ ॥

अथतेषांचिकित्सा ॥

प्रस्थंघृतस्यपलिकैःशिग्रुवचालवणधातकीलोध्रैः । आजेपयसिसपाठैःसिद्धंसारस्वतंनाम्ना ॥ विधिवदुपयुज्यमानंजडगद्गदमूकतांक्षणाज्जित्वा । स्मृतिमतिमेधाप्रतिभा.कुर्यात्सुस्पष्टवाग्भवति ॥ सारस्वतंघृतम् ॥ ४५३ ॥

इनकी चिकित्सा ॥

घी ६४ तोले सहजन वच सेंधानोन धवई लोध तथा पाढ़ा यह सब चार २ तोले घृत सहित इनसब को बकरी के दूध में डालकर बिधि पूर्वक पाक करे इसघीके विधि पूर्वक सेवन करने से जड़ता गद्गदता तथा मूकता इनसबका शीघ्रही नाश होता है और स्मृति बुद्धि मेधा प्रतिभा तथा वाणी की स्पष्टता होती है इति सारस्वतघृत ॥ ४५३ ॥

सहरिद्रांवचांकुष्ठंपिप्पलीविश्वभेषजम्।अजाजीचाजमोदाचयष्टीमधुकसैन्धवम्॥एतानिसमभागानिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत्।तच्चूर्णंसर्पिषालेह्यंप्रत्यहंभक्षयेन्नरः॥एकविंशतिरात्रेणभवेच्छ्रुतिधरोनरः।मेघदुन्दुभिनिर्घोषोमत्तकोकिलनिस्वनः।कल्याणकावलेहः४५४॥

हल्दी वच कूट पीपल सोंठ कालाजीरा अजवाइन मुलहठी और सेंधानोन इनसबको बराबर लेके सूक्ष्म पीस प्रतिदिन घीके साथ चाटने से मनुष्य श्रुतिधर होता है और मेघों के समान शब्द तथा कोकिल के समान मधुर स्वर से युक्त होता है इति कल्याण का वलेह ॥ ४५४ ॥

अथप्रलापस्यलक्षणमाह ॥

स्वहेतुकुपिताद्वातादसंबद्धंनिरर्थकम् ॥ वचनंयन्नरोब्रूतेसप्रलापःप्रकीर्तितः॥ ४५५ ॥

प्रलाप का लक्षण ॥

अपने कारणों से कुपित वायु के द्वारा मनुष्य जो असंबद्ध और निरर्थक वचन बोलताहै उसको प्रलाप कहते हैं ॥ ४५५ ॥ अथतस्यचिकित्सा ॥

सतगरवरतिक्तारेवताम्भोदतिक्तानलदतुरगगन्धाभारतीहारहूराः । मलयजदशमूलीशङ्खपुष्पीशृपक्वा ॥ प्रलपनमपहन्युःपानतोनातिदूराद् वरतिक्तोत्रपर्पटःनलदमुशीरं भारतीब्राह्मी । हारहूराद्राक्षा ॥ ४५६ ॥

प्रलाप की चिकित्सा ॥

तगर पित्तपापड़ा अमलतास मोथा कुटकी खस असगन्ध ब्राह्मी दाख चन्दन दशमूल और शंखपुष्पी इन सबके काढ़े को पीनेसे प्रलाप का नाश होता है ॥ ४५६ ॥

अथरसाज्ञानस्यलक्षणमाह ॥

भुञ्जानस्यनरस्यान्नंमधुरप्रभृतीन्रसान् । रसज्ञोयन्नजानातिरसाज्ञानंतदुच्यते ४५७॥

रसके अज्ञान का लक्षण ॥

भोजनके समय जो मधुरादिक रसों का जिह्वा इन्द्रीसे ज्ञान न होय उसको रसाज्ञान कहतेहैं॥ ४५७॥

अथरसाज्ञानस्यचिकित्सा ॥

घर्षेज्जिह्वांजडांसिन्धुत्र्यूषणैःसाम्लवेतसैः । अम्लवेतसकाभावेचुक्रंदातव्यमीरितम् ॥ किराततिक्तकाकट्वीकुटजस्यफलंवचा । ब्राह्मीफलञ्चपालाशंस्त्वर्जिकाकृष्णजीरकम् ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलंचित्रंनागरकोषणम् । एषांकल्केर्मुहुर्घर्षेज्जिह्विकामार्द्रिकारसैः ॥ तेनसम्यग्विजानातिरसनासकलान्रसान् । कल्कःकिराततिक्तादिर्जिह्वायाःशून्यतांहरेत् ॥ ४५८ ॥

रसाज्ञान की चिकित्सा ॥

सेंधानोन त्रिकटु तथा अमलवेद (इसके अभावमें चूक)इनके द्वारा जिह्वाको रगड़ने से चिरायता कुटकी इन्द्र जो वच ब्राह्मी ढाकके बीज सज्जी कालाजीरा पीपल पीपलामूल चीता सोंठ तथा मिर्च इन सब को पीसकर उससे जिह्वाके रगड़नेसे अथवा अदरकके रससे जिह्वारगड़ने से अच्छे प्रकारसे संपूर्ण रसों का ज्ञानहोताहै और इस किराततिक्तादि कल्कके द्वारा जिह्वाकी शून्यता नष्ट होती है ॥ ४५८ ॥

बाधिर्य्यकर्णनादयोर्लक्षणंचिकित्साचतदधिकारेवक्ष्यामः ॥ ४५९ ॥

बधिरता और कर्ण नादके लक्षण तथा चिकित्सा कर्ण रोगोंके अधिकारमें कहेंगे ॥ ४५९ ॥

अथत्वक्शून्यतायालक्षणमाह ॥

स्पृश्यमानात्वचायातुशीतोष्णंमृदुकर्कशम् । नजानातिबुधैस्त्वक्साशून्येतिपरिकीर्तिता ॥ ४६० ॥

त्वचाकी शून्यता का लक्षण ॥

स्पर्श करने से जो त्वचा में शीतलता उष्णता कोमलता तथा कठोरता न मालूम पड़े उसको त्वचाकी शून्यता कहते हैं ॥ ४६० ॥

अथतस्यचिकित्सा ॥

सुप्तवातेत्वसृङ्मोक्षंकारयेद्बहुशोभिषक् । दद्याच्चलवणाङ्गारधूमैस्तैलसमन्वितैः ४६१ ॥

त्वचाकी शून्यता की चिकित्सा ॥

त्वचाकी शून्यता में बहुतसा रुधिर निकलवावे और तेल युक्त सेंधेनोन को अंगारो पर डालकर धूम देना चाहिये ॥ ४६१ ॥

अथार्दितस्यसम्प्राप्तिपूर्व्वकंलक्षणमाह ॥

उच्चैर्व्याहरतोऽत्यर्थंखादतःकठिनानिच । हसतोजृम्भतोभाराद्विषमाच्छयनासनात् ॥ शिरोनासौष्ठचिबुकललाटेक्षणसन्धिगः । अर्दयत्यनिलोवक्त्रमर्दितंजनयेत्ततः ॥ वक्त्रोभवतिवक्त्रार्द्धंग्रीवाचाप्यपवर्त्तते । शिरश्चलतिवाक्सङ्गोनेत्रादीनाञ्चवैकृतम् ॥ ग्रीवाचिबुकदन्तानांतस्मिन्पार्श्वेचवेदना । तमर्दितमितिप्राहुर्व्याधिव्याधिविशारदाः ॥ व्याहरतः वदतः कठिनानिपूगफलादीनिविषमात्शयनासनात्ग्रीवादिवैपरीत्येनशयनादासनाच्च अर्दयतिपीड़यतिततस्तदनन्तरम् अर्दितंजनयेत् अर्दितेजातेकिंस्यात्तदाह । वक्त्रोभवतिइत्यादि अपवर्त्ततेवक्रोभवतिचलतिकम्पतेवाक्सङ्गः वाङ्निरोधःनेत्रादीनामित्यादिशब्देनभ्रूगण्डनासिकादीनांग्रहणम्वैकृत्यंवेदनास्फुरणवक्रत्वादिग्रीवेत्यादीनांग्रहणम् । यस्मिन्पार्श्वेऽर्दितंतस्मिन्पार्श्वेग्रीवादीनांवेदना ॥ ४६२ ॥

अर्दितरोग का संप्राप्तिपूर्व्वक लक्षण ॥

बहुत उच्चस्वरसे बोलना कठोर वस्तु खाना हँसना जंभाईलेना भारउठानाग्रीवा आदिको विपरीत करके शयन करना अथवा बैठना इन कारणों से मस्तक नासिका ओष्ठ ठोड़ी ललाट तथा नेत्रकी संधियों में प्राप्त हुई वायु कुपित होकर मुखको पीड़ित करती हुई अर्दित रोगको उत्पन्न करतीहै इस रोग में माथा मुख तथा ग्रीवा टेढ़ी होजातीहै शिर कांपताहै वाक्य रुकजाताहै जिस ओर मुख टेढ़ा

होताहै उसी ओरका नेत्र भौं कपोल तथा नासिका आदिमें पीड़ा फड़कना तथा वक्रता आदि विकार होतेहैं और उसी ओर ग्रीवा ठोड़ी तथा दांतोंमें पीड़ा होतीहै इस रोगको पंडितलोग अर्दितकहतेहैं ४६२॥

वातपित्तात्कफाच्चस्यात्त्रिविधंतत्समासतः । लालास्रावोऽन्यथाकम्पःस्फुरणंहनुवाग्ग्रहः ॥ ओष्ठयोःश्वयथुःशूलञ्चार्दितेवातजेभवेत् । पीतमास्यंज्वरस्तृष्णापित्तजेमोहकंपने ॥ गण्डेशिरसिमन्यायांस्रोतस्तम्भःकफात्मके ॥ ४६३ ॥

अर्दितरोग तीन प्रकार का होता है वातज पित्तज और कफज वातज अर्दितमें लार बहना पीड़ा कंप अंगफड़कना हनुस्तंभ वचनका रुकना ओठोंमें सूजन और शूलहोताहै पित्तज अर्दित में मुखका पीलापन ज्वर तृषा मोहतथा संताप होताहै और कफज अर्दित में कपोल मस्तक तथा गले के पीछेकी नसमें सूजन तथा स्तब्धताहोती है ॥ ॥ ४६३ ॥

तस्यासाध्यस्यलक्षणमाह ॥

क्षीणस्यानिमिषाक्षस्यप्रसक्ताव्यक्तभाषिणः । नसिध्यत्यर्दितंगाढंत्रिवर्षवेपनस्यच ॥ अनिमिषाक्षस्यानिमेषासमर्थचक्षुषः प्रसक्तंप्रकर्षेणलग्नम् अव्यक्तञ्चभाषितुंशीलंयस्यतस्य अर्दितंनसिध्यतित्रिवर्षम् अतीतवर्षत्रयम् अथवात्रयाणांचक्षुर्नासामुखानांवर्षः स्रावो यत्रवेपनस्यकम्पनशीलस्यतस्यगाढ़मतिशयेनसिध्यतीत्यन्वयः ॥ ४६४ ॥

असाध्य अर्दित के लक्षण ॥

जिस अर्दित रोगवाले का शरीर क्षीण होजाय नेत्रोंके पलक नलगें और बहुत तुतलाकर अव्यक्त वचन बोले वह असाध्यहै तीन वर्षके व्यतीत होजानेपर अथवा नेत्र नासिका तथा मुखके बहनेपर और कंपहोने पर अर्दितरोग को असाध्य जानना चाहिये ॥ ४६४ ॥

अथतस्यचिकित्सा ॥

स्नेहपानानिनस्यञ्चभोज्यान्यानिलवास्तिच । उपनाहाश्चशस्यन्तेनावनंवस्तयोऽर्दिते ॥ वस्तिरत्रशिरोवस्तिरेव ॥ ४६५ ॥

अर्दितकी चिकित्सा ॥

अर्दितरोगमें स्नेहपान नस्य वात नाशक भोजन उपनाह (मल्हम) और शिरोवस्ति श्रेष्ठहै ४६५॥

दशमूलकषायेणमातुलङ्गरसेनवा । वलायापञ्चमूल्यावाक्षीरंवातात्मकेहितम् ॥ पिष्टं मांसघृतंजग्ध्वानवनीतेनसोऽर्दिती । क्षीरमांसरसैर्भुक्त्वादशमूलीरसंपिवेत् ॥ अर्दितेपित्तजेशीतान्स्नेहांश्चैवविनिर्दिशेत् । घृतवस्तिप्रसेकञ्चक्षीरसेकंतथैवच ॥ जिह्मीभूताननो मूकोदाहवान्योऽर्दितोभवेत् । कुर्यात् प्रतिक्रियान्तस्यवातपित्तविनाशिनीम् ॥ श्लेष्म भागेक्षयंनीतेबृंहणैःसमुपाचरेत् । अर्दितेशोथसंयुक्तेवमनंचप्रशस्यते ॥ ४६६ ॥

दश मूलके काढ़ेसे नींबूके रससे वरियारा अथवा पंचमूलके द्वारा सिद्धहुए दूध के पीने से पीठी मांस तथा घृतको मक्खन के साथ खाके अथवा दूध तथा मांसके रसकेसाथ भोजनकरके दशमूलका काढ़ा पीनेसे वातज अर्दितरोग का नाश होताहै पित्तज अर्दित रोगमें शीतल स्नेह वस्तुओंका भोजन करे और घी अथवा दूधके द्वारा वस्तिक्रिया तथा प्रसेक करे जो अर्दित रोगमें मुखका टेढ़ापन मूकता

और दाह होवे तो वात पित्त नाशक क्रियाकरे अर्दितरोग मे पहले कफको नष्ट करके बृंहण औषधियों से चिकित्सा करे और जो सूजन भी होय तो वमन करावे ॥ ४६६ ॥

रसोनकल्कंतिलतैलमिश्रंखादेन्नरोयोर्दितरोगयुक्तः । तस्यार्दितंनाशमुपैतिशीघ्रंवृन्दं वनानामिववायुवेगात् ॥ ४६७ ॥

जैसे वायु के वेगसे मेघोंके समूह शीघ्रही नाशको प्राप्त होतेहैं उसी प्रकार लहसनके कल्कमें तिल का तेल मिलाकर खानेसे अर्दितरोग का नाश होताहै ॥ ४६७॥

अथमन्यास्तम्भस्यनिदानपूर्वकंलक्षणमाह ॥

दिवास्वप्नासनस्थानविकृतोर्ध्वनिरीक्षणैः । मन्यास्तंभंप्रकुरुतेसएवश्लेष्मणावृतः ॥ आसनस्थानविकृतोर्ध्वनिरीक्षणैः । आसनेनस्थानेनचातिशयेनविकृतंग्रीवादिविकृतंयथा स्यादेवमूर्ध्वमीक्षणयन्निरीक्षणतेनसएवकुपितोवातः श्लेष्मणावृतःमन्यास्तंभंकरोति ग्रीवायाःपश्चाद्भागे चतुर्दशशिरामन्यासंज्ञातथाचामरसिंहः । पश्चाद्ग्रीवाशिरामन्यास्ता सांस्तम्भंकरोतिच॥४६८ ॥ मन्यास्तंभ का निदान पूर्वक लक्षण ॥

दिनमें सोनेसे शयन अथवा बैठने के स्थानके विकार युक्त होनेके कारण ग्रीवा आदिकों के विकार युक्त होनेसे और ऊपरको देखनेसे कुपितहुई वायु कफ युक्तहोके मन्यास्तंभको उत्पन्न करती है ग्रीवाके पीछेकी नसको मन्या कहतेहैं ४६८ ॥ अथतस्यचिकित्सा ॥

दशमूलीकृतंक्वाथंपञ्चमूल्यापिकल्पितम् । रूक्षंस्वेदंतथानस्यंमन्यास्तम्भेप्रयोजयेत् । तैलेनाज्येनवाग्रीवामभ्यज्यार्कदलैरथ । एरण्डपत्रैर्वाछाद्यस्वेदयेद्बहुशोभिषक् ॥ कुक्कुटाण्डद्रवैरुष्णैःसैन्धवाज्यसमन्वितैःग्रीवांसम्मर्दयेत्तेनमन्यास्तम्भःप्रशाम्यति॥४६९॥

मन्यास्तंभ की चिकित्सा ॥

दश मूलका काढ़ा अथवा बड़े पंचमूलका काढ़ा पीनेसे रूक्ष स्वेदतथा नास लेनेसे तेल अथवा घी से मलकर आक अथवा अरंडके पत्तोंसे ढककर बारंवार स्वेद देनेसे मुर्गेके अण्डे के रसमें सेंधानोन तथा घी मिलाकर कुछ गरम २ ग्रीवापर मलनेसे मन्यास्तंभ का नाश होताहै ॥ ४६९ ॥

अथ बाहुशोषस्यलक्षणमाह ॥

अंसदेशेस्थितोवायुःशोषयेदंसबन्धनम् । अंसबन्धनशोषात्स्याद्बाहुशोषःसवेदनः ॥ ४७० ॥ बाहु शोषका लक्षण ॥

कन्धोंमें स्थित वायु कन्धोंके बन्धनोंको सुखातीहै इससे पीड़ा सहित बाहु सूखतीहै ॥ ४७० ॥

तस्य चिकित्सा ॥

बाहुशोषेपिबेत्भुक्त्वासर्पिःकल्याणकंमहत् । बलामूलशृतंतोयं सैन्धवेनसमन्वितम्॥ बाहुशोषकरेवातेमन्यास्तम्भेचशस्यते ॥ ४७१ ॥

बाहु शोषकी चिकित्सा ॥

बाहुशोष मे भोजन करके महा कल्याणकघृत पीना चाहिये बरियारा की जड़के काढ़ेमें सेंधानोन डालकर पीनेसे बाहुशोष और मन्यास्तंभ शान्त होताहै ॥ ४७१ ॥

अथापबाहुकस्यलक्षणमाह ॥

शिराःसङ्कोच्यबाहुस्थाःसकुर्य्यादपबाहुकम्।सवायुःबाहुस्थःशिराःबाहुस्थशिराः४७२ ॥

अपबाहुक का लक्षण ॥

कुपित हुई वायु भुजाकी नसोंको संकुचित करके अपबाहुक रोगको उत्पन्न करतीहै ॥ ४७२ ॥

तस्यचिकित्सा ॥

परमौषधमपबाहुकमन्यास्तम्भोर्ध्वजत्रुगतरोगे। शीतलजलेननस्यन्तदुपशमेजिङ्गिनीचपुरः॥मूलंबलायास्त्वथपारिभद्रंजंतथात्मगुप्तास्वरसंपिवेद्वा ।युञ्जीतयोमापरसेननस्यंभवेदसौवज्रसमानबाहुः॥बलायामूलंकल्कीकृतंपिवेत्तथापारिभद्रमूलञ्च । पारिभद्रोऽत्रफरहद्वातहरत्वात् ॥ ४७३ ॥ अपबाहुक की चिकित्सा ॥

अपबाहुक मन्यास्तंभ और ऊर्द्ध जत्रुमें हुएरोगों में पहले जिंगनी वृक्षकी जडको पीसकर शीतलजलके साथ नासलेने से यहसब रोग शान्त होतेहैं बरियारा की जडको अथवा फरहदकीजडको पीसकर शीतलजलके साथ पीनेसे अथवा किवांच के रसको पीने से अथवा उड़दके काढ़ेकी नास लेने से बज्रके समान भुजा होती है ॥ ४७३ ॥

माषातसीयवकुरण्टककण्टकारीगोकण्टटुण्टुकजटाकपिकच्छुतोयैः। कार्पासकास्थिशणबीजकुलत्थकोलक्वाथेनवस्तपिशितस्यरसेनवापि ॥ शुण्ठ्यामभागधिकयाशतपुष्पयाच सैरण्डमूलकपुनर्नवयासरण्या ॥ रास्नाबलाम्रतलताकटुकैर्विपक्कं माषाख्यमेतदपबाहुहरंहितैलम् ॥ ४७४ ॥

उड़द अलसी जौ पीली भिंटी भटकटैया गोखुरू सोनापाठा जटामांसी तथा किवांच का रस कपासके बीज सनकेबीज कुलथी तथा बेरकाकाढ़ा बकरेके मांसका रस सोंठ पीपल सौंफ अरंडकी जड पुनर्नवा गन्ध प्रसारणी रासना बरियारा गिलोय और मिर्च इनसब औषधियों को मिलाकर तेलका पाककर के सेवन करने से अपबाहुक रोग का नाशहोताहै इतिमाषतैल ॥ ४७४ ॥

अथविश्वाचीलक्षणमाह ॥

तलप्रत्यंगुलीनांयाकण्डराबाहुपृष्ठतः । बाह्वोःकर्मक्षयकरीविश्वाचीसानिगद्यते ॥ कण्डरामहास्नायुः तलंहस्तस्योपरिभागंतलशब्दोऽत्रउपरिवाचकःयथाभूमितलमिति तेनायमर्थः। बाहुपृष्ठतःबाह्वोःपृष्ठंबाहुपृष्ठमारभ्यतलंप्रतिहस्ततलं यावल्लक्षीकृत्यअंगुलीनांकण्डरास्ताः सन्दूष्यबाह्वोःप्रसारणाकुञ्चनादिकर्मक्षयकरीभवति साइहवातव्याधिपुविश्वाचीत्युच्यतेबाह्वोरितिद्वित्वंसम्भवपरम्एकस्मिन्नपिबाहौविश्वाचीभवति४७५

विश्वाची का लक्षण ॥

जिस रोगमें भुजाकी पीठपरसे हाथ के ऊपर अंगुलियों तक रहनेवाली कण्डरानाम बड़ीनस दूषित होकर भुजाके सकोड़ने तथा फैलाने आदिकामों को नष्टकरे उसको विश्वाची रोगकहते हैं॥ ४७५॥

अथतस्य चिकित्सा ॥

दशमूलीबलामाषक्वाथंतैलाज्यमिश्रितम्।सायंभुक्तापिवेन्नस्यंविश्वाच्यामपबाहुके४७६

विश्वाची की चिकित्सा॥

भोजनके उपरान्त सायंकालके समय दशमूल वरियारा तथा उर्द के काढ़ेमें घी और तेल मिला कर नासिका के द्वारापीने से विश्वाची और अपवाहुक का नाश होता है॥ ४७६॥

मापसिन्धुवलारास्नादशमूलकहिंगुभिः। वचाशिवजटाख्याभिःसिद्धंतैलंसनागरम्॥ ऊर्ध्वंभक्ताशनाद्धन्याद्वाहुशोषापवाहुकौ। विश्वाचीमुद्धताञ्चापिपक्षाघातंतथार्दितम्। माषादितैलम्॥४७७॥

उर्द सेंधानोन वरियारा रासना दशमूल हींग सोंठ वच और शिवजटा इन सबके द्वारा तेल को पका कर भोजनके उपरान्त सेवन करने से वाहुशोप अपवाहुक विश्वाची पक्षाघात और आर्दित रोगका नाशहोताहै इति मापादि तैल॥ ४७७॥

अथोर्ध्ववातस्यलक्षणमाह॥

अधःप्रतिहतोवायुःश्लेष्मणामारुतेनच। करोत्युद्गारवाहुल्यमूर्ध्ववातःसउच्यते॥ वायुःसमानवायुःमारुतेनापानवायुनास्वदेहेतुदुष्टेनअधःप्रतिहतःअधोनिरुद्धः॥४७८॥

ऊर्ध्ववात का लक्षण॥

कफ और अपान वायुके द्वारा नीचे से रुकीहुई समान वायु बहुत सी डकारों को करती है उसको ऊर्ध्व वात कहते हैं॥ ४७८॥ अथतस्य चिकित्सा॥

भागादशविश्वायास्तत्तुल्योवृद्धदारकस्यापि। त्रयएवचपथ्यायाःचतुरंशंहिंगुसंमृष्टम॥ एकःसैन्धवभागस्तत्तुल्यंचित्रकञ्चात्र। संवृद्धमूर्ध्ववातंहन्त्येतच्चूर्णितंभुक्तम॥ अथवृद्धदारकालाभेत्रिन्मूलंग्राह्यम्॥ ४७९॥

ऊर्ध्व वातकी चिकित्सा॥

सोंठ १० भाग बिधारेके बीज १० भाग (बिधारा नमिलेतो निसोतकी जड़) हड़ ३ भाग भुनी हींग ४ भाग और सेंधानोन तथा चीता एक २ भाग इनसबको चूर्ण करके खानेसे बढ़े हुए ऊर्ध्व वात का नाशहोता है॥ ४७९॥ अथाध्मानस्य लक्षणमाह॥

साटोपमत्युग्ररुजमाध्मातमुदरंभृशम्। आध्मानमितिजानीयाद्घोरंवातनिरोधजम्॥ आटोपोगुड़गुड़ाशब्दः भृशमाध्मानंवातपूर्णमस्तावत्वातनिरोधजम् अधोवातानिरोधजम्॥ ४८०॥ आध्मान का लक्षण॥

जिसरोग में नीचे की वायु के रुकने से उदरमें बहुत पीड़ा गड़गड़ाहट और बहुत पेटफूल नाहोय उस को आध्मान कहते हैं॥ ४८०॥

अथतस्य चिकित्सा॥

आध्मानेलंघनंपूर्वंदीपनंपाचनंततःफलवर्त्तिंक्रियांकुर्य्याद्वस्तिकर्मचशोधनम्॥४८१॥

आध्मान की चिकित्सा॥

अध्मान रोगमें पहलेलंघन फिर दीपन तथा पाचन औषधियों का सेवन फलवर्ति (गुदामें बर्त्ती रखाना) वस्ति कर्म और संशोधन औषध हित कारी हैं॥ ४८१॥

कर्षमात्राभवेत्कृष्णात्रिवृतास्यात्पलोन्मिता । खण्डादपिपलंग्राह्यंचूर्णमेकत्रकारये त् ॥ मधुनाक्षमितंलिह्याच्चूर्णमाध्माननाशनम् । नारायणचूर्णम् ॥ ४८२ ॥

पीपल १ तोला और निसोत तथा शक्कर चार २ तोले इनसबको एकसाथ पीसकर एक तोला चूर्णसहत के साथ चाटने से आध्मान का नाशहोता है इति नारायणचूर्ण॥ ४८२ ॥

दारुहैमवतीकुष्ठशताह्वाहिंगुसैन्धवैः । लिम्पेदुष्णैरम्लपिष्टैःशूलाध्मानयुतोदरम् ॥ हैमवतीवचा । दारुषट्कलेपः ॥ ४८३ ॥

देवदारु बच कूट सोंफ हींग और सेंधानोन इनसबको काँजीमें पीसकर कुछ गरम २ शूल और आध्मान युक्त पेटपर लेप करे इति दारुषट्क लेप ॥ ४८३ ॥

अभयारग्वधोधात्रीदन्तीतिक्तास्नुहीत्रिवृत्। मुस्ताप्रत्येकमेतानिग्राह्यानिपलमात्र या॥ तानिसंकुट्यसर्वाणिजलाढकयुगेपचेत् । तत्रतोयेऽष्टमंभागंकषायमवशेषयेत् ॥ निस्त्वक्जैपालबीजानिनवानिपलमात्रया॥तनुवस्त्रधृतान्येवतस्मिन्क्वाथेशनैःपचेत्॥ज्वा लयेदनलंमन्दंयावत्क्वाथोघनोभवेत् । ततःखल्वेक्षिपेद्भागानष्टौजैपालबीजतः॥ भागान् त्रीन्नागरात्द्वौचमरिचाद्द्वौचपारदात्। गन्धकाद्द्वौचतानीह्यावद्यामंविमर्दयेत् ॥ रसो नाराचनामायंभक्षितोरत्तिकामितः।जलेनशीतलेनैवरोगानेतान्विनाशयेत् ॥ आध्मानं शूलमानाहंप्रत्याध्मानंतथैवच। उदावर्त्ततथागुल्ममुदराणिहरत्यसौ ॥ वेगेशान्तेतुभुंजी तशर्करासहितंदधि।ततस्तत्सैन्धवेनापिततोदध्योदनंमनाक्॥महानाराचोरसः ४८४ ॥

हड़ अमलतास आमला दन्ती कुटकी थूहर निसोत तथा मोथा इन सबकोचार ४तोले लेकर कूटकर ५१२ तोले जलमें पाककरे और चौथाई वाकी रहजाने पर उतार कर छानले फिर छिले हुए नये जमालगोटे के ४ तोले बीज महीन कपड़े में बांधकर उसीकाढ़े में डाल कर मन्दाग्निसे पकावे और काढ़ेके गाढ़े होजाने पर वही जमालगोटे के बीज ८ भाग सोंठ ३ भाग मिर्च २ भाग और पारा तथा गन्धक दो२ भाग इनसबको खरलमें एक साथ एक पहरपीसकर एकरत्ती रस शीतल जल के साथ खाने से दस्त आकर आध्मान शूल आनाह प्रत्याध्मान उदावर्त गोला और उदर रोगों का नाश होताहै और दस्तों केबन्द होजाने पर शक्कर समेत दहीखाय फिर सेंधानोन मिले हुए दही के साथ भातखाय इतिमहानाराच रस ॥ ४८४ ॥

अथप्रत्याध्मानस्यलक्षणमाह ॥

विमुक्तपार्श्वहृदयंतदेवामाशयोत्थितम् । प्रत्याध्मानंविजानीयात्कफव्याकुलतानिल म् ॥ विमुक्तपार्श्वहृदयंपार्श्वहृदयेविहायजातं तदेवाध्मानंकफव्याकुलितानिलंकफेनाव रुद्धवातम् ॥४८५ ॥ प्रत्याध्मान का लक्षण ॥

कफसे रुकीहुई वायुके द्वारा पसली और हृदय को छोड़कर आमाशयमें उत्पन्नहुए आध्मानको प्रत्याध्मान कहते हैं ॥ ४८५ ॥

अथतस्यचिकित्सा ॥

प्रत्याध्मानेसमुत्पन्नेकुर्याद्वमनलङ्घनं । दीपनादीनियुञ्जीतपूर्ववद्वह्निकर्मच॥४८६॥

. प्रत्याध्मान की चिकित्सा ॥

प्रत्याध्मान में पहले वमन तथा लंघन कराके फिर दीपन औषध देनी चाहिये और पहले के समान वस्ति क्रिया करनी चाहिये ॥ ४८६ ॥

अथवातष्ठीलायालक्षणमाह ॥

नाभेरधस्तात्सञ्जातःसञ्चारीयदिवाचलः । अष्ठीलावद्घनोग्रन्थिरूर्ध्वमायतउन्नतः॥ वातष्ठीलांविजानीयाद्बहिर्मार्गनिरोधिनीम् । अष्ठीला वर्त्तुलापाषाणखण्डःआयतःदीर्घः वातष्ठीलावातष्ठीलेतिस्वरूपपरंनतु विशेषपरंव्यावर्त्तकाभावात्बहिर्मार्गनिरोधिनींशि श्नभगगुदनिरोधिनींतेनमूत्रमरुन्मलावरोधःसूचितः॥ ४८७॥

वातष्ठीला का लक्षण ॥

नाभिके नीचे वटियाके समान कठोर जो गांठउत्पन्न होती है और ऊपरकी ओर लंबी तथा ऊंची मलमूत्रकी रोकने वाली होतीहै वह चंचल अथवास्थिर होतीहै इसको वाताष्ठीला कहते हैं ॥४८७॥

अथप्रत्यष्ठीलायालक्षणमाह ॥

एतामेवरुजायुक्तांवातविण्मूत्ररोधिनीम् । प्रत्यष्ठीलामितिवदेज्जठरेतिर्य्यगुत्थिताम् ॥ एतामेवअष्ठीलामेवजठरेतिर्य्यगुत्थितामितिभेदः ॥ ४८८॥

प्रत्यष्ठीलाका लक्षण ॥

उदरमें तिरछी उठीहुई पीड़ायुक्त वायु तथा मलमूत्रकी रोकनेवाली वातष्ठीलाको प्रत्यष्ठीला कहते हैं ॥ ४८८ ॥

तयोश्चिकित्सा ॥

अष्ठीलायाःक्रियाकार्य्यागुल्मस्यान्तरविद्रधेः । चूर्णंहिङ्ग्वादिकञ्चात्रपिबेदुष्णेनवारिणा ॥ हिङ्ग्वादिचूर्णंयथा हिङ्गुग्रन्थिकधान्यजीरकवचाचव्याग्निपाठाशटीवृक्षाम्लंलवणत्रयंत्रिकटुकंक्षारद्वयंदाडिमम् ॥ पथ्यापौष्करवेतसाम्लहवुषायोज्यस्तदेभिः कृतंचूर्णंभावितमेतदार्द्रकरसैःस्याद्बीजपूरद्रवैरिति ॥ ४८९ ॥

वातष्ठीला और प्रत्यष्ठीला की चिकित्सा ॥

वातष्ठीला और प्रत्यष्ठीलामें गुल्म और अन्तर्विद्रधिके समान चिकित्सा करनी चाहिये और आगे कहाहुआ हिंग्वादिचूर्ण गरम जलके साथपीना चाहिये हींग पीपलामूल धनियाँ जीरा वच चव्य चीता पाठा कचूर चूक कालानोन सेंधानोन विड्नोन त्रिकटु जवाखार सज्जी अनार हड़ पुष्करमूल अमलवेत और हाऊवेर इनसबको चूर्ण करके एकदिन अदरक के रसमें और एकदिन नींबूके रसमें भावना देवे यह हिंग्वादिचूर्ण कहलाताहै ॥ ४८९ ॥

अथतूनीलक्षणमाह ॥

अधोयावेदनायातिवर्चोमूत्राशयोत्थिता । भिन्दतीवगुदोपस्थंसातूनीनामतोमता ॥ उपस्थंशिश्नंभगश्च ॥ ४९० ॥

तूनीका लक्षण ॥

मलाशय और मूत्राशयसे उठीहुई जो पीड़ा गुदा और लिंग अथवा भगमें चीरनेके समान पीड़ा करतीहुई नीचेको जाय उसको तूनी कहतेहैं ॥ ४९० ॥

अथप्रतूनीलक्षणमाह ॥

गुदोपस्थोत्थितासैवप्रतिलोमंविधाविता । वेगैःपक्वाशयंयातिप्रतितूनीतिसोच्यते ॥ अधस्तादुत्थितोर्ध्वंगामिनीवेगैर्वेदनावेगैर्मुहुर्मुहुःस्वभावोपशमोपलक्षितैः सात्वनेनाभिध्वेतिदृश्यतेसानामतःप्रतितूनीसैववेदनावेगःउत्पत्तिप्रशमलक्षितैः ॥ ४९१ ॥

प्रति तूनीका लक्षण ॥

गुदा और लिंग अथवा योनिसे उत्पन्न हुई पीड़ा उलटेक्रमसे वारंवार वहुत वेगों के साथ ऊर्ध्वगामी होकर पक्वाशय और मूत्राशयमें जाय उसको प्रत्यूनी कहतेहैं ॥ ४९१ ॥

अथतयोश्चिकित्सा ॥

तून्याञ्चप्रतितून्याञ्चप्रशस्ताःस्नेहवस्तयः । पिबेद्वास्नेहलवणंपिप्पल्यादिमथाम्बुना ॥ उष्णंवारामठक्षारंप्रगाढमथवाघृतम् ॥ ४९२ ॥

तूनीओर प्रत्यूनीकी चिकित्सा ॥

तूनी और प्रत्यूनीमें स्नेह वस्तिदेवे स्नेहयुक्त सेंधानोन अथवा जलके साथ पिप्पल्यादि गण या हींग तथा जवाखार उष्ण करके सेवनकरे अथवा वहुत सा घीपिये ॥ ४९२ ॥

अथत्रिकशूलस्य लक्षणमाह ॥

स्फिगस्थ्नोःपृष्ठवंशास्थ्नोर्यःसन्धिस्तत्त्रिकंमतम् । तत्रवातेनयापीडात्रिकशूलंतदुच्यते ॥ ४९३ ॥ त्रिकशूलका लक्षण ॥

चूतड़ोंकी हड्डी और रीड़की हड्डी इनदोनोंकी सन्धिको त्रिक कहतेहैं इनमेंजो वायुके द्वारा पीड़ा होती है उसको त्रिकशूल कहते हैं ॥ ४९३ ॥

अथतस्य चिकित्सा ॥

कारयेद्वालुकास्वेदंत्रिकशूलेप्रयत्नतः । यद्वाधस्तात्करीषाग्निंधारयेत्सततंनरः॥४९४॥

त्रिकशूलकी चिकित्सा ॥

त्रिकशूलमें यत्नपूर्व्वक वालुका स्वेद करावे अथवा करसीकी आंच वरावर नीचेरक्खे ॥ ४९४ ॥

आभाश्वगन्धाहवुषागुडूचीशतावरीगोक्षुरकश्चरास्ना । श्यामाशताह्वाचशठीयवानीसनागराचेतिसमंविचूर्ण्य ॥ सर्वैःसमंगुग्गुलुमत्रदद्यात्क्षिपेदिहाज्यञ्चतदर्द्धभागम् । तद्भक्षयेदर्द्धपिचुप्रमाणंप्रभातकालेपयसाथयूपैः ॥ मद्येनवाकोष्णजलेनचाथक्षीरेणवामांसरसेनवापि । त्रिकग्रहेजानुहनुग्रहेचवातेभुजस्थेचरणस्थितेच ॥ सन्धिस्थितेचास्थिगतेचतस्मिन्मज्जास्थितेस्नायुगतेचकोष्ठे । रोगान्हरेद्वातकफानुविद्धान्वातेरितान्हृद्ग्रहयोनिदोषान् ॥ भग्नास्थिविद्धेषुचखञ्जतायांसगृध्रसीकेखलुपक्षघाते । महौषधंगुग्गुलुमेतमाहुस्त्रयोदशांगंभिषज पुराणाः ॥ आभावव्बूलः । तथाच आभावव्बूलपर्यायःकथितःकोविदैरिहेति । इतित्रयोदशांगगुग्गुलुः ॥ ४९५ ॥

वबूल असगन्ध हाऊवेर गिलोय सतावर गोखरू रासना श्यामा सौंफ कचूर अजवाइन और सोंठि इनसव औषधियोंको समभाग लेकर पीसे और सबकी वरावर गूगुल मिलाके गूगलका आधा घी

मिलावे फिर प्रात.काल ६ मासे औषध जल यूष मद्य उष्णजल दूध अथवा मांसकारस इनमें से किसीके साथ सेवनकरनेसे त्रिकशूल जानुशूल हनुस्तंभ भुजा संधि चरण हड्डी मज्जा नस तथा कोष्ठमें गईहुई वायु वात कफजरोग वातजनित हृदयकेरोग योनिदोष हड्डीका टूटना घावकी पीडा खंजिता गृध्रसी और पक्षाघात इनसबका नाश होताहै इस त्रयोदशांग नाम गूगुलको प्राचीन वैद्य लोग इनरोगोंकी महौषध कहतेहैं ॥ इतित्रयोदशांगगूगुल ॥ ४६५ ॥

अथवस्तिवातस्य लक्षणमाह ॥

मारुतेऽविगुणेवस्तौमूत्रंसम्यक्प्रवर्त्तते।विकाराविविधाश्चापितस्मिन्दुष्टेभवन्तिहि॥ अविगुणेअनुलोमेविकारा.विविधा मुहुर्मुहुर्मूत्रनिग्रहः ॥ ४६६ ॥

वस्तिवातका लक्षण ॥

मूत्राशयमें दोषरहित वायुके स्थितरहनेपर अच्छेप्रकारसे मूत्र निकलताहै और मूत्राशयमें दूषित वायुके स्थित रहनेपर वारम्वार मूतना और मूत्रका रुकना यह विकार उत्पन्नहोतेहैं ॥ ४९६ ॥

तस्यचिकित्सा ॥

बलामूर्वात्वचंचूर्णंससितंकर्षसम्मितम् । पिबेत्कुडवदुग्धेनमुहुर्मूत्रणशान्तये ॥ पथ्याविभीतधात्रीणाचूर्णंचूर्णमृतायसः।मधुनासहसंलीढंमुहुर्मूत्रणशान्तिकृत्॥यवक्षारस्य चूर्णन्तुसंयोज्यसितयासह।भक्षयेच्चियतंतस्यप्रशमेन्मूत्रनिग्रहः॥ कूष्माण्डस्यतुबीजानि बीजानित्रपुसस्यच।वस्तौसन्धारयेत्तेनप्रशाम्येन्मूत्रनिग्रहः। आमलक्याश्चकल्केनब स्तिभागंप्रलेपयेत् ॥ तेनप्रशाम्यतिक्षिप्रनियमान्मूत्रनिग्रह । मेहनस्याथयोनेर्वामुखस्या भ्यन्तरेशनै. ॥ घनसारयुतांवर्त्तिन्धारयेन्मूत्रनिग्रहे ॥ ४६७ ॥

वस्तिवातकी चिकित्सा ॥

बरियारा मरोडफली तथा दालचीनी इनसब औषधियोंके समान शक्करमिलाकर एकतोले चूर्ण १६तोले दूधकेसाथपीनेसे अथवा हड़ बहेड़ा आमला तथा लोहे की भस्म इनसबको सहतके साथ चाटनेसे वारम्वार मूत्रआनावन्दहोताहै जवाखारके चूर्णको मिश्रीमिलाकरखानेसे कुँभडे तथा खीरे के बीजोंको पेडूपर रखनेसे आमलेको पीसकर पेडूपर लेपकरने से अथवा लिंग वा योनि के भीतर कपूर युक्त वत्तीको धारणकरनेसे मूत्रके रुकावका नाशहोताहै ॥ ४६७ ॥

गृध्रसीलक्षण माह ॥

स्फिक्पूर्वोरुकटीपृष्ठजानुजङ्घपदंक्रमात् । गृध्रसीस्तम्भरुक्तोदैर्गृह्णातिस्पन्दते मुहुः ॥ वाताद्वातकफाभ्यांसाविज्ञेयाद्विविधापुन. । वातजायाभवेत्तोदोदेहस्यातिवक्रता ॥ जानुजङ्घोरुसन्धीनांस्फुरणंस्तम्भताभृशम् । वातश्लेष्मोद्भवायान्तुगौरववह्निमान्द्यम् ॥ तन्द्रांमुखप्रसेकश्चभक्तद्वेषस्तथैवच । गृध्रसीवातजाकेवलास्फिगादिपर्यन्तम् स्तम्भरुक्तोदैर्गृह्णातिक्रमात्प्रवृद्धिक्रमात् ॥ तेनयथायथावर्द्धतेतथातथास्फिगादी न्याक्रामतिनात्रग्रहणेनिर्देशक्रमानियम. । तथामुहु.स्पन्दतेस्फिगादिषुशिराकंपंकरोतीत्यर्थः ॥ ४६८ ॥

गृध्रसीकालक्षण ॥

गृध्रसी रोगमें कुपितहुई वायु पहले नितम्बों में स्तब्धता वेदना तथा सूईगडनेकीसी पीडा और नसोंके फड़कनेको उत्पन्न करतीहै फिर रोगके बढ़जानेपर क्रमसे जंघा कमर पीठ घुटने पिडलीतथा पैरोंमे प्राप्तहोकर स्तब्धता पीडा और अंग फड़कना उत्पन्न करतीहै केवल वातजन्य और वात कफ जन्य भेदोंसे गृध्रसीदो प्रकारकीहै वातज गृध्रसीमें पीड़ा शरीरका बहुत टेढ़ापन घुटने पिंडली जंघा तथा सन्धियोंकाबहुतफड़कना तथा स्तब्धताहोताहै कफयुक्त गृध्रसीरोगमें शरीरकाभारीपन मन्दाग्नि तन्द्रा मुखसेलारगिरना और भोजनमें अरुचि यह लक्षणहोतेहैं ॥ ४९८ ॥

तस्य चिकित्सा.॥

गृध्रस्यार्त्तंनरंसम्यक्रेकेनवमनेनवा । ज्ञात्वानिरामंदीप्ताग्निंवस्तिभिःसमुपाचरेत् ॥ नादौवस्तिविधिकुर्य्याद्यावद्दूर्ध्वंनशुध्यति । स्नेहोनिरर्थकस्तस्याद्भस्मन्यवहुतंयथा ॥ तैलमेरण्डजंप्रातर्गोमूत्रेणपिवेन्नरः । मासमेकंप्रयोगोऽयंगृध्रस्युरुग्रहापहः ॥ तैलंघृत आर्द्रकमातुलुङ्गरसंसचुक्रंसगुडंपिवेद्वा । कट्यूरुपृष्ठत्रिकशूलगुल्मगृध्रस्युदावर्त्तहरःप्रयोगः॥ निष्कुष्यैरण्डबीजानिपिष्ट्वाक्षीरेविपाचयेत् ॥ तत्पानन्तुकटीशूलेगृध्रस्यांपरमौषधम् । एरण्डमूलंविल्वञ्चबृहतीकण्टकारिका ॥ कषायोरुचकोपेतःपीतोवंक्षणवस्तिजम् । गृध्रसीजहरेत्शूलंचिरकालानुबन्धिच । रुचकसौवर्चलं । गोमूत्रैरण्डतैलाभ्यां कृष्णाचूर्णपिवेन्नरः । दीर्घकालोत्थितांहन्तिगृध्रसींकफवातजाम् ॥ सिंहास्यदन्तीकृतमालकानांपिवेत्कषायम्रुवुतैलमिश्रम् । योगृध्रसीनष्टगतिं प्रसुप्तःसशीघ्रगः स्यादिकिमत्रचित्रम् ॥ बृहन्निम्बतरोःसारोवारिणापरिपेषितः । सपीतोनाशयेत्क्षिप्रमसाध्यामपि गृध्रसीम् ॥ शेफालिकादलैःक्वाथोमृद्वग्निपरिपाचितः । दुर्वारंगृध्रसीरोगंपीतमात्रःप्रणाशयेत् ॥ इतिशेफालिकानिर्गुण्डी ॥ ४९९ ॥

गृध्रसीकी चिकित्सा ॥

गृध्रसीरोगवालेको पहले विरेचन अथवा वमनसेशुद्धकरके आमकानाश तथा अग्निकी दीप्तिहोजाने पर वस्तिक्रियाकर वमनादिके द्वारा विना शद्धकिये वस्ति न देवे क्योंकि शुद्धताकिये विना दिया हुआ स्नेह भस्ममें हवन कियेहुएके समान निरर्थक होताहै गोमूत्रके साथ रेंडीकेतेलको प्रात काल महीने भरतकपीनेसे गृध्रसी और ऊरुस्तंभका नाशहोताहै अदरककारस नींबूकारस चूक और गुड इनमेंतेल तथा घीडालकरपीनेसे कमर जंघा पीठ तथा त्रिकका शूल गोला गृध्रसी और उदावर्त्तकानाशहोताहै छिलेहुए अरंडके बीजोंको दूधमें पकाकर पीनेसे कमरके शूल और गृध्रसीकानाशहोताहै अरंडकी जड़ बेल दोनों भटकटैया इनसबके काढ़े में कालानोन डालकर पीनेसे वंक्षण तथा वस्तिके शूल और गृध्रसीकानाशहोताहै गोमूत्र और रंडीकेतेलके साथ पीपलका चूर्णपीनेसे बहुत पुरानी कफ वातज गृध्रसीकानाशहोताहै वासा दंती और अमलतासके काढ़ेमें रेंडीकातेल डालकरपीनेसे गृध्रसीकेद्वारा जकड़ेहुए पैरखुलजातेहैं बड़ेनींबके सारको जलमें पीसकर पीनेसे और निर्गुंडीके पत्ते के काढ़े को पीनेसे असाध्य भी गृध्रसीकाशीघ्रनाशहोताहै ॥ ४९९ ॥

रास्नायास्तुपलञ्चैकंपञ्चकर्षाणिगुग्गुलुः। सर्पिषावटिकांकृत्वाभक्षयेत्गृध्रसीहरीम्। रास्नागुग्गुलुः॥ ५०० ॥

रासना ४ तोला और गूगुल ५ तोला इन दोनोंको पीस घी मिलाकर गोली बनावे इसके खाने से गृध्रसीका नाशहोता है॥ इतिरासनागूगुल॥ ५००॥

रास्नामृतारग्वधदेवदारुत्रिकण्टकैरण्डपुनर्नवानाम्। क्काथंपिवेन्नागरचूर्णमिश्रंजङ्घोरुपृष्ठत्रिकपार्श्वशूली॥ इतिरास्नासप्तकक्काथः॥ ५०१ ॥

रासना गिलोय अमलतास देवदारु गोखुरू अरंडकी जड़ और पुनर्नवा इनके काढ़े में सोंठका चूर्ण मिलाकर पीनेसे पिंडली जंघा पीठ त्रिक और पसलियोंकी पीड़ाका नाशहोताहै॥इति रासना सप्तक काथ॥ ५०१॥

पथ्याविभीतामलकीपलानांशतंक्रमेणद्विगुणाभिवृद्धम्। प्रस्थेनयुक्तञ्चपलंकषाणां द्रोणेजलेसंस्थितमेकरात्रम्॥ अर्द्धावशिष्टंक्कथितंकषायंभाण्डेपचेत्तत्पुनरेवलौहे। अमूनिवह्नेरवतार्य्यदद्याद्द्रव्याणिसञ्चूर्ण्यपलार्द्धकानि॥विडङ्गदन्तीत्रिफलागुडूचीकृष्णात्रिवृन्नागरकोपणानि। यथेष्टचेष्टस्यनरस्यशीघ्रंहिमाम्बुपानानिचभोजनानि॥ निषेव्यमाणोविनिहन्तिरोगानसगृध्रसीनूतनखञ्जताञ्च। प्लीहानमुग्रंजठराग्निगुल्मं पाण्डुत्वकण्डूवमिवातरक्तम्॥ पथ्यादिकोगुग्गुलुरेषनाम्नाख्यातःक्षितावप्रमितप्रभावः। बलेननागेनसमंमनुष्यंजवेनकुर्य्यात्तुरगेणतुल्यम्॥ आयुःप्रकर्षंविदधातिचक्षुर्बलंतथापुष्टिकरोविषघ्नः। क्षतस्यसन्धानकरोविशेषाद्रोगेषुशस्तःसकलेषुतज्ज्ञैः॥ इतिपथ्यादिगुग्गुलुः॥ ५०२ ॥

हड़ १०० बहेड़ा २०० आमला ४०० और गूगुल ६४ तोले इन सबको ६०२४ तोले जल में रात्रिभर भिगोकर पाककरे फिर आधारह जानेपर उतार कर छानले और फिर इसी काढ़ेको लोहे के पात्र में औटावे जब गाढ़ा होजाय तब उतारकर बायबिड़ंग दन्ती त्रिफला गिलोय पीपल निसोत सोंठ और मिर्च इन सब औषधियोंका दो २ तोले चूर्ण छोड़े इसको मात्राके अनुसार सेवन करके शीतल जलपिये और अपनी इच्छाके अनुसार आहार विहारकरे इससे गृध्रसी खंजता प्लीहा अग्नि वृद्धि गोला विष पांडु खुजली छर्दि तथा वातरक्त का नाश होताहै और हाथीके समान बल घोड़ेके समान वेग आयुकी वृद्धि नेत्रोंमें बल शरीरमें पुष्टता तथा घावका भरना यह सब होतेहैं यह सब रोगोंमें हितकारी है॥ इति पथ्यादि गूगुल॥ ५०२॥

अथखञ्जस्यपङ्गोश्चलक्षणमाह॥

वायुःकट्याश्रितःसक्थ्नःकण्डरामाक्षिपत्यदा। खञ्जस्तदाभवेज्जन्तुःपंगुःसक्थ्नोर्द्वयोर्वधात्॥ सक्थ्नःकट्यादिगुल्फस्तस्यकण्डरांमहास्नायुंआक्षिपेत्। गमनादौकम्पयेत्वधात्गमनादिक्रियाघातात्॥ ५०३ ॥

खंज और पंगुके लक्षण॥

कमरमें स्थित वायु कुपित होकर जो जंघाओंमें स्थित कंडराओं को गमनके समय कंपितकरे

तो मनुष्य खंज (लँगड़ा) होताहै और जो दोनों जंघाओंकी गमनादिक क्रिया नष्ट होजायं तो मनुष्य पंगुहोताहै ॥ ५०३ ॥ अथतस्यचिकित्सा ॥

उपाचरेदभिनवंखञ्जंपंगुमथापिच।विरेकास्थापनस्वेदगुग्गुलुस्नेहवस्तिभिः५०४॥

खज और पंगुकी चिकित्सा ॥

नवीन खंज और पंगुकी विरेचन निरोहवस्ति स्वेद गूगुल और स्नेह वस्तिके द्वारा चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ५०४ ॥ अथकलापखञ्जस्यलक्षणमाह ॥

कम्पतेगमनारम्भेखञ्जन्निवचलक्ष्यते । कलापखञ्जंतंविद्यान्मुक्तसन्धिप्रबन्धनम्॥ गमनारम्भेकम्पतेएतस्यखञ्जादयएवभेदाः । कलापखञ्जइतिशास्त्रेरूढासंज्ञानतुयौगिके ॥ ५०५ ॥ कलाप खंजका लक्षण ॥

चलने के आरंभमें कंपहोवे और लँगड़ेके समान चालचले तो उसको कलाप खंज जाननाचाहिये इसमें संपूर्ण सन्धियोंके बन्ध शिथिल होजाते हैं ॥ ५०५ ।

अथतस्यचिकित्सा ॥

क्रमःकलापखञ्जस्यखञ्जपङ्गोरिवस्मृतः । विशेषात्स्नेहनंकर्म्मकार्य्यमत्रविचक्षणैः ॥ ५०६ ॥ कलाप खंजकी चिकित्सा॥

कलाप खंजमें खंज और पंगुके समान चिकित्सा करनी चाहिये और इसमें स्नेह क्रिया विशेषतासे करनी चाहिये ॥ ५०६ ॥

अथक्रोष्टुकशीर्षस्यलक्षणमाह ॥

वातशोणितजःशोथोजानुमध्येमहारुजः । ज्ञेयःक्रोष्टुकशीर्षस्तुस्थूलःक्रोष्टुकशीर्षवत् । क्रोष्टुःशृगालः ॥ ५०७ ॥

क्रोष्टुक शीर्षका लक्षण ॥

घुटने के बीचमें वातरक्त से उत्पन्नहुई जो सूजन शियारके शिरके समान स्थूल और अत्यन्त पीड़ा युक्त होती है उसको क्रोष्टुक शीर्ष कहतेहैं ॥ ५०७ ॥

अथतस्यचिकित्सा ॥

गुग्गुलुक्रोष्टुशीर्षेतुगुडूचीत्रिफलाम्भसा । क्षीरेणरण्डतैलंवापिबेद्वावृद्धदारकम् ॥ गुग्गुलुशुद्धकर्षमितंगुडूचीत्रिफलाम्भसा । गुडूचीपथ्याविभीतामलकैःसमुदितैश्चतुःकर्षमितैःप्रस्थमितेनजलेनपक्त्वाक्वाथेनोष्णेनपलद्वयमितेनगुग्गुलुंपिबेत् ॥ एरण्डतैलंकर्षमितंक्षीरेणगव्येनपलपरिमितेनपिबेत् । वृद्धदारकचूर्णवादुग्धेनगव्येनपलचतुष्टयमितेनपिबेत् ॥ रसैस्तित्तिरमांसस्यपीतैर्गुग्गुलुसंयुतैः । वातरक्तक्रियाभिश्चजयेज्जम्बूकमस्तकम् ॥ ५०८ ॥ क्रोष्टुक शीर्षकी चिकित्सा ॥

गिलोय हड़ बहेड़ा तथा आमला यह सब एक२ तोले इन सबको ६४ तोले जलमें काढ़ा करके जब ८ तोले बाकीरहे तब कुछ गरम उस काढ़ेके साथ एक तोले शुद्ध गूगुल सेवनकरे चार तोले गौके दूधके साथ १तोले रेंडीकातेल पिये१६तोले गौके दूधकेसाथ बिधारेकाचूर्ण पिये अथवा तीतरके

मासके रसके साथ गूगुलको पिये इस्से क्रोष्टुकशीर्ष का नाशहोताहै और इस रोगमें वात नाशक चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ५०८ ॥

अथखल्लीलक्षणमाह ॥

खल्लीतुपादजङ्घोरुकरमूलावमोटिनी । अवमोटिनीपरिवर्त्तनशीला ॥ ५०९ ॥

खल्लीका लक्षण ॥

पैर पिंडली जंघा और हाथके मूलोंके ऐंठनेको खल्ली कहतेहैं ॥ ५०९ ॥

अथतस्यचिकित्सा ॥

कुष्ठसैन्धवयोःकल्कश्चुक्रतैलसमन्वितःसुखोष्णोमर्द्दनेयोज्यःखल्लीशूलनिवारणः ५१०

खल्लीकी चिकित्सा ॥

कूट और सैंधेनोन के कल्कमें चूक और तैल मिलाकर कुछ गरम२ रगड़नेसे खल्ली और शूल का नाश होताहै ॥ ५१० ॥ अथवातकण्टकस्यलक्षणमाह ॥

रुक्पादेविषमेन्यस्तेश्रमाद्वाजायतेयदा॥वातेनगुल्फमाश्रित्यतमाहुर्वातकण्टकम् ५११॥

वातकंटक का लक्षण ॥

पैरोंके टेढ़ेमेढ़े रखने से अथवा बहुत श्रमसे वायुके द्वारा टखनोंमें जो पीड़ा उत्पन्न होती है उस को वात कंटक कहतेहैं ॥ ५११ ॥

अथतस्यचिकित्सा ॥

रक्तावसेचनंकुर्य्यादभीक्ष्णंवातकण्टके । पिबेदेरण्डतैलंवादहेत्सूचीभिरेवच॥अभीक्ष्णंपुनः ॥ ५१२ ॥

वातकंटक की चिकित्सा ॥

वात कंटक रोगमें बारम्बार रुधिर निकलवावे रेड़ीका तैल पिये अथवा सुइयोंसे जलावे ॥५१२॥

अथपाददाहस्यलक्षणमाह ॥

पादयोःकुरुतेदाहंपित्तासृक्सहितोऽनिलः।विशेषतश्चंक्रमणेपाददाहंतमादिशेत् ५१३॥

पाददाह का लक्षण ॥

पित्त तथा रुधिर सहित वायु दोनों पैरोंमें दाह उत्पन्न करतीहै और चलने के समय विशेष करके दाह होताहै इसको पाददाह कहतेहैं ॥ ५१३ ॥

अथतस्यचिकित्सा ॥

वातरक्तक्रमंकुर्य्यात्पाददाहेविशेषतः । मसूरविदलैःपिष्टैःशृतशीतेनवारिणा ॥ चरणौलेपयेत्सम्यक्पाददाहप्रशान्तये । नवनीतेनसंलिप्तौवह्निनापरितापितौ ॥ मुच्येते चरणौक्षिप्रंपरितापात्सुदारुणात् ॥ ५१४ ॥

पाददाह की चिकित्सा ॥

पाददाह रोगमें वात रक्तके समान चिकित्सा करनी चाहिये मसूरकी दालको पीसकर जल में पाककरे फिर शीतल करके उसका पैरोंमें लेपकरने से अथवा पैरोंमें मक्खन लगाकर आगमें सेकने से शीघ्रही दाह निवृत्त होताहै ॥ ५१४ ॥

अथ पादहर्षस्यलक्षणमाह ॥

हृष्येतेचरणौयस्यभवतश्चप्रसुप्तकौ । पादहर्षःसविज्ञेयःकफवातप्रकोपजः ॥ हृष्येते रोमाञ्चितौभवतःप्रसुप्तकौतिनिसिनीयुक्तौ ॥ ५१५ ॥

पादहर्षका लक्षण ॥

कफ युक्त वायुके कोपसे झंझनाहट संहित जो पैरोंमें रोमांच होताहै उसको पादहर्षकहतेहैं॥५१५॥

अथ तस्यचिकित्सा

पादहर्षेतुकर्त्तव्यःकफवातहरोविधिः ५१६ (अथा क्षेपकस्यसामान्यलक्षणमाह) यदातुधमनीः सर्वाः कुपितोऽभ्येतिमारुतः । तदाक्षिपत्याशुमुहुर्मुहुर्देहंमुहुश्चलः ॥ मुहुराक्षेपणाद्वायुराक्षेपकइतिस्मृतः । मुहुर्मुहुर्देहमाक्षिपतिगजारूढस्येवपुरुषस्यगात्रं दोलयति ॥ किंविशिष्टोमारुतःमुहुश्चलःवारंवारंसञ्चरणशीलः अयंवायुराक्षेपकइतिस्मृतःदेहस्ययन्मुहुराक्षेपणञ्चालनंततः ॥ ५१७ ॥

पादहर्ष की चिकित्सा ॥

पादहर्ष में कफ वात नाशक चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ५१६ (आक्षेपका सामान्य लक्षण) जो वारम्वार घूमनेवाली वायु कुपित होके और नाड़ियोंमें प्राप्त होके मनुष्य के शरीरको हाथीपर चढ़ेहुएके समान वारंवार कंपाताहै उसको आक्षेप कहतेहैं ॥ ५१७ ॥

आक्षेपकस्यचतुरोभेदानाह ॥

पित्तश्लेष्मान्वितोवायुर्वायुरेवचकेवलः । कुर्य्यादाक्षेपकञ्चान्यञ्चतुर्थमभिघातजम्॥ पित्तान्वितःश्लेष्मान्वितश्चकेवलश्चवायुःआक्षेपकत्रितयंकुर्य्यात् । अन्यञ्चतुर्थमभिघातजम् ॥ अन्योदण्डाद्यभिघातजोवायुश्चतुर्थमाक्षेपकंकुर्य्यादित्यर्थः ॥ ५१८ ॥

आक्षेपके चारभेद ॥

एक कफ युक्त वातजनित दूसरा पित्त युक्त वात जनित तीसरा केवल वात जनित और चौथा लाठी आदिकी चोटसे उत्पन्न हुई वायु जनित होताहै ॥ ५१८ ॥

तत्रकेवलवातजस्याक्षेपकस्यलक्षणमाह ॥

पाणिपादशिरःपृष्ठश्रोणीस्तम्भातिमारुतः । दण्डवत्स्तब्धगात्रस्यदण्डकःसोनुपक्रमः ॥ सस्वभावादेवसाध्यःअत्रचमुहुर्मुहुराक्षेपणंबोद्धव्यम् ॥ ५१९ ॥

केवल वातजनित आक्षेपका लक्षण ॥

कुपित वायु हाथ पैर शिर पीठ तथा नितंबोंको जकड़ताहै और शरीर दंडके समान अकड़कर वारम्वार हिलताहै इसको दंडक कहतेहैं यह रोग असाध्यहै ॥ ५१९ ॥

श्लेष्मान्वितस्यलक्षणमाह ॥

कफावृतोयदावायुर्धमनीष्वेवतिष्ठति । सदण्डवत्स्तम्भयतिकृच्छ्रोदण्डापतानकः ॥ दण्डापतानकःसआक्षेपकोदण्डापतानकारस्यःकृच्छ्रःकष्टसाध्यःअत्रचमुहुर्मुहुराक्षेपणंबोद्धव्यम् आगन्तुजाक्षेपकस्यलक्षणंसामान्यमेवबोद्धव्यम् ॥ ५२० ॥

कफ युक्त वातजनित आक्षेपका लक्षण ॥

कफ युक्त वायु कुपित होकर नाडियों में स्थित होकर शरीरको दंडके समान जकड़ती है और वारम्वार हिलाती है इसको दडापतानक कहतेहैं यह कृच्छ्रसाध्यहे आगन्तुक आक्षेपका लक्षण सामान्य आक्षेपके समान जानना चाहिये ॥ ५२० ॥

अथ तस्यचिकित्सा ॥

बलामूलकषायस्यदशमूलीशृतस्यच। यवकोलकुलत्थानांक्राथस्यपयसस्तथा ॥ अष्टावष्टौस्मृताभागास्तैलादेकस्तदेकतः। पचेदावाप्यमधुरंगणसैन्धवसंयुतम् ॥ तथागुरुसर्ज्जरसंसरलदेवदारुच । मञ्जिष्ठांपद्मकंकुष्ठमेलांकालाउचसारिवाम् ॥ मांसीशैलेयकंपत्रंतगरंसारिवांवचाम्। शतावरीमश्वगन्धांशतपुष्पांपुनर्नवाम् ॥ ततसाधुसिद्धंसौवर्णेराजतेमृण्मयेऽपिवा । प्रक्षिप्यकलशेसम्यक्स्वनुगुप्तंनिधापयेत् ॥ एतन्महाबलातैलप्रयुक्तमविलम्बितम् । सर्वानाक्षेपकादींस्तुवातव्याधीन्व्यपोहति ॥ हिक्काश्वासमधीमन्थगुल्मंकासंसुदुस्तरम्। षण्मासानुपयुक्तंतदन्त्रवृद्धिञ्चनाशयेत् ॥ यथाबलानलंमात्रसूतिकायैचदापयेत्। याचगर्भार्थिनीनारीक्षीणशुक्रश्चयःपुमान् ॥ क्षीणवातेमर्महतेह्यभिघातहतेतथा। भग्नेश्रमाभिपन्नेचसर्वथैतत्प्रयुज्यते ॥ एतद्धिराज्ञाकर्त्तव्यं कर्त्तव्यराजपूजिते । सुखिभिःसुकुमारैश्चधनिभिर्मानवैः सदा ॥ एकतःएकत्रआवाप्यप्रक्षिप्य इति महाबलातैलम् ॥ ५२१ ॥ आक्षेपकी चिकित्सा ॥

बरियारे की जड़ दशमूल जौ बेर तथा कुलथी इनसब का आठ २ भाग काढा तिलकातेल १ भाग दूध ८ भाग इन सबको एकमें मिलायके पाककरे और मधुरगण सेंधानोन अगर लाख सरल देवदारु मजीठ पद्माक कूट इलायची तगर जटामासी सिलाजीत तेजपात कालीसारिवा बच सतावर असगन्ध सौंफ तथा पुनर्नवा इनसबको डालकर अच्छे प्रकारसे पाककरे पाकहोजाने पर, सोना चांदी अथवा मिट्टीके कलशे में बहुत गुप्तकरके रक्खे इसके सेवन से सब प्रकार के आक्षेप आदिकवात रोग हिचकी श्वास अधिमन्थ गोला तथा खासी का नाश होताहे इसको छःमास सेवन करने से आतकी वृद्धिका नाश होताहे बलके अनुसार इसकी मात्रा सौरवाली स्त्री को देनी चाहिये गर्भ चाहने वाली स्त्री और क्षीण वीर्य क्षीणवात मर्ममें चोटवाले चाटसेव्याकुल टूटीहुई हड्डी से युक्त तथा श्रमसे क्षीण पुरुषोंको यह हितकारी है यह तेल राजाराज पुरुष सुकुमार और सुखी धनवान् पुरुषों को बनवाना चाहिये ॥ इति महाबला तेल ॥ ५२१ ॥

अथान्तरायामस्यलक्षणमाह ॥

अंगुलीगुल्फजठरहृद्वक्षोगलसंश्रितः । स्नायुप्रतानमनिलस्तदाक्षिपतिवेगवान् ॥ निष्टब्धाक्षस्तब्धहनुर्भग्नपार्श्वःकफंवमन् । अभ्यन्तरेधनुरिवयदानमतिमानवः ॥ तदास्तेऽभ्यन्तरायामकुरुतेमारुतोवली। यदासबलीमारुतोऽभ्यन्तरायामंकुरुतेतदंगुल्यादिसंश्रितोऽनिलस्नायुरलोपलक्षणंशिराकण्ठयोरपिग्रहणम् ॥ आक्षिपतिकम्पयतितदासमानवः निष्टब्धाक्ष स्तब्धनेत्र भग्नपार्श्वःभग्नइवपार्श्वेयस्यसः ॥ ५२२ ॥

अन्तरायाम का लक्षण ॥

उंगली टकने उदर हृदय छाती और गलेमें स्थित बढ़ीहुई वायु जब इन स्थानों की स्नायु शिरा तथा कण्डराओं को कंपित करती है तब मनुष्य के नेत्र तथा जावड़े सब जकड़ जाते हैं पसलियां टूटसी जाती हैं कफका वमन होताहै और भीतर धनुष के समान मनुष्य झुक जाताहै इसको अन्तरायाम कहते हैं ॥ ५२२ ॥ अथबाह्यायामस्यलक्षणमाह ॥

॥ महाहेतुर्बलीवायुःसशिरास्नायुकण्डरा।मन्यापृष्ठाश्रिताबाह्याःसंशोष्यानामयेद्बहिः॥ यत्रतंबहिरायामंप्रवदन्तिभिषग्वराः।तमसाध्यंबुधाःप्राहुर्वक्ष कट्यूरुभञ्जनम्॥तत्रापि योवक्षःकट्यूरून् भुनक्ति संमर्दयतितमसाध्यंप्राहुः ॥ ५२३ ॥

बाह्यायामका लक्षण ॥

बडे कारणों से कुपित बलवान् वायु शिरा स्नायु कण्डरा और गलेके पीछेकी नसको सुखाकर बाहर की ओर मनुष्य को झुकाती है उसको बाह्यायाम कहते हैं इस में जो छाती कमर तथा जंघाओं में टूटने की सी पीड़ा होय तो इसको असाध्य जानना चाहिये ॥ ५२३ ॥

तयोश्चिकित्सा ॥

बाह्यायामेऽन्तरायामे विधेयार्दितवत्क्रिया ॥ ५२४ ॥

बाह्यायाम और अन्तरायाम की चिकित्सा ॥

अन्तरायाम और बाह्यायाम में अर्दित रोग कीसी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ५२४ ॥

अथधनुस्तम्भस्यलक्षणमाह ॥

धनुस्तुल्योनमेद्यस्तुसधनुस्तम्भसंज्ञिता। विवर्णवद्धवदनःस्रस्ताङ्गोनष्टचेतनः ॥ प्रस्विद्यश्चधनुस्तम्भोदशरात्रंनजीवति । अन्तरायामेऽगुल्यादिष्वाक्षेपस्तब्धाक्षत्वादि कंचभवति ॥ धनुस्तम्भेतुधनुर्वत्नमनमात्रमित्येतयोर्भेदः । विवर्णवद्धवदनःबद्धोऽत्र चिबुकस्यज्ञेयः ॥ ५२५ ॥ धनुस्तंभका लक्षण ॥

जिस रोग में मनुष्य धनुष के समान झुकजाय उसको धनुस्तंभ कहते हैं विवर्ण ठोढ़ी के जकड़नेसे युक्त शिथिलांग चैतन्यता रहित और स्वेदयुक्त धनुस्तंभ वाला दशरात्रिमें मरजाताहै अन्तरायाम रोग में उंगली आदिकों में कम्प तथा नेत्रादिकों में स्तब्धता होतीहै और धनुस्तंभ में केवल धनुष के समान झुकना होताहै यही इन दोनों में भेदहै ॥ ५२५ ॥

अथ कुब्जस्यलक्षणमाह ॥

हृदयंयदिवापृष्ठमुन्नतंक्रमशःसरुक्। क्रुद्धोवायुर्यदाकुर्यात्तदातंकुब्जमादिशेत् ॥ यदेत्युक्त्वायदिवेतिविकल्पार्थस्तेननपुनरुक्तिदोषः। ननुअन्तरायामःकोडनतोभवति ॥ बहिरायामःपृष्ठतोभवतिताभ्यामस्यकोभेदःउच्यते।अन्तरायामबहिरायामयोःप्रकृतस्यवान्तःशरीरस्यबहिःशरीरस्यचनमनमत्रतुहृदयंपृष्ठंवाशरीराद्बहिर्भवतीतिभेदः॥ ५२६ ॥

कुब्जका लक्षण ॥

जो कुपित वायुके द्वारा हृदय अथवा पीठ पीड़ा सहित क्रमसे ऊंचे होयँ तोउसको कुब्ज कहतेहैं

अब यह सन्देह होता है कि अन्तरायाम हृदयकी ओर और बाह्यायाम पीठ की ओर झुका हुआ होता है तो इन दोनों में और कुब्ज में क्या भेद है इसका उत्तर यहहै कि अन्तरायाम और बाह्यायाममें स्वभावहीसे भीतरका और बाहरका शरीर झुकाहुआ होताहै और कुब्जमें हृदय अथवा पीठ शरीर से बाहर निकली हुई होती है ॥ ५२६ ॥

अथ तस्यचिकित्सा ॥

बाह्यायामेऽन्तरायामेधनु स्तम्भेचकुब्जकोयोज्यंप्रसारणीतैलंतेनतेषांशमोभवेत् ॥वातव्याधिपुसामान्यायाःक्रियाःकथिताःपुराःकर्त्तव्याएवता सर्वास्तैलमेतद्विशेषत. ५२७।

कुब्ज की चिकित्सा ॥

बाह्यायाम अन्तरायाम धनुस्तम्भ और कुब्ज रोगमें प्रसारणी तैलउपकारी होता है वातव्याधियों में जो सामान्य चिकित्सा पहले कही गई है वह सपूर्ण इन रोगों में करनी चाहिये और प्रसारणी कातैल विशेष करके काममें लाना चाहिये ॥ ५२७ ॥

अथापतन्त्रकस्य लक्षणमाह ॥

क्रुद्धःस्वै कोपनैर्वायुःस्थानादूर्ध्वंप्रपद्यतोपीडयन्हृदयंगत्वाशिर शङ्खौचपीड़ियन्॥धनुर्वन्नमयद्गात्राण्याक्षिपेत्मोहयेत्तथा । सकृच्छ्रादुच्छ्वसेदुच्चै स्तब्धाक्षोऽथनिमीलकः ॥ कपोतइवकूजेच्चनिःसंज्ञःसोऽपतन्त्रकः । स्थानात्पक्वाशयादूर्ध्वंशिरउद्दिश्यःआक्षिपेत् चालयेत्अथनिमीलकः ॥ अथवानिमीलिताक्ष यत्रैतानिभवन्तिसोऽपतन्त्रकः॥ ५२८॥

अपतंत्रक का लक्षण ॥

जिस रोग में अपने कारणों से कुपित वायु पक्वाशय से शिरकी ओर जाकर हृदय मस्तक तथा कपाल की हड्डियों को पीड़ित करती हुई शरीर को धनुष के समान झुकावे कंप तथा मोह उत्पन्न होवे दोनों नेत्र स्तब्ध होयँ अथवा बन्द होजावें बहुत कष्ट के साथ श्वास निकले और रोगी संज्ञा रहित होकर कबूतर के समान अव्यक्त शब्द करे उसको अपतन्त्रक कहते हैं ॥ ५२८ ॥

तस्याचिकित्सा ॥

अथापतंत्रकेनार्त्तमातुरंनापतर्पयेत् । निरुद्धवस्तिवमनंसेवयेन्नकदाचन ॥ श्वसनात् कफवाताभ्यांरुद्धास्तस्यविमोक्षयेत् । तीक्ष्णैःप्रधमनै सञ्ज्ञातासुभुक्तामुविन्दति॥ श्वसना प्रश्वासोच्छ्वासवहाधमनी । मरिचंशिग्रुबीजानिविडङ्गाश्चफणिज्जकम् ॥ एतानि सूक्ष्मचूर्णानिदद्यात्शीर्षविरेचने । फणिज्जकोमरुवक इतिमरिचादिनस्यम् ॥ ५२९ ।

अपतन्त्रक की चिकित्सा ॥

अपतन्त्रक रोगवाला मनुष्य अपतर्पण निरूह वस्ति और वमनको कभी न करे कफ तथा वायु के द्वारा रुकी हुई श्वास प्रतिश्वासकी लेचलने वाली नाड़ियों को तीक्ष्ण चूर्णको नासिका में देने से खोले इनके खुलजाने पर चैतन्यता आजाती है मिर्च सहँजने के बीज वायविडंग और मरुआ इन सबको पीसकर नासलेने से अपतन्त्रक का नाश होताहै इति मरिचादिनस्य ५२९ ॥

हरीतकींवचारास्नासैन्धवसाम्लवेतसम्। घृतमार्द्रकसंयुक्तमपतन्त्रकनाशनम्॥अम्लवेतसकाभावेचुक्रदातव्यमी रितम् ॥ ५३० ॥

हड वच रासना सेंधानोन अमलवेत इन सबको घी और अदरक के साथ सेवन करने से अपतन्त्रक का नाश होताहै यहां अमलवेत न मिले तो चूक डालना चाहिये ॥ ५३० ॥

अथापतानकस्य लक्षणमाह ॥

दृष्टिंसंस्तभ्यसंज्ञाञ्चहत्वाकण्ठेनकूजति। हृदिमुक्तेनरःस्वास्थ्यंयातिमोहवृतेपुनः ॥ वायुनादारुणंप्राहुरेकेतमपतानकम्। गर्भजातनिमित्तश्चशोणितातिस्रवाच्चयः ॥ अभिघातनिमित्तश्चनासिद्ध्यत्यपतानकः। दृष्टिरूपग्रहणशक्तिंसंस्तभ्यनाशयित्वा॥ ५३१ ॥

अपतानक का लक्षण ॥

जिस रोगमें देखने की शक्ति तथा ज्ञानका नाशहोकर गले से अव्यक्त शब्द निकले और वायुके द्वारा हृदयके ढके होने पर मोह होय और हृदय से वायुके हटजाने पर स्वस्थताहोवे इस को अत्यन्तभयंकर अपतानक रोग कहते हैं जो गर्भपात बहुत रुधिर का बहनाअथवा चोट से अपतानक हुआहोवे उसको असाध्य जानना चाहिये ॥ ५३१ ॥

अथ तस्यचिकित्सा ॥

अथापतानकेनार्त्तमश्रुताक्षमवेपनम्। अखट्वापातिनंचैवत्वरयासमुपाचरेत् ॥ अपतानकिनशस्तंदशमूलीशृतंजलम्। पिप्पलीचूर्णसंयुक्तंजीर्णेमांसरसौदनम् ॥ तैलेनमर्दनंचैवतथातीक्ष्णंविरेचनम्। स्रोतोविशोधनंपश्चात्सर्पिःपानंहितंस्मृतम् ॥ हन्त्यभुक्तवतांपीतमम्लंदध्यपतानकम्। मरिचेनसमायुक्तंस्नेहवस्तिरथापिवा ॥ ५३२ ॥

अपतानक की चिकित्सा ॥

अपतानक रोग वाले को जोनेत्रोंसे जलबहना कम्प तथा मूर्च्छायह सब न उत्पन्नहुएहोवें वह शीघ्रही उसकी चिकित्सा करे दशमूल के काढ़े में पीपल का चूर्ण डालकर पिये फिर उसके पच जाने पर मांसके रस के साथ भातखाय इससे अपतानक रोगनष्टहोताहै तेलमर्दन तीक्ष्णविरेचन पीछे से स्रोतों के शुद्ध करने वाले घीका पीना अपतानक में हितकारी है भोजन के पहले मिर्च युक्त खट्टे दही के पीनेसे अथवा स्नेह वस्ति लेनेसे अपतानक का नाश होताहै ॥ ५३२ ॥

अथ पक्षाघातस्यलक्षणमाह ॥

गृहीत्वार्द्धंतनोर्वायुःशिराःस्नायुर्विशोष्यच। पक्षमन्यतमंहन्तिसन्धिबन्धान्विमोक्षयन् ॥ कृत्स्नोर्द्धकायस्तस्यस्यादकर्मण्योविचेतनः। एकाङ्गवातन्तंकेचिदन्येपक्षवधं विदुः॥ अर्द्धम्अर्द्धनारीश्वरवत्पक्षबाहुपार्श्वोरुजङ्घादिभागम्। अन्यतमंवामंदक्षिणंवा विमोक्षयन्शिथिलीकुर्वन्अकर्मण्यःकर्मास्वसमर्थःविचेतनःईषत्स्पर्शादिज्ञानयुक्तः ५३३

पक्षाघात का लक्षण ॥

कुपित वायु शरीरके आधे भागको ग्रहण करके और शिरा तथा स्नायुको सुखा के संधि बंधनों को शिथिल करती हुई शरीरके दक्षिण अथवा वामभाग में से एकपक्ष (भुजा पसली जंघा तथा पिंडली आदिक)कोनष्ट करताहै इसरोगमें शरीरका संपूर्ण आधाभाग कार्य्य करने में असमर्थ और कुछ स्पर्श आदिके ज्ञानसे युक्त होताहै इसरोग को कोई एकाङ्गवात और कोई पक्षाघात कहतेहैं ५३३॥

अथ साध्यासाध्यज्ञानार्थमाह ॥

दाहसन्तापमूर्च्छाःस्युर्वायौपित्तसमन्विते। शैत्यशोथगुरुत्वानितस्मिन्नेवकफान्विते॥ दाहोवाह्य सन्तापःआभ्यन्तरः । एतल्लक्षणमन्यत्रापिवातव्याधौवोद्धव्यं सामान्यतोवा याविति निर्दिष्टत्वात्पक्षाघातस्यसाध्यत्वादिकमाह।शुद्धवातहतंपक्षंकृच्छ्रसाध्यतमंविदुः। साध्यमन्येनसंयुक्तमसाध्यंक्षयहेतुकम् ॥ शुद्धःकेवलः । अन्येनपित्तेनकफेनवाक्षयहेतुकंक्षयोधातुक्षयस्तत्कुपितवातनिमित्तकम् ॥ अपरमसाध्यलक्षणमाह । गर्भिणीसूतिकावालवृद्धक्षीणेष्वसृक्क्षये ॥ पक्षाघातंपरिहरेद्वेदनारहितोयदि । वेदनारहितोयदीतिभिन्नमसाध्यलक्षणम् ॥ ५३४ ॥

पक्षाघात के साध्यासाध्य के लक्षण ॥

पित्तयुक्त वातजनित पक्षाघातमें शरीर में दाह भीतर सन्ताप तथा मूर्च्छा होती है और कफयुक्त वातजनित पक्षाघातमें शीत सूजन तथा भारीपन होताहै केवल वात जनित पक्षाघात कृच्छ्र साध्य कफ अथवा पित्तयुक्त वातजनित पक्षाघात साध्य और धातुक्षय से कुपित वात जनित पक्षाघात असाध्य होताहै गर्भिणी सूतिका वालक वृद्ध और रक्त क्षयवाले मनुष्यों का पक्षाघात असाध्य है औरपीड़ा रहित पक्षाघात भी असाध्य होताहै ॥ ५३४ ॥

तस्यचिकित्सा ॥

माषात्मगुप्तावातारिवाट्यालकजटाश्रृतम् । हिंगुसैन्धवसंयुक्तंपक्षाघातंविनाशयेत्॥ माषिकेहिंगुसिन्धूत्थेजरणाद्यास्तुशाणिकाः । माषादिक्वाथः ॥ ५३५ ॥

पक्षाघात की चिकित्सा ॥

उर्द किवाच अरंड की जड़ सहदेई और जटा मासी इन सब के काढ़े में हींग तथा सेंधानोन मासे १ भरडालकर पीने से पक्षाघात का नाशहोताहै इति माषादि क्वाथ ॥ ५३५ ॥

ग्रन्थिकाग्निकणाशुण्ठीरास्नासैन्धवकल्कितम् । माषक्वाथश्रृतंतैलंपक्षाघातंव्यपोहति ॥ ग्रन्थिकादितैलम् ॥ ५३६ ॥

पिपलामूल चीता पीपल सोंठ रासना तथा सेंधानोन इन सबके कल्क के साथ उर्द का काढ़ा डाल कर परिपाक किये हुए तेलके सेवनसे पक्षाघात का नाशहोताहै इतिग्रंथिकादितैल ॥५३६॥

माषात्मगुप्तातिविषारुवूकचरास्नाशताह्वालवणैःसुपिष्टैःचतुर्गुणमाषवलाकषाये तैलंश्रृतंहन्तिहिपक्षघातम् ॥ इतिमाषादितैलम् ॥ ५३७ ॥

उर्द किवाच के बीज अतीस रेंडी रास्ना सतावर और सेंधानोन इन सब का कल्क तिलकातेल और तेल का चौगुना उर्द तथा वरियारे का काढ़ा इन सब के साथ विधि पूर्वक पाक किये हुए तेलको सेवनसे पक्षाघात का नाशहोताहै इति माषादि तैल ॥ ५३७ ॥

अथ सर्व्वांगवातस्यलक्षणमाह ॥

सर्व्वांगपवनेकुर्य्याद्गात्रस्फुरणभञ्जने । वेदनाभिःपरीताश्चस्फुटन्तीवास्यसन्धयः ॥ सन्धयोवेदनापरीतायुतास्फुटन्तीव ॥ ५३८ ॥

सर्वाङ्ग वातका लक्षण ॥

सम्पूर्ण शरीरमें रहनेवाली वातके कुपित होने से शरीर फड़कताहै तथा पीड़ायुक्त होताहै और सन्धि २ में पीड़ा होकर संधि फड़कती हैं ॥ ५३८ ॥

अथ तस्यचिकित्सा ॥

सर्व्वाङ्गगतमेकाङ्गगतञ्चापिसमीरणम्।तैलावगाहनंहन्तितोयवेगमिवाचलः॥५३९॥

सर्वाङ्ग वातकी चिकित्सा ॥

जैसे पर्व्वत से जलके वेगका नाशहोता है उसी प्रकार वात नाशक तेलों के मँभाने से सर्वाङ्ग और एकाङ्ग वात का नाश होताहै ॥ ५३९ ॥

अथ स्थाननाम लक्ष्यलक्षणान् वातव्याधीनाह ॥

स्थाननामानुरूपैश्चलिंगैःशेषान्विनिर्दिशेत् । सर्व्वेष्वेतेषुसंसर्गंपित्ताद्यैरुपलक्षयेत् ॥ प्रथमंह्रस्वकेशत्वंततोवाचालितापिच। आटोपःपार्श्वशूलञ्चपुरीषस्यातिगाढ़ता॥ तथामलाप्रवृत्तिश्चकम्पस्तम्भश्चरूक्षता ॥ कार्श्यंकार्ष्ण्यंचशैत्यञ्चलोमहर्षोव्यथा तथा ॥ तोदोभेदःशिरास्फूर्तिरंगमर्दोऽङ्गशुष्कता । सङ्कोचश्चाङ्गविभ्रंशोमोहश्चञ्चलाचित्तता ॥ निद्रानाशःस्वेदनाशोबलहानिश्चभीरुता । शुक्रक्षयोरजोनाशोगर्भनाशःपरिश्रमः ॥ आटोपोगुड़गुड़ाशब्दःतोदःसूचीव्यधनेनेवपीड़ाभेदोविदारणेनेवव्यथा । अङ्गविभ्रंशः अंगस्यस्थानत्यागेनसवलन्तंनिद्रानाशोनिद्राल्पत्वमपिगर्भनाशः आमगर्भपातः गर्भशय्यायांवाताधिष्ठानाद्गर्भाग्रहणमितिजेय्यटः। परिश्रमः आयासंविनाश्रमः॥५४०॥

स्थान और नामके अनुसार लक्षण वाली वातव्याधियों का वर्णन ॥

जो, वातव्याधि यहाँ नहीं कहीगई हैं वह स्थान तथा नामके अनुरूप लक्षणों से जाननी चाहिये और इनसबमें पित्त आदिकोंके संसर्ग का भी निर्धार करना चाहिये बालों की अल्पता गंजापन-आटोप (गुड़गुड़शब्द) पार्श्व शूल मलकी कठिनता मलका न निकलना कंप स्तंभ रूक्षता कृशता कृष्णता शीत रोमांच व्यथा सुई गड़ाने कीसी पीड़ा फटने कीसी पीड़ा नसोंका फड़कना अंगमर्द अंगों का सूखना संकोच अंग विभ्रंश (अंगों का अपने स्थानसे हटना) मोह चित्तकी चंचलता निद्रा की कमी स्वेदनाश बलहानि भीरुता शुक्रक्षय रजोनाश गर्भपात और बिना परिश्रमके श्रम मालूम होना यह सब स्थान तथा नामके लक्षण वाले रोगहैं ५४० ॥

अथतेषांचिकित्सा ॥

सामान्यवातरोगाणांयाचिकित्साप्रचक्षते । एषांह्यौविधातव्यातयैतयांतिसंक्षयम् ५४१॥

इनकी चिकित्सा ॥

सामान्य वात रोगों में जो चिकित्सा कही गई है उसी से यह संपूर्ण रोग शान्त होते हैं५४१॥

एवंविधानिरूपाणिकरोतिकुपितोऽनिलः।हेतुस्थानविशेषेणभवेद्रोगविशेषकृत् ॥ एवंविधानिरूपाणिशिरोग्रहादीनि। अशीतिहेत्वित्यादिहेतुविशेषःपित्तश्लेष्माद्यावृतत्वादि। यथाश्लेष्मावृतोवायुःमन्यास्तम्भंकरोतिस्थानविशेषःकोष्ठादिः ॥ यथातत्रकोष्ठाश्रिते निग्रहोमूत्रवर्चसोरित्यादि ॥ ५४२ ॥

कुपित वायु इस प्रकारके पूर्वोक्त शिरोग्रह आदिक रोगों को हेतु विशेप (पित्त तथा कफादिकों से युक्तहोना जैसे कफ युक्त वायु मन्यास्तंभको करती है) और स्थान विशेप (कोष्ठआदि जैसे कोष्ठमें स्थित वायु के दूषित होने पर मल मूत्र का रुकना आदि होताहै) से उत्पन्न करती है ॥ ५४२ ॥

तत्रहेतुविशेपेणवातव्याधिविशेपोयथा ॥

उदानपित्तसंयुक्तेदाहोमूर्च्छाभ्रमःक्लमः । अस्वेदहर्षोमन्दाग्निःशीतताचकफावृते ॥ प्राणोपित्तावृतेछर्द्दिदाहश्चैवोपजायते । दौर्बल्यंसदनंतन्द्रावैरस्यञ्चकफावृते ॥ प्राणोहृद याश्रयोवायुः । स्वेदोदाहस्तृपामूर्च्छासमानेपित्तसंयुते ॥ कफेनसक्तेविण्मूत्रेगात्रहर्पश्च जायते । कफेनसंयुक्तेसमानेविण्मूत्रेसक्तेऽवरुद्धेभवतःगात्रहर्पोरोमाञ्चः ॥ अपानेपित्तसं युक्तेदाहोष्ण्यंरक्तमूत्रता । अधःकायेगुरुत्वञ्चशीततांचकफावृते ॥ गुदाश्रयोऽपानः । व्यानेपित्तावृतेदाहोगात्रविक्षेपणंक्लमः ॥ स्तम्भोऽथदण्डकश्चापिशूलशोथौकफावृते । दण्डकःआक्षेपकभेदः ॥ ५४३ ॥

हेतु विशेप से वात व्याधि विशेप ॥

उदान वायु के पित्त युक्तहोने पर दाह मूर्च्छा भ्रम तथा ग्लानि होती है और कफ युक्त होने पर स्वेदका न होना रोमांच मन्दाग्नि तथा शीत होताहै प्राण वायु के पित्त युक्त होनेपर छर्द्दि तथा दाह होता है और कफ युक्त होने पर दुर्बलता शिथिलता तन्द्रा तथा मुख में विरसता होती है समान वायु के पित्त युक्त होने पर स्वेद दाह तृपा तथा मूर्च्छा होती है और कफ युक्त होनेपर मल मूत्र का अवरोध तथा रोमांच होते हैं अपान वायु के पित्त युक्त होने पर दाह उष्णता तथा मूत्र में रक्तता होती है और कफ युक्त होने पर शरीरके नीचेके भागमें भारीपन तथा शीतलता होतीहैव्यान वायु के पित्त युक्त होने पर दाह अंगों का पटकना तथा ग्लानि होतीहै और कफ युक्त होनेपर स्तंभ दंडक शूल तथा सूजन होती है ॥ ५४३ ॥

अथतेषांचिकित्सा ॥

वातेसपित्तेकुर्वतिवातपित्तहरींक्रियाम्। सकफेतत्रकुर्वीतवातश्लेष्महरींक्रियाम्॥५४४॥

इनकी चिकित्सा ॥

पित्तसंयुक्तवायुमें वातपित्तनाशकऔर कफयुक्त वायुमें वातकफनाशक चिकित्साकरनीचाहिये५४४॥

अथरसादिधातुगतानांवातानांलक्षणान्याह ॥

त्वग्रूक्षास्फुटितासुप्ताकृशाकृष्णाचतुद्यते । आतन्यतेसरागाचसर्वरुक्त्वग्गतेऽनिले ॥ सर्वरुक्सस्त्वग्यथात्वग्गतेत्वक्शब्देनात्ररसउच्यते । त्वगाधार्य्यंचात्तेनरसगते त्यर्थः ॥ ५४५ ॥ रसादि धातुओं में प्राप्त होनेवाली वायु के लक्षण ॥

रसधातुमें कुपित वायुकेप्राप्तहोनेपर रूखीफटीहुई स्पर्शकेज्ञानसे रहित कठोरकृष्ण अथवा रक्तवर्ण सुईगड़नेकी सी पीड़ासेयुक्त तथा फैलीहुई त्वचा होताहै और सातोंत्वचाओंमें पीड़ाहोतीहै ॥ ५४५॥

रुजस्तीव्राःससन्तापोवैवर्ण्यंकृशतारुचिः । गात्रेचारुंपिभुक्तस्यस्तम्भश्चासृग्गतेऽनिले॥ अरुंपिव्रणानिभुक्तस्यभुक्तेत्यत्राध्यवसितादित्वात्कर्त्तरिक्तः। तेनभुक्तवतस्तम्भः सन्तर्पणेनरक्तवृद्धेः ॥ ५४६ ॥

रुधिर धातुमें कुपित वायुके प्राप्तहोनेपर अत्यन्त पीड़ा सन्ताप विवर्णता कृशता अरुचि शरीरमें घाव और भोजन करने पर स्तंभ होताहै ॥ ५४६ ॥

गुर्वङ्गन्तुद्यतेस्तब्धंदण्डमुष्टिहतंयथा । सरुक्स्तिमितमत्यर्थंवातेमांससमाश्रिते ॥ दण्डमुष्टिताड़ितमिवतुद्यतेस्तिमितंनिश्चलमित्यर्थः । मांसमेदसोर्गतवातयोरेकोलिङ्गत्वमदूरान्तरेण ॥ प्रत्यासत्तेराश्रयाभावात् । तथामेदश्रितःकुर्य्यात्ग्रन्थीन्मन्दरुजोव्रणान् ॥ तथामेदःश्रितःमांसगतवत् । अदूरेणप्रत्यासन्नेरस्थिरूपायामेदाश्चकुर्य्याद्ग्रन्थीनित्यादिर्विशेषः ॥ ५४७ ॥

मांस धातुमें कुपित वायुके प्राप्त होनेपर शरीरमें भारीपन स्तम्भ लाठी अथवा घूसोंकी चोटकीसी पीड़ा और शरीरमें पीड़ायुक्त निश्चलता होती है वायुके मेदमें प्राप्त होनेपर भी मांसमें स्थित वायुकेसे लक्षण होतेहैं और विशेषता यहहै कि शरीरमें ग्रन्थि घाव तथा थोड़ीसी पीड़ा होती है५४७॥

भेदोऽस्थिपर्वणांसन्धिशूलंमांसबलक्षयः । अस्वप्नंसततारुक्चवातेदुष्टेऽस्थिसंस्थिते ॥ वातेमज्जगतेपीड़ानकदाचित्प्रशाम्यति । मज्जगतेऽस्थिगतवत् ॥ ५४८ ॥

अस्थि धातुमें कुपित वायुके प्राप्त होनेपर हड्डी तथा पोरुओं की संधियोंमें पीड़ा मांस तथा बल का नाश निद्राकी कमी और सदैव पीड़ा होती है मज्जागत वायुमें भी यही लक्षण होते हैं और उसकी पीड़ा कभी शान्तनहीं होतीहै ॥ ५४८ ॥

क्षिप्रंमुञ्चतिबध्नातिशुक्रंगर्भमथापिवा । विकृतिंजनयेच्चापिशुक्रस्थःकुपितोऽनिलः ॥ शुक्रंवध्नातिस्खलयत्येवनगर्भंक्षिप्रंमुञ्चति । आममेवपातयतिबध्नातिमूढंकरोतिवातदुष्टः शुक्रारब्धत्वात्विकृतिंशुक्रस्यवर्णान्तरत्वादिरूपाम्गर्भस्यविकृताङ्गत्वादिरूपाञ्जनयति ॥ ५४९ ॥

शुक्र धातु में कुपित वायु के प्राप्त होने पर वहुत शीघ्र वीर्य्यपात अथवा वीर्य्यका थँभना होताहै स्त्रियोंका गर्भपात अथवा गर्भ सूखजाता है और वीर्य्य अथवा गर्भ में विकार उत्पन्नहोताहै ५४९॥

अथतेषांचिकित्सा ॥

वायौत्वगाश्रितेस्नेहाभ्यंगंस्वेदश्चकारयेत् । रक्तस्थेशीतलान्लेपान्विरेकंरक्तमोक्षणम्॥ मांसमेदगतेवातेसविरेकंनिरूहणम् । अस्थिमज्जगतेस्नेहंवहिरन्तश्चयोजयेत्५५० ॥

इनकी चिकित्सा ॥

रसगत वायुमें तेल मर्दन तथा स्वेद करना चाहिये रक्तगत वायुमें शीतल लेप विरेचन तथा रुधिर निकल वाना अच्छाहै मांस तथा मेद गत वायुमें विरेचन तथा निरूहवस्ति देनीचाहिये और अस्थि तथा मज्जागत वायुमें शरीरके भीतर तथा बाहरतैलादि स्नेहका व्यवहार करनाचाहिये५५०॥

केतकनागवलातिवलानांयद्बहुलेनरसेनविपक्वम् । तैलमनल्पतुषोदकसिद्धंमारुतमस्थिगतंविनिहन्ति ॥ इतिकेतकादितैलम् ॥ ५५१ ॥

केतकी गलशकरी तथा वरियारा इनके रस और चावलों की भूसीके जलके साथ पाककिया गया तेल हड्डियों में घुसीहुई वायुका नाशकरताहै इति केतकादि तैल ॥ ५५१ ॥

हर्षोऽन्नपानंशुक्रस्थेबलशुक्रकरंहितम् ॥ ५५२ ॥

शुक्रगत वायुमें मनकी प्रसन्नता और बलतथा वीर्य्य कारक वस्तुओंका सेवन हितकारीहै ५५२ ॥

अथ स्थानविशेषेणवातव्याधिविशेषोयथा । तत्रकोष्ठगतस्य वातस्यलक्षणमाह॥

वातेकोष्ठाश्रितेदुष्टेनिग्रहोमूत्रवर्च्चसोः। बध्नहृद्रोगगुल्मार्शःपार्श्वशूलञ्चजायते५५३॥

स्थान विशेपसे वातव्याधि विशेष।कोष्ठगत वायुका लक्षण ॥

कोष्ठमें दूषित वायुके प्राप्त होनेपर मलमूत्र का रुकना ब्रध्न हृदय के रोग गोला बवासीर और पसलियों में पीड़ा होती है॥ ५५३ ॥

कोष्ठलक्षणमाह ॥

स्थानान्यामाग्निपक्वानांमूत्रस्यरुधिरस्यच । हृदुन्द्रकःफुप्फुसश्चकोष्ठइत्यभिधीयते॥ उन्द्रकःपोठइतिलोके ॥ एतेनकोष्ठशब्देनसर्वएवाशयाःकथ्यन्ते । तथापिविशेषार्थमा माशयादिगतवातलक्षणान्यपिपृथक्वक्ष्यन्ते ॥ ५५४ ॥

कोष्ठका लक्षण ॥

आमाशय अग्न्याशय पक्वाशय मूत्राशय रुधिराशय हृदय उन्द्रक और फुप्फुस इन सबको कोष्ठ कहते हैं यद्यपि कोष्ठ शब्द से संपूर्ण आशयों का ग्रहण होताहै तथापि विशेषताके लिये आमाशय आदिकोंमें गई हुई वायु के लक्षण अलग अलग कहेंगे ॥ ५५४ ॥

अथ तस्यचिकित्सा ॥

पाचनीयैरसैर्युक्तैरन्यैर्वापाचयेन्मलान् । विशेषतःपिबेत्क्षीरंनरःकोष्ठगतेऽनिले॥५५५॥

कोष्ठगत वायुकी चिकित्सा ॥

कोष्ठ गतवायु में पाचन औषधों के द्वारा पाककिये गये मांसके रसों से अथवा अन्य पाचन औषधियों से दोषों का पाककरे और इसमें विशेष करके दूधपीना चाहिये ॥५५५॥

अथामाशयगतस्यवातस्य लक्षणमाह चरकः ॥

हृत्पार्श्वोदरनाभीरुक्तृष्णोद्गारविसूचिकाः । कासःकण्ठस्यशोषश्चश्वासश्चामाशयेऽनिले ॥ ५५६ ॥

आमाशयमें प्राप्त वायुके लक्षण ॥

दूषित वायुके आमाशयमें प्राप्तहोनेपर हृदय पसली उदर तथा नाभिमें पीड़ा तृषा डकार विसूचिका खांसी गला सूखना और श्वास यह रोग उत्पन्नहोतेहैं ॥ ५५६ ॥

आमाशयस्यलक्षणमाहचरकः ॥

नाभिस्तनान्तरंजन्तोराहुरामाशयंबुधाः । इति ॥ ५५७ ॥

आमाशय का लक्षण ॥

नाभि और स्तनोंके बीचमें आमाशय होताहै ॥५५७॥

अथतस्यचिकित्सा ॥

आमाशयस्थेत्वनिलेप्रशस्तंप्राग्लङ्घनंदीपनपाचनञ्च । प्रच्छर्दनंतीक्ष्णविरेचनंवा .मुद्गायवाःशालियुताःपुराणाः ॥ भूतीकपथ्याशटीपुष्कराणिबिल्वामृतादारुकनागराणि।

उग्राविपामागधिकाविड्डानिकाथास्त्रयःसामसमीरणघ्नाः ॥ भूतीकःरोषःसुगन्धतृणविशेषस्तदलाभेउशीरंग्राह्यम् । पुष्करंपुष्करमूलम्॥ दारुकंदेवदारुउग्रावचाविषाअ्तिविषा ॥ ५५८ ॥ आमाशय में प्राप्त वायुकी चिकित्सा ॥

वायुके आमाशय में प्राप्त होनेपर पहले लंघन फिर दीपन पाचन औषधदेनी चाहिये और वमन अथवा तीक्ष्ण विरेचन देकर भोजनके लिये पुराने जौ चावल तथा मूंग देनीचाहिये भूतीक (सुगंधित तृणविशेष) हड़ कचूर तथा पुष्कर मूल १ बेल मिलोय देवदारु तथा सोंठ२ बच अतीस पीपल तथा बिट्नोन ३ यह तीनोंकाढे आमयुक्त बातको नाश करतेहैं ॥ ५५८ ॥

चित्रकेन्द्रयवौपाठाकटुकातिविषाभया । आमाशयोत्थवातघ्नंचूर्णंपेयंसुखाम्बुना ॥ योगेऽस्मिन्भिषजाग्राह्याःपरणपट्धरणाःपृथक्। दिनेषुपट्सुदातव्यास्तेनषट्धरणास्मृताः ॥ अत्रषरणसमुदितानांषट्धरणमितानांचूर्णीकृतानामेकस्मिन्नहनिएकटङ्कोदेयः ॥ अन्यथाआमाशयगतेवातेछर्दितापंयथाक्रमम्। देयःपट्धरणोयोगःसप्तरात्रंसुखाम्बुना ॥ अयमर्थः । प्रथमदिवसेवमनंकारयितव्यंततोद्वितीयदिनमारभ्यषट्दिनपर्यन्तंपाठक्रमेणैकेकस्यचूर्णंटङ्कमितंदेयमित्यर्थः । इतिपट्धरणोयोगः ॥ ५५९ ॥

चीता इन्द्रजौ पाठा कुटकी अतीस और हड़ यह सब औषधी एक२ धरण अर्थात् चार २ मासे लेकर चूर्ण करके गरम जलके साथ प्रतिदिन चार मासे खानेसे आमाशय में गई हुई वातका नाश होताहै अन्य प्रकार पहले दिन वमन कराके फिर दूसरे दिनसे छः दिनतक ऊपर कहीहुई औषधियों में से एक २ औषधिका चूर्ण ऊपर लिखेहुए क्रमसे चार २ मासे रोज देना चाहिये ॥ इतिपट्धरण योग ॥ ५५९ ॥ अथ पक्वाशय गतस्यवातस्यलक्षणमाह ॥

पक्वाशयस्थोऽन्त्रकूजंशूलाटोपौकरोतिच । कृच्छ्रमूत्रपुरीषत्वमानाहंत्रिकवेदनम् ॥ आटोपोवातस्यक्षुब्धत्वम् । नतुगुडुगुड़ाशब्दस्तस्यान्त्रकूजनोक्तत्वात् ॥ ५६० ॥

पक्वाशयमें गईहुई वायुके लक्षण ॥

दूषित वायु के पक्वाशय में प्राप्त होनेपर पेटमें गड़गड़ाहट शूल वायुका कोप मूत्रकृच्छ्र मलका रुकना आनाह और त्रिकमें पीड़ा यह रोग उत्पन्न होतेहैं ॥ ५६० ॥

अथ तस्यचिकित्सा ॥

वह्नेःसंवर्द्धनंकार्य्यंकर्मोदावर्त्तकंतथा । देयःस्नेहविरेकश्चपक्वाशयगतेऽनिले ॥ वाते जठरगेदद्यात्क्षारचूर्णादिदीपनम्। शुण्ठीकुटजबीजाग्निचूर्णंकोष्णाम्बुकुक्षिगे॥५६१॥

पक्वाशयमें गईहुई वायुकी चिकित्सा ॥

वायुके पक्वाशय में प्राप्त होनेपर अग्निवर्द्धक तथा उदावर्त्त नाशक चिकित्सा करनी चाहिये और स्नेहके द्वारा विरेचन देना चाहिये उदरगत वायुमें क्षार तथा चूर्ण आदिक दीपन वस्तुदेनी चाहिये कुक्षिगत वायु में सोंठ इन्द्रजौ तथा चीतेके चूर्णको कुछ गरम जलके साथ सेवनकरे ॥ ५६१ ॥

अथ गुदगतस्यवातस्यलक्षणमाह ॥

ग्रहोविण्मूत्रवातानांशूलाध्मानाश्मशर्कराःजङ्घोरुत्रिकपार्श्वांसपृष्ठरोगोगुदेऽनिले ॥

रोगोऽत्ररुजापीड़ेतियावत् (अथतस्यचिकित्सा) वातेगुदंगतेदुष्टेकर्मोदावर्त्तकं हितम् ॥ ५६२ ॥ गुदामें गईहुई वायुके लक्षण तथा चिकित्सा ॥

वायुके गुदामें प्राप्त होनेपर मलमूत्र तथा वायुका अवरोध शूल अफरा पथरी शर्करा और जंघा पिंडली पसली कन्धे त्रिकतथा पीठमें पीड़ा होतीहै गुदामें गईहुई वायुमें उदावर्त्त में कहीहुई चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ५६२ ॥

अथ हृदयवातस्यचिकित्सा ॥

हृदयानिलनाशायगुडूचींमरिचान्विताम् । पिबेत्प्रातःप्रयत्नेनसुखंतप्ताम्भसासह ॥ पिबेदुष्णाम्भसापिष्टमाश्वगन्धंविभीतकम् । गुडयुक्तंप्रयत्नेनहृदयानिलनाशनम् ॥ देवदारुसमायुक्तंनागरंपरिपेषितम् । हृद्वातवेदनायुक्तःपीत्वासुखमवाप्नुयात् ॥ ५६३ ॥

हृदयगत वायुकी चिकित्सा ॥

हृदय में वायु के प्राप्त होनेपर मिर्च युक्त गिलोय कुछ गरम जल के साथ प्रातःकाल पिये असगंध बहेड़ा तथा गुड़को एक साथ पीसकर उष्ण जल से पिये अथवा देवदारु तथा सोंठको पीसकर उष्ण जल के साथ पिये इस्से हृदय में गईहुई वात शान्त होतीहै ॥ ५६३ ॥

अथ श्रोत्रादिगस्यवातस्य लक्षणमाह ॥

श्रोत्रादिष्विन्द्रियवधंकुर्य्यात्क्रुद्धःसमीरणः (अथतस्यचिकित्सा) श्रोत्रादिष्वनिलेदुष्टेकार्य्योवातहरःक्रमः । स्नेहाभ्यंगावगाहाश्चमर्द्दनालेपनानिच ॥ ५६४ ॥

श्रोत्रादिमें प्राप्तहुई वायुके लक्षण और चिकित्सा ॥

कुपित हुई वायु श्रोत्रादि जिस इन्द्रीमें प्राप्त होतीहै उसीके कामको नष्ट करतीहै श्रोत्रादिमें दूषित वायुके प्राप्त होनेपर वात नाशक प्रयोग और स्नेह अभ्यंग स्नान मर्द्दनतथा लेपनकरना चाहिये ५६४॥

अथ शिरागतस्यवातस्य लक्षणमाह ॥

कुर्य्याच्छिरागतःशूलंशिराकुञ्चनपूरणम् । सव्यथाभ्यन्तरायामंखल्लीकुब्जत्वमेवच ॥ कुञ्चनंसङ्कोचःबाह्यायामंपृष्ठेननतम् । अभ्यन्तरायामंक्रोडेनततंशूलंशिरायामेवपूरणंस्थूलत्वम् ॥ ५६५ ॥ शिराओं में गईहुई वायुके लक्षण ॥

दूषित वायुके शिराओं में प्राप्त होने पर शिराओं में शूल संकोच तथा स्थूलता होती है और आगेकी ओर तथा पीठ की ओर झुकना खल्ली तथा कुब्ज रोग होताहै ॥ ५६५ ॥

अथतस्यचिकित्सा ॥

स्नेहाभ्यंगोपनाहश्चमर्द्दनालेपनानिच।वातेशिरागतेकुर्य्यात्तथाचासृग्विमोक्षणम् ५६६

शिराओं में गईहुई वायुकी चिकित्सा ॥

शिराओं में वायुके प्राप्त होनेपर तैलादिकस्नेह मर्द्दन मल्हममर्द्दनलेप और रुधिर निकलवाना हितकारी है ॥ ५६६ ॥ अथ स्नायुगतस्यलक्षणमाह ॥

शूलमाक्षेपकःकम्पःस्तम्भःस्नाय्वनिलाद्भवेत् (अथ तस्यचिकित्सा) स्वेदोपनाहाग्निकर्मबन्धनोन्मर्द्दनानिच । क्रुद्धेस्नायुगतेवातेकारयेत्कुशलोभिषक् ॥ ५६७ ॥

स्नायुमें प्राप्त वायुके लक्षण और चिकित्सा ॥

स्नायुमें दूषित वायुके प्राप्त होनेपर शूल आक्षेप कम्प और स्तंभ होताहै इसमें स्वेद मल्हमसेक बन्धन और मर्दन करवाना चाहिये ॥ ५६७ ॥

अथ सन्धिगतस्य लक्षणमाह ॥

हन्तिसन्धिगतःसन्धीन्शूलशोथौकरोतिचाहन्तिविश्लेषयति(अथतस्यचिकित्सा) कुर्य्यात्सन्धिगतेवातेदाहस्नेहोपनाहनम् ॥ इन्द्रवारुणिकामूलमागधीगुड़संयुतम् । भक्षयेत्कर्षमात्रंतत्सन्धिवातंव्यपोहति ॥ ५६८ ॥

सन्धिगत वायुके लक्षण और चिकित्सा ॥

सन्धियोंमें दूषित वायुके प्राप्त होनेपर सन्धियोंके बन्धन शिथिल होतेहैं और शूल तथा सूजन होती है सन्धिगत वायुमें दाह स्नेह तथा मल्हम और इन्द्रायण की जड पीपल तथा गुड़.इनतीनों को बराबर मिलाकर एकतोले रोजखानेसे सन्धिगत वायुका नाश होताहै ॥ ५६८ ॥

उक्त रोगाणांकृच्छ्रसाध्यत्वमाह ॥

हनुस्तम्भार्दिताक्षेपपक्षाघातापतानकाः । कालेनमहतायत्नात्सिध्यन्तिचवानवा ॥ सतेष्वेकःकश्चिन्मुच्यतइत्यर्थःपरंकः सिध्यतियस्तरुणोभवतितथाबलवानुपद्रवरहित इच ॥ ५६९ ॥ ऊपर कहेहुये रोगोंकी कष्टसाध्यता ॥

हनुस्तम्भ अर्दित आक्षेप पक्षाघात और अपतानक यह रोग बहुत देरमें बड़े यत्नसे चिकित्सा करने से किसी २ बलवान् युवावस्था वाले मनुष्य के उपद्रव रहित होनेपर अच्छे होतेहैं ॥५६९॥

तानेववातोपद्रवानाह ॥

विसर्पदाहरुग्भङ्गमूर्च्छारुच्यग्निमार्द्दवैः । क्षीणमांसबलंवाताघ्नन्तिपक्षवधादयः॥ वातावातविकाराःकार्य्यकारणयोरभेदोपचारात् । वदितिपाठेततत्पेपक्षवधाइतियोज्य म् ॥ शूनंसुप्तत्वचम्भग्नंकम्पाध्माननिपीडितम् । रुजार्त्तिमन्तश्चनरंवातव्याधिर्विना शयेत् ॥ ५७० ॥ वायुके उपद्रव ॥

विसर्प दाह पीड़ा मलमूत्रका रुकना मूर्च्छा अरुचि तथा मन्दाग्निसे क्षीणमांस बलवाले पक्षाघातादि रोगी मरजातेहैं और सूजन त्वचाके स्पर्शका ज्ञान रहित होना अंगोंका टूटना कम्प आध्मान और बहुत पीड़ा इनसे युक्त होकर वात व्याधिवाला मनुष्य मरजाताहै ॥ ५७० ॥

इदानींपञ्चविधस्यप्रकृतस्यवायोःकार्य्यलिङ्गञ्चाह ॥

अव्याहतगतिर्यस्यस्थानस्थःप्रकृतौस्थितः । वायुः स्यात्सोऽधिकंजीवेद्वीतरोग समाशतम् ॥ ५७१ ॥ पांचप्रकार की वायुके कार्य्य और चिह्न ॥

जिनकी वायु मार्गोंके न रुकनेसे सब कहीं जानेवाली अपने स्थानमें स्थित और स्वाभाविक होय वह रोग रहित होकर सौ वर्षसे अधिक जीते हैं ॥ ५७१ ॥

अथ वातव्याधीनां सामान्यानिभेषजानि ॥

माषस्यार्द्धाढकंदेयंतुलार्द्धंदशमूलतः । पलानिछागमांसस्यत्रिंशद्द्रोणेऽम्भसःपचेत् ॥

चतुर्भागावशेषंतंकषायमवतारयेत् । प्रस्थेद्वेतिलतैलस्यपयोदद्याच्चतुर्गुणम् ॥ जीवनीयानिमञ्जिष्ठाचव्यंचित्रकट्फलम् । सव्योषंपिप्पलीमूलंरास्नामलकगोक्षुरम् ॥ आत्मगुप्तातथैरण्डःशताह्वलवणत्रयम् । देवदार्वमृताकुष्ठमश्वगन्धावचांशटी ॥ एतैरक्षमितैःकल्कैःपाचयेन्मृदुनाग्निना । पक्षाघातार्दितेपुंसिहनुस्तम्भार्दितेतथा ॥ कर्णशूलेशिरःशूलेतिमिरेचत्रिदोषजे । पाणिपादशिरोग्रीवाभ्रमणेमन्दएवच ॥ कलापखञ्जेपङ्गौचगृध्रस्यामपवाहुके । पानेवस्तौतथाभ्यंगेनस्येकर्णादिपूरणे ॥ तैलमेतत्प्रशंसन्तिसर्ववातविकारनुत् । महामाषादिनामेदंभाषितंमुनिभिःपुरा ॥ इतिमहामाषादितैलम् ।-चक्रदत्तात् ॥ ५७२ ॥

वातव्याधियों की सामान्य औषध ॥

उर्द १२८ तोले दशमूल २०० तोले बकरेका मांस १२० तोले इन सबको १०२४ तोले जलमें पाककरे फिर चौथाई बाकी रहजानेपर उतारले इसके उपरान्त यहक्वाथ तिलोंका तेल १२८ तोले उसका चोगुना दूध इन सबमें जीवनीय गण मजीठ चव्य चीता कायफल सोंठ पीपलामूल पीपल मिर्च रासना आमला गोखुरू केवांच के बीज रेंड़ी सतावर कालानोन सेंधानोन देवदारु बिटनोन गिलोय कूट असगन्ध वच और कचूर इन सबकोएक.२ तोले डालकर मन्दाग्निमें पकावे इसके सेवनसे पक्षाघात अर्दित हनुस्तम्भ कर्णशूल शिरकी पीड़ा तींगुर त्रिदोष हाथ पैर तथा ग्रीवाका कंपना चलने की शक्तिका कमहोना कलापखंज पंगु गृध्रसी तथा अपवाहुक यह सब रोग नष्ट होतेहैं यह तेल पीने में वस्तिक्रियामें शरीरके मलने में नस्यमें और कर्ण आदिकों में छोड़ने के लिये श्रेष्ठ है इस महा माषादि तेल से सम्पुर्ण वात.व्याधियोंका नाश होता है ॥ इति महा माषादि तेल ॥ ५७२ ।

माषायवातसीक्षुद्रामर्कटीचकुरण्टकः । गोकण्टःटुण्टकश्चैषांप्रत्येकंपलसप्तकम् ॥ चतुर्गुणाम्बुनापक्त्वापादशेषंश्रृतंनयेत् । कार्पासकास्थिवदरंशणबीजंकुलत्थकम् ॥ पृथक्चतुर्दशपलंचतुर्गुणजलेपचेत् । कषायंतत्रगृह्णीयाच्चतुर्थांशावशेषितम् ॥ प्रस्थञ्चछागमांसस्यचतुःषष्टिपलेजले । प्रक्षिप्यपाचयेद्धीमान्पादशेषंरसंनयेत् ॥ तैलप्रस्थेततःक्काथान्सर्वांस्तान्क्रमशःपचेत् । कल्कद्रव्यैःपचेदेभि रमृताकुष्ठसैन्धवैः ॥ रास्नापुनर्नवैरण्डैःपिप्पल्याशतपुष्पया । बलाप्रसारणीभ्याञ्चमांस्याकटुकयातथा ॥ पृथक्कर्षमितैरेतैःसाधयेन्मृदुनाग्निना । हन्यात्तैलमिदंशीघ्रंवातव्याधीनशेषतः ॥ आक्षेपकंपक्षघातमुरुस्तम्भापवाहुकौ । हस्तकम्पंशिरःकम्पंविश्वाचीमर्दितंतथा ॥ इति द्वितीयमाषादितैलम् । शार्ङ्गधरात् ॥ ५७३ ॥

उर्द जौ अलसी भटकटैया किवांचके बीज झिंटी गोखुरूतथा सोनापाठा इनसबको अट्ठाईस २ तोलेलेकर चौगुनेजलमें पाककरके जबचौथाई बाकीरहे तबछानले कपासकेबीज बेरसनके बीज तथा कुलथी इनसबको छप्पन २ तोले लेकर चौगुने जल में पाककरे जब चोथाई बाकी रहे तब छान ले ६४ तोले बकरे के मांसको चौगुने जल में पकाकर चौथाई रहने पर छानले गिलोय कूट सेंधा नोन रासना पुनर्नवा रेंड़ी पीपल सौंफ वरियारा गन्धप्रसारणी जटामांसी तथा मिर्च इनसब औषधियोंका एक२ तोला कल्क ऊपर कहेहुए संपूर्णकाढ़ों को ६४ तोले तेल में डालकर विधि पूर्वक

मंदाग्निमें पाककरे इसतेल के सेवनसे पक्षाघात ऊरुस्तंभ अपबाहुक हाथतथा, शिरकाकंपना वि-श्वाची तथा अर्दित आदिक संपूर्ण वात रोग नष्ट होते हैं ॥ इतिद्वितीय माषादि तैल ॥ ५७३ ॥

अश्वगन्धाबलाबिल्वंपाटलाबृहतीद्वयम् । श्वदंष्ट्रातिबलानिम्बाश्योनाकञ्चपुनर्नवाम् ॥ प्रसारिणीमग्निमन्थंकुर्य्याद्दशपलंपृथक् । चतुर्द्रोणेजलेपक्त्वापादशेषंशृतंनयेत् ॥ तैलाढ़केनसंयोज्यशतावर्य्यारसाढकम् । प्रक्षिपेत्तत्रगोक्षीरंततस्तैलाच्चतुर्गुणम् ॥ पृथक्पलमितैःकल्कैर्द्रव्यैरेभिःपचेद्भिषक् ॥ वचाचन्दनकुष्ठैलामांसीशैलेयसैन्धवैः । अश्वगन्धाबलारास्नाशतपुष्पेन्द्रदारुभिः । पर्णीचतुष्टयेनैवतगरेणप्रसाधयेत् ॥ तत्तैलंभोजनेऽभ्यंगेपानेवस्तौचयोजयेत् । पक्षाघातंहनुस्तम्भंमन्यास्तम्भंगलग्रहम् । कुब्जत्वंबधिरत्वञ्चगतिभंगंकटीग्रहम् । गात्रशोषेन्द्रियध्वंसंशुक्रनाशंज्वरक्षयम् ॥ अन्त्रवृद्धिंकुरण्डञ्चदन्तरोगंशिरोग्रहम् । पार्श्वशूलञ्चपङ्गुत्वंबुद्धिनाशञ्चगृध्रसीम् ॥ अन्यांश्चविविधान्वातान्हरेत्सर्वांगसंश्रयान् । अस्याप्रभावात्वन्ध्यापिनारीपुत्रंप्रसूयते ॥ यथानारायणोदेवोदुष्टदैत्यविनाशनः । तथेदंवातरोगाणांनाशनंतैलमुत्तमम् ॥ इतिमध्यमनारायणतैलम् ॥ ५७४ ॥

असगंध बरियारा बेल पाटला दोनोंभटकटैया गोखुरू अतिबला नींब सोनापाठा पुनर्नवा गंधप्रसारणी तथा अरणी इनसब औषधियों के चालीस २ तोले चूर्णको लेकर ४९६ तोले जलमें पकाकर चौथाई रहजाने पर उतारले फिरयहकाढ़ा और २५६ तोले सतावर का रस २५६ तोले तिलका तेल और तेलका चौगुना गौका दूध इन सब में वच चंदन कूट इलायची जटामासी सिलाजीत सेंधानोन असगंध बरियारा रासना सौंफ़ देवदारु मुद्गपर्णी माषपर्णी शालिपर्णी पृष्ठपर्णी और तगर इन सबके चार२ तोले कल्क को डालकर विधिपूर्वक पाककरे इसतेलको भोजन अंगमर्दन पानतथा वस्ति क्रिया में व्यवहार करनेसे पक्षाघात हनुस्तंभ मन्यास्तंभ गलग्रह कुब्जता वधिरता गतिभंग कटिग्रह पार्श्व शूल अंगोंका सूखना इन्द्रियध्वंस वीर्य्यनाश ज्वर राजयक्ष्मा अंत्रवृद्धि कुरंड दन्तरोग शिरोग्रह पंगुता बुद्धिनाश तथा गृध्रसी आदिक अनेक सर्वांग में होनेवाले वातरोग नष्ट होतेहैं इसतेल के प्रभाव से वन्ध्या स्त्री भी पुत्रको उत्पन्न करती है जैसे श्रीनारायण संपूर्ण दुष्ट दैत्योंकानाश करतेहैं इसीप्रकार यहतैल संपूर्ण वात रोगोंको नष्टकरताहै इतिमध्यम नारायणतैल ५७४॥

अथमहानारायणतैलम् ॥

तिलतैलंसमादायचतुराढ़कसम्मितम् । पञ्चपल्लवकल्केनशोधयेद्दोषशान्तये ॥ तत्राजंदुग्धमथवागव्यंतैलसमंपचेत् । शतावरीरसञ्चापितैलतुल्यंपचेद्भिषक् ॥ दशमूलीबलारास्नाशिग्रूत्पलपुनर्नवा । शेफालिकानागबलाबलाचैवप्रसारिणी ॥ अश्वगन्धासहचरोदर्भमूलंकरञ्जकः । खदिरंचन्दनंलोध्रंवचाशनपलाशकम् ॥ वकुलैरण्डवरुणशालयुग्मकटम्भराः । शिरीषःशिखरीवासाहिंस्राजम्बूविभीतकम् ॥ काञ्चनारःकपित्थश्चपारिभद्रःप्रियालकम् । पाषाणभेदशम्पाकदुग्धिकादाड़िमीफलम् ॥ उदुम्बरःसप्तलाचकन्यकामालतीत्वचम् । मागधीनलमूलञ्चयवकोलकुलत्थकम् ॥ आत्मगुप्तार्क

कार्पासबीजंवस्त्रादनीस्तुही। केतकीमूलधत्तूरलाङ्गलीगर्दभाण्डकम्॥ चित्रकञ्चमहानिम्बं पञ्चवल्कलमेवच । मुण्डीटेकारिमुसलीहंसपादीविशल्यकम् ॥ एषांदशपलान्भागान् वारिण्यष्टगुणेपचेत्। पादशेषंपरिश्राव्यतत्रतैलंपुनःपचेत् ॥ छागोमेषश्चहरिणएणश्च बहुशृंगकः । शशःशल्यःशिवागोधासिंहोव्याघ्रश्चभल्लुकः ॥ वन्योवराहखड्गोचम हिषोघोटकस्तथा । कपिर्बभ्रुर्बिडालश्चमूषकश्चोरुदर्दुरः ॥ वर्त्तीकस्तित्तिरिलावःखञ्ज रीटश्चकोरकः। उलूकोनीलकण्ठश्चवनकुक्कुटएवच । गृध्रश्चगरुड़ोहंसश्चक्रकारण्ड वोऽपिच। कपोतःसारसःक्रौञ्चोवन्यःपारावतस्तथा ॥ रोहितोमद्गुरश्चापिशिलीन्ध्रःशृंग कस्तथा। इल्लीसोगर्गरोवर्मिःक्कथकाकःपिकापिच । महामत्स्यःकच्छपश्चशिशुमारश्च सांकुचिः ॥ मकरोघण्टिकाकारस्तदलाभेतुगोधिका । यथालाभममीषाञ्चक्वार्थतैलसमं पचेत् ॥ रास्नाश्वगन्धामिसिदारुकुष्ठपर्णीचतुष्कागुरुकेसराणि। सिन्धूत्थमांसीरजनी द्वयञ्चशैलेयकंचन्दनपुष्करञ्च॥एलासयष्टीतगराब्दपत्रंभृंगोष्टवर्गस्तुवचापलासी॥ स्थौणेयवृश्चीवकचोरकाख्यंमूर्वात्वचंकट्फलपद्मकञ्च । मृणालजातीफलकेतकाख्यं सनागपुष्पंसरलंमुराच ॥ जीवन्तिकोशीरखरास्तथैवदुरालभावानरिकानखश्च । कैव र्त्तमुस्तार्जुनतिक्तकञ्चवातामखर्जूरकतुम्बराश्च । सधातकीग्रन्थिकपर्पटाश्चपटोलहेमा ह्वजयन्तिकाश्च ॥ त्रायन्तिकालम्बुषशक्रबीजंरसाञ्जनाभातिळ्तारुणाच । द्राक्षाकणा द्रोणपुनर्नवाश्च कौन्तीकृमिघ्नोहयमारकञ्च । नीलोत्पलंपद्मककारवीभ्यांरम्भानलो गोक्षुरकःक्षुरञ्च। कङ्कोलकालेयकुसुम्भपुष्पन्तुरुष्ककाश्मीरकसिक्थकञ्च ॥ लवंगक र्पूररसालकाण्डकस्तूरिकात्रालकमम्बरञ्च ॥ दारु देवदारु पर्णीचतुष्कं शालिपर्णी पृष्ठपर्णी मुद्गपर्णी माषपर्णी केशरः पुन्नागस्तस्य पुष्पं ग्राह्यम्। तदलाभेनागकेसरंग्राह्य म्। शैलेयकं छरीला । चन्दनमत्रश्वेतं पुष्करं पुष्करमूलंतगरस्चाप्यलाभेतुकुष्ठंदद्या द्विपग्वरः। भृंगस्त्वक्। अष्टवर्गालाभे शतावरीविदार्यश्वगन्धावाराहीद्विगुणादद्यात्। वाराहिगेंठिइतिलोके । पालासी कर्चूर भेदःगन्धपलाशीतिकाश्मीरेप्रसिद्धा तदलाभेक र्चूरएवदेयः।स्थौणेय गठिवनभेदः। ईषत् सुगन्धि थुनेर इतिलोके । वृश्चीवः श्वेत मूला पुनर्नवा। चोरकः ग्रन्थि पर्णस्यैवभेदः भड़िउर इति नेपालदेशे प्रसिद्धः । केत कस्य मूलं पुष्पञ्च दद्यात्। कैवर्तमुस्ताकेवटी मोथा गुड़तजी इतिचनाम । तिक्तकः किराततिक्तकः वातामं वादाम । हेमाह्वं धत्तूरस्यफलंमूलंपत्रञ्च । जयन्तिका जैतिल्व क। त्रायन्तिका अत्रलभ्यतएवनअलम्बुषा लज्जालु भेदः। पञ्चाङ्ग। आभा बब्बूलः नस्यत्वक्। अरुणा मञ्जिष्ठाद्रोणः द्रोणमारुक् पञ्चांगः पुनर्नवा रक्तपुष्पा। हयमार कः करवीरस्तस्यमूलम्। पद्मकं नीलोत्पलादन्योत्पलम्। पद्मकाष्ठमुक्तमेव । कारवी मगरेला। रम्भयाकन्दम्। क्षुरस्यफलानि सपाल काण्डम्। आण्डी सुगन्धद्रव्यम्।

कल्कानमीपांविपचेत्सुवैद्यः पृथक्पृथक्कर्षयुगोन्मितानाम् । शुभेचनक्षत्रमुहूर्त्तलग्ने सन्तोष्यविप्रांश्चभिषग्वरांश्च ॥ सम्पूज्यनारायणनामधेयंदेवंत्रिनेत्रंजगतामधीशम् । पात्रेतुहेम्नःखलुराजतेवाताम्रेऽथवालोहमयेऽपिरक्षेत् ॥ अभ्यञ्जनेऽञ्जनेनस्येनिरूहेचावगाहने । पानेचैतद्यथाव्याधिप्रयुञ्जीतचिकित्सकः ॥ बहुनात्रकिमुक्तेनतैलमेतत्प्रयोजितम्॥अवश्यं वानजान् व्याधीनशीतिमपिनाशयेत् । एतस्याभ्यासतोजन्तोर्जराजातु न जायते ॥ पतन्तिवलयोनैवपलितञ्चनजायते । नेत्रंतेजस्विनितरां गरुडस्येव जायते ॥ नोच्चैःश्रुतिर्नवाधिर्य्यं कर्णनादोनजायते । पाणिकम्पःशिरःकम्पः प्रलापश्चनजायते ॥ बुद्धिभ्रंशोनजायेत तस्मात्कर्म्मसुपाटवम् । यथाजलेनसिक्तस्यशाखिनःपल्लवादयः ॥ वर्द्धन्तेधातवस्तद्वद् देहिनोऽनेननित्यशः । आमंगर्भन्त्यजेत्यातुसूतिकारुग्युताचया ॥ याचदुःप्रसवक्षीणाताभ्यएतद्धितंपरम् । वन्ध्याचलभतेपुत्रंगर्भपातोनजायते॥योनिरोगाःप्रणश्यन्तिप्रदरश्चप्रशाम्यति। अस्मात्तैलवरादन्यत्कुत्रचिन्नास्तिभेषजम्॥बल्यंवृष्यंबृंहणञ्चरसायनमिदंमहत्। पुरादेवासुरेयुद्धेदैत्यैरभिहतान्सुरान्॥ भिन्नान्भग्नास्थिकान्विद्धान्पिचितान्व्यथयार्दितान् । दृष्ट्वाहितायदेवानांनराणाञ्चब्रवीदिदम् । तैलंनारायणोदेवोमहानारायणाभिधम्॥ इतिमहानारायणतैलम् ॥ ५७५॥

अथ महानारायण तैल ॥

तिलकातेल १०२४ तोले लेकर पंचपल्लवके कल्कके साथ पाककरके तेलके दोषोंको नष्टकरे फिर बकरीका दूध तेलके समान इतनाही सतावरका रस दशमूल बरियारा रासना सहँजन उत्पल पुनर्नवा संभालू नागबला बला असगन्ध भिंटी गंधप्रसारणी कुशकी जड़ करंजुआ करथा चन्दन लोध बच ढाक मुद्दसिली रेंडी बरुणा आसन दोनोंशाल कुटकी सिरस स्याहजीरा वांसा बालछड़ जामन बहेड़ा कचनार कैथा नीम चिरोंजी पाषाणभेद अमलतास दूधी अनार गूलर शातला धीकार चमेली तज पीपल नरकुलकीजड़ जो बेर कुलथी किवांचके बीज आक कपासके बीज गिलोय थूहर केतकीकी जड़ धतूरा फरिहारी पिलखन चीता बड़ानींव पंचवल्कल सुंडी टिकारी मुसली हंसपदी तथा विशल्यक इन सबको चालीस२ तोले लेकर दूने जल में पाककरे और चौथाई रहनेपर उतार लेवे बकरा मेढा हिरन एणनाम हिरण बारहसिंहा खरगोश सेई स्यार गोह सिंह व्याघ्र रीछ बड़ेलासूअर गेंडा भैंसा घोड़ा बन्दर नौला बिलाव मूसा मेढक बटेर तीतर लवा खंजन चकोर उल्लू मोर जंगलीमुर्गा गिद्ध गरुड़ हंस चकवीचकवा कारंडव कबूतर सारस बगला जंगलीकबूतर रोहूमछली महुरु शिलीन्ध्र शृंगक इल्लीस गर्गर वर्भि कूप काक पिक महामत्स्य कछुआ सूस सांकुच मगर घड़ियाल (घड़ियाल नमिलेतोगोह ; इनमेंसे जहांतक मिलसकें इनके मांस का काढा बनावे ऊपर कहेहुए तेल दूध और काढ़ोंमें रासना असगन्ध सौंफ देवदारु कूट शालिपर्णी पृष्ठपर्णी मुद्गपर्णी माषपर्णी सिलाजीत श्वेतचन्दन पुष्कर मूल अगर नागकेशर सेंधानोन जटामांसी दोनोंहल्दी इलायची मुलहठी तगर मोथा तेजपात दालचीनी अष्टकवर्ग (इनके अभाव में सतावर असगंध बिलारीकन्द और वाराहीकंदके दो२ भाग) बच गंधपलासी भटेउर श्वेत पुनर्नवा चोरक मरोरफली तज कायफल पद्माक कमलगोंडहंडी जायफल केतकी कीजड तथा फूल नागकेशर सरलसुरा जीवन्ती खस त्रिफला जवासा किवांचकेबीज

नखी केवर्तमोथा अर्जुन चिरायता बदाम खजूर धनियां धवई पीपलामूल पित्तपापड़ा परवल धतूरेके फल मूल तथापत्ते जयन्ती (यह नहीं मिलती) त्रायमाणा लज्जालू इन्द्रजौ रसोत बबूलकी छाल निसोत मजीठ दाख पीपल गूमा लालपुनर्नवा रेणुका वायविडंग कनेरकीजड़ नीलकमल कमल कालीजीरी केलेकीजड़ चीता गोखुरू ताल मखाना कंकोल पीतचन्दन कुसुम काफूल लोबान केशर मोम लौंग कपूर शिलारस मांडी लताकस्तूरी सुगंधवाला और अंबर इनसबके दो२ तोले कल्क डालकर अच्छे नक्षत्र मुहूर्त तथा लग्नमें ब्राह्मण देवता तथा वैद्योंको संतुष्ट करके और नारायण तथा श्री शिवजीका पूजनकरके विधि पूर्वक पाककरे इसतेलको सोने चांदी अथवा लोहेके पात्रमें अच्छे प्रकार से रक्खे वैद्य रोगके अनुसार मर्दन अंजन नस्य निरूहवस्ति अवगाहन अथवा पानमें इसका सेवन करावे इसके सेवनसे अस्सी प्रकारकी वात व्याधि नाश होतीहै इसके अभ्याससे वृद्धावस्थाकुर्रीतथा बालोंका पकना नहीं होताहै गरुड़के समान दृष्टि होती उच्चस्वरका सुनना बधिरता कर्णनाद हाथ तथा शिरका कांपना प्रलाप तथाबुद्धिभ्रंस नष्टहोताहै और कामों में सामर्थ्य होतीहै जैसे वृक्षकी जड़ में जल के सींचनेसे वृक्षकी शाखा तथा पत्ते बढ़तेहैं इसीप्रकार इसकेनित्य सेवनकरने से मनुष्यकी धातुबढ़ती हैं जिनस्त्रियों के गर्भ गिरपड़ते हैं प्रसव के समय अत्यन्त पीड़ा होतीहै अथवा जिनको प्रसूतका रोग होताहै उनके लिये यह अत्यन्त हितकारी है इस के सेवन से वन्ध्याओं के भी पुत्रहोताहै गर्भपात नहीं होता योनि के रोगतथा प्रदरका नाशहोताहै इस तेलसे बढ़कर और कोई औषध नहीं है यह बलकारी वीर्य्य वर्द्धक धातु वर्द्धक तथा अत्यन्त रसायन है पूर्व काल में देवता और दैत्यों के युद्धमें दैत्योंके द्वारा मारे हुए देवताओं को भिन्न टूटी हुई हड्डीवाले बिंधेहुये पके घाववाले और पीड़ासे व्याकुल देखकर देवता और मनुष्यों के हितके अर्थ श्रीनारायणने यहमहानारायण नामतेल कहाथा इतिमहानारायण तैल॥ ५७५॥

नागरंपिप्पलीमूलश्चव्यमूपर्णचित्रकम् ॥ भृष्टंहिंग्वजमोदाचसर्षपोजीरकद्वयम्॥ रेणुकेन्द्रयवौपाठाविडङ्गंगजपिप्पली। कटुकातिविषाभार्गीवचामूर्वाचपत्रकम् ॥ देवदारुकणाकुष्ठंरास्नामुस्तांचसैन्धवम् । एलात्रिकण्टकंपथ्याधान्यकञ्चविभीतकम् ॥ धात्रीचत्वगुशीरञ्चयवक्षारोऽखिलान्यपि।एतानिसमभगानिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत्॥यावन्त्येतानिचूर्णानितावनेवात्रगुग्गुलुः। संमर्द्यसर्पिषापश्चात्सर्वंसंमिश्रयेच्चतत्॥ एकंपिण्डञ्चतत्कृत्वाधारयेत्घृतभाजने । गुटिकाटङ्कमात्रास्तुखादेत्तास्तुयथोचिताः ॥ दोषकालाद्यपेक्षया (परिभाषा) आदौशाणोन्मितंखादेत्सार्द्धशाणंततःपरम् ॥ तदग्रेकर्षमर्द्धन्तुपूर्णंकर्षन्ततःपरम्। गुग्गुलुर्योगराजोऽयंमहामुख्योरसायनम्। मैथुनाहारपानानांनियमोनात्रविद्यते। अर्शांसिग्रहणीरोगंप्लीहगुल्मोदरानपि । आनाहंमन्दमग्निञ्चश्वासंकासमरोचकम् । प्रमेहंनाभिशूलञ्चक्रमिक्षयमुरोग्रहम्। सर्वान्वातामयान्हन्यादामवातमपस्मृतिम्। वातरक्तंतथाकुष्ठंतथादुष्टव्रणानपि। शुक्रदोषंरजोदोषमुदावर्त्तंभगन्दरम् ॥ रास्नादिकाथसंयुक्तःसर्व्ववातामयान्हरेत्। काकोल्यादिश्रृतात्पित्तंकफमारग्वधादिना। दार्व्वीश्रृतेनमेहांश्चगोमूत्रेणचपाण्डुताम्।मधुनामेदसोवृद्धिंकुष्ठंनिम्बश्रृतेनच॥ छिन्नाकाथेनवातास्रंशोथं मूलकजातश्रृतात्।पाटलाकाथसहितोवि

षंमूषकसम्भवम् ॥ त्रिफलाक्वाथसंयुक्तोदारुणांनेत्रवेदनाम् । पुनर्नवादिक्वाथेनहन्ति सर्वोदराण्यपि ॥ अथरास्नादिक्वाथोयथा ॥ रास्नापुनर्नवाशुण्ठीगुडूच्येरण्डजंशृतम् । सप्तधातुगतेवातेसमेसर्वाङ्गेऽपिचेत्॥इतिमहायोगराजगुग्गुलुः ॥ ५७६ ॥

सोंठ पीपलामूल चव्य मिर्च चीता भुनीहींग अजवाइन सरसों दोनोंजीरे रेणुका इन्द्रयव पाठा वायविडंग गजपीपल कुटकी अतीस भारंगी बच मरोड़फली तेजपात देवदारु पीपल कूट रासना मोथा सेंधानोन इलायची गोखुरू हड़ धनियां बहेडा आमला दालचीनी खस तथा जवाखार इनसब बराबर औषधियोंका चूर्ण करके इन सबके बराबर गूगुलको घीमें मलकर इन औषधियोंमेंमिलावे फिर पिंडसा बनाकर किसी घृतके पात्र में रखछोड़े और चारमासे की गोली बनाकर यथोचित दोष और कालके अनुसार खाय॥परिभाषा॥ पहले ३मासे फिर ४॥मासे इसके पीछे ६ मासे तदनन्तर १ तोला रोजखाय यह योगराज गूगुल महामुख्य रसायनहै इसके सेवनमें मैथुन तथा आहार पानका कोई नियम नहींहै इसके द्वारा बवासीर ग्रहणी प्लीहा गोला उदर आनाह मन्दाग्नि श्वास खांसी अरुचि प्रमेह नाभिकी पीड़ा कृमि क्षय उरोग्रह सबप्रकारके वातरोग आमवात मिर्गी कुष्ठ वातरक्त दुष्ट व्रण वीर्य तथा रजके दोष उदावर्त्त और भगन्दर इनरोगोंका नाश होताहै रासनादि क्वाथके साथ इस के सेवनसे सबप्रकारके वात रोगकाकोल्यादि गणके काढ़ेके साथ सेवन करने से पित्त आरग्वधादि गणके काढ़ेकेसाथ सेवनकरनेसे कफ दारुहल्दीके काढ़ेके साथ सेवन करने से प्रमेह गोमूत्रके साथ सेवन करने से पांडुरोग सहतके साथ सेवन करनेसे मेदकी वृद्धि नींबके काढ़ेके साथ सेवन करनेसे कुष्ठ गिलोयके काढ़ेके साथ सेवन करनेसे वातरक्त सूखीमूली के काढ़ेके साथ सेवन करने से सूजन पाटलाके काढ़ेके साथ सेवन करनेसे मूसेका विष त्रिफलाके काढ़ेके साथ सेवन करने से भयंकर नेत्ररोग और पुनर्नवाके काढ़ेके साथ सेवन करनेसे संपूर्ण उदररोग नष्ट होते हैं रासना पुनर्नवा सोंठ गिलोय और रेंडी इनके काढ़ेको रासनादि क्वाथ कहतेहैं ॥ इतिमहायोगराज गुग्गुलु॥५७६॥

युक्तःकल्कोरसोनस्यतिलतैलेनसिन्धुना । वातरोगान्हरेत्सर्वांज्वरांश्चविषमानपि रसोनकल्कः ॥ ५७७ ॥

तिलके तेल और सेंधेनोनके साथ लहसन के कल्कको सेवन करने से सब प्रकार के वात रोग और विषमज्वरोंका नाश होताहै ॥ इतिरसोनकल्क ॥ ५७७ ॥

क्षीरेणतैलेनघृतेनवापिमांसेनसार्द्धंलशुनानिखादेत् । शाल्योदनेनापिचषष्टिकेनप लार्द्धंवृद्ध्यादिवसानिसप्त ॥ वातोत्थरोगान्विषमज्वरांश्चशूलान्सगुल्मान्दहनस्यमा न्द्यम् । प्लीहानमुग्रंभुजपार्श्वशूलंशिरोव्यथांक्रन्ततिशुक्रदोषान् ॥ रसोनकल्कः॥ ५७८॥

दूध तेल घी मांस भात अथवा सांठी के चावलों के साथ लहसन का कल्क सात दिनतक दो २ तोले नित्यबढ़ाकर खाने से वात रोग विषमज्वर शूल गोला मन्दाग्नि प्लीहा भुजा तथा पसली की पीड़ा शिरकी पीड़ा और वीर्य्य दोषका नाश होताहै इतिरसोनकल्क ॥ ५७८ ॥

अन्नप्रकारैःपललप्रकारैर्गोधूमकैर्वायवशक्तुभिर्वा । दुग्धेनतैलेनघृतेनवापियुक्तानि शीतेलशुनानिखादेत् ॥ संवर्त्तकैर्लावकपिञ्जलैर्वामृग्याःपलैर्वाप्यथकौक्कुटैर्वा । वराह वार्त्तीरकहारिणैर्वासुसंस्कृतैरग्निबलंसमीक्ष्य ॥ ५७९ ॥

अन्नके प्रकार मांसके प्रकार गेहूं के बनेहुए पदार्थ जौके सत्तू दूध तेल अथवा घीकेसाथ शीतकालमें लहसन खाना चाहिये बत्तक लवा सफेदतीतर मृगी मुर्गा शूकर बटेर अथवा हिरन इनके मांस के साथ अग्नि बलके अनुसार लहसन सेवन करे ॥ ५७९ ॥

रसोनपक्ककन्दस्यगुलिकानिस्तुषीकृताःपाटयित्वाचमध्यस्थंदूरीकुर्य्यात्तदंकुरम् ॥ निश्युग्रगन्धनाशायदध्नासन्नाययरक्षयेत् । ततःप्रक्षाल्यसंशोष्यशिलायांपरिपेषयेत् ॥ कल्कस्यपञ्चमंभागंचूर्णमेषांविनिःक्षिपेत् । सौवर्चलंयवानींचभर्जितंहिंगुसैन्धवम् ॥ कटुत्रिकंजीरकञ्चसमभागानिचूर्णयेत् । तिलतैलञ्चकल्कस्यतुर्य्यांशंतत्रमिश्रयेत् ॥ खादेत्कर्षमितंप्रातःकिंवादोषाद्यपेक्षया । अनुपानंप्रकुर्वीतवातारिश्टतमन्वहम् ॥ सर्वाङ्गैकांगजंवातमर्दितञ्चापतन्त्रकम् । अपस्मारंतथोन्मादमूरुस्तम्भञ्चगृध्रसीम् ॥ उरःपृष्ठकटीपार्श्वकुक्षिपीडांक्रमीन्हरेत् । मद्यंमांसंतथाम्लञ्चरसंसेवेतनित्यशः ॥ आयासमातपंरोषमतिनीरंगुडंस्त्रियम् । रसोनमश्नन्पुरुषस्त्यजेदेतन्निरन्तरम् ॥ वर्जयेत्तदतीसारीप्रमेहीपांडुरोगवान् । अरोचकीगर्भिणीचमूर्च्छार्शोरोगसंयुतः ॥ रक्तपित्तीचशोषीचयक्ष्मीछर्द्दितोनरः । पित्तेतुपथ्यभुक्कुर्य्यात्प्रयोगान्तेविरेचनम् ॥ अन्यथातस्यजायन्तेकुष्ठपाण्ड्वामयादयः । स्त्रीस्तन्यंत्वरितंदद्याद्बालानामप्यनिच्छताम् ॥ तथाचलभतेसिद्धिमहावीर्य्यात्रसोनतः ॥ रसोनाष्टकम् ॥ ५८० ॥

पक्के लहसन के छिलके छीलकर जवोंके भीतर के अंकुर निकालगेरे फिर उसकी दुर्गन्धि के नाशके लिये दही मिलाकर रात्रिभर रक्खे इसके उपरान्त धोकर और सुखाके सिलपर पीसले फिर कालानोन अजवाइन भुनीहींग सैंधानोन त्रिकुटु तथाजीरा इनसब को बराबर लेकर चूर्णकर के जितनी लहसनकी चटनी होय उसका पंचमांश मिलावे और चौथाई तिलका तेल मिलावे फिर१ तोले अथवा अग्निबल के अनुसार उस औषध को खाकर रेंडीके काढ़ेका अनुपान करे इसके द्वारा सर्वाङ्ग तथा एकांग वात अर्दित अपतन्त्रक मिर्गी उन्माद ऊरुस्तंभ गृध्रसी कृमि और हृदयपीठ कमर पसली तथा कोखकी पीड़ा नष्ट होतीहै इस औषध का सेवन करनेवाला नित्य मद्य मांस खटाई तथा मांसका रस भोजन करे और परिश्रम धूप क्रोध बहुत जल गुड़ तथा मैथुनका त्याग करे अतीसार प्रमेह पांडु अरुचि मूर्च्छा बवासीर रक्तपित्त शोष यक्ष्मातथा छर्दिरोग वाले और गर्भिणी स्त्री इस औषध का सेवन नकरे पित्तरोग में पथ्य सहित इस औषधका सेवन करके अन्तमें विरेचन करना चाहिये नहीं तो कुष्ठतथा पांडु आदिक रोग उत्पन्न होतेहैं बालकों को इस औषधका सेवन कराकर अनिच्छा होनेपर भी स्त्रियोंका दूध पिलाना चाहिये इस प्रकार करनेसे महावीर्य वाले इस लहसन से कार्य्य सिद्ध होताहै ॥ इतिरसोनाष्टक ॥ ५८० ॥

अथ वातव्याधिपुरसाः ॥

रसोगन्धोवरावह्निगुग्गुलुःक्रमवर्द्धितः । तत्रैकभागःसूतःस्याद्गन्धकोद्विगुणःस्मृतः ॥ त्रिभागात्रिफलायोज्याचतुर्भागस्तुचित्रकः । गुग्गुलुःपञ्चभागःस्याद्रुतैलेनमर्दितः ॥ क्षिप्त्वातत्रोदितंचूर्णंतेनतैलेनमर्दयेत् । गुटिकांकर्षमात्रान्तुभक्षयेत्प्रातरेवहि ॥ नागरे

रण्डमूलानांकषायंप्रपिबेदनु। अभ्यज्यैरण्डतैलेनस्वेदयेत्पृष्ठदेशकम्॥ विरेकपरिणामातुस्निग्धमुष्णञ्चभोजयेत्॥ वातारिसंज्ञकोह्येषरसोनियतसेवितः॥ मासेनमरुतोरोगान्हरेत्सुरतवर्जिनः॥ वातारिरसः॥ ५८१॥

वातव्याधियोंपररस॥

पारा १ भाग गंधक २ भाग त्रिफला ३ भाग चीता ४ भाग और गूगुल ५ भाग इनसब औषधियों के चूर्णको रेंडीकेतेलके द्वारा मलकर एक २ तोलेकी गोली बनावे प्रातःकाल एकगोलीरोजखाकर सोंठ और अरंडकीजड़का काढ़ा पिये फिर रेंडीकेतेलको शरीरमें मलके पीठमें स्वेददेवे इसके उपरान्त दस्तआजाने पर स्निग्ध तथा उष्ण भोजन करावे इननियमोंके अनुसार महीनेभरतक मैथुन छोड़कर इसवातारि रसके सेवनसे वातरोगनष्टहोतेहैं॥ इति वातारिरस॥ ५८१॥

अथोरुस्तम्भाधिकारः॥

तत्रोरुस्तम्भस्याविप्रकृष्टं सन्निकृष्टंनिदानसंप्राप्तिपूर्वकं लक्षणमाह॥

शीतोष्णद्रवसंशुष्कगुरुस्निग्धैर्निषेवितैः। जीर्णाजीर्णेतथायाससंक्षोभस्वप्नजागरैः॥ सश्लेष्ममेदःपवनःसाममत्यर्थसञ्चितम्। अभिभूयेतरंदोषमूरुचेत्प्रतिपद्यते॥ सक्थ्यस्थिनीप्रपूर्य्यान्तःश्लेष्मणास्तिमितेनसः। तदास्तभ्नातितेनोरुस्तब्धौशीतावचेतनौ॥ परकीयाविवगुरुस्यातामतिशयेनतौ। ध्यानाङ्गमर्दस्तैमित्यंतन्द्राच्छर्द्यरुचिज्वरैः॥ संयुतौपादसदनकृच्छ्रोद्धरणसुप्तिभिः। तमूरुस्तम्भमित्याहुराढ्यवातमथापरे॥ जीर्णाजीर्णेकिञ्चिज्जीर्णेकिञ्चिदजीर्णेशीतादिभिर्निषेवितैः भुक्तेःसंक्षोभेणसंचलनेनदिवास्वप्नेनरात्रौजागरणेनअभिभूयदूषयित्वाइतरंदोषंकफंपित्तञ्च। स्तिमितेनआर्द्रेणाद्यतेनेतियावत्॥ नतुघनेन। सपवनःतदाऊरुंस्तभ्नाति। तेनस्तम्भेनअचेतनौशून्यौपरकीयाविव। अक्रियावित्यर्थः। ध्यानम्मूढता। पादसम्बन्धिनीभिःसदनकृच्छ्रोद्धरणसुप्तिभिश्चसंयुक्तौअयंसुश्रुतेनमहावातव्याधिषुपठितः॥ ५८२॥

ऊरुस्तंभका अधिकार। ऊरुस्तंभके दूरवाले और समीपीकारणों समेत संप्राप्ति और लक्षण॥

शीतल उष्ण द्रव सूखी भारी तथा स्निग्ध वस्तुओंके सेवन से कुछ जीर्ण तथा कुछ अजीर्ण में भोजनकरनेसे परिश्रमसे चलनेसे दिनमेंसोनेसे रात्रिमेंजागनेसे कफ तथा मेदयुक्त वायुबहुतसंचित आमयुक्त पित्त तथा कफको दूषितकरके जब जंघाओं में प्राप्त होताहै और पतले कफ से जंघाओं की हड्डियोंको पूर्णकरतीहैं तब जंघाओंको जकड़लेतीहै इसरोगमें जंघास्तब्ध शीतल शून्य कार्य्य रहित और बहुतभारीहोजातीहैं और रोगीको शरीरमें पीडागीलेवस्त्र से शरीर लिपटाहुआसा मालूमहोना तन्द्रा छर्दि अरुचि मूढ़ताज्वर और पैरोंमेंशिथिलता शून्यता तथा बहुत कष्टसे उठाना यहसब रोग होतेहैं इसको ऊरुस्तंभ और कोई आढ्य वात कहते हैं सुश्रुतने इसको महा वात रोगोंमें कहाहै ५८२

पूर्वरूप माह॥

प्राग्रूपंतस्यनिद्रातिध्यानंस्तिमितताज्वरः। रोमहर्षोऽरुचिच्छर्दिर्जङ्घोर्वोःसदनंतथा ५८३

ऊरुस्तंभका पूर्वरूप ॥

ऊरुस्तंभ होनेसे पहले बहुत निद्रा मूढता शरीर गीलेवस्त्रसे ढकाहुआसा मालूमहोवा ज्वररोमांच अरुचि छर्दि और पिंडली तथा जंघाओंमें शिथिलताहोतीहै ॥ ५८३ ॥

तस्यारूपमाह ॥

वातशङ्किभिरज्ञानात्तत्रस्यात्स्नेहनात्पुनः। पादयोःसदनंसुप्तिःकृच्छ्रादुद्धरणंतथा॥ जङ्घोरुग्लानिरत्यर्थंशश्वद्दाहाहवेदना। पादञ्चव्यथतेन्यस्तंशीतस्पर्शनवेत्तिच ॥ संस्थानेपीडनेगत्यांचालनेचाप्यनीश्वरः। अन्यनेयौहिसम्भग्नावूरुपादौचमन्यते ॥ अन्यनेयोअन्यचाल्योभवतःअज्ञानात्अनिश्चयात्। स्तम्भसुप्तिकर्म्मराहनम्पाददर्शनेनवातशङ्किभिःवातव्याधिशङ्किभिः॥ तत्रऊरुस्तम्भेस्नेहनात्स्नेहदानात्। स्नेहादिनास्नेहन्यांचिकित्सयाःपादसदनादयःऊरुभग्नोपमत्वात्तविकाराः स्युःजङ्घोरोर्गमनादावशक्तिः। अदाहवेदनाईषद्दाहेनसहवेदना ॥ ५८४ ॥

ऊरुस्तंभका अनुपशय ॥

जो वातरोगके लक्षणोंको देखकर ऊरुस्तंभका निश्चय न होसके तो वहां स्नेहन क्रिया करके निश्चयकरना चाहिये इसमें स्नेह न करनेसे पैरोंमें शिथिलता शून्यता तथा बहुतकष्टसे उठायाजाना होताहै पिंडलियोंमें अत्यन्त ग्लानि तथा वारम्वार कुछ दाह सहित पीड़ा होतीहै पैररखने में क्लेश होताहै शीतल स्पर्श नहीं मालूम होता पैरोंके रखनेमें दबानेमें चलनेमें तथा हिलाने डुलानेमेंशक्ति नहींरहती और जंघा तथा पैरटूटेहुएसे मालूमपड़तेहैं और दूसरोंसे उठानेकेयोग्यहोजातेहैं ५८४ ॥

अथोरुस्तम्भस्यारिष्ट लक्षणमाह ॥

यदादाहार्दितोदार्तोवेपनःपुरुषोभवेत्। ऊरुस्तंभस्तदाहन्यात्साधयेदन्यथानवम्॥ अन्यथादाहाद्युपद्रवरहितंतमपिनवम्उत्पन्नमात्रंसाधयेत् ॥ ५८५ ॥

ऊरुस्तंभ के अरिष्ट ॥

ऊरुस्तंभ में जो दाह पीडा तथा कंपहोय तो उसको असाध्य जानना चाहिये और जो दाहादिक उपद्रव न होवें तो नवीन ऊरुस्तंभ की चिकित्सा करे ॥ ५८५ ॥

अथ तस्यचिकित्सा ॥

स्नेहासृक्स्राववमनंवस्तिकर्म्मविरेचनम्। वर्जयेदामवातेतुयतस्तैस्तस्यकोपनम् ॥ तस्मादत्रसदाकार्यंस्वेदलङ्घनरूक्षणम् ॥ आममेदःकफाधिक्यान्मारुतंपरिरक्षता । यस्यात्कफप्रशमनंनतुमारुतकोपनम् ॥ तत्सर्वंसर्वदाकार्य्यमूरुस्तम्भस्यभेषजम्। सर्वोरूक्षःक्रमःकार्य्यस्तत्रादौकफनाशनः ॥ पश्चाद्वातविनाशायविधातव्याखिलाःक्रियाः। भोज्याःपुराणाःश्यामाककोद्रवोद्दालशालयः ॥ जाङ्गलैरघृतैर्म्मांसैःशाकैश्चालवणैर्हितैः। शाकैरलवणैर्दध्याज्जलतैलाज्यसाधितैः॥ सुनिषण्णकनिम्बार्कवृन्ताग्ग्वधपल्लवैः। वायसोवास्तुकाद्यैश्चसाधितैःशाकमूलकैः॥ शाकैरलवणैर्युक्तंजीर्णशाल्योदनंभिषक्५८६॥

ऊरुस्तंभकी चिकित्सा ॥

ऊरुस्तंभ में स्नेह रुधिर निकलवाना वमन वस्ति कर्म तथा विरेचनको त्याग करे क्यों कि इन के द्वारा ऊरुस्तंभ बढ़ताहै स्वेद लंघन तथा रूखापन ऊरुस्तंभ में आममेद तथा कफकी अधिकता होतीहै इसलिये हितकारी हैं परन्तु वायुके कोपपर दृष्टि रखनी चाहिये जो संपूर्ण वस्तु कफ नाशक होंय और वायुको कुपित न करें वह सब सदैव ऊरुस्तंभ में सेवन करनी चाहियें पहले कफ नाशक सब प्रकार की रूखी चिकित्सा करके पीछे वातनाशक चिकित्सा करनी चाहिये भोजन के लिये पुराना सामा कोदों वनकोदों शालि धान्यघृत रहित जंगली जीवोंका मांस तथा लवण रहित शाक देना चाहिये जल तेल तथा घीके द्वारा लवण रहित शाकों को पाक करके भोजनके लिये देवे चौपतिया नींब आक बेंगन अमलतास काकमांची मूली तथा बथुई आदिके शाक बिना नोन पाक करके इनके साथ शालि धान्यके चावलों का भात खिलावे ॥ ५८६ ॥

रूक्षणाद्वातकोपश्चेन्निद्रानाशार्त्तिपूर्वकः स्नेहस्वेदक्रमस्तत्रकार्योवातामयापहः । प्रतारयेत्प्रतिस्रोतोनदींशीतजलांशिवाम् ॥ सरश्चविमलंशीतंस्थिरतोयंपुनःपुनः। यथा विशुष्केऽस्यकफेशान्तिमूरुग्रहोव्रजेत् ॥ शरीरबलमग्निञ्चकार्य्यैवारक्षताक्रिया। सक्षारमूत्रस्वेदांश्चरूक्षाण्युत्सादनानिच ॥ ५८७ ॥

अधिक रूखी क्रियाके द्वारा वायु के कोपसेजो निद्राका नाशहोजाय तो वात नाशक स्निग्धस्वेद उसकोदेना चाहिये शीतल जलवाली नदियोंमें प्रवाहकी ओर रोगी को तेरावे और स्थिर शीतल तथा निर्मल जलवाले तालाब में बार बार रोगी को तेरावे इस क्रिया से कफके सूखजाने पर ऊरुस्तंभ शान्त होताहै शरीर बल तथा अग्नि के अनुसार यह रूखी क्रिया करनी चाहिये क्षार सूत्र स्वेद तथा रूखे उवटन प्रयोग करने चाहिये ॥ ५८७ ॥

कुर्य्याद्दाहेचमूत्राद्यैःकरञ्जफलसर्षपैः । मूलैर्वाप्यश्वगन्धायामूलैरर्कस्यवाभिषक् ॥ पिचुमर्दस्यवामूलैरथवादेवदारुणः। क्षौद्रसर्षपवल्मीकमृत्तिकासंप्रतैर्भिषक् ॥ गाढमुत्सादनंकुर्य्यादूरुस्तम्भेसवेदने।दन्तीद्रवन्तीसुरसासर्षपैश्चापिबुद्धिमान् ॥ तर्कारीसुरसाशिग्रुवचावत्सकनिम्बकैः । पत्रमूलफलैस्तोयंश्रृतमुष्णञ्चसेचनम् ॥ भल्लातकामृताशुण्ठीदारुपथ्यापुनर्नवा । पञ्चमूलीद्वयोन्मिश्राऊरुस्तम्भनिवर्हणाः ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलंभल्लातकफलानिच । कल्कंमधुयुतंपीत्वाऊरुस्तम्भाद्विमुच्यते ॥ ५८८ ॥

अत्यन्त पीड़ा युक्त ऊरुस्तंभ में करंजुआ तथा सरसों को गोमूत्रमें पीस कर लेपकरे अथवा असगन्ध आक नींब तथा देवदारुकी जड़को गोमूत्र में पीस कर लेपकरे या सहत युक्त सरसों तथा बामी की मिट्टी से खूब उवटन करेदंती मूषाकरनी रासना तथा सरसोंके द्वारा अथवा जयन्ती रासना सहँजन वच कुरैया तथा नींब इनके पत्ते जड़ तथा फलोंके द्वारा काढ़ा बनाकर कुछगरम २ पनिसे भिलावाँ गिलोय सोंठ देवदारु हड़पुनर्नवा तथा दशमूल इनके काढ़ेसे अथवा पीपल पीपलामूल तथा भिलावें के फल इनके कल्क को सहतडाल कर पीनेसे ऊरुस्तंभ का नाश होताहै ॥ ५८८ ॥

रास्नाशंपाकपथ्यामरिचमिसिशिवावेल्लशट्यश्वगन्धाः । यासाब्धिन्नाजमोदासुमुपमतिविषाट्टद्दारीबृहत्यौ ॥ शुण्ठीतिक्तायवानीसहचरचविकैरण्डदार्व्याजकण्यैऊ

रुस्तम्भामवातकफपवनरुजंदण्डकांश्चाशुहन्यात् । इतिरास्नादिक्वाथः ॥ ५८९ ॥

रासना सामा हड मिर्च सोंफ आमला बेलगिरी असगन्ध जवासा गिलोय अजवाइन सफेद तुलसी भतीस विधारा दोनों भटकटैया सोंठ कुटकी अजमोद झिंटी चव्य रेंडी दारुहल्दी और शालवृक्ष इनके काढ़ेके सेवन से हनुस्तंभ आमवात कफ वायुकी पीड़ा और दंडकरोग का नाश होता है इति रासनादि क्वाथ ॥ ५८९ ॥

ग्रन्थिकारुष्करकृष्णानांक्वाथंक्षौद्रान्वितंपिबेत् । लिह्याद्वात्रिफलाचूर्णंक्षौद्रेणकटुकायुतम् ॥ सुखाम्बुनापिबेद्वापिचूर्णंकट्वरणंनरः । पिप्पलीवर्द्धमानंवामाक्षिकेणगुड़ेनवा ॥ ऊरुस्तम्भेप्रशंसन्तिगम्भीरारिष्टमेवच । शिलाजतुंगुग्गुलुंवापिप्पलीमथनागरम् ॥ ऊरुस्तम्भेपिबेन्मूत्रैर्दशमूलीरसेनवा । त्रिफलापिप्पलीमुस्तंचव्यंकटुकरोहिणी ॥ लिह्याद्वामधुनाचूर्णमूरुस्तम्भार्दितोनरः । घृतंसौरेश्वरंदद्यादूरुस्तम्भेकफोत्तरे ॥ दद्यात्शुण्ठीघृतंवापिवैश्वानरमथापिवा । सैन्धवाद्यंहितंतैलममृताख्योऽपिगुग्गुलुः ॥ ५९० ॥

पीपलामूल भिलावाँ तथा पीपल के काढ़े में सहत डालकर पीनेसे त्रिफले का चूर्ण तथा कुटकी इनमें सहत मिलाकर चाटने से षट्धरण चूर्ण को कुछ गरमजल के साथ पीने से सहत अथवा गुड़ के साथ वर्द्धमान पिप्पली के सेवन से गंभीरारिष्ट के पीने से शिलाजीत गूगल पीपल अथवा सोंठ इनमेंसे किसीको गोमूत्र अथवा दशमूलके काढ़ेके साथ पीनेसे त्रिफला पीपल मोथा चव्य और कुटकी इनके चूर्ण को सहतके साथ चाटने से ऊरुस्तंभका नाशहोताहै अधिक कफवाले ऊरुस्तंभमें सौरेश्वर घृत शुंठीघृत वैश्वानरघृत सैंधवादि तैल तथा अमृतागुग्गुल सेवन करना चाहिये ॥५९० ॥

कुष्ठश्रीवेष्टकोदीच्यसरलंदारुकेशरम् । अजगन्धाश्वगन्धाचतैलंतैःसार्षपंपचेत् ॥ सक्षौद्रंमात्रयातस्मादूरुस्तम्भार्दितःपिबेत् ॥ इतिकुष्ठाद्यंतैलम् ॥ ५९१ ॥

कूट सरलनिर्यास सुगन्धबाला सरलकाष्ठ देवदारु नागकेशर अजमोद और असगंध इन औषधियों के द्वारा सरसों के तेल को पकाकर सहत मिलाके मात्राके अनुसार ऊरुस्तंभ में पान करे इति कुष्ठादितैल ॥ ५९१ ॥

पलाभ्यांपिप्पलीमूलान्नागरादष्टकट्वरम् । तैलप्रस्थसमंदध्नागृध्रस्यूरुग्रहापहम् ॥ सस्नेहदधिसम्भूतंतत्कट्वरमुच्यते । अष्टकट्वरतैलेचतैलंसार्षपमिष्यते ॥ पिप्पलीमूलशुण्ठ्याश्चप्रत्येकंद्विपलंकृतम् ॥ इतिअष्टकट्वरंतैलम् ॥ ५९२ ॥

पीपलामूल तथा सोंठ आठ२ तोले बिनामक्खन निकले दही का मट्ठा ३२ तोले और कड़ुवा तेल तथा दही चौंसठ२ तोले इनसबको विधि पूर्वक पाक करके इसतैलके सेवनसे गृध्रसी और ऊरुस्तंभ का नाशहोता है इति अष्ट कट्वर तैल ॥ ५९२ ॥

द्विपञ्चमूलीत्रिफलाचित्रकंदेवदारुच । एकाष्ठीलात्वपामार्गश्रेयसीवायसीशुभा ॥ चलाभार्गीपृथक्पर्णीस्रुवहामदयन्तिका । विशालोशीरकाश्मर्यातिस्रोदेयातथाग्निकः ॥ चिरबिल्वोह्यशोकश्चकलस्यंशुमतीतथा । पयस्यापीलुपर्ण्यश्चगडूचीचशतावरी ॥ एषांपञ्चपलान्भागान्जलद्रोणेपुसत्सु । अष्टभागावशेषेणपचेत्तैलाढ़कंशतम् ॥ कुष्ठश्च

शतपुष्पाचत्र्यूषणंचित्रकावरा। देवदार्व्वगुरुश्रेष्ठंविडंगंमुस्तमेवच ॥ अश्वगन्धास्थिरापाढामूलीश्यामाकमेवच। पिप्पल्यःशृंगवेरञ्चदन्तीहिंग्वम्लवेतसम् ॥ अनेनगर्भेणभिषक्पायेणचसाधयेत्। सिद्धशीतञ्चपूतञ्चक्षौद्रेणसहसंसृजेत् ॥ तदस्यनस्यपानार्थंतदेवाभ्यञ्जनेभवेत् । ऊरुस्तम्भश्चिरोद्भूतस्तैलेनानेनशाम्यति ॥ आमवातंशीतवातंक्षुद्रवातञ्चनाशयेत् ॥ इति द्विपञ्चमूलाद्यंतैलम् ॥ ५९३ ॥

दशमूल त्रिफला चीता देवदारु पाठा सटजीरा गजपीपल कौंआटोंटी मालकांगनी वरियारा भारंगी प्रस्नपर्णी रासना मंजिष्ठा खसगंभारी करंजुआ अशोक शालिपर्णी ककुनी क्षीरकाकोली पीलुपर्णी गिलोय और सतावर इनसबको बीस२तोले लेकर सातद्रोण जल में पाक करें जब अष्टमांश बाकी रहै तबउतार कर एक आढक तिलका तेल मिलावें फिर कूट सोंफ त्रिकटु चीता त्रिफला देवदारु अगर वायविडंग मोथा असगंध शालिपर्णी पाठा तालमूली श्यामा पीपल अदरक दन्ती हींग और अमलवेद इनकेकल्क मिलाकर विधि पूर्वक तेलका पाक करे फिरशीतल होजाने पर नस्य पान अथवा मर्दन में इसके सेवनसे बहुत पुराना ऊरुस्तंभ आमवात शीतवात और क्षुद्रवात नष्ट होते हैं इति द्विपंच मूलादि तैल ॥ ५९३ ॥

सिन्धुरुग्विश्वजासोग्राभार्गीयष्टीस्थिराफलैः । दारुविश्वशटीधान्यकृष्णाकट्फलपौष्करैः ॥ दीप्यकातिविषैरण्डनालानीलाम्बुजैःपचेत्। तैलंसकांजिकंहन्तिपानाभ्यंजननावनैः ॥ आमवातंकृमीन्गुल्मान्प्लीहोदरशिरोरुजः । मन्दाग्निपक्षसंध्यण्डवातस्तम्भगदानपि ॥ इति महासैन्धवाद्यंतैलम् ॥ ५९४ ॥

सेंधानोन कूट सोंठ वच भारंगी मुलहठी शालिपर्णी जायफल देवदारु कचूर धनियां पीपल काय. फल पुष्करमूल अजवाइन अतीस रेंड़ी नील नीलकमल इनसबकेद्वारा काँजी सहित तेलको पाक करके पान नस्य तथा मर्दन करनेसे आमवात कृमिवायगोला प्लीहा उदर शिरकेरोग मंदाग्नि पक्षाघात सन्धि तथा अंडकोशोंमें गईहुई वात और ऊरुस्तंभकानाश होताहै इतिमहा सेंधवादि तैल॥ ५९४॥

द्वेपलेसैन्धवात्पञ्चशुण्ठ्याग्रन्थिकचित्रकात् । द्वेद्वेभल्लातकास्थीनिविंशतिर्द्वेतथाऽढके ॥ आरनालात्पञ्चप्रस्थंतैलस्यैरण्डजस्यचाग्रधस्यूरुग्रहार्त्यार्तिसर्ववातविकारनुत् ॥ इति सैन्धवाद्यंतैलम् ॥ इति ऊरुस्तम्भनिदानचिकित्साधिकारः ॥ ५९५ ॥

सेंधानोन २ पल सोंठ ५ पल पीपलामूल तथा चीता दो २ पल भिलावेंके बीज २० आरनाल २ आढक इनसब औषधियोंके द्वारा एक प्रस्थ रेंड़ीके तेलको विधि पूर्वक पाक करके सेवनकरनेसे गृध्रसी ऊरुस्तंभ और सबप्रकारके वातरोग नष्ट होते हैं इति सेंधवादि तैल इति ऊरुस्तंभ निदान चिकित्साधिकार ॥ ५९५ ॥

अथाऽमवाताधिकारः। तत्रामवातस्यनिदानपूर्व्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥

विरुद्धाहारचेष्टाभ्यांमन्दाग्नेर्लोलुपस्यच । स्निग्धंभुक्तवतोह्यन्नंव्यायामंकुर्वतस्तथा ॥ वायुनाप्रेरितोह्यामश्लेष्मस्थानंप्रधावति । तेनात्यर्थमपक्वोऽसौधमनीभिःप्रपद्यते ॥ वातपित्तकफैर्भूयोदूषितःसोऽन्नजोरसः । स्रोतांस्यभिष्यन्दयतिनानावर्णोऽतिपिच्छि

लः ॥ जनयत्यग्निदौर्बल्यंहृदयस्यचगौरवम् । व्याधीनामाश्रयंह्येषआमसंज्ञोऽतिदारुणः ॥ विरुद्धाहारचेष्टस्यविरुद्धाहारःक्षीरमत्स्यादिः विरुद्धचेष्टाभुक्त्वाव्यायामादितयायुक्तस्यानिश्चलस्यानिर्व्यायामपरस्य । स्निग्धंभुक्तवतोह्यन्नंव्यायामंकुर्वतइतिमिलितोहेतुः ॥ श्लेष्मस्थानम्आमाश्रयसन्ध्यादि तेनश्लेष्मस्थानगमनेन । अत्यन्तअपक्वः ॥ पित्तस्थानगमनेनपक्वोभविष्यति । इत्यभिप्रायः ॥ असौआमःधमनीभिःप्रपद्यते । धमनीमार्गेश्चलति ॥ भूयोदूषितःअतिशयेनदूषितः । सोऽन्नजोरसःआमाःस्रोतांसिअभिष्यन्दयतिसंस्त्यिरसवहाशिरावरोधंकृत्वास्रोतांसिगुरूणिकुर्यात् ॥ नानावर्णःवातादिजनितवर्णभेदान्नानावर्णः ॥५९६ ॥

आमवातका अधिकार । आमवातकी निदान पूर्वक संप्राप्ति ॥

मिलेहुये दूध मछली आदि विरुद्ध भोजनसे भोजनके अन्तमें व्यायामआदि विरुद्ध चेष्टाओंसे मंदाग्निसे व्यायाम न करने से और स्निग्ध भोजन करके व्यायाम करने से वायुके द्वारा प्रेरणा कियागया आमरस कफके स्थान आमाशय तथा सन्धि आदिकोंमें प्राप्त होताहै फिर कफके स्थान में जानेसे अत्यन्त नहीं पकाहुआ यह आमरस नाडियोंके द्वारा चलकर वात पित्त तथा कफकेद्वारा फिर अत्यन्त दूषित होकर स्रोतोंमें स्थित होताहुआ रसकी लेचलनेवाली नाडियोंको रोकता है और भारीपन अनेक प्रकारके रंग तथा चिकनेपनको धारण करता है इसमें मंदाग्नि दुर्बलता तथा हृदयमें भारीपन यहसब होतेहैं और यहभयंकर आम अनेक प्रकारके रोगोंका स्थान है ॥ ५९६ ॥

अथामस्य लक्षणमाह ॥

अजीर्णतयोरसोजातःसञ्चितोहिक्रमेणवै।आमसंज्ञःसलभतेशिरोगात्ररुजाकरः॥ अजीर्णात्भुक्तादजीर्णात्॥५९७ ॥ आमका लक्षण ॥

अजीर्ण से उत्पन्न हुआ जो रस क्रमसे इकट्ठा होकर मस्तक तथा शरीर में पीड़ा को उत्पन्न करता है उसको आम कहते हैं ॥ ५९७ ॥

अथामवातस्यसामान्य लक्षणमाह ॥

युगपत्कुपितावेतौत्रिकसन्धिप्रवेशकौ । स्तब्धञ्चकुरुतोगात्रमामवातःसउच्यते॥ एतौवातकफौत्रिकसन्धिप्रवेशकौवेदनयेतिबोद्धव्यम् । तंत्रान्तरेतस्यैवलक्षणमाह ॥ अङ्गमर्दोऽरुचिस्तृष्णाआलस्यंगौरवंज्वरः । अपाकःशून्यताङ्गानामामवातस्यलक्षणम्॥ विशेषार्थमस्यसंग्रहः ॥ ५९८ ॥

आम वातका सामान्य लक्षण ॥

कफ और वात एक साथ कुपित होकर त्रिक् संधियों में पीड़ा सहित प्रवेश करते हुए शरीरमें स्तब्धता उत्पन्न करतेहैं इसको आमवात कहते हैं तन्त्रान्तरमें कहा हुआ है कि शरीर में पीड़ा अरुचि तृषा आलस्य शरीरका भारीपन ज्वर अन्नका न पकना और अंगों में सूजन यह आमवात के लक्षण हैं ॥ ५९८ ॥ अस्यैववाताधिकस्य लक्षणमाह ॥

सकष्टःसर्वरोगाणांयदाप्रकुपितोभवेत् । हस्तपादशिरोगुल्फत्रिकजानूरुसन्धिषु ॥

करोतिसरुजंशोथंयत्रदोषःप्रपद्यते। सदेशोरुज्यतेऽत्यर्थंव्याविद्ध इववृश्चिकैः॥ जनयेत्सोऽग्निदौर्बल्यंप्रसेकारुचिगौरवम्। उत्साहहानिंवैरस्यंदाहञ्चवहुमूत्रताम्। कुक्षौकठिनतांशूलंतथानिद्राविपर्ययम्॥ तृट्छर्दिभ्रममूर्च्छाश्चहृद्ग्रहंविड्विबद्धताम्। जाड्यन्त्रकूजमानाहंकष्टांश्चान्यानुपद्रवान्॥ यदाप्रकुपितोभवत्प्रकर्षेणकुपितःस्यात् तदावक्ष्यमाणानुपद्रवान्करोति। हस्त्येतादियत्रदोषःदुष्टःआमःप्रपद्यतेगच्छति॥ तानाहजाड्यम्। अकर्मण्यत्वम्॥अन्यानुपद्रवान्। कलापखञ्ज वादीन्॥ ५९९॥

बहुत बढ़ेहुये आमवात के लक्षण॥

आमवात जब बहुत बढ़ता है तब आगे कहे हुये उपद्रव होते हैं और उपद्रव सहित आम वात सबरोगोंकी अपेक्षा अधिक कष्ट साध्य होताहै हाथपैर मस्तक टकना त्रिकघुटने जंघातथा सन्धियोंमें पीड़ा सहित सूजन जिस जिस स्थानमें दूषित आमजाय उस उस स्थानमें बिच्छू काटने कीसी पीड़ा मंदाग्नि मुखसे पानी बहना अरुचि शरीर का भारीपन उत्साह कानाश मुखकी विरसता दाहबहुत मूत्र कोखमें कठिनतातथा शूल निद्राका नाश तृषा छर्दि भ्रम मूर्च्छा हृदयमें पीड़ा मलका रुकना शरीरमें जड़ता उदरमें गड़गड़ाहट आनाह और कलापखंज आदिक अन्य दुखदायी उपद्रव होतेहैं५९९॥

तस्यैवविशिष्टानि लक्षणान्याह॥

पित्तात्सदाहरोगञ्चसशूलंपवनात्मकम्। स्तिमितंगुरुकण्डूकंकफजुष्टंतमादिशेत्॥ गुरुकण्डूकम्बहुकण्डूकम्॥ ६००॥

आमवात के विशेप लक्षण॥

पित्त से हुये आमवात में दाह तथा शरीरका रक्तवर्ण होना वातज में अत्यन्त पीड़ा और कफज आमवातमें शरीरकागीले कपड़ेसे ढकाहुआ सा मालूमपड़ना तथाबहुत खुजली होतीहै ६००॥

तस्यसाध्यत्वादिकमाह॥

एकदोषानुगःसाध्योद्विदोषोयाप्यउच्यते।सर्वदेहचरैःशोथैःसकष्टःसान्निपातकः॥६०१॥

आमवात के साध्यादि लक्षण॥

एकदोष वाला साध्य दोदोष वाला याप्य और संपूर्ण अंगोंमें सूजन सहित तीन दोषवाला आमवात असाध्य होता है॥ ६०१॥ तत्रआमवातस्यचिकित्सा॥

लंघनंस्वेदनंतिक्तंदीपनानिकटूनिचविरेचनंस्नेहनञ्चवस्तयश्चाममारुते॥ रूक्षःस्वेदोविधातव्योवालुकापुटकैस्तथा। उपनाहाश्चकर्तव्यास्तेऽपिस्नेहविवर्जिताः॥ आमवाताभिभूतायपीड़ितायपिपासया। पञ्चकोलेनसंसिद्धंपानीयंहितमुच्यते॥ शुष्कमूलकयूषंवायूषंवापाञ्चमौलिकम्। रसकंकाञ्जिकंवापिशुण्ठीचूर्णावचूर्णितम्॥ सौवीरंशिग्रुवार्ताकंतथातिक्तफलानिच। वास्तूकशाकंसारिष्टशाकंपौनर्नवंहितम्॥ पटोलंगोक्षुरञ्चैववरुणंकारवेल्लकम्। यवान्नंकोरदूषान्नंपुराणंशालिषष्टिकम्॥ लावकानांतथामांसंहितंतक्रेणसंस्कृतम्। हितश्चयूषःकौलत्थःकलायश्चणकस्यच॥ रुच्यंदद्याद्यथासात्म्यमामवातहितञ्चयत्॥ ६०२॥

आमवातकी चिकित्सा ॥

लंघन स्वेदन तिक्त कटु तथा दीपनवस्तुविरेचन स्नेहपान और वस्तिक्रिया आम वातमें हितकारी हैं वालुकी पोटलियों से रूखा स्वेद और स्नेह रहित वस्तुओंका उबटन करना चाहिये आमवात में तृपा अधिक होनेपर पंचकोलके द्वारा पाक किया हुआ जल सूखी मूलों का यूप पंचमूल का यूप मांसका रस अथवा सोंठके चूर्णसे युक्त काँजी का पान कराना चाहिये सौवीर गिलोय बैंगन तिक्त फल वथुई नीव पुनर्नवाका शाक परवल गोखुरू वरुणा करेला जौ कोदों पुराने शालिधान्य तथा सांठी मट्ठे में पाक किया हुआ लवाका मांस और कुलथी मटर तथा चनेका यूप और अन्य हित॰ कारी तथा रुचिकारी वस्तु आमवात में देनी चाहिये ॥ ६०२ ॥

शतपुष्पावचाविश्वश्वदंष्ट्रावरुणात्वचः । पुनर्नवासदेवाह्वसटीमुण्डिलिकाःसमाः ॥ प्रसारणीवतर्कारी फलञ्चमदनस्यच । सुक्तकाञ्जिकपिष्टाच कोष्णाचलेपनेहिता ॥ अ हिंस्राकेबुकान्मूलं शिग्रूर्वल्मीकमृत्तिका । मूत्रपिष्टैश्चकर्त्तव्यमुपनाहः प्रलेपनम् ६०३॥

सौंफ वच सोंठ गोखुरू वरुणाकी छाल पुनर्नवा देवदारु कचूरमुंडी गन्धप्रसारणी जयन्ती तथा मैनफल इनको सिरकेमें तथा कांजीमें पीसकर गरम २ लेपकरनेसे और कुलेखाड़ा केतकीकीजड़ सहजना तथा बामीकीमिट्टी इनसबको गोमूत्रमें पीसकर लेपकरनेसे आमवातका नाशहोताहै ६०३॥

चित्रकंकटुकापाठा कलिंगातिविषामृता देवदारुवचामुस्तनागरातिविषाभया । पि वेदुष्णाम्बुनानित्यमामवातस्यभेषजम् ॥ शटीशुंठ्यभयाचोग्रादेवाह्वातिविषामृताः । क षायमामवातस्य पाचनंरूक्षभोजनम् ॥ पुनर्नवाचबृहती वर्द्धमानकणिज्जके । कल्पये त्क्वाथमामेमूर्वाशिग्रुद्रुमैर्भिषक् ॥ सेचनञ्चामवातस्य रूबुकपयसापिवा ।लिह्यात्पथ्यां सविश्वांवा मूत्रैर्वागुग्गुलुंपिवेत् ॥ विश्वालम्बुपयोःकल्कमद्याद्वातिलविश्वयोः । विश्व पथ्यामृताक्राथं कव्णेपकौसिकान्वितम्॥कटीजङ्घोरुपृष्ठानां रुजंपीतंनिवर्त्तयेत् ६०४ ॥

चीता कुटकी पाठा इन्द्रयव अतीस तथा गिलोय अथवा देवदारु वच मोथा सोंठ अतीस तथा हड इनसबको पीसकर गरमजलके साथ नित्य पीनेसे कचूर सोंठ हड वच देवदारु अतीस तथा गिलोय इनसबके काढ़ेको पीनेसे पुनर्नवा भटकटैया रेंडी तथा मरुआ अथवा मरोड़फली सहजन तथा पारिजात के द्वारा काढ़ा बनाकर पीनेसे रेंडीको दूधमें पाककर सेवन करने से अथवा गोमूत्र के साथ गूगुलपीने से हड़ तथा सोंठके चाटने से और सोंठ तथा लजालूका चूर्ण अथवा तिल तथा सोंठके कल्कको खानेसे आमवातका नाश होता है सोंठ हड़ तथा गिलोय इनके काढ़ेमें गूगुल डालकर कुछ गरम २ पीनेसे कमर पिंडली जंघा तथा पीठकी पीड़ाका नाश होता है ॥ ६०४ ॥

हिंगुचव्यंविड्शुण्ठी कृष्णाजाजीसपुष्करम् । भागोत्तरमिदंचूर्णंपीतंवातामजिद्भवेत् इतिहिंग्वाद्यंचूर्णम् ६०५ ॥

हींग १ भा० चव्य २ भा० विड्नोन ३ भा० सोंठ ४ भा० पीपल ५ भा० कालीजीरी ६ भा० और पुष्करमूल ७ भा० इनसबके चूर्णको गरम जलके साथ पीनेसे आमवातका नाश होता है इति हिंग्वादि चूर्ण ॥ ६०५ ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलंसैन्धवंकृष्णजीरकम् । चव्यचित्रकतालीसपत्रकंनागकेशरम्॥

एषांद्विपलिकान्भागान् पंचसौवर्च्चलस्यच । मरिचाजाजिशुण्ठीनामेकैकस्यपलंपलम्॥ दाड़िमात्कुडवञ्चैव द्वेपलेचाम्लवेतसात् । सर्व्वमेकत्रसंक्षुद्य योजयेत्कुशलो भिषक्॥ पिप्पल्यादिमितिख्यातं नष्टस्याग्नेश्चदीपनम् । अर्शांसिग्रहणीगुल्ममुदरंसभगंदरम्॥ कृमिकण्ड्वरुचींर्हन्यात् सुरयोष्णोदकेनवा॥ नातःपरतरंकिञ्चिदामवातस्यभेषजम्। इतिपिप्पल्याद्यं चूर्णम् ६०६॥

पीपल पीपलामूल सेंधानोन कालाजीरा चव्य चीता तालीस तथा नागकेशर यहसब आठ २ तोले,कालानोन २० तोले मिर्च कालीजीर तथा सोंठ एक २ पल अनार १ कुड़व और अमलवेद २ पल इनसब औषधियोंको एक साथ कूटकर सुरा अथवा गरम जलके साथपीने से मन्दाग्नि बवासीर ग्रहणी गोला उदर भगन्दर कृमि खुजली तथा अरुचिका नाशहोता है इससे बढ़कर आमवात की कोई औषधि नहींहै इति पिप्पल्यादिचूर्ण॥ ६ ६॥

पथ्याविश्वयवानीभिस्तुल्याभिश्चूर्णितंपिबेत् । तक्रेणोष्णोदकेनापिकाञ्जिकेनाथवा पुनः॥ आमवातंनिहन्त्याशु शोथंमन्दाग्नितामपि । पीनसंकासहृद्रोगं स्वरभेदमरोचकम् इति पथ्याद्यं चूर्णम्॥ ६०७॥

हड़ सोंठ तथा अजवाइन इनसबको बराबर लेकर चूर्ण करके मट्ठे उष्ण जल अथवा कांजी के साथ पीनेसे आमवात सूजन मन्दाग्नि पीनस खासी हृदयके रोग स्वर भेद तथा अरुचिका नाश होताहै इति पथ्यादि चूर्ण॥ ६०७॥

रसोनविश्वनिर्गुण्डी क्वाथमामार्दितःपिबेत् । नातःपरतरंकिञ्चिदामवातस्यभेषजम् इति रसोनादि कषायः॥ ६०८॥

लहसन सोंठ और निर्गुंडीके काढ़ेके पीनेसे आमवातका नाशहोताहै इससे बढ़कर आमवात की और औषधि नहींहै इति रसोनादिकषाय॥ ६०८॥

रास्नांगुडूचीमेरण्डं देवदारुमहौषधम् । पिबेत्सर्व्वांगिके वाते सामेसन्ध्यस्थिमज्जगे॥ इति रास्नापञ्चकः॥ ६०९॥

रासना गिलोय रेंड़ी देवदारु और सोंठ इनकेकाढ़ेको पीनेसे सर्वांग संधि अस्थि तथा मज्जा में प्राप्तहुए आमवातका नाशहोता है इति रासना पंचक॥ ६०९॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरैः। क्वथितंवारितत्पेयमामवातविनाशनम्॥ शठीविश्वौषधीकल्कं वर्षाभूक्वाथसंयुतम् । सप्तरात्रंपिबेज्जन्तुरामवातविनाशनम्॥ इति शठ्यादिः॥ ६१०॥

पीपल पीपलामूल चव्य चीता तथा सोंठ इनके काढ़ेके पीनेसे आमवातका नाशहोता है कचूर औरसोंठके कल्कको पुनर्नवाके काढ़ेकेसाथ सातदिनपीनेसे आमवातकानाशहोताहै इतिशठ्यादिः६१०

रास्नामृतारग्वधदेवदारुत्रिकण्टकैरण्डपुनर्नवानाम्। क्वाथंपिबेन्नागरचूर्णमिश्रं जङ्घोरुपार्श्वत्रिकपृष्ठशूली॥ इति रास्नासप्तकः॥ ६११॥

रासना गिलोय अमलतास देवदारु गोखुरू रेंड़ी और पुनर्नवा इनकेकाढ़ेमें सोंठका चूर्णमिलाने से पिंडली जंघा पसली त्रिक तथा पीठकाशूल नष्टहोताहै इतिरासनासप्तक ॥ ६११ ॥

आमवातेकणायुक्तंदशमूलीजलंपिबेत् । खादेद्वाप्यभयाविश्वंगुडूचीनागरेणवा ॥ चित्रकेन्द्रयवापाठाकटुकातिविषाभया । आमाशयोत्थवातघ्नंचूर्णंपेयंसुखाम्बुना६१२॥

दशमूल के काढ़ेमें पीपल डालकर पीने से सोंठ तथा हड़के खाने से अथवा सोंठ के साथ गिलोय के सेवनसे चीता इन्द्रयव पाठा कुटकी अतीस तथा हड़ इनके चूर्णको गरम जलके साथ पीने से आमवात का नाश होताहै ॥ ६१२ ॥

पुनर्नवामृताशुण्ठीशताह्वावृद्धदारकम् । शटीमुण्डितिकाचूर्णमारनालेनपाययेत् ॥ आमाशयोत्थवातघ्नंचूर्णंपेयंसुखाम्बुना । आमवातंनिहन्त्याशुगृध्रसीमुद्धतामपि ॥ इति पुनर्नवादिचूर्णम् ॥ ६१३ ॥

पुनर्नवा गिलोय सोंठ सोंफ विधारा कचूर और मुंडी इनसबके चूर्णको आरनाल अथवा गरम जलके साथ पीनेसे आमवात तथा बढ़ीहुई गृध्रसीका शीघ्रनाश होताहै इतिपुनर्नवादि चूर्ण६१३॥

कर्षंनागरचूर्णस्यकाञ्जिकेनपिबेत्सदा । आमवातप्रशमनंकफवातहरंपरम् ॥ पंचकोलकचूर्णन्तुपिबेदुष्णेनवारिणा । मन्दाग्निशूलगुल्मामकफारोचकनाशनम् ॥ आमवातगजेन्द्रस्यशरीरवनचारिणः । एकएवनिहन्त्याशुएरण्डस्तैलकेशरी ॥ एरण्डतैलयुक्तांहरीतकींभक्षयेन्नरोविधिवत् । आमानिलार्तियुक्तोगृध्रसीवृद्ध्यर्द्दितोनियतम् ॥ आरग्वधस्यपत्राणिभृष्टानिकटुतैलतः । आमघ्नानिनरःकुर्यात्सायंभक्तान्वितानिच ॥६१४॥

१ तोले सोंठ के चूर्णको कांजीके साथ नित्यपीने से आमवात कफ तथा वातका नाश होताहै पंचकोलके चूर्णको गरम जल के साथ पीनेसे मंदाग्नि शूल गोला आमदोष कफ तथा अरुचि का नाश होताहै शरीररूपीवनमें विचरने वाले आमवात रूपी हाथीको केवल रेंड़ीका तेल रूपी सिंह मारता है रेंड़ीके तेलके साथ हड़के चूर्णको खानेसे आमवात गृध्रसी वृद्धि तथा अर्दित रोगका नाश होताहै अमलतास के पत्तोंको कड़ुए तेलमें भूनकर सायंकालके भोजनके साथ खानेसे आमवात का नाश होताहै ॥ ६१४ ॥

वायुकट्याश्रितःशुद्धःसामोवाजनयेद्रुजम् । कटीग्रहःसएवोक्तःपंगुसक्थोर्द्वयोर्वधात् ॥ शुण्ठीगोक्षुरकक्वाथःप्रातःप्रातर्निषेवितः । सामेवातकटीशूलेपाचनंरुक्प्रणाशनम् ॥ यवक्षारसमायुक्तंमूत्रकृच्छ्रविनाशनम् । दशमूलीकषायेणपिबेद्वानागरम्भसा ॥ कटीशूलेपुपातव्यंतैलमेरण्डसम्भवम् । महौषधगुडूच्योश्चक्वाथंपिप्पलिसंयुतम् ॥ पिबेद्गामेसरुकोष्ठेकटीशूलेविशेषतः । विशोध्यैरण्डबीजानिपिष्ट्वाक्षीरेविपाचयेत् ॥ तत्पायसंकटीशूलेगृध्रस्यांपरमौषधम् । सर्पिस्तैलंगुडंसुक्तंपञ्चमंविश्वभेषजम् ॥ पीतमेतद्भवेत्सद्यस्तर्पणंकटिशूलनुत् । नहिचैतत्समंकिंचिन्निरामेकटिमारुते ॥ शुक्तरुवल्कलसहितंगोमूत्रंस्थापितन्तुसप्ताहम् । हिंगुवचाशतपुष्पासैन्धवयुक्तेनतेनाथ ॥ तत्पुटपकंहन्यात्कटीरुजंदारुणांपुंसाम् । आममेदोद्भवानविकारांश्चानिलोद्भवान् ॥ ६१५ ॥

आमयुक्त अथवा केवल वात कमरमें स्थित होकर जो पीड़ाको उत्पन्न करती है उसको कटिग्रह कहतेहैं और दोनों जंघाओंके नाशहोनेसे पंगुता होतीहै सोंठ तथा गोखुरूके काढ़ेको प्रात काल पीने से आमवात में आम का पाक और कटिग्रह में पीड़ा का नाश होताहै और इसमें जवाखार डालकर पीने से मूत्रकृच्छ्र का नाश होताहै दशमूल का काढ़ा सोंठका काढ़ा अथवा रेंड़ी का तेल पीने से आमवात का नाश होता है सोंठ और गिलोय के काढ़े में पीपल डालकर पीने से आमवात कोष्ठ की पीड़ा और विशेष करके कमर के शूल का नाश होता है रेंड़ी के बीजों को छील कर पीसकर दूध में खीर बनाकर खाने से गृध्रसी तथा कटिशूल का नाश होता है घी तेल गुड़ सिरका और सोंठ इनको पीने से शीघ्रही तृप्ति और कमर के शूल का नाश होताहै आम रहित कमर के शूल की इससे बढ़कर और कोई औषधि नहीं है सिरसकी छालको सातदिन तक गोमूत्र में भिगोवे फिर इस में हींग वच सौंफ और सेंधानोन मिलाकर पुटपाक करे इसके सेवन से भयंकर कमर की पीड़ा आम दोष मेदकी वृद्धि से हुए रोग और वातके विकार नष्टहोते हैं ॥ ६१५ ॥

अमृतानागरगोक्षुरुमुण्डितिकावरुणकैःकृतंचूर्णम् । मस्त्वारनालपीतंसामानिलनाशनंख्यातम् ॥ इतिअमृताद्यंचूर्णम् ॥ ६१६ ॥

गिलोय सोंठ गोखुरू मुंडी और वरुणाकी छाल इनसबके चूर्णको दहीके तोड़ अथवा आरनाल के साथ पीने से आमवातका नाशहोताहै ॥ इतिअमृतादि चूर्ण ॥ ६१६ ॥

अलम्बुषागोक्षुरकंत्रिफलानागरामृताः । यथोत्तरंभागवृद्ध्याश्यामाचूर्णञ्चतत्समम् ॥ पिबेन्मस्तुसुरांतत्रकाञ्जिकोष्णोदकेनवा । आमवातंजयत्याशुसशोथंवातशोणितम् ॥ त्रिकजानूरुसन्धिस्थज्वरारोचकनाशनम् । अलम्बुषादिकंचूर्णंरोगानीकविनाशनम् ॥ हरीतक्यक्षधात्रीभिःप्रसिद्धात्रिफलाक्रमात् । प्रत्येकंतेनवायुज्याद्भागवृद्धिंयथोत्तरम् ॥ इतिअलम्बुषादिचूर्णम् ॥ ६१७ ॥

मुंडी १ भाग गोखुरू २ भाग हड़ ३ भाग बहेड़ा ४ भाग आमला ५ भाग सोंठ ६ भाग और गिलोय ७ भाग इन संपूर्ण औषधियोंको पीसकर सबकी बराबर काली सारिवामिलावे दहीका तोड़ मद्य कांजी अथवा गरमजल के साथ इसके सेवन से सूजन सहित आमवात ज्वर अरुचि और त्रिक घुटने जंघातथा संधियों की पीड़ा का नाश होताहै ॥ इति अलंबुषादिचूर्ण ॥ ६१७ ॥

अलम्बुषागोक्षुरकंमूलंवरुणकस्यच । गुडूचीनागरंचेतिसमभागानिकारयेत् ॥ काञ्जिकेनतुतत्पेयंविडालपदमात्रकम् । आमवातेप्रवृद्धेचयोगोयममृतोपमः ॥ इतिअलम्बुषाद्यंचूर्णम् ॥ ६१८ ॥

मुंडी गोखुरू वरुणा की जड़ गिलोय और सोंठ इन सब बराबर औषधियोंको पीसकर कांजी के साथ पीनेसे बहुत बढ़ी हुई आमवात का नाश होता है ॥ इति अलंबुषादि चूर्ण ॥ ६१८ ॥

अलम्बुषागोक्षुरकंगुडूचीवृद्धदारुकम् । पिप्पलीत्रिवृतामुस्तावरुणंसपुनर्नवम् ॥ त्रिफलानागरञ्चेतिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् । मस्त्वारनालतक्रेणपयोमांसरसेनवा ॥ आमवातंनिहन्त्याशुश्वयथुंसन्धिसंस्थितम् । इतिअलम्बुषाद्यंचूर्णम् ॥ ६१९ ॥

मुंडी गोखुरू गिलोय विधारा पीपल रसौत मोथा वरुणा पुनर्नवा त्रिफला और सोंठ इन सम

भाग औषधियों को महीन पीसके दहीका तोड़ काँजी मट्ठा दूध तथा मांसके रसकेसाथ सेवन करने से आमवात और संधियों की सूजन का नाश होताहै ॥ इति अलंबुषादि चूर्ण ॥ ६१६ ॥

माणिमन्थस्यभागोद्वौयवान्यास्तद्वदेवतु । भागास्त्रयोऽजमोदायानागराद्भागपञ्चकम् ॥ दशद्वौचहरीतक्याःसूक्ष्मचूर्णीकृतंशुभम् । मस्त्वारनालतक्रेणसर्पिषोष्णोदकेनवा ॥ पीतञ्जयत्यामवातंगुल्महृद्वस्तिजान्गदान् । प्लीहानंग्रन्थिशूलादीनानाहंगुदजानिच ॥ विबन्धंजाठरान्रोगान्कटीवस्तिसमुत्थितान् । वातानुलोमनमिदंचूर्णंवैश्वानरंस्मृतम् इतिवैश्वानरचूर्णम् ॥ ६२० ॥

सेंधानोन तथा अजवाइन दोदो भाग अजमोद ३ भाग सोंठ ५ भाग और हड़ १२ भाग इन सबको महीन पीसकर दहीकातोड आरनाल मट्ठा घी अथवा गरम जलके साथ पीनेसे आम वात गोला हृदय तथा वस्तिके रोग प्लीहा ग्रन्थि शूल आनाह ववासीर विबन्ध और उदर तथा कमर के रोग यह सब नष्ट होते हैं यह चूर्ण वातको अधोगामी करता है ॥ इति वैश्वानर चूर्ण ॥ ६२० ॥

असीतकंमागधिकागुडूचीश्यामावराहीगजकर्णशुण्ठीः । समाधृताःकृत्स्नमिदन्तु चूर्णंपिवेत्तदुष्णोदकमण्डयूषैः ॥ तक्रैरसैर्म्मद्यसमस्तुभिर्वायथेष्टचेष्टस्यचभोजनस्य । अवाहुकंगृध्रसिखञ्जवातंविश्वाचितूनीप्रतितूनिरोगान् ॥ जंघामवातार्दितवातरक्तंकटीग्रहंगुल्मगुदामयञ्च ॥ सक्रोष्टुकंपाण्डुगरोग्रशोफंहन्यादूरुस्तम्भमुदीर्णवेगम् ॥ इति असीतकं चूर्णम्) ६२१ ॥

असीतक पीपल गिलोय कालीसारिवा वाराहीकन्द गजकर्ण और सोंठ इनसबकोसमभाग लेकर चूर्ण करके गरम जल मांड यूप मट्ठा मांस रस मद्य तथा दहीके तोड़के साथ सेवन करे इसके सेवन में कुछ भोजनादि का नियम नहीं है इसके सेवन से अपबाहुक गृध्रसी खंजवात विश्वाची तूनी प्रतितूनी पंगु आमवात अर्दित वातरक्त कटिग्रह गोला बवासीर क्रोष्टुशीर्ष पांडु गरदोप सूजन और बहुत बढ़ा हुआ ऊरुस्तंभ यह सब नष्ट होते हैं ॥ इति असीतक चूर्ण ॥ ६२१ ॥

शुण्ठीनांपट्पलंपिष्टंधान्याकंद्विपलंतथा । चतुर्गुणंजलंदत्त्वा घृतप्रस्थंविपाचयेत् ॥ वातश्लेष्मामयान् हंन्यादग्निवृद्धिकरंपरम् । दुर्न्नामश्वासकासघ्नंबलवर्णाग्निवर्द्धनम् ॥ शुण्ठीधान्यकघृतम् ६२२ ॥

सोंठ २४ तोले धनियां ८ तोले घी ६४ तोले और घीकाचौगुना जल इनसबको विधिपूर्वक पाक करके इसघृत के सेवन से वातकफ के रोग बवासीर श्वास तथा खांसी नष्ट होती है और बलवर्ण तथा अग्नि की वृद्धि होती है ॥ इति शुंठीधान्यक घृत ॥ ६२२ ॥

सर्पिर्नागरकल्केनसौवीरं तच्चतुर्गुणम् । सिद्धमग्निकरंश्रेष्ठ मामवातहरंपरम् ॥ इति शुण्ठी घृतम् ६२३ ॥

चौगुनी काँजी और सोंठ के कल्क के साथ पाक कियेहुये घीके सेवन से अग्नि की वृद्धि और आमवात का नाश होता है इतिशुंठी घृत ॥ ६२३ ॥

नागरक्वाथकल्काभ्यां घृतप्रस्थंविपाचयेत् । चतुर्गुणेनतेनाथ केवलेनजलेनवा ॥

वातश्लेष्मप्रशमनमग्निसन्दीपनंपरम् । नागरंघृतमित्युक्तंकटीशूलामनाशनम् ॥ इति शुण्ठी घृतम् ६२४ ॥

६४ तोले घीको सोंठ का कल्क डालकर चौगुने सोंठ के काढ़े अथवा केवल जलके साथ पाक करके पीने से वात कफ कमरकी पीड़ा तथा आमवात का नाश होता है और अग्निदीप्त होती है ॥ इति शुंठी घृत ६२४ ॥

हिंगुत्रिकटुकंचव्यं माणिमन्थंतथैवच। कल्कान्कृत्वातुपलिकान् घृतप्रस्थंविपाचयेत् ॥ आरनालाढकंदत्वा तत्सर्पिर्जठरापहम्। शूलंविबन्धमानाह मामवातकटीग्रहम् ॥ नाशयेद्ग्रहणीदोष मन्दाग्नेर्दीपनंपरम्। पुष्ट्यर्थंपयसासाध्यंदध्नाविण्मूत्रसंग्रहे। दीपनार्थमतिमतामस्तुनाचप्रकीर्तितं ॥ इति कांजिकपट्पलघृतम् ६२५ ॥

हींग सोंठ पीपल मिर्च चव्यतथा सेंधानोन इनसब के चार२ तोले कल्क और २५६ तोले आरनाल के द्वारा ६४ तोले घीका पाक करके सेवनकरने से उदरशूल विबन्ध आनाह आमवात कमर की पीड़ा तथाग्रहणी का नाशहोता है और अग्नि की दीप्ति होती है इसघी को चौगुने दूध के साथ पाककरने से पुष्टता दहीके साथ पाककरने से मलमूत्र के अवरोध का नाश और दही के तोड़ के साथ पाक करने से अग्नि की वृद्धि होती है ॥ इति कांजिकपट्पल घृत ॥ ६२५ ॥

शृंगवेरयवक्षारपिप्पलीमूलपिप्पलीः। पिष्ट्वाविपाचयेत्सर्पिरारनालंचतुर्गुणं ॥ शूलं विबन्धमानाहमामवातंकटीग्रहम् । नाशयेद्ग्रहणीदोषमग्निसन्दीपनंपरम् ॥ इति शृंगवेराद्यंघृतम् ६२६ ॥

सोंठ जवाखार पीपलामूल और पीपल इनसबके समभाग चूर्णके द्वारा चौगुने आरनाल के साथ घीका पाककरके सेवन करने से शूल विबंध आनाह आमवात कटिग्रह तथा ग्रहणीका नाश होताहै और अग्नि दीप्त होतीहै ॥ इति शृंगवेरादिघृत ॥ ६२६ ॥

पिवेद्विन्दुघृतंवापिधान्वन्तरमथापिवा। महाशुण्ठीघृतंवापिआमवातेपुनःपुनः ॥ यत्किञ्चिल्लेखनंसर्पिर्दीपनंपाचनञ्चयत्।तत्सर्वमामवातेप्रयोज्यंवामस्तुपट्पलम् ६२७

बिन्दुघृत धान्वन्तरघृत अथवा महाशुंठीघृत आमवातमें बारंबार पीना चाहिये जोघृत लेखन दीपन तथा पाचनहोय वहसब घृत और मस्तुपट्पल घृत आमवातमें देना चाहिये ॥ ६२७ ॥

अजमोदमरिचपिप्पलीविडङ्गसुरदारुचित्रकशताह्वाः। सैन्धवंपिप्पलीमूलंभागानवकस्यपलिकाःस्युः ॥ शुण्ठीदशपलिकास्यात्पलानितावन्तिवृद्धदारस्य । पथ्यापलानिपञ्चचसर्वाण्येकत्रकारयेच्चूर्णम् ॥ समगुडवटकानदतश्चूर्णंवाप्युष्णवारिणापिवतः। नश्यन्त्यामाश्वानिलजाःसर्वेरोगाःसुकष्टाश्च ॥ प्रतितूनीविश्वाचीरोगाश्चान्येऽपिगृध्रसीचोग्राः। कटिपृष्ठगुदस्फुटनञ्चैवातिजङ्घयोस्तीव्रम् ॥ श्वयथुश्चसर्वसन्धिषुयेचान्येत्वामवातसम्भूताः। सर्वेप्रयान्तिनाशन्तमइवसुर्य्यांशुविध्वस्तम्॥ क्षुद्बोधमरोगित्वंस्थिरयौवनमथवलीपलितनाशम् । कुरुतेचतथाभ्यासाद्गुणानथान्यांस्तथासुबहून् ॥ इति अजमोदादिः ॥ ६२८ ॥

अजमोद मिर्च पीपल वायविड़ंग देवदारु चीता सौंफ सेंधानोन तथा पीपलामूल यहसब चार२ तोले सोंठ तथा विधारा चालीस २ तोले और हड़ २० तोले इनसब बराबर औषधियोंको पीसकर और सबकी बराबर गुड़ मिलायके बड़े बनाकर खानेसे अथवा गरम जलके साथ केवलचूर्ण पीनेसे बहुत कठिन आम्वात प्रतितूनी विश्वाची गृध्रसी सब संधियोंकी सूजन आमवात जनित रोग वातज्वरोग और कमर पीठ गुदा तथा जंघाओंकी पीडा इनसबका नाश होताहै और क्षुधाकी वृद्धि आरोग्यता युवावस्थाकी स्थिरता झुर्री तथा श्वेत बालोंका नाश और अन्य अन्य अनेक गुण होतेहैं इति अजमोदादि ॥ ६२८ ॥

चित्रकंपिप्पलीमूलंयवानींकारवींतथा॥ विडङ्गमजमोदाञ्चजीरकेसुरदारु च ॥ चव्यै लासैन्धवंकुष्ठंरास्ना गोक्षुरधान्यकम् । त्रिफलामुस्तकंव्योषन्त्वगुशीरंयवाग्रजम् ॥ तालीसपत्रंपत्रञ्च सूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ॥ यावन्त्येतानिचूर्णानि तावन्मात्रन्तुगुग्गुलम् । संमर्द्यसर्पिषागाढं स्निग्धेभाण्डेनिधापयेत् ॥ अतोमात्रांप्रयुञ्जीत यथेष्टाहारवानपि । अग्निमान्द्यामवातादीन्कृमिदुष्टव्रणानपि । प्लीहगुल्मोदरानाहदुर्नामानिविनाशयेत् ॥ अग्निञ्चकुरुतेदीप्तंतेजोवृद्धिबलंतथा । वातरोगान्जयत्येषसन्धिमज्जागतानपि ॥ इतियोगराजगुग्गुलुः ॥ ६२९ ॥

चीता पीपलामूल अजवाइन कालीजीरी वाय विड़ंग अजमोद जीरा देवदारु चव्य इलायची सेंधानोन कूट रासना गोखुरू धनियां हड़ बहेड़ा आमला मोथा त्रिकटु दालचीनी खस जवाखार तालीस और तेजपात इनसब को समभाग सूक्ष्म पीसकर इसके बराबर गूगुल मिलावे और घीमें खूब मलकर चिकने पात्र में रखछोड़े इस औषधिको मात्राके अनुसार सेवनकर के इच्छाके अनुसार आहार करे इससे मंदाग्नि आमवात कृमि दुष्टव्रण प्लीहा गोला उदर आनाह बवासीर और संधि तथा मज्जा में गईहुई वायुके रोग यह सब नष्टहोते हैं अग्नि दीप्त होती हैं और तेज तथा बलकी वृद्धि होती है इति योगराज गुग्गुल ॥ ६०९ ॥

प्रसारण्याढ़केक्वाथेप्रस्थोगुड़रसोमतः । पक्वःपञ्चोपणरजःपदचरयादामवातहाः ॥ इतिप्रसारणीलेहः ॥ ६३० ॥

गंध प्रसारणीके २५६तोलेकाढ़े में६४तो० गुड़का शर्बत पीपलामूल चीता सोंठ पीपलतथामिर्चके चूर्णको मिलाकर अवलेह पाककरे इसके सेवनसे आमवातका नाशहोताहै इतिप्रसारणीलेह ॥ ६३०

नागरस्यपलान्यष्टौघृतस्यपलविंशतिम् ।क्षीरद्विप्रस्थसंयुक्तंखण्डस्यार्द्धशतंपचेत् ॥ व्योषत्रिजातकद्रव्यात्प्रत्येकञ्चपलंपलम् । निदध्याच्चूर्णितंतत्रखादेदग्निबलंप्रति ॥ आमवातप्रशमनंबलपुष्टिविवर्द्धनम् । वल्यमायुष्यमोजस्यंवलीपलितनाशनम् ॥ आमवातप्रशमनंसौभाग्यकरमुत्तमम् इतिखण्डशुण्ठी ॥ ६३१ ॥

सोंठ ३२ तो० घी ८० तो० दूध १२८ तो० सोंठ पीपल मिर्च दालचीनी इलायचीतथा तेजपात यह सब चार २ तो० और शक्कर २०० तो० इन सबको विधि पूर्वक पाक करके अग्निबल के अनुसार सेवन करने से आमवात झुर्री तथा बालोंका पकना यह सब नष्ट होते हैं और बल पुष्टि आयु तथा ओज इन सबकी वृद्धि होती है और सौभाग्य होता है इति खण्ड शुंठी ॥ ६३१ ॥

पलंशतंरसोनस्यतिलस्यकुडवंतथा। हिंगुत्रिकटुकंक्षारौद्वौपञ्चलवणानिच॥ शतपुष्पानिशाकुष्ठंपिप्पलीमूलचित्रकौ। अजमोदाजवानीचधान्यकञ्चापिबुद्धिमान्॥ प्रत्येकञ्चपलञ्चैषांश्लक्ष्णचूर्णानिकारयेत्। घृतभाण्डेदृढेचैवस्थापयेद्दिनषोड़शम्॥ प्रक्षिप्यतैलमानीञ्चप्रस्थार्द्धंकाञ्जिकस्यच। खादेत्कर्षप्रमाणन्तुतोयंमद्यंपिवेदनु॥ आमवातेरक्तवातेसर्व्वांङ्गेकाङ्गसंस्थिते। अपस्मारेऽनलेमन्देकासेश्वासेगरेषुच॥ सोन्मादेवातभग्नेचशूलेजंतुषुशस्यते इतिरसोनपिण्डः॥ ६३२॥

लहसन ४०० तो० तिल १६ तो० हींग त्रिकटु जवाखार सज्जी पांचोनोन सौंफ हल्दी त्रिकूट पीपलामूल चीता अजमोद अजवाइन तथा धनिया चार २ तोले इनसब औषधियों को महीन चूर्ण करके सोलह दिनतक घीके पात्रमें रक्खे फिर तेल तथा कांजी बत्तीस ३ तोले उसमें मिला कर १ तोला रोजखाय और जल अथवा मद्य पानका अनुपान करे इसके द्वारा आमवात रक्तवात सर्वांग तथा एकांग गतवात मिर्गी मंदाग्नि खांसी श्वास गरदोष उन्माद वात भग्न शूल और कृमि रोगका नाश होताहै इतिरसोनपिण्ड॥ ६३२॥

प्रसारण्यारसंसिद्धंतैलमेरण्डजंपिवेत्। सर्वदोषहरञ्चैवकफरोगहरंपरम्॥ इतिप्रसारणीतैलम्॥ ६३३॥

गंध प्रसारणी के रसके साथ पाककियेहुए रेड़ीके तेल के पीनेसे सब प्रकारके रोग और विशेष करके कफ के रोग नष्टहोतेहैं इति, प्रसारणी तैल॥ ६३३॥

द्विपञ्चमूलीनिर्य्यासफलदध्यम्लकाञ्जिकैः। तैलंकट्यूरुपार्श्वार्तिकफवातामयान् ग्रहान्॥ हन्तिवस्तिप्रदानेनकरोत्यग्निबलंमहत्। इतिद्विपञ्चमूलाद्यंतैलम्॥ ६३४॥

दशमूल का काढ़ा त्रिफला खट्टादही और कांजीके द्वारा पाककिये तेलकी वस्ति देनेसे कमर जंघा तथा पसलियों की पीड़ा और कफ तथा वातके रोग निवृत्त होते हैं और अत्यन्त अग्निकी वृद्धि होतीहै इति द्विपंचमूलादि तैल॥ ६३४॥

सैन्धवंश्रेयसीरास्नाशतपुष्पाजवानिका। स्वर्ज्जिकामरिचंकुष्ठंशुण्ठीसौवर्चलंविड़म्॥ वचाजमोदासरणीपौष्करंमधुकंकणाम्। एतान्यर्द्धपलांशानिसूक्ष्मपिष्टानिकारयेत्॥ प्रस्थमेरण्डतैलस्यप्रस्थन्तुशतपुष्पजम्। काञ्जिकंद्विगुणंदत्त्वामस्तुचाद्विगुणंतथा॥ एतत्सम्भृत्यसम्भारंशनैर्मृद्वग्निनापचेत्। सिद्धमेतत्प्रयोक्तव्यमामवातहरंपरम्॥ पानाभ्यञ्जनवस्तौचकुरुतेऽग्निबलंभृशम्। वातार्त्तिवंक्षणेशस्तंकटीजानूरुसन्धिजे॥ शूलेहृत्पार्श्वजेतद्वत्पृष्ठेश्लेष्मणिपीड़िते॥ वाह्यायामार्दितानाहेरन्त्रवृद्धिनिपीड़िते। अन्यांश्चानिलजान्रोगान्नाशयत्याशुदेहिनाम्॥ इतिवृहत्सैन्धवाद्यंतैलम्॥ ६३५॥

सेंधानोन गजपीपल रासना सौंफ अजवाइन सज्जी मिर्च कूट सोंठ कालानोन विट्नोन वच अजमोद गंधप्रसारणी पुष्करमूल मुलहठी तथा पीपल यहसब दो २ तोले महीन पीसकर ६४ तोले सौंफका काढ़ा और कांजी तथा दहीका तोड़ एकसौ अट्ठाईस २ तोले ऊपर कहीहुई संपूर्ण वस्तुओं के साथ ६४ तोले रेड़ी का तेल मंदाग्नि में पाककरके पान अभ्यंग तथा वस्तिमें व्यवहार करने से

आमवात वातकेरोग वंक्षण कमर घुटने जंघा संधि हृदय तथा पसली की पीड़ा बढ़ाहुआ कफ बाह्याऽयाम अर्दित आनाह अन्त्रवृद्धि और अन्य २ वातरोगोंका नाश होताहै और अत्यन्त अग्निकी वृद्धि होती है इति वृहत्सैंधवादि तैल ॥ ६३५ ॥

स्वल्पप्रसारणीतैलंतैलंवासैन्धवादिकम् । दशमूलाद्यतैलेनवस्तिदानंप्रशस्यते ६३६ ॥

छोटाप्रसारणीतैल सैंधवादि तैल अथवा दश मूलादि तैलकेद्वारा वस्ति देना आमवातमेंश्रेष्ठहै६३६॥

तैलस्यद्विपलंदद्यात्काञ्जिकस्यचतुःपलम् । दशमूलरसंमूत्रंपृथक्पञ्चपलानितु ॥ वचामदनवाट्यालशताह्वाकुष्ठसैन्धवैः । पिप्पल्यतिविषामुस्तरास्नाकट्फलपौष्करैः ॥ अक्षांशिकैश्चतत्सर्व्वमन्थयीतविचक्षणः । प्रस्थार्द्धंप्रथमंदेयोवस्तिर्निरभिशङ्कितः ॥ द्वितीयेचतृतीयेचवर्जयेत्प्रसृतद्वयम् । सर्व्ववातविकारेषुमेहेषुवृषणामये ॥ कुक्षौहृत्पृष्ठपार्श्वेषुजानुजंघाकटीग्रहे । विबन्धानाहरोगेषुशर्कराश्मरिपीड़िते ॥ भग्नविश्लिष्टगात्रेषुपिच्चितेषुक्षतेषुच । एतन्निरूहवत्प्राज्ञोनिरायासोमहागुणः ॥ ६३७ ॥

तेल८तोले कांजी १६ तोले दशमूल का काढ़ा तथा गोमूत्र बीस२तोले वच मैनफल बरियारा सौंफ कूट सैंधानोन पीपल अतीस मोथा रासना कायफल और पुष्करमूल यह सब एक २ तोले इनसब औषधियोंको एक साथ मथकर पहलीवार बत्तीस तोले और दूसरी तथा तीसरीवार सोलह तोले औषध के द्वारा निरूह वस्ति देनी चाहिये इससे सब प्रकारके वातरोग प्रमेह अण्डवृद्धि विबन्ध आनाह शर्करा पथरी अंगोंका टूटना तथा उतरना पिच्चित क्षत और कुक्षि हृदय पीठ पसली घुटने जंघा तथा कमर की पीड़ा यह सब नष्ट होतेहैं ॥ ६३७ ॥

दधिमत्स्यगुड़क्षीरंपोतकीमाषपिष्टकम् । वर्जयेदामवातार्तोमांसमानूपसम्भवम् ॥ अभिष्पन्दकरायेचयेचान्येगुरुपिच्छिलाः । वर्जनीयाःप्रयत्नेनआमवातार्द्दितैर्नरैः६३८

दही मछली गुड़ दूध पोय उर्द पीठी अनूपमांस अभिष्पन्दी भारी तथा सचिक्कणवस्तु आमवात में यत्नपूर्वक छोड़देनीचाहियें ॥ ६३८ ॥

रास्नैरण्डशतावरीसहचरादुस्पर्शवासामृता । देवाह्वातिविषाभयाघनशटीशुण्ठीकषायःकृतः ॥ पीतःसोरुबतैलएषविहितःसामेसशूलेऽनिले । कट्यूरुत्रिकपृष्ठकोष्ठजठरःक्रोडेषुवामार्त्तिजित् ॥ इतिमध्यमरास्नादिक्काथः ॥ ६३९ ॥

रास्ना रेंड़ी सतावर झिंटी जवासा वांसा गिलोय देवदारु अतीस हड़ मोथा कचूर और सोंठ इनसबके काढ़े में रेंड़ीका तेलडालकर पीनेसे आमवात वातकी पीड़ा और कमर जंघा त्रिक पीठ कोष्ठ उदर तथा क्रोड़में प्राप्तहोनेवाली आमकी पीड़ाका नाशहोताहै॥इतिमध्यमरास्नादिकाथ६३९॥

रास्नावातारिमूलश्चवासकश्चदुरालभम् । शटीदारुबलामुस्तनागरातिविषाभयाः श्वदंष्ट्राव्याधिघातश्चमिसिधान्यपुनर्नवाः । अश्वगन्धामृताकृष्णावृद्धदारुशतावरी ॥ वचासहचरश्चैवचविकावृहतीद्वयम् । समभागान्वितैरेतैरास्नाद्विगुणभागिकैः ॥ कषायंपाययेत्सिद्धमष्टभागावशेषितम् । शुण्ठीचूर्णसमायुक्तमामायेनयुतंतथा ॥ अलम्बुषादिसंयुक्तमजमोदादिसंयुतम् । यथादोषंयथाव्याधिप्रक्षेपंकारयेद्भिषक्॥सर्वेषुवातरोगेषु

सन्धिमज्जगतेषुच । आनाहेषुचसर्वेषुसर्वगात्रानुकम्पने॥ कुब्जकेवामनेचैवपक्षाघातेत थार्दिते। जानुजंघास्थिपीडायांगृध्रस्यांचहनुग्रहे॥ प्रशस्तंवातरक्तेस्यादूरुस्तम्भेतथार्श सि । विश्वाचीगुल्महृद्रोगविसूचीक्रोष्टुशीर्षके॥ अन्त्रवृद्धौश्लीपदेचयोनिशुक्रामयेतथा। पुंसांमेढ्रगतेरोगेस्त्रीणांवन्ध्यामयेतथा ॥ योषितांगर्भदंमुख्यंनास्तिकिञ्चिदतःपरम् । स र्वेषांपाचनानान्तुश्रेष्ठमेतद्धिपाचनम्॥ महारास्नादिकंनामप्रजापतिविनिर्मितम्॥ इतिम हारास्नादिक्काथः ॥ ६४० ॥

रासना अरंडकीजड़ वांसा जवासा कचूर देवदारु बरियारा मोथा सोंठ अतीस हड़ गोखुरू अ-मलतास सौंफ पुनर्नवा असगन्ध गिलोय पीपल विधारा सतावर वच भिटी चव्य तथा दोनोंभ-टकटैया यह सब समभाग और रासना के दोभाग इनके अष्टमांश काढ़े में शुंठी चूर्ण आभादि चूर्ण अलंबुषादि चूर्ण अथवा अजमोदादि चूर्ण दोष तथा रोगके अनुसार डालकर पीने से संधि तथा मज्जागत सबप्रकार के वातरोग आनाह गात्रकंप कुब्जता बौनापन पक्षाघात अर्दित घुटने पिंडली तथा हड्डियों की पीड़ा गृध्रसी हनुग्रह वातरक्त ऊरुस्तंभ बवासीर विश्वाची गुल्म हृदयके रोग विशूचिका क्रोष्टुशीर्ष अन्त्रवृद्धि श्लीपद योनिरोग वीर्य्यरोग लिंगरोग तथा बंध्यापन इनसबकानाश होता है इसके द्वारास्त्रियों के गर्भरहता है और संपूर्ण पाचन औषधियों में यह अत्यन्त श्रेष्ठहै यह महारासनादिकाथ प्रजापतिने बनाया है ॥ इतिमहारासनादि काथ ॥ ६४० ॥

रास्नाविश्वविडङ्गानिरुबुकांत्रिफलातथा । दशमूलंपृथक्श्यामाक्काथोवातामयापहः॥ अर्द्धावभेदकेत्वाढ्ये अर्दितेवातखञ्जके । नेत्ररोगेशिरःशूलेज्वरापस्मारयोस्तथा ॥ म नोभ्रंशेचविविधेकथितश्चशुभप्रदम् । इतिरास्नादशमूलम् इतिआमवातनिदानचि कित्साधिकारः ॥ ६४१ ॥

रासना सोंठ वायविडंग रेंड़ी त्रिफला दशमूल और कालीसारिवा इनसबका काढ़ावनाकर पीने से वातरोग आधासीसी ऊरुस्तंभ अर्दित वातखंज नेत्ररोग शिरकीपीड़ा ज्वर मिर्गी और उन्माद इनसबरोगोंका नाशहोता है ॥ इति रासनादशमूल ॥ इति आमवातचिकित्साधिकार ॥ ६४१ ॥

अथपित्तव्याध्यधिकारस्तत्रपित्तव्याधीनांविप्रकृष्टंनिदानमाह ॥

कट्वम्लोष्णविदाहितीक्ष्णलवणक्रोधोपवासातप स्त्रीसम्भोगतृषाक्षुधाभिहनन व्यायाममद्यादिभिः ॥ मध्येचापिहिभोजनस्यजरताभुक्तेनमध्यक्षणे ॥ मध्याह्नेरजनी निदाघशरदोःपित्तंकरोत्यामयान् । मद्यादिभिरित्यादिशब्देनदधिमत्स्यमापतिलातसी कांजिकादीनिसंगृह्यन्ते ॥ तीक्ष्णंराजिकादि । मध्येचापिहिभोजनस्ययावत्कालेनभुक्तेतस्यकालस्यमध्यमभागे ॥ जरताभुक्तेनभुक्तस्यजरणकालमध्येमध्यन्दिनेदिनमध्यांशे । रजनीत्रिधाविभक्तस्यदिवसस्यतथारात्रेर्मध्यमेंऽशे ॥ ६४२ ॥

पित्तव्याधियोंका अधिकार । पित्तव्याधियों के दूरवालेकारण ॥

कटु अम्ल उष्ण विदाही तीक्ष्ण तथा निमकीन वस्तु क्रोध लंघन धूप मैथुन तृषा तथा क्षुधा का रोकना व्यायाम मद्य दही मछली उर्द तिल अलसी तथा कांजी आदि भोजन का मध्य भो-

जनके पचनेका समय मध्याह्न अर्द्धरात्रि और ग्रीष्म तथा शरदऋतु ॥ इनसब कारणों से,कुपित पित्तरोगोंको उत्पन्न करता है ॥ ६४२ ॥

अथ पित्तामयान्याह ॥

अकालपलितंनेत्ररक्तत्वंतस्यपीतिमा । तद्वन्मूत्रस्यपीतत्वंमलस्यापिचपीतता ॥ नखानामामरक्तत्वंतेषामपिचपीतता । दन्तानाञ्चापिपीतत्वंपीतत्वंवपुषस्तथा ॥ तमसोदर्शनञ्चापितथाचवदनाम्लता । उच्छ्वासस्योष्णताचापिधूमोद्गारस्तथैवच ॥ भ्रम क्लमस्तथाक्रोधोदाहोभेदसमन्वितः । तेजोद्वेषश्चशीतेच्छाह्यतृप्तिररतिस्तथा ॥ भक्षितस्यविदाहश्च जठरानलतीक्ष्णता । रक्तप्रवृत्तिर्विड्भेद.पुरीषस्योष्णतातथा । मूत्रोष्णतामूत्रकृच्छ्रंशुक्राल्पत्वन्तनूष्णता ॥ स्वेदस्यचापिदौर्गन्ध्यंदेहप्रावरणंतथा । शरीरस्यावसादश्चपाकश्चवपुषस्तथा ॥ चत्वारिंशदमीपित्तव्याधयोमुनिभिर्मताः । एषांचिकित्सातु स्वप्रकरणेबोद्धव्या ॥ इतिपित्तव्याध्यधिकारः ॥ ६४३ ॥

पित्तकेरोग ॥

समयके विनाबालों का पकना नेत्रोंका लालहोना नेत्र मल तथा मूत्रका पीलापन नखों में रक्तता तथा पीतता दांत तथा शरीर का पीलापन अन्धकार सा दीखना मुखका खट्टापन श्वासकी उष्णता धुमैली डकार भ्रम ग्लानि क्रोध दाह भेद तेजसे द्वेष शीतकीइच्छा तृप्तिका न होना बेचैनी भोजन का विदाह अग्निकी तीक्ष्णता रुधिर निकलना मलभेद मल तथा मूत्रकी उष्णता मूत्रकृच्छ्र वीर्यकी अल्पता पतलापन तथा उष्णता स्वेदमें दुर्गन्ध कपड़ों में दुर्गन्ध शरीर में शिथिलता और शरीर का पकना यह चालीस पित्तके रोग मुनि लोगोंने कहेहैं इनकी चिकित्सा अपने २ प्रकरणमें जाननी चाहिये इति पित्तव्याधि अधिकार ॥ ६४३ ॥

तत्र श्लेष्मव्याधीनां सामान्यतोविप्रकृष्टंनिदानान्याह ॥

गुरुमधुररसादिस्निग्धमन्दोदराग्निद्रवदधिदिननिद्राशीतनिश्चेष्टितानि । प्रथमदिवसभागेभुक्तमात्रेवसन्ते भवतिहिकफरोगोरात्रिभागेऽपिचाद्ये । मधुररसादिइत्यादिशब्देनाम्ललवणौगृह्येते ॥ निश्चेष्टितानिकायिकव्यापाराकरणम्प्रथमदिवसभागेत्रिधाविभक्तस्यदिवसस्याद्यभागेभुक्तमात्रभुक्तस्यपाककालस्य त्रिधाविभक्तस्यप्रथमकाले कफरोगोभवति ॥ ६४४ ॥

कफ व्याधियोंके सामान्यतासे दूरवाले कारण ॥

भारी मधुर खट्टी निमकीन स्निग्ध तथा पतली वस्तु दही दिनमें सोना शीत व्यायामन करना जठराग्नि की मन्दता दिनका प्रथमभाग भोजनका अन्त वसन्तऋतु और रात्रिका पहलाभाग इन कारणोंसे कफके रोग होतेहैं ॥ ६४४ ॥ तेचोच्यन्ते ॥

प्रथमंमुखमाधुर्य्यंतथैवमुखलिप्तता । मुखप्रसेकश्चतथानिद्राधिक्यंतथैवच ॥ कण्ठेघुर्घुरताचापिकटुकांक्षोष्णकामिता । बुद्धिमान्द्यमचैतन्यमालस्यतृप्तिरेवच ॥ अग्निमान्द्यमलाधिक्यमलशैत्यंतथैवच । मूत्राधिक्यमूत्रशौक्ल्यंशुक्राधिक्यंतथैवच ॥ स्तैमित्यं

गौरवंशैत्यमेतएवाहिविंशतिः। योगतोरूढितःप्रोक्तामुनिभिःश्लेष्मिकागदाः ॥ एषांचिकित्सातुस्वप्रकरणेबोद्धव्या। इतिश्लेष्मव्याध्यधिकारः ॥ ६४५ ॥

कफके रोग ॥

मुखकी मधुरता तथा लिपाहुआ साहोना मुखसेलार बहना निद्रा की अधिकता कंठ में घुर्घुराहट कड़वी वस्तुओंमें इच्छा उष्णताकी इच्छा बुद्धिकी मन्दता अचैतन्यता आलस्य तृप्ति मन्दाग्नि मलकी अधिकता तथा शीतलता मूत्रकी अधिकता तथा शुक्लता वीर्य्यकी अधिकता शरीरका भारीपन तथा गीले कपड़ेसे ढकाहुआ सा मालूम पड़ना शीतलता यह वीसरोग मुनि लोगोंने योग तथा रूढ़िसे कफके कहे हैं इनकी चिकित्सा अपने २ प्रकरण में जाननी चाहिये इति कफव्याधिका अधिकार ॥ ६४५ ॥

अथ वातरक्ताधिकारमाह तत्र वातरक्तस्यविप्रकृष्टनिदानमाह ॥

लवणाम्लकटुक्षारस्निग्धोष्णाजीर्णभोजनैः। क्लिन्नशुष्काम्बुजानूपमांसपिण्याकमूलकैः ॥ कुलत्थमाषनिष्पावशाकादिपललेक्षुभिः। दध्यारनालसौवीरशुक्ततक्रसुरासवैः ॥ विरुद्धाध्यशनाक्रोधदिवास्वप्नातिजागरैः। प्रायशःसुकुमाराणांमिथ्याहारविहारिणाम् ॥ स्थूलानांसुखिनाञ्चापिप्रकुप्येद्वातशोणितम्। हस्त्यश्वोष्ट्रैर्गच्छतश्चाश्नतश्चविदाह्यन्नंसविदाहाशनस्य। कृत्स्नंरक्तंवि[illegible]ाशुतच्चदुष्टंशीघ्रंपादयोश्चीयतेतु॥तत्संपृक्तंवायुनादूषितेनतत्प्राबल्यादुच्यतेवातरक्तम्। क्षारायवक्षारादि। अजीर्णे भोजनैः अजीर्णे भोजनैः अतिमात्रभोजनैरित्यर्थः। क्लिन्नादीनि मांसविशेषणानि। शुष्कमातपे शोषितम्। अम्बुजं मत्स्यादिमांसं आनूपङ्गौडादिपूर्वदेशजम्। पिण्याकंतिलखलिः। मूलकं प्रसिद्धमेव। निष्पावःचोड़ा। शाकं पत्रशाकम् आदिशब्देन वृन्ताकादीन् फलशाकादीनां गृह्यते फलम्। दोषरहितमपि मांसवातशोणितं प्रकोपयेत्। शटीतादितु मांस विशेषतो वातशोणितं प्रकोपयेत्। आरनाल सौवीरशुक्तानि सन्धानभेदाः। तक्रम् चतुर्थांशं जलयुक्तं वस्त्रपूतंदधिसुरा सन्धानभेदः। विरुद्धं क्षीरमत्स्यादि। अध्यशनम् अजीर्णे भुज्यते यत्तु तदध्यशनमुच्यते। अतिजागरोनिशि। प्रायशःबाहुल्येन सुकुमाराणां। अल्पतरकाय व्यापाराणाम्। अथ च मिथ्याहारविहारिणाम्। अथाहार विहाराणांस्थूलानाम् सुखिनां रक्तवृद्ध्या। हस्त्यश्वोष्ट्रैर्गच्छतः यतःवायुर्वर्द्धतेरुधिरञ्च अधोगच्छति। हस्त्यादय उपलक्षणानि। पद्भ्यामपि चलतःअश्नतश्च विदाह्यन्नम्। विदाहि निष्पावकुलत्थसर्षपशाकादि। सविदाहाशनस्यसविदाहि अशनंयस्य। भक्तेऽविदग्धे तदुपरिभुञ्जानस्येत्यर्थःअध्यशनमुक्ताप्येतद्वचनंविदग्धंजीर्णम्भोजनस्य विशेषतोहेतुत्वार्थम्। पश्चात्वातशोणितं प्रकुप्यति इत्यन्वयः। एतेषांकारणानां मध्ये केनचिद्वायुः केनचिद्रक्तं केनचिदुभयमपि प्रकुप्येत् ॥ ६४६ ॥

वातरक्तका अधिकार वातरक्तके दूरवाले कारण ॥

लवण अम्ल तथा कटुरस जवाखारा दिकखार स्निग्ध तथाउष्णवस्तु अधिक भोजन गलाहुआ

तथा सूखामांस मछली आदि जलके जीवोंकामांस गोड़मोदि पूर्व्व देशकामांस तिलकी खली मूली कुलथी उर्द लोविया पत्रशाक बैंगन आदिशाक मांस ईख दही भारनाल सौवीर सिरका तक्र सुरा आसव दूध मछलीआदि विरुद्धभोजन अजीर्णमेंभोजन क्रोध दिनमेंसोना और रात्रिमेंजागना इनसब कारणोंके द्वारा प्रायः नियमरहित आहार विहार करनेवाले सुकुमार स्थूल और सुखी हाथी घोड़े ऊंट तथा पैरोंसे चलनेवाले विदाही अन्नखानेवाले और विदग्धा जीर्णमें भोजनकरनेवाले पुरुषोंका सम्पूर्ण रुधिर शीघ्र विदाहको प्राप्तहुआ दूषितहोकर शीघ्र पैरोंमें इकट्ठा होताहै ॥ ६४६ ॥

सम्प्राप्तिमाह ॥

कृत्स्नंरक्तंविदहत्याशु तच्च दुष्टंस्रस्तंपादयोश्चीयतेतु । तत्सम्पृक्तंवायुना दूषितेन तत् प्राबल्यादुच्यतेवातरक्तम् ॥ पूर्वोक्तैर्हेतुभिःकृत्स्नंसमस्तम् । अधोगतम् पादयोः चीयतेसञ्चितं भवति, तत्रुधिरम् दूषितेन स्वहेतुभिर्वायुना सम्पृक्तं मिलितम् वात रक्तं उच्यते । ननुचैतस्यसम्प्राप्ति रुक्ता सुश्रुतेन । शीघ्रंरक्तंदुष्टिमायातितच्च वायोर्मार्गं संरुणद्ध्याशु वातं । क्रुद्धोऽत्यर्थं मार्गरोधात् सवायुरत्युद्रिक्तं दूषयेद्रक्तमाशु ॥ अत्र प्रथमंरक्तस्य दुष्टिरतो रक्तवातमिति व्यपदेष्टुमुचितं भवति । तत्राह तत्प्राबल्यादिति । तस्यवातस्य दोषत्वेन प्राधान्याद्वातरक्तमिति व्यपदिश्यते ॥ ६४७ ॥

वातरक्तकी संप्राप्ति

पहले कहेहुए कारणोंसे संपूर्ण रुधिर विदग्ध तथा दूषित होकर नीचेगयाहुआ पैरोंमें इकट्ठा होताहै फिरवह रुधिर अपने कारणोंसे दूषितहुई वायुसे मिलकर वातरक्त कहलाताहै सुश्रुतने कहाहै कि शीघ्रही दूषितहुआ रुधिर वायुके मार्गोंको रोकताहै और मार्गकेरुकनेसे कुपितहुई वायु बहुत बढ़ेहुए रुधिरको दूषित करतीहै यहाँ पहले रुधिरका कोपहोताहै इसलिये रक्तवात कहना उचितहै परन्तु वायुके दोषहोनेकेकारण प्रधानतासे वातरक्त कहतेहैं ॥ ६४७ ॥

पूर्व्वरूपमाह ॥

स्वेदोऽत्यर्थंनवाकार्श्यं स्पर्शाज्ञत्वंक्षतेऽतिरुक् । सन्धिशैथिल्यमालस्यं सदनंपिडिकोद्गमः ॥ जानुजङ्घोरुकट्यंसहस्तपादाङ्गसन्धिषु । निस्तोदःस्फुरणंभेदो गुरुत्वंसुप्तिरेवच ॥ कण्डूसन्धिषुरुग्दाहो भूत्वानश्यतिचासकृत् । वैवर्ण्यंमण्डलोत्पत्तिर्वातासृक्पूर्वलक्षणम् ॥ धर्मागमनमत्यर्थं भवतिनवासर्वथा भवति एतच्च व्याधिमहिम्ना कुष्ठवद्बोद्धव्यम् क्षतेऽतिरुक् यदिक्षतंस्यात् तदातत्रातिरुक् । सदनंसुप्तिः अंगानां पिडिकाप्रादुर्भावः जान्वादिषु निस्तोदः पीडाविशेषः । त्वक् कान्तिक्षयः ॥ ६४८ ॥

वातरक्तका पूर्वरूप ॥

वातरक्त होनेसे पहले बहुत स्वेद निकलना अथवा न निकलना शरीरका कालापन स्पर्शका न जानना शून्यता घावमें बहुत पीड़ा इन्द्रियों में शिथिलता आलस्य फुंसी निकलना घुटने पिंडली जंघा कमर कंधे हाथ पैर तथा सन्धियों में पीड़ा अंगोंका फड़कना भेद भारीपन सुन्न होजाना खुजली सन्धियों में पीड़ा कभी कभी दाह विवर्णता और मंडलों की उत्पत्ति यह लक्षण होतेहैं ॥ ६४८ ॥

अथ वातरक्तस्य लक्षणमाह ॥

वातेऽधिकंतत्रशूलं स्फुरणंतोदनंतथा। शोथस्यरौक्ष्यंकृष्णत्वं श्यावतावृद्धिहानयः॥ धमन्यंगुलिसन्धीनां सङ्कोचोऽङ्गग्रहोऽतिरुक्। शीतद्वेषानुपशयौस्तम्भवेपथुसुप्तयः॥ तत्र पादयोःशूलादिकम्। यतआह सुश्रुतः। स्पर्शोद्विग्नौ तोदभेदप्रशोषौ स्वापोपेतौ वात रक्तेन पादाविति। तथा शोथस्य रौक्ष्यादिकं वृद्धिहानयश्च विज्ञेयाः अथ सुप्तिः स्पर्शाज्ञता ॥ ६४९ ॥ वातरक्तके लक्षण ॥

अधिक वात वाले वातरक्तमें दोनों पैरोंमें बहुत शूल फड़कना सुई गड़ने कीसी पीड़ा होतीहै रूखी काली तथा धुमैली सूजन कभीबढ़ीहुई अथवा कभी घटीहुई होती है उंगलियों की सन्धिकी नाड़ी संकुचित होती हैं शरीरमें पीड़ा जकड़ना कम्प तथा शून्यता होती है और शीत तथा द्वेषसे यह रोग बढ़ताहै ॥ ६४९ ॥ अधिक रक्तवातरक्तमाह ॥

रक्तेशोथोऽतिरुक्तोदस्ताम्रश्चिमिचिमायते। स्निग्धरूक्षैःशमंनैतिकण्डूक्लेदसमन्वितः॥ रक्तेऽधिके इत्यनुवर्त्तनीयम्। एवंवक्ष्यमाणपित्तादिष्विति एतच्चारम्भकंरक्ताद्रक्तान्तरंबोद्धव्यंरक्तमपिरक्तान्तरदूषकंभवति॥ यदुक्तंदुष्टरक्तलक्षणम्। पित्तवद्रक्तेनातिकृष्णञ्चेति॥ अतिरुक्तोदःअतिरक्तादोयत्रसःशोथःचिमचिमायते। चिमचिमेति कण्डूभेदःस्पर्शप्रियेतियावत्चुहचुहाइतिलोकेतद्युक्तः। क्लेदसमन्वितःक्लेदआर्द्रतातद्युक्तः॥ ६५० ॥ अधिक रक्तवाले वातरक्तका लक्षण ॥

अधिक रक्तवाले वातरक्तमें सूजन बहुत पीड़ा सुईकासा गड़ना चिमचिमाहट ताम्रवर्ण खुजली और गीलापन होताहै यह रोग स्निग्ध और रूखे उपायों से शान्त नहीं होताहै ॥ ६५० ॥

अधिकपित्तंतदाह ॥

पित्तेविदाहःसंमोहःस्वेदोमूर्च्छामदस्तृषा। स्पर्शासहत्वंरुग्दाहःशोथःपाकोभृशोष्णता॥ पित्तेअधिकेविदाहःविशेषेणदाहः। विदाहादयश्चपादयोरेवबोद्धव्याः॥ यतआहसुश्रुतःपित्तासृग्भ्यामुग्रदाहौभवेतामत्यर्थोष्णरक्तशोथौमृदूच। पादाविति शेषः संमोहःआतुरस्यस्वेदःपादयोःमूर्च्छापादयोःसमुच्छ्रायः शोथइतियावत् नतुमूर्च्छामोहःसंमोहस्योक्तत्वात्॥ ६५१ ॥

अधिक पित्त वाले वातरक्तका लक्षण ॥

अधिक पित्तवाले वातरक्त में पैरोंमें बहुत दाह सूजन स्वेद और पीड़ायुक्त नहीं छूनेके योग्य बहुत उष्णता युक्त पकीहुई सूजन होती है और रोगीके दाह सूजन मोह मद तथा तृषा उत्पन्न होती है ॥ ६५१ ॥ अधिककफमाधिकद्विदोषमधिकत्रिदोषञ्चतदाह ॥

कफेस्तैमित्यगुरुतासुप्तिःस्निग्धत्वशीतता। कण्डूर्मन्दाचरुग्द्वन्द्वसर्वलिङ्गञ्चसङ्करे॥ कफेअधिकेस्तैमित्यम् शरीरस्यार्द्रचर्म्मावगुण्ठितत्वमिव। गुरुतादयःपादयोरेव॥ यतआहसुश्रुतः कण्डूमन्तौश्वेतशीतौसशोथौपीनौस्तब्धौश्लेष्मदुष्टेतुरक्ते। पादा

वितिशेषः ॥ अधिकद्विदोषम्अधिकत्रिदोषम्। च तदाहद्वन्द्वैसर्वलिङ्गञ्चसङ्करेद्वित्रिदोषसंसर्गे ॥ ६५२ ॥

अधिक कफ वाले अधिक दो दोष वाले और अधिक तीनों दोष वाले वातरक्त के लक्षण ॥

अधिक कफ वाले वातरक्तमें शरीर गीले कपड़े से ढका हुआ सामालूम होताहै और दोनों पैर भारी शून्य स्निग्ध शीतल खुजली युक्त तथा कुछ २ पीड़ासे युक्त होतेहैं ऊपर कहे हुए दोदोषों के लक्षणों के मिलने से द्वंद्वज और तीनों दोषों के लक्षण मिलने से त्रिदोषज वातरक्त जानना चाहिये ॥ ६५२ ॥ पद्भ्यामन्यदप्यंगमारभ्यस्थानमाह ॥

पादयोर्म्मूलमास्थायकदाचिद्धस्तयोरपि । आखोर्विषमिवक्रुद्धंतद्देहमनुसर्प्पति ॥ आखोर्मूषकस्यआखोर्विषमिवेत्यनेनमन्दविसर्प्पत्वंबोधितम् । देहमनुपसर्प्पतिअप्रतिक्रियाणाम् ॥ ६५३ ॥

पैरोंसे अन्य अंगमें हीं वात रक्त होतेहैं जैसे वातरक्त कभी पैरों में अथवा कभी हाथों में उत्पन्न होकर उपाय न करनेसे कुपित होकर मूषेके विषके समानधीरे २ संपूर्ण शरीरमें फैलताहै ॥६५३॥

अथवातरक्तस्योपद्रवानाह ॥

अस्वप्नारोचकश्वासमांसकोऽथशिरोग्रहः। मूर्च्छाचाथमदस्तृष्णाज्वरमोहप्रवेपकाः ॥ हिक्कापांगुल्यवीसर्प्पपाकतोदभ्रमक्लमाः । अंगुलीवक्रतास्फोटदाहमर्म्मग्रहार्बुदाः ॥ मांसकोथोमांसगलनम्। मूर्च्छानदंगसमुच्छ्रायः॥ अमन्दरुक्पीड़ाबाहुल्यं। प्रवेपकःकम्पः प्रवेपनंप्रवेपःततःस्वार्थेकः ॥ ६५४ ॥

वात रक्तके उपद्रव ॥

निद्राका नाश अरुचि श्वास मांसकागलना शिरमें पीड़ा जिस अंग में वातरक्तहोय उसकी शून्यता मद तृषा ज्वर मोह कंप हिचकी पंगुता वीसर्प मांस का पकना सुई गड़ने की सी पीड़ाभ्रम ग्लानि उंगलियों काटेढ़ा पन स्फोटक दाह मर्मोंका जकड़ना और अर्बुद यह सब वातरक्तके उपद्रव हैं ॥ ६५४ ॥ अथासाध्यत्वादिकमाह ॥

एतैरुपद्रवैर्वर्ज्यंमोहेनैकेनचापितत् । अकृत्स्नोपद्रवंयाप्यंसाध्यंस्यान्निरुपद्रवम् ॥ मोहेनैकेनेतिवचनमस्वप्नादिभिः समस्तैरसाध्यत्वंबोधयति । एकदोषानुगंसाध्यंनवंयाप्यंद्विदोषजम्। त्रिदोषजमसाध्यंस्यायस्यचस्युरुपद्रवाः ॥ नवंसम्वत्सरादर्वाचीनं तत्साध्यम्। आजानुस्फुटितंयच्चप्रभिन्नंप्रस्रुतञ्चयत् ॥ उपद्रवैश्चयज्जुष्टंप्राणमांसक्षयादिभिः। वातरक्तमसाध्यंस्यात्याप्यंसम्वत्सरोत्थितम् ॥ आजानुपद्भ्याजानुपर्यन्तं यद्भवतितदसाध्यंस्यात् । स्फुटितंयत्त्वङ्मात्रेशीतेनेवकिञ्चिद्विदीर्णम् ॥ प्रभिन्नम अधिकविदीर्णम्। प्रस्रुतम्वहत् ॥ ६५५ ॥

वात रक्तके साध्य असाध्यादि लक्षण ॥

सपूर्ण उपद्रवोंसे युक्त अथवा केवल मोहही से युक्त वातरक्त असाध्य होताहै थोड़े उपद्रव वाला वात रक्त याप्य है उपद्रव रहित तथा एक दोषसे उत्पन्न हुआ नवीन वात रक्त साध्य है

द्वन्द्वज वात रक्त याप्य है और त्रिदोषज तथा संपूर्ण उपद्रवों से युक्त वात रक्तअसाध्य है जिसवात रक्त वाले के घुटने तक पैर फटगये होंय तथा बहते होंय और उपद्रवों से बल तथा मांस का क्षय होगया हो वह असाध्यहै एकवर्षका पुराना यह रोग याप्यहै ॥ ६५५ ॥

अथवातरक्तचिकित्सा ॥

वातशोणितिनोरक्तंस्निग्धस्यबहुशोहरेत्। अल्पाल्पंरक्षयेद्वायुंयथादोषंयथाबलम्॥ रक्षयेद्वायुयथावायुर्नवर्द्धतेतथारक्तंहरेदित्यर्थः । उग्रांगदाहतोदेषुजलौकोभिर्विनिर्हरे त् ॥ शृंगन्तुवेचिमचिमाकण्डूरुग्वेपनान्वितम् । प्रच्छन्नेनशिराभिर्वादेशाद्देशान्तरंव्रजे त् ॥ निर्हरेत्निष्काशयेत्चिमिचिमारचुहचुराबइतिलोके। प्रच्छन्नंपच्छनाइतिलोके। व्रजे दितिरक्तविशेषणम् । अंगेम्लानेतुनस्राव्यंरक्षेद्वातोत्तरञ्चयत् । गम्भीरंश्वयथुंस्तम्भं कम्पवायुशिरामयान् ॥ ग्लानिमन्यांश्चवातोत्थानकुर्याद्वायुरसृक्क्षयात् । खञ्जादीन् वातरोगांश्चमृत्युञ्चानवशेषितम् ॥ कुर्यात्तस्मात्प्रमाणेनस्निग्धाद्रक्तंविनिर्हरेत्६५६॥

वातरक्तकीचिकित्सा ॥

वातरक्त वाले को दोष तथा बलके अनुसार स्नेहप्रयोग करके बहुतसा रुधिर निकलवानाचाहिये परन्तु वायु न बढ़ने देवे बहुतदाह तथा सुईगडनेकीसी पीड़ा युक्त वातरक्तमें जोंकें लगवानी चाहिये चिमचिमाहट खुजली तथा कंपयुक्त वातरक्त में सिंगी लगवाना उचितहै जोरुधिर एकस्थान से दूसरे स्थानमें जाताहोय तो पछना अथवा फस्तसे रुधिरनिकलवाना चाहिये वातरक्तमें शरीरके म्लान होनेपर और अधिकवातवाले वातरक्तमें रुधिरनहींनिकलवाना चाहिये क्योंकि रुधिरकेनाश से बढ़ी हुईवायु बहुत सूजन कंप स्तंभ वातजन्य शिरारोग ग्लानि तथा अन्यवात रोग उत्पन्न करती है बिल कुल रुधिरके निकलजानेसे खंजादिक वातरोग और मृत्युभीहोतीहै इसलिये स्नेहकासेवन करके प्रमाणके अनुसार रुधिर निकलवाना चाहिये ॥ ६५६ ॥

विरेच्यःस्नेहयित्वादौस्नेहयुक्तैर्विरेचनैः। रूक्षैर्वामृदुभिःशस्तमसकृद्वस्तिकर्म्मच॥ नहिवस्तिसमंकिञ्चिद्वातरक्तचिकित्सितम्। वाह्यमालेपनाभ्यंगपरिषेकोपनाहनैः॥ वि रेकास्थापनस्नेहपानैर्गम्भीरमाचरेत् । दिवास्वप्नंससन्तापंव्यायामंमैथुनंतथा ॥ कटू ष्णगुर्वभिष्यन्दिलवणाम्लौचवर्जयेत् ॥ ६५७ ॥

वातरक्त में विरेचन तथा स्नेह प्रयोग करके स्नेहयुक्त अथवा रूखी स्वल्प विरेचन करानेवाली औषधियों के द्वारावारंवारवस्ति देनीचाहिये क्योंकि वस्ति के समान और कोई इसकी औषधि नहीं है बाहरवाले वातरक्त में लेप अभ्यंग परिषेक तथा मल्हम के द्वारा और गंभीर वात रक्तमें विरेचन आस्थापन तथा स्नेह पानकेद्वारा चिकित्सा करनीचाहिये दिनमें सोना संताप व्यायाम मैथुन और कटु उष्ण भारी अभिष्यन्दी निमकीन तथा खट्टीवस्तु यहसब वातरक्तमें छोड़देनी चाहिये॥६५७॥

पुराणायवगोधूमानीवाराःशालिषष्टिकाः। भोजनार्थेरसार्थेतुविष्किराःप्रतुदाहिताः॥ आढ़क्यश्चणकामुद्गामसूराःसकुलत्थकाः। यूषार्थेबहुसर्पिष्काःप्रशस्तावातशोणिते॥ सुनिषण्णकवेत्राग्रकाकमाचीशतावरी। वास्तुकोपोदिकाशाकंशःकंसौवर्चलंतथा॥ घृत

मांसरसेभृष्टंशाकंसात्म्यायदापयेत् । सुनिषण्णःचांगेरीसदृशंचतुःपत्रशाक सजलेस्थले भवतिमूसुनइतिलोके । धवंलोचिलमीइतिकिंचित् ॥ ६५८ ॥

पुराने जो गेहूं तिन्नी शालिधान्य तथा सांठी यहभोजनके लिये और विष्किर तथा प्रतुदजीवोंके मांसकारस यहसब रसकेलिये देनाचाहिये अरहड़ चना मूंग मसूर तथाकलथींके यूषमें बहुत घी मिलाकर वातरक्तमें देना श्रेष्ठहै शाकके अभ्यासवाले वातरक्तवाले को चोपतिया वेतका अग्रभाग काकमाची सताउर बथुआ पोय तथा सौवर्चल शाक घीमें भूनकर मांसके रसकेसाथ देनाचाहिये ॥६५८॥

सर्पिस्तैलवसामज्जापानाभ्यञ्जनवस्तिभिः । सुखोष्णैरुपनाहैश्चवातोत्तरमुपाचरेत् ॥ हितोगोधूमचूर्णश्चछागक्षीरघृतप्लुतैः । लेपस्तद्वत्तिलाभृष्टाःपिष्टाःपयसिनिर्वृताः ॥ क्षीरपिष्टातसीलेपोवर्द्धमानफलेनवा ॥ ६५९ ॥

अधिक वातवाले वातरक्तमें घी तेल चर्बी तथा मज्जा पान मर्दन तथा वस्तिक्रियामें देनेचाहिये और कुछ गरमलेप करना चाहिये गेहूंके आटेको बकरीके दूध तथा घी में मिलाकर लेपकरने से भुने हुए तिलोंको दूधमें पीसकर लेपकरने से अलसी को दूधमें पीसकर लेपकरने से अथवा रेंड़ीको दूध में पीसकर लेपकरने से वातरक्तका नाश होताहै ॥ ६५९ ॥

उभेशताह्वेमधुकंबलाञ्चप्रियालकञ्चापिकसेरुकञ्च । घृतंविदारीञ्चशितोपलाञ्चकुर्यात्प्रदेहंपवनेसरक्ते ॥ रास्नागुडूचीमधुकंबलेद्वेसजीवकंसर्षभकंपयञ्च । घृतञ्चसिद्धंमधुशेषयुक्तरक्तानिलार्त्तिप्रणुदेत्प्रदेहः ॥ वासागुडूचीचतुरंगुलानामेरण्डतैलेनपिबेत्कषायम् । क्रमेणसर्वांगजमप्यशेषंजयेदसृग्वातभवंविकारम् ॥ दशमूलीशृतंक्षीरंसद्यःशूलनिवारणम् । परिषेकोऽनिलप्रायेतद्वत्कोष्णेनसर्पिषा ॥ ६६० ॥

सतावर सौंफ बरियारा मुलहठी चिरौंजी कसेरू घी बिलारीकन्द तथा मिश्री इनसबको पीसकर लेपकरनेसे रासना गिलोय मुलहठी दोनोंबला जीवकऋषभक दूध तथा घी इनसबको पकाकर सहत मिलाकर लेपकरनेसे वातरक्तका नाशहोताहै वांसा गिलोय तथा अमलतास इनकेकाढ़ेमें रेंड़ीकातेल मिलाकर पीनेसे सर्वाङ्गमें गयेहुएभी वातरक्तका क्रमसेनाश होताहै अधिक वातवाले वातरक्तमें दशमूल के साथ दूधका पाककरके सींचने से अथवा कुछ गरम घी के द्वारा सींचने से पीड़ा का नाशहोता है ॥ ६६० ॥

पटोलकटुकाभीरुत्रिफलामृतसाधितम् ।क्वाथंपीत्वाजयेज्जन्तुःसदाहंवातशोणितम्॥ त्रिवृद्विदारीक्षुरकंक्वाथोवातास्रनाशनः । अमृताकफवातघ्नीकफमेदोविशोषिणी ॥ वातरक्तप्रशमनीकण्डूवीसर्पनाशिनी । गुडूच्याःस्वरसंकल्कंचूर्णंवाक्वाथमेवच ॥ प्रभूतकालमासेव्यमुच्यतेवातशोणितात् । अमृतानागरधान्याककर्षत्रितयेनपाचनंसिद्धम् ॥ जयतिसरक्तंवातंसामंकुष्ठान्यशेषाणि । वत्सादन्युद्भवःक्वाथःपीतोगुग्गुलुमिश्रितः । समीरणसमायुक्तंशोणितंसंप्रणाशयेत् । तिस्रोऽथवापञ्चगुडेनपथ्याजग्ध्वापिबेच्छिन्नरुहाकषायम् ॥ तद्वातरक्तंशमयत्युदीर्णमाजानुभिन्नंच्युतमप्यवश्यम् ॥ ६६१ ॥

परवल कुटकी सतावर त्रिफला तथा गिलोय इनके काढ़े को पीने से दाहसहित वातरक्तका

नाशहोताहै रसौत विलारीकन्द तथा गोखुरूका काढ़ा वातरक्त का नाशकहै गिलोय कफ तथा मेदकी सुखानेवाली और कफ वात वातरक्त खुजली तथा विसर्प इनसवकी नाशक है इसलिये गिलोयका स्वरस कल्कचूर्ण अथवा काढ़ा वहुत कालतक सेवनकरने से वातरक्त का नाशहोताहै गिलोय सोंठ तथा धनियां इनसवको एक २ तोले लेकर काढ़ाकरके पीने से वातरक्त आमवात और अनेक प्रकार के कुष्ठोंकानाशहोता है गिलोयके काढ़े में गूगुल डालकर पीने से वातरक्त का नाशहोताहै तीनअथवा पांच हड़ गुड़के साथ खाकर गिलोयका काढ़ा पीनेसे वहुत वढ़ेहुए घुटनोंतक फटेहुये और वहतेहुए भी वातरक्त का नाशहोताहै ६६१ ॥

गुग्गुल्वमृतवल्लीभिर्द्राक्षातुङ्गरसेनवा । त्रिफलायारसैर्युक्तागुटिकाःकोलसम्मिताः ॥ भक्षयेन्मधुनालोड्यशृणुकुर्वन्तियत्फलम् । पादस्फोटंमहाघोरंस्फुटन्सर्वाङ्गसञ्चयम् ॥ तत्सर्वंनाशयेत्याशुसाध्यंचैवसशोणितम् इतिगुग्गुलुगुटिका ॥ ६६२ ॥

गूगुल गिलोय दाख पुन्नागकारस और त्रिफलेका काढ़ा इनसवको पीस छः २ मासेकी गोली वनाकर सहतमें मिलाकरखाय इस्से अत्यन्त भयंकर पैरोंका फटना सवअंगोंका फटना और वातरक्त का नाशहोता है ॥ इतिगूगुलगुटिका ॥ ६६२ ॥

माहिषंनवनीतन्तुवलिनापरिमिश्रितम् । गोमूत्रमिश्रितंकृत्वाक्षीरेणलवणेनच॥तदेकत्र समालोड्यवह्निनाभावयेच्छनैः । गात्रमुद्वर्तयेत्तेनदेहस्फुटनशान्तये॥घृतेनवातंसगुडाविबन्धंपित्तंशिताढ्यामधुनाकफञ्च । वातासृगुग्रंरुवुतैलमिश्राशुण्ठ्यामवातंशमयेद्गुडूची॥ सिंहास्यपञ्चमूलीछिन्नरुहैरण्डगोक्षुरक्वाथः । एरण्डतैलरामठसैन्धवचूर्णान्वितःपीतः ॥ प्रशमयतिवातरक्तंतथामवातंकटीशूलम् । मूत्रपुरीषविवन्धंब्रध्नविकारंसुदुर्व्वारम् ।गन्धर्वहस्तवृषगोक्षुरकामृतानांमूलंवलेक्षुरकयोश्चपचेत्तुधीमान् । वातासृगाशुविनिहन्ति चिरप्ररूढम् आजानुगंस्फुटितमूर्द्धगतन्तुधीमान् ॥ कफपित्तप्रशमनंकच्छूवीसर्पनाशनम् । वातरक्तप्रशमनंहृद्यंगुडघृतंस्मृतम् ॥ पिप्पलीवर्द्धमानंवासेव्यंपथ्यागुडेनवा६६३॥

भैंसके मक्खनके साथ गन्धक गोमूत्र दूध तथा सेंधानोन इनसवको मिलाकर अग्निमें थोड़ागरमकरे इसकेलेपकरनेसे देहका फटना शान्त होताहै गिलोय घीके साथ सेवन करनेसे वातरोग गुड़के साथ विवंध शक्करके साथ पित्त सहतकेसाथ कफ रेंड़ी के तेलकेसाथ वातरक्त और सोंठकेसाथ सेवनकरने से आमवात को नष्टकरती है वांसा पंचमूल गिलोय रेंड़ी तथा गोखुरू इनसवके काढ़ेमें रेंड़ीका तेल हींग तथा सेंधानोन डालकर पीनेसे वातरक्त आमवात कमरकीपीड़ा मलमूत्रकारुकना और बढ़ाहुआ ब्रध्न रोग नष्टहोताहै रेंड़ीकी जड़ वांसा गोखुरू गिलोय वरियारा कीजड़ और तालमखाना इनसवके काढ़ेके सेवनसे वहुतपुराना वातरक्त घुटनोंतक फटाहुआ तथा ऊर्ध्वगत वातरक्त कफ पित्त कच्छू (खुजली) और विसर्पका नाशहोताहै गुड़केसाथ घीके सेवनसे वर्द्धमानपिप्पली के सेवनसे तथा गुड़के साथहड़के सेवनसे वातरक्तकानाशहोताहै ॥ ६६३ ॥

कोकिलाक्षामृताक्काथंपिवेत्कृष्णांयथावलम् । पथ्यभोजीत्रिसप्ताहान्मुच्यतेवातशोणितात् ॥ मधुकाद्द्विगुणंतैलंतैलाद्दाजंपयोभवेत् । तद्यथाग्निवलंपेयंवातरक्तरुजापहम् ॥ अगस्तिपुष्पचूर्णेनमाहिषंजनयेद्दधि । तदुत्थनवनीतेनदेहजंस्फुटनंजयेत् ॥ ६६४ ॥

तालमखाने तथा गिलोय के काढ़ेमें पीपलकाचूर्ण छोड़कर बलके अनुसार पीनेसे और पथ्य भोजनकरनेसे तीन सप्ताह में वातरक्तका नाश होताहै एकभाग सहत दोभाग तेल चारभाग बकरीका दूध इनतीनोंको मिलाकर अग्निबलके अनुसार पीने से वातरक्त कानाशहोताहै अगस्तके फूलों का चूर्ण भैंस के दूध में मिलाकर दही जमावे उसके द्वारा जो मक्खन निकालाजाता है वह देह के फटनेका नाश करता है ६६४ ॥

त्रिफलानिम्बमञ्जिष्ठावचाकटुकरोहिणी । वत्सादनीदारुनिशाकषायोनवकार्षिकः ॥ वातरक्तंतथाकुष्ठंपामानंरक्तमण्डलम् । कण्डूकपालिकाकुष्ठंपानादेवापकर्षति ॥ पञ्चरक्तिकमाषेणकषायोनवकार्षिकः । किञ्चिवंसाधितकाथेयोग्यमात्राप्रदीयते ॥ कर्षादौतुपलंयावत्दद्यात्षोड़शिकंजलम् । ततस्तुकुड़वंयावदष्टादशगुणंजलम् ॥ चतुर्गुणमतश्चोर्ध्वंयावत्प्रस्थादिकंभवेत् ॥ ६६५ ॥

त्रिफला नींबकीछाल मजीठ वच कुटकी गिलोय तथा दारुहल्दी इन नौ औषधियों को एक २ तोला लेकर काढ़ा करके पिये इसके सेवनसे वातरक्त कुष्ठ गीली खुजली रक्तमंडल खुजली और कपालिका कुष्ठका नाश होताहै इस ९ कर्षके काढ़ेमें पांचरत्तीका माशा लेना चाहिये और इस काढ़े की योग्य मात्रा देनी चाहिये एक कर्षसे लेकर पल पर्य्यन्त औषधियों का काढ़ा सोलह गुने जल में करना चाहिये कुड़व पर्य्यन्त में अठारह गुना डालना चाहिये और इसके उपरान्त प्रस्थादि पर्यन्त चौगुना जल डालना चाहिये ॥ ६६५ ॥

विरेचनैर्घृतक्षीरपानैःसेकैःसवास्तिभिः । लेपनंशाल्मलीकल्कमविक्षीरेणसंयुतम् ६६६ ॥

विरेचन घृततथा दुग्धपान सींचना और वस्ति क्रिया इन सबसे वातरक्तका नाश होताहै शाल्मली की छालको भेड़ीके दूधमें पीसकर लेपकरने से वातरक्त नष्ट होताहै ॥ ६६६ ॥

रक्तोत्तरंक्षीरघृतंमधुकोशीरवारिभिः । सेचनंचात्रकर्तव्यमविक्षीरैःक्षणंक्षणम् ॥ सहस्रशतधौतेनघृतेनरुधिरोत्तरे । लेपनंसुष्ठुशीतेनघृतसर्ज्जरसेनवा ॥ शीतैर्निर्वापणैश्चापिरक्तपित्तोत्तरंजयेत् । रक्तोत्तरंक्षीरघृतंमधुकोशीरवारिभिः ॥ सरोगेसरुजेदाहेरक्तंविश्राव्यलेपयेत् । तिलाःप्रियालंमधुकंविशमूलञ्चवेतसम् ॥ सघृतंपयसापिष्टंप्रलेपोदाहरोगनुत् ॥ ६६७ ॥

अधिक रक्तवाले वातरक्तमें दूध घी मुलहठी खस सुगन्धवाला और भेड़ीका दूध इन सबको मिलाकर उस मिलेहुए से बारंबार सींचना चाहिये हजारबार अथवा सौबार धोयेहुए घी से लेपकरना चाहिये अधिक रुधिर तथा पित्तवाले वातरक्त में अत्यन्त शीतल औषधि अथवा घी तथा राल के लेपसे या शीतल वस्तुओंके सींचने से हितहोताहै दाह तथा पीडायुक रक्तवर्ण वातरक्त में रुधिर निकलवाकर दूध घी मुलहठी खस तथा सुगंधवालाका लेपकरना चाहिये तिल चिरोंजी मुलहठी कमलकीजड़ वेत घी इन सबको दूधके साथ पीसकर लेपकरने से दाहका नाश होताहै ॥ ६६७ ॥

पित्तोत्तरंतुकाश्मर्य्यद्राक्षारग्वधचन्दनैः । मधुकक्षीरकाकोलीयुक्तैःक्वाथंसुशीतलम् ॥ शर्करामधुसंयुक्तंवातरक्तेपिबेन्नरः ॥ धारोष्णंमूत्रसंयुक्तंक्षीरंदोषानुलोमनम् । पिबेद्वासत्रिवृच्चूर्णम्पित्तरक्तावृतानिले ॥ क्षीरेणैरण्डतैलंवाप्रयोगेनपिबेन्नरः । बहुदोषोविरेकार्थञ्जी

णंक्षीरोद्नाशनः ॥ पटोलंत्रिफलाभीरुगुडूचीकटुरोहिणी । क्काथ.पित्ताधिकेशस्तःशर्करामधुसंयुतः ॥ ६६८ ॥

गंभारी दाख अमलतास चन्दन मुलहठी तथा क्षीरकाकोली इन सबके शीतल हुए काढ़े में शक्कर तथा सहत मिलाकर पीने से अधिक पित्तवाले वातरक्त का नाश होता है धारोष्ण दूध में गोमूत्र मिला कर पीनेसे वायु अपने मार्गके अनुसार होजाती है निसोत के चूर्ण सहित धारोष्ण दूध पीने से पित्त तथा रुधिर युक्त वात शान्त होतीहै बहुत दोष वाले वातरक्त में विरेचनके लिये दूध सहित रेंड़ीका तेल पिये और औषधि के पचने पर दूध भात खाय परवल त्रिफला सतावर गिलोय तथा कुटकी इनके काढ़े मे शक्कर और सहत डालकर पीने से अधिक पित्त वाले वातरक्त का नाशहोताहै ॥ ६६८ ॥

तिक्तस्यसर्पिष.पानंबहुशश्चविरेचनम् । वमनंमृदुनात्यर्थंस्नेहसेकोविलंघनम्॥ कोष्णासेकाश्चशस्यन्तेवातरक्तेकफोत्तरे । तैलमूत्रसुरासुक्तैःपरिषेकाःसदाहिताः ॥ गौरसर्षपकल्केनप्रदेहोवारुजापहः । शिग्रु.सवरुणःकल्कोधान्याम्लेनानिलार्तिजिल्लेपात् ॥ भवतिनचेतिविकल्पोनविधेय सिद्धयोगेऽस्मिन् । कल्कःश्लेष्मोत्तरेलेपोवाजिगन्धातिलोद्भवः ॥ लेपःसर्षपनिम्बार्कीहस्राक्षारतिलेर्हितः ॥ ६६९ ॥

तिक्त घृत का पीना बारम्बार विरेचन कोमल औषधियों के द्वारा वमन स्नेहसे सींचना लंघन और गरम वस्तुओं से सींचना यह कफज वातरक्त में श्रेष्ठ उपायहैं तेल गोमूत्र सुरा तथा सिरके के द्वारा सींचना और सुफेद सरसों के कल्क का लेप वात रक्त की पीड़ा को नष्ट करताहै सहजन तथा वरुणा की छाल को धान्याम्लमें पीस करलेप करने से निस्सन्देह वातकी पीड़ाका नाशहोता है असगंध तथा तिलके कल्क के द्वारा लेप करने से अथवा सरसों नींब आक थौंसा जवाखार और तिलके द्वारा लेप करने से अधिक कफ वाले वातरक्त का नाशहोताहै ॥ ६६९ ॥

श्लेष्मःशक्तुघृतक्षारःकपित्थत्वग्भिरेवच । मसूरशिग्रोस्तद्बीजंहितंधान्याम्लसंयुतम् । मुहूर्तात्क्लिसमम्लेश्चसिञ्चेद्वातकफोत्तरे । मुस्तामलकनिशाभिःक्कथितंतोयंसमाक्षिकंपेयम्॥ जयतिसदागतिरक्तंसकफंवासततयोगेन । हरिद्रामृतकक्काथंमधुनामधुरीकृतम् ॥ पिबेद्वात्रिफलाक्काथंवातरक्तेकफाधिके । हरीतकींवातक्रेणपाययेदुदकेनवा ॥ ६७० ॥

सत्तू घी जवाखार कैथा तज मसूर तथा सहजनकेबीज इनसबको धान्याम्लमें पीसकर लेपकरके एक मुहूर्तके पीछे कांजीके सींचनेसे अधिक कफवाले वातरक्तका नाशहोताहै मोथा आमला तथा हल्दीके काढ़ेमें सहतडालकर पीनेसे अधिक कफवाले वातरक्तका नाशहोताहै हल्दी और गिलोयके काढ़ेमें सहतडाल करपीनेसे त्रिफलाके काढ़ेके पीनेसे अथवा मट्ठा या गरम जलके साथहड़के पीनेसे अधिक कफवाले वातरक्तका नाशहोताहै ॥ ६७० ॥

गृहधूमोवचःकुष्ठंशताह्वारजनीद्वयम्। प्रलेपःशूलनुद्वातरक्तेवातकफोत्तरे॥ अमृताकटुकायष्टीशुण्ठीकल्कंसमाक्षिकम् । गोमूत्रपीतंजयतिसकफंवातशोणितम् ॥ धात्रीहरिद्रामुस्तानांकपायंवासमाक्षिकम्॥ ६७१ ॥

घरकाधुवां वच कूट सोंफ तथा दोनों हल्दी इनके लेपसे वातकफज वातरक्तकी पीड़ाका नाश होताहै गिलोय कुटकी मुलहठी तथा सोंठके कल्कको सहतयुक्त गोमूत्रके साथ पीनेसे अथवा आमला हल्दी तथा मोथाके काढ़ेमें सहतडाल कर पीनेसे कफसहित वातरक्त का नाश होताहै ॥ ६७१ ॥

लांगल्यास्त्वमृतातुल्यंकन्दमुद्धृत्ययत्नतः। योजयेत्त्रिफलालोहरजस्त्रिकटुकैःसमैः॥ गुग्गुल्वमृतवल्लीभिर्द्राक्षालुंगरसेनवा। त्रिफलायारसैर्युक्ता गुटिकाःकोलसम्मिताः॥ भक्षयेन्मधुनालोड्यशृणुकुर्वन्तियत्फलम्। पादस्फुटितंदुर्भग्नंजानुप्राप्तंचयद्भवेत्॥ यच्च देहोद्गतंरक्तंयच्चासाध्यंप्रकीर्तितम्। घ्नन्त्येताभक्ष्यमाणस्यप्रबलंवातशोणितम्॥ इति लांगलीगुटिका ॥ ६७२ ॥

करिहारीकीजड़ गिलोय त्रिफला लोहचूर्ण त्रिकटु गूगल तथा गिलोय इनसबके चूर्णको दाख नींबू अथवा त्रिफलाके काढ़ेके साथ छः २ मासेकी गोलीबनाकर सहतमें मिलाकर चाटनेसे पैरोंका फटना दुर्भग्न घुटनोंतक प्राप्त अथवा देहमें व्याप्त असाध्य वातरक्तकाभी नाश होताहै इति लांगली गुटिका ॥ ६७२ ॥

संसर्गेसन्निपातेचक्रियापथमुक्तांमिश्रंकुर्य्यात्॥ ६७३ ॥

द्वन्द्वज और त्रिदोषज वातरक्तमें कहीहुई चिकित्सा मिलाकर करना चाहिये ॥ ६७३ ॥

बलामतिबलांमेदामात्मगुप्तांशतावरीम्। काकोलींक्षीरकाकोलींरास्नांमृद्वीकचपेषयेत्॥ घृतंचतुर्गुणंक्षीरैस्तैःसिद्धंवातरक्तनुत्। हृत्पांडुरोगवीसर्प्पकामलादाहनाशनम्॥ इतिबलाघृतम्॥ ६७४ ॥

बला अतिबला मेदा किवाँच सतावर काकोली क्षीरकाकोली रास्ना तथा दाख इन सबको पीस कर इनके द्वारा चौगुने दूधसे युक्त घीका पाक करके सेवन करने से वातरक्त हृदय के रोग पांडु वीसर्प कामला और दाह का नाश होता है इतिबलाघृत ॥ ६७४ ॥

बलास्थिरानागबलागुडूचीशतावरीकल्ककषायसिद्धम्। तैलंविदध्यादनुवासनेपुतद्वातरक्तंशमयत्युदीर्णम्॥ अपरार्पिडतैलम्॥ ६७५ ॥

बला शालिपर्णी नागबला गिलोय सतावर इनसबके कल्क और काढे के द्वारा तेलका पाककरके अनुवासन वस्ति लेनेसे बहुत बढ़ाहुआ वातरक्त शान्तहोता है इति अपरार्पिडतैल ॥ ६७५ ॥

त्रायन्तिकाचामलकीद्विकाकोलीशतावरी। कसेरुकाकषायेणकल्कैरेभिःपचेद्घृतम् ६७६

त्रायमाणा आमला काकोली क्षीरकाकोली सतावर तथा कसेरू इनसबके कल्क तथा कषाय के द्वारा पाककिये हुए घृत के सेवन से वातरक्तका नाशहोता है ॥ ६७६ ॥

उभेपरूषकेद्राक्षाकाश्मर्य्यंससुरद्रुमान्। पृथग्विदार्य्याःस्वरसंतथाक्षीरंचतुर्गुणम्॥ एतदायोजितंसर्पिःपारूषकमितिस्मृतम्। वातरक्तेक्षतेक्षीणेविसर्पेपैत्तिकेज्वरे॥ पारूषकंघृतम्॥ ६७७ ॥

दोनों फालसे दाख गंभारी तथा देवदारु इन सब के द्वारा चौगुने बिलारी कन्दके रस तथा दूध के साथ घी का पाक करके सेवन करनेसे वातरक्त क्षतसे क्षीण वीसर्प और पित्तज्वर नष्ट होता है इति पारूषकघृत ॥ ६७७ ॥

शतावरीकल्कगर्भंरसतस्याश्चतुर्गुणे। क्षीरंतुल्यंघृतंसिद्धंवातशोणितनाशनम्॥इतिशतावरीघृतम्॥६७८॥

सतावरके कल्क के द्वारा सतावरके चौगुने रस तथादूध के साथ पाक किये हुए घीके सेवनसे वातरक्त का नाशहोता है इति शतावरीघृत॥ ६७८॥

श्रावणीक्षीरकाकोलीक्षीरिकाजीवकैःसमैः। सिद्धंऋषभकंसर्पिःसक्षीरंवातरक्तनुत्॥ अत्रक्षीरंचतुर्गुणम्। इतिऋषभघृतम्॥ ६७९॥

ऋषभक क्षीरकाकोली खिन्नी तथा जीवक इन सबके कल्कके द्वारा चौगुने दूध के साथपाक किये हुए घीसे वातरक्त का नाश होताहै इति ऋषभ घृत॥ ६७९॥

गुडूचीक्काथकल्काभ्यांसपयस्कंघृतंशृतम्। हन्तिवातंतथारक्तंकुष्ठंजयतिदुस्तरम्॥ क्षीरंस्नेहसमंदद्याच्चतुर्भिश्चचतुर्गुणम्। एकद्वित्रिद्रवैर्द्रव्यैःकुर्य्यात्स्नेहाच्चतुर्गुणम्॥ इतिगुडूचीघृतम्॥ ६८०॥

गिलोयकेकाथ तथा कल्ककेद्वारा समभाग दूधसहित पाककियेहुए घीसे वातरक्त तथा दुस्तर कुष्ठका नाशहोताहे इतिगुडूचीघृत॥ ६८०॥

अमृतायाःकषायेणकल्केनचमहौषधात्। मृद्वग्निनाघृतंसिद्धंवातरक्तहरंपरम्॥ आमवाताढ्यवातादीन्क्रिमिकुष्ठव्रणानपि। अर्शांसिगुल्मांश्चतथानाशयेदाशुयोजितम्॥ इतिगुडूचीघृतम्॥ ६८१॥

सोंठके कल्क तथा गिलोयके काढ़ेकेसाथ मंदाग्निमें पाककियेहुए घीके सेवनसे वातरक्त आमवात ऊरुस्तंभ कृमि कुष्ठ व्रण ववासीर और गोलेका शीघ्रनाशहोताहे इतिगुडूचीघृत॥ ६८१॥

अमृतास्वरसविपक्वंसर्पिस्तत्कल्कसाधितंपीतम्। अपहरतिवातरक्तमुत्तानञ्चावगाढ़ञ्च॥ इतिगुडूचीघृतम्॥ ६८२॥

गिलोय के रस तथा कल्कके साथ पाककियेहुए घीके पीने से ऊपरवाले तथा गंभीर वातरक्त का नाशहोताहै इतिगुडूचीघृत॥ ६८२॥

अमृतायाःपलशतंजलद्रोणावशेषितम्। घृतप्रस्थंविपक्तव्यंकल्कादष्टौपलानिच॥ चतुर्गुणेनपयसावातासृक्कुष्ठनाशनम। कामलापाण्डुरोगघ्नप्लीहकासज्वरापहम्॥ इतिगुडूचीघृतम्॥ ६८३॥

बत्तीसतोले गिलोय के कल्ककेद्वारा चारसौतोले गिलोय के ६२४ तोले काढ़े और २५६ तोले दूधके साथ ६४ तोले घी का पाककरके सेवनकरने से वातरक्त कुष्ठ कामला पांडु प्लीहा खांसी तथा ज्वर का नाश होताहे इति गुडूची घृत॥ ६८३॥

अमृतामधुकद्राक्षात्रिफलानागरंवला। वासारग्वधवृश्चीवदेवदारुत्रिकण्टकम्॥ कटुकारोहिणीकृष्णाकाश्मर्यस्यफलानिच। रास्नाक्षुरकगन्धर्व्ववृद्धदारघनोत्पलैः॥ कल्कैरेभि समैःकृत्वासर्पिःप्रस्थंविपाचयेत्। धात्रीरसःसमोदेयोवारित्रिगुणसंयुतः॥ सम्यक्सिद्धञ्चविज्ञायभोज्येपानेचशस्यते। वहुदोषोत्थितंवातरक्तेनसहमूर्च्छितम्॥ उत्तानं

त्र्यतिगम्भीरंत्रिकजंघोरुजानुकम् । क्रोष्टुशीर्षमहामूलेऽऽमवातेसुदारुणे ॥ दाहरोगेोपसृष्टस्यवेदनाश्चातिदुस्तराम् । मूत्रकृच्छ्रमुदावर्तंप्रमेहंविषमज्वरान् ॥ एतान्सर्व्वान्निहन्त्याशुवातपित्तकफोत्थितान् ॥ सर्व्वकालोपयोगेनवर्णायुर्बलवर्द्धनम् । अश्विभ्यां निर्मितंश्रेष्ठंघृतमेतदनुत्तमम् ॥ इतिश्रमृतायंघृतम् ॥ ६८४ ॥

गिलोय मुलहठी दाख त्रिफला सोंठ वरियारा वांसा अमलतास श्वेत पुननवा देवदारु गोखुरू कुटकी पीपल गंभारी रासना तालमखाना एरंड चिंरायता मोथा तथा उत्पल इनसब का कल्क आमलेकारस और तिगुना जल इनसबकोद्वारा ६४ तोले घीकापाक करे इसघृतके भोजन तथा पीनेसे वाह्य तथा गंभीर बहुदोपज वातरक्त और त्रिक जंघा पिंडली तथा घुटनों में प्राप्त वातरक्त नाशहोता है और क्रोष्टुशीर्ष बहुत पीड़ा युक्त भयंकर आमवात दाहज कठिन पीड़ा मूत्रकृच्छ्र उदावर्त प्रमेह विषम ज्वर वातजनित तथा कफजनित यह सवरोग नष्ट होते हैं अश्विनी कुमारके बनायेहुए इस घीके सदैव सेवनसे बल वर्ण तथा आयुकीवृद्धिहोतीहै इतिअमृतादिघृत ॥ ६८४ ॥

गुडूचीस्वरसेसर्पिर्जीवनीयैश्चसाधितम् । कल्कश्चतुर्गुणेक्षीरैःसिद्धंवाजसत्रातनुत । इतिगुडूचीघृतम् ॥ ६८५ ॥

जीवनीयगणके कल्कके द्वारा गिलोयकेरस और चौगुनेदूधके साथ पाककियेहुए घीकेसेवनसे वातरक्तकानाश होताहै इति गुडूचीघृत ॥ ६८५ ॥

अमृतायाःशतंप्राप्यजलद्रोणेविपाचयेत् । चतुर्भागावशिष्टन्तुघृतप्रस्थंविपाचयेत् क्षीरंचतुर्गुणंतत्रदापयेन्मतिमान्भिषक् । कल्कञ्चात्रप्रवक्ष्यामियथावदनुपूर्वशः ॥ काकोलीक्षीरकाकोलीजीवकर्षभकौचयत् । शतावरीपयस्याञ्चमधुकंनीलमुत्पलम् ॥ अश्वकन्दस्यमूलानिस्थिरंवाकटुरोहिणीम् । ऋद्धिर्वृद्धितथामेदेश्वदंष्ट्रांबृहतीद्वयम् ॥ गुडूचींपिप्पलींरास्नांवासकञ्चापिसंहरेत् । तदेकस्थंसमैर्भागैः पाचयेन्मृदुनाग्निना । पानाभ्यञ्जननस्येषु परिषेकेचदापयेत् ॥ वातरक्तंसशोषाढ्यं सदाहंक्रोष्टुशीर्षकम् । खञ्जोरुस्तम्भवातञ्च वातरक्तंसुदारुणम् ॥ बहूदितंवातकृच्छ्रं गृध्रसीवातकण्टकम् । नाशयेद्योजितंसर्पिर्धन्वन्तरिवचोयथा ॥ इति महागुडूचीघृतम् ॥ ६८६ ॥

४०० तोले गिलोयको १०२४ तोले जलमें पाककरके चौथाई वाकी रहनेपरउतारले फिर उसके साथ २५६ तोले दूध और ६४ तोले घी मिलावे इसके उपरान्त इससबमें काकोली क्षीरकाकोली जीवक ऋषभक सतावर दूधी मुलहठी नीलकमल असगन्धकी जड़ शालिपर्णी कुटकी ऋद्धि वृद्धि मेदा महामेदा गोखरू दोनोंभटकटैया गिलोय पीपल रासनातथावांसा इनसबओषधियोंके समभाग कल्क डालकर मंदाग्निमें पाककरे इसघृतको पान मर्दन नस्य तथा सींचनेके काममेंलानेसे वातरक्त शोष दाह क्रोष्टुशीर्ष खंज ऊरुस्तंभ दुस्साध्य वातरक्त वातज मूत्रकृच्छ्र गृध्रसी और वातकंटकरोगका नाशहोताहै यह धन्वन्तरिका वचनहै इति महागुडूचीघृत ॥ ६८६ ॥

क्वाथेनशतपुष्पायाः कुष्ठस्यमधुकस्यच । एकैकंसाधयेत्तैलं वातरक्तरुजापहम् ॥ इति शताह्वादितैलम् ॥ ६८७ ॥

सौंफ कूट अथवा मुलहठीके काथके द्वारा पाककियेहुए तेलके सेवनसे वातरक्तका नाशहोताहै इति शताह्वादि तेल ॥ ६८७ ॥

सारिवारिष्टकुष्माण्ड पोतकीभस्मजाम्बुना । गुडूचीगव्यदुग्धाभ्यांकमरंगरसेनच ॥ विपचेत्तिलजंतैलं दत्त्वैतानिभिषग्वरः । काकोल्यौजीवकंमेदे शताह्वाक्षीरिणीयुतैः ॥ झिंगीसिक्थामृतानन्ता सार्जसैन्धवचन्दनैः । हन्याद्वातास्रजंघोरं स्फुटितंगलितंतथा ॥ चर्मदलाख्यंपामादीं स्त्वग्दोषञ्चविपादिकाम् । कुष्ठान्यर्शांसिवीसर्पं व्रणशोथंभगन्दरम् ॥ नसोऽस्तिवातरक्तस्य विकारोयोऽभिवर्द्धितः । यन्नहन्यात्प्रसह्यैतत् पिण्डतैलं महत्स्मृतम् ॥ इति महापिण्डतैलम् ॥ ६८८ ॥

सारिवा नींव पेठा पोयकीभस्म गिलोय तथा कमरख इनकेरसमें और [illegible]कातेलइनसबमें काकोली क्षीरकाकोली जीवक मेदा महामेदा सौंफ खिन्नी मजीठ मोम गिलोय अनन्तमूल राल सेंधानोन और चन्दन इन सब औषधियों का कल्क डालकर पाक करे इस तेलके सेवन से वात रक्त स्फुटित तथा गलित चर्मदलरोग खुजली त्वचाकेदोष बिवाई कुष्ठ ववासीर विसर्प व्रण सूजन तथा भगन्दर का नाशहोताहै ऐसाकोईभी वहुत वढ़ाहुआ वातरक्तका विकारनहीं है जो इसमहापिंड तैलसे नष्ट न होसके ॥ इति महापिंडतैल ॥ ६८८ ॥

सारिवासर्जमञ्जिष्ठायष्टी सिक्थैःपयोन्वितैः । तैलपक्वंप्रयोक्तव्यं पिण्डाख्यंवातशोणिते ॥ इति पिण्डतैलम् ॥६८९॥

सारिवा राल मजीठ मुलहठी तथा मोम इनसब के द्वारा दूध सहित तेलका पाककरके सेवन करने से वातरक्तका नाशहोताहै ॥ इति पिंडतैल ॥ ६८९ ॥

सारिवासर्जयष्ट्याह्व मधुशिक्थैःपयोन्वितैः । सिद्धमेरण्डजंतैलं वातरक्तरुजापहम् ॥ अपूतमथितस्यास्य पिण्डतैलस्ययोगतः ॥ इति पिण्डतैलम् ॥ ६९० ॥

सारिवा राल मुलहठी तथा मोम इनसब के द्वारा दूध सहित रेंडीके तेलका पाककरके विनाछाने मथले इस तेलसे वातरक्त की पीडाका नाश होताहै ॥ इति पिंडतैल ॥ ६९० ॥

पद्मकेशरयष्ट्याह्वफेनिलापद्मकोत्पलैः । पृथक्पञ्चपलैर्दत्तं वलाकिंशुकचन्दनैः ॥ जलेशृतंपचेत्तैलंप्रस्थंसौवीरसम्मितम् । लोध्रकाकोलिकोशीरजीवकर्षभकेशरैः ॥ मदयन्तिलतापत्रपद्मकेशरपद्मकैः । प्रपौण्डरीककालीयमेदमांसीप्रियङ्गुभिः ॥ कुङ्कुमेद्विगुणैःकर्षैःमञ्जिष्ठायाःपलेनच । महापद्मकमिदंतैलंवातासृग्ज्वरनाशनम् ॥ इतिमहापद्मकंतैलम् ॥ ६९१ ॥

पद्म केशर मुलहठी नींव पद्माक उत्पलवला टेसू तथा चन्दन यह सब पाँस २ तोले इनसबका काढ़ा सौवीर ६४ तोले और तेल ६४ तोले इनसबमें लोध काकोली खस जीवक ऋषभक नागकेशर चमेलकिपत्ते गिलोय तेजपात पद्मकेशर पद्माक स्थूल कमल पीतचन्दन मेदा जटामांसी प्रियंगु तथा केशर यह सबदो२ तोले और मजीठ ४ तोले इनसब को मिलाकर पाककरे इस तेल के सेवनसे वातरक्त का नाश होताहै इति महापद्मकतैल ॥ ६९१ ॥

आतिगम्भीरंत्रिकजंघोरुजानुकम् । क्रोष्टुशीर्षमहामूलेआमवातेसुदारुणे ॥ दाहरोगे पसृष्टस्यवेदनाआतिदुस्तराम् । मूत्रकृच्छ्रमुदावर्तंप्रमेहंविषमज्वरान् ॥ एतान्सर्व्वान् निहन्त्याशुवातपित्तकफोत्थितान् ॥ सर्व्वकालोपयोगेनवर्णायुर्बलवर्द्धनम् । अश्विभ्यां निर्मितंश्रेष्ठंघृतमेतदनुत्तमम् ॥ इतिअमृताद्यंघृतम् ॥ ६८४ ॥

गिलोय मुलहठी दाख त्रिफला सोंठ वरियारा वांसा अमलतास श्वेत पुनर्नवा देवदारु गोखुरू कुटकी पीपल गंभारी रासना तालमखाना एरंड बिधारा मोथा तथा उत्पल इनसब का कल्क आमलेकारस और तिगुना जल इनसबकोद्वारा ६४ तोले घीकापाक करे इसघृतके भोजन तथा पीनेसे वाह्य तथा गंभीर बहुदोषज वातरक्त और त्रिक जंघा पिंडली तथा घुटनों में प्राप्त वातरक्त नाशहोता है और क्रोष्टुशीर्ष बहुत पीड़ा युक्त भयंकर आमवात दाहजकठिन पीड़ा मूत्रकृच्छ्र उदावर्त प्रमेह विषम ज्वर वातजनित तथा कफजनित यह सबरोग नष्ट होते हैं अश्विनीकुमार के बनायेहुए इस घीके सदैव सेवनसे बल वर्ण तथा आयुकीवृद्धिहोतीहै इतिअमृतादिघृत ॥ ६८४ ॥

गुडूचीस्वरसेसर्पिर्जीवनीयैश्चसाधितम् । कल्कैश्चतुर्गुणे क्षीरे सिद्धंवाजस्रवातनुत् । इतिगुडूचीघृतम् ॥ ६८५ ॥

जीवनीयगणके कल्कके द्वारा गिलोयकेरस और चौगुनेदूधके साथ पाककियेहुए घीकेसेवनसे वातरक्तकानाश होताहै इति गुडूचीघृत ॥ ६८५ ॥

अमृतायाःशतंप्राप्यजलद्रोणेविपाचयेत् । चतुर्भागावशिष्टन्तुघृतप्रस्थंविपाचयेत् क्षीरंचतुर्गुणंतत्रदापयेन्मतिमान्भिषक् । कल्कञ्चात्रप्रवक्ष्यामियथावदनुपूर्वशः ॥ काकोलीक्षीरकाकोलीजीवकर्षभकौचयत् । शतावरीपयस्याञ्चमधुकंनीलमुत्पलम् ॥ अश्वकन्दस्यमूलानिस्थिरंवाकटुरोहिणीम् । ऋद्धिवृद्धितथामेदेश्वदंष्ट्रांबृहतीद्वयम् ॥ गुडूचींपिप्पलींरास्नांवासकञ्चापिसंहरेत् । तदेकस्थंसमैर्भागैः पाचयेन्मृदुनाग्निना । पानाभ्यञ्जननस्येषु परिषेकेचदापयेत् ॥ वातरक्तंसशोषाढ्यं सदाहंक्रोष्टुशीर्षकम् । खञ्जोरुस्तम्भवातञ्च वातरक्तंसुदारुणम् ॥ बह्वादितंवातकृच्छ्रं गृध्रसीवातकण्टकम् । नाशयेद्योजितंसर्पिर्द्धन्वन्तरिवचोयथा ॥ इति महागुडूचीघृतम् ॥ ६८६ ॥

४०० तोले गिलोयको १२४ तोले जलमें पाककरके चौथाई बाकी रहनेपरउतारले फिर उसके साथ २५६ तोले दूध और ६४ तोले घी मिलावे इसके उपरान्त इससबमें काकोली क्षीरकाकोली जीवक ऋषभक सतावर दूधी मुलहठी नीलकमल असगन्धकी जड़ शालिपर्णी कुटकी ऋद्धि वृद्धि मेदा महामेदा गोखरू दोनोंभटकटैया गिलोय पीपल रासनातथावांसा इनसबऔषधियोंके समभाग कल्क डालकर मंदाग्निमें पाककरे इसघृतको पान मर्दन नस्य तथा सींचनेके काममेंलानेसे वातरक्त शोष दाह क्रोष्टुशीर्ष खंज ऊरुस्तंभ दुस्साध्य वातरक्त वातज मूत्रकृच्छ्र गृध्रसी और वातकंटकरोगका नाशहोताहै यह धन्वन्तरिका वचनहै इति महागुडूचीघृत ॥ ६८६ ॥

क्वाथेनशतपुष्पायाः कुष्ठस्यमधुकस्यच । एकैकंसाधयेत्तैलं वातरक्तरुजापहम् ॥ इति शताह्वादितैलम् ॥ ६८७ ॥

सौंफ कूट अथवा मुलहठीके क्वाथके द्वारा पाककियेहुए तेलके सेवनसे वातरक्तका नाशहोताहै इति शताह्वादि तैल ॥ ६८७ ॥

सारिवारिष्टकुष्माण्ड पोतकीभस्मजाम्बुना । गुडूचीगव्यदुग्धाभ्यांकर्मरंगरसेनच ॥ विपचेत्तिलजंतैलं दत्त्वैतानिभिषग्वरः । काकोल्योजीवकंमेदे शताह्वाक्षीरिणीयुतैः ॥ ञ्जिगीसिक्थामृतानन्ता सार्जसैन्धवचन्दनैः । हन्याद्वातास्रजंघोरं स्फुटितंगलितंतथा ॥ चर्मदलाख्यंपामादीं स्त्वग्दोषञ्चविपादिकाम् । कुष्ठान्यर्शांसिवीसर्पं व्रणशोथंभगन्दरम् ॥ नसोऽस्तिवातरक्तस्य विकारोयोऽभिवर्द्धितः । यन्नहन्यात्प्रसह्यैतत् पिण्डतैलं महत्स्मृतम् ॥ इति महापिण्डतैलम् ॥ ६८८ ॥

सारिवा नींब पेठा पोयकीभस्म गिलोय तथा कमरख इनकेरसमें और [illegible]कातेलइनसबमें काकोली क्षीरकाकोली जीवक मेदा महामेदा सौंफ खिन्नी मजीठ मोंम गिलोय अनन्तमूल राल सेंधानोन और चन्दन इन सब औषधियों का कल्क डालकर पाक करे इस तेलके सेवन से वात रक्त स्फुटित तथा गलित चर्मदलरोग खुजली त्वचाकेदोष बिवाई कुष्ठ बवासीर विसर्प व्रण सूजन तथा भगन्दर का नाशहोताहै ऐसाकोईभी बहुत बढ़ाहुआ वातरक्तका विकारनहीं है जो इसमहापिंड तैलसे नष्ट न होसके ॥ इति महापिंडतैल ॥ ६८८ ॥

सारिवासर्जमञ्जिष्ठायष्टी सिक्थैःपयोन्वितैः । तैलपक्वंप्रयोक्तव्यं पिण्डाख्यंवातशोणिते ॥ इति पिण्डतैलम् ॥६८९॥

सारिवा राल मजीठ मुलहठी तथा मोंम इनसब के द्वारा दूध सहित तेलका पाककरके सेवन करने से वातरक्तका नाशहोताहै ॥ इति पिंडतैल ॥ ६८६ ॥

सारिवासर्जयष्ट्याह्व मधुशिक्थैःपयोन्वितैः । सिद्धमेरण्डजंतैलं वातरक्तरुजापहम् ॥ अपूतमथितस्यास्य पिण्डतैलस्ययोगतः ॥ इति पिण्डतैलम् ॥ ६९० ॥

सारिवा राल मुलहठी तथा मोंम इनसब के द्वारा दूध सहित रेंडीके तेलका पाककरके विनाछाने मथले इस तेलसे वातरक्त की पीडाका नाश होताहै ॥ इति पिंडतैल ॥ ६९० ॥

पद्मकेशरयष्ट्याह्वफेनिलापद्मकोत्पलैः । पृथक्पञ्चदलैर्दत्तं बलाकिंशुकचन्दनैः ॥ मदजलेश्शृतंपचेत्तैलंप्रस्थंसौवीरसम्मितम् । लोध्रकाकोलिकोशीरजीवकर्षभकेशरैः ॥ मदयन्तिलतापत्रपद्मकेशरपद्मकैः । प्रपौण्डरीककालीयमेदमांसीप्रियङ्गुभिः ॥ कुङ्कुमेद्विगुणैःकर्षैःमञ्जिष्ठायाःपलेनच । महापद्मकमिदंतैलंवातासृग्ज्वरनाशनम् ॥ इतिमहापद्मकंतैलम् ॥ ६९१ ॥

पद्म केशर मुलहठी नींब पद्माक उत्पलबला टेसू तथा चन्दन यह सब पाँच २ तोले इनसबका काढ़ा सौवीर ६४ तोले और तेल ६४ तोले इनसबमें लोध काकोली खस जीवक ऋषभक नागकेशर चमेलीकेपत्ते गिलोय तेजपात पद्मकेशर पद्माक स्थूल कमल पीतचन्दन मेदा जटामांसी प्रियंगु तथा केशर यह सबदो२ तोले और मजीठ ४ तोले इनसब को मिलाकर पाककरे इस तेल के सेवनसे वातरक्त का नाश होताहै इति महापद्मकतैल ॥ ६९१ ॥

पद्मकोशीरयष्ट्याकरजनीक्वाथसाधितम्।स्यात्पिष्टैःसर्वमञ्जिष्ठावीराकाकोलिचन्दनैः॥ खड़ाकपद्मकमिदंतैलंवातास्रपित्तनुत्॥ इतिखड़ाकपद्मकतैलम्॥ ६९२॥

पद्माक खस मुलहठी तथा हल्दी इनका काढ़ा और तेल इनसब में राल मजीठ काकोली क्षीर काकोली तथा चन्दन के कल्क को डालकर पाककरे इस तेलके सेवनसे वातरक्त का नाश होताहै॥ इति खड़ाकपद्मक तैल॥ ६९२॥

तुलांपचेज्जलद्रोणेगुडूच्याःपादशेषितम्।क्षीरद्रोणन्तुताभ्याञ्चपचेत्तैलाढकंशनैः॥ कल्कैर्मधुकमञ्जिष्ठाजीवनीयगणोत्थितैः। कुष्ठैलागुरुमृद्वीकामांसीव्याघ्रनखंनखी॥ हरेणुश्रावणीव्योषशताह्वाशृंगिसारिवे। त्वक्पत्रागुरुविक्रान्तास्थिरातामलकीतथा॥ नतकेशरह्रीवेरपद्मके[illegible]चन्दनम्। सिद्धंकर्षसमैर्भागैःपानाभ्यङ्गानुवासनैः॥ सेव्यं वातास्रजान्हन्तिस्रोतोधात्वन्तराश्रितान्। धन्यंपुंसवनंस्त्रीणांगर्भदंवातपित्तनुत्॥ स्वेदकण्डूरुजायामाशिरःकम्पामयार्दितान्। हन्याद्व्रणकृतान्दोषान्गुडूचीतैलमुत्तमम्॥ इतिगुडूचीतैलम्॥ ६९३॥

६२४ तोले जल में ४०० तोले गिलोय का चौथाई बचाहुआ काढ़ा ६२४ तोले दूध और २५६ तोले तेल इनसब में मुलहठी मजीठ जीवनीयगण कूट इलायची अगर दाख जटामांसी वघनखी नखी रेणुका मुंडी त्रिकटु सौंफ काकड़ासिंगी सारिवा दालचीनी तेजपात विक्रान्त शालिपर्णी भुईं आमला तगर नागकेशर सुगन्धवाला पद्माक उत्पल और चन्दन इनसबका एक २ तोले कल्क छोड कर मन्दाग्निमें विधिपूर्व्वक पाककरे इस तेलके पान मर्दन तथा अनुवासन वस्तिमें व्यवहार करने से स्रोत तथा धातुओंमें स्थित वातरक्त वातपित्त स्वेद खुजली पीड़ा आयास शिरका कांपना अर्दित तथा घावका नाश होताहै और यह तेल बलकारी गर्भदायक और पुत्रकारी है॥इति गुडूचीतैल ६९३॥

गुडूचीमधुकंह्रस्वपञ्चमूलपुनर्नवा। रास्नामेरण्डमूलञ्चजीवनीयानिलाभतः॥ पलानांशतिकैर्भागैर्बलापञ्चशतंभवेत्। कोलंबिल्वंयवान्माषान्कुलत्थांश्चाढकोन्मितान्॥ काश्मर्य्याणाञ्चशुष्काणांद्रोणंद्रोणशताऽम्भसा। साधयेज्जर्जरंपूतंचतुर्द्रोणञ्चशेषयेत्॥ तैलद्रोणंपचेत्तेनदत्त्वापञ्चगुणंपयः। पिष्ट्वात्रिपलिकंचैवचन्दनोशीरकेशरम्॥ पत्रैलागुरुकुष्ठानितगरंमधुयष्टिका। मञ्जिष्ठार्द्धपलंचैवतत्सिद्धंसर्वयौगिकम्॥ वातरक्ते क्षतेक्षीणेभारार्तेक्षीणरेतसी। वेपनोक्षिप्तभग्नानांसर्वकाङ्गजरोगिणाम्॥ योनिदोषमपस्मारमुन्मादंविषमज्वरम्। हन्यात्पुंसवनञ्चैवतैलाग्र्यममृताह्वयम्॥ इतिअमृताह्वयतैलम्॥ ६९४॥

गिलोय मुलहठी छोटा पंचमूल पुनर्नवा रासना अरंडकी जड़ जीवनीयगण यह सब चार २सौ तोले वरियारा २००० तोले वेर वेल जौ उर्द कुलथी यह सब दोसै छप्पन २ तोले और गंभारी ६२४ तोले इन सब औषधियोंको १०० द्रोण जल में पाककरके जब चार द्रोण बाकीरहै तब छानले इस के साथ ६२४ तोले तेल और तेलका पंचगुना दूध मिलावे फिर इनसब में चन्दन खस नागकेशर तेजपात अगर इलायची कूट तगर और मुलहठी यहसब बारह२ तोले और मजीठ २ तोले इनसब

औषधियोंके कल्क मिलाकर विधि पूर्व्वक पाककरे इसतेलके सेवनसे वातरक्त क्षतसे हुई क्षीणता कम्प भारसे हुई क्षीणता वीर्य्यकी क्षीणता उछलना हड्डी आदिका टूटना सर्वाङ्ग तथा एकांगगतरोग योनिरोग मिर्गी उन्माद तथा विषमज्वर इनसब का नाश होताहै और पुत्रकी उत्पत्ति होतीहै॥इति अमृताह्वय तैल ॥ ६९४ ॥

मृणालोत्पलशालूकसारिवोदीच्यकेशरैः । चन्दनद्वयभूनिम्बपद्मबीजकसेरुकैः ॥ पटोलकटुकानन्तागुन्द्रापर्पटवासकैः । पिष्ट्वातैलंघृतंपक्वंतृणमूलरसेनवा॥ क्षीरद्विगुण संयुक्तंवस्तिकर्म्मसुयोजितम् । नस्याभ्यञ्जनपानैर्वाहन्यात्पित्तगदानिदम्॥ इतिमृणालाद्यंतैलम् ॥ ६९५ ॥

कमलकीडंडी उत्पल कमलकीजड़ सारिवा सुगन्धवाला नागकेशर दोनोंचन्दन चिरायता कमल गट्टे कसेरू पर्व्वल कुटकी अनन्तमूल गोंदी पित्तपापड़ा तथा वांसा इनसबको पीसकर तेल अथवा घी,तृणमूलका रस और दूना दूध इनसबमें मिलाकर विधिपूर्व्वक पाककरे इसकोवस्तिक्रिया नस्य मर्दन तथा पानकरनेमें प्रयोगकरनेसे पित्तकेरोगनष्टहोतेहैं ॥ इतिमृणालादितैल ॥ ६९५ ॥

कनकशिखरिमानक्षारसंसिद्धतोयेकुसुमलवणयुक्तैःसर्जनीर्य्यासचूर्णैः । विधिशृततिलतैलंकल्कयुक्तंनिहन्तिप्रचुरतरमिदानीमिन्द्रलुप्तास्त्रवातम॥धत्तूराद्यंतैलम् ॥ ६९६ ॥

धतूरा लटजीरा तथा मानकेचू इनकेक्षारकेजल और तेलमें धवई के फूल सेंधानोन तथा राल इन समभाग के चूर्ण को डालकर पाककरे इसके सेवन से इन्द्रलुप्त और वातका नाश होताहै ॥ इति धतूरादि तैल ॥ ६९६ ॥

शुद्धांपचेन्नागबलातुलान्तुजलार्मणेपादकषायसिद्धम् । विस्राव्यतैलाढकमत्रदेयमजापयस्तैलविमिश्रितन्तु ॥ नतंसयष्टिंमधुकंचकल्कंदद्यात्पृथक्पञ्चपलंविपक्वम् । तद्वातरक्तंशमयत्युदीर्णंवस्तिप्रदानेनहिसप्तरात्रात् ॥ दशाहयोगेनकरोत्यरोगंपीतञ्चतैलोत्तममश्विनोक्तम् ॥ इतिनागबलातैलम् ॥ ६९७ ॥

४०० तोले गुलशकरीको चौगुनेजलमें पाककरके चौथाई रहनेपरछानले इसकेसाथ तिलकातेल २५६तोले और उतनाही बकरीकादूध मिलायके इनसबमें तगर मुलहठीका बीस २ तोले कल्क मिलाकर विधिपूर्वक पाककरे इसकेद्वारा वस्तिलेने से सातदिनमें बहुत बढ़ेहुए वातरक्त का नाश होताहै और अश्विनीकुमारकेकहेहुए इसतेलके पीनेसे दशदिनमेंसंपूर्णरोगनष्टहोतेहैं॥इतिनागबलातैल६९७

जीवकर्षभकंकोलीरिष्यप्रोक्ताशतावरी । मधुकंमधुपर्णीचकाकोलीद्वयमेवच ॥ मुद्गमाषास्यपर्णीचदशमूलंपुनर्नवा । बलामृताविदारीचसाश्वगन्धास्मभेदकौ ॥ कुर्य्यात्कल्कंकषायञ्चताभ्यांतैलंघृतंपचेत् । लाभतश्चवसामज्जामांसंप्रतुदविष्किरात् ॥ चतुर्गुणेनपयसातत्सिद्धंवातशोणितम् । सर्व्वदेहाश्रितान्हन्तिव्याधीन्घोरांश्चवातजान्॥ इतिजीवकाद्योमिश्रकः ॥ ६९८ ॥

जीवक ऋषभक कंकोलमिर्च किवांच सतावर मुलहठी गंभारी काकोली क्षीरकाकोली मुद्गपर्णी माषपर्णी पुनर्नवा दशमूल वरियारा गिलोय बिलारीकन्द असगन्ध तथा पाषाणभेद इनके कल्क तथा

फाढ़ेकेसाथ तेल घी और प्रतुद तथा विषकिर जीवोंकीचर्वी मज्जा तथा मांस यहजहांतक मिलसकें और चौगुनादूध इन सबको पकावे इसके सेवनसे वातरक्त और सब शरीरमें स्थित घोरवातरोगोंका नाशहोताहै ॥ इति जीवकादिमिश्रक ॥ ६९८ ॥

बलाकषायकल्काभ्यांतैलंक्षीरचतुर्गुणम् । शतपाकंभवेदेतद्वातासृग्वातपित्तनुत् ॥ धन्यंपुंसवनञ्चैवनराणांशुक्रवर्द्धनम् । रेतोयोनिविकारघ्नमेतद्वातविकारनुत् ॥ इति बलातैलंशतपाकम् ॥ ६९९ ॥

बरियाराके कल्क तथा काढ़ेकेसाथ चौगुने दूध सहित तेलको सौवार पाककरके सेवन करने से वातरक्त वातपित्त वीर्य्यदोष योनि के विकार तथा वातरोगों का नाश होताहै और वीर्य्य की वृद्धि तथा पुत्रोत्पत्तिहोतीहै ॥ इति शतपाकबलातैल ॥ ६९९ ॥

मधुयष्ट्याःपलशतंकषायेपादशेषिते । तैलाढकंसमक्षीरंपचेत्कल्कैःपलोन्मितैः ॥ शतपुष्पावरीमूर्वापयस्यागुरुचन्दनैः । स्थिराहंसपदीमांसीद्विमेदामधुपर्णिभिः ॥ काकोलीक्षीरकाकोलीतामलक्यृद्धिपद्मकैः । जीवकर्षभजीवन्तीत्वक्पत्रनखवालकैः ॥ प्रपौण्डरीकमञ्जिष्ठासारिवेन्दुवितुन्नकैः । वातासृक्पित्तदाहार्त्तिज्वरघ्नंबलवर्णकृत् ॥ इतिमधुकाद्यंतैलम् ॥ ७०० ॥

४०० तोले मुलहठीकाकाढ़ा २५६ तोले तेल और इतनाहीदूध इनसबमें सौंफ सतावर मरोड़फली दूधी अगर चन्दन शालिपर्णी हंसपदी जटामांसी मेदा महामेदा गिलोय काकोली क्षीरकाकोली भुइँआमला ऋद्धि पद्माक जीवक ऋषभक जीवन्ती तज तेजपात नखी सुगन्धवाला कमल मजीठ सारिवा कपूर और धनियां इनसबके चारचार तोले कल्क डालकर विधिपूर्वक पाककरे इसतेलके सेवन से वातरक्त पित्त दाह की पीड़ा तथा ज्वरका नाश होताहै और बल तथा वर्ण की वृद्धि होती है ॥ इति मधुकादि तैल ॥ ७०० ॥

मधुयष्ट्याःपलंपिष्ट्वातैलंप्रस्थंचतुर्गुणे । क्षीरसाध्यंशतंवारान्तदेवमधुकान्वितम् ॥ सिद्धंदेयंत्रिदोषेस्याद्वातास्रश्वासकासनुत् । धन्यंपुंसवनञ्चैवकामलादाहनाशनम् ॥ इतिमधुकतैलंशतपाकम् ॥ ७०१ ॥

४ तोले मुलहठी के द्वारा चौगुने दूध सहित तेलको सौवार पाककरके सेवन करने से त्रिदोष वातरक्त श्वास खांसी कामला तथा दाह का नाश होता है और पुत्रोत्पत्तिहोती है ॥ इति शतपाक मधुक तैल ॥ ७०१ ॥

बलाकषायकल्काभ्यांतैलंक्षीरंसमंपचेत् । सहस्रशतपाकंवावातासृग्वातरक्तनुत् ॥ रसायनमिदंश्रेष्ठमिन्द्रियाणांप्रसादनम् । जीवनंबृंहणंस्वर्य्यंशुक्रासृग्दोषनाशनम् ॥ इतिबलातैलम् ॥ ७०२ ॥

बरियारे के कषाय तथा कल्क के द्वारा दूध सहित तेल को हजारवार अथवा सौवार पाक करके सेवन करनेसे वातरक्त वीर्य दोष रक्तदोष तथा वात रोगोंका नाशहोता है और इन्द्रियों की प्रसन्नता धातुवृद्धिकर स्वरकी उत्तमता तथा आयुकी वृद्धि होती है और उत्तम रसायनहै॥ इति बलातैल७०२॥

पुनर्नवामूलशतंविशुद्धंरुवूकमूलञ्चतथाप्रयोज्य । दत्त्वापलंषोडशकञ्चशुण्ठ्याःस इकुट्यसम्यग्विपचेद्घटेऽपाम् ॥ पलानिचाष्टावथकौशिकस्यतेनाष्टशेषेणपुनःपचेत्तु। ऐरण्डतैलंकुडवञ्चदद्याद्दत्वात्रिवृच्चूर्णपलानिपञ्च ॥ निकुंभचूर्णस्यपलंगुडूच्याःपलद्व यंचार्द्धपलंपलंप्रति । फलत्रयत्र्यूषणचित्रकाणिसिन्धूत्थभल्लातविडङ्गकानि ॥ कर्षंतथा माक्षिकधातुचूर्णपुनर्नवायाःपलमेवचूर्णम् । चूर्णानिदत्वाह्यवतार्य्यशीतेखादेन्नरःकर्षस मप्रमाणम् ॥ वातासृजंवृद्धिगदञ्चसम्नजयत्यवश्यंत्वथगृध्रसीञ्च । जङ्घोरुपृष्ठत्रिकव स्तिजञ्चतथामवातंप्रबलञ्चहन्ति ॥ इतिपुनर्नवागुग्गुलुः ॥ ७०३ ॥

पुनर्नवा तथा एरंड की जड़ चार २ सौ तोले सोंठ ६४ तोले इन सबको कूटकर १२४८ तोले जल में पाककरे फिर अष्टमांश बाकी रहजानेपर छानले और इस काढ़े में ३२ तोले गूगुल डाल कर फिर पाक करे इसके उपरान्त इसमें रेंडीका तेल १६ तोले निसोत का चूर्ण २० तो० दन्तीका चूर्ण ४ तो० गिलोय का चूर्ण ८ तो० त्रिफला त्रिकटु चीता सेंधानोन भिलावा तथा वायविडंग छः २ तोले सोनामक्खी का चूर्ण १ तो० और पुनर्नवा का चूर्ण ४ तो० इनसबको डालकर उतार ले फिर शीतल होजाने पर १ तोले नित्य खानेसे वातरक्त अण्डवृद्धि गृध्रसी और जंघा पिंडलीपीठ त्रिक तथा वस्ति में हुई कठिन आमवात का नाश होता है ॥ इति पुनर्नवा गुग्गुल ॥ ७०३ ॥

यावशूकसुरदारुसैन्धवंमुस्तकत्रुटिवचायमानिकाः । व्योषदीप्यकनिशाफलत्रिकं जीरकद्वयविडङ्गचित्रकम् ॥ कार्षिकंसुमसृणंसुयोजितं संयुतंपुरपलैश्चपञ्चभिः। शर्क रांपुरसमांसुपेषयेत्तत्तसर्पिषिविनिक्षिपेत्ततः ॥ वातरक्तमुदरंभगन्दरंप्लीहयक्ष्मविषमज्वरं गरम्। श्वित्रकुष्ठमखिलव्रणानयंचित्तविभ्रममदांश्चदारुणान्॥ गृध्रसीञ्चगुदजाग्निमंद तांहन्तिकोष्ठजनितंमहागदम् । वज्रमिन्द्रस्यकराद्विच्युतम्गुप्तशैलकुलमुत्तमंद्रुतम् ॥ अन्नपानपरिहारवर्जितंसर्वकालसुखदन्निरत्ययम्। सेव्यमानमिदमश्विनिर्म्मितंगुग्गुलो र्हिवटिकारसायनम् ॥ चत्वारोमाषकाहीनेमध्यमेऽष्टौचमाषकाः । श्रेष्ठाद्वादशकाःप्रो क्ताःकोष्ठंविज्ञायपाययेत् ॥ स्रंसनत्वात्गुरुत्वाद्वागुग्गुलोःकरणक्रमः । इतिशर्करास मगुग्गुलुः ॥ ७०४ ॥

जवाखार देवदारु सेंधानोन मोथा छोटीइलायची वच अजवाइन त्रिकटु अजमोद हल्दी त्रिफला जीरा कालाजीरा वायविडंग तथा चीता इनसब औषधियों के एकएक तोले चूर्णको बीस तोले गूगुल में मिलाकर और गूगुलकी बराबर शक्कर मिलाकर गरमघी में मिलाले इसके सेवनसे वातरक्त उदर भगन्दर प्लीहा यक्ष्मा विषमज्वर गरदोष श्वेतकुष्ठ सबप्रकारके घाव चित्तभ्रम मद गृध्रसी बवासीर मन्दाग्नि तथा कोष्ठजनित महारोगोंका नाश होताहै इसके सेवनमें अन्नपानका कोई निषेध नहीं है यह सबकालमें सुखदायी विकाररहित और रसायन है इसकी हीनमात्रा चारमासे मध्यम मात्रा ८ मासे और श्रेष्ठ मात्रा बारहमासेकीहै यह कोष्ठको विचारकर यथायोग्य देनी चाहिये॥ इति शर्करासम गुग्गुल ॥ ७०४ ॥

प्रस्थमेकंगुडूच्याश्च अर्द्धप्रस्थञ्चगुग्गुलोः ॥ प्रत्येकंत्रिफलायास्तुतत्प्रमाणंविनिर्दि

शेत्सर्वमेकत्रसंकुट्यक्काथयेन्नल्वणेऽम्भसि॥ पादशेषंपरिस्राव्यकषायंग्राहयेद्भिषक्पुनः पचेत्कषायन्तुयावत्सान्द्रत्वमागतम्॥ दन्तीव्योपविडंगानिगुडूचीत्रिफलात्वचः तत उचार्द्धपलंचूर्णंगृह्णीयाच्चप्रतिप्रति॥ कर्षन्तुत्रिवृतायाश्चसर्वमेकत्रचूर्णयेत्॥ तस्मिन् सुसिद्धंविज्ञायकवोष्णेप्रक्षिपेत्बुधः॥ ततश्चाग्निबलंमत्वाखादेत्कर्षप्रमाणतः। वातर क्तंतथाकुष्ठंगुदजान्यग्निसादनम्। दुष्टव्रणंप्रमेहांश्चआमवातंभगन्दरम्। नाड्याढ्य वातंश्वयथुंसर्वानेतान्व्यपोहति॥ इतिअमृतागुग्गुलुः॥ ७०५

गिलोय ६४ तोले गूगुल ३२ तोले और त्रिफला बत्तीस २ तोले इनसबको एकसाथ कूटकर ६२४ तोले पानीमें काढ़ा करके चौथाई बाकीरहनेपर छानले और इसी काढ़े को दूसरीबार पाककरके जबगाढ़ा होजाय तब उतारले फिर कुछ गरम रहनेपर दन्ती सोंठ पीपल मिर्च वाय-विडंग गिलोय त्रिफला तथा तज इनसब औषधियोंका दोदो तोले चूर्ण और निसोतका १ तोले चूर्ण मिलावे इसके पछि अग्निबलको देखकर १ तोलेभर रोज औषध खानेसे वात रक्त कुष्ठ बवासीर मंदाग्नि दुष्टघाव प्रमेह आमवात भगन्दर नाड़ीव्रण ऊरुस्तंभ तथा सूजनका नाश होताहै इति अमृतागुग्गुल॥ ७०५॥

त्रिप्रस्थममृतायाश्चप्रस्थमेकन्तुगुग्गुलोः। प्रत्येकंत्रिफलाप्रस्थे वर्षाभूप्रस्थमे वच॥सर्वमेकत्रसंकुट्यसाधयेन्नल्वणेऽम्भसि। पुनःपचेत्पादशेषंयावत्सान्द्रत्वमागतम्। दन्तीचित्रकमूलानांकणाविश्वफलत्रिकम्। गुडूचीत्वकुविडंगानांप्रत्येकार्द्धपलंमतम्॥ त्रिवृतांकर्षमेकन्तुसर्वमेकत्रचूर्णयेत्। सिद्धेउष्णेक्षिपेत्तत्र अमृतागुग्गुलुंपरम्॥ अतो यथाबलंखादेदम्लपित्तोविशेषतः। वातरक्तंतथाकुष्ठंगुदजान्यग्निसादनम्॥ दुष्टव्रणं प्रमेहांश्चआमवातंभगन्दरम्। नाड्याढ्यवातंश्वयथुंहन्यात्सर्वामयांस्तथा॥ अश्वि भ्यांनिर्म्मितश्चायममृतास्योहिगुग्गुलुः। इतिअमृतागुग्गुलुः॥ ७०६॥

१९२ तोले गिलोय चौंसठ चौंसठ तो० गूगुल हड़ बहेड़ा आमला तथा पुनर्नवा इनसबको अच्छे प्रकार कूटकर ६२४ तोले जलमें पाककरे जब चौथाई बाकीरहे तब उतारले और छानकर उसी काढ़ेको गाढ़ाहोजाने तक पकावे फिर कुछ गरमी रहनेपर दन्ती चीता पीपल सोंठ त्रिफला गिलोय तज तथा वायविड़ंग दोदो तोले और निसोत १ तोले इनसबको चूर्ण करके मिलावे इसको बलके अनुसार सेवनकरनेसे अम्ल पित्त वात रक्त कुष्ठ बवासीर मन्दाग्नि दुष्टव्रण प्रमेह आमवात भगन्दर नाड़ीव्रण ऊरुस्तंभ सूजन और अन्य संपूर्ण रोगोंका नाश होताहै यह अमृता-गूगुल अश्विनीकुमारने बनायाहै॥ इति अमृतागुग्गुल॥ ७०६॥

गुड़रामठशुण्ठीनांमांसकूष्माण्डयोरपि। गुडूच्यागुग्गुलोश्चैवप्रस्थःषोड़शभिःपलैः॥ स्निग्धःकाञ्चनसङ्काशःपक्वजम्बूफलोपमः।नूतनोगुग्गुलुःप्रोक्तःसुगन्धिर्यस्तुपिच्छिलः॥ शुष्कोदुर्गन्धिकश्चैवत्यक्तवर्णोन्यत्वमुपागतः। पुराणःसतुविज्ञेयोनसदेयस्तुरोगिणे॥ इति गग्गुलुःनवपुराणलक्षणम्॥ ७०७॥

गुड़ हींग सोंठ मांस पेठा गिलोय और गूगुल इनसबका १ प्रस्थ ६४ तोलेका होताहै जो गूगुल

स्निग्ध सुवर्णके समान कान्ति युक्त अथवा पकी जामुनके समान कान्तिवाला सुगंधित और सचिक्कन होय उसको नवीन गूगुल जानना चाहिये जो गूगुल सूखा दुर्गन्धित बिगड़ेवर्ण वालाहोय वह पुराना जानना चाहिये और यह रोगियोंको न देना चाहिये ॥ इति गुग्गुल नवपुराण लक्षण ॥ ७०७ ॥

कृमिरिपुदहनव्योषत्रिफलामरदारुचव्यभूनिम्बाः। मागधीमूलमुस्तंशटिवचाधातुमाक्षिकञ्चैव ॥ लवणक्षारनिशायुक्कुस्तुम्बुरुगजकणासहातिविषाः। कर्षांशिकान्येवसमानिकुर्यात्पलाष्टकञ्चाश्मजतुप्रदद्यात् ॥ निःपत्रशुद्धस्यपुरस्यधीमान्पलद्वयंलोहरजस्तथैव। सिताचतुष्कंपलमत्रवास्यात्निकुम्भकुम्भत्रिसुगन्धियुक्तम् ॥ पृथक्पलंचूर्णमथावपेच्चचन्द्रप्रभेयंगुटिकाविधेया। ज्वरातिसारग्रहणीविकाराञ्चार्शांसिनिनाशयतेपंडैव ॥ भगन्दरान्कामलपाण्डुरोगान्निनंष्टवह्नेःकुरुतेचदीप्तिम्। हन्त्यामयान्पित्तकफानिलोत्थान्नाडीगतेमर्मगतेव्रणेच ॥ क्षतक्षयेगृध्रसियक्ष्मरोगेमेहेगजाख्येप्रबलेप्रयोज्या। शुक्रक्षयेचाश्मरीमूत्रकृच्छ्रेशुक्रप्रवाहेऽप्युदरामयेच ॥ शम्भुंसमभ्यर्च्यकृतप्रसादंप्राप्तागुटीचन्द्रमसाप्रशस्ता। नपानभोज्येपरिहारवादोनशीतवातातपमैथुनेषु ॥ भक्तस्यपूर्वंसततंप्रयोज्यातक्रानुपानाप्यथमस्तुपाना। अजारसोजाङ्गलजोरसोवापयोऽथवाशीतजलानुपानम् ॥ शुक्रदोषान्निहन्त्यष्टौप्रमेहांश्चापिविंशतिम्। वलीपलितनिर्मुक्तोवृद्धोऽपितरुणायते ॥ गिरिजतुगुग्गुलुलोहान्येकीकृत्याथभावयेद्बहुशः। क्वाथैस्तद्व्याधिहरैस्तदनुचचूर्णीकृतंमिलितम् ॥ कृमिरिप्वादिकचूर्णैर्गिरिजतुसमधान्यपटोलयूषेण। इतिचन्द्रप्रभागुटिका ॥ ७०८ ॥

वायविडंग चीता त्रिकटु त्रिफला देवदारु चव्य चिरायता पिपलामूल मोथा कचूर वच सोनामक्खी सैंधानोन जवाखार हल्दी दारुहल्दी धनिया गजपीपल तथा अतीस यहसब एक २ तोले शिलाजीत ३२ तोले शुद्धगूगुल तथा लोहचूर्ण आठ २ तोले शक्कर १६ तोले और दन्ती निसोत दालचीनी इलायची तथा तेजपात चार २ तोले इनसब औषधियों को पीस गोलीबनाकर सेवन करने से ज्वर अतीसार ग्रहणी बवासीर भगन्दर कामला पांडु मंदाग्नि कफपित्त तथा बातजन्यरोग नाडी तथा मर्मोंके घाव क्षत क्षय गृध्रसी यक्ष्मा हस्तिप्रमेह वीर्य्यक्षय पथरी मूत्रकृच्छ्र वीर्य्य का बहना तथा उदर रोग यहसब नष्टहोते हैं चन्द्रमाने शिवजीका पूजनकरके प्रसन्नहुए शिवजीने यहगोलीपाईथी इसके सेवनमें पान भोजन शीत वात धूप तथा मैथुनका कोई निषेध नहीं है भोजनसे पहले इस गोलीको खाकर मट्ठा दहीका तोड़ बकरे अथवा जंगलीजीवोंके मांसका रस दूध या शीतल जलका अनुपान करना चाहिये इसके द्वारा आठों वीर्य्य के दोष बीसों प्रमेह झुर्री तथा बालोंके पकनेसे रहितहोकर वृद्धभी तरुणसा होजाताहै ॥ इति चन्द्रप्रभागुटिका ॥ ७०८ ॥

वरंमहिषलोचनोदरसन्निभवर्णस्यगुग्गुलोःप्रस्थम्। प्रक्षिप्यतोयराशौत्रिफलाञ्चयथोक्तपरिमाणम् ॥ द्वात्रिंशच्छिन्नरुहापलानिदेयानियत्नेन। विपचेत्तद्प्रमत्तोदर्व्यासं [illegible] त् ॥ अर्द्धक्षयितंतोयंजातंज्वलनस्यसम्पर्कात्। अवतार्यवस्त्रपूतंपुनरपिसं [illegible] त्रे ॥ सान्द्रीभूतेतस्मिन्नवतार्यहिमोपलस्पर्शे। त्रिफलाचूर्णार्द्धपलंत्रिकटु

इचूर्णंषड़क्षपरिमाणम् ॥ कृमिरिपुचूर्णार्द्धंपलंकर्षंकर्षंत्रिवृद्दन्त्योः । पलमेकन्तुगुडूच्या दत्त्वासंचूर्ण्ययत्नेन ॥ उपयुज्यचानुपानंयूषंक्षीरंसुगन्धिसलिलञ्च । इच्छाहारविहारीभेपजमुपयुज्यसर्वकालमिदम् ॥ तनुरोधिवातशोणितमेकाङ्गिञ्चुल्वणंचिरोत्थमपि । भग्नस्रुतपरिशुष्कंस्फुटितंदीर्णमाजानुयच्चापि ॥ व्रणकासकुष्ठगुल्मश्वयथुंगरपाण्डुमेहांश्च । मन्दाग्निञ्चविवन्धंप्रमेहपिड़कांश्चनाशयत्याशु ॥ सततंनिषेव्यमाणःकालवशाद्धन्ति सर्वगदान् । अभिभूयजरादोषंकरोतिकैशोरिकंरूपम् ॥ प्रत्येकंत्रिफलाप्रस्थोजलञ्चाढ़कमाढ़कम् । गुड़वद्गुग्गुलोःपाकःसन्धेयस्तुविशेषतः॥इतिकैशोरिकगुग्गुलुः।७०९ ॥

श्रेष्ठ भैंसे के नेत्रके समान वर्णवाला गूगुल हड़ वहेड़ा तथा आमला चौंसठ २तोले और गिलोय १२८ तोले इन सबको कूटकर ६२४ तोले जलमें पाककरे और कलछीसे चलाता जाय इसमें औषध कढ़ाई में नीचे लगकर जलने न पावे आधा रह जाने पर छानके उसीकाढ़ेको लोहे के पात्रमें पाककरे जवगाढ़ाहोजाय तव उतारले और शीतल होजाने पर त्रिफला का चूर्ण दोतोले त्रिकटुका चूर्ण ६ तोले वायविड़ंग २ तोले निसोत तथा दन्ती एक २ तोले और गिलोय चारतोले इन सब औषधियों के चूर्णको मिलाकर इसऔषधका सेवनकरे और यूप दूध अथवा सुगन्धित जलका अनुपान करे और यथेष्ट आहार विहार करे इसके द्वारा वहुत पुराना एक दोषज त्रिदोषज घुटने तक सूखाहुआ फटा हुआ अथवा वहताहुआ वात रक्त घाव खांसी कुष्ठ गुल्म सूजन गरदोष पांडु प्रमेह पिड़िका मन्दाग्नि तथा विवन्ध इनसब रोगों का नाशहोताहै और निरन्तर इसका सेवन करने से कालवश सबप्रकार के रोगनष्ट होते हैं और वृद्धावस्थाके दोषों का नाशहोकर किशोर अवस्था का रूप होजाताहै सर्वत्र गुड़के समान गूगुलका पाककरनाचाहिये ॥ इतिकैशोरिक गुग्गुल ॥ ७०९ ॥

त्रिफलातिविषादारुदार्वीमुस्तापरूषकैः । खदिराशननक्ताङ्गुडूचीनृपपादपैः ॥ भूनिम्बनिम्बकटुकाकालिङ्गकुलकैःसमैः।क्वाथंकृत्वाततःपूतंश्रुतमष्टगुणेऽम्भसि ॥ गुडूच्यास्तत्रसुकृतंचूर्णमर्द्धन्तुवारिणि । क्षिप्त्वासुनूतनेभाण्डेवासयेद्रजनीगतम् ॥ सोमोपेतेनपूतेनकौशिकंपरिभावयेत्। षड्गुणेनतुसप्ताहंशिलाजतुसमन्वितम् ॥सुक्तस्यतुपलान्यष्टौसमावाप्यविचक्षणः । ताप्यचूर्णपलञ्चैकंद्वेपलेमधुसर्पिषोः ॥ एकीकृत्यसमंसर्वंलिह्यात्सुत्रिफलाम्बुना । तनूनामुद्गयूषेणजाङ्गलानांरसेनवा ॥ जीर्णेऽजीर्णेचभुञ्जीतपुराणंशालिषष्ठिकम् । यथारोगंयथासात्म्यंरसेर्यूपैश्चसंस्कृतैः ॥ त्रिसप्ताहप्रयोगेणवातरक्तंसुदारुणम् । निहन्तिवीर्यतःक्षिप्रंकुष्ठरोगान्व्रणानपि ॥ भिन्नंभिन्नञ्चसन्धत्तेत्रिफलाख्योहिगुग्गुलुः॥ इतित्रिफलागुग्गुलुः॥ ७१० ॥

त्रिफलाअतीस देवदारु दारुहल्दी मोथा फालसा कत्था शालकाष्ठ हल्दी गिलोय अमलतास चिरायता नींबकुटकी इन्द्रजौ तथा पर्वल इन सब औषधियों को अठगुने जलमें पाककरके जबचौथाई रहे तबउतारले फिर उसकाढ़ेसे आधा गिलोयका चूर्ण इसमें मिलाकर नवीन वर्त्तन में एक रात्रि भर रखछांड़े इसके पीछे शिलाजीत तथा गूगुलको समभागलेकर इनके छःगुनेऊपर कहे हुए काढ़े में सातदिनतक भावनादेवे फिर सिरका ३२ तोले सोनामक्खीका चूर्ण ४ तोले और सहत तथा घी

थोकीरहनेपरछानले फिर इसकाढ़ेमें दन्ती निसोथ त्रिकटु इन्द्रायण वायविडंग मोथा त्रिफला ज़मीकन्द वच आलू मानकेचू पारा तथा गन्धक इनसवके दोदो तोले चूर्णकोमिलाकर पाककरे के उपरान्त १००० धतूरेके बीजोंको चूर्णकरके इसमें मिलावे फिर २ माशे इस औषधिको गरमजल आदिका अनुपानकरे इसके सेवनसे संधिगत शूलयुक्त शिरोगत घुटने तथा कमरमें आमवात नष्ट होतीहै और ववासीर विषमज्वर प्रमेह कुष्ठ भगन्दर मेदजरोग तथा कफ वातज नष्टहोतेहैं इसके सेवनसे जो वहुत दाहहोय अथवा वहुत दस्तआवें तोमठेके साथ भ पलावे उवटन शीतल जलमें स्नान तथा शयनकरावे इसकेसेवनसे वहुत दस्तआतेहैं इसलियेरोगीके को देखकर यहऔषध देनीचाहिये धतूरेके फलोंको क्रमसेजल आरनाल तथा गौके दूधमें शुद्धहोजानेपर चूर्णकरके इस औषधमेंडाले इति द्वितीयसिंहनादगुगुल ॥ ७१२ ॥

प्रस्थैकगुग्गुलोर्मानंकटुतैलेपलाष्टके । प्रत्येकंत्रिफलाप्रस्थंसार्द्धद्रोणेजलेपचेत् । पादशेषंसुपूतञ्चपुनरग्नावधिस्रयेत् । त्रिकटुत्रिफलामुस्तविडंगामलकानिच ॥ गुडूच्यग्नित्रिवृद्दन्तीवचासूरणमानकम् । कस्तूरीरससूतांशंप्रत्येकंशुक्तिसम्मितम् ॥ स्वकानकफलंसिद्धेसञ्चूर्ण्यनिःक्षिपेत् । ततोमाषद्वयंजग्ध्वापिबेत्ततजलादिकम् ॥ ग्निञ्चकुरुतेशीघ्रंवड़वानलसन्निभम् । धातुवृद्धिंवयोवृद्धिंबलंसुविपुलंतथा ॥ आमवातंशिरोवातंग्रन्थिवातंभगन्दरम् । जानुजङ्घाश्रितंवातंसकटीग्रहवेदनम् ॥ अश्मरीं मूत्रकृच्छ्रेचभग्नेचतिमिरोदरे । अम्लपित्तंतथाकुष्ठंप्रमेहंगुदनिर्गमम् ॥ कासंपञ्चविधं श्वासंक्षयञ्चविषमज्वरम् । प्लीहानंश्लीपदंगुल्मानूपाण्डुरोगंसकामलम् ॥ शोथान्त्रवृद्धिशूलानिगुदजानिविनाशयेत् । मेदष्कफामसञ्जातरोगवारणदर्पहा ॥ सिंहनादइति ख्यातोयोगोऽयममृतोपमः । भिषग्विवर्जितेरोगेभाषितोदण्डपाणिना ॥ इति सिंहनादगुग्गुलुः ॥ ७१२ ॥

३२ तोले कडुए तेलसमेत ६४ तोले गूगल और चौसठ चौसठ तोले त्रिफलाके ९३६ तोलेजलके द्वारा पाककरके चौथाई वचेहुएकाढ़ेको फिर अग्निपैचढ़ावे इसकेउपरान्त त्रिकटु त्रिफला मोथ वायविडंग आमला गिलोय चीता निसोथ दन्ती वच ज़मीकन्द मानकेचू शुद्धगन्धक तथा पारा यह सब दोदो तोले और १००० धतूरेके बीजोंका चूर्ण डालकर उतारले २ मासे इस औषधकोखाकर गरमजल आदिका अनुपानकरे इसकेद्वारा अग्नि धातु आयु तथा वलकी वृद्धिहोतीहै और आमवात शिरोवात ग्रन्थिवात भगन्दर घुटने या पिंडरियोंमें स्थित वात कटिग्रह पीड़ा पथरी मूत्रकृच्छ्र भग्न अन्धकारसा दीखना उदर अम्लपित्त कुष्ठ प्रमेह कांच निकलना खांसी श्वास क्षय विषमज्वर प्लीहा श्लीपद गोला पांडु कामला सूजन अन्त्रवृद्धि शूल ववासीर मेद कफ तथा आमजनित रोग यह सब नष्टहोते हैं यह सिंहनाद गूगल वैद्यों से त्याग कियेहुए भी रोगोंको दूर करता है इति सिंहनाद गुग्गुल ॥ ७१२ ॥

शतावरीनागवलावृद्धदारकमुषटा । पुनर्नवामृताकृष्णावाजिगन्धात्रिकण्टकम् पृथग्दशपलान्येषांश्लक्ष्णचूर्णानिकारयेत् । तदर्द्धशर्करायुक्तंचूर्णंसम्मर्दयेत्बुधः ॥ पचेत्सुदृढेभाण्डेमध्वर्द्धाढकसंयुतम् । घृतप्रस्थेनमालोड्यत्रिसुगंधःपलेनच

ष्ठाग्नेयथावह्निबलंनरः। वातरक्तंक्षयंकुष्ठंकार्श्यंपित्तास्रसम्भवम्। वातपित्तकफो
द्भूतरोगानन्यांश्चतत्कृतान्। हत्वाकरोतिपुरुषंहत्वासर्व्वामयान्द्रुतम्॥ वलीपलि
तनिर्मुक्तंमेधास्मृतिविभूषितम्। करोतिपुरुषंधन्यंपञ्चवर्षशतायुषम्॥ योगसारामृतो
मलक्ष्मीकीर्त्तिविवर्द्धनम्। इतियोगसारामृतः॥ ७१४॥
सतावर गुलशकरी विधारा गोंगची पुनर्नवा गिलोय पीपल असगन्ध तथा गोखरू इनसब औ-
षधियो को चालीस २ तोले लेकर महीन चूर्ण करे और सब औषधि की आधी शक्कर मिलाकर
१२८ तोले सहत ६४ तोले घी और चार २ तोले दालचीनी इलायची तथा तेजपात मिलाय के
चिकनी दृढपात्र में रखकर खूबमिलावे फिर अग्निबलके अनुसार इस औषध को खाकर योग्य आ-
हार विहार करे इसके द्वारा बात रक्त क्षय कुष्ठ कृशता रक्तपित्त वातपित्त तथा कफसे हुए रोग
झुर्री तथा बालों का पकना आदि अनेक रोग नष्ट होते हैं और मेदा स्मृति लक्ष्मी तथा कीर्ति की
वृद्धि होती है और १०५ वर्षकी आयु होती है इति योगसारामृत॥ ७१४॥
व्यायामंमैथुनंकोपमुष्णाम्ललवणंरसम्।दिवास्वप्नमभिष्यन्दिगुरुचान्यद्विवर्जयेत्॥
इतिवातरक्तनिदानचिकित्साधिकारः॥ ७१५॥

इतिद्वितीयभागस्समाप्तः॥

वातरक्त वाला मनुष्य व्यायाम मैथुन क्रोध उष्ण वस्तु अम्ल तथा लवण वस्तु दिन में सोना
और अभिष्यन्दी तथा भारी वस्तु इन सबको त्यागकरदे इतिवातरक्तनिदानचिकित्साधिकार७१५॥

इति द्वितीय भाग॥

